Bremen—Osnabrueck—Uda-
ipur is quite a distance for
human concern to trav

ओम्

स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीरतिब्बताद्यनेकदेशाधीशप्रभुवररणवीरसिंहकारितधर्म्मशास्त्रमहानिबन्धे

प्रायश्चित्तभागः टी० भे...

t is a cloudless blue summer
day. Men in mud-stained
...es, dangling fibreglass hel-

ॐनमः [illegible]अथ दोहरा मूकनकोंवाचालता निर्धनकोंआधार भक्तनकीरक्षाकरे जय जयदीनदिस
१ प्रायश्चित्त विधानमें संस्कृत भयो जुग्रंथ सर्वदेशमें मिलतहै कठिनशास्त्रनिर्मंथ २ महाराजो
बूपत आज्ञाकरी विशेष अल्पबुद्धिकेहेतमें भाषाकरोंअशेष ३ कवित्त ॥ कठिनप्रबंध सर्वदेशग
प्रायश्चित्त पंडित प्रवी[illegible]के चितमध्य धरीहै पापके विनाशनकों चाहतहैं सभजन मंदमति मारि
सें विवि[illegible]हैं गण[illegible] गौरीपत देवनके देवपर इनकोंविचार प्रायश्चित्त भाष जनाहैकववक
मनमें विचार[illegible] वारवार महाराज जम्बु[illegible] अच्छीवात गिनीहै ग्रंथकार ग्रंथकेआदिविषे मंगल[illegible]
ताहै नानेति अव इसीका अर्थ लिखतेहैं अथेति वडे प्रताप करकें युक्त जो जंबू और काश्मीर ति
तादिदेशोंकास्वामी तिनोंकरकें आज्ञप्त कविगंगाराम धर्म्मशास्त्रकी व्यवस्था करतेहैं यादृश
त्यादि जो पुराणसंबंधी वचनहैं तिनोंकी प्रामाण्यतासें इसका एह अर्थ है किजिसको जैसा इ[illegible]

ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः नानायद्भूतमाययाजगदिदंदाभिर्नदिना चित्रितं
यत्सत्येनविवर्तनानमखिलंसत्यंमुहुर्ज्ञायते आनंदाब्धिमखंडवोधममलं
भांतंमाहिम्नास्वतो नित्यंसर्वगतंसदाश्रुतिशिरोवेद्यंनुमः सन्ततम १ ॐ
अथमहानुभावजंबूभूपाला[illegible] कविगंगारामः [illegible]ादृशंहिभवेदिष्टंतादृ
शंमंगलंचरेदित्यादिवचनप्रा[illegible]यात् [illegible]भीष्टस्यधर्म्मशास्त्रीयमहानिब
न्धस्य सर्वत्र प्रचयसमाप्त्यर्थं सर्वनियंतारं परमेश्वरमेव यथातरोर्मूलनि
षेचनेनेत्यादिवचनान्नमस्करोति नानेति आदौ नानेत्यव्ययनिर्देशेन मगण
निर्देशेनच अव्ययलाभः कल्याणं चाभिप्रेतं तं सदा सदैव नतु कदाचित्
वेदने साधनांतराभावात् श्रुतिशिरोवेद्यं वेदान्तशास्त्रगम्यं

तिसकों तैसाहि मंगल करणे योग्य है तादिति तिसकों अभिलषित जो धर्म्म शास्त्रीय महानिबंध
तिसकी सब जगह प्रवृत्ति और समाप्ति तिसके लिये संपूर्णका प्रेरक जो परमेश्वर है तिसकों
आदमें नमस्कार करतेहैं प्रश्न और देवतोंकों छोड़कर परमेश्वरकों नमस्कार क्यों कीया उत्तर
परमेश्वरकों नमस्कार करणेसें सब देवतोंकों नमस्कार होजातीहै यथातरोर्मूलनिषेचनेन इत्यादि
जो वचन हैं तिनकीप्रामाण्यतासें नानेति आदमें नानाऽव्ययके निर्देश करकें और मगण गणके
निर्देशकरकें दो २ लाभहोये एक तो अव्ययलाभ और कल्याणकी प्राप्ति होई इसवास्ते
परमेश्वर[illegible] सर्वदाकाल नमस्कार करे क्यों कि तिसके जाननेमें होरीसाधनके
अभावहोनेसें कैसेनू श्रुतियोंका शिर जो वेदांतशास्त्र तिस करकें जो जानणे योग्यहै

ा विषयमें ध्वनि लिखतेहैं श्रेष्ट कर्म्मोंके अनुष्ठान कर्के पवित्र हुयेहैं अंतःकरण जिनकेऐसें
क्तिकी इच्छाकरते हैं तिनोंकों) ओर संततं निरंतर जैसें होवें तैसें नुमः क्या नमस्कार करतेहैं
कैसे तिसकों जो नित्य है कालत्रयमें भी जो नष्ट नहि होणेवाला ऐसेकों इसमें यह
प्राय है नित्यत्वकी इच्छा करणेवाले जो पुरुषहैं तिनोकर्के जो सेवा करणेयोग्यहै तिनोंकी
लाषाके पूरण करणेवालाहै यह ध्वनि है फेर कैसेकों सर्वगत मिति संपूर्ण देश
र कालमें जो प्राप्त है ऐसेकों गमधातुका गति अर्थ होणेसें कर्त्तामे क्त प्रत्यय होताहै संपू
वांछाकों पूरणकर्त्ताहै यहध्वनि है अथवा इसमें ओर विचार है जिस निमित्त कारण कर्के
ादिकोने यह जगत् उत्पन्न करीदाहै उस परमेश्वरकों वारंवार असी नमस्कार करते हां इसीमें

सत्कर्म्मानुष्ठानेनशुद्धान्तःकरणानांमुमुक्षूणामितिध्वनिः संततं निरंतरं यथा
स्यात्तथानुमोनमनंकुर्म्मः कथंभूतं नित्यं कालत्रयानपायिनं नित्यत्वाकांक्षि
भिःसेव्यं तदभिलाषापूरकामितिध्वनिः सर्वगतं सर्वस्मिन्देशे काले च प्राप्तं
गत्यर्थात् क र्त्तरिक्तः सर्ववांछापूरकामितिध्वनिः यद्वा संतन्यतेजगत् येन नि
मित्तकारणेन ब्रह्मादिभिरिति संततः परमेश्व[illegible] यद्वा संसमीचीनस्तततस्ता
त ःसंततः त्वांममार्य्यास्ततांभांक्षुरितिभाग[illegible]तु ब्रह्मादेरप्युत्पादकस्तं न
तुशुद्धं नमस्कारानर्हत्वात् नमस्कारमृते तत्सेवाऽभावात् स्वेष्टासिद्धये नम
स्कुर्म्म एव वस्तुतोनित्यं सर्वगतं च वं कं यद्धृतेति येन शुद्धेन धृता सत्ता
प्रदानमात्रेण न तु स्वेच्छया यद्वा येन धृता इवेत्यर्थः एवंभूता माया
घटनघटनापटीयसी तया यद्वा एकोहं वहुस्यां प्रजायेयेतिवचनात्
तया मायया इदं जगत् दृश्यमानवस्तुजातं नाना वहुप्रकारं

चार है सम्यक् समीचीनस्ततोनाम पिता संततः इसीमें प्रमाण कहते हैं त्वांममार्यास्तता
इस कारणसें ब्रह्मादिकोंका भी जो उत्पन्न करणेवाला है तिसकों
शुद्ध हैं तिसको नहि क्योंकि वोह नमस्कारके योग्य नहि है मायाशवलकों हिनम
ग्य होणेसें तिसमें ओर हेतु कहतेहैं नमस्कारसें विना तिस ईश्वरकी सेवाके अभाव हो[illegible] मानकर्के
असी अपणे इष्टकी सिद्धि वास्ते नमस्कार करतेहि हां और वास्तवसें नित्य है ओषार्यांकाआदहे
तेस किसकों यद्धृतेति जिस शुद्ध स्वरू प नें धारण कीती सत्ता प्रदानमात्र कर्के
च्छा कर्के नहि इस प्रकारवाली जो माया कैसी है अघटन घट

निपुण है तिस माया कर्के ईश्वर ने जगत् निर्म्माण करीदाहै यद्वा इसीमें और भी बिचार है कि
क हि मैं प्रजाके निर्मांणवास्ते बहुत प्रकारका होवां इसतरांभी अपणी माया कर्के दृश्यमान ज
गत् साभीवहुत प्रकारका होता है ॥ भित्तिमिति कुडच जो आश्रय है तिससें विनाहि यह ज
चित्र मानो मूर्त्तिदी न्याईं स्थापित करीदा भया तैसेंही मेरे ग्रंथका ईश्वरने स्थापन क
किंचेति जिस सत्यस्वरूपकर्के संपूर्ण जो जगत् विवर्त्तमान क्या कि जो और विषें औ
प्रतीति असत्य भी है परंतु सत्यकी न्याईं प्रतीत होताहै इसमे दृष्टांत कहतेहैं जैसें रज्जु
सर्पकी प्रतीति होतीहै परं तु वारं वार बुद्धिमानोने वोधित कीयाहोया भी नेदंसत्यमित्या

भित्तिं चित्राश्रयंविना चित्रितं चित्रमिव स्थापितमित्यर्थः तादृशमदी
यग्रंथस्थापनं क्रियेतेतिध्वनिः किंच यत्सत्येन यदीयसत्यस्वरूपेण अखि
लं तत् रज्जौ सर्प्पवत् विवर्त्तमानं मुहुः सुज्ञैर्वोधितमपि नेदंसत्यमि
त्यादिना सत्यमेव ज्ञायते तादृशमदीयग्रंथसत्यतापादनं क्रियेतेति
ध्वनिः पुनः कथंभूतं आनंदाब्धिं अत्राब्धिपदं स्वरूपे लाक्षणिकं
आनन्दस्वरूपमित्यर्थः अखंडवोधं सजातिविजातिस्वगतभेदशून्यज्ञा
नरूपं अमलं निरुपाधिं स्वतोमहिम्ना भांतं नतु घटादिवत्प्रकाश्यमित्य
र्थः भांतमिति कर्त्तरिशता यद्वा भातमिति कर्त्तरिक्तः यद्वा अयत्नज
गुणोदीप्तिरितिशब्दस्तोमः तथाच भा दीप्तौ भातं अयत्नजगुणाश्रयं
स्वतःसिद्धैश्वर्य्यवन्तमित्यर्थः अत्र हि नमनविषयं मायाशवलं तात्पर्य
विषयं शुद्धं शुद्धिहेतुग्रंथ प्रचयश्चाभिप्रेतः ॥

करके सत्य ही जाणीदा है तैसा जो मेरा ग्रंथ है तिसकी सत्यताका प्रतिपादन
फेर कैसा व्रह्म है आनन्दका मानो समुद्र है इसमे जो अब्धिपद है तिसके स्वरूपमें लाक्षणिक
फेर कैसा है अखंड क्या अपरिच्छिन्न है वोध जिसका सजाति और अपरजाति और स्व
इनका जो भेद उससें शून्य ज्ञानरूपहै और उपाधिसें वाह्य है और अपनी महिमा
प्रकाशमान है घटादिवत् नहि है भांतं इस स्थानमें कर्त्तामें शतृप्रत्ययकी प्रतीती है यद्वा
परमें इसमें कर्त्ताविषे क्तप्रत्यय होता है अथवाशब्दस्तोममेंलिखाहै अयत्नजगुणोदी
अभाव ऐश्वर्यवाला है इसविषें जो नमनविषय है सोतो मायाशवलहिहै अभि
विषय शुद्धहै और शुद्धिहेतुग्रंथकी सभजगह प्रवृत्ति होणी

अब पंचमश्लोक करकें सूर्य्य भगवान्‌की प्राथंना करते हैं यइति सो सूर्य्य भगवान् मेरेसं पूर्णमनोरथोंका विस्तारकरे जो सूर्य भगवान अंधकारमें मग्न अर्थात डुबे हुये जगतको अतिशयकरकें चेतन करताहै इसकारणसें मेरा जो मग्नप्राय ग्रंथहै तिसकोभी सूर्य्यदेवता उद्धारणक रेगा और जिस सूर्यके उदयकालमेतीन ३ नेत्रोवाला जो महादेवहै सोवी अंजलीको करताहै और जो उदयादि समयविषे ब्रह्मा और विष्णु और रुद्र अर्थात् महादेव इनतीनोकी तुल्यता कोधारण करताहै उदयकालमें ब्रह्माके रूपको धारण करताहै और मध्यान्हमें ईशके रूपको धारणकरताहै और अस्तसमयमे विष्णुकेरूपको धारणकरताहै यह सूर्यभगवान् देवत्रय ३ रूपीहै एक इसमें और वृत्तांतहैकि अंधकार दूरकरण अर्थसे अज्ञान दूरकरणेकी संभावना करीदीहै ५ अब भगवतीजीकी प्रार्थनाकरतेहैं चिन्तेति अम्बिकाकापद मेरीअतिशयकरकें जो ग्रंथनिर्माणविषेचिंताहै

...तयत्यतितरांजगदंधमग्नंयस्योदयेंऽजालिमसौकुरुतेत्रिनेत्रः ब्रह्मे
सभा... गुतनुतांसमयेविभाति ॥ सोयंरविर्वितनुतांसकलार्थसिद्धिम् ॥ ५ ॥
...न्तामणिप्रथितपीठविरामकक्षं कल्पद्रुमोपवनपंक्तिविहारदक्षम्
...श्वरादिनयनाब्जसहस्रलक्ष्यं चिन्तांहरत्वतितरांपदमाम्बिकाख्यम्
॥ ...रि... ॥ स्वतोमित्वातत्वंश्रुतिरपियदीयंभगवती गुहागूढं
प्रोचेसकलपुरुषार्थाद्यइहयः विचारैस्वैसक्तान्विशदमतिदानेनसदयं
सधर्मोऽस्मान्दीनान्बहुलमनुगृह्णातुभगवान् ॥ ७ ॥

तिसको दूरकरे तिसोके विशेषणहैं कैसाहै देवीकापद चिन्तामणिकरकें युक्त और प्रसिद्ध जो पादपीठ सोईहै विरामकक्षा विश्रामभूमि जिसकी फेर कैसाहै कल्पवृक्षों वाली बगीचोविषे विहारकरणेमे चतुरहै फेर कैसाहै सिद्धेश्वर आदिकोंके जो हजारोंनेत्रहैं तिनका एक नशाना है इसमेभी भगवतीके पदके विशेषणोसें चिन्तामणिआदिकोंके स्मरणसें स्वाभीष्ट सिद्धिकी संभावनाहै ॥ ६ ॥ अब धर्म्मजीकी प्रार्थना करतेहैं स्वत इति सो धर्म्म असां दीनांपर क्या दुःखितोपर बहुतसा अनुग्रहकरे सहितदयाके जैसे होवे तैसे) कैसेहां असी अपने विचारविषे लगेहुएहाँ किसकरकें विशदेति विशदमति क्या विशालबुद्धितिसकेदेने करकें कैसा धर्म्महै इसको कहतेहैं कि जिसके तत्वको श्रुति जोवेदहै सोभी अपणेतें मानकरकें क्या अतिशयकरकें गुप्तको कहिताहै कैसीश्रुतिहैसर्वोत्कृष्टहैओरजोधर्म्म चारों पुरुषार्थोंकाआदहै

अब श्रीमहाराजकी प्रशंसा अर्थात् स्तुतिकरतेहैं एकदिन श्रीमहाराजजम्बूकाश्मीर तिब्बतादि जो अनेकदेश तिनकेस्वामी संपूर्ण ऐश्वर्य्यकर्के संपन्न विद्याविनोदविषें रसिक तिस २ शास्त्रविषें जो परिचय तिसवाले विद्वज्जनोंकीजोगोष्ठी अर्थात् सभा तिसकर्के संभावित क्या तद्वासनावासित अंतः करणवालियोंने अपनी २ बुद्धिकर्के परिकल्पित अर्थात् अध्ययनकीये जो शास्त्रकारोंसें पूर्वपक्षादि तिसकेनिर्णयकरणवालेऔर तिनोंकरकेकहेहुएजोनानाकोटिरहस्य तिनकेपरिचयकरके विकसित अर्थात् प्रफुल्लितहै सर्वदाकाल मुखारविन्द जिनोंका और बहुतप्रकारके नैयायिकादिविषयोंमें पंडितजनोंतें करवाये जो निर्णय और विवादशांति

अथैकदास्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराज जम्बूकाश्मीरतिब्बताद्यनेकदेशाधिपतिसकलैश्वर्यसंपन्नविद्याविनोदरसिकतत्तच्छास्त्रपरिचितविद्वज्जनगो[illegible] संभावितान्तःकरण स्वस्वबुद्धिपरिकल्पितपूर्वपक्षादिनिर्णायक कथि[illegible] [illegible]नाकोटिरहस्यपरिचयविकसितवदनारविंद बहुविधनैयायिकादिनि[illegible] [illegible]रितविवादशांतिश्रवणगीयमाननानादेशीयराजसभ्यन्यायकौशल्यसर्व[illegible] मतादिसाधारणपाठशालापठनपाठनाभ्यासपाटवदर्शनोत्सुकमनोदी[illegible] नयथायोग्यप्रसादधन कालान्तरजातकाचित्कशास्त्रवैकृत्योद्धारक[illegible]हाराजानुपलंभसंभावना तत्प्रचित्युपचितगुणिजनसमुदायदेशदेशान्तरलिख्यमानमहानुभावपदवीकल्पलतापरिपालक समस्तराजकमलवनोद्घाटन दिनमणिविराजमानोहिश्रीरणवीरसिंहः

[illegible]नोंके श्रवणकरणेकर्के गायनकरीदीहै अनेकदेशोंविषे और राजसभाविषें न्यायकरणेमें चतुराईजि[illegible]कों और सभमतवालेओंकोंयां पाठशाला बनाकर तिन्होंमें पठनादिजो अभ्यास तिसमेचतुरलोकरकेोंके देखनेमें उत्साह है जिनाकों इसीकर्के देरहेहैं यथायोग्य प्रसादधन वगशींसांकों और कालफेर केप्रभावसें किसीस्थानमें आया जो शास्त्रविरोधादि तिसका परिहारऔर राजयोंमें नाहिदेखया तिसफेर प्रवृत्तिकें निमित्त पुष्टहुएजोगुणिजनोंके समुदाय तिन्होंकर्के देशदेशांतरमें जो लिखीदीहै महानु[illegible]भावपदवी कल्पलता तिसकेपरिपालक और सभराजाहैं कमलोंकावन तिसकेविकाशवास्ते [illegible]र्यकी न्याईं प्रकाशमानहै श्रीरणवीरसिंहराजा

तिनों तिनों देशोंसे आयेहुवे पंडितजनोंकरके मंडित अर्थात् भूषित और श्रीरघुनाथजीके पूजनविषे तत्पर जो महाराज तिनों करके परिष्कृत क्या सनाथ और जोराजे और मंडलेशहैं इत्यादिकों करके शोभायमान और विद्यारूपगंगाके तुल्य ऐसी जो सभा तिसविषे बैठे हुवेसो महाराज पंडितोंका प्रश्नरूपी सत्कारकरतेभये(प्रश्न:)धर्म्मसाधन क्या है तिसका उत्तर सवपंडित विचारकरके धर्मशास्त्रकेविस्तारकों शब्दादि विषयके प्रतिनिधिजानकर और श्रीसरकारकीउपभोगकी योग्यताकरके एकधर्मशास्त्रकामहानिबंध बनायकरके तिस ग्रंथकेपांचभाग रचतेभये जिसमें प्रथमभाग आह्निक है ॥ १ ॥ और दूसरा प्रायश्चित्त है ॥ २ ॥ तीसरा संस्कार है ॥ ३ ॥

तत्तज्जनपदागतकविजनमंडितायां श्रीरघुनाथपूजनसमासक्तमहाराजपरिष्कृतायामन्यभूपतिमण्डलेशादिशोभमानायां विद्यागंगानदाकल्पायां सभायां तावत्किंधर्म्मसाधनमितिविचार्यतामिति प्रश्नसत्कारंकृतवांस्तत यथामतिविद्वांसःकल्पतेस्म तत्रविद्वद्भिःप्रभुवराभिप्रायानुगुणतयाधर्म्मशास्त्रप्रपंचस्य शब्दस्पर्शरूपरसगंधविषयप्रतिरूपकतया महाराजोपभोगक्षमतयाच आह्निकप्रायश्चित्तसंस्कारदानश्राद्धात्मकोऽयं श्रीनृपवररणवीरसिंहनिर्म्मापितधर्म्मशास्त्रप्रपंचाख्योमहाग्रंथोनिर्मितः तस्य प्रथमोविषयः आह्निकम् ॥ १ ॥ द्वितीयः प्रायश्चित्तम् ॥ २ ॥ तृतीयः संस्कार. ॥ ३ ॥ चतुर्थोदानम् ४ पंचमः श्राद्धम् ५ ॥ शब्दादिगुणतयाकल्पना ❀ तत्रादौसंक्षेपतोमहाराजवंशवर्णनम् पृथ्वीयंबहुरत्नसंचयवतीयानिर्मिताब्रह्मणा तस्यांश्रीरविवंशएवहिरमलाख्यातागुणैःसद्वृतैः ।

चतुर्थ दानहै ४ पांचमा श्राद्ध ५ है इसव्यवस्थासें धर्म्मसाधन स्थापन करतेहुये और तिसका महाराजभी सत्कारकरतेभये और उसीकीभाषामेंआज्ञादेतेभये इसग्रंथकेप्रचारहोणेते सनातनधर्म्म जो श्रौत स्मार्त है सो दृढहोवेगा और लोकभी धर्म्मकोंसमझेंगे और तिसमें प्रीतिभीकरेंगे

❀ अब श्रीमहाराजजीकी संक्षेपतें वंश परंपरा लिखीदीहै पृथ्वीति यह पृथ्वी बहुतरत्नोंकेसमूहवालीहै जिसकरके इसकानाम वसुमतीहै ऐसेही ब्रह्मानेंरचीहै तिसविषें श्रीसूर्यजीका वंशभी रत्नहै जिस जिस वस्तु विषे जो जो एक उत्तमहै सो सो रत्न कहीदाहै तिस वंश की वृद्धि अमलहै और सत्पुरुषोंकरके धृत जो गुणहैं तिन्होंकरके ख्यात है

तिसविषे गजसिंहनामकरके राजाहुआ जैसे क्षीरसमुद्रविषे चन्द्रमा हुंदाभया जिसराजाने गजासिंहनामककें पुरी वनाई जो उत्तमजनोंकी वसतिहै १ तिसकापुत्र ध्रुवदेवनामा हुंदाहोआ जो महा राजेयां कों मान्य और जिसकी निर्म्मलकीर्त्ति ध्रुवा क्या स्थिरहै सो राजा मानो पृथ्वीमे दूसरा ध्रुव प्रतीतहोता भया ॥ २ ॥ तिसका पुत्र सूरतसिंहनाम राजा तेजोनिधि क्या वडातेजस्वी सूर्यकीन्यांई हुआ तिसकापुत्र जराउरीसिंह नाम राजाहोआ सो बडावलवान होआ किसकीन्यांई जैसेवडेहस्तियोंके समुदायविषे सिंहहोवे जैसें सिंह हस्तियोंका मर्दनकरताहै तैसे शत्रुयोंका मर्दन करताहोआ यह अर्थहै ३ तिसकापुत्र किशोरसिंह नामकरकें राजाहोआ सो बालवृत्तविषे क्या बाललीलाविषे बडावलीहोआ इसतेहीं तिस

जातस्तत्रजसिंहवर्म्मनृपतिःक्षीरोदधौचन्द्रमा येनाकारिपुरीप्रवीणवसति र्यैवगजासिंहिका ॥ १ ॥ जातस्ततःश्रीध्रुवदेववर्म्मा श्रीमन्महीपालगणाग्रगण्यः ध्रुवाहिकीर्त्तिर्विमलायदीया ध्रुवोऽपरोभूमिगतःप्रतीतः ॥ २
तदात्मजःसूरतसिंहवीरस्तेजोनिधिःसूरइवावनीशः जराउरीसिंहसुतस्तदीयःसिंहोयथोन्मत्तगजेन्द्रसंघे ॥ ३ ॥ किशोरसिंहस्तनयस्तदीयोमहावलोऽभूद्बाकिशोरवृत्ते यःशत्रुभूपद्रुवनाश्रयाणामुत्पाटयामाससुबुद्धिवृद्ध्यै ४
जातस्ततोभूपशिरःकिरीटनीराजितांघ्रिस्तुनरांमहौजाःजेतारिपूणांमतिमान्महीन्द्रःश्रीमन्महाराजगुलाबसिंहः ५ सूनुस्तदीयोजगतीप्रसिद्धो भूपाग्रणीः श्रीरणवीरसिंहः श्रीरामचन्द्रोहिनयप्रवृद्धौविद्योदधौमंथनकृत्सुरेशः ६

कानामकिशोरसिंह होताभया जो राजा शत्रुराजारूप जो वृक्ष तिनका जो वन तिसके जोआश्रय तिनके उखेडनेवाला किसवास्ते सुंदरमतिवाले जो पुरुष तिन्होंकी वृद्धिवास्ते ॥ ४ ॥ तिसकिशोरसिंहसें श्रीमन्महाराज गुलाबसिंह होताभया कैसाहै राजयोंकेसिरमे जो मुकुट तिनांकरकें आरातिवालाहोताभया चरण जिसका फेर कैसा वडावलवान् और शत्रुयोंकेजीतनेवाला और वडीवुद्धिवाला और पृथ्वीविषे इंद्रकीन्यांई होताभया ५ सूनुरिति तिसकापुत्र श्रीरणवीरसिंहहोआ सो कैसाहै जगतविषे प्रसिद्धहै और राजयोंबिषेअग्रणीहै और नीतीकी वृद्धिविषे श्रीरामचंद्रकीन्यांई है विद्यारूपी समुद्रके मथनकरणे वाला मानो विष्णुहै ६ ॥

महीति इसश्लोककरकेंभी तिसी की स्तुति करते हैं कैसा है श्रीरणवीरसिंह नामराजा अच्छी तरह प्रजाकी रक्षा करणा और दान यही है धर्म्मजिसका और दुष्टोंका नाशकरणा और सज्जनोंका रक्षाकरणी फेरकैसाहै श्रीरामचंद्रजीका जो श्रवण तिसतें उत्पन्नहुआ है कल्याण जिसको असाहै ॥ १ ॥ ❀ अब इसग्रंथमें प्रायश्चित्तविषय जो प्रकरणहैं तिनकी अनुक्रमणिका लिखीदीहै प्रथमप्रकरणमें आदमें मंगलाचरणहै फेर इसीप्रकरण मे श्रीमन्महाराजवर्णनपूर्वकवंशवर्णनहै और इसीप्रकरणमें प्रायश्चितशब्दार्थ भी है १ इसके आगे दूसरा अधिकारी प्रकरणहै और उसीप्रकरणमें प्रायश्चितकी प्रशंसाभीहै २ तिसकेआगे तीसरा पर्षद्प्रकरणहै अर्थात् सभाका लक्षणहै और इसीप्रकरणमें सर्वप्रायश्चित्तकीविधान की विधिभी लिखीहै और दशविध स्नानकी विधि भी सर्वत्रक लिखा है ३ और इसकेआगे

महीपतिःश्रीरणवीरवर्म्मा सम्यक्प्रजारक्षणदानधर्म्मा दुष्टाक्रियासज्जन धारकर्म्मा श्रीरामचन्द्रश्रुतिजातशर्म्मा १ ❀ तत्र प्रायश्चित्तविषयप्रकरणानुक्रमणिकालिख्यते मंगलाचरणन्तावत्प्रायश्चित्तार्थवाचनम् १ ह्यंततोऽधिकारित्वं प्रायश्चित्तप्रशंसनम् २ पर्षदोलक्षणञ्चैव ३ ॥ तथाकर्म्मविपाककम् ४ कृच्छ्रचान्द्रायणादीनां वर्णनंतदनंतरम् ५ साधारणं ६ ततःप्रोक्तं प्रायश्चित्तनिबन्धने जातिभ्रंशकरञ्चैव ७ संकरीकरण ८ न्ततः अपात्रीकरणं ९ तद्वन्मलिनीकरणं १० ततःप्रकीर्णकप्रसंगो ११ ह्युपपातकनिर्णयः १२ महापातकसंज्ञ १३ हितत्संसर्गभवं १४तथा

चतुर्थ कर्म्मविपाक प्रकरणहै जिसमें पूर्वकर्म्मोंके फलका वर्णनहै ४ और तिसकेआगे पंचम व्रतप्रकरणहै जिसमें कृच्छ्र प्राजापत्य चांद्रायणादि व्रतोंका वर्णनहै और उसीप्रकरणमें व्रतोंके प्रत्याम्नाय भी हैं ॥ ५ ॥ और तिसकेआगे षष्ठ साधारणप्रकरणहै जिसका सर्वत्रउपयोगहै ६ और तिसकेआगे सप्तम जाति भ्रंशकरनामक प्रकरणहै ७ और तदनंतरअष्टमसंकरीकरणप्रकरणहै ८ और तिसतें उपरांत नवम अपात्रीकरण प्रकरणहै ९ तिसके आगे दशमा मलिनीकरण प्रकरण हैं ॥ १० ॥ और तिसतें उपरंत एकादश प्रकीर्णक प्रकरणहै ॥ ११ और तिसतें उपरंत द्वादश उपपातक प्रकरणहै ॥ १२ ॥ और तिसके आगे त्रयोदश महापातक प्रकरणहै ॥ १३ ॥ और तिसके आगे चतुर्दश महापातकिसंसर्गि प्रकरणहै १४

और तिसकेआगे सामान्यसंसार्गी पंचदश प्रकरणहै ॥ १५ ॥ और तिसके आगे षोडश महापातकोंका सामान्य प्रायश्चित्तप्रकरणहै ॥ १६ ॥ और तिसके आगे सप्तदश अनुपातक प्रकरणहै ॥ १७ ॥ और तिसते उपरंत अष्टादश शुद्धिप्रकरणहै जिसमें संपूर्णोंकीशुद्धि-लिखीहै ॥ १८ ॥ और तिसके आगे एकोनविंश रहस्यप्रकरणहै ॥ १९ ॥ और तिसके आगे विंशति अपविद्धपुत्रको बिचारणा का प्रकरणहै ॥ २० ॥ और तिसतेआगे एकविंशति परिशिष्ट प्रकरणहै ॥ २१ ॥ प्रायश्चित्तविधानमे यहएकविंशति प्रक्रियाहैं ● अब वर्णाश्रम केविभागपूर्वक धर्म्मोंको कहकर प्रायश्चित्तभागका प्रारंभ करीदाहै सो कैसाहै विहिताकरणादि जो पाप अर्थात् जो वेदमैकिहाहै सन्ध्यावन्दनादि तिसका नहि करणा १

साधारणंचसंसर्गि १५ महापातसमानकं १६ महापातकसामान्यामित्यर्थः अनुपातकसन्धानं १७ वस्तूनांशुद्धिवेदनम् १८ प्रायश्चित्तरहस्यं १९ चअपविद्धवि २० चारणापुराणपरिशिष्टं २१ हिततःप्रकरणंमतम् प्रायश्चित्तविधौचैकविंशतिः प्रक्रियाइमाः ● अथवर्णाश्रमधर्मान्निरूप्य विहिताकरणादिजन्यपातित्यादिपरिहारोपायनिरूपणात्मकःप्रायश्चित्तभागःप्रारभ्यते भवति चास्य प्रकरणस्यवर्णाश्रमधर्मनिरूपणोत्तरं निरूपणेप्रसंगसंगतिः एतत्प्रकरणनिरूपणीयप्रायश्चित्तनाश्यपातकानां पूर्वप्रकरणप्रतिपाद्यवर्णाश्रमधर्मस्वरूपक्रमोल्लंघनजन्यतया प्रसंगस्यसंभवात् विहिताकरणादिजनितपातकाभावश्च द्वेधा वर्णाश्रमधर्मस्वरूपक्रमज्ञानेन संभावितेभ्यस्तथाविधधर्मानुष्ठानजन्यपापेभ्योवर्णाश्रमधर्मस्वरूपक्रमज्ञानेन निवृत्त्या

और जो निषिद्धकीतिहैं लसुनभक्षणादि तिनकात्यागकरणा ॥ २ ॥ और इन्द्रियोंकानिग्रहनकरणा ॥ ३ ॥ इनते उत्पन्नहोएजोपातित्यादिपाप तिनके परिहारोपायकानिरूपणहै स्वरूप जिसका ● अब आन्हिकभागके पीछे प्रायश्चित्तभागके निरूपणविषे संगतिका विचारकरतेहैं इस प्रकरणके वर्णाश्रमधर्म्मनिरूपणके पीछे प्रसंगकीसंगतिहै किसते कि इसप्रकरणविषे कहे जोहैं प्रायश्चित्त सो जिन्होपापोंको दूरकरदेहैं सो पाप पूर्वोक्तधर्म्मकाजोउल्लंघन अर्थात् त्याग तिसतेहि होएहैं और पूर्वोक्तहेतुत्रयकर्के होए जो पाप तिन्हांका अभाव दघा ना दोप्रकारकाहै एकतोवर्णाश्रमधर्म्मका जो स्वरूपज्ञान तिसके नाहोणेकर्के १ और जोणे जोहैं पाप तिन्हा ते वर्णाश्रमधर्म्म स्वरूपके ज्ञान कर्के निवृत्ति सें क्या हटणे सें २

और जानकर्के भी प्रमाद और आलस्य आदिक कर्के तिस तिस विधि कर्के प्रतिपाद्य धर्मोंके अनाचरण कर्के संभावित जो पाप तिन्होंका प्रायश्चित्त कर्के जो नाश तिसकर्के तिनविषे जो पहला पापनाश है तिसका तथाविध क्या तैसाहि धर्मस्वरूपका जो क्रम है तिसके ज्ञानको प्रथमकहणेकी योग्यताकर्के और दूसरेको तैसेहि पाप नाशके हेतुहोंइस प्रायश्चित्त प्रकरणविषे प्रतिपादनकी योग्यताकर्के दोआं प्रकरणोंको पापनाशकी प्रयोजकता कर्के एकहि कार्य्यके करणवाले यह दोए प्रकरण होए तांते एककार्य्यकारित्व क्या एकहि पातकाभावरूप

ज्ञात्वाऽपि च प्रमादालस्यादिना तत्तद्विधिप्रतिपाद्यधर्मानाचरणेन संभावितानां पापानां प्रायश्चित्तेन नाशेन च तत्राद्यस्य तथाविधधर्म स्वरूपक्रमज्ञानस्य पूर्वप्रकरणसंपादनीयतया द्वितीयस्य च तथावि धपापाभावप्रयोजकहेतोरेतत्प्रकरणप्रतिपाद्यतया द्वयोरपि प्रक रणयोः प्रदर्शितपातकाभावप्रयोजकत्वेनैककार्यकारितयाऽनयोरेककार्य कारित्वमपि संगतिः अथ धर्मस्य श्रुतिस्मृतीतिहासपुराणमूल कतया श्रुत्यादिषुच शतशो भिन्नभिन्नशाखानिचयविततेषु बहुत्र परस्परात्यन्तविरुद्धार्थकानां वचनानामुपलम्भेन कुत्र धर्मसमास्थितिः तथाहि श्रुतौ तावदेकत्र योग्निंहोतारमवृथा इतिपठेदित्यादिना योग्नि होतारमित्यादिमंत्रपाठोविधीयते अपरत्र च यद्ब्रूयाद्योग्निंहोतारमदृथाइ त्यग्निनोभयतोयजमानं परिगृह्णीयात्प्रमायुकः स्यादिति निन्दार्थवादपुर स्सरं तस्मिन्नेव क्रतौ तन्मंत्रपाठः प्रतिषिध्यते

कार्य्यकरणरूप भी संगति होइ (प्रश्न) धर्म जो है सो वेद और स्मृति तिसके जानणेवाले ऋषियोंके बनाए ग्रंथ और इतिहास पूर्ववृत्तांतके कहणें वाले महाभारतादिग्रंथ और पुराण भागवतादि १८ संहिता इनके उपदेशसेहुंदाहै और इनविषेवेदादि भिन्न भिन्न मतवाल देखीदेहैं और परस्परविरोधि वचनभी देखीदेहैं किस जगह धर्मदी स्थिति जाणणी सो विरोध प्रथम वेद का दिखाइंदाहै योग्निमिति इसमंत्रके पाठको विधि एक जगह विधान कीताहै और दूसरी जगह तित मंत्रके पाठका तिसी यज्ञ विषे निषेध है

एवमिति इत्यादि अतिरात्र यज्ञविषे षोडशीका एक जगह ग्रहण है और दूसरी जगह निषेध है तिनांदोआंविचों इकदा ग्रहण कीतेहोएआं अवश्यकर्के विधि का लंघन अथवा निषेधका लंघन होताहै अर्थात् विधिके ग्रहणविषे निषेधका लंघनहै और निषेध के ग्रहण विषे विधिका लंघनहोताहै इसी प्रकार एह वचन है उदितेति एककहताहै सूर्यके उदयहोएआं हवनकरना दूसरा कहताहै सूर्यकेनाउदयहोएआं हवनकरना और तीसराकहताहै अर्धसूर्यके उदय होएआं हवनकरना इसवेदके वाक्यकर्के बहुतथोडे कालकर्के जो साध्यकर्म तिसको वेदकर्के कहे जो तीनकाल तिनांविषे करने नूं ना समर्थहोणेते प्रधान कर्मजो है हवनरूप तिसमें तीनकाल विधान करेहैं तिनांविषे अवश्यकर्के इककालदे ग्रहणकीतेहोएआं और कालोंकी जो विधि तिस

एवमतिरात्रे षोडशिनं गृण्हाति नातिरात्रे षोडशिनं गृण्हातीति वाक्याभ्यामतिरात्रक्रतौ षोडशिनो ग्रहणं विधीयते प्रतिषिध्यते च तत्रैकतरानुष्ठानेऽवश्यंविध्युल्लंघनं निषेधोल्लंघनं वा प्रसज्यते एवमुदिते जुहोति अनुदिते जुहोति समयाध्युषिते जुहोतीति श्रुतिवाक्यैरत्यल्पकालसाध्यस्य श्रुत्युदित कालत्रये कर्त्तुमशक्यस्य हवनरूपस्य प्रधानकर्मणः कालत्रयमभिधीयते तत्राऽवश्यमेककाले तदनुष्ठाने कालान्तरविध्युल्लंघनजन्यदुरितप्रसंगः ॥ एवं स्मृतिवचनेष्वपि अपुत्रधनं पत्न्यभिगामीति वचनं सर्वेभ्यःप्रथमंपत्न्या अपुत्रधनाधिकारं बोधयति अपुत्रधनं भ्रातृगामीति तु भ्रातुरधिकारंब्रूते एवमादीनां परःशतानां परस्परात्यंतविरुद्धार्थानां मुनिवचनानामुपलम्भे तत्रतत्रैकतरानुष्ठाने कुत्रचिद् विध्युल्लंघनं कुत्रचिच्च निषेधोल्लंघनं प्रसज्यत इतिपापभीरुभिः कुत्रसमास्थेयमितिचेदुच्यते ॥ कुत्रचित्परस्परविरुद्धवचनानां

का जो नाकरणा तिससें उत्पन्नहोया जो पाप तिसका प्रसंगहै ॥ इसीप्रकार स्मृतिवचनांविषे कियाहै अपुत्रका जो धन सो पत्नीको प्राप्तहोताहै इसवचनते सभनांते पहले पत्नी कोहि अपुत्रधनका अधिकार कहाहै दूसरा कहताहै अपुत्रका जो धन सो भ्राताको प्राप्त होताहै इत्यादि जो सैकडे वचन परस्परविरोधि हैं तिन्हमुनिवचनांते तिस तिस जगाएकके करणेतें दूसरेका विषय अवश्यकर्के उल्लंघन हुंदाहै तांते पापसे भयभीत जो पुरुष हैं तिन्हांने किस जगह स्थितहोनाहै यह पूर्वपक्ष सुनकर कहतेहैं ॥ (उत्तर)जो विरोधिवचन किसे किसे जगहके तुर्ल किहे हैं

तिन्होंकी शाखाभेदकर्के व्यवस्था जाननी और किसे किसे जगह करणे विषे बहुत प्रयासदेखणेते तिस विधिका नहि करणा ऐसी व्यवस्था है अथवा अभावानुष्ठान जो है नहि करणा तिसकी अपेक्षा करके भावानुष्ठानविषे बहुतप्रयास भी है परंतु फलविशेषके अनुमानकरके व्यवस्था है जैसे सूर्यग्रहणविषे वृष्टिकी संभावना हुंदी है और किसेजगह फलविशेषकर्के व्यवस्था है और किसे जगह कालविशेष विधिमे प्रथमारंभकर्के व्यवस्थाहै और किसे जगह एकजैसे दोए पक्षहैं तद इच्छाकर्के व्यवस्थाहै और किसे जगहवचनान्तरकर्केसंवादानुकूल जो तर्कहै तिसकर्के व्यवस्थाहै इसकर्के तिन्होंविरोधीवचनोंकी

शाखाभेदेन परिग्रहस्य व्यवस्थया कुत्रचिच्च अभावानुष्ठानमपेक्ष्य भावानुष्ठानस्याऽधिकप्रयाससाध्यतया विध्यनुष्ठाने आदित्यग्रहणे वृष्टेरिवक स्याप्यान्तरालिकफलविशेषस्याऽनुमानेन कुत्रचिच्च कालविशेषपरिग्रहादौ प्रथमारम्भपरिगृहीतकालादिनैयत्यव्यवस्थया कुत्रचिच्च यत्रान्यतरपक्षप रिग्रहे फलेविशेषः कथमपि नसंभवति तत्रैच्छिकत्वस्यव्यवस्थया कुत्रचिद्वच नान्तरसंवादानुकूलतर्कादिना तेषां तेषां विरुद्धार्थकानां विषयविशेषविषयक त्वस्य व्यवस्थापनेन च सर्वेषांविरुद्धार्थप्रतिपादकानां वचनानां परस्परमवि रोधे संभवति विरोधाभासशंकया तेषु तेषु धर्मेषु प्रेक्षावन्तः पापभीरवो नकथमप्युपेक्षां कर्तुमर्हन्ति तथाहि प्रथमं तावद् योऽग्निंहोतारमित्यादि मंत्रपाठप्रतिषेधवचनस्य यजुर्वेदे पाठेन तादृशमंत्रपाठो यजुःशा खिनां प्रतिषिद्धो विधेश्चाश्वलायनसूत्रीयतया शाकलशाखीयै स्तन्मंत्र पाठः करणीयइति शाखाभेदेन तन्मंत्रपाठापाठयोर्व्यवस्थायाःसुकरतया न तयोर्वैदिकवाक्ययोः परस्परविरोधः कथमप्याशङ्कितुमुचितः

विषयव्यवस्था जाननी इसते सभवचनोंका अविरोधहि है जो विरोध भासदाहै सो विरोधाभास हिहै कोइ यथार्थ नहि इसते पापभीत जो पंडितलोक किसेवचनकी उपेक्षा नहिकरते तथाहि जिसतरह विधिका परिहार हुंदाहै सो दिखाइंदाहै योऽग्निहोतारमित्यादि मंत्रपाठका जो निषेधवचनहै सो यजुर्वेदविषेहि है तिसकर्के यजुर्वेदवालयोंको हि तिसकानिषेधहै और ॥ आश्वलायनसूत्रविषे इसकी विधि है इसकर्के तिन्होने और शाकलशाखावालयोंने तिस मंत्रका पाठकरणा उचित है यह शाखाभेदकर्के व्यवस्था होई इसते तिसमंत्रका पाठकरणा और नाकरणा यह सुगम हि व्यवस्था है इसते वेदवाक्यका विरोध नहि आया

इसीतरह षोडशिग्रहणरूप जो कर्म सो है प्रयत्नसाध्य तिस करके षोडशीका ग्रहण करणा और ना करणा दोनोंतरहसे अतिरात्र यज्ञकी सिद्धि होयां तिसके करणविषे अंगका अनुष्ठान है और तिस से कोई पुण्यविशेष अधिक कल्पना करीदाहै और जद षोडशिका ग्रहण ना होवे तद तिस यज्ञका हि फलहै इसते अधिक नहि इसमैभी कोई विरोध नहि आया और उदितेजुहोति इत्यादिविषे अग्निके आधानते अनंतर अग्निहोत्रके प्रथमारंभविषे जिसने जिस तरहका काल ग्रहण कीताहै तिसन जबतक जीउणा तबतक तिसी कालमे हवनकरणा चाहिए यहव्यवस्था है

एवं षोडशिग्रहणरूपस्य कर्मणः प्रयाससाध्यतया षोडशिग्रहणाग्रहणयो रुभयथाप्यतिरात्रक्रतुसिद्धावपि तदनुष्ठानेऽङ्गानुष्ठानजन्यमपि किमप्य पूर्वमाधिकं कल्प्यते षोडशिनोऽग्रहणे त्वतिरात्रक्रत्वनुष्ठानजन्यमात्रमपूर्वं यजमानस्येति न कथमपि विधिप्रतिषेधयोर्विरोधस्यावसरः उदितेजुहो तीत्यादौ तु आधानोत्तरमग्निहोत्रस्य प्रथमारम्भे येन यादृशः कालः परि गृहीतस्तेन यावज्जीवं प्रतिदिनं तस्मिन्नेव होतव्यमित्येषा व्यवस्था एवं व्रीहिभिर्यवैर्वा यजेतेत्यत्रापि प्रथमदर्शपूर्णमासयागे यो येन द्रव्येणे ष्टवान्स तेनैवद्रव्येण प्रतीष्टि यजेतेतिव्यवस्थितोविकल्पः यत्र च व्यव स्थितविकल्पेऽन्यतरानुष्ठाने फलाधिक्ये च न किमप्यनुकूलं तर्कादिकमु पलभ्यते यथाऽवघातप्रैषवाक्ययोरसंवपन्तीपिंषाणूनि कुरुतादव्यव किरन्तीपिंषाणूनि कुरुता दित्यनयोस्तत्रास्त्वैच्छकत्वमेवान्यतरपाठस्य

एवं इसीप्रकार व्रीहिभिरिति इसका अर्थ यह है धान्यकरके यज्ञ करे अथवा यवोंकरके यज्ञ कर इसजगह पहले दर्श और पूर्णमास यज्ञविषे जो कोई जिस द्रव्यकरके यज्ञ करदाहोआ सो तिसीद्रव्यकरके यज्ञप्रति पूजन करे यह व्यवस्थित विकल्प है इस विकल्पविषे एकके अनुष्ठान विषे और फलाधिक्यविषे कोई भी अनुकूल तर्क नाहिदेखीदाहै जैसे अवघातेति अवघात विषे और प्रैषजाहै तिसमे प्रेरणा करणी तिन्हों वचनोंविषे असंवपंती जो है तंडुलोंकाछडना और पीसना करे इत्यादिक का ऐच्छिक विकल्प है यथा जिस पर इच्छा हो तिसको पढ़े

और अपुत्रकाधन पत्नीको मिले इसविषे जो है यज्ञवल्क्य जीका वचन तिस करके विभागको कह करके फेर संसृष्टिका विभाग अगेकहणा अर्थात् जो सांझा धन है तिसका विभाग कहणाहै तिस विषे निर्णय होआ कि जो वक्खराहै और धनभी सांझा नहि इस अपुत्रका धन स्त्रीको प्राप्तहोवे यह वचन इसपर है और अपुत्रका धन भ्राताको प्राप्तहोवे यह वचन जो कहा भ्राताहै तिसपर है ऐसी व्यवस्था होणेते कोई परस्पर विरोध नहि आया एवमिति इसीतरह और जगा भी आपसमे विरोधि वचन प्रतीत होवे उस जगा विरोधका परिहार दखाएहोए प्रकारविषे जो युक्तिविशेष है उसी करके बुद्ध मानोंने हटाणे योग्य हैं॥ सो मनुजीने भी किहाहै श्रुतीति जिस जगह श्रुतिद्वैध होवें क्या दो वेदके वचन विरोधी होवें तिस जगादोनो धर्म्म कहेहैं क्या पूर्वोक्तव्यवस्थासे दोनों

अपुत्रधनं पत्न्यभिगामि तथाऽपुत्रधनंभ्रातृगामीत्यत्र तु पत्नीदुहितरइतियाज्ञवल्क्यवचनस्य विभागस्य पूर्वमुक्तत्वादग्रे संसृष्टिनामधिकारस्य वक्ष्यमाणत्वाच्च विभक्तासंसृष्टिविषयत्वे निर्णीते तद्वचनविसंवादादपुत्रधनं पत्न्याभिगामीत्यपि विभक्तासंसृष्टिपरं भ्रातृगामीति त्वविभक्तसंसृष्टिपरमिति व्यवस्थाया आस्थानान्न परस्परविरोधावसरः एवमन्यत्रापि परस्परविरुद्धत्वेन प्रतीयमानानां वचनानां विरोधपरिहारः प्रदर्शितान्तर्गतैकतरप्रकारेण युक्त्यन्तरेण वा सुधीभिःस्वयमुन्नेयः उक्तंच ॥ मनुना ॥ श्रुतिद्वैधंतुयत्रस्यात्तत्रधर्मावुभावपि उदितानुदितेचैवसमयाध्युषितेतथा सर्वथावर्त्ततेयज्ञइतीयंवैदिकीश्रुतिरिति तथा तत्त्वेविप्रतिपन्नानांवाक्यानामितरेतरम् विरोधपरिहारेणनिर्णयस्तत्त्वदर्शनमिति ततश्च न क्वापि दुःस्थितिरित्येषा दिक् ॥
तत्रादौ प्रायश्चित्तशब्दार्थः प्रदर्श्यते अत्रमाधवः प्रायश्चित्तशब्दश्च रूढ्या योगेन च पापनिवर्तनक्षधर्मविशेषमाचष्टे

करकेस्थापन करणे सोई पूर्वोक्तवचन लिखकर व्यवस्थाकरतेहैं उदितेति सूर्य्यके उदयविषे और अनुदयविषे और अद्दे उदयविषे भी सर्वथा यज्ञ हुंदाहै यहि वेदकी आज्ञा है तैसेंहि होर वचनहै तत्त्वइति जो कोई वाक्य तत्त्वविषे क्या यथार्थ अर्थविषे परस्परविरोधिहैं तिन्होंके विरोधपरिहार करके जो निर्णयआयाहै तिसते यथार्थ अर्थ जाननणा तिसते तिसजग्याभी कठिनता नहि है यहि मार्ग सभको स्वीकार करणेयोग्यहै ॥ तिसके आदविषे पहले प्रायश्चित्त शब्दका अर्थ लिखदेहैं इसमें माधवजीका अभिप्राय ऐसा है प्रायश्चित्तशब्द रूढिवृत्ति करके क्या समुदाय शक्तिकरके और अवयवशक्तिरूपयोगकरके पापकेंदूरकरणेको समर्थ जो कोई धर्म्मविशेष है

तिसको कहता है और संप्रदायके जाननेवाले पंडित पापके नाशकरणेमें समर्थ जो कोई नैमित्तिक कर्मविशेषहै प्रायश्चित्तशब्द तिस विषे प्रसिद्ध है ऐसा कहते हैं ॥ इसग्रं थका योग अंगिरा जीने दिखाया है प्रायइति प्रायनाम तपकाहै और चित्त नाम है निश्चयका सो तपनिश्चयकर्के मिलया होया प्रायश्चित्त किहाहै १ और अर्थकहतेहैं प्राय इति वाहुल्यतासे चित्तकोसमकर्के जो पाप खंडनके अर्थ देईदाहै और सभाने जो करवाईदा है सो प्रायश्चित्त कहीदाहै २ यहअर्थ युक्तहै कि १२ बारांवर्षके व्रत आ दिकके करणेसें अवश्य कर्के पाप दूर होताहै इस विश्वासका नाम निश्चयहै तिस कर्के युक्त

प्रायश्चित्तशब्दश्चायं पापक्षयार्थैकर्मविशेषे नैमित्तिके रूढ इत्याहुः संप्र दायविदो निबन्धकारादयः ॥ योगस्त्वंगिरसादर्शितः ॥ प्रायोनामतपः प्रोक्तंचित्तंनिश्चयउच्यते तपोनिश्चयसंयुक्तंप्रायश्चित्तंतदुच्यते १ प्रायश श्चसमंचित्तं चारयित्वाप्रदीयते पर्षदाकार्यतेयत्तुप्रायश्चित्तमितिस्मृतमि ति २ अनुष्ठितेनद्वादशवार्षिकादिनाऽवश्यंपापं निवर्त्ततइति विश्वासो निश्चयः तेनसंयुक्तं व्रतानुष्ठानलक्षणं तपःप्रायश्चित्तं पापिनोऽनुतापिन श्चित्तं व्याकुलं सद्विषमंभवति तच्च परिषदादिष्टेन व्रतानुष्ठानेन प्रायशो ऽवश्यं समंकार्यते तद्व्रतं प्रायश्चित्तं चित्तसमीकरणोपपादनं कारयित्वा प्रदीयतइति व्रतं चारयित्वा चित्तवैषम्यनिमित्तं पापंप्रदीयतेखंड्यतेवि नाश्यतइत्यर्थः यद्वा परिषद्युपविष्टानां सर्वेषां चित्तंयथा समं भवतितथा चारयित्वैकसत्येनविचार्य प्रदीयते विधीयते कार्यतेऽनुष्ठाप्यतइत्यर्थः

व्रतका आरंभ करणा यहि प्रायश्चित्त शब्दका अर्थहोया इसीको प्रकट कर्के कहतेहैं पापीका चित्त पापके चिंतन करणसें विषम क्या पहले व्याकुलहुंदाहै सो विद्यावानोंकी सभानेव्रतकेउ देशकर्के सम करीदा है तिसव्रतका नाम प्रायश्चित्तहै इसी अर्थको स्पष्टकर्के कहते चित्तेति कि चित्तको समकर्के पापं प्रदीयते क्या खंडनकरीदाहै अर्थात् विनाशकरीदाहै ऐस जाननणा यद्वेति अथवा ऐसाअर्थहै परिषद् जो सभा तिसविषे बैठेहोए सब लोकोंका चित्त जिस तरह सम होवे क्या इसको इतना प्रायश्चित्त देना उचित है ऐसे सबकाचित्त एक जैसा हुवे तिसतरहे विचार कर्के जो विधान करीदाहै क्या जो कृत्य करवाईदाहै सो प्रायश्चित्तहै

शूलपाणी जीनें तो ऐसा किहाहै कि प्रायो नाम इत्यादि अंगिराका वचन कहकर प्रयत होणेसे उपचित क्या प्रवृद्ध जो है अशुभ तिसको नाशकरे सो प्रायश्चित्त है यह हारीतजीका वचन अधिककल्पकर तिससे पापक्षयमात्रका साधन जो कर्म सो प्रायश्चित्तहै ऐसा स्थापनकियाहै परन्तु इसजगा ऐसा विचारहैं कि तुलापुरुषदान और अश्वमेध यज्ञ इत्यादिकोंकी व्यावृत्तिके लिये मात्रशब्दका प्रयोगहै क्या यहभी पापको दूरकरणेवालेहैं परन्तु इनकों प्रायश्चित्त नहि कहते और नागेश जो हैं प्रायश्चित्तेंदु- ग्रंथकेकर्त्ता सो ऐसा विचार कर्त्तेहैं यथाविध ना अनुष्ठान करणेसें प्रवृद्धहोये पापोंका नाश करणेवाला जो कर्म्म सो प्राय श्चित्तहै इसलक्षणकी अतिव्याप्ति तुलापुरुषदानादिविषे है तिसके हटाणेवास्तें (एव) इसशब्द-

* शूलपाणिना * तु प्रायोनाम तपःप्रोक्तमित्यंगिरोवचनमभिधाय प्रयतत्वाद्वोपचितमशुभंनाशयतीति प्रायश्चित्तमिति हारीतवचनमप्यधिकमुपन्यस्य तेन पापक्षयमात्रसाधनं कर्मप्रायश्चित्तमिति प्रायश्चित्तलक्षणं मात्रशब्दात्तुलापुरुषाश्वमेधादिव्यावृत्तिरित्युक्तं *नागेशेन* तु यद्यथाविध्यननुष्ठानाद्युपचिताशुभनाशकमेव तत्प्रायश्चित्तम् तुलापुरुषादावतिव्याप्तिवारणायैवेति नतु फलान्तरजनकमित्यर्थः पापनिवर्त्तनक्षमधर्मविशेषे योगरूढोऽयंशब्दइति तत्त्वम् संकेतविशेषसंबन्धेन प्रायश्चित्तशब्दवत्त्वमेवप्रायश्चित्तत्वम् अतएव क्रत्वंगभ्रेषप्रायश्चित्तेतद्व्यवहारइत्यन्येइत्यभिहितम् * काश्यपेन * तुलापुरुषस्यापि आत्मतुल्यं सुवर्णं वा दद्याद्विप्रतुष्टिकृदित्यनेन प्रायश्चित्तत्वमभ्यधायि एवं यजेद्वाश्वमेधेनेत्यादिनाऽश्वमेधस्यापियाज्ञवल्क्येनप्रायश्चित्ततोक्ता

काप्रयोगहै इसते होरकोई फलकाकरणेवाला नहि यह अर्थहै पापनिवृत्तिकरणेवाला कोई धर्म्म-विशेषहै तिसविषे योगरूढहै यहशब्द यहयथार्थ अर्थहै अथवा संकेतविशेषकर्के प्रायश्चित्तशब्द-वाला जो है सो प्रायश्चित्त है इसी वास्ते यज्ञकाअंगजहांविकृत होजावे तिसके प्रायश्चित्तविषे भी सो व्यवहार है ऐसाभी कईकहतें हैं ऐसा नागेशने किहा है अब काश्यप जीका मत कहतेहैं काश्यपेनेति काश्यपजीनें आत्माकेतुल्य सुवर्णदेवे कैसा सुवर्णहै जो ब्राह्मणकी प्रसन्नताकरणे वालाहै इत्यादिविषे तुलापुरुषकोभी प्रायश्चित्तत्व किहाहै इसी तरह अश्वमेधकर्के अथवा यज्ञकरे इत्यादिवचनकर्के याज्ञवल्क्यजीनें अश्वमेधकोभी प्रायश्चित्तत्वकिहाहै

और संवर्त्तजीभी अनादिष्ट पापोंविषे प्रायश्चित्त कहते हैं दानों कर्के होमो कर्के और जपों कर्के और नित्य प्राणायामों कर्के और वेदाभ्यास कर्के द्विजोत्तम पातकोंसे छूटजाताहै इसमे संशयनहिहै १ सुवर्णदान और गोदान तैसेहि भूमिदान जो है यह सभ शीघ्रहि पापोंको दूर करतेहैं जो पाप और जन्मविषे कीते होएहैं इस जन्मकी क्या बात है २ जोकोई तिलधेनुका दान संयमवाले ब्राह्मणकेतांयीं देताहै सोभी ब्रह्महत्यादिपापोंसे छूट जाताहै इसमे संशय कोई नाहिहै ३ अब और दानका प्रकार कहतेहैं मासइति महीनेके महीने यद पूर्णमासी आवे तिसविषे विशेष कर्के ब्राह्मणोकेतांयीं तिलदान यथाशक्तिसे देवे तबभी सभ पापोसे मुक्त होजाताहै ४ इसमै और विशेष है पापी पुरुष कार्त्तिकमहीनेकी पूर्णमा

॥ संवर्त्तनच ॥ अनादिष्टेषुपापेषुप्रायश्चित्तमथोच्यते दानैर्होमैर्जपैर्नित्यं प्राणायामैर्द्विजोत्तमः पातकेभ्यः प्रमुच्येतवेदाभ्यासान्नसंशयः १ सुवर्णदानंगोदानं भूमिदानंतथैवच नाशयन्त्याशुपापानि ह्यन्य जन्मकृतानिच २ तिलधेनुंचयोदद्यात्संयतायद्विजन्मने ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ३ मासेमासेतुसंप्राप्तेपौर्णमास्यांविशेषतः ब्राह्मणेभ्यस्तिलान्दत्त्वासर्वपापैःप्रमुच्यते ४ उपवासीनरोभूत्वापौर्णमास्यांचकार्त्तिके हिरण्यंवस्त्रमन्नंचदत्त्वामुच्येतदुष्कृतैः ५ अमावास्याद्वादशीचसंक्रांतिश्चविशेषतः एताःप्रशस्तास्तिथयोभानुवारस्तथैवच ६ तत्रस्नानंजपोहोमोब्राह्मणानांचभोजनम् उपवासस्तथादानमेकैकंपावयेन्नरम् ७ स्नातः शुचिर्धौतवस्त्रःकृतकार्योहितात्मभिः उपपातकशुध्यर्थंसहस्रपरिसंख्यया ८

सीवाले दिन उपवासी क्या निराहार व्रतकर्के सुवर्ण और वस्त्र और अन्न देकर्के सभपापोंसे मुक्त होताहै ५ अब शुभ तिथि वारका योग कहतेहैं अमेति अमावास्या द्वादशी संक्रांति यहातिथिआं शुभहैं और सूर्यवार ६ इसयोगविषे स्नानकरणा तीर्थविषे और जप गायत्रीका और हवन समस्त व्यस्त भावसे महाव्याहृतियोंका और ब्राह्मणोंको भोजन और उपवास क्या व्रत और दान इतनेपदार्थोंविचा कोईभीकरे तोभी सभ पापोंसे मुक्त होजाताहै अर्थात् यह सभ मनुष्यकों पवित्र करतेहैं ॥ ७ ॥ अब जपका प्रकार कहतेहैं स्नात इति प्रथम स्नानकर्के पवित्रहोवे और वस्त्र प्रक्षालन करे और हितात्मा जोहैं उपदेष्टा तिन्होंने कीताहै कार्य जिसने ऐसा होकर उपपातककी शुद्धिकेवास्ते एक १००० इजार गायत्रीका जपकरे ८

और जेकर महापापी होवे तद लक्षभोजं क्या पूर्वोक्तरीतिसें लक्ष ब्राह्मणकों भोजन देवे और गायत्रीका जपकरे तद शुद्ध होताहै ९ और जपका प्रकार कहतेहैं अभ्यसेदिति महापुण्य क्या अतिपवित्र और वेदकी माता जो गायत्री तत्सवितुः इत्यादि सूर्यकी ऋचा इसका संपूर्णपापोंकी शुद्धिके वास्ते अभ्यासकरे परंतु वनविषे नदीके किनारे बैठकर १० इसीका होर प्रकार कहतेहैं स्नात्वेति तहांजाकर विधिसें स्नानकर्के प्राणायामका अभ्यासकरे तिसकी विधि आगे आवेगी तीनो प्राणायामोकर्के पवित्र होकर गायत्रीका जप करे द्विजशब्दकर्के पहले वर्णत्रय जानणे ११ गायत्री जपके आरंभकी विधि कहतेहैं अछिन्नेति धोकर्के सुकाया जो वस्त्र तिसको पैहरकर स्थलमै जपकरे जेकर जलमै जप करणा हो तद गिल्लाहि वस्त्र धारणकरे

महापातकसंयुक्तोलक्षभोजंसदाद्विजः मुच्यतेसर्वपापेभ्योगायत्र्याश्चैव जापनात् ९ अभ्यसेच्चमहापुण्यांगायत्रींवेदमातरं गत्वाऽरण्यंनदीतीरेसर्वपापविशुद्धये १० स्नात्वाचविधिवत्तत्रप्राणायाममथाभ्यसेत् प्राणायामैस्त्रिभिःपूतोगायत्रींतुजपेद्द्विजः ११ अछिन्नवासाः स्थलगः शुचौ देशेसमाहितः पवित्रपाणिराचांतोगायत्र्याजपमारभेत् १२ ऐहिकामुष्मिकंपापंपापंसर्वंविशेषतः पंचरात्रेणगायत्रींजपमानोव्यपोहति १३ गायत्र्यास्तुपरंनास्तिशोधनंपापकर्मणाम् महाव्याहृतिसंयुक्तांप्राणायामेनसंयुताम् १४

और जिसस्थानमै बैठाहै सोस्थान पवित्रहोवें और समाहित क्या स्थिरचित्तवाला और पवित्रहैं हाथविषें जिसकें और आचांत क्या जो आचमन करचुकाहै सो गयत्रीके जपका आरंभ करे १२ इसका विशेषकर्के फल कहतेहैं ऐहिकेति ऐहिक क्या इसलोकविषे फल देणेवाले और परलोकविषें फलदेणेवाले जो पापहैं और विशेषतः क्या दोनों लोकोंविषे फल देणेवाले जो पाप जैसे लोकनिन्दा १ नरकवास २ नरकवासते अनंतर दारिद्र्यादियोग ३ इनको पूर्वोक्त विधिसे पंच दिनरात्र गायत्रीके जप करणेवाला दूरकर्ताहै परंतु यह फल प्रकीर्णकादि पापों विषें जानणा १३ इसीको विशेषकर्के कहतेहैं गायेति महाव्याहृतियोंकेसाथ और प्राणायामके सहित गायत्री जपके तुल्य और कोई भी पापको दूरकरणेवाला नहिहै १४ ॥

इसीका और विशेष कहतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्मचारी और मिताहार क्या थोडा भोजन करणेवाला और सभजीवोंपर दयावान् ऐसा होकर गायत्रीका लक्ष जप करे तद सभपापोंसें छूटजाताहै १५ और इसीका विशेषकहतेहैं अयाज्येति जिसको यज्ञ नहि कराणा तिसको यज्ञ करावे और निंदितजो है पतितादियोंका अन्न तिसको खावे तो आठ हजार गायत्रीके जपकरणेंसें शुद्ध होताहै १६ और भी विशेषहै अहेति प्रतिदिन जो द्विजोत्तम एक महीनाभर गायत्री का जप करे तो पापोंसें मुक्त होजाताहै जैसे सर्प अपनी कंचुकसें अलग होजाताहै यहां द्विजोत्तम पदसे वर्णत्रयका ग्रहण करणा ॥ १७ ॥ और गायत्रीको जो ब्राह्मणादि पवित्र होकर नित्य जपे सो परम स्थानविषे जाताहै वायुभूतः क्या वायुके वेगवाला

ब्रह्मचारीमिताहारःसर्वभूतहितेरतः गायत्र्यालक्षजप्येनसर्वपापैःप्रमुच्यते १५ अयाज्ययाजनंकृत्वाभुक्त्वाचान्नंविगर्हितम् गायत्र्यष्टसहस्रंतु जपंकृत्वाविमुच्यते १६ अहन्यहनियोऽधीतेगायत्रींवैद्विजोत्तमः मासेनमुच्यतेपापादुरगःकंचुकाद्यथा १७ गायत्रींयः सदाविप्रोजपते नियतःशुचिः सयातिपरमंस्थानं वायुभूतःखमूर्त्तिमान् ॥ १८ इत्यादिनोपचिताघनाशकत्वमुक्तं गोहिरण्यदानादीनाम् तत्रतुलापुरुषाश्वमेधादिषु पापनाशकत्वसाधर्म्येण प्रवर्त्तमानः प्रायश्चित्तशब्दोगौण एव न मुख्यइतिनागेशशूलपाण्योराशयः यद्वा यस्यकर्मणः पापनाश उत्पत्तिशिष्टस्तत्प्रायश्चित्तं यथा शिरःकपालीध्वजवान्भिक्षाशीकर्मवेदयन् ब्रह्महाद्वादशाब्दानिमितभुक्शुद्धिमाप्नुयात् इतिवचनेन द्वादशवार्षिक ब्रह्मचर्य्यं ब्रह्मघातजनितपापनाशेन सहैव बोधितम्

खमूर्त्तिमान् क्या ब्रह्मस्वरूपी होया २ इत्यादिग्रंथो विषे गोहिरण्यादि दानोंको प्रवृद्ध पापोंका नाशकत्व किहा है १८ और तिन्होंविषे तुलापुरुष और अश्वमेधादियों विषे पापनाशकत्व समान धर्म कर्के वर्त्तमान जो प्रायश्चित्तशब्द है सो गौण है यह नागेश और शूलपाणि जीका अभिप्राय है अथवा इसमें होर अभिप्राय है यद्वेति जिस कर्मका पापनाश उत्पत्ति कर्के शेष रहे अर्थात् जिसते पाप नष्ट होवें सो प्रायश्चित्तहै जैसे शिरः कपाली इससेलेकर १२ बारां वर्षका व्रत ब्राह्मणके मारणवालेवास्ते लिखाहै इस बचनकर्के बारांवर्षका ब्रह्मचर्य्य ब्राह्मणमारणेते होआ जो पाप तिसकेनाशके साथ हि जनायाहै

ततइति अपणी नाशकता करके बोधन करणा और अपणे नाशके इच्छाके अधीन जो इच्छाति सकाविषय होणा असेदोनोंकेसंबंधसे पापसंबंधिहोणा यहि प्रायश्चित्तत्वहै इहां (स्व)पदसे पापका ग्रहणहै तिसते असा सिद्ध होआ कि स्वर्गादिओंके निमित्त किये जो अश्वमेधादियज्ञ तिनको पापनाश करणेकी योग्यता तो है परन्तु प्रायश्चित्तता नहि है क्योंकि पापनाशके उद्देशकरके अप्रवृत्ति होणेसे जिस जगा ब्रह्मवधते उत्पन्नहोवे पापके नाशके उद्देशसे अश्वमेधादियों विषे प्रवृत्ति होवे तिसजगा याज्ञवल्क्य और काश्यपजीके वचनोविषे पापनाशक होणेसे तिन्हको भी प्रायश्चित्तत्व है यहि नागेश और शूलपाणि जीका अभिप्रायहै और जिसजगा संध्यावं

ततश्च स्वनाशकतया बोधितत्वस्वनाशेच्छाधीनेच्छाविषयत्वोभयसं
बन्धेन पापविशिष्टत्वमेव प्रायश्चित्तत्वम् ततश्च स्वर्गाद्यर्थंविधीय
मानाश्वमेधादौ पापनाशं प्रति स्वरूपयोग्यत्वेऽपि नप्रायाश्चित्तत्वम्
तत्र पापनाशोद्देशेनाप्रवृत्तेः यत्रतु ब्रह्मवधजनितपापनाशोद्देशेनैवप्रवृ
त्तिरश्वमेधादेस्तत्र याज्ञवल्क्यकाश्यपवचनयोरु त्पत्तिशिष्टपापनाशवैशि
ष्ट्यात्तदुद्देशेन प्रवृत्तेश्च प्रायश्चित्तत्वमिष्टमेवेति नागेशशूलपाण्योराशयः
यत्र च सन्ध्यावन्दनाद्यर्थवादवाक्ये विधूतपापास्तेयान्तिब्रह्मलोकमना
मयमित्यादिषु पापनाशोऽपिबोधितो ब्रह्मलोकप्राप्तिश्च तत्र संध्यावं
दनादीनां मुख्यफलतायाः ब्रह्मलोकावाप्तावेव सत्त्वेन न प्रायश्चित्तत्वं
केवलं तत्र पापनाशो यदन्हापापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यामिति
यदन्हाकुरुतेपापं तदन्हाप्रतिमुच्यतइतिमान्त्रवर्णिकत्वेनाऽऽनुषंगिकएव
वस्तुतो विविधेषु कर्मसु प्रवर्त्तमानं प्रायश्चित्तपदं नानार्थकमेव

दनादिओंके जो अर्थवाद वचन हैं विधूतेति जो संध्यावंदनकरदेहैं सो पापसे रहितहोकर अनामय ब्रह्मलोकको जाते हैं इन्हो वचनो विषे पापनाशभी किहा है और ब्रह्मलोककी प्राप्ति भी कहीहै तिसजगा संध्यावंदनादिकर्मोंका मुख्यफल ब्रह्मलोककी प्राप्ति है इसते उनको प्रायश्चित्तत्व नहिहै तिस करके यदन्हापापमकार्षंइत्यादि पापनाशकवचनोंको प्रासंगिकत्व हि किहाहै सिद्धांतकर्देहैं वस्तुतइति विचार करके देखिए तो प्रायश्चित्तपदार्थ अनेककर्मोंविषे वर्तमान है इसते नानार्थंहि है

क्रतु जो यज्ञ है तिसकी अंगवैगुण्यमे जो प्रायश्चित्त है सो और है सोई कहतेहैं प्रायइति प्रायपहनाम अंगके विनाशका और चित्तनाम तिसके जोडनेका है इस वचनसे अंगवैकल्य करके स्वर्गादिककी उत्पत्तिविषे असमर्थ जो यज्ञादि है फेर उसकी तिसविषे सामर्थ्यबोधन करके पापनाशादि अर्थकी संभावनामात्रके भी नाहोनेसें एवंचेति इसते यह सिद्ध हुआ कि प्रायश्चित्तशब्दकी तुल्यताहै भी परंतु अर्थकीतुल्यता नहि है और संकेतविशेष संबंधकै प्रायश्चित्तपदवाला होणा यहिअर्थ है असा नहि कहणेयोग्य तैसे संकेलको जनाणेवाला कोई प्रमाण नहि मिलता इससे और साडेसंकेतके संबंधको और कर्म्मोविषें ना होने करके

क्रत्वंगश्रेषादौ विधीयमाने कर्मविशेषे प्रवर्तमानः प्रायश्चित्तशब्दस्त्वन्य एव प्रायोविनाशपर्यायश्चित्तंसंधानमुच्यतइति वचनेनांगवैकल्येन स्वर्गादिजननाक्षमस्य यज्ञादेः पुनस्तत्क्षमतामात्रवोधनेन तत्र पापनाशादेरुक्तिसंभवस्याप्यभावात् एवंच प्रायश्चित्तशब्दसाम्येऽपि न तत्राऽर्थसाम्यम् संकेतविशेषसंबन्धेन प्रायश्चित्तपदवत्त्वमेव तत्त्वमिति त्वयुक्तमेव तथाविधसंकेतग्राहकप्रमाणानुपलम्भात् अस्मदादिसंकेतस्यच संबंधतायाः कर्मान्तरेषु व्यभिचारेणविनिगमनाविरहेणचासिद्धेरितिदिक् ❀ अथ पापस्वरूपं तन्निमित्तं च निरूप्यते तत्रादौ किंनाम पापत्वम् न तावत्तज्जातिविशेषः तस्य जातित्वसाधकस्य प्रमाणस्याऽभावात् नचनिषिद्धाचरणजन्यतावच्छेदकतया तत्सिद्धिः विहितानाचरणेनाऽपितदुत्पत्ते र्विहितस्याननुष्ठानादित्यनेनवोधनात्

और विनिगमक जो है एकका पक्षकरणेवाला तिसके ना होणेसे भी असिद्ध है यह मार्गदिखाया है इसीपर चलो ❀ अथेति अब पापकास्वरूप और तिसका निमित्त निरूपण करतेहैं तिसके आदिविषे क्या है पाप यह विचार होणा चाहिए सो कोईजातिविशेष भी नहि है तिसके साधकके अभावहोणेसे(प्रश्न)निषिद्ध जो आचरण तिसकी जन्यताके अवच्छेदककै जातिकी सिद्धि होवे अर्थात् जो वेदमै निषेध कीयाहै तिसके करणेसे पाप होताहै इससे पापत्वजाती की सिद्धि होवेगी (उत्तर) असा मत कहो विहित जो है संध्यावंदनादि तिसके नाकरणेसे भी तिसकी अर्थात् पापकी उत्पत्ति होणेसे इसका बोधक वचन है विहितस्येति

इसमें और विचार कर्तेहैं विहितेति विहितका नाकरणा और निषिद्धका करणा इन्हो दोनों विषे अनुगतरूपकर्के पापजनकताके कहणेको अशक्य होनेतें और इसमे पापजनकत्वरूप कर्के अनुगम होवेगा ऐसा कहने वालेको आत्माश्रय दोष आवताहै इसते यह अर्थ भी उचित नहि अपणी उत्पत्ति जहां अपणेंते होवें सो आत्माश्रयहै जैसें पापत्व क्या है कि पाप जनकत्व और इसमे और भी विचारहै क्या विहितानाचरण है अभाव और निषिद्धाचरण है भाव इनदोनोकी एकरूप कर्के कारणताके असंभवहोणेते अर्थात् भाव अभावका एकरूप कर्दे भी नहि हुंदा अभावतेंभी भावरूप पापकी उत्पत्ति कहीजावे गी आगे (प्रश्ण) दुःखजनकतावच्छेदक कोई धर्म्म विशेष है सोई पापत्व है (उत्तर) कुठारत्व जो है कुहाडेमें

विहितानाचरणनिषिद्धाचरणयोरनुगतरूपेण जनकतायाः दुर्वचस्त्वात् पापजनकत्वेनैवानुगमस्यात्माश्रयापत्त्याऽवाच्यत्वात् विहितानाचरणस्या भावरूपतया भावाभावयोरेकरूपकारणताया असंभवाच्च अभावादपि भावरूपपापोत्पत्तिस्तूपपादयिष्यते (नच) दुःखजनकतावच्छेदकधर्म्म एवतत् कुठारत्वादावतिप्रसक्तेः अथ यस्यव्यापाराद्वारिका दुःखोत्पादकता तद्वृत्तिधर्म्मएवतत् कुठारादेस्त्वाघातादिद्वारिकैव तदुत्पादकतेति नाति प्रसक्तिःअतएव गोवधादिजन्येऽपूर्वएव पापत्वं न गोवधादौ तस्य पापद्वा रैवदुःखजनकत्वात् पापस्य तु न तथा पापस्यैवव्यापारतायास्तंत्रकारा भिप्रेतत्वाद्व्यापारे च व्यापारान्तरस्यानभ्युपगमात्

कोई धर्म्म इत्यादिविषे अतिव्याप्ति होवेगी इसते यह नहि मन्नना चाहिए (प्रश्ण) जिसके व्यापारविना दुःख होवे तिसविषे रहणेवाला जो धर्म्म है सोई पापत्व है जेडे कुठारादि कहेहैं सो घातरूप व्यापार द्वारा दुःखको पैदे कर्ते हैं तिसतें तिन्हांविषें अतिव्याप्ति नहि आवेगी इसी कर्के गोवधादिसे होआ जो अपूर्व है उसीको पापत्व है कोई गोवधको नहि है क्योंकि तिस को पापद्वारा दुःखका जनक होणेते और पापको तैसे नहि पापकोहि व्यापारताको तंत्रकार जो शास्त्रकारहैं तिनको अभिप्रेतहोणेते अर्थात् शास्त्रकार पापकोहि दुःखजनकताको व्यापार मानते हैं और व्यापारविषे होर कोई व्यापार नहि इसके स्वीकारते ❀

इसमें मतांतर क्या होरमतकहतेहैं केषामिति केईओंकेमतविषे गोवधतें आदिलेकर जो प्रहारादि हैं तिन्हा विषेहि पापपदका व्यवहारहै सो जैसे घृतको आयु कहतेहैं तैसा उपचारमात्रहै कोई यथार्थ नहि इसका खंडन कर्तेहैं मैवं ऐसा मतकहों कि गोवध परंपरा से दुःखकोल्यावेगा परंतु आघातजो ताडना और चर्म्मका वेधनायहसाक्षात्‌हि दुःखके हेतुहैं इनविषे जो अतिव्याप्ति है तिसको कदी भी नहिदूरहोणेते और जिस जगा प्रायश्चित्त कर्के पाप दूर होगयाहै उस जगा दुःख जनकताके ना होणेते अव्याप्तिको कौन दूर करेगा इसते जो दुःखको उत्पन्न करे तिसी कानाम पाप है यहभी किसीका कहणा दूरहोआ जो पिच्छे किहाहै चर्म्मभेदादिस्थल तिसबिषें अतिव्याप्तिके ना दूरहोणेतें ❀ इसविषें कोई विचारककें कहतेहैं अत्रेति दुःखककें नाश्य होकर और दुःखजनकतावच्छेदक धर्म्मवत्‌त्व जो है सोई पापका लक्षण है कुठारा

केषांचिद्गोबधादावेवपापपदव्यवहारस्त्वायुर्वैघृतमितिवदौपचारिक एवेति चे न्मैवं एवमप्याघाते त्वग्भेदे वा साक्षादेवदुःखजनकतयाऽव्यभिचारतादवस्थ्या त्‌ यत्रप्रायश्चित्तेन नष्टंपापं तत्रदुःखजनकतायाअसत्त्वेनाऽव्याप्तेश्च एतेन दुःखजनकत्वयोग्यत्वमेव तत्त्वमित्यपिनिरस्तं उक्तस्थलेऽतिव्याप्तेरवा रणात्‌ अत्राहुः दुःखनाश्यत्वेसतिदुःखजनकतावच्छेदकधर्म्मवत्त्वं पापल क्षणम्‌ कुठारादौ व्यभिचारवारणाय विशेषणम्‌ इच्छादौव्यभिचारवारणाय विशेष्यं आत्मविशेषगुणानां स्वोत्तरोत्पन्नविशेषगुणनाश्यत्वनियमात्‌ प्रायश्चित्ताचरणेन नष्टेत्वव्याप्तिवारणाय स्वनाशकदुःखंप्रति स्वरूपयोग्य त्वमिति वा परिष्कार्य्यम्‌ यदितु प्रसिध्यति तादृशीच्छा यया दुःखंनि यतमुत्पद्यते यथा स्वमरणविषयिणी स्वेष्टतमवस्त्वन्तरनाशविषयिणी वा तर्ह्ययोग्यत्वे सतीति विशेषणं देयं इच्छायाश्च प्रत्यक्षयोग्यत्वान्नदोषः

दिविषे दोषके दूरकरणवास्ते विशेषणहै और इच्छादिविषे व्यभिचार दूरकरणवास्ते विशेष्यहै आत्माके विशेषगुणोको अपणेतें उत्तर क्षणविषे उत्पन्न होए जो विशेष गुणहैं तिन्हाकर्के नाश्यत्व क्या नाशहोणा तिसका नियम होणेतें ❀ और जो पाप प्रायश्चित्तके करणेतें नष्ट होआ है तिसमें अव्याप्ति रूप दोषहटाणे वास्ते अपणा नाशकरणेवाले दुःखप्रति स्वरूपयोग्यत्व पद देणेतें भी परिष्कार्य्य क्या दोषदूरकरणे योग्यहै स्वरूपयोग्यत्व नाम उसकाहै जो कारणतावच्छेदक धर्म्म होवे ❀ अर्थान्तर इसमें ल्याउंदे हैं न यदीति जेकर यह बात प्रसिद्ध है कि ऐसी भीइच्छा है जिसते नियत दुःख पैदे होवे जैसे किसेको अपणे मरणेकी इच्छा है और दूसरी कोई इष्टतम वस्तुके वियोगकी अथवा इच्छाहै तो अयोग्यत्वे सति यह विशेषण देणा इसतें दोष दूर होवेगा इच्छाको प्रत्यक्षके योग्य होणेतें

क्वचिदिति और किते २ महा पापादिकी इच्छाका भी निषेध होणेतें तिस बिषे पापत्व निश्चित हि है सो इसलक्षण कर्के संगृहीत नहि हो सक्ता तिसका मानस प्रत्यक्ष होणेतें इसमे नहि भ्रम करणा योग्य तिसविषे भी तैसी इच्छातें अपूर्व जो है पाप तिसकी उत्पत्ति को इष्ट होणेते अन्यथा ऐसा नहि स्वीकारकरो तो इस इच्छातें होर देहविषे जो किसे दिन होनवालाहै उसविषे दुःखोत्पत्तिका अयोग होंबे जिसतें कारण जो है सो कार्यके पूर्वक्षणविषे हुंदा है इसका नियम होणेतें ❀ अब लक्षण कहणेते अनंतर पापके निमित्त कहते हैं इसविषें मनुजीका बचन है अकुर्वन्निति वेदाविहितको नहि करणा और वेदविषे जो निंदित है तिसको करणा २ और इन्द्रियोंके विषयविषे प्रीती होणी

क्वचित्क्वचिन्महापापादीच्छाया अपि निषेधात्तत्र पापत्वनिष्टं तच्चैतल्लक्षणेन न संगृह्यते तस्या मानसप्रत्यक्षग्राह्यत्वादिति तु न भ्रमितव्यम् तत्रापि तादृशेच्छातोऽपूर्वोत्पत्तेरवैष्टव्यत्वात् अन्यथा इदानींतनेच्छातः शरीरान्तरे विप्रकृष्टतमकालभाविनि दुःखोत्पत्तेरयोगात् कारणस्य कार्याव्यवहितप्राक्क्षणस्थायित्वनियमात् ॥ तन्निमित्तं च किंकिमत्राह (मनुः) अकुर्वन्विहितंकर्म्म निंदितंचसमाचरन् प्रसक्तश्चेंद्रियार्थेषु प्रायश्चित्तीयतेनरइति विहितं कर्म नित्यं संध्योपासनादि नैमित्तिकं शवस्पर्शादौ स्नानादि तदकुर्वन् निषिद्धं हिंसादि तदनुतिष्ठन् इन्द्रियार्थेषु स्रक्चन्दनादिष्वत्यन्तासक्तिं कुर्वन् नरो मनुष्यमात्रमिति कुल्लूकभट्टः शूलपाणिश्च नरउपनीतोऽनुपनीतो वेत्यपरार्कः

इन्होंकर्के मनुष्य प्रायश्चित्तका अधिकारी हुंदाहैं इसीके अर्थको प्रकटकर्के कहंदे हैं विहितमिति विहितहैं नित्यकर्म्म संध्योपासनादि और नैमित्तिकहैं मृतस्पर्शादिहोयां स्नानादि कर्म क्या मुडदे के साथ छोकर्के फेर स्नान करणा तिन्हको तो नाहि करणा और निषिद्ध कीयहैं हिंसादि तिनको करणा और इन्द्रियोंके अर्थ जो स्रक् पुष्पमाला और चन्दनादि इन्हांविषे अत्यंत आसक्तिवा प्रीति तिसको कर्दाहोआ नर कहणेतें कोई मनुष्य होवें सभको प्रायश्चित्तका अधिकार है यह कुल्लूकभट्ट और शूलपाणिजीका आशय है और नर कहणेतें यज्ञोपवीतवाला होवे अथवा तिस विनाहोवे यह अपरार्कवालेका मत है

प्रायश्चित्तीयते क्या तिस कर्के दूर करने योग्य जो पाप तिसका भागी हुंदा है सो याज्ञवल्क्यजी कहते हैं विहितस्येति स्पष्टार्थहै इन्हांते पुरुष पतित हुंदाहै ⊛ अब पापाविशेष कर्के प्राप्त हुंदिआं योनिआंका जो विशेष क्या भेदहै तिसको कहतेहैं मनुजी शरीरजैरिति शरीरते पैदे होए कर्म्मोके दोषोंकर्के पुरुष स्थावरताको प्राप्तहुंदाहै और वाणीकर्के होए २ पापोंकर्के पक्षियोंदीआं और मृगोंकीआं योनियां विषें प्राप्तहुंदाहै और मानस जो हैं मनतें कीते होए पाप तिन्हों कर्के अंत्यजाति जो है नीचजाति तिस विषें जन्मपांदाहै ॥ इसमे विचार कर्देहैं कि यद्यपि

प्रायश्चित्तीयते तदपनोद्य पापभाग्भवति तथा याज्ञवल्क्यः ⊛ विहितस्याननुष्ठानान्निंदितस्यचसेवनात् अनिग्रहाच्चेन्द्रियाणांनरः पतनमृच्छतीति पापविशेषेणयोनिविशेषमाह(मनुः)शरीरजैःकर्मदोषैर्यातिस्थावरतांनरः वाचिकैःपक्षिमृगताम्मानसैरन्त्यजातिताम् १ यद्यपि नराधर्म्ममधर्म्मंचोभयमेवसेवंते तथापिवाहुल्याभिप्रायणपापफलमुक्तम् किञ्चपापिष्ठानांशारिरवाचीकमानसिकान्येवत्रीणि पापानि संभवंति तथापि वाहुल्याभिप्रायेण इति व्याख्यातंवाहुल्येन शरीरकर्मजपापैर्युक्तः स्थावरत्वं मानुषः प्राप्नोति वाहुल्येनवाकृतैः पक्षित्वं मृगत्वं वा वाहुल्येन मनसाकृतैश्चांडालादित्वं प्राप्नोति १ तथाच इहदुश्चरितैः केचित्केचित्पूर्वकृतैस्तथा प्राप्नुवंतिदुरात्मानोनरारूपविपर्ययम् २ केचिन्नरा ऐहिकैः पापैः केचित्तु पूर्वजन्मभवैः रूपाविपर्ययं क्षयरोगादिकृतम्

पापिआं के पूर्वोक्त प्रकार कर्के दोनो तहांके कर्महैं तथापि लोक वहुत अधर्महि कर्देहैं और पुण्य थोडा कर्दे हैं इसतें पापका हिफल दिखाया है ॥ इसमे ऐसा भी विचार है कि पापिआंके पाप सभजगा त्रयप्रकारके हि हैं परंतु शारीरिक क्या देहवाले पाप वहुते होण तां स्थावरयोनि और वाणीवाले वहुतहोण तां पक्षिमृगादियोनि और मनके कीते होये वहुत होण तां चांडालादियोनि प्राप्त हुंदीहै १ तैसेहि होर कहतेहैं इहेति इहां कीते होए पापांकर्के और पूर्व जन्ममे कीते होये पापों कर्के के दुरात्मा पुरुष रूपविपर्य्यय क्या क्षयरोगादि कर्के रूपांतरको पहुंचदे हैन इसीको स्पष्टकर्के लिखतेहैं केचिदिति

विष्णुपुराणके वचनको लिखदेहैं नरेति नरक जो फल इस को महर्षिलोक कर्म्मादे लोपका अर्थात् पुण्यके नाशका फल कहतेहैं इसीमें यमजीका वाक्यहै सुरेति मदि रापीणवाला १ और ब्राह्मण और गौके मारणे वाला ३ और सुवर्णके चुराणेवाला ४ और पतितके साथ व्यवहारकरणवाला ५ और कृतघ्न क्या जो किसेका उपकार नहि जाणे ६ और गुरुकीस्त्रीको स्वीकार करणेवाला ७ एह सभ नरकोंविषे क्रमकर्के पैंदेहैं तिन्होंविषे जो वेदविहित का नहि करणा इसको पापकी उत्पत्तिकरणे विषे विशेष माधव जीने किह्याहै तथाहीति (प्रष्ण) निंदितका सेवन है भाव तिसते भावरूप पापकी उत्पत्ति जो कहीहै सो उचित हैं परंतु विहितका नहि करणा सो है अभाव इसते भावरूपकी उत्पत्ति

विष्णुपुराणम् ॥ नरकंकर्मणांलोपात्फलमाहुर्महर्षयः ॥ यमः ॥ सुरापो ब्रह्महागोघ्नः सुवर्णस्तेयकृन्नरः पतितैस्संप्रयुक्तश्चकृतघ्नोगुरुतल्पगः एतेप तंतिसर्वेपुनरकेष्वनुपूर्वशइति तत्र विहितानुष्ठानाभावस्य पापोत्पादकत्वे विशेषो माधवीये तथाहि (ननु) निन्दितसेवनाद्भावरूपाद्दुरितोत्पत्ता वपि विहिताकरणादभावात्कथंदुरितोत्पत्तिः नह्यभावाद्भावउत्पद्यमानः क्वचिद्दृष्टः अत्रकेचिदाहुः संध्यावन्दनादिविहितानुष्ठानमग्निहोत्राद्य नधिकाररूपाशुचित्वद्योतकम् अयमेवार्थोऽकुर्वन् प्रत्यवैतीत्यनेनाभिधी यते नत्वनुष्ठानाभावाद्भावरूपस्य दुरितस्योत्पत्तिरभिधीयते सचाऽनधि कारः प्रायश्चित्तेन निवर्त्ततइति अपरे पुनराहुः अकुर्वन्निति लक्षणार्थे शतृप्रत्ययः यदेतद्विहिताकरणं तदेतत्प्राग्भवीयनिषिद्धाचरणजन्यदुरि तापूर्वसद्भावस्य लिंगम् तदेवदुरितंप्रायश्चित्तेन निवर्त्ततइति

क्यों होई किसे जगा भी अभावसे भावकी उत्पत्ति नहि देखी इसमे कोई ऐसा विचार कर्देहैं संध्या बंदनादि जो हैं विहितकर्म इनका नहि करणा यह अग्निहोत्रादि शुभकर्म्मों विषे अनधि काररूप अपवित्रताको द्योतन करदाहै एहि अर्थ अकुर्वन्प्रत्यवैति इसकर्के कहीदाहै और अनुष्ठानके अभावसे भावरूपकी उत्पत्ति नहि है सोई अनधिकार प्रायश्चित्तकर्के दूर हुंदाहै और विद्वान् ऐसा कहतेहैं अकुर्वन् इत्थें लक्षणाविषे शतृप्रत्यय है तिसका ऐसा अर्थ है जो यह विहितका नहि करणा सो एह पूर्वजन्मके निषिद्धाचरण ते होआ जो पाप तिस के होणेका चिन्हहै सोई पाप प्रायश्चित्त कर्के दूर हुंदाहै

होर कोई अैसा भी कहदेंहैं अभावसे भाव नहि पैदे हुंदा यह कोई सार्वत्रिक वार्त्ता नहि किंतु न्यायमत विषे प्रागभाव सभका कारण है और मीमांसकोनें और भट्टजीने भी अभावसे भावकी उत्पत्ति कहीहै क्यों कि योग्यानुपलब्धिहै स्वरूप जिसका अैसा अभाव जो है प्रमाण तिसतै घटादियोंकें अभाव विषे विषय प्रमिति क्या विषयबोधरूप जो भाव तिसकी उत्पत्ति कहणेतै और प्रभाकर के मतवाले कहतेहैं कि भावहि किसे कारणते अभाव किहा जाताहै कोई अभाव पदार्थ वक्खरा नहि तिसते यह सिद्ध होआ कि विहिताऽकरण भी एक भाव हि है जेकर तिसतेंप्रत्यवाय उत्पन्न होवे तद तेरेंको कौणसी हानी है ❀ अब इसमे अपणा विचार कहतेहैं (अथेति) प्रत्यवाय नाम पापरूप अपूर्वका है सो कृतिका साध्य हो करके कृतिका

अन्येप्येवंसमादधते ❀ अभावाद्भावोनोत्पद्यतइति नायमेकान्तः तार्किकमतेप्रागभावस्य कारणत्वात् मीमांसकमते भट्टैस्तावदभावाद्भावोत्पत्तिरभ्युपगता योग्यानुपलब्धिलक्षणादभावात्प्रमाणाद् घटाद्यभावे विषयप्रमितेर्भावरूपायाजननात् प्राभाकरैश्च भावएवाऽभ्युपगम्यते भावान्तरमभावोहिकयाचिद्व्यपेक्षयेत्युदीरणात् तथाच सति विहिताकरणमपिभावान्तरमितिकृत्वा तस्मात्प्रत्यवाय उत्पद्यतां का तव हानिः ❀ अथोच्यते ❀ प्रत्यवायो नाम दुरितापूर्वं तच्च कृतिसाध्यत्वेसति कृत्युद्देश्यं तथाच विहिताकरणस्य कृतिरूपत्वाभावादपूर्वजनकत्वं नास्तीति नाऽयंदोषः तस्य लक्षणस्य विहितप्रतिषिद्धजन्यापूर्वविषयत्वेन संकोचनीयत्वात् अन्यथा उपेक्षालस्याभ्यामकृतिरूपाभ्यांदुरितापूर्वानुत्पादप्रसंगात् उपेक्षाजन्यं च दुरितापूर्वं स्कंदपुराणे दर्शितम् नाभिरक्षतियेशक्ता दीनंचातुरमाश्रितंआर्त्तंनचानुकम्पंते तेवैनिरयगामिन इति

उद्देश्यहै अर्थात् किसेके नामपर प्रयत्न करणेका विषयहै और जो है विहितका नहिकरणा तिसको कृतिरूपत्वके ना होणेते अपूर्वजनकत्व नहि है इसते यह दोष नहिहै तिसलक्षणकों विहित और निषिद्ध जो कर्म्महै तिसते पैदे होआ जो अपूर्व तिस विषयत्व करके संकोचकरणेके योग्य होणेते अर्थात् विहितनिषिद्धकों हि ओह लक्षणविषयकर्दाहै कोई विहितके ना करणेमे नहि जेकर इसको नहि मानो तो उपेक्षाजाणके कर्म्म नहि करणा और आलस्य एहदोनोंकृतिरूपवालें जो नहि इनकर्के पापकीउत्पत्ति हुंदीहै परंतु नाहोणी चाहिए उपेक्षाकर्के पाप होताहै सो स्कंदपुराणविषे लिखयाहै नाभीति जो पुरुष समर्थहोण और उनको दुःखी और दरिद्री जो आश्रित होआहै उसकी रक्षा नहि करण और आतुरपर कृपा ना करण सो नरक कों जातेहैं

आलसकर्के जो पाप है सो मनुजीनें किहाहे अनेति वेदोंका आलसतें अभ्यास ना करणा और आचारका उल्लंघनकरणा आलसहोणेतें और अन्नदोषतें ब्राह्मणकों मृत्यु मारयाचांदाहै ❀ अब पुछदेहैं कि तिस जगाभी किसे तहाँ कृति है इस बातको मनदे हो तो इत्थे भी विहितको उल्लंघनरूप कृति है इसते यह सिद्ध होआ कि वहुतस्मृतिवचन ना करणाविषे प्रत्यवायपर हैं सो सभ सार्थक होजानगे ❀ मतांतरकहतेहैं ईश्वरेति ईश्वरवादी जो हैं आस्ति कलोक तिनके मतविषे विहितका नहि करणा यह परमेश्वरकी आज्ञाका उल्लंघनहै इसतें इन कोभी कृतिरूपता स्पष्टहोई इसमे स्मृतिवचन भी है श्रुतीति ईश्वर कहतेहैं श्रुति और स्मृति यह

आलस्यजन्यं चाऽपमृत्युनिमित्तं दुरितापूर्वं मनुना ❀ अनभ्यासाच्चवेदाना माचारस्यचलंघनात् आलस्यादन्नदोषाच्चमृत्युर्विप्रान्जिघांसतीति ❀ अथ कथंचित्तत्रकृतिः संपद्यते तर्ह्यत्रापि विहितोल्लंघनलक्षणा कृतिरस्तु एवं च सति वहूनिस्मृतिवचनान्यकरणे प्रत्यवायपराणि स्वारस्येनाऽर्थवंति भविष्यन्ति ईश्वरवादिनां तु विहिताकरणस्याज्ञोल्लंघनरूपत्वात्कृतिरू पत्वं विस्पष्टम् अतएव स्मर्य्यते श्रुतिस्मृतीममैवाज्ञेयस्तेउल्लंघ्यवर्त्तते आज्ञाच्छेदीममद्वेषीनसभक्तोनवैष्णवइति सर्वथा विहितमकुर्वतः प्राय श्चित्तनिमित्तं दुरितापूर्वमस्त्येव निन्दितसेवनेत्वऽविवादं दुरितापूर्वं(ननु) अनिग्रहाच्चेन्द्रियाणामिति पृथगुपादानमयुक्तं विहिताकरणान्निंदितसे वनाच्चान्यस्य तृतीयस्य दुरितहेतोरभावात् मैवम् अस्योभयात्मकत्वे न तृती यत्वोपपत्तेः

दोनो मेरी आज्ञाहैं जो कोई इनका उल्लंघन कर्के वर्त्तदाहै सो पुरुष मेरी आज्ञाका छेदन कर्दाहै और मेरा द्वेषीहै क्या मेरा विरोधीहै और अभक्तहै और वैष्णव भी नहिहै इति इसते क हतेहैं कि सर्वप्रकारसें जो वेदविहित नही करे तो उसकोप्रायश्चित्तका निमित्त दुरितापूर्व क्या पाप है और निन्दितसेवनविषे पापहोणेमे कोई भी विवाद नहि(प्रश्ण)इंद्रियोंके नहि रोकणेतें पाप हुंदाहै यह तीसरा हेतु जुदे कर्के क्यों किहाहै नहि कहणाचाहिए(उत्तर)ऐसामत कहो इसके दोनो स्वरूपहैन विहिताकरणऔर निंदितकासेवन इसकर्के तीसरा रूपहोणा योग्यहै सोईकहतेहैं

तयेति समझाहि इंद्रियोंके अर्थविषे प्रसक्त ना होवें इस विषे इंद्रियके विषयमें प्रीति की निंदा है सो शब्दसे कही है और स्नातक व्रतप्रकरणके मध्यविषे इसका पाठहै तिसविषे इंद्रियप्रसंगके निषेधका संकल्प विधेय है इस अर्थसे भी निषेध आया तिसते अनिग्रह तीसरा हेतु पापका है यहि विहिताकरणादि हेतुत्रय पापके पैदे करणे वाले प्रश्नोत्तर करके दृढ कीतेहैं मदनपारिजातविषे ॥ सो कहतेहैं (प्रश्न) अकुर्वन् विहितं इत्यादि जो किहाहै इस वचनकर्के पाप तो प्रायश्चित्तविषे निमित्त है और पाप विषे विहिताकरणादि हेतुत्रय हैं यह किहा है तैसे जो पुंश्चली व्यभिचारिणी स्त्री और वानर

तथाहि इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु न प्रसज्येतकामतइति इन्द्रियप्रसक्तेर्निन्दितत्वं शाब्दम् स्नातकव्रतप्रकरणमध्ये पाठात्प्रसक्तिप्रकरणनिषेधसंकल्पस्य तत्र विधेयत्वेनाऽवगमात् विहितत्वमार्थिकम् तथाचाऽनिग्रहस्योभयोल्लंघनरूपत्वात्तृतीयनिमित्तत्वेन पृथगुपादानम् विहिताकरणादित्रितयस्यैव पापोत्पादकत्वमाक्षेपसमाधानाभ्यां पुनर्दृढीकृतं मदनपारिजाते तथाहि (ननु) अनेन वचनेन पापं प्रायश्चित्ते निमित्तं पापे च विहिताकरणादित्रयमेव हेतु रित्युक्तम् तथाच पुंश्चलीवानरखरादिदष्टस्य मिथ्याभिशप्तादेश्च विहिताकरणादिष्वन्यतमस्याऽपिहेतोरभावेन पापाभावात्कथं पुंश्चलीवानरखरैर्दष्टः श्वोष्ट्रादिवायसैः प्राणायामंजलेकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्धयतीत्यादिभिर्याज्ञवल्क्यादिवाक्यैस्तस्य प्रायश्चित्तं विधीयते ※ उच्यते एतत्प्रायश्चित्तविधानात्पापे च हेतुत्रयस्यैवकथनाज्जन्मांतराचरितनिंदितसेवनादिजन्यं मिथ्याभिशापादिलिंगाक्षेप्यमेतत्प्रायश्चित्तविनाश्यं तस्य पापमस्तीति गम्यते तथाच तत्क्षयार्थं प्रायश्चित्तविधानमिति युक्तमेवपापे हेतुत्रयकथनम्

और गधा इनका दंशहोणा और मिथ्या किसीको दूषण लगाणा इत्यादि जो पापहैं सो इन्हों तीनो हेतुआं विचों किसे कर्के भी नहि होते तो किसकर्के उनके वास्ते प्रायश्चित्त किहाहै क्यां पुंश्चलीआदिकका जिसको दंदलगे सो प्राणायाम जलविषे कर्के घृतपीने सें शुद्धहुंदाहै इत्यादि याज्ञवल्क्यादि मुनियों नें सो प्रायश्चित्त नाहिं कहणा था(उत्तर)उच्यते इति इस प्रायश्चित्तके विधान होणेते और पापविषे हेतुत्रयको हि दिखाणेतें जन्मांतर विषे क्या और किसे जन्मविषे कीते होए पापोंका प्रायश्चित्त उक्तविषयविषेमिथ्याभिशापादि निमित्त द्वारा किहाहै ऐसा प्रतीत हुंदाहै तिसतें जन्मांतरके कीते होए पापके क्षयवास्ते प्रायश्चित्त करणायोग्य है

श्रोर पापविषे तीन हेतु किहेहैं सोभी योग्य हैं ॥ श्रोर इसमे मनुजीभी पापद्वारा विहिताकरणादि त्रयकों हि प्रायश्चित्तका प्रयोजक कहतेहैं प्रयोजकनाम परंपरा कारणदा है सो वचन लिखीदा है अकुर्वन्निति इसका अर्थ पिच्छे होचुकाहे तिसतें प्राय श्चित्त मे पाप हि निमित्त है श्रोर पापविषे हेतु तीनहैं एह वात सिद्धहोई अब कहते हैं कि पाप तो सिद्ध होश्रा ❀ परंतु तिसकी संख्या कितनी है इसवास्ते प्रायश्चित्तक दंवादि जो ग्रंथहैं तिन्हांविषे कही जो पापकी गणना सो लिखीदीहै सो गणना पृष्टाकोटि न्यायकर्के नहि होसकदी क्या जिसको पुच्छयाहोये तिसका थोडा वहुत कर्के सभका उत्तरकहणा इसकानाम पृष्टाकोटिन्यायहै जैसे चोरीके दंडवास्ते पुच्छया

मनुरपि पापद्वारा विहिताकरणादित्रयस्यैव प्रायश्चित्तप्रयोजकत्व माह अकुर्वन्विहितं कर्मनिन्दितंच समाचरन् प्रसक्तश्चेन्द्रियार्थे षुप्रायश्चित्तीयतेनरइति तस्मात्प्रायश्चित्ते पापमेव निमित्तं पापे च हेतुत्रयमेवेति सिद्धम् ❀ अथ सिद्धे दुरिते का तत्संख्येति प्रायश्चित्तकदंवाद्युक्ता गणना लिख्यते . सा च पृष्टाकोटिन्यायेन वक्तुमशक्याऽपि स्थूलोपाधिविषयत्वेन शक्या यथा महापातकम् १ अतिपातकम् २ पातकम् ३ इदमेवाऽनुपातकम् ३ उपपातकम् ४ इमानि पातित्यहेतूनि तथा जातिभ्रंशकराणि ५ संकरी करणानि ६ मलिनीकरणानि ७ अपात्रीकरणानि ८ प्रकीर्णकानि ९

होश्रा वस्त्र भूषण भाजन काष्ठकुद्दालादि गणना से कहणा होवे तो अनंतहै कह नहि सक्कीदा सो स्थूल २ उपाधि कर्के हि कहणेको शक्य है जैसे सुवर्णका चोर श्रोर होर किसे वस्तुका चोर इसरीतीसे गणना करीदीहै यथेति प्रथम महापातक १ श्रोर अतिपातक २ श्रोर पातक ३ इसीकों अनुपातकभी कहते हैं उपपातक ४ यह चार पातित्यके हेतु हैं अर्थात्इन्हों पापोंके करणवाला पतित हुंदाहै पहले त्रयपापके करणेवाला एकवारी करणेते भी पतित होताहै श्रोर चतुर्थके करणेवाला वहुतवार करणेसे पतित हुंदाहै यह विचार आगे आवेगा जातीति यह अर्थ स्पष्ट है

वकीर्ण का नाम दूसरा (अवकीर्ण) है अथेति इनके उद्देश क्रमकर्के भेद दिखायो देहैं ब्राह्मणकामारणा १ मदिराकापीणा २ ब्राह्मणके सुवर्णका १६ मासेतें अधिक चुराणा ३ और गुरु स्त्रीकों भोगणा ४ और इनकें संसर्गवाळा ५ यह पंज महापाप कहेहैं और माताबिषें गमन करणा १ और कन्याविषे २ और स्नुषा क्या नोआंविषे ३ और भगिनीविषे गमन ४ यहचारे अतिपातक हैं तैसेहि यज्ञ विषे स्थित क्षत्रियकावध १ और यज्ञविषे स्थित वैश्यका वध २ और रजस्वला स्त्रीका बध ३ और गर्भवतीस्त्रीका. ४ और समानगोत्रवाळी स्त्रीका क्या अपनेगोत्रवाली स्त्रीका. ५ और ब्राह्मणका अविज्ञात जो गर्भ तिसका. ६ और शरणागतका जो मारणाहै ७ और गुरुओंका अनादर

अवकीर्णानीतिकचित् अथैषामुद्देशक्रमानुसारेण भेदाः ब्रह्महत्या १ सुरापानं २ स्तेयम् ३ गुर्वंगनागमः ४ एतत्संसर्गश्चेति ५ पंच महापातकानि मातृगमनं १ दुहितृगमनम् २ स्नुषागमनम् ३ भगिनीगमनंचेति ४ चत्वार्य्यतिपातकानि ॥ यागस्थक्षत्रियवधः १ यागस्थवैश्यवधः २ रजस्वलायावधः ०३ अन्तर्वत्न्याव ४ सगोत्राव- ५ ब्राह्मणस्याविज्ञातगर्भस्य ६ शरणागतस्यघातनम् ७ गुर्वधिक्षेपः सतु वहुविधः गुरुप्रतिकूलता ८ गुरूपरोधः ९ गुरुणासहवाग्विरोधः १० गुरुप्रत्यर्थिता ११ गुरुस्पर्द्धालुता १२ गुरोरनृताभिशंसनम् १३ वेदनिंदा १४ सुहृद्वधः १५ अधीतवेदविस्मरणं १६ विश्वस्ताविषदानं १७ ब्राह्मणश्वासरोधश्चेति १८ ब्रह्महत्यासमानि ⊛ निषिद्धभक्षणं १ कौटिल्यंराजविषये २ स्वोत्कर्षार्थराजकुलादावनृतभाषणं ३

सो वहुत तरांकाहै एक गुरुयोंकी प्रतिकूलता क्या बिरोधीहोणा ८ और दूसरा गुरुका रोकणा जो बातसें अथवा वादार्थसें ९ और गुरुओंके साथ वाग्विरोध १० और गुरुकी प्रत्यर्थिता क्या जीविकाका विघात ११ और गुरुओंके साथ स्पर्द्धा क्या परोक्षनिंदा १२ और गुरुके अर्थ झूठकहणा अथवा उनके साथ झूठ कहणा १३ और वेदकी निंदा १४ मित्रका मारणा १५ और पढेहोए वेदका विस्मरण १६ विश्वासपर रहणवाले को विषदेणा १७ और ब्राह्मणका श्वास रोकणा १८ यह पाप ब्रह्महत्याके तुल्यहैं ⊛ निषिद्ध जो लसुनादि तिनका भक्षणकरणा १ राजा विषें कुटिलता करणी २ और अपनी वडयाई वास्ते राजकुलादि विषें झूठ कहणा ३

और रजस्वला स्त्री का मुख चुंबन करणा ४ और झूठी उगाही देणी ५ और मित्रका बध करणा ६ इनकी ब्रह्महत्याके तुल्य और सुरापानके तुल्य इन्हीं दोनों विषें जो गणनाहै सो प्रायश्चित्तके विकल्प वास्ते है यह संपूर्ण पाप मदिरा पानके तुल्य हैं ॥ घोडेका चुराणा १ और रत्नका चुराणा २ और मनुष्य का चुराणा ३ और स्त्रीका चुराणा ४ और पृथ्वीका चुराणा ५ और गौका चुराणा ६ और सभतर्हांकी ब्राह्मणकी छोडी होई अमानत नहिदेणी यह संपूर्ण सुवर्ण चुराणेके तुल्य जानणे ॥ मित्र की स्त्री और उत्तमवर्णकी कन्या और भयण और चांडाली और हीनजाति की स्त्री । और समान गोत्र की स्त्री और नुंह और माता की भयण और पिता की भयण और मामी और माता की साकण माताकी भयण और आचार्य की कन्या

रजस्वलामुखास्वादः४ कौटसाक्ष्यं ५ सुहृद्वधः६ उभयत्रगणना प्रायश्चित्तविकल्पार्था इतिसुरापानसमानि ॥ अश्वहरणं १ रत्नहरणं २ मनुष्यहरणं ३ स्त्रीहरणम् ४ भूहरणम् ५ धेनुहरणम् ६ सर्वनिक्षेपहरणम् ७तत्र ब्राह्मणसंबंधि इतिसुवर्णस्तेयसमानि ॥ मित्रभार्य्या उत्तमवर्णाकुमारी भगिनी चांडाली हीनजातिः समानगोत्रा स्नुषा मातृष्वसा पितृष्वसा मातुलानी मातृसपत्नी मातृभगिनी आचार्य्यतनया आचार्य्यपत्नी ऋत्विगुपाध्यायश्रोत्रियपत्नी रजस्वला निक्षिप्ता स्वसुताआसुगमनम् तथाश्वश्रूः पितृव्यपत्नी शिष्यपत्नी भगिनीसखी शरणागता राज्ञी प्रव्रजिता धात्री साध्वी वर्णोत्तमा आसुगमनम् गुरुतल्पसमानि ३० इमान्यनुपातकानि ॥

और आचार्य की स्त्री और ऋत्विग् और गुरु और वेदपाठी इनों की स्त्री और रजस्वला स्त्री और निक्षिप्त क्या कोई रक्षावास्ते छोडीगिआहै किसे स्त्रीको सो स्त्री और अपणी कन्या इनों विषे गमन करणेवाला तेसेहि श्वश्रू क्या अपनी स्त्रीकी माता और पितृव्यपत्नी क्या चाचेकी स्त्री और अपने शिष्यकी स्त्री और भगिनीकी सखी क्या सहेली और शरणागता क्या किसेके भयसे अपनी रक्षाके अर्थ आई होई और राजाकी स्त्री और संन्यस्त होई जो स्त्री और धात्री क्या उपमाता दुद्धपिआणे वाली और साध्वी क्या सचरित्रा और वर्णोत्तमा क्या ब्राह्मणी इन्हांविषे जो गमनहै सो गुरुतल्पग पापके तुल्यहै ३० यह अनुपातक किहेहैं ॥

श्रौर गोवध क्या गौ का मारणा १ श्रौर व्रात्यता क्या जो यज्ञोपवीतादि संस्कारहैं तिन्हते हीनहोणा २ श्रौर स्तेय क्या ब्राह्मण के तोळा सुवर्णते उरे सुवर्णकी श्रर होर सभवस्तुकी चोरी ३ श्रौर करज नामुकाणा ४ श्रौर जिसको श्रग्निके स्थापन का श्रधिकार है तिसने श्रग्निका स्वीकार नहि करणा ५ श्रौर जो वस्तु नहि वेचणे योग्य तिसका वेचणा ६ श्रौर परिवेदन क्या वडेकों छोडकर छोटेको विश्राणा

गोवधः १ व्रात्यता २ स्तेयम् ३ ऋणानपाकरणम् ४ श्रनाहिताग्निता ५ श्रपण्यविक्रयः ६ परिवेदनम् ७ भृताद्ध्ययनादानम् ८ भृतकाध्यापनम् ९ पारदार्य्यं १० पारिवित्त्यम् ११ वार्द्धुष्यम् १२ लवणक्रिया १३ स्त्रीवधः १४ शूद्रवधः १५ वैश्यवधः १६ क्षत्रवधः १७ निंदितार्थोपजीवनम् १८ नास्तिक्यम् १९ व्रतलोपः २० सुतविक्रयः २१ धान्यस्तेयम् २२ कुप्यस्तेयम् २३ पशुस्तेयम् २४ श्रयाज्ययाजनम् २५ पितृत्यागः २६ भ्रातृत्यागः २७ सुतत्यागः २८ तडागविक्रयः २९ श्रारामविक्रयः ३० कन्यासंदूषणम् ३१ परिनिंदकयाननम् ३२ परिनिंदकस्यकन्याप्रदानम् ३३ कौटिल्यम् ३४ व्रतलोपनम् ३५ श्रात्मार्थेक्रियारंभः ३६ मद्यपस्त्रीनिषेवणम् ३७ स्वाध्यायत्यागः ३८ श्रग्नित्यागः ३९ सुतत्यागः ४० बांधवत्यागः ४१ इन्धनार्थंद्रुमच्छेदः ४२ स्त्रियाजीवनम् ४३ हिंसयाजीवनम् ४४ श्रौषध्याजीवनम् ४५ हिंस्त्रयंत्रविधानम् ४६ व्यसनानि ४७ श्रात्मविक्रयः ४८ शूद्रप्रेष्यं ४९ हीनसख्यम् ५० हीनयोनिनिषेवणम् ५१ श्रनाश्रमेवासः ५२ परान्नपरिपुष्टता ५३ श्रसच्छास्त्राधिगमनम् ५४ श्राकरेष्वधिकारिता ५५ भार्याविक्रयः ५६ श्रसत्प्रतिग्रहः ५७ भार्यात्यागः ५८ मिथ्याभिशंसनं ५९ मिथ्याभिशस्तता ६० इत्युपपातकानि ❀ एकत्रसुतत्यागोगृहान्निष्कासनम् श्रन्यत्रसुतत्यागःसंस्काराद्यकरणम्

७ श्रौर मजूरी मन्नकर पढना ८ श्रथवा पढाना ९ श्रौर पारदार्य्य क्या परस्त्रीका सेवनकरणा १० इत्यादि ६० सद्यउपपातक हैं सो मूलविषे स्पष्ट हैं ❀ इनकेश्रर्थ उपपातक प्रकरणके श्रादिविषें लिखेहैं उसीजगाते देखलैने इसगणनामें एकजगा सुतत्यागका श्रर्थ यह है कि पुत्रत्यागदेना दूसरी जगा यह श्रर्थ है कि पुत्रका संस्कार नहि करणा

ऐसेहि एकजगा व्रतलोपहै ब्रह्मचारिको स्त्रीसंभोग और दूसरीजगा व्रतलोप है व्रतका नहिकरणा क्या एकादश्यादि व्रतका लोप ॥ अब होर पाप दिखाईदेहैं ब्राह्मेति ब्राह्मणको पीडाकरणी १ और दुर्गन्धि जो लसुनादि और मद्य तिसका आघ्राण क्या सिंघणा २ और कुटिलस्वभावहोणा ३ पुरुषके साथमैथुन ४ मुखआदिमे मैथुन ५ पशुके साथ मैथुन ६ एह छे जाति भ्रंशकरनामक पाप हैं ❀ और गधा १ घोडा २ ऊंठ ३ मृग ४ हाथी ५ छाग क्या बकरा ६ मेष क्या भिड्ड ७ मछ ८ सर्प्प ९ महिष १० इनका एक एकका जो मारणाहै एहसंकरीकरणपापहैं ❀ और निन्दित जो हैं म्लेच्छ पतितादि तिन्हाते प्रतिग्रह क्या दानलेणा १ और वाणिज्य क्या निन्दित वस्तुका व्यापार करणा २ शूद्रसेवा द्विजातियोंने करणी ३ एहत्रय पाप अपात्रीकरण कहेहैं ❀ और छोटेजीवोंकी हत्या १ और मोटेजीवोंकी हत्या २ और पक्षियोंकी हत्या ३ और मद्यकर्के मिलीहोई वस्तुका भोजन ४ और फलोंकी ५ और

एकत्रव्रतलोपो ब्रह्मचारिणः स्त्रीसंभोगः अन्यत्रव्रतलोपो व्रताऽकरणम् एकादश्याद्यननुष्ठानम् ❀ ब्राह्मणपीडाकरणम् १ दुर्गंधेर्लशुनादेर्मद्यस्यचाघ्राणम् २ कुटिलत्वम् ३ पुंसिमैथुनम् ४ मुखादौमैथुनम् ५ पशुमैथुनम् ६ इमानि जातिभ्रंशकराणि ❀ गर्दभ १ तुरग २ उष्ट्र ३ मृग ४ हस्ति ५ छाग ६ मेष ७ मत्स्य ८ सर्प्प ९ महिषाणांप्रत्येकंवधः १० इमानि संकरीकरणानि ❀ निन्दितेभ्यःप्रतिग्रहः १ वाणिज्यम् २ शूद्रसेवनम् ३ इमान्यपात्रीकरणानि ॥ क्षुद्रजंतुहत्या १ स्थूलजंतुहत्या २ पक्षिहत्या ३ मद्यसंस्पृष्टभोजनम् ४ फल ५ समिधा ६ कुसुमानांचौर्य्यम् ७ अल्पद्रव्यनाशेऽप्यत्यन्तवैक्लव्यम् ८ इमानिमलिनीकरणानि ❀ राजाज्ञाप्रतीघातः १ राजाज्ञप्तकर्माऽकरणम् २ पुनःप्रदानम् ३ प्रकृतिसंभेदः ४ पाषंडिसंबंधेनवैदिकानांश्रेणीनांगणानां च धर्मविपर्ययाः ५ पितापुत्रविवादः ६ प्रायाश्चित्तविपर्ययः ७ प्रतिग्रहविलोपः ८

समिधांकी ६ और पुष्पोंकीचोरी ७ और थोडीभी वस्तुकानाश देखकर व्याकुल होणा ८ एह अठ पाप मलिनीकरणनाम कर्के किहेहैं ❀ अब प्रकीर्णकपापोंकी गणना करतेहैं राजाकी आज्ञाका भंगकरणा १ राजाकी आज्ञासें प्राप्त जो कार्य तिसका नाकरणा २ एक वेर दान कीतेका दूसरी वेर दान करणा ३ राजाके साथ प्रजाकाभेदकराणा ४ पाखंडियोके संबंधकर्के वैदिक अर्थात् वेदपढनेवाले लोक और पैंच और जातिसमूह इनांका धर्म्म विपरीत कराणा ५ पिताकेसाथ पुत्रका संवादहोणा ६ और किहाहै जो प्रायश्चित्त तिसमें होर प्रायश्चित्त कराणा ७ दानलेकर मुकर जाणा ८

आश्रमीति आश्रमी जो ब्रह्मचारी आदिक हैं इनांको कोप कराणा ९ वर्ण संकरकादोष १० उत्तमपुरुषनें वर्णसंकरोंकी वृत्तिधारणी ११ वर्णसंकरका नियम करणा १२ उष्ट्रयान क्या ऊठके ऊपर चडना १३ और खोतेके ऊपर चडके जाना १४ और तुंकार हुंकार कर्के गुरोंको जीतना १५ और वादकर्के ब्राह्मणोंको पराजय करणी १६ और ब्राह्मणकों वस्त्रकर्केबांधना १७ और ब्राह्मणकेतांईं दंडका गूरणा १८ और दंडादिकर्के ब्राह्मणका रुधिर निकासना १९ और ब्राह्मणकों मारमार अंदरलहु पादेणा २० और काष्ठथीं आदिलेकर जो शस्त्रहैं तिनोंकर्के ब्राह्मणकी त्वचाका भेदनकरणा २१ और ब्राह्मणकी अस्थिका भेदनकरणा २२ और पाणीकी सन्निधि क्या जलकी

आश्रमिणांकोपः ९ वर्णसंकरदोषः १० वर्णसंकरवृत्तिः ११ वर्णसंकरनियमः १२ उष्ट्रयानम् १३ खरयानम् १४ तुंकारहुंकाराभ्यांगुरुजयः १५ वादेन विप्रपराजयः १६ विप्रस्यवाससावंधः १७ विप्रायदंडोद्गूरणम् १८ दंडादिनाविप्रस्याऽसृक्पातनम् १९ तथाविप्रस्याऽभ्यंतरशोणता २० काष्ठादिनाविप्रत्वग्भेदनम् २१ विप्रास्थिभेदनंवा २२ जलसान्निधिंविनामलमूत्रोत्सर्गः २३ जलेवाऽग्नौमलमूत्रादित्यागः २४ वेदोदितनित्यकर्मत्यागः २५ स्नातकव्रतलोपः २६ पंचमहायज्ञानऽकृत्वाभोजनम् २७ आहिताग्नेरग्न्युपस्थानाभावः २८ अन्यस्मैइंद्रचापदर्शनम् २९ वाऽन्यस्मैपलाशाग्निदर्शनम् ३० ब्राह्मणेननीलवस्त्रधारणम् ३१ क्षत्रियवैश्याभ्यां पर्वसुनीलीवस्त्रधारणम् ३२

समीपता विना विष्टा और मूत्रका त्याग २३ जलमें वा अग्निमें विष्टा मूत्रादिका त्याग २४ और वेदकर्के कथन किया जो नित्यकर्म्म सन्ध्यावन्दनादि तिसका त्याग २५ और स्नातक ब्रतका लोप २६ और पंचजो हैं महायज्ञ क्या पाठकरणा १ और हवनकरणा २ और अतिथिका पूजन ३ और तर्प्पण ४ और वलिवैश्व देव ५ इनके करणे विना भोजन करणा २७ और साग्निककों अग्निकीसेवातें रहित होणा २८ और दूसरे मनुष्यकेतांईं इन्द्रधनुषका दिखाणा २९ अथवा दूसरे मनुष्यके तांईं अकस्मात् लगा जो पत्रोंकोंअग्नि तिसका दिखाणा ३० और ब्राह्मणने नीलकर्के रंगया जो कपडा तिसका धारणकरणा ३१ क्षत्री और वैश्य जो हैं तिनोंने पर्वोंमे नीले वस्त्रका धारणा ३२

द्विजस्येतिद्विज जो हैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनोंने पलाशवृक्षकें काष्टकर्के बने जो हैं यान और शय्याऔर पादुकादि तिनमें स्थित होणा ३३ और क्षत्रि जो हैं तिनकों रणते पराङ्मुखहोना ३४ फलके देनेवाले वृक्षका छेदन ३५ और दोब्राह्मण जो हैं तिनके मध्याविषे गमन ३६ और ब्राह्मण और अग्निके मध्यविषे गमन ३७ और स्त्रीपुरुष जो हैं तिनके मध्यविषे गमन ३८ और गौ और वृषभ इनके मध्यविषे गमन ३९ और होमके समयमें होमके करणे वाला. जो है और अग्नि जो है तिनके मध्याविषे गमन ४० गौ. और महिषीके दोहकालमें मध्य विषे गमन ४१ और पठन पाठन समयमें मध्न विषे गमन ४२ और दार संग्रह क्या स्त्री संग्रह समयमे मध्यविषें गमन ४३ और नख. केश रुधिर इनका भक्षण ४४ और मूत्र वा विष्टा

द्विजस्यपलाशवृक्षयानशय्यापादुकादौस्थितिः ३३ क्षात्रियस्यरणात्पराङ्मुखत्वम् ३४ फलप्रदवृक्षच्छेदनम् ३५ ब्राह्मणद्वयोरंतरेणगमनम् ३६ ब्राह्मणाऽग्न्योर्वा ३७ दंपत्योर्वा- ३८ गोवृषयोर्वा ३९ होमकालेंअंतरेणगमनम् ४० दोहेअंतरेणगमनम् ४१ स्वाध्याये ४२ दारसंग्रहेअंतरेणगमनं ४३ नखकेशरुधिरभक्षणम् ४४ कृते मूत्रेपुरीषे वा शौचंविनास्नानकरणम् ४५ गर्भिणीपतेः समुद्रस्नानम् ४६ केशश्मश्र्वादिकर्त्तनं वा ४७ तथाश्राद्धभोजनम् ४८ शरणागतपरित्यागः ४९ वेदविप्लवः ५० चांडालश्रोत्रावकाशेश्रुतिस्मृतिपाठः ५१ सर्पनकुलयोः ५२ तथाऽजमार्जारयोः ५३ मूषकोष्ट्रयोः ५४ मंडूकयोषितोः ५५ पुरुषैडकयोः ५६ अश्वशुनोः ५७ अश्वखरयोरंतरागमनम् ५८ क्रोधात्स्वभार्य्यायाअगम्येतिकथनम् ५९

त्यागके पीछे शौचके किये विना स्नान करणा ४५ और गर्भिणीके स्वामीकों समुद्रस्नान ४६ अथवा गर्भिणीके पतिकों शिरकेवाल और श्मश्रुआदिका मुंडन ४७ और गर्भिणीपतिकों श्राद्धका भोजन ४८ और शरणागत का त्याग ४९ और वेदोंका विनाश करणा ५० और चांडालकेसुनतेहोयांवेद और स्मृतियोंका पड़ना ५१ सर्प और नकुलके मध्यमें गमन करणा ५२ और तैसेंहि वक्करे और विल्लेके मध्यमें गमन ५३ चूहे और. उष्ट्रकेमध्यमे गमन ५४ और मंडूक क्या डड्डूँ और स्त्रीके मध्यमें गमन ५५ और पुरुष. तथा भेडके मध्यमें गमन ५६ घोडे और कुत्तेके मध्याविषे गमन ५७ घोडे और खोतेके मध्यमें गमन ५८ और क्रोधतें अपनी स्त्रीकों अगम्या कथन क्या तूं मेरी माताहैं वा भगिनीहैं ऐसा कथन ५९

अस्नानइति और स्नानाकियेविना भोजनकरणा ६० पंक्तिजोहै भोजनकरणवालयोंकी तिसमें वैषम्यप रिबेषण क्या किसीकों अन्नादिदेणा और किसीको नहिदेणा वा किसीको बहुतदेणा किसीकों थोडादेणा ६१ और नदीके जलके उत्तरणेका जो मार्गहै तिसकों तोडदेणा ६२ और कन्या दानमें विघ्नकरणा ६३ और सममें विषमहोणा ६४ और पतितादि जो हैं तिसकेसाथ वार्ता करणीयां ६५ और पतितादिजो हैं तिनोतें अन्नधनादिका ग्रहणकरणा ६६ और स्त्रीके धनका विनाश० ६७ और चौरादि जो हैं तिनको दंड नहि करणा ६८ और चौरादियों की पंक्तिमें भोजनकरणा ६९ और द्विजाति जो हैं ब्राह्मणादि तिनकों नीलीविषे केशरंजन अर्थात् तिनकों वसमा लाणा ७० और नीली काष्ट कर्के द्विजका रुधिर निकालणा ७१ ॥

अस्नानेभोजनम् ६० पंक्तौवैषम्यपरिवेषणम् ६१ नदीजलावतरणमार्गभं जनम् ६२ कन्यादानेविघ्नः ६३ समेवैषम्यम् ६४ पतितादिसंभाषणम् ६५ पतितादिभ्योऽन्नधनादिग्रहणम् ६६ भार्याधनविनाशः ६७ चौरादेर्दं डाभावः ६८ चौरादिपंक्तिभोजनम् ६९ द्विजातेर्नील्याकेशरंजनम् ७० नीलीकाष्ठेनद्विजस्यरुधिरनिष्कासनम् ७१ दुःस्वप्नदर्शनम् ७२ सिंधुसौ वीरादिदेशगमनम् ७३ सूर्याभिमुखंपुरीषाद्युत्सर्गः ७४ स्वकीयपुरीषद र्शनम् ७५ आहवनीयाद्यग्नौपादप्रतापनम् ७६ ब्राह्मणस्यक्षत्रियाद्यभि वादनम् ७७ तथाक्षत्रियादेर्वैश्यादौ ७८ शय्यापादुकाद्यारूढस्याभिवाद नम् ७९ अन्यत्रनिमंत्रितस्यान्यत्रगमनम् ८० समित्पुष्पादिहस्तस्याऽ भिवादनम् एतच्चाभिवाद्याभिवादकयोः ८१

और माडे स्वप्नकादर्शन होणा ७२ और सिंधु. सौवीरादि जो देशहैं तिनमें गमन ७३ और सूर्यादिसन्मुख विष्टादिका त्याग करणा ७४ और अपणी विष्टाका देखणा ७५ आहवनीय आदि जो अग्निहै तिसमें पैरोंका तपाना ७६ ब्राह्मणने क्षत्रियादियोंकों अभिवादन क्या प्रणाम करणा ७७ तिसीप्रकार क्षत्रीकों वैश्यादि की अभिवादनमैं है ७८ शय्या और पादुकादिमें आरूढ जो है तिसकों प्रणामकरणा ७९ और स्थानमें जो निमंत्रितहै उसका दूसरे स्थानमें गमन ८० और समिधां और पुष्प जिसके हाथमें हैं उसकों प्रणामक रणा एह पाप जिसकों प्रणामकरणा उसकों और जिसनें प्रणामकीतीहै उसको भी तुल्य प्रायश्चित्तहै ८१

उदकुंभेति जलका कलश हाथमें लेकर्के प्रणामकरणी ८२ और तैसांहिं अपवित्र होकर्के प्रणामकरणी ८३ जपकरतेहोआं प्रणामकरणी ८४ पितृकार्य जो हैं श्राद्धादि और देवकार्य जो हैं पूजनादि तिनके करतेहोआं प्रणामकरणी ८५ शयनकरतेहुवे मनुष्यने प्रणामकरणी ८६ और यज्ञोपवीतके विना विष्टा. और मूत्रका त्याग करणा ८७ और तैसेंहि यज्ञोपवीत विना भोजनकरणा ८८ ऊर्द्धवोच्छिष्ट क्या भोजनकर्के आचमनकाअभाव ८९ और अधोच्छिष्ट क्या बिष्टा और मूत्र त्याग कर्के शौचकाअभाव ९० और भोजनकें आरंभ और समाप्तिमें आचमन नहिकरणा ९१ दर्श और पौर्णमास और नित्ययज्ञका नहि करणा ९२ यज्ञके प्रारंभकरते होआं

उदकुंभादिहस्तेनाभिवादनम् ८२ तथाऽशुचिनाऽभि- ८३ जपताऽ- ८४ पितृदेवकार्यंकुर्वताऽ- ८५ शयानेनऽ- ८६ ब्रह्मसूत्रंविनाविण्मूत्रोत्सर्गः ८७ भोजनंवा ८८ ऊर्द्ध्वोच्छिष्टता ८९ अधोच्छिष्टता ९० भोजनस्याऽऽदावंतेचाचमनाभावः ९१ दर्शपौर्णमासादिनित्ययज्ञाऽकरणम् ९२ प्रारब्धेयज्ञेहविर्लोपः ९३ संध्यादिलोपः ९४ पितृयज्ञलोपः ९५ यज्ञंविनानवान्नप्राशनम् ९६ नैमित्तिककर्मलोपः ९७ ऋतौस्वपत्न्यगमनम् ९८ ऋतुस्नानांते पत्यौस्त्रियोऽपिगमनाऽभावः ९९ गृहिणोऽनापदिभिक्षाचरणम् १०० देवादीनामाभिमुख्येष्ठीवनम् १०१ मंडपोद्यानदेवागारादिभंजनम् १०२ स्वस्थानात्प्रतिमोत्थापनम् १०३

हवनद्रव्यका लोपहोणा ९३ और संध्यादिकर्मका लोप ९४ और पितृयज्ञ जो श्राद्ध तिसका लोप ९५ यज्ञकिये विना नवीन अन्नका भोजनकरणा ९६ और नैमित्तिक कर्मोका लोप ९७ और ऋतुस्नानके पीछे अपणीस्त्रीमें गमन नहिकरणा ९८ ऋतुस्नानके पीछे स्वामीकेपास स्त्रीकों जाणेका अभाव अर्थात् नाहि जाणा ९९ और गृहस्थीकों आपदातें विना भिक्षाका मांगणा १०० और देवतार्थी आदिलेकर जो श्रेष्ठहैं उनके सन्मुख थूकणा १०१ मंडप और बाग और देवताके मंदिरादि जो हैं तिनका तोडदेणा १०२ और अपने स्थानतें प्रतिमाका उठाणा १०३

पर्वति पर्वमें स्त्री- तैल. मांसका सेवनकरणा १०४ द्विजाती जो हैं ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य इनकों वमन कर्के भोजनकरणा १०५ श्रोर भग्नभांड जो है भन्ना होआ पात्र तिसमें भोजन करणा १०६ श्रोर मांसादिकर्के वमनमें भोजनकरणा १०७ यज्ञोपवीतके नाश होआं भोजन करणा १०८ शयनमे सूर्य्यका उदय होणा १०९ श्रोर शयनमें हि सूर्य्यका अस्त हो जाणा ११० श्रोर वमनके होआं दिनमें शयन करणा १११ नग्नस्त्रीका दर्शन करणा ११२ श्रोर नग्न होकर शयन करणा ११३ श्रोर श्मशानमें पैरदेकर लंघ जाणा ११४ श्रोर घोडेयीं आदिलेकर जो वाहन हैं तिनके ऊपर चडकर्के पूज्य जो हैं गुरोंथीं आदलेकर तिनका उल्लंघन करणा ११५ अजगरादि

पर्वसुस्त्रीतैलमांससेवनम् १०४ द्विजातीनांविच्छर्दनेभोजनम् १०५ भिन्नभांढभोजनम् १०६ मांसादिवमनेभोजनम् १०७ यज्ञोपवीतादिनाशे भोजनम् १०८ सुप्तेसूर्य्योदयः १०९ सुप्तेसूर्य्यास्तम् ११० वांते दिवाशयनम् १११ नग्नस्त्रीदर्शनम् ११२ नग्नस्वापः ११३ श्मशानाक्रमणम् ११४हयादीनारुह्यपूज्यातिक्रमः ११५ अजगरादीनांवधः ११६ मणिवस्त्रगवादिप्रतिग्रहः ११७ अजीर्णेभोजनम् ११८ गर्भाधानादिसंस्काराभावः ११९ गर्भाधानाकरणम् १२० क्षुत्करणम् १२१ निष्ठीवनम् १२२ अनृतभाषणम् १२३ पतितैस्सहभाषणम् १२४ वासःपरिधायाचमनाभावः १२५ संवत्सरंक्रियाहीनस्यदर्शनस्पर्शनसंभाषणानि १२६ स्वीकृत्यनिमंत्रणत्यागः १२७ निमंत्रिताऽनाव्हानम् १२८ वधफलकानृतभाषणम् १२९

जो हैं सर्प तिनका मारणा ११६ मणि वस्त्र आदिक जो वस्तु हैं तिनका दानलैणा ११७ अजीर्णमें भोजनकरणा ११८ गर्भाधानादि जो स्त्रीके संस्कार हैं तिनका नहि करणा ११९ गर्भाधान जो है तिसका नहि करणा १२० छिक्का मारणा १२१ श्रोर थुकणा १२२ झूट बोलणा १२३ पतित जो हैं तिनके साथ वार्ता करणियां १२४ वस्त्रधारकर्के आचमन का नहीं करणा १२५ वर्षपर्यंत क्रियाहीन जो मनुष्य है तिसके साथ दर्शन श्रोर स्पर्श श्रोर संभाषण करणा १२६ उंर अंगीकार किया जो निमंत्रण भोजन करणेके निमित्त तिसका त्याग करणा १२७ निमंत्रणकर्के नाहिं वुला लेणा १२८ मरणहै फल जिसका ऐसा झूठ बोलणा १२९

व्रणेति व्रण जो है घा तिसमें कीडयों का पडना १३० दिनमें स्त्रीका संगम करणा १३१ और नग्न होयकर स्नानकरणा १३२ निषिद्ध काष्टकर्के दंतधावन करणा १३३ ब्रह्मचारीकों शौच और आचमनर्थी आदिलेकर जो धर्म्म हैं तिनका लोपकरणा १३४ ग्रहणकिया जो व्रत तिसका भंगकरणा १३५ और झूठी सुगंद खाणी १३६ और अपणी वृत्तिकों छोडकर दूसरेकी वृत्ति कर्के धनकों पैदेकरणा १३७ शूद्रने ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य जोहें तिनका जो कर्म्महे वेदाध्ययनादि तिसका करणा १३८ स्त्रीधनकर्के जीविका करणी १३९ स्त्रीके मुखमे मैथुन करणा १४० वृषभकर्के युक्त जो है गड्डा तिसमें स्थितहोकर मैथुन करणा १४१ स्त्रीकों भगिन्यादिशब्दकर्के कथनकर्के फेर उसके साथ भोग करणा १४२

व्रणमध्येक्रिमिपातः १३० दिवामैथुनम् १३१ नग्नस्नानम् १३२ निषिद्धकाष्ठेनदंतधावनम् १३३ ब्रह्मचारिणःशौचाचमनादिधर्मलोपः १३४ गृहीतव्रतभंगः १३५ मिथ्याशपथः १३६ अन्यवृत्त्याधनार्जनम् १३७ शूद्रस्यद्विजकर्म्मकरणम् १३८ स्त्रीधनोपजीवनम् १३९ भार्यामुखमैथुनम् १४० गोयुक्तयानस्थमैथुनम् १४१ भार्याभगिन्यादिशब्देनोक्त्वापुनर्मैथुनम् १४२ वस्तिकर्मप्रच्छर्दनविरेचनानि १४३ देवागारशिलादिनास्वगृहकरणम् १४४ वानप्रस्थयत्योर्व्रतभंगः १४५ दीक्षाभेदः १४६ यमनियमातिक्रमः १४७ क्रोधाऽहंकारपिशुनानि १४८ जलेप्रतिबिंबदर्शनम् १४९ अशुचौमूत्रपुरीषादौचापलम् १५० वृथाचेष्टा १५१

वस्तिकर्म॰ प्रच्छर्दन विरेचन कर्म्मका करणा वस्तिकर्म मूत्रवृद्धि १ प्रच्छर्दन उलटी २ विरेचनदस्त ३ ॥ १४३ देवताके मंदिरके पत्थर चूनेर्थी आदिलेकर जो वस्तु हैं तिनोकर्के अपने घरका बनाणा १४४ वानप्रस्थ और यतिके व्रतका भंगकरणा १४५ दीक्षामें भेदकरणा १४६ नित्य और नैमितिकका त्याग करणा १४७ क्रोध और अहंकार और चुगली इनका करणा १४८ जलमें अपने प्रतिबिंबकादेखणा १४९ अशुचि क्या अपवित्र जो हैं मूत्र और विष्टातिसके त्यागमें चापल क्या वातां करणीआं और इधर उधरकी चेष्टाकरणी १५० वृथा चेष्टाकरणी १५१

प्रतिज्ञेति प्रतिज्ञाकर्के झूठवोलणा १५२ मौनविना भोजनकरणा १५३ अर्धभुक्त भोजन पात्रमें जलपानकरणा १५४ केवल मुखकर्के जलका पीणा १५५ और जो अपणे सपिंडी क्या समीप कुलके नाहिंहैं उनके साथ रोदन करणा १५६ प्रेतकों अलंकरण क्या तिसको स्नानादिक कराणा १५७ आत्मघातीका संस्कार करणा १५८ नहिअपणे बराबर और अपणेतें श्रेष्ट जातीका जो प्रेत तिसके साथ गनम १५९ ब्राह्मणने शूद्रप्रेतके साथ दाह निमित्त जाणा १६० स्निग्ध क्या गिल्ली जो मनुष्यकी अस्थि है उसके साथ स्पर्श करणा १६१ क्षत्रीकों वैश्य और शूद्रजातिके प्रेतकेसाथ दाहनिमित्त जाणा १६२ रजस्वला होती जो कन्या तिसको

प्रतिज्ञायाऽनृतकथनम् १५२ मौनंविनाभोजनम् १५३ अर्धभुक्तेभोजन पात्रेजलपानम् १५४ मुखेनजलपानम् १५५ असपिंडैःसहरोदनम् १५६ प्रेतालंकरणम् १५७ आत्मघातिनःसंस्कारः १५८ असमानोत्कृष्टजाति प्रेतानुगमनम् १५९ ब्राह्मणेनशूद्रप्रेतानुगमनम् १६० स्निग्धमनुष्यास्थिस्पर्शः १६१ क्षत्रियस्यवैश्यशूद्रप्रेतानुगमनम् १६२ ऋतुमतीकन्यारक्षणम् १६३ ब्राह्मणेनचैत्यवृक्षस्पर्शः १६४ इत्यादीनिप्रकीर्णकानि इमान्युद्दिष्टपापानि ॥ अनुद्दिष्टान्यपि ॥ अस्थिमत्सहस्रवधः १ अनस्थिमदनोवधः २ पतितेनसंस्पर्शः १ तेनसंलापः २ तन्निःश्वासादानम् ३ तेनसहैकयानावस्थानम् ४ तेनसहैकासनावस्थानम् ५ तेनस्वस्ययागः ६ स्वयंतस्ययागोवा ७ ततोऽध्ययनम् ८ तस्याध्यापनंवा ९

नहि विवाह देणा १६३ और ब्राह्मणनें चैत्यवृक्षके साथ स्पर्शकरणा १६४ इसथींआदिदें कर प्रकीर्ण पाप कहेहैं ॥ यह उद्दिष्ट पाप हैन और अनुद्दिष्ट पापभीहैंन सो कहतेहैं ॥ अस्थियों वाले जो हझारों जीव हैं तिनका मारणा १ और विनाअस्थियोंतें जो जीव हैं तिनकर्के भरेहोएगड्डेकामारणा २ पतितके साथ स्पर्शकरणा १ और पतितके साथ वार्ता करणीआं २ और पतितके जो श्वासहैं तिनका लैणा ३ पतितके साथ एकयानमें बैठणा ४ पतितके साथ एक आसनमें बैठणा ५ पतितकर्के अपणा यज्ञ कराणा ६ अथवा आप पतितकों यज्ञ कराणा ७ और पतितें पढना ८ और पतितकों पढाणा ९

तस्माइति पतितके ताईं कन्या देणी १० और पतितथें कन्यादान लेणा ११ और पतितके साथ एकपंक्तिमें भोजन करणा १२ पतितका पक्कान्न खाणा १३ पतितके पात्रमें भोजन करणा १४ पतितका और अपणा पक्का होया अन्न किठा करणा अर्थात् रलाणा १५ पतितके पात्रकर्के अथवा पतितके पात्रनें जलपीणा १६ और पतितके धूमयंत्रकर्के धूमपान करणा १७ पतितने स्पृष्ट किया जो पक्कान्न तिसका भोजनकरणा १८ पतितके साथ एक मंजेमें शयन करणा १९ पतितकीस्त्रीके साथ संभोग करणा २० पतितनें धारया जो वस्त्र तिसका धारणा २१ पतितनें अपणी स्त्री क्या शुद्धपुरुषकी जो स्त्री है तिसके साथ भोगकरणा २२ पतितका जूठा अन्न भक्षणकरणा २३ और पतितते दानलैणा २४ इनोंते लेकर अनेक

तस्मैकन्यादानम् १० ततोग्रहणंवा ११ तेनसहैकपंक्त्यांभोजनम् १२ तदीयान्नभोजनम् १३ तद्भांडभोजनम् १४ तदीयस्वकीयपक्कान्नमिश्रणम् १५ तदीयभांडेन वा तद्भांडाद्वा जलपानम् १६ तदीयधूमयंत्रेणधूमपानम् १७ तत्स्पृष्टपक्कान्नभोजनम् १८ तेंनसहैकशय्यायांशयनम् १९ तत्स्त्रीसंभोगः २० तत्परिहितवस्त्रपरिधानम् २१ तेनस्वकीयस्त्रीसंभोगः २२ तदुच्छिष्टान्नभोजनम् ३२ तत्प्रतिग्रहः २४ इत्याद्यनेकविधं संसर्गजम् ॥ संसृज्यते इतिसंसर्ग इतिव्युत्पत्तेः ॥ प्रायश्चित्तंतुउत्तममध्यमाधमभेदेन नवधा विभज्य दर्शितम् तत्र यौनादयउत्कृष्टाः १ सहभोजनादयोमध्यमाः २ संलापादयोऽधमाःसंसर्गाः ३ परंपरास्पर्शेपि ४ ॐ वृहद्विष्णुना तु सर्वाणि प्रायश्चित्तनिमित्तानि उत्तरोत्तरलघीयांसि पृथक् २ संज्ञाभेदभिन्नानि गणितानि तद्यथा ब्रह्महत्या. सुरापानम्

प्रकारके संसर्गते उत्पन्नभये पाप हैं ॐ संसर्ग शब्दका अर्थकहतेहैं सामिति अच्छी प्रकार जो उत्पन्नकरीदाहै एकत्र होयकर्के सो कहियें संसर्ग ॐ अब प्रायश्चित्त उत्तम-मध्यम- अधम एह जो भेदहै इस कर्के नव ९ प्रकारका विभागकर्के दिखाआहै तिसमें यौनादि जो संसर्ग हैं सो श्रेष्ठ हैं १ और साथ भोजनकरणा इत्यादिक मध्यमहैं २ और संलापादि जो हैं पतितोंके साथ वार्ता करणीआं सो अधमहैं ३ परंपरास्पर्शमें भीअधमजाननणा ४ ॐ अब वृहद्विष्णु जो ऋषि है तिसनें संपूर्ण जो प्रायश्चित्तों के निमित्त हैं सो उत्तरोत्तर लघु क्या उसतें अगला छोटा और उसतें वो छोटा इसतरह भिन्न भिन्न संज्ञा भेदकर्के गिणेहैं सो कहितेहैं ब्राह्मणकामारणा १ सरावकापीणा २

णानेति ब्राह्मणका सुवर्णचुराणा ३ गुरोंकी स्त्रीसें संग करणा ४ एह महापातक हैं और एह जो महापातकीहैं उनके साथ संयोगकरणा ओह बी उनके बराबर है ५ माताके साथ संयोगकरणा १ कन्यामें संगकरणा २ स्नुषा जो है पुत्रकी स्त्री तिसमें संगकरणा ३ एह अतिपातक हैं ❀ यज्ञमेंस्थित जो क्षत्री तिसका मारणा वैश्य और रजस्वला और गर्भिणी स्त्री और अपणे गोत्रकी स्त्री और अविज्ञातगर्भ जो है और शरणागत जो है इनके मारणेसे ब्रह्महत्याके बराबर पाप होताहे ॥ झूठी उगाई देणी और मित्रका मारणा एह दोनो सुरापानक तुल्य हैं ॥ और ब्राह्मणकी भूमिका जो हरणाहै सो सुवर्णकी चोरीके तुल्यहै ॥ पिताके भ्राताकी जो स्त्री है और नानी जो है और मामी जो है और राजाकी स्त्री जो है इनमें जो

ब्राह्मणसुवर्णापहरणं गुरुदारगमनमिति महापातकानि तत्संयोगश्च ❀ मातृगमनम् दुहितृगमनम् स्नुषागमनमित्यतिपातकानि ❀ यागस्थक्षत्रियवधो वैश्यस्यच रजस्वलायाश्चान्तर्वत्न्याश्च सगोत्रायाश्चाऽविज्ञातस्य गर्भस्य शरणागतस्यच घातनं ब्रह्महत्यासमानि ॥ कौटसाक्ष्यं सुहृद्वध इत्येतौ सुरापानसमौ ब्राह्मणभूमिहरणं सुवर्णस्तेयसमम् ❀ पितृव्य मातामह मातुल नृपपत्न्याभिगमनं गुरुदारगमनसमम् ❀ पितृष्वसुर्मातृष्वसुर्गमनं श्रोत्रियर्त्विगुपाध्यायमित्रपत्न्यभिगमनं च स्वसुःसख्याः सगोत्राया उत्तमवर्णाया रजस्वलायाः शरणागतायाः प्रव्रजिताया निक्षिप्तायाश्च गमनमित्येतान्यनुपातकानि ❀ अनृतंचसमुत्कर्षे राजगामिचपैशुनम् गुरोश्चालीकनिर्बंधो वेदानिंदा

संगमकरणा सो गुरोंकी स्त्रीके संगके बराबरहै ॥ और पिताकी जो भगिनी और माता की जो भगिनी और श्रोत्रिय जो है वेदपाठी तिसकी स्त्री और ऋत्विक् जो है यज्ञकराणेवाला तिसकी स्त्री और उपाध्याय जो है पढाणेवाला तिसकी स्त्री और मित्रकी स्त्री इन स्त्रियों में जो संगम करणा और भगिनीकी जो सहेलीहै और सगोत्रा जो स्त्री और उत्तम वर्णकी जो स्त्री और रजस्वला जो स्त्री और अपणी शरणको प्राप्त जो स्त्री और संन्यास धारया है जिसनें सो जो स्त्री और निक्षिप्ता क्या किसीनें अमानधरी जो स्त्री इनमें जो गमनहै एह सब अनुपातक कहे हैं ❀ अनृतमिति अपणी वडआई निमित्त जो झूठ बोलणा और राजाके कर्णमें प्राप्तहोणे वाली चुगलीकरणी और गुरोंमें झूठा हठकरणा और वेदोंकीनिंदा करणी

अधीति और पठनाकिया जो शास्त्र तिसका त्याग और अग्नि- पिता- माता- पुत्र- स्त्री- इनका जो त्याग ॥ और अभोज्य जो हैं जिनका अन्न नाहिं भक्षण करणा उनका अन्नभक्षण करणा ॥ पराये धनका चुराणा । परस्त्री गमन करणा । जिनको यज्ञका अधिकार नाहि है तिनकों यज्ञकराणा और व्रात्यता अर्थात् व्रातकालमें यज्ञोपवीतका नाहि धारणा। और मूल्यलेकर पढाणा। और मूल्यदेकके पढना। और संपूर्णखाणोंमें अधिकार होणा ॥ जीवमारणके निमित्त महायंत्रका प्रवर्त्तन करणा । वृक्ष-गुल्म-वेलां-ओषधिआं इनकी हिंसाकर्के जीविका करणी । अभिचार जो है हिंसाकर्म और मूलकर्म जो है जादू तिसमे वर्त्तना । अपने निमित्त क्रिया का आरंभ करणा। अग्नि को नाहिं सेवणा।देवता-ऋषि-पितरों का जो ऋण तिसका नाहिं दूरकरणा । माड़े

अधीतस्यत्यागोऽग्निपितृमातृसुतदाराणांच अभोज्यान्नभक्षणं परस्वापहरणं परदाराभिगमनं अयाज्यानांचयाजनं व्रात्यता भृतकाध्यापनं भृतादध्ययनादानं सर्वाकरेष्वधिकारो महायंत्रप्रवर्त्तनं द्रुमगुल्मलतौषधीनां हिंसाजीवनम् अभिचारमूलकर्म्मसुच प्रवृत्तिः आत्मार्थक्रियारंभोऽनाहिताग्निता देवर्षिपितृणामृणस्याऽनपक्रिया असच्छास्त्राभिगमनं नास्तिकता कुशीलता मद्यपस्त्रीनिषेवणमित्युपपातकानि ॥ ब्राह्मणस्यरुजःकरणम् अघ्रेयमद्ययोर्घ्रातिः जैह्म्यं पशुषु पुंसि च मैथुनाचरण मित्येतानि जातिभ्रंशकराणि ॥ ग्राम्याऽरण्यपशूनां हिंसनं संकरीकरणम् ॥ निन्दितेभ्यो धनादानम् वाणिज्यं कुसीदजीवनं असत्यभाषणं शूद्रसेवनमित्यपात्रीकरणानि ॥ पक्षिणां जलचराणां जलजातानां च घातनं

शास्त्रमे अभिगमन करणा नास्तिक होणा।माड़े स्वभाव वाला होणा।और मद्य पान करणे वाली स्त्रीका सेवन करणा । यह सभ उपपातकहैं ॥ ब्राह्मणकों रोगका करणा और जो नाहिं सिंगणे योग्यवस्तु और सराब इनकों सिंगणा और कुटिलहोणा पशुयों में और पुरुषमे मैथुनकरणा यह जातिभ्रंशकर पापहैं ॥ ग्राम्य और वनकेपशुयोंका जो मारणाहै सो संकरीकरण पाप होताहै॥ निंदित जो हैं पुरुष तिनों तें धनका लैणा व्यापार करणा व्याजकर्के जीविका करणी-झूठ बोलणा शूद्रकी सेवा करणी एह अपात्रीकरण पाप हैं ॥ पक्षी और जलचर और जलतें उत्पन्न भये जो जीव तिनका मारणा ॥

कृमीति कीडयोंका मारणा मद्य कर्के युक्त भोजन करणा एह मलावह पापहैं ❀ और जो नहिकथ नकिया सो प्रकीर्णक पापहै ❀ अबपापकी गणनाके प्रसंगतें पतित भी गिणीदे हैं सकृदिति द्विज जो है ब्राह्मण-क्षत्री-वैश्य-सो एकवार अज्ञानतें सरावके पीणेकर्के सद्यःपतित होताहै इत्यादि कर्के ब्रह्महत्येति ब्रह्महत्या-सरावकापीणा.चोरी.गुरोंकीस्त्रीके साथ संग करणा इनकों महापातक कहते हैं और जो मनुष्य महापातकियोंके साथ वर्त्ते इत्यादिश्लोक कर्के कथनकिये जो महापातक करणेवाले सो पतित होतेहैं और इसीप्रकार कन्यागामियोंतें आदिलेकर अतिपापी जो हैं सो सद्यः क्या तात्कालिक पतित होतेहैं सोई (यम) कहिताहै माताकी भगिनी- और

कृमिकीटघातनं मद्यानुगतभोजनमिति मलावहानि ❀ यदऽनुक्तं तत्प्रकीर्णकमिति ❀ अथपापगणनाप्रसंगात्पतिताअपिगण्यन्ते सकृत्पीत्वासुरांमोहात्सद्यःपततिवैद्विजइत्यादिना ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः महान्तिपातकान्याहुर्यश्चतैःसहसंवसेदित्याद्युक्तमहत्पापकर्त्तारः पतिता इतिगम्यते एवंकन्यागाम्यादयोऽप्यतिपापिनःसद्यःपतिताभवन्ति तथाच ।यमः। मातृष्वसा मातृसखी दुहिताच पितृष्वसा मातुलानी स्वसा श्वश्रूर्गत्वासद्यःपतेन्नरइति नरइत्यनेनद्विजेतराणामपिशूद्रप्रभृतीनां ग्रहणम् गौतमेनाऽन्येऽपि पतिताउक्ताः❀मातृपितृयोनिसंबंधागः स्तेन नास्तिक निन्दित कर्म्माभ्यासि पतितात्याग्यपतितत्यागिनःपतिताः पातकसंप्रयोजकाश्चेति ❀ पातकेति मिथ्यापातकप्रयोगेणाऽन्यदूषकाः

माताकी सहेली. कन्या. पिताकी भगिनी. मामेकीस्त्री. भगिनी. सस्स इनके साथ संग करणेसें मनुष्य उसीसमय पतित होजाताहै नर इसपदके ग्रहण करणेसें जो ब्राह्मणोंतें भिन्न भी- शूद्रप्रभृति हैं तिनका ग्रहणहोताहै❀ और गौतमजीने औरभी पतित कहेहैं माता पिताकी योनि संबंधी स्त्री विषे गमनकरणे वाला जो पाप. चोर. नास्तिक. और वहुतवार निंदित कर्म्मोंको करणेवाला और पतित जो हैं तिनकों नहीं त्यागणे वाला और अपतित जो हैं शुद्ध तिनकों त्यागने वाला इतने पतित होतेहैं और पातकोंके संप्रयोजक भी पतित होतेहैं अर्थात् जो मिथ्यापातक प्रयोगकर्के अन्यदूषक क्या औरकों दूषण लगाणे वाले हैं

एवमिति इसीप्रकार महापातकोंके बराबर जो पाप कहेहैं उनकोही पातकसंज्ञा है और उनोंतें छोटे जो पाप हैं सो उपपातक हैं इत्यादिकर्के और गुरूणामिति गुरु जो हैं तिनका अत्यंत तिरस्कारकरणा और वेदोंकी निंदाकरणी सुहृद् जो मित्र हैं तिनकों मारणा और पढआ जो शास्त्र तिसकों भुलायदेणा एह ब्रह्महत्याके बराबर पाप जानणे योग्यहैं इत्यादि कर्के कहे जो पातकोंके करणेवाले सोबी पतितहैं और उपपातकी जो हैं सोवी कितनेक बहुतवार उपपातकके करणे करके पतित हो जातेहैं ॥ इसमें कितनेक पंडित ऐसा विचारकर्त्तेहैं ॥ जिस अर्थवादमें प्रत्यवायका विशेष श्रवण करीदाहै अथवा प्राय-

एवं महापातकतुल्यानिपापान्युक्तानियानितु तानिपातकसंज्ञानितन्न्यूनमुपपातकमित्यादिना गुरूणामध्यधिक्षेपो वेदनिंदा सुहृद्वधःब्रह्महत्यासमंज्ञेयमधीतस्यचनाशनमित्यादिना चोक्ताःपातककर्त्तारोऽपिपतिताःउपपातकिनस्तु केचिदभ्यासेन पतिता भवंति अत्रोच्यते ॥ यत्रार्थवादे प्रत्यवायविशेषः श्रूयते प्रायश्चित्तवहुत्वं वा तस्मिन्निंदितकर्म्मणि यावत्यभ्यस्यमाने महापातकतुल्यत्वंभवति तावानऽभ्यासः पातित्यहेतुः एवंच सकृद्गोघ्नादयस्तु पतिताभासाएव शास्त्रत आचारात्तु पतिताः अतएवोक्तं तन्न्यूनमुपपातकमिति दिवास्वप्नादौ तु सहस्रकृत्वोऽप्यभ्यस्यमानेपि न महापातकतुल्यत्वं भवतीति न पातित्यमतोयुक्तमुपपातकादेरभ्यासापेक्षया पतनहेतुत्वम् निन्दितकर्म्माभ्यासीति पूर्वोक्तगौतमोक्तेः

श्चित्तका बहुत्व श्रवण करीदा सो जो निंदित कर्म्महै तिसके बहुतवार करणेमें महापातककी तुल्यताकों प्राप्तहुंदाहै इतना जो अभ्यास है सो पातित्यका कारण है इसीप्रकार एकवार गोहत्याके करणेवाले पतिताभास हि हैं शास्त्रकर्के और आचारतें पतित होतेहैं इसीतें किहाहै महापातकोंतें जो छोटा है सो उपपातक है और दिवाशयनादिमे हजार वार अभ्यास कर्के भी महापातकादि तुल्यताकों नहिं प्राप्त होता और पतितभावको नहिं प्राप्तहोता इसतें उपपातकादि जो हैं उनके बहुतवार करणेते पतनहेतुत्व योग्य है ॥ निंदितकर्म्माभ्यासी जो है सो पतित होताहै एह पूर्वकिहा जो गौतमजीका बचन तिसतें

तेनेति तिसकर्के ब्रह्महत्यादि अतिदिष्ट प्रायश्चित्ती क्या जिनोंनें ब्रह्महत्या नहीं करी और
गुरुद्रोहादि कियाहै उनका नाम है अतिदिष्ट प्रायश्चित्ती सो पापी हि हैं पतित नहि हैं ॥ एह
जो है गर्भ तिसका नहि जाणआं एह आपस्तंबीयवचनकी व्याख्यामें ॥ तिस ब्राह्मणका गर्भ स्त्री
पुरुषभावकर्के जो नहि जाणया तिसकों मारकर्के ब्रह्महत्याके व्रतकों करे इसप्रकारकी जो ब्रह्महत्या
तिसमें व्रतका अतिदेश हि है पातित्यादिका अतिदेश नहीं है तिसकर्के अतिदिष्ट प्रायश्चित्तमें
अपतितभावके होणेतें द्विजातिकर्म्म जो हैं संध्यावंदनादि तिनोंकर्के अधिकारी करिदाहि है
॥ पतितत्व जो है सो द्विजातिकर्म्मका अनर्हत्वहै एह अपरार्कमें स्पष्ट कियाहै ॥ और तिसीप्रकार

तेन ब्रह्महत्याद्यतिदिष्टप्रायश्चित्तिनः पापा एव न पतिताः एतच्च गर्भंच
तस्याऽविज्ञातमित्यापस्तंबीयवचनव्याख्यायां तस्यब्राह्मणस्य गर्भं स्त्रीपु
रुषभावेनाऽविज्ञातंहत्वा ब्रह्महव्रतंचरेदित्येवंरूपायां अत्र व्रतातिदेशएव
न पातित्यातिदेशःतेनाऽतिदिष्टप्रायश्चित्तेऽपतितत्वाद्द्विजातिकर्म्मभिरधि
क्रियतएव पातित्यंच द्विजातिकर्म्मानर्हत्वमित्यपरार्के स्पष्टीकृतम् ❁ तथाच
जातिभ्रंशकरादिपंचपापकर्त्तारस्तत्तन्नाम्नैव व्यवह्रियंते न पतिता इतिवि
वेकः द्विजातिकर्म्मणामपि अध्ययनेज्यादानाध्यापनयाजनप्रतिग्रहाणा
मेवाऽनधिकारो न स्नानसंध्यादीनाम् खट्वांगकपालपाणिर्द्वादशसंवत्सरा
न्ब्रह्मचारीत्यादिसंवर्त्तस्मरणे ब्रह्मचारिपदस्य ब्रह्मचारिप्रकरणोक्तसन्ध्या
वंदनादि वर्ज्जयेन्मधुमांसेत्यादि यावद्धर्म्मप्राप्त्यर्थावगमात्

जातिभ्रंशकरादि जो पंच पापहैं तिनके करणेवाले तिस तिस नाम कर्के व्यवहार करीदेहैं
पतित नहि होते एह विवेक है और द्विजातिकर्म्म जोहैं पढना पूजाकरणी,दानकरणा-पढाउना
यज्ञकराणा, दानलैणा इनका हि उनकों अधिकार नहि है और स्नानसंध्यादिका निषेध नहिं है
अर्थात् स्नानादिकरन् ॥ खट्वांगेति खट्वांग और कपाल हाथमें जिसके सो बारांवर्ष पर्यंत ब्रह्म
चर्य धारकर्के वर्त्ते इत्यादि संवर्त्तऋषिके स्मरणविषे जो ब्रह्मचारीपदहै तिसते ब्रह्मचारी प्रकरण
में किहे जो संध्यावंदनादिकर्म्म तिनकोंकरे और सराव,मांस-इत्यादि जो हैं तिनकों त्यागे इस
आदिलेकर्के कहे जो संपूर्ण ब्रह्मचर्य धर्म्म तिनकी प्राप्तिकी प्रतीति होणेते अर्थात् प्राप्तहोणेतें

स्थान और आसन इनोंकर्के विहार करदा २ प्रातः १ संध्या. सायंकालमें स्नान करताहुआ शुद्ध होताहै एह गौत्तमस्मरणमें है अर्थात् गौत्तमस्मृतिमें है सवनेषूदकस्पर्शी इसपदकर्के स्नान विधिकर्के तदंगभूत जो संध्यावंदनादि तिनकोंभीउक्तहोणेतें किंचेति इसकर्के इसीकों फेर कहितेहैं पवित्र होयकर्के कर्म्म करणे योग्यहै इसकों सर्वकर्म्मसाधारण होणेतें ब्रह्मचर्यागभूत जो शौच तिसकी संपात्तिके निमित्त स्नानकीन्याईं संध्योपासन भी करणेयोग्यहै तिसकों शोचका जो संपादन तिस द्वारा सर्वकर्म्मोंके होणेतें अर्थात् सर्वकर्मोका अंग होणेतें ॥ तथाचेति सोई दक्ष कहिताहै ॥ संध्याहीन जो है सो नित्यं प्रति अपवित्र होताहै और संपूर्ण

स्थानासनाभ्यांविहरन्सवनेषूदकोपस्पर्शी शुध्येदिति गौत्तमस्मरणे सवने षूदकस्पर्शीत्यनेनस्नानविधिना तदंगभूतानां सन्ध्यादीनामप्युक्तत्वात् किंच शुचिनाकर्म्मकर्त्तव्यमित्यस्य सर्वकर्मसाधारणत्वात् ब्रह्मचर्य्यांगभूतशौच संपत्त्यर्थं स्नानवत्संध्योपासनमपि कार्य्यं तस्याऽपिशौचापादनद्वारेण सर्व कर्म्मशेषत्वात् तथाच दक्षः ॥ सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्म्मसु य त्किंचित्कुरुतेकर्म्म नतस्यफलभाग्भवेदिति नच द्विजातिकर्म्मभ्योहानिःपतन मितिवचनात् संध्योपासनायाश्च द्विजातिकर्म्मत्वादप्राप्तिरितिशंकनीयम् यस्मात्पतितस्यैव व्रतचर्य्योपदेशात्तदंगतयैव संध्योपासनादिप्राप्तिरतोऽ ध्ययनादीनामेव द्विजातिकर्म्मणां हानि नं सर्वेषां तावन्मात्रबाधेनाऽपि हानिवचनस्य चरितार्थत्वादिति विदांकुर्वन्तुविद्वांसः

कर्म्मोंमें अनर्ह क्या योग्य नहि होता जिस २ कर्म्मकों कर्त्ताहै तिस २ कर्म्मके फलका भागी नहि होता (प्रश्न) नचेति द्विजाति जो हैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनके कर्म्मोंते हा निका हि नाम पतनहै इसवचनतें संध्योपासन जो है तिसकों द्विजातिकर्म्महोणेते अप्रा प्ति क्या संध्योपासनादिको नहिं करणा (उत्तर) एह शंका नहि करणेयोग्य जिसतें पतितकोंहि व्रतचर्य्याके उपदेशहोणेते तिसका अंग हि संध्योपासनादिप्राप्ति है और इसीते एह प्रतीत होआ कि वेदाध्ययनादि जो द्विजातिकर्म्महैं तिनकी हि द्विजातिपतितोंको हानि है कोई सभकी नहि क्योंकि तिनकी हानिकर्के भी हानिवचनकों चरितार्थहोणेते इस बातकों पंडितलोक जाणें

अत्रोते इसमें जो पुरुषोंकों पतन निमित्त हैं स्त्रियोंकों वी सोई जानने योग्य हैं और याज्ञवल्क्यनें इसमें विशेष भी कथन कियाहै नीचमें संगमकरणा गर्भका पातनकरणा भर्त्ताकों मारणा एह स्त्रियोंकों विशेष करके पतनीय हैं ब्राह्मणजातीतें भिन्नजातीकी जो स्त्रीहै तिसकों भी पतितकामारणा और ब्राह्मणजातीते भिन्न जो भर्त्ताहै तिसकाभी जो मारणा एह भर्तृहिंसन पदका अर्थहै एह तीन कर्म हैं स्त्रियोंकों असाधारण क्या निश्शेषपतनके निमित्तहैं इहां अपिशब्दकके महापातकाऽतिपातकाऽनुपातकभीहैं और बहुतवार किये जो उपपातक सो स्त्रियोंको निश्चित पतनके कारणहैं इह हि शौनकजीनेकहेहैं ॥ और वसिष्ठजी कहतेहैं स्त्रीको तीनिहि पातक लोकमे धर्म्मके जाणने वाले कहितेहैं स्वामीका मारणा १ दूसरेका गर्भ पातन २ और अपणे

अत्र यानि पुरुषाणां पतननिमित्तानि स्त्रीणामपि तानि ज्ञातव्यानि याज्ञवल्क्येनतु विशेषोप्यऽभिहितः नीचाभिगमनं गर्भपातनं भर्तृहिंसनम् बिशेषपतनीयानि स्त्रीणामेतान्यपिध्रुवम् १ अब्राह्मण्याअपिभर्तुःअब्राह्मणस्याऽपिहिंसनमित्येतानि त्रीणि स्त्रीणामसाधारणानि पतननिमित्तानि ॥ अपिशब्देन महापातकातिपातकानुपातकानि अभ्यस्तान्युपपातकान्यपि स्त्रीणां ध्रुवं निश्चितं पतनहेतूनि इमान्येव शौनकेनोक्तानि ॥ वसिष्ठेन तु ॥ त्रीणिस्त्रियाःपातकानिलोकेधर्म्मविदोविदुः भर्त्तुर्वधो भ्रूणहत्या स्वस्य गर्भस्यपातनमिति इदमपिविशेषार्थं नतु पुरुषपतननिमित्तनिरासार्थम् किंच चतस्रस्तुपरित्याज्याः शिष्यगागुरुगाचया पतिघ्नीचाविशेषेण जुंगितोपगताचया इत्येतास्तु पतितास्त्यागार्थं गणिताः

गर्भका पातन३ एहभी स्त्रीयोंको विशेषार्थ है और पुरुषपतननिमित्त जो हैं तिनके दूरकरणके निमित्त नहिहैं अर्थात् पुरुषकों जो पतननिमित्तहैं सोभी सभ और उनमे स्वामीका मारणा भ्रूणहत्याका कराणा- और अपणे गर्भका पातनकरणा ३ एह तीन कर्म विशेष पतनकारण हैं किंचेति इसकर्केभी पूर्वोक्त अभिप्रायकों हि कहतेहैं चार स्त्रियां त्यागदेणे योग्यहैं ॥ अब तिनकों कहितेहैं एकतो शिष्यके साथ संग करणेवाली १ और दूसरी गुरुकेसाथ संग करणेवाली २ और तीसरी स्वामीकों मारणेवाली ३ और चौथी जुंगित जो है प्रतिलोमज तिसके साथ संग करणेवाली ४ एह पतित स्त्रियां त्यागके निमित्त गिणिआं हैं

एह जेकर प्रायश्चित्तके करणेकी इच्छानहि करें तवइनका परित्याग करणे योग्यहै और जो पतित स्त्रियांहैं तिनकी वस्त्र-अन्न गृहमें वास देणा इत्यादि करके रक्षाकरणी एह तात्पर्यहै और प्रतिलोमज जो मनुष्य है तिसका नाम जुंगितहै जैसें ब्राह्मणीमें क्षत्रीतें जन्म जिसका इत्यादि नन्विति (प्रश्णः) पतिततें जन्मभयाहै जिसका तिसकों पतित कहतेहैं परंतु स्त्रीतें विना सो स्त्री पर गामिनी है केवल तिस स्त्रीकों ग्रहणकरे अरिक्था क्या केवल वस्त्रमात्र करके युक्त कों अर्थात् तिसकोंपतितके घरसे विवाहलेवे परंतु शुद्धस्नान होईको अपना वस्त्रदेकर्के और धन. उसका साथ न लेवे एह कहिता जो वसिष्ठ और हारीत तिनका क्या अभिप्रायहै (उत्तर)

एतासां प्रायश्चित्तमनिच्छन्तीनां परित्यागोविधेयः अन्यासां तु पतितानां चैलान्नगृहवासादिना रक्षणमेवेति तात्पर्य्यम् ॥ जुंगितः प्रतिलोमजः।(ननु) पतितेनोत्पन्नःपतित इत्याहुः अन्यत्रस्त्रियाः साहिपरगामिनी तामरिक्था मुपादेयादिति वदतो वशिष्ठस्य हारीतस्य च को ऽभिप्रायः॥ पतितोत्पन्न कन्यायाग्रहणं प्रायश्चित्तेन युक्तं चेत्तदा तत्पुत्रस्यापि संततित्वावि शेषात् कुतो न ग्रहणम् स्त्रीणामर्द्धप्रदातव्यमित्यादिवचनविशेषेण कन्या याः स्वल्पेन प्रायश्चित्तेन पुत्रस्य त्वऽधिकेन शुभाचारिभिर्ग्राह्यता युक्तेव प्रतिभाति व्रात्योत्पन्नवत् पतितोत्पन्नोऽपि प्रायश्चित्तार्होभवेत् ततश्च संस्कारानंतरं स्वस्ववर्णैर्व्यवहार्य्योभवेत् नहि व्रात्यपतितयोर्गुणद्रव्य योरिव वास्तवोभेदः

पतिततें जन्मी जो कन्या तिसका ग्रहण प्रायश्चित्त करके जद योग्यहै तद पतितका जो पुत्रहै तिसकों वी संबतीका अविशेष होणेतें क्या कन्याके तुल्य होणेते ग्रहण किसतें नहिं होता स्त्रियों कों अर्ध प्रायश्चित्त देणे योग्यहै इत्यादि वचन विशेष करके कन्याकों थोडे प्रायश्चित्त करके और पुत्रकी वहुत प्रायश्चित्त करके शुभाचारि जो हैं शुभके आचरण करणवाले तिनोनें ग्राह्यता कहीहै इह वात प्रतीत हुंदी है (प्रश्ण) व्रात्यतें उत्पन्नभया जो है तिसकी न्याईं पतितोत्पन्न वी प्रायश्चित्त योग्यहोवे तिसतें संस्कारतें उपरंत अपणे अपणे वर्णोंकरके व्यवहारयोग्य होना चाहिए (उत्तर) व्रात्य और पतितका गुणद्रव्यकी न्याईं वास्तव भेद नहिं है

किंतु धूम्र. कृष्ण जो रंग हैं तिनकी न्याईं दोषतारतम्यकृत भेद है इसतें इहां एह अर्थहै पतित पुरुष कर्के उत्पन्न भया जो पुत्र सोबी पतित होता है अपणे पिताके पातित्याऽनुसारकर्के सो प्रायश्चित्तके योग्यहै और कन्या पतिता नहि हुंदी॥ अब इसीकों बौधायन ऋषिकाहिताहै अशुचीति पतितके वीर्य्यतें जन्मे जो हैं और प्रायश्चितोंकी इच्छा कर्ते हैं तिनकों पतितोंसें तीसरा हिस्सा प्रायश्चित्तहै और स्त्रियोंकों तीसरे हेसेका तृतीयांश प्रायश्चित्त है इसका एह अर्थहै पतित जो पिता तिसके जो पतनीय कर्म हैं तिनके प्रायश्चित्तोंका तृतीयांश पतितोत्पन्न पुरुषोंको प्रायश्चित्तहै तिसका बी तृतीयांश प्रायश्चित्त पतितोत्पन्न स्त्रियोंकोंहै तिसतें पतितोत्पन्न कन्या अथवा पतितोत्पन्न पुत्र

किंतु धूम्रकृष्णयोरिव दोषतारतम्यकृत एव भेदोऽस्ति अतश्चाऽयमत्रार्थः पतितेन पुरुषेणोत्पन्नः पुत्रोऽपि पतितः स्वजनकपातित्यानुसारेण प्रायश्चित्तार्हः कन्यातु न पतितेत्यर्थः ॥ इदमेवाह बौधायनः ॥ अशुचिशुक्रोत्पन्नानामिच्छतां प्रायश्चित्तानि पतनीयानां तृतीयांशः स्त्रीणामंशात्तृतीयः अयमर्थः जनकस्यपतितस्य यानि कर्माणि पतनीयानि तत्प्रायश्चित्तानां तृतीयांशः पतितोत्पन्नानां पुंसां प्रायश्चित्तं तस्यापि तृतीयोभागः पतितोत्पन्नानां स्त्रीणामिति ततश्च पतितोत्पन्ना कन्या पुत्रो वा सदाचारिभिः प्रायश्चित्ततारतम्येन मेलनीयः ॥ अथेदानींतनाः केचनजनाः॥ प्रागऽतीव वलवाद्भिर्भारतवर्षीयधर्माध्वविध्वंसनाय कृतावतारैरिव म्लेच्छापसदैरकारणं वलादेव स्वकीयान्नभोजनेन स्वकन्यादिसंवन्धसंविधानेन चैवंविधेनाऽन्येनापि सद्यःपातित्यहेतुना स्वैःसाकं शयनासनपानादिव्यवहारप्रवर्त्तनेनाऽवशतया स्वधर्मात्प्रच्यावितानां

होवे सो श्रेष्ठ आचार करणे वालयोंने प्रायश्चित्त की तारतम्यता कर्के मेलने योग्य है॥ अथेति इसमे औरभी विचार है ॥ इसकालविषें होणवाले जो कोईकलोक सो पिच्छे बहुत वलवाले और भारतवर्षके धर्मरूपमार्गके नाश करणेवास्ते किया है अवतार जिनोंने ऐसे जो म्लच्छोंके समान हैं तिनोंकर्के कारणते विना वलतेंही अपणे अन्नके भोजनकराणे कर्के और अपनी कन्याकेदेनकरके भी उनको अपने धर्मसे लेआउता इसप्रकारके होर कर्म कर्के भी केसे कर्महैं शीघ्र हि पातित्यके हेतुहैं और आपणें साथ शयन और आसन और पानादि व्यवहारके वर्त्तनकराणे कर्के अवश्यतातेअपणे धर्मतें दूरहोए जो वर्णाश्रमी लोक

तद्देति तिनांकों तिस कालविषें म्लेच्छोंकी आज्ञादेहोआं होयां तिस आज्ञादे ना पालनेतें सता बाहा सपूर्ण वंशके नाशनूं निश्चयकर्कें कालांतरविषें उचित जो प्रायश्चित्त तिसके आचरणकर्कें बहुतपापको दूरकरणेको संभावनाकर्कें तथाविध जो बहुत आपदा तिसके विषें प्राणांको रक्षा करणो हि परम धर्म है एह जो मन्न रहेहैं और चिरकाल तिनांकी वलीयता कर्कें तिनांतें आपणे आपनूं छुडाने वास्तें अवसरनूं ना प्राप्त होकर्कें पुत्रपोत्रादि परंपराकर्कें तैसेंही अर्थात म्लेच्छ हि जो स्थितहैं उसीतें लेकर जो म्लेच्छीभूतहैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इनांके कुलविषें उत्पन्न होएथे और पीछे जडे होएहैं म्लेच्छ और अपणी नास्तिकतानूं रौरवादि नरकका साधन जाणकर्कें कोइंकभी पूर्वजन्मका सुकृतलेश था तिसका जो परिपाकहै पकणा तिसके

तदात्वे तन्निदेशातिक्रमे सद्यएव सकलस्वान्वयनाशं निश्चित्य कालान्तरसमुचितप्रायश्चित्ताचरणेन गुरुतरदुरितनिष्कृतिसंभावनया तथाविधायां गरीयस्यामापदि प्राणत्राणमेव परमं धर्मं मन्यमानानां चिरं तेषां वलीयस्तया तेभ्यः स्वात्मानं मोचयितुमवकाशमलब्ध्वा पुत्रपौत्रादिपारम्पर्येण तथैवावस्थितानां ततएव च म्लेच्छीभूतानां विप्रक्षत्रियविट्शूद्राणां कुलेषु प्रसूता म्लेच्छा वा स्वां नास्तिकतां विविधरौरवादि निरय साधनतया कुतश्चिदपि प्राग्भवीयसुकृतलेशपरिपाकोदितेन शिष्टवाक्यादिना दृढमवधार्य भृशमनुशयानाश्चेत्प्रणिपातमात्रपरितुष्टेभ्यो दीनजनानुकम्पया तदुद्धारायैव भगवता विधिना सृष्टेभ्यः स्वप्रार्थनांजलिशताकृष्टेभ्यः शिष्टेभ्यः कथंचिदपि साध्वनुष्ठितेन प्रायश्चित्तादिना नरकतरणोपायं स्वोचितनिगमानुमतदेवतासमाराधनाद्युपदेशं च वारं वारंप्रणिपत्यप्रार्थयेरन्

उदय होणे कर्कें और शिष्टपुरुषोंके वाक्यादिकर्कें निश्चयसे जानकर अतिशयकर्कें अनुशयानाः क्या नरकदुःखकेदूरकरणे वास्ते चिताग्रस्त होए २ जेकर नमस्कारमात्रसे प्रसन्नहोंणेवाले और दीनपुरुषोंपर दयाकरणवाले और दुखिओंके उद्धारवास्ते मानो ब्रह्माजीने रचे होएहैं और पापीकी सहितअंजलिके प्रार्थना सुणकर दयार्द्रचित्तवालेहैं ऐसे शिष्टपुरुषांते कदाचित् अच्छीतरहां कीतेहोए प्रायश्चित्तते नरकतरणेके उपायको और अपणे योग्य शास्त्रानुसार देवताके आराधनादि उपदेशको वार वार प्रणिपातकर्कें क्या प्रणामकर्कें प्रार्थना करें

तर्हीति तद सो किसेक प्रकारसे नास्तिक्यबुद्धिते हटाएनुं अथवा सदाचारांके उपदेश करणेनुं योग्य हैन अथवा नहि ॐ पहले पक्षकोंलेकर कहतेहैं (प्रष्ण) जेकर उह म्लेच्छाभास भी उपदेश के योग्यहैं तदकहो कउन प्रायश्चित्त उनको देणा चाहिए कि जो जन्मतेंलेकर उनके आश्रित नास्तिक्य बुद्धिकों हरे और उनकेयोग्य कोनसे आचारहैं(उत्तर)इहिविचार अव करतेहैं तत्रेतितिसविषे जिनोंकों अपना उचित संस्कार प्राप्त होगयाहै ऐसे चारोंवर्णों विचो जिस वर्णकों अपणी इच्छाते अथवा म्लेच्छोंके वलसे म्लेच्छभाव प्राप्त होआहै और नास्तिक भाव हुआहै तिसको अपणा समुचितसंस्काराहि करणा चाहिए जो याज्ञवल्क्यादिमुनिओंने किहाहै परंतु पहिलेप्रायश्चित्त करके पापकों हटाकर और पिच्छे संस्कार कराणा तिसते अनंतर अपने वर्णके उचितधर्मकी प्राप्ति

तर्हिते कथंचिदपि नास्तिक्यतो मुक्तिं स्वोचिताचारांश्चोपदेष्टुमर्हा नवा ॐ अर्हाश्चेत् कीदृशं प्रायश्चित्तं जन्मतःप्रभृत्याश्रितनास्तिक्यदोषमोषकं केच तदुचिता आचारा इतिविमृश्यते तत्र येषांचातुर्वर्णिकानां प्राप्तस्वोचितसंस्काराणां वलात्स्वेच्छया वा म्लेच्छादिहीनजातिभिः संसर्गो नास्तिक्याद्याश्रयणं च तेषां मनुयाज्ञवल्क्याद्युक्तप्रायश्चित्तै स्तत्संसर्गनास्तिक्यजपापविनाशेन पुनःस्वस्ववर्णोचितधर्मप्राप्तिस्तुस्पष्टैव अयं तु विशेषः तेषां संसर्गकालतारतम्यपर्यालोचनया लघु लघीयो गुरु गरीयः प्रायश्चित्तप्राप्तिः नास्तिक्यस्य तु वेदादिप्रामाण्याविश्वासरूपस्य नास्तिक्यं व्रतलोपश्चेत्युपपातकप्रकरणे पाठेनोपपातकशुद्धिःस्यादेवं चान्द्रायणेन वा पयसा वाऽपि मासेन पराकेणाथवा पुनरित्युक्तेषु प्रायश्चित्तेष्वन्यतमेन पापानुरूपेणोपदिष्टेन निष्कृतिः

हेविगी एह वात स्पष्टहै इतना इसविषे विशेषहै कि जो वर्णाश्रमी म्लेच्छ होएदेहैं तिनके संसर्गकालके न्यूनाधिकभावके विचारकर्के कि इनका कितना चिर भोजनादिमें संसर्ग रिहाहै इसविचारकर्के छोटेसे छोटा वडेसे वडा प्रायश्चित्त आवेगा और जो उनको वेदादिविषे अविश्वासरूप नास्तिक्य भाव रिहाहै तिसपापके दूरकरणेवास्ते वेदादिविषे प्रामाण्यबुद्धि होणी अर्थात् वेदहि प्रमाणहै औसा विश्वासहोणा इसकर्के और (नास्तिक्यं व्रतलोपश्च) औसा उपपातकप्रकरणविषे पाठ है तिसका प्रायश्चित्तभी उसी जगाहै (उपपातकशुद्धिः स्यात्) इत्यादिवचनाविषे कहे जो प्रकारहैं तिन्हां विचों किसे एक कर्के शुद्धि होवेगी

येषामिति और जेडे अकृतसंस्कार हैं क्या जिनके यज्ञोपवीतादि संस्कार नहि होए और म्लेच्छादि संसर्ग उनको होआहे और नास्तिक भाव भी होआहै तिनकों आपत्तिकर्के संस्कारके लोप होणेते इतऊर्ध्वंत्रयोप्येते इत्यादिवचनकर्के व्रात्यदोषको कहकर पीछे व्रात्यस्तोमयज्ञते विना उनकीशुद्धि नहि होती ऐसाकिहाहै तिसते ब्राह्मणादिचारवर्णकों क्रमकर्के १६। २२।२४ वर्षांदे अंदर व्रात्यतादोषके दूर करणेवास्ते व्रात्यस्तोम यज्ञका विधानहै तिस प्रायश्चित्त कर्के नष्ट होएहैं पाप जिनांदे तिनको भी यज्ञोपवीतादि संस्कारपूर्वक अपणे धर्मकी प्राप्ति होवेगी तिसपूर्वोक्त वचनका अर्थ एह है त्रय वर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य यथाकाल क्या जि

येषां त्वऽकृतसंस्काराणामिव तैःसंसर्गो नास्तिक्याश्रयणं च तेषामापदाऽप्राप्तसंस्काराणामित ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्याऽऽर्यविगर्हिता इतिमनूक्तेरापद्यपि व्रात्यत्वस्याऽपरिहार्यतयाऽतऊर्ध्वंत्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः सावित्रीपतिताव्रात्या व्रात्यस्तोमादृतेक्रतोरिति विप्रक्षत्रियविशां क्रमेण षोडशद्वाविंशतिचतुर्विंशतिसंवत्सराभ्यन्तरेऽनुपनीतानां व्रात्यतायाः पर्युदासमुखेन व्रात्यस्तोमरूपप्रायश्चित्ताऽपनोद्यत्वोक्तेः तेन नास्तिक्यप्रायश्चित्तेन च नष्टपापानामस्त्येवोपनयनपूर्वकं स्वस्वधर्मप्राप्तिः ॥ शूद्राणांतु सावित्रीप्राप्तेरेवाऽभावेन तदभावप्रयोज्यत्वस्यैव व्रात्यत्वे प्रागुक्तवचनतोऽलाभाद्व्रात्यत्वप्रयुक्तप्रायश्चित्ताऽप्राप्तावप्यऽव्यवहार्य म्लेच्छादि स्पृष्टान्नभोजनादिमात्रप्रयुक्तप्रायश्चित्तस्य दिनगणनया कल्पितावृत्त्या नास्तिक्यस्य च चातुर्वर्ण्यैः सर्वैरपि परिहार्यतया

स कालमें उनको संस्कार करणा था उस कालमे जेकर उपवीतादिसंस्कार ना होवे तद उनकी व्रात्यसंज्ञा है सो व्रात्य श्रेष्टपुरुषोंमे विगर्हित है अर्थात् भलेलोक उनके साथ वर्त्तन नहि करदे ॥ शूद्रोंके अर्थ कहतेहैं शूद्राणामिति शूद्रोंको सावित्रीका विधान नहि तिस कर्के तिनको सावित्रीके नाहोणेते व्रात्यता नहि होती और तत्प्रयुक्त प्रायश्चित्तभी नहि होता किंतु नहि जिनके साथ व्यवहार करणा तिनों म्लेच्छोंके स्पर्श कीतेहोए अन्नका जो भक्षण है तिसका हि प्रायश्चित्त है तिसविषे भी दिनोंके गिणने कर्के कल्पित होई जो आवृत्ति तिस कर्के और तिनको जो रिहा नास्तिक्यभाव तिसका निषेध चारोंवर्णोंको है

तदिति इसतें शूद्रोंकोभी नास्तिक्यका प्रायश्चित्त करणा चाहिए तिसके पीछे शूद्रोंको उचित जो धर्म है तिसकीप्राप्ति योग्य है ❀ और ब्राह्मणादिवर्णत्रयको १५ वर्षतेपीछे गौणकाल है तिस तेंभी पीछे संस्कार अनापदविषे क्या स्वस्थताविषे नहि होवे अथवा थोडाकालभी अनापद्विषे संस्कार नहिहोवे तद पतित इसतें आदिलेकर जो मिताक्षरामें वसिष्ठजीका वचनहै तिसकर्के उद्दालक व्रत और व्रात्यस्तोम अथवा तिनों विषे एक अथवा मनुप्रोक्त त्रैमासिक व्रत जो है तिसको जो क्रमकर्के करणवाले हैं तिनका यज्ञोपवीत होवें एह मिताक्षरामें स्पष्टहै॥ और इस स्मृतिका अर्थ एह है कि जिसकी सावित्री पतितहो जावे सो उद्दालकव्रत करे और दो २ महीने यावक क्या यवांके काडेकर्के वर्त्ते और १ महीना दूधकर्के और १५ दिन आमिक्षाहे

तदाश्रयणप्रयुक्तपापनाशक प्रायश्चित्तस्याचरणेन च स्वोचितधर्मप्राप्तिरुचितैव ❀ त्रैवर्णिकानां पंचदशवर्षाधिककालं गौणकालादूर्ध्वमनापद्यनुपनीतानां किंचित्कालमपिवाऽनापद्यनुपनीतानां॥ पतितसावित्रीकउद्दालकव्रतंचरेद् द्वौ मासौयावकेनवर्त्तयेत् मासं पयसा पक्षमामिक्षयाऽष्टरात्रं घृतेन षड्रात्रमयाचितेन त्रिरात्रमब्भक्षोऽहोरात्रमुपवसेदश्वमेधावभृथं गच्छेद्व्रात्यस्तोमेन वा यजेतेति मिताक्षरा।धृतवसिष्ठवचनेनोद्दालकव्रतव्रात्यस्तोमयोरन्यतरन्मनूक्तंत्रैमासिकं च क्रमेण कृतवतामुपनेयता मिताक्षरादौ स्पष्टैव ॥ येषां तु पिता पितृपितामहौ पितृपितामहप्रपितामहाश्चाऽनुपनीताः सवर्णास्वेवच व्रात्यजासु पुत्रानुत्पादितवन्त स्ते भृज्जकण्टकादिसंज्ञकाः

जो दूधविषे दाहींमिलाकर बणे तिसकर्के और ८ रातां घृतकर्के और दो २ रातां अयाचितकर्के और ३ रात्र जल भक्षणकर्के और दिनरात्र उपवास करे अथवा अश्वमेध जिस स्थानमे होता है तहां जावे अथवा व्रात्यस्तोम करे इति ॥ और जिनका पिता अथवा जिनका पिता और पितामह दादा अथवा जिनका पिताभी और पितामह दादाभी और प्रपितामह पडदादाभी अनुपनीत हैं क्या यज्ञोपवीतसे हीन हैं सो अपने वर्णकीयां स्त्रियां विषे अर्थात् ब्राह्मणव्रात्य ब्रह्मणीविषे और क्षत्रियव्रात्य क्षत्रियाणी विषे इत्यादि क्रमसे अथवा स्त्रियांभी व्रात्यजा होण तिनोंविषे पुत्रोंको पैदे करदेहोए सो उत्पन्नहोए पुत्र भृज्जकंटकादि नामवाले हुंदेहैं

तदिति सोई शूद्रकमलाकरग्रंथ विषे मनुजीने कहाहै व्रात्येति व्रात्य क्या संस्कारहीन ब्राह्मणते उत्पन्नहोआ जो पुत्र है सो पापात्माहै और भृज्ज कंटक तिसका नाम है और आवंत्य और वाटधान और पुष्पशेखर एह सम उसीके नामहैं एह व्रात्यब्राह्मणते ब्राह्मणीविषे उत्पन्नहोएके नामहैं एह केककहतेहैं ॥ होर कोई ऐसा अर्थ करदेहैं कि व्रात्यब्राह्मणते ब्राह्मणीविषे भृज्जकण्टक और तिसतें ब्राह्मणीविषे आवन्त्य और तिसते ब्राह्मणी विषे वाटधान और तिसते ब्राह्मणीविषे पुष्पशेखर इति ऐसेहि व्रात्यक्षत्रियते क्षत्रिया णीविषे झल्ल मल्ल विच्छिवि नट करण खस द्रविड इति और व्रात्यवैश्यते वैश्याविषे सुधन्वा आचार्य्य कारूष विजन्मा मैत्र सात्वत इनानामांवाले उत्पन्न होतेहैं एह सभ शूद्रकमला

तदुक्तं (मनुना) व्रात्यात्तुजायते विप्रात्पापात्मा भृज्जकण्टकःआवन्त्यवाट धानौच पुष्पशेखरएवच विप्रायांजायतेव्रात्यविप्रजोभृज्जकण्टकइति अत्र यंव्यवस्था आवन्त्याद्यास्तस्यैव संज्ञा इतिमेधातिथिः अन्येतु भृज्जकण्टका द्विप्रायामावन्त्यः तस्मात्तस्यां वाटधानः तस्माच्च तस्यां पुष्पशेखर एवंव्रा त्यक्षत्रियात्क्षत्रियायां झल्लोमल्लश्चराजन्याद्व्रात्याल्लिच्छिविरेवच नटश्चक रणश्चैवखसोद्रविडएवचेतिझल्लादयः ॥ वैश्यात्तुजायतेव्रात्यात्सुधन्वाऽऽचा र्यएवच कारूषश्चविजन्माच मैत्रः सात्वतएवचेति सुधन्वादयोवैश्याजा एव इदंच शूद्रकमलाकरे स्पष्टम् एषांच व्रात्यत्वेऽपि विप्रत्वादिकं नही यते विप्रत्वादेर्जातिरूपतया विप्रजातीयपुरुषाद्विप्रजातीयकन्यायामुत्प न्नापत्यमात्रस्य विप्रत्वात्तत्र चादुष्टत्वस्याप्रयोजकत्वात् अतश्च तेषां विप्रत्वादे रनपगमात् ॥ अतिक्रान्ते तु सावित्र्याः काल ऋतुं

करग्रंथविषे स्पष्टहैं प्रयोजन एह है कि इनांको व्रात्यत्वके होआंभी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य एह संज्ञा दूर नहि हुंदी क्यों कि विप्रत्वादिहै जाति तिसते पुरुषभी विप्र और स्त्री तैसी तिनते जो होवेगा सो सभ तिसी जातिकाहै केवल उस जातिमै दुष्ट अदुष्ट इतना हि विचारहै और ऐसा नहि कि अदुष्ट हि होवे सोई जातिका प्रयोजक है ऐसा विचार होणेते ॥ अतइति इसी कारणते तिनांकी विप्रत्वादि जातिके नहि दूरहोणेतें स्मृतिको प्रायश्चित्तके अर्थ लिखतेहैं अतिक्रांतइति ॥ इसका अर्थ एहहै कि सावित्रीका काल जद लंघ जावें अर्थात् जिससमय यज्ञोपवीत पाणा था तिस समयके व्यतीतहोआँ दो महीने पर्यंत

त्रैविद्यक क्या जिसमै वेदत्रयका विचार होवे ऐसे ब्रह्मचर्यको करे तिसके अनंतर यज्ञोपवीत पावे और तदनंतर वर्षपर्यंत जलका उपस्पर्शनरूप एक कर्महै तिसको करे पीछे सावित्री पढाणी चाहिए और जिनका पिता और पितामह अनुपनीत होण क्या पतितसावित्रीक होण सो ब्रह्महसंस्तुत हैं अर्थात् ब्राह्मणमारणवालेओंकी पंक्तिमै हैं उनके गमनको क्या संबंधको और भोजनको और विवाहको वर्जना चाहिए उह जेकर प्रायश्चित्तकी इच्छा करें तो पहले अतिक्रमविषे जो उपर विधान लिखयाहै सो करके पीछे यज्ञोपवीत तदनंतर उदकोपस्पर्शन कर्म करे तदनंतर जितने पुरुष अनुपनीत रिहेहैं तितनी संख्याकके वर्षोविच (यावन्तोऽनुपनीताः) इत्यादि ऋचांकके और यज्ञपवित्र नामा यज्ञ करके और साम पवित्र नामकके आंगिरसेन क्या अंगिरा करके कहे

त्रैविद्यकं ब्रह्मचर्यं चरेदथोपनयनं ततःसंवत्सरमुदकोपस्पर्शनमथाध्या प्यो यस्य पिता पितामह इत्यनुपनीतौ स्यातां ते ब्रह्महसंस्तुताः तेषां गम नं भोजनं विवाहमिति वर्जयेत् तेषामिच्छतां प्रायश्चित्तं यथा प्रथमेऽतिक्र म ऋतुरेवं संवत्सरोऽथोपनयनं तत उदकोपस्पर्शनं प्रतिपुरुषसंख्यया संवत्सरान् यावन्तोऽनुपनीताःस्युःसप्तभिः पावमानीभिर्यदन्ति यच्च दू रक इत्येताभिर्यज्ञपवित्रेण सामपवित्रेणांगिरसेनेत्यपि वा व्याहृतिभि रेव मथाध्याप्योऽथयस्य प्रपितामहादीनां नानुस्मर्यत उपनयनं ते श्म शान संस्तुताः तेषामभ्यागमं भोजनं विवाहमिति वर्जयेत् तेषामिच्छतां प्रायश्चित्तं द्वादशवर्षाणि त्रैविद्यं ब्रह्मचर्यं चरेदथोपनयनं तत उदकोपस्प र्शनं पावमान्यादिभिरथ गृहमेधेनाऽध्यापनं ततोऽभिनिवर्त्तते तस्य यथा प्रथमेऽतिक्रमे ततऊर्ध्वं प्रकृतिवदिति ॥

होए करके और व्याहृतिआं जो हैं ॐ भूःइत्यादि तिनांकके शुद्धहोआं गायत्रीका उपदेश ग्रहण करे और जिनके पडदादेते आदलेकर यज्ञोपवीतकी वार्ता भी नहि सुणी सो श्मशानसंस्तुत हैं क्या श्मशानकीन्याईं अपवित्र हैं तिनांके स्थानमै जाणा आउणा और तिनका भोजन और विवाह एह सभ वर्जितहैं जेकर उह प्रायश्चित्तकी इच्छाकरें तद १२ वर्ष त्रैविद्यनामक ब्रह्म चर्य्यको करे तिसते अनंतर यज्ञोपवीत तदनंतर उदकोपस्पर्शन और पावमानीसे आदि लेकर जो ऋचांहैं तिनकके गृहमेध करणेते अनंतर अध्यापन क्या गायत्रीका उपदेश होवे और तिसते अनंतर फेरभी कोई सावित्री त्यागे तद तिसको जैसे पहले अतिक्रमविषे प्रायश्चित्त किहाहै तैसाकरे और उसके आगे फेरभी पूर्ववत् अतिक्रमहोवे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त करे

प्रायइति एह पूर्वोक्तव्यवस्थापक प्रायश्चित्तमयूख और प्रायश्चित्तोद्योत और प्रायश्चित्तमुक्तावली आदिक बहुत प्राचीनग्रंथोंविषे लिखेहोए आपस्तंबजीके वचनके अनुसार प्रायश्चित्तकरणकर्के दूर होए हैं पाप जिनोंके उनका उपनयनकर्के पीछे आपोआपणे धर्मकी प्राप्तिहिहै और शूद्रोंको जिस तरां अपणे धर्मकी प्राप्ति हुंदीहै सो पीछे कहहुकेहैं इनका व्रात्यत्वदोष नही है इसीकर्के तिस के अर्थ कोई प्रायश्चित्त भी नहीहै और इसकेआगे जेकर वृद्धप्रपितामहको आरंभकर्के अग ले जनकोंका उपनयन नहि हुणया तद तिनांकीयां आपोआपणे वर्णकीयां स्त्रियांविषे उत्पन्न होए जो पुरुष तिनांका बहुत प्रायश्चित्त करणे कर्के भी उपनयनादि संस्कारकी योग्यता नहि है

प्रायश्चित्तमयूख प्रायश्चित्तोद्योत प्रायश्चित्त मुक्तावल्यादि बहुतर प्राचीनग्रन्थ निबन्धधृतापस्तम्बवचनानुसारि प्रायश्चित्ताचरणेन निर्णिक्तपातकाना मुपनयनपूर्वक स्व स्ववर्णोचितधर्म्म प्राप्तिरस्त्येव शूद्राणां तु पूर्ववदेव तेषां व्रात्यत्व प्रयुक्तस्य पापविशेषस्याऽभावात् अतः परं च वृद्धप्रपितामहमारभ्य येषां जनकाना मुपनयनाभावः तेषां सवर्णास्वेवोत्पादितापत्यानामपि न प्रायश्चित्तस्य गुरुतरस्याऽप्याचरणेनोपनयनप्रभृति वैदिक संस्कारयोग्यताआपस्तम्बेन चतुर्थ पुरुषावध्येवव्रात्यत्वे प्रायश्चित्ताभिधानात् ॥ नचाऽऽपस्तम्बेन यस्य प्रपितामहादीनां नाऽनुस्मर्यत उपनयनमित्युपक्रम्य प्रायश्चित्ताभिधानात् तत्र चादिग्रहणेन ततः प्राचामप्यनुपनीतत्वे प्रायश्चित्तेन व्रात्यत्वनाशो युक्त एवेति वाच्यम् ॥ उक्तवचनं व्याचक्षाणेन भाष्यकृता हरदत्तेन प्रपितामहादि प्रपितामहादारभ्य प्रपितामहः पितामहः पिता स्वयं च यथाकालमिति ते तथाविधाः समाणवकाः

क्योंकि आपस्तंबजीने चौथे पुरुष तक हि व्रात्यत्वका प्रायश्चित्त विधान कीताहै(प्रश्ण) आपस्तंबजीने यस्य प्रपितामहादीनां इत्यादिवचनकर्के आरंभ जद कीता और प्रायश्चित्तविधान कीता इसजगा चकारके ग्रहण करणेते तिनांते अगलयांकाभी ग्रहण हुंदाहै तोभी जेकर अनुपनीत होण तौभी उनको प्रायश्चित करणा चाहिए(उत्तर)एह पीछेकिहा जो है आपस्तंबजीका वचन इसकी व्याख्याकरणवाले जो हैं भाष्यकार हरदत्त तिनांने प्रपितामहादि इसका एह अर्थ कीताहे किप्रपितामह और पितामह और पिता एह सभ अनुपनीत होण तो बालकके सहिततथाविध हैं

होते और श्मशानतुल्य हैं इतनाहिं किहा है और जिनके प्रपितामहके पिताका उपनयन नहिं है तिसविषे प्रायश्चित्तका अर्थ नाहे किया तथापि तिनांकी एक वार्ता है कि आपणे आपणे वर्णोविषे उत्पन्न होणे करके पूर्वोक्त रीतिसें विप्रत्वादिजातिकी न दूर होणेतें शूद्रकी अपेक्षातें उह श्रेष्ठ हैं ॥ कुछ होर कहते हैं किंचेति अध्ययन जो है वेदकापढना तिसका अंग है उपनयन तिसकी प्राप्तिके नहि होदां उपनीय गुरुः इत्यादि वचनकरके शौचाचारों की शिक्षाकों उपनयनके अंगिताकी सिद्धीतें तिसका अंग जो उपनयन तिसकी भी प्राप्ति होई सो उपनयन अपणे समीप होणा इसीका प्रापक दया प्राप्तिके करणवाला है कोई यथार्थ रूप

श्मशानतुल्या इत्यादि व्याख्याय यस्य तु प्रपितामहस्य पितुरारभ्य नाऽनुस्मर्यत उपनयनं तत्र प्रायश्चित्तं नोक्तमित्युपसंहारात् परंत्वेतेषां सवर्णाजत्वेन प्रागुक्तरीत्या विप्रत्वाद्यनपायाच्छूद्राऽपेक्षयोत्कृष्टत्वमस्तीतियुक्तम् किंचैषामध्ययनांगोपनयनप्राप्त्यभावेऽपि उपनीय गुरुःशिष्यं महाव्याहृतिपूर्वकम् वेदमध्यापयेच्चैनंशौचाचारांश्चशिक्षयेदितिवचनेन शौचाचारशिक्षणस्याऽप्युपनयनांगितायाःसिद्धेस्तदंगोपनयनप्राप्तिरस्त्येव तच्च स्वसमीप प्रापणमात्ररूपमिति बोध्यम् ॥ नच निषेकादिःश्मशानान्तो मंत्रैर्यस्योदितोविधिः तस्य शास्त्रेऽधिकारोऽस्मिन् ज्ञेयोनान्यस्यकस्यचिदिति मनुना समंत्रकश्मशानान्तविधिमतामेव शास्त्रोक्तानुष्ठानाधिकारो बोधितः व्रात्यजानां पुनः संकरजातीयप्रकरणमध्ये पाठात्तत्समानधर्मत्वप्रतिपादनेतात्पर्यावगमात्

को नहि करदा एह वार्त्ता जानणे योग्य है और इसवचनका अर्थ एह है कि गुरु शिष्यको यज्ञोपवीत देकर महाव्याहृतिपूर्वक वेदको पढावे और शौचाचारोंको सिखावे (प्रश्न) निषेकादीति मनुजीका वचन है इसका एह अर्थ है कि जिस पुरुषको निषेक जो है गर्भाधान तिसते आदि लेकर श्मशानपर्यंत मंत्रोंकरके विधि कही है तिसका इस शास्त्रमे अधिकारहै और किसेका नहि है १ इसवचनते जिनांके संस्कार मंत्रोंकरके होएहैं तिनांकाहि शास्त्रोक्तविधिमे अधिकार है एह प्रतीत हुंदाहै और जो व्रात्योंके पुत्र हैं उनका संकरजातिके प्रकरणविषे पाठहोणेते तिसते जाणयाई कि तिनांसंकरोंके हि समान हैं ऐसा तात्पर्यंहोणेते

और जौं संकरजातिहैं सो सभ शूद्रोंके तुल्य हैं इसवचनसें शूद्रोंको तुल्यताका वोध होणेते और स्त्रीयोंको और शूद्रोंको अमन्त्रक संस्कार है इसवचनकर्के तिनांव्रात्यसंकरोंको मंत्रका अधिकार हि नहि है इसते कैसे उपनयनपूर्वक शौचोंका और सदाचारोंका शिक्षण होवे (उत्तर) ऐसा मत कहो कि मंत्रपदकर्के नाममंत्रका भी ग्रहण होणेते द्विजानामिति द्विज जो हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनके १६ सोलां संस्कारहें शूद्रोंके १२ और संकरोंके ५ संस्कार कुलधर्म्मते हैं १ वेदव्रत उपनयन महानाम महाव्रत इनकेविना शूद्रोंके १२ संस्कार हैं परन्तु सभ नाममंत्रते हि हुंदेहें २ एह शूद्रकमलाकर ग्रंथ विषे लिखा

तेषांच शूद्राणांचसधर्माणः सर्वेपध्वंसजाः स्मृताइत्यनेन शूद्रसधर्मत्ववोधनात् स्त्रीशूद्राणाममंत्रकमितिवचनेन तेषां मंत्राधिकाराभाववोधनात् कथमुनयनपूर्वकशौचाचारशिक्षणप्राप्तिरिति वाच्यम् ॥ निषेकादिवाक्ये मंत्रपदेननाममंत्रस्याऽपिग्रहणात् द्विजानांषोडशैवस्यु शूद्रस्यद्वादशैवहि पंचैवमिश्रजातीनांसंस्काराःकुलधर्मतः वेदव्रतोपनयनमहानाम्नीमहाव्रतम् विनाद्वादशशूद्राणांसंस्कारानाममन्त्रतइति शूद्रकमलाकरधृतवचनेन तेषां नाममंत्राधिकारित्ववोधनात् अत्र चोपनयनशब्देनाऽध्ययनांगमेवोपनयनं विवक्षितं पूर्वोत्तरसाहचर्यात् अतएव महामहोपाध्यायगागाभट्ट कृत निवन्धे व्रात्यादीनां शौचाचारशिक्षणांगोपनयनप्राप्त्युक्तिः संगच्छते तत्र निषेकादिवचनेन शास्त्रोक्तसकलधर्माधिकारस्यैव नियमाच्च विप्रस्याप्यापत्तारतम्येन हीनजातिधर्माश्रयणास्याभिधानात् अतएव

जो वचनहै तिसकर्के नाममंत्रके अधिकार का वोध होणेते और व्रात्योंको उपनयन किहाहै सो भी अध्ययनका अंग है कोई यथार्थ नहिहै इसीकर्के महा महोपाध्याय गागाभट्ट जीने वना एहोए निवंधविषे व्रात्योंको शौच और आचार की शिक्षाका अंग जो उपनयनहै तिसकी प्राप्तिका वचन संगत हुंदाहै और तिसस्मृतिविषे जो निषेकादि वचनहै तिसकर्के शास्त्रकेकहे होए सभधर्म्मके अधिकारका नियम होणेते और ब्राह्मणको भी आपत्तिके थोडे वहुतहोणे कर्के हीन जातिकें धर्म्म जो हैं कृष्यादि तिनके स्वीकार विषे आज्ञा होणेते इसते एहि प्रतीत होआ कि जो धर्म्म देश कालानुसारि जिसको उचित होवे तिसको आज्ञा होणी चाहिए इसीका श्लोकहै

देशेति मनुजी देशोंके धर्म और जातियोंके और कुलोंके सनातन धर्म और पाषंडियोंके धर्म इसशास्त्रविषे कहते भये इसते एह वार्त्ता संगत होई जेकर ऐसा नहि मानो तो पाषंडियोंको मंत्रपूर्वक संस्कार के नाहोणेकर्के ग्रंथके आरंभका विरोध स्पष्ट हि है जो एह वचनहै कि स्त्रियोंको और शूद्रोंके संस्कार मंत्रते विना कहे हैं सो वैदिक मंत्रका निषेधहै औरका नहि इसते विरोध नहि आवेगा और किहा जो शास्त्रविषे अधिकार उसककेभी शास्त्राध्ययनके हि अधिकार विषे विवक्षा होणेते दोषका लशभी नहि आवेगा अतइति इसी कारणते तिनांके प्रपितामहते पहले जो अनुपनीत थे तिनांका व्रात्यत्व कदेभी

देशधर्मान् जातिधर्मान् कुलधर्मांश्चशाश्वतान् पाषण्डगणधर्मांश्चशास्त्रे स्मिन्नुक्तवान्मनुरितिसंगच्छते अन्यथा पाषण्डानां मंत्रपूर्वकसंस्काराभावे नोपक्रमविरोधः स्पष्टएव स्त्रीशूद्राणाममंत्रकमित्यस्य च वैदिकमंत्ररहितमित्यर्थेन विरोधाभावात् शास्त्रेऽधिकार इत्यनेन शास्त्राध्यापनाधिकारस्य विवक्षणे दोषलेशस्याप्यऽभावाच्च अतश्च तेषां प्रपितामहप्राक्कालप्रभृत्यनुपनीतानां व्रात्यत्वानपगमेऽपि शूद्रसमानधर्मतया नास्तिक्यम्लेच्छसंसर्गपरिहारपूर्वकमुचित प्रायश्चित्तेन शुद्धानामस्ति प्रागुक्तद्वादशसंस्कारप्राप्तिः येषां पुनश्चातुर्वर्णिकजत्वनिश्चयोऽपि नास्ति चिरं म्लेच्छादिभिःसंसर्गात् तेषामप्यस्ति पश्चात्तप्यमानानां नास्तिक्यपरिहारपूर्वकमास्तिक्याश्रयणेन भक्तिशास्त्राद्यधिकारोऽहिंसादि सामान्यधर्मप्राप्तिश्च

नहि दूर होवेगा परंतु शूद्रकी समानधर्मता अर्थात् शूद्रतुल्यताकर्के नास्तिक्यदोष और म्लेच्छ संसर्गदोषका परिहार पूर्वक किहे होए उचित प्रायश्चित्त कर्के शुद्ध और उक्त १२ संस्कारकी प्राप्ति होगी और जिनांका चारवर्ण विषों एहहैं ऐसा निश्चय नहि है क्योंकि चिरकालते म्लेच्छोंके संसर्गते म्लेच्छ होए होए हैं और किसीकभाग्यसें सत्संगपाकर अनुतापको जो प्राप्तहोएहैं तिनको भी नास्तिक्यपरिहार पूर्वक आस्तिक्यमतके आश्रयकर्के भक्तिशास्त्रका अधिकार है और अहिंसादि सामान्यधर्मकी प्राप्ति हुंदीहै

तथेति सोई दिखाईदी है सूत्र कर्के (आनिन्द्ययोनीति) एह भक्ति सूत्रके दूसरे अध्याय विषे और दूसरे आह्निक विषे ७८ सूत्रहै इसका अर्थ भाष्यकार स्वप्नेश्वरजीने इस तहीं कीताहै कि निन्दित चांडालादि योनिपर्य्यंत भक्तिका अधिकारहै क्यों कि संसारसागरमे जो दुःखहै तिसको सभकोइं दूर कीयाचांदाहै इसविषे किसी भेदके नहि होणेते ? प्रश्ण ? वेदाध्यायनका जिनको नहि अधिकार तिनांको द्विजाति भावसे दूरहों आंको किसकर्के भक्तिमे अधिकारहै ? उत्तर ? ऐसा मत कहो परंपराते इस मार्गका स्थापन होणेते नोदनारूपधर्म्म शास्त्रयोनिहै क्या शास्त्रसें उत्पन्नहै इस न्यायतें अलौकिक जो अर्थहै

तथाहि आनिंद्ययोन्यधिक्रियते पारंपर्यात् सामान्यवदिति भक्तिसूत्रे द्वितियाध्याये द्वितीयाह्निकेऽष्टसप्ततितमं सूत्रम् अस्यचार्थो भाष्यकृता स्वप्नेश्वरेणएवंविवृतः निन्दितचाण्डालादियोनिपर्यन्तं भक्तावधिक्रियते संसार दुःखजिहासाया अविशेषात् अथ वेदाध्ययनानधिकारात् कथ मत्रैवर्णिकानां स इतिचेत्तत्राह पारंपर्यादिति चोदनालक्षणोऽर्थोधर्मः शास्त्रयोनित्वादितिन्यायादलौकिकोऽर्थः श्रुत्यैकसमधिगम्य इत्यत्र न विप्रतिपद्यामहे किंतु स्त्रीशूद्रादीनामितिहासपुराणादिद्वारा चाण्डाला दीनां च स्मृत्याचारवदुपदेशपारंपर्येण ज्ञानमपि श्रुतिमूलमेव भवति यथा तेषां सामान्याऽहिंसाधर्मादिज्ञानं अन्यथा तदसिद्धिप्रसंगादिति अनेनच सूत्रभाष्यसंदर्भेणस्पष्टएव मनुष्यमात्रस्य भक्तिशास्त्राधिकारःएवं प्रत्यभिज्ञाशास्त्रेऽपिजनस्येत्युक्त्या जन्ममरण प्रयुक्तक्लेशजिहासावतः प्राणिमात्रस्य ग्रहणमित्युक्तेः तत्राप्यधिकारः

सो केवल श्रुतितेहि जाणीदाहै इसमै किसीके भी विप्रतिपत्ति क्या विरोध नहिहै किंतुस्त्रियों को और शूद्रोंको और जो इनके तुल्यहैं तिनको इतिहासपुराणादिद्वाराहै और चांडालादि योंको स्मृति और आचार वालयोंके उपदेशकी परंपरासे जो है सो सभ श्रुतिमूल हिहै तिस तहां तिनको सामान्य अहिंसादि धर्म्मादिओंका ज्ञानहै जेकर ऐसा नहि स्वीकार होवे तद सभ कों उसधर्म्मकी असिद्धिका प्रसंग होवेगा इससूत्रके भाष्यके संदर्भसें स्पष्टहि मनुष्यमात्रकों भक्ति शास्त्रका अधिकार प्रतीतहोआ और इसीप्रकार प्रत्यभिज्ञाशास्त्र विषेभी जनस्यइसवचनसे जन्ममर णके क्लेशको दूरकरणेकी इच्छावाले प्राणिमात्रके ग्रहणते भक्तिकाअधिकार सभको प्रतीत होआ

शनैरिति तैसेहि मंद २ क्रिया जो हैं वर्णाश्रमके योग्य तिसके लोपहोणेते एह जो हैं क्षत्रियजातियां क्या राजकुलके लोक वृषलत्व को क्या शूद्रभावको लोक विषे प्राप्त होए और ब्राह्मणके ना मिलनेसेभी इनको शूद्रत्व होआ ॥ १ ॥ तिनकानाम कहतेहैं पौंड्रेति पौंड्रकनामा इक जातिहै १ और चौंड्र २ और द्रविड ३ और काम्बोज ४ और यवन ५ और शक ६ और पारद ७ और पल्हव ८ और चीन ९ और किरात और दरद १० और खश ११ ॥ २ ॥ मुखेति एह सभ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनांते हि उत्पन्न होएदे हैन और जो बाहर जातिहैं म्लेच्छोंकीयां वाणिआं और आर्य्य जो श्रेष्ठ हैं तिनकीयां वाणिआं वालेभी एह सभ दस्यु क्या चोर नाम करके व्यवहृतहैं ॥ ३ ॥ एह मनुजीने दस्यु शब्द करके कहे

तथा शनकैस्तुक्रियालोपादिमाःक्षत्रियजातयः वृषलत्वंगतालोके ब्राह्मणादर्शनेनच १ पौण्ड्रकाश्चौण्ड्रद्रविडाःकाम्बोजायवनाःशकाः॥ पारदाःपल्हवाश्चीनाः किरातादरदाःखशाः २ मुखवाहूरुपज्जानांयालोकेजातयोवाहिः॥ म्लेच्छवाचश्चार्यवाचःसर्वेतेदस्यवःस्मृताः ३ इतिमनुना दस्युशब्देन व्यवहृतानां व्रात्यक्षत्रियादीनां धर्मे व्यवस्थापनं कथं स्यादिति ❀ राजधर्मेषुपञ्चषष्टितमाध्याये ॥ यवनाः किराताःगांधाराश्चीनाःशवरबर्बराः शकास्तुषाराःकंकाश्च पल्हवाश्चान्धमद्रकाः १ पौण्ड्राःपुलिन्दा रमठाःकाम्बोजाश्चैवसर्वशः ब्रह्मक्षत्रप्रसूताश्च वैश्याः शूद्राश्चमनवाः २ कथंधर्मांश्चरिष्यन्तिसर्वेविषयवासिनः मद्विधैश्चकथंस्थाप्याः सर्वेवैदस्युजीविनः ३ एतदिच्छाम्यहंश्रोतुंभगवं स्तद्ब्रवीहिमे त्वंवंधुभूतोह्यस्माकं क्षत्रियाणां सुरेश्वरेति ४ मांधातुरिन्द्रंप्रतिप्रश्ने

होए व्रात्यक्षत्रियादियोंका धर्म्म विषे स्थापन किस तरीं होवे इस ते प्रतीत हुंदाहे कि सभको धर्म्म विषे स्थापनकरणा चाहिए ❀ और राजधर्म्म विषे ६५ अध्यायाविषे भी किहाहे यवन १ किरात २ गांधार ३ चीन ४ शवर ५ बर्बर ६ शक ७ तुषार ८ कंक ९ पल्हव १० अंध ११ मद्र १२ ॥ १ ॥ पौंड्र १३ पुलिंद १४ रमठ १५ कंबोज १६ एह सभ चार वर्णकेहि पहलेथे ॥ २ ॥ एह अब किसतरीं धर्म्मको करणगे सभदेशोंके वस्साणे वाले और मेरे जैसे करके किस तरीं एह दस्युलोक धर्म्मविषे स्थापित होणगे ॥ ३ ॥ एतदिति एह मैं सुणनेदी इच्छा करनाहांहि भगवन् तुं कहो मेरे तांई तुं बंधुरूप हैं असांक्षत्रियांका हे इन्द्र ॥ ४ ॥ एह राजे मांधाताका इंद्रके प्रति (प्रश्न) होयां कहते हैं ॥

मातेति मातापिताकी सेवा संपूर्ण पूर्वोक्त दस्युयोंने करणी चाहिए और आचार्य्यकी और गुरुकी सेवा और तैसेंहि आश्रमवासियोंकी १ और भूमि पति जो हैं राजा तिनकी सेवा करणी चाहिए और वेदके धर्मो की क्रिया जो अगले श्लोकमें है सो सभ इनका धर्म्महै २ पितरोंके यज्ञ और खूए और वाउलीयां और शयन शय्या और दान यथाकाल ब्राह्मणके तांई सदा एह दस्युलोकदेण ३ और अहिंसा क्या किसे को मारणा नहि और सत्य कहणा और क्रोध नहि करणा और जीवका देणेवालेकी रक्षा करणी और पुत्र और स्त्रियोंकी पालना करणी शौच क्या पवित्र रहणा और द्रोह नहि किसे साथ करणा ४ और यज्ञोंकी दक्षिणा दुआणी और आपदेणी ऐश्वर्य्यकी इच्छा वालन

मातापित्रोर्हिशुश्रूषाकर्त्तव्या सर्वदस्युभिः आचार्यगुरु शुश्रुषातथैवा श्रमवासिनाम् १ भूमिपानांचशुश्रूषाकर्तव्यासर्वदस्युभिः वेदधर्म क्रियाश्चैव तेषांधर्मोविधीयते २ पितृयज्ञास्तथाकूपाः प्रपाश्चश यनानिच ॥ दानानिचयथाकालं द्विजेभ्योविसृजेत्सदा ३ अहिंसासत्यमक्रो धोवृत्तिदायानुपालनम् भरणंपुत्रदाराणां शौचमद्रोहएवच ४ दक्षिणास र्वयज्ञानांदातव्याभूतिमिच्छता पाकयज्ञामहार्हाश्च दातव्याःसर्वदस्युभिः ५ एतान्येवप्रकाराणिविहितानिपुराऽनघ सर्वलोकस्यकर्माणिकर्त्तव्यानी हपार्थिवे ६ तीन्द्रस्योत्तरेण मातापितृशुश्रूषादेर्लिङ्तव्याभ्यां विधानादि मेधर्मा इतिस्पष्टमेव तत्र उपनीय तु यः शिष्यंवेदमध्यापयेद्बुधः सांगं चसरहस्यंचतमाचार्यंप्रचक्षत इति लक्षितस्य वेदाध्यापकस्याचार्यस्या संभवेऽपिउपनयनपूर्वकशौचाचारशिक्षणकर्त्तैवाऽचार्यपदेनाभिधीयते

और अनेक प्रकार के बहुत मूल्यवाले पकान्न संपूर्ण दस्युयोंने दुआणे चाहिए ५ एह इसप्रकार विधियां कहियां हैं हे निष्पापराजन् सर्व लोकके एह साधारण कर्म्म हैं ६ एह(उत्तर) इंद्रका है मातापिताकी सेवा आदि लिङ् प्रत्यय करके और तव्य प्रत्यय करके विधान होणेते एह धर्म्म इना दस्युलोकांके स्पष्ट प्रतीत हुंदे हैन ॥ तत्रेति तिसविषे आचार्य्यादिकों की सेवाकरे ऐसा जद किहा तद आकांक्षा होई किसको आचार्य्य कहते हैं तिसवास्ते स्मृति है उपेति जो शि ष्यको यज्ञोपवीत देकर पीछे भडावे सांग वेदको तिसको आचार्य्य कहते हैं इस लक्षणवाला अध्यापक जेकर नहि मिले तथापि शौचआचारकी शिक्षाकरणवाला आचार्य्य जाननणा ॥

एवमिति इसीतरहाँ गुरुपद करके वी निषेकादि इस लक्षण करके किहा होआ गुरु न मिले इस स्मृतिका अर्थ एह है कि निषेकते आदलेकर यथा विधि- जो संस्कारकरे और अन्नकरके पालना करे सो ब्राह्मणादि गुरु किहाहै इस विना कहतेहैं गुशब्द इत्रिगुशब्दकरके अंधकारकिहाहै तिसका निरोधक क्या अंधकारका निरोध करणवाला जो है सो गुरु किहाहै इस लक्षण वाला योग्यमंत्रादि दान करके नरकको निवृत्ति करणवाला गुरु इसजगा ग्रहण करना इनांकी सेवा करणीदस्यु लोकोंका धर्म्महै एह पूर्व साथ संबंध करणा(प्रश्न)जो पिच्छे कहे हैंदस्यु आदिलोक तिनांको किसेवी मंत्रका अधिकार नहि है किसतरहाँ इनको अधिकार कहते हो(उत्तर) अगस्त्य संहिता विषे लिखयाहै शुचीति पवित्रव्रत है अतिशयकरके जिनांका ऐसे जो हैं शूद्र धार्मिक और ब्राह्मणोके सेवक और पतिव्रता स्त्रियां और प्रतिलोमज और अनुलोमज संकरजाति

एवं गुरुपदेनापि निषेकादीनिकर्माणियःकरोतियथाविधिसंभावयति चान्नेनसविप्रोगुरुरुच्यत इति पारिभाषिकस्य गुरोरऽसंभवेऽपि गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निरोधकः अंधकारविरोधित्वाद्गुरित्यभिधीयत इतिलक्षितो योग्यमंत्रादिदानेन निरयरूपांधकारनिवर्त्तको गुरुरिह गृह्यते ॥ नचैषां कस्मिन्नपि मंत्रे नाधिकार इतिवाच्यम् ॥ अगस्त्यसंहितायाम् शुचिव्रततमाःशूद्राधार्मिकाद्विजसेवकाः स्त्रियःपतिव्रताश्चान्ये प्रातिलोमानुलोमजा· लोकाश्चाण्डालपर्यन्तंसर्वेऽप्यत्राधिकारिणइत्यादिना राममंत्रे मनुष्यमात्रस्याधिकार बोधनात् तथा श्रुतिर्ब्रह्माहषड्वर्णम्स्मृतिर्वर्णद्वयात्मकम् षड्वर्णेब्राह्मणादीनां त्रयाणां यद्द्विवर्णकम् १ तदन्ये पांदेशिकेन वक्तव्यं तारकंपरम्

और चांडाल पर्य्यंत जो लोक हैं सो सभ इस भक्तिमै अधिकारी हैं इत्यादि करके श्रीरामजीके मंत्रविषे मनुष्यमात्रके अधिकारका बोध होणेते तथेति तैसेहि दिखाइंदाहै श्रुति जो है वेद सो छे ६ अक्षरां वाले ब्रह्मको कहता है अर्थात् वक्ष्यमाण जो षडक्षर मंत्र है सोई ब्रह्म है ऐसा बोध कर्दा है और स्मृति जो है सो दो २ अक्षरके मंत्रको ॥ राम ॥ इसको ब्रह्मकहती है इसमें विवेक कहते हैं कि ६ अक्षरके मंत्रका अधिकार ब्राह्मणादि तीन वर्णोंको है और दो २ अक्षर वालेका अधिकार शूद्र और तिन्नांते होर जो हैं संकर जाति और म्लेच्छ तिन्हांको देशिकने क्या गुरुने कहणा चाहिए कैसा इह मंत्र है परम तारकहै क्या उद्धारकरणे वाला है इसी का अर्थ प्रगटकरके कहते हैं

॥ ओंरामायनमः ॥ एहि षडक्षर मंत्र जान्नणा पूर्व बाक्यके साथ एकवाक्यता होणेते और होरणा सभना कों रामनाम मंत्रके हि अधिकार की प्रतीति होणेते एवमिति इसीप्रकार ब्रह्मोत्तरखण्डविषे शिबजीके पंचाक्षर का प्रसंग ल्याकर कहते होए कि महापातक रूप शुष्कवन है तिसविषे एह मंत्र अग्नि की न्याईं है और बिना ओंकारके सो एह मंत्र पंचाक्षर बनया हैं इसके अधिकारियोंकों कहते हैं स्त्रियोंने १ शूद्रोंने २ संकरोंने ३ मुक्तिकी इच्छावालेयोंने धारिदाहै इसकी कोई दीक्षा नहि और होम और संस्कार और तर्पण भी नहि २ कोई कालका नियम भी नहि एह सभनोंने जपणा चाहि

इत्यनेन त्रैवर्णिकानामोंरामायनमइति षड्वर्णे पूर्ववाक्यैकवाक्यतया तदन्येषां सर्वेषामपि मनुष्याणां रामनाममंत्रेऽधिकारावगमात्र एवंब्रह्मोत्तरखण्डे शिवपंचाक्षरं प्रक्रम्य महापातकदावाग्निः सोऽयंमंत्रः षडक्षरः प्रणवेनविनामंत्रः सोऽयंपंचाक्षरोमतः १ स्त्रीभिः शूद्रैश्चसंकीर्णैर्धार्यतेमुक्तिकांक्षिभिः नास्यदीक्षानहोमश्च. नसंस्कारोनतर्पणम् २ नकालनियमश्चात्र जप्यः सर्वैरयंमनुः वैश्यैःशूद्रैर्भक्तियुक्तैर्म्लेच्छैरन्यैश्चमानवैरित्यनेन शिवपंचाक्षरमंत्रे म्लेच्छादीनामप्यधिकारस्य विस्पष्टमवगतेश्च वेदधर्मक्रियाइत्यनेन वेदमूलकस्मृत्याद्युक्त शिवविष्ण्वादिभक्तिसमाश्रयणमुच्यते मांहिपार्थव्यपाश्रित्ययेऽपिस्युः पापयोनयः स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेऽपियान्तिपरांगतिमिति भगवद्गीतासु भगवता स्वसमाश्रयणाभिधानात्

ए वैश्य शूद्र म्लेच्छ और इनाते होर जो मनुष्य हैं भक्तिवाले इना सभनाने जपना चाहिए इसकर्के सभना म्लेच्छादियोंकों अधिकारकी स्पष्ट प्रतीति होणेते और वेद धर्म्म क्रिया जो कहीहै इसकर्के वेदमूलक स्मृत्यादिविषे कही जो है शिव विष्ण्वादि भक्ति तिसका स्वीकार करणा चाहिए और भगबद्‌गीता विषे भी श्रीमहाराज कृष्णचन्द्रजीका वचनहै मामिति हे अर्जुन मेरेकों आश्रय होकर जेह्डीयां पापयोनियांहैं अर्थात् जो नीचलोकहैं और स्त्रीयां वैश्य और शूद्र सोभी परम गतिको प्राप्तहुंदेहैं इसते भी अपणे आश्रयकाकथन होणेतें

अतइति इसी कर्के स्कंदपुराण विषेभीकिहाहै विष्णुकी भाक्ति कर्के युक्तहोत्र्या २ भामे मिथ्या चारीभी होवे और अनाश्रमी भी होवे तथापि उह सभ लोकोंको पवित्र कर्दाहै जैसे उदयको प्राप्तहोत्र्या सहस्रांशु सूर्य्य होवे १ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र अथवा इनते इतर होर संकरादि जेकर विष्णुकी भक्ति कर्के युक्त होवे तद सभसे उत्तमो विषे भी उत्तम जान्नणा २ दुराचारी क्या हिंसादि कर्मभी करणवाला होवे होर सभका अन्न खाणेवाला होवे और कृतघ्न होवे क्या किसेका कीताहोत्र्या उपकार नहि जाणे और नास्तिक होवे पहले ऐसा भीहै परन्तु जो पीछे आदिदेव नारायणजीको आश्रय करे श्रद्धाकर्के युक्तहोत्र्या ३ तद उसको निर्दोष होएको जाण परमात्माके प्रभावते ऐसा उसजगा पढयाहै ॥ इसीतर्हा देवीपुराण विषे लिखयाहै ॥ वर्णाश्रमके विभागकर्के देवता स्थापन करणेचाहिए अन्यथा नहि और

अतएव स्कन्दपुराणेऽपि विष्णुभक्तिसमायुक्तोमिथ्याचारोप्यनाश्रमी पुनातिसकलान्लोकान् सहस्रांशुरिवोदितः १ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यः शूद्रोवायदिवेतरः विष्णुभक्तिसमायुक्तोज्ञेयःसर्वोत्तमोत्तमः २ दुराचारोऽपि सर्वाशीकृतघ्नोनास्तिकःपुरा समाश्रयेदादिदेवंश्रद्धयाशरणंहियः ३ निर्दोषंविद्धितंजन्तुंप्रभावात्परमात्मनइतिपठ्यते एवंदेवीपुराणे वर्णाश्रम विभागेनदेवाःस्थाप्यास्तुनान्यथा ब्रह्मातुब्राह्मणैःस्थाप्योगायत्रीसहितः प्रभुः १ चतुर्वर्णैस्तथाविष्णुःप्रतिष्ठाप्यः सुखार्थिभिः भैरवोऽपिचतुर्वर्णै रन्त्यजानांतथामत इतिवचनेनान्त्यजादीनामपि भैरवप्रतिष्ठाधिकारः स्पष्टमुच्यते भगवद्भक्तेःसर्वमानुषेष्वनुमतत्वादेवच किरातहूणान्ध्रपुलिन्द पुक्कसाआभीरकंकायवनाः खसादयः

ब्राह्मणोंनें गायत्रीकेसाथ ब्रह्मा स्थापनकरणा ॥ इसीमें कुछ होर कहतेहैं चतुरिति चारवर्णों ने विष्णु प्रतिष्ठापन करणेयोग्यहै अर्थात् इन्होने सुखकी इच्छावालेउने विष्णुकी सेवा करणी और भैरवजी भी चारवर्णों कर्के क्या ब्रह्म क्षत्रि वैश्य शूद्र कर्के पूजने योग्यहै और तैसेहि अन्त्यज जो हैं म्लेच्छ नीचजाति तिन्होने भी भैरवजीकी उपासना करणी इस वचन कर्के नीचोंकों भी भैरवजीकी प्रतिष्ठाका अधिकार स्पष्ट प्रतीत हुंदाहै और परमेश्वरकी भक्ति विषे सभ को अनुमती होणेतेहि भागवतके चउथे अध्यायविषे (श्लोक) किरातेति किरात १ हूण २ अन्ध्र ३ पुलिंद ४ पुक्कस ५ आभीर ६ कंक ७ यवन ८ खस ९ एह सभ नीच जातीहैं

और इनतें भिन्नभी जों नीचहैं जिस परमेश्वरके भक्तोंके भी आश्रित होए तांभी शुद्ध हुंदेहैं तिस प्रभाववाले विष्णुके तांईं नमस्कार होवे इस वचनतें भी भगवत्‌की भक्ति कर्के शुद्धिका कहणा संगत हुंदाहै और राममंत्र और पंचाक्षर मंत्र विषे सभका अधिकारहै एह पीच्छे कह चुकेहैं पितृयज्ञ जो हैं श्राद्धादि तिन विषे भी नास्तिक्य और म्लेच्छ संसर्गके परिहार करणेंते पिच्छे किहे होए प्रायश्चित्तके अनुष्ठान कर्के शुद्धहोआं कों शूद्रकमलाकर ग्रंथके अनुसार वणजानगे तेषामिति तिन्हां कों शूद्रके तुल्य होणेतें एवं इसी तर्हां किहा जो संदर्भ क्या ग्रंथ तिस कर्के मूलते क्या षहलेतेहि जो म्लेच्छहैं कोई पीछेते नहि वणे तिन्हांकेभी अपणे नास्तिक्यादिके त्याग पूर्वक राममंत्रादि विषे अधिकार सिद्ध होया

येऽन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाःशुध्यन्तितस्मैप्रभविष्णवेनम इतिभागवते चतुर्थाध्याये सर्वेषांभगवद्भक्त्या शुद्ध्यभिधानंसंगच्छते राममंत्रपंचाक्षरमं त्रयोःसर्वेषामधिकारःप्राङ्निरूपितएव पितृयज्ञादयश्च नास्तिक्यम्लेच्छ संसर्गपरिहारपूर्वकमुचितप्रायश्चित्तानुष्ठानेन शुद्धानां शूद्रकमलाकरोक्तप्रयो गानुसारिणःप्राप्नुवन्ति तेषां शूद्रसधर्मत्वात् एवं चोपपादितसंदर्भेणमूलतो म्लेच्छादीनामपि स्वनास्तिक्यादित्यागपूर्वकराममंत्राद्यधिकारःसिद्ध्यतिकिं पुनर्वेलान्म्लेच्छीकृतानाम् ॥ माभून्नामचिरकालनास्तिकम्लेच्छसंसर्गाद निश्चीयमानस्वस्वजातिकानां प्रायश्चित्तादिभिःसद्यएववर्णाश्रमान्तर्गतत्वं साक्षात्परंपरया वा मुक्तिसाधनतया सकलसंसारदावदाहशमकं भग वद्भक्त्याद्याश्रयणं तु कथंनिवार्यताम् किंच श्रद्दधानःशुभांविद्यामाददी तावरादपि

किमिति और पहले म्लेच्छ नहि थे किंतु तिन्हिांके संबधते पिच्छे म्लेच्छ होए तिन्हांकी क्या वार्त्ता कहणी तिनकों इसी अर्थसे अधिकार सिद्ध होगया ॥ षरंतु ऐसा मतहो कि चिर काल के नास्तिक और म्लेच्छ संसर्गते नहि निश्चय करसक्तीदीहै अपणी जाति जिन्हांकी जो तरका लहि प्रायश्चित्तादिते अपणी जातिमै आजाए ॥ तथापि साक्षात् अथवा परंपराते मुक्ति की साधनतासे और सारे संसारके दुःखोके दूरकरणेवाली भगवतकी भक्तोका आश्रय करणा किसतर्हां दूरहोवे अर्थात् कउण कहे कि म्लेच्छादि भगवतकी भक्ति ना करण ॥ अब और मनुजीका वचन कहतेहैं श्रद्दधेति । श्रद्धावाला पुरुष शुभविद्याको अर्थात् लोकों पर उप कार करणे वाली गारुडादि विद्या को नीचतेभी ग्रहणकरे

और परम धर्म्म जो है जिसते किसेके प्राण वच रहण तिसको नीचते भी ग्रहण करे और स्त्रीरत्नको दुष्कुल जो है नीचकुल तिसते भी ग्रहण करे इसवचनको कहंदे होए मनुजीनें श्रेष्ट धर्म्मका ग्रहण नीचते भी किहाहै इसीते दंडापूपन्यायते जैसे दंडके खिचणेते तिसके साथ लगेहोए पूडेकाभी खिचणा हुंदा है इसनीतिते श्रेष्ट पुरुषते नीचोंकों भी उचितधर्म्मकी प्राप्ति सिद्ध होई ॥ और मनुवचनहै ॥ गार्भै रिति गर्भके जो हवनादिहैं और जातकर्म्मादि संस्कारहैं इन्हांकर्के वीजणेवाले पिताका पाप और गार्भिक क्या माताके कीतेहोए जो पापहैं सो सभ ब्राह्मणादिकें दूर हुंदेहैं इसवचनकर्के

अन्त्यादपिपरंधर्मंस्त्रीरत्नंदुष्कुलादपि इतिवदतामनुना नीचादपिसमी चीनधर्मग्रहणमनुमतं तेन दण्डापूपिकनीत्यैवश्रेष्ठात्स्वोचितधर्मप्राप्तिर्नी चानामपिसिद्धयति गार्भैर्होमैर्जातकर्मचौलमौंजीनिवन्धनैः वैजिकंगा र्भिकंचैनोद्विजानामपमृज्यत इतिवचनेनाऽभक्ष्यभक्षणजनितत्वादिनिषि द्धकालगमनादिवत्प्रायश्चित्ततारतम्येन क्रमायातदोषाणामपि नाशस्योप लक्षणविधयावोधनाच्च अतएव पातकविशेषेण पतितानामपि पुनः संस्का रविधानमुपपद्यते तेन पातकेन ब्राह्मणत्वादेर्नाशेहि संस्कारविध्युद्देश्यता वच्छेदकस्यैवाभावेन तद्विधानानुपपत्तिः किंच मलादिभिश्चिरंसंसृष्टस्यापि सुवर्णस्य संस्कारसंख्यातारतम्येन शुद्धितारतम्यदर्शनात्

अभक्ष्यभक्षणादि पाप और निषिद्धकाल विषें जो स्त्री गमनादि पापके दूर होणेकी न्याई प्रायश्चित्तकें थोडे वहुते के करणेते क्रमकर्के आएहोए पापोंके भी नाशहोणेकी विधि का वोधहोणेते ॥ अतइति इसी कर्के पातकविशेष कर्के जो पतित होएहैं तिन्हांको संस्का रका विधान करणा उचितहै तिसकर्के पातक करणेते ब्राह्मणत्वजातिका नाशहोआं संस्कार विधि जिसते होणीथी सो नहि होई तो संस्कार भी नहि होणाचाहिए सो पूर्वोक्त युक्तिसेंहि हुं दाहै ७ इसमै और युक्ति कहतेहैं किंचेति मलादिकर्के लिप्त जो सुवर्णादि हैं तिनकी संस्कार कथोडे वहुते होणे कर्के थोडी वहुती शुद्धि देखीदीहै

पापीति तैसेहि प्रायश्चित्तके थोडे वहुते होणकर्के पापिओंकी भी शुद्धि थोडी वहुती होंदी युक्तहै तिसते ऐसा विचारहोआ कि उक्तविधि कर्के पापिओंकाशीघ्रहि पाप दूर होकर चार वर्णा विचों जो जिस वर्णमे जासके तिसकी प्राप्ति तो नहि हुंदी परंतु शुद्धिरूप सोपानकी परंपरा विषे जाणे का अधिकार सिद्ध होआ सो यथार्थहै इसी कर्के श्लोकहै गोमूत्रमिति गोमूत्र और गोमय गोया और दुग्ध और दहिं और घृत और कुशाका जल और एकरात्रका उपवास क्या निराहार व्रत एह सत्तांदिनांदा व्रतहै सो श्वपाक जो चांडालहै तिसकोभी शुद्ध करदाहै औरोंकी क्या वार्त्ता कहणीहै एह हारीतजीका वचनहै यद्यपीति यद्यपि एह जो पिच्छे किहा है प्रायश्चित्त सो स्वार्थ विषे तात्पर्य्य वाला

पापिनामपिप्रायश्चित्ततारतम्येन शुद्धितारतम्यस्य यौक्तिकतया निर्दिष्टपापिनामपिसकलपापत्यागपूर्वकं चातुर्वर्णिकत्वाद्यसिद्धावपि शुद्धिसोपानारोहाधिकारो युक्तएव अतएव गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकरात्रोपवासश्चश्वपाकमपिशोधयेदिति हारीतेनोक्तम् यद्यपि नेदं स्वार्थेतात्पर्यवदपिघटितत्वात् तथापिशुद्धिःसर्वेषामपि भवत्युचितप्रायश्चित्तैरित्युपलक्षणविधया बोधयत्येव एतेन नहिशतशोध्माध्मानोऽपिलोहः सुवर्णंभवति एवं म्लेच्छीभूतानां न कथमपि प्रायश्चित्तैःपापनाशइति प्रत्युक्तम् सद्यस्तदभावेऽपि क्रमेण चातुर्वर्णिकधर्मयोग्यतासंभवेनैव प्रकृतार्थसिद्धेः

नहि किंतु एह व्रतकी प्रशंसाहै कोई यथार्थ चांडालकी शुद्धि नहि करसकता अपिशब्दकर्के घटितहोणेते क्या अपिशब्दका हि होर अर्थहै होर नहि तथापि सभकी शुद्धि प्रायश्चित्तसे हुंदीहै आपो आपणे प्रायश्चित्तसें इस उपलक्षण विधि कर्के बोध करांदाहै ऐसा जानणा इतने कर्के एहशंका दूर होई कि सैकडेवार धोता अथवा तपाया होया भीहै लोहा परंतु सुवर्ण नहि हुंदा इसी तर्हां अनेक प्रायश्चित्तों कर्के भी जेडे म्लेच्छ होगयेहैं ब्राह्मणादि सो मुडकर ब्राह्मणादि नहि हुंदे- इतनी शंकाका निरास समझणा इसमै उत्तर कहतेहैं कि शीघ्र पापदूर नहि हुंदा परंतु क्रम कर्के चारवर्णके धर्मकी योग्यता के होण कर्के पाप नाश हुंदाहिहै पूर्वोक्त दृष्टांत इसमै तुल्य नहिहै जिसकर्के लोहा जन्मसेहि लोहा हि है

म्लेछीति और एह पीच्छेते म्लेच्छ होएदेहैं इनांकों म्लेच्छ होंआं भी ब्राह्मणत्वादिकी
प्राप्ति है एह पिच्छे कहआएहैं इसते दृष्टांत दार्ष्टांतिक की विषमता जाननी ॥ इसी
कर्के भविष्य पुराण विषे रहस्यके प्रसंग विषे किहाहै ॥ तथेति तैसेहि विधान कर्के ब्राह्मण
तांई मधु और घृत देवे सो तारदाहै सभनानुं पिचले और अगलेआंनु और आपणे
आपको भी तारदाहै हे नराधिप हेराजन् एह दानरूप प्रायश्चित्तहै १ अब चर्म दान कहतेहैं गो
भिरिति चारबैल कर्के युक्त और पृथ्वी कर्के युक्त जो है अजिन क्या हरिणका चर्म्म ति
सके प्रतिग्रह उठाणेमै जो समर्थ होवे तिसके तांई और अग्निहोत्र करणे वालेके तांई देवे २
परंतु कतयाले महीनेकी पूर्णमासीकों अथवा वैशाखकी पूर्णमासीकों अथवा विशेष कर्के वि
षुव मेष संक्रांति और तुलसंक्रांति तैसेहि चन्द्र और सूर्य्यके ग्रहण विषे ३ एह दान

म्लेच्छीभूतानामपि ब्राह्मणत्वाद्यनपगमस्याधस्तादुपपादनेन दृष्टान्तदार्ष्टा
तिकयोर्वैषम्याच्च ॥ अतएव भविष्ये रहस्यप्रसंगे ॥ तथादद्याद्विधानेनद्विजा
यमधुसर्पिषी तारयत्यखिलान्पूर्वानात्मानंचनराधिप १ गोभिश्चतसृभिर्यु
क्तंतथाभूमिसमन्वितम् प्रतिग्रहसमर्थायविदुषेत्वाहिताग्नये २ दत्त्वाजिनं
तुकार्त्तिक्यांवैशाख्यांवाविशेषतः विषुवत्ययनेचैवग्रहणेचन्द्रसूर्ययोः ३
कृच्छ्रात्तुतमसोघोरान्मुच्यतेसर्वतोभयात् अतीतान्सप्तपुरुषांस्तथाचान्या
ननागतान् ४ उद्धृत्यसनरोयातिब्रह्मलोकंसनातनमित्यादिनाऽतीतसकल
स्ववंशीयानामात्मनश्च तारणाभिधानं दृश्यते एवं एकादशगुणान्वापिरुद्रा
नावार्यधर्मवित् महापापैरुपस्पृष्टोमुच्यतेनाऽत्रसंशय १ इत्यंगिरोवचनम्
एवं ॥ तीर्थप्रत्याम्नाये विष्णुपुराणम् ज्ञानतोऽज्ञानतोवापिभक्त्याभक्त्यापि
वाकृतम् गंगास्नानंसर्वविधसर्वपापप्रणाशनम् १

करणे वाला वडे घोर पापते और सभ भयते भी मुक्त हुंदाहै पिछले सत्त पुरुष जो
पतित होए हैं और सत्त ७ अग्गे आउणे जो हैं तिनका उद्धार कर्के और साथ
अपणे आपका उद्धार कर्के सनातन ब्रह्मलोक को जंदाहै ४ इत्यादि वचनां कर्के पि
चले अगले अपणे वंशके लोंकोका और अपणे आपका तारणा प्रतीत हुंदाहै एवमिति
इसी प्रकार ११ जारां रुद्रोंका आवर्त्तनकरे अर्थात् जारांवार रुद्रोका पाठ करे सो पुरुष
महापाप कर्के युक्तभीहै तांभी मुक्त हुंदा है इसमे कुछ संशय नहि १ इस अंगिराके व
चनते पाप नाशका निश्चयहै इसमै ऐसा विचारहै कि ११ पाठकानामरुद्रीहै इसका ११
वारआवर्त्तनमै १२१ होणगे ॥ एवमिति ॥ इसी प्रकार तीर्थप्रत्याम्नाय विषे विष्णुपुराणका
वचनहै ॥ श्रीगंगाजीका जो स्नानहै सो सभ तरहाँ कीवेहोए सभनां पापांनु दूर कर्दाहै १

इसीका होर वचनहै चान्द्रेति १००० हजारों चान्द्रायणों करके जो कोई देह शोधन करे और जो कोई श्रीगंगाजीका जल पान करे एह दो २ बराबर होण अथवा ना होण अर्थात् श्रीगंगा जलकी महिमा हजारों चांद्रायणोंते भी अधिकहै २ इसमें दृष्टांतहै जिसप्रकार तार्क्ष्य जो गरुडहै तिसके दर्शनते सर्प्प निर्विष हुंदेहैं क्या विषरहित हो जांदेहैं तैसे हि श्रीगंगाजीके देखणेते मनुष्य सभ पापते मुक्त हुंदेहैं ३ और पुण्यक्षेत्र विषे जो गमनहै सो सभ पापके दूर करणवालाहै और देवताका पूजन पुरुषोंके सभ पापको हरदाहै एह किहाहै ४ और भविष्यपुराण विषे भी किहाहै ॥ स्नानमात्रकर्के भी गंगा विषे ब्रह्महत्यादि पाप दूर हुंदे हैं इस विषे जो संशय करे अथवा मुखसे जो किहे कि ऐसे पाप गंगा के स्नानमात्रसे किस तरहाँ दूर होणगे ऐसे पुरुषका जो पाप है तिसको कहताहुं तिसको किरोड ब्राह्मणके मारणेका

चान्द्रायणसहस्रैस्तुयश्चरेत्कायशोधनम् पिबेद्यश्चापिगंगाम्भःसमौस्यातां नवासमौ २ भवन्तिनिर्विषाःसर्पायथातार्क्ष्यस्यदर्शनात् गंगायादर्शनात्त द्वत्सर्वपापैःप्रमुच्यते ३ पुण्यक्षेत्राभिगमनंसर्वपापप्रणाशनम् देवताभ्यर्चनं पुंसामशेषाघविनाशनमिति ४ भविष्येऽपि ॥ स्नानमात्रेणगंगायाःपापंब्रह्म बधोद्भवम् दुराधर्षंकथंयातिचिन्तयेद्योवदेदपि १ तस्याहंप्रवदेपापंब्रह्म कोटिवधोद्भवम् स्तुतिवादमिमंमत्वाकुम्भीपाकेपुजायते २ आकल्पंनरकंभु क्त्वाततोजायतगर्दभ इत्यादिवचनैः श्रीगंगातीर्थस्नानादेः सकलपापना शकता सिध्यति ॥ एवं बृहन्नारदीये ॥ सर्वसाधारणप्रायश्चित्तानिप्रोक्तानि प्रायश्चित्तानियःकुर्यान्नारायणपरायणः तस्यपापानिनश्यन्तिअन्यथापति तोभवेत् १ यस्तुरागादिनिर्मुक्तअनुतापसमन्वितः सर्वभूतदयायुक्तोविष्णु स्मरणतत्परः २

पाप लगदाहै और जो कोई पूर्वोक्तादि वचनांको स्तुतिवाद मनदेहैं सो कुंभी पाक नरक विषे जांदेहैन २ और कल्प पर्य्यंत नरकभोग करके पिछे गर्दभ होतेहैं इत्यादि वचनां करके श्री गंगास्नानादिते सभ पापका नाश कल्पना विषे आया सो यथार्थ जान्नणेयोग्यहै ॥ एवमिति ऐसेहि बृहन्नारद पुराणविषे सर्वसाधारण प्रायश्चित्त किहेहैं अब तिनका फल कहतेहैं ॥ प्राय इति जो मनुष्य नारायण की सेवामे तत्परहोया २ प्रायश्चित्त करदाहै तिसके सभ पाप दूर हुंदे हैं अन्यथा क्या प्रायश्चित्त ना करे तद पतित हुंदाहै १ और जो पुरुष रागादि क्या प्रीति और द्वेष इसते रहित है और पश्चात्ताप वालाहै और सभ जीवोंपर दया करणेवालाहै और विष्णुके स्मरण विषे तत्परहै २

सो पुरुष महापातक करकेयुक्तहोवे अथवा उपपातक जो हैं गोवधादि तिनकर्के युक्त होवे तथापि सभनां तो शीघ्राहे मुक्त हुंदाहे जिस कारणते मन उसका विष्णुपरायणहै ३ इत्यादिवचनो कर्के विष्णुके भक्तका जिस किस मनुष्य मात्रके सभ पापोंका नाश विधान कीताहै ॥ इसते एह सिद्धहोआ कि बहुत जगा प्रायश्चित्तके विधायक जो वाक्य हैं तिना विषे नर एह सामान्य पदका ग्रहण होणेते कहेहोए वचनों कर्के म्लेच्छादियोंको भी परमेश्वरकी भक्तिका अधिकार सिद्धहोणेते सभको आपो अपणे अधिकारकी योग्यताके अनुसार वैदिक मार्गके उन्मुख होणा उचितहै एह सिद्धहोआ ❀ इत्थमिति इसप्रकार तिन्नां पुरुषां तक क्या त्रयपीडीतक निश्चित है समान वर्णकी उत्पत्ति जिनकी जैसे अमुके

महापातकयुक्तोवायुक्तोवाप्युपपातकैः सर्वैःप्रमुच्यतेसद्योयतोविष्णुरतंमनः ३ इत्यादिना विष्णुभक्तस्य नरमात्रस्य सकलपापनाशोऽभिहितः॥ इत्थंच बहुत्र प्रायश्चित्तविधायकवचनेषु नरइति सामान्यपदोपादानादुदाहृतवचनैर्म्लेच्छादीनामपि भगवद्भक्त्यधिकारसिद्धश्च सर्वेषामपिस्वाधिकारस्वयोग्यतानुसारेण वैदिकमार्गोन्मुखत्वं निराबाधं सिध्यति ❀ इत्थंच त्रिपुरुषावधि निश्चितसवर्णोत्पत्तिकानां कामतोऽकामतो वा म्लेच्छैःसंसृष्टानां प्रायश्चित्ताचरणेन पुनः स्वस्ववर्णांतर्गतत्वपूर्वकधर्मप्राप्तिः तदन्येषामपि व्रात्यतमानां मूलतो म्लेच्छादीनां वा सत्यामिच्छायां नास्तिक्यत्यागेन भक्तिशास्त्र प्रत्यभिज्ञाशास्त्र राममंत्राद्युपदेश्यताधिकारः शूद्रकमलाकरोक्तसंस्कारादिप्राप्तिश्च सिध्यतीत्यत्र न कस्याचित्कटाक्षावसरइति

ब्राह्मणका अथवा अमुकक्षत्रीका प्रपौत्र है एह म्लेच्छ इसतरहां निश्चयवालेयांको कामते अथवा अकामतें म्लेच्छों के साथ मिले होएंको प्रायश्चितके करणेते फेर आपो आपणे वर्णके अंतर्गत होकर धर्म्म प्राप्ति हुंदी है ॥ तैसेहि होर जो व्रात्यतम क्यावडेव्रात्य अर्थात् बहुत दिनोंके व्रात्यहैं फेर म्लेच्छ होएहैं तिनकोभी जेकर अपणे धर्म्म विषे जानेकी इच्छा होवे तां नास्तिक्यका प्रथम त्याग कर्के भक्ति शास्त्रका क्या प्रत्यभिज्ञा शास्त्रका और रामचन्द्रजीके मंत्रोंका अधिकार सिद्ध होआ और शूद्रकमलाकर ग्रंथोक्तसंस्कारादि प्राप्ति भी सिद्धहोई इसजगा किसे का भी कटाक्ष नहि अर्थात् ऐसा कोई नहि कहसक्ता कि एह पुरुष भक्तिका अधिकारी नहि ऐसे औरभी जानणे

॥ अब कहेहोए शास्त्रार्थका संक्षेप अर्थ कहते हैं सकलेति वहुत श्रुतियां और वहुत स्मृतियां और पुराण और इतिहास इनके बिचारणे तें निकलया जो विमर्शहै सो पक्षपातको छोडकर वुद्धिवाले जो लोकहैं तिनोंने चित्तविषे धारणे योग्यहै इतिदिक् क्या एहविचार इक्कमार्गभूतहै कोई ऐसे नहि कि संपूर्ण इतनाहि विषय है क्योंकि होर भी विचारइसमें है सो आप करलेना चाहिए ॥ अब इसमें काम्य और नैमित्तिकका विचार कर्ते हैं इदमिति एहप्रायश्चित्त नैमित्तिक है और काम्य संज्ञा वालाभी है जिसकर्के पाप निमित्तकेहोयां करीदाहै इसतें नैमित्तिक है और पापनाशकी कामनातें करीदा है इसकर्के काम्य है सोई प्रायश्चित्त मयूखविषे किहाहै इसकर्के वृहस्पतिजीका वचनहै प्रायइति जो प्रायश्चित करीदा है सो नैमित्तिक जानणा इसीमें जावालजीका वचनहै इसीकारणतें काम्य हैं और नैमित्तिक भी है प्राय

सकलश्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासपर्यालोचननिर्गलितो विमर्शो निष्पक्षपातधीभिः सुधीभिर्निपुणंविचारणीय इतिदिक् ॥ इदंच प्रायश्चित्तं नैमित्तिकं काम्यं च निमित्ते विधानान्नैमित्तिकं पाप नाशकतया काम्यं चेति प्रायश्चित्तमयूखे ॥ अतएव वृहस्पतिः ॥ प्रायश्चित्तं यत्क्रियते तन्नैमित्तिकमुच्यते ॥ जावालः ॥ अतःकाम्यं नैमित्तिकं प्रायश्चित्तमिति स्थितिरिति ॥ पापिनः प्रायश्चित्तं नित्यं नैमित्तिकं वेत्यतो विकलांगादपि पापस्यनाशः किंत्वल्पस्यैव नतुसमग्रस्य एवंच काम्यमप्येतत् एवंच प्रधान निष्पत्ता वपि नप्रधानावृत्तिरिति वोध्यमिति नागेशः नित्यत्वंचाऽकरणेदोषश्रवणात् तथाच स्मृतिः चरितव्यमतोनित्यं प्रायश्चित्तं विशुद्धये निन्द्यैर्हिलक्षणैर्युक्ताजायंतेऽनिष्कृतैनसइति

श्चित्त एह धर्मशास्त्रियोंकी स्थिति है ॥ इसमे होर स्मृति कहते हैं पापिन इति पापीका प्रायश्चित्त नित्यहै और नैमित्तिक भी है और इस प्रायश्चित्ततें विकलांगते भी पापका नाश हुंदाहै परंतु थोडे पापका नाश हुंदाहै सारेका नहि एवंचक्या पापनाश होणेतें काम्यभी एह होआ एवंचेति इसतेक्या सिद्ध होआ कि पापनाशके विषे इसको प्रधानता की सिद्धिहोई कोई प्रधान की आवृत्ति नहि सिद्ध होई ऐसा नागेशजीका मतहै ॥ और इसको नित्यता सिद्धहोई नाकरेतो दोषहै इसते जाणीदी है एहीनित्योंकालक्षणहै ॥ तैसेहि स्मृति भी इसमे है चरीति इसकारणतें एहप्रायश्चित्त विशुद्धिके अर्थ नित्यहि करणाचाहिए क्योंकि जो अनिष्कृतैनसहैं क्याप्रायश्चित्तहीन हैं सो निन्दित लक्षण जो हैं कुष्टादियेग तिनोंकर्के युक्तहोए २ उत्पन्नहुंदेहैं इसतें नाकरणेमे दोषआखा

एहि याज्ञवल्क्यजीका मत है सो कहतेहैं प्रायइतिजो प्रायश्चित्त नहि करें और पापोंमे रत होए और पीछे पश्चात्ताप भी ना करन सो पुरुष दारुण जो नरक हैं तिनां विषे जांदे हैंन ॥ इसोस्थान तिना नरकां का भी वर्णन करतेहैं तामिस्र इसते आदि लेकर कहे होए उसीग्रंथते आवणे सो २१ हैं ॥ और ग्रंथों विषे भी किहाहै कि विहिताकरणादि निमित्तवाले प्रति प्रेरणा होणेते नैमित्तिक है प्रायश्चित्त (प्रश्न) गौतमस्मृतिविषे उसको क्यों काम्यत्वकी प्रतीति हुंदीहै फलका होणा और नाहोणा इसको कारण रक्खकर पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष करके तिसकी कर्त्तव्यताकानिर्णय होणेते तिसका वचन एहहै उक्त इति ॥ वर्णधर्म्म जो हैं ब्राह्मणादिकोंके धर्म्म और आश्रम धर्म्म जो हैं ब्रह्मचारीआदिकोंके धर्म सो सभ किहेहैं अथेति एहपुरुष

याज्ञवल्क्योपि प्रायश्चित्तमकुर्वाणाःपापेषुनिरतानराः अपश्चात्तापिनः कष्टान्नरकान्यांतिदारुणानिति नरकास्तु तामिस्रंलोहशंकुंचेत्यादिना तत एव बोध्याः ग्रंथांतरेऽपि तदेव विहिताकरणादिनिमित्तवंतंप्रति चोदनान्नैमित्तिकंप्रायश्चित्तम्(ननु)गौत्तमस्मृतावस्य काम्यत्वं प्रतीयते फलभावाभावावुपजीव्यपूर्वोत्तरपक्षाभ्यां तस्य कर्त्तव्यतानिर्णयात् तद्वचनं चोक्तोवर्णधर्म्मश्चाश्रमधर्म्मश्च अथ खल्वयं पुरुषोयाप्येनकर्मणालिप्यते यथैतदयाज्ययाजनमभक्ष्यभक्षणमवंद्यवन्दनंशिष्टस्याक्रिया प्रतिषिद्धसेवनमिति ॥ तत्र प्रायश्चित्तंकुर्यान्नकुर्य्यादितिमीमांसंते न कुर्यादित्याहुः नहिकर्म्मक्षीयतइति कुर्यादित्यपरे

याप्यकर्म्म कर्के अर्थात् निंदित कर्म्म कर्के लिप्तहुंदाहै ऐसाकहकर कहतेहैं कि जैसा एह अयाज्ययाजन है ऐसाहि अभक्ष्यभक्षण और अवंद्यवंदन और शिष्टोंकीक्रियाका ना करणा और प्रतिषिद्ध जो हैं द्यूतादि तिनका सेवनकरणा एहसभ असत्कर्म्म हैं पूर्वोक्तरीतिसे इत्थेभी काम्यता और नैमित्तिकता जानणी(उत्तर) अर्थात् फलकेअर्थहोआं तो काम्यहोआ और तिसविना नैमित्तिक होआ ॥ तत्रेति तिस विषे प्रायश्चित्त करे अथवा नाकरे इसका विचारकर्देहैं केईआंका मत एह है कि प्रायश्चित्त ना करे क्योंकि कर्म्म जो कीता है सो नष्ट नहि हुंदा अर्थात् कीताहोआ पाप प्रायश्चित्त कर्के नाहि दूर हुंदा ॥ और कहतेहैं कि प्रायश्चित्त अवश्य करणाचाहिए

जिसते ऐसा बेदमें देखयाहै कि यज्ञविषे विघ्नहोयां फेर स्तोम यज्ञकर्के अर्थात् प्रायश्चित्त कर्के सवन क्या यज्ञ विषे आउंदेहैं एह जाणीदा है अर्थात् जैसे प्रायश्चित्त कर्के यज्ञविघ्न दूर होआ ऐसे होर पाप भी दूर होवेगा ब्रात्यस्तोमकर्के पूजन कर्के सभ पापको तरजांदाहै ब्रह्महत्याको तरदाहै जो अश्वमेध यज्ञ करदाहै इतनी स्मृति है ॥ अबइसका अर्थ कहतेहैं याप्यनाम निंदित कर्म्मका अयाज्ययाजनादिका है तिसके कीतिहोए लेपको दूरकरणेनुं नहि शक्य होणेते तिसके हटाणेवास्ते प्रायश्चित्त नहि करणा चाहिए जो कीता होआ कर्म्महै सो विनाभोगतेकदें बी नहि दूर हुंदा इसीवास्ते होर स्मृतिहै नेति नहि भोगिया होयाकर्म्म किरोडांकल्पांदे व्यतीतहोयां

पुनः स्तोमेनेष्ट्वा पुनः सवनमायान्तीति विज्ञायते ब्रात्यस्तोमेनेष्ट्वातरतिसर्वंपाप्मानं तरतिब्रह्महत्यां योऽश्वमेधेन यजतइति अयमर्थः याप्यं गर्हितमयाज्ययाजनादि तत्कृतस्य लेपस्य निवर्त्तयितुमशक्यत्वात् तन्निवृत्तये प्रायश्चित्तं न कर्त्तव्यम् नहि कृतं कर्म्म भोगमन्तरेण क्षपयितुं शक्यते अतएव स्मृत्यन्तरम् नाऽभुक्तंक्षीयतेकर्म्म कल्पकोटिशतैरपि अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्म्मशुभाशुभमिति १ शंखोपि यथापृथिव्यांबीजानि अन्नान्योषधयोयथा एवमात्मनिकर्म्माणितिष्ठन्तिप्रभवन्तिचेति १ यद्यन्तरेणापिभोगं दुरितलेपः क्षीयते तदा सुकृतलेपोपि क्षीयेतेत्यतिप्रसंगः तस्मात्प्रायश्चित्तन्नकर्त्तव्यमितिपूर्वपक्षिणआहुः कुर्यादेवप्रायश्चित्तमिति प्रामाणिकानांदर्शनम् तेहिश्रुतिमुदाहरन्ति पुनः स्तोमेनेष्ट्वापुनः सवनमायान्तीति

बी नाशको प्राप्त नहि हुंदाहै जो कीताहै शुभअशुभ कर्म सो अवश्य भोगने योग्यहै १ शंखजी भी कहंदेहैं यथेति जैसे पृथिवीविषे बीजहै और अन्नहै औषधिहैं एह यद्यपि त्रये पर्यायआपसमेंहैं तथापि थोडाभेद लईकरी किहाहै एह जिसतरहाँ उत्पन्नहुंदेहैं तैसेहि आत्मा विषे कर्म्म है जो बीज पृथिवी विच पिआहै सो अवश्यकर्के फलानुदिंदाहै ऐसा जानणा १ यदीति कहतेहैं किजद कीतेहोए पाप भोगखेविना बी नष्ट होजाण तद पुण्यभी नष्टहोण तिसकारणतें प्रायश्चित्त नहीं करणा एह पूर्वपक्षहोआ ॥ अब जिनका मत प्रमाणहै सो कहतेहैं कि प्रायश्चित्त अवश्यकर्के करणा एह श्रुतिका उदाहरण दिंदेहैं पुनरिति इसका अर्थ पिच्छे होचुकाहै

अयाज्येति अयाज्य याजनादिरूप पापतें नित्य कर्मदे अधिकारते भ्रष्टहोंए २ एक दिनसाध्य कर्म करकेंपूजा करके फेर उसी सवनसाध्य कर्मको प्राप्त हुंदेहैं क्या तिसके अधिकारी हुंदेहैं इसतें प्रतीत होआ कि प्रायश्चित्तसेंपापदूर हुंदाहै और जोपिच्छेकिहाथा कि कीता होआ कर्म कदेबी नष्ट नहिहुंदा सो जिसने प्रायश्चित्त नहि कीता तिसपर है क्या विना प्रायश्चित्तसे पाप नहि दूर हुंदा एह अर्थहै अथवा पुण्य कर्मपर है क्या भोगेविना पुण्य कदीवी दूर नहिहुंदा एहअर्थहै तैसेही और स्मृति विषे किहाहै कदेति एह सुकृतकर्मकदाचित् कूटस्थकी न्याईं स्थित है संसारविषे जो डुबा होआहै उसको सभ दुःखतें दूरकरदाहै इसतेजाणया कि सुकृत निश्चलहै यदीति जद नाऽभुक्तमि त्यादि शास्त्र निरंकुश होवे अर्थात् पूर्वोक्त व्यवस्थाकरके नहि स्थापन कीता जावे तद पापके क्षयको

अयाज्ययाजनादिभिर्नित्यकर्माधिकाराद्भ्रष्टाऐकाहिकेनेष्ट्वा सवनं सवन साध्यं कर्म्म पुनः प्राप्नुवंति तत्राधिक्रियन्त इतियावत् नाऽभुक्तंक्षीयतइति अकृतप्रायश्चित्तदुरितविषयम् सुकृतविषयंच तथाच स्मृत्यन्तरम् कदाचि त्सुकृतंकर्मकूटस्थमिवतिष्ठति मज्जमानस्यसंसारेयावद्दुःखात्प्रमुच्यतइति यदि नाऽभुक्तमितिशास्त्रं निरंकुशं प्रवर्त्तेत तदा पापक्षयप्रतिपादकाः सर्वाःश्रुतयः स्मृतयश्च कुप्येरन् तस्मात्पापक्षयायप्रायश्चित्तं कर्त्तव्य मितिसिद्धान्ताभिधानात् प्रायश्चित्तं काम्यं ननु नैमित्तिकमिति नैषदोषः जातेष्टिदृष्टान्तेन दत्तोत्तरत्वात् अन्यथा पूर्वोदाहृतबृहस्पतिवचनविरोधात् ननु नैमित्तिकत्वे ग्रहणस्नानस्येव प्रायश्चित्तस्याकरणे दुरितान्तरमुत्पद्ये तातस्तस्यापि प्रायश्चित्तान्तरन्तस्याप्यकरणे दुरितान्तरं ततः प्रायश्चि त्तान्तरमित्येव मनवस्था स्यात्

कहण वालिआं श्रुतिआं और स्मृतीयां कुपित होणगीयां तिसकारणते पापक्षयके वास्ते प्रायश्चित्त करणा चाहिए इस सिद्धांतके कथनहोणेते और इस स्मृतिमै जो होर अर्थथा उसको कहकर प्रसंग विषे कहतेहैं । प्रायश्चित्त काम्यहै और नैमित्तिक नही ऐसे किसेके वचनको खंडित करतेहैं नेति एहदोष नहि कहणा जातेष्टिदृष्टांतकरके उसका उत्तरहोणेते जैसे इष्टिकर्म नैमित्तिकहै तैसेहि प्रायश्चित्तभी नैमित्तिकहै अन्यथा इसको नामन्नो तो पिच्छे आया जो बृहस्पतिजीकावचन प्रायश्चित्तं यत्क्रियतेइत्यादि इसकेसाथ विरोधआवेगा(प्रश्न) इसको यद नैमित्तिक मन्निये तद ग्रहणस्नानकी न्याईं कोई प्रायश्चित्त नहि करेगा तद उसको होर पाप लगेगा और उसकाभी प्रायश्चित्त जद नहि होया तो होरपापलगा ऐसे लगदे २ अनवस्थाआवेगी

अत्रेति इसमे कोईऐसा विचारकर्देहैं किप्रायश्चित्त केवल नैमित्तिक हि नही किंतु पापकेनाशकेअर्थ भी है इसीकर्के आपस्तंबजीका वचनहै प्रायइति प्रायश्चित्तोंको प्रसंगविषे ल्याकर्के एहप्रायश्चित्त दोष विघातकहै अर्थ जिनांका ऐसेहैं और दोषते पिच्छें करणेयोग्यहैं एवंच इसते एह निश्चितहो आ किप्रायश्चित्त जद नहि होंआ तो इसकर्के होणा जो दोषविघात सोभी नहि होंआ तदपूर्वसिद्ध जो पापथा सोई रिहा होंर दूसरा पाप नहि होया अथवा जैसेग्रहणका स्नान नहि कीता तदउस कों दोषलगा तैसेहि प्रायश्चित्त नहीं कीता इसनिमित्तको लयकर होंर प्रायश्चित्त करणाऐसेविधा नका अदर्शनहोणेते किसेजगा ऐसा नहि लिखया कि प्रायश्चित्तको नाकरेगा तो इकहोरप्रायश्चि

अत्रकेचिदाहुः ॥ प्रायश्चित्तानि न केवलं नैमित्तिकान्येव किंतु दुरितक्षयार्थान्यपि अतएवापस्तम्बः ॥ प्रायश्चित्तानिप्रक्रम्य एतानि दोषविघातार्थानिभवन्ति अनन्तरंदोषात् कर्त्तव्यानीत्याह एवंचसति प्रायश्चित्ताकरणेदोषविघाताभावेन पूर्वसिद्धदोषस्तदवस्थ इत्येतावन्मात्रं नतु दोषान्तरमुत्पद्यतइति यद्वा ग्रहणस्नानाद्यकरणमिव प्रायश्चित्ताकरणं निमित्तीकृत्यप्रायश्चित्तान्तरविधानस्यादर्शनात् न तन्निमित्तं दुरितान्तरं कल्पयितुंशक्यम् तस्मान्नैमित्तिकत्वेपि नाऽनवस्था ॥ ननु ॥ दोषविघातोनैकान्तिकः तथाहि द्विविधं पापं कामकृतमकामकृतंच ॥ तथाचबृहस्पतिः ॥ कामाकामकृतंतेषांमहापापंद्विधास्मृतामिति तयोरकामकृतस्य प्रायश्चित्तेन विघातेपि न कामकृतस्यसोस्ति ॥ तथाचमनुः ॥ इयंविशुद्धिरुदिताप्रमाप्याकामतोद्विजम् कामतो ब्राह्मणवधेनिष्कृतिर्नविधीयतइति

चहोवे तो पूर्वोक्त अनवस्था दोष नहि लगेगा(प्रश्न)जोआप कहते हो कि प्रायश्चित्त दोष विघातकहै जैसे ॥ प्रायश्चित्तं कर्त्तव्यं दोष विघातकत्वात् ॥ इसजगा हेतु नैकान्तिकहै सोई कहतेहैं द्विविधामिति किदोप्रकारका पापहै कामकृत और अकामकृत सोई बृहस्पतिजीकहतेहैं कामेति तिनांका पाप कामाकामकेभेदसे दोप्रकारकाहै इसकी उपपत्ती प्रकटकर्केकहतेहैं ॥ तयोरिति तिनांदोआंविचो अकामकृत पापका अर्थात् जो पाप कामनाते विना कीताहै तिसका प्रायश्चित्त कर्के विघातहै भी परंतु जो पाप कामनाते कीताहै तिसका विघात नहिहै इसकर्के दोष विघात नैकांतिकहै सोई मनुजीकहतेहैं इयमिति एह विशुद्धि कहीहै उसकी जिसनें विना कामनाते ब्राह्मण मारयाहै और कामनाते ब्राह्मण मारणवालेकी निष्कृति क्या प्रायश्चित्त कोई नहिहै

बौधायनजीकाभीवचनहै ॥ अमेति ना जाणके ब्राह्मणको मारणवाला दुष्ट हुंदाहै धर्म्मते ऋषी उसकी निष्कृतिको कहतेहैं कि इसने अज्ञानसें मारयाहै और जो मतिपूर्व क्या ज्ञान करकें मारणवाला होवे तद उसको कोई प्रायश्चित्त नहि इह दोष स्पष्टहोआ (उत्तर) एहदोष कदेभी नहि लगेगा उसकाअर्थ अन्यथाहोणेते क्याजो १२ वर्षका प्रायश्चित्त कीयाहै तिसकरकें उहपाप दूर नहीं हुंदा ऐसाअर्थहोणेते किंतु मरणांतादि जो दिखायेहै प्रायश्चित्त तिन करकें कामकृत पाप दूर हुंदाहै सोई अर्थ स्मृतीमें किहाहै जो पुरुष काम नाते महा पापकरे कदाचित् तिसकी निष्कृति भृग्वग्निपतनतें विना नहिहै भृग्वग्नि जोहै हिमाल यमें स्थानविशेष वदरिकाश्रमके समीप एक जो गत्त और दूसरा कोई अग्निकुंडहै तिसविषे पत

बौधायनोऽपि ॥ अमत्याब्राह्मणंहत्वादुष्टोभवतिधर्म्मतः ऋषयोनिष्कृति न्तस्यवदन्त्यमतिपूर्वकम् १ मतिपूर्वहतेतस्मिन्निष्कृतिर्नोपलभ्यतइति ॥ नायंदोषः द्वादशाब्दादिना निष्कृत्यभावेऽपि भृगुपतनादिना तत्संभवात् तथाच स्मर्य्यते यः कामतोनरःकुर्यान्महापापंकथंचन नतस्यनिष्कृतिर्दृष्टा भृग्वग्निपतनादृतइति १ शातातपोपि ॥ अकामावाप्तौ प्रायश्चित्तं कामका रकृतेत्वात्मानमवसादयेदिति ॥ अतः प्रायश्चित्तेन दोषविघातो ना नैका न्तिकः तस्मान्निहंतव्यदोषाख्यनिमित्तवानऽत्रप्रायाश्चित्तेऽधिक्रियतइति सिद्धम् ॥ तेच दोषाअनेकविधाःतत्रविष्णुः ॥ अथ पुरुषस्य कामक्रोधलो भाख्यं रिपुत्रयं सुघोरं भवतितेन समाक्रान्तोऽतिपातकमहापातका नुपातकोपपातकेषु प्रवर्त्तते

नहोणा अर्थात् उसजगा मरणा एही उसका प्रायश्चित्तहै ॥ शातातपभी कहतेहैं अकाम करकें पाप होवे तद प्रायश्चित्त करे और कामनातें करे तद आत्माको अवसादन करे अर्थात् पूर्वो क्तस्थान विषे मृत होवे तद शुद्ध हुंदाहै अतइति इसते जाणों कि प्रायश्चित्त करकें दोषविघात नैकान्तिक नहि है तिसते एह निश्चयहोआ कि जिसने मरकरकें शुद्धहोणाहै सो इस प्रायश्चित्तका अधिकारिहै एह सिद्ध होआ जिनांका विघात किहाहै सो दोष अनेकतर्हाके हैं इसमें विष्णुजीका वचनहैं अथेति पुरुषकें काम क्रोध लोभ रूप वडे भयानक तीन शत्रु हैं तिना करकें आक्रांत क्या दवायाहोया अतिपातक १ महापातक २ अनुपातक ३ उपपातकों ४ विषे प्रवृत्तिवाला हुंदाहै

और तैसेहि जातिभ्रंशकर जो पापहैं १ और संकरीकरण २ और अपात्रीकरण ३ और मलावह ४ और प्रकीर्णक ५ इनांविषे प्रवृत्तिवाला हुंदाहै इनोंपापों के स्वरूप भेद पिछे कहेहैं और लक्षण आगे आवणगे ※ अबप्रकरणकी समाप्ति विषे ग्रंथकार श्लोक २ कहताहै श्रीमदिति काश्मीरादिदेशोंके स्वामी महाराज रणवीरसिंह जीकी आज्ञा लेकर एह विचार कीताहै कैसा महाराजहै प्रौढतर क्या सभसे वडा जो प्रताप तिसते त्रासकों प्राप्त होएहैं सभ शत्रुयोंकेगण जिसते और जम्बू काश्मीर और तिव्बत इत्यादि

जातिभ्रंशकरेषु संकरीकरणेषु अपात्रीकरणेषु मलावहेषु प्रकीर्णकेषुचेति श्रीमत्प्रौढतरप्रतापतपनत्रस्ताखिलारिव्रजात् जम्बूपत्तनातिव्वतक्षितिपतेर्धर्मस्यसाक्षात्तनोः भूपालावलिमौलिलालयचरणात्काश्मीरदेशेश्वरादाज्ञांश्रीरणवीरसिंहनृपतेः प्राप्यार्थिचिन्तामणेः १ पर्यालोचितधर्मशास्त्रनिवहैरेतत्सभासंगतैर्गंगारामकवीशमुख्यविबुधैर्यः संगृहीतः श्रमात् प्रायश्चित्तविनिर्णयेप्रकरणंतस्मिन्बुधानन्ददे प्रायश्चित्तपदार्थवर्णनमुखंसिद्धिंययावादिमम् २ इतिश्री० गंगारामसंगृहीते धर्मशास्त्र महानिबन्धे प्रायश्चित्तभागेप्रायश्चित्तार्थकथनंनाम प्रथमंप्रकरणम्

देशोंका जो अधिपतिहै और धर्मकी साक्षात् मूर्त्ति है फेर कैसाहै भूपाल जो राजा तिनकी मस्तकमणि कर्के नीराजित है चरण जिसका फेर कैसाहै कि जो गुणिजनोको चिताम णिके तुल्यहै १ जो धर्मशास्त्रका ग्रंथ पंडितगंगारामादियोंने श्रमसे संग्रह कीता कैसे ओह पंडितहैं पर्य्यति विचारेहैं वहुत धर्मशास्त्रके ग्रंथ जिनोने और शुभसभा जो है काशीकी इसमै भी संगतिवालेहैं तिस बुद्धिमानोंकों आनंदके देणवाले ग्रंथविषे जो प्रायश्चित्त शब्दकाअर्थ तिसका निर्णयरूप पहला प्रकरणसमाप्तहोया इतिश्रीभाषाटीकायांप्रथमंप्रकरणम् ※

॥ प्रथमंप्रकरणम् ॥ १

स्वेति इसकी टीका पीछे लिखीहै अथेति अब प्रायश्चित्तके अधिकारियोंको कहतेहैं सोसंपूर्ण पापीहैं चपुनः तिनके भेदहैं विहित जो कर्म अर्थात् वेद करके कहे जो कर्म तिनको न करणा और निंदित कर्मोंको करणा इत्यादि मानवीयादि वचनोंसे दिखायेहैं सो प्रथम प्रकरणमें लिखेहैं तिनोंमें प्रायश्चित्तकादेणा उक्त विषय अर अनुक्त विषय अर उक्ताऽनुक्त विषयहैं तिनमें पहिला उक्तविषय जो प्रायश्चित्तहै सोकहतेहैं लोहेति लोहा कांस्य इनके चुराणेमें बारांदिन पर्यंत पृथ्वीमेंसे अन्नचुणकर भोजन करे इत्यादि कथन कियाहै अनुक्त विषयमें विष्णुजी कहतेहैं नही कहा प्रायश्चित्त जिसका ऐसे जो पाप उनके दूर करणे वास्ते पापी पुरुषकी शक्तिको देखकरके अर पापकी न्यूनाधिक्यताको देखकर प्रायश्चित्तकोंदेवे १ उनको प्रायश्चित्तका देणा साधा

श्रीरघुनाथोजयति ॥ स्वतोमित्वातत्त्वं श्रुतिरपि यदीयंभगवती गुहागूढंप्रोचे सकलपुरुषार्थाध्यइहयः विचारेस्वेसक्तान् विशदमतिदानेनसदयं सध र्म्मोऽस्मान्दीनान् वहुलमनुगृह्णातुभगवान् १ अथप्रायश्चित्ताधिकारिणः॥ तेच सर्वे पापाः तद्भेदाश्च अकुर्वन्विहितंकर्म निंदितंच समाचरन्नित्यादि मानवीयादि वचोभ्यः प्रदर्शिताः पूर्वप्रकरणे॥ तत्र प्रायश्चित्तदानमुक्तविषय मनुक्तविषय मुक्तानुक्तविषयंच तत्राद्यं लोहकांस्यापहारेच द्वादशाहंकणान्नतेत्यादि अनुक्तविषये ॥ विष्णुः॥ अनुक्तनिष्कृतीनांतु पापानामपनुत्तये शक्तिंचावेक्ष्यपापंच प्रायश्चित्तंप्रकल्पयेदिति १ तत्प्रकल्पनंच साधारणप्रकरणादौवक्ष्यते उक्तानुक्तविषयंच यत्रोक्तं यत्र वानोक्तमिह पातकनाशनम् प्राजापत्येन शुद्ध्येदित्यादि तत्र प्रायश्चित्त तारतम्यार्थं बाल्यादि ॥ निर्णीतं॥ नागेशेन ॥ यथा षोडशवर्षन्यूनोबालः अशीतिवर्षाधिको वृद्धः पूर्णषोडशवर्षस्यपूर्णं प्रायश्चित्तम् ऊनैकादशवर्षस्य पंचवर्षादूर्ध्वं पादं प्रायश्चित्तम्

रण प्रकरणादिमें कहाजावेगा अर उक्तानुक्त विषय प्रायश्चित्त कहतेहैं यत्रेति जिस पापमें प्रायश्चित्त कहाहै अथवा जिसमें नही कहाहै तहां पापोंके नाश करणे वाला प्राजापत्य जो व्रत बारांदिनकाहै तिस करके शुद्धि होतीहै अब तिसमें प्रायश्चित्तकी तारतम्यताके निमित्त अर्थात् थोडा अथवा बहुत प्रायश्चित्त देणा इसके वास्ते बाल्यादिजोहैं बालक युवा वृद्ध इनका निर्णय नागेशने कियाहै यथेति जिसप्रकार सोलां १६ वर्षसें छोटा बालक कहाहै अस्सी ८० वर्षसें बडा वृद्ध कहाहै बराबर १६ वर्षका जो मनुष्यहै सो पूर्ण क्या बराबर प्रायश्चित्त करे और एकादश ११ वर्षसें छोटा पांच ५ वर्षसें वडा जो बालकहै सो एक पाद क्या चतुर्थांश प्रायश्चित्त करे

श्रौर बारां १२ वर्ष सें लेकर सोलां १६ वर्ष पर्यंत अर्ध प्रायश्चित्त करे सो प्रायश्चित्तभी तिस बालकके पित्रादिकोंने करणे योग्यहैं इस तरह जो अतिरोगीहै और जो अतिवृद्धहै तिसका प्रायश्चित पुत्रादिकोंने करणे योग्यहै पांच ५ वर्षसें छोटे बालकको पाप नहीं होताहै ॥ अब वर्णोंके क्रमकर्के प्रायश्चित्त कहतेहैं शास्त्रेति शास्त्रोपदिष्ट पूर्ण प्रायश्चित्त ब्राह्मणको कथन कियाहै क्षत्री अर वैश्य शूद्र जो हैं तिनको पाद पाद हीन कहाहै अर्थात् क्षत्रीको तीन ३ पाद वैश्यको दो २ पाद शूद्रको एक १ पाद प्रायश्चित्त कहाहै और किसी जगामें विशेष जो प्रायश्चित्तहै तिसमें वचनहै तिसमें शूद्रको प्रायश्चित्त जप होमादिसें रहितहै और विनामंत्र प्राणायामकहाहै और यागादि अनुष्ठानशील जो हैं तिनको जपादिक प्रायश्चित्तहैं इतेति और जो यागादिक नहीं करसकते तिनको तपआदि क्या प्राजापत्य चांद्रायणादि प्रायश्चित्तहै

द्वादशादाषोडशमर्द्धम् तदपि तत्पित्रादिभिः कार्य्यम् एवमतिरोग्यतिवृद्ध योरपिपुत्रादिभिःकार्य्यम् पंचवर्षन्यूनस्य न पापम् ॥ अथवर्णतः शास्त्रोप दिष्टं पूर्णप्रायश्चित्तं विप्रस्यैव क्षत्रिय विट् शूद्राणांतु पाद पाद हानिः क्वचिद्विशेषस्तु वाचनिकः तत्र जपहोमादिरहितमेव शूद्रस्य अमंत्रक प्राणायामश्च यागाद्यनुष्ठानशीलानां जपादिकम् इतरेषां तपआदि नाम धारक मूर्ख निर्धनानां तपः अनधीतानांच॥ अथाश्रमतः षोडशवर्षाधिक ब्रह्मचारिणोद्विगुणम् वानप्रस्थस्य त्रिगुणं यतेश्चतुर्गुणम् स्वयमशक्तौ प्रतिनिधिद्वारा प्रायश्चित्तं कार्यमिति॥ इत्थमेव प्रायश्चित्तमयूखे अंगिराः अशीतिर्यस्यवर्षाणि बालोवाप्यूनषोडशः प्रायश्चित्तार्द्धमर्हति स्त्रियोरो गिणएवचेति १

नामधारक अर्थात् नाममात्र जो ब्राह्मणादिहैं मूर्ख और धनरहित तिसकोभी पूर्वोक्त तपकहाहै नही पढे जो ब्राह्मणहैं तिनकोभी तपकरणाही प्रायश्चित्त है ॥ अब आश्रमियोंको प्रायश्चित्त कहतेहैं सोलां १६ वर्षसें बडा जो ब्रह्मचारीहै तिसको द्विगुण प्रायश्चित्त कहाहै और वानप्रस्थको त्रिगुण संन्यासीको चतुर्गुण कहाहै जो आप प्रायश्चित्त करणेको नही समर्थ होवे उसने प्रतिनिधिद्वारा प्रायश्चित्त कराणे योग्यहै अर्थात् और किसीसें करवालेवे ॥ इत्थमेवेति इसी प्रकार प्रायश्चित्तमयूखमें अंगिराजी कहतेहैं असी ८० बर्ष जिसकी अवस्थाहै सो वृद्ध होता है और सोलां १६ वर्षसें जो छोटाहै सो बालक होताहै सो एह वृद्ध और बालक अर स्त्रियां और रोगी मनुष्य आधे प्रायश्चित्तके योग्य होतेहैं १

महाभारतके आदिपर्वमें कहाहै मनुष्यों को चौदां १४ बर्षकी आयुषा पर्यंत पाप नहीं होता श्रीर चौदां वर्षसें उपरंत जो पाप करतेहैं तिनकों दोष होताहै ॥ १ ॥ अंगिराजीका वचनहै अर्वेति बारां १२ बर्षसें उरे अर अस्सी ८० वर्षसें उपरंत आधाही प्रायश्चित्त पुरुषोंको होताहै श्रीर तिसमें चौथा हिस्सा स्त्रियोंको होताहै १ इन दोनों वचनोंमें जो न्यूनाधिक भावहै सो शक्तिसें जानने योग्यहै जो विष्णुजी कहतेहैं ॥ स्त्रीणामिति स्त्रियोंको आधा प्रायश्चित्त देणे योग्यहै श्रीर तिसी प्रकार वृद्ध श्रीर रोगियोंको भी आधा प्रायश्चित्त देणे योग्यहै श्रीर बालकोंको चतुर्थांश देणे योग्यहै संपूर्ण पापोंमें इह विधिहै १ एह जो प्रकारहै सो यज्ञोपवीत पाउणेसे उरें जानने योग्यहै शंखका वचनहै ऊनेति ग्यारां ११ वर्षसें छोटा श्रीर पांच ५ बर्षसें वडा जो बालक पाप करे इसपापका प्रायश्चित्त बालककाभ्राताकरे अथवा पिता अथवा श्रीर कोई संबंधी करे १ इससें

महाभारते आदिपर्वण्यपि ॥ आचतुर्दशकाद्वर्षान्नभविष्यतिपातकम् परतःकुर्वतामेव दोषएवभविष्यति १ ॥ अंगिराः । अर्वाक्द्वादशाद्वर्षादशीतिरूर्ध्वमेव वा अर्द्धमेवभवेत्पुंसां तुरीयंतत्रयोषितामिति १ अत्रोच्चावचावधि तारतम्यं शक्तितोज्ञेयम् ॥ यत्तुविष्णुः ॥ स्त्रीणामर्द्धप्रदातव्यं वृद्धानांरोगिणांतथा पादोबालेषुदातव्यः सर्वपापेष्वयंविधिः १ एतच्चोपनयनादर्वाग्ज्ञेयम् ॥ शंखः ॥ ऊनैकादशवर्षस्य पंचवर्षात्परस्यच प्रायश्चित्तंचरेद्भ्राता पितावान्यः सुहृज्जनः ॥ १ ॥ अतोबालतरस्यास्य नाऽपराधोनपातकम् राजदंडोनदातव्यः प्रायश्चित्तंनविद्यतइति २ ॥ कुमारः ॥ मद्यमूत्रपुरीषाणां भक्षणेनास्तिकश्चन दोषस्त्वापंचमाद्वर्षादूर्ध्वंपित्रोःसुहृद्गुरोरिति १ ॥ गौतमः ॥ प्रागुपनयनात्कामचार कामवाद कामभक्ष्या इति सुरापाननिषेधस्तु जात्याश्रयइतिस्थितिरितिकुमारवाक्यात्

अत्यंत छोटा जो बालकहै तिसको अपराध नहींहै श्रीर पातकभी नहींहै राजदंड भी उसको नहीं देणे योग्यहै श्रीर प्रायश्चित्तभी उसको नहीं देणे योग्यहै २ कुमारजीका वचनहै ॥ मद्येति पांच ५ वर्षसें छोटे बालकको शराब श्रीर मूत्र विष्टाके खाणेमें कोई दोष नहींहै श्रीर जो पांचवर्षसें उपरंतहै तिसके मद्यादिकोंके पापका दोष मातापिताकों वा श्रीर संबंधियोंकों वा गुरूकों होताहै १ इसीको गौतमजी भी कहतेहैं प्रेति यज्ञोपवीतसें प्रथम बालक अपनी इच्छा करके विचरे श्रीर बातांकरें श्रीर अपनी इच्छासें जलकों पीवे वा भोजन करे तिसकों दोष नहीं श्रीर मदिराका जो निषेधहै सो जातिके आश्रयहै यह कुमारजीके वाक्यसे जानना

अनुपेतइति नहीं भयाहै यज्ञोपवीत जिस बालकका वोह बालक अज्ञानसें जेकर मदिरापानकरे तब उस बालकका प्रायश्चित्त तीन ३ कृच्छ गुरु करे अथवा माता वा भ्राता वा पिता करे इस स्मृति करके जिस बालकने यज्ञोपवीत नहीं धारण किया होवे उसकों भी दोषहै ॥ विज्ञानेश्वरकावाक्यहै ॥ एतेति एहजो दो बचनहैं इनको पंचम वर्षकी प्रवृत्तिसे उपरंतभी लगाणेसे अर्थात् पंचम वर्षका प्रारंभही हुवाहै अभी व्यतीत नहीं भया तिसविषें सार्थक होणेसे तहां अनुपेतकों दोषहै और चार वर्ष पर्यंत बालककों दोष नहीं एह योग्यहै ॥ एह स्मृत्यंतरमें कहतेहैं जातेति ॥ जबतक बालक आठ ८ वर्षका होताहै तबतक जातमात्रही होताहै सोनिश्चय करके गर्भके तुल्य जानने योग्यहै सो केवल स्वरूपमात्रहि दिखायाहै १ तिस बालकों आठ८ वर्ष पर्यंत भक्ष्य अभक्ष्यमें और वाच्यावाच्यमें असत्य बोलनेमें जबतक उसका उपनयन नहीं किया तिसकाल पर्यंत उसकोदोषनहीं २ तन्मद्येतर विषय मिति एह जो पूर्वलिखाहै कि आठ ८

अनुपेतस्तुयोबालो मद्यंमोहात्पिबेद्यदि कृच्छ्रत्रयंगुरुःकुर्य्यान्माताभ्राता पितातथेतिस्मृतेश्चाऽनुपेतस्यदोषोस्त्येवेति ॥ विज्ञानेश्वरः ॥ एतद्वचनद्वयस्य पंचवर्षप्रवृत्त्युत्तरपरतयाप्युपपत्तेस्तत्राऽनुपेतस्यदोषः वर्षचतुष्टयपर्य्यंतं न दोषइनितद्युक्तम् ॥ स्मृत्यंतरे ॥ जातमात्रः शिशुस्तावद्यावदष्टौसमावयः सहिगर्भसमोज्ञेयो व्यक्तिमात्रंप्रदर्शितः१ भक्ष्याभक्ष्येतथा ज्ञेयोवाच्यावाच्येतथाऽनृते तस्मिन्कालेनदोषःस्यात्सयावन्नोपनीयतइति२ तन्मद्येतरविषयम्॥ इदंचार्द्धपादादि परिमाणमुद्दिष्टमौलिकद्वादशाब्दिकादेवाऽऽदायप्रवर्त्तते नतुक्षत्रियादिनैमित्तिक द्वैगुण्यापेक्षया ब्रह्मचारित्वादिनिमित्तकं द्वैगुण्याद्यप्येवं अर्धपादद्वैगुण्य त्रैगुण्यादि विधीना मुपजीव्योपजीवकभावाभावेन परस्परालोचनया मौलिकविधिमात्रालोचनेनैवप्रवृत्तेः

वर्ष पर्य्यंत बालककों दोषनहीं सो मदिरासेंविना और भक्ष्याभक्ष्यादिका विषयहै ॥ अब इसीमें और विशेष कहतेहैं एहजो अर्द्धपादादिपरिमाण कहाहै सो मूलकाजो द्वादश वर्षादिहै तिसीमें वर्त्तमानहै क्षत्रियादि नैमित्तिक द्वैगुण्यादि अपेक्षा करके नहीं ग्रहण करणा और ब्रह्मचारित्वादि निमित्तक द्वैगुण्यादि भी इसी प्रकारहै अर्धपाद द्वैगुण्य त्रैगुण्यादि जो विधियांहैं तिनकों कार्य्य कारणके भावका जो अभाव तिसके विचार करके मौलिक जो विधिहै द्वादशाब्द व्रत उसीके विचार करके प्रवृत्त होणेसें अर्थात् १२ वर्षका व्रतहै तिससें १ पाद बालक कों कहणा सो बालक क्षत्रियका होवे तों सो व्रत पादोनक्या ९ वर्षकाहै तो कहो इस बालककों जो पादोंन देणाहै सो १२ का वा ९ का इसमें सिद्धांतकियाहै कि मौलिक व्रतहै १२ दिनका इसीका पाददेणा इसी प्रकार सर्वत्र जाणो

अथेति अब कामाकाम कर्के कियेंहुवे पापविषें प्रायश्चित्तकी व्यवस्था कहतेहैं तिसमें मनुजीकहते हैं अकामेति अकाम कर्के कियाजो पाप तिसमें बुद्धिमान् पंडित लोक प्रायश्चित्त कहतेहैं और कामना कर्के किया जो पाप उसमे बी एककापि श्रुतिके उदाहरणासेंकहतेहैं १ और कामनासें विना कियाजो पाप सो वेदाभ्यास कर्के शुद्धहोताहै और कामनासे और मोहसें किया जो पाप सो पृथक् विध जो नानाविध प्रायश्चित्तहैं तिनों कर्के शुद्ध होताहै २ एह इन दोनों श्लोकोंका अर्थ कहाहै अनयोरिति और श्रुतिकें देखणेसें कामकृत पापविषें भी प्रायश्चित्त कहाहै एह जो कथनकियाहै सो प्रायश्चित्तकी गौरवताके निमित्तहै ॥ सो श्रुति लिखतेहैं इंद्र इति इंद्र संन्यासियोंकी अपनी इच्छा कर्के कुत्तयों कें तांई देताभया लोकउसकी

अथकामाकामकृतप्रायश्चित्तव्यवस्था ॥ अकामतःकृतेपापे प्रायश्चित्तंविदुर्बुधाः ॥ कामकारकृतेप्याहुरेकेश्रुतिनिदर्शनात् १ अकामतःकृतंपापं वेदाभ्यासेनशुद्ध्यति कामतस्तुकृतंमोहात् प्रायश्चित्तैः पृथग्विधैः २ अनयोरर्थः अकामतोअनिच्छातः कृतेपापे प्रायश्चित्तंभवतीतिपण्डिताः कामतःकृतेऽपिभवतीत्येके अत्रहेतुः श्रुतिनिदर्शनात् एतच्च प्रायश्चित्तगौरवार्थम् श्रुतिश्च इंद्रो यतीन् सालावृकेभ्यः प्रायच्छत् तमश्लीलावागभ्यावदत् सतुप्रजापतिमुपाधावत्तमुपहव्यं प्रायच्छादिति अस्याअर्थःइंद्रो यतीन् बुद्धिपूर्वकं श्वभ्योदत्तवान् ततोलोकास्तमनिंदंस्ततः स प्रायश्चित्तार्थे प्रजापतिसमीपमगमत् तस्मै प्रजापतिरुपहव्याख्यंकर्म्मप्रायच्छत् दत्तवान् अतः कामतःकृतेप्यस्तिप्रायश्चित्तम् तत्प्रायश्चित्तमपिदर्शयति उपहव्यंहि प्रायश्चित्तार्थकर्म तच्चापस्तंबीयब्रह्महप्रकरणेज्ञेयम् अकामत इति अनिच्छातःकृतेवेदाभ्यासेन प्रतिदिनंक्रियमाणेनापि पापी पुरुषः शुद्ध्यति एतच्च कामकृतेपापेगुरुतरप्रायश्चित्तापेक्षयाऽल्पतरविधानार्थम् ॥

निंदाकरतेभये पुनः सो इंद्र प्रायश्चित्तके निमित्त ब्रह्माके समीप जाताभया तिस इंद्रकें तांई ब्रह्मा उपहव्याख्यजो कर्महै सो देताभया उपहव्य नाम प्रायश्चित्तकाहै इसथें काम कर्के किया जो पाप तिसमें भी प्रायश्चित्तहै तिस प्रायश्चित्तको भी दिखातेहैं उपहव्य जोहै सो प्रायश्चित्तके निमित्त कर्महै सो आपस्तंबजीके कहेहुवे ब्रह्महत्या प्रकरणमें जानने योग्यहै अकाम इति अनिच्छासें कियाजो पाप तिस निमित्त दिन दिन बिषे किया जो वेदाभ्यास तिस कर्के पापी पुरुष शुद्ध होता है एह वेदाभ्यासरूप प्रायश्चित्त काम कर्के किया जो पाप तिसमें अत्यंत बहुत प्रायश्चित्तकी अपेक्षा कर्के अत्यंत थोडे प्रायश्चित्तके विधानके निमित्तहै ॥

तत्रेति तिसमें मोहादि व्यामूढता करके किया जो पाप तिसमें अनेक प्रकारका विद्याऔर धन और तपस्वरूप गुरुतरहि प्रायश्चित्त कहाहै और इसमें शंकानिवृत्तिके वास्ते कहतेहैं अका म पापमें लघु प्रायश्चित्तका अधिकारी होताहै और सकाम पापमें बडे प्रायश्चित्तका अधि कारी होताहै इससे अधिकारी प्रकरणमें प्रायश्चित्तका कहना अयोग्यहै इह शंका नहीं कर णेयोग्य क्योंकि अधिकार विना अधिकारी नहीं कहसकतेहैं अतएवेति अब इसीकारणसे वृहस्पतिजी कहतेहैं कामेति इसी प्रकार पातक दोप्रकारका कहाहै एक कामकृत पातकहै और दूसरा अकामकृत है और पाप करणे वाले पुरुषकी अपेक्षा करके उसमें प्रायश्चित्तभी दो प्रकारकाही कहाहै १ अब कामना करके किया जो पाप तिसमें अंगिराऋषि प्रायश्चित्तकी आ धिक्यता कहतेहैं विहितमिति अकाम पापोंको विहित जो प्रायश्चित्तहै सो कामना करके पा

तत्रहिमोहादिव्यामूढतयाकृते नानाविधं विद्याधनतपःस्वरूपं गुरुतरमेव प्रायश्चित्तमुक्तम् अकामेलघुप्रायश्चित्ताधिकारी सकामे गुरुप्रायश्चित्ता धिकारीत्यधिकारि प्रकरणे प्रायश्चित्तकथनमयुक्तमितिनाशंकनीयं अतएववृहस्पतिः कामाकामकृतंत्वेवंपातकंद्विविधंस्मृतम् पुरुषापेक्षया चैव निष्कृतिर्द्विविधास्मृतेति १ कामकृतेप्रायश्चित्ताधिक्यमाहांगिराः॥ विहितंयदकामानांकामात्तद्द्विगुणंभवेदिति कामकृते महापापे तु मरण मेव प्रायश्चित्तमुक्तं तेनैव यःकामतोमहापापंनरःकुर्य्यात्कथंचन नतस्य निष्कृतिर्दृष्टा भृग्वग्निपतनादृते १ इति यत्तु इयंविशुद्धिरुदिता प्रमा प्याकामतोद्विजम् कामतोब्राह्मणवधेनिष्कृतिर्नविधीयते इतिमानवीयं तदियमितिसर्वनामपरामृष्टद्वादशवार्षिक व्रतमेवनिषेधति नप्रायश्चित्त मात्रं पूर्वोक्तांगिरोवचनात्

करणेसे द्विगुण होताहै और कामना करके किया जो महापाप ब्रह्महत्यादि तिस पापमें मरणही प्रायश्चित्त कहाहै तिसी अंगिराजीने यइति जोमनुष्य कदाचित् कामनाकरके महापाप को करे तिस मनुष्यकी निष्कृति क्या प्रायश्चित्त पर्वतसे गिर करके मरणेके विना और अग्नि में पड करके मरणे विना नहीं देखा १ इसीमें और विचार कर्तेहैं यत्त्विति एहप्रायश्चित्त कामनासे बिना ब्राह्मणको मारकरके कहाहै और कामनाकर्के ब्राह्मणके मारणेमें प्रायश्चित्त विधान नहीं कहाहै एह जो मानवीय क्या मनुजीका वचनहै सो सर्वनाम होणेर्थे परामर्श कियाजो द्वादशवार्षिक व्रत तिसको निषेध कर्त्ताहै प्रायश्चित्तमात्रको नहीं निषेध कर्त्ता पूर्व कहा जो अंगिराजीका वचन तिसर्थे जानणा

अब इसमें और कहतेहैं अथेति जान करके कियाहै ब्रह्महत्यादि जिसने सो पुरुष शास्त्रविहित जो प्रायश्चित्तहै तिससे द्विगुण प्रायश्चित्तके करणे करके इस लोकमें व्यवहारको प्राप्तहोताहै अथवा नहीं ऐसे संदेहके होयां कितन्योंका मत विधिकोटिहै अर्थात् कितने कहतेहैं कि व्यवहारको प्राप्तहोताहै और कितन्योंकामत निषेधकोटिहै अर्थात् कितनेकहतेहैं कि नहींप्राप्तहोता इसमें अपणा मत पहिले मतके साथहै प्रथम पक्षमें कहतेहैं प्रायइति अज्ञान करके किया जो पाप सो प्रायश्चित्तों करके दूर होताहै और जान करके किया जो पाप तिसमें वचनसें व्यवहार्य्य होताहै याज्ञवल्क्यके इसवचन करके जानकरके किया जो ब्रह्मवधतिसविषे प्रायश्चित्तकरके व्यवहार्य्यतामात्र होतीहै अर्थात् लोक विषे वर्त्तमान होताहै और पापकानाश नहीं होता (प्रश्न) जेकर पापका नाश नहीं होता

अथबुद्धिपूर्वकृतब्रह्मबधादिर्यथाशास्त्रं द्विगुणप्रायश्चित्ताचरणेनेहव्यवहार्य्यतामापद्यते नवेति विप्रतिपत्तौ केषांचिद्विधिकोटिः केषांचिच्चप्रतिषेधकोटिः तत्रप्रथमे प्रायश्चित्तैरपैत्येनोयदज्ञानकृतंभवेत् कामतोऽव्यवहार्य्यस्तुवचनादिहजायत इतियाज्ञवल्क्यवचनेन बुद्धिपूर्वे ब्रह्मवधे प्रायश्चित्तेन व्यवहार्यतामात्रं नत्वेनसोऽपगमः ॥ नचैनसोऽनपगमेव्यवहार्यतापिन संभवतीतिवाच्यम् ॥ वचनादेवतादृशपातकिसंसर्गस्य दोषप्रयोजकत्वाऽभावकल्पनात् किंकिंहिवचनंनकुर्य्यात् नहिवचनस्यातिभारइति न्यायात् स्पष्टंचैतन्मिताक्षराप्रभृतिनिबंधेष्वित्याहुः अन्येतुप्रदर्शितवचनेऽव्यवहार्य्य इतिच्छेदः कामतइत्यस्य कामतः कृतमपीत्यर्थः तथाचकामतोब्राह्मणवधे प्रायश्चित्ताचरणेन नरकनिवृत्तावपि इहलोकेऽव्यवहार्य्योजायत इतिपर्य्यवसितोर्थः वचनंत्वत्रमानवम्

तब व्यवहार्य्यता अर्थात् वर्त्तनभी नहीं होना चाहिये (उत्तर) एहशंका मतकर क्योंकि वचनसें ही ऐसेपातकीके संसर्गको दोषके प्रयोजकका अभाव कल्पनसें क्या क्या वचन नहीं करता अर्थात् वचन सबकुछ करताहै क्योंकि वचनको कोई अतिभार नहीं इस न्यायसें स्पष्टहै एह मिताक्षरादि ग्रंथोंमें कहाहै ॐ अब दूसरा मत कहतेहैं और कामतो व्यवहार्य्यः इस वचनमे अव्यवहार्यः एह पदच्छेद करतेहैं और कामतः इस पदका कामसेंवी किया जो है एह अर्थ करतेहैं तिस प्रकार कामसें जो ब्रह्महत्या है तिसविषे प्रायश्चित्तके करणे करके नरककी निवृत्तिके होयां भी इस लोक विषे अव्यवहार्य्यता होतीहै अर्थात् नरकप्राप्तिका अभावभी होवै तदभी इस लोक विषे वर्त्तमान नहीं होता एह सिद्धांत अर्थहै इस विषे मनुजीका वचनहै

सो कहतेहैं बालेति बालकोंको मारणे वाले और कृतघ्न जो धर्मसें विशुद्धभीहैं अर्थात् कृत प्रायश्चित्तभीहैं और जो शरणागत होवे तिसको और स्त्रीको मारें तिन्होंके साथ व्यव हार नहीं करणा इति वहिइत्यादि सूत्रोंमेंभी ब्रह्ममीमांसा भाष्यादि विखे भी अव्यवहार्यता आरूढहै और मिताक्षराकी व्याख्या इहां युक्त नहीं तिसके मतविषे कामसें किया जो पाप सो नहीं दूरहोता इस अर्थ करके तिसमें नञ्के अध्याहारका जो स्वीकार तिसकी आवश्यकता करकें गौरवापत्तिसें ॐ और कहतेहैं क्या हमारे व्याख्यानमें वचनादिहजायतेइति इसस्थानमें अव्यवहारके विषे अव्यवहारके कहणे वाले वा दीकों बालघ्नान् इत्यादि मनुका वचन प्राप्तहोताहै और मिताक्षराव्याख्याके अनुसारि व्यवहा

बालघ्नांश्चकृतघ्नांश्चविशुद्धानपिधर्मतःशरणागतहन्तॄंश्चस्त्रीहन्तॄंश्चनसंवसेदिति वहिस्तूभयथापिस्मृतेराचाराच्चेत्यधिकरणस्थब्रह्ममीमांसाभाष्यवाचस्पत्याद्यारूढंचाव्यवहार्यत्वम् मिताक्षराव्याख्यातुनाऽत्रयुक्तातन्मते कामतइत्यस्य कामतः कृतं नापैतीत्यर्थकतया तत्रनञोऽध्याहारस्वीकारस्यावश्यकतया गौरवापत्तेः। किंचास्मदीयव्याख्याने वचनादिहजायतइत्यत्राव्यवहारेसंवादिबालघ्नांश्चेत्यादिमनुवचनमुपलभ्यते नतुमिताक्षराव्याख्यानानुसारिव्यवहार्यत्वे किमपिवचनमुपलभ्यते॥ किंचप्रायश्चित्तैरपैत्येनइत्यतः पूर्वस्मिन्महापातकजैर्घोरैरुपपातकजैस्तथा अन्विताअयांत्यचरितप्रायश्चित्तानराधमाइति वचनेनाऽनाचरितप्रायश्चित्तानामेव नरकप्राप्तिर्बोध्यते यदिचकामकृतमहापातकस्य प्रायश्चित्ताचरणेऽपि नरकप्राप्तिःस्यात्तर्हि तद्विरोधः स्पष्टएव तस्मादशाहोर्ध्वंस्नानमात्रमित्याशौचप्रकरणस्थमिताक्षरोक्तेर्माधवविरोधादुपेक्षावत् ॥

रमें कोईभी वचन नहीं मिलसकता ॥ इसमें और भी कहतेहैं क्या (प्रायश्चित्तैरपैत्येनः) इस वाक्यसे पूर्वविषे जो वचनहै क्या महेति घोर जो महापातक और उपपातक तिनोंसे उत्पन्न जो पाप तिन करके युक्त जो पुरुषहैं और नहीं किया प्रायश्चित्त जिन्होंने सो मनुष्योंमें अधम हैं और नरकको प्राप्तहोतेहैं इति इसवचन करके नहींकिया प्रायश्चित्त जिनोंने तिन्होंको नरककी प्राप्ति जाननी चाहिये इसमें औरभी वचनहै क्या कामसें किया जो महापातक तिसके प्रायश्चित्त करणे करके भी जेकर नरक प्राप्तिहोवे तद तिसका विरोध बनाही रहा तिस कारणसें दशाहित्यादि जो अशौचप्रकरणमें मिताक्षराका वचनहै सो माधवके विरोधसें उपेक्षाके तुल्यहै अर्थात् तिसप्रकार जिस जन्मा माधव विरोधसें मिताक्षराकी उपेक्षाकीहै तैसेहीइस स्थानसें भीहै

पुराणेत्यादि वचनके विरोधसें प्रकृतभी व्याख्यान मिताक्षरका त्यागणे योग्यहै इसी कारणथें इसमें वाक्यकहतेहैं यइति जो पुरुष कामसें कदाचित् महापापको करे तिसकी निष्कृति अर्थात् प्रायश्चित्त पर्वतसें गिडकरके मरणेसें वा अग्निमें पडकरके मरणेसें विना नहीं देखी इस वचन करके कामादिति इसवचनका तुल्य फलहै जेकर दोनों वचनोंका तुल्य फल न मानियें तब दोष आवताहै क्या (यःकामतः) इस वाक्यकों परलोककी शुद्धिबोधकताहै अर्थात् इस वचन करके परलोककी शुद्धि जानी जातीहै अर इस लोकमें व्यवहार नहीं होता और (कामात्) इस वचन करके इस लोककी शुद्धि जाणी जातीहै एह भिन्न अर्थ दोषहै नेति (व्रीहिभिर्यजेत) इत्यादि वचनोंमें भिन्नफल नहीं देखा तिसकारणसें अव्यवहारही

पुराणप्रथित साक्षाद्भगवदवतार श्रीमदाचार्य्यभाष्यवाचस्पत्यादिविरोधात् प्रकृतमपि व्याख्यानमुपेक्षामेवार्हति अतएव यः कामतोमहापापं नरः कुर्य्यात्कथंचन नतस्यनिष्कृतिर्दृष्टाभृग्वग्निपतनादृते इतिवचनेन कामात्तद्द्विगुणंभवेदिति बचनस्य समानफलकताभवति अन्यथा तस्यपारलौकिकशुद्धिबोधकत्वमस्य त्वैहिकशुद्धिबोधकत्व मिति वैरूप्यं स्यात् नहिव्रीहिभिर्यजेतयवैर्वेत्यादौ विभिन्नफलकत्वं दृष्टं तस्मादव्यवहार्य्यतैव विचारसहा नेत रेतिसंगिरन्ते ॥ अत्रब्रूमः कृतद्विगुणप्रायश्चित्तानां महापातकिनां पातकनाशाभावकल्पनमेवयुक्तियुक्तं सतिहितन्नाशे तत्संसर्गस्य पापजनकतायाःकथमपिवक्तुमशक्यत्वात् तथाहि चेतनविशेषगुणसामान्यस्यस्वसमभिव्याहृतचेतनान्तरसंक्रामित्वं तावदौत्सर्गिकं नियतम् प्रसिद्धमत्रान्वयव्यतिरेकानुविधानम्

विचारकों सहारताहै और इतर जो है व्यवहार सो नहीं युक्तिको सहारता अर्थात् इस लोकमें वर्त्तना नहीं होता एह कहतेहैं ॥ इसमें ग्रंथकर्त्ता कथन करताहै कृतेति कियाहै द्विगुण प्रायश्चित्त जिन महापापियोंने तिनके पापके नाशकी अभावकल्पना युक्ति करके युक्तहै अर्थात् तिनके पापका नाश नहीं होता जेकर तिनके पापका नाश होवे तद तिनके संसर्गको कैसें पाप जनकता होवे अर्थात् तिनके संग करके पाप न होणा चाहिये सो दिखातेहैं चेतनेति कोई चेतनभेदहै तिसके गुणोंकी सामान्यता व्यवहार करणे करके और चेतनमें चली-जातीहै एह स्वभाव करकेही नियतहै इस लोकमें प्रसिद्धहै यह अन्वय क्या मिलना और व्यतिरेक क्या पृथक् होजाणा इनका विधान

येति इच्छित वस्तुका वियोग और अनिच्छित वस्तुकी प्राप्ति तिसते उत्पन्न जो दुःख तिस करके बहुत लोकोंके रुदन करते होयां तादृश दुःखसें रहित बी कोई पुरुष तिस स्थानमें प्राप्तहुवाहै सो तिनकेसाथही रुदनकरताहै और कोई खिन्नचित्तवालाभी अर्थात् शोककरके युक्तभी पुरुषज्ञा नी पुरुषोंके साथस्थित हुवा हुवा सुखकोप्राप्त होताहै उदेति कोई पुरुषविषय भेदमें उदासीनभीहै सो कामियोंके मंडलके साथ विचरता हुवा तिस विषय भेदकी अतिशय करके इच्छा करताहै क्याहै बहुत कथन करणे करके और कहतेहैं जडबी जो शरीरादिहैं तिन विर्षेभी संसृष्ट क्या संगकरके शरीरके अंतर विचरण वाले रोग विशेषोंका संक्रमन क्या एकजगासे दूसरीजगाजा ना देखनेमें आवताहै इस प्रकार गुणविशेष जो अधर्म तिसको अधिकारके संसर्गकों लोकसें

यद्बहुष्विष्टविशेषवियोगानिष्टविशेषप्राप्तिहेतुकदुःखेनरुदत्सुतादृशदुःख हेतुशून्योपि तत्रोपगतस्तैःसहैवरोदिति उद्विग्नमनाअपिज्ञातैर्धीरैः सहा सीनः सुखमुपलभते उदासीनोपि विषयविशेषे तत्कामुकमण्डली सहच रितस्तमेवविषयविशेषं निर्भरेणकामयते किंबहुना जडेष्वपि शरीरादिषु संसृष्टशरीरान्तरसंचारिरोगविशेषाणां संक्रमोदृश्यते इत्थंचसंसर्गस्य लोकतः प्रसिद्धमेव विशेषगुणसंक्रांतिहेतुत्वं गुणविशेषमधर्ममधिकृत्य संसर्गश्चापितैःसहेति प्रभृतिवचनजातेनावयुत्यानूद्यतइत्येव लाघवात् कल्पयितुंयुक्तम् कृतप्रायश्चित्तापापसंसर्गेपि पापजनकत्वस्य विनैवपा पसंक्रांतिं स्वातंत्र्येण पापजनकत्वस्यच तत्तद्वचनाभिप्रायविषयत्वकल्प नायां प्रसिद्धकार्यकारणभावाननुगृहीत पूर्वार्थ प्रतिपादकत्वप्रयुक्तं महदे वगौरवम् अतएव पतितैःसंप्रयुक्तानामिमांशृणुतानिष्कृतिं येयेन पतितेनैषां संसर्गंयातिमानवः १

प्रसिद्धहीहै विशेष गुणकी प्राप्तिका कारण होना अर संसर्गश्चापि इत्यादि वचनके समूह करके लोक प्रसिद्धका अनुवाद करीदाहै लाघवथें एही कल्पना करणेको युक्तहै ॥ और कथन करतेहैं कृतेति कियाहै प्रायश्चित्त जिसनें ऐसा जो अपापी तिसके संगके विषे बी पापके उत्पन्न करणे वाला जो संग तिसको पापसंक्रमसे विना और पाप जनकता स्वातंत्र्यता करके मानोगे अर तिस २ वचनके अभिप्राय विषयकी कल्पना विषें प्रसिद्ध जो कार्य कारण भाव तिसका नहीं ग्रहण विषें जो नवीन अर्थ तिसके प्रतिपादन करणें विषे बहुत गौरवहै इति ॥ इस कारणसेही मनुजीने कहाहै कि पापियोंकेसाथ संगकरणे वालोंके इस प्रायश्चित्तको श्रवण करो क्या इन संसर्गियोंके मध्यमें जो पुरुष जिसपापी करके संगको करताहै

सद्इति सो संगकरणेवाला पुरुष तिस संसर्गकी शुद्धीके वास्ते तिस पापीके ही व्रतकों करे इति श्रीर कथन करतेहैं कि जिसके साथ संगकरे सोसंसर्गी तिसकेही व्रतकों करे एह जाबालजीने तिस २ पापका प्रायश्चित्तही तिस २ संसर्गीकों कहाहै सो सभहमारे कहेहुवे अर्थसेही संगत होताहै (प्रश्न ? नन्विति कियाहै प्रायश्चित्त जिसपुरुषने तिसके संगकोंवी पापसंक्रांतिकी प्राप्ति क्यों न होवे अर्थात् उसकेंभी संग करणे करके पापहोना चाहिये क्योंकि तुम्हारे मत विषे पापके सद्भावथें क्या उस जगा पापके विद्यमानहोणेसें ? उत्तर ? रसायन भेदकें उपयोगको रोग भेदकी संक्रांतिके प्रतिबंधककी न्यांई श्रौर ज्ञानादिकोंको दुःखा दि संक्रांतिके प्रतिबंधककी न्यांई प्रायश्चित्ताचरणको पापसंक्रांतिके प्रति प्रति बंधकत्वकी कल्पनासें अर्थात् सो प्रायश्चित्त पापको दूसरे स्थानमे नहीं जानेदेता ऐसी कल्पना हो

सतस्यैवव्रतंकुर्य्यात्तत्संसर्गविशुद्धयेइतिमनुना ॥ संसर्गीयेनसंसर्गंकुर्य्यां तद्व्रतमाचरेदितिजाबालेनचतत्तत्पापप्रायश्चित्तमेव तत्तत्संसर्गिणउक्तंसं च्छते। ननु। कृतप्रायश्चित्तसंसर्गस्यापि पापसंक्रान्त्युपधायकत्वं कस्मान्न स्यात् भवन्मतेपापस्यसद्भावादितिचेन्न ॥ रसायनविशेषोपयोगस्य रोगविशेषसंक्रांतिप्रतिबंधकत्ववदतिशयितविवेकवत्त्वादेर्दुःखादिसंक्रांतिप्र तिबन्धकत्ववच्च प्रायश्चित्ताचरणस्य पापसंक्रांतिंप्रतिप्रतिबंधकत्वकल्पनात् ननु तत्तत्संक्रांतिंप्रतितस्यतस्यविवेकादेरनुगतानतिप्रसक्तस्यप्रतिबन्धकता वच्छेदकस्यासंभवेनप्रातिस्विकरूपेणैवप्रतिबंधकत्ववक्तव्यं ततश्च प्रकृ तदुरितसंक्रांतिप्रायश्चित्ताचरणयोस्तादृशप्रतिबध्यप्रतिबंधकभावावच्छेद कानाक्रांततयाऽपूर्वएवप्रतिबध्यप्रतिबंधकभावोवचनबलादेवकल्पनीयस्त त्किंगौरवम् कृतप्रायश्चित्ताचरणस्यनिष्पापस्यापितस्यसंसर्गेपापजनक त्वकल्पनायामितिचेन्न ॥

सकताहै नेति ¿ प्रश्न ¿ तिस २ संक्रांतिके प्रति तिस २ ज्ञानादिका अनुगतक्या सर्वत्रही एक जैसी गतिवाला श्रौर अनतिप्रसक्तक्या दोषरहित जोप्रतिबंधकतावच्छेदक तिसके अभा वकरके अर्थात् तिसके न होनेसे एक २ केप्रति एक २ प्रतिबंधक कथन करणे योग्यहै तिस कारणसे प्रसंगमे प्राप्तहुया जो पाप तिसका संक्रमण श्रौर प्रायश्चित्तका आचरण तिनदोनों काजो तैसाहि प्रतिबध्य प्रतिबंधकभाव तिसके धर्म्म विशेष करके अनाक्रांतता करके अर्थात् तैसे अवच्छेदकके नहोणे करके नवीनही एक प्रतिबध्य प्रतिबंधकभाव वचनके बलसेही कल्पना करणे योग्यहै श्रौर कियाहै प्रायश्चित्तका आचरण जिसपुरुषने सो तिसकारणसे ही पापसे रहितहै तिसके संगविषे जो पापकी उत्पत्ति तिसकी कल्पना विषे क्या गौरवता है ¿ उत्तर ¿ जेकर ऐसे कथन करो तब मतकहो

भवेति क्योंकि तुम्हारे मतमें तैसाजो प्रायश्चित्तका आचरण तिसकोपाप नाशकता और तैसाजो प्रायश्चित्तका आचरण तिस करके मिलाहुआ जो नाश तिसके संसर्गविषें पापकी उत्पत्ति एहदो कल्पना आतीहैं अस्मेति अर हमारे मतमें तैसे प्रायश्चित्ताचरणका एकही संक्रांतिका प्रतिबंधकहै इसलाघवको सुंदर कथन करणेसें॥ अर औरभी कुछ कथन करतेहां कियाहै द्विगुण प्रायश्चित्त जिसने इसकारणसे पाप रहितहै तिसके संसर्गको तुमने क्या प्रायश्चित्त कल्पन करनाहै जेकर कथन करो कि जैसा प्रायश्चित्त पापीने कियाहै तैसा तिस ब्रह्मवधादि पापका प्रायश्चित्त तिससंसर्गीको तीन पाद करणा उचितहै एभी न वणसकेगा क्योंकि तैसे पापकरके युक्त जो पापीहै अर्थात् ब्रह्मवधादि पापकर्के युक्त जो पुरुषहै तिसके देहमें संगकरणेके समयमें पापके अभावकर्के तैसे प्रायश्चित्तकी अप्राप्तिसें अर्थात् संसर्ग समेमें वोह पुरुष

भवन्मतेतादृशप्रायश्चित्ताचरणस्यपापनाशकत्वं तादृशप्रायश्चित्ताचरणविशिष्टनाशस्यचसंसर्गिपापजनकत्वमितिकल्पनाद्वयम् अस्माकंतु संक्रांतिप्रतिबंधकत्वमेकमेवतादृशप्रायश्चित्ताचरणस्येतिलाघवस्यसुवक्तव्यत्वात् किंच॥ कृतद्विगुणप्रायश्चित्तनिष्पापसंसर्गिणःकिंप्रायश्चित्तंभवद्भिःकल्प्यतांन तावद्यादृशपापापनोदकंप्रायश्चित्तं तेनाचरितं तस्यब्रह्मवधादेः पापस्योनतुरीयांशम् तादृशपापवैशिष्ट्यस्य तस्यांव्यक्तौ संसर्गकालावच्छेदेनासत्त्वेन तादृशप्रायश्चित्ताप्राप्तेः तत्पापोपलक्षितत्वस्यतादृशप्रायश्चित्तप्रयोजकतावच्छेदकत्वेभूतभविष्यत्कालवृत्तिनोऽमतिपूर्वकस्यापिपापस्यतत्प्रयोजकतावच्छेदकत्वापत्तेः॰ भवन्नयेतदानींतास्मिन्पुरुषे पापाभावेन पतितत्वस्य कथमपिवक्तुमशक्यतया योयेनपतितेनैषामित्यादिशास्त्रीयप्रायश्चित्तविधेरुद्देश्यतावच्छेदकाक्रांतत्वस्यतत्संसर्गिणिकथमपिवक्तुमशक्यत्वात् ॥

शुद्धथा तवतिस पापीके किये हुवे पापका पादोन प्रायश्चित्त कैसे आवेगा जेकर कथनकरो कि तिस ब्रह्मवधादि पाप करके उपलक्षितत्वकों तादृश प्रायश्चित्तकी प्रयोजकताके अवच्छेदककों स्वीकार करोगे ऐसा मतकहो व्यतीत हुवा और आगेकों होनेवाला बुद्धिकरके किया जो पाप तिसकोभी तिससंसर्गी पुरुषकों प्रयोजकताके अवच्छेदककी प्राप्तिसें अर्थात् भूतभविष्यत्पापभी तिसप्रायश्चित्तमें प्रयोजकहोंणे चाहिये॥ भवेति तुमारे मतमें तब तिस पुरुषमे पापके अभावकरके अरपापकी बहुत कष्ट करकेभी न कथन करणे योग्यता करके अर योयेनपतितेनैषां इत्यादि शास्त्रमें होंने वाली जो प्रायश्चित्त विधीहै तिसका जो उद्देश्यतावच्छेदकत्व तिसकी आक्रांतिकों तिससंसर्गीके विषे बहुत कष्टकरके भी कथन करणेकों न समर्थहोनेसें अर्थात् पाप करणे वालेमें जब पाप न हुवा तो तिसके संसर्गीमे कैसे कथन किया जावेगा

ततइतितिस कारणथें नयाहि प्रायश्चित्त अनुक्तन्यायककेंक्या नहीकथनकियाजो न्याय तिसकरके अर्थात् किसी नवीन रीतीकरके कोई कल्पना करणेयोग्यहै तब लौकिक और शास्त्रीयव्यवहार काबहुत विरोध आवेगा (प्रश्न) हमकहतेहैं कि प्रायश्चित्त करके पापका नाश नहो अर्थात् पापरहे तदभी तुम्हारे मतमे प्रायश्चित्ताचरणको और पुरुषकी संक्रांतिके प्रतिबंधककीन्याई अर्थात् और पुरुषके प्रति जो पापसंक्रमण है तिसके प्रति प्रायश्चित्ताचरण प्रतिबंधकहै तिस तरां हमनें नरक का प्रतिबंधक कल्पित करीदाहै अर तिस पापका संक्रम वया प्राप्ति और संसर्गी पुरुषमें अंगीकार करीदाहै एह संपूर्ण दोषसें रहितहै (उत्तर) चेदिति हेवादिन् तिसका संसर्ग क्यों वर्जने योग्यहै जेकर कहैं कि पाप कारण करके वर्जनें योग्यहै तब कहतेहैं कि पापको किस

ततश्चापूर्वमेव प्रायश्चित्तमनुक्तन्यायेन किमपिकल्प्यम् तथाच महान् लौकिक शास्त्रीयव्यवहारव्याकोपः।ननु।अस्तु प्रायश्चित्तेनपापनाशाभाव स्तथापिभवन्नये प्रायश्चित्ताचरणस्यपुरुषांतरसंक्रांतिप्रतिबन्धकत्ववदस्मा भिर्नरकंप्रत्येवप्रतिबंधकत्वंकल्प्यते स्वीक्रियतेच तस्यसंसर्गिणिपुरुषांतरे संक्रमइतिसर्वमवदातमिति चेत् हन्तभोस्तत्संसर्गस्यकिमितिवर्जनीयत्वं स्यात् पापहेतुत्वेनेतिचेत् पापस्यापिकेनहेतुनावर्जनीयत्वं यतस्तदनर्थं प्रसोष्यतीतिचेन्नहि मूलएव प्रायश्चित्ताचरणेनपण्डापूर्वतांप्राप्तस्य तस्यान्यत्रापि तादृशस्यैवसंक्रांतस्य नरकोत्पादकतायाअसंभवात् अ तोऽन्यदेवस्वतंत्रंकिमपिदुरितमुत्पद्यतइतिवक्तव्यम् ततश्चपुनरायातः प्र दर्शितदूषणगणआसइतिनाकिंचिदेतत् ॥ अपिच यः कामतोमहापापं नरः कुर्य्यात्कथंचन नतस्यनिष्कृतिर्दृष्टाभृग्वग्निपतनादृते इत्यनेन कामतः कृतस्यमहापापस्य निष्कृतिः प्राणांतप्रायश्चित्तेतरेणप्रायश्चित्तेननसं भवतीतिस्पष्टंप्रतिपाद्यते ॥

हेतुसें वर्जनीयताहै यदि ? यतस्तदनर्थंप्रसोष्यति ? सोपाप अनर्थको करताहै इस वाक्य करके वर्जने योग्यहै तद मत कहो क्योंकि मूलमेंही कहाहै प्रायश्चित्तके करणे करके बुद्धिरूप अपूर्वताकों प्राप्तहोरहा जो पाप तिसकों और स्थानमें जाणेको भी तैसेही रहणा संभावित-है तिसथें नरक प्राप्तिका असंभव होणेथें इसथें एह कहो औरही कोई स्वतंत्र पाप उत्पन्न हो-वेगा तब पूर्व दिखायाजो दूषण समूहथा सो प्राप्तहुवा यह अच्छानहीं ॥ अब और कुछ कथन करतेहैं यइति जोपुरुष कामना करके महापाप करे तिसकी निष्कृति क्या शुद्धि भृग्वग्निप-तनसे विना क्या हिमालय समीप विषे मरणके अर्थ गिडनेके विना नहींदेखी अर्थात् मरणात प्रायश्चित्त करके ही तिसकी शुद्धिहै और प्रायश्चित्त करके नहीं होती एह प्रकट प्रतिपादन कियाहै

निष्कतिरिति निष्कृति पदकरके इस स्थानमें पापकानाश ग्रहण करणा क्योंकि औरके असंभव. होनेयें तिसकारणसे द्विगुण प्रायश्चित्तकों तिसके नाशविषें कल्पनमें (नतस्येत्यादि) जो विरो. ध सोप्रकटही वना रहाहे जेकर ऐसे कथन करो कि(भृग्वग्निपतन) इस पद करके द्विगुण प्राय श्चित्तभी लक्षित होताहै तब तिस पापके नाशकर्के संभावना करीदे जो संपूर्ण प्रायश्चित्तहैं सोभी तुल्य न्यायसे उपलक्षण किये जायेंगे तब फेर तिसमें त्यागणे योग्य क्या शेषरहा अर्थात् त्याग णे वाला कोई प्रायश्चित्तका अंश न रहा जिस अंश कर्के (नतस्येत्यादि) पदकी सार्थक्यता होवे तुमारे मतमें भी विरोध वनाही रहताहै इसमें कहतेहां क्या हमारे मतमें द्विगुणजो प्राय. श्चित्ताचरणहै सो प्रसंगमें पापके संक्रमका जो नाश तिसका प्रयोजकहै अर्थात् पापके संक्र. मको दूर करताहै क्या दूसरीजगा संसर्गसे पापकों नहीं जाणेदेता अर पापके नाशका प्रयो.

निष्कृतिश्चात्रनाशःअन्यस्यासंभवात् ततश्च द्विगुणप्रायश्चित्तस्य तन्नाश कत्वकल्पनेन तस्येत्यादिविरोधःस्पष्टएव ॥ अथोच्येत भृग्वग्निपतनपदेन द्विगुणंप्रायश्चित्तमप्युपलक्ष्यत इति तर्हितत्पापनाशकत्वेन संभाव्यमाना निसर्वाण्येव तुल्यन्यायादुपलक्षणीयानिस्युरिति किमवशिष्यते तत्रव्युद सनीयं येनन्नतस्येत्यादेःसार्थक्यंस्यात् अस्माकं द्विगुणप्रायश्चित्ताचर णं प्रकृते पापसंक्रमाभावमात्रप्रयोजकं नतु पापनाशप्रयोजकमिति न त द्विरोधगंधोपि ॥ एतेनाऽव्यवहार्य्यइतिच्छेदे वचनादिहेत्यत्रवचनं वालघ्नां श्चेत्यादि मानवमुपलभ्यते व्यवहार्य्यइतिच्छेदेतु न किमपीतिपरास्तम् व्यवहार्य्यतायांविहितंयदकामानांकामात्तद्द्विगुणंभवेदित्यस्यैव वचनस्य सद्भावात् ।ननु इदंपापसामान्यविषयकंनतु महापापान्यत्रप्रातिस्विकरूपे णानिर्दिश्यंतेइतिचेद्वालघ्नांश्चेत्यत्रापि क्व निर्दिश्यंते प्रत्युताऽत्रसामान्यध र्मपुरस्कारेणनिर्देशाद्वाच्यवृत्त्यैव तानि प्रतिपाद्यंते

जक नहीं इस कारणसें तिसमें विरोधका गंधभी नहीं अर्थात् बिरोधका नामभी नहीं इस कर्के (अव्यवहार्यः) ऐसे पदच्छेदमें (वचनादिह) इसमे वचन ?बालघ्नांश्चेति? इत्या दि मनुका बचन देखींदाहै अर व्यवहार्य्यः ऐसे पदच्छेदमेंसे कुछभी नहीं एह कहने वालोंका मत परास्तहुवा क्या अनादृत हुवा अर ?व्यवहार्य्यता ? इस पदमे !विहितंय दकामानां इस वचनके सद्भावहोणेसे अर्थात् व्यवहार्य्यतामे एह वचन प्रमाणहै ; प्रश्न ; क्या विहितंयदकामानां एहजो वाक्यहै सो संपूर्ण पापोंके प्रतिहै कोईइस वचनमे एक २ कर्के महापाप नहीं दिखाईदे जेकर एह कहोतो हमकहतेहां कि !बालघ्नान्? इस विषे भी महापाप किस्ये दिखाएहै सगो विहितं यद कामानां इस वचनमे सामान्यधर्मको मुख्य जाण करके दिखाणेसे अक्षरार्थ करकेही सो महापाप प्रतिपादन करीदेहैं

बालेति अर बालघ्नान् इस वचनमें बी किसीके भी महापापके न दिखाणे करके किसीक प्रकारसे उपलक्षण भाव करके महापापपर ल्याउोगे तो परम जघन्य वृत्तिकर्के क्या गौणीवृत्तिकर्के क्या अत्यंत न्यूनवृत्तिकरके तुम्हारे मतमें एह वाक्य विप्रकृष्टहै अर्थात् एह वचन अत्यंत दूर है अर कामतोद्विगुणंप्रोक्तं पूर्वेषुचयदुच्यते एह केशव वैजयंती नाम ग्रंथमें नंदपंडितने लिखा है जो व्यासजीका वचन तिसकरके महापाप परायण पूर्वपद लब्भीदाहै इसका अर्थ एहहै कि कामसे दूणा प्रायश्चित्तहै जो पहिले पापोंविषे कहाहै सो इनका अभिप्रायहै कि प्रथम इसस्थानमें महापापहै इससे विहितं यदकामानां एह वचन महापापपर हुवा किंचेति कुछ औरभी कहतेहैं स्मृति घटक जो एह वचनहै इस जगा वचनात् इसका अर्थ वेदवचनात् एहीहै कोई स्मृति वचनात् ऐसा नहीं क्योंकि स्मृतियोंको वेदमूलकत्व कर्के ही

बालघ्नांश्चेत्यत्रतुकस्यापिमहापापस्यानिर्देशेनकथंचिदुपलक्षणभावेनपरमजघन्ययात्त्वेत्यतीवविप्रकृष्टंवचनमिदंभवन्नये कामतोद्विगुणंप्रोक्तंपूर्वेषुचयदुच्यते इतिकेशववैजयंत्यांनंदपंडितधृतव्यासवचनेनमहापापपरंपूर्वपदमुपलभ्यतेपि किंच स्मृतिघटकस्यास्यवचनादित्यस्य वेदवचनादित्येवार्थोनतुस्मृतिवचनादिति स्मृतीनांवेदमूलकत्वेनैवप्रामाण्यात् ततश्च वचनोपलंभोपिनातीवात्रोपयुज्यते ॥ वस्तुतस्तु ॥ बालघ्नांश्चकृतघ्नांश्चेत्यादिवचनमकामतः कामतोवाकृतैतच्चतुष्टयान्यतमपापकेनसहसंसर्गं प्रतिषेधतीत्येवयुक्तम् कामतइत्यनुपक्रमात् एनस्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थंकिंचित्सहाचरेत् कृतनिर्णेजनांश्चैवनजुगुप्सेतकर्हिचिदितिपापिसामान्यस्यैवोपक्रमात्

प्रामाण्यहोणेसे तिसथे ऐसा प्रतीत हुवा कि इस वचनकाभी लभणा कोई वहुत उपयोगी क्या बडा सहायक नहींहै विचार करके देखिये तो बालघ्नांश्च इत्यादि जो वचनहै सो अकामसे अथवा कामसे किये हुवे जो एह चार पाप अर्थात् बालघ्न १ कृतघ्न २ स्त्रीघ्न ३ सुहृद्घ्न ४ इनमेंसे कोई एक पापीके साथभी संसर्गको निषेध करताहै इसका एही अर्थ यथार्थहै कामत इसका प्रकरण नहीं होंणेसे किंतु एनस्विभिरिति जिनोंने प्रायश्चित्त न किया तिनों पापियोंके साथ कुछभी अर्थ न करे अर्थात् कोई व्यवहारभी न करे और कृतनिर्णेजकान् क्या जिनोंने प्रायश्चित्त कियाहै तिनके साथ न जुगुप्सेत क्या चित्तमें कभीभी ग्लानि न करे एहजो पापीका सामान्य संसर्गहै इसीके निषेधका प्रकरण होणेसे

विष्णिवति विष्णुस्मृतिके भाष्यविषे और केशव वैजयंती नाम ग्रंथविषे भी पूर्वोक्त चार पापियोंके विषयमेंही इस करके वाचनिक संसर्गका प्रतिषेधहै एही व्यवस्था करणेसे एह जानने योग्यहै यदिति जो कथनकरीदाहै कि मिताक्षराके व्याख्यानाविषें कामत इसस्थानमे नञ् जो निषेध वाचक अव्ययहै तिसके अध्याहारकरके किया हुवा गौरवहै इसमें हम कहतेहैं कि इसमें नञ् के अध्याहारकी शंकाभी नहींहै (तथाहि) सो दिखातेहैं जो निषेधहैं सो अपनी सफलताके वास्ते निषेध्यके प्राप्तिकी इच्छा करतेहैं सो प्राप्ति धर्म्माधर्म्मकी है तिनको अलौकिक होनेसे प्रसंग बिषे केवल शास्त्रही तिसके जनाने वालाहै अर्थात् शास्त्रकोही तिसके जीवनकी

विष्णुस्मृतिभाष्ये केशववैजयंत्यामपि पापचतुष्टयमात्रविषयकोयंवाचनिकः संसर्गप्रतिषेधइत्येवव्यवस्थापनाच्चेतिबोध्यम् ॥ यदुच्यते मिताक्षराकारव्याख्याने ॥ कामतइत्यत्र नञध्याहारप्रयुक्तं गौरवमिति तत्रत्युच्यते नात्रनञोऽध्याहारस्य शंकापिसंभवमर्हति तथाहि प्रतिषेधाहिस्वसाफल्यायावश्यंप्रतिषेध्यप्राप्तिमपेक्षंते प्राप्तिश्च धर्माधर्मयोरलौकिकत्वात्प्रकृते शास्त्रैकप्रमाणता वाच्या शास्त्रंतु प्रायश्चित्तैरपैत्येनइतिश्लोकार्धमज्ञानकृतत्वेनैव दुरितं विषयीकरोति न ज्ञानकृतम् इत्थंच प्रकृतप्रतिषेध्यस्य प्रापकप्रमाणोद्देश्यतावच्छेदकस्पर्शस्याप्यसंभवे न केन हेतुना भवत्क गौरवोद्भावनमात्रप्रयोजनकं नञध्याहारं मिताक्षराकारउररीकुर्य्यात् प्रत्युत भवद्भिरेव कामतइति कामतःकृतमपीत्यर्थकतया व्याचक्षाणैरपिशब्दस्याध्याहारः पूर्ववाक्यघटकस्य प्रायश्चित्तैरपैत्येनइत्यस्याध्याहारविशेषात्माऽनुषंगः

कारणताहै और सो शास्त्र प्रायश्चित्तैः इत्यादि अर्धश्लोकहै सो अज्ञान करके किये हुवे पापको विषय करताहै ज्ञानथें किये हुवेको नहीं इस प्रकार प्रसंग विषे प्रतिषेध्यके योग्यकी प्राप्ति करण वाले प्रमाणका स्पर्शभी नहींहै तो किस हेतु करकें जिसको तुमलोक गौरव तर्कमात्र प्रयोजन वाले नञ्के अध्याहारको कहतेहो तिसको मिताक्षरा कार अंगीकारकरे सगों तुसानें कामतः इस जगा ? कामतः कृतमपि ? इस अर्थके करण वालोंने अपिशब्दका अध्याहार कियाहै और जब कृतमपि असा कहा तब पूर्व वाक्य जोहै प्रायश्चित्तैरपैत्येन इत्यादि इसकाभी अध्याहार विशेष होवेगा ॥

सो मिताक्षराकारका व्याख्यानयहहै (प्रायश्चित्तैर्वक्ष्यमाणैरज्ञानाद्यदेनःपापंकृतंतदपैतिगच्छति नकामतः कृतम् किंतु तत्र प्रायश्चित्त विधानायकवचनबलादिहलोके व्यवहार्य्योजायते) पूर्वोक्ति और पहिलेवाक्यमें उद्देश्यतावच्छेदक अर्थात् प्रथमस्वीकृतकीइच्छाकाविषय अज्ञानकृतत्व तिसकी अपेक्षा करके कामतः कृतत्वको अत्यंत विरोधी होणे करके अर्थात् कामतः कृतत्व करके उद्देश्यताके भेदसें विधेयका भेद ३ और वाक्यभेद ४ और व्यवहार्य्य इस जगानञ्का प्रश्लेष ५ इत्यादि मिताक्षराके अनुसारियोंने उठायाजो तुम्हारे व्याख्यान विषे गौरवका गण सो किस प्रकार प्रत्याख्यात होवे अर्थात् हटाया जावेगा इसमें कुछ औरभी कहतेहैं जेकर कामकृत पापका भी प्रायश्चित्त करके नाशहोताहै तद योगीश्वरजीने यद ज्ञानकृतंभवेत् इसको न कहकर सामान्यसेंही दोनोंप्रकारका क्या कामकृत और अकामकृतका संग्रहकरणाथा सो किसवास्ते मुनियाज्ञवल्क्यजी दोपक्ष करके निर्देश करते भये ऐसे पूछेहुवे क्या कहोंगे

पूर्ववाक्यीयोद्देश्यतावच्छेदकाज्ञानकृतत्वापेक्षया कामतः कृतत्वस्यात्यंत विरुद्धत्वेनतदवच्छिन्नोद्देश्यताभेदाद्विधेयभेदो अथच वाक्यभेदोव्यव हार्य्य इत्यत्र नञः प्रश्लेष इत्यादिर्मिताक्षरानुसारिभिरुद्भाव्यमानोभवद्व्या ख्याने गौरवगणः कथं प्रत्याख्यायताम् कामतः कृतस्यापिप्रायश्चित्तेन नाशे योगीश्वरेण यदज्ञानकृतंभवेदित्यनुक्त्वैव सामान्यरूपेणैवोभयंसंग्रा ह्यमासीत्तत् किमर्थं मुनिःकोटिद्वयपुरस्कारेणनिरदिशदिति पर्यनुयुक्तैश्च किमुच्यताम् अस्माभिस्तु नतस्यनिष्कृतिरित्याद्युदाहृतवचनानुरोधेन प्रकृतवचनमज्ञानकृतस्य पापस्यनाशः प्रायश्चित्ताचरणेन जीवच्छरीरा विरोधेन भवति कामतः कृतेतु इहव्यवहार्य्यतावचनाद्भवतीतिव्याख्यायत इतिसकलमकलंकम् यदपि महापातकजैर्घोरैरित्यादिपूर्ववचनेनानाचरि तप्रायश्चित्तानामेव नरकप्राप्तिर्बोध्यते कामकृते कृतप्रायश्चित्तस्यापि नरक स्वीकारे तद्विरोधः स्पष्टएवेति ॥

ऐसाविचारकरणा चाहिये ॐअब अपनामतकहतेहैं अस्माभिरिति हमने(नतस्यनिष्कृति(रित्यादि) कथित वचने की अनुसारतासें प्रकृत वचनक्या प्रायश्चित्तैःइत्यादिजोवचनहै सो अज्ञानकृतपापका नाश प्रायश्चित्तके करणे करके जीवते शरीरके अविरोधकरके होताहै अर्थात् प्रायश्चित्तके कियेहोये सुख पूर्वक वोह रहे और कामकृत पापके होयां प्रायश्चित्तकरकेलोकोंकेसाथ व्यवहार मात्रही वचनसे होताहै कोईपापनाश नहींहोता ऐसा व्याख्यान करीदाहै इसमे सभ कलंकहीनहै ॥ अब और विचार कर्तेहैं यदपि(महापातकजैर्घोरैर्नरकान्प्राप्यदारुणान्)इत्यादि वचन करके नहींकिया प्रायश्चित्त जिनोंने तिनकोही नरक प्राप्तिकहीहै और कामकृत पापविषे कृत प्रायश्चित्तकोंभी अर्थात् जिसने प्रायश्चित्तकियाभीहै तिसकों नरकस्वीकार कीतेहोयां तिसके साथ विरोध स्पष्टही होवेगा

तत्रेति तिसमें एह विचारहै कि जो पापीहैं और प्रायश्चित्तनहीं करचुके सो नरककोजातेहैं और प्रायश्चित्त करणेवाले नहीं जाते इस जगा प्रायश्चित्त पदकर्के जोंकोई जिस किस प्रायश्चित्त को करे तदशुद्ध होताहै ऐसा नही कह सकतेहैं कि इसके स्वीकार कीतेयां होयां ब्राह्मण मारणवाले को पलांडुभक्षणका प्रायश्चित्त कराणेसे भी नरक न होणाचाहिये किंतु क्याहै कि जैसा पाप नाशकत्व करके जों प्रायश्चित्त कहाहै तिसका आचरण न होवे तब तिस पापसें प्रेरितहुवा नरकहोताहै ऐसी व्याख्या करणी चाहियें इस पापका नाशक क्या नाशकरणे वाला भृग्वग्निपतन क्या बदरिकाश्रमके समीप हिमालय बिषे गिडना और तिसीस्थान अग्निबिषे गिडना एह मरणांत प्रायश्चित्तहै सो(नतस्य निष्कृतिः) इस वचन करके जणायाहै तांते तिसके नाशकत्वकरके नही किया केवल इसजगतमे व्यवहारमात्रका सहायक जो दूणा प्रायश्चित्त तिसके होयां नरक प्रातिकी व्यवस्था मैं कौणसा विरोधहै अर्थात् कोई नहीं जिस करके तादृश प्रायश्चित्त तोह नहींहै प्रत्युतेति सगों तिसपापका नहीं नाशक जो द्विगुण प्रायश्चि

तत्रेदंविचार्य्यताम् दुरितैरन्विताअकृतप्रायश्चित्तानरकंयान्तीत्यत्र प्रायश्चित्तपदेन यत् किमपि प्रायश्चित्तं विवक्षितुमशक्यम् तथासतिब्रह्मघ्नः कृतपलांडुभक्षणप्रायश्चित्तस्य नरकबोधकत्वानुपपत्तेः किंतु यादृशपापनाशकत्वेन यत्प्रायश्चित्तं विहितं तदाचरणकर्तृत्वाभाववतस्तत्पापप्रयोज्योनरकोभवतीतिव्याख्येयम् प्रकृत पापस्य तु भृग्वग्निपतनमेवनाशकमितिनतस्यनिष्कृतिरित्यादिना बोधितमिति तन्नाशकत्वेनाविहितेकेवलमैहिकव्यवहारमात्रोपयोगिनि द्विगुणप्रायश्चित्तेकृतेपि नरकप्राप्तौव्यवस्थाप्यमानायांकस्तद्विरोधः प्रत्युत तत्पापानाशकद्विगुणप्रायश्चित्तमाचरितवतोनरकाभावं कल्पयतांभवतामेतद्विरोधः किंचेदं वाक्यं कृतदुरिताकृतप्रायश्चित्तानुद्दिश्यनरकप्राप्तिंविधत्ते तत्रोद्देश्यतावच्छेदकावच्छेदेन विधेयान्वयस्वीकारेपितादृशोद्देश्यवृत्तिर्विधेयभूतनरकप्राप्त्यभावएवव्युदसनीयोनतूद्देश्यतावच्छेदकाभावसमानाधिकरणंविधेयमपि तस्यवाच्यमर्य्यादयाऽलाभात्

त तिसकेकरणवालेको जो नरक नहींहै ऐसी कल्पना करण वाले तुमकोंही तिसके साथ विरोध प्राप्तभया ॥ अब और विचारहै किंचेति (महापातकजैर्घोरैः) एह वाक्य कियाहै पाप जिन्होंने और पीछे प्रायश्चित्त नहीं किया तिनोंका उद्देश करके अर्थात् तिनके नाम पर नरक प्रातिको कहताहै सो तिसबिषे उद्देश्यता जो कृतदुरित अकृत प्रायश्चित्तत्व है बिसकें अवच्छेदककरके क्या जिस २ स्थान एह पूर्वोक्त होवेगा उसी स्थान नरकभी होवेगा इस अन्वयके स्वीकार कीते होयांभी सो जोहै कृतपाप अकृत प्रायश्चित्त तिस बिषे नरक प्रातिका अभाव दूर करणाहै अर्थात् नरकस्थापन करणाहै और उद्देश्यतावच्छेदकहै कृतपाप अकृतप्रायश्चित्तत्व सो जिस जगा नहींहै अर्थात् कृतपाप कृत प्रायश्चित्तत्वहै तिस जगा विधेयक्या नरक नहींहै ऐसा कहना उचित नहीं क्योंकि तिस अर्थका वाच्यमर्य्यादाकर्के नहीं लाभ होणेसे

किंतु सर्गो(नतस्य निष्कृति)इत्यादि वचनके साथ विरोध आवेगा इसथें तुल्यफलका बाधाहीहै- एह एक २ पदमें कहचुकेहैं अकामकृत पापकी जगा प्रायश्चित्तसे पापकियां पूर्वोक्त दोनों- शक्तियां दूरहोतियांहैं और कामकृतके स्थलबिषें तैसें द्विगुण प्रायश्चित्तसे एकही दूरहोतीहै तुल्य फल कैसेहोवे ❀ बिषयांतर दिखाकरके खंडन करतेहैं यत्त्विति जोव्यवहार्य्य अर्थविषे ब्रह्ममीमांसा भाष्यका विरोध कैयोंने दिखायाहै सो वहुतशीघ्रतासेहै अर्थात् यथार्थ नहीं सो कथन करीदा है इत्थंहि ऐसाहै वहिस्तू इत्यादि सूत्रविषें श्रीमदाचार्य्यजीकाभाष्य तिस भाष्यको कहतेहैं यदीति जद ऊर्ध्वरेताओंकी अर्थात् संन्यासियोंकी अपणें आश्रमसे प्रच्युति होवे वा उपपातक होवे तद दोनों प्रकारसें शिष्टोंने सो बाहर करणे चाहिये (श्लोक आरूढइति) नैष्ठिक धर्म्मजो संन्यासहै तिसको आरूढ होकर फेर तिससें जोहटजावे तिसके प्रायश्चित्तकों मैं नहीं- देखता जिसकरके सो शुद्ध होवे अर्थात् तिसका कोई प्रायश्चित्त नहीं एह स्मृतिकारकथन कर

प्रत्युत नतस्यनिष्कृतिरित्यादिविरोधाद्वाधितमेवेत्यनुपदमेवोपपादितम् यत्तु❀ व्यवहार्य्यत्वे ब्रह्ममीमांसाभाष्य विरोधोद्भावनं तद्भ्रमसात् इत्थंहि वहिस्तूभयथापिस्मृते राचाराच्चेतिसूत्रे श्री ६ मदाचार्य्यभाष्यम् यद्यूर्ध्व रेतसां स्वाश्रमेभ्यः प्रच्यवनंमहापातकं यदिवोपपातकमुभयथापि शिष्टै स्तेवहिष्कर्त्तव्याः आरूढोनैष्ठिकंधर्म्मं यस्तुप्रच्यवतेपुनः प्रायश्चित्तंनप श्यामि येनशुध्येत्सआत्महाइति १ आरूढपतितंविप्रं मंडलाच्चविनिःसृतंउ द्वद्धकृमिदष्टंचस्पृष्ट्वाचांद्रायणंचरेदितिच २ एवमादिनिंदातिशयस्मृतिभ्यः शिष्टाचाराच्च नहि यज्ञाध्ययनविवाहादीनितैःसहाचरंतिशिष्टा इति अत्र तेतैरित्याभ्यामूर्ध्वरेतसएवप्रतिपाद्यंतेइति स्पष्टमेव उपक्रमाच्च इत्थंचैत त्संदर्भगतभाष्यग्रंथीयेनकेनाप्यंशेन सार्धं मिताक्षराग्रंथस्य नविरोध गंधसंभावनापीति केयंविभीषिका पुराणप्रथितसाक्षाद्भगवदवतारश्रीम दाचार्य्यभाष्यविरोधारोपरूपा

ताहै (और स्मृतिवचनहै) आरूढेति आरूढहोकर पतित हुवा जो ब्राह्मणहै और मंडलसें क्या अपणे जातिके समूहसें जो निकला होवे अथवा मंडल नाम १०० योजन देशकाहै तिस से किसे दूषणथें निकला होवे और फांसी लगा होवे और कीडे करके दष्ट होवे इसको स्पर्श करके चांद्रायण व्रतकरे इत्यादि निंदा करण वालियां स्मृतियोंसें और शिष्टाचारसेभी तिन पूर्वोक्तोंके साथ यज्ञाध्ययन बिवाहादि सत्पुरुष नहीं करते इस भाष्यविषें(ते)(तैः) इनदोनों पदों करके ऊर्ध्वरेता पूर्वोक्त संन्यासीही कहीदेहैं एह बात स्पष्टहै और प्रकरणभी संन्यासियोंका हीहै इससें यह प्रतीत हुआकि इस पूर्वोक्त भाष्यबिषें एहीदो (ते तैः)ग्रंथीहैंनसो उनमेंसें किसे अंशके साथ भी मिताक्षराका विरोधनहीं क्योंकि एहसंन्यासि परहै और वोह कामकृत महापापी कोई होवे उस परहै सो मिताक्षरा साथ विरोध गंधकी संभावना भीनहीं इस करके कौन भयहै जो पुराणों विषें प्रसिद्ध साक्षात् भगवान्का अवतार श्रीमदाचार्य्यतिनके साथ विरोध रूप होवे

और तैसे शाब्दबोध विखे तिस वाक्यकी व्युत्पात्तिके अभावहोणेसे और प्रकृत वाक्य जोहैकाम तोव्यवहार्य्यस्तुइसके अर्थके बनानेवाला जो अर्थ तिसकी शत्रुरूपता कर्के जिहोंनेंप्रायश्चित्ताकि याहै तिन्हो बिषे नरकके अभावका आक्षेपक्यानरकहोणाकिसी बाधकक्केनहोणेसे पाक्षिकहै क्या किसी स्थानमेंहै और किसी स्थानमें नहिंहै सो प्रसंग बिषे बाधकक्केहोयां किस प्रकार अवका शकों प्राप्तहोवे अर्थात् इसमे विकल्प नहीं?दृष्टांत?नहीति जैसे अपक्क आम्रफल खट्टाही होताहै इस वचनके कथनकोंतैयांहोयां और पक्काहुवा खट्टानहींहै ऐसानहीं कहाजाताहै सो और जगा प्रायश्चित्तवाला नरकनहींजाता और कामनाके स्थान मरणांत प्रायश्चित्तके विनानरकको प्राप्तहोता है ❀ अब और विचार करतेहैं यद्यपि भृग्वग्नि विषें पडना और द्विगुण प्रायश्चित्त करणाइनदो नोंका अव्यवहार्य्यरूप एकही फलहै इसके अनुरोधसे व्यवस्था करणेको इच्छा करो तो सोभी

तादृशबोधेतद्वाक्यस्यव्युत्पत्तिविरहाच्च प्रकृतवाक्यार्थघटकार्थप्रतिद्वंद्विभावे नकृतप्रायश्चित्तेषुनरकाभावाक्षेपोऽपिबाधकविरहापेक्षत्वात्पाक्षिक इतिप्र कृतेसतिवाधकेकथमवकाशंलभेत नह्यपक्कोरसालोऽम्लोभवत्येवेत्युक्तेपक्को ऽम्लोनैवभवतीतिशक्यतेप्रतिपत्तुमिति यदपिभृग्वाग्निपतनाद्विगुणप्रायश्चि त्तयोः समानफलकत्वानुरोधेनाव्यवहार्य्यत्वंव्यवस्थापयितुमिष्यतेतदपिन समीचीनं व्रीहिभिर्यवैर्वेत्यादौहिबिभिन्नफलकत्वकल्पनेव्रीहियागेनस्वर्गभा वयेद्यवयागेन प्रजांभावयेदित्यादिशाब्दबोधेसकृत्श्रुतेनयजत्युत्तरलिङा तादृशभावनाद्वय बोधानुपपत्त्यावाक्यभेदापत्तिरितिसमानफलकत्वमावश्य कम् परं यत्रहवनीयद्रव्यप्रतिपादकानिनानैववाक्यानितत्रविभिन्नफलकत्वे कादोषःसमानफलकत्वे कावा वाचोयुक्तिः यथादध्नेंद्रियकामस्य आज्येनजु हुयात्तेजस्कामस्येत्यादौ इत्थंच प्रकृते तयोः प्रायश्चित्तयोः समा नवाक्यप्रतिपादितत्वाभावेन समानफलकत्वं नावश्यकम् ॥

अच्छोनहीं व्रीहीति व्रीहि करकेक्या धान्योंकरके अथवा यवों करके यज्ञकरे इस वाक्यमे पृथक् २ फल कल्पना होवे व्रीहि याग कर्के स्वर्गकी भावना और यवयाग कर्के पुत्रकी भावनाकरें इस शाब्दबोध विषें एक वार श्रवण कराया जो है यज धातुके उत्तर लिङ् लकार तिस कर्के तैसी भा वना दोके बोधकी अनुपपत्ति कर्के वाक्य भेद दोष होवेगा इससे समान फलकत्व क्या एकही फलकी कल्पना अवश्य कर्के हुई परंतु जिस जगा हवनीय द्रव्यके कहने वाले बहुत वाक्य हो वें उस जगा भिन्न २ फल माननेंमें कौन दोषहै और समानफलकत्व विषें कौनसी वाणीकी यु क्तिहै जैसे दधी कर्के इंद्रिय कामना वालेका और आज्य करके तेजकी कामना वाले का हवन होवे इत्यादि स्थलविषें अब कहतेहैंकि इसी तरां प्रकृतविषे क्या कामाकाम कृत पाप के प्रायश्चि त्त विषें तिन दोनों प्रायश्चित्तोंको तुल्य वाक्य कर्के प्रति पादनके नहोणेसे एकही फल नहींहोसकता

(प्रश्न) अथेति वाचस्पति और कल्पतरु के विरोधसें मिताक्षराको अप्रामाण्य आवेगा जिससे मिताक्षरामें अर्थ है कि कामकृत पापनहीं निवृत्त होता व्यवहार्य्यवाहि होतीहै और इनके मत विषे कामकृत भी पाप प्रायश्चित्तसें दूरहोताहै ? उत्तर ! अब इसमें हमकहतेहैंकि मिताक्षराके विरोधसे वाचस्पति और कल्पतरुको अप्रामाण्य क्यों नहीं होवे तुल्य युक्तिहै और इनको अप्रमाणताविषेभी एक युक्तिहै कि एहदोनो ब्रह्मविचारके लिये प्रवृत्तहुवेथे सो तिस अंशमें क्या ब्रह्मके निरूपणमें उनका उत्कर्षहो परंतु जिसमें मिताक्षराकार प्रवृत्त होएहैं सो धर्म्मशास्त्रहै और एही प्रस्तुतहै क्या प्रसंगमै है इसमें मिताक्षराकारको प्रामाण्य और तिनको अप्रामाण्य उचितहै धर्म्म निरूपणके उद्देशकरके प्रवृत्तको प्राप्ततमहोणेसें क्या उनसे श्रेष्ठ होणेथें इसमें भी

अथ वाचस्पतिकल्पतरु विरोधान्मिताक्षरायाश्चेदप्रामाण्यं तर्हि मिताक्षरा विरोधाद्वाचस्पतिकल्पतर्वोरेवाऽप्रामाण्यंकस्मान्नस्यात् युक्तंतुतयोरेवाऽप्रामाण्यम् तयोर्ब्रह्मविचारार्थप्रवृत्तयोस्तदंशे आप्ततमत्वेपि प्रकृतविषयेतद्ग्रंथस्यप्रासंगिकत्वान्मिताक्षराकारस्यतु धर्मविचारमात्रोद्देशेनप्रवृत्तस्यैवाप्ततमत्वात् यत्परःशब्दःसशब्दार्थइतिन्यायात् ॥ अथमिताक्षराग्रंथएकस्तौतुद्वावितिसंख्याधिक्यप्रयुक्तं प्राबल्यमितिचेद्धेतुविधयायुक्तत्वव्यवस्थापने संख्याधिक्यंकेनप्रकारेणोपयुज्यताम् संख्याधिक्ये एवचेत्परितोषस्तर्हिदृश्यंतां नृसिंहप्रसादमदनरत्नादयः परमप्राचीनानिबंधाः ॥

युक्ति कहतेहैं यदिति जिसपर शब्दहै वोही शब्दका अर्थहै इस न्यायसे इहां धर्म्मपर शब्दहै ब्रह्मपर नहि सो धर्म्मही इसका अर्थहै ? प्रश्न ? मिताक्षरा ग्रंथ एकहै और वोहदोहैं अधिक संख्यावाला प्रवल होणाचाहिये ? उत्तर; ऐसाकहो तो कहतेहां जो हेतु विधिकरके व्यवस्थामे आवे सोई बलवान्है हेतुविना चाहे कितने बहुतभी होवें सो संपूर्ण निर्बलहैं सो संख्याधिक्य किसतरह बलदेवेगा ॥ अब उनके पक्षको स्वीकारकर्के तिनके पक्षको हटातेहैं जेकर आपकोसंख्याधिक्यही अभिमत है तब तुमदेखो नृसिंहप्रसाद और मदनरत्न आदि बडे प्राचीनग्रंथ एहसभ इस जगा मिताक्षराके ही मतवालेहैं

अब इसीमें कहतेहैं कि माधवाचार्य्यजीके मत विषेभी व्यवहार्य्यहै और नरक नहींदूर होता इसीमें निश्चय प्रतीत होताहै जिसकारणसे तिनका मत जैसे युक्तियों करके विश दं क्या प्रकट करकें प्रतिपादन कियाहै तैसेहीहै (नापरं केचित्) इससे आरंभ करके प्रति पादन जो है सोउनकी अनिच्छाका चिन्ह नहीं किंतु उसमेंभी उनकी इच्छाहै क्योंकि केचित् इतना कहकर जनायाहै कि एह सिद्धांतभी बहुत निबंधोंमें देखाहै इसर्थ और मतां तरों को कहकर वस्तुत इत्यादि करके जो विषय कहाहै तिसी विषें कैयोंके मतको कहणे विषे अनभिमत क्या अनिच्छाविषयके देखणेसे और प्रसंग विषे (अपरे) ऐसा कह कर

माधवाचार्य्याणामपि व्यवहार्य्यत्वएव निर्भरोलक्ष्यते यतस्तन्मतं यथो पपत्तिभिर्विशदं प्रतिपादितं तैस्तथानापरं केचिदित्युपक्रम्य प्रतिपादनं तु नानभिमतत्वेलिंगम् केचिदित्यादिनापि सिद्धांत प्रतिपादनस्य बहुशो निबंधेषुदृष्टत्वात् मतांतरस्य वस्तुतस्तु सिद्धांतास्त्वित्यादिना प्रतिपादनएव केचित्त्वित्यादिना प्रतिपादिते ऽनभिमतत्वदर्शनात् प्रकृतेचापरेत्वित्यादि ना मतांतरस्य प्रदर्शनेन तत्र निर्भरस्यानुमातुमशक्यत्वादित्यलमनया निस्सारचर्चया ॥ तस्मात्कामकृतब्रह्मवधोप्यत्यंतपश्चात्तापादिरूपां प्रायश्चित्तार्हतांसम्यग्विभाव्य रागद्वेषौविहायात्यंतिककायक्लेशकरचतु र्विंशत्यब्दप्रत्याम्नायोपदेशेनचेदनुगृह्णेत

मतांतर दिखाणे करकें तिस विषे तिनका अभिप्रायहै इसकें कहणेको अशक्य होणेर्थं अब कहतेहैं अलंहै इस असार चर्चाको इसको जितना वधाओ उतनी वढसकतीहै तिस कारणसे कामना करकेंभी किसीने ब्राह्मणका वधकियाहै और पीछे अत्यंत पश्चात्ताप करकें प्रायश्चित्तकी योग्यताको बनाकर और रागद्वेषको छोड कर तिसमें प्रवृत्त हुवा २ अत्यंत देहके क्लेशकों करणवाला जो द्विगुण प्रायश्चित्त २४ वर्षकाहै तिसकों जो नहीं सहार सके तिसकेंताईं प्रत्याम्नायके उपदेश करके लेकर अनुग्रह वाला होवे अर्थात् अनुग्रह करे

तव जैसा उपदेश शास्त्रकारोंकाहै तैसे उसको कहे और वोह तैसेही अनुतिष्ठित क्या अनुष्ठान करे तव तिसका पापनाश नहींभीहै तदभी इस लोकका व्यवहार उसका सिद्ध होवेगा एह इतने शास्त्रार्थसे सिद्धहुआ इस कारण थे कामकृत पापके स्थलविषेभी प्रायश्चित्तकरणा चाहिये ❀ अव दो श्लोक करके राज प्रशंसा पूर्वक प्रकरण की समाप्तिको कहतेहैं श्रीमदिति जोग्रंथ धर्म्मशास्त्रका कवियों विषे श्रेष्ठ गंगारामहै मुख्यजिनोविषे ऐसे पंडितोंने परिश्रमसे संग्रहकियाहै तिस विषे एह दूसराप्रकरण सिद्धिंसंप्राप्नोत् क्या पूर्णहोताहुआ कैसा एह प्रकरणहै कि जो शुद्धहै फेर कैसाहै कि वुद्धिमानोंको आनंददेने वाला जो प्रायश्चित्तका निर्णय तिसका संबंधिहै फेरकैसाहै अधिकारिका वर्णनहै पहले जिसके क्या करके श्रीरणवीरसिंह महाराजकी आज्ञाको लेक

सचयथोपदिष्टंतद्धर्मतोनुतिष्ठेत्तर्हि स पापनाशाभावेप्यैहिकव्यवहारार्हः संपद्येतैव इतिसिद्धम् ॥ श्रीमत्प्रौढतरप्रतापतपनत्रस्ताखिलारिव्रजाज् जम्बूपत्तनतिब्बतक्षितिपतेर्धर्मस्यसाक्षात्तनोः भूपालावलिमौलिलाल्यचर णात्काश्मीरदेशेश्वरा दाज्ञांश्रीरणवीरसिंहनृपतेः प्राप्यार्थिचिंतामणेः १
पर्य्यालोचितधर्म्मशास्त्रनिवहै रेतत्सभासंगतै र्गंगारामकवीशमुख्यविवुधै र्यस्संगृहीतःश्रमात् प्रायश्चित्तविनिर्णयेप्रकरणंतास्मिन्वुधानन्ददे संप्राप्नो दधिकारिवर्णनमुखं सिद्धिंद्वितीयंशुभम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बू काश्मीरतिब्बताद्यनेकदेशाधीश प्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तकविगंगारामसं गृहीतेधर्मशास्त्रमहानिबंधे प्रायश्चित्तभागेऽधिकारिप्रकरणं द्वितीयम् २

रके कैसा महाराजहै श्रीमदिति श्रीकरके युक्त जो अतिप्रताप सो भयासूर्य्य तिस करके त्रासको प्राप्तकियाहै शत्रुसमूह जिसने फेर कैसाहै जंव्विति जम्बूसे लेकर तिव्वत देश पर्य्यंत पृथ्वीका पतिहै और साक्षाद्धर्म्मकी मूर्त्तिहै और राजेयोंकी पंक्तिकी मौलि करके क्या मस्तक मणिकर्के लालितहैं चरण कमल जिसके और काश्मीरदेशका ईश्वरहै और चिंतामणिके तुल्यहै १ और कैसेहैं कविगंगाराम प्रभृति पर्य्येति विचारित कियेहैं शास्त्रके समूह जिन्होंने फेर कैसेहैं कि एतदिति इस राजाको सभा विषे संगतहैं ॥ ❀ ॥ इतिश्रीप्रायश्चित्तभागे भाषाटीकायामधिकारिप्रकरणंद्वितीयम् २ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ द्वितीयंप्रकरणम् ॥ २

प्रकरणके आदिविषें मंगलाचरण करतेहें स्वेति इसका अर्थपिच्छेहोचुकाहै तिस विषेकर्त्तव्यकी प्रतिज्ञाकरतेहें अथेति अधिकारी प्रकरण कहणेते अनंतर अधिकारिकों करणे योग्यजो प्रायश्चित्ततिसके करणेकी इच्छाविषें सभाप्रकरण लिखीदाहै ॥ तो तिसप्रकरणके आदिविषें इसलोकके और परलोकके कल्याणका देणीजो महापातकादि तिसके नाशकरणे योग्यप्रायश्चित्त के उपदेशके निमित्त तिसका माहात्म्य वर्णन करतेहैं ॥ तिसविषे अंगिराऋषिका वचनहै उद्यंति जैसे उदयको प्राप्तहोताहो सूर्य संपूर्ण अंधकारको दूरकरताहै तैसेहि प्रायश्चित्तको करताहुआ

॥ श्रीरघुनाथोजयति स्वतोमित्वातत्त्वंश्रुतिरपियदीयंभगवतीगुहारूढंप्रो चे सकलपुरुषार्थाद्यइहयःविचारैस्वैसक्तान् विशदमतिदानेनसदयम् सध र्म्मोस्मान्दीनान्बहुलमनुगृह्णातुभगवान् १ अथाधिकारिकर्त्तव्यताकां क्षायां परिषत्प्रकरणं लिख्यते ॥ तत्रादावैहिकामुष्मिक भद्रप्रातिद्वंद्विमहा पातकादिनाशकप्रायश्चित्तोपदेशाय तन्माहात्म्यंवर्ण्यते ॥ अंगिराः ॥ उद्य च्छन्यद्वदादित्यस्तमः सर्वंव्यपोहति तद्वत्कल्याणमातिष्ठन्सर्वंपापंव्यपोहति १ पापंचेत्पुरुषः कृत्वाकल्याणमभिपद्यते ॥ मुच्यतेपातकैःसर्वैर्महाभ्रैरिवचं द्रमाः २ कल्याणं प्रायश्चित्तंतस्यावश्यकर्त्तव्यत्वमाह ॥ यमः ॥ तपसांतेवि शुद्ध्यंतिकर्मणांचपरिक्षयात् तस्मात्कर्त्तव्यमेतैस्तुप्रायश्चित्तंविशुद्धये १ कर्म णांभोगेनपरिक्षयादित्यर्थः

संपूर्ण पापोंको दूरकरताहै १ पापमिति जैकरपुरुष पापको करके प्रायश्चित्तकोंकरे तो संपूर्णपापों से रहितहोताहै और निर्म्मलहोकर शोभताहै जैसेमहामेघोंसे रहितहुवा२ चंद्रमा शुद्ध प्रकाशताहै एह अभिप्रायहै चंद्रमावत् शुद्धहोताहै २ कल्याणनाम प्रायश्चित्तकाहै तस्येति तिसकी अवश्य कर्त्तव्यता कों कहतेहैं यमजीतपेति तपकर्के अंतविषें शुद्धहोतेहैं तप कर्के क्या प्रायश्चित्त कर्के दुष्कृत कर्मोंके नाशहोणेसें अर्थात् प्रायश्चित्त करणेसें उपरंत पुरुष शुद्धिकों प्राप्तहोतेहैं तिसकारणथें प्रायश्चित्त करणयोग्यहै निष्पापहोणेके लिये इसीका अर्थ कहते हैं भोगकर्के कर्मोंका क्षय होणेथेंएह अर्थहै १

इसीको दृष्टांत करके कहतेहैं यथेति जैसे पाषाणविषें स्थितजो जलसो वायुकरकेऔर सूर्यके तेज करके सूखताहै तैसे सभाविषे स्थितजो बुद्धिमान् तिन्होंकी आज्ञासें पुछणवालेपापिका पाप नष्ट होताहै २ इसीका अर्थस्पष्टकरके कहतेहैं नैवेति सो पाप पापकरणे वालेकोंनहींप्राप्तहोता और न सभाकोप्राप्तहोताहै वोहपाप वायुसूर्यके संयोगसे जलकी न्याई नष्ट होताहै ३ ॥ इसीकोंचतुर्विंशतिके मतविषें कहतेहैं जैसे सूर्यके तेजहोयां २ पृथ्वीमें जल सूकताहै तैसे सभाकरके कर्णोके द्वारा श्रवण कियाहुवा पापीका पाप नष्टहोताहै १ इसीको प्रष्णोत्तरकरके कहतेहैं ? प्रश्न ? प्रायश्चित्तके कीतयांहोयां ब्राह्मणकों निष्पापहोणेसें तबमैं संपूर्णकों पूछताहुं सो पाप स्वरूपकरके कहांरहताहै २ ? उत्तर ? नैवेति पापनहींकर्ताकों

यथाश्मनिस्थितंतोयं मारुतार्केणशुष्यति एवंपरिषदादेशान्नाशयेत्तत्रदुष्कृतम् २ नैवगच्छतिकर्त्तारं नैवगच्छतिपरिषदं मारुतार्कादिसंयोगात्पापंनश्यतितोयवदिति ३ चतुर्विंशतिमते॥यथाभूमिगतंतोयंघर्मपातेविनश्यतिएवंहि परिषद्दृष्टंनश्यत्येतस्यदुष्कृतमिति १ एतदेव प्रष्णोत्तराभ्यांविशदीकरोतिप्रेति प्रायश्चित्तेयदाचीर्णेब्राह्मणेदग्धकिल्विषे सर्वंपृच्छामितत्त्वेनतत्पापंक्वनुतिष्ठति २ नैवगच्छतिकर्त्तारंनैवगच्छति परिषदम् मारुतार्कसमायोगात् जलवत्संप्रलीयते ३ यथाश्मनिस्थितंतोयं नाशयेतेऽर्कमारुतौ तद्वत्कर्त्तरितत्पापंनाशयेत्परिषद्विधिः ४ तेषांनेत्राग्निदग्धंतत्पापंतस्यतुधीमतः नश्यतेनात्रसंदेहः सूर्य्यदृष्टंहिमंयथेति ५ प्रायश्चित्तानंतरं पुनःपापरतिर्नस्यादित्याह।मनुः। अज्ञानाद्यादिवाज्ञानात्कृत्वाकर्मविगर्हितम् ॥ तस्माद्विमुक्तिमन्विच्छन् द्वितीयंनसमाचरेदिति

प्राप्त होता और न सभाकोंप्राप्तहोताहै वायु और सूर्यके तेजकरके जलकीन्याई नष्टहोताहै ३ पूर्वेअर्थकोही स्पष्टकरके कहतेहैं यथेति जैसे पाषाण विषे स्थितजोजलहै तिसकों सूर्य और वायु नाशकरतेहैं तिसीप्रकार कर्त्ताविषे स्थितपापको सभाकी कहीहुई विधीदूरकरतीहै ४ तेषामिति तिन सभास्थित बुद्धिमानोंके नेत्रोंकी अग्निकरकेदग्धहुवा २ तिसबुद्धि मानकासोपाप दूरहोताहै इसविषें संशय नहीं तिसविषें दृष्टांतहै सूर्यकरके देखीहुईबर्फजैसेनष्टहोतीहै ५ इत्थेपापिको बुद्धिमान् इसकरके किहाहै किपापके हटाणे वास्ते उसने यत्नकीताहै प्रायश्चित्तकरणेसे पीछे पाप करणे विषेंरुचि न करे ऐसे मनुजी कहतेहैं अज्ञानेति अज्ञानथें वा ज्ञानसेंपापकर्मको करके पीछे तिस पापके दूरकरणेकी इच्छा वालाजो पुरुषहै सो फेरदूसरी वार पापकोनकरे इति

प्रायश्चित्तके करणेकी इच्छावाले जोपुरुषहैं तिन्हकों सभाविषे प्राप्तहोणा इसको अंगिराजी कहतेहैं अतइति इसथें उपरंत उपस्थानके लक्षणकों कहतेहैं न्याय करके क्यानम्रता नमस्कारा दि करके उपस्थितक्या सभाविषे प्राप्त हुवा हुवा व्रतके ग्रहण कर्णेके योग्य होताहै १ स द्यः क्या शीघ्रही पापका संशय दूर करणा चाहिये संशयसे रहित पापके होयां २ अ नुपास्थितक्या सभाविषे पाप कहनेके विना तात्काल न भक्षण करे जेकर भक्षण करे तां पा पकों अधिक कर्ताहै क्या अधिक पापको प्राप्तहोताहै और जेकर सभा उहांन होवे तद विना उपस्थितिके भी भोजनकरे उपस्थिति अर्थात् सभाको श्रवण कराणा २ सभा बिषे असत्यको कहताहुवा पापको बधाताहै एह पाठ विद्वन्मनोहरा विषे कहाहै ॥ संशेति पापके संशय हो यां २ पापनिश्चय करणेसे विना नहीं भक्षण करणे योग्य और जैसे निःसंशय पाप विषे

प्रायश्चित्तकामानांपरिषदुपसर्पणमाहांगिराः ॥ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिउप स्थानस्यलक्षणं उपस्थितोहिन्यायेनव्रतादेशनमर्हति १ सद्योनिःसंशयेपा पेनभुंजीतानुपस्थितः भुंजानोवर्धयेत्पापं पर्षद्यत्रनविद्यते २ असत्यंपर्ष दिब्रुवन्निितिविद्वन्मनोहरास्थः पाठः ॥ संशयेतुनभोक्तव्यं यावत्कार्यविनि श्चयः प्रसादश्चनकर्त्तव्योयथैवासंशयेतथा ३ कृत्वापापंनगूहेत गू ह्यमानंविवर्धते स्वल्पंवाथप्रभूतंवा धर्मविद्भ्योनिवेदयेत् ४ अयमर्थः यत्पा पंप्रकाशकृतं तत्साकल्येनैव सभायां प्रकाशनीयं नतुकिंचिदपि ततोगो पनीयं यत्तुकर्तृव्यतिरिक्तेन केनाप्यदृष्टं रहस्यंपापं रहस्यप्रायश्चित्तार्हं तस्याप्रकाशनेपि न दोषः तेहिपापकृतांवैद्याहंतारश्चैवपाप्मनां व्या धितस्ययथावैद्याबुद्धिमंतोरुजापहाः १ प्रायश्चित्तेसमुत्पन्ने धीमान्सत्य परायणः

दया करणे योग्य नहीं तैसे संशय युक्त विषेभी दया नहीं करणे योग्य ३ पापकों कर के गुप्त न करे क्यों कि छपाया हुवा पाप वृद्ध होताहै थोडा वा बहुत जो पाप कियाहै सो ध र्मवेत्ताओंके ताई कथनकरे ४ इसका अर्थ विस्तार करके कहतेहां जोपाप प्रकट करके कीताहै सो संपूर्ण सभाविषे प्रकट कथन करे किंचितभी तिस पापकोंन छपावे ४ और जो पाप करणवाले से विना किसे नहीं देखया गुप्त होयाहै तिसका प्रायश्चित्त गुप्त करणे योग्यहै तिसके न प्रकट करणे विषे दोष नहीं इति अब सभास्थित विद्वानोंकी प्रशंसा करतेहां त इति जो पुरुष पापोंके नाशकरणे वाले हैं सोही पापकरणे वालोंके वैद्यकहेहैं जैसे रोगके दू र करणे वाले बुद्धिमान रोगियोंके वैद्यहैं १ अब तिस पापीको जैसा उचितहै तैसा क हतेहैं प्रायइति पापके होयां २ बुद्धिमान सदा सत्य कहणे वाला

मृद्विति नम्र और निर्छलहुवा २ शुद्धिकीयाचनाकरेपुरुष २ और मौनकोंधारकरवस्त्रोंके सहितस्नानकरके आर्द्रवस्त्रोंके साथ अर्थात् गिल्लेवस्त्रोंकेसाथ भलेप्रकारास्थितहोवे क्षत्री अथवा वैश्यतिसथें अनंतरसभाकोप्राप्तहोवें ३ सर्वेति सवही ब्राह्मण धर्मके निश्चय करणवाले और रक्षाकरणे वाले द्विजश्रेष्टमेरेदेहकी शुद्धीकोकरें ४ मयेतिमैने जानकर्के वा नजानकर्के महापाप कियाहै सोमेरे पर कृपाकरो और शुभजो शुद्धिकीआज्ञाहै सोदेवो ५ पूजने योग्यजो तुमहोआपके अनुग्रहसे मैं पवित्रकियाहुवाहोयां इसप्रकारसभाकोप्राप्तहोकर असाकहकर पीछे शीघ्रही पापके भय कर्के पीडितहुवा २ पृथ्वीपरसंपूर्ण अंगोंको लगाकर ६ और सिरकर्केनमस्कारकरेवाणीकरकेउच्चारण

मृदुतार्जवसंपन्नः शुद्धिंयाचेतमानवः २ सचैलंवाग्यतःस्नात्वाक्लिन्नवासाः समाहितः क्षत्रियोवाथवैश्योवाततःपर्षदमाव्रजेत् ३ सर्वेधर्मविवेक्तारो गोप्तारस्सकलाद्विजाः ममदेहस्यसंशुद्धिंकुर्वंतुद्विजसत्तमाः ४ मयाकृतंमहाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषं प्रसादःक्रियतांमह्यं शुभानुज्ञांप्रयच्छथ ५ पूज्यैः कृतःपवित्रोहंभवेयंद्विजसत्तमैः उपस्थायततःशीघ्रमार्त्तिमान्धरणींव्रजेत् ६ गात्रैश्चशिरसाचैव नचकिंचिदुदाहरेदिति क्षत्रियवैश्यग्रहणं प्रायश्चित्ताधिकारिमात्रोपलक्षणम् वक्ष्यमाणलक्षणरहितानांपरिषद्योग्यत्वाभावबोधनाय ते ब्राह्मणाःकैश्चिद्विशेषणैर्विशेष्यंतेपराशरेण ॥ वेदवेदांगविदुषांधर्मशास्त्रंविजानताम् ॥स्वकर्मरतविप्राणांस्वकंपापंनिवेदयेदिति ॥

कुछ न करे इति ॥ इसमें क्षत्रिय वैश्यकाग्रहण इसकर्केहै कि ब्राह्मणलोक पठन पाठनके व्यवहारकरके प्रायश्चित्ती थोडेहैं और शूद्रोंको प्रायश्चित्तही थोडाहै वहुधा क्षत्रिय वैश्य विषें प्रायश्चित्तका प्रयोगहै अथवा इसविषें क्षत्रिय वैश्यका ग्रहण कियाहै सो प्रायश्चित्तके अधिकारिमात्रके कथनकेलियेहै ॥ वक्ष्यमाणेति आगेजोकथनकरनेहैं लक्षण तिन्होंसें रहितजोहैं तिन्होंकोसभाविषें अयोग्यता जनानेंवास्ते कुछक विशेषणों करके ब्राह्मणोंको कहतेहैं पराशरजी वेदेति वेदांगके जाननेंवाले और धर्म्मशास्त्रके और अपने कर्मोंविषें युक्तजो ब्राह्मणहैं तिन्होंके आगे अपने पापको कथन करे इति

यद्यपीति यद्यपि मन्वादिकों करके कहे जो धर्मशास्त्र तिन्होंके जानने मात्रकर्के ब्राह्मण प्राय-श्चित्तके करवाणेको समर्थहैं तथापि श्वानकर्के उच्छिष्ट हविः जैसे त्यागीदीहैं इस न्यायसे तै-से नहि अध्ययन किया वेद जिनोंने और अपने धर्म कर्मके करणेसें जो रहितहैं तिन्होंने क-हा जो प्रायश्चित्त सो पापके दूर करणेविषें नहीं समर्थहोता तिसकारणसें धर्म कर्मके करणे विषें जो-युक्तहैं और वेदके पारको जो प्राप्त हुवेहैं तिनके समीप प्राप्तहोकर करणे योग्य जो प्रायश्चित्त ति-सका निमित्त जो पाप तिसकों संपूर्णता कर्के निवेदन करे सो एह सभाविषें प्राप्तहोणेकी वि-धीहै ऐसे माधव और नंद पंडितोंने कहाहै॥ परिषदिति सभाके योग्यजोहैं तिन्होंके परिशेष क-रणे वास्ते अर्थात् योसभाकेयोग्यहै तिनेस्वीकारके अर्थ सभाके अयोग्यजोब्राह्मणहैं तिनको पराशरजी कहतेहैं सेति श्रीसूर्य नारायणका मंत्रजो गायत्रीहै और संध्याका.

यद्यपि मन्वादिधर्मशास्त्रज्ञानमात्रेण ब्राह्मणाःप्रायश्चित्तंविधातुं समर्था स्तथापि शुनालीढंहविर्यथेतिन्यायेनाऽनधीतवेदैः स्वधर्मानुष्ठानरहितै र्निर्दिष्टं प्रायश्चित्तं न पापापनोदनक्षमं तस्माद्धर्मनिष्ठान्वेदपारंगतानुपेत्य तेषामग्रेचिकीर्षितप्रायश्चित्तनिमित्तं पापमशेषेण निवेदयेत् सेयंपरिषदु पसत्तिरिति माधवनंदपंडितौ परिषद्योग्यानांपरिशेषयितुंपरिषदयो ग्यानाह पराशरः साविन्याश्चापिगायत्र्याःसंध्योपास्त्यग्निकार्ययोः अ ज्ञानात्कृषिकर्तारो ब्राह्मणानामधारका इति १ सवितुःसूर्यस्येयंसावित्री वरेण्यमित्यत्र णकारयकारविश्लेषेण चतुर्विंशत्यक्षरत्वाद्गायत्री चतुर्विं शत्यक्षरागायत्रीतिश्रुतेरितिमाधवः नंदपंडितास्तु पुनरुपनयने उप देश्या तत्सवितुर्वृणीमहे इतिसावित्रीविवक्षिता ॥

उपासन और अग्निहोत्र कर्म इनकें न जाननेसें और खेतीके करणेवाले जो ब्राह्मणहैं सो केवल नाम कर्केहैं कोई यथार्थब्राह्मणनहि १ इसीका अर्थ स्पष्टकरके कहतेहैं सवितुरिति सविता-जो सूर्यहै तिसकी जो होवे सो सावित्री कहीहै सूर्यसावित्री विषे वरेण्य जो पदहै तिस विषे ण-कार और यकारकों भिन्नगिणने कर्के चौबी २४ अक्षर होणेसें तिसका नाम गायत्री कहाहै श्रुति विषेभी कहाहै चौबीहैं अक्षर जिस विषे सो गायत्री कथन कीहै ऐसे माधवजी कहतेहैं और जो नंदपंडितहैं सो दूसरी वार उपनयन विषे सावित्री उपदेश करणे योग्यहै तिस सावित्रीका स्वरूप (तत्सवितुर्वृणीमहे) इति इह सावित्री कथनकीहै ॥

तदिति श्रौर तत्सवितुर्वरेण्यं एह गायत्री कहीहै भेद कर्के उपन्यास होणेथें ऐसें कहतेहैं प्रथम उपनयन विषेभी क्षत्रियादिकों त्रिष्टुभादिसावित्रीकों पक्षभेदकर्के विधान होणेसें तिनके ग्रहणके वास्ते सावित्रीका भिन्न ग्रहणहै एहभी जाणलेणा परंतु एभी ध्यान रक्खोकि (तत्सवितुर्वृणीमहे) (तत्सवितुर्वरेण्यं) एहदोनो प्रतीकहै कोईसारामंत्रनहि अगलेके साथ सारा जन्नणा ॥ ❀ ॥ गायत्रीति जो ब्राह्मण गायत्री आदिककों नहि जाणते सो केवल नाम कर्के ब्राह्मण हैं क्या सो अमुख्यहैं अतइति इसकारणसे तिनको जो विकावारो कृषिकर्महे यज्ञ किसेकों कराणा इत्यादिकर्म्ममे न समर्थ होणेसें यथेति जैसें काष्टका हस्ती चर्मका मृग विद्यासें रहित ब्राह्मण एहत्रयही केवल नाममात्र कर्केहें १ यथेति जैसें स्त्रियों

तत्सवितुर्वरेण्यमितिचगायत्रीविवक्षिता भेदेनोपन्यासादित्याहुः प्रथमोपनयनेपिक्षत्रियादेस्त्रिष्टुभादिसावित्र्याः पक्षभेदेनविधानात्तत्संग्रहाय सावित्र्याः पृथगुपादानमित्यपिबोध्यम् गायत्र्यादीनामज्ञानात्तेब्राह्मणानामधारका अमुख्याइत्यर्थः अतस्तेषां याजनादेरसंभवाज्जीवनार्थंकृषिकर्तृत्वमिति यथाकाष्ठमयोहस्तीयथाचर्ममयोमृगः ब्राह्मणस्त्वनधीयानस्त्रयस्तेनामधारकाः १ यथाषंडोऽफलःस्त्रीषुयथागौरूषराऽफला ॥ यथाचाज्ञेऽफलंदानं तथाविप्रोऽनृचोऽफलः २ ग्रामस्थानंयथाशून्यंयथाकूपस्तुनिर्जलः यथाहुतमनग्नौचअमंत्रोब्राह्मणस्तथा ३ व्यासः ॥ ब्रह्मबीजसमुत्पन्नोब्रह्मसंस्कारवर्जितःजातिमात्रोपजीवियः सभवेन्नामधारकः १ ब्राह्मणब्रुवसंज्ञा चतुर्विंशतिमते ॥ गर्भाधानादिसंस्कारैर्वेदोपनयनैर्युतः नाध्यापयतिनाधीते सभवेद्ब्राह्मणब्रुवइति इमे न पारिषद्योग्या इत्याह पराशरः

विषे नपुंसक और कल्लरवालीपृथ्वी और अज्ञकों क्या मूर्खकों दानदेणा एह जैसे निष्फलहैं तैसे वेदसेंरहित ब्राह्मणभी निष्फलहै २ ग्रामेति जैसे ग्रामस्थान धर्मसें शून्यहै और जलसें रहित खूवा अग्निसे विना हवन निष्फलहै तैसे मंत्रसें रहित ब्राह्मण अफल कहाहै ३ इसमे व्यासजीका वचनहै ब्रह्मेति जो ब्रह्म बीजसें उत्पन्नहुवाहै और ब्रह्म संस्कारसें रहितहै सो केवल जातिमात्रकर्के उपजीविका कर्ताहै सो नामधारक कहाहै १ ब्राह्मणब्रुवसंज्ञा चतुर्विंशतिके मतविषें कहीहै गर्भेति गर्भाधानादि संस्कारोंकरके वेद और उपनयनकर्के जोयुक्तहै और न किसीकों विद्यापढाताहै औरन आप पढताहै सो ब्राह्मणब्रुव कहीदाहै एह सभाके योग्य नहिहैं ऐसे पराशरजी कहतेहैं

अव्रतेति प्राजापत्यादि व्रतोंसे हीन और वेदसेंभी रहित केवल ब्राह्मणजातिकर्के उपजीविका करणे वाले जो हजारोंभी एकत्र होण तथापि तिनकोधर्मसभा विषे अधिकारनहींकहा १ अध्ययनादिसें रहित पुरुषोंकीन्याईं नास्तिकोंकोभी सभाधिकारनहीं॥ तैसे चतुर्विंशतिमतविषेकहाहै वेदेतिवेदपठनसें रहित और जोधर्मशास्त्रसेंभीरहितहैं तिनोंकोसभाकाअधिकार नहींकहा और नास्तिकोंको विशेषकर्केनहीं १ अनाहितेतिअग्निहोत्रसें रहित और अज्ञानीकेवल वेदपाठकेजानने वाले और पीछेंनिंदा करणेवाले और क्रूरकर्मोंकेकरणेवाले जोहैं तिनको परिषत् काअधिकार नहींकहा २ अत्र और सभाकेअनधिकारियोंकोंकहतेहै शास्त्रेति शास्त्रकेंजाननेवालेभीहैं परंतु दुष्टकर्मोंकेकरणे वाले और प्रतिकूल क्या उलटेस्वभाववाले और असूयकक्या निंदक और हेतुक

अव्रतानाममंत्राणांजातिमात्रोपजीविनां सहस्रशःसमेतानां परिषत्त्वंनविद्यते इति १ अव्रताःप्राजापत्यादिव्रतहीना अमंत्रा वेदरहिताःअध्ययनादिहीनवन्नास्तिकादीनामपि परिषत्त्वंनास्ति॥ तथाचतुर्विंशतिमते॥ वेदपारमतीताये धर्मशास्त्रविवर्जिताःपरिषत्त्वनतेषांस्यान्नास्तिकानांविशेषतः १ अनाहिताग्नयोऽज्ञानाःकेवलांवेदपारगाः॥ पिशुनाःक्रूरकर्माणःपरिषत्त्वंनविद्यते २ शास्त्रज्ञादुष्टकर्माणःप्रतिकूलास्त्वसूयकाः॥ हैतुकाभिन्नमर्यादास्तेचपरिषद्विवर्जिता इति ३ हैतुकाहेतुवादेनसद्धर्मनिंदकाः॥ पाराशरोपि॥ शत्रवोदुष्टकर्म्माणः प्रतिकूलाःसदैवतु हिंसकाभिन्नमर्य्यादास्तेवैपर्षद्विवर्जिता इति १ एवंपूर्वोक्तानांप्रायश्चित्तकथने दोषमाह। पराशरः। यद्वदंतितमोमूढामूर्खाधर्ममतद्विदः तत्पापंशतधाभूत्वातद्वक्तृन्नाधिगच्छति १ अज्ञात्वाधर्म्मशास्त्राणि प्रायश्चित्तंददातियः प्रायश्चित्तीभवेत्पूतः किल्विषंपरिषद्व्रजे दिति २

क्याहेतुओंकरके शास्त्रकी निंदा करणे वाले और धर्ममर्यादाके दूरकरण वाले जोहैं सो सभासे वर्जितकहेहैं इति ३ इसीअर्थकोपाराशरजीस्पष्टकरकेकहतेहैं शत्रवइतिहिंसाकरणेवाले ऐसेयोंने जो प्रायश्चित्त कथन करणाहै तिसविषें दोषकों पराशरजीकहतेहैं यादिति जो कहतेहैं अज्ञानी मूर्ख धर्मको और आपकैसेंहै अतद्विदः क्या धर्म्मको नहीं जाणते किंतु अधर्मजानने वाले हैं सो पाप शतप्रकारका होकर ऐसे कथनकरणेवाले अज्ञानियोंको प्राप्त होताहै १ अज्ञात्वेति धर्मशास्त्रोंको नजान कर्के जो प्रायश्चित्तको देताहै तिससेभी प्रायश्चित्ती शुद्धहोताहै और सभा पापको प्राप्तहोतीहै इति २

अनेति इन वचनोंके अर्थको माधवजी कहतेहैं सतीति हैभी धर्मशास्त्रके पाठका और तिसके अर्थकाज्ञान तथापितिसकोन्यायकर्के निर्णय विषे चातुर्य्यताके अभावकर्के प्रसंगविषे प्राप्तहुवाजो सूक्ष्म प्रायश्चित्तविशेष तिसका नजानणा एह एकवचनहै और धर्मशास्त्रके परिज्ञानके होवां २ धर्मशास्त्रका भलीप्रकार न विचारणा एह दूसरा वचनहै तत्रेति तिनदोनोंमेंसे एकभी जिसजगा जो प्रायश्चित्त उपदेशकरीदाहै तदसो पाप सौप्रकारका होकर प्रायश्चित्तकेकेहणे वालोंको प्राप्तहोताहै ॥ अब इसमें और विचारकरतेहैं तत्रेति तहां पूर्व कहाजो आपका अज्ञान तिसके होयां २ पापीभी विधि पूर्वक प्रायश्चित्तके नकरणेसें नहींशुद्धहोता इसपक्षमें दोनोंको दोषहै दूसरे अज्ञान विषे पापीने यथाविधि प्रायश्चित्तके विधान करणेसें शुद्धहोवीदाहै और कहनेवाला दो

अनयोश्चवचनयोरेवमर्थमाह माधवः सत्यपि धर्मशास्त्रपाठेन्यायनिर्णये कौशलाभावेन प्रकृतस्य सूक्ष्मस्य प्रायश्चित्तविशेषस्याज्ञानमेकं सत्यपि परिज्ञानेधर्मशास्त्रापरिशीलनमपरं तत्रान्यतरवतापि यत्रप्रायश्चित्तमुपदिश्यते तत्र तत्पापंशतधाभूत्वावक्तृनेवप्राप्नोति तत्राद्यज्ञानेकिल्विषिणोऽपि यथाविधिप्रायश्चित्तानुष्ठानात्सनपूयते परत्राज्ञानेच किल्विषिणायथाविधिप्रायश्चित्तविधानात्पूयते वक्तातुदुष्यति पाठपूर्वकज्ञानेसतितदुपदेशस्यैव पापनाशकत्वेनस्मरणात् ऋषिवक्त्रोद्गतान्धर्मान् गायंतोवेदवित्तमाइति वचःपूर्वमुदाहार्य्यंयथोक्तंधर्मवक्तृभिः पश्चात्कार्यानुसारेण शक्ताः कुर्युरनुग्रहमितिच १ विद्वन्मनोहरायांतुपूर्वोक्ताद्विविधाज्ञानवताप्युपदिष्टेनप्रायश्चित्तेन किल्विषी न पूयतेयद्विनाधर्मशास्त्रेणप्रायश्चित्तंविधीयते नैवशुद्धिमवाप्नोतिप्रायश्चित्तकृतेऽपिसइति २ वृद्धशातातपस्मरणात्

षको प्राप्तहोताहै इतना भेदहै अबइसमें हेतु कहतेहां पाठेति पाठपूर्वक ज्ञानके होयां २ तिस प्रायश्चित्तके उपदेशकों हि पापनाशकता कर्के स्मरणहोणेसें तिनवचनोंको कहतेहैं ऋषीति ऋषियोंके मुखसे उच्चारणहुवे जो धर्म तिनको गायन कर्तेहुवे वेदवेत्ता एक एह वचनहै और ऐसे वचनपूर्वक कथनकरे जैसे धर्मवेत्ताओंने कहाहै और पीछे कर्मानुसार कर्के समर्थहैं प्रायश्चित्त करवाणेको एह और वचनहै १ ॥ विद्वन्मनोहरा ग्रंथविषे इनवचनोंको ऐसेलगायाहै पूर्व कहा जो दोप्रकारका अज्ञान तिसवालेकर्के उपदिष्ट हुवा जो प्रायश्चित्त तिसकर्के पापीनहीं शुद्धिको प्राप्तहोता इसमें हेतुदिखातेहैं यदिति जोधर्मशास्त्रसे विना प्रायश्चित्त विधान करीदा है सो पुरुष प्रायश्चित्तके कीतेहोयांभी शुद्धिकोंनहीं प्राप्तहोता २ इसवृद्धशातातपजीके स्मरणसें

अन्विति अनुवादककोंक्या प्रायश्चित्तकेसुनाणे वालेकोंपाठपूर्वकज्ञानआवश्यकहै एह प्रयोजन अज्ञात्वाधर्मशास्त्राणि)इत्यादिश्लोककर्केकहाहै क्याधर्मशास्त्रकों न जानकर जो प्रायश्चित्तकहता है सो पाप कहनेवालेकोप्राप्तहोताहै और पापीशुद्धहोताहै धर्मशास्त्र पाठ और न्यायकर्के निर्णय एहदोनों सभाविषे स्थित होनेवालेंकों उचितहैं एह प्रयोजन पहिले कहेहुवे श्लोककर्के अर्थात् यद्वदंतीत्यादिश्लोककर्केग्रहणकीताहै एहनिर्णयहै ॥अब विचारांतरकहतेहैं धर्म्मेतिधर्म्मशास्त्रके ज्ञान होयां २ और न्यायनिर्णयक्या चतुराईके भी होयां २ ननिश्चयहोणाइत्यादिक चित्तविषे प्राप्तहुई जो दोषकी आशंका तिसके दूर करणेवास्ते अपने तुल्यजो चार बुद्धिमान्हैं तिनके साथ संवाद

अनुवादकस्यापि पाठपूर्वकज्ञानवत्त्वमावश्यकमितित्वज्ञात्वाधर्मशास्त्राणी तिवचनेनाभिधीयते पाठन्यायनिर्णयोभयवत्त्वंचपर्षदः पूर्वश्लोकेनैवसंगृह्यतेइत्युक्तं धर्मशास्त्रपरिज्ञानस्य न्यायनिर्णयकौशलस्य सद्भावेप्यनवधानादिचित्तदोषाशंकाव्युदासायस्वसमानैश्चतुरैःसहसंवादोऽपेक्षित इत्याहपाराशरः॥ चत्वारोवात्रयोवापियंब्रूयुर्वेदपारगाःसधर्मइतिविज्ञेयोनेतरैस्तुसहस्रशइति १ सत्यपि त्रिचतुराणांपरस्परसंवादेविप्रकीर्णेष्वनेकेषु धर्मशास्त्रेषुक्वापिकस्यचिद्विशेषस्य संभवात्प्रायश्चित्तनिर्देशवेलायांपुनः शास्त्राणिपर्य्यालोच्यैव निर्देष्टव्यमित्याह पाराशरः प्रमाणमार्गंमार्गंतो यंधर्मंप्रवदंतिवै तेषामुद्विजतेपापंसद्भूतगुणवादिनामिति २

करणे योग्यहै ऐसेहीपाराशरजी कहतेहैं चत्वार इति चार वा तीन वेदकेजानने वाले मिलके जिसधर्म्मको कहैं सोही धर्म्म जानने योग्यहै इससें इतर हजार भी मिलकर्के कहैं सो नहीं धर्म्म जानणा १ सतीति सभाविषेहोणेवालेजो तीन वा चारहैं तिनकेआपसविषें संवादके होयां२ भी विवादवाले जो अनेकधर्म्मशास्त्र तिनोंमें से किसे स्थानविषे किसीप्रायश्चित्तविशेषकर्कें तिस पापके दूर करणे वास्ते विद्यमान होणेसें प्रायश्चित्तके कथनसमयविषें फेर शास्त्रोंको विचारकर्केंदिखाने योग्यहै इसीको पाराशरजी कहतेहैं प्रमेति पापको निवृत्तकरणेवाला जो प्रायश्चित्त ऐसेप्रमाण मार्गको ढूंडतेहुवे जो धर्मकोकहतेहैं तिन श्रेष्ठगुणवादियोंका पाप दूर होताहै इति२

विद्वन्मनोहराबिषें तुपुनः प्रायश्चित्तके विधान करणे वाले जो शास्त्र तिनकर्के सभाविषें निर्णीत हुवा जो अर्थ तिसविषें विवाद कैसे करणे योग्यहै इहप्रमाणमार्गमित्यादिआकांक्षा वाक्य कर्के दूरहुई एह कहागया ॥ अब कथन करणेवालोंकों उत्साहदेतेहैं उक्तेति कहाहै लक्षण जिनका ऐसे जो सभा विषें रहणेवाले तिनकर्के कथन किया जो प्रायश्चित्ततिस कर्के पाप दूर होताहै फे रसभाको नही प्राप्तहोता ऐसें पराशरजी कहतेहैं यथेति जैसेपृथ्वी विषें जल सूर्यकी किरणोंसें शुद्धहोताहै अर्थात् नष्ट होताहै इसजगा शुद्धि अभावका नामहै तिसप्रकार पुरुषका पाप सभाके देखनेसें नष्ट होताहै १ नेतिसोपाप न कर्त्ताको और न सभाको प्राप्त होताहै वायु और सूर्यकीकिरणोंके संयोगकर्के जलकी न्याई नष्टहोताहै २ अब प्रायश्चित्त कहणे वालोंको भी प्रायश्चित्त कहतेहैं आत्मेति तिसथें उपरंत आत्मकृच्छ्रकों करे

विद्वन्मनोहरायांतु विधायकैरपिपर्षन्निर्णीतेऽर्थैसंवादःकथंकार्य इत्याकांक्षा ऽनेनशाम्यत इत्युक्तं उक्तलक्षणैःसभ्यैरुपदिष्टेनप्रायश्चित्तेनपापंनश्यत्ये वनपुनःसभ्यादीन् प्रति संक्रामतीत्याहपराशरः॥ यथाभूमिगतंतोयमर्कपा तेनशुध्यति एवंहिपरिषद्दृष्टं नश्यत्येतस्यदुष्कृतम् १ नैवगच्छतिकर्त्तारं नै वगच्छतिपर्षदं मारुतार्कादिसंयोगात्पापंनश्यतितोयवदिति २ आत्मकृच्छ्रं ततःकुर्यात् जपेद्वावेदमातरमिति पर्षत्प्रायश्चित्तविधानंतु प्रायश्चित्तोपदे शनिमित्तकपापांतरनाशायेति नतेनाऽस्यविरोधः॥ कार्य्यतारतम्येन पर्ष दोमुख्यानुकल्पभेदानाहपराशरः।चत्वारोवात्रयोवापिवेदवंतोऽग्निहोत्रिणः ब्राह्मणानांसमर्थायेपरिषत्साविधीयते १ अनाहिताग्नयोयेऽन्ये वेदवेदांग पारगाः पंचत्रयोवाधर्मज्ञाःपरिषत्साप्रकीर्त्तिता २ मुनीनामात्मविद्यानां द्विजानांयज्ञयाजिनाम् ॥ वेदव्रतेषुस्नातानामेकोपिपरिषद्भवेत् ३

अथवा गायत्रीकों जपे इति पर्षत्कों जो प्रायश्चित्तका विधानहै सो प्रायश्चित्तके उपदेशके निमित्तकर्के हुवा जो पापांतर तिसके नाशवास्तेकहाहै तिसकर्के प्रायश्चित्त विधानका (नैवगच्छतिपर्षदं) इसके साथ कोई विरोधनहींहै ॥ ❀ ॥ अबकार्य्यकी न्यूनता औ॰ अधिकता होणे कर्के पर्षत्के मुख्य और अनुकल्प भेदोंको पराशरजी कहतेहैं चत्वारइति चार वा तीन वेदके जानने वाले अग्निहोत्री होण तिनोंकर्के परिषत् कहीहै परंतु इसमे ऐसा विचार है कि जो तीन कहेहैं सो कर्म कांड कर्के युक्त होवें तद पर्षत् केयोग्यहोतेहैं १ अनेति और जो निरग्निक वेदवेदांगके जाननेवाले पंच वा त्रय धर्मज्ञहैं तिनोंकर्के भी सभाकथन कीहै २ मुनीति मुनीजो आत्मविद्याविषें और यज्ञके करणे वाले ब्राह्मण वेदव्रत विषें संपन्न तिनमेंसे एकभी परिषत् होताहै क्या सभाके योग्यहोताहै ३

पंचेति पूर्वमैंने पंच कथनकियेहैं और पांचोंकेअभावविषें तीनकहेहैं जो श्रेष्टजीविका करकेंयुक्तहैं ऐसे तीनककेंभी सभाकहीहै ४ (स्ववृत्तिपरितुष्टाये) एह विद्वन्मनोहराविषें पाठकहाहै इसका अर्थ एह है ॥ किजो अपणी बृत्ति जिसको विहितहै तिसककेंपरितुष्टहैं ॥ और पूर्वोक्तकाहि अर्थ कहतेहैं ग्रामेति जो ग्रामादिकों विषे वेदविद्यादिक गुणोंककें युक्त हैं ब्राह्मण तिनोंविषेंभी अत्यंत जो समर्थहैं ऐसे चारभी होवेंतो तिनों ककें भी सभाकहीहै चारके अभाव विषे तीनकी परिषत् कहीहै एह पक्ष दो २ साग्निककें विषे कहेहैं साग्निकोंके अभाव विषें निरग्निक ब्राह्मणोंकी सभाग्रहण करणी निरग्निकोंविषें पंच ग्रहण करणेएह मुख्यपक्षहै और तीनभी जानने इनदोनोंपक्षोंके अभावविषें मुनियोंके विषे एककोभी

पंचपूर्वमयाप्रोक्तास्तेषांचाऽसंभवेत्रयः सुवृत्तिपरिपुष्टायेपरिषत्साप्रकीर्तिता ४ अत्रस्ववृत्तिपरितुष्टाये इति विद्वन्मनोहराधृतःपाठः ग्रामादौवेदविद्यादिगुणसंपन्नायेब्राह्मणास्तत्रापि येऽत्यंतंसमर्थास्ते चत्वारो मुख्या परिषत् तदभावे त्रयोवा परिषत् पक्षद्वयमेतदाहिताग्निष्वभिहितं तदसंभवेऽनाहिताग्नयोवा ग्राह्याः तत्रापि पंचेतिमुख्यः कल्पः त्रयइत्यनुकल्पः एतत्पक्षद्वयासंभवे एकस्यापिपरिषत्त्वंमुनीनामित्यादिनोक्तम् आत्मनि ब्रह्मणि विद्यानुभवोयेषां तेआत्मविद्याः यज्ञैरिष्टवंतोयज्ञयाजिनः वेदानामृगादीनां चतुर्णामध्ययनादावनुष्ठितानि वेदव्रतानि तद्व्रतसहितेषु वेदेषु समाप्तेषु यथाविधिस्नाताः यद्वा शिरोव्रतेषु स्नातानामितिपाठः॥ आथर्वणिकानांहिवेदव्रतेषु शिरोव्रतमेव मुख्यंव्रतं तथाचाथर्वणिका आमनंति ॥ क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः

सभाका अधिकार इसककेंकहागया ॥ आत्माविषेक्या ब्रह्मविषे अनुभवहै जिनोंकोसो आत्मविद्य कहेहैं औरयज्ञोककें जो पूजितेहुवे सो यज्ञयाजीहैं औरऋग्वेदसें आदलेके जो चार वेदहैं तिनके अध्ययन करणेविषे अनुष्ठान करणे योग्य जो व्रत तिनव्रतोंके साथ वेदोंके समाप्त होयां विधिपूर्वक कियाहै स्नान जिनोंने यद्वा(शिरोव्रतेषुस्नातानां)एहपाठ जानना शिरोव्रतेष्विति शिरोव्रतविषे कियाहै स्नानजिनोंने और अथर्ववेदके जानने वाले जो ऋषीहैं तिनको वेदव्रतों विषे शिरोव्रत ही मुख्यव्रतहै तैसेंही अथर्ववेदके जानने वाले शिरोव्रतकों मानतेहैं औरकर्मोंके करणे वाले और श्रोत्रियक्या वेदविद्याके जाननें वाले और ब्रह्मविषेहैंश्रुतिस्मृतिके अनुसार स्थितिजिनोंकी

स्वेति आपही ऐसेजो एकऋषिनामअग्निकों श्रद्धयन्तः क्या श्रद्धाकर्तेहुवे हवनकर्तेहैं तिनकेताईं इस ब्रह्मविद्याको कहे जिनोने विधिपूर्वक शिरोव्रत कियाहै औरोंको नहीं कहणा इति पूर्व जैसे कहेहैं संपूर्णगुण तिनकरके युक्त जो ब्राह्मणहैं तिनब्राह्मणोमेंसे एकभीहोवे तो सभाके योग्यहै ऐसे चपुनः पंचपक्षकहेहैं दो दो पक्ष साग्नि और निरग्नियां विषे जानणे और एकपक्ष अध्यात्म विद्याविषे जो युक्तहै तिसविषेजानणाइसप्रकार पंचपक्ष जानणे एनां संपूर्णांके अभाव विषे जो कोई अपनीजीविकाकरकेंसंतोषीहैं और विपत् कालविषे भीनिषिद्धजीविकाकेनाग्रहणाकरणे करके

स्वयंजुहृवंत एकऋषिं श्रद्धयंतस्तेषामेवैतांब्रह्मविद्यांवदेत शिरोव्रतं विधिवद्यैस्तुचीर्णमिति यथोक्तगुणसंपन्नब्राह्मणेष्वेकोपि परिषद्भवति एवं चपंचपक्षाःप्रोक्ताः साग्न्यनग्निकानां द्वौ द्वौ अध्यात्मविदस्त्वेकइति एषां सर्वेषामभावे ये वा के वा स्ववृत्तिपरितुष्टा आपत्कालेप्यापद्वृत्त्यनाश्रय णेनयथाकथंचिद्विहितप्रतिग्रहादिभिरेवकृतनिर्वाहास्तेत्रयोऽपिपर्षत्संज्ञांल भंते। बृहस्पतिरपि। लोकवेदांगतत्त्वज्ञाःसप्तपंचत्रयोपिवा यत्रोपविष्टावि प्रास्स्युःसायज्ञसदृशीसभेति अंगिरसाप्यत्रप्रदर्शिताविकल्पाः॥ चत्वारो वात्रयोवापिवेदवंतोऽग्निहोत्रिणः॥ हेतौसम्यक्श्रिताविप्राःकार्य्याकार्य्य विनिश्चिताः १ प्रायश्चित्तप्रणेतारःसप्ततेचप्रकीर्त्तिताः एकविंशतिभि श्चान्यैःपरिषत्त्वंसमागतैः २

जैसे कैसे श्रेष्ठप्रतिग्रहकरकेंकीता है निर्वाहजिनोंनें अयसे त्रयभी सभाकीयोग्यताकों प्राप्तहोंतेहैं बृहस्पतिजीका भीवचनहै लोकेति लोकमर्यादा और वेद और वेदांगकों जो यथार्थजानतेहैं सप्त वापंचवा त्रय जिस सभा विषेहोंण सो सभा यज्ञकेतुल्य जानणी॥ अंगिराऋषिनेंभी इस विषे वि कल्पदिखायाहै चेति चार वात्रयकहेहैं जो वेदविद्या और अग्निहोत्र विषे युक्त सो पापकेदूरकरणे वाले कारण विष भली प्रकार युक्तहें और कार्य अकार्यके निर्णयकरणे वाले १ अयसे प्रायश्चित्त केकहनेवाले सप्तकहेहैं इनां लक्षणोंसें अन्य जो ब्राह्मणहैं तिनां इकीयां २१ करके सभाकहीहै

सेतिकेवल सावित्रीके जानणे वाले और कीताहैवेदव्रतजिनोंनें अयसें इकीयां २१ ब्राह्मणोंककें सभाहोतीहै एहपिचले श्लोककेसाथ जान्नणा और यति और अग्यूविद्यक्यामीमांसाके पढेहोए और वेदकेपढानेवाले और आत्माकें पूजनेंवालें ३ और शिरोव्रतोंककेंकीता हैस्नान जिनांन तिनांके मध्यविषे एककर्कें भी सभा होतीहै एहसभा लघुकार्य्यविषे जानणी और मध्यमकार्यांविषे मध्यमजानणी और महापातकांके चिंतनकरणेविषे बहुतयांके मिलनेकर्कें सभाहोतीह सो भी बहुतवार करणी चाहिए ४ अवमनुजीका वाक्यहै त्रैविद्यइति वेदत्रयके संबंधि जो शाखात्रय तिनांके जानणे वाले तीन ३ और हैतुक क्या मीमांसाके जानणेवाले ४ और नैयायिक ५ और यास्कादि कर्केंरचयाजोशास्त्र तिसके पाठक

सावित्रीमात्रसारैस्तुचीर्णवेदव्रतैर्द्विजैः यतीनामग्र्यविद्यानांध्यायिनामात्म याजिनाम् ३ शिरोव्रतैश्चस्नातानामेकोपिपरिषद्भवेत् एषालाघवकार्येषु मध्यमेषुतुमध्यमा महापातकचिंतासु शतशोभूयएवचेतिशतशः पूर्वोक्ताब्राह्मणाःपर्षत् तत्रापि भूयःपर्षदनंतरंपर्षदित्यर्थः ४ मनुः त्रैविद्योहैतुकस्तर्की नैरुक्तोधर्मपाठकः। त्रयश्चाश्रमिणःपूर्वे पर्षदेपादशावरा १ त्रैविद्यइतिवेद त्रयसंबंधिशाखात्रयाध्येतारः३ हैतुकोमीमांसकः४तर्की ५ नैरुक्तोयास्कादि प्रणीतशास्त्रपाठी ६ धर्मपाठकोमानवादिधर्मशास्त्रवेदी ७त्रयश्चाश्रमिणो ब्रह्मचारिगृहस्थवानप्रस्थाः१०अंगिरः पराशरौ चातुर्विद्योविकल्पीच अंग विद्धर्मपाठकः॥ त्रयश्चाश्रमिणोवृद्धाःपर्षदेपादशावरा १ अंगिराः॥ एकविं शतिसंख्यातैर्मीमांसान्यायपारगैः वेदांतकुशलैरेवपर्षत्त्वंतुप्रकल्पयेत् १ यमः॥ एकोद्वौवात्रयोवापियद्ब्रूयुर्धर्मपाठकाः सधर्मइतिविज्ञेयोनेतरेषांसह स्रशइति १ इतरेषांधर्म्मपाठहीनानांसहस्रशःसमेतानामपिकथनान्नध र्म्मसिद्धिरित्यर्थः

रणेवाले ६ और मनुआदिकोकर्के कहेजोधर्मशास्त्र तिनांके जानणेवाले ७ चपुनः त्रय आश्रमी एक ब्रह्मचारी और दूसरा गृहस्थ और तीसरावानप्रस्थ इनांकी सभादस्सा १० कोहोई इसी कर्कें अवराक्याछोटीहै १ अवअंगिरा और पराशरजी कहतेहैं चारवेदकेजानणेवाला और नैयायिक और वेदांगके जानणेवाला और धर्मशास्त्रकापाठक और त्रय आश्रमी एहदस्सां१० की पर्षत् कहीहै १ अवअंगिरसऋषिकहतेहैं मीमांसा न्यायके जानणे वाले और वेदांतशास्त्र विषे चतुर अयसे इकीयां कर्कें सभाकोंकल्पनकरे एह बडेकार्य्यविषे जान्नणी १ यमजीकावचनहै एक १ वा दो २ वात्रय धर्मशास्त्र क जानणेवाले जो कहण सोधर्म जानणेयोग्यहै इनांते इतर हजार भी एकत्र होकरकहण तदभी सोधर्म्म नहिजान्नणा १

मनुजीने त्र्यवरा क्या तीनतक भी सभाकहीहै धर्म संशयके निर्णयकरण विषेसो दिखाईदीहै इस जगा आद्यशब्द कर्के चार पांच आदिभी सभा होतीहै ऋगिति ऋग्वेदके जानणे वाला और यजुर्वेद और सामवेदके जानणे वाला इनां कर्के त्र्यवरानाम सभाजानणे योग्य है १ अब होर छोटा पक्ष कहतेहैं एक इति एक भी वेदके जानणेवाला उत्तमब्राह्मण जिस धर्मनूं निश्चयकरे सोहि परमधर्म जानणे योग्य है अज्ञ क्या मूर्ख हजारोंभी होण तिनोंकर्के कहेहोयेको यथार्थ नहि जानणा २ अव्रतेतिजोव्रत और मंत्ररहित केवल जातिमात्रकर्के उपजीविकाकेकरणेवाले हजारांभी एकत्र होण तथापि तिनांकी सभानहिकही ३ धर्मविवृतिग्रंथविषेकहाहै पातकविषेसो १०० कर्के और महापापविषे

त्र्यवराद्यापिपर्षन्मनुनाप्रोक्ता ऋग्वेदविद्यजुर्विच्चसामवेदविदेवच त्र्यवरापरिषद्ज्ञेयाधर्मसंशयनिर्णये १ एकोपिवेदविद्धर्मंयंव्यवस्येद्द्विजोत्तमः सविज्ञेयःपरोधर्मोनाज्ञानामुदितोयुतैः २ अव्रतानाममंत्राणांजातिमात्रोपजीविनाम् सहस्रशःसमेतानांपरिषत्वंनविद्यते ३ धर्मविवृतौ ॥ पातकेषुशतंपर्षत्सहस्रंमहदादिषु ॥ उपपापेषुपंचाशत्स्वल्पेस्वल्पातथाभवेत् १ क्षत्रियवैश्ययोः प्रायश्चित्तिस्त्वेविशेषमाहांगिराः॥ पर्षद्याब्राह्मणानांतुसाराज्ञांद्विगुणामता वैश्यानांत्रिगुणाप्रोक्तापर्षद्वत्तु व्रतंस्मृतम् १ ब्राह्मणो ब्राह्मणानांतु क्षत्रियाणांपुरोहितः वैश्यानांयाजकश्चैवतएवव्रतदाःस्मृताः २ अगुरुः क्षत्रियाणांचवैश्यानांचाप्ययाजकः प्रायश्चित्तंसमादिश्य तप्तकृच्छ्रंसमाचरेदिति ३

सहस्र१००० कर्के और उपपातकविषे पर्जा ५० कर्के और अल्पपापविषेअल्पकर्केसभाकहीहै १ क्षत्री औरवैश्यकेतांई प्रायश्चितकहनेविषेविशेषकोअंगिरसऋषिकहताहै पर्षेति जो सभाब्राह्मणांकेतांई प्रायश्चितकहणेविषेकहीहै सो क्षत्रियोंकेतांई दूणीजानणी और वैश्यांकेतांई त्रीणीकहीहै और सभाकी न्यांई व्रतभी कहाहै १ ब्राह्मणांतांई प्रायश्चित्तकों ब्राह्मण कहे और क्षत्रियांकेतांई पुरोहित और वैश्यांकेतांइ याजक व्रतकों कहण २ अग्विति क्षत्रीयांका नहि जो पुरोहित और वैश्यांकाजो अयाजकहै क्यानहियज्ञकरवाणेवालासोप्रायश्चित्तकोकथनकरेतांतप्तकृच्छ्रव्रतकोंकरे ३

भविष्यपुराण विषे कहाहै चेति शूद्रांके तांइ महात्माऋषियांनें चतुर्गुण सभाकहीहै और व्रतभी पापकर्मांकी शुद्धि वास्ते चतुर्गुण कहाहै १ इसमें व्यवस्थाकर्तेहैं एह द्विगुणआदिक व्रतकाविधान उत्तमजातिकी हत्याविषे जान्नणा इतरजातिविषे व्रतकों थोडाकहणा तैं तैसे चतुर्विंशतिके मत विषे दिखायाहै प्रेति जो प्रायश्चित्त ऋषियांनें ब्राह्मणकों कथनकीताहै क्षत्री तिसके त्रयपादकरे और वैश्य दो पाद औरशूद्रएकपाद करे संपूर्णपापविषे इति १ चतुर्विंशति मतविषे सभाकालक्षण कहाहै श्रौतेति श्रुति प्रोक्त अग्निके धारणवाले औरवेदके पठनविषे युक्त औरपंचयज्ञांके करणे वाले ऐसेब्राह्मणसभाके योग्यकहेहैं १ स्वेति औरअपनेसंबंधियांविषे औरदूसरे

भविष्ये चतुर्गुणातुशूद्राणांपर्षत्प्रोक्तामहात्मभिः पर्षद्वच्चव्रतंप्रोक्तं शुद्धये पापकर्मणामिति १ इयंचव्रतवृद्धिरुत्तमजातिहननेद्रष्टव्या इतरवधेव्रतह्रासस्यविधानात् तथाचचतुर्विंशतिमतेदर्शितम् प्रायश्चित्तंयदाम्नातं ब्राह्मणस्यमहर्षिभिः ॥ पादोनंक्षत्रियःकुर्यादर्धंवैश्यःसमाचरेत् १ शूद्रःसमाचरेत्पादमशेषेष्वपिपाप्मास्विति श्रौताग्निधारकाविप्राःश्रुताध्ययनशालिनः पंचयज्ञपरायेचपार्षदास्तेप्रकीर्त्तिताः १ स्वजनेपरजनेवापिसमाः सर्वेषु जंतुषु शत्रुष्वपिसमायेच तेषुपर्षत्प्रशस्यते २ वेदपूर्णमुखाविप्राधर्मशास्त्रसमन्विताः ज्ञानिनःकृतकर्माणस्तेषांपर्षत्प्रशस्यते ३ गायत्रीसारमात्रायेधर्मशास्त्रवहुश्रुताः मुनिमार्गानुयातारोज्ञानिनोयाज्ञिकारतथा ४ वेदव्रतेषुयेस्नाताधर्मशास्त्रानुयायिनः गोब्राह्मणहितायेचतेषांपर्षत्प्रशस्यते ५

विषे जो समहैं और संपूर्ण जीवांविषे औरशत्रुयोंविषेभी जो सम हैं तिनांकी सभाश्रेष्ठकहीहै २ वेदेति वेदकरकें पूर्णहै मुखजिनांका और धर्मशास्त्रके जानणेवाले और ज्ञानीऔर शुभ कर्मांके करणेवाले जोहैं तिनांकी सभाश्रेष्ठकहीहै ३ गायेति और गायत्री सारके जानणे वाले और वहुत श्रवणकीताहै धर्मशास्त्रजिनोनें और मुनियोंकी न्याईं धर्मके करणे वाले और ज्ञानी और यज्ञके करवाणवाले ४ वेदेति वेदव्रतां विषे स्नात और धर्मशास्त्रकेअनुसार वर्त्तनवाले औरगौयों और ब्राह्मणांकेहितकरणे विषे युक्त जो ब्राह्मणहैं तिनकी सभा श्रेष्ठ कहीहै ५

पंचेति पंचपक्षमैंनें पूर्व कहेहैं और जो अन्यपक्षहैं वा अपरहैं अर्थात् तिन पांचोंमें से जो और मतकहेहैं तिनसभनांमेंसे जोपुरुष नहीं प्रवृत्ति विषे युक्त क्या सर्व वस्तुके त्यागकरके ही प्रसन्नहैं सो सभाविषें कथन करनें चाहिये अथवा पंचपक्षशोकगुणसे हीन ये होरहैं सो जेकर निवृत्तिपर होणा तांउनकोंभी सभा जाननी ६ क्षत्रियादिकों सभाकाअधिकारनहींहै एह कहा है धर्मविवृतिविषें क्षत्रेति क्षत्रिय और वैश्य और शूद्र कदाचित् भी प्रायश्चित्तके विधानकों न करे अर्थात् ब्राह्मण विना उपदेश नहोवे ऐसा बुद्धिमान् कहतेहैं १ अव्रतेति जो पुरुष व्रतोंसें रहितहैं और मंत्रसे रहितहैं और जातिमात्र करके उपजीविका करणे वालेहैं ऐसे हजारांभी एकत्र होवें तिनको सभाका अधिकार नहींकहा अव्रतानां इत्यादिकों विषे ब्राह्मण पदका अध्याहार करलेना २ शूद्रकों निषेध चतुर्विंशतिमतविषेंभी कहाहै श्वेति जैसे श्वानचर्मस्थित दु

पंचपूर्वंमयाप्रोक्तायेचान्येवापरेपरे निवृत्तिपरितुष्टायेपार्षदस्तेप्रकीर्तिताः ६ क्षत्रियादीनांपरिषत्त्वंनास्तीत्युक्तंधर्मविवृत्तौ क्षत्रियोह्यथवैश्योवा शूद्रोवानकथंचन प्रायश्चित्तविधानंहिकुर्वीतेतिविदुर्बुधाः १ अव्रतानाममंत्राणांजातिमात्रोपजीविनां सहस्रशःसमेतानां परिषत्त्वंनविद्यतइति २ अव्रतानामित्यादिषु ब्राह्मणानामितिशेषः ॥ शूद्रस्यनिषेधश्चतुर्विंशतिमते ऽपि श्वचर्मणियथाक्षीरमपेयंब्राह्मणादिभिः तद्वत्शूद्रमुखाद्वाक्यं नश्रोतव्यंकथंचन १ पंडितस्यापिशूद्रस्य शास्त्रज्ञानरतस्यच वचनंतस्यनग्राह्यं शुनोच्छिष्टंहविर्यथा २ शूद्रोज्ञानावलेपेन ब्राह्मणान्भाषतेयदि सयाति नरकंघोरं यावदाभूतसंप्लवमिति ३ पाराशरेणापि दुःशीलोऽपिद्विजः पूज्योनतुशूद्रोजितेंद्रियः ॥ कःपरित्यज्यगांदुष्टांदुहेच्छीलवतींखरी मिति १

ग्धहोवे सो ब्राह्मणादिकोंको पानकरने योग्यनहीं तिसी प्रकार शूद्रके मुखसें वाक्य कदाचित्भी श्रवणकरणेंयोग्य नहीं अर्थात् धर्मका उपदेश शूद्रसे नहीं श्रवण करना चाहिये १ पंडितेति पंडितभी होवे और शास्त्र ज्ञान विषभी युक्तहोवे तोभी तिस शूद्रका वचन नहींग्रहणकरणेयोग्य जैसे श्वानका उच्छिष्ट हवि ग्रहण करणे योग्य नहीं२ शूद्रेतिजो शूद्र ज्ञानके मदकरके ब्राह्मणों कोंवचनकहे सोप्रलयपर्यंतघोरनरककोंप्राप्तहोताहै इति ३ पाराशरजीनेभीकहाहै दुश्शीलेति ब्राह्मणदुष्टस्वभाव वालाभीपूजनें योग्यहै और शूद्र जितेंद्रियभी अपूज्यहै इसमें दृष्टांत कहतेहैं कइति कौण पुरुष दुष्ट गौको त्यागकर उत्तम शीलवाली गधीकों दोहदाहै इति १

इमेति एह ब्राह्मण प्रायश्चित्तके अर्थवाले ने पूजने योग्यहैं उपस्थानके अर्थ ब्राह्मणोंको वस्त्रादि कों करके प्रसन्नकरे इसप्रकार प्रायश्चित्तकरणे योग्यहै और महापापों विषें राजाभी पूजनेयोग्यहै तैसेही देवलजीका वाक्यहै स्वयमिति अल्पदोष विषे ब्रह्मणोंने आपही प्रायश्चित्त कहणा और महांपापोंविषें राजाने ब्राह्मणोंकेसाथ परीक्षाकर्के तिनों पापोंविषें कृच्छ्रव्रत करवाणे योग्यहै इसी मेपराशरजीकावचनहै पापमितिपापीपुरुष गौ और वृषकोंदेकरपापकोंकथनकरे १ इदमितिएह गौ और वृषभकादान प्राजापत्यव्रतसें अधिक प्रायश्चित्तविषे जानणा प्राजापत्य व्रततक प्रायश्चित्त विषें दानकों विष्णुजीकहतेहैं पादेति पादव्रतविषेंवस्त्रदान और कृच्छ्रकेदोपाद व्रत विषे तिल और स्वर्णदान और तीनपाद व्रतविषें एक गोदान और संपूर्ण कृच्छ्रव्रतविषे गौ और वैल

इमेहि प्रायश्चित्तार्थिनोपस्थेयाः उपस्थानंचब्राह्मणान् वस्त्रादिनासंतोष्य कर्त्तव्यम् महापापेषु राजाप्युपस्थेयः तथाचदेवलः स्वयंवाब्राह्मणैःकृच्छ्र मल्पदोषेविधीयते ॥राज्ञाचब्राह्मणैश्चैवमहत्सुसुपरीक्ष्यचेति १ कृच्छ्रंतत्त त्पापेषुक्रियमाणंव्रतं।पराशरः।पापंप्रख्यापयेत्पापी दत्त्वाधेनुंतथावृषमिति इदंगोवृषदानं प्राजापत्याधिकप्रायश्चित्तविषयम् प्राजापत्यपर्यंतं ॥ विष्णु राह ॥ पादव्रतेवस्त्रदानंकृच्छ्रार्धेतिलकांचनं पादहीनेतुगामेकां कृच्छ्रेगो मिथुनंस्मृतमिति १ इदंगोवृषदानमुपपातकविषयम् महापापादिष्वधि कंकल्प्यमितिमिताक्षरायां अल्पपापेष्वपितत्रैव तस्माद्द्विजः प्रत्यवार्यो प्रायःसंकल्प्यवारिणा विख्याप्यपापंवक्तृभ्यः किंचिद्दत्त्वाव्रतंचरेत् १ किंचि द्दत्वापापंविख्याप्यव्रतंचरेदित्यन्वयः एतत्प्रकीर्णकविषयमिति मदनरत्ने ज्ञात्वाप्रायश्चित्ताकथने दोषआप्तानामित्यादिना प्रथमप्रकरणांते प्रोक्तः

दान कहतेहैं इति १ एह गौ और वैलका दान उपपातकके प्रायश्चित्त विषें जानना और महा पापों विषे अधिकदान करणे योग्यहै एह मिताक्षराविषेंकहाहै और अल्पपापों विषे जो व्रतका प्रकारहै सो मिताक्षराविषेंहीकहाहै तस्मेति तिसकारणसें पापके करणेवाला प्रायश्चित्तकेकहणे वा लोंको कुछदेकर पापकों प्रकटकरे और जलसाथ संकल्प करके देवे पीछे व्रतको करे एह प्रकीर्णक प्रायश्चित्त विषे जानना ऐसे मदन रत्नविषे कहाहै जो धर्मशास्त्रको जाणकर प्रायश्चित्त के पूछणेको आयेहुवे दुःखीको प्रायश्चितकों न कहें तिनको दोषहै सो प्रथम प्रकर णकेअंतविषेंकहाहै

प्रायश्चित्तेति प्रायश्चित्तके उपदेशकी विधिकों अंगिरस ऋषिकहतेहैं वचइति धर्मवेत्ताओंने प्रथम प्रायश्चित्तका धर्मशास्त्रोक्त वचन कहनेयोग्यहै पीछेसमर्थताकों देखकर पापकीन्यूनता अधिकताके अनुसार अनुग्रहकों करें क्या प्रायश्चित्तकी न्यूनताकों करें १ और सभाका वचन सबको प्रमाण करणा चाहिये एह कहतेहैं नहीति तिन महात्माओंके वचनोंको उछंघन करके अतिशय करके है एहज्ञान जिनको असेविद्वानोंनेंभी और कथनकरणा उचित नहीं २ फेर अंगिरस ऋषिका वचनहै ततइति तिसकारणसे सो महात्मा वृद्ध आगे नमस्कारकर्के और हाथ जोडकर नम्रता पूर्वक वैठेहुवे को पूछतेहैं हमारे साथ तेरा क्या प्रयोजनहै ३ कहीं क्यों

प्रायश्चित्तोपदेशविधिमाहांगिराः वचःपूर्वमुदाहार्यं यथोक्तंधर्मवक्तृभिः पश्चात्कार्यानुसारेण शक्त्याकुर्युरनुग्रहम् १ वचःप्रायश्चित्तविधायकं अनुग्रहः प्रायश्चित्तन्यूनता नहितेषामतिक्रम्यवचनानिमहात्मनां प्रज्ञानैरपिविद्वद्भिः शक्यमन्यत्प्रभाषितुमिति २ पुनःसएव ॥ ततस्तेप्रणिपातेनदृष्ट्वातंसमुपस्थितम् वृद्धाःपृच्छंतिकिंकार्य्यमुपविश्याग्रतःस्थितम् ३ किंतेकार्य्यंवदास्माभिःकिंवामृगयसेद्विजान् तत्वतोब्रूहितत्सर्वंसत्यंहिगतिरात्मनः ४ सत्येनद्योततेराजासत्येनद्योततेरविः सत्येनद्योततेवह्निः सर्वंसत्येप्रतिष्ठितम् ५ भूर्भुवःस्वस्त्रयोलोकास्तेपिसत्येप्रतिष्ठिताः अस्माकंचैवसर्वेषां सत्यमेवपरंबलम् ६ यदिवक्ष्यसिसत्यंनियतंप्राप्स्यसेशुभम् यद्यागतोस्यसत्येननत्वंशुद्ध्यसिकर्हिचित् ७ एवंतैःसमनुज्ञातःसर्वंब्रूयादशेषतइति ८ उपदेशस्तुपरिषद्गंतर्गतैनैकेनैवकार्य्यः

ब्राह्मणोंकों दूढताहैं यथार्थता करके संपूर्णसत्यकरकेकहो सत्यहीआत्माकास्वरूपहै ४ सत्यकर्के चंद्रमा और सूर्य और अग्नि प्रकाशते हैं सभकुछ सत्यविषें स्थितहै ५ भूर्भुवेति पृथ्वी लोक और आकाश और स्वर्ग एह तीनलोकभी सत्यकर्के ही स्थितहैं हमारे संपूर्णोंका भी उत्कृष्टबल सत्यहीहै ६ जद तूं सत्यकहेंगा तो निश्चयकरके शुभको प्राप्तहोवेंगा जेकर असत्यका अंगीकार करके आयाहैं तबतूं कदाचितूभी शुद्धीको न प्राप्त होवेंगा ७ इस प्रकार तिनब्राह्मणोंकी आज्ञाकों प्राप्तहुवा २ सभाविषें संपूर्ण सत्यही कहे ८ अब कहतेहैं कि चाहे सभामें कितने होण परंतु एकब्राह्मणनें ही प्रायश्चित्तका उपदेश कथन करणे योग्यहै

इस विषे अंगिरस ऋषिकावचनहै आहूयेति जो ब्राह्मण प्रायश्चित्त उपदेशके कथनवास्तेसभाने नियत कियाहै सोब्राह्मण प्रायश्चित्तीकों बुलाकर कथन करे क्या हे ब्राह्मण श्रवण कर जो व्रत मैनेतेरेको कथन करीदाहै सो तैने यत्न करके करणेयोग्यहै जेकर न करेंगा तो तेरा सभकृत्य वृथाहिहै २ अब असमर्थविषेदेवलजीकावाक्यहै प्रेति शास्त्रानुसार किहा जो प्रायश्चित्त तिसके करणे विषे असमर्थ होवे तो तिसकी सामर्थ्यके अनुसार अनुग्रह करे क्योंकि तिसने किया जो पूजा इत्यादि तिसकोअनुग्रहका कारण होणेसें १ प्रायश्चित्त देशकालादिक देखकर देणेयोग्यहै तैसेही बौधायन ऋषि भी कहतेहैं शरीरमिति शरीरकी कृशता स्थूलतादि और कृशता आदिविषेभी बल निर्बलको और वय जो बाल्यादिअवस्था तिसविषे भी सोलां वर्षों तक बाल कहाहै सोकितने वर्षोंका है ऐसे कहकर निर्णय करे और काल शीतादि और क्या कर्म कर.

अंगिराः ॥आहूयश्रावयेदेकःपर्षदायोनियोजितः शृणुष्वभोइदंविप्रयच्चत्र्या दिश्यतेव्रतम् १ तत्तद्यत्नेनकर्त्तव्यमन्यथातेवृथाभवेदिति २ देवलः॥प्रायश्चित्तं यथोद्दिष्टमशक्त्यातद्वशात्पुनः इष्यतेनुग्रहश्चापिपूजानुग्रहकारणात् १ प्रायश्चित्तंदेशकालादिपूर्वकंदातव्यम् तथाह॥बौधायनः॥ शरीरंबलमायुश्चव यःकालंचकर्मच समीक्ष्यधर्मविद्बुध्याप्रायश्चित्तंप्रकल्पयेदिति १ इदंचा चिंतैर्ब्राह्मणैर्देयमित्याह सएव अनर्चितैरनाहूतैरपृष्टैश्चैवसंसदि प्रायश्चित्तंनवक्तव्यं जानद्भिरपिचद्विजैः २ न्यायतोमार्गमाणस्य क्षत्रियादेः प्रणामिनः अंतराब्राह्मणंकृत्वाव्रतमेतत्समादिशेत् ३ हारीतः ॥ यथावयोयथाकालं यथाप्राणंचब्राह्मणे ॥ प्रायश्चित्तंप्रदातव्यंब्राह्मणैर्वेदपाठकैः १ वयोबाल्यादि कालः शीतादिः प्राणः कार्श्यमांसलत्वादिर्बोध्यः तदनतिक्रमेणदातव्यमित्यर्थः

ताहै इस संपूर्णको धर्म वेत्ता बुद्धिपूर्वक विचार कर प्रायश्चित्तको कथनकरे १ पूजाको प्राप्तहुवे जो ब्राह्मण तिनोंने इह प्रायश्चित्तदेणे योग्यहै इसको बौधायनजी कहतेहैं अनर्चितेति प्रायश्चित्तको जाणते जो ब्राह्मण सो सभाविषे नहीं पूजे और बुलायेभी नहीं और पूछेभीनाहितिनोंने प्रायश्चित्त नहीं कहने योग्य २ अब क्षत्रियादि विषे कहतेहैं न्यायेति तिस कारणसें नीतिपूर्वक पापके दूर करणे लिये ढूंढते और नमस्कारकरते जो क्षत्रियादि तिनको मध्यविषे ब्राह्मण बैठाकर प्रायश्चित्त कथन करे अर्थात् क्षत्रियादि ब्राह्मणको साथ लेकर व्रतको पूछे और तैसे ही करे ३ अवहारीत ऋषिका वचनहै यथेति वेदपाठी ब्राह्मणोंने ब्राह्मणके ताईं प्रायश्चित्त वय बाल्यादिअवस्था काल शीतादि प्राण कृशस्थूलादि एह सब देखकरदेणे योग्यहै १

तस्मेति तिसकारणथें सामर्थ्यको देखकर कृच्छ्रका अर्ध वा पाद क्या कृच्छ्रका चतुर्थांश विधि बलनिर्बलकों और शीतादि कालकों जानकर प्रायश्चित्तकों कथनकरे २ असमर्थ पुरुष कि अनुग्रहकोंपराशरजीकहतेहैं दुर्बलेति निर्बलपुरुषविषे तैसे बाल और वृद्धाविषे अनुग्रहकरणेयोग्य इतोंते अन्यविषे अनुग्रहकरे तो दोषहोताहै तिसकारणसें और विषे अनुग्रहक्या प्रायश्चित्तकीन्यू नताकरे १ सोई कहतेहैं वृद्धेति वृद्धादिकों विषें अर्ध प्रायश्चित्तकहाहै जो अस्सी ८० वर्षका सो वृद्धजानणा और बाल सोलां १६ वर्षसेन्यूनजानना और स्त्रियां और रोगीइनकोअर्द्धप्रायश्चित्तकहाहै २ अबप्रायश्चित्तकेदेशकोंपराशरजी कहतेहैं प्रेति सर्वदाही देवताके मंदिरकेसन्मुख प्रायश्चित्तकोंदेव देवतायतनकहणे करके पवित्रक्षेत्र और तीर्थादिकोंका भी ग्रहणकरणा प्रायश्चित्तदा

तस्मात्कृच्छ्रमथाप्यर्द्धंपादंवापिविधानतः ज्ञात्वाबलाबलंकालं प्रायश्चित्तंप्रकल्पयेत् २ अशक्तावनुग्रहमाहपराशरः॥ दुर्बलेऽनुग्रहः कार्यस्तथैवाशिशुवृद्धयोः अतोऽन्यथाभवेद्दोषस्तस्मान्नानुग्रहोभवेत् १ वृद्धादौत्वर्धंप्रायाश्चित्तं अशीतिर्यस्यवर्षाणि बालोवाप्यूनषोडशः प्रायश्चित्तार्द्धमर्हंतिस्त्रियोरोगिणएवच २ प्रायश्चित्तदेशमुपदिशतिपराशरः। प्रायश्चित्तंसदादद्याद्देवतायतनाग्रतः॥ इदंपुण्यक्षेत्रतीर्थादेरुपलक्षणम् प्रायश्चित्तदानोत्तरंप्रायश्चित्तनिर्देष्टृणां जप्यमाह हारीतः॥ प्रायश्चित्तंतुनिर्दिश्यकथंपापात्प्रमुच्यते यत्पवित्रंविजानीयाजपेद्वावेदमातरम् १ वेदमाता गायत्री अनुग्राहकस्वरूपमाहांगिराः॥ कृत्वापूर्वमुदाहारं यथोक्तंधर्मकर्तृभिः पश्चात्कार्य्यानुसारेणशत्त्याकुर्युरनुग्रहम् १ प्रायश्चित्तंयथोद्दिष्टमशक्यंदुर्बलादिभिः इष्यते नुग्रहस्तेषां लोकसंग्रहकारणात् २

नसें पीछे प्रायश्चित्तके कहनेवालोंको जो जपने योग्यहै तिसकोंहारीत ऋषिकहतेहैं प्रेति प्रायश्चित्तकों कहकर आप कैसें पापसें रहितहोताहै सो कथन करतेहैं जिसकों पवित्रजाने तिसकोंजपे वा वेदमाता जो गायत्री तिसकोंजपे १ अनुग्रहकरणे योग्यजोहैं तिसके अर्थ अंगिरस ऋषि कहतेहैं कृत्वेति धर्मकरणवाले अथवाधर्मकहणेवाले ऋषियोंने जैसे पापके दूरकरणे वास्ते प्रायश्चित्त चांद्रायणादि कहाहै तिसकों प्रायश्चित्ती को पूर्वकहकर पीछे पापके अनुसार तिनकी सामर्थ्यकों देखकरअनुग्रहकोंकरें (धर्मवक्तृभिः) ऐसाभी किसे पुस्तकमेंपाठहै १ निर्बल पुरुषोंने यथोक्त प्रायश्चित्तकरणे को अशक्यहै तो तिनोंपर अनुग्रह करणे योग्यहै जिसप्रकार लोक प्रायश्चित्तकों करें भय करके त्याग न करें इसी कारणथें २

एकइति और अनुग्रह करणे को एकब्राह्मण योग्यनहींहै चाहे सहित अंगोंके वेदके जाननेवा लाभीहोवे धर्मके जाननेवाले बहुत ब्राह्मण इकठेहोकर अनुग्रहकरणेको योग्यहैं ३ जिसस्था नमें अनुग्रह कहाहै तिस जगासें विना जो अनुग्रहकरतेहैं तिनके वास्ते पराशरजी दोषकहतेहैं स्नेहति प्रीतिसैं लोभसें और भयसें और अज्ञानसें प्रायश्चित्तीके ऊपर जो अनुग्रह करतेहैं तिस पापीका पाप अनुग्रह करणेवालों विषे प्राप्तहोताहै १ जैसे समर्थकेऊपर अनुग्रहकिये होयां दो षहै इसीप्रकार असमर्थके ऊपरनहीं अनुग्रहमे दोषहोताहै एहवाक्य पराशरजी कहतेहैं शरीरस्ये ति शरीरका नाश प्राप्तहोयां २ असमर्थको जो नियमकहतेहैं और समर्थके बडे पापविषे जो नियम नहीं कहतें सो तिनोंके पापके भागी होतेहैं २ अथेति प्रायश्चित्त करणेको समर्थ जो पुरु

एकोनार्हतितत्कर्तुमनूचानोप्यनुग्रहम् धर्मज्ञावहवोविप्राःकर्तुमर्हत्यनुग्रह मिति ३ उक्तातिरेकेणानुग्रहे प्रत्यवायं विशदयति ॥ पराशरः ॥ स्नेहा द्वायदिवालोभाद्भयादज्ञानतोपिवा कुर्वंत्यनुग्रहंयेतु तत्पापंतेषुगच्छति १ यथा समर्थानुग्रहे प्रत्यवायस्तथा दुर्बलाननुग्रहेऽपीत्याह ॥ पराशरः ॥ श रीरस्यात्ययेप्राप्ते वदंतिनियमंतुये महाकार्योपरोधेच नस्वस्थस्यकदाच नेति २ पततिनरकेशुचौ इत्यनेनसंवंधः अथप्रायश्चित्ताचरणक्षमस्य प्रतिनिधिर्नकारयितव्य इत्याह ॥ पराशरः ॥ स्वस्थस्यमूढाः कुर्वंतिवदं तिनियमंचये ॥ तेतस्यविघ्नकर्त्तारःपततिनरकेऽशुचौ ३ प्रतिनिधिनियामकं शास्त्ररहस्यमजानंतो ये स्वस्थस्यापिप्रातिनिधिंकुर्वंति यश्चप्रातिनिध्येन प्रायश्चित्तंकरोति सर्वेपि तेतस्यनिमित्ततः पापनिवृत्तौ विघ्नंकुर्वंतीत्यशुचौ नरकेपतंतीत्यर्थः ३

ष तिसका प्रतिनिधि अर्थात् प्रायश्चित्त करणे वास्ते दूसरा पुरुष नहीं स्वीकारकरणा एहपराशर जीकावाक्यहै स्वस्थस्येति स्वस्थक्या समर्थ पुरुषके प्रायश्चित्तके वास्ते प्रतिनिधिको जो मूढ अ र्थात् शास्त्ररहित पुरुष करतेहैं और असमर्थको नियमहीकहतेहैं अर्थात् प्रतिनिधि को नहींकरते सो तिसके विघ्न कर्ताहैं और अतिशोक युक्तहुवे २ नरकमे पडतेहैं ३ प्रतिनिधीति इसीका अर्थमूलमें स्पष्टकर्के कहाहै जो पुरुष समर्थ पुरुषके प्रायश्चित्तके वास्ते प्रतिनिधिको स्वीकार करते हैं सोप्रतिनिधिके नियमकरणे वाला जो शास्त्रकारहस्य तिसको नहीं जानतेहैं और जो प्रतिनिधि करकेप्रायश्चित्त करताहै सो सभ अर्थात् दो २ निमित्तसें पाप निवृत्तिके विषे विघ्नकरते हैं और अशुचि नरकके विषे पडतेहैं ३

अथेति अब प्रायश्चित्त करणे वालेको जो योग्यहै सो विष्णु ऋषिकहताहै सर्वेति प्रायश्चि
करणेकी इच्छा होवे तो संपूर्ण पापोंके निमित्त संपूर्णव्रतोंका विधिपूर्वक ग्रहणकरणा तिसको क
थनकरताहूं १ दिनेतिक्या दिनांते अर्थात् सायंकाल विषे नखरोमोंको कटवा करके स्नान करे
भस्म गोमय मृत्तिका और जल और पंचगव्य इनोंकरके मलको दूरकरे शरीरको शुद्धिवास्ते २
दंतधावनेति दंतधावनकरके और पंचगव्य पान करके सायंकालविषे तारयोंका दर्शन करके व्रत
ग्रहण करणेयोग्यहै ३ आचम्येति आचमनकरके मौन धारकर अपने पापका चिंतनकरे औ
मनके संताप करणे वाला जो शोक तिसकोंकरे अंतःकरणसें ४ रोमेति रोमशब्दकरके श्मश्रु
अर्थात् दाडीका ग्रहणहै और आदिशब्दकरकें केशोंका ग्रहण करणा वाह्यशौच अर्थात् पाप

अथेतिकर्त्तव्यतामाहविष्णुः ॥ सर्वपापेषुसर्वेषांव्रतानांविधिपूर्वकम् ग्रहणंसं
प्रवक्ष्यामिप्रायश्चित्तेचिकीर्षिते १ दिनांतेनखरोमादीन् प्रवाप्यस्नानमा
चरेत् भस्मगोमयमृद्वारि पंचगव्यादिकल्पितैः ॥ मलापकर्षणंकार्य्यं
वाह्यशौचविवृद्धये २ दंतधावनपूर्वेणपंचगव्येनसंयुतम् व्रतंनिशामुखेग्राह्यं
वहिस्तारकदर्शने ३ आचम्यातःपरंमौनीध्यायन्दुष्कृतमात्मनः मनःसं
तापनंतीव्रमुद्वहेच्छोकमंततइति ४ रोम श्मश्रु आदिना केशग्रहणं बाह्यशौ
चं पापनिर्हरणं ॥ व्रतं होमशेषरूपमिति महार्णवे व्रतंनामप्रायश्चित्तसंक
ल्पः ॥ इतिमाधवः ४ मनुरप्याह ॥ ख्यापनेनाऽनुतापेनतपसाऽध्ययनेनच
पापकृन्मुच्यतेपापात्तथादानेनचापदि १ अध्ययनंश्रवणोपलक्षणं आपदी
त्यनेनाऽध्ययनतपसोर्दानमनुकल्प्यमित्युक्तं हिंसातिरिक्तविषयकमिदम्

का दूरकरणा और व्रतशब्दकरके हवनकरणा एह महार्णव ग्रंथका मतहै और व्रतनाम प्रायश्चि
त्तका संकल्प करणा एह माधवजीका मतहै ४ और मनुजीभी इसी मतको पुष्ट करतेहैं ख्यापने
ति पापकरणे वाला जो पुरुष सो महात्माओंके पास तिस पापको कथनकरके और अनुता
प और तप और वेदके पडने करके पापसें रहित होताहै और आपत् कालविषे दान करके
पापसे रहित होताहै १ और अध्ययनशब्दकरके श्रवणकाभी ग्रहणहै और आपदकालविषे अ
ध्ययन और तपका संभव नहीं होताहै इसवास्ते तिनकी जगा दानकरे एहअनुकल्प अर्थात् ल
घुपक्षहै और सोदान हिंसासे अतिक्ति विषयक करणे विषे लघुपक्षहोताहै

और हिंसा स्वरूप पापकी निवृत्तिके वास्ते दानही मुख्यपक्षहै सो कहाहै भविष्य पुराण विषे हिंसेति हिंसात्मक अर्थात् हिंसास्वरूप सभप्रायश्चित्तोंके समूहजो ऋषिओंने कहेहैं तिनोंके दूर करणे वास्ते दान करणा प्रथम कल्पहै अर्थात् मुख्य कहीदाहै १ तैसे ही मनुजीने कहाहै वधमिति सर्पादिकोंके वधसे उत्पन्नहुवा जो पाप तिसको दानकर्के दूरकरणेको असमर्थहोवे जो द्विज सो पापकी निवृत्तिके वास्ते एक २ वधके प्रति एक २ कृच्छ्रकरे अर्थात् जितने सर्पादि मारे होन उतनेही कृच्छ्र करे १ और इस श्लोककी व्याख्या क्या अर्थ उपपातक प्रकरण विषे करदियाहै और संवर्त्तजीने कहा जो सामान्य प्रायश्चित्त तिसमें जैसे कहाहै सो कहतेहैं हिरण्येति हिरण्यदान अर्थात् सुवर्णदान और गोदान भूमिदान एह जो दानहैं सो सामान्य पापोंको और महापातकीकेसंसर्गसें उत्पन्न हुवे जो पाप तिनकोभी दूरकरतेहैं १ और यमजीभी इसी

हिंसायांतुदानंमुख्यं तदुक्तंभविष्ये हिंसात्मकानांसर्वेषां कीर्त्तितानांमनीषिभिः प्रायश्चित्तकदंबानां दानंप्रथमउच्यते १ तथाचमनुः ॥ वधंदानेननिर्णेक्तुं सर्पादीनामशक्नुवन् एकैकशश्चरेत्कृच्छ्रंद्विजःपापापनुत्तये १ व्याख्यातोऽयंश्लोक उपपातकप्रकरणे ॥ संवर्त्तप्रोक्ते सामान्यप्रायश्चित्तेयथा ॥ हिरण्यदानंगोदानं भूमिदानंतथैवच नाशयंत्याशुपापानि महापातकजान्यपि १ यमोपि ॥ शोषणेनशरीरस्य तपसाध्ययनेनच पापकृन्मुच्यतेपापाद्दानेनच दमेनच १ तथाचमनुः ॥ कृत्वापापंहिसंतप्यतस्मात्पापात्प्रमुच्यते ॥ नैतत्कुर्य्यांपुनरिति निवृत्त्यापूयतेतुसः १ विष्णुपुराणे ॥ प्रायश्चित्तान्यशेषाणितपःकर्मात्मकानिवै ॥ यानितेषामशेषाणां कृष्णानुस्मरणंपरम् १

पक्षको पुष्टकरतेहैं शोषणेति पापके करणे वाला जो पुरुष सोशरीरके सुकाणे करके अर्थात् व्रतकरणेंकरके और तपकरणे करके और वेदपढने करके और दानकरणेसे और दमन करके अर्थात् इंद्रियोंके जीतने करके पापोंसे रहित होताहै १ और मनुजीभी इसीपक्षको दृढकरतेहैं कृत्वेति जोपुरुष पापको करके फेर मनमें बहुतसंताप करे तो पापसे रहित होताहै फेरमें ऐसा पाप नहीं करूंगा इसनिवृत्तिसें वोह पुरुष पवित्र होजाताहै १ और विष्णुपुराण विषे पाप निवृत्तिके वास्ते और प्रकार कहाहै प्रायश्चित्तानीति संपूर्ण पापोंकी निवृत्तिकेवास्ते जो सभ तपस्वरूप और कर्मस्वरूप प्रायश्चित्तहैं तिनके मध्यविषे विष्णुका स्मरणरूप प्रायश्चित्त परहै अर्थात् श्रेष्ठहै १ इसीका अर्थ मूलमें स्पष्ट करके कहाहै

यानीति और इसके अर्थका बिस्तार साधारण प्रकरणविषें जान लेणा और एह साधारण प्रकरणविषें कहेजों प्रायश्चित्त सो अनादेश विषें अर्थात् जिस पापके वास्ते प्रायश्चित्त नहीं कहा उसपापकी लाघवता और गौरवताकी तारतम्यताको देख करके अर्थात् वोह पाप थोडा होवे वा वडाहोवे इसवातको देखकर कहने योग्यहैं जैसे अल्प पाप होवें तो कुछ थोडाजैसा सुवर्णदानकरवाणा उससें अधिकहोवें तो गोदान करे ॥ फेर यहीप्रकार विष्णुपुराणविषें भी कहाहै एवमिति हेपुत्र ऐसेही विषय भेदसें संपूर्ण छोटे वडे जो प्रायश्चित्तहैं तिनोंकी व्यवस्था क्यास्थिति करवाणीयोग्यहै सो कहतेहैं थोडे पापके वास्ते थोडा प्रायश्चित्त कथनकरणा और वडे पापके वास्ते वडाप्रायश्चित्तकथनकरणा १ जेकर हे महावाहो ऐसा नकरे तो थोडे पापकेवास्ते जो वडे पापका करणाहै सो निष्फलताको प्राप्तहोताहै २ विषयेति और जिस

यानि तपःप्रभृतीनि प्रायश्चित्तानि तेषांसर्वेषांमध्येविष्णुस्मरणं श्रेष्ठमित्यर्थः विस्तरस्तुसाधारणप्रकरणेबोध्यः एतान्यनादेशविषय एनसो लाघवगौरवतारतम्यपर्यालोचनयाविकल्पेन योज्यानि तत्रैव एवंविषयभेदाद्व्यवस्थाप्यानिपुत्रक प्रायश्चित्तानिसर्वाणिगुरूणिचलघूनिच १ अन्यथाहि महाबाहोलघूनामुपदेशतः॥ गुरूणामुपदेशोहिनिष्प्रयोजनतांव्रजेदिति २ विषयविवेकाभावेसाधारणं प्रायश्चित्तं प्रयोज्यं ॥ महाभारते ॥ यद्यकार्यशतंकृत्वाकृतंगंगाभिषेचनम् सर्वंदहतिगंगांभस्तूलराशिमिवानलः १ तथा शुद्धिकराणिव्रतानिविश्वामित्रप्रोक्तानिविषयव्यवस्थायै साधारणप्रकरणतोऽवगंतव्यानि ॥ जाबालिः ॥ आरंभेसर्वकृच्छ्राणांसमाप्तौचविशेषतः आज्येनैववहिशालाग्नौ जुहुयाद्व्याहृतीःपृथक् १ विष्णुः ॥ श्राद्धंकुर्याद्व्रतांतेच गोहिरण्यादिदक्षिणामिति

पापका विषय ज्ञान नहींहै उस पापके वास्तेसाधारण प्रायश्चित्त कहणायोग्यहै ॥ महाभारत विषेंभी पापकी निवृत्ति वास्ते और प्रकार कहाहै यदीबि जो पुरुष सैकडे पाप करके फेर गंगाजीका स्नान करे सो गंगाजीका जल उसके संपूर्ण पापोंको दग्धकरताहै जैसे रूंके समूहको अग्नि दग्धकरताहै १ तथेति तैसेही शुद्धीके करणे वाले व्रत जो विश्वामित्रजीने कहेहैं सो विषय व्यवस्थाके वास्ते साधारण प्रकरणसे जानने योग्यहैं ॥ अब जावालि ऋषि प्रायश्चित्तके आरंभका प्रकार कहतेहैं आरंभेति संपूर्ण व्रतोंके आरंभमे और समाप्तिमें विशेषतासें घृतकरके अग्निशालाविषे व्याहृतियोंके अधिष्ठाता जो देवताहैं तिनोंकेवास्तेभिन्न २ हवन करे १ विष्णुजी कहतेहैं श्रेति श्राद्ध और व्रतकेअंतमें गौ और सुवर्णसेआदलेकर आचार्यकेताई दक्षिणादेवे

और इसी वाक्यका अर्थ मूलमें स्पष्ट करके कहाहै आदिना इति आदिशब्दकरके दशदानों का ग्रहण करणा और चकार पठनसें क्या जानतेहैं कि व्रतके आदविषे भी श्राद्धका ग्रहणाहै ॥ विष्णुजीने ऐसे कहाहै वीति अपनी कामनाकरके संकल्पविधीकरके वैष्णवश्राद्धकरे और पिण्डदान नकरे यह स्वरूपवैष्णवश्राद्धकाहै और कैयोंके मतविषे सपिंडभी एहश्राद्धहै फेर ब्राह्मणोंके ताईं गोदान देवे और यथाशक्तिसें दक्षिणाभी देवे १ और संकल्प श्राद्धविषे कितनेक पदार्थ त्यागेहैं जो श्राद्धचंद्रिका विषेकहेहैं सो तिसी श्राद्धचंद्रिकासें जानलेने ॥ और वपन विषें अर्थात् मुंडनविषें वासिष्ठजीने विशेष कहाहै कृच्छ्राणामिति और व्रतरूप जो प्रायश्चित्त तिनके वास्ते श्मश्रुक्या दाढी और केश तिनको कटावे परंतु नेत्रोंके रोम और शिखाको वर्जक

आदिना दशदानानि ग्राह्याणि चकाराद्व्रतादावपि श्राद्धं विष्णुदेवताकंकार्यमित्याह। विष्णुः॥विधायवैष्णवंश्राद्धं सांकल्प्यंनिजकाम्यया धेनुंदद्याद्द्विजेभ्योऽपिदक्षिणांचस्वशक्तितइति १ सांकल्प्यश्राद्धेकेचित्पदार्थास्त्यक्ताः श्राद्धचंद्रिकायां ततएवबोध्याः वपनेविशेषोवसिष्ठेनोक्तः।कृच्छ्राणांव्रतरूपाणांश्मश्रुकेशादिवापयेत् अक्षिरोमशिखावर्जमितिस्मृत्यंतरमपि १ उपपक्षश्मश्रुकेशान्वापयेतक्रमात्सदा॥शिखाप्रकोष्ठभ्रूपस्थान्वर्जयित्वाद्विजोत्तमइति २ कृच्छ्राणांप्रायश्चित्तरूपाणां प्रारंभे वपनं विधेयं पुण्यार्थंकरणेतुनविधेयमितिभावः अतएवगोवधे पराशरः॥ प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रं गोघातीव्रतमुत्तमम् सशिखंवपनंकुर्यात् त्रिसंध्यमवगाहनमिति १

रके और इसी पक्षकोपुष्टकरणे वाली औरभी स्मृतिहै सो कहतेहैं १ उपपक्षेति ब्राह्मण उपपक्ष क्या शिरके दोनों पार्श्वोंके रोम श्मश्रुक्या दाडी और केश तिनको क्रमसे सदाकटवावे शिखा और प्रकोष्ठ क्या हाथका उपरिभाग अर्थात् बांहां और भ्रूक्या नेत्रोंके भवहे उपस्थ क्या लिंग तिनोंके रोमोंकोवर्जकरके अर्थात् इनकेरोम मुंडन विषें न कटवावे २ कृच्छ्राणामिति और प्रायश्चित्तरूप जो व्रत तिनके प्रारंभमें वपन अर्थात् मुंडन करणायोग्यहै और पुण्यवास्ते जो व्रत करणाहै तिस विषे मुंडन न करवावे ३ इसी कारणसें गोवधमें पराशरजीने कहाहै प्राजापत्यमिति घारादिनका प्राजापत्य जो अत्युत्तमव्रतहै तिस व्रतको गोघाती अर्थात् गोहत्या करणे वाला जो पुरुष सो करे और सहित शिखाके मुंडन करवावे और तीन काल स्नानकरे १

ओर संवर्त्तजीके स्मरण विषें विशेष कहाहै पादइति ओर पादविषें अर्थात् तीन दिनकेव्रतविषें अंगोके रोमही कटवावे ओर किसी जगासें न कटवावे ओर किसी जगामें पाद करकेचा रदिनका व्रतभी कहाहै ओर द्विपाद विषें अर्थात् छे दिनके व्रत विषें श्मश्रु अर्थात् दाढी भी कटवावे ओर त्रिपादव्रत विषें शिखाको वर्ज करके मुंडन करवावे ओर निपात विषें अर्थात् संपूर्ण व्रतविषें साशिख मुंडनकरवावें अर्थात् सहित शिखाके १ ओर इसजगा कृच्छ्रग्रहण करणे करके बारांदिनोंकरके साध्यजो व्रत तिसके अधिकारी जो पुरुष तिनको वपन क्या सारा मुंडन कहाहै ओर बारां दिनसे न्यून होवें तो संपूर्ण मुंडन न करवावे २ ओर हारीतजीने केशोंके न वपन करवाणे विषें विशेष कहाहै राजेति राजा ओर राजाका पुत्र ओर बहुतशास्त्रोंको पडाहुवा जो ब्राह्मण एह सब केशोका वपन करवा करके फेर व्रत करण १ ओर जवकेश रहनेदेनेहोवें तो केशोंकीरक्षा वास्ते द्विगुण व्रत अर्थात् चौवी दिनका

संवर्त्तस्मरणेविशेषः ॥ पादेंगरोमवपनंद्विपादेश्मश्रुणोपिच त्रिपादेतु शिखावर्ज्जंसशिखंतुनिपातन इति ॥ १ ॥ अत्र कृच्छ्रग्रहणाद् द्वादशाहसाध्यप्रायश्चित्ताधिकारिणां वपनं भवति न तन्न्यूने ॥ २ ॥ हारीतः राजावाराजपुत्रोवाब्राह्मणोवाबहुश्रुतः॥ केशानांवपनंकृत्वा प्रायश्चित्तंसमाचरेत् ॥ १ ॥ केशानांरक्षणार्थंतु द्विगुणंव्रतमाचरेत् द्विगुणेव्रत आचीर्णे दक्षिणाद्विगुणाभवेत् २ अत्र राजादय उपलक्षणार्थाः यत्रराजादीनामप्येवमन्येषां किमुवक्तव्यमिति कैमुतिकन्यायात् ३ एतच्च ॥ द्विगुणव्रतादिकं महापातकव्यतिरिक्तस्थलेवपनानिच्छोः॥ विद्वद्विप्रनृपस्त्रीणांनेष्यतेकेशवापनम् ऋतेमहापतकिनोनिहंतुश्चावकीर्णिनइति विशेषस्मरणात् ॥ १ ॥

व्रत करण ओर द्विगुण व्रतको करके फेर आचार्यकोदक्षिणाभी द्विगुण देणी चाहिये इसमें राजपुत्र करके राजा की अविवाहितस्त्रीका पुत्रजानणा २ अत्रेति इस जगा राजादिक सब के उपलक्षणहैं कैसेकि जिस पाप विषें राजादिकोंको भी मुंडन कहाहै तो औरोंकी क्या वार्ता है एह कैमुतिकन्यायहै कैमुतिक न्याय उसकोंकहतेहैं जहां वडोकोंकहाहोवे उहां न्यूनोंको जान लेना एतच्चेति एह द्विगुण जो व्रतहै सो नहीं मुंडन करणेकी इच्छा जिस को उस पुरुष को महापातकके विना कहाहै ओर महापातकविषें तो अवश्य करके मुंडन करवावे ३ विद्वद्विप्रेति ओर विद्वद्विप्रअर्थात् विद्वान् जो ब्राह्मण ओर राजा ओर स्त्रीइनको मुंडन नहीं कहाहै (ऋतेमहापातकिनः) अर्थात् महापातकियोंसे विना जेकर महापातकी होवे तो मुंडन अवश्य कराणा (निहंतुः) क्या गवादिवधकरणे वाला जो पुरुष तिसको ओर (अवकीर्णिनः) क्या ब्रह्मचारी होकर स्त्रीसंग करणे वाला जो पुरुष तिनको मुंडन करवाणा उचितहै १

एहविशेषवाक्य प्रायश्चित्त मुक्तावली कारोंकाहै ॥ और विज्ञानेश्वर इसबात विषें विशेषकहतेहैं महेति महापातकोंसे विना एहजो महाराजादिहैं तिनकोंमुंडननहीं कहाहै और महापातकेविषें तो तिनको अवश्यहीकहाहै और तिनकोंनहीं मुंडनकीइच्छाविषे द्विगुणदक्षिणा सहित द्विगुण व्रतकहाहै १ अन्येत्विति और ऋषि ऐसाकहतेहैं कि महापातकादिकोंविषें राजादियोंकोनित्य वपनक्या मुण्डनकिहाहै और अन्यत्रक्या उपपातकादिकोंविषे मुण्डनकी न इच्छाविषे पूर्ववत दूणोदक्षिणा सहित दूणाव्रत करणा उचितहै ऐसाकिहाहै १ विद्वन्मनोहरेति और विद्वन् मनोहरा वणाने वाले आदिककाभी एही पक्ष स्वीकारहै इयंचेति एह वपनादिकोंकी इतिकर्त्तव्यता सो प्राजापत्यसेंलेकर जो व्रततिनके विषें होतीहै और उससें उरें होणेवाले जो व्रत तिनकेवि

इतिप्रायश्चित्तमुक्तावलीकाराः ॥ विज्ञानेश्वरस्तु महापातकादिव्यतिरिक्ते राजादीनां वपनं नास्त्येव महापातकादौतु तेषांवपनानिच्छायां द्विगुणदक्षिणासहितं व्रतद्वैगुण्यमिति ॥ १ ॥ अन्येतु महापातकादौ नित्यं राजादेरपिवपनमेवान्यत्र तु वपनानिच्छायांव्रतद्वैगुण्यविधिरित्याहुः ॥ १ ॥ विद्वन्मनोहराकारादीनामप्येतदेवानुमतम् ॥ इयंचवपनादेरितिकर्त्तव्यता प्राजापत्यप्रभृतिष्वेवभवति न ततोऽल्प इत्युक्तमेव। तथाचपैठीनसिः॥ द्वादशाहेसंपूर्णेवपनमिति ॥ वपनग्रहणंचेतिकर्त्तव्यतांतरस्याप्युपलक्षणं तथाच। याज्ञवल्क्यः । कुर्यात्त्रिषवणस्नायीकृच्छ्रंचांद्रायणंतथा पवित्राणिजपेत्पिंडान्गायत्र्याचाभिमंत्रयेदिति १

षे नाहि होतीहै और महापातकसें अल्प अर्थात् कम जो पाप तिसके व्रतविषे एह इति कर्त्तव्यता नाहिजाननी एहपिच्छे कहचुकेहें १ तथाचेति इसी तरह पैठीनसी ऋषिकहतेहैं द्वादशेति पूर्णवारांदिनके व्रतविषे एहवपनउचितहै और वपन ग्रहण इसइतिकर्त्तव्यतासें और दूसरी कर्त्तव्यताकाभी उपलक्षणहै अर्थात् वोधकहै सोयाज्ञवल्क्यजीकहतेहें कुर्यादिति तीनकालमें स्नानकरणेवालाजो पुरुष सो कृच्छ्र और चांद्रायणव्रतकरे और तथातैसेंहिंपवित्रजो सहस्रशीर्षासें आदलेकर सूक्त तिनको जपे और भोजनकालमें जितने ग्रास कहेहैंन तिनकोगायत्रीके मंत्रकरकें अभिमंत्रणकरे अर्थात् एक एक मंत्रको पढकरके एकएकग्रास वनावे फेरतिनका भक्षण करे अथवा एकएक ग्रासके प्रति एकएक मंत्र पडताहूआ एक एक ग्रासको भक्षण करे ऐसाभी कहतेहैं १

और जिनजगामें मुण्डनकी निवृत्तिदिखें दूणावृतकिहाहै उसजगामुण्डनकीसहचर्याकरके पंचगव्या दिकोंकोभोनिवृत्ति जाननी इसीकारणसें न्यूनविषे अर्थात् पादोनविषे और पादविषे वस्त्रमात्रदा नकिहाहै और कुच्छ नही किहा और सौभाग्यवालियां जो स्त्रियां तिनको वशिष्टजीने विशेष किहाहैं केशानामिति स्त्रीयोंको व्रतविषें और यज्ञ विषे केशोंकावपन नहि किहाहैं और गो वधादिक जो पाप तिनके विषे दोअंगुलीमात्र अग्र भागसें केशोंकावपन करणा उचितहै १ सधवानामिति और सौभाग्यवालियां जो स्त्रिआं तिनको सदाही अलंकारकेवास्ते प्रायश्चित्तके विषेभी ऋषियोंने केशधारणे कहेहैं॥ २ अंगुलित्रयमिति अंगुलित्रयं एसाभीपाठ किसीजगामेंहै उसका अर्थस्पष्टहै अत्रेति और इस जगामे सधवास्त्री कहनेकरके विधवास्त्रियोंको व्रतविषे सारा मुण्डन उचितहै ॥ और पराशरजीभी इसीपक्षको पुष्टकरतेहैं वपनमिति स्त्रियोंकोमुण्डन और अनुव्रज्या क्या गौके पिच्छे पिच्छे विचरणा अर्थात् जिस तर्फको गौ जाए उसीतर्फको जाना

साहचर्य्यात् पंचगव्यादेरपिनिवृत्तिः ॥ अतएवन्यूनेपादव्रतेवस्त्रमिति वस्त्रादिमात्रदानोक्तिः सधवानां ॥ विशेषमाह वसिष्ठः ॥ केशानांनास्ति वपनं नारीणां व्रतयज्ञयोः ॥ गोवधादिषुसर्वेषुच्छेदयेदंगुलिद्वयम् १ ॥ सधवानांतुनारीणामलंकारायसर्वदा ॥ केशसंधारणंप्रोक्तंप्रायश्चित्तेद्विजो त्तमैरितिअंगुलित्रयमितिक्वचित्पाठः अत्र सधवापदाद्विधवानांसर्ववपनम् पराशरोपि॥ वपनंनैवनारीणांनानुव्रज्याजपादिकं नगोष्ठेशयनंतासां नव सीरन्गवाजिनम् १ सर्वान्केशान्समुद्धृत्यच्छेदयेदंगुलिद्वयम् सर्वत्रैवंहिना रीणां शिरसोमुण्डनंस्मृतम् २ नदीषुसंगमेचैवअरण्येषुविशेषतः ॥ नस्त्रीणामजिनंवासोव्रतमेवंसमाचरेत् ३ त्रिसंध्यं स्नानमित्युक्तं सुराणा मर्चनंतथा वंधुमध्येव्रततासांकृच्छ्रंचांद्रायणादिकम् ४ गृहेषुसंततंतिष्ठेच्छु चिर्नियममाचरेत् वाशिष्ठ आदिपदं प्रायश्चित्तांतरपरम् ॥

उनकोरांकनानहि और जपादिक और गोष्ठ क्या गोशालाविषेशयन और गवाजिनका अर्थात् गोचर्मकाधारणा एह सभ उचित नाहिहैन १ सर्वानिति इसवास्तेक्याकरणाचाहिये किसभनांकेशां कोहाथनें पकडकरके अग्रभागसे दो अंगुलींछेदनकरणे उचितहैन २ नदी ष्विति और नदिओं विषे और संगम विषे और वनविषे क्या वनसंबंधितीर्थविषे जाणानहिकिहा औरचर्मकाधा रणा नाहिकिहाहै स्त्रियां इसतरहकी विधि करके करण ३ और स्त्रीयोंकी जो कर्त्तव्यताव्रतविषेहै सो कहतेहैं त्रिसंध्यामिति तीनकालका स्नान करणा किहाहै और देवतयोंका पूजन किहाहै और वंधुओंके वीचमे रह करके तिनको व्रत करणे कहेहैन ४ गृहेष्विति और गृहमें सर्वदा काल निरंतर स्थित रहे और शुची रहे नियम जो व्रतादिक तिनको करे ॥ और वशिष्ठ जीके कहे होवे धर्मशास्त्र विषे किहाहै कि इसजगामें आदिपद और प्रायश्चित्तका भी वोधक है

तेनेति तिसकारणसें प्रयागादिको विषे (मुण्डनंचोपवासश्च) इत्यादि देवलके वचनते प्रयागादिको विषे सारे शिरका मुण्डन करणाचाहिए वेण्यामिति और वेणीनदीविषे (वेण्यांवेणीप्रदानेन) इस वचनकरके वेणीकाहि प्रदानकरणाचाहिए इसलिंगसे अर्थात् प्रमाणसे और आचारसे क्याजानतेहैं कि तीर्थांतर विषे क्या होरणे तीर्थं विषे एहाविधि नहिहै तिस कारणसें एहहोरही किसीकामतहै ५ ॥ अपरार्क विषे जो मुंडनका प्रकारहै सो कहतेहैं उदङ्मुखइति बुद्धिमान जो पुरुष सो उत्तरमुख होकरके अथवा पूर्वमुखहोकर्के मुण्डनकरवावे और केश श्मश्रुक्या दाढी और लोम क्या बाहोकेंवाल नख तिनको जलसें गिलेकरके कटवावे १ दक्षिणमिति सपिंडनादि कर्म विषे दक्षिण कर्णते आरंभ कर्के शिखा विना शिरका मुंडनहै और

तेनप्रयागादौ मुण्डनंचोपवासश्चसर्वतीर्थेष्वयंविधिरिति देवलाद्युक्तेः सर्वमुण्डनमेव वेण्यांवेणीप्रदानेनेति लिंगादाचाराच्च तीर्थांतरेनभवतीत्यन्यदेतत् ५ अपरार्के उदङ्मुखः पूर्वमुखोवा वपनंकारयेद्बुधः केशश्मश्रुलोमनखान्युदकसंस्थानिवापयेत् १ दक्षिणंकर्णमारभ्यकर्मार्थेपापसंचये शिखाद्यंनवसंस्कारे शिखाद्यंतंशिरोवपेत् २ पापसंचयेतन्निमित्ते प्रायश्चित्ते शिखाद्यं सशिखं शिखाद्यंतं शिखायामादावंतेचेत्यर्थः तैत्तिरीयके ब्राह्मणे प्रथमकांडे पंचमप्रपाठके चातुर्मास्यप्रकरणे देवावै यज्ञेऽकुर्वत तदसुरा अकुर्वत तेसुराऊर्ध्वं पृष्ठेभ्यो नापश्यन्

पापसंचयके विषे अर्थात् पाप संचयके निमित्त जो प्रायश्चित्तहै तिसके विषे सज्जेकर्णसे लेकर शिखाद्यक्या शिखासहित मुंडन किहाहै और नवीन संस्कार विषे शिखाद्यंत मुण्डन करवावे अर्थात् शिखाके आद और अन्तसे करवावे २ एहि अर्थ मूलमे स्पष्टकरके किहाहै पाप इति॥ और तैत्तिरीयसंज्ञावाला जो ब्राह्मण तिसके प्रथम कांड विषे जो पंचम प्रपाठक तिस विषे भी जो चातुर्मास्य प्रकरणहै तिसविषे ऐसाकिहाहै इसका अर्थभाष्यमे स्पष्टहै कुछक लिखीदाभीहै देवाइति देवता जो यज्ञमे करतेभये सो असुर भी करते भये सो असुर पृष्ठवे ऊर्ध्वभागको नहि देखतेभये

सो पहले केशोंकोउतारतेभये तिसके अनन्तर दाडीको तिसके अनन्तर उपपक्षोंको तिसके अ नन्तर अर्वाच होतेभये क्या नीमे मुखवाले होतेभये अधिकारसें भ्रष्टहुंदे होए और पराभवन् दूसरेते अनादृत होतेभये जोकोई ऐसामुण्डनकरेगा सोभी ऐसाही होवेगा इसके अनन्तर देवता पृष्ठते ऊर्ध्व भागको देखतेभये सो पहले उपपक्षोंका मुण्डन करतेभयें फेर दाडीका फेर केशोंका तिसकेअनन्तर सुखीहोतेभये और स्वर्गलोकको प्राप्त होतेभये जो ऐसे करवातेहैन सो स्वर्गलोकमें प्राप्तहोतेहैन तिसके अनन्तर मनुजी मुण्डनके विषे मिथुनको देखतेभये और दाडीका मुण्डनपहले करवातेभये फेरउपपक्षोंका फेरकेशोंका तिसके अनन्तर प्रजा और पशु-

ते केशानग्रेवपंत अथ श्मश्रूणि अथोपपक्षौ ततस्तेऽर्वांच आयन् पराभवन् ॥ अधोपतन् स्वाधिकाराद्भ्रष्टाअभवन् ॥ यस्यैवंवपंति अवाङेति(अधः पतति) अथोपरैवभवति अथदेवाऊर्ध्वपृष्ठेभ्योपश्यन् तउपपक्षावग्रे वपंत अथश्मश्रूणि अथकेशान् ततस्तेभवन् सुवर्गलोकमायन् यस्यैवंवपंति भवत्यात्मना अथोसुवर्गंलोकमेति अथैतन्मनुर्वप्त्रेमिथुनमपश्यत् सश्मश्रूण्यग्रेवपत अथोपपक्षौ अथकेशान् ततोवैसप्राजायत प्रजयापशुभिः यस्यैवंवपंति सप्रजया पशुभिर्मिथुनैर्जायत इति तैत्तिरीयकेआसुरंवपनंनिंदित्वादैवेक्रमउक्त; मनुनापि तत्रैव मनुष्यं प्रक्रम्य श्मश्रूण्यग्रेवपंत अथोपपक्षावथकेशानिति अत्राधानेष्टिसोमेषुदैवं तत्रतस्यविधानात् ॥

ओं करके युक्त होतेभये जो ऐसेंकरवातेहैन सो पशु और मिथुनकरके युक्तहोतेहैन ऐसें तैत्तिरीयशाखा विषेआसुरीयमुण्डनकों निंदकरके दैवमुण्डनविषे क्रम किहाहै और मनुजीनेभी तिस स्थानविषेकिहाहै मनुष्य प्रसंगकोलेकरक्या कि मनुष्यकर्म विषे पहलेदाडीका मुण्डनकरते हैन तिसके अनन्तर उपपक्ष अर्थात् शिरके दोनोकनारे वाम और दक्षिण तिसके अनन्तर केश अत्रेति अग्निके आधान विषे और इष्टियोंविषे और सोमयज्ञविषे दैव मुण्डनकोहि योग्यताहै तिनकेविषे दैवमुंडनका विधान होणेतें

प्रायश्चित्तेति और प्रायश्चित्तविषैंतो दैवही मुंडन उचितहै और मनुष्य निमित्त जो मुण्डन तिसके विषेविकल्पकरकेयोग्यताहै तिसविषेभी विशेषकहतेहैं तत्रेति उदकसंस्था नामकोई यज्ञहै तिसके अर्थ पहिले दक्षिण श्मश्रु और उपपक्ष पीछे वाम श्मश्रु और वाम उपपक्षइनकाहि मुं नहै इसीकाअर्थ प्रकटकरकेकहतेहैं अत्रेति इसमें एहजाननेयोग्यहै कि पहलेकेशोंकामुण्डनकरते हैं तिसके अनन्तर दाढी तिसके अनन्तर उपपक्ष क्या शिरके दोनो पार्श्व० एह असुर संबं धि मुण्डनहै अब उपपक्षादिशब्दोंका अर्थ कहतेहैं तत्रेति उपपक्षक्या शिरके दोनो पार्श्व वा म और दक्षिण० केशक्या शिरका मध्यभाग श्मश्रु क्या दाढी ॥ अब वपनकासमय विशेष क हतेहैं इदमिति एह जो वपनहै सोनिषिद्धकाल विषे भी अर्थात् मुहूर्तके विनाभी करणेयोग्यहै इ सविषे स्मृतिकहतेहैं क्षौरमिति नैमित्तक जो क्षौर सो निषिद्धदिनविषेभी करणा चाहिए पित्रा

प्रायश्चित्तेतुदैवं मानुषेविकल्पेन तत्राप्युदकसंस्थायैदक्षिणश्मश्रूपपक्षानुप्त्वावामाविति अत्रेदंबोध्यम् अग्रेकेशान् वपंतेततःश्मश्रूणिततउपपक्षावित्यासुरंवपनं तत्रोपपक्षौशिरसउभयपार्श्ववर्त्तिनौकेशाःशिरोमध्यभागाःश्मश्रुप्रसिद्धम् इदंवपनं निषिद्धकालेपिकार्य्यं ॥ क्षौरंनैमित्तकंकार्य्यंनिषेधेसत्य पिध्रुवम् पित्रादिमृतियात्रासु प्रायश्चित्तेचतीर्थक इतिस्मृतेः १ क्षौरनिषेधांश्चाह वृद्धगार्ग्यः ॥ रव्यारसौरिवारेषु रात्रौपातेव्रतेहनि श्राद्धाहप्रतिपद्रिक्ताभद्राःक्षौरेषुवर्जयेत् १ भद्राद्वितीयाद्या नविष्टिकरणं तिथिसाहचर्यात् व्यासः ॥ नक्षत्रेतुनकुर्वीत यस्मिन् जातोभवेन्नरः ॥

दिकोंके मरण कालमें और तिनकेउद्धारकरणे वास्ते जो यात्रा तिसविषे और प्रायश्चित्तविषे और तीर्थविषे इसस्मृतितें १ सो क्षौरकेनिषेध कौनसेहैन इसविषे वृद्धगार्ग्यजीकहतेहैं रव्यारेति रविवार और आरक्यामंगल और शौरिक्या शनि इनांवारांविषे और रात्रिव्यतीपात औरव्रतदिन अर्थात् एकादश्यादि इनाविषे भी क्षौरनहिकरावे और श्राद्धदिन और प्रतिपदा और रिक्ता और भद्रा इनांसवनानूं क्षौरविषे पुरुष त्यागे १ अथवा इस श्लोककेपूर्वार्द्धमें सप्तमीयांजोहैन सोद्वितीयाके अर्थमें हैन)भद्राक्या।२।७।१२ इह तिथिआं और भद्रा करकें विष्टि करणका ग्रहण नहिकरणा क्योंकि तिथियोंकी सहचर्यता होणेतें ॥ और व्यासदेवजी नक्षत्र द्वारा क्षौरकेनिषेध कहतेहैं नक्षत्रेति कि जिसनक्षत्र विषे पुरुषउत्पन्नहोआहै तिसविषे भी क्षौर न करावे

और पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा और कृत्तिका इनमेंभी नकरणाचाहिए १ और दारुण संज्ञावाले जो सब नक्षत्र और दुष्टतारा पहली १ पंचमी ५ सप्तमी ७ इह दुष्टताराहै इसनूं वर्जकरके और दारुणसंज्ञावाले नक्षत्रांको कहतेहैं मूलइति मूला और ज्येष्ठा और आर्द्रा और श्लेषा और शनिवार इनकी तीक्ष्ण संज्ञाभीहै इनके विषेंभी क्षौरको त्यागे २ और व्यासदेवजी इसविषेविशेष कहतेहैं सिंहेति जद सिंह ५ और धन ९ और मीन १२ राशियोंविषे सूर्य स्थित होवे तां पुरुष यात्रा और विवाह और गृहारंभ और क्षौर इनकोत्यागे १ सप्ततुरंगम नामसूर्यकाहै ॥ अब इसविषे औरभीविशेष व्यासदेवजी कहतेहैं वीति विवाहके पिच्छे एक वर्ष यज्ञोपवीतके पछि छे महीने और मुंडनके पिच्छे तीनमहीने मुण्डन नहिकरणा उचितहै और

नप्रौष्ठपदयोःकार्य्यंनैवाग्नेयेतुभारत १ दारुणेषुतुसर्वेषुदुष्टतारांतुवर्जयेत् मूलैंद्रार्द्राहिभंशौरिस्तीक्ष्णंदारुणसंज्ञकमित्युक्तेषु दारुणेष्वित्यर्थः २ वादरायणः॥ सिंहेधनुषिमीनेचस्थितेसप्ततुरंगमे यात्रोद्वाहगृहारंभक्षौरकार्य्याणिवर्जयेत् १ सप्ततुरंगमःसूर्य्यः ॥ व्यासः ॥ विवाहमौंजीचूडासुवर्षमर्द्धंतदर्द्धकं अन्तर्वत्न्यांचजायायांनेष्यतेकेशवापनमित्याद्यनेकनिषेधाःसमयमयूखेउक्ताः १ तथाजीवत्पितृकेनापिनकार्य्यम् मुण्डनंपिंडदानंचप्रेतकर्मचसर्वशः ॥ नजीवत्पितृकःकुर्याद्गुर्विणीपतिरेवचेति १ अथस्त्रीशूद्रोपयोगिकिंचिदुच्यते ॥ स्त्रीणांहोमोनकर्त्तव्यः पंचगव्यंतथैवचेति जावालेन स्त्रीणांहोमः पंचगव्यंचनिषिध्यते

जिसकीस्त्री गर्भवती होवे तदभि नाहिकरणा उचितहै परंतु गर्भ विषे सप्तमते लेकर तीनमहीनेका हि निषेधहै इत्यादिक अनेक निषेध समय मयूख ग्रन्थ विषेकहेहैन १ और तैसेंहि जीवत्पितृकजो पुरुष तिसनें भी मुण्डन नहि करणा चाहिए इस विषे वचन कहतेहैं मुण्डनमिति मुण्डन और पिंडदान और प्रेतकर्म तिनां नू जीवत्पितृक अर्थात् जिसका पिताजीताहै और गुर्विणीपति अर्थात् गर्भवतीस्त्रीका पतिनकरे १ अब इसके अनन्तर स्त्री शूद्रोंकी कर्त्तव्यताविषे कुच्छ कहतेहैं स्त्रीणामिति स्त्रियोंकों हवन और पंचगव्यका पान नहिकरणेयोग्यहै और जावालऋषिजी इसी पक्षको पुष्ट करतेहैं जावालेनेति

अयमिति यह जो होमकानिषेधहै सो आज्येनैव इत्यादिपूर्वोंकवचनतें अग्निशालाविषेहिंजानना होरथै नहि तिसकारणसें लौकिक अग्निविषे ब्राह्मणद्वाराहवनहोताहै ऐसा केकहतेहैं अग्निशाला वोहै जिसमे नित्य हवन होताहै और लौकिक अग्निवो है जिसमे कदाचित् हवनहोताहै मदन रत्न विषे ऐसीव्यवस्थाकहीहै ॥ और प्रायश्चित्तमयूखकार इसको कैयोंऋषियोंकेमतको मानताहै अब इसीमे और कहतेहैं स्त्रीणामिति स्त्रीयोंकोकृताकृतद्रव्यका अर्थात् तंडुलोंका हवन उचित है कृताकृत शब्दका अर्थ ग्रंथांतर मे लिखाहै (कृतमोदन सक्त्वादि तंडुलादि कृताकृतं व्रीह्यादिस्वकृतंज्ञेयं) इसका अर्थ स्पष्टहै इसकहणेते तंडुलोका हवन करणा सिद्ध भया और हवनकेकरणेवास्ते आचार्यका वरण करके तिसके द्वारा करणा उचितहै यह विचार प्रायश्चित्तेंदुशेखरमे कहाहै ॥ और शूलपाणिजीसें आदिलेकर वहुते ग्रंथकार पिछेदिखाया जोहै ? स्त्रीणां

अयंचहोमनिषेधआज्येनैव हि शालाग्नौ जुहुयाद्व्याहृतीः पृथगित्युपक्रमा च्छालाग्नावेव तेन लौकिकाग्नौब्राह्मणद्वाराभवतीतिकेचिदाहुरिति मदन रत्ने ॥ मयूखकारोपीदं केषांचिन्मतमेवानुमन्यते स्त्रीणांहोमः कृताकृतः करणपक्षे आचार्य्यं तदर्थं ॥ वृत्वा तद्द्वाराकर्त्तव्यइतिप्रायश्चित्तेंदुशेखरे शूलपाणिप्रभृतयोवहवोनिवंधकाराःप्रदर्शितजावालवचनस्याधिकार्य्यंतर स्यप्रक्रमेणोपक्रमस्य विच्छेदाद्विशेषपरतामनभ्युपगच्छंतःस्त्रीणांहोमं नेच्छंतोतिवहुसंमत्वात्तदेवयुक्तम् । यत्तुपराशरेण । उपवासोव्रतंहोमतीर्थस्नान जपादिकम् विप्रैस्संपादितंयस्यसंपन्नंतस्यतत्फलमिति १ विप्रद्वारोपवास व्रतहोमादिकमुक्तम् तस्यविधिप्राप्तेषुजपहोमादिषु विप्ररूपप्रतिनिधिनियामकत्वंनपुनर्विप्रद्वाराहोमस्यविधायकत्वम्

होमोनकर्त्तव्य इत्यादि जावालजीका वचन इसको दूसरे अधिकारिको स्थापन करणे करके पहले अधिकारिके हटाणेते अर्थविशेषको नहि स्वीकार करते होये अर्थात् इस वचनमें विशेष नहि ऐसा जानदे होए स्त्रीआं को होम नहि करणे योग्य इसी वात को वहु संमत जाण कर होमके निषेधको हि स्थापनकरदेहोए एहि अर्थ उचितहै ॥ और जो पराशरजीने किहाहै उपेति उपवासहै निराहार व्रत और व्रत क्या नक्तादि और होम और तीर्थस्नान और जपादि जो हैं सो ब्राह्मणद्वारा जिसमनुष्यके कराए जाण तिस करवाणेवालेको तिसका फलहोताहै इसवचनकरके ब्राह्मणद्वारा उपवासव्रतादिकरणेकहेहैं तिसवचनकोविधिकरके प्राप्तहोए जो जप होमादि तिनां विषे ब्राह्मणप्रतिनिधि द्वारा करवाणेके अर्थ नियामकत्वहै अर्थात् इस नियम वास्ते एह वचन है कोई ऐसा नहि कि ब्राह्मण द्वारा यथेष्ट हवन करणेका विधान होवे

एवमिति मंत्र हीन शूद्रके जपादि ब्राह्मणके मंत्र करके ग्रहण करणे एह वराहजीकावचन भी किसी प्रमाणकरके प्राप्त होया जो शूद्रको पौराणिक मंत्रादि जप तिसविषे ब्राह्मण प्रतिनिधि द्वारा करवाणेके अर्थहै कोई यथेष्टाचरण मंत्र जपादिकके अर्थ नहि है इसकहणे करके पया जानतेहैंकि इन दोनों वचनोंकरके स्त्रीशूद्रादिकोंको प्रायश्चित्तविषे ब्राह्मण द्वारा होमकी प्राप्ति कों कहदे होये परास्तहोये अर्थात् अनादृतभये अब स्त्रीयों को पंचगव्य प्राशन विषे वचन कहतेहैं स्त्रीणामिति स्त्रीयोंको और शूद्रोंकोहवणकरणा और पंचगव्यकापानकरणा उचित नहिहै तिस कारणतें स्त्री और शूद्र शुद्धीके वास्ते प्राजापत्य व्रत करण इक्क एहवचनहै १ पंचगव्यमिति स्त्री और शूद्र पंचगव्यकों बणावें और तिसकेस्नान और पान करके शुद्धहोवें एह दूसरावचनहै २

एवममंत्रस्यतुशूद्रस्यविप्रमंत्रेणगृह्यते ॥ इति वराहवचनमपि मानप्राप्तमंत्र जपादौविप्ररूपकरणविधायकमेव एतेनैतद्वचनाभ्यां स्त्रीशूद्रादेर्विप्रद्वाराप्रा यश्चित्ते होमप्राप्तिंवदंतः परास्ताः ॥ स्त्रीणांपंचगव्यप्राशने ॥ स्त्रीणां होमो नकर्त्तव्यःपंचगव्यंतथैवच । स्त्रीशूद्रश्चविशुद्ध्यर्थं प्राजापत्यंसमाचरेत् पंचग व्यंतुकुर्वीत स्नात्वापीत्वाशुचिर्भवेत् १ इतिदेवलपराशरवचनाभ्यां विहित प्रतिषिद्धत्वाद्विकल्पः शूद्रस्यतु कपिलातिरिक्तायाःपंचगव्यप्राशनमस्त्येव यत्तुपंचगव्यंपिबन् शूद्रोब्राह्मणस्तुसुरांपिबन् उभौतौतुल्यकर्म्माणौ पूयाख्येनरकेवसेदित्यत्रिवचनं ॥ तत्प्रायश्चित्तानंगपंचगव्यप्राशनविषयम् स्पष्टंचेदंमदनरत्नप्रायश्चित्तेन्दुशूलपाण्यादिनिबंधेषु

एहदेवल पराशरजीके दोनों वचनहैन एक हवनका निषेधकरताहै और दूसरा विधान करता है इन दोनोंको प्रमाण होणेतें विकल्प सिद्ध भया और शूद्र को कपिला गौके अतिरिक्त जो गौ तिसके पंचगव्यका विधानहै और जो किहाहै कि पंच गव्य नूं शूद्र पीवे और ब्राह्मण मदिरानूं पीवे सो दोनो एक जैसे हैन और पूयाख्य नाम नरक विषे निवास करते हैन एह अत्रिजीकावचन प्रायश्चित्तसें विना जो पंचगव्य प्राशन तिसका निषेध करताहै एहबात स्पष्टहै मदनरत्न और प्रायश्चित्तेन्दुशेखर और शूलपाणिसें आदलेकर जो ग्रन्थोंके करता हैन तिनके निबंधोंविषे भी स्पष्टहै

अथेति अब इसतें अनन्तर स्नानविधि कहतेहैं सो वहुत प्रकारकीहै जोकहीहै प्रायश्चित्त मयूख विषें तिसजगा भस्म स्नानके निमित्त इतिकर्त्तव्यताकहीहै लिंगपुराणविषे ईशेति ईशानेनेत्यादि मंत्र करके अथवा ईशानायनमः इतने करकेही व्रतीपुरुष शिरमेंभस्म लगाए और तत्पुरुषेनेत्या दि मंत्रकरके मुखमें और अघोरेणेत्यादि मंत्रकरके हृदयमें और वामेनेत्यादि मंत्र करके गुह्यमें लगाए १ और सद्येनेत्यादिमंत्र करकेपैरोंमें लगाए और ॐकारायनमः इसमंत्र करके सभनां अंगानूं भस्मकरके शुद्धकरे इहविशेषहै ॥ इसमें व्यवस्था कहतेहैं तत्रेति तिसविषे ईशा न पदकरके ईशानः सर्वविद्यानां इत्यादिक जो मंत्र तिनका ग्रहणकरणा सो मंत्र यजुर्वेदकी शाखाविषे प्रसिद्ध हैन केईओंकेमतमें ईशानायनमः ऐसेंहिमंत्रका प्रयोगहै तिसतें अनन्तर गोमय

अथ स्नानविधिः प्रायश्चित्तमयूखे ॥ तत्रभस्मस्नाने इतिकर्त्तव्यता लिंगपु राणे ईशानेन शिरोदेशं मुखंतत्पुरुषेणतु हृदोदेशमघोरेण गुह्यंवामेनसु व्रतः १ सद्येनपादौसर्वांगं प्रणवेनतुशोधयेदिति विशेषः ॥ तत्रेशानपदेन ईशानःसर्वविद्यानामित्यादयोमंत्राग्राह्याः तेच यजुः शाखायांप्रसिद्धाः केचि त्तु ईशानायनमइतिप्रयोज्यमितिब्रुवते। ततोगोमयस्नानम्। तस्यविधिमाह विष्णुः। अग्रमग्रमितिस्मृत्वा मानस्तोकेतिवापुनः ॥ गोमयैर्लेपयेत्प्राज्ञःसो दकैर्भानुदर्शितैरिति १ कूर्म्मपुराणे गोमयस्यप्रमाणंतुयेनांगंलेपयेत्तत इति

॥ अथमृत्स्नानविधिः शिवपुराणे अश्वक्रांतइतिस्मृत्वामंत्रेणामंत्र्यमृत्तिकां उद्धरेदुद्धृतासीति मंत्रेणसुसमाहितः १ नमोमित्रस्येतिऋचा दर्शयित्वा चभानवे आरुह्यममगात्राणि समालभ्यद्विराचमेत् २

करके स्नानकरणा तिसकीविधि विष्णुजी कहतेहैं अग्रमिति अग्रमग्रमित्यादिमंत्रका अथवा मान स्तोके इत्यादि मंत्रका स्मरणकरकेगोमय जो है जलकेसहित और सूर्य्य करके दखाया होया तिस करके लेपनकरे बुद्धिमान् पुरुष १ कूर्म्मपुराणविषे गोमयकाप्रमाण किहाहै कि जितने गोवर करके अंगोंमें लेपण होजावे उतना हिलैणा ॥ अब मृत्तिका स्नानकीविधि कहतेहैं जो शिवपुराणविषे कहीहै ॥ अश्वक्रान्तेत्यादिमंत्रका स्मरणकरके आमंत्रणकरके क्या मंत्रसुणा करके और उद्धरे ॥ उद्धृतासीत्यादि मंत्रकरके । मृत्तिकादाग्रहणकरे सावधान होयाहोया १ नमोमित्रस्ये त्यादिऋचा करके मृत्तिकाको सूर्य्यकेताई दखाकरके (आरुह्यममगात्राणि) ऐसेंपढकरके पुरुष अंगोंमें मृत्तिका लगाए फेर दो आचमनकरे २

याज्ञवल्क्यजी अनुलेपनके निमित्त और मंत्रकहतेहैं अलाभ इति जेकर पूर्वोक्तमंत्र न मिलें तौ संपूर्णअंगोंमे इदं बिष्णुः इत्यादि ऋचापडकर्के मृत्तिका लगावे १ और जमदग्निजी भी इसी पक्षकोपुष्टकरतेहैं अश्वक्रान्तेइत्यादिऋचाको षडकर्के हौली हौली शुद्ध मृत्तिका कों उठावे १ और नमोमित्रस्येत्यादि ऋचाको पड कर्के दोनों हाथोंमें लगावे फेर वोदोनों हाथ सूर्य्यको दिखावे और गंधद्वारामित्यादि मंत्रको पड कर्के खानि जोहैन नेत्रोंसें आदलेकर इंद्रिय तिनमें लगावे और अंग जो हैन पैरोंसें आदलेकर तिनमें भी लगावें २ और मृत्तिकादा परिमाण कूर्म पुराण विषे किहाहै मृत्तिकेति ॥ मृत्तिका गिल्लेआमलेके परिमाण कहीहै और मृत्तिकाके

अनुलेपनेमंत्रांतरमाह योगी० अलाभेतुमृदांगानि इदंविष्णुरितिऋचा १ जमदग्निरपि अश्वक्रांतेतिवैशुद्धांमृत्तिकामाहरेच्छनैः १ नमोमित्रस्येत्यादित्यायदर्शयेत्समृदौकरौ गंधद्वारामितिजप्त्वाखान्यंगान्यनुलेपयेत् २ खानिनेत्रादीनींद्रियाणि अंगानिपादादीनि मृत्तिकापरिमाणं कूर्म्मपुराणे। मृत्तिकाचसमुद्दिष्टात्वार्द्रामलकमात्रिकेति ॥ क्रमउक्तोब्राह्मे आयुष्कामः शिरोलेपंमृदाकुर्य्याद्द्विजःपुरा श्रीकामःपादयोःशौचंमृदापूर्वंसमाचरेत् ॥ १ ॥ पारस्करः ॥ एकयातुशिरःक्षाल्यंद्वाभ्यांनाभेस्तथोपरि मृद्भिश्चतसृभिःकार्यंषड्भिःपायुंतथैवच १ कटिवस्त्यूरुजंघाश्चपादौचातिसृभिस्तथा तथाहस्तौपरिक्षाल्यद्विराचामेत्समाहितः २

अनुलेपनमें क्रम ब्रह्मपुराणविषेकिहाहै आयुष्कामइति आयुष्काम जो द्विज अर्थात् वहुत आयुकी कामनावाला सो मृत्तिकाकर्के पहले शिरमें अनुलेपनकरे पीछेपादपर्य्यन्तसवनां अंगाका अनुलेपनकरे और श्रीकाम जो द्विज अर्थात् श्रीकीकामनावाला सो मृत्तिकाकर्के पहले चरणोंमें फर शिरपर्य्यन्तसवनां अंगोंमे अनुलेपनकरे १ पारस्करजी इस बिषे विशेष कहतेहैं एकयेति एक मृत्तिका कर्के शिरको धोवे अर्थात् एकवार लगा कर्के और नाभी को दोवार लगाकर्के धोवे और नाभिके उपरिभागकोचारवेर लगाकर्केधोवे और गुदाकोछेवार लगाकर्के धोवे १ और कटिक्याल्क और वस्तिक्या मूत्राशय और ऊरु जंघा पाद इनको चार चार वेर लगाकर्के शोधे और तैसेंहि हाथोंकों भी चारवेर लगाकर्के शोधे और सावधान होया होयादोवारआचमनकरे २

और इसविषे योगी याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं मृद्भिरिति पुरुष निर्विकार विष्णुकास्मरणकरताहोया क्रमकरकेशिरसें आदलेकर नाभिपर्यंत सबनां अंगानूं मृत्तिका करके और अद्भिः क्या जलों करके शोद्धे १ इसीकोकहतेहैं कटीति कटि और वस्ति क्या मूत्राशय ऊरु जंघा और चरण तिनानुं तीनवार मृत्तिका लगाकरके धोवे तैसेंही हाथोंकोभी तीनबार लगाकरके धोवे फेर आचमन करके जलकों नमस्कारकरें २ फेर यत्किंचेदमित्यादि मंत्र पडकरके दूसरी वार नमस्कार करें ॥ इस जगामें पारस्करजीने जो कहेहैं मृत्तिका संख्यादि वाक्य और योगी याज्ञवल्क्यजीने जो कहेहैं तिनके विराधे दूर करणेंकेवास्तें शाखोंके ऊपरव्यवस्था समझनी अर्थात् शाखा के अनुसार व्यवस्थालगानी एह हेमाद्रिने किहाहै ॥ एह मृत्स्नानविधि होचुकी ॥ और तिसके अनन्तर चौथास्नान जलकाकिहाहै तिसकाप्रकारब्रह्माण्डपुराण विषे है आपइति पुरुष आपो

योगी०मृद्भिरद्भिश्चगात्राणिक्रमशस्त्ववनेजयेत् शीर्षाद्यानाभिसर्वाणिस्मरन्विष्णुमनामयम् १ कटिवस्त्यूरुजंघेचचरणौचत्रिभिस्त्रिभिः॥ तथैवहस्तावाचम्यनमस्कृत्यजलंततः२ यत्किंचेदमितिमंत्रेणनमस्येत्प्रयतांजलिः अत्रविरुद्धानांमृत्संख्यादिवाक्यानां यथाशाखं। व्यवस्थेतिहेमाद्रिःइतिमृत्स्नानविधिः॥ अनंतरंचतुर्थंवारिस्नानम् तत्प्रकारश्चब्रह्मांडपुराणे॥ आपोअस्मानितिह्युक्त्वाभास्कराभिमुखःस्थितःइदंविष्णुर्जपित्वाच प्रतिस्त्रोतोनिमज्जति १ महार्णवेतु वैकल्पिकौद्वौमंत्रावुक्तौ इदमापः प्रवहेतिऋक् आपोहिष्ठेतिऋचोवेति ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरेअनंतरं पंचगव्यस्नानान्युक्तानि तत्र तद्ग्रहणमंत्रामात्स्ये ॥ सावित्र्यादायगोमूत्रंगंधद्वारेतिगोमयम् आप्यायस्वेतिचक्षीरं दधिक्राव्णेतिवैदधि १ तेजोसीतिघृतंतद्वद्देवस्यत्वेतिचोदकम्
कुशमिश्रंक्षिपेद्विद्वान्पंचगव्यंभवेत्तुतदिति २ ॥

ऽस्मानित्यादि मंत्रको पडकरके सूर्यके सन्मुख स्थित हूया २ इदं विष्णुरित्यादि मंत्रको पडकरके प्रतिस्त्रोतमें निमज्जित होवे अर्थात्प्रवाहके सन्मुखहोकरके गोत्तालगावे और निमज्जति नो प्रयोगहै सो लेट् लकारका जानना १ और महार्णव ग्रन्थमें निमज्जनके वास्ते विकल्प करके दोमंत्र कहेहैन एक इदमापः प्रवहेत्यादि ऋचाहै और दूसरी आपोहिष्ठेत्यादिऋचाहै एह जलका स्नान होचुका ॥ तिसके अनन्तर प्रायश्चित्तेन्दु शेखर विषे पंच गव्यके स्नान कहेहैं और तिसके ग्रहण करणे वाले मंत्र मत्स्य पुराणमें कहे हैन सो कहतेहैं सेति सावित्र्यादि मंत्र करके गोमूत्रलैणा और गंधद्वारेत्यादि मंत्रकरके गोमयलैणा आप्यायस्वेत्यादिमंत्रकरके दूधलैणा दधिक्राव्णेत्यादिमंत्रकरके दहि लैणा १ तेजोसीत्यादिमंत्रकरके घृत लैणा देवस्यत्वेत्यादि मंत्रकरकें कुशाकाजल कुशाके साथही पाणा तद पंचगव्य होताहै २

श्रौर पराशरप्रोक्तधर्म्म शास्त्रमें तेजोसिशुक्रमसीत्यादि मंत्रकरके घृत लैणा श्रौर देवस्यत्वेत्यादि मंत्र करके कुशाकाजलपाणा ऐसा जो ऋचाकरके पवित्र होयाहोया पंचगव्य तिसको पुरुष अग्निके समीप स्थापनकरे एह पराशरका दूसरा श्लोकहै अर्थात् पिछे मत्स्यपुराणकेकहे जो दो श्लोक तिनका पहला श्लोक इसकेबराबरहै श्रौर दूसरेमे विशेषहै श्रौर देवस्यत्वेत्यादिमंत्र पडकरके तिसके अनन्तर (जल मभिषिंचामि) ऐसें पडकरके सारा वाक्य पूरा करणा एह निबंध कारोंका मत है इसमें ग्रंथान्तरकामत दिखाकरके समाधान करतेहैं ॥ यद्यपीति यद्यपि मत्स्यपुराण विषे देवप्रतिष्ठाके निमित्त देवस्नानके वास्ते पंचगव्यके ग्रहणमें मंत्र कहे हैन श्रौर पराशर जीनें ब्रह्मकूर्चव्रतके प्रकरणमें एहीमंत्र कहेहैं तिस वास्ते दोनों जगामें कुशोदक सहित जो गोमूत्रादि ६ तिनका ग्रहणहै एह बात प्रमाण जाननी सोभी पंचगव्यं पिबेत्तत इसजगा पंचगव्य शब्दकरके छे जो हैन गोमूत्रादि तिनका ग्रहणहै श्रौर (पंचगव्यमृचापूत

पाराशर्य्येतु ॥ तेजोसिशुक्रमित्याज्यंदेवस्यत्वाकुशोदकम् पंचगव्यमृचापूतं स्थापयेदग्निसन्निधाविति द्वितीयश्लोकउक्तः देवस्यत्वेत्यनन्तरमभिषिंचामीतिवाक्यशेषंपूरणीयमितिनिबन्धकाराः ॥ यद्यपिमात्स्ये देवप्रतिष्ठायां देवस्नानार्थं पञ्चगव्यग्रहणे मंत्राउक्ताःपराशरेणच ब्रह्मकूर्चप्रकरणे तथाप्युभयत्रापि कुशोदकसहितानांषण्णांगोमूत्रादीनां पंचगव्यंपिबेत्तत इति पंचगव्यमृचापूतमिति पंचगव्यमितिपरिभाषितिगम्यते तस्माच्च प्रकरणेन नियमाभावाद्यत्र पंचगव्यमिति प्रयोगस्तत्रैतदेवमंत्राद्यवगंतव्यम् अन्यथागव्यमिति तद्धितस्य गव्यशृंगतक्रादिसाधारण्येन तेनापिस्नानं स्यात् केचित्तु मलापकर्षणंकार्यं बाह्यशौचोपसिद्धये इति बाह्यशरीरमलशोधनमात्रार्थत्वादमंत्रकाण्येवतानीत्याहुः

इसजगामें भी छेयांका ६ ग्रहणहै इसवास्ते पंचगव्य जो शब्दहै सो परिभाषा शब्द जानना एह व्युत्पत्ति शब्द नहिहै तिसकारणतें प्रकरण करके नियमके अभाव होणेतें जहां पंचगव्य शब्दका प्रयोगहै उस जगा इन छेयोंकाहि ग्रहण करणा कोई ऐसा भ्रम मत करे कि देवप्रतिष्ठामेंहि पंचगव्यकाग्रहण मंत्रों करके छेकाहै श्रौर जगामेंनहि क्योंकि ब्रह्मकूर्चमें विधानहोणेतें प्रायश्चित्तोंमे भी इन मंत्रोंकाउपयोगहै तिसतेंपंचगव्य एह परिभाषाशब्दसिद्ध भया ॥ अन्यथेति जेकर ऐसा नहि मानोंतो गौका जो विकार होवे तिसको गव्यकहिये इस तद्धितप्रयोग कर के शृंगतक्रादि जो हैन तिन करके भी स्नानहोणा चाहिए ॥ इसमें होरमतकहतेहैं केचिदिति मलका अपकर्षण करणा चाहिए अर्थात् मल उतारणा चाहिए बाह्य शरीरकी शुद्धिके वास्ते इसवचनको बाह्यशरीरका मलशोधनमात्रहि प्रयोजन होणेतें मंत्रोंके विनाहि स्नानादिकरणे चाहिए के ऐसा कहतेहैं

इसमें जमदग्निजीभी कहतेहैं हिरण्येति हिरण्य शृंग वरुण मित्यादि मंत्र करके पुरुष जलमेंप्राप्तहोवें सुमित्रा इत्यादि मंत्रकरके जलोंका स्पर्शकरे दुर्मित्रात्तु इत्यादि मंत्रकरके जलनूं बाहर फेंके क्या करके यदपांकूट मित्यादि मंत्रकरके तीनवार जलकाहाथसे आलोडनकरके अर्थात् बीच में हाथकी अंगुल फेरकरके १ अब प्रायश्चित्तपर्य्यंत जितने धर्म्म करणे योग्यहैं सो शंखजी कहतेहैं ॥ प्रायश्चित्तमिति प्रायश्चित्तकरणेवाला जो पुरुष सो मौनीहोया २ तीनवार जलका उपस्पर्श करे अर्थात् स्नानकरे एक वस्त्र धारे अथवा अर्धवस्त्र धारे और कीता है थोडा भोजन जिसने ऐसा होया २ पृथिवीमें शयन करे १ और रात्रि में स्थितरहे और दिनमें वीरासनी होवे और मौनीरहे मुंज्जकी तडागी धारे और दंड कमंडलूकाधारणकरे और भिक्षाकरके निर्वाहकरे और अग्निहोत्र करे फेर कूष्मांडादि मंत्रों करके घृतकाहवनकरे २ इत्थें उपस्पर्श शब्द करके स्नानका ग्रहणहै यह अपरार्कमें कहाहै ॥ और दिनमें अतिथि क्या अभ्यागतोंकी वृत्तिधारणवाला होके

जमदग्निः हिरण्यशृंगवरुणमित्यापोभिप्रपद्यते सुमित्राइत्यपःस्पृष्ट्वा दुर्मित्रासुवहिःक्षिपेत् यदपांकूटमित्यापस्त्रिरालोडयतुपाणिना १ प्रायश्चित्ताचरणपर्य्यंतंधर्म्मानाह शंखः ॥ प्रायश्चित्तमुपासीनोवाग्यतास्त्रिरुपस्पृशेत् एकवासार्द्धवासावा लघ्वाशीस्थंडिलेशयः १ स्थानवीरासनीमौनीमौंजीदंडकमंडलुः भैक्षचर्य्याग्निकार्य्यंच कूष्माण्डैर्जुहुयाद्घृतम् २ उपस्पर्शः स्नानमित्यपरार्के दिवातिथीरात्रौचोपवेशनं वीरासनमिति विज्ञानेश्वरः॥ कुड्याद्यनाश्रयेणाऽहोरात्रमुपवेशनमेवेति शूलपाणिः ॥ कूष्माण्डैर्यद्देवादेवहेडनमित्याद्यैः ।मनुः। स्थानासनाभ्यांविहरेदशक्तोऽधःशयीतवा ॥ वसिष्ठः ॥ महाव्याहृतिभिर्होमःसावित्र्याचान्वहंस्वयम् कर्त्तव्यः पावनःसम्यक् सर्प्पिषाचतिलैस्तथा १

रके रहे फेर रात्रिमें बैठारहे यह वीरासनशब्दका अर्थ विज्ञानेश्वर जीने कहाहै ॥ और शूलपाणिजी तिसका और अर्थ कहतेहैं ॥ कुड्येति ॥ दिनरात कुड्यादि जो आधार हैन अर्थात् कंदसें लेकर जो आश्रय हैन तिनकेविना बैठारहे अर्थात् तिनकेआश्रयमें न बैठे और कूष्मांड शब्दकरके यद्देवादेवहेडनमित्यादिमंत्रोंकाग्रहणहै। और इसीमें मनुजीभीकहतेहैं स्थानेति किस्थानासनकरकेव्यवहार करे अर्थात् दिनमें खडारहे और रात्रिमें बैठारहे जेकर इसमें अशक्तहोवे तां भूमिशयन करे ॥ और वसिष्ठजी इसमें विशेषकहतेहैं महेति कि महाव्याहृतियोंकरके घृत और तिलों करके पवित्र हवनदिन २ प्रति करे परंतु सावित्री और महाव्याहृतिमंत्रकरके हवन करे सो महाव्याहृतियां ऊंभूः ऊंभुवः ऊंस्वः यहहैन और तत्सवितुः सें लेकर प्रचोदयात् इहांतक सावित्रीहै १

अत्रेति इसजगा घृत और तिलोंका व्याहृतियोंका और गायत्रीका विकल्प जानणा विकल्प क्या घृतकरके अथवा तिलोंकरके हवन करें गायत्री मंत्र करके अथवा महाव्याहृतियों करके करे एह अपरार्कमें कहाहै मत्स्यपुराणविषे विशेष कहाहै ॥ आपइति आपोहिष्ठा इत्यादि जो सूक्त और शुद्धवतियां जो ऋचा हैन फेर तिनके आगे जो अघमर्षण है और शंवतिआं और स्वस्तिमतियां और पावमानियां जो ऋचा हैन और तिनके आगे जो अघमर्षणहै तिनांसवनांनूं कृच्छ्रादिको विषे जोडे और पुरुष कृच्छ्रादिकांनूं करे १ वैशंपायन भी एहिवातक हतेहैं ऋषभमिति ऋषभ जो सूक्त और विरज जो सूक्त और शुद्ध वतिआं जो ऋचां और तिनकेआगे जो अघमर्षण और अतिपवित्रवेदोंकीमाता जो गायत्रीतिनां सवनानूं पुरुषजपे ॥ और गायत्रीके जपनेकी संख्या कहतेहैं एकसउ १०० अथवा आठ सउ ८०० अथवा एकहजार १००० अथवा अधिकभी जपे १ और वैशंपायनजीने और भी कहाहै स्नात्वेति स्नान करके सूर्य्यके सन्मुख खडा होवे और सूर्य्यके उपस्थानके जो मंत्र तिनों करके हाथजोडे

अत्रद्रव्याणांव्याहृतिगायत्र्योश्चविकल्पइत्यपरार्के तत्रैव पुराणे आपोहिष्ठेति सूक्तंतु शुद्धवत्योघमर्षणं शंवत्यःस्वस्तिमत्यश्च पावमान्योऽघमर्षः॥ सर्वत्रैवप्रयुंजीतकृच्छ्रादिव्रतमाचरेत् १ वैशंपायनः। ऋषभंविरजंचैव शुद्धवत्योघमर्षणम् गायत्रींवाजपेद्देवीं पवित्रांवेदमातरम् शतमष्टशतंवापि सहस्रमथवापरम् १ सएव। स्नात्वोपतिष्ठेदादित्यं सौराग्भिस्तुकृतांजलिः गौतमः। रौरवयौधाजयेनित्यंप्रयुंजीत रौरवयौधाजये सामनी। षट्त्रिंशन्मते। जपहोमादियत्किंचित्कृच्छ्रोक्तंसंभवेजपेत् सर्वंव्याहृतिभिःकुर्य्याद्गायत्र्याप्रणवेनवा १ हारीतः॥ सूर्य्यायदेवताभ्योवैनिवेद्यव्रतमाचरेत् निवेदनमग्नेव्रतपतेत्यादिमंत्रेणेत्यपरार्के। पराशरः। प्रायश्चित्तेषु सर्वेषुकुर्य्याद्ब्राह्मणभोजनम् शक्त्यावित्तानुसारेणप्रायश्चित्तानुरूपतः १

और गौतम जो विशेष कहतेहैं रौरवनूं और यौधा जयनूं पुरुष नित्यप्रति जोडे अर्थात् जपकरे और रौरव और यौधाजय एह दोनो सामवेदके मंत्रहैन ॥ और षट्त्रिंशत्‌केमतमें विशेषकहाहै ॥ जपेति जपहोमादिक जितनेककृच्छ्रमेंकहेहैन तिनांनूंपुरुष जपे जेकर सब नामिले तो जो संभव होवे अर्थात् जो मिले तिसनूं जपे और मंत्रकोई न मिलेतो व्याहृतियां अथवा गायत्री अथवा ओंकार करके करे ॥ १ ॥ हारीतजीभी विशेष कहतेहैं सूर्य्येति सूर्यके ताईं और देवतयोंकेताईं निवेदन करके व्रतकों करे और निवेदन अग्नेव्रतमित्यादि मंत्र करके करे एह अपरार्कमें कहाहै इसमें पराशरजी भी कहतेहैं ॥ प्रायश्चिचेति सवनों प्रायश्चित्तोंके विषे प्रायश्चित्तके अनुरूपतें अर्थात् जैसा प्रायश्चित्तहोवे तिसके अनुसार यथाशक्ति करके और वित्तानुसारता करके ब्राह्मण भोजन करे १

आसहेति और पुरुषगायत्रीनूं एकहजारपर्यंत१००० अथवा शतपर्यन्त१०० अथवा दशनामपर्य्यंत जपे और ओंकारकेसहित अथवा और कोई अष्टाक्षरादिमंत्र जपे अथवा दशहजार१०००० गायत्रीनूं जपे १ और प्रायश्चित्त करणेकी समर्थनाहोवेतांदूसरे पुरुष पासों करवाणा योग्यहै एह बात प्रायश्चित्त विवेकमें कहीहै ॥ ब्रह्मपुराणके वचनविषे कहतेहैं रोगीति रोगी पुरुष और वृद्ध और पौगंड क्या पांचवर्षसें उपरन्त दश वर्ष पर्यन्त एहजो हैन सो दूसरे पासों सदा प्रायश्चित्त करवाण और इसी पक्षको पराशरजीभी पुष्ट करतेहैं ॥ व्याधीति ॥ व्याधि क्या रोग और व्यसन क्या जूया और मद्यपान और विभ्रान्त क्या उपद्रव और दुर्भिक्ष और डामर क्या एक राजाकेऊपर दूसरे राजानेचडकरके आवणा एहबातां जद होण तां निराहार व्रत होम नियम-ब्राह्मणांसें करवाए होए शुद्धि करणेवाले हुन्दे हैन १ अब व्रतकेअन्तमें जो कर्तव्यताहै सोपरा

आसहस्रादाशताद्वादशांतमथवाजपेत् ओंकाराद्यंतथान्यद्वागायत्रीमथवायुतं १ अशक्तौ ॥ प्रायश्चित्तमन्यद्वारापिकार्य्यमिति प्रायश्चित्तविवेके ब्राह्मे। रोगीवृद्धस्तुपौगंडःकुर्य्यादन्यैर्व्रतंसदेति। पराशरः। व्याधिव्यसनविभ्रांते दुर्भिक्षेडामरेतथा उपवासोव्रतंहोमोद्विजसंपादितानिवै १ शुद्धिकराणीतिशेषः। डामरंपरचक्रादि व्रतांतेकर्तव्यतामाह पराशरः। पंचगव्यंपिबेच्छूद्रोब्रह्मकूर्चंपिबेद्द्विजः एकद्वित्रिचतुर्गावोदद्याद्विप्राद्यनुक्रमात् १ ब्रह्मकूर्चप्रकारोव्रतप्रकरणे वक्ष्यते ॥ शिष्टास्तुपूर्वमेव ब्रह्मकूर्चं कुर्वंति यमः ॥ प्रायश्चित्तेव्यवसितेकर्त्तायदिविपद्यते शुद्धस्तदहरेवासाविहलोके परत्रचेति १ अंगिराअपि ॥ यदर्थमाचरेद्धर्ममप्राप्यम्रियतेव्रतम् सतत्पुण्यफलंप्रेत्यप्राप्नुयान्मनुरब्रवीत् १ ॥

शरजी कहते हैं ॥ पंचगव्यमिति कि व्रतके अंतमें शूद्र पंचगव्यनूं पीवे और द्विज क्या ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य ब्रह्म कूर्चनूं पानकरे और क्रमतें एक १ दो २ तीन ३ चार ४ गौआं दान करण अर्थात् ब्राह्मण एकगौ दान करे और क्षत्री दो करे और वैश्य तीनकरे और शूद्र चारगौआंदान करे १ और ब्रह्म कूर्चके बनानेका प्रकार व्रतप्रकरण विषे कहेंगे ॥ और उत्तम पुरुष-जो हैन सो ब्रह्म कूर्चनूं व्रतके पहले हि करते हैन ॥ अब धर्म्म राजजी प्रकारांतर कहतेहैं प्रायश्चित्त इति प्रायश्चित्तके प्रारंभके कीते यां होयां करणे वाला जेकर मरजावे तां उसी रोज-इसी लोक विषे और परलोक विषे शुद्ध होजाता है १ और एहीबात अंगिरसजी कहतेहैं यदिति ॥ जिसके वास्ते पुरुष धर्म्मनूं करे और व्रतकी समाप्तिके पहिले ही मरजाए तां मर करके तिस व्रतके पुण्यनूं प्राप्त होजाताहै एहमनुजीने कहाहै १

अवछागलेय ऋषिजी और प्रकारकहतेहैं पूर्वमिति जो पुरुष पहलें व्रतनू ग्रहण करके फेर काम करकेमोहितहोया २ नाकरे सो जीन्दाहीचाण्डाल होजाताहै और मरकरकेकुत्ते की यूनमें प्राप्त होताहै १ और एहि प्रकारबायुपुराणविषेभी कहाहै लोभादिति लोभतें और मोहतें और प्रमादसें जेकर व्रतकाभंग होजावे तां पुरुष तीन ३ निराहार व्रत करे और केशोंका मुण्डन करवावे १ प्रति ऐसा प्रायश्चित्त करके फेर उसीव्रतकोधारे और इसजगा वाशब्द जोहै सो समुच्चय बो धकहै अर्थात् तीनव्रतकरणे और साथहि मुंडनकरवाणा और जुदानहि करवाणा एहि समुच्चय किहाहै ❁ अब सबनां पापोंके प्रायश्चित्तका विधानकहतेहैं ॥ इस विषे अब पूर्वोक्त हि विधि बाक्यसारे प्रयोगकी सुगमता करके अनुष्ठा नकेवास्ते दिखाई दे हैन ॥ उरसेति छातिकरके और शिर और दृष्टि और मन और स्तुति कर्म्म और पाद और हाथ और जानु इनां सबनां करके

छागलेयः॥ पूर्वंव्रतंगृहीत्वातुनाचरेत्काममोहितः जीवन्भवतिचांडालोमृतः श्वाचाभिजायते १ वायवीये ॥ लोभान्मोहात्प्रमादाद्वाव्रतभंगोभवेद्यदि उप वासत्रयंकुर्य्याद्वाकेशमुंडनंतथा १ प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरेवव्रतीभवेत् वा शब्दःसमुच्चयइति ❁ अथसर्वप्रायश्चित्तविधानं ❁ अत्रपूर्वोक्तानिसकलानिवि धिवाक्यानिसकलप्रयोगस्यसौकर्य्यायानुष्ठानप्रकारायप्रदर्श्यंते उरसा शि रसादृष्ट्यामनसास्तुतिकर्म्मणा। पद्भ्यांकराभ्यांजानुभ्यांप्रणामोष्टांगउच्यते १ ततःसभ्यैर्वाच्यं। विप्राःपृच्छंतिकिंकार्यमुपविश्याग्रतःस्थितं किंतेकार्यंवदा स्माभिःकिंवामृगयसेद्विजान् १ तत्त्वतोब्रूहितत्सर्वंसत्यंहिगतिरात्मनः॥ सत्येनद्योततेराजासत्येनद्योततेरविः२ सत्येनद्योततेवन्हिः सर्वंसत्येप्रतिष्ठि तम् ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयोलोकास्तेपिसत्येप्रतिष्ठिताः ३ अस्माकंचैवसर्वेषांसत्य मेवपरंवलम् यदिचेद्वक्ष्यसेसत्यंनियतंप्राप्स्यसेशुभम् ४ यद्यागतोस्यऽसत्ये नन्नत्वंशुद्धयसिकर्हिचित् ब्राह्मणवचनंश्रुत्वा बद्धांजलिपुटश्चाग्रभूमावेवो पविश्योपायनस्यसंकल्पंकुर्यात्

सभामें ब्राह्मणोंकेतांई नमस्कारकरे इसकों अष्टांग प्रणाम कहतेहैं १ तिसतें अनन्तरसभावालयांने ऐसें कहना चाहिए आगे स्थित होये २ नूं ॥ ब्राह्मणपूछदे हैन कि भोपुरुष क्याकार्यहै तुमारा असां द्वारा अथवा क्यातुम्तेहो १ ब्राह्मणांसें सब सच्चकरकेकहो सत्यआत्माकी गतिहै अर्थात सत्यकरके आत्माप्राप्तहोताहै और सत्यकरकेराजा और सूर्य और अग्नि बहसबप्रकाशतेहैं और सारासंसार और भूर्भुवःस्वः इह तीनों लोक एह सब सत्यकरके हि स्थितहैन ३ अस्मेति असां सबनांको सत्यही परम बलहै और जेकर तुमसत्य कहोगे तां शुभको प्राप्त होजावोगे ४ और जेकर झूठ कहनेकेनिमित्त आए हो तब तुम शुद्ध न होवोगे॰ ऐसा जो ब्राह्मणोंकाबाक्य तिसनूं सुनकरके बद्धांजलि होया २ भूमिमे बैठकरके ब्राह्मणोंके वास्ते भेटाका संकल्पकरे १

गोमिथुनस्येति किएकगौ और एकवैल अथवा तिनकामुल्लसंकल्पकरे सो मुल्लकहतेहैं बत्तीसपैसेगौ कामुल्लहै औरसोलांपैसेंवैलका और पराशरजीकहतेहैं षापमिति और पापीजोपुरुषहै सोपापनू गौ दान और वैलकेदानकरकेदूरकरे अथवा तिनकेमुल्लकादानकरकेपापांनू दूरकरेप्रायश्चित्तमे प्रवृत्तहोने करके पपीकों सुधीकिहाहै १ और कैं ६४ ढौए गौका मुल्लकहतेहैं और वैलका तिसतें अद्दा और तिसके अनन्तर आचमन और प्राणायाम करके तिल और कुशाकों जलके सहित हाथमें लये और संकल्प पडे ॐतत्सदद्यब्रह्मणोद्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेत वाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जंवू द्वीपे भारतखंडे आर्य्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तदेशे कुमारिकाक्षेत्रे वर्त्तमान संवत्सरे अमुकायनेऽमुकर्त्तौ अमुकराशिगते सूर्य्येऽमुकराशिगते चंद्रे अमुक मासे अमुकपक्षे अमुक नक्षत्र योग करण मुहूर्त्तयुक्तायां तिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽ

गोमिथुनस्यच द्वात्रिंशत्पणिकागावोवृषभस्तुतदर्द्धकः ॥ पराशरः ॥ पापंप्रक्षालयेत्पापीदत्त्वाधेनुंतथावृषम् ॥ तन्मूल्यंवानिधायाथपापंप्रक्षालयेत्सुधीः १ निष्क्रयढब्बुकाः ६४ इतिकेचित् आचम्य प्राणानायम्य ततस्तिलकुशान्गृहीत्वा ॐमद्येत्यादिशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थंप्रायश्चित्तग्रहणनिमित्तं इदंप्राजापत्यंगोमिथुनं वार्हस्पत्ये वाससी वारुणं कमंडलुं आंगिरोदैवते उपानहौ कुंडलमुद्रिकाप्रत्याम्नायमाग्नेयंहिरण्यम् अथवा तन्निष्क्रयंयथाशक्तिपरिमितं द्रव्यंसभोपविष्टब्राह्मणेभ्योऽहंसंप्रददे ॥ तेन पापापहाश्रीभगवान् विष्णुःप्रीयताम् ॥ किंचित्पापंनगूहेतकृत्वास्वल्पमपिद्विजः तस्मात्साधुसमाख्येयंतेनतत्समयेद्विजेतिवचनानुसारेणषदपिपापमगोपयन् फलंगृहीत्वा कृतांजलिर्भूत्वा आब्रह्मस्तंबपर्य्यंतंभवद्वशमिदंजगत् यक्षरक्षःपिशाचादिसदेवासुरमानुषम् १ ॥

मुक शर्म्माहं शास्त्रोक्त फल प्राप्त्यर्थं मित्यादि पठित्वा सभोपविष्ट ब्राह्मणेभ्योऽहंसंप्रददे ऐसें संकल्प करे तेनेति तिस संकल्पकरणे करके पापोंके दूरकरणें वाला जो भगवान् विष्णु सो प्रसन्न होवे ॥ अब पराशरजी और प्रकार कहतेहैं किंचिदिति पुरुष थोडा भी पाप करके किञ्चित् मात्र भी गुप्त न रक्षे तिस कारण तें साधु जैसें होवे तैसें तिसी कालमें कहदेवे इसवाक्य के अनुसारथोडाभी पाप होवे सोभी गुप्तनरक्षे अर्थात् पापनू सभाकेआगे प्रकट करे और हाथमें कोई फल लय करके और हाथ जोड करके ऐसें कहे । आब्रह्मेति कि हेब्राह्मणों ब्रह्मासें लेकर स्तंब पर्यन्त जितना संसार है सो सव तुमारे अधीन हैं और यक्ष और राक्षस पिशाचादि सव और देवताअसुर मनुष्य एभीतुमारे अधीनहैंन स्तंबनाम वहुत छोटे जीवकाहै १

सर्वइति और सर्वधर्मकाविवेकजाननेवाले जो तुम ब्राह्मणहो और सवनाधर्मांकी रक्षाकरणेवले
सो तुमसंपूर्ण मेरेदेहकीशुद्धिकरो २ पुराकृतमिति और पूर्वकालविषेजो घोरपापजानकरके अथवा
नाजानकरके मैनेकीताहै जन्मसेंलेकरआजदिनपर्यन्ततिसपापसें हे ब्राह्मणोमेरेको पवित्रकरो ३
और पूजनीयजो आपहातुमारेकरके पवित्रहोया२मैं पापसेंरहित होजावांगा और मेरे ऊपर आप
कृपाकरो और मेरेताई शुभआज्ञा करो (प्रयच्छथ) एह प्रयोगलेट्काहै ४ ऐसे कहकरके फेर
ब्राह्मणोंकीप्रदक्षिणा करके फेर नमस्कार करे तिसतें अनन्तर संकल्प करे ॐमद्येत्यादि ममइति
मेरेजन्मसें अज्ज दिन पर्यंत मन वाणी देह करके बुद्धिपूर्वक अथवा न बुद्धिपूर्वककीते होये जो
पाप अपनी इच्छाकरके अथवा किसीके प्रेरयां होयां अथवा अनुमन्ताहोकरके अर्थात् अपनी
वडयाई करके और सलाह देकरके कीते जो कर्त्ता भेदसें भिन्न महापातक अतिपातक उपपा

सर्वधर्म्मविवेक्तारोगोप्तारः सकलाद्विजाः ॥ ममदेहस्यसंशुद्धिंकुर्वंतु द्विज
सत्तमाः २ पुराकृतंमयाघोरंज्ञातमज्ञातकिल्विषं जन्मतोद्यदिनं यावत् ।
तस्मात्पापात्पुनंतुमाम् ३ पूज्यैःकृतपवित्रोह्यभविष्यमनघस्तथा प्रसादः
क्रियतांमह्यं शुभानुज्ञांप्रयच्छथ ४ इत्युच्चार्य्य प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कारं
कृत्वा ॥ ॐमद्यपुण्येकालेदेशेच ममजन्मनोद्य दिनंयावत् वाङ्मनः काय
कृतानांबुद्धिपूर्वकाणामबुद्धिपूर्वकाणां सकृदभ्यासविषयाणां स्वतंत्रप्रयो
जकानुमंतृनिमित्तकर्तृभेदभिन्नानां महापातकातिपातकोपपातक तत्स
मरहस्यसंज्ञितानां गुरुलघुपापानां शोधनार्थं तथा शय्यास्थित भक्ष्यपा
नादिरसौषधी कंदमूलादि निषिद्धवस्तु प्राशनादि पापविशुद्ध्यर्थं तथा मा
ता पितृ गुर्वाज्ञालंघनाऽसकृत्स्नानसंध्योपासनतर्प्पण सुरार्चन वैश्वदे
वादिकर्मराहित्य कुत्सितान्न भोजन म्लेच्छसेवा इतरजाति चांडालादिसं
सर्ग संभाषणगमन प्रेतक्रिया एकादशाहे तथा सीमंतोन्नयने जातश्राद्ध

तक और तत्सम और रहस्य एह संज्ञा वाले जो पाप और गुरु लघु जो पाप तिनकी शुद्धि
के वास्ते और तैसेंही शय्याके उप्पर बैठ करके जो भक्ष्याभक्ष अपेय पान इत्यादिकों
करके उत्पन्न होआ जो पाप तिसकी शुद्धि के वास्ते और तैसेंही माता और पिता और गुरु
इनकी नहिआज्ञामाननेसें उत्पन्न होया जो पाप और वारंवार स्नान संध्या तर्पण सुरार्चन
वैश्वदेवादि कर्म इनसे रहित होणा और कुत्सित अन्नका भक्षणकरणा और म्लेच्छ सेवा और
इतर जाति चांडालादिकोंके साथ संबंध क्या स्पर्श और संभाषण और गमन इनसे उ
त्पन्न होया जो पाप और प्रेतक्रिया एकादश दिनमे प्रेतके निमित्त अन्न भक्षण करणे करके उ
त्पन्न होया जो पाप और तैसेहि सीमंत जो गर्भसे लेकर अष्टम मास तिस विषे और जा
त श्राद्ध विषे अर्थात् बालकदे जन्मकालमे नाडुछेदनके पहले जो श्राद्ध तिस विषे

नवेति और नव श्राद्ध विषे नवश्राद्ध क्या प्रथममासकसें लेकर तीन वर्ष पर्यंत और प्रेत श्राद्ध विषे प्रेतश्राद्ध क्या मरणदिनसें लेकर एकादश दिनपर्यन्त तिनकेविषे भोजन करणेसें उत्पन्न होए जो पाप और एकादशीसें आद लेकर जो व्रतदिन तिनके विषे भोजनकरणेतें उत्पन्न होये जो पाप और अगम्यागमन और व्रतभंग और अनृतभाषण अर्थात् झूठकथन और कूट- साक्षिप्रदानचंचुत्व अर्थात् झूठी उगाहि देणे विषे चातुर्य्यता और मतकुण और यूका और कीट और पतंगादि और अंडज और जरायुज और उद्भिज्ज क्या वृक्षादि एह जो सभ प्राणी तिनकी हिंसासें उत्पन्न होये जो पाप और अभक्ष्य भक्षण और अस्पृश्य स्पर्शन और अपेय पान क्या मदिरादिककापान और पिशुनता क्या चुगली और गोविक्रय और कन्याविक्रय और अश्वविक्रय इनसेंउत्पन्न होये जो पाप और रजक और चर्मकार इनसें आदलेकर और नीच जाति तिनोंका प्रतिग्रह क्या दानलेना और धान्यादिकोंका चुराणा और दूसरेकेधनादिकका

नवश्राद्धे प्रेतश्राद्धादिषु भोजनोत्पन्नोपपातकानां एकादश्यादि व्रततिथौ भोजनादुत्पन्नानां अगम्यागमन व्रतभंगानृतभाषण कूटसाक्षिप्रदानचंचुत्वमत्कुणयूकाकीटपतंगाद्यंडजजरायुजोद्भिज्जादिसमस्तप्राणिहिंसोत्पन्नपातकानां अभक्ष्यभक्षणास्पृश्यस्पर्शनापेयपानपैशुन्यगोविक्रयकन्याविक्रय हयविक्रय रजकचर्म्मकारादि प्रतिग्रह धान्यादिहरण परद्रव्यादिहरण देवद्रव्यब्राह्मणानाथविधवादीनां छलाद् द्रव्यहरण श्वमार्जारकुक्कुटादिव्रणस्पर्शादि परविघ्नकरण कटुवचन सुवर्ण रूप्य ताम्र कांस्य पित्तल सीस लोहादि हरण दुग्ध दधि मधु घृत तैल विद्या पुस्तक मूर्त्ति वस्त्र पटोर्णा सूत्र प्रवाल मौक्तिक मणि चामर रत्नादि हरण मित्रभार्य्या गमन रजस्वलादि गमन संभाषणायोनिगमन पशुयोन्यादिगमनांगुल्यायोनिपिधानकरणाद्वीर्य्योत्पादन नग्नस्त्र्यवलोकन स्वप्नविषयक परस्त्रीगमन ऋतुस्नातस्वभार्य्याऽगमन

चुराणा और देवता और ब्राह्मण और अनाथ और विधवा इनोंका छलकरके धन चुराणाइन कर्म्मोंसें उत्पन्न होये जो पाप और श्व क्या कुत्ता और मार्जार क्या बिडाल और कुक्कुट इनका वड्डणा और इनकेसाथ स्पर्शादि होणा और दूसरेके कार्यमें विघ्नकरणा और कुत्सित वाक्य कहणा इन सबनोंसें उत्पन्नहोये जो पाप और सुवर्ण और चांदी और ताम्र और कांस्य और पित्तल और सिक्का और लोहा और दूध और दधि और मधु और घृत और तैल और विद्या पुस्तक और मूर्त्ति वस्त्र- पट ऊर्ण और सूत्र और प्रवाल क्या मुंगा और मोती मणि चौरी रत्न इन वस्तुवोंकाचुराणा और मित्रकी स्त्रीकेसाथगमन और रजस्वलादिगमन और संभाषण और अयोनिगमन क्या गुदामें गमन और पशुयोन्यादिगमन और अंगुलि करके योनिभिधान करणेतें वीर्योत् पादन और नग्नस्त्रीका देखणा और परस्त्रीका स्वप्न विषे आलिंगन करणा और ऋतु विषे स्नात होई २ स्त्रीकेसाथ प्रमादसें मैथुन नहि करणा

निषिद्धतिथि और निषिद्धतिथिवारनक्षत्र योगादिकोंमें मैथुनकरणा और दूसरेकेविवाहमें भंगकरणा और तृषातुर धेनु और पशु तिनको न जलपल्याककेंआप जलपीलयणा और तीर्थ यात्रा विषे विघ्नकरणा और पंच महायज्ञकात्यागकरणा पंच महायज्ञ क्या पाठ १ होम २ अतिथिपूजन३ तर्प्पण ४ बलिदान ५ एहहैंन और पंच महापापियोंके साथ संभाषण और स्पर्शन और तिनसें दानलयणा पंच महापातकी क्या ब्रह्महत्या १ सुरापान २ गुरु की स्त्रीके साथ गमन ३ सुवर्ण चुराणा ४ पंचमा इनके साथ संसर्ग करणेवाला ५ एह पंच महापातकी हैंन और चांडालादिकोंका गीत सुनना इनसभनोंकर्म्मोंसें उत्पन्नहोये जो पाप और काम क्रोध लोभसें उत्पन्न होए जो पाप तिनके दूर करणेकेवास्ते इसलोकविषे श्रुति स्मृतिकरके प्रतिपाद्य जो धर्म्माधिकार तिनके नष्टहोयां २ अतितीव्र पीडाकर्के युक्त जो कुम्भीपाकादि नरकतिनका भय दूर करणे वास्ते स्वर्णादिमुद्रिकाद्वारा अथवा यथाशक्ति करके मैं प्रायश्चित्तकीयाचना करताहुं और आप कृपाकरके

निषिद्धतिथिवारनक्षत्रयोगादिगमन कृतपरविवाहभंजनतृषार्त्तधेनुपशुविस्मृतिपूर्वकोदपानतीर्थयात्राविघ्नानुकरण पंचमहायज्ञाकरण पंचमहापातकिसंभाषणस्पर्शप्रतिग्रह। चांडालादिगीतश्रवणादि।एतेषां तथामदनमत्सरमोहाद्यनेकपापानां परिहारार्थं इहलोकेश्रौतस्मार्त्त धर्म्माधिकारलोपेषु अतितीव्रवेदनादिमत्कुंभीपाकादिनरकभयनिवृत्त्यर्थं निष्कादिद्वारावा यथाशक्त्याप्रायश्चित्तमहंयाचे तदनुग्रहंकृत्वा प्रायश्चित्तमुपदिशंतुभवंत इतित्रिर्वाच्यम् पर्षदग्रे तूष्णींतिष्ठेत् ॥ अथसभ्यपादप्रक्षालनम् अत्रचंदनादिनापूजा सभानुज्ञातस्य किंचित्ततोऽपसर्पणम् निर्णयपर्य्यालोचिते सति सभायामाकारितस्य तत्र तथोपवेशनम् बद्धांजलिना सभावाक्यश्रवणम् आलोकितंप्रायश्चित्तंतेवक्ष्याम इतिसभ्यैरुक्तेमहान् प्रसादइत्युक्त्वा यावदनुग्रहंकुर्वंति तावच्छिरोंजलिना स्थेयम्

प्रायश्चित्तनू उपदेश करो ऐसें तीनवार कहणा चाहिये तिसतें अनन्तर सभाके आगे मौनहोकरके खडारहे ॥ अथेति अव और प्रकार कहलेहैं कि सभावालयोंके पादोंकोधोवे और चन्दनादिकों करके पूजन करे तिसतें अनन्तर सभा करके आज्ञत होए २ कों यत्किंचित् पिछड़े हटनाचाहिये और तिसतें अनन्तर पापके निर्णय कीतयां होयां फेर सभाविषे बुलाएहोएको उसी जगामें वठानाचाहिये और बद्धांजलिहोकरके तिसीने सभावालयोंकावाक्य श्रवणकरणाचाहिये तिसतें अनन्तरसभावाले ऐसेकहन कि असांने प्रायश्चित्तविचारयाहै सो तेरेप्रति कहेंगे तूं सावधान हो करके सुन ऐसें कहेयां होयां फेर प्रायश्चित्ती कहे कि आपने वडी कृपा कीत्तीहै ऐसें कहकरके जितना काल अनुग्रह करते रहण अर्थात् शास्त्रका कथन करते रहण उतना काल शिरके साथ हाथ जोडकरके स्थितहोणा चाहिये

तद्वइति और तिसतें अनन्तर सभा वालयोंनें तीनवार ऐसाकहणा चाहिए कि ब्रह्महत्यादि जो बहुत अनेकप्रकारके और जो साधारणपाप हैन तिनांनू करके पुरुष वारांवर्ष व्रतकरे १ जन्मेति और पुरुष जन्मसें लेकर ब्रह्महत्यासें उरें २ बहुत अनेक प्रकारके पापोंकोंकरके छे वर्षका व्रत करे २ जन्मेति और पुरुष जन्मकालसें लेंकर पातक और उपपातक जो पाप महापापसें विनाहैन तिनांनू करके छे वरसके व्रतकरके शुद्धहुंदाहै ३ उपपातकेति और उपपातक पाप करके युक्तभी पुरुषहै जेकर फेर प्रकीर्ण पापनू करे तां वरस भरके व्रतकरके शुद्ध हुंदा है ऐसेस्वायंभुव मनुजीकहते भये ४ यद्यपीति जेकर आपही वहुतवार वुद्धि करके कीताहै वडा पाप जिसपुरुषनें सो तीन वरसके व्रतकरके शुद्धहुंदाहै परंतु महापापसें विना महापापवाला तीनवरसके व्रतकरके शुद्ध नहि हुंदा ५ अज्ञात्वेति और जिस पुरुषनें ना जानकरके कामनातें विनाही पापकीताहै सोअर्द्ध प्रायश्चित्तकरे और जेकर कामनातें कीताहोवे तां समग्र प्रायश्चित्त करे और

ततःसभ्यैस्त्रिर्वाच्यम् ब्रह्महत्यादिपापानिवहूनिविविधानिच कृत्वानरोऽन्य
पापानिद्वादशाब्दंचरेद्व्रतम् १ जन्मप्रभृतिपापानिवहूनिविविधानिच कृत्वा
वाग्ब्रह्महत्यायाःषडब्दंकृच्छ्रमाचरेत् २ जन्मप्रभृतियत्किंचित्पातकंचोप
पातकम् षडब्देनैवशुध्येतमहतःपातकादृते ३ उपपातकयुक्तोपिप्रकीर्णपा
पमाचरेत् अब्देनैवतुशुध्येतमनुःस्वायंभुवोऽब्रवीत् ४ यद्यपिस्वयमभ्यस्तं
वुद्धिपूर्वमघंमहत् तच्छुद्धंत्र्यब्दकृच्छ्रेणमहतःपातकादृते ५ अज्ञात्वार्द्धंप्रकु
र्वीत प्रायश्चित्तमकामतः संपूर्णंकामतःकुर्याच्छलात्तुद्विगुणंभवेत् ६ पति
व्रताचरोगीचवृद्धश्चैवविशेषतः अकामतश्चकर्त्तारःप्रायश्चितार्द्धकारिणः७
कृच्छ्रशब्देनप्राजापत्यमुच्यते।अतिकृच्छ्रे।द्विगुणं प्रायश्चित्तंशक्त्यनुसारेण
पापानुसारेणवा एकाब्दंद्व्यब्दं त्र्यब्दं षडब्दं द्वादशाब्दकं पर्षदोऽनुमतंवा १
प्राजापत्यप्रत्याम्नायाःसंहितापारायणम् गायत्र्ययुतजपःतिलहोमसहस्रम्
द्वादशब्राह्मणभोजनम् शतद्वयंघृतहोमः होमोऽत्रगायत्र्या व्याहृतिभिर्वा

छलतें पाप कीता होवे तां दूना प्रायश्चित्तकरे तो शुद्ध हुंदाहै ६ पतिव्रतेति और पतिव्रता स्त्री और रोगी और वृद्ध कामनांतेविना हि जेंकरपापके करणे वालेहोण तां अर्द्धप्रायश्चित्तकरण ७ और कृच्छ्र शब्द करके प्राजापत्यका ग्रहणहै और अतिकृच्छ्रशब्दकरके दोप्राजापत्यकाग्रहण है और और प्रायश्चित्त शक्तिके अनुसार करके पापके अनुसारते एकवरस अथवा दो वरस अथवा तीनवरस अथवा छेवरस अथवा वारां वरस व्रतकरणा अथवा जो सभा वालयोंकी आज्ञा होवे सो करणा और प्राजापत्यकी वदली विषे जो हैं तिनको कहतेहैं संहितेति संहिताका पारायण करणा और दश १०००० हजार गायत्री का जपकरणा और तिलोंका एक हजार १००० हवनकरणा और वारां १२ ब्राह्मणोंको भोजन देणा और दोसउ २०० घृतका होम करणा परंतु इसमें होम गायत्री करके अथवा व्याहृतियोंकरके करणा

रुद्रेति और रुद्रीकेजारांपाठकरणे और समुद्रमेजानेवालीजोनदीहै तिसमेंस्नानकरणा और चार कोसपर जो तीर्थ तिसकी यात्राकरणी और एकगौकादान करणा सुवर्णेति सुवर्णक्या एकमोहर अथवा एकरुपैया अथवा आठआन्ना अथवा चारआन्ना गौका मुल्ल दानकरके देणा और वारां स्नान करणे परंतु एकस्नानकरके केश सुकालयणे फेर दूसरा स्नानकरणा इसीतरह तीसरेसेंलेकर वारांस्नान करणे और चौव्वीसीधे कच्चे अन्नके संकल्पकरणे एह सभ एक प्राजापत्यके वरावर हैन इसवास्ते जो प्राजापत्यको न करसके सो इनांविच्चों इक्कों करे इनमे मुख्य सुवर्ण दानहै और सुवर्णदेनेंकी सामर्थ्य न होवे तां चांदीकादान करे इसवास्ते इनां प्रकारां विच्चों एक प्रकार नुं कर ऐसा सभावालयांका वचन सुनकरके अपनी शक्ति कहदेवे और तिसतें अनन्तर अपनेकोस्वीकृत और सभा वालयोंकरके आज्ञत कीताहोया जो पक्ष तिसनूं अंगीकार करके ऐसें कहे कि आपकी आज्ञा मुजको प्रमाणहै तिसतें अनन्तर शिरकेसाथ हाथ जोडकरके मास

रुद्रैकादशिनी समुद्रगनदीस्नानं योजनतीर्थयात्रा एकगोदानम् सुवर्णरूप्यनिष्कतदर्द्धतदर्द्धानां गोमूल्यानांदानं शुष्ककेशस्य द्वादश स्नानानि द्विगुणद्वादशामान्नदानंचैकप्राजापत्यसमामिति मुख्यं सुवर्णम् तदशक्तौ रजतं एतेषांमध्येएकंप्रकारंकुरु इतिसभ्यानां वचनंश्रुत्वा स्वशक्तिंनिवेदयेत् ततःस्वाभिमतं परिषदनुज्ञातं पक्षमंगीकृत्यादेशः प्रमाणमित्युक्त्वा वद्धांजलिंशिरसिकृत्वा कर्त्ता मासपक्षाद्युच्चार्य्य करिष्यमाणप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन निवन्धपूजामनुवादकपूजांच करिष्येइतिसंकल्प्य चन्दनादिना संपूज्य निवंधपूजात्वेन यथाशक्तिद्रव्यं संकल्प्यानुवादकाय पापानुसारेण दक्षिणां भृतिरूपां दद्यात् ॥ ततःसभ्याःपुस्तकवाचनपूर्वकमनुवादकस्याग्रेकथयेयुः अनुवादकश्च कर्त्तारं वदेत् तद्यथा सभ्यैरुपदिष्टोऽनुवादकोऽमुकस्य ते जन्मप्रभृतिअद्य यावत्

पक्षादिकोंका उच्चारणकरके करणे योग्य जो प्रायश्चित्त तिसके अंगकरके निवंधक्या पुस्तक तिसकीपूजा और अनुवादकक्या उपदेश करणे वाला जो पण्डित तिसकीपूजा मैं करताहूं ऐसें संकल्प करकें चन्दनादिकों करके पूजन करके तिसके अनन्तर निवन्ध पूजाङ्गत्वकरके यथा शक्तिके अनुसार द्रव्यका संकल्प करके अनुवादकके ताईं पापकी अनुसारता करके भृतिरूपा जो दक्षिणा अर्थात् पंडितकीपरिश्रमकेयोग्य जो दक्षिणा सो देवे और तिसके अनन्तर सभावाले जो हैन सो पुस्तक वाचन पूर्वक अनुवादककों असे कहदेण और तिसके अनन्तर अनुवादक प्रायश्चित्त करणे वालेनूंकहे और सो अनुवादक सभा वालयों करके आज्ञप्तहोया २ ऐसें कहे कि अमुक शर्म्मा जो आपहो तुमारेंजन्म कालसें लेकर आज पर्यन्त

ज्ञातेति ज्ञात और अज्ञात पाप जो हैन और कामना करके अथवा नाकामना कर्के कीतेहोए जो हैन एकवार अथवा वारं वार और देह करके अथवा वाणी करके अथवा मन करके अथवा पापियोंके संबंध करकें अथवा स्पर्शाऽस्पर्शी करके क्या नीचके साथस्पर्श और गुरुचरणोंके साथअस्पर्श इत्यादि कर्के अथवा भक्ष्याभक्ष्य क्या लसुनादिके भक्षण कर्के और नैवेद्यादिके अभक्षण कर्के और पीताऽपीत क्या मदिरादिके पानकर्के और चरणोदकादिके अपान कर्के और संपूर्ण जो पातक और उपपातक और लघु पातक और संकरकिरण और मलिनीकरण और अपात्रीकरण और जाति भ्रंशकर इत्यादिक जो पाप हैन तिनके मध्यविषें कीते होए जो पाप तिनकी निवृत्तिके वास्ते सभा वालयों करकें कथन कीता हुआ जो प्रायश्चित्त अमुक प्रत्याम्नायद्वारा अर्थात् वदलीकरके प्राचीन मत

ज्ञाताज्ञात कामाकामसकृदभ्यासकृतकायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिक स्पृष्टास्पृष्ट भुक्ताभुक्तपीतापीत सकलपातकातिपातकोपपातक लघुपात कसंकरीकरणमलिनीकरणाऽपात्रीकरणजातिभ्रंशकरेत्यादिमध्येसंभावि तपापानां निरासार्थंपर्षदुपदिष्टं प्रायश्चित्तममुकप्रत्याम्नायद्वारा प्राच्यो दीच्यांगसहितं त्वयाचरितव्यं तेन तेशुद्धिर्भविष्यतित्वं कृतार्थोभाविष्यासि इतित्रिरुपादिशेत् कर्त्ताऽोमित्युक्त्वाप्रणम्यपर्षदंविसृजेत् ततोरिक्तायां सायाह्ने देशकालौसंकीर्त्त्यामुकशर्म्मणोमम जन्मप्रभृतिअद्ययावत् ज्ञाता ज्ञातादिमध्येसंभावितानांपापानांनिरासार्थं पर्षदुपदिष्टं प्राच्योदीच्यांग सहितममुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्य इतिसंकल्पइतिप्रायाश्चित्तेन्दुशेखर प्रायश्चित्तमुक्तावल्यादौ॥

और नवीनमतकर्के सहित तैंने करणा चाहिए तिस कर्के तेरी शुद्धि होवेगी तिसकें अनन्तर अनुवादक तीनवार ऐसें कहेक्या तूकृतार्थहोवेंगा और प्रायश्चित्त करणेवाला अंगीकार करके फेर नमस्कार करे फेर सभाकोत्यागदेवे तिसतें अनन्तर चतुर्थ्यादि ४। ९।१४। एह जो रिक्ता तिथि आं हैन तिनोमें सायंकालविषे देशकालादिकोंका उच्चारण करके ऐसाकहे अमुकशर्म्मणोम म जन्म प्रभृति अद्य यावत् ज्ञाता ज्ञात जो पाप तिनकें मध्यमें मेरे करके कीते होये जो पाप तिनकी निवृत्तिके वास्ते सभावालयों करके दिखाया होया जो प्रायश्चित्त प्राचीन और नवीन मत के सहित इस प्रत्याम्नाय करके अर्थात् वदली करके मैं कर्त्ताहुं ऐसें संकलपकरे एह वात प्रायश्चित्तेन्दुशेखरमें और प्रायश्चित्तमुक्तावलीआदिकमें कहीहै ॐ

यानीति और तिसकेअनन्तर ऐसें कहे क्या जितनेकपाप हैन थोडे वहुते और ब्रह्महत्याके सम सो सब केशांके आश्रय होकरके स्थित रहतेहैं इसवास्ते मैं केशों का मुण्डन करवाताहुं एहसं कल्पकरे ॥ अब विशेषकहतेहैं सभर्तृकाणामिति कि सहित भर्त्ताके जो स्त्रीयां हैन और राज्यके ऐश्वर्य्य करके युक्त जो पुरुष तिनकोमुण्डन करवाणा योग्य नहिहै तिसवास्ते केशोंके अग्रभागसें दोअंगुलीप्रमाणकटवाये १ और दण्ड जो है सो दूणादेणा चाहिए एहअंगिरसजीका बचन है कक्षेति कच्छ और लिंगके रोमोंको वर्जकरके नख और रोमानुं कटवाये ॥ अथ पापोंकीआधिक्यताविषे और प्रकार कहतेहैं कक्षेति कि कच्छ और गुह्यस्थान और शिर इनके रोम और दाडि और भ्रवट्टयोंके रोम और हाथ पैरोंके नख और रोम तिनांको कट वाय करके पुरुष शुचि क्या पवित्र हुंदाहै १ एवमिति इसप्रकार मुण्डनकरणेसें पीछे बारां चुलिआं करे

यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच केशानाश्रित्यतिष्ठन्तितस्मात्केशान्वपाम्यहमितिसंकल्प्य सभर्तृकाणांस्त्रीणांचराज्यैश्वर्य्ययुतस्यच वपनंनैवकर्त्तव्यं द्व्यंगुलंछेदयेत्ततः १ दंडस्तुद्विगुणोदाप्यइत्यंगिरोवचनम् कक्षोपस्थवर्जितनखरोमाणिवापयेत् ॥ कक्षाकुह्यशिरःश्मश्रुभ्रूलोमपरिकृंतनं प्रहृत्यपाणिपादानां नखलोमतथाःशुचिः १ एवं वपनकरणानन्तरं द्वादशगंडूषान्कृत्वा ॥ आयुर्बलंयशोवर्चः प्रजापशुवसूनिच ब्रह्मप्रज्ञांचमेधांच त्वन्नोदेहिवनस्पते इति मंत्रेणाऽभिमंत्रितेन द्वादशांगुलप्रमाणेनापामार्गादिदन्तकाष्ठेन प्राङ्मुखउदङ्मुखोवा। मुखदुर्गंधिनाशायदंतानांचविशुद्धये ष्ठीवनायचगात्राणांकुर्वेहंदन्तधावनमितिमंत्रेणदन्तान् धावयित्वा काष्ठान्तरेण जिव्हामुल्लिख्य अप्सुनिमज्ज्यभस्मादिस्नानानिकुर्य्यात्

आयुरिति आयु और वल यश वर्च क्या ओज और प्रजा क्या पुत्रादि और पशु और संपूर्ण वस्तु और ब्रह्म और प्रज्ञा क्या तीक्ष्ण बुद्धि और मेधा क्या सामान्यबुद्धि तिना सबनानूं हे वनस्पते तु देह इस मंत्र करके बारां अंगुली प्रमाण करके युक्त जो अपामार्ग क्या पुडकंडा तिससें लेकर काष्टकी जो दन्तधावन तिस करके पूर्वाभिमुख होया २ अथवा उत्तराभिमुख होया २ मुखकी दुर्गंधी दूर करणेकेवास्ते और दन्तोंकी शुद्धिके वास्तें और गात्र क्या इंद्रियोंके स्थान तिनका जो ष्ठीवन क्या मल दूर करणेके वास्ते दन्तधावन मैं कर्ताहूं इस मंत्र करके दंदानु धोकरके और दूसरे काष्टकरके जिव्हाका शोधन करके और तिस दन्त धावनको जलमें डोबकरके फेर भस्मादि स्नान करे

जिसप्रकार प्रायश्चित्तका अङ्गहै तिस कर्के भस्म स्नानकों करांगा ऐसें संकल्प कर्के इससें उप-रंत भस्मकों ग्रहणकरे फेर (ईशानः सर्वविद्यानां) इस मंत्र कर्के शिरविषें भस्मलगावे (अथवा) ईशानायनमः) इसी करके शिरमें लगावे ॥ तत्पुरुषायनमः ॥ इस कर्के भस्म कों मुखमें लगावे ॥ अघोरायनमः (इस कर्के हृदयमें लगावे) वामदेवायनमः) इस कर्के गुह्यमें लगावे(सद्योजातायनमः) इस कर्के पादोंमें लगावे ॥ ओंकारकर्के संपूर्ण अंगोंमें लगावे तिससें उपरंत जलकर्के स्नान करे इसप्रकार भस्म स्नान कहाहै ॥ अथेति इससें उपरंत गोमय कर्के स्नानकों करांगा ऐसेंही संकल्पकरे गोमय कों ग्रहण कर्के (ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः इस

तत्रेत्थंप्रायश्चित्तांगं भस्मस्नानं करिष्ये इति संकल्प्य भस्मगृहीत्वा॥ई शानः सर्वविद्यानामित्यादिमंत्रैरथवा ईशानायनमइति शिरसि तत्पुरुषा यनमोमुखे। अघोरायनमोहृदये । वामदेवाय नमोगुह्ये । सद्योजातायनमः पादयोः प्रणवेनसर्वांगे ततोजलस्नानम् इतिभस्मस्नानम् अथगोमयस्नानं करिष्येइतिसंकल्प्य गोमयमादाय व्याहृत्या त्रिधा विभज्यादित्यायप्रदर्श्य अग्रमग्रंचरतीनामोषधीनांवनेवने तासामृषभपत्नीनां पवित्रंकायशोधनम् तन्मेरोगांश्चशोकांश्चनुदगोमयसर्वदेतिमंत्रेण गंधद्वारामितिमंत्रेणच सर्वां गे विलिप्यउदकस्नानंकुर्यात्॥ अथमृदास्नानं ॥ बलिस्थापर्वतानां क्षुद्रं विभर्षि पृथ्वीप्रजाभूमीःप्रवृएवती महनाजिनोषिमहिनी इतिभूमिंप्राथ्य

महा व्याहृति कर्के गोमयकें तीन ३ भाग कर्के सूर्यके तांई दिखा कर्के मंत्र पडे मंत्रको दिखातेहैं ?अग्रमिति! आगे आगे वनविषे औषधियोंकों भक्षण करदीआं जो बैलकीयां स्त्रीयांहैं तिनका जों पवित्र गोमयहै सो शरीरके शोधनमें योग्यहै तिसकारणसें हेगोमय मेरे रोगोंकों और शो कांको दूर कर ? गंधद्वारां ¿ इसमंत्रकर्के संपूर्णअंगोमें लेपकर्के पछि जलकर्के स्नान करे अथमृ त्तिकादास्नानकहतेहैं तिसमै पहले पृथिवीकीप्रार्थनाकरतेहैं बलिस्थेति इसमंत्रका अर्थलिखतेहैं हेपृथिवि तूं बलिस्थाहै अर्थात् बलियोंमे प्रधानहै और पर्वतांकों तूं क्षुद्र जानकर्के धारतीहैं और प्यारे जो निवासस्थानहैं तिनकों तुं पुष्ट करतीहैं और दिनकर्के पुण्या कों उत्पन्न करतीहैं और पूजनेके योग्यहैं ऐसें पृथिवीकी प्रार्थना कर्के

(मावोरिषत्) इत्यादिमंत्रकरके पृथिवीकों पुट्टे इहपुट्टनका मंत्रहै स्योनापृथिवी नोभवा इत्यादिमंत्रकर्के पृथिवीकों अभिमंत्रण करे अथवा अश्वेति हेपृथिवी जो मैंनें पूर्वजन्ममें पापकीयाहै तिसको तूं दूरकर कैसी तूंहैं घोडेकर्के आक्रांतहैं और रथां कर्के वी आक्रांतहैं और विष्णु कर्के आक्रान्तहैं १ और शूकर स्वरूप होकरके कृष्णजीने पातालसें उद्धारण कीतीहैं और ब्रह्मा कर्के दित्ती होई काश्यप ऋषिजीने अभिमंत्रित कीतीहैं २ इसकारणसें हेमृत्तिके मेरेतांई पुष्टि कों देह हे पृथिवि तैंने मेरे पापके दूर कीतियां होयां परम

मावोरिषत् वनितोतिखनित्वा २ स्योनापृथिवीनोभवेति अश्वक्रान्तेरथक्रान्तेविष्णुक्रान्तेवसुन्धरे मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयापूर्वसंचितम् १ उद्धृतासिवराहेणकृष्णेनशतवाहुना मृत्तिकेब्रह्मदत्तासिकाश्यपेनाभिमंत्रिता २ मृत्तिकेदेहिमेपुष्टिंत्वयिसर्वंप्रतिष्ठितं ॥ त्वयाहतेनपापेनगच्छामिपरमांगतिम् ३ इतिमंत्रैरभिमंत्र्य आयनेतेपरायणेदूर्बामे इतिदूर्वामादाय मृदं गृहीत्वा त्रातारमितिमंत्रेण पूर्वस्याम् यमायमधुमत्ततमितिदक्षिणस्याम् तत्त्वायामीतिपश्चिमायाम् वयंसोमइत्युत्तरस्याम् तत्सूर्यैरोदसीत्यूर्ध्वायामधःपश्यसीत्यधरायांदिशिमृदंनिक्षिप्य ततः सहस्रशीर्षेतिशिरसि अक्षिभ्यांतेनासिकाभ्यांकर्णाभ्यांचिवुकादधि शीर्षण्यंपक्ष्ममस्तिष्काजिव्हाया विवृहामितेइतिमुखे

गतिकों मै प्राप्त होवांगा ३ इना तिन्ना मंत्रां कर्के पृथ्वी का पूजन करे ॥ फेर आयनेति इस मंत्र कर्के दूर्वाकों लेकर्के और मृत्तिकाकोले कर्के त्रातार इसमंत्रकर्के पूर्वदिशामें मृत्तिकाकों फैंके यमायेति इस मंत्रकर्के दक्षिण दिशामें तत्त्वायामीति इस मंत्र कर्के पश्चिम दिशामें ? वयंसोमेति इसमंत्रकर्के उत्तर दिशामे ? तत्सूर्यैरोदसीति इसमंत्रकर्के मृत्तिकाकों आकाशविषे फैंके अधः पश्यसीति ! इसमंत्रकर्के पाताालविषें फैंककर्के तिससें उपरंत सहस्रशीर्षेति इसमंत्र कर्के शिरमे लगावे अक्षिभ्यामिति ? इसमंत्रककें मृत्तिकाकों मुखमे लगावे

ग्रीवाभ्य इति इसमंत्रकर्के ग्रीवाविषे मृत्तिकाकों लगावे (आंत्रेभ्यइति) इसमंत्रकर्के हृदयमें लगावे (नाभ्यानाभीति) इसमंत्रकर्के नाभिस्थानमें लगावे (त्वमिंद्र सजोषेति) इसमंत्रकर्के बाहूमें लगावे (सोमानं स्वर्णज) इति इसमंत्रकर्के कक्षामें अर्थात् कछमे लगावे (यःकुक्षिः सोमयातमइति) इसमंत्रकर्के कुक्षिमें लगावे अर्थात् वक्षीमे लगावे (वन्हीनांपितातइति) इसमंत्रकर्के पृष्टमें लगावे (ऊरूभ्यांते) इति इसमंत्रकर्के मट्टीकों ऊर्वोमें अर्थात् पट्टोंमे लगावे (मेहनाद्दनं करणा लोमेति)इसमंत्रकर्के जानूमें अर्थात् गोड्यामें लगावे(आमावाजस्येति इसमंत्रकर्के

ग्रीवाभ्यस्तउष्णिहाभ्यःकीकसाभ्यो अनूक्यात् ॥ यक्ष्मंदोषण्या मंसाभ्यां बाहुभ्यांविवृहामिते इतिग्रीवायां ॥ आंत्रेभ्यस्तेगुदाभ्योवावनिष्ठोहृदयादधि ॥ यक्ष्ममतस्नाभ्यां यक्नः प्लाशिभ्योविवृहामिते इति हृदये नाभ्यानाभिन्नआददे चक्षुश्चित्सूर्येसचा ॥ कवरपत्यमाशुदुहे इति नाभौ त्वमिन्द्रसजोषसमर्कं विभर्षि बाव्होर्वज्रं शिशान ओजसा इतिबाव्होः सोमानं स्वर्णंज इति कक्षयोः ॥ यः कुक्षिः सोमयातमः समुद्रइवपिन्वते उर्वीरायोनकाकुदः इतिकुक्ष्योः वन्हीनांपिता त-इतिपृष्ठे ॥ ऊरूभ्यांते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्यां यक्ष्मंश्रोणिभ्यां भाससाद्भससोविवृहामिते इत्यूर्वोः मेहनाद्दनंकरणाल्लोमभ्यस्तेनखेभ्यः यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं विवृहामिते इतिजान्वोः ॥ आमावाजस्येति पादयोः । यस्मिन्विश्वानि हस्तयोरूचुर्वसूनिनिहिता विरस्य पृतनावहः इतिहस्तयोः अंगादंगाल्लोम्नोलोम्नोजातं पर्व्वणि पर्व्वणि यक्ष्मंसर्वस्मादात्मनस्तमिदंविवृहामिते इत्यनेन पुरुषसूक्तेनच सर्वांगोद्वर्त्तनम् इदंविष्णुरिति मृदं शिरसिनिधाय अशक्तौतु अश्वक्रान्तेइत्यादिमंत्रैर्मृदंसर्वांगेविलिप्य मृत्तिकास्थलंप्रक्षाल्य मृत्तिकेहरमेपापमित्यादिमंत्रेण स्नायात् इतिमृत्तिकास्नानम्

पादोमें लगावे ? यस्मिन्विश्वानि हस्तयोरिति ? इसमंत्रकर्केहाथोंमें लगावे ! अंगादंगाल्लोम्नोलोम्न इति इसमंत्रकर्के संपूर्ण अंगोमे मृत्तिकाकों उद्वर्त्तन करे अर्थात् मले ? इदंविष्णुरिति इसमंत्रकर्के मृत्तिकाको शिरमे स्थापनकर्के असमर्थहोवेतो ? अश्वक्रान्त इति ॥ इससें आदलेकर जो मंत्र हैं तिनामंत्रांकर्के संपर्णअंगोमें लेपकर्के फेर मृत्तिकाके स्थलका प्रक्षालन कर्के ? अर्थात् जिसजगाते मृत्तिकालईहै उसजगाको धुयाकर्के मृत्तिकें इति इसमंत्रकर्के मृत्तिकासे स्नानकरे

ततइति तिससे उपरंत जलकास्नानहै इमंमेगंगे इति इसमंत्रककेंजलकामथनकरे ऋतंचेति? इसमंत्रको जपताहोया अघमर्षणकोंकरे आपोहिष्ठेति) इसमंत्रकर्के अथवा इदमाप इसकर्केउदकनाल स्नानकरे तिसते अनंतर आचमनकरे अथेति इससें उपरंत पंचगव्यकास्नानहै और तिसके आदमें गोमूत्रकर्के स्नानकोंकरांगा ऐसेंही संकल्पकर्के गायत्री मंत्रकोंपडकर गोमूत्रनाल स्नान कर्के पुनः गोमूत्रका आचमन कर्के गंधद्वारामिति इसमंत्रकर्के गोमयनाल स्नानकरे पुनः आचमनकरे आप्यायस्वेति इसमंत्र कर्के दुग्धनाल स्नान करे पुनः आचमन करे दधिक्राव्णेति इसमंत्र कर्के दधिनाल स्नान करे पुनः आचमनकरे (घृतमिमिक्षिरे। इसमंत्रकर्के अथवा ? तेजोसि ! इसमंत्रकर्के घृतनालस्नानकरे

ततउदकस्नानम् ॥ इमंमे गंगे यमुने सरस्वति शतद्रु स्तोमंसचतापरुष्ण्या आसिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जिकीये शृणुह्यासुषोमया इत्युदकमालोड्य ऋतंचेति ऋतंजपन्नघमर्षणंकुर्यात् ॥ तत्रमंत्राः आपोहिष्ठा मयोभुवः ॥ इदमापः प्रवहत० इत्युदकस्नानम् ततआचमनम् अथपंचगव्यस्नानम् तत्रादौ गोमूत्रस्नानंकरिष्ये इतिसंकल्प्य गायत्र्यागोमूत्रेणस्नात्वाऽऽचम्य गन्धद्वारामिति गोमयेनस्नात्वाऽऽचम्य आप्यायस्वेतिक्षीरेण स्नात्वाऽऽचम्यदधिक्राव्णेति दध्नास्नात्वाऽऽचम्य घृतंमिमिक्षिरे तेजोसीति वा घृतेन स्नात्वाऽऽचम्य देवस्यत्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यामग्नेस्तेजसासूर्यस्यवर्चसेन्द्रेणाभिषिंचामीतिकुशोदकेन यद्वा एतानिदशाप्यमंत्रकाण्येवस्नानानिकार्य्याणि अथपयःस्नानम् । कपिलायाः क्षीरमाप्यायस्वेत्यादायप्रणवेनपात्रेनिक्षिप्य आप्यायस्वेति मंत्रेणवा सोमाय नमः इतिपयःस्नानम् ततोजलस्नानम् ततआचमनम् ॥ अथदधिस्नानम् दधिक्राव्णइत्यनेनदधिआदायप्रणवेनपात्रेनिक्षिप्य दधिक्राव्ण इतिमंत्रेण वा वायवेनमःइतिदधिस्नानम्

पुनःआचमन करे ! देवस्यत्वेति इसमंत्र कर्के कुशाके जलसाथ स्नान करे इसमें और विचारहै एहजो दश १० स्नानहैं सो मंत्रोंसे रहितभीहोलेहैं इससें उपरंतदुग्धस्नानहै कपिलागौके दुग्धकों आप्यायस्वेति ? इस मंत्रकोपडकर्के लेकर ॐकारकर्के पात्रमे पाकर्के आप्यायस्वेति इसमंत्र कर्के वा० सोमायनमःइसकर्के दुग्धनालस्नानकरे तिसते उपरंत जलस्नानकरे पुनः आचमनकरे इससें उपरंत दधिका स्नानहै दधिक्राव्णेति इसमंत्र कर्के दधिकों ग्रहण कर्के ॐकार कर्के पात्रमें पायकर्के दधिक्राव्ण इसमंत्र कर्के अथवा वायवे नमः इस मंत्रकर्के दधिनाल स्नानकरे

तिससें उपरंत शुद्धस्नानहै फेर आचमनकरे तिससें उपरंत घृतस्नानहै ! तेजोसीति ! इसमंत्र कर्के घृतकोंग्रहणकर्के प्रणवकर्के पात्रमें पायकर्के ! तेजोसीति ! इसमंत्र कर्के वा ! रवयेनमः ! इस कर्के घृतनालस्नान करे उपरंत शुद्धस्नान करे पुनः आचमन करे तिससें उपरंत मधुस्नानहै ! मधुवातेति ! इसमंत्र कर्के मखीर नाल स्नान करे उपरत शुद्धस्नान करे तिससें उपरंत संपूर्ण ओषधी कर्के स्नानहै ! ओषधीरिति ! इस मंत्र कर्के संपूर्ण ओषधीयांकोंअभिमंत्रणकरे याओषधीरिति इस मंत्रकर्के संपूर्ण ओषधीयांकों ग्रहणकर्के और प्रणव कर्के पात्रमे पायकर्के वा याओषधीरिति इस मंत्र कर्के वा ओषधीभ्योनमः इसमंत्रकर्के संपूर्ण ओषधीयांनाल स्नान करे उपरंत शुद्धस्नान करे ॥ मुरा १ शिलाजित २ वर्च ३ कुष्ठ ४ मुसक कपूर ५ दोनोहरिद्रा ७

ततःशुद्धस्नानम् ततआचमनम् ततोघृतस्नानम् तेजोसीत्यनेनघृतमादायप्रणवेनपात्रेनिक्षिप्य तेजोसीत्यनेनैव मंत्रेण वा रवयेनमःइतिघृतस्नानम् ततः शुद्धस्नानम् आचमनम् ततोमधुस्नानम् मधुवाताऋतायते ततःसर्वौषधीस्नानम् ओषधीःसर्ववृक्षाणांतृणगुल्मलतास्थिताम् दूर्वासर्षपसंयुक्तांसर्वौषध्यः पुनंतुमामित्यभिमंत्र्य याओषधीरितिमंत्रेणौषधीरादायप्रणवेनपात्रेनिक्षिप्य याओषधीरिति मंत्रेणवा ओषधीभ्योनमःइतिसर्वौषधीस्नानम् ततःशुद्धस्नानम् अथसप्तधान्यस्नानम् धान्यौषधीमनुष्याणांजीवनंपरमंस्मृतम् तेन स्नातोऽस्मिदेवेश ममपापंव्यपोहतु इत्यभिमंत्र्य धान्यमसीत्यनेनाधान्यमादाय प्रणवेन पात्रे निक्षिप्य धान्यमसीति मंत्रेण वा सर्वधान्येभ्योनमः इति सप्तधान्यस्नानम् ततः शुद्धस्नानम् ततआचम्य अथकुशोदकस्नानम् देवस्यत्वेति कुशोदकमादाय प्रणवेन पात्रे निक्षिप्य देवस्यत्वाभिषिंचामीतिमंत्रेण स्नानम् ततः शुद्धस्नानम्

कचूर ८ चंवा ९ कुन्था १० इनांदसां वस्तुयोंका नाम सर्वौषधिहै ॥ इससें उपरंत सप्त ७ अन्नसें स्नानहै ॥ धान्यौषधीति इस मंत्र कर्के सत ७ अन्नकों अभिमंत्रण करे (धान्यमसीति) इस मंत्र कर्के अन्नकों ग्रहण कर्के ओंकारकर्के पात्रमें पाकर्के ॥ धान्यमसीति इस मंत्र कर्के वा । सर्वधान्येभ्योनमः । इसमंत्रकर्के सप्त प्रकारके अन्नके साथ स्नानकरे उपरंत शुद्धस्नान करे तिससें उपरंत आचमन करे अथेति इससें उपरंत कुशाके जलसाथ स्नानहै देवस्यत्वेति इस मंत्र कर्के कुशावालेजलकों ग्रहण कर्के प्रणवकर्के पात्रमें पाय कर्के ॥ देवस्यत्वेति ॥ इस मंत्र कर्के स्नान करे तिससें उपरंत शुद्धस्नान करे

त्रोति इसमें विशेष कहतेहैं स्त्री अर शूद्रकों विष्णुकास्मरणहै वा पौराणिक मंत्रोंका उच्चारणहै अवतीर्थकेआवाहनपूर्वक स्नानविधि कर्के स्नानहै इसप्रकार कर्के दश १० प्रकारके स्नानों कों कर्के आचमन करे उपरंत प्राणायामकों कर्के स्नानका अंग जो तर्प्पणहै तिसकों करे फेर आचमन कर्के नवीन वस्त्रकों धारणकरे फेर तिलककों कर्के मध्यान्ह समयमे संध्यावंदन करे फेर सूर्यका उपस्थान करे नमस्कार करे तिसते उपरंत सभाकों प्राप्त होंवे आचार्य अर ऋत्विग् इनकों वरण करे क्या वरणी देवे तिसतें उपरंत षोडश १६ उपचारों कर्के वि ष्णुकापूजनहै अष्टदलके मध्यमें इन्द्रसें आदलेकर दिक्पालांका और रुक्मिणी और सत्यभामासें आदलेकर जो हैं तिनका स्थापन करें सो इह प्रकार जान्नणा पूर्व दलमें इन्द्र १ अग्निमे अग्नि२दक्षिणमे यम ३ नैर्ऋतमें निर्ऋति ४ पश्चिममे वरुण ५ वायव मे वायु ६ उत्तरमे

स्त्रीशूद्रयोश्च विष्णुस्मरणम् पौराणिकमंत्रोच्चारणंवा अथतीर्थोदकेनस्नान विधिनास्नानम् एवं दशविधस्नानानि कृत्वा आचमनम् प्राणायामं कृत्वा स्नानांगतर्प्पणम् आचम्य अहतवस्त्रपरिधानम् तिलकंकृत्वामध्यान्हसं ध्यावंदनम् सूर्योपस्थानम् नमस्कारः ततःसभांगच्छेत् आचार्यऋ त्विग्वरणम् ततःषोडशोपचारैर्विष्णुपूजनम् अष्टदलमध्ये इन्द्रादि दिक्पालान् रुक्मिणीं सत्यभामां जांववतीं नाग्नजितीं मित्रविंदां कालिंदीं भद्रां लक्ष्मणां च स्थापयेत् ॥ तत्रप्रथमंकलशस्थापनम् तत्रविष्णोः सत्यमूर्त्तिं सौवर्णमयीं स्थापयेत् अग्न्युत्तारणम् समुद्रस्येत्यादिभिर्मंत्रैः । ततःप्रायश्चित्तार्थं सत्येशपूजनम् सत्येशायगोमिथुनदानम् ओमद्येत्यादि सत्येशस्यषोडशोपचारैःपूजनमहंकरिष्ये इतिसंकल्प्य

कुवेर ७ ईशानमे शिव ८ तैसेंहि पूर्वमें रुक्मिणी १ अग्निमें सत्यभामा २ दक्षिणमे जांववती ३ नैर्ऋत मे नाग्नजिती ४ पश्चिममे मित्रविंदा ५ वायवमे कालिंदी ६ उत्तरमे भद्रा ७ ईशा नमे लक्ष्मणा ८ इनकास्थापन करे तिसके आदमें कलशकास्थापनहै तिस कलशमें सुवर्णमयी विष्णुकीमूर्त्तिकास्थापन करे तिसते उपरंत अग्निकाउत्तारण करे अर्थात् घटन समयमे जो उस में अग्निहै तिसको मंत्रांकर्के उतारे सो मंत्रदिखाईदेहैं(समुद्रस्येति)इत्यादिमंत्रोंकर्के ॥ तिसतें उप रंत प्रायश्चित्त के अर्थ नारायणका पूजन है सत्यनारायणके निमित्त गौवां दो २ दानकर्के फेर संकल्प करे (ओमद्येत्यादिमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासरे ॥ इस संकल्प कर्के नारायण के पूजनकों १६ षोडशोपचारों कर्के मैं करांगा

तिसके आदमें अंगन्यासांकोंकर्के सोलां १६ मंत्रोंकर्केतिसते उपरंत देवन्यासकोंकर्के फेर पूजा करें करे नारायणके अंगांका पूजन करे हस्तोमें अर पादोंमें अर जानूंमें कटिमें अर नाभिमें गलमें हृदयमें बाहांमें मुखमें अक्षिमें शिरमें ॥ सहस्रशीर्षेति ॥ इसमंत्र कर्के आवाहन करे १ पुरुषेति इसकर्के आसनदेवे २ ?एतावानिति? इसकर्के पाद्यदेवे ३ इसक्रमकर्के अर्घ ४ आचम नीय ५ स्नान ६ वस्त्र ७ यज्ञोपवीत ८ गंध ९ पुष्प १० इन संपूर्णांकों नारायणकेताई देवे मंत्रोंकीआं प्रती कां मूलमेंहैं तिनां तिनां मंत्रांकर्के इनां वस्तुओंको देवे औंर ब्राह्मणोस्येत्यादिमंत्रकर्के धूप देणा ११ औंर चंद्रमा मनसोजात इत्यादिमंत्रकर्के दीप देणा १२ औंर नाभ्याआसीदित्यादि मंत्र

तत्र प्रथमं अंगन्यासंकृत्वा षोडशभिर्मंत्रैः ततोदेवन्यासं कृत्वा पूजांकुर्यात् वामदक्षिणयोः पाण्योः पादयोः जान्वोः कटिद्वये नाभौ गले हृदि बाह्वोः मुखे चक्षुषि शिरसि वा सहस्रशीर्षेत्यावाहनम् १ पुरुषेत्यासनम् २ एता वानितिपाद्यम् ३ त्रिपादूर्ध्व इत्यर्घम् ४ ततोविराडित्याचमनीयम् ५ तस्मा द्यज्ञादितिस्नानम् ६ तस्माद्यज्ञात्सर्वेतिवस्त्रम् ७ तस्मादश्वाइति यज्ञोपवी तम् ८ तंयज्ञमिति गंधम् ९ यत्पुरुषमिति पुष्पम् १० ब्राह्मणोस्येतिधूपम् ११ चंद्रमामनसोजातइतिदीपः १२ नाभ्याआसीदिति नैवेद्यम् १३ यत्पुरुषमि तितांबूलम् १४ सप्तास्यासन्निति नमस्कारम् १५ यज्ञेनेतिस्तुतिंप्रदक्षिणाम् १६ ततःषोडशभिर्मंत्रैर्दद्यात्पुष्पाणिषोडश ततःपुरुषसूक्तेनस्तुतिः अनेन यथा शक्तिकृतेन पूजनाख्येन कर्म्मणा पापापहा विष्णुःप्रीयताम् नमोऽस्त्वनं ताय मंत्रहीनंक्रियाहीनंभक्तिहीनंसुरेश्वर भगवंस्त्वत्प्रसादेनपरिपूर्णंनमो स्तुते १ सत्येशस्य पूजनकर्म्मणा सर्वंपरिपूर्णम् ततोवैष्णवश्राद्धम् ॥

कर्के नैवेद्य देणा १३ औंर यत्पुरुषम् इसमंत्रकर्केतांबूल क्या पानपत्र देणा १४ औंर सप्तास्या सन्नित्यादि मंत्र कर्के नमस्कार करणी १५ यज्ञेनेत्यादि मंत्र कर्के स्तुति औंर प्रदक्षिणा करणी यां १६ तिसके अनन्तर १६ सोलांमंत्रोंकर्के १६ सोलां पुष्पदेवे तिसके अनन्तर पुरुष सूक्त कर्के स्तुति करे एह जो यथाशक्ति कर्के कीताहै पूजनाख्यकर्म तिस कर्के पापां के दूर करणे वाला जो विष्णु सो प्रसन्नहोवे ऐसाकहकर औंर नमोस्त्वनंताय इसमंत्रको पडे औंर मंत्रहीन मित्यादि मंत्रकों पडे औंर सत्येशके पूजनाख्य कर्म कर्के सव परिपूर्ण होवे ॥ तिसके अनन्तर वैष्णव श्राद्धकरे

तिसके अनन्तर विष्णुके उद्देश करके अर्थात् विष्णुके निमित्त तीनोंसें अधिक जो ब्राह्मण तिनानू मैं भोजनकरके तृप्तकरताहुं ऐसे संकल्प करे और अभोजनपक्षमें तिनांके ताई सुवर्ण देणेयोग्यहै तिसके अनन्तर पूर्वाङ्गगोदानका संकल्प करे अब गोदानका मंत्र कहतेहैं गवामिति जिसकारणतें गौओंके अंगोंमें चौदां १४ भुवन स्थित रहतें हैं न तिसीकारणतें मेरे ताईं कल्याण होवे इसलोक और परलोकविषे इसमे १४ भुवनकीस्थितिइसप्रकारहै कि गव्यघृत करके यज्ञहोताहै और यज्ञसें १४ भुवनपुष्टहोतेहैं ऐसे पडकरपुरुष सहित दक्षिणाके गोदानकरे १ तिसमें ऐसा प्रकारहै प्रत्यक्षगोदान करे अथवा गौका मुल्ल देवे तिसके अनन्तर घृतकरके अग्नि विषें व्याहृतीयों द्वारा अष्टोत्तरशत अर्थात् एकसौ आठ १०८ आहुतिआंदेवे तिसके अनन्तर पंचगव्यका हवनकरे। अब पंचगव्यकेहवनकाप्रकार कहतेहैं कि कपिला गौका मूत्र एक पल

विष्णूद्देशेन त्रिभ्योऽधिकान् ब्राह्मणान् अहं तर्प्पयिष्ये इतिसंकल्प्य अभोजनपक्षे तेषांहिरण्यंदातव्यम् ततःपूर्वांगगोदानसंकल्पंकुर्य्यात् गोदानमंत्रः गवामंगेषुतिष्ठंतिभुवनानिचतुर्दश यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहलोकेपरत्रच इतिगोदानं सदक्षिणं प्रत्यक्षं वा मूल्यंदद्यात् ततआज्येनाग्नौव्याहृतिभिः अष्टोत्तरशतमाज्याहुतीर्हुत्वा ततःपंचगव्यंजुहुयात् ॥ तत्रपंचगव्यहोमप्रकारः। कपिलायागोमूत्रं पलमितं गायत्र्यादाय प्रणवेन ताम्रपात्रेनिक्षिप्य ततोगोमयं पलद्वयमितं गन्धद्वारामित्यनेनादाय यस्मिन्पात्रेगोमूत्रंनिहितं तस्मिन्नेवपात्रे प्रणवेन निक्षिपेत् ॥ ततःक्षीरं सप्तपलपरिमितमाप्यायस्वेत्यादाय प्रणवेन तत्रनिक्षिपेत् ॥ ततोदधि सप्तपलं दशपलं वा दधिक्राव्णइत्यनेनादाय प्रणवेन पूर्वोक्तपात्रे निक्षिपेत् ॥ ततोघृतमेकपलमितं तेजोसीत्यनेनादाय प्रणवेन तत्रैवनिक्षिपेत् तदनन्तरं कुशोदकं एकपलमितं देवस्यत्वाऽभिषिंचामीत्यादाय

क्या चौसठ मासे ६४ गायत्रीकरके लए और ओंकारकरके ताम्रपात्रविषे पावे तिसके अनन्तर दोपल गोवर गंधद्वारामित्यादिमंत्रकरके जिसपात्र विषे गोमूत्र पायाथा उसीपात्रविषे ओंकार करके पावे तिसके अनन्तर सातपल दूध आप्यायस्वेत्यादि मंत्रकरके लेकर उसीपात्रविषे ओंकार करके पावे तिसके अनन्तर दधिसात ७ पल अथवा दश १० पल दधिक्राव्ण इस मंत्रकरके ले करके प्रणव करके उसी पात्रविषे पावे तिसके अनन्तर एकपल घृत तेजोसीत्यादि मंत्र करके उसीपात्र विषें ओंकारकरके पावे तिसके अनन्तर एकपल कुशाका जल देवस्यत्वाऽभिषिंचामीत्यादिमंत्र करके लेणा

श्रौर ओंकार करके हाथसे आलोडन करणा तिसके अनन्तर अग्नि और वायु और सूर्य और प्रजापति इनको क्रमकरके अठाई घृतकीआं आहुतीआं देवे फेर ओंकारका उच्चारण करके और यज्ञिय काष्ठ जो स्रुवल तिसकरके छोले और ओंकार करके अभिमंत्रण करके और कुशाके सहित जो हरितरंग वाले सात ७ पत्तेहैं तिनकरके पंचगव्यको उठावे इरावत्यादि मंत्रोंकरके दशआहुतियां देवे और इस जगामें स्रुवके स्थान हरित कुशाका ग्रहणहै अब इराव त्यादि मंत्र कहतेहैं इरावती १ इदंविष्णुः २ मानस्तोके ३ शन्नइन्द्राग्नी ४ अग्नये ५ सोमाय६ तत्सवितुः ७ प्रणवश्च ८ ओंभूर्भुवःस्वःस्वाहा ९ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा १० एहदशआहुतीयांका हवन करके हुत शेष जो है पंचगव्य तिसनू ओंकारका उच्चारण करके हाथकरके अर्थात् तिसमे

प्रणवमुच्चार्य्य हस्तेनाऽऽलोडयअग्निवायुसूर्यप्रजापतिक्रमेण अष्टाविंशति मितमाज्येनहोमंकुर्य्यात्पुनःप्रणवमुच्चार्य्य यज्ञिय काष्ठेन निर्मथ्य प्रण वेनैवाभिमंत्र्य सप्तपत्रैर्हरितैःकुशैः पंचगव्यमुद्धृत्य इरावत्यादिमंत्रै र्दशा हुतीर्जुहुयात् अत्र स्रुवस्थानेहरितः कुशाएव इरावती१इदंविष्णुः२मान स्तोके३शन्नइंद्राग्नी४अग्नये५सोमाय६तत्सवितुः७प्रणवश्च८ओंभूर्भुवःस्वः स्वाहा९ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा १० इतिदशाहुतीर्हुत्वा हुतशेषंपंचगव्यं प्रणवमुच्चार्य्य हस्तेनाऽऽलोडय प्रणवेन निर्मथ्य प्रणवेनैव पिबेत् हुतशेषं सर्वं पेयम् नोच्छेषणीयम्॥ मौनीभूत्वाऽऽत्मनोदुष्कृतंमनसाचिं तयन् आचमनम् प्राणायामंचकुर्यात् ओमद्येत्यादिप्रयोगमुच्चार्य्य एवंगुण विशिष्टेपुण्यकालेदेशेचममजन्मप्रभृतीत्यादिपूर्वोक्तमुच्चार्य्य ॥ नरकभीति निवृत्त्यर्थंव्यवहारसुवृत्तये ममदेहविशुद्धिंहिदद्ध्वंद्विजसत्तमाः ॥ १ ॥

हाथ फेरे और ओंकारकरके छोले और ओंकारकरके ही पान करे और हुत शेष क्या हवनका शेष संपूर्ण पान करणा योग्यहै बचाना ना चाहिए और तिसतें अनन्तर मौन धार करके और अपने करके कीता जो पाप तिसनू मन करके चिन्तन करता हुआ आचमन और प्राणायाम करे तिसके अनन्तर ओमद्येत्यादि प्रयोगका उच्चारणकरके ऐसे गुणाक रके युक्त जो पुण्य काल और देश मम जन्म प्रभृतीत्यादि संकल्प को पड करके एह प्रार्थनाका श्लोक पडे नरकोते कि हेब्राह्मणों नरकभयकी निवृत्तिके वास्ते और लोक व्यवहारकी सिद्धि के वास्ते मेरेदेहकी शुद्धि नू देवो १

येचेति और जिना पुरुषांदा पापही आचारहै ऐसे जो अशुद्ध और पापोंके करणे वाले तिनांका प्रायश्चित्त करणेसें विना धर्ममें अधिकार नहिहै २ उपस्थितेत्विति और प्रायश्चित्त के प्राप्त होयां २ जेडे थोडी बुद्धिवाले प्रायश्चित्त नहि करदे जैसे विभूति विषे हवन कीता होया निष्फल हुंदाहै तैसें तिन्हांका सभ कृत्य प्रायश्चित्तके विना निष्फल हुंदाहै ३ और जेकर गौ न मिलै तो तिसके अर्थ जो रजतादि दान करणा तिस पक्ष विषे पंचगव्य प्राशन के अन्त्यमें एह जो द्रूढ वर्षादिकों के विषे अमुकाऽमुक संख्या वाले जो कृच्छ्र तिनके स्थान विषे एक एक कृच्छ्रके निमित्त सामर्थ्य पुरुषके वास्ते एक रुपैय्या और असामर्थ्यके वास्ते आठ आने और अतिअसामर्थ्यके वास्ते चार आने इन्हां विचों एक रजत द्रव्य नानानामोंवाले और नानागोत्रों वाले जो ब्राह्मण तिन्हांके

येचपापसमाचारा अशुद्धाःपापकारिणः नचधर्मेऽधिकारोस्तिप्रायश्चित्ता द्दतेतुवै२ उपस्थितेप्रायश्चित्तेनकुर्वन्त्यल्पचेतसः॥ तेषांतुताद्दशंसर्वंयथाभ स्महुतंहविः ३ गोनिष्क्रयरजतादिदानपक्षे पंचगव्यप्राशनान्ते इदंसार्धा ब्दादिष्वमुकामुकसंख्याककृच्छ्रप्रत्याम्नायभूतं प्रतिकृच्छ्रंनिष्कतदर्धतद र्धान्यतमाणां रजतद्रव्यं नानानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योदातुमहमुत्सृजे इति द्रव्यदानसंकल्पंकृत्वा तदैव द्रव्यंविभज्य दत्त्वाच उत्तरांगानि कुर्यात् अद्येत्यादि मम हननस्तेनपानगमन तत्संसर्गादि सर्वपापक्षयार्थं ॥ श्रीगुरूपदिष्ट कृतप्रायश्चित्तस्य साद्गुण्यार्थं उत्तरांगानिकरिष्यइति कुरुष्वेत्यनुज्ञातः ततश्चीर्णप्रायश्चित्तनिमित्तंहोमः॥ उक्तंच आरंभेसर्व कृच्छ्राणांसमाप्तौचविशेषतः आज्येनैवतुशालाग्नौजुहुयाद्याहृतीःपृथक् १

तांई में देताहुं ऐसें रजत द्रव्यका संकल्प करके उसी द्रव्यको वांट करकें देवे तिसकें अनन्तर जो उत्तरांगकीकृत्यहै तिसको करे उत्तरांगपूजन उसको कहतेहैं कि जिसतरां आदिविषे पूजनहै उसीतरांकर्म्मके अन्तविषे भी स्थापितदेवताका पूजनहुंदाहै ? पहलें तिस का संकल्प करे अद्यतत्सत् इत्यादिकोंका उच्चारणकरें और मेरे करकें कीती होई जो हिंसा और चोरी और मदिरापान और अगम्यागमन और तिनके संबंधककें उत्पन्नहोये जो सबपाप तिनके दूर करणेके वास्ते श्रीगुरुजीने उपदेशकीता जो प्रायश्चित्त तिसकी संपूर्णताके वास्ते उत्तरांगपूजन मैं करुंगा और आचार्य कहे कि तूं कर ऐसे आज्ञत होया २ करे तिसके अन न्तर कीता जो प्रायश्चित्त तिसकेनिमित्त हवनकरे सो कहाहै आरंभेति कि सबनां व्रतांकेआरंभ विषे और समाप्तिमें घृतकरकें अग्निशाला विषे हवन करे ॥ १ ॥

तिसके अनन्तर व्याहृतीयोंकर्के अष्टोत्तरशतघृतकीयांआहुतीयांकाहवनकरेएहअर्थहै और हवनके अभावपक्षमें ब्राह्मणरूपी अग्निविषे व्याहृतियों द्वारा एकसउआठ १०८आहुतीयां परिमित घृत ताम्रपात्रविषे पाकरके आचार्यके तांई देवे तिसके अनन्तर वैष्णव श्राद्ध करे और श्राद्धविषे निमंत्रित जो ब्राह्मण तिन्हांके तांई सुवर्ण देवे फेर गोदान करे गोदानके मंत्र कहतेहैं गवामिति इसका अर्थ कहचुकेहैं १ ऐसेअंतविषे गोदान करके तिसतें अनंतर आचार्य्य क्या उपदेश करणेवाला और ऋत्विक् क्या आचार्य्यककें कृत्यविषे प्रेरे होए जो हैन तिनांके तांई व्रतके अंतविषे गौ और सुवर्णादि दक्षिणा यथाशक्ति करके देवे और आचार्य्यके

ततोव्याहृतिभिरष्टोत्तरशतमाज्याहुतीर्जुहुयात् अथवाअहोमपक्षे ब्राह्मणाग्नौ व्याहृतिभिराज्यमष्टोत्तरशताहुतिपरिमितंताम्रपात्रेकृत्वाऽऽचार्य्यायनिवेदयेत् ततोवैष्णवश्राद्धम् श्राद्धविप्राणांचसुवर्णंदेयम् पुनर्गोदानं तत्रमंत्रः गवामंगेषुतिष्ठंति भुवनानिचसर्वशः यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहलोकेपरत्रच १ एवमन्ते गोदानंकृत्वा ततआचार्य्यंऋत्विग्भ्यश्चव्रतान्तेतु गोहिरण्यादिदक्षिणा यथाशक्त्या देयाः ॥ आचार्यायवरदानम् एवंवरदानादिनागुरुंसंतोष्य तस्मिन्नेवावसरे भूतशुद्धिं विधाय प्राणप्रतिष्ठांकुर्यात् प्रायश्चित्तंप्रकर्त्तव्यंचतुर्वर्गफलायवै तस्मात्त्वत्प्रसादाच्च कृताशुद्धिर्मया विभो १ नमोनमस्तेविप्रेन्द्रभूदेवपंक्तिपावन तारितोऽस्मिमहादेव पापसंसारसागरात् २ ॥

तांई वरदानभी देवे ऐसे वरदानादिक द्वारा गुरुजीको प्रसन्न करके उसी काल विषे भूतशुद्धिको क्या देहशुद्धिको करके प्राणप्रतिष्ठा करे क्या प्राणायाम करे फेर प्रार्थना करे प्रति हेविभो प्रायश्चित्त करणा योग्यहै धर्म और अर्थ और काम और मोक्ष इनके वास्ते तिस कारणसें मैनें तुसांदी कृपातें देह शुद्धि कीतीहै १ नम इति और हेविप्रेन्द्र क्या ब्राह्मणोंविषे इन्द्ररूप हेभूदेव क्या पृथ्वीके देवता हेपंक्ति पावन क्या ब्राह्मणोंकी पंक्तिको पवित्र करणे वाले हेमहादेव तुसाने मेरेको पापरूपी संसार सागरते तारयाहै २

नमस्तुभ्यमिति कि हेविप्रेन्द्र आपके तांई वारंवार नमस्कार होवे और आपकीकृपातें मेरीनिर्म लबुद्धिहोईहै ३ ऐसें गुरुजी नू नमस्कारकर्के और विदयाकरणेके वास्तें साथ जाकरके विसर्जन क्या विदया करे । एवमिति ऐसें जो ब्राह्मण भली प्रकार कर्के प्रायश्चित्तकरे सो इसलोक और परलोक विषे पवित्रदेहवाला होजाताहै १ एवमिति और जो ब्राह्मण ऐसें प्रायश्चित्तकरे सो संपूर्ण

नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमोनमः त्वत्प्रसादाद्यविप्रेन्द्रमम जाताऽमलामतिः ३ एवंकृत्वागुरुंनत्वाकिंचिदनुव्रज्य विसर्जयेत् एवंकरोति यःसम्यक् प्रायश्चित्तंद्विजोत्तमः सवैभवतिपूतात्माइहलोकेपरत्रच १ एवं करोतियःसम्यक् प्रायश्चित्तंनरोत्तमः सर्वधर्माधिकारीस्यात्कृतार्थोहिभवे द्यसः २ इतिवहुग्रंथावलोकनपूर्वसाधारणप्रायश्चित्तम् श्रीमत्प्रौढतरप्रता पतपनत्रस्ताखिलारिव्रजात् जंवूपत्तनतिव्वताक्षितिपतेर्धर्म्मस्यसाक्षात्तनोः भूपालावलिमौलिलालयचरणात् काश्मीरदेशेश्वरादाज्ञांश्रीरणवीरसिंहनृ पतेः प्राप्यार्थिचिन्तामणेः ॥ १ ॥ पर्यालोचितधर्म्मशास्त्रनिवहैरेतत्स भापंडितै गंगारामकवीशमुख्यविवुधैर्यःसंगृहीतःश्रमात् प्रायश्चित्तवि निर्णयेप्रकरणं तस्मिन्वुधानन्ददे ॥ पर्षल्लक्षणवर्णनादिरुचिरं सिद्धिंत तीयंययौ ॥ २ ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशा धीशप्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञप्त देविकोपकंठवासिपण्डितवरदेवीदत्तसुत कविगंगारामादिसंगृहीते पंचविषयात्मकप्रतिरूपके धर्मशास्त्रमहानि वन्धे प्रायश्चित्तभागे परिषल्लक्षणं प्रकरणंतृतीयम् ३ ॥ * ॥ * ॥ * ॥

धर्मोंका अधिकारी और कृतार्थ होजाताहै २ एह वहुत ग्रंथोंका अवलोकनकर्के साधारण प्राय श्चित कहेहैंन ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधिपति प्रभुवर रणवीरसिंहजी की आज्ञा कर्के कविगंगारामने संग्रहकीता जो धर्मशास्त्रविषे प्रायश्चित्तभाग तिसके तीसरे ३ प्रकरणकीभाषाटीका संपूर्ण होई ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकाणिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते ।

पृ० पं० प्रतीक	
१४३ २ ईशानः०	ईशानःसर्वविद्यानां ईश्वरःसर्वभूतानांब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेस्तुसदाशिवः१ यजुःतैत्तिरीयशाखायांरुद्रपाठे १
१४३। २। तत्पुरुषाय०	ॐतत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि तन्नो रुद्रःप्रचोदयात् ॥२ ॥ यजुः तै० शा ० रु-१
१४३ ॥ २ ॥ अघोरेति०	ॐअघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः सर्वतः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ ३ ॥ यजुः तै ० शा ० रु- १
१४३ ॥ २ ॥ वामेति०	ॐवामदेवायनमोज्येष्ठायनमः श्रेष्ठायनमः रुद्रायनमः कालायनमः कलविकरणाय नमोवलविकरणायनमोवलप्रमथनायन मःसर्वभूतदमनायनमोमन्मथायनमः ४
१४३ ॥ ३ ॥ सद्योजातम् ०	ॐसद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमः भवेभवेनातिभवेभजस्वमांभवोद्भवःभवोद्भवायनमः ॥ ५ ॥ यजुःतै-शा.रु. १
१४३ ॥ ८ ॥ अश्वक्रांते.	अश्वक्रान्तेरथक्रान्तेविष्णुक्रान्तेवसुंधरे मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतम् ॥ ६
१४३ ॥ ९ ॥ उद्धृतासि-	ॐउद्धृतासिवराहेणकृष्णेनशतवाहुना दंष्ट्राग्रे लीलयादेवि यज्ञार्थंप्रणमाम्यहम् ॥
१४४ ॥ १ ॥ इदंविष्णुः-	ॐइदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदंसमूढमस्यपाꣳसुरेस्वाहा ॥ ८ ॥ यजुः सं ॥९ ॥

तृतीयप्रकरणे यत्र यत्र मंत्रप्रतीकाणि कृतानि तत्पूर्त्यर्थं मंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक	
१४४	२	नमोमित्रस्य-	ओंनमोमित्रस्यव्वरुणस्यचक्षसेमहादेवायत दृतळंसपर्य्यतदूरेदृशेदेवजातायकेतवेदिवस्पु त्रायसूर्य्यायशळंसत ॥ ९ ॥ यजुः सं. ४
१४४	३	गंधद्वाराम्	ओंगन्धद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीम् ईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपव्हयेश्रियम् १० ऋग्वेदसं.
१४५	३	यत्किंचेदम्	ओंयत्किंचेदंपतपतियत्किंचेदंसरीसृपं यत्किं चपर्व्वताइमेध्रुवोराजाविशमयम् ११ अथर्व-सं-
१४५	५	आपोअस्मान्-	ओंआपोऽअस्मान्मातरःशुन्धयन्तुघृतेननोघृ तश्वःपुनन्तु ॥ व्विश्वळंहिरिप्प्रवहन्तिदेवीरु दीदाभ्भ्यःशुचिरापूतऽएमि । दीक्षातपसोस्त नूरसितान्त्वाशिवळंशग्माम्परिदधेभद्रम्व्व र्णम्पुष्ष्यन् १२ यजुः सं. ४
१४५	७	इदमापः प्रवह०	ओंइदमापःप्रवहतावद्यंचमलंचयत् यच्चाभिदुद्रोहा नृतंयच्चशेपेऽअभीरुणम् । आपोमातस्मादेनसः पवमानश्चमुंचतु १३ यजुः सं ६
१४५	७	आपोहिष्ठा-	ओंआपोहिष्ठामयोभुवस्तानऊर्जेदधातन महेरणा यचक्षसेयोवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनःउश तीरिवमातरःतस्माअरंगमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ आपोजनयथाचनःईशानावर्य्याणांक्षयन्तीश्चर्षणीनां अपोयाचामिभेषजम् ॥ १४ यजुः सं- ११

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक	
१४५	९	तत्सवितुः	तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात् १५ यजुः सं- अ- ३
१४५	९	आप्यायस्व	ओंआप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृष्ण्यम्भवाव्वाजस्यसङ्गथे १६ यजुः सं- अ. १२
१४५	१०	दधिक्राव्णः	दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यव्वाजिनःसुरभिन्नोमुखाकरतप्राणआयुंषितारिषत १७ यजुः सं.अ. २३
१४५	१०	तेजोसि	ओंतेजोसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासिप्रियंदेवानामनाधृष्टंदेवयजनमसि १८ यजुः सं-अ.२२
१४५।	१०	देवस्यत्त्वा	ओंदेवस्यत्त्वासवितुःप्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यां १९ यजुःसं-अ. १ सुमित्रियानऽआपऽओषधयःसन्तुदुर्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोऽअस्मान्द्वेष्टियंचव्वयंद्विष्मः २० यजुः । सं- अ. ६
१४७।	१	हिरण्यशृंगवरुणम्	ओंहिरण्यशृंगवरुणम्प्रपद्येतीर्थंमेदेहियाचतंयन्मयाभुक्तमसाधूनांपापेभ्यश्चप्रतिग्रहःयन्मयामनसावाचाकर्म्मणादुष्कृतंतन्नइन्द्रोवरुणोबृहस्पतिस्सवितावापुनातुपुनःपुनः २१ ऋग्वेद- सं-अ. १९ केचित्तुहिरण्यशृंगोयोऽस्यपादामनोजवाअवरइन्दऽआसीत् देवइदस्यहविरद्यमायन्न्योऽअर्व्वन्तम्प्रथमोऽअध्यतिष्ठत् २२ यजुः सं- अ. २९
१४७।	२।	यदपांकूटम्	ओंयदाकूतात्समसुस्रोद्धृदोवामनसोवासंभृतंचक्षुषोवातदनुप्रेतसुकृतामुलोकंय्यत्रऽऋषयोजग्मुःप्रथमजाःपुराणाः २३ यजुः सं- अ- १८

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक०	
१४७	५	कूष्माण्ड	ॐयद्देवादेवहेडनंदेवासश्चकृमाव्वयम् ॥ अग्निर्म्मा तस्म्मादेनसोविश्वान्न्मुंचत्वंहसः २४ यदिदिवाय दिनक्तमेनाᳬसिचकृमाव्वयम् ॥ व्वायुर्म्मातस्मादे नसोव्विश्वान्न्मुंचत्वंहसः २५ यजुःसं-अ-२०
			ॐयादिजाग्रद्यादिस्वप्नऽएनाᳬसिचकृमाव्वयम् ॥ सूर्य्योमातस्मादेनसोव्विश्वान्न्मुञ्चत्वᳬहसः २६ यदग्रामेयदरण्येयत्सभायांयदिंद्रियेयच्छूद्रेयदर्येयदे नश्चकृमाव्वयम् यदेकस्याधिधर्म्माणितस्यावयजन मासि २७ यदापोऽअग्घ्याऽइतिवरुणेतिशपामहेततो वरुणनोमुञ्च अवभृथनिचुम्पुणानिचेरुरासिनिचुम्पु णाः अवदेवैर्द्देवकृतमेनोयक्ष्यवमर्त्यैर्म्मर्त्त्यकृतम्पु रुराव्णोदेवरिषस्पाहि २८ समुद्रेतेहृदयमप्स्वन्तः सन्त्वाविशन्त्वोषधीरुतापः सुमित्रियानऽआपओष धयः संतुदुर्म्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टियञ्च व्वयंद्विष्मः २९ इदंवायुसूक्तंयजुः सं० अ- २०
१४७	९	महाव्याहृतिःसावित्रीच ॥	ॐभूःॐभुवःॐस्वःॐभूर्भुवःस्वःस्वाहा तत्सवितुर्व्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात्स्वाहा ३० यजुःसं
१४८	२	शुद्धवती.	ॐशुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्ताऽआश्विनाःश्येतः श्येताक्षोरणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्णायामाऽअव लिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्जन्याः ३१ यजुः. सं
१४८	२	अघमर्षणम्	ॐऋतंचसत्यंचाभीद्धात्तपसोध्यजायत ततोरात्र्यजा यत ततःसमुद्रोअर्णवः समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो ऽजायतअहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यमिषतोवशी सूर्य्या चंद्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् दिवंचपृथिवींचान्त रिक्षमथोस्वः ३२ ऋग्वेदसं ८ अष्टके

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक	
१४८	२	शंवती.	ॐशंवतीपारयंत्येतेतंपृच्छंतिवचोयुजा अभ्यारन्तं- यमाकेतुंयऽएवेदमितिब्रवत् ४१ ऋग्वेदसं.अष्टमाष्टके
१४८	२	स्वःस्तिमती.	ॐस्वस्तिनइंद्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनःपूषाविश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्द धातुपयःपृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीःप्रादिशःसन्तुमह्यम् ० शांतिरोधिसु शांतिर्भवतु एतदन्तं पठनीयम् यजुःषडंगपाठेऽयम् ३४
१४८	२	पावमान्यः	ॐस्वादिष्ठयामदिष्ठयायवस्वसोमधारया इंद्रायपात वेसुतः रक्षोहाविश्वचर्षणिरभियोनिमयोहतम् द्रुणा सधस्थमासदत् वरिवोत्तमोभवमंहिष्ठोवृत्रहंतमः पर्षि राधोमघोनाम् अभ्यर्षमहानांदेवानांवीतिमंधसा अ भिवाजमुतश्रवः त्वामच्छाचरामसित्तदिदर्थंदिवेदिवेइं द्रोत्वेनआशसः १ पुनातितेपरिश्रुतंसोमं सूर्यस्यदुहि तावारेणशश्वतातना तमीमण्वीःसमर्यआगृह्णंति योषणोदश स्वसारःपार्य्यैदिवित्वमींहिन्वंत्यग्रवोध मंतिवाकुरंदतिम् त्रिधातुवारणंमधु अभीइममघ्न्या उतश्रीणंतिधेनवःशिशुम् सोममिंद्रायपातवे अस्ये दिंद्रोमदेष्वाविश्वावृत्राणिजिघ्नते शूरोमघाचमंहते२ पवस्वदेववीरतिपवित्रंसोमरंह्या इंद्रमिंद्रोवृषाविश आवच्यस्वमहिप्सरोवृषेंदोद्युम्नवत्तमः आयोनिंधर्ण सिःसदः अधुक्षतप्रियंमधुधारासुतस्यवेधसः आपो वसिष्ठसुक्रतुः महांतंत्वामहीरन्वापोअर्षंतिसिंधवः यद्गोभिर्वासयिष्यसेसमुद्रोऽप्सुमामृजे विष्टंभोधरु णोदिवः सोमःपवित्रेऽस्मयुः३ ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक०	
१४८	२	पावमान्यः	अचिक्रदद्वृषाहरिर्महान्मित्रोनदर्शतःसंसूर्य्येणरोच- ते गिरस्तइंदओजसामर्मृज्यंतेअपस्पुवः याभिर्म दायशुंभसे तंत्वामदायघृष्वयउलोककृत्नुमीमहे तवप्रशस्तयोमहीः अस्मभ्यामिंदाविंद्रयुर्मध्वः पवस्वधारया ॥ पर्ज न्योंवृष्टिमांइव ॥ गोषाइन्दोनृषाअस्यश्वसावाज साउत आत्मायज्ञस्यपूर्व्यः ४ एषदेवोऽमर्त्यः पर्ण वीरिवदीयति ॥ अभिद्रोणान्यासदम् ॥ एषदेवोवि पाकृतोतिह्वरांसिधावति ॥ पवमानोऽअदाभ्यः ॥ एषदेवोविपन्युभिःपवमानऋतायुभिः । हरिर्वाजा यमृज्यते ॥ एषविश्वानिवार्याशूरोयांनिवसत्वभिः । पवमानःसिषासत्ति ॥ एषदेवोरथर्यतिपवमानोदश स्यति ॥ आविष्कृणोतिवग्वनु ५ एषविप्रैरभिष्टुतोपो देवोविगाहते ॥ दधद्रत्नानिदाशुषे एषदिवंविधावति तिरोरजांसिधारया ॥ पवमानःकनिक्रदत् ॥ एषदि वंव्यासरतिरोरजांस्यस्पृत्तः ॥ पवमानःसध्वरः । एष प्रत्नेनजन्मनादेवोदेवेभ्यः सुतःहरिः पवित्रेअर्षति ॥ एषउस्यपुरुव्रतोजज्ञानोजनयंनिषः ॥ धारयापवते सुतः ६ सनाचसोमजेषिचपवमानमाहिश्रवः । अथा नोवस्यसस्कृधि ॥ सनाज्योतिःसनास्व१ र्विश्वाचसो मसौभगा ॥ अथानो०सनादक्षमुतक्रतुमपसोममृधो जहि । अथा० परीतारःपुनीतनसोममिंद्रायपातवे अथानो० त्वंसूर्येनआभज तवक्रत्वातवोतिभिः ॥ अथानो० ७ तवक्रत्वातवोतिभिर्ज्योक्पश्येमसूर्यम्०

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक	
१४८	२	पावमान्यः	अथा॰ अभ्यर्षस्वायुधसोमद्विबर्हसंरयिं ॥ अथा॰ अभ्य १ र्षानपच्युतोरयिंसुमत्सुसासहिः अथानो- त्वांयज्ञैरवीवृधन्पवमानविधर्म्मणि ॥ अथानो॰ ॥ रयिंनश्चित्रमश्विनमिन्दोविश्वायुमाभर अथानो॰ ८ सामद्धोविश्वतस्पतिः पवमानोविराजति प्रीणन्वृषा कनिक्रदत् तनूनपात्पवमानः शृंगेशिशानोअर्षति अंतरिक्षेणरारजत्।ईळेन्यः पवमानोरयिर्विराजतिद्यु मान् मधोर्धाराभिरोजसा बर्हिःप्राचीनमोजसापव मानःस्तृणन्हरिःदेवेषुदेवईयते उदात्तैर्जिहतेवृहद्वारो देवीर्हिरण्ययीः पवमानेनसुष्टुताः ९ सुशिल्पेवृहती मही पवमानोवृषण्यति नक्तोषासानदर्शते उभादेवा नृचक्षसाहोतारादैव्याहुवये पवमानइंद्रोवृषा भार तीपवमानस्यसरस्वतीळामही इमंनोयज्ञमागमंति स्त्रीदेवीःसुपेशसः त्वष्टारमग्रजांगोपांपुरोयावान माहुवे इंदुरिंद्रोवृषाहरिःपवमानःप्रजापतिःवनस्प तिंपवमानमध्वासमंग्धिधारया सहस्त्रवल्शंहरितंभ्रा जमानं हिरिण्ययं विश्वेदेवाःस्वाहाकृतिंपवमानस्याग त वायुर्वृहस्पतिःसूर्य्योग्निरिंद्रःसजोषसः १० मंद्र यासोमधारयावृषापवस्वदेवयुः अव्योवारेष्वस्मयुः अभित्यंमद्यंमदमिंदविंद्रइतिक्षरा।अभिवाजिनोअर्व तः अभित्यंपूर्व्यंमदंसुवानोअर्षपवित्रया।अभिवाजमु तश्रवः अनुद्रप्सासइंदवआपोनप्रववासरन्

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक०	
		पावमान्यः०	पुनानाइंद्रमाशत यमत्यामेववाजिनंमृजंतिपोषणो दश वनेक्रीळतमत्यविं ११ तंगोभिर्वृषणं रसंमदाय देववीतयेसुतंभरापसंसृज देवोदेवायधारयेंद्राय पवतेसुतः पयोयदस्यपीपयत्आत्मायज्ञस्यरंह्यासु. ष्वाणःपवतेसुतः प्रत्नंनिपातिकाव्यं एवापुनानइंद्रयुर्मदंमदिष्ठवीतये गुहाचिद्दधिषेगिरः १२ ऋग्वे-सं- अ- ७ षष्ठाष्टके
१४८	२	ऋषभम्	ऋषभंमासमानानांसपत्नानांविषासहिं हंतारंशत्रूणांकृधिविराजंगोपतिंगवाम् ॥ अहमस्मिसपत्नहेन्द्रइवारिष्टोअक्षतः अधःसपत्नामेपदोरिमेसर्वेअभिष्ठिताः अत्रैववोपिनह्याम्युभे आर्त्नीइवज्ययावाचस्पतेनिषेधमान्यथामदधरंवदान् अभिभूरहमागभंविश्वकर्म्मेणधाम्ना आवश्चित्तमावोव्रतमावोहंसमितिंददे योगक्षेमंवआदायाहं भूयासमुत्तमआवोमूर्द्धानमक्रमीं अधरस्पदान्मउद्वदत्तमंदूकाइवोदकान्मंडूकाउदकादिव ऋषभसूक्तमिदम ऋग्वेदसंहितायां ८ अष्टके
१४८	४	विरजम्	प्रतद्विष्णुस्तवतेवीर्येण मृगानभीमः कुचरोगिरिष्ठाः यस्योरुषुत्रिषुविक्रम्मणेष्ष्वधिक्षियंति भुवनानिविश्वा यजुः- सं- अ० ५ तेजोसितेजोमयिधेहिवीर्य्यमसिवीर्य्यंमयिधेहिवलमसिवलंमयिधेह्योजोस्योजोमयिधेहि मन्न्युरसिमन्युम्मयिधेहि सहोसिसहोमयिधेहि १ एकोनविंशतितमेयजुर्वेदसंहितायांविरजसूक्तम्

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक	
१४८	५	सौरर्चः	उदुत्यंजातवेदसंदेवंवहंतिकेतवःदृशेविश्वायसूर्य्यम् षडंगेचतुर्थाध्यायमंत्रः॥ उद्वयन्तमसस्पारिस्वःपश्य न्तउत्तरम् देवंदेवत्रासूर्य्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् २ यजुःसंहिता अ. ३५ चित्रंदेवानामुदगाद नीकंचक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳसूर्य्यऽआत्माजगतस्तस्थुषश्च३ यजुः सं. अ. ७ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमु च्चरत् पश्येमशरदःशतंजीवेमशरदःशतꣳशृणुयाम शरदःशतंप्रब्रवामशरदः शतमदीनाःस्यामशरदः शतंभूयश्चशरदः शतात् ४ षडंगेऽष्टमाध्यायमंत्रः८
१४८॥	६	रौरव॥	रौरवंरुरुवृहतीसोमः ० २ र र १ ५ १ र र र पुनानःसोमा ३ धारा २३४ या आपो वसा नो र र र ^ ३ र अर्षस्या रत्नधा योनिमृतस्यसार इद सा ३ १ २ २ १र रर २ १ २ उं हा३ उवा उत्सो देवो हिरा २३ हाइ।उं हा ३ २ १ २ ४ ५ ४ उ वा एय या।ऊ ३ हो वाहो ५ ।इ।डा।५ सामवेद वेजगायन अ- १४
१४८॥	६ ॥	यौधाजयं	३ २ १ ४ ५ २। युधाजयवृहतीसोमः ०पु ना ३१ना ३ः सो म धा ३ ५ १ २ १ ^ ३ २ ३ रा २३४ या।आ पो ३वसा २।न आ ३४५। षा ५ २र १ २ १ २र १ ३ २ २३४ सी।आ रा त्नधा।यो । नि मृता २। स्यसा

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ० पं० प्रतीक०

३ ५ २ १ ३
३४५ इादा २३४ सीाउत्सारः। २।दा इ वो २।हि
२ ५
रा३४२।एया२३४याः।६ सामवेदवेजगायनग्र.१४

१४८ ९ अग्नेर्व्रतम् अग्नेर्व्रतंशुक्रियसामान्युच्यंते ० अग्निर्गायत्र्याग्निः
२र २ ३र २र ३र र २ र
हा उ२ हा उ। श्रा जा उँ वा ।३। अग्निर्मू
र १ २ र
र्द्धा दी ३ वाः का१ कूरत्। पतिः पृथिवी ३
१ २ २ र र र
या श्रा १ यारम्। अ पा ठं- रे ता ठं-सी३
१ २ र ३र २र ३
जा इन्वा १ ती २३।हा उ २ हा उ। श्रा जा उँ
र र २ ४ २र १
वा ।२। श्रा जा इउँ ५ वा६ ५६।ए। वि श्व
२ १ २र १र ३
स्य जगतो ज्यो ती २ ३ ४ ५ :॥ ७ ॥ सामवे
आरण्य गायन ॥ अ० ५।

१५६ । १ रुद्रैकादशिनी ॥ नमस्तेरुद्रमन्न्यव इत्यादि एकादशपाठाः ८ ॥

१६० । १ मावोरिषत् मावोरिषत्खनितायस्मैचाहंखनामिवः द्विपाच्चतु
ष्प्पादस्म्माकॐसर्व्वमस्त्वनातुरम्९यजुःसं.अ.१२

१६० । १ स्योनापृथिविनो स्योनापृथिविनोभवान्क्षरानिवेशनी यच्छानः
शर्म्मसप्रथाः१० यजुःसं.अ. ३६

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक	
१६०	५	आयनेते	आयनेतेपरायणेदूर्वारोहतुपुष्पणी उत्सोवातत्रजायतांह्रदोवापुंडरीकवान् ११। अथर्वणवेदसंहितायां षष्ठकाण्डे. अ. ११ ॥
१६०	६	त्रातारमिन्द्रम्	त्रातारमिंद्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रं ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः १२॥ यजुः ० सं- अ- २०
१६०	६	यमायमधु	ॐयमायत्त्वामखायत्त्वासूर्य्यस्यत्त्वा तपसेदेवस्त्वासवितामद्ध्वानक्तुपृथिव्याःसꣳस्पृशस्पाहिअर्चिरसिशोचिरसितपोसि १३यजुः सं- अ- ३७
१६०	७	तत्त्वायामीति	ॐतत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिःअहेडमानोव्वरुणेहवोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः १४ यजुः सं- अ- २१
१६०	७	वयꣳसोमव्रते	ॐवयꣳसोमव्रतेतवमनस्तनूषुविब्भ्रतःप्प्रजावन्तःसचेमहि १५ पडंगपाठे. अ- ६
१६०	७	तत्सूर्य्यम्	ॐतत्सूर्य्यस्यदेवत्त्वंतन्महित्त्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्विततꣳसञ्जभार यदेदयुक्तहरितःसधस्थादाद्रात्रीव्वासस्तनुतेसिमस्मै १६ यजुः सं- अ- ३३
१६०	८	अधःपश्येति	ॐअधःपश्यस्वमोपरिसंतरांपादकौहर मत्तेकशप्लकौदृशन्स्त्राहिब्रह्माबभूविथ १७ ऋग्वे ० सं- षष्ठाष्टके अ- ३ ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक०	
१६०	८	सहस्त्रशीर्षेति	सहस्त्रशीर्षापुरुषःसहस्त्राक्षःसहस्त्रपात् सभूमिꣳसर्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् १८ रुद्रपाठे अ- २
१६१	६	सोमानꣳस्वरणम्	ओंसोमानꣳस्वरणङ्कृणुहिब्रह्मणस्पतेकक्षीवंतंय्यऽऔशिजः १९ यजुः० सं० अ० ३
१६१	६	यःकुक्षिः	यःकुक्षिःसोमपात्तमः ॥ समुद्रइवपिन्वते उर्वीरापोनकाकुदः एवाह्यस्यसूनृता विरप्शीगोमती महीपक्काशाखानदाशुषे २० ऋग्वेदसंहितायाम्. अ- १॥
१६१	७	वह्वीनांपिता	वह्वीनांपितावहुरस्यपुत्रश्शिश्चाकृणोति समनावगत्यइषुधिः सङ्काः पृतनाश्चसर्व्वाः पृष्ठेनिनद्धोजयतिप्प्रसूतः २१ ॥ यजुः. सं- अ. १९
१६१	१०	आमाव्वाजस्येति	आमाव्वाजस्यप्प्रसवोजगम्म्यादेमेद्यावापृथिवीविश्श्वरूपे आमागन्तांपितरामातराचामासोमोऽअमृतत्त्वेनगम्म्यात् व्वाजिनोव्वाजजितोव्वाजꣳससृवाꣳसोबृहस्पतेर्भागमवाजिघ्रतनिमृजानाः २२ यजुः - सं- अ. ९ ॥
१६१	१४	अश्वक्रांते	अश्वक्रान्तेरथक्रान्तेविष्णुक्रान्तेवसुन्धरे ॥ मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतम् २३

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ- पं-	प्रतीक	
१६३।३	मधुवाताइति-	ओंमधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीःमधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवᳬंरजः मधुद्यौरस्तुनःपितामधुमान्नोवनस्पतिर्म्मधुमांऽअस्तु सूर्य्यःमाध्वीर्गावोभवन्तुनः २४ यजुः० सं-अ- १३
१६३।५	याओषधीरिति	ओंयाओषधीःपूर्व्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरामनैनुवभ्रूणामहठं-शतन्धामानिसप्तच २५यजुः-सं-अ-१२
१६३।९	धान्यमसीति	ओंधान्न्यमसिधिनुहिदेवान्न्प्राणायत्त्वोदानायत्त्वाव्व्यानायत्त्वादीर्घामनुप्प्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविताहिरण्यपाणिःप्प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेणपाणिनाचक्षुषेत्वामहीनाम्पयोसि २६ यजुः ० सं- अ० १
१६४।८	समुद्रस्येत्यादिमंत्राः	समुद्रस्यत्त्वाावकयाग्नेपरिव्व्ययामसि पावकोऽअस्म्मब्भ्यᳬंशिवोभव ॥ २७ ॥ हिमुस्यत्त्वाजरायुणाग्नेपरिव्वयामसि ॥ पावकोऽअस्म्मब्भ्यठं-शिवोभव ॥ २८ उपज्ज्मन्नुपवेतसेवतरन्नदीष्ष्वाअग्नेपित्तमपामसिमण्डूकिताभिरागहिसेमन्न्वोयज्ञम्पावकवर्ण्णᳬंशिवङ्कृधि। २९ ॥ अपामिदन्न्ययनᳬंसमुद्रस्यनिवेशनम् ॥ अन्न्यांस्तेऽअस्स्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्स्मब्भ्यᳬंशिवोभव ३० अग्नेपावक रोचिषामन्द्रयादेवजिव्व्हया आदेवान्वक्षियाक्षिच ३१ सनःपावकदीदिवोग्नेदेवां२ ॥ ऽइहावह ॥ उपयज्ञᳬंहविश्श्चन. ३२ ॥ पावकयायश्चित्तयन्त्याकृपाक्षामन्त्रुरुचऽउषसोनभानुना तूर्व्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयो घृणेनततृषाणोऽअजरः ॥ ३३ ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ० पं०	प्रतीक०	
१६४। ८	समुद्र-	नमस्ते हरसेशोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे अन्न्यां स्तेऽअस्स्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्स्मभ्भ्यꣳशिवोभव ३४ नृषदेवेडप्प्सुषदेव्वेड्डपनसेदव्वेड्स्व र्व्विदेव्वेट् ३५ येदेवादेवानांय्यज्ञियायज्ञियाना ꣳसंवत्सरीणमुपभागमासते अहुतादोहविषोयज्ञे अस्मिन्न्स्वयम्पिबन्तुमधुनोघृतस्य ३६ येदेवादेवे ष्ष्वधिदेवत्त्वमायन्न्येव्वब्रह्मणःपुरऽएतारोऽअस्ययेभ्भ्यो नऽऋतेपवतेधामकिंचननतेदिवोनपृथिव्व्याऽअधिस्नुषु ३७ प्राणदाऽअपानदाव्व्यानदावर्च्चोदाव्वरिवोदाः अन्न्यांस्तेऽअस्स्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽस्स्मभ्भ्यꣳशिवोभव ३८ यजुः-सं०अ० १७
१६५। ३	सहस्रशीर्षेति	सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात् सभूमिꣳ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् इत्यावाहनम् ३९
१६५। ३	एतावानिति	एतावानस्यमहिमातोज्यायांश्चपूरुषः पादोस्यव्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि इतिपाद्यम् ४०
१६५। ३	पुरुषऽएवेति	पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वंयद्भूतंय्यच्चभाव्यम् उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति इत्यासनम् ४१
१६५। ४	त्रिपादूर्ध्वइति	त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि इत्यर्घम् ४२
१६५। ४	ततोविराडिति	ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः इत्याचमनीयम् ४३

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ- पं- प्रतीक

१६५।४ तस्माद्यज्ञादिति तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्यम् पशूँस्तां श्चक्रेव्वायव्यानारण्याग्राम्याश्चये इतिस्नानम्४४

१६५।५ तस्माद्यज्ञात् तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचःसामानिजज्ञिरे छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत इतिवस्त्रम् ४५

१६५।५ तस्मादश्वाइति तस्मादश्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः गावोहयज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः इतियज्ञोपवीतम् ४६

१६५।६ तंयज्ञमिति तंयज्ञम्व्वर्हिषिप्रौक्षन्पुरुषंजातमग्रतः ॥ तेनदेवा ऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्चये ॥ इतिगंधम् ॥ ४७

१६५।६ यत्पुरुषमिति यत्पुरुषम्व्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन् मुखङ्किमस्या सीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽ उच्येते इतिपुष्पम् ४८

१६५।६ ब्राह्मणोस्येति व्ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्व्बाहूराजन्यःकृतःऊरूतदस्य यद्वैश्यःपद्भ्याꣳशूद्रोऽअजायत ॥ इतिधूपम् ॥ ४९

१६५।७ चंद्रमामनसोजातः चंद्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायतश्रोत्राद्वायु श्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत इतिदीपः ॥ ५०

१६५।७ नाभ्याऽआसीत् नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत पद्भ्या म्भूमिर्द्दिशःश्रोत्रात्तथालोकांऽ२॥ ऽअकल्पयन् इति नैवेद्यम् ॥ ५१ ॥

१६५।७ यत्पुरुषेणेति यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्न्वत ॥ वसन्तोस्यासी दाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मःशरद्धविः इतिताम्बूलम् ॥ ५२

१६५।८ सप्तास्यासन् सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधःकृताः देवायद्य ज्ञन्तन्न्वानाऽअव्वध्नन्पुरुषम्पशुम् इतिनमस्कारः५३

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक०	
१६५	८	यज्ञेनयज्ञम्	यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्न्यासन् तेहनाकम्महिमानःसचन्तयत्रपूर्व्वेसाध्याःसन्तिदेवाःइतिस्तुतिःप्रदक्षिणाच ५४
१६५	१०	नमोस्त्वनंतायेति	नमोस्त्वनंतायसहस्रमूर्त्तयेसहस्रपादाक्षिशिरोरुवाहवे सहस्रनाम्नेपुरुषायशाश्वतेसहस्रकोटीयुगधारिणेनमः नमःकमलनाभायनमस्तेजलशायिने नमस्तेकेशवानंतवासुदेवनमोस्तुते ५५
१६७	४	इरावती	इरावतीधेनुमतीहिभूतꣳसूयवसिनीमनवेदशस्यव्यस्कभ्नारोदसीविष्णवेतदाधर्त्थपृथिवीमभितोमयूखैःस्वाहा ५६ यजुः- सं- अ- ५
१६७	५	शन्नऽइन्द्राग्नी	अहानिशम्भवन्तुनःशꣳरात्रीःप्रतिधीयतां शन्नऽइन्द्राव्वरुणारातहव्व्याशन्नऽइन्द्रापूषणाव्वाजसातौशमिन्द्रासोमासुवितायशंय्योः ५७ यजुः-सं-अ- ३६

अस्तुसतांमुदेमंत्रसंग्रहोयम्

॥ स्वतोमीति इसका अर्थ पिछेहोचुकाहै मैं कविगंगारामने श्रीमहाराजाधिराज श्री-रणवीरसिंह जीकी आज्ञासें एह कर्मविपाक क्या कर्म्मोकाहै फल जिस विषे ऐसा प्रकरण प्रारंभकरीदाहै कैसाएहप्रकरणहै जिसके विचारणविषे गुणिपुरुषांकों दोष क्या पापविषे प्रवृत्ति नहि होवी और पापांविषें जो प्रीतियुक्तहै तिसके हृदयविषे अतिशयकर्के कंप होवाहै और दुष्टजनकावेष क्या काणत्व वधिरत्वादि जिसते प्रतीतहुंदाहै १ और तिसके आदविषें कर्म्मविपाकशब्दका अर्थ कहीदाहै कर्मेति शुभ और अशुभ कर्मोंकाविपाक क्या फल परिणामिकाल सो कर्म विपाक कहीदाहै इसव्युत्पत्तिते यद्यपि शुभकर्म्मका फल विद्वत्ता आदि और पापकर्म्मकाफल क्षयरोगादि इनोंविषें कर्मविपाक शब्दकी प्रवृत्ति कहीहै तथापि प्रसंगतें पापीपुरुषांके मनविषें पश्चात्तापके करणे वाला होनेसें अशुभकर्मोंका

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ स्वतोमित्वातत्त्वमित्यादि०यस्मिन्विमृष्टेगुणिनांन दोषः पापाभिसक्तस्यहृदिप्रदोषः प्रज्ञायतेदुष्टजनस्यवेषःप्रागभ्यतेकर्म्म विपाकएषः १ तत्रादौकर्म्मविपाकशब्दार्थः कर्म्मणांशुभाशुभानांविपाकः फलदानकालः सइतिव्युत्पत्त्या विद्वत्ता क्षयरोगादौ कर्म्मविपाकशब्दप्रवृ त्तिः तथापि प्रकृतत्वात्पापिजनमनोऽनुतापापादकत्वाच्च दुष्कर्म्मजनित एवकर्म्मविपाकःप्रस्तूयते। अत्रमाधवः पतंजलिसूत्रानुमत्या विशेषेणपचनं विपाकः सच जन्मायुर्भोगभेदात्त्रिविधः तन्मूलं अविद्याऽस्मितारागद्वेषा भिनिवेशाःपंचक्लेशाः। अविद्या ममता अस्मिताअहंता रागद्वेषौप्रसिद्धौ अ भिनिवेशस्तयोर्दार्ढ्यं एभिरेवज्ञानोपलब्धियावत् कर्म्माणिजायंते तानि चाऽत्र जन्मादिरूपेणविपच्यंते ॥ पतितंयाजयित्वातुकृमियोनौप्रजायतइ त्यादिना जन्म १ तत्रजीवतिवर्षाणिदशपंचचवाद्विजेत्यादिना आयुः २

परिणाम है जिसविषें ऐसा कर्मविपाक प्रसंगमे ल्याईदाहै इसविषे माधवजीका वाक्यहै पतंजलि सूत्रके अनुमतिकर्के विशेषकर्के जो पचनक्रियाहै सो विपाक कहाहै सो विपाक जन्म १ और आयु २ और भोग ३ इसभेदतें त्रयप्रकारकाहै तिसकामूल अविद्या क्या ममता १ और अहंकारता २ और राग ३ और द्वेष ४ और रागद्वेषदृढता ५ एनांकर्के ज्ञान कीप्राप्तिके पर्य्यंत छे कर्म संपूर्ण जन्मादिरूपकर्के फलदेणवालेहोतेहैं सो कहितेहां पतितमिति पतितकों यज्ञकरवाणे कर्के कृमिजन्मकों प्राप्तहोताहै इत्यादिकर्के जन्मकहाहै १ और तिसमे पंदरावर्ष जीवताहै इसकर्के आयु २

घमेंति सो पापी यमलोकविषें बहुतपीडाकों प्राप्तहोतेहैं इसककें भोग कहाहै स्मृतिककें प्रसिद्ध ३ एह माधवजी कहतेभये इसमैं होर विचार करतेहैं त्रयप्रकारकाभी विपाक कहाहै प्रेतत्वगति और नारकीयदेहत्वगति और अधमयोनित्वगति और कीटादियोनित्व इनां भेदांतें बहुत प्रकारकाहै (प्रश्न) प्रायश्चित्तके प्रसंगविषे इसकों क्यों कहतेहो (उत्तर) प्रेति इस पाप युक्त पुरुष विषे पापके विधान करणेकों और पाप फलके दूरकरणेकों असमर्थके होयां होयां भी अर्थवादककें प्रायश्चित्तकी उपयोगिता कर्म्मविपाकक्कोंजानणी सो दिखाया जावेगा अब अर्थवादका अर्थ कहतेहैं विहित कर्म विषे प्रवर्त्तक होणेतें और निषिद्धकर्मसें निव र्त्तकहोणेतें विधि और प्रतिषेध विषे एह अर्थवाद एकवाक्यताकों अंगीकार करतेहैं ऐसे न्यायवेत्ताके वचनतें ॥ तथाच क्लेशककें होणेवाला जो प्राजापत्य आदिव्रत तिसके अनुष्ठान

यमलोकेतुतेघोरांलभंतेपरियातनामित्यादिना भोगः स्मृतिसिद्ध ३ इत्याद्य भिदधेत्रिविधोऽपिप्रेतत्वनारकीयदेहत्वाधर्मयोनित्वकीटादियोनित्वादिभे दाद्बहुविधःप्रायश्चित्तोपयोगित्वंचास्यविधातुंप्रतिषेद्धुमशक्यत्वेपि अर्थवा दत्वेन बोध्यम् अर्थवादास्तु विहिते प्रवर्त्तकत्वेन प्रतिषिद्धान्निवर्त्तकत्वे नच विधिप्रतिषेधैकवाक्यतांभजंतइतिन्यायविदुक्तेः तथाच क्लेशात्मक प्राजापत्याद्यनुष्ठानेप्ररोचनां विना प्रवृत्त्यभावात्तदर्थं काचित्प्ररोचनावि धेया साच यागादावनुकूलफलश्रवणेन क्षयरोगादिहेतुश्रवणादुद्वेजनद्वा रा प्राजापत्यादौ तन्निवृत्तिहेतुत्वेनच जायते उद्वेजनंतु इयंब्रह्महत्याऽ वश्यंमह्यंक्षयरोगंदास्यतीतिनिश्चयहेतुकम् ततश्चेदं प्राजापत्याद्यनुष्ठानं तन्निवृत्तिहेतुरतोऽवश्यमनुष्ठेयमितिप्ररोचना तत्तद्विपाकजन्येत्यवश्यं कर्म्मविपाकप्रस्तावना प्रायश्चित्तादौवक्तव्या

विषे रुचितें विना प्रवृत्तिके अभाव होणेतें तिसकारणतें रुचिकी प्रवृत्ति वास्तें कर्मविपाककहाहै तिसके अर्थ कोईक प्ररोचना विधानकरणेयोग्यहै सो प्ररोचना कहीदीहैं यागेति यज्ञादिकांविषें अनुकूल फलके श्रवणककें और क्षयरोगआदिकांके हेतु जो पाप तिनके श्रवणतें होया जो हृदयकंप तिसद्वारा प्राजापत्यादिव्रतविषे पापके निवृत्तिहेतुहोणे ककें प्ररोचना उत्पन्नहो तीहै ॥ उद्वेजनका अर्थ कहतेहां एह ब्रह्महत्या अवश्यहि मेरेतांई क्षयरोग आदिकांकों देवेगी एहनिश्चय जानणा तिसकारणतें एह प्राजापत्यादिव्रतका अनुष्ठान अवश्यहि करणेयोग्यहै तिस क्षयरोगकी निवृत्तिहेतुतें ऐसें प्ररोचना तिसतिसविपाकफलतें उत्पन्नहोतीहै तांतें कर्मविपा ककी प्रस्तावना प्रायश्चित्तके आदि विषें अवश्यहि कहणे योग्यहै

सेति फेर सो कर्मविपाक सामान्य और विशेष भेदतें दोप्रकारकाहै सामान्यतें जो कर्म विपाक कारूपहै सो शिवधर्मोत्तर विषे कहाहै अथेति इसतें अनंतर पतित पुरुषांकों अधर्मकहाहै पापशब्दका अर्थ कहतेहैं नरेति महाघोर नरकादि विषें पातन करणेतें पाप कहाहै १ विष्णुधर्मोत्तरविषेभीकहाहै हेभार्गव पुरुषांकों मृत्युके प्राप्त होयांहोयां आतिवाहिक संज्ञाकर्के देह होताहै सो केवल मनुष्योंकाहिहै होरकानहि १ तिसका अर्थ कहतेहैं वाह्ममिति पापकेकरणे वालें देहकों छोडकर्के जो होवे सो कहिए आतिवाहक सोई यमपीडाके भोगका हेतुहै याम्यैरिति हेभृगूत्तम मनुष्योंका आतिवाहक देह यममार्गकर्के यमदूतांने लैजाईदाहै हेद्विज अन्यजीवांका नहि २ तैसेहि और स्मृति विषे कहा है। मनुष्या इति ॥ एह जो मनुष्य हैं

सपुनःसामान्यविशेषभेदाद्द्विविधः॥सामन्यतःकर्मविपाकःशिवधर्मोत्तरे॥ अथातःपततांपुंसामधर्म्मःपरिकीर्त्तितः नरकादौमहाघोरेपातनात्पापमुच्यते १ विष्णुधर्मोत्तरेऽपि॥ आतिवाहकसंज्ञस्तुदेहोभवतिभार्गव केवलंतन्मनुष्याणांमृत्युकालउपस्थिते १ वाह्मं पापोपार्ज्जकंदेहमतिक्रम्यजायते आतिवाहकोयमयातनाभोगहेतुः ॥ याम्यैर्नरैर्मनुष्याणांतच्छरीरंभृगूत्तम नीयतेयाम्यमार्गेणनान्येषांप्राणिनांद्विज २ तथा मनुष्याः प्रतिपद्यंतेस्वर्गं नरकमेववा नैवान्येप्राणिनःकेचित्सर्वेतेफलभोगिनः१ शुभानामशुभानांच कर्म्मणांभृगुनंदन संचयःक्रियतेलोकेमनुष्यैरेवकेवलम् २ तस्मान्मनुष्यश्चमृतोयमलोकंप्रपद्यते नान्यःप्राणीमहाभागफलयोनौव्यवस्थितः ३

सोई स्वर्ग और नरक में जातेहैं और जो पशु पक्षी आदिक प्राणी हैं तिनको स्वर्गादिगति नहिहै किंतु पूर्वजन्ममें मनुष्य देह करकें कीते होए जो कर्म तिनके फल को भोगतेहैं इस जन्मके कर्मांका फल उनको आगे नहि होता १ इसीको स्पष्ट करके कहते हैं शुभेति हे भृगुनंदन शुभ और अशुभ जो कर्म तिनका संचय इस लोकविषे केवल मनुष्योंने करीदाहै औरोंने नहि २ तस्मेति तिस कारणसे मृतहोया २ मनुष्य यमलोकको जाताहै और प्राणी नहि जाता हेमहाभाग जिस करकें होर पशुपक्षी आदि प्राणी फलयोनिविषे व्यवस्थित है इसका अर्थ स्पष्ट पिच्छेहोचुका ॥ ३ ॥

याम्येति यमलोकको प्राप्त होया जो पुरुष तिसकों राजा धर्म नरकादियोनिमे पापके अनुसार प्राप्त करताहै ४ ब्रह्मपुराणविषे कहाहै कर्मेति कर्म करके और मनकर्के और वाणी करके जो पुरुष धर्मतें रहितहैं सो यमलोक विषे वहुत पीडाकों प्राप्तहोतेहैं १ इहेति इसदेहविषे पुरुष अल्पभी अशुभकर्म करे तां यमलोकविषे जो नरक तिसविषे जो घोरपीडा तिसकों प्राप्तहोताहै २ विष्णुपुराणविषें भी किहाहै पापेति जो पापके करणेवाला पुरुष जेकर प्रायश्चित्तसें पराङ्मुखहोवे अर्थात् प्रायश्चित्तकों न करे तां नरककों प्राप्तहोताहै और पापोंके दूरकरणेवास्ते जो जैसे प्रायश्चित्तहैं तैसे तैसे स्मरण कर्के परमऋषियोंनें कहेहैं १ तैसेंभविष्योत्तरपुराणविषें कहाहै देवेति । देवता और तिर्यङ् जो पशुआदि और जो मनुष्य अधर्मविषें निरंतरयुक्तहैं तिनांकोंघोर

याम्यलोकंप्रपन्नस्यपुरुषस्यतथायमः ॥ योनीश्चनरकांश्चैवनिरूपयति कर्म्मणेति ॥ ४ ॥ ब्रह्मपुराणे कर्म्मणामनसावाचायेधर्म्मविमुखानराः यमलोकेतुतेघोरांलभंतेपरियातनाम् ॥ १ ॥ इहाल्पमपिकृत्वातुनरः ॥ कर्म्माशुभात्मकं प्राप्नोतिनरकेघोरांयमलोकेषुयातनाम् २ विष्णुपुराणेऽपि ॥ पापकृत्यातिनरकान् प्रायश्चित्तपराङ्मुखः पापानामनुरूपाणि प्रायश्चित्तानियद्यथा १ तथातथैवसंस्मृत्यप्रोक्तानिपरमर्षिभिरितितथा भविष्योत्तरे ॥ देवतिर्यङ्मनुष्याणामधर्म्मनिरतात्मनाम् ॥ धर्म्मराजः स्मृतःशास्तासुघोरैर्विविधैर्वधैः १ नियमाचारसक्तानांप्रमादात्स्खलितात्मनाम् प्रायश्चित्तैर्गुरुःशास्तानतुतैरिष्यतेयमः २ पारदारिकचोराणामन्यायव्यवहारिणाम् नृपतिःशासकःप्रोक्तःप्रच्छन्नानांचधर्म्मराट् । ३ तस्मात्कृतस्यपापस्यप्रायश्चित्तंसमाचरेदिति ब्रह्मपुराणे ततश्चयातनादेहंक्लेशेनप्रतिपद्यते तत्कर्म्मजंयातनार्थममातापितृसंभवम् १

विविधवधोंकर्के धर्मराजहि शिक्षादेणेवालाकिहाहै १ नियमेति जो नियम और आचरविषें युक्त हैं और प्रमादतें नियम और आचारतेंरहितहोयेहैं तिनोंकों प्रायश्चित्तांकर्के शिक्षादेणेवाला गुरु किहाहै और यम नहि तिनांकोंदंडदेणेवालाकहा २ पारेति जो पुरुष परस्त्रीकों चुरातेंहैं और नीतिसें विना जो व्यवहारकर्तेहैं तिनोका शास्ता क्या शिक्षादेणेवालाराजाकहाहै और गुप्तपाप केकरणेवालेजो पुरुष तिनांकाशास्ता धर्मराज कहाहै ३ तस्मादिति तिसकारणतेंकीताजो पाप तिसके प्रायश्चित्तकोंकरे ॥ और ब्रह्मपुराणविषेंकहाहै ततश्चेति तिसकारणतें यातनादेहकों क्लेशकर्के प्राप्तहोताहै सो अतिवाहकदेह पीडाके वास्ते माता पितातेंविना कर्म्मातें उत्पन्न होयाहै १

पुरुष पूर्व जो आकृति और आयु और अवस्थासंस्थान क्या बाल्यादिस्थिति इनाकर्के युक्त और सौंदर्यताकर्के युक्तबहुत यत्नकर्के रक्षित जो प्राचीन पांच भौतिकदेह तिसकोंत्यागके २ औरजो अप णे कर्मोंते उत्पन्नहोया पीडाकेंवास्ते तन्मात्रगुणांकर्केयुक्त नानास्वरूपकर्मोंते शरीर तिसकोंग्रहण कर्ताहै ३ पापांकें करणेवालासुखदुखांके भोगणेवास्ते दृढशरीरकों प्राप्तहोताहै अतिशयकर्के तिसदेहकर्केस्वकर्म्मांकेफलकोंभोगताहै और धर्मीपुरुषयमलोकसेस्वर्गमें जाकर सुखकोभोगताहै ४ किंचेति इसमें होर विचारहै कि कर्म्मोंका फल कर्म्म विपाक है इसजगा कर्म केवल देहव्यापारते उत्पन्नहोये विषे नहि जानणे किंतु देह और वाणी और मनके व्यापारसें उत्पन्न होयेहोयेजानणे सो मनुजी कहतेहैं शुभेति शुभ और अशुभहै फल जिसका ऐसाजो कर्म उसकोमन और वाणी और देहसें उत्पन्नहोयाहोया जानणा और कर्मांकी

तत्प्रमाणवयोऽवस्थासंस्थानैःप्राक्तनंतथा विहायसुमहद्गुप्तंशरीरंपांचभौतिकम् २ सुमहत्गुप्तम् सौंदर्य्यापादनपूर्वकं महता प्रयासेनरक्षितम् ॥ अन्यच्छरीरमादत्तेयातनार्थंस्वकर्म्मजम् तन्मात्रगुणसंपन्नंनानात्मीयंस्वकर्म्मजम् ३ दृढंशरीरमाप्नोतिसुखदुःखोपभुक्तये तेनभुक्त्वास्वकर्म्माणि पापकर्त्तानरोभृशम् सुखानिधार्म्मिकोदृष्टस्तदानीतोयमक्षयादिति ४ किंच कर्म्मणांविपाकइत्यत्र कर्म्माणिनकेवलंकायव्यापारमात्रपराणि किन्तुकायवाङ्मनोव्यापारपराणि तदाह मनुः। शुभाशुभफलंकर्म्ममनोवाग्देहसंभवम् कर्म्मजागतयोन्दृणामुत्तमाधममध्यमाः १ उत्तमाधममध्यमागतयोहि देवमनुष्यतिर्य्यगादिरूपाजन्मांतरप्राप्तयो मानसवाचिककायिककर्म्मभिः प्रत्येकंयोज्याःएषांयागादिविषयत्वेउत्तमाः स्तेयादिनिवृत्तिविषयत्वेमध्यमाः स्तेयादिविषयत्वेऽधमाः ॥ प्रकृतत्वान्निकृष्टकर्म्मणोदशविधत्वकथनपूर्वकंमनसस्तन्नियंतृत्वमाह तस्येहत्रिविधस्यापित्र्यधिष्ठानस्यदेहिनः दशलक्षणयुक्तस्यमनोविद्यात्प्रवर्त्तकम् १

यांगतियां पुरुषांकों उत्तम मध्यम अधमकहीयांहैं १ सो उत्तम मध्यम अधमगतियां देवता और मनुष्य और तिर्यगादि क्या पशुपक्ष्यादिरूप जानणीयां और इसजगा उत्तमाधममध्यमा एहछंदकर्केहै और वास्तवपाठ उत्तममध्यमाधमा एहहै और अन्यजन्मकों प्राप्तकरणे वालियां जानणीयां एक एक क्रमकर्केमानस वाचिक कायिककर्मांकर्के कहीयांहैं और इनाकर्मांकों यागादि विषयमें उत्तम और स्तेयादिकांकी निवृत्तिविषयमेमध्यम स्तेयादिजो चोरीआदिकहै उसके करणे विषे अधमजानणीयां॥ अब मंदकर्मांकों प्रसंगविषेहोणेसें दशप्रकारके कथनपूर्वकमनके नियंतृत्व कों कहतेहैं॥ तस्येति तीनगुणहैं अधिष्ठानाजिसके ऐसा जो दशलक्षणकर्के युक्त देहिसंबंधीकर्महै तिसका प्रवर्त्तकमनकोंजाने १

जो दस लक्षणकहेहैं सो तीनश्लोककर्के दखातेहैं परद्रव्येति पराए धनोविषे चारश्रोरसें खोटा ध्यान करणा अर्थात् किसीके धनस्त्रीआदिविषें अभिलाषाकरणी और मनकर्केदुष्टकामोकाक्यामै इसकेघराविषेकुछविघ्नकरांऐसा चिंतनकरणा और झूठा हठकरणाक्यापरलोकनहिदेहहि आत्माहै ऐसाकहणा यहत्रयप्रकारकामानसकर्मकहाहै १ पारुष्यमिति कठोरवाक्य और असत्यवाक्यकहना और सर्वथा चुगलीकरणी और परोक्षविषे दूसरेके दोषकहणे एहचार प्रकारका वाङ्मय कर्महै अर्थात्एहकर्म्मवाणीसे होताहै २ और स्वामिकर्के नहि दित्ते जो द्रव्यतिनोकाग्रहण करणा और अशास्त्रविधिकर्केपशुआदिकांकी हिंसाकरणी और परस्त्रियोंकेसाथ विषयभोगणा यहत्रयप्रकारका शारीरिककर्म किहाहै ३ अवइसमैकुछ और विशेषहै कि जिस मनआदिकर्के पापइकट्ठाकर्तेहैं

परद्रव्येष्वभिध्यानंमनसानिष्टचिंतनम् ॥ वितथाभिनिवेशश्चत्रिविधंकर्म्म मानसम् १ पारुष्यमनृतंचैवपैशुन्यंचापिसर्वशः असंबद्धप्रलापश्चवाङ्मयंस्याच्चतुर्विधम् २ अदत्तानामुपादानंहिंसाचैवाविधानतःपरदारोपसेवाचशारीरंत्रिविधंस्मृतम् ३ अभिनिवेशःपरलोकोनास्तिदेहएवात्माएवमित्याद्यसदाग्रहःत्रिविधंत्रिप्रकारंमानसमशुभमित्यर्थः एवमग्रेपि असंबद्धप्रलापः परोक्षपरदूषणकथनम् अदत्तानांस्वामिनाऽदत्तानामपिद्रव्यादीनांग्रहणम् अविधानतःअशास्त्रविधिना पश्वादिहिंसनम् येनोपार्ज्यतेतेनैवोपभोग्यं दर्शयति। मानसंमनसैवायमुपभुंक्तेशुभाशुभम् वाचावाचाकृतंकर्म्मकायेनैवतुकायिकम् १ मनसाऽऽध्याश्रयेणमानसं मनःकृतंपापमुपभुंक्ते एवमन्यदपिबोध्यम्। इदंचत्रिविधस्यैवसमत्वेतत्तद्भोगपरम् एकैकस्यप्राधान्येनाह ॥ शरीरजैःकर्म्मदोषैर्यातिस्थावरतांनरः

तिसी मनआदियोंकर्के हिभोगनूं दिखातेहैं मानसमिति मनकर्केकीते जो पापइनकोंमनकर्के ही पुरुषभोगताहै और वाणीकर्केकीते जोपाप तिनानू वाणीकर्केहीभोगताहै और देहकर्केकीते जो पाप तिनांकोंदेहकर्केहि भोगताहै १ इसीकाअर्थस्पष्टकर्के कहतेहैं मनसेति आधीका आश्रय जो मन तिसकर्के कीते जोपापतिनाकों मनकर्केहीं पुरुषभोगताहै आधिःमानसीपीडाहै परंतु एह जो पापहै तिसको तीनोपापोंके बराबरहोनेसें तिनेंपापोंके भोगोंको भोगताहै और तीनोपापों केमध्यमेएक पापकर्मकीप्राधान्यताहोवे तोतिनोंकेफलकोंपृथक् पृथक् कर्के कहतेहैं शरीरजैरिति शरीरकर्के कीतेजोपाप तिनोकर्के पुरुष वृक्षयोनिकों प्राप्तहोताहै

और वाणीकर्के कीते जो पाप तिनोंकर्के पक्षियोनिकों और मृगयोनिकों प्राप्तहोताहै और मन कर्के कीते जो पाप तिनोंकर्के चांडालजातिकों प्राप्तहोताहै १ इसका अभिप्राय कहतेहैं शरीरकर्के कीते जो पापतिनाके वहुतहोने कर्के वृक्षयोनिकों प्राप्तहोताहै ऐसे होरभी जाणो इस विषयमे विशेषकर्के अर्थकथनकरणे वास्ते और स्मृति कथन करतेहैं सामान्येति सामान्य और विशेष भेदकर्के कर्मोकाफल दोप्रकारकाभीहै तथापि शरीरकर्के और वाणीकर्के और मनकर्के तीन प्रकारकाकर्मोकाफल है अव आत्माको ईश्वररूपप्रतिपादनकर्के याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं यद्येवमिति हेब्रह्मन् यववो ईश्वरऐसाहै तव कैसे पापयोनियों विषे उत्पन्न होताहै और फेर खोटे जो भाव स्त्रीसंयोगादि उनोके साथकैसेयुक्तहोताहै १ करणैरिति फेर वो ईश्वर इंद्रियोंकर्केयुक्तभीहै परंतु पूर्वज्ञानकों क्योंनहि जानताहै औरवो

वाचिकैःपक्षिमृगतांमानसैरंत्यजातिताम् १ शारीरिकपापवाहुल्येन स्थावरत्वं प्राप्नोतीति अत्रैवविशेषाभिधानार्थंस्मृत्यन्तरमुपन्यस्यते सामान्यविशेषभेदेनद्विविधोऽपिकायिकवाचिकमानसभेदात्त्रिविधः कर्म्मविपाकः आत्मनईश्वरस्वरूपत्वंप्रतिपाद्याहयाज्ञवल्क्यः॥यद्येवंसकथंब्रह्मन्पापयोनिषुजायते ईश्वरःसकथंभावैरनिष्टैःसंप्रयुज्यते १ करणैरन्वितस्यापिपूर्वज्ञानंकथंचन वेत्तिसर्वगतांकस्मात्सर्वगोपिनवेदनाम् २ अन्त्यपक्षिस्थावरतांमनोवाक्कायकर्मजैः दोषैःप्रयातिजीवोऽयं भवयोनिशतेषुच ३ अनन्ताश्चतथाभावाः शरीरेषुशरीरिणाम् रूपाण्यपितथैवेहसर्वयोनिषुदेहिनाम् ४ विपाकःकर्मणांप्रेत्यकेषांचिदिहजायते इहवामुत्रवैकेषांभवस्तत्रप्रयोजनम् ५

ईश्वर संपूर्ण लोकोंके हृदयविषे स्थितभीहै परंतु संपूर्ण पुरुषोंकीपीडाकों क्योंनहि जानताहै २ अंत्येति और मन कर्के कीते जो पापकर्म्म उनोंके फलकर्के संसारविषे शतजातियोंके मध्यविषे एह जीव चांडाल जातिकों प्राप्तहोताहै और इसीप्रकार वाणीकर्के कीते जो पापकर्म्म तिनो कर्के पक्षियोनिकों प्राप्तहोताहै और शरीरकर्के कीते जो पापकर्म तिनो कर्के स्थावर क्या वृक्षादियोनिकों प्राप्तहोताहै ३ अनन्ताइति ऐसेहि वहुततरोंके जन्मादिक शरीरोंविषे शरीरियोंकोंहोतेहैं और इसी प्रकार संपूर्ण योनियोंविषे देहियोंके स्वरूपभी वहुतप्रकारके होतेहैं ४ विपाकइति और कैयों कर्म्मोंकाफल इसलोकमे और कैयोंका मरकर्के परलोकमे प्राप्तहोताहै इसलोक विषे अथवा परलोकविषे कैयोंजीवोंका उत्पन्नहोणा एही केवल प्रयोजनहै ५

इसीकास्पष्टार्थहै परद्रव्याणीति और जो पुरुष परपुरुषोंके धनकों लैणेवास्ते ध्यानकरताहै और दुःखहेतुका चिंतनकरताहै और जो झूठकहकर उसीकों सत्यप्रतिपादनकरताहै सो पुरुष चांडालयोनियोंकों प्राप्तहोताहै ६ पुरुष इति जोपुरुष झूठबोलताहै और चुगलीकरताहै और अनुचितवार्तोंकाकथनकरताहै सो मरकर्के पक्षियोंकीयोनिकोंप्राप्तहोताहै ७ अदत्तादानेति आपहि किसीकी वस्तुके उठालैणेविषे प्रीतिवाला और परस्त्रीयोंमे संगकरणे वाला और विधिकेविना हिंसाकरणे वाला जोपुरुषहै सो मरकर्के वृक्षयोनिकों प्राप्तहोताहै ८ और सत्व और रज और तम यह तीनोगुणजबविशेषहोवैंतो तिनोंका जोफल सोपृथक् पृथक्कर्के याज्ञवल्क्यजी कथन करतेंहैं आत्मज्ञइतिआत्माके जानणेवाला और पवित्ररहिणेवाला और मनकेरोकणेवाला और तप क्या चान्द्रायणादि व्रत तिसकेकरणेवाला बाह्येंद्रियके रोकणे वाला और धर्म करणे वाला और वेदकेजानने वाला ऐसा जो सत्वगुण विशिष्ट पुरुष सो मरकर्केदेवयोनिकोंप्राप्तहोताहै १

परद्रव्याण्यभिध्यायंस्तथानिष्टानिचिंतयन् वितथाभिनिवेशीचजायतेन्त्या सुयोनिषु ६ पुरुषोऽनृतवादीचपिशुनःपुरुषस्तथा अतिबद्धप्रलापीचमृतः पक्षिषुजायते ७ अदत्तादाननिरतःपरदारोपसेवकःहिंसकश्चाविधानेनस्था वरेष्वभिजायते ८ सत्वादिगुणविशेषेणविपाकविशेषंसएवाह । आत्मज्ञः शौचवान्दान्तस्तपस्वीनिर्जितेन्द्रियः धर्मकृद्वेदविद्यातिसात्विकोदेवयोनि ताम् १ असत्कार्य्यरतोऽधीरआरम्भीविषयाचयः सराजसोमनुष्येषुमृतोज न्माधिगच्छति २ निद्रालुःक्रूरकृल्लुब्धो नास्तिकोयाचकस्तथा प्रमादवान् भिन्नवृत्तोभवेत्तिर्यक्षुतामसः ३ रजसातमसाचैवसमाविष्टोभ्रमन्निह भावैर निष्टैःसंयुक्तःसंसारंप्रतिपद्यते ४ मनुरपि सत्वंरजस्तमश्चेतित्रीन्वि द्यादात्मनोगुणान् योव्याप्येतान्स्थितोभावान्महान्सर्वानशेषतः १

असत्कार्य्येति जोअसत्कार्य्योंकेकरणेवालाहै औरधैर्यतासे रहितहै और कार्य्योंकेआरंभविषे युक्त है और विषयोंकेभोगनेवालाहै ऐसा जो रजोगुणकर्के युक्त पुरुषहै सो मरकर्केमनुष्योंविषे जन्म कों प्राप्तहोताहै २ निद्रालुरिति निद्राहै प्यारीजिसकों और क्रूरकर्मोंके करणेवाला और जी वोंके फगड़ने वाला और ईश्वरकी निंदाकरणेवाला और याचनाकरणेवाला और प्रमादकर्के युक्त और दुष्टस्वभाव वाला ऐसा जो तमोगुणकर्के युक्त पुरुष सो मरकर्के तिर्यग्योनियोंविषे उत्पन्न होताहै ३ रजसेति रजोगुणकर्के और तमोगुणकर्के बद्धाहुया जो पुरुष सो इस संसार विषे भ्रमताहुया और खोटेभावोंकर्के युक्त हुया हुया अर्थात् रोगादि विपत्तिकर्केयुक्त होया होया फेर संसारकोंही प्राप्तहोंताहै ४ मनुजीभीकहतेहें सत्वामिति सत्व और रज और तम यह तीनगुण आत्माकेहैं जो महान् आत्मा इनभावों विषे संपूर्णता कर्के स्थितहै १

यइति जिसके देहाविषें जो गुण सत्व अथवा रज अथवातम अधिकहोजावे तद तिस देहीको पूर्वोक्तव्यवस्थाकर्के तिसीसात्विकादि नामवालेकोंकर्ताहै २ इसीको कहतेहैं सत्वमिति सत्वगुण ज्ञानकोंकहतेहैं और तमोगुणअज्ञानकोकहतेहैं राग और द्वेष रजोगुणकोंकहतेहैं और इनातीनो गुणोका जो वपु सो संपूर्ण भूतोंका अर्थात् पृथिव्यादियोंकाआश्रयहै ३ तत्रेति जो चित्तवृत्त प्रीति कर्के युक्तहै और आत्मामे कुछक शांतिवालाहै और शुद्ध शोभा वालाहै उसकों सत्वगुण जान ४ यत्तुत्विति जो दुःखकर्के युक्त और आत्माको अप्रसन्न करणेवालाहै उसकों रजो गुण जान जो रजोगुण निरंतर क्रियाकों करवाताहै और देहियोंकों उद्यमदेताहै ५ यत्तुत्विति जो मोहकर्के संयुक्त और अव्यक्त विषयों कर्के युक्तहै और

योयदेषांगुणोदेहेसाकल्येनातिरिच्यते सतदातद्गुणप्रायंतंकरोतिशरीरिणम् २ सत्वंज्ञानंतमोऽज्ञानं रागद्वेषौरजःस्मृतम् एतद्व्यापितदेतेषांसर्वभूताश्रितंवपुः ३ तत्रयत्प्रीतिसंयुक्तंकिंचिदात्मनिलक्षयेत् प्रशांतमिवशुद्धाभंसत्त्वंतदुपधारयेत् ४ यत्तुदुःखसमायुक्तमप्रीतिकरमात्मनः तद्रजोऽप्रतिघंविद्यात्सततो ह्वातिदेहिनाम् ५ यत्तुस्यान्मोहसंयुक्तमव्यक्तंविषयात्मकम् अप्रतर्क्यमविज्ञेयंतमस्तदुपधारयेत् ६ त्रयाणामपिचैतेषांगुणानांयःफलोदयः अग्र्योमध्योजघन्यश्चतंप्रवक्ष्याम्यशेषतः ७ वेदाभ्यासस्तपोज्ञानं शौचमिंद्रियनिग्रहः धर्मक्रियात्मचिन्ताचसात्त्विकंगुणलक्षणम् ८ आरम्भरुचिताऽधैर्यमसत्कार्यपरिग्रहः विषयोपसेवाचाजस्रंराजसंगुणलक्षणम् ९

तर्कसें रहितहै और पदार्थोंके जाननेमे असमर्थहै तिसकों तमोगुण जान ६ त्रयाणामिति सत्व और रज और तम यह जो तीन गुणहैं इनोंका जो फल उत्तम औरमध्यम औरअधम है उसकों विशेषकर्के कहतेहैं ७ वेदाभ्यासइति वेदकाअभ्यासकरणा और पूर्वोक्ततपकरणा और ज्ञान और पवित्रता और इंद्रियोंका रोकना और धर्मोंका करणा और आत्मविचार करणो एह सत्वगुणका फलहै ८आरंभेति कार्योंके आरंभविषे रुचिकरणी और धैर्यता नहोणी और चोरीआदि खोटेकार्योंका करणा और निरंतर विषयोंकीसेवाकरणी एह रजागुणकेफलहैं ९

लोभइति बहुतलोभकरणा औरसौंणा और धैर्यतासें रहितहोणा और क्रूरताकरणी और ईश्वरकी निंदाकरणी और अपणीजीवकाछोडकरदूसरेकीजीवकाकर्के जीविकाकरणी और बहुतयाचना करणी और प्रमादकरणा एहपुरुषाकोंतमोगुणकेलक्षणहैं १० अबइनकी स्थितिमे व्यवस्थाकहतेहैं त्रयेति यह जो पीछे तीनगुणकहेहैं सो तीनोमेहि स्थितहैं अर्थात् जिसजगा एकहै उसजगा दो भीहैं और यहजो तीनोके लक्षणकहेहैं सोभी क्रमकर्के एकमे हि होणेवालेहैं कभी सात्विक कभीराजसादि ११ अब जिसजगा दोनोगुणोंकों दबाकर एक बढगयाहै उसकालक्षणकहतेहैं यत्कर्मेति जिसकर्मकोंकर्केअथवाकर्ता हुआ और करणेकीइच्छावाला हुआ हुआ लज्जाकोंनहि प्राप्तहोताहै सो विद्वानने संपूर्णतमोगुणकेलक्षणजानने १२ येनेति जिसकर्म कर्के पुरुष इसलोक विषे दृढतरप्रसिद्धीकी इच्छाकरताहै और असंपत्तिकेविषे शोककर्ताहै सो रजोगुणकालक्षणजाण

लोभःस्वप्नोऽधृतिःक्रौर्यंनास्तिक्यंभिन्नवृत्तिता । याचिष्णुताप्रमादश्चता मसंगुणलक्षणम् १० त्रयाणामपिचैतेषांगुणानांत्रिषुतिष्ठताम् इदंसामा सिकंज्ञेयंक्रमशोगुणलक्षणम् ११ यत्कर्मकृत्वाकुर्वंश्चकरिष्यंश्चनलज्जते तद्ज्ञेयंविदुषासर्वंतामसंगुणलक्षणम् १२ येनास्मिन्कर्मणालोकेख्याति मिच्छतिपुष्कलाम् यस्तुशोचत्यसंपत्तौतद्विज्ञेयंतुराजसम् १३ यत्सर्वेण च्छतिज्ञातुंयन्नलज्जातिवाचरन् येनतुष्यतिचास्यात्मातत्सत्वगुणलक्षणम् १४ तमसोलक्षणंकामोरजसस्त्वर्थउच्यते सत्वस्यलक्षणंधर्मःश्रैष्ठ्यमेषांयथाक्र मम् १५ येनयांस्तुगुणेनैषांसंसारान्प्रतिपद्यते तत्समासेनवक्ष्यामिसर्व स्यास्ययथाक्रमम् १६ देवत्वंसात्विकायान्तिमनुष्यत्वंचराजसाः तिर्यक्त्वं तामसानित्यमित्येषात्रिविधागतिः १७

१३ यत्सेति जो पुरुष संपूर्णपदार्थोंके जाननेकी इच्छाकर्ताहै और आचरण करताहुआलज्जाकों प्राप्तहोताहै और जिसकर्केइसकाआत्माप्रसन्नहोताहै सो सत्वगुणकालक्षणहै १४ तमोगुणकालक्षणएहहै क्या काम बहुतहोणा और रजोगुणकाएहलक्षणहै क्याअर्थमे इच्छाहोणी और सत्वगुणका एहलक्षणहै क्या धर्महोणाऔर इनोगुणोका एह यथाक्रम श्रेष्ठचकथनकिआहै अर्थात् तमोगुणसें रजोगुण और रजोगुणतेसत्वगुणश्रेष्ठहै १५ येनेति इनोगुणोविषेजिसगुणकर्केजो २ जन्म प्राप्त होताहै सोसंक्षेपकर्के संपूर्णकोयथाक्रमकर्केकहताहुं १६ देवत्वमिति सत्वगुणवालेपुरुष देव योनिको प्राप्तहोतेहैं और रजोगुणवालेपुरुष मनुष्ययोनिको प्राप्तहोतेहैं और तमोगुणवाले पुरुष तिर्यङ्योनिको प्राप्तहोतेहैं इह तीन प्रकारकी तिनोकी गति है १७

त्रिविधेति इनोंतीनोंगुणोंको तीन तीनप्रकारको कर्मविद्याविशेष कर्के गौणगतिहै एक अधम और दूसरीमध्यम और तीसरीउत्तम १८ स्थावराइति वृक्ष और क्रिमि और कीट और मत्स्य और सर्प और कच्छप और पशु और गिदड एहतमोगुणकी अधमगतिहै अर्थात् तमोगुणवाले इनजन्मों कों प्राप्तहोतेहैं १९ हास्तिनइति हस्ती और तुरंग क्या घोडेऔरशूद्र और म्लेछ जो निंदितऔर सिंह व्याघ्र और शूकर इहतमोगुणकीमध्यमगतिहै २० चारणाइति चारण और पक्षि और दंभकेंकरणेवाले पुरुष औरराक्षस और पिशाच इहतमोगुणकीउत्तमगतिहै २१ झल्लाइति झल्लजाति और पहलवान और नट और शस्त्रकर्के जीविकाकरणे वालेपुरुष और जूआखेलनेवाले और मदिरापानकरणेवाले इह अधम रजोगुणकीगतिहै इस जगा प्रथम शब्द श्लोकके क्रमकर्के अधम अर्थका

त्रिविधात्रिविधैषांतुविज्ञेयागौणिकीगतिः अधमामध्यमाग्र्याचकर्मविद्याविशेषतः १८ स्थावराः क्रिमिकीटाश्चमत्स्याःसर्पाःसकच्छपाः पशवश्चसृगालाश्चजघन्यातामसीगतिः १९ हस्तिनश्चतुरङ्गाश्चशूद्राम्लेछाश्चगर्हिताः सिंहव्याघ्रवराहाश्चमध्यमातामसीगतिः २० चारणाश्चसुपर्णाश्चपुरुषाश्चैवदाम्भिकाःरक्षांसिचपिशाचाश्चतामसीषूत्तमागतिः २१ झल्लामल्लानटाश्चैवपुरुषाःशस्त्रवृत्तयःद्यूतपानप्रसक्ताश्चप्रथमाराजसीगतिः २२ राजानः क्षत्रियाश्चैवराज्ञांचैवपुरोहिताः वादयुद्धप्रसक्ताश्चमध्यमाराजसीगतिः २३ गंधर्वागुह्यकायक्षाविबुधानुचराश्चये तथैवाप्सरसःसर्वाराजसीषूत्तमागतिः २४ तापसायतयोविप्रायेचवैमानिकागणाः नक्षत्राणिचदेवाश्चप्रथमासात्विकीगतिः २५ यज्वानऋषयोदेवावेदाज्योतींषिवत्सराः पितरश्चैवसाध्याश्चमध्यमासात्विकीगतिः २६ ब्रह्माविश्वसृजोधर्मोमहानव्यक्तमेवच उत्तमांसात्विकीमेतांगतिमाहुर्मनीषिणः २७ ॥

वाचीहै ऐसें अगेंभी जाणों २२ राजानइति राजा और क्षत्री और राजोंकेपुरोहित और वादकर्केयुद्धकरणेवाले इहमध्यम रजो गुणकीगतिहै २३ गंधर्वाइति गंधर्वऔरगुह्यक और यक्ष और देवतोंकेअनुचर और संपूर्णअप्सरांइहरजोगुणकीउत्तमगतिहै २४ तापसाइति तपको करणेवाले और यतिक्या जितेंद्रियी और ब्राह्मण और विमानोंके ऊपरस्थितहोकरविचरणेवाले जो देवतयोंकेगण और नक्षत्र एह अधम सत्वगुणकी गति है २५ यज्वानइति यज्ञके करणेवाले और ऋषि और देवता और वेद और ग्रहगण और वरसोंके देवता और पितर औरसाध्य एह मध्यम सत्वगुणकीगतिहै २६ ब्रह्मेति ब्रह्माऔर जो दक्षसे आद लेकर्के विश्वकेरचने वाले प्रजापति और धर्म और महत्तत्व और माया इह उत्तम सत्वगुणकीगतिकोंमनीषीकहतेहैं २७

एषइति तीनहैं प्रकाराजिसके ऐसा जो कर्म उसका संपूर्णताकर्के तीन प्रकारका सार्वभौतिक संसार कथन कियाहै २८ तैसें हारीतजीकहतेहैं सर्वेति संपूर्ण जो लशुनादि अभक्ष्यचीजांउनो काभक्षणकरणा और जो नहिभोजनके योग्य चांडालस्पृष्टछोलिआदि उनकाभोजनकरणा और जोगमनकेयोग्य नाहिहैं गुरुपत्नीआदिक उनोकेसाथ गमन करणा और जो नहि यज्ञ कराणेके योग्य शूद्रादि उनकायज्ञकरवाणा और असत्पुरुषोंसें दानलेणा और परस्त्रीकेसाथगमन करणा और अपणे संबधियोंके और परपुरुषोंके धनका हरणा और प्राणियोंकी हिंसाकरणी इह शरीरकृत कर्महैं और कठोरहोणा और झूठकहिना और विवाद करणा और वेदनिंदा करणी इह वाणीकृतकर्महैं और दूसरेको दुःखदेणा और दूसरेके साथ द्रोहकरणा और क्रोधकरणा और लोभकरणा और मोहकरणा और अहंकारकरणा इहमानसकर्महै इहअठारां कर्म

एषसर्वःसमुद्दिष्टस्त्रिप्रकारस्यकर्मणः त्रिविधस्त्रिविधःकृत्स्नःसंसारःसार्वभौतिकः२८तथाचहारीतः। सर्वाभक्ष्यभक्षणमभोज्यभोजनमगम्यागमनमयज्ययाजनमसत्प्रतिग्रहणम् परदाराभिगमनम् स्वपरद्रव्यापहरणम् प्राणिहिंसाचेतिशारीराणि। पारुष्यमनृतंविवादःश्रुतिनिंदाचेतिवाचिकानि परोपतापनम् पराभिद्रोहः क्रोधोलोभोमोहोऽहंकारश्चेतिमानसानि। तदेतान्यष्टादशनैरयाणिकर्म्माणि यस्मिन्यस्मिन्करोतियः सतास्मिंस्तस्मिन्वयसि शारीरवाचिकमानसंप्राप्नोति तथाच सएव यस्यांयस्यामवस्थायांयत्करोतिशुभाशुभम् तस्यांतस्यामवस्थायांतत्तत्फलमवाप्नुयात् १ शरीरेणैवशारीरंवाङ्मयेनतुवाचिकम् मानसंमनसैवायमुपभुंक्तेशुभाशुभम् २ अथविशेषतःकर्म्मविपाकस्तत्रप्रेतत्वहेतुकोविष्णुधर्मोत्तरे ॥ असहिष्णुतयाऽन्यस्यगुणानांकारणंविना महत्पापंसमुत्पन्नं तदस्यप्रेतकारणम् १ प्रेतकारणंभावप्रधानत्वात्प्रेतत्वकारणमित्यर्थः ॥

पुरुषांको नरककेदेणेवालेहैं । यस्मिन्निति । जिस जिस अवस्था विषे पुरुष शरीरकर्के और वाणी कर्के और मन कर्के कर्मांको कर्ताहै उसीउसी अवस्थाविषे शारीर और वाचिक और मानसकर्मांके फलकों प्राप्तहोताहै ॥ तैसेहि हारीतजी कहतेहैं यस्यामिति इस श्लोककी टीका पूर्वकहीहै १ शरीरेति शरीरकर्के कीतें जो शुभ और अशुभ कर्म उनाकों शरीर कर्के भोगता है और वाणी कर्के कीते जो शुभ और अशुभ कर्म उनाकों वाणी कर्के भोक्ताहैं और मन कर्के कीते जो शुभ और अशुभकर्म उनाकोंमनकर्केभोक्ताहै २ ❀ अबपुरुषांको प्रेतयोनियोंविषे प्राप्तकरणेवाला जो कर्मफल सोभीकथनकियाहै विष्णुधर्मोत्तरपुराणविषे असेति कारणकेविनाजो दूसरेके गुणांको न सहारणा क्या निंदाकरणी उसकर्के उत्पन्नहोया जो महापाप सो पुरुषांको प्रेतयोनिमे प्राप्तकर्ताहै १

ब्रह्मस्वेति जो पापी पुरुष ब्राह्मणके धनकों हरलेतेहैं सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्त होतेहैं तैसेहि पर स्त्रियोंविषे रत और अपणेस्वामीकेसाथ द्रोहकरणेवाले २ और मित्रोंके साथद्रोहकरणेवाले और अपणे कर्मसें पतित अर्थात् विमुख जो पुरुषहैं सो निर्जलदेशविषे प्रेतयोनिकोंप्राप्त होतेहैं ३ सो कहाहै अग्निपुराणविषे मातरमिति ॥ माता और पिता और वृद्ध औरअपनेकुटुंबीऔर साधु इनां कों लोभकर्के जो पुरुषत्यागताहै सो प्रेतयोनिकोंप्राप्तहोताहै १ कुज्योतिरिति कुत्सितज्योतिषी और कुत्सितवैद्य और कुत्सितज्ञानी और कुत्सितदेशमे रहिणे वाला अर्थात् जिसमे वेदाचार नहि उसजगा रहिणे वाला अथवा कुवुद्धिदेणे वाले कानामकुदेशकहै और शूद्रोके ऊपरकृपाकरणे वाला इसमै एहअभिप्रायहै कि शूद्रपरकृपाकरणेका कोई दोष नहि परंतु सज्जनके समीप उसको त्याग कर शूद्रपर अनुग्रह करे तद दोषहै इह संपूर्ण प्रेतयोनिकों प्राप्तहोतेहैं २

ब्रह्मस्वहारिणश्चैतेपापाःप्रेतत्वमागताः परदाररताःकेचित्स्वामिद्रोहरताः
परे २ मित्रद्रोहरताःकेचिद्देशेऽस्मिन्भृशदारुणे स्वकर्म्मविच्युताःसर्वेजायं
तेप्रेतयोनिषु ३ अग्निपुराणे मातरंपितरंवृद्धंज्ञातिंसाधुजनंतथा लोभात्त्य
जतियस्त्वेतान्सप्रेतोजायतेनरः १ कुज्योतिःकुत्सितोवैद्यः कुज्ञानीचकुदे
शिकः शूद्रानुग्रहकर्त्ताचसप्रेतो- २ निंदकोद्विजदेवानांगीतवाद्यरतःसदा
वृद्धंवालंगुरुंविप्रान्योवमन्यभुनक्तिवै कन्यांददातिशुल्केनस० ३ न्यासा
पहर्त्तामित्रध्रुक्परपाकरतःसदा निर्दोषांसुहृदांभार्यामृतुकालेनयातियः
नवहेतयदातेषांसप्रेतो० ४ हस्त्यश्वरथयानानिमृतशय्यासनानिच
मृगाजिनंतुगृह्णाति अनापदितुयोद्विजः ५

निंदकइति जो पुरुष ब्राह्मण और देवताकी निंदा कर्ताहै और गीतोके गानेमै और वाजेयोंके वजानेमे सदा युक्तहै और वृद्ध और वालक और गुरु और ब्राह्मण इनका अपमानकर्के अर्थात् इनकों न देकर भोजन कर्ताहै और मोल लेकर्के कन्याकोंदेताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ३ न्यासेति जो पुरुष अमानको हर्ताहै और मित्रोंकेसाथ द्रोह कर्ताहै और जो सर्वदाकाल परपाकविषेयुक्तहै अर्थात् दूसरेकीपक्कीहुई रोटीकों खाताहै और दो षतेरहित जो सुंदर अपनी स्त्रीउसकों जो ऋतुकाल विषे नहि प्राप्तहोताहै जो यह पूर्वोक्तचारहैं सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ४ हस्तीति हस्ती और घोडा और रथ और जो वाहनहै और मृतपुरुषकी शय्या और आसन और मृगचर्म इनाकों आप दाके विना जो ब्राह्मण लेताहै ५

तथेति तैसेंहि अद्धावछावाहरानिकसेआहै जिसका ऐसीगौकों और सहितवनपर्वतोंके पृथिवीकों लेताहै और कुरुक्षेत्रविषे और चांडालसें और पतितपुरुषसेंदानलेताहै ६ और मासिकश्राद्धविषे और नवश्राद्धविषे भोजनकर्ताहै सो प्रेतहोताहै और भूमि पृथ्वी और कन्या और अन्न इनकों जोहरताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ७ अव पिशाच योनिमे प्राप्तकरणेवाला जो कर्म सो पार्वती और शिवजीके संवादकर्केकहतेहैं अपहृत्येति और जो पुरुष किसीकेसंपूर्णधनकों और तैसेंहि देवतयोंके धनकों हरलेताहै और तैसेंहि दानकों देकर हरलेताहै और फेरदेताहै सोभी पिशाचयोनिकों प्राप्तहोताहै १ योनीति हेदेवि जो पुरुष जिसजगाकन्या नहि देणे योग्य उसजगा कन्या दानकों करवाताहै और अपणे स्वामीके साथ द्रोहकर्ताहै सो

तथोभयमुखींदोग्ध्रींसशैलांमेदिनींद्विज कुरुक्षेत्रेचयद्दानंचांडालात्पतिता तथा६ मासिकेपिनवश्राद्धेभुंजन्प्रेतोनरोभृशम् भूमिकन्यान्नहर्त्ताचसप्रेतो जायतेभृशम् ७ पिशाचयोनिहेतुकमुमामहेश्वरसंवादे ॐ अपहृत्यचसर्वस्वं देवस्वंचतथापरम् दत्तापहारदानाच्चपैशाच्यंयातिवैनरः १ योनिकार्थेचयो देविअहितेनतुकारयेत् सोऽपियातिपिशाचत्वंस्वामिद्रोहेणमानवः २ यो निकार्थ्यं कन्यादानादि योवृत्तीश्वरःअहितेन स्वाम्यनिष्टेनकारयेदित्यर्थः॥ स्वामिद्रव्यंगृहीत्वातुनचयोऽन्नंददातिच आत्मनःपोषकोमूढःपिशाचत्वंस गच्छति ३ ब्रह्मराक्षसत्वहेतुकंगारुडादौ ॐ माठाधिपत्यंयोदेविकुरुतेमदमो हितः विनाशयेन्मठद्रव्यंनिर्माल्यंयश्चभक्षति १ परस्त्रियोपितंहृत्वाब्रह्म स्वमपहृत्यच अरण्येनिर्जलेदेशेभवतिब्रह्मराक्षसः २ ॥

भी पिशाचयोनिकों प्राप्तहोताहै २ स्वामीति जो पुरुष अपणे स्वामीसें धर्मार्थके वास्ते धनलेकर अभ्यागतोंकों अन्न नहिंदेताहै और अपणे आपकोंहिपालताहै सोभी पिशाच योनिकों प्राप्तहोताहै ३ अव ब्रह्मराक्षसयोनिकों प्राप्तकरणेवाला जो कर्म गरुडपुराण आदिविषे कहाहै सोकहतेहैं माठेति ॐ जोपुरुष मदकर्के मोहकोंप्राप्तहुआहुआ देवताके मंदिरकी महंती स्वीकार कर्ताहै और तिस देवताके धनका नाशकर्ताहै और तिसीका नैवेद्य आपहि भक्षण कर्ताहै १ परस्त्रेति और परस्त्री और ब्राह्मणके धनकों चुरालेताहै सो वनविषे जलसेरहित जो देशउस विषे ब्रह्मराक्षसयोनिकों प्राप्तहोताहै इसमें यहव्यवस्थाहै कि इनपांचोंदोषोंसें एक दोषवाला अथवा दो अथवा तीनवालाहै तौभी ब्रह्मराक्षसयोनिकों प्राप्तहोताहै २

अधर्ममिति जो पुरुष मोहकर्के युक्त हुएहुए अधर्मकोंधर्मकहतेहैं और परस्त्रियोंकोंचोरीकर्के अथवा
बलकर्के हरलेतेहैं सोभी वनविषे जलसें रहित जो देशउसविषें ब्रह्मराक्षस योनिकों प्राप्तहोतेहैं ३
और कहतेहैं मनुजी संयोगमिति और जो पुरुष पतित पुरुषोंके साथ संयोग कर्त्तेहैं और परस्त्री
कों हरलेतेहैं और ब्राह्मणके धनकोंहरलेतेहैं सोभी ब्रह्मराक्षसयोनिकों प्राप्तहोतेहैं १ गुरुमिति जो
पुरुष गुरुयोंकों तुंकर्के और हुंकर्केबोलतेहैं और विवादकर्केब्राह्मणकोंजीततेहैं सोभी वनविषेजल
सें रहित जो देशउसविषे ब्रह्मराक्षसहोतेहैं २ आचार्यमिति आचार्य्य और ऋत्विक् और तपस्वी
और मुनि इनोंका जो पुरुष अवमानकर्तेहैं सोभी राक्षसयोनिकोंप्राप्तहोतेहैं जो संस्कार करावे सो
आचार्य्य और जो यजमानकेअर्थ हवनकरे सो ऋत्विक्है ३ अबनरकविषे होनेवाला जो देह

अधर्मंधर्ममित्याहुर्येतुमोहवशंगताः हर्त्तारःपरदाराणांचौर्येणवलतोपिवा ३
अरण्येनिर्जलेदेशेभवन्तिब्रह्मराक्षसाइतिमनुः संयोगंपतितैःकृत्वापरस्यैव
चयोषितम् अपहृत्यचविप्रस्वंभवंतिब्रह्मराक्षसाः १ गुरुंतुंकृत्यहुंकृत्यवि
प्रंनिर्जित्यवादतः अरण्येनिर्जलेदेशेभवंति- २ आचार्यमृत्विजश्चैवगुरुंचै
वतपस्विनम् मुनीनप्यवमन्यंतेतेभवंतीहराक्षसाः ३ नारकीयदेहहेतुकं
ब्रह्मपुराणे। कृतघ्नस्तुमृतोविप्रोयमस्यविषयंगतः यमस्यविन्दयैःक्रूरैर्वधंप्रा
प्नोतिदारुणम् १ यातनाःप्राप्यतत्रस्थास्ततोवह्वीश्चसद्विजः ततोगतःकृत
घ्नश्चसंसारंप्रतिपद्यते२ अथाधमयोनित्वहेतुकंवामनपुराणे। बुभुक्षितेषुदेवे
षुयएकोऽश्नातिमानवः श्वयोनिंससमासाद्यचंडालोजायतेनरः १ वेदोक्तंयः
परित्यज्यधर्ममन्यंसमाचरेत् दशवर्षसहस्राणिश्वयोनौजायतेध्रुवम् २

उसकोप्राप्तकरणेवालाजो कर्महै सो ब्रह्मपुराणविषें कहाहै कृतघ्नइति जो ब्राह्मणकृतघ्नहै सो मरकर्कें
यमके मंदिरकोंप्राप्तहोताहै फेर सो यमकेजो दूत बडेभयकेदेणेवालेउनोकर्केदारुणजो वध उसकों
प्राप्तहोताहै विनयनाम सेवककाभीहै १ येति फेरउसजगाविषे बहुत जो यातनाउनकोंभोगताहै फेर
उसजगासे छिडकर्कें इस संसारविषे उत्पन्नहोताहै २ अबअधमयोनियांकोंप्राप्तकरणेवाला जोकर्म
वामनपुराणविषेहै सोकहतेहैं ॥ बुभ्विति जो पुरुष देवताको अन्नअर्पणनाकर्के आपएकलाहि
भक्षणकर्त्ताहै सो प्रथम श्वानयोनिकों भोगकर फेर चांडालयोनिकों प्राप्तहोताहै १ वेदोक्तमिति
जो पुरुष वेदोक्तधर्मकोंत्यागकरविरुद्धधर्मकों कर्ताहै सो दशहजारवर्षकुत्तेकोयोनिकोंप्राप्तहोताहै २

वेदेति जो पुरुष वेदोंको और ब्राह्मणोंकी निंदाकर्तेहैं सो इसजन्ममें शूद्रहोतेहैं और मरकर्के श्वानयोनिकोंप्राप्तहोतेहैं ३ पद्मपुराणविषे कहाहै लभेदिति हेराजन् जो ब्राह्मण द्रव्यलेकर मंदिरको पूजाकर्ताहै सोचांडाल संज्ञकयोनिको प्राप्तहोताहै और जो मुएहोए पुरुषोंके एकादशदिनविषे भोजनकर्ताहै सोभी श्वानयोनिकों प्राप्तहोताहै १ यदीति जो गुरु पुत्रके तुल्य जो शिष्य उसको कारणके विना अपनी इच्छाकर्के त्यागताहै सोभी हिंस्रअर्थात् व्याघ्रादियोनिकों प्राप्तहोताहै २ पितरामिति जो पुत्र पिता और माताका अपमानकर्ताहै सो मरकर्के पहिले गर्दभयोनिकों प्राप्तहोताहै उसकों भोगकर फेर मनुष्ययोनिकों प्राप्त होताहै इत्थे मनुष्ययोनिभी नीचादिजानणी ३ ज्येष्ठामिति जो पुरुष ज्येष्ठभ्राताकों पिताके समाननहि मानताहै वेदमे लिखाहै (ज्येष्ठभ्रातापितृसमइति) सो मरकर्के क्रौंचयोनिकों

वेदार्थनिंदकायेचयेचब्राह्मणनिंदकाः इहजन्मनिशूद्रास्तेमृताःश्वानोभवंतिहीति ३ ब्रह्मपुराणे लभेद्देवलकोराजन्योनिंचांडालसंज्ञिताम् मृतस्यैकादशाहेतुभुंजन्श्वानोभिजायते १ यदिपुत्रसमंशिष्यंगुरुर्जह्यादकारणम् आत्मनःकामचारेणसोऽपिहिंस्रःप्रजायते हिंस्रोवृकादिः २ पितरंमातरंचैवयस्तुपुत्रोऽवमन्यते ॥ सोऽपिविप्रोमृतोजंतुःपूर्वंजायतगर्दभः गर्दभत्वंतुसंप्राप्यततोजायेतमानवः ३ ज्येष्ठंपितृसमंवापिभ्रातरंयोऽवमन्यते सोऽपिमृत्युवशंप्राप्यक्रौंचयोनौप्रजायते ४ पद्मपुराणे ॥ अयाज्ययाजकश्चैवयाज्यानांचविवर्जकः विरक्तोविष्णुविद्यासुसप्रेतोजायतेनरः १ ॥ विष्णुविद्या भगवद्गीताभागवताद्याः ॥ सामान्यदक्षिणांलब्ध्वागृह्णात्येकोविमोहितः नास्तिक्यभावनिरतःसप्रेतोजायतेनरः ॥ २ ॥ स्कान्दीयचमत्कारखण्डे योभवेन्मानवःक्षुद्रस्तथापैशुन्यकारकः ब्राह्मणान्वयसंभूतोवृथामांसाशकश्चयः प्राणिनांहिंसकोनित्यं सप्रेतोजायतेनरः १

प्राप्तहोताहै ४ और पद्मपुराणविषेकहाहै अयाज्येति जो नहि यज्ञकराणेकेलायक उनकों यज्ञ करवाणे वाला और जो यज्ञके अधिकारीहैं उनोकात्यागकरणेवाला और जो विष्णुविद्याविषे अर्थात् भगवद्गीतादिमे विरक्तहै सो पुरुषप्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै १ सामान्येति जो ब्राह्मण मोहकोंप्राप्तहुया २ सभकी सांझी दक्षिणाकोंएकलाहि ग्रहण करताहै अर्थात् औरोंको नहिदेता और जो नास्तिकहै अर्थात् ईश्वरकी निंदाकरताहै सोभी प्रेतयोनिकोंप्राप्तहोताहै २ और कहाहै स्कंदपुराणकेचमत्कार खंडविषे। यइति जो पुरुष खोटे काम क्याचोरीआदिकर्ताहै और चुगली कर्ताहै और ब्राह्मणोंकेवंशविषे उत्पन्नहोकर्केवृथाहिक्या देवताकेनिमित्तनहि अपने स्वादवास्ते मांसकोंभक्षणकर्ताहै और नित्यहि प्राणियोंकी हिंसाकर्ताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै १

अकृत्वेति और देवकार्य जो बलिवैश्वविधि उसकों और तैसेंहि पितरोंका जो तर्पण उसकोंनहि करके और अपणे संबंधि और नौकरोंकोंनहि देकर जो पुरुष भोजनकर्त्ताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै २ परेति जो पुरुषपरस्त्रियोंविषे प्रीतिकर्ताहै और दूसरेकें धनकोंहरलेताहै और दूसरे की निंदाकर्कें प्रसन्नहोताहै सोभी प्रेतयोनिकोंप्राप्तहोताहै ३ कन्यामिति जो पुरुषधनकेलोभकर्कें वृद्धकों और नीचकों और खोटाहै रूप जिसका और खोटाहै स्वभाव जिसका उसकों कन्या देताहै सोभी प्रेतयोनिको प्राप्तहोताहै ४ देवेति जो पुरुष देवता और स्त्री और गुरु इनोके धनकों और ब्राह्मणों विषे जो श्रेष्ठ उनके धनको लेकर नहि देताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहो

वृथेति देवताद्यभ्यर्चनंविनारागतोमांसाशी) अकृत्वादेवकार्य्यंयत्तथाचपितृ तर्प्पणम् योऽश्नातिभृत्यवर्गेभ्योऽदत्वाप्रेतःसजायते २ परदाररतश्चैवपर वित्तापहारकः परापवादसंतुष्टःसप्रेतो- ३ कन्यांयच्छतिवृद्धायनीचायधन लिप्सया कुरूपायकुशीलायसप्रेतो- ४ देवस्त्रीगुरुवित्तानि गृहीत्वायोनय च्छति विशेषाद्ब्राह्मणेन्द्राणां सप्रेतो-५ शास्त्रकर्ताग्रन्थकर्त्तायद्यपिस्यात्षडं गवित् कुलदेशोचितंकर्म्मयस्त्यक्त्वान्यत्समाचरेत् कामाद्वायदिवामोहात् सप्रेतो- ६ उच्छिष्टस्यविशेषेणभोजनंचकरोतियः अंतरिक्षेमृतोयस्तुस प्रेतो- ७ विषाग्निजलमृत्यूनां तथाचैवात्मघातिनाम् प्रेतत्वंजायतेतेनस त्यमेवनसंशयइति ८

ताहै ५ शास्त्रेति जो पुरुष शास्त्रोके करणे वालाहै और ग्रंथोंके करणे वालाहै और षडंगवेदकें जानणे वालाभीहै परंतु कामकर्कें अथवा मोहकर्कें कुल और देशके उचित कर्मकों त्यागकर्कें औरों कार्योंकों कर्त्ताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ६ उच्छिष्टेति उच्छिष्ट पदार्थकों जो पुरुष विशेषकर्कें भक्षण कर्त्ताहै और जो छत्तके ऊपर मृत्युकों प्राप्तहोताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ७ विषेति और जो पुरुष विषकर्कें मरताहै और जो अग्निविषे मर्त्ताहै और जो जलविषे डूबकर मर्ताहै और जो अपने आपकाहि घात कर्त्ताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै इसमें संशय नहिहै ८

और कहाहै गरुडपुराणविषें चंद्रार्केति चंद्र और सूर्यके ग्रहणविषें जो पुरुष भोजन करताहै सो हाथीकी योनिकों प्राप्त होताहै इसमे एहअभिप्रायहै कि ग्रहण विषे गजच्छायाका योगहै इ. सते तैसाहि फलहोआ १ और जो ब्राह्मण नित्य पंचमहायज्ञोंको नाकरके अन्नकों भक्षणकरताहै सो ग्राम शूकरकी योनिकों प्राप्तहोताहै और कच्चेमांसके भक्षणकरणेवाले व्याघ्रयोनिकों प्राप्त होताहै २ और किहाहै वायु संहिताविषें खरइति और वहुत यज्ञकराणेसें अर्थात् विचारके विना यज्ञकराणेसें खरयोनिकों प्राप्त होताहै और विना निमंत्रणके भोजनकरणेवाला ब्राह्मण काक योनिकोंप्राप्तहोताहै और जो पुरुष विनापरीक्षाकीते भोजनकरताहै सो निर्जन वनविषें वानरयोनिकोंप्राप्तहोताहै १ अविद्यामिति और जो अविद्यापढाताहै अर्थात् जिसके पड़ेसें पुरुष विप

गरुडपुराणे चंद्रार्कग्रहणेभोक्ताजायतेकुंजरोनरः विप्रःपंचमहायज्ञानकृत्वा योऽन्नमश्नुते विड्वराहोभवेन्नित्यंक्रव्याशीव्याघ्रएवच २ वायुसंहितायाम् खरोवैवहुयाजित्वात्काकोनिर्मंत्रभोजनात् अपरीक्षितभोजीस्यात्वानरोविजनेवने १ अविद्यांयःप्रयच्छेत्वलीवर्दोभवेन्नुसः२ उमामहेश्वरसंवादे। अग्निहोत्रंभवेद्यस्यनकुर्यात्तस्यरक्षणम् पर्वातिक्रमकारीतुमृगत्वंयातिब्राह्मणः १ वेदोपजीविकाःपापाःस्त्रीलोलास्सततंचये भवंतिचेहकाकाःस्युश्चिरंविड्भुजएवच २ पायसंकृसरंचैवहवींषिमधुराणिच अदत्वाचाग्निविप्रेभ्यः प्राशनाद्भुजगोभवेत् ३

योंमें सक्त होवे सो वलिवर्द अर्थात् बैल वनताहै १ अब और कर्मविपाककहतेहैं जो किहाहै पार्वती और शिवजीके संवाद विषें अग्निहोत्रमिति जिसब्राह्मणके गृहविषें अग्निहोत्र होताहै उसअग्निकी रक्षा न करे और पर्वोविषें न हवनकरे सो ब्राह्मण मृगयोनिकोंप्राप्तहोताहै १ वेदेति और जो वेदकरकें जीवका करणे वाले पापीहैं और जो निरंतर स्त्रीयांविषें आसक्तहैं सो इस संसारविषें चिरकाल विष्टाभक्षणकरणे वाली काकयोनिकों प्राप्तहोतेहैं २ पायसमिति और जो तस्मै और खिचडी और हवनवस्तु घृतादि और मिष्ठा इनांकाभक्षण ब्राह्मण और अग्निकोंना देकर करताहै सो सर्प योनिकों प्राप्तहोताहै ३

नेंति और जो पुरुष स्वामीके कार्य्यतुं नहि करतेहैं और खोटेहैं चित्तजिनके और जो वेतन अर्थात् तलवलैतेहैं सो पृथिवीके उपरविचरणे वालियां जो लता अर्थात् जो वृक्षोंपर नहि चडसकदीयां उनकीयोनिकों प्राप्तहोंतेहैं अथवा भूलता नाम वृक्षविशेषकाहै ४ ॥ अब और कर्म विपाक कहतेहैं जो किहाहै वृद्धगौत्तमजीने मौल्यादिति जो पुरुष वेदको मूलकरकेवेचताहै सो व्याघ्रयोनिकों प्राप्तहोताहै और जो पुरुष विनापढे वेद पढाताहै सोगिद्दडयोनिकों प्राप्तहोताहै १ और जोपुरुषशूद्रतेंविद्यापडताहै सोचांडालयोनिकों प्राप्तहोताहै इसमें असाअभिप्रायहै किजिसस्थानविषें ब्राह्मण वा क्षत्रीपाठकहोवे उसजगाशूद्रसे नहिपडना

नसाधयंतिकार्याणिप्रभूणांयेविचेतसः भृत्यावेतनभोक्तारोजायन्तेभूलताहि तेइति ४ अथवृद्धगौत्तमः । मौल्याद्वेदोपदेष्टाचव्याघ्रोभवतिमानवः जंवुको जायतेजन्तुरननुज्ञातपाठकः १ शूद्रात्पठतिचांडालोब्रह्मद्रव्योपजीविकः अथकीटादियोनिहेतुकोवामनपुराणे ॥ चांडालादंत्यजाद्वापिप्रतिगृह्णा तिदक्षिणाम् याचकोयाजमानस्तुसःस्याद्दुःस्थलकीटकः ॥ १ ॥

चाहिए तिनां विनाशूद्रसेभी पढनेका दोषनाहि और जोब्राह्मणोंके द्रव्यकरके (अर्थात्तिसकें पुछेविना) जीविकाकरताहै सोभीचांडालयोनिकों प्राप्तहोताहै ❀ अबकीटयोनिमें प्राप्तकरणे वालाजोकर्म्मविपाकसो कहतेहैं जोकहाहै वामनपुराणविषे चांडालादिति जो पुरुष चांडालसें और म्लेच्छसें दक्षिणांको लेताहै और जो तिनसे द्विजहोकर याचनाकरताहै इसजगा याचना नाम दानयाचनाकाहै किसे और निमित्त क्या उपकारार्थ स्थानादिवनानेमें तिनसे भी लैणेकादोष नहि और जो तिनसें यज्ञकरवाताहै सोखोटेस्थलकेविषें अर्थात् मलविषे कीट योनिकों प्राप्तहोताहै १

और किहाहै ब्रह्मपुराणविषें आशेति जोपुरुष किसेकी लगीहोई आशाकोदूरकरताहै सो कृमि योनिकों प्राप्तहोताहै और जो पुरुष विश्वासहर्ताहै क्यामैं केवल तुम्हाराहिहां ऐसा कहकर जो किसीका धन लेलेताहै सोदुर्मति मीन क्या मछयोनिकों प्राप्तहोताहै इसमें असाअभिप्रायहै कि जैसे विश्वासकर्के उसने परधनकोग्रहणकीताहै तैसेहितिसकों विश्वासदेकर मत्स्यवेधीमारेगा १ उपेति और जोपुरुष विवाहकेविषें और यज्ञकेविषें और दानकेविषे और उत्सवोंकेविषे मोह करके विघ्नकोंकरताहै सो मृतहुया २ कोडयोंकी योनिकोंप्राप्तहोताहै २ और किहाहै गरुड पुराणविषें कूटेति जोपुरुष झूठीउगाहीदेनेवालेपापीहैंसो और विष्टाकेकीडेहोकर फेरसर्पहोतेहैं फेरउसकेपिच्छेपिशाचयोनिकों प्राप्तहोतेहैं १ और जोपुरुष गुरुयोंके साथ और मित्रोंकेसाथद्रो

ब्रह्मपुराणे आशापहर्त्तातुनरःकृमियोनौप्रजायते विश्वासहर्त्तातुनरोमीनो जायतदुर्म्मतिः १ उपस्थितेविवाहेतुयज्ञदानेमहोत्सवे मोहात्करोतियोवि घ्नंसमृतोजायतेकृमिः २ गरुडपुराणे । कूटसाक्ष्यप्रदाःपापाअमेध्यकृमय श्चिरं भूत्वाभवंतिसर्पास्तेपिशाचास्तदनंतरम् १ गुरुमित्रद्रुहःपापायेच स्वामिद्रुहोजनाःद्विजाशिष्यद्रुहश्चैवकृतघ्नानास्तिकास्तथा २ त्यागिनोवां धवानांचत्यागिनःशरणार्थिनाम् अमेध्यकृमयःसर्वेमृगव्याधाभवन्तिच ३ द्विजस्त्वकशफानांचविक्रयाज्जायतेमृगः मत्सरीविट्कृमिश्चैवअवज्ञाका र्य्यथकृमिरिति ४

हकरतेहैं और अपनेस्वामीकेसाथ और ब्राह्मणोंकेसाथ और शिष्योंकेसाथ द्रोहकरतेहैं और कीतेहोए उपकारकों नहि जानतेहैं और ईश्वरकीनिंदाकर्तेहैं २ त्यागिनइति और जो बान्धवों कात्यागकरतेहैं और जोशरणागतहोएहोएपुरुषकोंत्यागतेहैं सो अमेध्य क्याविष्टाविषें कृमिहोतेहैं फेरमृगोंके मारणेवाले व्याधहोतेहैं अथवा जो मृगोंके मारणेवालेहैं सो विष्टाके कीडेहोतेहैं ३ द्विजइति और जो ब्राह्मण और क्षत्रीघोडयोंकों वेचताहै सो मृगयोनिकों प्राप्तहोताहै और जो पुरुष किसेके ऐश्वर्य्यको देखकर मनमें क्रोधकर्ताहै सो विष्टाका कीडाहोताहै और जो पुरुष अवज्ञा क्या भले पुरुषका अपराधकरताहै सो सामान्यकीडाहोताहै ४

अब जो और कर्म्मविपाक गौत्तमजीनेकिहाहै तिसको कहतेहैं अनृतेति और जो पुरुष झूठकहणे वालाहै सो उल्वण क्या खोटेरूपवाला होताहै फेर संलग्नवाक्होताहै अर्थात् थथला होताहै ॥ और स्त्रीको त्यागणेवाला जलोदररोगकर्केयुक्तहोताहै ॥ इसमे एहअभिप्रायहै कि दुष्ट स्त्रीके त्यागका दोषनहि जेकरनिर्दोषकोत्यागे उसका एहकर्म्मविपाकहै ॥ और झूठीडगाहीदेणे वाला पादरोगकर्के युक्तहोताहै इसीकाअर्थकहतेहैं उच्छेति शिथिलहै जंघा और चरण जिसके ऐसाहोताहै ॥ और जो पुरुष विवाह विषे विघ्नकरताहै सो कट्टे गएहैं ओठ जिसके ऐसाहोताहै इसमै एह अभिप्रायहै कि विवाहमे उपहासकरतेहैं और छिन्नोष्ठको उपहासकीहानिहै ॥ और जो पुरुष गुरुआदिकोंमुष्टिकर्के प्रहारकीइच्छाकरताहै अर्थात् मुक्कामारणेको उद्यतहोताहै सोकटेगयेहैं

कर्म्मविपाकविशेषोगौत्तमीययथा ॥ अनृतवागुल्वणोमुहुर्मुहुः संलग्नवाक् ॥
दारत्यागीजलोदरी ॥ कूटसाक्षीश्लीपदीः॰उच्छूनजंघाचरणः ॥ विवाहवि
घ्नकर्त्ताछिन्नोष्ठः॰अवगूरणः छिन्नहस्तः॰ अनृतवाक्पुरुषः उल्वणोविकृत
रूपः मुहुरितिसागलजिव्हश्चभवतीति फलद्वयनिर्देशः ॥ श्लीपदं पाद
शोफस्तद्वान्कूटसाक्षीभवति उच्छूनेति शिथिलजंघादिकश्चेत्यपिफलद्व
यम् अवगूरणः गुर्वादिभ्योमुष्ट्यादिप्रहारायसमुद्यतइत्यर्थः ॥ मातृघ्नोऽन्धः॰
स्नुषागामीवालवृकूणः॰ क्वचित्तुवातवृकूणइतिपाठःतत्रवातेनवृकूणंलिं
गंयस्यसइत्यर्थः अंतपदलोपीसमासःयद्वावलवृकूणःवलंवृकूणंयस्यसइत्यर्थः

हाथजिसके ऐसाहोताहै ॥ पूर्वोक्त काहि अर्थमूलविषे स्पष्टहीताहै अनृतेति इहांपाप निर्देशएकहै और फल निर्देश दोहैं और तैसेहि कूटसाक्षीके स्थानाविषे जानणा अव गूरणका अर्थ-कहतेहैं गुर्वेति और जो पुरुष माताको हत करताहै सो अंधाहोताहै इहां माताने पुत्रकोप्रकाश कीया सो तिसके मारणे वाला प्रकाशहीनहोआ एह अभिप्रायहै और पुत्रकीस्त्रीके साथ भोगकर्त्ताहै सोवालवृकूणक्या छिन्नलिङ्ग होताहै और किसेजगा वातवृकूणा ऐसापाठहै तिसजगावात कर्के कट्टयागयाहै लिंगजिसका एह अर्थहै इहां अंतपदलोपीसमासहै अथवा वलवृकूण ऐसापाठहै कट्टयागयाहै वलजिसका ऐसाहोताहै क्या नपुंसकहोताहै

चेति श्रौर जो पुरुष चुरस्तेमें विष्टा श्रौर मूत्रसुटताहै सो मूत्रकृच्छ्रीक्या दखौंतरेरोगकर्के युक्तहो ताहै॥ श्रौर जो कन्याके साथभोगकर्ताहै सो व्यंडक्या छिन्नवृषणहोताहै॥ श्रौर जो दूसरे पुरुष की ईर्ष्या क्या द्वेषकर्ताहै सो मछरहोताहै॥ श्रौर जो मातापिताके साथ विवादकरताहै सो मिर गी रोगकर्के युक्तहोताहै॥ श्रौर जो श्रमानतकोचुरानाहै सो संततिसें रहित होताहै॥ श्रौर जो रत्नोंको चुराताहै सो श्रत्यंत दरिद्रीहोताहै॥ श्रौर जो विद्याकोंवेचताहै सो मूर्खहोताहै॥ श्रौर जोवेदकोंवेचताहै सोगैंडाक्यामृगविशेषहोताहै इसमैंएहश्रभिप्रायहै किजिसेवेदोंकेश्रंगोंकोतिसने श्रापत्यागियाहैतैसेतिसके श्रंगोंकोंश्रवश्यकरकेलोकत्यागकरावेंगे श्रौर जो वहुतमांगनेवालाहै सो जलविषेंरहणेवाला पक्षीहोताहै॥ श्रौर जो यज्ञकरवाणेके योग्यनहिंहै उसको यज्ञकराताहै सो सूकरहोताहै॥ श्रौर जो पुरुष विनाकहनेसें भोजनखानेंकों चलाजाताहै सो काकहोताहै॥ एह

चतुष्पथेविण्मूत्रविसर्जनेमूत्रकृच्छ्री०कन्यादूषकोंऽषण्डः०ईर्ष्यालुर्मशकः० पित्रोर्विवदमानोऽपस्मारी ० न्यासापहार्यनपत्यः ० रत्नापहार्य्यत्यन्त दरिद्रः० विद्याविक्रयीपुरुषमृगः पुरुषाकारोमृगः मूढइत्यर्थः॥ वेदाविक्र यीद्वीपी ० वहुयाचकोजलप्लवः ० श्रयाज्ययाजकोवराहः ० श्रनिमंत्रित भोजीवायसः ० मिष्टैकभोजीवानरः ० यतस्ततोऽश्नन्मार्जारः० कक्षवन दहनात् खद्योतः० दारकाचार्य्योमुखविगंधिः०दारकाचार्य्यः कन्यापाठकः पर्युषितभोजीक्रिमिः० श्रदत्तादायीवलीवर्द्दः ० मत्सरीभ्रमरः०

नारदपुराणका वाक्यहै श्रौर पीछे जो कहचुकेहैं सो वायु संहिताकावचनथा इसवास्ते पुनरु क्तिनाहिजाननी॥ श्रौर जोपुरुष मिष्टान्न इकलाहि भक्षणकरताहै सो वानर होताहै॥ श्रौर जो सभजगामें भोजनकरताहै सोविल्लाहोताहै॥ श्रौर जो पुरुषकक्षवनकोंजालणेवालाहै सोटिटाणा होताहै॥ श्रौर जोकन्याकों श्रथवा वालकांकोंविद्यासखालताहै सोदुर्गंधियुक्तमुखवालाहोताहै॥ इसमैंएहश्रभिप्रायहै कि परमार्थवुद्धिसें वालकोंको न भढावे तददोषहै श्रन्यथानहि श्रौर जो पुरुष देहाभोजनकरताहै सोजन्मांतरविषें कीडाहोताहै॥ श्रौर जो विनादिते वलादिकरके वस्तुको उठालेताहै सो जन्मांतरविषें वैलहोताहै॥ श्रौर जो दूसरेकी उत्कृष्टताकोनाहिं सहारता सो भ्रमरहोताहै॥

अग्नीति और हवनकी अग्निकाजो पुरुष नाशकरताहै सो मंडलकुष्ठी क्या सारेशरीरमे कुष्टवाला होताहै मंडलकुष्ट उसकोकहतेहैं किजिसकरकेमंडलाकार चिन्ह देहविषे रक्तके होजाए ॥ और जो शूद्रकों संस्कारकराताहै सोनीचहोताहै ॥ और गौकेचुराणेवालासर्प्पहोताहै ॥ और घृत और तैलके चुराणेवाला क्षयीरोगकरके युक्तहोताहै ॥ और अन्नके चुराणेवाला अजीर्णरोगकरके युक्त होताहै और ज्ञानक्या पुस्तकनिसके चुराणेवाला मूर्खहोताहै और चांडालकी और पुष्कसकी स्त्रीकेसाथ गमनकरणेवाला अजगर क्या वडासर्पहोताहै ॥ और संन्यासीकीस्त्रीके साथ गमन करणेवाला मरु क्या निर्जल देशमे पिशाच होताहै ॥ और शूद्रीके साथ गमन करणे वाला वडाळंवाकीडाहोताहै ॥ और अपणी जातिकी स्त्रीके साथ गमन करणे वाला दरिद्रीहोताहै और राजाकी स्त्रीकेसाथ गमनकरणेवाला नपुंसकहोताहै और गौकेसाथ गमन करणेवाला दुर्दुरहोताहै और जलके चुराणेवाला मत्स्यहोताहै ॥ और दूधकेचुराणेवाला वगुलाहोताहै ॥ और

अग्न्युत्सादीमंडलकुष्ठी० शूद्राचार्यः श्वपाकः० गोहर्त्तासर्प्पः० स्नेहापहा रीक्षयी० अन्नापहार्य्यजीर्णी० ज्ञानापहारीमूर्खः। ज्ञानपदेनपुस्तकंगृह्यते चांडालीपुष्कसीगमनेऽजगरः० प्रव्रजितागमनेमरुपिशाचः० शूद्रागम- नेदीर्घकीटः० सवर्णाभिगामीदरिद्रः० राजमहिषीगामीनपुंसकः० गोगा मीमंडूकः० जलहारीमत्स्यः० क्षीरहारीवलाकः० वार्धुषिकोऽगहीनः० अविक्रेयविक्रयीगृध्रः० राजाक्रोशकोगर्दभः० अनध्यायाध्येतासृगालः० परद्रव्यापहारीपरप्रेष्यः० मत्स्यवधेगर्भवासी० इत्येतेऽनूर्ध्वग मनाइति अनूर्ध्वगमनाअस्वर्गगामिनः॥ देवद्रव्योपजीवीहृद्रोगी० प्रतिज्ञायब्राह्मणस्यादाताअल्पायुः०

ब्याजलेकर जीविका करणे वाला अंगहीन होताहै इसमें दोरुपैए सैकडेपर जो वयाजहै ति सते अधिकलैणेमे दोषहै ॥ और जो नाहिंवेचने योग्य गौसें आदलेकर उनकों वेचणेवाला गृध्र क्या इल्लयोनिको प्राप्त होताहै और राजाकी निंदाकरणे वाळा गधा होताहै और अनध्यायमे पडनेवाला गिदड होताहै और परधन हरणे वाला जन्मांतरमे नौकर होताहै अर्थात् दूसरेकी सेवाकरणे वाला होताहै ॥ और मत्स्यके मारणे वाला गर्भमें निवास करणेवाला होताहै इसमें एह अभिप्रायहै किजन्मपाकर शीघ्रहिमृत्युकों प्राप्त होताहै एह सभस्वर्ग में नहि प्राप्तहोतेहैं ॥ इसविषें वृद्धगौतमजीकहतेहैं देवद्रव्येति जो देवताके द्रव्यकरके जीविका करताहै सो हृदयविषें रोगवाला होताहै और जो ब्राह्मणकेसाथ दानकी प्रतिज्ञा करके नहि देताहै सो थोडीआयुषावाला होताहै

पत्नीति और बहुतस्त्रियोंकेहोयांहोयां जोएकस्त्रीके साथ प्रीतिकरताहै सो नपुंसकहोताहै ॥ और स्वामीकर्के धर्मविषें जोडयाहोया जोतिसधर्मविषेंअसक्तहै अर्थात् तिसकों नहिकर्ताहै सोजलोदर रोगकर्के युक्तहोताहै ॥ और दुर्बलदेमारणेमें अर्थात् दूसरे पुरुषदे मारदयांहोयां जो पासींबलवालेसहायतानाहिंकरतेहैं सोजन्मांतरमें अंगहीन होतेहैं ॥ और जोव्यवहारमें पक्षपातकरताहै सों जिह्वामे रोगवाला होताहै अर्थात्जल्लाहोताहै ॥ और जो अपने कर्के स्थापनकीते धर्म्मके अनुष्ठानको छेदनकर्त्ताहै सो जन्मांतरमे प्राप्त इष्टकावियोगीहोताहै ॥ जो आपहि पहिले भोजन करताहै अर्थात् बालवृद्धादिको ना देकर्के खाताहै सो शूलरोगवालाहोताहै ॥ और संपदासें रहित जो मित्र और बंधु और स्वामी और अपणी भार्या इनका

पत्नीबहुत्वेसत्येकारामःक्लीबः ॥ स्वामिनाधर्म्मेनियुक्तःतदननुष्ठानासक्तोजलोदरी ० दुर्व्वलबाधेबलवतामुपेक्षायामंगहीनता ० व्यवहारपक्षपाती जिव्हारोगी-स्वयंप्रवर्त्तितधर्म्मानुष्ठानच्छेदकःप्रतिपन्नेष्टवियोगी-स्वयमग्रभुक् शूलरोगी॰परिक्षीणमित्रबंधुस्वामिस्वजायावमंता परवृत्तिः- अतिथिं पश्यन्नश्नतः कपालपट्टिका॥कपालपट्टिकारोगविशेषः॥सूर्य्याप्रकाशेप्रतिश्रयादानादिष्टवियोगी- सूर्य्याप्रकाशोरात्रिः तत्रातिथयेप्रतिश्रयस्याश्रयस्याप्रदानादित्यर्थः ॥ छद्मनागुरुस्वामिमित्रमुपचरतः प्राप्तार्थपरिभ्रंशः विस्रंभापहारीसर्वदुःखाश्रयी- दुःखकारीगोनायकोनिर्दयश्चिपिटनासः चिपिटनासोविकृतनासः॥

जो अपमानकरताहै सों परवृत्ति अर्थात् पराधीनहोंताहै ॥ और जो अतिथिकों देखकर आपहि भोजनकरताहै अर्थात् तिसकोनहिदेता उसकों कपालपट्टिकारोग होनाहै और जो रात्रीविषें किसीको रहणेकेवास्ते जगा नहिदेता सो इष्टवियोगीहोताहै ॥ और जोछलकरके गुरुअरस्वामी अर मित्रकी पूजाकरताहै उसका प्राप्तहोयाहोयाअर्थ नष्ट होताहै ॥ और जो विश्वासदेकर हरणे वालाहै सो सम्पूर्णदुःखोका आश्रयहोताहै ॥ और दुःखकरणेवाला गौयोंकाचरवालहोताहै और जों दयासेरहितहै सो फीनेनक्कवालाहोताहै इसमें एहअभिप्रायहै किनासिकादृष्टिऋजुदृष्टिहोताहै जिसकरके ऐसानहिहोया

शिष्टेति जो शिष्टाचरण धर्मक्या महात्माकरके स्थापित कीत्ताहोया जोधर्म्म तिसकीनिन्दाकरणे वालाहै सो कांचराहोताहै । और जो साधुपुरुषकेसाथ और तपस्वी अरदेवता अरब्राह्मणअर गुरु अर ज्ञान अर योग ० इनसबनोंकेसाथ द्वेषकरणेवालाहै सो नक्रास्यहोताहै अर्थात् मच्छाकार मुखवाला होताहै । और ताल और वगीचेके नाशकरणेवाला नेत्रसे अर अंगसे हीनहोताहै अथवा नेत्ररूप जो अंगहै तिसते हीन क्या एकनेत्र करके हीन होताहै और जो कृतघ्नहै सो संपूर्ण आरंभोमें विफल होताहै क्या उसकाकीताहोया आरंभ कोई नहि सिद्धहोताहै ॥ और पर धनकी अभिलाषा करणे वाला क्षयरोगकरके युक्तहोताहै ॥ व्यवहारेति और जो पुरुषव्यवहारके मध्यमें स्थितहुया२

शिष्टाचरणधर्म्मदूषकः केकराक्षः० साधुजनतपस्वि देवद्विजगुरुज्ञानयोग द्वेष्टा नक्रास्यः ० तटाकारामभेत्ता नेत्रांगहीनः ० कृतघ्नः सर्वारंभविकलः ० परस्वाभिलाषीक्षयीस्यात् ० व्यवहारेपुमध्यस्थश्चौरवृत्तिपरस्तुयः वाणिज्यलाभोनोतस्य देशांतरगतस्यच व्याधिःस्यात् प्राणसंदेहो मृतिस्तत्रैवपापिनइति १ । अथमाधवीयउमामहेश्वरसंवादादावन्योविशेषोयथा । श्वपाकपुष्कसादीनांकुत्सितानामचेतसाम् कुलेषुतेहिजायंतेगुरुवृद्धावमानिनः १ गुरुणाह्यननुज्ञातोयोवेदाभ्यासमाचरेत् सप्रजातिविहीनेषुजायते भुविमानवः २ प्रजातिःप्रकृष्टजातिर्ब्राह्मणत्वादिका तद्धीनेषुनीचेष्वित्यर्थः

चोरी कर्म्मविषे तत्परहै उसकोंजन्मांतरविषे व्यापारसे लाभ नहि होता जेकर वो पापी देशांतरमें जावे तौभी व्यापारसें लाभनहिहोता और तिसकों जिससें प्राणोंकासंदेहहोताहै ऐसी व्याधिहोतीहै और मरणभीऊहांहोताहै १ अवमाधवजीके वनाए होए ग्रन्थविषे शिव और पार्वतीजीके संवादमें और प्रकारका कर्म्मविपाककिहाहै श्वपाकेति और जो पुरुष गुरुका और वृद्धका अपमान करतेहैं सोचांडाल और पुष्कस और खोटे जो जडजंतु तिनकेकुलोंमें जन्मपातेहैं १ गुरुणेति और जो पुरुष गुरुकरके अनाज्ञत होया २ वेदको पढताहै अर्थात् आज्ञासें विना पढताहै सो जन्मांतरमें इससंसारविषे ब्राह्मणोंसें हीन जो जाति तिनकेविषे जन्मपाताहै २

अधर्म्ममिति और जो पुरुष मोहवशतें अधर्म्मनूं धर्म्म कहतेहैं सोकालकृत योगसें अर्थात् मरणें संपीछे इसमनुष्यलोकमें जन्मपातेहैं ३ परंतु हवन और देवतानिमित्त जो वषट्कार तिसतें रहित होतेहैं ॥ स्कन्दपुराणकेनागरखंडमेंभीकिहाहै। प्राप्नुवंतीति जो पुरुष हेतुवादक क्या उत्तरोत्तर हेतुप्रश्णसे सतमतका खंडनकरतेहैं सो कुत्सितदेशकेविषें जन्मकोंपातेहैं॥ और जो अपणेस्वामी के साथ द्रोहकरतेहैं सो कुत्सित कुलविषें अर्थात् कुष्टादियुक्तकुलविषें जन्मपातेहैं १ अदत्वेति और जोंपुरुष पितर और देवता और ब्राह्मणोंकों ना देकरके भोजन करतेहैं सो सदाहै दुर्भिक्ष और पीडाआपसमें जिसविषें ऐसा जो कुत्सितदेश तिसविषें जन्मपातेहैं २ और जो पुरुष स्त्री

अधर्म्मंधर्म्ममित्याहुर्येतुमोहवशंगताः तेचकालकृताद्योगात्संभवंतीहमानुषे ३ निर्होमानिर्वषट्कारास्तेभवंतिनराधमाइति ॥ स्कान्देनागरखंडे ॥ प्राप्नुवंतिकुदेशेचजन्मयेहेतुवादकाः स्वामिद्रोहरतायेचकुकुलेजन्मचाप्नुयुः १ अदत्वायेतथाश्नन्तिपितृदेवद्विजातिषु दुर्भिक्षेजनतापेचकुदेशेजन्मचाप्नुयुः २ यत्रदुर्भिक्षंजनतापोवास्ति तत्रकुदेशइत्यर्थः॥ येतुकुर्वतिदंपत्यो र्विवादंसानुरागयोः विरूपाभ्रममाणाश्चसर्वलोकविवर्जिताः ३ दरिद्रा जाययाभ्रष्टाभवंतिविगतायुषः कन्यादानेचविघ्नंयोविक्रयंयः करोतिवा ४ सकन्यांकेवलांसूतेनपुत्रंकेवलंक्वचित् जायंतेताश्चवंधक्योविधवादुर्भगाः क्वचित् ५

और भर्त्ता सहित अनुरागकेहैं अर्थात् प्रीतिकरके युक्तहैं तिनका आपसमें विवाद क्या वियोग करवातेहैं सो खोटेरूपवालेक्या जड़े गिलडे कुबे अर्थात् इनांतिनां रूपाकरके युक्त हुएहुए और सनना लोकांकरके वर्जेहोएक्या तिरस्कृतकीतेहोएभ्रमतेहैं ३ इसीकाऔरफलकहतेहैं॥ दरिद्राइति सोपुरुष दरिद्रीहोतेहैं और स्त्रीकरकेहीनहोतेहैं और थोडीआयुषावालेहोतेहैं ॥ अब औरकर्म्म विपाककहतेहैं ॥ जो पुरुषकन्या दानविषें विघ्नकरताहै अथवा कन्याकोंवेचताहै सो जन्मांतरविषें कन्याहिकोंउत्पन्नकरताहै अरतिसकेगृहमेंपुत्रनाहिहोता ४ और सोकन्यावन्धकीयां अर्थात् व्यभिचारिणियां अर विधवा अर दुर्भगा अर्थात् ऐश्वर्य्यसेंहीन होतियांहैं ५ ॥

अब और प्रकारका कर्म्मविपाक किहाहै प्रभास खंडविषें यैरिति जिनोंपुरुषोंनें किंचित्मात्रभी कृष्णार्प्पण नहिंदित्ताहै उनका दरिद्रताहिचिन्हहोताहै और सो रोगीहोतेहैं क्रूरहोतेहैं और हिंसा करणेंवाले और कुब्जेहोतेहैं और वामनहोतेहैं १ अपुत्राइति परस्त्रीकोंसेवनेवाले और कलहक्या लडाइके करणेवाले पुत्रसें रहितहोतेहैं और जो पुरुषमहाराजक क्या उपदेवता तिनकेकर्म्मोको करतेहैं अर्थात् तिनाका मंत्रसिद्धकरतेहैं सो कुत्सितवस्त्रोंवाले और कुत्सितरूपवालेहोतेहैं २ और इसी पदका दूसरा अर्थहै महाराजकनामहै राजयोंकारोंकणा उसविषेंहै कर्म्म जिनकावो भी ऐसेहोतेहैं २ कुदिति जो पुरुष और खोटे दंभके करणेवाले और फलकेविषें लुब्ध और मूर्ख

प्रभासखण्डे। यैर्नदत्तंनरैः किंचित्तेषांचिन्हंदरिद्रता जायंतेरोगिणोरौद्राहिंस्राःकुब्जाश्चवामनाः १ अपुत्राःकलहाक्रान्ताःपरदारोपसेवकाः महाराजककर्म्माणःकुचैलाःकुशरीरिणः २ महाराजकाउपदेवविशेषास्तत्कर्म्माणस्तन्मंत्रसाधकाःकुशरीरिणःकुरूपाभवंति यद्वा महाराजकंमहाराजनिरोधस्तत्रकर्म्मयेषांते २ कुदंभाश्चफलेलुब्धामूर्खानिष्ठुरभाषिणः दानहीनाभवंत्येतेदेवब्रह्मस्वभक्षकाः ३ रेवाखंडे। पितामातागुरुर्भ्रातान्योवादिकलेंद्रियः भवंत्यनादृतायैस्तुतेभवंतिनराधमाः १ इहमानुषलोकेहिदीनांधास्तेभवंतिवै येत्यजन्तिस्वकांभार्य्यांमूढाःपंडितमानिनः २ तेयांतिनरकंघोरंतामिस्रंनात्रसंशयः तत्रवर्षशतस्यांतेइहमानुषतांगताः ३

और खोटे वचनोंके भाषण करणे वाले और ब्राह्मणके धनकों भक्षण करतेहैं सो दान करकें हीनहोतेहैं ३ और प्रकारकाकर्मविपाककिहाहै रेवाखंडविषे ॥ पितेति पिता और माता और गुरु और भ्राता और शिथिलहैं इंद्रियां क्या गुणहीन जिसकीयां ऐसा जोहै उनका जो पुरुष अनादरकरतेहैं सो अधम होतेहैं १ इहेति और इसमानुष लोकविषें दीन और अंधे होतेहैं जो मूढ अपणे आपकों विनापढे पंडित मानणेवाले हैं और अपणी स्त्रीकों त्यागदेतेहैं २ तइति सो पुरुष तामिस्र नाम घोर नरकविषें प्राप्तहोतेहैं इसमे संशय नहि है और उसविषें शतवर्ष १०० पर्य्यंत पीडाकों भोगकर इसलोकविषें मनुष्य होतेहैं ३

दुश्चर्मेति और जो पुरुष परस्त्रीकेसेवनेवालाहै सोदुष्टचर्मवाला और विद्यासेंरहित और धनसें रहित और गृध्र क्या अंडवृद्धिरोग तिसकरकेयुक्तहोताहै अर पूर्वं जो परभार्य्योपसेवक पद आयाहै सोप्रभासखंडकामतहै अरइहांजो आयाहै सोरेवाखंडकामतहै इसवास्तेपुनरुक्तिनहिजाननी ४ गद्गदइति और अनृतवादीक्या झूठकहणेवालापुरुषथथलाहोताहै और गौयोंकेअर्थ झूठकहणेवाला क्या कोई पुरुष गौयोंकी सेवाकरणे वास्ते आयाहै अर किसीनें कहादियाकि इहां कोई गौ नहिहै ऐसा कहणेवाला मूक होताहै और जो विहा अन्नब्राह्मणको देताहै सो विकृतकंठवाला होताहै अर्थात् उसका कंठ किसीको अच्छा नहि लगता ५ मति और जो किसीके ऐश्वर्य्यको नहिसहारसकताहै सोजातिकरके अन्धाहोताहै अर्थात् जिनजीवजातियोंमें नेत्रोंसेंहीनहोतेहैं उन जातियोंमेंजन्मपाताहै जैसें विस्तकलादिकहैं और जोपुरुषद्वेषकरणेवालाहै सो वधिरहोताहै और

दुश्चर्म्मादुर्भगश्चैवदारिद्रःसंप्रजायते जायतेगृध्रसंयुक्तःपरभार्य्योपसेवकः ४ गद्गदोऽनृतवादीस्यान्मूकश्चैवगवानृते अन्नंपर्युषितंविप्रेददद्वैकंठतांव्रजेत् ५ मात्सर्य्यादपिजात्यन्धोद्वेषात्तुवधिरोभवेत् अदत्वाभक्ष्यमश्नातिह्यनपत्यो भवेच्चसइति ६ भक्ष्यमत्रापूपादि दोषवाहुल्यात् । गरुडपुराणे । अवमत्यच येयांतिभगवत्कीर्त्तनंनराःवार्धिक्यमुपयांत्याशु तेवैजन्मनिजन्मनि १ पश्यन्तोभगवद्द्वारंतामसास्तत्परिच्छदम् अकृत्वातत्प्रणामादियेयांतिपुरुषाधमाःजात्यन्धास्तेभिजायंतेप्यंगहीनपरिग्रहाः २ अंगहीनःपरिग्रहःस्त्रीयेषां ते ॥ पंगवः पादहीनाश्चकुष्टिनोभुवियेनराः विष्णुच्छायाध्रुवंतैरतुलंघिता स्यान्नसंशयः ३ विष्णुच्छायाविष्णुप्रतिमाप्रतिविंबः ॥

जो इकल्लाहिमधुरभोजनकरताहै अराकिसीकोनहिदेता सो संततिसेंरहितहोताहै परंतुइसजगा भक्ष्यकरके पूडेआदिभोजनजानना दोषवहुतहोणेतें ६ अव और प्रकारका कर्म्मविपाक किहाहै गरुडपुराणविषे ० अवमत्येति जो पुरुष ईश्वरके कीर्तनकोत्यागकर पराङ्मुख होतेहैं सो जन्मजन्मके विषे तात्कालहि वृद्धभावको प्राप्तहोतेहैं अर्थात् अल्पआयुषावालेहोतेहैं १ पश्यंतइति जो तमोगुणी अधमपुरुष हैं अर ईश्वरके द्वार अर सामग्रीकोंदेखकर नमस्कारके विनाहि चलेजातेहैं सो पूर्वोक्तजाति करके अन्धहोतेहैं और अंगहीनस्त्रियोंके पतिहोतेहैं २ पंगवइति और जिनोंपुरुषोंनें विष्णुकीमूर्त्तिकोछायाकाउल्लंघनकीताहै सोपंगु क्या शिथिलजंघावाले अर पादहीन अर कुष्टी होतेहैं इसविषेसंशयनहिं जानणा ३

तथेति और तैसेंहीजो पुरुष ईश्वरके मंदिरकीछायाको अर्थात् मंदिरके कलशकी छायाकों उल्लंघन करताहै सो वनविषेपंगुहोताहै और रोगकर्के पीडितहोताहै इसजगापंगुशब्दकर्के वनवासीकोई जीवविशेषहै कोई औसाभीकहतेहैं ४ ❀ अब और प्रकारकाकर्म्म विपाकविष्णुधर्म्मोत्तरमेंकिहा है पिशुन इति जो पुरुष पिशुन क्या दूसरेका केवल दोष प्रकाश करणेवालाहै सो खोटीगंधी कर्केयुक्तहै नासांजिसकीयां ऐसाहोताहै और जो पुरुष सूचकक्या दूसरेपुरुषके गुणमिश्रितदोषों काप्रकाश करताहै सोदुर्गंधि विशिष्ट मुखवाला होताहै और दूसरेके गुणकों देखकर जो

तथाचभगवद्धामच्छायायांक्रमतेतुयः अरण्येजायतेपंगुःसर्वैरोगादिपीडित इति ४ विष्णुधर्म्मोत्तरे ॥ पिशुनःपूतिनासस्स्यात्सूचकःपूतिवक्त्रकः खल्वाटोमत्सरीग्रामनापितोवेदनिंदकः १ पिशुनःकेवलंदोषप्रकाशकः सूचकोगुणमिश्रितदोषप्रकाशकः यद्वा पिशुनोराजपार्श्वेदोषप्रकाशकः सूचकोन्यइत्यर्थः ॥ भूयएवसमाप्नोतितथानास्तिकतांद्विजः घाणिकस्तैलिकश्चैवअन्धोभवतिमानवः २ घाणिकोनीचजातिविशेषः प्रतिकूलंगुरोर्यस्तुसोऽपस्मारिचजायते यस्तुगुरोःप्रतिकूलंकार्य्यंकरोतिसइत्यर्थः

नहिं सहारता सो गंजाहोंताहै और वेदकी निंदाकरणे वाला ग्रामकानाई होताहै १ मूलमें पिशुनशब्दका अर्थ स्पष्टकर्के किहाहै पिशुन इति भूयइति फेर मरणेसे पीछे ब्राह्मण जन्म पाकर्के नास्तिक भावकों प्राप्त होताहै फेर घाणिक नाम कर्के नीच होताहै और फेर तेली होताहै फेर पीछेसें वोंहि अंधाहोताहै २ घाणिक क्या नीच जाति कर्के जो प्रसिद्धहै और जो पुरुष गुरुयोंके अनुकूल नहि रहताहै सो मिरगीरोगकर्के युक्त होताहै जो जिसको अच्छानहिंहै उसको प्रतिकूल कहतेहैं

और हेमहाभाग जोपुरुष इकलाही मधुर वस्तुकोभक्षण करताहै सो वातगुल्मरोगकर्केयुक्त होताहै अर्थात् वातके गोलेकर्के युक्तहोताहै ३ भगेति और जो कुंडामार्गियोंके साथ भोजनकरताहै सो भगभक्षनामक कीडाहोताहै और जो दूसरे पुरुषकों पीडादेताहै सो चिरस्थायिज्वरादिरोगकर्के युक्तहोताहै गुरु और स्वामि और वेदकी निंदाकों सुनकरके ४ जन्मांतरमें दुर्बुद्धि और बोला और पुरुषोंमें अधमहोताहै और देवताके अर्पण कीया जो दीपक तिसकर्के जो दुर्बुद्धि पुरुष गृहका कार्य करताहै ५ सो जन्मांतरमें दुहुदाक्ष अर्थात् बाहर निकस गियाहै नेत्र जिसका ऐसाहोताहै और नेत्ररोग कर्के भी युक्तहोताहै और तिस पापकर्म कर्के दीनरूप वाला

मिष्टाश्येकोमहाभागवातगुल्मीप्रजायते ३ भगभक्षस्तुकुंडाशीदीर्घरोगी चपीडकः गुरुस्वामिद्विजाक्रोशंवेदनिंदांतथैवच ४ श्रुत्वाभवतिदुर्बुद्धिर्वधिरोमानवाधमः देवदत्तेनदीपेनकृत्वाकर्म्मसुदुर्म्मतिः ५ जायतेवैवुद्बुदाक्षो नेत्ररोगगतोपिवा तथैवदीनरूपश्चतेनपापेनकर्म्मणा ६ वुद्बुदाक्षोवहिर्निस्सृताक्षिगोलकः ॥ हीनवर्णस्तदालोकेभवत्यत्यंतदुर्म्मतिः विरूपीएव भवतितथाऽविक्रेयविक्रयी ७ विनाऽपराधेनतथाकृत्वापत्न्याधिवेदनम् सराजामयमाप्नोतिव्यवहारेतथैवच ८ पत्न्यधिवेदनं पत्न्यंतरग्रहणम् राजामयोराजयक्ष्मा

अर्थात् कनकालादिरूपजैसारूपउसकाहोताहै ६ हीनेति और लोकमें हीनवर्णक्या शूद्रहोताहै और अतिशयकर्के दुष्टबुद्धिवालाहोताहै और तैसेंहि नहिं वेचने लायक जोवस्तु उसके वेचनेवाला खोटेरूप वाला अर्थात् कुरूपी होताहै ७ विनेति और जो पुरुष अपराधके विना अपनी स्त्रीकों त्यागकर्के और स्त्रीकों ग्रहण करताहै सो राजयक्ष्मरोग कर्के युक्तहोताहै तैसेहीं व्यवहार विषे भी जिस पुरुषकेसाथ व्यवहार कर्ताहै उसकों अपराधके विना छोडकर्के जो दूसरेके साथव्यवहारकर्ताहै सोभीराजयक्ष्मकोंप्राप्तहोताहै ८ इसीका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमें कहाहै पत्न्येति

मूलेति और जो पुरुष वशीकरणके कारण औषधी अर मंत्रादिकों कर्के पुरुषकों मारदेताहै सो जगत्में द्वेषकरणेके योग्यहोताहै इसमें संशय नहिंजानणा ९ अयाज्येति और जो पुरुष यज्ञके अधिकारीनहिहैं तिनको जो यज्ञकरवाताहै सो वर्णसंकरहोताहै और जो पुरुष वेदको वेचताहै सो मूर्ख और धूर्त्तहोताहै धूर्त्तउसकोकहतेहैं कि जो विना विचारे कार्य्यको कर्ताहै १० नास्ति कइति जो नास्तिकहै अर्थात् ईश्वरको जगत् कर्त्ता नहि मानता सो दरिद्री होताहै और संपूर्णधर्मोंसें रहितहोताहै और जो अभिमान विषे प्रवृत्तहै क्या अपणेकों वडामानताहै और दूसरेकों तुछमानताहै सो खोटे कुलविषें उत्पन्नहोताहै ११ श्वपाकेति और जो पुरुषगुरुयोंका और

मूलकर्म्मतथाकृत्वावशीकरणकारणात् द्वेष्योभवतिलोकेऽस्मिन्जगतोनाऽत्रसंशयः ९ मूलकर्म्मऔषध्यादिनामारणं वशीकरणायप्रवृत्तोपिमारितवानूयदीत्यर्थः अयाज्ययाजकश्चैवजायतेवर्णसंकरः वेदविक्रयकोमूर्खःकितवश्चैवजायते १० नास्तिकस्तुदरिद्रस्स्यात् सर्वधर्म्मविवर्जितः आतमानप्रवृत्तस्तुजायतेकुत्सितेकुले ११ श्वपाकपुष्कसादीनांकुत्सितानामचेतसाम् कुलेषुतेभिजायंतेगुरुवृद्धापवादकाः १२ श्वभ्रेतुमरणंलोकेविषैःस्थावरजंगमैः दंष्ट्रिभ्यश्चनखिभ्यश्चचांडालाद्ब्राह्मणात्तथा १३ गृहाधःपतनाच्चैवद्रुमाधःपतनात्तथा गोभ्यश्चमरणंलोकेविज्ञेयंपापकर्म्मणाम् १४

वृद्धोंका अपमानकर्त्तेहैं सोचांडाल और पुष्कस और खोटे और जढोंकीकुलमें जन्मपातेहैं १२ जन्मलक्षण कर्म्म विपाक कहकरके अब मरणलक्षण कर्म विपाक कहतेहैं श्वभ्रइति जो पुरुष लोकविषें टोएमें गिड कर्के मरताहै और स्थावरजंगमविषकर्के मरताहै स्थावर क्या संखियेसें आदलेकरहे और जंगम क्या सर्पादिकोंसेंलेकरहे और दंष्ट्री क्या श्वान अर व्याघ्रादिकोंसें लेकर अर नखवालयोंकर्के अर्थात् सिंहादिकों कर्के मर्ताहै और चांडालसें और ब्राह्मणसे १३ गृहेति गृहसेंक्याघरसें गिडकर और द्रुमक्या वृक्षसें गिडकर और गौयोंसें जो मरताहै सो मरण पापकर्म्मवालयोंका जानणा १४

ताडितेति जो पुरुष किसीकों ताडना करताहै सो आपभी जन्मांतरमें ताडनाकों प्राप्तहोताहै जो किसीके धनादिकों हरताहै सो आपभी धनादिककें हरयाजाताहै और दूसरेकों मारकें आपत्तिकों प्राप्तहोताहै अर्थात् आपभी मारयाजाताहै इसमें विचार नहिं करणेयोग्यहै १५ सोई कहतेहैं यद्यदिति जो पुरुष दूसरेकों सुख अथवा दुःख देताहै सो सो उसकों जन्मांतरमें प्राप्त होताहै और अपणे कीये होए कामककें दूसरा पुरुष जैसी पीडाकों प्राप्तहोताहै १६ तस्येति तिसकोंभी तैसीहि पीडा जन्मजन्ममें होतीहै तिसकारणसें पुरुष संपूर्ण यत्नककें पर पीडाकों त्यागे १७ अब और प्रकारका कर्म्मविपाक किहाहै महाभारतविषें ॥ यइति जो

ताडितताड्यतेलोकेहारिताहार्य्यतेतथा हत्वाऽऽपद्मवाप्नोतिनात्रकार्य्या विचारणा १५ यद्यत्परस्याचरतितत्तदस्योपजायते प्राप्नोतियादृशींवाधां कर्म्मणास्वकृतेनयः १६ तस्यापितादृशीवाधाज्ञेयाजन्मनिजन्मनि तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपरवाधांविवर्ज्जयेदिति १७ महाभारते ॥ येनास्तिकानिष्क्रियाश्चगुरुशास्त्रातिलंघिनः अधर्म्मज्ञागताचारास्तेभवंतिगतायुषः १ कुशीलाभिन्नमर्य्यादानित्यंसंकीर्णमैथुनाः अल्पायुषोभवंतीहनरानिरयगामिनः २

पुरुष नास्तिकहैं अर्थात् ईश्वरकों जगत्का कर्त्ता नहिं मानतेहैं और जो निष्क्रियहैं अर्थात् संध्योपासनादिसें रहितहैं और गुरु और शास्त्रका उल्लंघनककें वर्त्ततेहैं और जो धर्मकों नाहिं जानतेहैं और नष्ट होगयाहै आचार जिनका ऐसे जो हैं सो अल्पआयुषा वाले होतेहैं १ कुशीति और जो पुरुष खोटे स्वभाववाले हैं अर्थात् वृथा वार्त्तालापमें झूठ और परकी निंदा करतेहैं और जो भिन्नमर्यादावालेहैं क्या किसे मतपर भी नहीचलते और जो संकीर्णमैथुनीहैं अर्थात् संपूर्णवर्णोंकीस्त्रियोंके साथ मैथुन करतेहैं सो पुरुष थोडी आयुषावाले होतेहैं और नरकगामी होतेहैं २

लोष्टेति और जो पुरुष मृत्तिकादीढीमकोंहाथसें वारंवारभोरदेताहै और तैसेहि जो तृणका छेदनकरताहै और जो नखोंकोखाताहै अर्थात् नखोंकोमुखमें पाताहै और जो नित्यकर्म्मको त्यागताहै अर जो चुगली करताहै सो इसलोकमें वडीआयुषाको नहि प्राप्तहोताहै अर्थात् अल्पआयुषावालाहोताहै ३ प्रज्ञामिति और जो पुरुषउच्छिष्टहोया २ वार्त्ताकर्त्ताहै और ईश्वरजीके मंदिरामें जूठाहिचलाजाताहै उसकीबुद्धिको देवताहरलेताहै और आयुषाकाभीनष्टकरताहै ४ यश्चेति जो ब्राह्मण मोहवशसें अनध्यायकालमें पढताहै और जो सूर्य्यके और अग्निके और गौके और ब्राह्मणके सन्मुख होकरके विष्टाकरतेहैं सो अल्पआयुषावाले होतेहैं ५ और शिवधर्म्मोत्तरविषेंभी

लोष्टमर्दीतृणच्छेदीनखखादीचयोनरः नित्योच्छेदीसूचकश्चनेहायुर्विंदते महत् ३ प्रज्ञामस्याददेदेवोह्यायुरस्यनिकृंतति उच्छिष्टश्छप्रवदतिवाधिगच्छतिमंदिरे ४ अस्यायुर्देवोनिकृंतति खंढयति तथा प्रज्ञामाददे। यश्चानध्यायकालेपिमोहादभ्यसतेद्विजः प्रत्यादित्यंप्रत्यनलंप्रतिगांच प्रतिद्विजम् येमेहयंतिचनरास्तेभवंतिगतायुषइति ५ शिवधर्म्मोत्तरे ॥ देवद्रव्योपजीवीचसर्वदैवचवार्द्धकः देवद्रव्यंस्वयंयेनभुक्तंसहिसदाभवेत् १ रसा ज्ञोवधिरःकुंठः कंडूसर्वांगदुःखितः देवस्पर्शनरःकृत्वापरप्रत्ययकारणात् २ मिथ्याचारंचरेत्पश्चादर्बुदस्थोवनेचरः देवदासोवनंभुक्त्वावृहद्गुल्मीचवैक्रमात् ३ अर्बुदःपर्वतविशेषः

किहाहै देवेति जोपुरुष सर्वदाकालदेवताके द्रव्यकरके क्या सामग्रीकरके जीविका करताहै और जो रुपैयोंका व्याजलेकर जीविकाकरताहै और जिसने देवताकाद्रव्य आपहीभक्षणकीताहै १ सो सदा रस विषे अज्ञ होताहै अर्थात् तिसकी जिव्हा रसकोंनहिजानसकती और बोलाहोताहै और कुंठहोताहै अर्थात् दुष्टस्वभाववालाहोताहै और तिसके संपूर्ण अंगकंडूकरके दुःखितहोतेहैं और जो पुरुष दूसरेको प्रतीति वास्ते अर्थात् निश्चयवास्ते देवताकी शपथकरताहै २ अर पीछेसें मिथ्याचार क्या कपट करताहै सो पर्वतमें रहणे वाला वनचर होताहै फेर बनको भोगकर मूर्खहोताहै फेर बडे गुल्मरोगकरके क्या वातगोलेकरकेयुक्तहोताहै अर्बुदनामकिसे पर्वतकाहै ३

सर्वांगेति और जो पुरुष पापकर्ताहै सोसंपूर्ण अंगोमें कुष्ठरोगवालाहोताहै और तिमिरी होताहै अर्थात् नेत्र उसके अंधकारककेंयुक्तहोतेहैं तिसको नरहात्ता रोग कहतेहैं और पापककें इहांगोव धादि पाप जानणा क्योंकि दोषवहुतहोणेतें औरजो देवताके मंदिरसें दीपकको उठाककें घरका कामकर्त्ताहै सो जन्मांतरमें पंगु और नेत्रोंसेंहीन होताहै औरपाछें जो देवताके दीपकउठानेका दोषकिहा है सो विष्णुधर्मोत्तरकामतहै अर इहांजो किहाहै सोशिवधर्मोत्तरकामतहै इसवास्ते पुनरु क्तिनहिजानणी ४ मूर्छेति और देवतयोंके साथ द्वेषकरणेवाला मूर्छा क्या मिरगीरोगककें युक्त होताहै और भ्रमी क्या सुदाई होताहै अथवामूर्छाककेंहै भ्रमण क्या भौणां जिसमें ऐसा होताहै और न्यायमें पक्षपातकरणेवालाज्वररोगकरकेंयुक्त होताहै और देवताके तिरस्कारकरणे वाला

सर्वांगकुष्ठीतिमिरीनरोभवतिपापतः दीपंदेवगृहाद्धृत्वापंगुश्चांधोभवेन्नरः पापमत्रगोवधादि दोषवाहुल्यात् ४ मूर्छीभ्रमीसुरद्वेष्टापक्षपातीज्वरी भवेत् देवावमंताभवतिसर्वदामैथुनेरतः ५ सदापहृतसर्वस्वः कुत्सितःका ममोहितः मुखेकृष्णव्रणीश्वित्रीगरदोमत्तकोभवेत् जिह्वावहुव्रणीह्यन्यदुः खकारीभवेन्नरः ६ अपकारंतुयःकुर्य्यादुपकर्त्तुर्भवेन्नरः श्वासकासीज्वरी सर्वगात्ररोगीमृतप्रजाः ७

और सदाहि स्त्रीभोगमें प्रीति वाला ५ सदाहि हरयागयाहै धन जिसका ऐसा होताहै और कुटिलहोताहै और कामककें मोहितहोताहै मुखइति और जो मदान्धपुरुष दूसरेंको विष देताहै सो मुखमे कृष्णव्रणीहोताहै अर्थात् उसके मुखमें कालें २ छिद्रहोतेहैं और श्विवी क्या श्वेतकुष्ठकरके युक्तहोताहै और अन्यदुःखकारीजोपुरुष अर्थात् भलेपुरुषोंको दुर्वाक्यकहणेवाला सो जिह्वामें बहुव्रणी होताहै अर्थात् उसकी जिह्वामें वहुत छिद्रहोतेहैं ६ अपकारमिति जो पुरुष उपकारकरणे वाले पर अपकार करताहै अर्थात् भलीकरणेवालें साथ माडीकर्त्ताहै सो श्वासकास क्या दम रोग तिसककें युक्त होताहै और ज्वरककें युक्त होताहै और सवनां अगांमे रोगवाला होताहै और मृतप्रजाक्या तिसकें पुत्र उत्पन्न होकरकेंमरजातेहैं ७

मृतपुत्रइति जो पुरुष दूसरेकी संततीकेसाथ द्वेष करताहै सो पुत्रसें हीन होताहै अथवा अंधाहो ताहै और जो दूसरेका नाशकरताहै सो बिसर्पवान् होताहै अर्थात् रक्त विकार जो रोग तिस करके युक्त होताहै ८ अकारणेति और जो पुरुष कारणसें विना अपणी स्त्रीका त्यागक रताहै सो जलोदरी क्या जलोदररोगकरके युक्तहोताहै अर्थात् उसका पेटरोगकरके फुलजाताहै और जो अधम पुरुष वेश्यानूं अपणी स्त्री वणाकरके वर्त्तदाहै ९ सो जन्मान्तरमें भत्तखाणेनूं असमर्थ होताहै और पिछपान करके जीवन करताहै और दूसरेके चित्तकों क्लेशदेणेवा

मृतपुत्रोथवांधःस्यात्योद्वेष्टिपरसंततिम् परस्यतुविनाशंयः करोतिसवि सर्प्पवान् ॥ ८ ॥ विसर्प्पोरक्तविकालिकोरोगविशेषः अकारणाद्धर्म्मप त्नीत्यागीस्याच्चजलोदरी वेश्यांकुलवधूंकृत्वावर्त्ततेयोनराधमः ९ भक्तंभो क्तुमशक्तश्चमंडपानेनजीवति ॥ परेषांचेतसः क्लेशकारीभवतिमानवः १० क्षयीज्वरीप्रमेहीचगुल्मीदाहीभगंदरी रजस्वलायाःसंपर्कात्चांडालपति तैःसह ॥ ११ ॥ व्यवहारीपुष्पवत्या भुक्त्वाकुष्टीज्वरीभवेत् अनपत्यो दरिद्रश्चविश्वस्तस्यविषप्रदः ॥ १२ ॥

ला १० क्षयरोगकरके युक्त होताहै और ज्वरकरके और प्रमेह रोगकरके और गुल्म रोगकरके और दाहरोगकरके और भगंदररोगककें युक्तहोताहै परंतु चांडाल और पतितके साथ रलकरकें रजस्वलास्त्रीकासंवन्धहोणेते ११ इसीका अर्थ विशेष करकें कहतेहैं व्यवेति रजस्वलाके साथ व्यवहारकरणे वाला जो पुरुष अर्थात् क्रीडाकरणे वाला सो विना सचैल स्नानसें भोजनकरे तो ज्वर रोग वाला होताहै और कुष्टी होताहै और जो विश्वस्त पुरुषकों विषदेताहै सो विश्वासघाती पुत्रसें रहित होताहै औरदरिद्री होताहै १२

निषिद्धेति श्रौर जो पुरुषनिषिद्धवस्तु क्या चांडालककें स्पर्शित जो भोजनतिसके खुलाणेकर्के अथवा परोपदिष्ट ज्ञान क्या कि मेरेकों किसेवडे महात्मासिद्धसें प्राप्तहोया २ हैउपदेश कि मदिरासें पूजनकरणावहुतअच्छाहै श्रौर मदिरापानकरणाभीअच्छाहै इसज्ञानकर्के जोदूसरयांपुरुषांनूं मोहलेताहै अर्थात् भुलादेताहै सोउन्मत्तकक्या सुदाई होताहै ॥ १३ ॥ ऋणमिति श्रौर जो पुरुषदूसरेकों ऋणदेकर्के अधिकवृद्धिग्रहणकरताहै अर्थात् व्याजके समेत फेर नवीनखत लिखाकर्के उसके पासोंरुपैय्ये लेताहै सो धनवानोंके कुलमें जन्मपाकर्के देशान्तरमें चलाजाताहै १४ ॥ वाणीति देशान्तरमेंभी उसकों व्यापारकालाभ नहि होताहै श्रौर जो पुरुष गुरुशिष्यदेवैठयांहोयां गुरुकों छोडकर्के शिष्यकासन्मानकर्ताहै सोज्वरकर्के अरश्वासकास क्या दम तिसकर्के युक्तहोताहै १५

निषिद्धवस्तुभोगेनमोहयेद्यःपरान्पुमान् परोपदिष्टज्ञानेनभवेदुन्मत्तकोपिवा॥ १३ ऋणंदत्वाधिकांवृद्धिंयोगृह्णातीहमानवः सभूत्वाधनिनांवंशेव्रजेद्देशांतरंततः॥ १४ ॥ वाणिज्यलाभस्तत्रैवनास्तितस्यनरस्यवै अमुख्येमुख्यकारीयःसज्वरीश्वासकासवान् १५ सर्वांगरोगीपापोन्नद्वेष्टा मृतसमांगभागिति ॥ उमामहेश्वरसंवादे ॥ अकृत्वाखलुयज्ञंतुयस्तुधान्यं प्रवेशयेत् मरुदेशेभवेद्वृक्षःफलपुष्पविवर्जितः १ दिव्यंवर्षसहस्रंतुदुरात्माकर्षितोभवेत् तस्यांतेमानुषोभूत्वाकदाचित्कल्पपर्ययात् दरिद्रोव्याधितोमूर्खोह्यकुलीनस्तुजायते २ ॥

सर्वांगेति श्रौर जो पुरुष अन्नकेसाथ द्वेषकरताहै अर्थात् अन्नकोंवृथाहि सुटदेताहै सो पापीमृतपुरुषकी न्याईहै अंगजिसके ऐसाहोताहै अर्थात् अतिकच्छीअररोगीहोताहै ॥ अब श्रौर प्रकारका कर्म्म विपाककहाहै उमामहेश्वरसंवादमें अकृत्वेति जो पुरुष नवान्नेष्टियज्ञकों न करके नवीन अन्नका अपणे घरमें प्रवेशकरताहै सो निर्जलदेशमें फलपुष्पसें रहित वृक्ष होताहै १ दिव्यमिति श्रौर दिव्यहजार वर्ष सोदुरात्माजन्मजन्मविषे कर्षित क्या रोगीहोताहै श्रौर तिसकेपीछे कल्पकेव्यत्ययहोणेतें मनुष्यहोकर्के दरिद्रीहोताहै फेरव्याधिकर्के युक्तहोताहै फेर मूर्ख होताहै फेर खोटे कुलमें जन्मपाताहै २

यस्त्विति जो पुरुष क्षुद्रभावकर्के अर्थात् खोटेस्वभावकर्के प्रीतिवाले पुरुषकेसाथ भेद क्या कपटक रताहै सोजन्मांतरमें संततिकोंनहिप्राप्तहोताहै तिसपापकेकारणसें ३ नशृएवंतीति जेडेपुरुष गुरुके और वेदके वाक्यकोंनहिंश्रवणकरतेहैं और संपूर्णमतोंकेमध्यमें नास्तिक मतकों स्वीकारकरतेहैं सो जन्मान्तरमें तिसपापकर्के मूढभावकोंप्राप्तहोतेहैं ४ प्रार्थेति और जो पुरुष दूधवाली और स वत्सा क्यावच्छेवाली जोगौ तिसकीप्रार्थना कर्के अर्थात् किसीयजमानसें मांगकर्के फेरउसकादूधआपही पानकरताहै और किसीकोंनहिदेता अथवाप्रार्थनाकर्के क्याकि गौकेआगे कुच्छखाने वालीवस्तुकों रखकर्केफेरवच्छाछोडताहै तिसकेपिच्छेउसदूधकोंआपहीपानकरलेताहै अरवच्छेकों

यस्तुक्षुद्रेणभावेन स्नेहवद्भेदकारकः सोनपत्यत्वमाप्नोतितस्यपापस्यका रणात् ३ नशृएवंतिगुरोर्वाक्यंवेदवाक्यंचयेनराः सर्वेषांचैवनास्तिक्यंतेनते यांतिमूढतां ४ प्रार्थयित्वातुयोगांवैसवत्सांक्षीरसंयुतां आत्मनापिवतेक्षीरंते मासौयातिचांधतां ५ प्रसवंष्ठीवनंवह्नौकृत्वासर्वांगदाहरुक् उदरेशूलसंयु क्तोजायतेमनुजाधमइति ६ मिष्टान्नेनयआत्मानं पोषयंतिनराधमाः वाला नांवीक्षमाणानामदत्वाऽदन्तिनिःस्पृहम् ७ नहुतंनतपस्तप्तंनदत्तंकिंचब्रा ह्मणे आत्मैवपोषितोयैस्तुतत्पापंकथयामिते ८

भींनहिपीनेदेता ऐसाकामकरणेवाला अंधाहोताहै ५ प्रेति अग्निमेंलवुशंकाकर्के और थुककर्केपुरुष सर्वांगदाहरुक्होताहै अर्थात् सवनांअंगांमें दाहरोगकर्केयुक्तहोताहै और उदरविषे शूलरोगकर्केयुक्त होताहै औरसवनांपुरुषांविषे अधमहोताहै ६ मिष्टान्नेनेति और जेडअधमपुरुषमिष्टान्नकर्के अपने देहकोंपुष्टकरतेहैं और देखरहेपासमें जो वालक तिनकोंनदेकर दयासेंविना आपही भक्षणकरतेहैं ७ नेति और नहि कीताहै हवनाजिनोंनें और नहिकीत्ताहै तपजिनोंने और नहि दित्ताहै दानब्राह्मणके ताईं जिनोंनें और जिनोंने आत्माहि पुष्ट कियाहै तिनां पुरुषांदे पापका कर्म विपाक हेराजन् मैं तेरेताईं कथन करताहुं ८

यत्रेति जिस देशमें वर्षा नहिं होती और जिसदेशविषें वायुकी उत्पत्तिहै तिस देशमें क्षुधा करके पीडित होए होए तिसपापकर्मकरकेउत्पन्नहोतेहैं ९ यस्त्विति जो ब्राह्मण अपनी जातिकात्याग करके क्षत्रीके धर्म कों सेवन करताहै सो ब्राह्मण जातिसें भ्रष्ट होया होया जन्मांतरमेंक्षत्रयोनिमें उत्पन्नहोताहै इसमें असाविचारहै कि संपत्तिमें ब्राह्मणने क्षत्रियधर्म नहि सेवनकरणा परंतु विपत्तिमें दोषनहि १० वैश्येति जो ब्राह्मण लोभ और मोह करकें युक्तहोया होया वैश्यके कर्मोंकों करताहै सो द्विज जन्मांतरमें वैश्य जातिकों प्राप्तहोताहै ११ स्वधर्मेति जो ब्राह्मण अपणे धर्मसें रहित होयाहोया शूद्रके कर्म कों करताहै सो जन्मांतरमें शूद्रताकों प्राप्तहोताहै तैसेहि शुद्धवंशी जो क्षत्रयहै और वैश्यहै सोभी अपणे धर्मको छोड़कर वर्त्ते तद शूद्रत्वकों

यत्रदेशेत्वनावृष्टिर्यत्रवायुसमुद्भवः तस्मिन्देशेक्षुधार्त्ताश्चजायंतेपापकर्म्मणा ९ यस्तुविप्रत्वमुत्सृज्यक्षत्रधर्म्मंनिषेवते ब्राह्मण्यात्सपरिभ्रष्टःक्षत्रयोनौप्रजायते १० वैश्यकर्माचयोविप्रोलोभमोहव्यपाश्रयः सद्विजोवैश्यतामेतिशूद्रकर्मकरोतियः ११ स्वधर्म्मात्प्रच्युतोविप्रः सहिशूद्रत्वमाप्नुयात् क्षत्रियोवामहाबाहुर्वैश्योवाधर्म्मचारिणि १२ स्वानिकर्म्माण्यपाकृत्यशूद्रकर्म्मनिषेवते स्वस्थानाच्चपरिभ्रष्टोजायतेवर्णसंकरः १३ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रत्वंयातितादृशः शूद्रान्नेनोदरस्थेनम्रियतेगिरिपुत्रिके १४ ब्राह्मणःशूद्रतामेतिनास्तितत्रविचारणेति १५

प्राप्तहोताहै महेश्वरजी कहतेहैं हेधर्मचारिणि हेदेवि १२ इसीको स्पष्टकरके कहतेहैं स्वानीति अपणेयां कर्मोंको त्यागकरके शूद्रकेकर्मको कर्ताहै सो अपणे स्थानसें भ्रष्ट होया होया क्षत्री वा वैश्य जन्मांतरमें वर्ण संकरहोताहै १३ फेर स्पष्टके अर्थ कहतेहैं ब्राह्मणइति अथवा एह अढाश्लोक अधिकहै ब्राह्मणइति ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य तादृश होवे अर्थात् आपो अपणे कर्मको त्याग करके वर्ते सो सो शूद्रताकों प्राप्तहोताहै और महेश्वरजी कहतेहैं हेगिरिपुत्रिके हेपार्वति १४ जेकर उदरस्थ शूद्रके अन्न करके ब्राह्मण मरजावे तो जन्मांतरमें शूद्रताकों प्राप्त होताहै इसमें विचार नहिं करणा १५

अबऔरप्रकारकाकर्मविपाककहिहै मार्कण्डेयपुराणमें ० ब्राह्मणइति जो ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय अथवा वैश्य अपणे गोत्रकी कन्याकापाणिग्रहणकरे अर्थात् उसकों विवाहलए अथवा अन्यजा क्या जारसें उत्पन्नहोई २ जों कन्या उसकों विवाहलए तो ऐसाविवाह करणेसें वो जातिसें पतित होतेहैं १ यश्चेति और जो पुरुष हीनजातिकी कन्याका पाणिग्रहण करताहै कैसा वोपाणिग्रहणहै जिसकरके वर्ण क्या जातिका संयोग होवाहै अर्थात् ऐसी कन्या विवाहणेवाला जो वर्णकन्याकाहै उसीवर्णकों प्राप्तहोताहै २ अत्रेति और इस संसारमें निषिद्धवस्तुका जो आचरणकरणा क्या सेवना जैसें मांसभक्षणादिकर्म और विहिताऽकरण

मार्कण्डेयपुराणे ब्राह्मणः क्षत्रियोवैश्यः स्ववर्णेपाणिसंग्रहं कृत्वाचह्यन्य जापाणेः पततिन्रृपसंग्रहात् १ अन्यजा जारजा. ॥ यश्चयस्यास्तुहीनायाःकुरुतेपाणिसंग्रहम् कृत्वाचवर्णसंयोगंसोऽपितद्वर्णभाग्भवेत २ ॥ अत्रनिषिद्धाचरणविहिताकरणेंद्रियाऽनिग्रहरूपं हेतुत्रयं पापस्योक्तंतत्र निषिद्धाचरणविपाकविशेषोमानवे धान्यंहत्वाभवत्याखुः कांस्यंहंसोजलप्लवः मधुदंशःपयःकाकोरसंश्वानकुलोघृतम् १ प्लवःजलपक्षिविशेषः दंशोवनमक्षिका रसं इक्ष्वादि तच्च गुडव्यतिरिक्तंवोध्यम् कांस्यंहत्वा हंसःमधुहत्वादंश एवंसर्वत्रसंबंधः

क्या शास्त्रविहितकर्म संध्या और यज्ञादि तिसका त्यागकरणा और इंद्रियोंकानहिरोकणा एहतीनही पापके कारणहैं तिनके मध्यमें निषिद्धाचरणसें उत्पन्नहोया जो पाप तिसकाकर्मविपाक विशेषकर्केकिहाहै मनुकेग्रंथमें ॐ धान्यमिति धान्यकों हरके अर्थात् चुराके पुरुष आखु क्या चूहाहोताहै और कांस्यकों चुराके हंसहोताहै और जलनूं चुराके प्लवहोताहै क्याजलका पक्षीहोताहै और मखीरकोंचुराकरके दंशहोताहै अर्थात् मच्छरहोताहै और जलकों हरके काक होताहै और रस क्या गुडकोछोडकरके गन्योंकों और सौंफादिककों चुरा करके श्वान क्या कुत्ताहोताहै और घृतकों हरके नकुलहोताहै अर्थात् नौलहोताहै १

मांसमिति मांसकोंचुराकर्के पुरुष गृध्र क्या इल्ह होताहै और वपा क्या मित्रजतिसकोंचुराकर्के मद्गुहोताहै अर्थात् जलचरपक्षीवगुलेकाभेदहोताहै और तेलकोंचुराकर्के तैलपायकनामकर्के पक्षीहोताहै और लवणकों चुराकर्के चींगीबाक् क्या चिडानाम कर्केपक्षी होताहै और दहिकों चुराकर्के वगुलाहोताहै ॥ २ ॥ कौशेयमिति और पुरुष रेशमीवस्त्र चुराकर्के तित्तिरहोताहै और क्षौमकों क्या अलसीवस्त्रकों चुराकर्के डड्डूहोताहै और कर्पासकावस्त्र चुराकर्के कूंज नामा पक्षीहोताहै और अग्निकों चुराकर्के गोधा क्या घोनामकर्के तिर्यक्जीवहोताहै और गुड

मांसंगृध्रोवपांमद्गुःतैलंतैलपकःखगः चींगीवाकस्तुलवणंवलाकःशकुनिर्द धि २ वपांहत्वामद्गुनामाजलचरोभवति तैलंहत्वातैलपायकाख्यः पक्षी लवणंहत्वा उच्चैःस्वरः कीटः । अन्यत्सुगमम् ॥ कौशेयंतित्तिरिंहत्वाक्षौ मंहत्वातुदर्दुरः कर्पासतांतवंक्रौंचोगोधाग्निवाग्गुदोगुडम् ३ कीटकोशनि मितंवस्त्रं हत्वातित्तिरिनामापक्षीस्यात् क्षौमंहत्वामंडूकःअग्निंहत्वागोधाभव ति गुडंहत्वा वाग्गुदनामाशकुनिर्भवति॥ छुच्छुंदरिः शुभान्गन्धान्पत्रशाकं तुवर्हिणः श्वावित्हत्वातुसिद्धान्नमकृतान्नंतुशल्यकः ४ सुगंधिद्रव्याणि हत्वाछुच्छुंदरिर्भवति वास्तुकादिपत्रशाकंहत्वा वर्हिणःसिद्धान्नमोदना दिकं हत्वा शशकःअकृतान्नंव्रीहियवादिकंहत्वाशल्यकोभवति

चुराकर्के वाग्गुदक्या खड्डकनामा पक्षीहोताहै ३ छुच्छुंदरिरिति सुगंधिवाले द्रव्यकोंचुराकर्केछुछुं दरिक्या घीसनामा जीवहोताहै और पत्रशाक क्या वाथुसेंआदलेकर पत्रोंवालाशाकतिसके चुरा णे कर्के मोरहोताहै और सिद्धान्नक्या पकाया हुयाअन्न भत्तसें आदलेकर तिसके चुराणे वाला श्वावित् होताहै अर्थात् सिहाहोताहै औरअकृतान्न क्या जो नहि सिद्धकीताहुया क्या धान्यय वादिक तिसके चुराणे वाला शल्यकहोताहै अर्थात नकॅल वाला सिहा होताहै ४ इसीको मूलमै स्पष्टकर्के किहाहै सुगंधीति ॥

वक इति और पुरुष अग्निकों चुराकरके बक क्या वगुला होताहे और पीछे जो किहाहे कि अग्निकों चुराके गोधा होताहे इसवास्ते विकल्प सिद्धहुया अर्थात् अग्निकेचुराणेकर्के यह दोनों योनियां पुरुषकोंहोतीयांहैं इसकारणतें पुनरुक्ति नहिजानणी और उपस्कर क्या गृहके उपयोगि जो वहारिआदक हैं तिनके चुराणे वाला गृहकारी कीटहोताहे अर्थात् भवारण होताहे और रक्तवस्त्र क्या कुसुंभेकेसाथ रंगेहोए तिनकों चुरा कर्के जीवजीवक होताहे अर्थात् चुकोरनाम कर्के पक्षी होताहे ५ वृक इति और पुरुष मृगनुं क्या हरणादिकांनुं और हाथीनुं चुराकर्के वृक क्या भगहाड होताहै और घोडेनुंचुराके चित्रा होताहै और फलमूलनुं चुराकर्के मर्कट क्या

बकोभवतिहत्वाग्निंगृहकारीह्युपस्करं रक्तानिहत्वावासांसिजायतेजीवजीवकः ५ अग्निंहत्वावकाख्यः पक्षीजायते गृहोपयोगिमार्जन्यादिकंहत्वागृहकारीकीटः ॐ कुसुंभादिरक्तवस्त्राणि हत्वाचकोराख्यः पक्षीजायते। वृकोमृगेभव्याघ्रोश्वंफलमूलंतुमर्कटः स्त्रीमृक्षःस्तोककोवारिपानान्युष्ट्रःपशूनजः ६ मृगंवाहस्तिनंहत्वावृकाख्योहिंस्रपशुर्भवति अश्वादिकंहत्वा व्याघ्रोभवति फलमूलंहत्वामर्कटः स्त्रींहत्वाऋक्षः स्तोककःचातकाख्यःपक्षी अजःछागः यद्वातद्वापरद्रव्यमपहृत्यवलान्नरः अवश्यंयातितिर्यक्त्वंजग्ध्वाचैवाहुतंहविः ७ नरोवलात् यत्किंच परद्रव्यादिकमपहृत्य अग्नौपुरोडाशादिकंहविरहुतंभुक्त्वाचतिर्यक्त्वंयाति

बानर होताहै और स्त्रीकों चुराकर्के ऋक्ष क्या ऋच्छहोताहै और जलकों चुराकर्के स्तोककक्या बबीया होताहै और पानानि क्या सर्वतादिक तिनकों चुराकर्के उष्ट्र क्या ऊट होताहे और पशुयांकों चुराकर्के बकरा होताहै ६ यद्वेति और पुरुष जिस किसीकाधन चुराकर्के तिर्यग् योनि जो पशु पक्षीसें आदलेकरहैं तिनांको प्राप्तकोंहोताहै और पुरोडाशादिक जो है हविः अग्निभाग तिसकों चुराकर्के भी तिर्यग् योनिको प्राप्त होताहै ७ इसमें एह अभि प्रायहै कि प्रथम अग्निविषे पाकर्के पीछे शेष भोजन करणे योग्यथा ऐसा तिसने नहि किया

स्त्रियइति और स्त्रियांभी पूर्वकडा जो प्रकार तिसी करके धान्यादिकांनू चुराणे वालीयां धान्यादिकांनूं चुराणे वाले जो पुरुष जेडे चुएसें आदलेकर कहेहैं तिनां जीवादीयां स्त्रीयां होतीयांहैं जैसें धान्यकों चुराकरके पुरुष चूत्रा होताहै इसी प्रकार धान्यकों चुराकरके स्त्री चुई होवीहै इसीप्रकार आगेभी जाणलेणा ● एवमिति निषिद्धाचरणक्या मांसभक्षणादि तिनका कर्मविपाक कहकरके अब विहिताकरणक्या शास्त्रविहितकर्मोंकात्याग तिस पापका कर्मविपाककहतेहैं ८ स्वेभ्यइति और आपदकालसें विना अपणे २ धर्मसें वर्ण पतित होजाणतां ऐसे पापी संसारानूं क्या जन्मानूं प्राप्त होकरके शत्रूयांके दासहोतेहैं अर्थात् शत्रूयांकी सेवाकरणे

स्त्रियोप्येतेनकल्पेनहृत्वादोषमवाप्नुयुः एतेषामेवजंतूनांभार्यात्वमुपयांति ताः ८ स्त्रियोपिएतेनपूर्वोक्तप्रकारेण पूर्वोक्तधान्यादिकमपहृत्य पूर्वोक्तानां आखुवादिजंतूनांभार्यात्वंप्राप्नुवंति ताःस्त्रियः॥ एवं निषिद्धाचरणफलान्यभिधायाऽधुनाविहिताकरणफलविपाकमाह । स्वेभ्यःस्वेभ्यस्तुकर्मभ्यश्च्युता वर्णाविनापदम् पापान्संसृत्यसंसारान्दासतांयांतिशत्रुषु ९ ब्राह्मणादयो वर्णाआपदंविना स्वस्वपंचयज्ञादिकर्माणित्यक्त्वापापिनः कुत्सितयोनीःसंप्राप्यपुनर्जन्मांतरेशत्रुषुदासतांयांति। वांताश्युल्कामुखःप्रेतोविप्रोधर्मात्स्वकाच्च्युतः अमेध्यकुणपाशीचक्षत्रियःकटपूतनः १० विप्रःस्वधर्मात्च्युतः छर्दितभुक्ज्वालामुखः प्रेतविशेषोजायते एवंक्षत्रियःकटपूतनाख्यःप्रेतः॥

वाले होतेहैं ९ ब्राह्मणादय इति और ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य और शूद्र इह चारोवर्ण आपणेयां आपणेयां पंचयज्ञानूं आपदसें विनाहि त्यागदेणतां सो पापी खोटीयांयोनीयांनूंप्राप्त होकरके जन्मान्तरमें शत्रुयांदी सेवाकरणेवाले होतेहैं ॥ वांतेति और जो ब्राह्मण अपणे धर्मसें पतित होताहै सोभी वांताशी प्रेत होताहै अर्थात् उद्वमनके भक्षण करणे वाला प्रेतहोताहै और उल्कामुखहोताहै अर्थात् अग्निकी तरह उसका मुख होताहै और इसीतरह जो क्षत्रिय अपणे धर्मसें पतित होताहै सो जन्मांतरमें कटपूतन नाम करके प्रेतहोताहै अर्थात् दुर्गंधि विशिष्ट प्रेतहोताहै १०

अव जो मार्कण्डेयपुराणविषें विशेषकिहाहै सो कहतेहैं न्यासेति जो पुरुष न्यास क्या अमानत
तिसके चुराणे वाला नरकमें प्राप्तहोताहै फेर नरककोंभोगकर क्रिमि क्या कीटयोनिकों प्राप्तहो
ताहै और धान्यक्या व्रीह्यादि और यव और तिल और माष और कुलत्थ और सरषां औरचखे
१ सस्येति और सस्यक्या खेतीयोंमें होणेवाले कैं तरहाके अन्न तिनां सवनांकों चुरा करके वडा
जंतु क्या जीव चैतन्यतासें रहित अर्थात् थोडी चैतन्यता वाला और वडाहै मुखजिसका और
वज्रकी न्याईं कठोर चूया होताहै २ भोजनमिति और जो पुरुष भोजनकों चुराताहै सो मक्षि
काहोताहै और दूधकोंचुराकरके नरकमें प्राप्तहोताहै फेर नरकभोगकरके बिल्लाहोताहै ३ ● ति

अथमार्कण्डेयपुराणेविशेषः न्यासापहर्त्तानरकाद्विमुक्तोजायतेक्रिमिः धा
न्यंयवांस्तिलान्माषान्कुलत्थान्सर्षपांश्चणान् १ सस्यान्यन्यानिवाहृत्वा
महाजंतुरचेतनः संजायतेमहावक्रोमूषकोवज्रसन्निभः २ भोजनंचोर
यित्वातुमक्षिकाजायतेनरः हृत्वादुग्धंतुमार्जारोजायतेनरकाच्च्युतः ३
तिलपिण्याकसंमिश्रमन्नंहृत्वातुमूषकः घृतंहृत्वातुनकुलःकाकोमद्गुरजा
मिषं ४ श्येनोमार्गामिषंहृत्वाचीरीलवणहारकः चोरयित्वापयश्चापिवला
कासंप्रजायते ५

लेति और तिलोंकोपिण्याक क्या खलकरकेंयुक्त जो अन्न तिसनुंचुराके पुरुष चूआ होताहै और
घृतकों चुराकरके नकुल होताहै और पिछे जोकिहाहैं कि घृतके चुराणे वाला नकुलहोताहै
सोमनुजीका मतहै और इसजगामें मार्कण्डेयजीका मतहै इसवास्ते पुनरुक्ति नहि जाननी
और मद्गुरक्या जलचरपक्षी तिसकेकचे मांसकों चुराकरके पुरुष काक होताहै ४ श्येनइति और
मृगक्या हरणादिक तिसकाकचामांस चुराणे वाला वाजहोताहै और लवणके चुराणे वाला चीं
रीहोताहै अर्थात् विंडानामक एक जीवहोताहै और दूधकोंचुराकरके वलाकाहोताहै वलाका
क्या वगुलेदाभेद एकपक्षी होताहै ५

यस्त्विति और जो पुरुष तेलकों चुराताहै सो तैलपायीनामकर्के पक्षी होताहै और मखीरकों चुराणेवाला दंश क्या मच्छर होताहै और घृतकों चुराकर्के पिपीलिका क्या कीडी होताहै इस जगा स्त्री लिंग विवक्षित नहि क्योंकि पुरुषका कर्म्म विपाकहै ६ घृतमिति घृतकर्के इसजगामें वहुत सुगंधिकर्के युक्त और वहुत स्नेहकर्के युक्त द्रव्य लेणा क्योंकि गव्यघृतपीछे कह चुकेहैं इसकारणतें ० चोरयित्वेति ० और पुरुष निष्पाव क्या सेम और मटर तिनकों चुराकर्के गलगंडुक क्या गिल्हडवाला होताहै और आसनकों चुराकर्के तित्तिर होताहै ७ अपइति और पुरुष जलकों चुराकर्के काक होताहै और कांस्यकों चुराकर्के हारीत नामक पक्षीहोताहै और पीछेकहचुकेहैं कि कांस्यकों चुराणेवाला हंसहोताहै सो मनुजीकामत

यस्तुचोरयतेतैलंतैलपायीसजायते मधुहत्वानरोदंशोघृतंहत्वापिपीलिका ६ घृतमत्रगंधवहुलस्नेहपरम् गव्यादिघृतस्यपूर्वमुक्तत्वात् ॥ चोरयित्वातु निष्पावान्जायतेगलगंडुकः आसनंचोरयित्वातुतित्तिरित्वमवाप्नुयात् ७ अपोहत्वातुपापात्मावायसःसंप्रजायते हृतेकांस्येचहारीतःकपोतोरौप्यजैर्हृते ८ जीवजीवकतांयाति रक्तवस्त्रापहन्नरः छुच्छुंदरिःशुभान्गंधान् सस्यंहत्वाशशोभवेत् ९ पंडःपालालहारीणःकाष्ठहृद्घुणकीटकः पुष्पापहृद्दरिद्रश्चपंगुर्यानापहारकः १०

है ० इसजगामें मार्कंडेयजीकामतहै इसवास्ते पुनरुक्ति नहि जानणी और चांदीके पात्र चुराणेमें कपोत क्या कवूतरहोताहै ८ जीवेति और रक्तवस्त्र क्या कुसुंभे कर्के रंगे होए वस्त्रके चुराणे वाला पुरुष जीवजीवकताकों प्राप्तहोताहै अर्थात् चकोरहोताहै इसजगाभी विरोध पूर्वोक्त रीतिसें दूरहोताहै ० और सुंदर गंधिवाले द्रव्यके चुराणेवाला छुछुंदरि क्या चीसहोता है और सस्यक्या पक्कीहोई खेतीतिसकेचुराणेवाला शशहोताहै अर्थात् सेहाहोताहै ९ पंडइति और पालाल क्या पराली तिसके चुराणे वाला पंडहोताहै अर्थात् नपुंसक होताहै और काष्ठके चुराणे वाला घुणानामकर्के काष्ठका कीडाहोताहै ० और पुष्पोंके चुराणेवाला दरिद्री होताहै और यान क्या पालकी तिसके चुराणेवाला पंगुहोताहै अर्थात् लूह्लाहोताहै १०

शाकेति श्रौर शाक चुराणेवाला हारीतनामकर्के पक्षीहोताहै श्रौर जलके चुराणेवाला बवीया पक्षी होताहै॰ श्रौर भू क्या पृथिवी तिसकोंचुराणेवाला रौरवसें श्रादलेकर जो नरक वडेभया नक तिनानू प्राप्तहोताहै ११ तृणेति फेर तृणयोनिकोप्राप्तहोताहै फेर गुल्महोताहै गुल्म इसकों कहतेहैं कि जो शाखा श्रौर वेलसें रहित पृथिवीसें उत्पन्नहुया २ होवे फेर लताहोताहै लता क्या पुष्पों कर्के युक्त श्रौर फलसें रहित जैसें खनटालुश्रादिक श्रौर फेर वल्ली होताहै वल्ली उसकों कहतेहैं कि जो फल पुष्पों कर्के युक्त होवेहै फेर त्वक्सारहोताहै श्रर्थात् वंज होताहै॰ फेर सामान्य वृक्ष होताहै १२ श्रव शंख श्रौर लिखित जो श्रौर प्रकारकाकर्म विपाककहतेहैं- वेश्मापहारीति कि दूसरेंदे घरकेहरणेवाला पुरुष श्रद्रि होताहै - श्रर्थात् पर्वतोंमे रहणेवाला इक स्थूल जीव होताहै- श्रौर जलके चुराणेवाला शिशुमारनामकर्के एक जलचर जीवहोताहै

शाकहर्त्ताचहारीतस्तोयहर्त्ताचचातकः भूहर्त्तानरकान्गत्वारौरवादीन्सुदारुणान् ११ तृणगुल्मलतावल्लीत्वक्सारतरुतांगतइति १२ शंख लिखितौ वेश्मापहारीश्रद्रिः॰परजलापहारी शिशुमारः ०सस्यापहारीकपोतः- क्रव्यापहारीवायसः - ताम्रापहारीवल्गुलः ॰ श्रपूपहारी प्रेतः - शास्त्रापहारीजडः-छत्रापहारी कारंडः-गंधापहारीपतंगः-ध्वजापहारीकृकलासः शाकापहारीपशुः ॥ छागविडालाखूनामन्यतमइत्यर्थः ॥ शय्यापहार्य्यशयनः- पुष्पापहारीदुर्गंधी॰

श्रौर सस्यक्या पक्कीहोई खेतीके चुराणेवाला कबूत्तर होताहै ० श्रौर मांसके चुराणेवाला काक होताहै श्रौर ताम्रके चुराणेवाला वल्गुलक्या तैल पायी नामकर्के पक्षी होताहै • श्रौर श्रपूप क्या पूडे तिनके चुराणेवाला प्रेत होताहै ० श्रौर शास्त्रके चुराणेवाला जड क्या मूर्ख होताहै • श्रौर छत्रक्या छतडी तिसके चुराणेवाला कारंड क्या वगुलेकाभेद होताहै • श्रौर सुगंधिविशिष्ट द्रव्यके चुराणेवाला पतंग होताहै श्रौर ध्वजाके चुराणेवाला किरला होताहै श्रौर शाकदे चुराणे वाला पशुहोताहै पशुकर्के इसजगामे बकरा श्रौर बिल्ला श्रौर चूया इनतीनोंकाग्रहणहै श्रर्थात् इनांविचो एकहोताहै श्रौर शय्याकेचुराणे वाला श्रशयनहोताहै श्रर्थात् निद्रासेरहित होताहै • श्रौर पुष्पोंके चुराणेवाला दुर्गंधिविशिष्ट जीवहोताहै

फलेति और फलके चुराणे वाला अफलीहोताहै अर्थात् संततिसें रहित होताहै और दीपकके चुराणे वाला कौशिकहोताहै अर्थात् उल्लू होताहै • और भूमीके चुराणे वाला नकुल होताहै• यद्देति और दूसेरेका जो कुछ थोडा अथवा वहुत चुराकर्के उसी उसी योनिको प्राप्त होताहै भोगानुरूपतें अर्थात् जो जो उनकाभोगहै उसी २ भोगदी सादृश्यतासें १ और जो वैश्य अपणे धर्मसें पतित होताहै सो पाकनूं भक्षण करणे वाला मैत्राक्षज्योतिक नामककें प्रेतहोताहै और जो शूद्र अपणे धर्मसें पतित होताहै सो चैलाशक नामककें प्रेतहोताहै २ और इसीका अर्थ मूलमें स्पष्टकर्के किहाहै वैश्य इत्यादि ● इसके आगे विहिता

फलापहार्य्यफली-दीपापहारीकौशिकः-भूम्यपहारीनकुलःयद्वातद्वापिपारक्यंस्वल्पंवायदिवावहु हत्वावैयोनिमाप्नोतितत्तद्भोगानुरूपतइति १ मैत्राक्षज्योतिकःप्रेतोवैश्योभवतिपूयभुक् ० चैलाशकश्चभवतिशूद्रोधर्मात्स्वकाच्च्युतः २ वैश्यःस्वकर्मभ्रष्टश्चेत्तर्हिमैत्राक्षज्योतिकनामापूयभक्षःप्रेतोभवतिशूद्रश्चैलाशकःप्रेतोभवति पृषोदरादित्वाज्ज्योतिषष्षकारलोपः ● अथेंद्रियानिग्रहहेतुकःकर्म्मविपाकः। यथायथानिषेवंतेविषयान्विषयात्मिकाः तथातथाऽकुशलतातेषांतेषूपजायते १ तेषुविषयेषु अकुशलता उपजायतेऽन्यत्सुगमम् ॥ तेऽभ्यासात्कर्मणांतेषांपापानामल्पवुद्धयः संप्राप्नुवंतिदुःखानितासुतास्विहयोनिषु २ तेऽल्पबुद्धयःपापानांकर्मणामभ्यासात् तास्विति तामिस्रादिनारकीयासु दुःखानुभवं संप्राप्नुवंति

करण और निषिद्धाचरण जो दोनों पाप तिनकों कहकर अव जो इंद्रियोंके नाशेकणें कर्के जो पाप उत्पन्न होताहै तिसका कर्मविपाक कहतेहैं • यथेति विषयोंमें आसक्त है आत्मा जिनोंका ऐसे जो पुरुष अतिशयकर्के विषयांकोंसेवतेहैं तिनां कों तिनां विषयां विचों अकुशलता क्या दुर्वुद्धि प्राप्तहोतीहै अर्थात् कल्याणनूं नाहिं प्राप्तहोतेहैं १ तइति और सोई पुरुष अल्पवुद्धिवाले तिनों पापकर्मोंके अभ्यासकरणेसें अर्थात् वारंवार करणेसें तिनांतिनां नारकीययोनियां विषे प्राप्तहोएहोए दुःखानुभवनूं क्या दुःखके साक्षात्कारनूं प्राप्तहोतेहैं ॥ २ ॥

तामिस्रादिष्विति और वो जोपूर्वोक्तपुरुषहैं सोतामिस्रादिनरकोंविषे निवर्त्तननूं प्राप्तहोतेहैं अर्थात् अतिशयकरके स्थितिनूं प्राप्तहोतेहैं और असिपत्रवनसें आदलेकर जो नरक तिनकेविषेंभी वन्धन पूर्वकछेदनकों प्राप्तहोतेहैं ३ विविधाइति और वोईपुरुष नानाप्रकारकीयां जो पीडा तिनकों प्राप्त होतेहैं और काक और उल्लूयों करके भक्षणनूं प्राप्तहोतेहैं कुत्सित जो जल और वालुका क्या रेत तिनसंबंधि जो तापक्या दुःखतिनांनूं प्राप्तहोतेहैं और दारुणजो कुंभीपाकादिनरकतिनानूं प्राप्त होतेहैं ४ संभवांश्चेति और सोई पुरुष नित्यप्रतिहैं वहुतदुःखजिनांविषे ऐसीयां जो तिर्यग्योनियां तिनकेविषे जो नानाप्रकारके जन्म तिनांकों प्राप्तहोतेहैं और शीतकरके और धुप्पकरके जो

तामिस्रादिषुचोग्रेषुनरकेषुनिवर्त्तनम् असिपत्रवनादौचवंधनच्छेदनानिच
३ तामिस्रादिषु असिपत्रवनादौच नितरांस्थितिं वंधनच्छेदनादीनिच प्रा
प्नुवंतीत्यर्थः विविधाश्चैवसंपीडाःकाकोलूकैश्चभक्षणं कर्दभवालुकातापान्
कुंभीपाकांश्चदारुणान् ४ काकाद्यैःभक्षणंकुत्सितमंभोवालुकाचतत्संवंधि
तापांश्च प्राप्नुवंति॥ संभवांश्चवियोनीषुदुःखप्रायासुनित्यशः शीतातपा
भिघातांश्च विविधानभियांतिच ५ नित्यंदुःखवहुलासुतिर्यगादिजातिषु
नानाविधान्संभवान् जन्मानि अभियांतिप्राप्नुवंति ॥ असकृद्गर्भवासेषु
वासंजन्मचदारुणं वन्धनानिचकष्टानि परप्रेष्यत्वमेवच ६ गर्भस्थानेपुनः
पुनर्वासं जन्म दारुणं चसंप्राप्नुवंतीत्यर्थः॥ वंधुप्रियवियोगांश्च संवासंचै
वदुर्जनैः द्रव्यार्जनंचनाशंच मित्रामित्रस्यचार्जनम् ७ ॥

नानाप्रकारके अभिघात क्यावाधातिनांनूं प्राप्तहोतेहैं ५ असकृदिति और वारंवार गर्भ विषें निवास करतेहैं और दारुण क्या भयानकजन्मकों प्राप्तहोतेहैं और वन्धनकों प्राप्तहोतेहैं और परप्रेष्यताकों प्राप्तहोतेहैं अर्थात् दूसरेके दूतहोतेहैं ६ वंध्विति फेर अपणे संवंधि और जो प्यारे तिनके वियोगकों प्राप्तहोतेहैं फेर खोटे पुरुषोंके साथ निवासनुं प्राप्तहोतेहैं फेर जो द्रव्य जोडयाहै तिसीका नाश होताहै फेर तैसेहि मित्र और अमित्रका अर्जन होताहै अर्थात् जो मित्रहै सोभी अमित्र होजाताहै ७

जरामिति फेर नहिहैं हटानेमें उपाय जिसका ऐसी जराकों और व्याधियों करकें पीडाकों प्राप्त होताहै फेर अनेक प्रकारके क्लेशांनु प्राप्तहोताहै फेर दुर्निवार जो मृत्यु उसको प्राप्तहोताहै ८ अब और प्रकारका कर्मोंका फलकहतेहैं जो किहाहै ब्रह्मांडपुराणविषें ॥ धर्मेति जो पुरुष धर्मशास्त्रकों नहि जानता और लोकोंको प्रायश्चित्त देताहै सो राजयक्ष्मरोग करके और बडी पीडाकरके युक्त होताहै १ और किहाहै चतुर्वर्गचिंतामणीविषें अर्थात् हेमाद्रिकृतग्रंथविषे शूलेनेति जो पुरुष शूल करके पुरुषांको मारताहै सो शूलरोग वाला होताहै और जो गोगामीहै क्या

जरांचैवाप्रतीकारांव्याधिभिश्चोपपीडनम् क्लेशांश्चविविधांस्तांस्तान्मृत्युमेवचदुर्जयम् ८ अप्रतिकारांअविद्यमानतद्दूरीकरणप्रकारांप्राप्नुवंति ॥ दुर्निवारंमृत्युंच ॥ ॥ अथान्यप्रकारेणकर्मविपाकउच्यते ब्रह्माण्डपुराणे ॥ धर्मशास्त्राण्यविज्ञायप्रायश्चित्तंददातियः राजयक्ष्माभवेत्तस्यरोगपीडातिदारुणा ॥ १ ॥ चतुर्वर्गचिंतामणौ ॥ शूलेनशूलीभवति मनुष्याणांचहिंसकः गोगामीकटिशूलीस्यात् जन्मजन्मनिमानवः १ ॥ वृद्धशातातपः ॥ शूद्रस्यैवतुभुक्त्वान्नं अव्रतस्यद्विजस्यच शूलव्याधिर्भवेन्नित्यमजीर्णान्नेनपीडितः १ कर्मविपाकसंग्रहे ॥ विश्वस्तविषदाताच प्लीहवान्जायतेनरः चशब्दाच्छूलीच ॥

गौकेसाथ गमनकरताहै सो जन्मजन्मविषें कटिशूल करकें युक्तहोताहै १ और वृद्धशातातप जीभी कहतेहैं शूद्रस्येति जो पुरुष शूद्रके अन्नकोंभक्षण करताहै व्रतसें क्या यज्ञोपवीतसें रहित जो द्विज उसके अन्नकों भक्षण करताहै सो शूल व्याधि वाला होताहै और अजीर्ण अन्नकरके पीडित होताहै अर्थात् उसकों भक्षण कीता हुया अन्न पचता नहिहै १ और किहाहै कर्मविपाक संग्रह विषे ॥ विश्वस्तेति जो पुरुष विश्वास देकर विषदेताहै सो लिप्फ और शूलरोग वाला होताहै और चकारसें क्या जानतेहैं कि शूल रोगवालाभी होताहै ॥

अब और प्रकारका कर्म विपाक कहतेहैं जो किहाहै कर्म विपाक संग्रहमें. श्रुतेति जो ब्राह्मण
वेदाध्ययन कर्के युक्तहै और निर्धनहै और याचनाकररहिाहै ऐसे ब्राह्मणनू दानके वास्ते बुलाकर्के
जो पुरुष फेर दान नहि देताहै १ सइति सो उदरविषें शूलरोग कर्के युक्त होताहै और तैसेंही
उन्मादी क्या भूतावेशवालाभीहोताहै २ मैथुनमिति और जो पुरुष माता पिताके मैथुनकोंश्रवण
करताहै सो कानोंमें शूल रोगकर्केयुक्तहोताहै और बधिर क्या बोला होताहै और कपाल विषें
किंचित् असह्यशब्दवान् होताहै अर्थात् थोडाशब्दसुननेसेंभी उसकेकपालमें वडीपीडा होतीहै
३ नग्नामिति और सूर्यके अस्तकालमे और उदयकालमें नग्नस्त्रीकों देखकर्के पुरुष नेत्र शूली-
होताहै अर्थात् उसके नेत्र शूलरोगकर्के युक्त होताहै और दृष्टिकर्के देषणेंनूभी समर्थ नहि

कर्म्मविपाकसंग्रहे॥ श्रुताध्ययनसंपन्नंयाचितारमकिंचनम् ब्राह्मणंदातुमा
हूयदानार्थेनददातियः १ सभवेज्जठरेशूलीतथोन्मादीचकर्हिचित् २ मैथु
नंशृणुयात्पित्रोःकर्णशूलीभवेन्नरः स्याच्चैववधिरःकिंचित्कपालेऽसह्यशब्द
वान् ३ नग्नांपरस्त्रियंदृष्ट्वासूर्य्यस्यास्तमयोदये नेत्रशूलीभवेत्सोपिनेक्षि
तुंक्षमतेदृशा ४ कर्म० ॥ मंगलेषुचकार्येषुसततंकोपवान्नरः उष्णज्वराभि
भूतःस्यात् दारहीनश्चजायते १ उमामहेश्वरसंवादे-॥ कृतघ्नोजायतेमर्त्यः
कफवान्श्वासकासवान् उष्णज्वरीचनित्यंहिपित्तरोगसमन्वितः १

होताहै ४ अब और प्रकारकाकर्म विपाक कहतेहैं ※ मंगलेष्विति जो पुरुष मंगलकार्य्यों विषें
क्या विवाहादि विषें निरंतर विघ्न करताहै सो उष्ण रोगकर्के अर्थात् गरमीके रोगकर्के युक्त हो
ताहै और स्त्रीसें हीन होताहै १ अब और प्रकारकाकर्म विपाक कहतेहैं जो किहाहै उमामहेश्व
रके संवादमें ※ कृतघ्नइति जो कृतघ्न पुरुषहै अर्थात् दूसरेके उपकारकों नहि जानताहै सो कफ
और दम और गरमीका ज्वर और पित्तरोग इनां कर्के नित्यहि युक्त होताहै इसमें एह विचार.
है कि उपकार करणे वाले कों जो जानताहै तिसका हृदय शीतलहै निष्कपटहोणे कर्के और
जो औसा नहिहै उसकी हृदयमें तापहै अथवा उपकार वालेका हृदय उसने तपायाहै इस कर्के
पित्तज्वरहोणा उसको उचितहै १

अब और प्रकारकाकर्मविपाककहतेहैं जो किहाहै कर्म संग्रहाविषे. कुरुक्षेत्रेति. जो पुरुष कुरुक्षेत्रदेशविषे और ग्रहणकालविषे अर्थात् ग्रहणकेलगेहुये महादानलेताहै अर्थात् हाथी और घोडे और सुवर्णइत्यादिलेताहै अथवा निषिद्धवस्तुलेताहै १ अपात्रेति जो आप दानकापात्रनाहिहै और निषिद्धदातासें दानलेताहै सो पापीश्वासकासरोगकर्के और वक्षिविषेस्थित जो किडे उनोंकर्के पीडाकों प्राप्तहोताहै फेरकंडूसेंआदलेकर्के जो रोग उनोंकर्के पीडाकों प्राप्तहोताहै. २ अबइसीकोंफेरकहतेहैं जो किहाहै पद्मपुराणविषे ॥ श्वासेति जो अपराधसेंविना किसीको कैदकरणेसें पुरुष श्वासकासरोगवालाहोताहै. और इसीकाअर्थस्पष्टकरके मूलमेलिखाहै ॥ वंद्यामिति अब और कर्म विपाककहतेहैं अद्राविति. पर्वतविषे और पुण्यजगाविषे और रस्तेविषे और,

कर्म-॥ कुरुक्षेत्रादिदेशेषुकालेषुग्रहणादिषु महादानानिगृह्णीयान्निषिद्धान्यथवास्वयम् १ अपात्रभूतोदातृभ्योनिषिद्धेभ्यश्चमानवः सपापःश्वासकासैश्चकुक्षिस्थक्रिमिभिस्तथा २ पीड्यतेवहुशोरोगैःकंडूत्याद्यैश्चपीडितः पद्मपुराणे-॥ श्वासकासयुतोमर्त्योवंदिग्रहणतोभवेत्- वंद्यांकारायांकस्यचिदपराधहीनस्यपातनात्भवेदित्यर्थः ॥ कर्म-॥ अद्रौमार्गेनदीतीरे छायायांपुलिनेनरः मूत्रंपुरीषंवल्मीकेयःप्रमुंचेज्जलेपिवा १ श्वयथुव्याधिमाप्नोतीत्येवमाहसदाशिवः ॥ छायायामितिवृक्षदेवालयच्छायायां मूत्रपुरीषग्रहणंष्ठीवनादेरुपलक्षणम्- अद्र्यादिग्रहणंच पुण्यस्थानोपलक्षणार्थम् ॥ तत्रवृद्धवौधायनः ॥ विघ्नकर्त्ताचभोक्तृणांशोफीभवतिमानवः

नदीके तीरविषे और वृक्ष और देवताके मंदिरकीछायाविषे और तडागकेकनारे. और वर्मीविषे. और जलविषे जो पुरुष मूत्र और विष्ठाकरताहै सो श्वयथुव्याधिकोंप्राप्तहोताहै अर्थात् उसकोंसोजा रोगहोताहै एहशिवजीकहतेहैं और इसीकाअर्थस्पष्टकर्के मूलमे लिखाहै. छायायामिति. ॥ १ और कर्मोंकाफल वृद्ध वौधायनजीकहतेहैं. विघ्नेति.जो पुरुषभोजनकर्तयोंमे विघ्नकरताहै सो सोजे रोगवालाहोताहै. इसमेंभी योग्यताविचर ऐसाहै कि मूत्रपुरीषके परित्यागसें और दूसरेकेभोजनके विघ्नकरणेसें अपणेभोजनकीसिद्धिसेंपेहपुष्टिकी संभावनाहोई तिसपापकाफल सोजारोगहोणाउचित है जिसकर्के उहदेहकी पुष्टिस्वरूपहै

अब और प्रकार कहतेहैं जो किहाहै कर्मविपाक संग्रहमें० देवेति देवता और ब्राह्मण तिनके द्रव्य चुराणेवाला पांडुरोगकर्के युक्तहोताहै ॥ सोई किहाहै शौनक जीने।० अन्त्यजेति- कि अन्त्यजा क्या चांडालकी स्त्री तिसके साथ गमन करणे वाला पांडु रोगकर्के युक्तहोताहै० ॥ इसीमें वृद्धशातातपजी कहतेहैं ॥ तरक्षेति कि तरखदे मारयांहोयांभी पुरुष पांडुरोगकर्के युक्तहोताहै० ॥ अब ब्रह्माजी और प्रकारकहतेहैं यज्ञेति यज्ञविषे विघ्न करणेवाला पुरुष अंडवृद्धिरोगकर्केयुक्तहोताहै० ॥ अब और प्रकार कहतेहैं शातातपजी ॥ जात्युत्तमेति कि जो पुरुष उत्तम-जातिकी स्त्रीके साथ गमन करताहै सो मस्तकव्रणी होताहै अर्थात् उसके मस्तकविषेछिद्र होतेहैं और श्रोत्रिय जो वेदपाठी तिसकी स्त्रीके साथ गमन करणे कर्के पुरुष नासिका व्रणी

कर्म ॥ देवद्विजद्रव्यहारी पांडुरोगीभवेन्नरः ॥ तत्र शौनकः- अंत्यजागमनेमेर्यः पांडुरोगीप्रजायते ॥ अथशातातपोक्तम् ॥ तरक्षेनिहतेचैव। पांडुरोगीप्रजायते ॥ ब्रह्मणोक्तम् ॥ यज्ञविघ्नकरोनित्यंजायतेचांडवृद्धिमान् ॥ तत्रशातातपोक्तम् ॥ जात्युत्तमस्त्रीगमनाज्जायतेमस्तकव्रणी श्रोत्रियस्त्रीप्रसंगेन. जायतेनासिकाव्रणी १ कर्म. ॥ कर्मकालेकुक्कुटंचखरादीन्वायईक्षते सनासिकाव्रणीचस्यादार्द्रनेत्रश्चजायते १ शातातपोक्तम्. ॥ पितृस्वसाभिगमनेदक्षिणांगव्रणीभवेत् मातृस्वसाभिगमनेवामांगोत्थव्रणीभवेत् १

होताहै अर्थात् उसकीनासिकामें छिद्रहोताहै० १ सोईकिहाहै कर्मविपाकसंग्रहविषे ० कर्मेति जो पुरुष कर्मकाल विषे अर्थात् संध्योपासनादिक जो कर्म तिनके प्रारंभसमयविषे कुक्कुट और गधेसें आदलेकर और जो खोटे जीव तिनको देखताहै सो नासिका व्रणी होताहै और आर्द्र नेत्र होताहै अर्थात् उसके नेत्रोंसे सदाहि जल वगताहै १ अवशातातपजी और प्रकारकहतेहैं पितृस्वसेति जो पुरुष पिताकी भगिनीके साथ गमनकरताहै सो दक्षिणांगव्रणी होताहै अर्थात् उसके सज्जे अंगमें छिद्रहोतेहैं और माताकी भगिनीके साथ गमन करणे वाला पुरुष वामे अंगमें हैं छिद्र जिसके ऐसा होताहै १

इसीका प्रकारकहतेहैं शातातपजी स्वगोत्रेति कि पुरुष अपणे गोत्रकी स्त्रीके साथ गमनकरण करके भगंदरीहोताहै क्या भगंदर रोगकरके युक्त होताहै० ॥ अब और किहाहै कर्म विपाक संग्रहविषे अतिमानादिति ॥ जो पुरुष अतिमानसें क्या वडे मानसें और वडे क्रोधसें और वडे स्नेहसें और वडे भयसें धर्मके निश्चयको जानदाहुयाभी अन्यथा करताहै अर्थात् धर्मको त्यागदेताहैं सो पूय और शोणितकरके युक्त व्रणी क्या छिद्रोंवाला होताहै इह बातनिश्चितहै १ अध्यापेति जो गुरु शिष्योंको कुटिलताकरके भढाताहै और जो शिष्य गुरुकोंठगककें पढताहै तिसगुरुको और शिष्यको जन्मांतरमें गंडमालाख्यनामरोगहोताहै अर्थात् हजीरांतिनकों होती यांहैं इसमें संशयनहिंहै २ अभक्षेति जो पुरुष अभक्ष्य अर्थात् नहिं जोखाणेयोग्यतिसकोंभक्षण करताहै और जोपापीहै इहदोनों जन्मांतरमें हजीरांरोगककें युक्तहोतेहैं अब और प्रकारकिहाहै

शातातपे स्वगोत्रस्त्रीप्रसंगेनजायतेचभगंदरी । कर्म. । अतिमानादतिक्रोधा दतिस्नेहाद्भयादपि योधर्मनिश्चयंजानन्नन्यथाकुरुतेनरः सपूयशोणितवह व्रणीजायतेनिश्चितम् १ अध्यापयतिशिष्यांस्तुयःप्रतार्यगुरुस्तथा शि ष्योगुरुंवंचयित्वायोऽधीतेतस्यतस्यच जायतेगंडमालाख्योरोगस्त्वत्रनसं शयः २ तथा अभक्ष्यभक्षःपापीवागंडमालीभवेन्नरः ॥ कर्मसं- ॥ चांडाल कृतवापीषुतडागेकूपकादिषु स्नात्वापीत्वाचसर्वांगेदाहवान्हस्तपादयोः स्फोटयुक्तस्तुसभवेदित्यपिप्रतिजन्मनि १ अनिर्दशायागोःपीत्वापयः स्फोटकवान्भवेत् २ ॥ कर्मसं- ॥ देवानांब्राह्मणानांचधनापहरणात्तथा स्वामिद्रोहाद्वातरोगीपुरुषःसततंभवेत् ३ ॥ कर्मसं-॥ मोहयित्वापरान्यस्तु यस्त्वभुंक्तेविगर्हितम् सोन्मादवातयुक्तःस्यात्त्रीणिजन्मानिमानवः ॥ ४ ॥

कर्मसंग्रहविषे चांडालेति चांडालनेकीतियां जोवाउलीयां और कूप और तडागादिकनोंविषे स्नानकरके और इनोकाजलपानकरके पुरुष जन्मांतरमे संपूर्णअंगोविषें दाहवालाहोताहै और तिसके हाथों और पादोंमे फोडेहोतेहैं और किहाहै कर्मसंग्रहविषे १ अनिर्दशेति अनिर्दशा अर्थात् दश १० दिनके अंतरहि गौकादुग्धपानककें पुरुषजन्मांतरविषे स्फोटकरोग वाला होताहै २ और किहाहै कर्मसंग्रहविषे देवानामिति तैसेंहीं देवता और ब्राह्मणकेधनचुराणेसे भीस्फोटकरोगवाला होताहै और स्वामीकेसाथ द्रोहकरणेसें पुरुष निरंतरवातरोगककें युक्तहोताहै ॥ ३ ॥ अब और प्रकार किहाहै कर्मसंग्रहविषे मोहेति जो पुरुष होरनानूं मोहककें आप विगर्हित क्या निंदितव स्तुकों भक्षणकरताहै सो तीनजन्मतक उन्माद और वातरोगककें युक्त होताहै ४

अनिच्छतीमिति० नहि है भोगकी इच्छा जिसकों ऐसी जो नवीन परस्त्री अर्थात् जिसने पतिके साथभी गमन नहिकीत्ता उसके साथ जो पुरुष बलसें गमन करताहै सो संपूर्ण जोडो विषें बडीपीडाकों प्राप्त होताहै० फेर रुचिसें रहितहोताहै अर्थात् जन्मांतर विषें भोगकी इच्छासें रहित होताहै० फेर वात रोगवाला औंर ज्वर वालाभीहोताहै ५ यइति० औंर जो ब्राह्मण स्नानकेविना संध्या औंर जप औंर हवनकोंमदसें करताहै सोनिश्यही हिडकी रोगवालाहोताहै० ६ रक्तेति औंर जो रक्त वस्त्र औंर मुंगोंकों चुराताहै सो रक्त वात वाला होताहै० और इसीको वृद्धवौधायनजीकहतेहैं० सवर्णेति० जो अपणी जातीकी स्त्रीके साथ गमन करताहै सो वात पित्त वाला और रक्त वाला भी होताहै इस जगासवर्णाकर्के सजाति स्त्रीलयणी सोभी आधुनिक जातिविषे जाननी जैसे अवस्थीब्राह्मणने अवस्थी स्त्रीविषे गमन करणा पापहै और

अनिच्छतीमिक्षतांयउपभुंक्तेपरास्त्रियं वलादाक्रम्यसनरःसर्वसंधिषुवेदनाम् ५ तीव्रामाप्नोत्यरुचिमान् पुनर्वातयुतोभवेत् ॥ ज्वरीच. ॥ योऽकृत्वाब्राह्मणःस्नानंसंध्याहोमजपादिकं कुरुतेचमदान्नित्यं सहिकारोगवान्भवेत् ६ रक्तवस्त्रप्रवालानांहारीस्याद्रक्तवातवान् ॥ वृद्धबौधायनः ॥ सवर्णागमने वातरक्तवान्जायतेनरः ॥ सवर्णागमनेवातपित्तवानपिजायते १ कर्म- ॥ लशुनंगृंजनंतालफलंचाश्नातियोद्विजः सवातपित्तरोगीच भवेज्जन्मत्रयं नरः १ औषधार्थभक्षणेतुनदोषः ॥ कर्मसं- ॥ वैद्यशास्त्रमदाद्यस्तुकृत्वौषधमथान्यथा प्रयोजयन्नरःसोयंरक्तपित्तयुतोभवेत् ॥ १ ॥

ऐसा अर्थ नहि कि ब्राह्मण ब्राह्मणी विषे गमन ना करे किंतु सो उचितहैं १ और इसीका फल कहतेहैं जोकिहाहै कर्मसंग्रह विषें० लशुनमिति० जो द्विज लसुन क्या थोम और गाजरां और तालफल इनाकाभक्षण करताहै सो तीनों जन्मों विषें वात पित्त रोगवालाहोताहै इसमे कोइ गृंजनशब्दका अर्थ गाजराको नहि कहते किंतु थोमके भेदको अथवा विषवाले वाण कर्के मारेहोएमृगके मांसकों कहतेहैं १ और इनकों औषधीकें निमित्त भक्षणकरे तो दोष नहि है० और इसी फलकों कहतेहैं ० वैद्येति ॥ जो पुरुष वैद्यशास्त्रकें मदते कीतीहोई औषधकों अन्यथा प्रयोजन कहताहै अर्थात् एह दिवाई कुछनहिहै ऐसें कहताहै सो रक्त पित्त रोगवालाहोताहै १ ॥

अब और प्रकारयमजीकहतेहैं नित्येति जो पुरुष नित्यअनुष्टानक्या संध्यावंदनादि तिनाकोंनहि करता सो जन्मांतरमें कफरोगवालाहोताहै और निरादरकों प्राप्तहोताहै इह भगवान् यमजीने किहाहै १ और किहाहै कर्म्मसंग्रहविषे गुरुमिति जो पुरुषवादोंसें गुरुकोंजीतकर्के प्रतिकूलताको करताहै अर्थात् गुरुकेसाथ द्वेष करताहै सो नित्यही दुःखकर्के व्याकुलमनवालाहोया २ मिरगी रोगवाला होताहै १ इसविषे बौधायनजी कहतेहैं ब्राह्मेति जो ब्राह्मणके श्वासांकोंरोकताहै सो जन्मांतर विषे मिरगी रोगकर्के युक्त होताहै और जो हाथीके चुराणेवालाहै सोशीर्षरोगी होता है अर्थात् शिर विषे रोगवाला होताहै १ सोई किहाहै कर्म्मसंग्रहविषें गुर्वीति जो पुरुष गुरुकों रोकणेवालाहै सो शिर विषे रोगवालाहोताहै० इसी फलवाला होरकर्म्मकहतेहैं प्रेति बहुत यज्ञा

यमः ॥ नित्यानुष्ठानरहितःकफरोगीभवेन्नरः पराभवंसमाप्नोतिचेत्याहभगवान्यमः १ कर्म- ॥ गुरुंविजित्यवादैस्तुप्रतिकूलंसमाचरेत् सोऽपस्मारीभवेन्नित्यंदुःखव्याकुलमानसः १ तत्रबौधायनः ॥ ब्राह्मणश्वासरोधेनह्यपस्मारीभवेन्नरः ॥ नागहारीचसततंपुरुषः शीर्षरोगवान् १ ॥ कर्म. ॥ गुरूपरोधीशिरसिरोगवान्जायतेनरः ॥ अन्यच्च ॥ प्रायोपवेशनादीनांव्रतानांत्यागकारणात् ॥ शिरोरोगयुतोभूयात् यावत्तत्कर्म्मयोग्यता १ ॥ नारदः ॥ ब्रह्मचारीयदाश्नीयाद्भिन्नपात्रेविशेषतः । एकांशेनशिरोरोगीभवतीत्याहनारदः १ पद्मपुराणे ॥ ब्राह्मणद्विट्शिरोरोगीभवेज्जन्मत्रयंनरः ॥

दियों विषे जो दीक्षादि व्रत तिनांके त्यागकरणेसें शिरविषेरोगकर्के युक्त होताहै जितनाकाल तिस कर्म्मकी योग्यताहै १ सोई नारदजीकहतेहैं ब्रह्मेति जो ब्रह्मचारीभिन्नहोये पात्रमे भोजनकरताहै सो आधे शिर विषे रोगकर्के युक्तहोताहै अर्थात् अर्धशिरपीड़ा उसकोसदाहोतीहै १ और किहाहै पद्मपुराणविषें जो पुरुषब्राह्मणके साथ द्वेषकरताहै सो तीन जन्माविषे शिर रोगवाला होताहै । इसमें द्वेष कर्के धर्म्म द्वेषऔरजीवकाका द्वेषजानणा जैसेंकिब्राह्मणोंका धर्म्म वेदपाठादि कुछ अच्छानहि क्योंकि पीछे याचना करणे पड़तीहै इत्यादि कहकर इसकी प्रवृत्ति दूरकराणी एह बहुतपापहै वास्तव एह कर्म्म सर्वोत्तमतहै

अब और किहाहै कर्मसंग्रह विषें परवाचामिति जो पुरुष पर पुरुषोंकियो वार्ता विषें विघ्नकरताहै सो मुखरोगी होताहै अर्थात् मुख उसका पक जाताहै परवार्त्ता विषेंविघ्न इसतरहां जाणना किसभामे दूसरेकी वात सतीहो अथवा असतीहो उसकी खंडन येनकेन उपायककें करणा और दूसरयां पुरुषांकेमर्मस्थान जो हैं जोड तिन विषें मारणेतें अथवा दूसरेके दोषप्रकट करणेतें मुखरोगी होताहै १ ॥ अब और किहाहै शातातपजीने ॥ श्वेति जो पुरुष श्वान और विल्लीयोंसें लेकर जो कुत्सितजीव तिनका स्पर्शकीत्ता होया अन्नभक्षणकरताहै सो दुर्गंधवान् होताहै अर्थात् उसके पासों दुर्गंधिआवतीहै • और किहाहै कर्म संग्रह विषें किं झूठी उगाई देणेवाला मुखरोगी होताहै और शोणितपित्तवान् होताहै अर्थात् उसको रुधिर करके युक्त पित्त रोगहोताहै • इसीको वौधायनजीकहतेहैं ॥ कि

॥ कर्म. सं. ॥ परवाचांविघ्नकर्त्ता मुखरोगीभवेन्नरः मर्मोद्घाटनतोऽन्येषां मुखरोगीप्रजायते १ शातातपप्रोक्ते- श्वमार्जारादिभिःस्पृष्टंभुक्त्वादुर्गंध वान्भवेत् ॥ कर्मसं. ॥कूटसाक्षीभवेद्वक्त्ररोगीशोणितपित्तवान् ॥ वौधायनः वाग्विरोधंगुरोःकृत्वामुखरोगीभवेन्नरः ॥ शातातपप्रोक्ते- ॥ मूकोन्नहरणेनै वजिव्हारोगःप्रजायते ॥ कर्मसं. ॥ परेषांदुःखकरणात्सर्वदानृतभाषणात् जिव्हाच्छेदात्तथान्येषां पक्षपाताच्चसंसदि १ ॥ जिव्हारोगीभवेदास्ये व्रणीचैवाभिजायते. ॥ शातातपप्रोक्ते ॥ विषप्रदश्छर्दिरोगीभवेज्जन्मनि जन्मनि २ ॥ शातातपप्रोक्ते ॥ आमान्नहरणेनैवदंतपीडाप्रजायते, ॥

गुरुके साथ वाक् विरोध करके अर्थात् गुरुको खोटे वाक्य कह करके पुरुष मुखरोगी होताहै सोई किहाहै ॥ शातातपजीने ॥ कि अन्न चुराणें करके पुरुष मूक क्या जल्हा होताहै और उसको जिव्हा विषे रोग होताहै ॥ इसीको कर्मसंग्रह विषे किहाहै ॥ कि दूसरेको दुःखदणेसें और सदाही झूठकहनेसें और दूसरेकी जिव्हा काटनेसें और सभामें पक्षपात करणेसें पुरुष जिव्हाविषे रोग वाला होताहै और मुख विषे छिद्रों वाला होताहै १ ॥ अब और किहाहै शातातपजीने ॥ कि विषदेणे वाला पुरुष जन्मजन्मविषे छर्दी रोग क्या वमनव्याधि करके युक्त होताहै ॥ २ ॥ और किहाहै शातातपजीनें ॥ कि आमान्न क्या आटा तिसके चुराणे करके पुरुष दन्तों विषे पीडा वाला होताहै ॥

अब और प्रकार कहतेहैं जो किहाहै कर्मसंग्रहविषें वेदमिति कि जो ब्राह्मण वेदको और धर्मशास्त्रको वेचताहै अर्थात् धनलेकरके पढनेंकाफलदेदेताहै तिसकर्के जन्मांतर विषें तिसकी जिव्हाका स्खलन होताहै अर्थात् तिसकी जिव्हागिडजातीहै १ अपरीति और अपरिस्फुटवक्ता जो पुरुष अर्थात् राजाकेतांई व्यंगदारवाक्य कहणे वाला सो जिव्हाविषें छिद्रोंवाला होताहै॥ अव और किहाहै शातातपजीने कुकुटेति कुकुटके मारयांहोयां पुरुष वक्रनासः क्या टेडीयें नासें वाला होताहै॥ और जो पुरुष विद्यापुस्तकहारीहै अर्थात् ज्ञानवाले जो पंचरत्नादिक पुस्तक तिनके चुराणे वाला अनेडमूक होताहै अर्थात् जड्डा और वोला होताहै॥ ऐसेंहि तोते और मेना के मारणेतें पुरुष थथलाहोताहै १ और प्रकार किहाहै कर्मसंग्रहविषें

कर्मसं-॥ वेदंवाधर्मशास्त्रंवाविक्रीणीयाद्द्वियोनरः पुनर्जन्मनितेनास्याजिव्हायाःस्खलनंभवेत् ॥ अपरिस्फुटवक्तावाजिव्हायांव्रणवानपि-॥१॥ शातातपप्रोक्ते-॥ कुक्कुटेनिहतेचैववक्रनासःप्रजायते विद्यापुस्तकहारीचानेडमूकःप्रजायते॥ शुकशारिकयोःघातान्नरः स्खलितवाग्भवेत् १ कर्मसं-॥ लवणस्यापहर्त्ताचशीर्णघ्राणांघ्रिपाणिकः घुर्घुरस्वरवांश्चैवजायतेभुविमानवः १ परदृष्टिविघातेनभिषक्‌मिथ्याचरेणच कामात्परस्त्रियंगत्वानेत्ररोगीभवेन्नरः २ दंपतीभ्यांप्रवृत्तंतुमैथुनंयोनिरीक्षते सनेत्रपूययुक्तःस्यात्स्रवद्रक्तश्चजायते ३॥

लवणस्येति कि लवणके चुराणे वाला जो पुरुष टूटगएहैं अंघ्रिक्या पाद और घ्राणक्या नासिका और पाणि क्या हाथजिसके ऐसापृथिवीविषें होताहै और घुर घुर स्वर वाला होताहै अर्थात् उसकास्वर किसीको अच्छा नहि लगता १ परेति दूसरेकी दृष्टिविषें चोट लगाणे कर्के और वैद्यके मिथ्याचरणकरणें कर्के और अपनी इच्छासें परस्त्रीके साथ गमन कर्के पुरुष नेत्ररोगी होताहै २ और किहाहै दंपतीभ्यामिति कि जो पुरुष स्त्रीके साथ पतिके मैथुनको देखताहै सो नेत्र पूय युक्तहोताहै अर्थात् तिसके नेत्र पाककरके युक्तहोतेहैं और स्रवद्रक्तभी होताहैं अर्थात् नेत्रोंसें रुधिरभी चलताहै इसमे ऐसा अभिप्रायहै कि अपनी स्त्रीके साथ गमन कर्त्तेको नहि देखणा और परस्त्री साथ गमन कर्त्तेको दंडवास्तेदेखणेकादोषनहि

और शातातपजीकहतेहैं घृतेति जोपुरुष घृतकोंचुराताहै सोनेत्रोंकेरोगवालाहोताहै और पिताके मारणेवाला चेतनासें हीन होताहै और माताकेमारणेवाला अंधाहोताहै १ शाकेति और शाक के चुराणेवाला नीले नेत्रों वालाहोताहै और पित्तलके चुराणे वाला कपिलीएं अक्षिएं वाला होताहै और तरामें के चुराणेवाला रक्तविकारवाला होताहै २ और किहाहै कर्म्मसंग्र हविषे उच्छिष्टइति जोपुरुष उच्छिष्टहिक्या मुखशुद्धिकेविना उदय होतेसूर्यको और मध्या ह्नविषे प्राप्तहोएको अथवा सायंकालविषें प्राप्तहोएको देखताहै तैसेहीं नक्षत्रांको और चंद्रमाको देखताहै सोमंददृष्टि वाला होताहै इसमे एह अभिप्रायहै कि घृतनेत्रादि विषेचेतना करताहै सो तिसके चोरको अंधाहोणा योग्यहै और जोपुरुष देवताके गृहविषे और ब्राह्म

शातातपः । घृतचौरस्तुपुरुषोजायतेनेत्ररोगवान् पितृहाचेतनाहीनोमातृ
हांधःप्रजायते १ शाकहारीचपुरुषोजायतेनीललोचनः रीतिहाकापिलाक्षः
स्यात्ताम्रहारीचरक्तकः २ ॥ कर्मसं- ॥ उच्छिष्टःसन्यआदित्यंपश्येदुद्यंतमं
वरे ॥ मध्यंगतमथाप्यस्तंमायांतमुच्छिष्टएवसन् १ नक्षत्राण्यथवाचंद्रंसभ
वेन्मंददृष्टियुक्देवद्विजगृहेतीर्थेपुण्यस्थानेचसंस्थितम् २ प्रदीपंभंजयित्वा
तुतिमिरव्याधिमान्भवेत् ३ पद्मपुराणे ॥ परेषामाक्षिरोधेनजायतेअक्षिरोग
वान् ब्राह्मे ॥ नक्तांध्यंजायतेतस्ययोगवांनयनद्वये करोतिवालुकाक्षेपंप्रक्षेपं
तृणभस्मनोः कर्म्म- ॥ मातापितृगुरूणांहिदेवब्राह्मणयोस्तथाशृणोतिनिंदां
बुद्ध्यायःकर्णाभ्यांतस्यशोणितम् १ पूयंचप्रस्रवतितरांवधिरत्वगतिस्तथा २

णके गृहविषें और पुण्यस्थानविषे और तीर्थविषें स्थितजो दीपक तिसको भनताहै सोनेत्रों विषेहै तिमरे जिसकोऐसाहोताहै ॥ ३ सो किहाहै पद्मपुराणविषे परेषामिति जोपुरुष किसेकी अक्षियोमे रोधकरताहै सोअक्षियोंके रोगवाला होताहै ॥ सोई ब्रह्मपुराणविषे कहाहै नक्तमिति जोपुरुष गौयोंके अक्षियो उप्पर लेतर अथवा कक्ष तैर भस्म सुटताहै सो रात्रिमें अंधाहो ताहै ॥ अब और प्रकारकर्म संग्रह विषें किहाहै मातेति जोपुरुष माता और पिता और गु रु और देवता और ब्राह्मणोंकी निंदानू बुद्धिकर्के क्या जाणकर्के श्रवणकरताहै सोकपाल णरोगवाला होताहै क्या उसके कन्नाते रक्त और पाक चलती रहतीहै ॥ १ ॥ और बोला भी होताहै ॥ २ ॥

अब और प्रकारकाकर्म विपाककहतेहैं जोकिहाहै ब्रह्मांडपुराणविषे.अभक्ष्येति.किजो नहि भक्षणकरणेकेयोग्यचांडालस्पृष्टअन्नादि चीज उसके भक्षणकरणेसे कंठरोगीहोताहै अर्थात् उसके कंठ विषे रोगहोताहै ॥ अब और प्रकारका कर्म बिपाक कहतेहैं जोकिहाहै शातातपजीने ॥ स्वसृति ॥ किजो पुरुष भगिनीकों मारताहै सोनरककोंभोगकर फेर जन्मान्तर विषें बधिरहोताहै ॥ अर्थात् बोलाहोताहै इसमें (दयापा भगिनीमूर्त्तिः) इसवचनतेभगिनीहै दयाकीमूर्त्ति तिसकेप्रियवचनणनेके त्यागसे उसका श्रवणेन्द्रिय दूरहाणा उचितहै ॥ और बगुलेकोंमारणें वाला लंबे गलवालाहोताहै और लंबेमुखवालाभी होताहै १ ॥ उष्ट्रइति ॥ ऊंटके मारयां होयां पुरुष विकृतस्वरवाला होताहै अर्थात् अप्रियस्वरवाला होताहै ॥ और कबूत्तरके मारयांहोयां पीले हथेंवालाहोताहै २ ॥ और कंदमूलकेचुराणेसें पुरुषछोटेहथेंवाला होताहै ॥ और दुग्धके चुराणेंवाला पुरुष स्विन्न हथें वाला होताहै ॥ अर्थात् हाथउसके परसीने वाले होतेहैं ३ ॥ औ

ब्रह्मांडपुराणे ॥ अभक्ष्यभक्षदोषाच्चकंठरोगीप्रजायते ॥ शातातपप्रोक्ते ॥
स्वसृघातीचबधिरोनरकांतेप्रजायते बकघातीदीर्घगलोभवेद्दैमुखदीर्घकः १
उष्ट्रेविनिहतेचैवजायतेविकृतस्वरः पारावतेचनिहतेपीतपाणिःप्रजायते २
कंदमूलस्यहरणाद्ध्रस्वपाणिःप्रजायते॥ क्षीरहारीचपुरुषःस्विन्नपाणिःप्रजायते ३ अगम्यागमनाच्चैवभुजस्तंभःप्रजायते ॥ कुनखीनरकस्यांते जायते विप्रहेमहृत् ४ उदक्यावीक्षितंभुक्त्वा जायतेक्रिमिलोचनः ॥ अभक्ष्यभक्षणाच्चैवजायंतेक्रिमयोहृदि ५ ॥

किजो नहिंगमनकरणेके योग्यस्त्री अधम जातिकी अथवा अपनी जातिकी उसके साथ गमन करणेंसे पुरुष भुजस्तंभ होताहै अर्थात् उसकियां भुजा कार्यविषें अशक्तहोतियांहैं और किजो पुरुष ब्राह्मणके सुवर्णकों चुराताहै ॥ सोनरककों भोगकरके फेर खोट्टे नखोंवाला होताहै ४ और जो पुरुष रजस्वलास्त्री करके देखयाहुया अन्नभक्षण करताहैसो क्रिमिलोचन होताहै ॥ अर्थात् उसकेनेत्रोंविषें क्रिमि क्याकीडे होतेहैं ॥ और किजो नहिभक्षण करणें केयोग्यवस्तु उसकेभक्षण करणेंते हृदे विषेंक्रिमि होतेहैं ॥ पिच्छे जो किहाहै कि अभक्ष्यके भक्षणकीत्तवांहोयां कंठरोगीहोताहै और इसजगाकिहाहै किअभक्ष्यभक्षणतेहृदेविषे कीडेयोंवाला होताहै इसवास्ते दोनोफलहोतेहैं कोई कहतेहैं किएह अभक्ष्यभक्षणका दूसरा फल उसी पुराण विषे किहाहै और कोई कहतेहैं किएह वचन होर किसेकाहै जेकर ब्रह्मांड पुराणकाहुंदा तद पहलेवचनके साथहि हुंदा ॥ ५ ॥

इसीकाप्रकार किहाहै कर्म संग्रहविषे ॥ गजइतिकि हाथी और घोडेके मारयां होयां पुरुष कुक्षिविषें कीडयों कर्के युक्तहोताहै० ॥ और शातातपजीकहतेहैं ॥ गंन्योंका जो विकार क्या गुडादिक तिसके चुराणें वाला गुल्मवान् होताहै अर्थात् इसके उदरमें गोला रोगहोताहै १ गुर्वीति औरजो पुरुष गुरुका प्रत्यर्थीहोताहै अर्थात् गुरुकेसाथ शत्रुभावकरताहै सो गुल्मवान् होताहै अर्थात् उसके उदरमेंभीगोलारोगहोताहै ॥ और प्रकारकिहाहै कर्मसंग्रहविषें ॥ भृतकेति जोब्राह्मण नौकरी द्वारा भडाताहै तिसदोषते औरकन्याकेदूषणकरणेते अर्थात् कुमारी कन्याके साथ भोगकरणेतें सो एकजन्म प्लीहवान् होताहै अर्थात् लिफ्फ रोगकर्के युक्त होताहै इसमें नौकरी इहजाननी कि जिसको भढाणाहै उसीसेंनियत द्रव्या को लैणा जौसेंकि

कर्मविपाकसंग्रहे-॥ गजेविनिहतेचाश्वेक्रिमिकुक्षिःप्रजायते-॥ शातातपः॥ इक्षोर्विकारहारीचभवेदुदरगुल्मवान्- १ गुरुप्रत्यर्थितांयातोगुल्मवान्जाय तेनरः-॥ कर्मसं-॥ भृतकाध्यापकोयस्तुकन्यायादूषणान्नरः प्लीहवान्सभ वेद्विप्रः जन्मैकंतस्यदूषणात् १ योब्रह्मविष्णुरुद्राणांभेदंमोहमदावृतः ॥ साधयेदुदरव्याधियुक्तोभवतिमानवः २ राज्ञावातन्नियुक्तेननियुक्तोधर्म निश्चये पुरोहितःप्राड्विवाकःसचिवोवान्यथाचरेत् जलोदरंसम्प्राप्नोतिपा पोजन्मत्रयंपुनः ॥ ३ ॥

५००) रुपययेसें सारस्वतको भढामोगा ऐसे संकेतसे दोषहै और योऽर्म्मार्थशालाके भढाणे वास्ते राजादियोंने नियुक्तकीतेहै तिनको दोषनहि १ यइतिकि ब्रह्मा और विष्णु और शिव इह तीनो एकमूर्तिहैं तिनोंका जो पुरुष मोह और मद कर्के युक्तहुया २ भेदकरताहैं अर्थात् तिनको भिन्न २ कहताहै सो उदरकी व्याधि कर्के युक्तहोताहैं २ राज्ञेति और राजाकर्के और राजाके नौकरी कर्के धर्मके निश्चयविषें जोडया होया जोपुरुष अथवा पुरोहित और प्राड्विवाक क्या व्यवहारका द्रष्टा न्यायकरणे वाला अथवा वजीर जे कर अन्यथा करे अर्थात् जो करणे योग्यहै तिसकोंनकरे तां सो पापी तीनजन्म जलोदर रोगकों प्राप्तहोताहै ३

सोई किह्याहै पद्मपुराणविषैं जो पुरुष गुरुकी स्त्रीकेसाथ गमनकरताहै सो जन्मांतरमें उदरव्याधि करकें युक्त होताहै उदरव्याधि क्या जलोदर रोगकरकें युक्त होताहै ॥ अब और प्रकारकाकर्म्म विपाकशातातपजी कहतेहैं ॥ जो पुरुष द्रव्यकेहोयांहोयां निंदित अन्नकों भक्षणकरताहै अथवा माडे अन्नकोंदेताहै सो जन्मांतरमें मंदाग्नि वाला होताहै अर्थात् तिसकों खादा होया अन्नपचतानहिं ॥ सोई वृद्धपराशरजी कहतेहैं ॥ जो पुरुष गौकें मांसकोंभक्षणकरताहै सो जन्मांतरविषे मंद होंगयाहै जठराग्नि जिसका ऐसाहोताहै इसजगा मंदाग्नि पद सभनां उदर व्याधियांका उपलक्षणहै दोषके अधिकहोणेंते ॥ सोई कर्म्म संग्रह विषैहै ॥ जो पुरुष कारणसें विना हिंविषदेकरकें फेर तिसकोंप्रसन्नकरताहै सो जन्मांतरविषे मंदाग्निहोताहै और अल्पमृत्यु क्या थोडेकालमें मृत्युकों प्राप्तहोताहै १ सोई बौधायनजी कहतेहैं ॥ जो पुरुष त्रेता अग्निकों नष्ट करताहै

पद्मपुराणे॥उदरव्याधियुक्तस्तुभवेद्गुर्वंगनागमे॥ उदरव्याधिर्जलोदरव्याधिरित्यर्थः० शातातपः० नरोभवतिमंदाग्निःसतिद्रव्येकदन्नभुग्॥ कदन्नदः इत्यपिपाठः। वृद्धपराशरः। गोमांसखादकोमंदजठराग्निर्भवेन्नरः। कर्मसं०। अकारणंगरंदत्वाप्रसादयतियःपुनः समंदाग्निर्भवेदेवमल्पमृत्युश्चजायते। बौधायनः। अग्नेर्मांद्यंभवेत्तस्ययस्त्रेताग्निविनाशकः। शातातपः। गुरुजायाभिगमनान्मूत्रकृच्छ्रःप्रजायते पशुयोनौचगमनान्मूत्रकृच्छ्रंप्रजायते. १ ॥ वायुपुराणे॥ सुरापोमूत्रकृच्छ्रीस्यादश्मरीरोगवांश्चवा। शातातपः॥ मातुः सपत्नीगमनेजायतेचाश्मरीगदः॥

अर्थात् दाक्षिणाग्नि और गार्हस्पत्याग्नि और आहवनीय अग्नि इनकों नष्ट करताहै तिसकों जन्मांतर विषे अग्निकी मंदता होतीहै ॥ अब और प्रकारका कर्म्मविपाककहतेहैं शातातपजी॥ गुरुकी स्त्रीकेसाथ गमनकरणेंसे जन्मांतरविषे मूत्र कृच्छ्र रोगकरकें युक्तहोताहै और पशुयोनिविषे गमन करणेसेंभी मूत्रकृच्छ्र रोगकरके युक्त होताहै इसजगा दोवार जो मूत्रकृच्छ्र पदआयाहै इसतें जानणाकि मूत्रकृच्छ्र रोग दो प्रकारकाहै इकमधुमेहहै और दूसरा जलमेहनामककेंहै ॥ १ ॥ सोई वायुपुराणमें कहाहै ॥ मदिराके पानकरणेवाला मूत्र कृच्छ्र रोगकरकें युक्त होताहै और पथरी रोगवाला होताहै ॥ इसकों शातातपजीभी कहतेहैं माताकीसौकणके साथ गमन कीतयांहोयां पथरी रोगवाला होताहै० ॥

दुग्धके चुराणे वालापुरुष वहुतमूत्रणे वालाहोताहै ॥ सोई कहाहै कर्मसंग्रहविषे ॥ सौंदर्य्येति ॥ किजोपुरुष एहसुंदरस्त्रीहै इसअभिलाषावालाहै सो वहुते मूत्रणेवालाहोताहै और चांडालीकेसाथ गमनकरणेतें प्रमेहव्याधि वालाहोताहै १ और जो तिर्यग्गामीहै अर्थात् पशुयोनिके साथ गमनकरताहै सो सूल और प्रमेह रोगकर्के युक्तहोताहै ॥ पर्वणीति कि जो पुरुष पर्वविषेगमनकरताहै और कन्याके साथगमनकरताहै सो वातप्रमेहरोगकर्के युक्त होताहै तिन्नोजन्मोंविषे ॥ २ मध्विति कि जोमाताकेसाथ गमनकरताहै सो निरंतर मधुमेही रोगवालाहोताहै और जो माताकी साकनके साथ गमनकरताहै सोअधमनर अर्थात् खोटा पुरुष जलमेही रोगवाला होता है ॥ ३ ॥ और जो पुरुष नित्यहि भगिनीके साथ गमनकरताहै अर्थात् भयनके साथ सो पुरुष इक्षु मेही रोगवाला होताहै इक्षु मेहकर्के मूत्रगन्नेके रसके वरावरहोताहै ॥

दुग्धचौरस्तुपुरुषोजायतेवहुमूत्रवान् ० कर्म सं ० सौंदर्य्यगामिनेरोगोजायतेवहुमूत्रता ० इयंसुंदरीइयंसुंदरीत्यभिलाषीसौंदर्य्यगामी यद्वा सौदर्य्यागामीतिपाठः० चांडालीगमनात्सर्वप्रमेहव्याधिमान्भवेत् १ तिर्य्यग्गामीसशूलेनप्रमेहेनयुतोभवेत् ० पर्वणिव्यायीचमनुजः कन्यागामी तथैवच वातप्रमेहयुक्तःस्यात्त्रीणिजन्मानिमानवः २ मधुमेहीमातृगामी सततंजायतेनरः ॥ पितृभार्यादिगामीच जलमेहीनराधमः ३ योगच्छेद्भगिनींनित्यमिक्षुमेहीतिनिश्चयः० पितृभार्य्यासपत्नीजननीत्यभिधीयते ४ वायुपुराणे ० ब्राह्मणस्वर्णहारीच प्रमेही जायतेनरः ० शातातपः ० मातृगामीभवेद्यस्तु तस्यलिंगंविनश्यति ० चांडालीगमनेचैव हीनहर्षः प्रजायते १ दुष्टवीर्यस्तुषंडःस्यात् व्रणीगुह्यांडकेसदा २ ॥

४ ॥ इसीका प्रकार वायुपुराणविषे किहाहै ॥ ब्राह्मणेति ॥ कि जो ब्राह्मणोंके सुवर्णको चुराताहै सो प्रमेह रोग वालाहोताहै ॥ अव और प्रकारका कर्म विपाक शातातपजी कहतेहैं ॥ मात्रिति ॥ कि जो माताकें साथ गमनकरताहै उसपुरुषका लिंगनष्ट होताहै और जो चांडालीके साथगमनकरताहै सो हर्षसेहीन होताहै १ और खोटे वीर्य्यवाला होताहै अर्थात् उसका वीर्य्य पुत्रके उत्पन्नकरणेमें समर्थ नहि होताहै षंढः अर्थात् नपुंसक होताहै फेरगुदा और वृषण उसके छिद्रोवाले होतेहैं • इसजगा चांडाली गमनके फल ४ है और कोइ कहतेहैं कि दुष्टवीर्य जो पुरुषहै अर्थात् जिसनेकिसेकावीर्य्य औषध्यादि कर्के दुष्टकीताहै सो पुरुषनपुंसकहोताहै इत्यादिअर्थहै २

अब और प्रकारका कर्मविपाक किहाहै कर्मसंग्रहविषें ॥ नृपइति किजोराजा भृत्यादिकोंके हाथोंसें आदलेकर जोअगहैं तिनकों अपराधके विनाही कटदेताहै तिसकामुख जन्मान्तरविषें अग्नीकर्के दग्धकीतिहोएकीन्याई होताहै १ ॥ अब और कहतेहैं शातातपजी सुरालयइति कि जो पुरुष देवताके मंदरमें और जलमें और मार्ग क्या रस्ते में बिष्टाकरताहै तिसको दारुणक्या बडाकठन पापरूपएकगुदामें रोगहोताहै १ सोई किहाहै कर्मसंग्रहविषें ॥ विएमूत्रेति जोपुरुष विष्टा अर मूत्रकोंकरके अर शौचके विनाहि भोजन करताहै सोजन्मान्तरविषें प्रस्रवद्गुदहोताहै अर्थात् उसकी गुदासदाही वगदीरहतीहै १ और उसकोंजन्मान्तरविषें क्लेशतेंभी अतिक्लेशदेणे वालीजोपीडा सोहोतीहै इस अदे श्लोकका संबन्ध पिछले श्लोकदेसाथजाणणा ॥ दत्वेति और

कर्म्मसं- ॥ नृपोभृत्यादिहस्तादीनपराधंविनैवयःच्छेदयेत्तस्यलपनंभवेत् दग्धमिवाग्निना १ शातातपः ॥ सुरालयेजलेवापि मार्गेविष्टांकरोतियः गुदरोगोभवेत्तस्य पापरूपःसुदारुणः १ कर्म्मसं. ॥ विएमूत्रोत्सर्जनंकृत्वा योऽकृत्वाशौचकमेतत् भुंक्तेजन्मान्तरेमर्त्त्यः भवेत्सप्रस्रवद्गुदः १ भवेच्चदा रुणापीडातत्रकृछ्रातिकृछ्रदा दत्वायोवेतनंधीयाद्दादायाधिचवेतनम् २ ॥ अव्यापयेच्चजुहुवाज्जपेच्चार्शोयुतोभवेत् ॥ स्मार्त्ताग्निंशमयेद्यस्तुसोऽती सारयुतोभवेत् ३ पद्मपुराणे ॥ अतीसारीचभवतियस्त्रेताग्निविनाशकः ॥ शातातपः ॥ स्त्रीहंताचातिसारीस्यात् दारनाशयुतोपिवा दावाग्निदायकश्चै वरक्तातीसारवान्भवेत् ॥ १

जो कुछ देकरकेपढताहै २ और जो कुछ लेकरके भडाताहै और जो कुछ लेकरके हवन करताहै और जपकरताहै सोआर्शस् करके युक्तहोताहै अर्थात् ववासीर करके युक्तहोताहै ॥ और जोस्मा र्त्ताग्निकों बुझाताहै सोअतीसारकरकेयुक्तहोताहै ३ इसीकाप्रकारकिहाहै पद्मपुराणविषें ॥ अतीति किजो त्रेताअग्निके नष्टकरणेवाला अर्थात् दक्षिणाग्नि और गार्हपत्याग्नि और आहवनीयाग्नि इन तीनों केनष्टकरणे वालाहै सो अतीसार रोगकरके युक्तहोताहै ॥ इसीकाप्रकारांतर शातातपजी कहतेहैं ॥ स्त्रीहंतेति किजो पुरुष स्त्रीकोंमारताहै सो अतीसार करके युक्तहोताहै फेर जन्मान्तर विषें स्त्रीउसकीनष्टहोजातीहै और दावाग्निदायक अर्थात् जो पुरुष वनको अग्निलगाणे वाला सो रुधिरकर्के युक्तजो अतीसाररोग तिसकर्के युक्तहोताहै १

आपणे पुत्रकास्त्रीके साथ गमनकीतिहोयां जन्मांतरविषें पुरुषकृष्ण कुष्ठीहोताहै अर्थात् तिसकों कृष्णकुष्ठ क्या कालाकुष्ठहोताहै जिससें कालेकाले दागसारेदेहविषें हुंदेहें ॥ पितृव्येति कि चाचे कोस्त्रीके साथ गमनकरणेतें पुरुष जन्मांतरविषें कटिकुष्ठी क्या लक विषें कुष्ठवालाहोताहै २ ॥ मातुलान्याइति और मामिके साथ गमन करणेतें पुरुष जन्मांतर विषें दृष्टीकुष्ठवालाहोताहै अर्थात् तिसके नेत्रां विषें कुष्ठहोताहै ॥ और कर्म्म विपाक संग्रहका वचनहै ॥ मात्रेति जो पुरुष शास्त्रके निर्णे विषें माताके साथ और गुरुयोंके साथ क्या पिताके साथ सपर्द्धा करके प्रातहोताहै अर्थात् तिनके मतपर नहि चलता सो जन्मांतर विषें प्रदर व्याधि क्या गुदा विषें व्याधि वाला होताहै १ ज्येष्ठेति ज्येष्ठभ्राता क्या वडेभ्राताके नविवा

स्वश्रूगमनेचैवकृष्णकुष्ठीप्रजायते। स्वश्रूःस्वपुत्रभार्य्या। पितृव्यपत्नीगमनात्कटिकुष्ठीप्रजायते २ मातुलान्यास्तुगमनात्दृष्टिकुष्ठीप्रजायते। कर्म.। मात्रावागुरुणावापियोनरःशास्त्रनिर्णये स्पर्धयासौप्रजायेत प्रदरव्याधिमानुभुवि १ प्रदरोऽत्रगुदव्याधिः। ज्येष्ठभ्रातर्यनूढेतुयोनुजोद्वहतिस्वयम् सभवेन्मृतपत्नीकउष्णज्वरसमन्वितः २ संधिरार्षः। शातातपः ॥ मित्रभार्याभिगामीचमृतभार्य्याप्रजायते ॥ विप्ररत्नापहारीयःसोनपत्यःप्रजायते १

हकीत्यां होयां जो कनिष्ट भ्राता अर्थात् छोटाभाई आपहींविवाहकरलेताहै सो जन्मांतरमें मृतस्त्रीवालाहोताहै क्या उसकीस्त्री मरजातिहै और उष्णतापककें युक्तहोताहै २ सोई कर्मविपाक शातातपजी कहतेहैं मित्रभार्य्येति कि जो पुरुष मित्रकीस्त्रीके साथ गमनकरणेवाला सोजन्मांतरविषें मृतस्त्रीवालाहोताहै अर्थात् उसकीस्त्रीमरजातिहै विप्ररत्नेति जो पुरुष ब्राह्मणोंकारत्नाकों चुराताहै सो जन्मांतरविषे संतानसे रहित होताहै इसमेंऐसाअभिप्रायहै किरत्ननाम मणिआदि हीरकादिकाहै और संततिकोभी रत्नके तुल्यहि कहतेहैं सो तिसके चुराणेसें ऐसाफलहोणाउचितहै एह पहलेभी आयाहै परंतु स्त्रीमरणप्रसंगसें संततिमरणकाप्रसंगफेर किहाहै १ ॥

और इसीकाप्रकार किहाहै कर्मसंग्रहविषें अनन्येति किजोपुरुष अनन्यगामि भार्य्या नूं अर्थात् पतिव्रता भार्यानूं फेर दुष्टभावसें रहित जोहै तिसनूं कारणके विनाहीं त्याग देताहै सो संग्रहणीरोग वाला होताहै १ अतीति जोपुरुष पूर्वजन्मविषें होरनां लोकांके विशयानूं अर्थात् देशानूं नष्टकरताहै सोदूसरे जन्मविषें पामारोगवाला होताहै अर्थात् तिसकों सुक्की खुरक होतीहै और सहितपाकके तिसकोंरुधिर भी वगताहै २ और इसीकाप्रकार शातातपजी कहतेहैं तैलेति कि तैलके चुराणें कर्के पुरुष कण्डू रोगवाला होताहै० और वस्त्रों के चुराणें वाला शीर्णांगी होताहै अर्थात् कट्टे गएहैं अंगजिसके ऐसाहोताहै और दूसरे जन्मविषें नग्नहोंताहै

कर्म. ॥ अनन्यगतिकांभार्य्यामदुष्टांकारणंविना परित्यजतियःसोथग्रहणी रोगवान्भवेत् १ अतिलुम्पतियोन्येषांविषयान्पूर्वजन्मनि अन्यजन्मनि पामावान्सपूयंस्रवविशोणितम् २ शातातपः। तैलचौर्य्येणभवतिनरःकंडूतिरोगवान् वस्त्रहारीचशीर्णांगीभवेन्नग्नोन्यजन्मनि १ स्वाम्यांगनाभिगमनेजायतेदद्रुमंडलम् सौगंधिकस्यहरणाद्दुर्गंधांगःप्रजायते २ कुष्टीगोवधकारीचनरकांतेभवेन्नरः ॥ स्वसुतागमनेनैवरक्तकुष्टप्रजायते ३ भ्रातृजायाभिगमनेगुल्मकुष्टीप्रजायते ॥ शिवगीतायां ॥ यस्तुहन्तिवहून्जंतून्कुष्टरोगीभवेतुसः ॥

१ स्वाम्यांगनेति और स्वामीकीस्त्रीके साथ गमन कीतयां होयां पुरुषसरीरदेह विषें दद्रुवालाहोताहै० और सुगंधि विशिष्टजो द्रव्य तिसके चुराणेंतें दुर्गंधि विशिष्ट अंगो वाला होताहै २ और गोवधकरणें वाला नरकभोगकरकुष्टी होताहै० और आपणी कन्याके साथ गमन करणें कर्के पुरुष जन्मांतरमें रक्तकुष्टरोग वाला होताहै ३ और भ्राता की स्त्रीके साथ गमनकीतयां होयां पुरुष गुल्मकुटी होताहै ० अर्थात् तिसको फोडयां वाला कुष्ट होताहै० सोई किहाहै शिवगीता विषें ॥ यस्त्विति जो पुरुष वहोतयां जीवांनूं मारताहै सोकुष्टरोगकर्के युक्तहोताहै॥

अब और प्रकारकाकर्मविपाक कहतेहैं श्रुतिरिति कि श्रुति और स्मृति तिनकर्केविरुद्ध जोअजा क्या बकरि और अश्व क्या घोडा और महिषी इनसेंआदलेकर जो खोटेदान तिनकाप्रतिग्रह इठाणेतें अर्थात् इसदानकोंलेनेतें १ और निषिद्धस्त्रीक्या चांडालादिकोंकीस्त्री तिसके साथगमन करणेतें और उत्तमब्राह्मणकेनाशकरणेतें और वेदकीपरीक्षाके कीत्तयां होयां और चोर और व्या घ्रादिकोंकरके मृत्युहोणेतें २ और द्वन्द्वयुद्धाविषें मरणेतें और गुरुके धिकारसें अर्थात् तिरसकार सें और तडागादिकोंके नष्टकरणेतें और बाह्यशास्त्र करकें जीविकाकरणेते अर्थात् नास्तकोंकेशा स्त्रकर्के जीविका करणेतें ३ और ब्राह्मणकाधन चुरालेनें पुरुषसवनांअंगां विषें बडीपीडाकर्के युक्तहोताहै और तत्तज्वरवालाभीहोताहै ४ सर्वदेति ॥ और जो पुरुष दूसरेदेचित्तनूक्लेशदेंदाहै सो आपसदादुःखकर्के युक्तचित्तवाला होताहै अर्थात् तिसके मनविषें पुत्रस्त्रीआदि सभतर्हांकी पीडारहतीहै एह अर्थ (परचित्तविनाशकः) इसकाहै ॥ और (परवित्तवित्तशकः)

कर्मसं० श्रुतिस्मृतिविरुद्धानियानिदानानिसंतिवै अजाश्वमहिषादीनांतत् प्रतिग्रहकारणात् १ निषिद्धयोषिद्गमनाद् द्विजाग्र्यस्यवधादपिवेदस्यचपरी क्षायांदस्युव्याघ्रादिभिर्मृतौ २ द्वन्द्वयुद्धादिमरणात्करणाद्गुरुधिकृतेः तडागा देश्चभंगाच्चबाह्यशास्त्रोपजीवनात् ३ ब्राह्मणस्वापहरणात्सर्वांगेपुप्रजायते वेदनादारुणातप्तज्वरश्चैवभवेत्सदा ४ सर्वदादुःखचित्तःस्यात्परवित्तविना शकः ॥ भयभीतान्नरक्षेद्यःक्षुतिपिपासातुरान्स्वयम् शक्तःसन्सर्वदाजंतून् कम्पनोवधवृत्तिकः ५ निषिद्धवृत्तिर्जीवीचजातोपिश्रीमतांकुले देशाद्दे शांतरंयातिक्लेशयुक्तोभवेत्सदा ६

जिस जगा ऐसा पाठहै तिस जाग दूसरा अर्थ करणा ॥ भयभीतानिति ॥ और भयकर्के डरयां होयां जीवांनूं और क्षुधातृषाकर्के आतुरहोयांहोयांनूं जो पुरुष समर्थवान्हैं भी परंतु नहि रखदाहै सो जन्मांतर विषें कंपितहोताहै अर्थात् उसका देहकमदाहै और जो पुरुष जीवोंकों मारकर जीविकाकरताहै सोभी कंपतरोगकर्के युक्त होताहै इसमें ऐसाअभिप्रायहै कि जो धनादि नाशभावना कर्के भयभीत अथवा क्षुधातुर अथवा शस्त्र धारीके आगे स्थित होयाहोयाहै सो कंपमानहोताहै जिससमर्थनें तिसकी रक्षानहिकी तोसोभी तैसाहोणायोग्यहै ५ निषिद्धेति और जो पुरुष निषिद्धवृत्तिकर्के जीविकाकरताहै सो धनवाले कुलविषें जन्मपाताहै फेरआपणेंदेशतें देशांतरकों अर्थात् अन्यदेशकोंजाताहै और सदाही क्लेश करके युक्त होताहै ६

अब शातातपजी और प्रकार कहतेहैं प्रतिमाया इति कि प्रतिमा जो ईस्वरकी मूर्ति तिसके न ष्टकरणें वाला पुरुष अप्रतिष्टतहोताहे अर्थात् प्रतिष्ठासें रहित होताहै और जो विश्णु और शिव और देवता और अतिथि और पुत्रादिक तिनकों नैवेद्य ल्वाए सेंविना क्याइनको ना खुयाए कर्के आप भोजन करताहे सोअधरहोताहै० अर्थात् दरिद्री होताहै० १ और जोंजपका नष्टकरताहै सो सवना कार्यविषे असिद्धार्थ होताहै अर्थात् तिसके सबकार्य नष्टहोतेहैं जप इसजगा सकाम अथवा अकाम हो तथापि कार्य्य सिद्धिके अर्थहे सकाम त्रिवर्गके अर्थहे और निष्काम मोक्षार्थहैं तिसके दूरकरणे वालेको असाफलहोंणा समुचितहैं और जोदानविषें विघ्नककरताहैसोदरिद्री होताहै २ और जोपुरुष होरणां जीवानूं पापाण

शातातपः ॥ प्रतिमायाभंगकारीत्वप्रतिष्ठः प्रजायते अनिवेद्यसुरादिभ्यो भुंजानोजायतेऽधरः १ ॥ सुरादिभ्योहरिहरादिभ्योवैश्वदेवताभ्यश्चआदि शब्दादतिथिपुत्रादिभ्यश्च ॥ अधरः निकृष्टोदरिद्रइतियावत् ॥ सर्वकार्य्यें ष्वसिद्धार्थोजपघातीभवेन्नरः ॥ दरिद्रोजायतेमर्त्योदानविघ्नंकरोतियः २ ॥ उत्पादयतियोन्येषांपाषाणेनप्रहारदः तलप्रहारकश्चैवजातोपिधनिनांकुले ३ धनेनरहितप्रायोदेशांतरगतोभवेत् ॥ महाक्लेशीचहृद्रोगीउदावर्तीभवे न्नरः ॥ ४ ॥ रजस्वलागामिनंचतदुच्छिष्टस्यभोजिनंप्रजाग्रहःप्रगृह्णाति ततस्सज्वरवान्भवेत् ॥ ५ ॥

कर्केमारताहै और हाथकर्के प्रहार करण वाला जोहै क्यापीडा देणेवालाहै सो धनवालेयोंके कुलविषें जन्म पाताहै ३ फेरधनसें हीनहोताहै फेरदेशान्तरविषें चलेजाताहै और वडे क्लेशकर्के युक्तहोताहै और हृदयविषें रोगवाला होताहै फेरउदासी कर्के युक्तहोताहै अर्थात् तिसकाचित्त स्थिरनहि रहता० इहां उदावर्त्त नाम उलटीकाभीहै ४ रजस्वलेति और रजस्वला स्त्रीके साथ गमनकरणें वाले पुरुषनूं और तिसीका उच्छिष्टभोजन करणे वाले पुरुषनूं प्रजाग्रह नामकर्के जोग्रहहोताहै सोग्रहण करताहै ० इसीकारणतें ज्वररोगवालाहोताहै इसमेंभी ऐसे योग्यता जानणी किकाम रूप ज्वरकें दूर कर्णेवाले जिसनें रजस्वला गमनकीताहैं तिसकों ज्वरहोंणा योग्यहैं ५

और अतीसार रोगकर्के युक्तहोताहैं और कुष्टी होताहै और सवनां अंगाविषें वातरोगकर्के युक्तहोताहै और स्त्रीजेकर ऐसा काम करे अर्थात् अपना धर्म्मछपाकर पुरुषकोंप्रलोभनकरतीहुई तिसके साथरमे तां तिसके गर्भकानाश होताहै और प्रदर रोगकर्के युक्तहोतीहै अर्थात् पैंतररो गकर्के युक्तहोतीहै ६ रजस्वलेति और जोपुरुष रजस्वलास्त्रीनूं अथवा चांडाल कीस्त्रीनुं गमनकरताहै तिसपुरुषनुं ज्वर नामाग्रह ग्रहण करलेताहै तिसीकारणतें संताप कर्केयुक्तहो ताहै फेर ज्वररोगकर्के युक्तहोजाताहै ७ तस्करइति और जोपुरुष चोर और दयासें रहितहोया २ वृथाही जीवोंकों मारताहै और जो आचारसें रहितहै और जोधर्मकी निंदाकरणे वालाहै ८ और अधर्म क्या पाप तिसविषें प्रीतीवालाहै तिनांसवनांनूं ज्वरनामकरके जो ग्रहहै

अतीसारीचकुष्टीचगात्रेसर्वेत्रवातवान् स्त्रीचेद्गर्भस्यनाशःस्यात् प्रदरश्चप्र जायते ६ रजस्वलांवाचांडालींयोगच्छेत्तंनरंज्वरः गृह्णातितेनसंतापीज्व रीभवतिमानवः ७ तस्करोयोवृथाप्राणिहिंसकोनिर्दयश्चयः आचाररहि तोयश्चपरधर्मस्यनिंदकः ८ अधर्मनिरतोयश्चतानेतान्ज्वरसंज्ञकःग्रहोगृ ह्णातितन्मात्रादेकरात्रंज्वरीभवेत् ९ द्विरात्रेणत्रिरात्रेणचतूरात्रज्वरेणच शीतज्वरेणसततंज्वरेणोष्णज्वरेणच १० युतोभवति ॥ अशुचिर्यःस्पृशे द्देवंब्राह्मणंबुद्धिपूर्वकम् तंगृह्णातिप्रचंडाख्योज्वरस्तद्ग्रहणात्ततः ११ अप्रक्षालितपात्रेयः अप्रक्षालितपद्युगः भुंक्तेपराह्णे तंकालग्रहोगृह्णा तिमानवम् १२

सोग्रहण करताहै तिसकेस्पर्शहोणेतें एकरात्र ज्वरी होताहै अर्थात् प्रतिदिन उसकोंज्वरआवताहै ९ और जेकर जादे पाप होवेतां दोरात्र अथवा तीनरात्र अथवा चाररात्रके ज्वरकर्के युक्तहोताहै ऐद्विरात्रादिज्वरदीर्घ कालकर्के जातेहै और शीत ज्वर कर्के और सामान्य ज्वरकर्के अथवा उष्णज्वर कर्के युक्तहोताहै १० अशुचिरिति ० किजोपुरुष अशुचिक्या अपवित्र हुया हुया देवताकों और ब्राह्मणाकों बुद्धिपूर्वक स्पर्शकरताहै तिसपुरुषकों प्रचंडहै नाम जिसका ऐसाज्वर ग्रहण करताहै तिसके ग्रहण करणेतेपूर्वोक्तफलहोताहै ऐसा संबंधकरणा ११ अप्रक्षालितेति कि जो द्विजपुरुष अनमांजे पात्र विषें और पयरांकों नहिधोकर्के और सायंकालविषें भोजनकरताहै उसकों कालनामायेग्रहहै सो ग्रहणकरताहै० १२

तिसके ग्रहण करणेते अनंतर फलकहतेहैं अंतरिति किसोंपुरुष अंतर्दाहवाला होताहै और पीतनेत्र वाला भीहोवाहै अर्थात् नेत्रउसके पीले होतेहैं इसीकर्के पीलीहै विष्ठा और मूत्र जिसका ऐसाहोताहै १३ आदित्यादीति कि जोपुरुष सूर्य्यसें आदलेकर्के अष्टमस्थानविषें स्थितजोग्रह उनोंके ग्रहयज्ञनुं नाहिकरताहै उसकोकाल नायकनामाग्रहग्रहणकरताहै १४ और उसविषें एहचिन्ह होतेहैं क्या वारंवार मुखसुकना और वडेभय केदेणेवाला ज्वरहोणा १५ परस्येति किजोपुरुष मृषाकहता हुया अर्थात् झूठ कथनकरता हुयापरपुरुषोंके मनकों संतापनुं करता है सोपितृग्रहकर्के गृहीत होताहै अर्थात् उसकोंपितृग्रहग्रहण करताहै॰ और तिसकों जो चिह्नहैं सो मेरे तें श्रवणाकर १६ सोपुरुष प्राणोंकाहै संदेह जिसविषें ऐसी व्याधि क्या रोग उसकर्के प

अंतर्दाहीपीतनेत्रः पीतविण्मूत्रकोभवेत् १३ आदित्यादिग्रहेष्वष्टमादि स्थानस्थितेपृथः नकुर्य्याद्ग्रहयज्ञंतंकालनायकसंज्ञकः १४ ग्रहोगृह्णा तिचिह्नानितत्रेमानिभवंतिच मुहुर्मुहुर्वक्त्रशोषोज्वरोभवतिदारुणः १५ परस्यमनसस्तापंकुर्य्याद्व्यवहरन्मृषा पितृग्रहगृहीतःस्यात्तस्यचिह्नानिमेशृ णु १६ व्याधिनापरिभूतस्स्यात्प्राणसंदेहकारिणा दारिद्र्यश्चभवेत्तस्ययाव जीवंनसंशयः १७ पुण्यंशिलांतरुंदेवालयंवारुह्यमूत्रति मूत्रंपुरीषमपिवा तंगृह्णातिग्रहोपिवै १८ लोकायतामिधस्तत्रचिह्नानिस्युरमून्यथ ॥ अतिमूत्रपुरीषीस्याद्रक्तनेत्रस्तथापुनः १९ पित्तोद्रेकीचवक्त्रेदेहेचैवव्रणी भवेत् २०

रिभूत होताहै अर्थात् दुःखहोताहै फेरउसकोंदरिद्र होताहै जितना पर्यंत जीवताहै इसविषें संशय नहिहै १७ पुण्यमिति॰ किजो पुरुष पुण्यशिला और पुण्यवृक्ष और देवताका मंदर इनोंके ऊपर आरूढ क्या चढकर्के मूत्र और पुरीष क्या विष्ठाकरताहै उसपुरुषनुं लोकायतहै नामजिसका ऐसा ग्रह ग्रहण करताहै १८ और तिसविषें एहचिह्न होतेहैं वहोतमूत्र और विष्टेवाला होताहै अर्थात् उसकों मूत्र और विष्ठा वहोतआतीहै फेर रक्तनेत्रहोताहैं अर्थात् नेत्रउसके रुधिरवाले होतेहैं १९ और मुखउसके ऊपर पित्तकी अधिकता होतीहै और देहविषें व्रणी होताहै अर्थात् उसके देहविषें छिद्रहोतेहैं २०

अनर्हं इति किजोआप अनर्हहै क्या प्रथमभोजन के योग्यनहिहै और गर्वतें अग्रभाजनकोंग्रह
करताहै अर्थात् पंक्तीविषें सभनोंके प्रथमवयठाताहै और पंक्तीविषें विशेषभोजीहै अर्थात्
औरनोंसे यादय पायसादि कोंखाताहै तिसपुरुषकों आपस्तंभकहै नामजिसका २१ ऐसा ग्रह
ग्रहण करताहै और तिसके स्पर्शमात्रतें सुकगयाहै हृदय और उदरजिसका ऐसाहोताहै इसवि
षेसंदेहनहिहै एहबोधायनकावचनहै २२ अवकात्यायनजी और प्रकारका कर्मविपाक कहतेहै
अंत्यजेति ॥ चांडालीके साथ गमनकरणेवालेनूं और परस्त्री गमनकरणे वालेपुरुषनूं कुम्भिकग्रह
ग्रहणकरताहै और तिसीकालविषें ज्वरवालाहोताहै १ और असृग्वद्ध प्रलापीहोताहै अर्थात्
रुधिरका वमन और रोदन करणेवाला होताहै फेर खांसी और दम रोग वाला होताहै ॥ २

अनर्हःसन्स्वयंगर्वा दादायत्वग्रभाजनम् पंक्तौविशेषभोजीय स्तमापस्तं
भसंज्ञकः ॥ २१ ॥ ग्रहोगृह्णाति तन्मात्राद्धृदयोदरशोषवान् जायतेना
त्रसंदेहो बौधायनवचोयथा ॥ २२ ॥ कात्यायनः ॥ अंत्यजागामिनंचैव
परस्त्रीगामिनंग्रहः कुम्भिकाख्यःप्रगृह्णाति ततस्तुज्वरवान्भवेत् ॥ १
असृग्वद्धप्रलापीच श्वासकासश्चजायते ॥ २ ॥ ब्रह्मांडपुराणेत्वन्येन
प्रकारेण कर्म्मविपाकउक्तः ॥ स्त्रीघातीगर्भघातीच पुलिंदोजायतेभुवि ॥
स्त्रीति ॥ दुष्टायाअपिस्त्रियो निस्सारणमेव विहितोनतुघात इतिभावः
अरण्यवासिनीचजातिविशेषः पुलिंदः स्त्रियोधर्मार्थकामसाधकत्वात्पुलिं
दानांतत्त्रितयशून्यत्वात्

ब्रह्मांडपुराणविषें और प्रकार करके कर्म्मोंका विपाक कहाहै ॥ स्त्रीति कि जो पुरुष स्त्री
घाती और गर्भघातीहै अर्थात् स्त्रीकोंमारताहै और गर्भकों घातकरताहै सो पृथवी विषें पुलिंद
होताहै सो पुलिंदवनविषें रहणेवाली नीचजातिकोंकहतेहै स्त्री घातके पापका तात्पर्यंकहतेहैं
स्त्रीति जेकरस्त्रीदुष्टभीहोवे तवभी उसकोंघरसें निकालदेणा एहि कथन कीताहै और मारणा
नहि विधानकीताहै इसकर्के स्त्रीघात पाप वडाहै अवइसफलकी योग्यतादखातेहैं स्त्रियइति ॥
स्त्रीकेमारणे वाला पुलिंद क्यों होताहै कि स्त्रीकों धर्म और अर्थ और काम का साधन होनेतें
और पुलिंद कों धर्म और अर्थ और काम इनोसें शून्यहोनेसें अर्थात् रहित होणेसें
एह कर्म्म फल यथार्थहै

गुर्वित जोपुरुष अन्यजात क्या कुंड और गोलकादि इनकोंगुरुधारताहै सोजन्मांतरतिषें कुत्तां दी योनिविषें उत्पन्नहोताहै १ क्योंकि ब्राह्मणसें विना गुरु धारणका निषेधहोणेसें संपूर्णवर्णांकों ब्राह्मणहीं गुरु कथनकीताहै इसवचनतें इहां गुरुलको निंदत जातिकासेवकहोणेतें और श्वानकों निंदतवस्तुकाभक्षणकरणेतें फलविषेंयोग्यताहै ॥ १ ॥ अत और कहतेहैं ॥ मांसेति किमांसके खुरा णेवाला ब्राह्मण जन्मान्तरविषे गिद्दड होताहै और वेदके वेचनेवाला ब्राह्मण शूद्रयोनिको प्राप्त होताहै २ पतित जोब्राह्मणहै तिनकोभी मांसऔर मद्यविषें अधिकार नाहींहै इसबातका विचा

गुरुलोप्यन्यजातेषु जायतेश्वानयोनिषु १ योजनोऽन्यजातेषु कुंडगोलका दिषु गुरुलोगुरुधारकः ब्राह्मणादिशुद्धवंश्यातिरिक्तगुरुधारणनिषेधात् सर्वेषामेववर्णानांब्राह्मणोहिगुरुःस्मृतः॥ इतिवचनादितिभावः ॥ गुरुलस्य निंद्यसेवकत्वात् शुनश्चानिंद्यभोजकत्वात् ॥ १ ॥ मांसहारीभवेद्विप्रःशृगा लोजायतेध्रुवम् ब्राह्मणोवेदविक्रेताशूद्रयोनिषुजायते २ मांसेति ब्राह्मणा नां पतितानामपिमद्येमांसेचनाधिकार इतिनिजगात्रासृगुक्षितामित्यत्र नागोजीभट्टटीका ॥ मांसाशीविप्रः शृगालोजायते शृगालस्यपश्वादिभ क्षकत्वात् ॥ वेदविक्रेताद्रव्यंगृहीत्वावेदफलंददाति सशूद्रोभवति शूद्रस्य वेदानधिकारित्वात् ॥

रनिजगात्रासृगुक्षितं इसश्लोकमें नागोजी भट्टकृत जो चंडीकीटीका तिसमेंलिखाहै ॥ और गिद्दडकों पश्वादिकों काभक्षण करणेतें फलविषें योग्यताहै ॥ और वेदविक्रेता उसकों कहतेहैं किजो ब्राह्मण किसीसें द्रव्यकों लेकर वेदपढने काफल देदेवे सोशूद्र होताहै क्योंकि शू द्रकोंवेदकानहीं अधिकार होणेतें ॥ इसप्रकार फलविषें योग्यताहै ॥ इसमें किसे जगा मांसाहारी ऐसा पाठहै तिसका अर्थमांस भक्षण करणेवाला ब्राह्मण ऐसा अर्थकरणा इसका तात्पर्य्य कहतेहैं मांसेति

अब और कहतेहैं विश्वासेति कि जो पुरुष विश्वासदेकर्के मित्रको मारताहै अथवा विश्वासदेकर्के मारणे वाला जो है और मित्रको मारण वाला सो जन्मांतर विषे पाप योनि यांजोहैं गर्द्धभादिक् तिनमें उत्पन्नहोताहै क्योंकि गर्द्धभादिको सहायता शून्य होणेते अर्थात् जैसें मित्रके मारबांहोयां सहायताकरणे वाला कोई नहि रहता इसी प्रकार गर्द्धभादिकोंमें सहायताका अभावहै ॥ और जो पुरुष प्रश्नद्वारा गर्भवती स्त्रीको जानकर फेर मैथुनकर ताहै सो पांण्डु रोग कर्के युक्त होताहै और मूक और जलेहोए किन्याई उसका मुखहोताहै

विश्वासमित्रघातीच पापयोनिषुजायते ॥ भावित्वागर्भणींनारीं संक्री डयतियोनरः ॥ ३ ॥ पांडुरोगीभवेन्मूको ज्वलदास्यःसदाचसः ॥ विश्वा सेति ॥ विश्वासंदत्वामित्रहंता यद्वाविश्वासहंता मित्रहंताचेत्यर्थः सपा पयोनिषुगर्द्धवादिषु तेषांसहायशून्यत्वात् ॥ योगर्भणींभावित्वा प्रश्ने नगर्भंनिश्चित्य मैथुनंकरोतिसपांडुरोग्यादिभवति ॥ ज्वलदास्यःमुखदा हरोगीतत्रापिसदेतिसार्द्धान्वयः सगर्भस्त्रीमुखचुंबकत्वात् ॥ ३ ॥ कन्या घातीमहापापीशवरेषुप्रजायते ॥ ४ ॥ कन्याहंतामहापापीनरकभोगाव साने बहुषुजन्मसुशवरेषुनीचयोनिष्वेवजायते ॥ तस्मिन्यापेक्षयंयाते पुनर्जन्मांतरेभवेत् पूर्वजन्मप्रभावेनदरिद्रश्चकुरूपधृक् ॥ ५ ॥ तस्यैव पुनर्जन्मांतरेभवेत् ...

कन्याघातिनःदुःफलांतरमाह ॥ तस्मिन्निति ॥ पापेपापदेहेक्षयंयातेसति कुरूपधृक्केकरकुण्यादिरूपः ५ ॥

और मुखमें दाहरोगवालाभी सदाहोताहै क्योंकि गर्भवालीस्त्रीका मुखचुंबनेतें ३ इसजगामेंडेढ श्लोकका अन्वय जाणणा और इसीकाअर्थमूलमेंस्पष्टकर्केलिखाहै ॥ विश्वासंदत्वेति कन्याघा तीति और कन्याकेमारणेवाला महापापी पुरुषनरकको भोगकर बहोतवार शवरयोनियां क्यानी चयोनियांतिनमें उत्पन्नहोताहै ४ इसीकाअर्थ मूलमें स्पष्ट कर्के लिखाहै कन्याहंतेति ॥ और तिसपापके नष्टहोयां २ फेरजन्मांतरमें पूर्वजन्मके पापद्वारा दरिद्रीहोताहै और खोटे रूपवाला होताहै इसीका अर्थ मूलमें स्पष्ठ करके लिखाहै ॥ तस्यैवेति ५

अब कन्याके मारण वाले पुरुषकों और खोटाफलकहतेहैं सदेति किकन्याके मारण वाला पुरुष वटक नामकरकें पक्षीहोताहै और चकारसें क्या जानतेहैं कि जन्मांतर में श्वासकासरोगकरकें युक्तभी होताहै और पापकी वाहुलता द्योतनकरणे केवास्ते ध्रुवं यिहप दकिहाहै और आम्रक्या अंब और श्रीफल क्या नरेलादि के फल तिससें आदलेकरजोफलहैं तिनके चुराणे वालेका जन्म कहतेहैं फलेति किफलके चुराणे वाला जोपुरुष जिसफलको चुराताहै तिसी फलका कीडाहोताहै इस श्लोकका अर्थमूलमें भीस्पष्ट करके लिखाहै चकारा दिति ६ ॥ अब वृक्षछेदन करण वाले पुरुषकाकर्मविपाककहतेहैं वृक्षेति किवृक्षछेदनकरणेंवाला महापापी कृमियोनिविषे प्राप्तहोकर वारंवार मृत्युकों प्राप्तहोताहै क्योंकिवृक्षकों नाना जीवों

कन्याघातीचपुरुषः वटकोजायतेध्रुवम् फलहारीचदुष्टात्मा फलेतस्मिन्भवे त्कृमिः ॥ ६ ॥ कन्याघातिनएवदुःफलान्तरमाह सदेति चकाराज्जन्मान्तरे श्वासकासरोगी पापातिशयद्योतनाय ध्रुवमिति ॥ सएवजन्मान्तरेवटकः पक्षीभवति आम्रश्रीफलादिचौरस्य फलमाह फलेति यस्यफलस्यचौरः तस्मिन्नेवफलेकृमिर्भवति । ६ ॥ वृक्षछेदेभवेन्मृत्युः कृमियोनिषुजायते शा स्त्राचारैः परद्वेषीरजकोजायतेभुवि ॥ ७ स्वामिघातीमहापापः पाषाणेकी टकोभवेत् धनहर्त्तान्धवधिरः श्मशानेगृध्रकोभवेत् ॥ ८ फलवत्घनछाया दिवत् वृक्षच्छेदिनोजन्माह वृक्षेति कृमियोनिषुजातस्यशीघ्रमेवमृत्युर्जा यतेवारंवारमितिभावः ॥ वृक्षस्यनानाजीवाश्रयत्वात् शास्त्राचारैरल्पज्ञो हमेवमहाशास्त्रीतिभावनया वहुज्ञंयोद्वेष्टि स रजको मलनिर्णेजकः सम लान्तःकरणत्वादितिभावः । स्वामीति पाषाणकीटस्यसर्वभोगशून्यत्वात् धनेति रूपादिलोभेन धनहर्तूरूपादि भोगहीनान्धादियोनिर्युक्ता ॥

का आश्रय होणेतें और कृमियोनिको वहोतहोणे करकें योग्यता होईहै और जोपुरुष शास्त्र केआचारों करकें अल्पज्ञहै अर्थात् शास्त्राचारों कोथोडाही जानताहै और कहताहै किमेही वडाशास्त्रीहुं इसभावनाकरकें विद्वानके साथ द्वेषकरताहै सोजन्मांतरमें रजकक्या धुव्वाहोताहै अर्थात् मलके दूरकरणें वाला होताहै क्योंकि मलवाला अंतःकरण होणेतें और इसश्लोक का अर्थ मूलमें स्पष्टकरकें लिखाहै कृमीति ७ अब स्वामी घातकाफलकहतेहै स्वामीति किस्वा मीके मारणें वाला पाषाणका कीडाहोताहै सवनाभोगोंसें रहित होणेतें फलविषें योग्यताहोई है और रूपादिकोंके लोभतें धनचुराणें वाला जोपुरुष सोअंधाहोताहै और वधिरहोताहै फेर जन्मांतरमें श्मशानविषेगिद्दडहोताहै ८ इसश्लोकका अर्थभीमूलमें स्पष्टकरकेंलिखाहै पाषाणेति

अब धनके चुराणे वाले पुरुषकों और योनि कहतेहैं ॥ वधादिति कि धनके चुराणेवाला गृध्र क्या इल्लकी योनिमे प्राप्तहोताहै फेर किसीके वधकरणेते मरकर्के और गृध्रयोनिकों त्याग कर्के विल्लेकी योनिमें प्राप्तहोताहै ॥ इसका अर्थ मूलमे स्पष्टकर्के लिखाहै ॥ कस्यचिदिति ॥ और प्रजाकों पीडादेणेवाला राजा कुक्कुट योनिकों पाताहै ॥ प्रजाकों पीडादेणेवाला क्या प्रजासें अनीतिकर्के धनहरणेवाला इहां कुक्कुटयोनिषु इसबहुवचन कर्के काकादिक योनियां भी होतीहैं ॥ और इहजो कुक्कुटादिकहैं सोसहित मलके यौतृणादिक तिनके शोधने वालेहैं इस वास्ते प्रजाकों पीडादेणे वाले राजाकों एह योनि होणी योग्यहै ॥ ९ ॥ सूत्रेति जो पुरुष सूत्रको चुराताहै अर्थात् कर्पासादि निर्मिततंतुको चुरांदाहै सो पृथ्वीके

वधान्मृत्युवशेयातिमार्जारोजायतेपुनः ॥ प्रजापीडनकोराजाभवेत्कुक्कुटयोनिषु ९ धनहर्तुरेवयोन्यंतरमाह ॥ वधादिति कस्यचिद्वधान्मृत्वागृध्रयोनिं त्यक्त्वामार्जारोजायते प्रजापीडकोराजाअन्यायोपार्जितद्रव्यःकुक्कुटयोनिषुवहुवचनेनकाकादिपरिग्रहः इमेतुसमलकक्षादिशोधकाः९ सूत्रहारीमहीमध्येकीटोभवतिपीडितः ॥ कीटःरोमपक्षादिहीनः ॥ कर्पासशणहारीचत्रह्मवस्तुहरश्चयः उपानहोश्चयश्चौरःसमत्स्योजायतेजले १० कर्पासेति उपानहोरितिकर्पासादेः शीतनिवारकत्वात् मत्स्यस्यजलमध्येसदाशीतलत्वादितिभावः १० घृतहारीभवेत्कुष्ठीतस्माद्भ्रष्टःक्रमिर्भवेत् ॥ घृतस्यसर्वशरीरपोषकत्वात्कुष्ठस्यचसर्वशरीरदाहकत्वात् ११ ॥

मध्यविषे रोमपक्षादि हीन कीट विशेष हुंदाहै ॥ कर्पासेति और कर्पास क्या कपाह और शण और ब्राह्मणों कीयांवस्तु तिनके चुराणेवाला और उपानह क्या जोडा तिसके चुराणे वाला पुरुष जलविषे मत्स्य योनिकों प्राप्तहोताहै ॥ क्योंकि कर्पासादिकांकों शीतक वारण करणेते और मत्स्यकों सदाही जलविषे शीतलताकों प्राप्तहोणेतें तिसकों मत्स्ययोनि होणी योग्यहै और इसका अर्थ मूलमेभी स्पष्टकर्के लिखाहै १० ॥ घृतहारीति और घृतके चुराणेवाला कुष्ठी होताहै फेर कुष्टकों भोगकर क्रमिहोताहै क्योंकि घृत कोसारे शरीरकी पुष्टी करणेते और कुष्टकोंसारे शरीरमें दाहकरणेते फल विषें योग्यताहै ॥ ११ ॥

अब और कहतेहैं मांसेति किमांसकेचुराणे वाला पुरुष पिशाचहोताहै क्योंकि पिशाचादिकोंको कच्चा मांसखाणेकर्के मांसके स्वादका अभावहोणेतें इसवास्ते पिशाच योनि होणीयोग्यहै और अन्नक्या गोधूमादिक तिसके चुराणे वाला सूचिवक्त्र होताहै अर्थात् तिसके मुखमे मांसरूपी अथवा अस्थिरूपी एकसूई होतीहै और तिसके नहिनिवारणहोणेतें वोसदादुखी रहताहै इसमे ऐसाभावहै किअन्नकेस्वादवास्ते अन्नचुराणे कर्के जन्मांतरमे सूचिवक्त्र होणेतें अन्नकास्वाद नहि लगताहै तिसको एह फल होणा योग्यहै॥ और तेलके चुराणेवाला तेलीहोताहै अथवा तेलकेपीडनेविषे जोडयाहोया जो बैल सोहोताहै॥ क्योंकि तैल चुराणेकरके एहफल होणां योग्यहै॥ और मधु क्या मखीर अथवा मद्य तिसकेचुराणें वाला गर्द्दभ योनिकों प्राप्तहोताहै और इसश्लोकका

मांसहारीपिशाचःस्यात्सूचिवक्त्रोऽन्नहारकः तैलहारीभवेत्तैलीमधुहारीतु गर्द्दभः १२ मांसेति मांसहारीमांसचौरः पिशाचः पिशाचानामाममांसभक्षकत्वेनमांसास्वादहीनत्वात्० सूचीति अन्नस्यगोधूमादेश्चौरः सूचीमांसमयीवास्थिमयीमुखेयस्यसः तस्यान्ननिर्वार्य्यत्वात्सदादुःखीत्यर्थः तैलेति तैलचौरःतैलोत्पादकः तैलनिष्पीडनेप्रयुक्तस्तैलीवृषभोमनुष्योवा मध्विति मधुचौरः मदांधसदृशोगर्द्दभः १२ गंधपुष्पादिहारीच दुर्गंधोजायतेमुखे दुग्धहारीतुकूर्म्मः स्याज्जलवासीजितेंद्रियाः १३ गंधेति गंधादिचौरः मुखेदुर्गंधः गंधादिनावशीकृतलोकस्य दुर्गंधेन लोकतस्त्याजनं दुग्धचौरःउष्णताकामः जलवासीतिस्थलवासिव्यावृत्त्यर्थं जलस्योष्णप्रातिकूलत्वात् हेजितेंद्रियाः ऐहिकसर्ववस्तुतोव्यावृत्तमनस्काः १३

अर्थमूलमे स्पष्टलिखाहै मध्विति १२ गंधेति सुगंधिविशिष्ट जोद्रव्य पुष्पादिक तिनके चुराणे वाला जोपुरुष सोमुखमे दुर्गंधिवाला होताहै और दूधके चुराणे वाला जल वासीकछोपड होताहै क्योंकि गंधादि कों करके लोक वशहोतेहैं और दुर्गन्धि करके लोकांसे त्यागहोताहै और दुग्धचौर गर्माईकी कामनावाला होताहै इसीवास्ते जन्मान्तरमें जलवासी कछोप्पड होताहै इहांजलवासी कहणें कर्के स्थलवासीकी व्यावृत्ति जाणणी इसमे नचकेता काऋषियों प्रतिसंबोधनहै हेजितेन्द्रयाःइसका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं किइस लोक में होणे वालीयां जोसब्बवस्तु तिनसें तुसां व्यावृत मन वाले हो १३

प्रच्छन्नेति किजोपुरुष गुप्तहिपाप करताहै सो सप्तजन्मोंविषे अंधाहोताहै फेर उसपापदेहतें भ्रष्टहुया २ अर्थात् उसपापदेहकों त्यागकर जन्मांतरविषे लोमशहोताहै अर्थात् वणमानुक्या वनमनुष्यहोताहै ॥ और इसोकाअर्थ स्पष्टकरके मूलमेंलिखाहै ॥ प्रच्छन्नेति ॥ १४ ॥ नित्यमिति ॥ किजोपुरुष कारणकेविनाहि कठोरवचन कहताहै और दूसरेके मतमय विक्षेपकरताहै सांसर्पोंके भक्षणकरणेवाला नकुलहोताहै अर्थात् नौलहोताहै ॥ और किजोपुरुष परद्वेषीहै अर्थात् परपुरुषोंकों दुखदेताहै आपणे अधीनहोयांहैयां भी परक्रोधीहै सो चिरकाल और जन्मांतरों विषे जलौका होताहै अर्थात् जुक होताहै इसमें योग्यता कहतेहैं क्रोधी रक्तसुकाने वाले सुभाववाला होताहै और जुकरुधिरकों भक्षण करणे वाली होतीहै इसकारणसें फल विषे तुल्यताहैं ॥ और जलौका शब्द इहां आकारांत समझणा और इसोका अर्थ स्पष्ट करकें मूलमें लिखाहै ॥ नित्यमिति ॥ १५ ॥ अकृत्वेति कि जो

प्रच्छन्नपापकर्त्तुस्तुसप्तजन्मांधताभवेत् ततःपापात्परिभ्रष्टोलोमशोजायते नरः १४ प्रच्छन्नेति गुप्तपापिनोंधता भोगगोपनायेति ततःपापात्पापदेहात्परिभ्रष्टोजन्मांतरेलोमशः सकलशरीरलोमा वनमनुष्योजायते १४ नित्यंक्रूरोविकारीयोनकुलोजायतेनरः परद्वेषीपरंक्रोधीजलौकाजायते चिरम् ॥ १५॥ नित्यमिति क्रूरःअकारणेपिकटुभाषी विकारीविक्षेपकारी नकुलःसर्पादिभक्षकः अनुकूलेपिपरस्मिन्योद्वेष्टिअतएवक्रोधी रक्तशोषकस्वभावा जलौकारक्तपाचिरम् वहुषुजन्मसुजायते ॥ १५। अकृत्वा वैश्वदेवंतु भुंजतेयेद्विजातयः तेवृथाभोजिनः पापाजायंतेपापयोनिषु १६ अकृत्वेति वैश्वदेवलोपिनोद्विजास्त्रयोवर्णाः देवांशभोक्तृत्वात्तेमलभोक्त्र्यादियोनिषुजायंते १६ ॥ पश्चात्तापकरोदानेकोकिलोजायतेवने

द्विजसें आदलेकर्के तीनो वर्ण अर्थात् व्राह्मण और क्षत्रि और वैश्य वलवैश्वदेव विधिकों नाकर्के भोजनकरतेहैं सो तिनों पापीयोंका भोजन करणावृथाहिहै फेर सो पापयोनियां विषे प्राप्तहोतेहैं अर्थात् मलके भक्षण करणे वालीयां जो कुत्तेसे आदले कर्के योनियांहैं उनांकों प्राप्त होतेहै क्योंकितिनांको देवांश भक्षणकरणेते फलविषे योग्यताआईहै और इसोका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमें लिखाहै अकृत्वेति १६ ॥ अव और प्रकार कहतेहैं पश्चादिति कि जो पुरुष दानके अंतमें पश्चात्तापकरताहै सो वनके विषे कोकिला नामकर्के पक्षी होताहै क्योंकि पुरुष दानकर्के फेर किसीसें न कथनकरे इस वचनतें और वोहि पश्चात्तापकरणे कर्के उत्रेस्वर वाला होवाहै और पूर्व जन्म विषे दाता होणेतें मधुरस्वर वाला होताहै

और पिता और माता और सुहृत् इत्यादिकों केसाथ द्वेषकरणे वाला पुरुष जन्मांतरमें आकाश विषें विचरणे वाला वगुला नामकर्के पक्षी होताहै क्योंकि कुटिल अन्तःकरण होणेतें और इसवास्ते उसकों वकयोनि होणी योग्यहै और इसकाअर्थमूलमें स्पष्टकर्के लिखाहै १७ य इति और जो पुरुष शिवस्वोपजीवीहै अर्थात् शिवजीकेताई अर्पण कीत्ता हुआ जो द्रव्य तिसकर्के आपणी जीविकाकरताहै सो वनमें ससक क्या सिहानामकर्के मृग होताहै और शिवांश भक्षण करणेते उसकोंभी लुब्धक क्या छकार खेलणे वाले पुरुष यत्नों द्वारा मारदेहै ॥ और देवता और ब्राह्मण तिनके द्रव्यकों चुराणें वाला पुरुष जन्मान्तरमें वनविषे कालासर्प होताहै और वो पवनसें इतर जो भोग तिससें रहित होताहै और इसका अर्थ मूलमें स्पष्ट कर्के लिखाहै देवेति ॥ १८ ॥ ताम्रेति और जो पुरुष

पितृमातृसुहृद्द्रोहाद्बकोभवतिखेचरः ॥ १७ ॥ पश्चादिति ॥ दानान्ते पश्चात्तापकरः नदत्वापरिकीर्त्तयेदितिनिषेधात् ॥ कोकिलः पश्चात्तापेनोच्चैर्भाषी दातृत्वान्मधुरस्वरः ॥ पित्रिति ॥ पित्रादिद्रोहिणोन्तः कुटिलत्वात्तादृशीवकयोनिः खेचरइति भूचरव्यावृत्त्यर्थम् १७ यःशिवस्वोपजीवीस्यात्सभवेत्ससकोवने देवब्रह्मस्वहारीचकृष्णसर्पोभवेद्वने १८ यइति शिवस्वंशिवायार्पितंद्रव्यंतद्भोजी ससकः मृगविशेषः सतुलुब्धकैः प्रयत्नेनापिमारयित्वाभक्ष्यते । देवब्राह्मणद्रव्यचौरः कृष्णसर्पः पवनेतरभोगरहितः । १८ । ताम्रकांस्यापहारीचमेषयोनिषुजायते फलहारीच विंध्याद्रौकुंजरोजायतेवने ॥ १९ ॥ ताम्रादिहारीमेषः दृढतरशिरस्कः परस्परकलहेन ताम्रादिशब्दकारी पक्वापक्वभेदेनफलानांद्वैविध्यात्तद्धरणपापफलस्यापिद्वैविध्यंदर्शयति फलहारीति पूर्वेपक्वफलहारीइहत्वपक्वफलहारीतिभेदः विंध्याद्रौसिंहवहुलेतत्रहिसिंहाः फलवद्धस्तिशिरस्त्रोटयंतीतिभावः ॥ १९ ॥

ताम्रेकों और कांस्यकों चुराताहै सो जन्मान्तरमें मेषयोनिकों अर्थात् भिड्डूंकी योनिको प्राप्त होताहै और तिसपापद्वारा वडे दृढ़कर्के युक्त जो शिर तिसवाला होताहै और आपसमय कलहकर्के ताम्रेकी न्यांई शब्द करणे वाला होताहै इसमें एभी विचारहै फलांकों कच्चे और पक्के भेदकर्के यह दोप्रकार होणेतें तिनके चुराणेदा जो पाप सोभी दो प्रकारकाहै सोई कहतेहैं पूर्वमिति कि पहलें जो किहाहै सो पक्के होए फलकाकर्म विपाक किहाहै और इस जगामें कच्चे फलका कर्म विपाक कहतेहैं कि कच्चे फलके चुराणें वाला विंध्याद्रि नाम पर्वत विषे कुंजरकीयोनिको प्राप्तहोताहै अर्थात् हाथीहोताहै और एहि अर्थ मूलमे स्पष्टकर्केलिखाहै विंध्येति तिसजगावहुत सिंहरहतेहैं सोहस्तियांके शिरकों फलकीन्यांईतोडदेहैं एहभावहै १९ ॥

अब और प्रकारकहतेहैं घंटेति कि जो पुरुष घंटकों और वाजयोकों चुराताहै सो घंटकेवना
णे वाला ठठिआर होताहै अथवा घंटेकी न्याई शब्द करणे वाला पक्षीहोताहै और शास्त्रके
चुराणेवाला पुरुष कुत्तयोंकी योनिमे प्राप्तहोताहै क्योंकि शास्त्रकों उत्तमभोगसाधनहोणेतें और कु
त्तयोंकोंनिंदित भोजनकरणेतें एह गति होणीयोग्यहै और इसका अर्थ मूलमे स्पष्टकर्के लिखाहै
२० ॥ पादेनेति और जो पुरुष पादकर्के ब्राह्मणकों और अग्निकों स्पर्शकरताहै सो तीनजन्म
पंगु क्या लूला होताहै और जो ब्राह्मण होकरके सुरापानकरताहै अर्थात् मद्यपानकरताहै
सो श्वानयोनिकोंप्राप्तहोताहै क्योंकि ब्राह्मणकों मदिरापान मलभोजनके तुल्यहै और श्वानकों
मलभोजन नियतहै इसवास्ते तिसकोंश्वानयोनियोग्यहै और इसका अर्थमूलमें स्पष्टकर्केलिखा

घंटावादित्रहारीचघंटाघंटोपिजायते शास्त्रचौरोनरोनित्यंशुनांयोनिपुजा
यते २० घंटादिवादित्रचौरः घंटांघटतइत्येवंशीलोघंटाघंटःघंटाघटकःघंटा
वच्छब्दनःपक्षिविशेषोवा शास्त्रेति शास्त्रस्योत्तमभोगसाधनत्वात् शुनां
चनिंद्यभोजित्वात् २० पादेनाग्निंद्विजस्पर्शीपंगुर्जन्मत्रयंभवेत् सुरापान
करोविप्रःश्वयोनिंसमवाप्नुयात् २१ पादेनेति अग्निंद्विजंवायः पादेन स्पृ
शतिसतुजन्मत्रयपर्य्यंतंपंगुःपादहीनोभवति सुरेति योविप्रोभूत्वासुरांम
द्यंपिवतिसश्वयोनिंगच्छति विप्रस्यसुरायामलतुल्यत्वात् शुनश्चमलभोजि
त्वात् २१ परवस्तुहरायेचसर्वभक्ष्याश्चयेनराः शृगालयोनिंगत्वाथकाक
योनिंव्रजंतिते २२ परेति यत्किंचित्परवस्तुहरणशीलाये येच भक्ष्याभक्ष्य
विचारशून्यायस्यकस्यचिदपि कुलालरजकादेर्दत्तमन्नमश्नंतितेतादृशीपर
मारितपश्वादिग्राहकां शृगालयोनिं भक्ष्याभक्ष्यविचारहीनां काकयोनिं
चगच्छंतियोग्यत्वात् २२ मंत्रदीक्षाविहीनायेदीक्षांदद्युर्द्विजोत्तमाः तेनदो
षेणविप्रास्तेमार्जारत्वंव्रजंतिहि २३ ॥

है पादेनेत्यादि ॥ २१ ॥ परेति और जो पुरुष दूसरेकी बस्तुकों चुरातेहैं और जो
सर्वभक्षीहैं सो सृगालयोंनिकों प्राप्तहोतेहैं अर्थात् गिद्दड योनिकों प्राप्त होकरकें तिसके अ
नंतर काकयोनिकों प्राप्तहोतेहैं शृगालादिकांकों भक्ष्याभक्ष्य विचारतें रहितहोणेतें और परवस्तु
के चुराणेवालेकोंभी भक्ष्याभक्ष्य विचारतें हीनहोणेतें गिद्दडादिक योनिकी योग्यताहै २२ ॥
अब और कहतेहैं मंत्रेति कि जेडेब्राह्मण आप मंत्र और दीक्षासें रहितहैं और दूसर्यां पुरुषां
कों धन और प्रतिष्टाके लोभी होए २ दीक्षाका उपदेशकरतेहैं ॥ दीक्षानाम धर्म विशेषकों
बोधकरणे वाला जों चिह्नक्या चक्राकारादिक तिलक सोईहै पूर्वजिसके ऐसी जो उपासना
क्या शैवी और वैष्णवी इत्यादिक तिनका स्वीकार करणा तिसको कहतेहैं तिस दोष कर्कें

सो मार्जारक्या बिल्लेकी योनिको प्राप्त होतेहैं अर्थात् चूहेके घरमे आसक्तहै चित्त जिनका ऐसे होतेहैं क्योंकि शिष्यादिकोंके ग्रहणकी जो चिंता तिसकी योग्यता होणेते बिल्लेकी योनिहोणी तिनकोयोग्यहै और इसीका अर्थ मूलमे स्पष्टकर्के लिखाहै २३ अब और कहतेहैं छेदयेदिति कि जो पुरुष रस्तेके बीचमे घणी छायाकर्के युक्त जो वडावृक्ष वटआदि और जीवोंके उपर उपकार करणे वाला पुष्पितहोया २ अथवा फलयाहोया तिसकोकटताहै सो वृक्षके आश्रय रहणे वाला वनकाचूहा होताहै अर्थात् गाछडचूहा नामकर्के होताहै फेर तिसके अनन्तर सुगंधिका प्रति कूल जोदुर्गन्धि तिसका शोधन करणे वाला कुक्कुटहोताहै

मंत्रेति ॥ धर्मविशेषबोधकचिह्नपूर्वमुपासनाविशेषग्रहणं दीक्षा स्वयं तद्विहीनाएवान्येभ्योधनप्रतिग्रादिलोभिनोद्विजादीक्षां ददति ते मार्जाराः मूषकग्रहाचित्तासक्ताभवंति ॥ शिष्यादिग्रहणचिंतायोग्यत्वात् २३ ॥ छेदयेद्योमहावृक्षंपुष्पितंफलितंतथा सजाहकोभवेत्सम्यक् पश्चाद्भवति कुक्कुटः ॥ २४ ॥ छेदयेदिति ॥ महावृक्षं ॥ मार्गमध्ये घनच्छायं वटादिकं पुष्पितंफलितं यं कंचिद्वा प्राण्युपकारकं छेदयेत् सजाहकः वनमूषको वृक्षाश्रितपक्ष्यादिभक्षःजन्मान्तरेच सुगंधप्रतिकूलदुर्गन्धशोधकः कुक्कुटो भवति २४ स्वगोत्रघातिनोयेचस्वगोत्रीषुचलंपटाः ऋक्षयोनिषुजायंते यावच्चंद्रदिवाकरौ २५ स्वगोत्रेति ॥ स्ववंशनाशकः स्वगोत्रीभोगीच तादृशीमृक्षयोनिंकल्पपर्यंतंयाति २५ दानेषुदीयमानेषुतत्रविघ्नंकरोति यः अन्धकूपेभवेत्सर्पोनेत्रहीनोनसंशयः २६ दानेष्विति दानेविघ्नकरो दातुःस्यातत्वात्तत्प्रतिकूलेऽन्धकूपेऽन्धोऽहिर्भवति २६ चक्रवाकोभवेत्सोपिस्नेहच्छेदंकरोतियः मातृपितृगुरुद्वेषीधर्मशास्त्रस्यनिंदकः २७ चक्रेति यःस्नेहभंजकः सतुस्नेहदुःखदांचक्रवाकयोनिंयाति चक्रवाकाहि नदीपार्श्वेवसंति रात्रौच स्त्रीवियुक्ताभवंतीतिभावः ॥

और इसका अर्थ मूलमे स्पष्टकर्के लिखाहै महावृक्षमिति २४ और कहतेहैं स्वगोत्रेति कि जो पुरुष अपनेवंशका नाशकरताहै और अपणे गोत्रकीस्त्रीके साथ मैथुनकरताहै सो कल्पपर्यंत तैसीही ऋक्षयोनिकों प्राप्तहोताहै २५ अब और कर्मफल कहतेहैं दानेष्विति कि जो पुरुष दानमे विघ्नकरताहै सो दाताके प्रतिकूल जो अन्धकूपहै तिसमे अन्धासर्पहोता है २६ चक्रवाकइति और जोपुरुष दूसरेकी प्रीतिकाछेदनक्या नाशकरताहै सो स्नेहकर्के दुःख देणे वाली जोचक्रवाकयोनि तिसमें प्राप्त होताहै और चक्रवाकतिनकों कहतेहैं जो रात्रिसमय स्त्रीकर्के वियोगीहोए २ नदीकें तीरमें पक्षी रहतेहैं २७

मात्रिति और जो माता और पिता और गुरु तिनके साथ द्वेष करणेवाला और जो परस्त्रीगमनादिकोंके करणेवाले धर्म शास्त्रको निन्दाकरणेवाला यह सभ हजारजन्म पर्यन्त गर्भमें नाशकोंप्राप्तहोतेहैं यह दूसरे अर्द्धश्लोकके साथ अन्वयजानणा २७ अब मात्रादिद्वेषोंका अभिप्राय कहतेहैं कि गर्भसें लेकर बाल्यादिक जो दुःखतिनके सहारणे वाले और सुख देणेवाले जो मात्रादिक तिनके साथ जो द्वेषकरताहै और पहले जो कहचुकेहैं सो मात्रादिकोंका द्रोहीकिहाहै द्रोही उसकों कहतेहैं जो केवल अन्तःकरणमें कुटिलतावाला होवे और द्वेषी इसकों कहतेहैं जो बाह्य और अन्तःकरणमें कुटिलता वाला होवे इसवास्ते पुनरुक्ती नहि जानणी ॥ एकाकीति और जो पुरुष इकलाही परिवार जो बालवृद्धादिक तिनकों नादेकर मिष्टान्न भक्षण करताहै सो निर्जलदेशविषे जो सुका होयावृक्ष सहित छिद्रके अर्थात् सहित पुरारके तिसविषे जलकी

मात्रिति गर्भबाल्यादिदुःखसहनपूर्वसुखदात्रमात्रादिद्वेषी पूर्वंतुमात्रादिद्रोहीप्रोक्तः तयोरंतःकौटिल्यंद्रोहः बाह्यांतःकौटिल्यंद्वेषइतिभेदः धर्मशास्त्रस्यपरस्त्रीगमनादिवारकस्यनिंदकः एतेसर्वेऽपि जन्मसहस्त्रंयावद्गर्भएवविनश्यंति इतिसार्द्धान्वयः ॥ २७ ॥ एतेगर्भेविनश्यंतियावज्जन्मसहस्त्रकम् एकाकीमिष्टमश्नातिपरिवारंविनातुयः ॥ २८ ॥ परिवारंबालवृद्धादिकंविना स्वयं मिष्टभोगी सतु मरुदेशे निर्जलदेशे तत्रापि शुष्कवृक्षेयत्कोटरंसछिद्रस्थानं तत्रसर्पोजलाभिलाषीतिभावः ॥ २८ ॥ नाराधितंचयैःशैवंलिंगंविष्णुस्तथात्मभूः २९ शिवादिपूजाहीनान्निंदति ॥ नाराधितमिति आत्मभूःब्रह्मा तत्पूजनंमानसं नतु विष्ण्वादिवत् यद्वातत्पूजनं ब्राह्मणपूजनम् २९ नपूजितातथादुर्गानतीर्थगमनंकृतम् नहुतंनैवजप्तंच नदत्तंब्राह्मणेगुरौ ३० दुर्गांनवरात्रादावपिनपूजिता तेषामालस्यवश्यानां नरकेपतनंध्रुवम् तेषामिति आलस्येनत्यक्तकर्मणांनरके एव पतनम् ३०

अभिलाषावाला सर्प होताहै २८ इहां फल भेदहोणेतें मिष्टान्नभोगीका कर्मविपाक बहुतवारकिहाहै पुनरुक्ती नहिजानणी अब शिवादिकोंकी पूजासें हीन जो पुरुष तिनका कर्मविपाक कहतेहैं नाराधितमिति कि जिनोंने शिवलिंग नहि पूजयाहै और विष्णु और ब्रह्मा नहि पूजयाहै परंतु इसजगा ब्रह्माका पूजन मानसी जानणा कोई विष्णु और शिव जीकी न्याई नहि जानणा अथवा ब्रह्माके पूजनकर्के ब्राह्मणोंके पूजनकाग्रहणहै २९ और जिनोंने दुर्गा भगवती नहि पूजीहै और तीर्थयात्राभी नहिकीतीहै और हवन और जप और ब्राह्मण और गुरुकेताईं दान यहसब शुभकाम जिनोंनें नहिकीतेहैं और दुर्गापूजन नवरात्रयांमेंभी नहि कीताहै ऐसे जो आलसकर्के शुभकर्म्म त्यागने वाले पुरुष तिनासबनाका नरकमें गमन होताहै ३०

दुष्कर्मों का फल कह कर्के अब शुभकर्मोंका फल भी संक्षेपते दिखातेहैं ॥ देवेति किजो पुरुष देवतयोंके पूजनविषे और तीर्थोंके स्नान विषे युक्त हैं और सत्यकया यथार्थ कथनकरणा जो है तिसधर्मविषे युक्त हैं अर्थात् दूसरेकों नहिभी जो प्यारा उसकोंभी सत्यहिकथनकरतेहैं और शूरवीरहैं अर्थात् क्षत्रियादिहोकर युद्धविषे मरतेहैं और तपकरणा और इंद्रियोंकारोकना तिसकर्के युक्तहैं सो अनेकजन्मोंविषे देवतयोंके मंदिरविषे क्रीडाकरतेहैं ३१ और इसीका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमें लिखाहै सत्येति ॥ ० अब महापापियोंका कर्मविपाक कहतेहैं मनुजी० सुवर्णेति० सुवर्णके चुराणे वाला खोटे नखोंवाला होताहै और मदिरापानकरणे वाला काले दंताकों प्राप्तहोताहै अर्थात् दंद उसके काले होतेहैं और ब्राह्मणके मारणेवाला पुरुष क्षयरोगकों प्राप्तहोताहै और गुरुकी शय्याविषे शयन करणेवाला दुश्चर्म्मताकों प्राप्तहोताहै अर्थात् उसका चर्म खोटाहोताहै परंतु इसमें ऐसा समझणा कि वहोत काल नरक

देवार्चनरतायेच तीर्थस्नानपराश्चये सत्यधर्मरताःशूराःतपःसंयमसंयुताः तेतुजन्मान्यनेकानिक्रीडंत्यमरमंदिरे ३१ ॰ शुभकर्म्मणांतुस्वर्गेगमनमित्याह देवेति सत्येति सत्यंयथार्थभाषणं तद्धर्मरताः अप्रियमपि सत्यमेवभाषंतइत्यर्थः तादृशाअमरमंदिरेक्रीडंति ३१ अथमहापापिनां कर्म्मविपाकः ॥ मनुः ॥ सुवर्णचौरःकौनख्यंसुरापःश्यावदंततां ब्रह्महाक्षयरोगित्वंदौश्चर्म्यंगुरुतल्पगः १ ॥ यमः ॥ पतितःसंप्रयुक्तश्चकृतघ्नोगुरुतल्पगः एतेपतंतिसर्वेपुनरकेष्वनुपूर्वशः महापातकसंयुक्तायुगंतिष्ठंत्यधोमुखाः १ मनुः ॥ श्वसूकरखरोष्ट्राणांगोजाविमृगपक्षिणां चांडालपुष्कसानांचब्रह्महायोनिमृच्छति १ ॥

भोगके अंतविषे एह महापापी ऐसे फल को प्राप्तहोतेहैं कोई तत्काल हि नहि १ और कहतेहैं यमजी ० पतितइति ० कि जो पुरुष पतितहै और जो पतितका संपर्कीहै अर्थात् उसके साथ मिलाहुयाहै और जो कृतघ्नहै और जो गुरुकी शय्याविषे शयन करणे वालाहै इह सभ संपूर्ण नरकोंकों प्राप्तहोतेहैं अर्थात् क्रमकर्के सभनां नरकांकों भोगतेहैं और महापातककर्के युक्त हुये हुये युगपर्यंत अधोमुख होकर स्थित होतेहैं इहां केवल नरकभोगमात्रकिहाहै इसका जो भाविकर्म्म फलहै सो पूर्वोक्त मनुवचनसेंहि जानणा १ और मनुजी कहतेहैं० श्वेति० श्वान और सूकर और गधा और ऊट और गौ और बकरी और भिड्डु और मृग और पक्षी और चांडाल और पुष्कस क्या वनविषें रहिणे वाले नीच इनांयोनियांको ब्राह्मणके मारणे वाला प्राप्त होताहै १

क्रमीति० कि जो ब्राह्मण मदिरापानकरताहै सोकृमि और कीट और पतंग और विड्भुज अर्थात् सूकरादि और पक्षी जो हैं काकादि और जीवोंके मारणेवाले जो जीवहैं व्याघ्रादि इनोंकीयोंयोनियांकोंप्राप्तहोताहै० २ लूतेति० कि जो सुवर्णको चुराताहै सो पुरुष लूता अर्थात् ऊर्णनाभिजीव और किरला और तरेडेचलने वाले और जलविषे विचरणेवाले और हिंसाकरणेवाले जो जीव और पिशाच इनोंकी योनीकोंहजारवार प्राप्तहोताहै ३ तृणेति० किजोगुरुतल्पगहै अर्थात् गुरुकी शय्याके ऊपर शयन करताहै सो तृण क्या घास और गुल्म क्याविनाटाणेते वृक्ष और लता क्या वेल और क्रव्याद अर्थात् राक्षस और दाडों वाले और क्रूरकर्मोंके करणे वाले जो जीव उनोंकी योनिकों सौवार प्राप्त होताहै ४ एहफल ज्ञानकर्के करणे वाले महापापियोंको कहाहै और अज्ञानतें इसीका प्रकार याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं० महेति० कि अज्ञानकर्के पूर्वोक्तपापोंके

कृमिकीटपतंगानां विड्भुजांचैवपक्षिणाम् हिंस्राणांचैवसत्वानांसुरापोब्राह्मणोव्रजेत् २ लूताहिसरटानांच तिरश्चांचांबुचारिणां हिंस्राणांचपिशाचानांस्तेनोविप्रःसहस्रशः ३ स्तेनःस्वर्णस्तेनोमहापापप्रसंगात् लूताऊर्णनाभिःसरटः कृकलासः। तृणगुल्मलतानांच क्रव्याददंष्ट्रिणामपि क्रूरकर्मकृतांचैव शतशोगुरुतल्पगइति ४ एतत्ज्ञानिनः अज्ञानकृतेतु याज्ञवल्क्यः॥ महापातकजान्घोरान्नरकान्प्राप्यदारुणान् कर्मक्षयात्प्रजायंते महापातकिनास्त्विह १ मृगाश्वसूकरोष्ट्राणांब्रह्महायोनिमृच्छति। खरपुल्कसवेनानांसुरापोनाऽत्रसंशयः २ कृमिकीटपतंगत्वंस्वर्णहारीसमाप्नुयात् तृणगुल्मलतात्वंच क्रमशोगुरुतल्पगः ३ योयेनसंवसत्येषांसतल्लिंगोभिजायते ४ एतेषांब्रह्महादीनांमध्येयेनपतितेनयः पुरुषः संवसति सतल्लिंगोऽभिजायते

कीतेयांहोंयां महापातकसें प्राप्त होणेवाले जोवडेघोर और दारुण नरक उनाकों प्राप्त होकर्के और कर्मक्षयसें पीछे सो पापी इस संसारविषें उत्पन्न होतेहैं १ मृगेति०ब्राह्मणके मारणे वाला मृग और कुत्ता और सूकर और उष्ट्र इनोकी योनिको प्राप्त होताहै॥ और खर क्या खोता और पुल्कस क्या चांडाल और वेनक्या नीचविशेष इनोंकी योनिकों मदिरा पानकरणे वाला प्राप्तहोताहै इसमेंसंशय नहिहै २ कृमीति कृमिऔर कीट और पतंग इनांकीयोनिको सुवर्णके चुराणेवाला प्राप्तहोताहै और गुरुतल्पग जो पापीहै सो तृण और लता और गुल्म इनाकों क्रमकर्के प्राप्तहोताहै ३ यइति कि जो पुरुष जिस पतितके साथ निवासकरताहै सो तिसके लिंगकोंहि प्राप्तहोताहै अर्थात् ब्रह्महादिको जैसा फलहै तैसे फलको प्राप्त होताहै इसीका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमेंलिखाहै० एतेषामिति ४

अब शंखजीनेविशेष किहाहै ब्रह्महेति किजो पुरुष ब्राह्मणको मारताहै सोकुष्टीहोताहै और तैजस क्या सुवर्ण तिसके चुराणेवाला मंडलीहोताहै अर्थात् उसके देहमे दद्रुके चिन्ह होतेहैं और गुरुके मारणे वाला अपस्मारी होताहै अर्थात् मिरगीरोगवाला होताहै ॥ अब सूर्यारुण कर्मविपाकमें और कहतेहैं गोस्त्रीति गौ और स्त्री और पुत्र तिनके मारणेवाले जो पापीहैं सो जन्मान्तरमें पुत्र नाशवाले होतेहैं एह ब्रह्महत्याका पुत्रनाशरूप फल प्रसिद्धहै और ब्रह्महत्याके कारण वहुतसारे सूर्यारुणमेंहैं सो उसीजगा जानणे यइति जोकोई ज्ञानकरके रहित पूर्वजन्म विषे ब्राह्मणको मारताहै सोइसीजन्ममें कुष्टरोगकरके युक्तहोताहै १ अब प्रसंगतें ब्रह्महत्याके सम राजाके मारणेका जो पापतिसका कर्मविपाक कहतेहैं ॥ इसमें शातातपजीका वचन है राजहेति कि राजाके मारणे वाला राजयक्ष्मरोग करके युक्तहोताहै ॥ अब वैश्यके मारणे वाले

शंखेनविशेषोदर्शितः॥ ब्रह्महाकुष्ठी तैजसापहारीमंडली गुरुप्रतिहंताऽप स्मारी।सूर्यारुणकर्मविपाके। गोस्त्रीपुत्रवधाःपापाःपुत्रनाशकरामताइति। ब्रह्महत्यायाः पुत्रनाशरूपफलाभिव्यक्तिता॥ विशेषान्तरंसूर्यारुणे। यः कश्चिद्घातयेत्पूर्वंब्राह्मणंज्ञानवर्जितः। कुष्टरोगान्वितःसोपिजायतेऽत्रैवज न्मनि १ अथप्रसंगात् ब्रह्महत्यासमनृपवधकर्मविपाकः॥ तत्रशातातपः॥ राजहाराजयक्ष्मीस्यादिति ॥ वैश्यहंतुरपिब्रह्महत्यामहापातकसमतया तत्कर्मविपाकः। कर्मविपाकसमुच्चये॥ छिन्नान्यंगानिजायंतेवैश्यहंतुस्ततः परम् ज्वरौशीतोष्णकौदाहश्रयानस्तन्निवृत्तये १ वैश्योऽत्रयागस्थोबोध्यः सूर्यारुणकर्मविपाकेतु अन्यथोक्तं यथा। योमोहाद्घातयेद्वैश्यमन्यजन्मनि मानवः सोऽत्रजन्मनिविज्ञेयोरक्तार्बुदसमन्वितः १ इति शरणागतवधेकेव लंनरकस्थितिः निंद्यतिर्यग्योनिश्चसर्वमुनिमतेन ॥

को ब्रह्महत्यासें उत्पन्नभयाजो पाप तिसके समहोणे करके तिसवैश्यहन्ताका कर्मविपाककहतेहैं सो किहाहै कर्मविपाक समुच्चय विषे छिन्नानीति ॥ किवैश्यके मारणे वाला जन्मान्तरमें कटेहोए अंगों वाला होताहै और उसको शीतज्वर और उष्ण और दाह इहरोग भी होतेहैं और तिनके दूरकरणे विषे अयान क्या असमर्थहोताहै और वैश्यकरके इहांयज्ञमें स्थितजो वैश्य तिसकाग्रहणहै १ सूर्यारुणमें और किहाहै सो कहतेहैं जैसें ॥ यइति जो पुरुषमोहतेंपूर्वजन्मविषे वैश्यकोमारताहै सो रक्तार्बुदरोगकरकेयुक्तहोताहै अर्थात् रक्तार्बुदनामकके जो कुष्टहै तिसवालाहोताहै १ अब प्रसंगसे शरणागतवधपापकाफलदिखातेहैं शरणागतकेमार्यांहोयां केवलअर्थात् वहुतकालनरकमें स्थितिहोतीहै और निंदितजो तिर्यक्क्यापश्वादियोनि सो भी पीछे सवनाऋषियांकमतकरकेहोतीहै

अब गर्भघातीको ब्रह्महत्याके समहोणे करके तिसका कर्मविपाक कहतेहैं सो किहाहै
सूर्यारुण विषे ॥ पुरेति कि जो पुरुष ज्ञानरहित पूर्वजन्ममें गर्भघात करताहै सो इसजन्ममें
निरन्तरही जलोदररोग क्या उदर वृद्धि रोग तिस करके पीडितहोताहै ॥ १ ॥ और सुहृद्वधको
भी ब्रह्महत्याके समहोणेतें तिसका कर्म विपाककहतेहैं सूर्यारुण विषे ॥ पूर्वेति पूर्वजन्म विषे जो
पुरुष अज्ञानतें पुत्रकों और मित्रकों मारताहै सो इसी जन्ममें वायुरोगकर्के पीडितहोताहै १
और विश्वस्त क्या अपणाकर्के जाणणेवाला तिसकों विषदान करणेके पापको ब्रह्महत्याके
समहोणेकर्के तिसका कर्मविपाक कर्मविपाकसमुच्चयतें कहतेहैं ॥ विश्वस्तेति कि जो पुरुष
विश्वस्तपुरुष कों विष देताहै सो प्लीह क्या लिप्फरोगवाला होताहै और चशब्द कर्के शूल
रोग वालाभी होताहै ॥ और तिसीकर्मविपाकसमुच्चयविषे नास्तिकता कर्के संध्यादित्यागकोभी

गर्भघातस्यापिब्रह्महत्यासमतया तत्कर्मविपाकः सूर्यारुणे ॥ पुरागर्भंतु
यःकश्चिद्घातयेद्ज्ञानवर्जितः जलोदरेणसततंरोगेणात्रप्रपीड्यते १ ॥
सुहृद्वधस्यापितत्समत्वात्तत्कर्मविपाकः । सूर्यारुणे । पूर्वजन्मनियोऽज्ञानात्
नरोवैघातयेत्सुतं मित्रंवावायुरोगेणपीड्यतेसोऽत्रजन्मनि १ इति विश्वस्त
विषदानस्यापि ब्रह्महत्यासमतया तत्कर्मविपाकः ॥ कर्मविपाकसमुच्चये
विश्वस्तविषदाताचप्लीहवान् जायतेनरः चशब्दाच्छूलीच । तत्रैव । नास्ति
क्यात्संध्यादित्यागस्यापितत्समत्वात्तत्कर्मविपाकः ॥ पूर्वजन्मनिनास्ति
क्यात्संध्यादिराहितोद्विजः हस्तशूलीच भवति इति ॥ गुरुप्रातिकूल्यस्या
पि तत्समत्वात्तत्कर्म विपाकः तत्रैव ॥ गुरोर्निर्बंधतोयस्तु प्रातिकूल्यंसमा
चरेत् सोऽपस्मारी भवेत्तत्रेति । गुरूपरोधस्यापि तत्समतया कर्मविपाकः
तत्रैव । गुरूपरोधीशिरसिरोगवान्जायतेनरः एतत्साम्येन गुरुणावाग्विरो
धस्यकर्मविपाकमाह । बौधायनः । वाग्विरोधं गुरोः कृत्वामुखरोगीभवेन्नरः १

पूर्वेति कि नास्तिकता कर्के पूर्वजन्मविषे
ब्रह्महत्याके समहोणेकर्के तिसका कर्मविपाककहतेहैं ॥
जो पुरुष संध्यादिकोंसें रहितहै सोहाथोंमे शूलरोगवालाहोताहै और गुरुके साथ जो प्रतिकूलता
तिसकोंभी ब्रह्महत्याके समहोणेकर्के तिसकाकर्मविपाककहतेहैं गुर्विति कि जो पुरुष हठ कर्के
गुरुके साथ प्रतिकूलरहताहै अर्थात् शत्रुभावकरताहै सो अपस्मारी क्या मिरगी तिस कर्के युक्त
होताहै ॥ और गुरुको हरकिसीकामसें हठकर रोकणा तिसकोभी ब्रह्महत्याके समहोणे कर्के
तिसका कर्म विपाक कहतेहैं कि जो पुरुष हठ कर्के गुरुयोंको सबनां कर्म्मोंसें रोकताहै सो
शिराविषे रोगवाला होताहै ॥ और इसी पापकी साम्यता कर्के गुरुके साथ वाणी कर्के विरोध
करणे वाला जो पुरुष तिसका कर्म विपाक कहतेहैं ॥ वाग्विरोधमिति कि जो पुरुष गुरुयोंके
साथ वाणी कर्के भी विरोध करताहै सो मुखरोगी होताहै अर्थात् थथला होताहै १

अव गुरुद्वेषकोंभीस्पर्धाके समहोणेतें तिसके करणेवालेकाकर्मविपाककहतेहैं ॥ गुर्विति गुरुद्वेषीजैसेहै तैसेहि अपरक्या स्पर्धाकरणेवालाजानणासोई इस वाक्यके अनन्तरकिहाहै दुरिति किगुरुद्वेषीनरक भोगकर दूसरे जन्ममें दुर्मन क्या खोटे मनवालाहोताहै फेर मृतपुत्र होताहै फेर चर्मकील व्याधि करके युक्त होताहै अर्थात् उसके मुखमे एकचर्मदाकिछा होताहै २ और वेदसेंवहिर्भूत जो शास्त्र तिसके पढनेकोभी गुरुद्वेषके समहोणेतें तिसका कर्म्मविपाक कहतेहैं दंष्ट्रीति कि दंष्ट्री जो सर्पा दिक और पशु तिनसें गुरुनिंदा करकें और वाह्यशास्त्रके पढनें करकें मृत्युको प्राप्त होताहै सोई निर्जलदेशमें वनविषे ब्रह्मराक्षस होताहै अर्थात् मरणेसें पछि ब्रह्मराक्षस भावको प्राप्तहोताहै ३

गुरुद्वेषस्याप्येतत्समत्वात्तत्कर्तुःकर्मविपाकः तत्रैव ॥ गुरुद्वेषीतथापरइतिकथनानंतरं। दुर्म्मनाश्चैवजायेत नरकांतेन्यजन्मनि मृतपुत्रश्चर्मकीलव्याधियुक्तोभवेच्चसः २ वेदवाह्यशास्त्राध्ययनस्यैतत्समत्वात्तत्कर्मविपाकोऽपितत्रैव यथा ॥ दंष्ट्रिभ्यश्चपशुभ्यश्चमरणंगुरुनिंदया वेदेभ्योवाह्यशास्त्रस्यपठनादपिजायते अरण्येनिर्जलेदेशेजायतेब्रह्मराक्षसः ३ मरणानंतरंब्रह्मराक्षसत्वावाप्तिरित्यर्थः। गर्वेणगुर्ववज्ञाकर्त्तुरपितत्समतयातत्कर्मविपाकः। मातापित्रोर्दैवतायागुरोरपिचगर्वतः अवज्ञांकुरुतेयस्तुशिवपादाभिधोग्रहः ४ गृह्णातितत्क्षणान्मूर्ध्निजठरेरोगवान्भवेत् पाददाहीज्वरीचैवजायतेनात्रसंशयः ५ अत्रैवप्रकारान्तरम्। देवब्राह्मणगुर्वार्ययोगेशाद्यवमानिनाम् शिशुग्रहःसंक्रमतेततोज्वरयुतोभवेत् अतीसारीचाथशोफीहस्तपादप्रकंपवान् १

और गर्वक्या अहंकार तिसकरके जो गुरुयोंकी अवज्ञा करताहै तिसकोंभी पूर्वोक्त पापके समहोणेकरके तिसकाकर्मविपाककहतेहैं ॥ मातेति किजो माता और पिता और देवता तिनोंकीगर्वकरकें अवज्ञाकरताहै तिसकों शिवपादनामाग्रहमस्तकविषेग्रहणकरताहै ४ और वो पुरुष उदरविषे रोगवाला और पादोंमे दाहरोगवाला और ज्वरवालाभी होताहै इसमे संशय नहिहै ५ इसमे और प्रकारकहतेहैं देवेति जो देवता और ब्राह्मण और गुरु और आर्य्य क्या श्रेष्ठ और योगेशादिक क्या योगाभ्यासके वेत्ता तिनका तिरस्कारकरणे वालेहैं तिनकों शिशुग्रह रोग होताहै तिसकें अनन्तर ज्वर और अतीसार और मुखमें और पादोंमे कंपन यह रोगहोतेहैं १

अव पुरुषका कर्म विपाककहकर्के स्त्रीका कर्म विपाक कहतेहैं जो किहाहै ॥ कर्मविपाक संग्रहविषे भर्त्रिति कि जो नारी पतिके सुखककें सौख्य युक्तनहिहोतीहै सोस्त्री तीन वर्ष अथवा पांचवर्ष जन्मान्तरमें श्येनीहोतीहै अर्थात् वाजकीस्त्री होतीहै इसजगा पुस्तकांतरमे (त्रीणि जन्मानिपंचच) एहपाठहै इसका अर्थ स्पष्टहै ॥ इसते योग्यताएहहै कि वाजकी स्त्रीका पतिके साथ स्नेह बहुतहै और वियोगभीवहुतहै इसमे ऐसाअभिप्रायहै किजिसमें स्नेह अधिकहै उसके वियोगमेभीदुःखअधिकहै १ वाचेति और जो स्त्रीवडाकठोर शब्दकरणेवाली वाणीद्वारा पतिनूं रोककर अकार्य क्याखोटाकामकरातीहै सोनारीवडापापण जन्मान्तरमें वल्गुली होतीहै अर्थात्

अथस्त्रीकर्म्मविपाकः॥ भर्तृसौख्येनयानारीसौख्ययुक्तानजायते साश्येनी जायतेराजन्त्रीणिवर्षाणिपंचच १ वाचाचाक्रोशकायातुसंनिरुध्यपतिं हियाअकार्यंकारयेत्पापासानारीवल्गुलीभवेत् २ भर्तुरर्थेहियावित्तंविद्य मानंनयच्छति जीवितंवावरारोहेविष्ठायांजायतेक्रिमिः॥ क्रिमियोनिविनि मुक्ताकाष्ठकीटाभवेत्तुसा ३ ॥

किरली होतीहै इसमें एह योग्यताहै कि वाणीसें दुर्वचनकहनवालीको वल्गुलीकीयोनि वाणी के विलासका सुखदूरकरणे वाली उचितहै २ भर्त्तुरिति और जो नारी विद्यमान जो वित्त क्या धनजीवनरूप तिसको पतिके अर्थवास्ते नहि देतीहै सो जन्मान्तरमें विष्ठाविषे क्रिमियोनिको प्राप्तहोतीहै ३ क्रिमिरिति और क्रिमियोनिकोंभोगकर फेर काष्ठविषेंकीडीहोतीहै जिसककेंपति काहिधनहै तिसको पतिके अर्थ लगाणा अच्छाहै परंतु जिसदुष्टानेनहिंदित्ता तिसको ऐसीनिंदितयोनि धनके भोगसेहीन होणीयोग्यहै ३

और कर्म संग्रहविषे किहाहै ॥ अवमत्येति कि जो स्त्रीपतिका अपमानकरके जारको आलिंगन करके तिसीकेसाथक्रीडाकरतीहै और तिसीको स्वीकारकरतीहै १ तस्याइति फेर जन्मान्तरमे तिसकेकुचोंमे शोथक्या सोज्जाउत्पन्नहोताहै फेर तिसकीभगसे जन्म २ मे रक्त क्या रुधिर वगता है २ मृतइति और जो नारी पतिके मरणेसे पीछे नीलवस्त्र धारतीहै सो मरकर नरकको प्राप्तहोतीहै फेर नरक भोगकर मनुष्यशरीरमे प्राप्त होकरके क्रिमिकुक्षि होतीहै अर्थात् तिसकी कुक्षिमे कीडे उत्पन्नहोतेहैं ३ इसीका और प्रकार शिवगीतामे किहाहै ॥ क्षुदिति किजो नारी क्षुधातृषाकरके आतुरहोए २ पतिका अपमानकरके मिष्टान्नको आपहीभक्षणकरतीहै सो जन्मान्तरमे गर्भसे रहित

कर्मसंग्रहे ॥ अवमत्यचभर्तारंजारमालिंग्यतेनच साधंक्रीडातियानारी तमेवानुसरत्यपि ॥ १ ॥ तस्यास्तुस्तनयोःशोथोजायतेजन्मांतरे भगंरक्तं चस्त्रवति नित्यंजन्मनिजन्मनि ॥ २ ॥ मृतेभर्त्तरियानारी नीलवस्त्रंप्रधारयेत् साम्प्रतानरकंयातिक्रिमिकुक्षिस्ततःपरम् ॥ ३ ॥ ततःपरं नरकभोगानंतरंमानुष्यशरीरमासाद्येत्यर्थः ॥ ३ ॥ शिवगीतायाम् ॥ क्षुत्पिपासातुरं नारीभर्त्तारमवमन्यया मिष्टान्नंस्वयमश्नातिनसापुष्पवतीभवेत् ॥ १ ॥ वृद्धगौतमः ॥ स्रवद्गर्भाभवेत्सातुबालकंहंतियाविषैः ॥ कर्मविपाकसंग्रहे ॥ क्षीरंमुष्णातियानारी पूर्वजन्मनिसुव्रता जन्मांतरेतुतस्यास्तुक्षीरंनक्षरते स्तनात् १ ब्रह्मांडपुराणे ॥ नित्यंसकलहानारीजायतेवनमक्षिका भर्तारंवंचयेद्यातुजलौकाजायतेवधूः १ नित्यमिति कलहकर्त्रीस्त्रीसशब्दावनमक्षिकाभवति भर्तृवंचिकातुजलौका पुरुषसंगसुखरहिता निंद्यरुधिरादिभोक्त्री ॥ १ ॥

होतीहै १ और इसीका कर्मांतर वृद्धगौतमजीकहतेहैं ॥ स्रवद्गर्भेति जो नारी विषदेकरकेबालकको मारतीहै सो जन्मान्तरमे स्रवद्गर्भाहोतीहै अर्थात् तिसका गर्भ गिडजाताहै १ अब और किहाहै कर्मविपाकसंग्रह विषे क्षीरमिति जो नारी पूर्वजन्मविषे दुग्धको चुरातीहै तिसके स्तनोंसे जन्मान्तरमें दुग्ध नहि उत्पन्न होताहै १ ब्रह्मांडपुराणविषे और प्रकार किहाहै ॥ नित्यमिति जो नारी नित्यहिसकलहाक्या लडाई करणेवालीहै सो शब्दकरणेवाली वनमें मक्षी होतीहै ॥ और जोपतिको वंचन करतीहै अर्थात् पतिको ठगतीहै सो जन्मान्तरमे पतिसंगसुखसे रहित और निंदित रुधिरादिकोका भक्षणकरणेवाली जलौका क्या जुकहोतीहै १

और स्त्रीयांकोभी ब्रह्महत्याकाफल क्षयरोग प्राप्तिहोतीहै सोई किहाहै सूर्यारुण कर्म विपाक विषे
॥ येति जो नारी निश्चयकरके अपनी इच्छासें पूर्वजन्मविषे ब्रह्महत्याको करतीहै सो इसजन्ममें
क्षयरोग वाली होतीहै १ नेति हेपाक्षिसत्तम तिसके पापका शमन क्या शान्ति मैंने नहि कही
और महापापसें उत्पन्न हुया जो रोग तिसकरके मृत्युको प्राप्तहोतीहै इसमें संशय नहि जान्नणा
२ पूर्वेति और जो पूर्वजन्ममें ब्राह्मणको और पुत्रको मारतीहै अथवा ब्राह्मणकेपुत्रको मारतीहै
सो जन्मांतरविषे और जिस अवस्थामे ब्राह्मणपुत्र मारयाहै तिसी अवस्थामे कुष्टरोगकरके
युक्तहोतीहैं ३ इसीका और फलकहतेहैं ॥ जायतइति फेर जन्मधारकर गलत्कुष्टकरकेही
अर्थात् जो सदाहि वगता रहत्ताहै ऐसे कुष्ट करके मृत्युको प्राप्त होतीहै मैंने यह ज्ञानकृत पापका

स्त्रीणामपि ब्रह्महत्याफलं क्षयरोगावाप्तिः ॥ सूर्यारुणकर्मविपाके ॥ यायो
षिदाचरेत्कामात्पूर्वजन्मनिनिश्चयात् ॥ ब्रह्महत्यामथात्रैवसाज्ञेयाक्षयरु
ग्युता १ नतस्याःपापशमनंमयोक्तंपाक्षिसत्तम महापापकृताद्रोगान्मृ
त्युरेवनसंशयः २ पापाल्पतयास्वल्परोगवत्त्वम् ॥ पूर्वजन्मनियाकाचित्
घातयेद्ब्राह्मणंसुतं सान्यजन्मनिकुष्टेनतस्मिन्वयसिपीडिता ३ जायतोप्रि
यतेचापिगलत्कुष्टेनचांडज पापादज्ञानकृतात्पूर्वान्नचोक्तंतन्मतंमया ४ ग
र्भघातिन्यानार्य्याअपि तत्रैव ॥ यानारीघातयेत्काचित्परगर्भंतुकाश्यपे ज
लोदरेणरोगेणपीडयतेसाऽन्यजन्मनि ५ श्रीमदिति ॥ पर्य्यालोचितेति ॥
पूर्वोक्तमनुसंधेयम् ❁

फल नहि कहा किंतु अज्ञानकृत पापका कहाहै यह मेरामतहैं और ज्ञान करके जो कदाचित्
ऐसा पापकरे तद अधिक दोष जान्नणा ४ येति जो कोई नारी दूसरेके गर्भका घात करतीहै
सो जलोदर रोग करके दूसरे जन्ममे पीडाको प्राप्तहोतीहै ॥ ५ इसजगा गर्भघातयेत् ऐसाहि
कहणाथा परंतु परगर्भ करके इस जगाजारजगर्भजान्नणा क्योंकि तिनकीभी रक्षाकरणी उचितहै
और पातिके गर्भको कोइ स्त्रीघात नहि करती इसकरकें परगर्भ ऐसा किहाहै ५ श्रीति एह
दोनोश्लोकापिछे प्रकरणके अंतविषे आए हैन इस जगा सो स्मरणकरलेणे श्रीमदिति पर्या
लोचितेति इनका अर्थ पिछे कहदियाहै

इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदे
शाधी शप्रभुवरश्रीरणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतपं
डितोपनामदेवीदत्तसुत कविगंगारा
मसंगृहीतिधर्मशास्त्रमहानिबंधे
प्रायश्चित्तभागे कर्मविपाक
नामकंचतुर्थप्रकरणम्

इतिभाषाटीकायांचतुर्थ
प्रकरणम्

शुभं भवतुसर्वत्र

पृ	पं		पृ	पं	
१२८	८	अनुग्राहकस्वरूपमाहां. गिराः	१३५	३	अन्येतु
१२९	२	उक्तातिरेकेणानुग्रहेप्रत्य वायमाहपराशरः	१३५	५	विद्वन्मनोहरायामप्येवं
१२९	४	पराशरः	१३५	७	तथाचपैठीनसिः
१२९	६	अथप्रायश्चित्ताचरण- क्षमस्यप्रतिनिधिर्निकार यितव्यइत्याहपराशरः	१३५	८	तथाचयाज्ञवल्क्यः
१३०	१	अथेतिकर्त्तव्यतामाहाविष्णुः	१३६	२	विशेषमाहवसिष्ठः
१३०	८	इतिमाधवःमनुरप्याह	१३६	६	पराशरोऽपि
१३१	१	तदुक्तंभविष्ये-	१३७	३	अपरार्के
१३१	२	तथाचमनुः	१३८	७	तैत्तिरीयकेआसुरंवपनं- निंदित्वादैवेक्रमउक्तोम- नुनापि
१३१	३	व्याख्यातोयंश्लोकउप पातकप्रकरणेसंवर्त्तप्रोक्ते	१३९	२	क्षौरनिषेधांश्चाहवृद्धगा र्ग्यः
१३१	६	यमोपि	१४०	२	बादरायणः
१३१	७	तथाचमनुः	१४०	४	व्यासः
१३१	८	विष्णुपुराणे	१४०	७	अथस्त्रीशूद्रोपयोगिकिं चिदुच्यते
१३२	६	महाभारते.	१४१	२	मदनरत्ने
१३२	९	जाबालिः	१४१	७	यत्तुपराशरेणापि
१३२	१०	विष्णुः	१४२	१	वराहवचनमपि
१३३	७	कृच्छ्राणांप्रायश्चित्तरूपा णांप्रारंभेवपनंकार्यंपु एयार्थेनाऽत्रएवगोवधेप राशरः	१४३	१	अथस्नानविधिःप्रायश्चि त्तमयूखे
			१४३	५	ततोगामयस्नानविधिर्वि
			१४३	८	ष्णुःअथमृत्स्नानविधिः शिवपुराणे
१३४	४	हारीतः	१४४	५	क्रमउक्तोब्रह्मे
१३५	६	इतिप्रायश्चित्तमुक्तावली कारा विज्ञानेश्वरस्तु.	१४४	७	पारस्करः
			१४५	१	योगी

पृ-	पं·		अशुद्ध	शुद्ध
१२	८	टी०	धम्म	धर्म्म
१३	१	म०	तताद्विधि	तत्ताद्विधि
१७	१२	मू०	क्षधर्म्म	क्षमधर्म्म
१७	३	टी०	वक्वरा	वक्खरा
२१	२	टी०	गयत्री	गायत्री
२८	५	मू०	प्रायण	प्रायेण
२८	६	मू०	रिखाचीक	रीखाचिक
५०	९	मू०	राग्वह्म	राद्ब्रह्म
५७	२	टी०	गार्हित	गर्हित
५८	६	टी०	व्रह्म	व्राह्म
६०	६	मू०	णागि	णांगि
६६	८	मू०	मन	मान

द्वितीयप्रकरणम्

पृ.	पं.		अशुद्ध	शुद्ध
९३	५	मू०		
९३	१	टी०	क्षरका	क्षराका
९९	१	मू०	कस्यापि	करुयापि
१०१	२	टी०	विधानायक	विधायक
१०४	१	मू०	कादोषः	कोदोषः

॥ ॐश्रीः ॥

श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराति‍व्वताद्य नेकदेशाधीश श्रीयुत श्री १०८ महाराजरण वीरसिंह वहादुर जी की आज्ञानुसार यह धर्म्मशास्त्र महानिवंधसर्वलोकोपकारके वास्ते मुद्रित हो रहाहै इसके दो भाग मुद्रित हो चुकेहैं वो दोनों भाग सुज्ञ पुरुषों के पास भेजे जाते हैं उनको उचित है कि इस पुस्तक को देखें और विचारें और आगे के भाग मुद्रित हो जावें गे तो वो भी उनको भेजे जावेंगे परन्तु जिसके पास यह पुस्तक पहुंचे उसको चाहिए कि अपना नाम लिख कर भेज देवे उसका नाम प्राति दैनिक पुस्तकमेंलिखाजावेगा

अथ पांचमा व्रत प्रकरण कहीदाहै इसका उपयोग सारे ग्रंथमे है और पूर्वोक्त (स्वतोमित्वा) इत्यादि श्लोकका स्मरण करलेणा और भी मंगलार्थ श्लोक कहीदाहै स्मृतीति मै जो गंगारामशर्मा हां सो मन और वाणी और देह इनां कर्के गुरांके चरणांनू नमस्कार कर्के प्राजापत्य कृच्छ्रादि जो व्रत तिनांके समूह नूं कहताहां पापांके दूरकरणे वास्ते ॥ कैसा व्र तांका समूहहै जानयाहै पुण्यका सद्भुत्व क्या प्रकाश साधन जिनांने तिनां कर्के जो निरंतर अंगीकार करीदाहै ॥ फेर कैसाहै स्मृतियां जो संपूर्ण तिनांके रचनेकी जो प्रक्रिया तिसविषे जो शिरोमणिहै अर्थात् राजाहै फेर कैसाहै दोषतें रहितहै ॥ १ ॥ तिस व्रत प्रकरणविषे पहि ले व्रत शब्दका अर्थ भिन्न कर्के कहीदाहै इस विषे जो व्रत शब्द है सो करणे योग्य विषय कर्के युक्त और काल क्या समयकर्के संकुचित क्या इतना काल व्रत है ऐसा नियम करणा सो

ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः स्मृतिसकलनिबन्धप्रक्रियासार्वभौमं विदित सुकृतसत्त्वैः सेव्यमानंनितान्तम् निचयममलमंहःक्षालनायाभिधास्येगुरु पदमभिवंद्यव्रतकृच्छ्रादिकानाम् १ तत्र तावद्व्रतशब्दार्थोविविच्यते व्र तंचात्र करणीयविषयतयानुबद्धःकालविशेषावच्छिन्नश्च नियमविशेषएव सचरामनवमीश्रीकृष्णजन्माष्टमी प्रभृतिनियमेपि यद्यप्यस्ति तथापि कृ च्छ्रचान्द्रायणादिनियमविशेषएव प्रायश्चित्तप्रणेतृभिःप्रयुज्यतेऽतःसएवा त्रानुसंधेयः ॥ एतदपिव्यवहारनिरोधकनरकानुकूलपापशक्तिद्वयनिरासा भिप्रायेणैव बोध्यम् नियमांतराणां पापनाशकत्वमात्रएव प्रयोगान्न तत्र मुख्ययावृत्त्या व्रतशब्दप्रवृत्तिः ॥ तथाच ॥ प्रायश्चित्तापरपर्याये

कृच्छ्रचांद्रायणादावेवायंरूढः

जैसे है तैसे कथन करणेहां जैसे रामनवमीका व्रत और श्रीकृष्णजन्माष्टमीका व्रत इत्यादि नियम विषे भी यद्यपिहै तदभी प्रायश्चित्तके कहन वालयां ऋषियांनें कृच्छ्र चांद्रायणादिनियम विशेष विषे ग्रहणकीयाहै इसकारणतें सोई इसप्रकारणविषे जानणेयोग्यहै ॥ एभी व्यवहार निरोध क्या विषे ग्रहणकीयाहै इसकारणतें सोई इसप्रकारणविषे जानणेयोग्यहै ॥ एभी व्यवहार निरोध क्या सबकार्यते संबंधियांनें बाहर करदेणा और नरक विषे प्राप्त करणा एह दो २ पापकियां श क्तियांके दूर करणे तें व्रत शब्द कृच्छ्रादि विषें जानणा और जो रामनवमी आदिक व्रतहैं सो एकपापशक्तिकों दूरकरतेहैं व्यवहारनिरोधकों नहि दूर करते ॥ जिसकर्के रामनवमी आदि जो नियम तिनांको पापांके नाशविषे हि योजना होणेतें नाहि तिस विषे मुख्यवृत्तिकर्के व्रतशब्दकी प्रवृत्तिः हुंदीहै तांते प्रायश्चित्त भी कृच्छ्र चांद्रायणादिशब्दकाहि दूसरा नामांतरहै

और व्रतशब्द नियमविषे कहाहै एह अमरका वचन उपवासादिपुण्यक सामान्य व्रतके अर्थ विषे जानणा योग्यहै इसीकारणतें पंडितांने मानया जो व्रतका प्रसिद्धविषय सो संकल्पविशेषहि ग्रहण कीताहै असे व्रतकी व्याख्या व्रतार्कविषे कथनकरीहै ॥ औरभी अपनेविषे करणे योग्यकार्य विशेष जो संकल्प विशेषहै सो व्रत किहाहै सो असे व्रतकी व्याख्या देह और वाणी और मन इनांके व्यापार विषे न युक्त होणेतें नहि अंगीकार कीती क्योंकि मन करके जो कर्म कियाहै सो संकल्प कहीदाहै असे कहणेतें ॥ इसविषे असांने व्रत ग्रहण कियाहै जो देह और वाणी और मन इनांकर्के होवे ॥ सो कहतेहां अत्रेति इस विषे व्रत जोहै रात्रिके मुख क्या संध्या-समय विषे ग्रहण करणे योग्यहै बाहर आकाश विषे नक्षत्रके दर्शन कों करके इस कहणेतें देहका व्यापार सिद्ध हुया नक्षत्रांकादर्शन देहकर्के हि सिद्ध होताहै इस अभिप्रायसें ॥ और

नियमोव्रतमस्त्रीतच्चोपवासादिपुण्यकमित्यमरवचनंतु सामान्यव्रताभिप्रायेण वोध्यम् ॥ अतएवाभियुक्तव्रतप्रसिद्धविषयः संकल्पविशेष एव व्रतमितिव्रतार्केभिहितम् ॥ यत्तु ॥ स्वकर्त्तव्यविषयकसंकल्पविशेषोव्रतमिति तत्कायवाङ्मनोव्यापारेऽशक्तत्वादुपेक्षितम् ॥ संकल्पः कर्ममानसमित्यभिधानात् ॥ अत्रहि व्रतंनिशामुखेग्राह्यं वहिस्तारकदर्शनइत्यादिना कायव्यापारस्य रौरवयौधाजपेन्नित्यमित्यनेनच वाग्व्यापारस्याप्यपेक्षितत्वेन प्रायश्चित्तार्थकथनप्रस्तावे तेषां नित्यस्थापनेन नियमस्तु स यत्कर्मनित्यमागंतुसाधनमित्यनेन तत्र शक्तत्वाभ्युपगमात् ॥ मनुस्तु यैरभ्युपायैरेनांसिमानवोव्यपकर्षति तान्वोभ्युपायान्वक्ष्यामि देवर्षिपितृसेवितानित्यनेन देवर्षिपितृसेवितत्वे सति पापापायजनककर्मविशेषत्वंव्रतत्वमितिलक्षणमित्यभिप्रायात् ॥

रौरव योधा एह जो ऋचा तिनांको नित्य पठन करे इस कहणेतें वाणीके व्यापार कों भी सिद्ध होणेंते प्रायश्चित्तके अर्थके कथन करणेके प्रसंग विषे तिनां देहआदि व्यवहारांको नित्य ग्रहण करणे कर्के ॥ नियम सो कहीदाहै जो कर्म नित्य होवे और प्राप्त होणा जो पुण्य फल तिसका साधन होवे इस कहणे कर्के तिसाविषे योग्य होणेतें ॥ इसीमे मनुजीका वचनहै यैरिति जिनां उपायों कर्के पापांको मनुष्य दूरकर्त्ताहै तिनांको कथन करताहां जो देवताऋषि और पितरां कर्के सेवित हैं इस कथन करणेतें एह लक्षण व्रतका हुआ कि देवताऋषि और पितर इनां कर्के अंगीकारके होयांहोयां पापके दूर करणे विषे जो कर्म विशेष है सो व्रत कहीदा है इस अभिप्रायसें ॥

तानीति प्राजापत्य और सांतपन और पराक चांद्रायण और ब्रह्मकूर्च इतनेहि है होरजो व्रतहैं सो तिनां प्राजापत्यादिके अंतर्गत क्या मध्य विषे हिहोणेंते ॥ इत्थे जो कृच्छ्र शब्दहै सो द्विजादिशब्द कीन्याई है जैसें एक द्विज शब्द ब्राह्मणवर्णविषे है और ब्राह्मणक्षत्रि वैश्य तिनांवर्णविषे भी वर्त्तताहै तैसेहि कृच्छ्रशब्द सामान्यकर्केव्रत मात्रविषे किहाहै और विशेषकर्के प्राजापत्यविषे कहा है ॥ और शूलपाणिका ऐसा वचनहै जो दूसरे पदतें रहित केवलकृच्छ्रहै सो प्राजापत्यका हि नामहै जो दूसरे शब्दके साथ है जैसे पर्णकृच्छ्र आदि सो तिस तिस व्रतका वाचकहै इसके लक्षण और भेद अगे कहांगे ॥ किंचेति कुछक होर कहाहै कविसंप्रदायविषे जैसें हथकीयां अंगुलीयां पंच हैं और पंच महाकाव्य और पंच व्रत और पंच पांडुके पुत्र और पंच इंद्रिय इत्यादिक पंचादि की गिणती विषे कथन करणे वाले प्रसंग विषे गिणतीतें पंच हि व्रत हैं

तानितु॥प्राजापत्य सांतपन पराकचांद्रायण ब्रह्मकूर्चाख्यानि व्रतांतराणामेतदंतः पातित्वात् कृच्छ्रशब्दोहिद्विजादिशब्दवत्सामान्यविशेषवचनः॥ शूलपाणिस्तु निरुपपदःकृच्छ्रःप्राजापत्यापरपर्यायः। सोपपदस्तु तत्तद्वाचक इत्याह एतल्लक्षणानि भेदाश्चवक्ष्यंते किंच कविसंप्रदाये करांगुलिमहाकाव्यव्रतपांडुसुतेंद्रियमित्यादिपंचसंख्याबोधकप्रस्तावे गणनात्पंचैव व्रतानिभवंति तानि एकभक्तनक्तायाचितोपवासनिषेधपालनरूपाणिज्ञेयानि सर्वेषां तदंतर्गतत्वात् ॥ अथादौकृच्छ्रादिव्रतप्रत्याम्नायाद्युपयोगितया मानपरिभाषालिख्यते। तथाचयाज्ञवल्क्यः। जालसूर्यमरीचिस्थंत्रसरेणुरजः स्मृतम् तेऽष्टौलिक्षास्तुतास्तिस्रोराजसर्षपउच्यते १

सो दिन विषे एक वार भोजन करणा १ और नक्त भोजन २ और अयाचित भोजन ३ और उपवास ४ क्या कुछना भक्षण करणा और निषेध का पालना ५ जैसे श्रावण मासविषे शाककों त्यागे ऐसे जानणे॥ होर संपूर्ण व्रतांकों तिनांकेहि मध्यविषे प्राप्तहोंणेंते ॥ अथेति इसतें उपरंत आदविषें कृच्छ्र आदिव्रतकेहि पुण्य फलके देणे वाला होर उपायादि तिसके उपकारी होंणेंते मान परिभाषा लिखीदी है ॥ तांते याज्ञवल्क्याजी का वचनहै झरोखेके रस्ते जो सूर्यकीआं किरणा विषे धूड़िका किणका प्रतीतहै तिसका नाम त्रसरेणु कहीदाहै और त्रसरेणु अठ ८ होण तिसका नाम लिक्षाहै लिक्षा त्रय होण तो राज सर्षप कहीदाहै तिनां की गणना करीदी है १

राज सर्षप त्रय होण तिसका नाम गौर सर्षप है गौर छे होण तिसका नाम यवहै सो त्रय होंण तां तिसका नाम कृष्णल होताहै क्या रत्ती कहीदीहै सो पंच होण तिसका नाम मासा है सो सालां होण तां तिसका नाम सुवर्णह सो चार होण वा पंच होण तिसका नामपल क्या छटाक होताहै २ जो यवमध्य कहाहै सो छोटा और वडा जो यव तिसके दूर करण वास्ते कहाहै अव होर मतकर्के कहतेहैं स्मृत्यंतरविषे नौं मासे ९ परिमाणहै जिसका ऐसा जो स्वर्ण तिसका नाम वराह है ऐसेभी जानणा ॥ दोवराह होण तिसका नाम निष्कहै ॥ मार्कंडेय ऐसे कहता है झरोखेके रस्त सूर्यकायां किरणों विषे जो पर ब्रह्मस्वरूप वायुकर्के प्रतीत होताहै तिसका नाम

गौरस्तुतेत्रयः षट्तेयवोमध्यस्तुतेत्रयः कृष्णलःपंचतेमाषस्तेसुवर्णश्चषोडश २ पलंसुवर्णाश्चत्वारःपंचवापिप्रकीर्त्तितम् यवोमध्यइतिलघुवृहद्यवनिरासार्थम् ॥ नवमाषमितंस्वर्णंवराहइतिकीर्त्तितइतिस्मृत्यंतरे। द्विवराहस्तुनिष्कःस्यादित्यापिवोध्यम् मार्कंडेयस्तु गवाक्षांतर्गतोयत्रवायुनासंप्रदृश्यते परब्रह्मस्वरूपंयत्त्रसरेणुउदाहृतं १ त्रसरेण्वष्टकंलिक्षातत्त्रयंयवउच्यते तत्त्रयंगुंजमात्रंस्याद्रक्तंवाश्वेतमेववा २ पंचगुंजात्मकोमाषोरूपकंतदुदाहृतम् रूपकाणांनवानांतुवराहइतिगद्यते स्वर्णंकृच्छ्रंवराहःस्याद्ब्रह्महत्यादिपावनमित्याह ॥ शब्दकल्पद्रुमेराजवल्लभः यवपरिमाणमाह यवःपरिमाणविशेषः सतु चतुर्धान्यमानरूपइति ॥ शुभंकरः षट्सर्षपपरिमाणात्मकश्च

त्रसरेणु कहाहै ॥ १ ॥ त्रसरेणु अठ होण तिसका नाम लिक्षाहै सो त्रय होणतो यव कहीदाहै सो त्रय होण तिसका नाम गुंजा क्या रत्तीहै रक्त वाश्वेत तुल्यहै ॥ २ ॥ पंचरत्तीयांका नाम मासा तिसीका नाम रूपक भी कहीदाहै नवां ९ रूपकांका नाम वराह कहीदाहै ॥ अव इसको फल परतासे कहतेहैं स्वर्णमिति स्वर्ण दान और कृच्छ्र व्रत और वराह परिमाण स्वर्णका दान करणा एह तीन ब्रह्महत्यादिपापके नाशकरणे वालेहै ३ शब्दकल्पद्रुम विषे राजवल्लभजीका वचनहै यवपरिमाण विशेष चारधान्यका तोलरूपहै ॥ अव शुभं करका वचनहै छे ६ सरोंका तोल जो है तिसका नाम यवपरिमान कहाहै

जैसे झरोखे कर्के अंदर प्राप्त होई जो सूर्य की किरण तिस विषे देखीदी जो धूलि तिस
की अणु संज्ञा है ॥ चार अणु होण तिसका नाम लिख्याहै लिख्या छे३ करके एक १ स
र्षप होताहै ॥ छे ६ सर्षप करके एक यव होताहै ॥ तीन यव होण तिसका नाम रत्तीहै १ ॥
एहवाक्य शब्द चंद्रिका विषे किहा है इस विषे जो परिमाण भेद है सो समर्थ और अस
मर्थ मनुष्यकों देख कर जोडना ॥ एह स्वर्णका उन्मान किहा है ॥ अब रजतके उन्मान
कों कहता हुं ॥ दो रत्तीका नाम रूप्य माष है यह सोलां १६ होण तिसका नाम धरणहै
और दश धरणहोण तिसको पल कहतेहैं ॥ १ ॥ और चार सुवर्ण होण तिसका नाम निष्कहै

यथा जालांतर्गतेभानौयत्ताणुदृश्यतेरजः तैश्चतुर्भिर्भवेल्लिख्यालिख्याष
ड्भिश्चसर्षपः षट्सर्षपैर्यवस्त्वेकोगुंजैकातुयवैस्त्रिभिः १ इतिशब्दचंद्रिका
अत्रपरिमाणभेदोहिशक्ताशक्तादिव्यवस्थयायोज्यः ॥ इतिस्वर्णोन्मानम्
अथरजतोन्मानम् ॥ द्वेकृष्णलेरूप्यमाषोधरणंषोडशैवते शतमानंतुदश
भिर्धरणैःपलमेवतु ॥ १ ॥ निष्कंसुवर्णाश्चत्वारः कार्षिकस्ताम्रिकःपणः २
शतमानपलशब्दौपर्यायौ ॥ निष्कंसुवर्णाश्चत्वारइति अस्यार्थमाहविज्ञा
नेश्वरः पूर्वोक्ताश्चत्वारःसुवर्णारौप्यनिष्कइति तथाच सुवर्णचतुष्टय
समानं रजतनिष्कमित्यर्थः ॥ ज्योतिश्शास्त्रेप्रकारांतरेणनिष्कमुक्तम् वरा
टकानांदशकद्वयंयत्साकाकिनीताश्चपणश्चतस्त्रः तेषोडशद्रम्मइहावग
म्योद्रम्मैस्तथाषोडशभिश्चनिष्कइति ॥ १ ॥

और तांबेका जो पणहै सो कार्षिक कहीदाहै ॥ २ ॥ और पलका दूसरा नाम शतमान भी
कहीदाहै ॥ निष्कामिति इसके अर्थनुं विज्ञानेश्वर कहता है पूर्व कहे जो चार सुवर्ण तिस चार
सुवर्णके परिमाण जो रजतहै तिसका नाम रौप्यनिष्क कहिदाहै ॥ ज्योतिःशास्त्रविषे प्रकारांतर
करके निष्क किहाहै वराटेति वराटकाके जो दश दो हैं क्या वीस २० वराटका होण तिसका
नाम काकिनीहै चार काकिनी होण तिसका नाम पण है सोलां १६ पणका नाम द्रम्म है
और सोलां द्रम्म होण तिसका नाम निष्क किहाहै और वराटिका नाम कउडीकाहै ॥ १

धेनुका मूल शूलपाणि कृतग्रंथविषें संग्रह कीता जो षट्त्रिंशन्मत तिसविषें किहाहै ॥ जो पुरुषधन वाले हैं तिनांकों धेनुका मूल पंचकार्षापण किहाहै जो मध्यम पुरुष हैं तिनांकों त्रय पुराणक किहाहै और पवित्र पुरुषांकों एक कार्षापण कहाहै ॥ १ ॥ किसे स्थानविषें पविन्नाणां इस जगा दरिद्राणां ऐसा भी पाठहै ॥ पुराणमिति बत्ती रत्तीयांके तुल्य जो तोल होवे चांदी तिसका नाम पुराणक किहाहै और दो रत्तीके सम जो तोल है तिसका नाम रूप्य मासा किहाहै ऐसे सोलां मासे होय तिसका नाम धरण किहाहै २ जो पुराणक किहाहै सो रुप्ये विषें जानणा एहै विज्ञानेश्वरजाके ग्रंथ विषें और स्मृति वचन विषें है ॥ बत्ती रत्तीयां करके जो सम तोल रुप्यहै तिसका नाम कार्षापण किहाहै । अब भट्ट सोमेश्वरका वचन है ॥ पू

धेनुमूल्यमानंशूलपाणौ षट्त्रिंशन्मते । धेनुः पंचभिराढ्यानांमध्यानांत्रिपुराणिका कार्षापणैकमूल्याहिपवित्राणांप्रकीर्त्तितेति १ दरिद्राणामित्यपिक्वचित्पाठः ॥ पुराणंनामद्वात्रिंशत्कृष्णलसमतोलिरूप्यम् ॥ द्वेकृष्णलेसमधृतेविज्ञेयोरूप्यमाषकः तेषोडशस्याद्धरणंपुराणंचैवराजतमिति विज्ञानेश्वरपरधृतस्मृतेः कार्षापणोनामद्वात्रिंशत्कृष्णलपरिमितंराजतमिति भट्टसोमेश्वरः ॥ कर्षकृत आपणो व्यवहारःकार्षापणः अन्येषामपीति दीर्घतायां कार्षापणःकार्षः षोडशमाषकः ॥ तेषोडशाख्याकर्षइतिकोशात् तथाच धरणपुराणकार्षापणशब्दाअन्योन्यपर्यायाभासंते यत्तु हेमाद्यादिलिखितनारदवचनम् ॥ कार्षापणोदक्षिणस्यांदिशिरौप्यः प्रवर्त्तते पणैर्निबद्धःपूर्वस्यांषोडशैवपणाःसत्विति १ तत्राप्येतावदेवराजतंवोध्यम् ॥

र्व किहा जो कर्ष तिस करके कीया जो व्यवहार है तिसका नाम कार्षापण किहाहै ॥ अन्येषामपि इस सूत्र करके दीर्घकें होयां होयां कार्ष किहाहै सोलां माषका नाम कोश विषें कर्ष है इस वचनतें ॥ तांते धरण और पुराण और कार्षापण यह जो शब्द तोल वाचक हैं सो आपस विषे पर्याय क्या एक रूप हैं जो फेर हेमाद्यादि लिखित नारद वचन है सो कहते हां दक्षिण दिशा विषें कार्षापण व्यवहार रुप्येके व्यवहार विषें है और पूर्व दिशा विषें पणां करकें व्यवहार विषें जानणा सो फेर पण सोलां जानणें ॥ १ ॥ तिस वचन विषें भी इतनाहिपरिमाणक (राजत) है क्या पूर्वोक्त रजतका भी इतनाहि परिमाण है ॥

अव प्रायश्चित्तेंदुशेखर विषें कहते हैं गुंजेति गुंजा क्या रत्तीके प्रमाण है कृष्णल और पंच कृष्णल क्या पंच रत्ती प्रमाण स्वर्णका मासा जानणा इस जगा ८ चावलके परिमाणकी रत्ती जानणी ॥ और अक्षशब्द कर्के सुवर्ण शब्द कर्के और कर्ष शब्द कर्के और निष्क शब्द कर्के एक हि अर्थ कहाहै क्या सोलां १६ मासयांका हि नाम है ॥ और चार ४ सुबर्ण का नाम पल है और दश १० पल का नाम धरण किहाहै ॥ अव मनुस्मृति विषे कहतेहैं निष्क जो शब्द है सो एकसौ अठ १०८ जो सुवर्ण तोल कर्के है तिस विषें और छातीके भूषण विषें और छटांकविषें और मोहरविषे किहाहै एह अमरका वाक्य है । और राजत जो पुराणहै तिसीका नाम धरण कहीदा है और दश १० धरणका नाम राजतहै और इसीका

प्रायश्चित्तेंदुशेखरे। गुंजापरिमितकृष्णलपंचकंस्वर्णमाषः। षोडशमाषा अ
क्षशब्देन सुवर्णशब्देन कर्षशब्देन निष्कशब्देन प्रोच्यंते सुवर्णाश्चत्वारः
पलम् दशपलानिधरणमिति। मनुस्मृतौ। साष्टेशतेसुवर्णानांहेम्न्युरोभूष
णेपलेदीनारेपिचनिष्कोऽस्त्रीत्यमरः राजतःपुराणोधरणइत्युच्यते। दश
भिर्धरणैराजतंशतमानमित्युच्यते तदेवराजतंपलमप्युच्यत इति पलशतं
तुला तुलाविंशतिर्भारश्चाचितोदशभाराःस एव शाकट इत्युच्यते। मूल्या
ध्यायेकात्यायनः ॥ द्वात्रिंशत्पणिकागावश्चतुःकार्षापणोऽवरः। वृषेषट्का
र्षापणका अष्टावनडुहिस्मृताः दशकार्षापणाधेनुरश्वेपंचदशैवत्विति १ ॥

दूसरा नाम शतमान भी है सोइ राजत पलभी कहीदाहै ॥ और पल १००होवें तिसका नाम तुला है और वीस २० तुलाका भार होताहै और दस १० भारका आचित होता है तिसी का नाम शाकट भी जानणा ॥ अव मूल्याध्यायविषें कात्यायनजीका वचन है जिसमें गोदानका प्रत्याम्नाय दिखाया है वत्तीस ३२ पणिकके दान कर्के एक गोदान होताहै और इसीतरां छोटे वच्छेके स्थान चार ४ कार्षापण दान किहा है और वलद विषे छे ६ कार्षापण दान किहा हैं और गाडीवाले वलद विषें अठ ८ कार्षापण दान किहा है और वच्छेके साथ जो गौ है तिस विषें दश १० कार्षापण दान कहा है और घोडें विषे पंदरां १५ कार्षापण दान कहा है १ ॥

एह जो मूल्यविषे भेदहैं तिनांकी मर्य्यादा समर्थ और असमर्थ पुरुषकों देषकर्के कहणी ॥ अब व्रतार्कविषे अन्नका मान भविष्य पुराणके वचनसें कहतेहां पलेति दो २ छटांकका नाम प्रसृतहै और दो २ प्रसृतका कुडव होता है और चार ४ कुडव का प्रस्थ होता है और चार ४ प्रस्थका आढक होताहै ॥ १ ॥ और चार ४ आढकका बुद्धिमानोंनें द्रोण किहाहै और दो २ द्रोणका कुंभ किहा हैं और इसी का दूसरा नाम सूर्प भी है ॥ २ ॥ पल और कुडव और प्रस्थ आढक और द्रोण एह संज्ञा धान्यमान विषे क्रम कर्के चार चार ४ गुणां अधिक जानणी ॥ ३ ॥ और सोलां १६ द्रोणकी खारी कही है और वीस २० खारीका कुंभ होता है और दश १० कुंभ का वाह होताहै ऐसें धान्यकी संख्या कथन कीतीहै ॥ ४ ॥

एतेषांचमूल्यपक्षाणांशक्ताशक्तभेदेनव्यवस्था । अथव्रतार्के धान्यमानं । भविष्ये पलद्वयंतुप्रसृतंद्विगुणंकुडवंस्मृतं चतुर्भिःकुडवैःप्रस्थःप्रस्थाश्चत्वारःआढकाः १ आढकैस्तैश्चतुर्भिश्चद्रोणस्तुकथितोवुधैः कुंभोद्रोणद्वयंसूर्प्पः खारीद्रोणास्तुषोडश २ द्रोणद्वयस्यैव सूर्प्पइतिसंज्ञा । पलंचकुडवःप्रस्थ आढकोद्रोणएवच धान्यमानेषुवोद्धव्याःक्रमशोऽमीचतुर्गुणाः ३ द्रोणैःषोडशभिःखारीविंशत्याकुंभउच्यते कुंभैस्तुदशभिर्वाहोधान्यसंख्याप्रकीर्त्तिता ४ विंशत्येत्यत्रापिद्रोणैरितिसंवध्यते तथाच कुंभोद्रोणद्वयमितिपक्षाद्विंशतिद्रोणमितः कुंभइतिपक्षांतरम् एतेषांन्यूनाधिकपक्षयोः परिमानांतरमुक्तंपराशरेण । पुस्तकांतरेतुश्लोकद्वयमुपलभ्यते पादोनगद्यानकतुल्यटंकैर्द्विसप्त ७२ तुल्यैःकथितोऽत्रसेरः । मणाभिधानंखयुगै ४० श्चसेरैर्धान्यादितौल्येषुतुरुष्कसंज्ञा १ द्वयंकेंदु १९२ संख्यैर्धटकैश्चसेरस्तैःपंचभिःस्याद्घटिकाचताभिः मणोऽष्टभिस्त्वालमगीरशाहकृतात्रसंज्ञानिजराज्यपूर्षु २

इस विषे विंशति द्रोणकर्के कुंभ संख्या ग्रहण कीत्तो है तिसतें (कुंभोद्रोणद्वयं) इस पक्षमें वीस २० द्रोण कर्के कुंभ किहा है एह दूसरा भेद जानणा ॥ इनांविषे न्यून और अधिक जो पक्षहैं तिनांविषे परिमाणका भेद पराशरने किहाहै ॥ इसमें औरभी दो २ श्लोक देखीदेहैं पादोन जो गद्यानक क्या ३६ रत्तीयां इनके तुल्य जो टंक क्या परिमाण विशेष तिनां ७२ वहत्तरां कर्के १ सेर होता है और ४० चाली सेर मण होता है एह धान्यादितोल विषे तुरकोंकी कीतीहोई संज्ञाहै ॥ १ ॥ अव और मत कहते हैं धटक नाम ४२ रत्तीयां का है और १९२ एकसउ वानवें धटकां कर्के १ सेर होता है और पांच ५ सेरकी १ वट्टी होती है और ८ अठ वट्टी का १ मण होता है एह आलम गीरशाहकी मान परिभाषा अपने राज्य मे नगरोंके लिए वनाई होई जानणी ॥ २ ॥

पराशरजीने वेद और वेदांगोंके जानणेवाले और धर्म शास्त्रके पालक जो ब्राह्मण तिनोंने बाई २२ प्रस्थका द्रोण किहाहै दो २ प्रस्थहोंण तिसका नाम आढक किहाहै ॥ १ ॥ यह जो पूर्वोक्त न्यून और अधिकपक्षहै तिनांका ग्रहण पुरुषांकी शक्ति और हिमालयादि देश और वसंत ऋतु आदि समयकों देख करके किहाहै ॥ विष्णु धर्म्मोत्तरविषेभी किहाहै कि किसे जगा मान करके व्यवहार और किसे जगा उन्मान करके व्यवहार किसे जगा परिमाण करके किसे जगा संख्या करके किसेजगा सभनाकरके व्यवहारहोताहै ॥ १ ॥ इसकों स्पष्टकरके कहतेहैं ॥ अंगुलाद्यमिति २ ॥ अब शब्दकल्प द्रुमविषे कहतेहैं अठमुष्टि अन्नहोवे तिसका नाम कुंचिहै अठ कुंचि होंण तिसका नाम पुष्कलहै इति ॥ और कोई २॥ मुष्टि मानकों जो अन्न है तिसको अन्नमात्र कह

पराशरमतेन वेदवेदांगविद्भिर्धर्मशास्त्रानुपालकैः प्रस्थाद्वाविंशतिर्द्रोणः स्मृतोद्विप्रस्थआढकः । १ । इत्येपांच न्यूनाधिकपक्षाणां शक्तिदेशकालाद्य पेक्षया व्यवस्थाज्ञेया । विष्णुधर्म्मोत्तरे । क्वचित्संख्याक्वचिन्मानमुन्मानं परिमाणकम् ॥ समाहारः क्वचिच्चेष्टोव्यवहारायताद्विदाम् ॥ १ ॥ अंगुलाद्यं स्मृतंमानमुन्मानंतुतुलास्मृता परिमाणंपात्रमानंसंख्यैपाद्यादिसंज्ञिका २। शब्दकल्पद्रुमेतु ॥ अष्टमुष्टिर्भवेत्कुंचिःकुंचयोष्टौचपुष्कलइति ॥ सार्द्धमुष्टि द्वयमितमन्नमन्नमात्रमुच्यते इतिकेचित् । अथ मानवीयप्राजापत्यलक्षणो पयोगितयादौ याज्ञवल्क्यीयपादकृच्छ्रमुच्यते ॥ एकभक्तेननक्तेनतथैवाया चितेनच उपवासेनचैवायंपादकृच्छ्रःप्रकीर्त्तितः ॥ १ ॥ अत्रच ग्राससंख्या नियमः पराशरेणदर्शितः । सायंतुद्वादशग्रासाः प्रातर्द्वाविंशतिःस्मृताः चतुर्विंशतिरायाच्याः परंनिरशनंस्मृतम् ॥ १ ॥

मेहैं ॥ इसतें उपरंतमानवीय जो प्राजापत्यलक्षण तिनका उपकारी होंणेतें आदविषे याज्ञवल्क्य शोक्त जो पाद कृच्छ्र सो कहिदा है चार दिनका जो व्रत सो पाद कृच्छ्र किहा है सो कहताहुं एक दिन दिन विषे एक वार भोजन खाणा दूसरे दिन रात्रि विषे भोजन खाणा और तीसरे दिन याचनातें विना भोजन खाणा । और चौथे दिन उपवास करणा क्या कुछनहिखाणा ऐसे पाद कृच्छ्र किहाहै ॥ १ ॥ इसविषे ग्रासांकी संख्याका नियम पराशरजीने दखायाहै । संध्या काळविषे वारां १२ ग्रास भक्षण करे और प्रातःकालविषे बत्तीं २२ ग्रास भक्षण करे और चौथी २४ ग्रास याचनातें विना भोजनमें भक्षण करे तिसते परे चौथे दिनविषे कुछ न भक्षण करे ॥ १ ॥

अब ग्रासका प्रमाण कहताहुं कुकुडके अंडेके प्रमाण क्या इतनाहि स्थूलग्रास कहाहै अथवा जो ग्रास सुख करके मुख विषें भक्षणकों प्राप्त होवे इनां दोहां २ प्रमानोंका सामर्थ्यादि देख कर भेद है ॥ अब ग्रास संख्या का दूसरा भेद चतुर्विंशति २४ मतबिषे किहाहै ॥ प्रातःकाल विषे १२ बारां ग्रास और संध्या कालविषे पंद्रां १५ ग्रास और अयाचितविषे सोलां १६ ग्रासभक्षण करे तिसतें आगें वायु भक्षण करे अर्थात् निराहारव्रत करे । १ । यह प्रकार अतिसमर्थ पुरुषविषे जानणा ॥ अब आपस्तंब ने ॥ प्राजापत्य प्रायश्चित्तनूं चार प्रकारका विभाग करके चार पाद कृछ्रांकों दखा कर ब्राह्मणादि वर्णोंकी योग्यता करके मर्यादा दखाई है ॥ त्र्यहमिति त्रय दिन

कुकुटांडप्रमाणस्तुयथावास्यंविशेत्सुखमिति तयोश्चकल्पयोः शक्त्याद्यपेक्ष याविकल्पः ॥ ग्राससंख्यायाः प्रकारांतरंचतुर्विंशतिमते ॥ प्रातस्तुद्वादश ग्रासाःसायंपंचदशैवतु अयाचितेचद्वावष्टौपरंवैमारुताशन इत्यतिशक्तवि षयमेतत् । आपस्तंबेनतु । प्राजापत्यप्रायश्चित्तंचतुर्धाविभज्य चतुरः पाद कृच्छ्रान्कृत्वा वर्णानुरूपेणव्यवस्थादर्शिता ॥ त्र्यहंनिरशनंपादःपादश्चा याचितंत्र्यहम् सायंत्र्यहंतथापादःपादःप्रातस्तथात्र्यहम् ॥ १ ॥ प्रातः पादंचरेच्छूद्रःसायंवैश्यस्यदापयेत् अयाचितंतुराजन्येनिरन्नंब्राह्मणेस्मृत मिति ॥ २ ॥

कुछ न खावे एक पाद कहा है और त्रय दिन मंगणेते विना भोजन करणा एभी पादहै और त्रयदिन संध्या काल में भोजन करणा एक एभी पादहै और त्रयदिन प्रातःकाल विषें भोजन करणा इह चार प्रकारके पाद कहेहैं ॥ १ ॥ अब इनकों वर्णोंके क्रम करके कहतेहां शूद्रवर्ण प्रातः काल के पादकों करे और वैश्य संध्या कालके पादकों करे और क्षत्री अयाचित पाद कों करे ॥ और ब्राह्मण निराहार पादको करे क्या कुछ न भक्षण करे ॥ २ ॥

यदेति जेकर तु पुनः मंगणेतें विना त्रय दिन भोजन करे और त्रय दिन उपवास करे तां अर्द्ध कृच्छ्र व्रत होताहै ॥ और सायं कालके दिन त्रय तें बिना अगले त्रंय त्रय दिनां विष जो अ नुष्ठान करणा तिसका नाम पादोन कृच्छ्र जानणा । इसमे वचन कहते हैं सायमिति एह तिसी आपस्तंब ऋषि करके कथन होणेते । और अर्द्ध कृच्छ्रका दूसरा भेदभी आपस्तंबने दस्वाया है एक दिन संध्या काल विषे भोजन करे और एक दिन प्रातः काल विषे और दो दिन अ याचित क्या कहणेतें बिना कोई पुरुष भोजन ले आवे तां भक्षण करे और दो दिन कुछ न भक्षण करे सो दूसरा भेदवाला कृच्छ्रार्द्ध कहाहै १ अबकुक्कुटांडप्रमाण ग्रासविषे शंकाहै(प्रश्न)

यदात्वयाचितोपवासात्मकत्र्यहद्वयानुष्ठानं तदार्द्धकृच्छ्रः सायंव्यतिरिक्ताप रत्र्यहानुष्ठानंतुपादोनमितिविज्ञेयम् । सायंप्रातर्विनार्द्धस्यात्पादोनंनक्तवर्जि तमितितेनोक्तत्वात् । अर्द्धकृच्छ्रस्यप्रकारांतरमपि तेनैव दर्शितम् । सायंप्रा तस्तथैकैकंदिनद्वयमयाचितम् दिनद्वयंचनाश्नीयात्कृच्छ्रार्द्धंतद्विधीयते १ नन्वार्द्रामलकाम्रफलादीनां ग्रासोपमानतासंभवे किमर्थं मुनिभिः कुक्कुट मयूरांडीयवीभत्सोपमानं ग्रासस्य स्वीकृतमिति चेदेवंप्रतिभाति क्रमशः प्रवर्द्धमानानांफलानामुत्पत्तिसमकालग्रासाकारभाक्कुक्कुटांडाद्यपेक्षयोपमा

नता न युक्ता ॥

हरे जो आंवले और अंबर्थी लेकर फल हैं तिनांको ग्रासकी उपमा देणे योग्यथी किस कारण वास्ते मुनियांने कुक्कुड और मोरके आंडड़ेकी निंदित उपमा दित्तीहै ग्रासके ग्रहण करण विषे (उत्तर) तांते ऐसे जाणीदाहै कि फल जो हैं सो कम करके वृद्धिको प्राप्त होते हैं और कुक्कुडके आंडेको उत्पत्तिके समकालहि स्थूल होणेतें ग्रासकी उपमा बण सकती है फलांको वडा छोटा होणेतें उपमा विषे योग्यता नहि है एह तात्पर्य्य होवेगा आगे विचार बुद्धि मान् करें ॥

किंतु भक्ष्यत्व करके गिणे जो वनके कुक्कुड और मोर तिनांके आंडेयोंकी न्याईं ग्रासकी उपमाहै सो ग्लानिकों नहि प्राप्त करती ॥ जैसे भगिनी शब्द और भगवती शब्द और शिवलिंग आदि शब्द और गोधूम आदि शब्द लज्जादिके देणेवाले भी हैं तथापि जगत्‌नें प्रसिद्ध होणे करके लज्जाकों नहि देते जैसे भगिनी उसको कहते हैं कि जिसको भग क्या योनिहोवे इस अर्थसे लज्जा आउतीहै परंतु कोई नहि करता तैसे कुक्कुटांडादिकी तुल्यता दिखाणेतें बीभत्सता नहि करणेयोग्य ॥ अब प्राजापत्य ब्रत मनुजीनंभी कहाहै त्र्यहमिति त्रयदिन प्रातःकाल विषे भोजन खावे और त्रय दिन सायंकाल और त्रयदिन मांगणेतें विना क्या कोई पुरुष अन्न

किंतुभक्ष्यत्वेन गणितानांवनकुक्कुटमयूरादीनामंडस्य ग्रासोपमानता भगिनीभगवतीशिवलिंगादिगोधूमादिशब्दवन्नाश्लीलतामावहतीतिसर्वमनवद्यम् ॥ अथप्राजापत्यं । मनौ। त्र्यहंप्रातस्त्र्यहंसायंत्र्यहमद्यादयाचितम् त्र्यहंपरंचनाश्णीयात्प्राजापत्यंचरेद्द्विजः १ याज्ञवल्क्यः॥ यथाकथंचित् त्रिगुणः प्राजापत्योयमुच्यते ॥ देवलः॥ त्रिदिनंचदिवाश्णीयात्त्रिदिनंरात्रिभोजनम् अयाचितंस्यात्त्रिदिनंनिराहारोदिनत्रयम् १ कृच्छ्रमेतद्विजानीयाद्गोदानंगव्यभक्षणम् ब्रह्महत्यादिपापानामेतत्कृच्छ्रंविशोधनम् २॥

देजावे तां भक्षण करे और त्रय दिन कुछ न भक्षण करे ऐसा जो प्राजापत्य तिसकों ब्राह्मणादि वर्ण करें ॥ १ ॥ अब याज्ञवल्क्यजीका वचन है जिसकिसे उपाय करके लघु कृच्छ्र जेकर त्रिगुण होवे तां प्राजापत्य कृच्छ्र किहाई ॥ अब देवलजीका वचन है त्रीति त्रयदिन दिन विषे अन्न भक्षणे करे और त्रय दिन रात्रि विषे भोजन करें और त्रय दिन अयाचित्त भोजन करे और त्रय दिन निराहार करे ॥ १ ॥ तो इसकों कृच्छ्र जाने और पीछे पंचगव्य भक्षण करके गोदान करे एह ब्रह्महत्यादि पापांके दूर करणे वाला कृच्छ्र है ॥ २ ॥

इस विषे जो निवृत्तिवास्ते ब्रह्महत्या शब्द कहाहै सो आतिदेशिक ब्रह्महत्याके दूरकरणे वास्तें
है आतिदेशिक हत्या क्या है जैसे ब्राह्मणकी निंदा और अधीत विद्याका विसारदेणा एह ब्रह्म
हत्याके तुल्य है और पारिभाषिक हत्या क्या है जैसे गुरां विषे द्रोह करण वालेको ब्रह्महत्या
का प्रायश्चित देणा और रहस्यानुष्ठानहत्या रहस्याऽनुष्ठान प्रकरण विषे कहीहै तिस हत्याकी नि
वृत्ति विषे प्राजापत्यका विधानहै क्योंकि यथार्थहत्या विषे प्रायश्चित्त कों अधिकहोणेतें ॥
और निराहार जो कहाहै सो उपवास जानणा केवल भोजनका निषेध नहि है तिसका स्वरूप
दिखातेहैं उपेति दोषांते रहितकों और गुणांककें युक्त होककें संपूर्ण विषयभोगतें वर्जितहोणेका
नाम उपवासकहाहै ॥एह होरस्मृतिविषे लक्षणवाला जानणा ॥ १ ॥और जैसे कैसे इत्यादिवचन
की व्याख्या ऋषियोंनें कहीहै सो कहतेहैं अयमिति एही पादकृच्छ्र जिसांकिसे उपायककें दंडका

अत्र ब्रह्महत्याऽऽतिदेशिकपारिभाषिकरहस्यानुष्ठानादिविषया बोध्या।ता
त्विकायां प्रायश्चित्ताधिक्यश्रवणात्।निराहारोऽत्रोपवासएव नतु भोजन
निवृत्तिमात्रम्।सच उपारतस्यदोषेभ्योयस्तुवासोगुणैःसह उपवासःसवि
ज्ञेयःसर्वभोगविवर्जितइति स्मृत्यन्तरलक्षणोबोध्यः १ यथाकथंचिदित्या
दिव्याख्यातमभियुक्तैः ॥ अयमेवपादकृच्छ्रोयथाकथंचिद्दंडकालितवदावृ
त्त्या स्वस्थानविवृद्ध्यावाज्ञेयः ॥ अत्राप्यानुलोम्येन प्रातिलोम्येन वा
तथा वक्ष्यमाणजपादियुक्तं तद्रहितंवात्रिरभ्यस्तः प्राजापत्यंविधीयते ॥
तत्र दंडकालितवदावृत्तिपक्षोवशिष्ठेनदर्शितः। अहः प्रातरहर्नक्तमहरेकम
याचितम् अहःपराकंतत्रैकमेवंचतुरहौपरौ १ अनुग्रहार्थंविप्राणांमनुर्ध
र्मभृतांवरः बालवृद्धातुरेष्वेवं शिशुकृच्छ्रमुवाचहेति २ ॥

लितकी न्याईं आवृत्तिककें अथवा स्वस्थानकी विवृद्धिककें जानणा ॥ इसविषे भी रात्रि और
दिन ऐसे अनुलोम और प्रतिलोमककें जानणा ॥ और तांते आगे कहणें जो जप आदिक
तिनांककें युक्त वा रहित त्रयवार अभ्यासकिया जो लघु कृच्छ्रव्रत सो प्राजापत्यकहाहै एह अर्थ है
तत्रेति तिसविषे दंडकालितवत् जो आवृत्तिपक्षहै सो वशिष्ठजीनें दखाया है एकदिनप्रातःकाल
और एक दिन संध्याकाल विषे और एकदिन अयाचित और एकदिन पराक एह चारदिनएक
वार होए ऐसेंहि दो२वार चारदिन फेर करणे ॥ १ ॥ जैसे दंडेककें इकठियां गीयांलेजाईदीयां
हैं और लेआवीदीयां हैं इसतरां एह ब्राह्मणांके उपर अनुग्रह करणवास्ते धर्म धारणवालयां विषे
श्रेष्ठ जो मनुजीहैं सो बालक और वृद्ध और आतुर एनां विषे शिशुकृच्छ्र व्रतकों कहतेभये २

अनुलोम क्रम करकें स्वस्थान वृद्धिका अर्थ जैसे त्रय दिन प्रातः काल विषे अन्न भक्षण करणा इत्यादि मनुने दिखायाहै सो पूर्व कहदियाहै ॥ प्रातिलोम्या वृत्ति भी वशिष्ट जीने दखाईहै प्रातीति चांद्रायण पीछे जो कृच्छ्र है सो प्रातिलोम्यहै तिसव्रतकों ब्राह्मण करे और कृच्छ्र है पहले जिसके ऐसा चांद्रायण अनुलोम क्रम करकें होताहै ॥ जद चांद्रायण है पीछे जिसके ऐसा कृच्छ्र होवे तां प्रतिलोम करकें जानणा एह अर्थ है ॥ जप आदिकांते रहित जो पक्षहै सो स्त्री शूद्र आदियोंविषे अंगिराऋषिनें दखाहै तस्मादिति तिसकारणतें सदाँहि धर्ममार्गविषें स्थित जो शूद्र तिसकों प्राप्त होकर जपहोमादितें रहित प्रायश्चित्तदेणे योग्यहै १ और जपादियोंकरकें युक्त जो पक्षहै सो शूद्रतें भिन्न ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य इन्हां

आनुलोम्येन स्वस्थानवृद्धिपक्षस्तु मनुनादार्शितः ॥ सतुप्रागभिहितः । प्रातिलोम्यावृत्तिरपि वशिष्ठेनदर्शिता ॥ प्रातिलोम्यंचरेद्विप्रःकृच्छ्रंचांद्रायणोत्तरमिति कृच्छ्रोत्तरं चांद्रायणमानुलोम्येनभवति ॥ यदातु चांद्रायणोत्तरंकृच्छ्रंक्रियते तदा प्रातिलोम्येन ज्ञेयमित्यर्थः ॥ जपादिरहितपक्षस्तु स्त्रीशूद्रादिविषयेंगिरसादार्शितः तस्माच्छूद्रंसमासाद्यसदाधर्मपदेस्थितम् प्रायश्चित्तंप्रदातव्यंजपहोमादिवर्जितमिति ॥ १ ॥ जपादियुक्तपक्षस्तु परिशेषाद्योग्यतयाच त्रैवर्णिकविषयः सच गौत्तमादिभिर्दार्शितः ॥तथाचगौत्तमः ॥ हविष्यान्प्रातराशान् भुक्त्वा तिस्रोरात्रीर्नाश्णीयादथापरम् त्र्यहंनक्तंभुंजीत अपरंत्र्यहमुपवसेत्तिष्ठेदहनिरात्रावासीतक्षिप्रकामः सत्यंवदेदनार्य्यैः सह न भाषेत रौरवयौधाजयेनित्यंप्रयुंजीतानुसवनमुदकोपस्पर्शनमापोहिष्ठेतितिसृभिःपवित्रवतीभिर्मार्जयेत ॥

तिन्हा वर्णां विषें योग्यता करकें गौत्तमादि ऋषियांने दखायाहै ॥ तैसें गौत्तमजीका बचनहै ॥ प्रातःकालविषें हविष्यअन्न कणक चावल मुंगीआदि त्रयदिन भक्षण करे फेर त्रय रात्रिविषें(नाश्णीयात्)क्या भोजन न करे त्रयदिन रात्रिमे खावे दिने नहि खावे और तिसके आगें किसेतें याचना न करे याचना विना मिले तां भक्षणकरे और त्रयदिन कुछ न भक्षण करे और दिनविषे खलोवे रात्रिविषें बैठा रहे क्षिप्रकामना वाला हुआ २ और सत्य वचन कहे और दुष्टांके साथ संभाषण न करे और रौरव योधाजय जो साम हैं तिनां कों नित्य जपे और त्रयकाल स्नान करे और आचमन करे और आपोहिष्ठातें लेकर त्रय जो ऋचाहैं पवित्र तिनां करकें पुरुष मार्जन करे तो तिसका पाप शीघ्रहिदूर होताहै ॥

और हिरण्य वर्णा इसथीं आद लेके अठां पवित्रवतियां ऋचां कर्के मार्जन करे ॥ अथेति इस तें उपरंत जलकर्के तर्पण करे तर्प्पण के मंत्रोंकों कहतेहैं नमोहमाय इत्यादि और इहां हि मंत्रोंकर्के सूर्य्य भगवान् जीका उपस्थान भी करतेहैं इस मंत्रका अर्थ वहुत है तथापि तिसका कोई उपयोग नहि इसकर्के कुछक दिखाइदा हैं (अहमाय) क्या अहंकारके अभिमानी क्या प्रवर्त्तक जो शिवजी तिनके ताईं नमस्कार होवे कैसे शिवजी हैं (मोहमाय) मोहके स्थापक हैं अथवा नाशक हैं फेर कैसे हैं मंहमाय कामकेनाशक हैं

हिरण्यवर्णाः शुचयःपावकाइत्यष्टाभिः। अथोदकतर्पणम् नमोहमायमोह मायमंहमायधन्वने तापनाय पुनर्वसवेनमो मौञ्ज्याय ऊौर्म्याय वसुविंदाय सर्व्ववर्णविंदायनमः पाराय महापाराय पारदाय पारयिष्णवे नमोरुद्राय पशुपतयेमहते देवायत्र्यंवकायैकचरायाधिपतये हराय शर्वायईशानाय उग्रायवज्रिणेघृणिने कपर्दिनेनमःसूर्य्यायादित्यायनमो नीलग्रीवायशिति कंठायनमःकृष्णायपिंगलायनमः ज्येष्ठायश्रेष्ठायवृद्धायेंद्रियायहरिकेशाय ऊर्द्धरेतसेनमःसत्यायपावकाय पावकवर्णायैकवर्णायकामायकामरूपिणेन मोदीप्तायदीप्तरूपिणेनमः तीक्ष्णायतीक्ष्णरूपिणेनमःसौम्यायपुरुषायम हापुरुषायनमो मध्यमपुरुषाय नमउत्तमपुरुषाय नमो ब्रह्मचारिणेनमः चंद्रललाटायनमःकृत्तिवाससेनमइति एतदेवादित्योपस्थानमेताएवा ज्याहुतयोद्वादशरात्रस्यांते चरुं श्रपयित्वा एताभ्यो देवताभ्यो जुहुयात् अग्नयेस्वाहा सोमायस्वाहाअग्नीषोमाभ्यां इंद्राग्नीभ्यां इंद्राय विश्वेभ्यो देवेभ्योब्रह्मणे प्रजापतये अग्नयेस्विष्टकृते इति

फेर कैसेहैं कि (धन्वने) त्रिपुर दैत्यके विनाश वास्ते तैसे वडे विलक्षण धनुषके धारणवाले हैं और जो तापनाय क्या तापक हैं और जो पुनर्वसु हैं इनके ताईं नमस्कार होवे इत्यादि नमोहमाय इसथीं आदलेके एनां कर्के सूर्यका उपस्थान करणा और इतनीयांहि घृतकी यां आहुतियां करणीयां और वारां दिनांके अंत विषे चरुकों पका कर इनां देवतयांके ताईं आहुतियां देवे (ऊॅंअग्नयेस्वाहा इसतें आदलेके अग्नये स्विष्टकृते इस तक) नउ ९ आहुतियां देवे १

श्रोर श्रंत विषे ब्राह्मणोंके ताईं भोजनदेवे ॥ कुछ श्रोर कहतेहैं तत्रेति जो पुरुष मन कर्के कीया जो पाप तिसके शीघ्रहि एक कृच्छ्र कर्के दूर करणेकी इच्छा करे तिसका नाम क्षिप्रकाम है सो क्षिप्रकामना वाला पुरुष दिन विषे खलोवे श्रोर रात्रि विषे वैठा रहे ॥ एही अर्थ विशद कर्के कहीदाहै सो एह पुरुष दिन विषे कर्मांके नहि जो विरोधि काल क्या खलोणे कर्के कार्य दूर न होवे तिस विषे स्थित होवे क्या खलोवे श्रौर रात्रि विषे वैठे इसी प्रकार रौरव उौर योधा जय नाम कर्के जो २ सामवेदकीयां ऋचा तिनांका जप कर नमोहमाय इत्यादिकां कर्के तर्पण श्रोर सूर्य्यका उपस्थान श्रौर चरुका पकाणा श्रादि

श्रंतेब्राह्मण भोजनम्। तत्रतिष्ठेदहनि रात्रावासीतक्षिप्रकामइति श्रस्यार्थः यस्तुमनसोप्येनसःक्षिप्रमेकेनैवकृच्छ्रेणमुच्येयमित्येवंकामयते सक्षिप्रकामः श्रसावहनि कर्माविरुद्धेषुकालेषु तिष्ठेद्रात्रावासीत एवंरौरवयोधाजयाख्यसामजपं नमोहमायेत्यादिभिस्तर्पणादित्योपस्थानादिकं चरुश्रपणादिकंच योगीश्वराद्यनुक्तमपि क्षिप्रकामःकुर्वीत श्रतश्च योगीश्वराद्युक्तप्राजापत्यद्वयस्थाने गौत्तमीयमनेकेतिकर्त्तव्यतासहितमेकमेवप्राजापत्यंद्रष्टव्यम् ॥ एवमन्यान्यपि स्मृत्यन्तरोक्तानि व्रतविशेषणान्यन्वेषणीयानि ॥ मार्कंडेयः एकभक्तेननक्तेनतथैवायाचितेनच उपवासेनचैकेनगोदानंगव्यभक्षणम् ब्रह्महत्यादिपापानामितरेषांविशोधनम् १ ॥

जो कुछ इसनूं योगीश्वरश्रादिकर्के न कहें होयेनूं भी शीघ्रकामना वाला करे ॥ इसकारणतें योगीश्वर कर्के पापके दूर करणे वास्ते कहे जो प्राजापत्य दो २ हैं तिनां दोनोंके स्थान विषे गौत्तम ऋषि ने श्रनेक श्रैसी कर्त्तव्यताके साथ एकहि प्राजापत्य दखायाहै ॥ एवमिति श्रैसेहि होर भी स्मृतियांकर्के कहें जो विशेष व्रत सो देखणे योग्यहैं ॥ श्रव मार्कंडेयजीकावचनहै एक दिन एक वार भोजन करणा श्रौर दूसरे दिन संध्याकाल विषे श्रौर तीसरे दिन विषे मांगणेतें विना श्रोर चौथे दिन विषे उपवास करणा श्रौर पीछे पंचगव्यका भक्षण कर्के गोदान करणा एह व्रत संपूर्ण जो ब्रह्महत्यादिक पापहैं तिनांके दूर करणे वालाहै १ ॥

अब गौत्तमजीकावचन है एह जो प्राजापत्य कृच्छ्र है सो संपूर्णपापांको दूरकरणे वाला है तिसका स्वरूप एह है कि त्रय दिन दिनाविषे और त्रय दिन रात्रि विषे अन्न खाणा ॥ १ ॥ और त्रय दिन याचनातें विना और त्रय दिन वायुभक्षण करणा और पीछे पंचगव्यको वया दुग्धादिकों भक्षणकरके गोदानकरे तो अनुत्तमशुद्धि क्या जिससे उत्तम और कोई शुद्धिनहि तिसको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ अब आपस्तंव ऋषिका वचनहै त्रय दिन न संध्या कालविषे भक्षण करणा अर्थात् दिनविषे भक्षण करणा और त्रयदिन रात्रि विषे और त्रयदिन मांगणे तें विना भोजन करणा और त्रय दिन कुछ न भक्षणकरणा इति ॥ १ ॥ अब इसीविषे जावालि ऋषिका वचनहै प्रेवि

गौतमः । प्राजापत्यंकृच्छ्रमिदंसर्वपापप्रणाशनम् त्रिदिनंस्याद्दिवाभुक्तिस्त्रि
दिनंरात्रिभोजनम् १ अयाचितंच.त्रि.दिनंत्रिदिनंवायुभक्षणम् गोदानंपंच
गव्यांतेशुद्धिमाप्नोत्यनुत्तमाम् २ आपस्तंवः । त्र्यहमनाक्ताशनं त्र्यहंरात्रि
भोजनम् त्र्यहमयाचितव्रतस्त्र्यहंनाश्नातिकिंचनेति १ जावालिः ॥ प्रजाप
तिरिदंसाक्षात्सृष्टवान्देवसन्निधौ सर्वलोकोपकारायसर्वपापापनुत्तये १ ॥
दिनत्रयंदिवाभुक्तेतथारात्र्यांदिनत्रयम् अयाचितंस्यात्त्रिदिनंनिराहारांदि
नत्रयम् २ पंचगव्यंततःपश्चाद्दद्यात्धेनुंविशोधने एवंकुर्याद्द्विजोयस्तुसर्व
पापविमुक्तिमान् ३ कृच्छ्राणांनामान्याहमार्कंडेयः ॥ यवमध्यंचमंदंस्याद्य
तिशिशवोर्महद्व्रतम् महाचान्द्रमितिप्रोक्तंपंचधापरिकीर्त्तितम् ॥ १ ॥

प्रजापति जो ब्रह्मा सो साक्षात् विष्णुके समीपविषे इस प्राजापत्य व्रतकों सवलोकांके उपकार वास्ते और सवपापांके दूर करणेवास्ते रचिताभया सोकहतेहां १ ॥ त्रय दिन दिनविषे अन्नको भक्षण करे और त्रय दिन रात्रि विषे और त्रय दिन याचनातें विना और त्रय दिन निराहार रहे २ ॥ और पीछे पंचगव्यकों भक्षणकरके एक गोदानकरे शुद्धिवास्ते इसप्रकार जो द्विजव्रतकरता है सो संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ ३ ॥ अब कृच्छ्रांके नामांकों मार्कंडेयजी कहतेहैं एक यव मध्य १ और मंद क्या पिपीलिका मध्य २ और यति महद्व्रत ३ और शिशुमहद्व्रत ४ और महा चांद्र ५ एहपंच प्रकारका चांद्रायण व्रत कहाहै ॥ १ ॥

और तेरां १३ प्रकारका कृच्छ्र व्रत कहाहै सो कहतेहां ॥ प्राजापत्य १ और तप्त कृच्छ्र २ और पराक ३ और यावक ४ और सांतपन कृच्छ्र ५ और महासांतपन ६ और औदुम्बर ७ और पर्ण कृच्छ्र ८ और फलकृच्छ्र ९ और माहेश्वर कृच्छ्र १० और ब्रह्म कृच्छ्र ११ और धान्य कृच्छ्र १२ और स्वर्णमय कृच्छ्र १३ एह तेरां प्रकारका कृच्छ्र कहाहै ॥ ३ ॥ अथेति अथक्या इसतें अनंतर याज्ञवल्क्यजी कर्के कही जो कृच्छ्र चांद्रायण की साधारण इति कर्त्तव्यता क्या सामान्य विधि करणेकी योग्यता एहहि है ॥ इस विषे कोईक पदार्थ पीछे दूसरे और तीसरे प्रकरण विषे कहेहैं फेर इहां प्रसंगतें कहीदेहैं। तिस विषे भी पूर्व कहा जो पाठ तिसतें भिन्न होरी ग्रंथका है सो बाहुल्यता कर्के जिनांपाठां विषे लोकांकी श्रद्धा है तिसके वधाणे वास्ते स्थापन कीताहै इसतें नवीन कृत्य विषे वैकल्य दोषकी संभा

प्राजापत्यंतप्तकृच्छ्रंपराकंयावकंतथा। ततःसांतपनंकृच्छ्रं महासांतपनंतथा २ औदुम्बरंचपर्णंचफलकृच्छ्रमतःपरं कृच्छ्रंमाहेश्वरंचैवब्रह्मकृच्छ्रंतथैवच धान्यंस्वर्णमयंकृच्छ्रंदशत्रेधाप्रकीर्त्तितम् ३ दशत्रेधा त्रयोदशधाइत्यर्थः अथयाज्ञवल्क्योक्ताकृच्छ्रचांद्रायणसाधारणीतिकर्त्तव्यता अत्रकानिचित्पदार्थानिप्राग्द्वितीयतृतीयप्रकरणयोरभिहितान्यपि पुनरत्र प्रसंगादुच्यंते तत्रापिग्रंथांतरीयएवात्रपाठः प्रायेण प्रचरितश्रद्धधानार्थंस्थापित इति न नवीकरणवैकल्यसंभावनाविधेया।कुर्यात्त्रिषवणस्नायीकृच्छ्रंचांद्रायणंतथा पवित्राणिजपेत्पिंडान्गायत्र्याचाभिमंत्रयेत् १ एतच्चतप्तकृच्छ्रव्यतिरेकेण। तत्रसकृत्स्नायीसमाहितइति मनुना विशेषाभिधानात्। यत्तु। पुनःस्मृत्यन्तरे। तप्तकृच्छ्रेषु अहोरात्रं त्रिषवणस्नानमभिहितम्। त्रिरन्हित्रिनिशायांतुसवासाजलमाविशेदिति तदतिशक्तविषयम् ॥ यत्पुनर्वैशंपायनेन द्वैकालिकंस्नानमुक्तम् स्नानंद्विकालमेवस्यात्त्रिकालंवाद्विजन्मनइति

वना नहि करणे योग्य है ॥ कुर्यादिति त्रयकाल स्नानकरता हुया कृच्छ्र चांद्रायण व्रतकों करे और पवित्र जो मंत्र हैं तिनांकों पडे और पिंड जो ग्रासहैं तिनांकों गायत्री कर्के अभिमंत्रण करे ॥ १ ॥ एह विधि तप्त कृच्छ्रतें भिन्न कर्के जानणी तिस विषे एक वार स्नान इंद्रियांकों रोक कर्के स्थित होया २ करे एह मनुजीकर्के विशेष कहणेतें ॥ यत्त्विति जो फेर और स्मृति विषे तप्त कृच्छ्र व्रत विषे दिन विषे त्रय स्नान और रात्रि विषे भी त्रय स्नान कहेहैं सो स्मृति दिखाईहै ॥ त्रिरिति त्रय स्नान दिनविषे और त्रय स्नान रात्रिविषे सहितवस्त्रांदे जल विषे करे सो बहुत समर्थ पुरुषकेविषे जानणी। फेर जो वैशंपायन ऋषिनें दिनविषे दो कालहि स्नान कहाहै स्नानमिति ब्राह्मण आदिवर्णकों स्नान दोकाल अथवा त्रय कालकरणा चाहिए

एह विधि तिस पुरुषकों कहीहै जो दिन रात्र त्राय कालकें स्नान विषे सामर्थ्यतें रहित है असे जानणे योग्यहै ॥ जो फेर गार्ग्यजीनें कहाहै कि एक वस्त्र धार कर्के स्नान करे और वस्त्रका निपीडन न करे क्या भिज्जेहोये वस्त्र कर्के युक्त होया होया भिक्षाकों मांगे और थोडाखावे और पृथिवी विषे शयन करे एह एक वस्त्रता जो कहीहै सो शंखजीने एक पक्ष विषे कहणेतें अर्थात् शंखने विकल्पकर्के एक वस्त्र धारण किहाहै तिसी के मतकर्के इसनेंभी किहाहै एभी सामर्थ्य विषे जानणे योग्यहै ॥ स्नान विषे हारीत ऋषि नें विशेष किहाहै त्राय स्नानतें पीछे शुद्धवती ऋचां कर्के स्नान करके जल विषे स्थित होयाहोया अघमर्षणकों जपे और पीछे शुद्ध वस्त्रकों धारके सामवेदके विषे सोमहै देवता जिसका

तत्त्रिषवणस्नानाशक्तस्य वेदितव्यम् ॥ यत्पुनर्गार्ग्येण ॥ एकवासा श्चरेद्भैक्ष्यंस्नात्वावासोनपीडयेत् ॥ तदपिशक्तस्यैव ॥ एकवासाआर्द्र वासा लघ्वाशी स्थंडिलेशयः ॥ इत्येकवस्त्रताया अपि शंखेन पाक्षिकत्वा भिधानात् । स्नानेचहारीतेनविशेषउक्तः ॥ त्र्यवरंशुद्धवतीभिःस्नात्वाऽघमर्ष णमंतर्जले जपित्वा धौतमहतंवासःपरिधाय साम्नासौम्येनादित्यमुपतिष्ठे दिति ॥ त्र्यवरंत्रिभ्यःपरमित्यर्थः ॥ स्नानानंतरं पवित्राणिचजपेत् । पवित्राणिच अघमर्षणंदेवकृतःशुद्धवत्यस्तरत्समाइत्यादिवाशिष्ठादिप्रति- पादितानामन्यतमामर्थाविरुद्धेषु कालेषु जपेत् सावित्रीं वा ॥ सावित्रीं वाजपेन्नित्यं पवित्राणिचशक्तित इति मनुस्मरणात् ॥

तिस मंत्र कर्के सूर्य्यके उपस्थानकों करे त्र्यवर शब्दका अर्थ कहतेहैं कि त्रयते आगे जो है सो त्र्यवर किहाहै चार वार स्नान करे एह अर्थ है ॥ स्नानतें पीछे पवित्र मंत्रांकों जपे सो कहतेहां ॥ अघमर्षण मंत्र और देवकृत और शुद्धवत्यः और तरत्समा इसतें आद लेके वसिष्टआदिकोंने कथन कीते जो मंत्र तिनांकों पढे ॥ और कर्मके नहि दूर करणे वाला जो समा तिस विषें जपे अर्थात् जिस जिस काल विषें प्रातः संध्यादिके विषें जपने योग्य जो मंत्र है तिस विषे हि जपे अथवा सावित्रीको जपे ॥ सो मनुजी कहतेहैं गायत्री कों जपे नित्य वा कर्म करणेके वेलेमें पवित्र जो मंत्र तिनांको जपे ॥

जो फेर गोतमजीने कहाहै रौरवयोधा जय ऋचा कों जपविषें नित्यहि ग्रहण करे सो पवित्रादि इस कहणें करके हिकथन किया गया कोई फेर नियमके वास्ते नहि किहा तैसे होयां होयां श्रुति मूलकी कल्पनाका प्रसंग होणेतें क्या ऐसो कोई श्रुति नहि जिस विषें नियम कहाहै होर श्रुतिकों मूल विषें कल्पना करणी चाहिये तां कल्पना दोषका प्रसंग होवेगा ॥ इसीकारणतें नही पढ़नकीया सामवेद जिसनें तिल पुरुषनें गायत्री आदक हि जपनें योग्यहै और जो नमो हमाय मोहमाय एह पठन करे घृत कियां आहुतियां देवे ऐसे कहाहै एभी नियम नहि जानणा क्या अवश्य करणे योग्य नहिहै किंतु महाव्याहृतियां करके ब्राह्मणक्षत्री वैश्यने तिलांका हवन करणे योग्यहै एह मनुने महा व्याहृतियांकरकेभी हवनका विधान कहणेतें ॥ इसविषें घृतकरके हवन और दूसरे स्थान विषें तिलां करके हवन इन दोनों

यत्तु गौतमेनोक्तम् रौरवयोधाजयेनित्यंप्रयुंजीतेति तदपि पवित्रादेवोक्तम् न पुनर्नियमाय तथासति श्रुत्यंतरमूलत्वकल्पनाप्रसंगात् अतोनधीतसामवेदेन गायत्र्यादिकमेवजप्तव्यम् ॥ यदपिनमोहमाय मोहमाय इत्यादिपठित्वा एताएवाज्याहुतय इत्युक्तं तदपि न नैयमिकं किंतु महाव्याहृतिभिर्होमास्तिलैःकार्योद्विजन्मनेति मनुनामहाव्याहृतिभिर्होमविधानात् ॥ तथाषड्विंशतिमतेप्युक्तम् ॥ जपहोमादियत्किंचित्कृच्छ्रोक्तंसंभवोनचेत् सर्वव्याहृतिभिःकुर्याद् गायत्र्याप्रणवेनचेति १ आदिग्रहणादुदकतर्पणादित्योपस्थानादेर्ग्रहणम् ॥ अतएववैशंपायनः॥स्नात्वोपतिष्ठेदादित्यंसौरर्ग्भिस्तुकृतांजलिरिति एवमन्येष्वपि पदार्थविरोधिषु विकल्प आश्रयणीयः ॥

पक्षोंतें जाणीदा है कि नियम नहि किंतु विकल्पहै ॥ तैसेंहि षड्विंशति मतविषेभी कहाहै ॥ जो कृच्छ्र व्रत विषे कहाहै जप होमादि तिसके करणेका संभव न होवे तां संपूर्ण व्याहृतियां करके करे अथवा गायत्रीकरके वा ओंकारकरके करे १ इस श्लोक विषे जो आदिग्रहण कीताहै तिसतें जलतर्पण और सूर्य्यके उपस्थानादिका ग्रहणहोताहै इसी कारणते वैशंपायन ऋषिका वचनहै स्नानकरणेते पीछे हथ जोडकरके सूर्य्य जीके मंत्रांकरके सूर्य्यका उपस्थान करे इति ॥ इसी प्रकार होर जो पदार्थ विरोधि हैं जैसे कहाहै व्याहृतियां करके वा गायत्री वा ओंकारकरके करे तिनां पदार्थ विरोधियां विषे विकल्पहै भावें जिस किस करके कीता होया आश्रय करणे योग्यहै

श्रौर जो नहि विरोधी तिनांविषे संपूर्ण करणे योग्य है शाखांतराधिकरण न्याय कर्के ॥
कर्मको संपूर्ण स्मृतियांकर्के प्रतीतहोणेतें ॥ न्यायनाम युक्तिकाहै तिसको दिखाते हैं न्यायइति
जो अपणी शाखाविषे नहि कहा सो दूसरी शाखासे लेलेणा श्रौर वो अपणी शाखाका विरो
धि नहि हो इत्यादिक कहाहूया जानणे योग्यहै ॥ जपकी संख्या विषे विशेष तिसी वैशंपा
यननें हि दिखायाहै ऋषभ मंत्र श्रौर विरजमंत्र श्रौर अघमर्षणमंत्र एनांको जपे अथवा गायत्री
जो पवित्रवेदांकी मातातिसकों जपे १ ॥ एकशत१००वा अठसौ८००अथवा अट्ठांते अधिक
सौ१०८वा एकहजार१०००जपकरे वा अधिककरे श्रौर उपांशुक्या मंत्रकों अप्रकट उच्चारणकरे
श्रौर मनकर्के पितरोंका श्रौर देवतोंको श्रौर मनुष्य जो सनकादि श्रौर भूतोंका तर्पणकरे तिसते
उपरंत शिरकर्के नमस्कारकरे ॥ २ ॥ एह जो कृच्छ्रादि व्रतहैं जद पापांके दूर करणे वास्ते अनुष्ठान

अविरोधिषुसमुच्चयः शाखान्तराधिकरणन्यायेन ॥ कर्मणःसर्वस्मृतिप्रत्य
यत्वात् ॥ न्यायस्तु यन्नाम्नातंस्वशाखायां पारक्यमविरोधियदित्या
द्युक्तोबोध्यः ॥ जपसंख्यायांचविशेषस्तेनैवदर्शितः ॥ ऋषभंविरजंचैवत
थाचैवाघमर्षणं गायत्रींवाजपेद्देवीं पवित्रांवेदमातरम् ॥ १ ॥ शतमष्टश
तंवापिसहस्रमथवापरं उपांशुमनसाचापितर्पयेत्पितृदेवताः ॥ मनुष्यांश्च
वभूतानि प्रणम्यशिरसाततइति ॥ २ ॥ एतानिच कृच्छ्रादिव्रतानि यदा
प्रायश्चित्तार्थमनुष्ठीयंते तदा केशादिवपनपूर्वकं परिगृहीतव्यानि। वपनाच्च
व्रतंचरेदिति गौत्तमस्मरणात् ॥ अभ्युदयार्थेतु नैववपनम्। वशिष्ठेनाप्यत्र
विशेषउक्तः। कृच्छ्राणांव्रतरूपाणां श्मश्रुकेशादिवापयेत् अक्षिरोमशिखा
वर्ज्जमिति कृच्छ्राणांव्रतरूपाणां व्रतरूपाणि वपनादीन्यंगानिवक्ष्यंत
इति ॥ शेषः ॥ अक्षिरोमेत्यादि कक्षोपस्थरोमोपलक्षणम् ॥ पर्षदुपदिष्टव्र
तग्रहणंमुंडनादिकंच व्रतानुष्ठानदिवसात् पूर्वेद्युःसायाह्निकार्यम् ॥

करणेहोणतां केशआदिकांके मुंडनको करवाकर ग्रहणकरणे योग्यहैं(वपनाच्चव्रतंचरेत्)इस गौत्त
मजीकेस्मरणतें ॥ श्रौर ऐश्वर्य आदिकी वृद्धिके निमित्त प्रायश्चित्तविषे मुंडन नहिकहा ॥ वशिष्ट
जीनेभी इस विषें विशेष कहाहै। कृच्छ्र जो व्रतरूप हैं तिनांके ग्रहण विषे दाडी श्रौर केश
आदिका मुंडन करे परंतु अक्षिरोम श्रौर शिखातें विना इति ॥ इसको स्पष्ट कर्तेहैं कृच्छ्रेति
कृच्छ्र जो व्रत रूपहैं तिनांके व्रतरूप जो मुंडन करवाणे योग्य जो अंगहैं सो कहैंगे इतना
इसजगा लगालेणा कि अक्षिरोम इत्यादि कहणकरके कच्छके श्रौर लिंगके रोमोंकाभी मुंडन
न करवाये ॥ इसमे श्रौर विशेषहै पर्षदिति पर्षद् क्या सभा कर्के उपदेश कीया जो व्रतका
ग्रहण श्रौर मुंडनादि व्रतके ग्रहण करण वाले दिनतें पहले दिन संध्या कालविषेकरणे योग्यहै

जैसे वशिष्टजी कहतेहै सर्वेति संपूर्ण पापांविषे संपूर्ण व्रतांके ग्रहणकों विधिपूर्वक कहताहां प्रायश्चित्तके करणकी इच्छाहोआहोयां ॥ १ ॥ दिनके अंतविषे नख और रोमादिकोंकों कटाकर स्नान करे और जो स्नान कहाहै सो इसप्रकार जानणा कि प्रथम मुखकी शुद्धि वास्ते दातन करे पीछे भस्मकर्के और गौके गोहे कर्के और मृत्तिका कर्के और जल कर्के और पंचगव्यादिक जो रचेहोये हैं तिनों कर्के स्नानकरे ॥ २ ॥ अभिप्राय कहतेहैं मलेति बाह्यदेहकी शुद्धि वास्ते देहकी मल दूर करणे योग्यहै और पंचगव्यकर्केयुक्त व्रत करे एह व्रतका विशेषणहै ३ ॥ ऐसे स्नानतें पीछे पंचगव्यको पीकर्के संध्याकालविषे नगरतें बाहर नक्षत्रांके दर्शनहोयां २ व्रत ग्रहणकरणे योग्यहै और पीछे आचमनकों करके मौनधारण करे अपने पापका अंतष्करण विषे ध्यानकरता होआ मनकों क्लेशदेणेवाला वडा जो शोकहै तिसकों संपूर्णता कर्के करे४ ॥

यथाहवसिष्ठः ॥ सर्वपापेषु सर्वेषांव्रतानांविधिपूर्वकम् ग्रहणंसंप्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्तेचिकीर्षिते ॥ १ ॥ दिनांतेनखरोमादीन्प्रवाप्यस्नानमाचरेत् । भस्मगोमयमृद्वारिपंचगव्यादिकल्पितैः ॥ २ ॥ मलापकर्षणंकार्य्यंवाह्य शौचोपसिद्धये दंतधावनपूर्वेणपंचगव्येनसंयुतम् ॥ ३ ॥व्रतंनिशामुखे ग्राह्यंवहिस्तारकदर्शने आचम्यांतःपरंमौनीध्यायन्दुष्कृतमात्मनः मनस्संतापनंतीव्रमुद्वहेच्छोकमंततइति ॥ ४ ॥ वहिरितिग्रामाद्वहिर्निष्क्रम्य । स्त्रियाअप्येवमेवपरिग्रहःकार्य्यः ॥ केशश्मश्रुलोमनखवपनंतुनास्ति चांद्रायणादिषु ॥ एतदेव स्त्रियाः ॥ श्मश्रुकेशवपनवर्जमिति वौधायनस्मरणात् ॥ एतदेवेति मलापकर्षणाद्येव नतु केशवपनादीत्यर्थः ॥ वपनादिष्वत्रहारितेनविशेषउक्तः॥ राजावाराजपुत्रोबाब्राह्मणोवावहुश्रुतः केशानां वपनंकृत्वाप्रायश्चित्तंसमाचरेत् १ ॥ केशानांरक्षणार्थंहिद्विगुणंव्रतमाचरेत्

अब स्त्रियोंके व्रत विषे कुछक विलक्षणता कहतेहां स्त्रियाइति स्त्रीनेंभी ऐसेहि व्रत ग्रहण करणे योग्यहै ॥ और चांद्रायणादि व्रत विषें केश और श्मश्रु और रोम और नख एनांका कटाणा नाहि कहा ॥ वचन कहतेहैं एतादिति एतदेव इस कहने कर्के एह जानणा क्या श्मश्रु केशादिके मुंडनतें विना जो व्रतविधि पुरुषोकों कहीहै सोई स्त्रीकों भी कराणी चाहिए एह वौधायनजीके कथनतें ॥ इसीका अर्थ स्पष्टकर्के दिखातेहैं एतदेवेति ॥ मुंडनादिकां विषे ईहां हारीतनें विशेष कहाहै ॥ राजेति राजा अथवा राजाका पुत्र राजपुत्र इस जगा और जातिकी स्त्री विषे राजासे उत्पन्न होआ जानणा अथवा ब्राह्मण विद्वान् एह सब केशांके मुंडनकों करवाके प्रायश्चित्तकों करें ॥ १ ॥ और केशांकी रक्षावास्ते दूणे व्रतकों करें ॥ एह विचार पिच्छे भी होचुका है प्रसंगतें फेर इस जगा किहा है

दूणे व्रतके कीतयां होयां दक्षिणाभी दूणी कहीहै ॥ २ ॥ राजा आदिक जेकर प्रायश्चित्त करणें कों उद्यतहोवे तां मुंडनकों करवा कर प्रायश्चित्तकों करे अन्यथा न करे ॥ एह मुंडनादि विधि महापातकआदि दोषके होयांहोयां राजा आदिको विषे कहीहै ॥ होरणां दोषां विषे पंडित और ब्राह्मण और राजा और स्त्री एनांकों केशांका मुंडन नहि कहा और जेकर एह विद्वान् विप्र आदिक महापापीहोवें और गोहत्यारा होवे और ब्रह्मचारीका वीर्य्य स्खलित होवे तिनकों प्रायश्चित्तके करण विषे मुंडन कहाहै ॥ १ ॥ असे मनुजीके स्मरणतें ॥ (प्रश्न) नन्विति गौकीहत्या करणे वाला उत्तम जो प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत तिसकों करे और पहले सहित शिखाके मुंडनकों करे और त्र्यकाल स्नान करे इत्यादिक पराशर आदिकों के वचनां विषे सहित शिखाके मुंडन कहाहै ॥ १ ॥ और दूसरे स्थान विषे कहाहै कि सदा

द्विगुणेतुव्रतेचीर्णेदक्षिणाद्विगुणाभवेदिति ॥ २ ॥ राजादिर्यदाप्रायश्चित्तंकर्त्तुमुद्यतोभवेत्तदा वपनंकृत्वैवसमाचरेत् नान्यथेत्यर्थः ॥ एतच्च महापातकादिदोषविशेषाभिप्रायेण द्रष्टव्यम् ॥ विद्वद्विप्रनृपस्त्रीणांनेष्यतेकेशवापनम् ॥ ऋतेमहापातकिनोगोहंतुश्चावकीर्णिनइतिमनुस्मरणात् ॥ ननु)प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंगोघातीव्रतमुत्तमम् सशिखंवपनंकुर्य्यात्त्रिसंध्यमवगाहनमित्यादिपराशरादिवचने सशिखवपनं विहितम्॥ सदापवीतिनाभाव्यं सदाबद्धशिखेनहीत्यादिना निषिद्धंतदिति चेदेवंनिर्णयः ॥ अस्यनैमित्तिकत्वेन वलवत्वान्नविरोधः संभाव्यः। अत्रविशेषोद्वितीयप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥ जावालेनाप्यत्रविशेषउक्तः ॥ आरंभेसर्वकृच्छ्राणांसमाप्तौच विशेषतः॥ आज्येनैवहिशालाग्नौजुहुयाद्व्याहृतीःपृथक् ॥ श्राद्धंकुर्य्याद्व्रतांतेतुगोगोहिरण्यादिदक्षिणाइति ॥ श्राद्धमत्रवैष्णवंवोध्यम् ॥

हि यज्ञोपवीत धारे सदाहि शिखाकों बन्न कर्के रहे इस जगा मुंडनका निषेध कहाहै कैसे करणा चाहिए (उत्तर) इस विषे असे निर्णय है ॥ इसपूर्वोक्त पराशरादि वचनकों नैमित्तिक होणेकर्के वल वाला होणेते विरोधकी संभावना नहि करणी अर्थात् जिसमे सदा शिखा धारणी कहीहै सो नित्यहैं और नित्यसे नैमित्तिक वलवान है ॥ इसविषे विशेष दूसरे प्रकरण विषे देषणे योग्यहै ॥ जावालऋषिनेंभी इसविषे विशेष कहाहै ॥ संपूर्ण कृच्छ्रव्रतांके आरंभविषे और समाप्ति विषे शालाग्निविषें क्या जिस अग्निमे सदाहि हवनहोतारहताहै तिसमे अथवा शाल वृक्षकियां समिधांकर्के जो अग्नि तिसविषे भिन्नभिन्नव्याहृतीनूं पठनकरके घृतकर्के हवनकरे। श्राद्धमिति व्रतके अंतविषे श्राद्धकों करे और गौ सुवर्ण आदिक दक्षिणा देवे और श्राद्ध ईहां वैष्णव जानणा

विधा योंत ॥ विष्णु निमित्त श्राद्धकों विधान कर्के प्रायश्चित्त करे इस वाक्य कहणे करके वैष्णव श्राद्धको हि व्रत के अंग कर्के विधान होणेंतें ॥ यमनेभी इसविषें विशेष कहाहै पश्चात्ताप कर्के पापांतें हटरहणा और स्नान करणा इह व्रतके अंग कहेहैं और निमित्तिक जो पाप हैं तिनां संपूर्णाकों कथन करदयां रहणाएभी अंगहै इति ॥ १ ॥ अब निषेधको कहतेहां अंगाविषें बुटनामलणा और शिरधोणा और तांबूल भक्षण करणा और सुगंधि वाले तिलक आदिक जो हे चपुनःहारवल क्या पुष्टिके देणे वाली वस्तु और प्रीतिके देणेवालि वस्तु इस संपूर्णको व्रत विषे स्थित जो पुरुषहै सो त्यागे । १ । इसतें आदलेके जो कर्त्तव्यताक्या कर्म सो और हिस्मृतितेंदेखणे योग्यहै ॥ निमित्तिकानामिति इसका अर्थ प्रायश्चित्तके निमित्त जो पापतिनांको दूर करणे वास्ते उच्चारण करता रहे एहहै इति इसप्रकार इसविधि कर्के व्रतको ग्रहण करके अवश्य

विधायवैष्णवंश्राद्धमित्यादिना वैष्णवश्राद्धस्यैव व्रतांगत्वेन विधानात्। यमेनाप्यत्रविशेषउक्तः। पश्चात्तापान्निवृत्तिश्चस्नानंचांगतयोदितं निमित्तिकानां सर्वेषांतथाचैवानुकीर्त्तनमिति १ तथा गात्राभ्यंगंशिरोभ्यंगंतांबूलमनुलेपनम् व्रतस्थोवर्जयेत्सर्वंयच्चान्यद्बलरागकृदिति १ ॥ एवमादिकर्त्तव्यताजातंस्मृत्यंतराद्द्रष्टव्यम्। निमित्तिकानांप्रायश्चित्तनिमितानांपापानामित्यर्थः एवमनेनविधिनाव्रतंगृहीत्वावश्यंपरिसमापनीयम् ॥ अन्यथातु प्रत्यवायः पूर्वंव्रतंगृहीत्वातुनाचरेत्काममोहितः जीवन्भवतिचांडालोमृतः श्वाचैवजायते इति छागलेयस्मरणात् ॥ प्रारब्धेप्रायश्चित्तादिव्रतेऽसमाप्तेपिमृतेफलमाह यमः प्रायश्चित्तमयूखे ॥ प्रायश्चित्तेव्यवसितकर्त्तायदिविपद्यते शुद्धस्तदहरेवासाविहलोकेपरत्रचेति ॥ १ ॥ अंगिराअपि ॥ यदर्थमाचरेद्धर्ममप्राप्यम्रियतेयदि ॥ सतत्पुण्यफलंप्रेत्यप्राप्नुयान्मनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ त्यक्तस्यपुनर्ग्रहणार्थंप्रायश्चित्तम् ॥

समाप्त करणे याग्यहै नकरे तांदोषहै ॥ पूर्वमिति ॥ पहले व्रतको ग्रहणकर्के फेर अपणी इच्छातें हि न ग्रहण करे क्या व्रतकों न करे तां जीवता हि चांडालहै और मृतहोकर्के कुत्तेके जन्मको प्राप्तहोता है ॥ १ ॥ एह छागलेय ऋषिके स्मरणतें कहाहै ॥ प्रारंभ जिसका कीता ऐसा जो प्रायश्चित्तादि व्रत तिसकें असमाप्त होयां होयां मृत्युकों प्राप्तहोवे तिसके फलको धर्मराज प्रायश्चित्त मयूष विषें कहताहै ॥ प्रायश्चित्तके करदयां होयां करणे वाला जेकर मृत होवे तां तिस दिनविषेंहि शुद्धहोजाताहै इस लोकविषे और परलोक विषेभी १ ॥ अब अंगिरस ऋषिका बचनहै जिसवास्ते धर्मको कर्ता है तिस धर्मके पूर्ण करणेते पहले मृत्युकों प्राप्त होवे सो पुरुष परलोक विषें तिस धर्मके संपूर्ण फलको प्राप्त होताहै एहमनु कहता भया ॥ १ ॥ और जेकर व्रतकों ग्रहण कर्के त्यागया जो व्रत तिसके फेर ग्रहण वास्ते प्रायश्चित्त है ॥

सोई प्रायश्चित वायुपुराणविषे कहाहै लोभादिति लोभतें वा मोहतें वा प्रमादतें व्रतका भंग होवे क्या व्रत जेकर पूर्ण न होवे तां त्रय उपवास करे अथवा केशांका मुंडन करे इस प्राय श्चित्तको करके फेर व्रतकों धारणकरे तां शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब कृच्छ्र व्रतां कर्केदूर होणे वाले और न दूर होणे वाले पापां कों देवल जी कहतेहैं ब्रह्मेति ब्राह्मणके मारणे वाला और मदिराके पीणे वाला और सुवर्णके चुराणेवाला और गुरांकी स्त्रीविषे गमन करणे वाला और इनां चारोंका संयोगी एह पंच महापापी कहेहैं इन पांचोका प्रायश्चित्त मरण है अत जिसके असा कहाहै और इनां के दूर करणे विषे कृच्छ्रादिव्रत नहि कहे ॥ १ ॥ और

वायवीये लोभान्मोहात्प्रमादाद्वाव्रतभंगोभवेद्यदि उपवासत्रयंकुर्यात्कुर्या द्वाकेशमुंडनम् प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरेवव्रतीभवेत् १ कृच्छ्राणांसाध्या साध्यानिपापान्याह देवलः ॥ ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वंगनागमः तत्सं योगीचपंचैते महापातकिनस्त्विमे १ एतेषांपंचानां मरणान्तं प्रायश्चित्तं न कृच्छ्रादिकम् ॥ गोवधोगुर्वधिक्षेपोभृतकाध्यापनादिकम् कृच्छ्रचांद्रायणा द्यैस्तुपरिशुद्धंप्रकीर्त्तितम् २ तिलानांधान्यराशीनांविक्रयस्त्वन्यवस्तुनः एतत्संकरीकरणं कृच्छ्रसाध्यंवदंतिहि ॥ ३ ॥ कन्यापहरणंचैवधेनुभूहरणा दिकम् मलिनीकरणंत्वेतत्कृच्छ्रसाध्यंप्रयत्नतः ॥ ४ ॥ चाडालीगमनादी नि अपात्रीकरणानिच ॥ कृच्छ्रैर्विशोधनीयानिविप्रैर्दोषपराङ्मुखैः ५ ॥

जो पुरुष गौका वध करणे वाला और गुरोंका निरादर करणे वाला और मजूरी लेके विद्या र्थियांको पढाणे वाला है इनकी शुद्धि कृच्छ्रचांद्रायणादिव्रतों कर्के कहीहै ॥ २ ॥ और तिलोंके वेचणे वाला और धान्यराशिके क्या मुंजीआदिके वेचणेवाला और रस आदिके वेचणे वाला है इनांके जो पापहै सो संकरीकरण नाम कर्के कहाहै तिसकी कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्धि कहीहै ॥ ३ ॥ कन्याका हरणा और गौ और पृथ्वीआदि का हरणा एह मलिनी करण पाप हैं इनांको भी कृच्छ्रव्रतकर्के वडे यत्नसें शुद्धि कहीहै ॥ ४ ॥ चांडाली गमनआदिक जो अपात्री करण पाप हैं सो दोषतें रहित जो ब्राह्मण तिनांने कृच्छ्र व्रतांकर्के शुद्ध करणे योग्यहैं ॥ ५ ॥

दुरिति और निंदित अन्न क्या मसर आदिका भक्षण करणा और दुष्टपुरुषके अन्नका भक्षणकरणा और जिस अन्नविषे ऐसी शंकाहोवे कि एह अन्न पातकी पुरुषकर्के छोतादाहै तिसका भक्षण करणा एह जाति सें भ्रष्ट करणे वाला वडा पाप कहाहै एह भी कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ६ ॥ और पंचक आदि दोष कर्के जो मृत होवे तिसकी दुर्गतिके दूर करणे वास्ते एह प्रकीर्ण पाप पुत्रोंने कृच्छ्र व्रत कर्के दूर करणे योग्यहै ॥ और गर्भाधानादिकके अभाव होयां होयां व्रात्यतादि दोष होताहै तिसके दूरकरणे वास्ते कृच्छ्र व्रत करण योग्यहै ॥ और तुला आदिक प्रतिग्रहके लेणे वाले जो पुरुष हैं तिनां को ब्रह्मराक्षस जो गति है तिसका कृच्छ्र व्रतां कर्के किसे स्थान विषे निवारण कहा है ॥ पूर्वोक्तफलासें औरभी संपूर्ण कृच्छ्रोंके फल हैं सोई व्यासजी कहतेहैं श्रीति जो पुरुष लक्ष्मीकी इच्छा वाला और देहकी

दुरन्नभोजनंचैवदुष्टभक्षणमेवच दुष्टशंकादिकंचैवजातिभ्रंशकरंमहत् ६ ॥ एतदपिकृच्छ्रसाध्यम् ॥ दुर्मरणादिकंप्रकीर्णं कृच्छ्रसाध्यम् ॥ गर्भाधानादिकर्मणां तत्कालातिक्रमे व्रात्यतादिकं कृच्छ्रैः साध्यम् ॥ तुलादिप्रतिग्रहीतॄणां ब्रह्मराक्षसत्वस्य कृच्छ्रैः कुत्रचिन्निवारणम् ॥ सर्वेषां कृच्छ्राणां फलार्थत्वमप्याह । व्यासः । श्रीकामःपुष्टिकामश्चस्वर्गकामस्तथैवच देवताराधनपरस्तथाकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ १ ॥ रसायनानिमंत्राश्चतथाचैवौषधानिच तस्यसर्वाणिसिध्यंतियोनरःकृच्छ्रकृद्भवेत् ॥ २ ॥ वैदिकानिचसर्वाणि यानिकाम्यानिकानिचित् सिद्ध्यंतिसर्वदानानिकृच्छ्रकर्त्तुर्नसंशयइति ३ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ कृच्छ्रकृद्धर्मकामस्तुमहतींश्रियमाप्नुयात् तथागुरुक्रतुफलमाप्नोतिसुसमाहितः ॥ १ ॥ अत्रमिताक्षरा ॥ यस्त्वभ्युदयकामःप्राजापत्यादिकृच्छ्राननुतिष्ठति स महतीं राज्यादिलक्षणांश्रियमनुभवति ॥

पुष्टिकी कामनावाला और स्वर्गकी कामनावाला और तैसे जो देवताके पूजन विषे युक्त पुरुषहै सो कृच्छ्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ और रसायन सब और मंत्र और ओषधीयां एह सब तिसके सिद्धहोतेहैं जो कृच्छ्र व्रतकों कर्ताहै ॥ २ ॥ और वेदकर्के कथनकीये जो संपूर्ण कर्म और जो काम्य कर्म और संपूर्णदान एह सब कृच्छ्र व्रतके करणे वालेकों सिद्धहोतेहैं इसविषे संशय नहि है ॥ ३ ॥ याज्ञवल्क्यजीकावचनहै कृच्छ्रेति धर्मकी इच्छा वाला जो पुरुष है सो समाधानहुआ २ कृच्छ्र व्रतकों करे तो वडीश्रीकों प्राप्त होताहै तैसें वडे यज्ञके फलकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ इस विषे मिताक्षराका वचन है जो पुरुष ऐश्वर्यकी इच्छाकर्के प्राजापत्य आदिकृच्छ्रोंकों करताहै सो महाराज्य आदि लक्षण वाली लक्ष्मीको प्राप्त होताहै ॥

यथेति जैसेवडे जो यज्ञहैं राजसूय आदितिनांके करणेवाला तिनायज्ञांका जो फलहै स्वाराज्य आदि क्या स्वर्गराज्यादिलक्षण महाफल तिसको प्राप्तहोताहै तैसे एह पुरुषभी इंद्रियांकों रोक के संपूर्ण अंगाके क्या विधिके साथ कृच्छ्र व्रतकों करताहोया राज्य आदि लक्षण महाफलकों प्राप्त होताहै ❀ अथेति इसते उपरंत प्राजापत्य कृच्छ्र व्रतके प्रत्याम्नाय कहतेहां प्रत्याम्नाय क्या बदलाजैसे प्राजापत्य व्रतकी सामर्थ्य न होवे तिस प्राजापत्य फलकी प्राप्ति वास्ते बदला धेनुदानादि कहाहै तिस विषे देवलजीकहतेहैं ॥ धेनुरिति एक धेनु क्या नवी प्रसूतहुई गौ और महानदी क्या जो समुद्रमें गमन करणें वाला है अथवा गंगाआदि तिस विषे स्नान और बारां ब्राह्मणांका पूजन और संहिताका सारा पाठ करणा और दो सउ २०० प्राणायाम

यथा गुरुक्रतूनां राजसूयादीनां कर्ता तत्फलं स्वाराज्यादिलक्षणं महत्फलं लभते तथायमपि समाहितः सकलांगकलापमविकलमनुतिष्ठन्निति ॥ अथ प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायाः ❀ तत्राह देवलः धेनुर्महानदीस्नानंद्वाद शब्राह्मणार्चनम् संहितामात्रपठनंद्विशतंवायुरोधनम् ॥ १ ॥ तिलहोमस हस्रंस्यादयुतंजपउच्यतेइति ॥ द्विशतंवायुरोधनंप्राणायामशतद्वयम् ॥ लिंगपुराणे ईश्वरः ॥ प्राजापत्येतुगौरिकाद्वादशब्राह्मणार्चनम् समुद्रगन दीस्नानंसंहितापाठउच्यते प्राणायामश्चद्विशतमयुतंजपउच्यते ॥ १ ॥ पराशरः ॥ अकामतःकृतंपापंवेदाभ्यासेनशुध्यति कामतस्तुकृतेपापेप्रा जापत्यंसमाचरेत् ॥ १ ॥

गायत्री मंत्र कर्के करणा और हजार आहुति तिलांकी व्याहृति कर्के और दशहजार १०००० गायत्रीका जप करणा एह प्राजापत्यके फलदेणवालेहैं ॥ १ ॥ इसीकों प्रत्याम्नाय कहतेहैं। अब लिंगपुराणविषे शिवांका वचनहै प्रेति प्राजापत्य कृच्छ्रविषे एक गौ दान करणी और बारांब्राह्मणांकी पूजा करणी और समुद्र विषे प्राप्त होणें वाली नदी विषे स्नान करणा और संहिताका सारा पाठ करणा और दो सउ २०० प्राणायाम करणा गायत्री मंत्र कर्के और दश हजार १०००० जप करणा गायत्रीका एह प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत विषे प्रत्याम्नायहै १ ॥ अब पराशरजी कहतेहैं अकामतइति इच्छातें विना कीया जो पाप सो संहिताके पाठ करणे करके दूरहोताहै और जो इच्छासें कीयाहै पाप सो प्राजापत्य व्रतकर्के दूर होताहै ॥ १ ॥

अब इसके प्रत्याम्नायकों क्या बदली करणेकी विधिकों देवलऋषि कहताहै विप्रइति ब्राह्मण मध्याह्नतों पहलेनदी विषे स्नानकरे वा होरी उत्तम जलाशयविषे करे अथवा और किसे जल विषे करे पीछे शुद्ध वस्त्रकों धारके त्रिपुंड्रक तिलककोंकरे फेर नित्यकर्म जो संध्या वंदनादि तिसकों समाप्तकरे ॥ १ ॥ फेर देवताकी उपासना आदि कर्म कों करे अर्थात् ध्यान करे और उपासनातें पीछे देवताका पूजन हच्छी तरहसें करे तिसतें उपरंत चार ब्राह्मणांकेसाथ स्वस्त्ययनको वाचे २ ॥ और संकल्प इसतरह करे कि जिसदेश और काल विषे प्रत्याम्नायको करताहै तिस देश कालका उच्चारण करके अपणे नामका भी उच्चारण करे कि जो पाप मैनें इच्छातें विना कीताहै तिसकी शुद्धि वास्ते ॥ ३ ॥ मैं प्राजापत्य कृच्छ्रके करणे विषे सामर्थ्यतें रहित हां

प्रत्याम्नायसमाचरणमाह देवलः ॥ विप्रःस्नात्वातुपूर्वाह्णेनद्यांवान्यत्रवाजले वस्त्रादिपुंड्रकंकृत्वानित्यकर्मसमापयेत् ॥ १ ॥ औपासनादिकंकृत्वा ततोदेवार्चनंपरम् चतुर्भिर्ब्राह्मणैःसाकं पुण्याहंवाचयेत्ततः ॥ २ ॥ देशकालौचसंकीर्त्यस्वनामाप्यनुसंवदेत् एतत्पापविशुद्ध्यर्थंमयाकृतमकामतः ॥ ३ ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यसाक्षात्कर्तुमशक्नुवन् प्रत्याम्नायमहंकुर्व्यां भवंतः क्षंतुमर्हथ ॥ ४ ॥ इत्युक्त्वागांसवत्सांचसुशीलांचपयस्विनीं पूजयित्वाविधानेनब्राह्मणंचयथार्थतः ॥ ५ ॥हेहेगौःसर्वलोकानांत्वंमातापरिकीर्त्तिता अतस्त्वांपूजयिष्यामि सर्वपापापनुत्तये ॥ ६ ॥ इतिसर्वप्रत्याम्नायकृच्छ्रगोदानेषुपूजामंत्रः ॥ वेदाध्यायिन्सदापूज्योदानेष्वेतेषुपावन अतस्त्वांपूजयिष्यामिसर्वपापापनुत्तये । १ । इतिविप्रपूजामंत्रः ।

इस कारणतें प्राजापत्यके बदलेकों कर्त्ताहां हे ऋषियांहो तुसीं क्षमा करो ॥ ४ ॥ ऐसे कहके सहित बच्छेके जो गौ है चंगे स्वभाव वाली और दुग्ध देणे वाली तिसकों विधि करके तैसे पूजे फेर ब्राह्मण के ताईं देवे ॥ ५ ॥ अब पूजनके मंत्र कहतेहां हेइति हे गौ तूं संपूर्ण लोकांकी माता कही हैं इस कारणतें संपूर्ण पापांके दूरकरणे वास्ते तेरेकों मैं पूजताहां ॥ ६ ॥ एह मंत्र संपूर्ण प्रत्याम्नाय और कृच्छ्र व्रत और गोदान विषे गौकी पूजा विषे पढनेयोग्यहै अब उपदेश करणे वाले ब्राह्मणकी प्रार्थनाकों कहतेहैं वेदेति हे वेदके पढने विषे युक्त हे पवित्र एनां दानां विषे तूं सदाहि पूजने योग्यहैं इसकारणतें संपूर्ण पापांके दूरकरणे वास्ते तेरेकों मैं पूजताहां एह ब्राह्मण की पूजा का मंत्र कहाहै ॥ १ ॥

गवामिति गौयांके अंगां विषे चौदां भुवन स्थित हैं जिसकारणों तिस कारण तें मेरेकों कल्याण होवे और इसकारण तें मेरे ताईं शांतिकों देवो ॥ २ ॥ यज्ञेति और जो यज्ञका साधन रूप और जगत् के पाप दूर करणे वाली है तांते इस गौ करके मेरे उपर विश्वरूपके धारणे वाला देवता प्रसन्नहोवे ॥ ३ ॥ एह मंत्र संपूर्ण गोदान विषे और प्रत्याम्नाय गोदानों विषे पढने योग्यहैं ॥ अब और कहतेहैं तत्रेति तिसविषेभी दक्षिणादेणेयोग्यहै जेसें धनहोवे तिसके अनुसारतें करे इस प्रकार प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नायकों भलो प्रकार करणे करके प्राजापत्यका जो संपूर्ण फलहै तिसकों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ और प्राजापत्यकृच्छ्रके प्रत्याम्नाय क्या बदलेकर्के क ही जो गौहै तिसके अभाव विषे तिसके मुल्लकों देवल ऋषि कहता है गवामिति गौयांके

गवामंगेषुतिष्ठंतिभुवनानिचतुर्दश यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादतःशांतिंप्रय च्छमे ॥ २ ॥ यज्ञसाधनभूतायाविश्वस्याघप्रणाशिनी विश्वरूपधरोदेवः प्रीयतामनयागवा ॥ ३ ॥ इतिसर्वगोदाने प्रत्याम्नायगोदानेषुचमंत्रौ ॥ तत्रापिदक्षिणादेयायथावित्तानुसारतः एवंकृत्वानरःसम्यक् प्रत्याम्नायम नुत्तमम् । संपूर्णफलमाप्नोतिप्राजापत्यस्यकृच्छ्रतः । १ । प्राजापत्यकृच्छ्रप्र त्याम्नायत्वेन गोरभावे तन्मूल्यमाह देवलः ॥ गवामभावेनिष्कंस्यात्तद र्द्धपादमेववा दरिद्रःकुरुतेपादंधनिकः पूर्णमाचरेत् अन्यथातत्फलंना स्तिप्राजापत्यंनसिध्यति ॥ १ ॥ निष्कशब्दोद्विवराहस्तदर्द्धमेकवराह पक्षोमध्यः वराहार्द्धपक्षः कनीयान् तत्त्रयमप्यंगीकृतमस्माभिः ॥

अभाव विषे क्या गौ न होवे तिस एक गौका मुल्ल एक निष्क देवे वा निष्कका अर्द्ध देवे वा तिसका अर्द्ध पाद अर्थात् चौथा हिस्सा देवे परंतु धनतें रहित जो पुरुषहै सो निष्कका चौथा हिस्सा देवे और धनवाला होवे तां संपूर्ण निष्कदेवे जेकर ऐसें न करे तिसको फल नहि होता और प्राजापत्यभी सिद्ध नहि होता ॥ १ ॥ और इस जगा निष्क नाम दो वराहका है और एक वराहका नाम जो निष्कहै सो मध्यम पक्ष कहाहै और वराहका अर्द्ध जो निष्क कहाहै सो कनीयान् पक्ष है क्या लघुपक्षहै असांनें त्रयहि पक्ष अंगी कार कीतेहैं इसमें शक्ति के अनुसार व्यवस्था जानणो और वराह शब्दका अर्थ मान परिभाषा सें जानणा ॥

सोई कहताहै मार्कंडेय ऋषि इति प्रभुआंको अर्थात् जो धन करके युक्त हैं तिनांकों निष्क सुवर्णका दान करणे योग्यहै एह उत्तम पक्ष कहाहै निष्कका अर्द्ध जो एक वराह रूप है सो सामर्थ्य वालेकों नहि क्योंकि उत्तम पुरुषको मध्यम दानका फल नहि होता ॥ १ ॥ मध्यमेति ॥ मध्यम जो पुरुष हैं तिनांकों सर्वदा काल मध्यम पक्ष निष्कका अर्द्ध वराह परिमाण दान करणा श्रेष्ठहै तां मध्यम पुरुष मध्यम पक्षकों करे उत्तम पक्षकों त्यागके जेकर मध्यम पक्षकों करे तिसको भी फल नहि होता और इस करके उत्तम जो धनि पुरुष है सो मध्यम जो वराह परिमाण तिसका दान न करे ॥ २ ॥ और कनीयान् जो वराहका अर्द्धहै सो पक्ष निर्धन

तदाह मार्कंडेयः ॥ प्रभूणां पूर्वपक्षः स्यादुत्तमः परिकीर्त्तितः ॥ मध्यमाचरणंनास्तिप्रभूणांतत्फलंनवा ॥ १ ॥ मध्यमानांवराहःस्यात्पक्षः सर्वत्रशोभनः ॥ उत्तमंयःपरित्यज्यमध्यमंचेदुपाश्रितः ॥ नदानफलमस्यास्तिनोत्तमोमध्यमंचरेत् ॥ २ ॥ कनीयांस्तुवराहार्द्धमुत्तमंसंप्रकीर्त्तितं तस्यमध्यमंनास्तिनतत्कृच्छ्रफलंलभेत् ॥ ३ ॥ आकिंचनानांसर्वेषांधरणंगौरुदाहृता अतोहीनंनकर्त्तव्यंगोमूल्येष्विहसर्वदा एवंकुर्युर्हितदानं चोत्तमाधममध्यमाः ॥ ४ ॥ किंचिद्धनाढ्योपि कनीयांसंकुर्य्यात् ॥ आकिंचनस्य कनीयान्पक्षएवोत्तमः ॥

को उत्तम कहाहै निर्धनको मध्यम पक्ष नहि कहा जेकर करे तिसको कृच्छ्रका फल नहि होता अथवा जिसकों उत्तम पक्ष किहा है तिसने मध्यम नहि करणा एह अर्थ है ॥ ३ ॥ आकिंचेति ॥ निर्धन जो सबहैं तिनांकों धरण परिमाण सुवर्णका दान गोदान कहा है इस कारणते गौयांके मुल्लविषे थोड़ा दान न करे ॥ ४ ॥ इसप्रकार अपने २ अधिकारकरके उत्तम और मध्यम और अधम पुरुष दानको करे एहि शास्त्रकी आज्ञा है एहि अर्थ स्पष्ट करके किहा है ॥ कुछक धनकरके युक्त जो पुरुष है सोभी अल्पदानकों करे और निर्धन पुरुष उत्तम दानकों न करे तिसको कनीयान् पक्ष हि उत्तम है ॥

अतइति इस कारणतें अपणी सामर्थ्य कर्के पुरुष प्राजापत्यकें प्रत्याम्नायकों करे जेकर सामर्थ्य
कों लंघ कर्के करे तां तिसकों फल नहि होता ॥ एवमिति असे महापापांविषे भी कयाहै कि
महापापके करणे वाला पुरुष वारां वर्षके व्रतकों करे कि वारां दिनां कर्के साध्य जो प्राजा
पत्य व्रत सो त्रय सौ सठ ३६० करणे योग्यहैं तदिति और जेकर तिनां व्रतांके करणेविषे
सामर्थ्य न होवे तां त्रय सौ ३६० सहित वछयांके गोयां देवे ॥ और गोयांका भी अभाव होवे
तां त्रय सौ सठ ३६० मोहर देणे योग्यहै ॥ तैसे हारीस्मृतिका वाक्यहै प्राजापत्यव्रतके करणे
विषे सामर्थ्य न होवे तां बुद्धिमान् पुरुष प्रसूत होई जो गौ तिसका दान करे और गौ दानकी
भी सामर्थ्य न होवे तां तिसके तुल्य मुछ्लोंदेवे इसमे संशयनहि है ॥ १ ॥ मुछकी व्यवस्था करतेहैं

अतः स्वशक्तिपुरःसरतया प्रत्याम्नायं कुर्यादन्यथा निष्फलत्वमवाप्नोती
त्यर्थः ॥ एवंमहापातकेऽपि द्वादशवार्षिकव्रतस्य द्वादश दिनसाध्यतया
प्राजापत्यानि ॥ ३६० ॥ पष्ट्यधिकशतत्रयं कल्पयित्वा कार्याणि ॥ तद
शक्तौच तावत्योवा धेनवोदातव्याः । तदसंभवेनिष्काणांपष्ट्यधिकशतत्रयं
दातव्यम् ॥ तथास्मृत्यंतरम् ॥ प्राजापत्यक्रियाऽशक्तौधेनुंदद्याद्विचक्षणः
धेनोरभावेदातव्यंमूल्यंतुल्यमसंशयम् १ निष्कंवा तदर्द्धं पादं वा शक्त्यपे
क्षयादातव्यम् ॥ गवामभावेनिष्कंस्यात्तदर्द्धंपादमेवचेतिस्मरणात् ॥ मूल्य
दानस्याप्यशक्तौ तावंतोवोपवासाःकर्त्तव्याः ॥ कृच्छ्रउपवासोऽहोरात्र
मितिमहार्णवे

निष्कमिति अपणी सामर्थ्यकरके निष्कदानकरे वा तिसका अर्द्धदान करे वा तिसका चौथा हि
स्सादान करे ॥ गवामिति गौयांके दानकी सामर्थ्य न होवे तां निष्कका दान करे वा अर्द्धाकरे
वा चौथा हिस्सा करे इसवाकरतें ॥ और मुछदेणेकीभी समर्थ्य न होवे तां तिसपापीनों जितनें
कृच्छ्र व्रत करणें योग्यहैं तिस संख्या कर्के उपवास व्रतांकों करवावे परंतु इसमे ऐसा अभिप्रा
यहै कि निरंतर उपवास नहि होसके एक उपवास कर्के दूसरे दिन भोजन करे और फेर उप
वास करे इस रीतिसे जो दिन रात्र उपवास व्रत करणाहै तिसका नाम कृच्छ्रहै एह महार्णव
विषे कहाहै ।

तत्रेति तिस त्रय सौ सठ ३६० उपवास व्रत विषे भी जो सामर्थ्यतें रहितहै तिस पुरुषनें छत्ती लक्ष ३६०००० गिणती करके गायत्रीका जप करणे योग्यहै एह प्रत्याम्नाय कहाहै इसमें वचन कहतेहैं कृच्छ्रइति कृच्छ्रव्रत और गायत्रीका दश हजार १०००० जप और उपवास व्रत और ब्राह्मणके तांइ प्रसूत होईहोई गौका दान देणा एह चारें सम हैं इनां उपायां विषे पापके दूर करणे वास्तेकिसे उपायकों करे इस पराशरजीके वचनतें १ ॥ फेर जो चतुर्विंशतिके मत विषे कहाहै जो पुरुष गायत्रीका एक कोड जप१०००००० कर्ताहै सो ब्रह्महत्या पापतें रहित क्या शुद्धिकों प्राप्तहोताहै और अस्सी लक्ष ८००००० गायत्रीके जपकों कर्ताहै सो पुरुष मदिरा पीणेका जो पापहै तिसतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और सत्तर लक्ष७०००००जो गायत्रीका जपहै सो सुवर्णके चुराणे वालेकों शुद्ध कर्ताहै और गुरुकी स्त्री साथ जो गमन

तत्राप्यशक्तौगायत्रीजपः षट्त्रिंशल्लक्षसंख्याकःकार्य्यः ॥ कृच्छ्रोयुतं तुगायत्र्याउपवासस्तथैवच ॥ धेनुप्रदानंविप्रायसममेतच्चतुष्टयमिति पराशरस्मरणात् । यत्तुचतुर्विंशतिमतेभिहितम् ॥ गायत्र्यास्तुजपन्कोटिं ब्रह्महत्यांव्यपोहति लक्षाशीतिंजपेद्यस्तुसुरापानाद्विमुच्यते ॥ १ ॥ पुनातिहेमहर्त्तारंगायत्र्यालक्षसप्ततिः गायत्र्याःषष्टिकैर्लक्षैर्मुच्यतेगुरुतल्पगइति २ ।तद्द्वादशवार्षिकतुल्यविधानतयोक्तं न पुनरुक्तविषयमिति न विरोधः।कृच्छ्रादेऽयुतंचैवप्राणायामशतद्वयम् ॥ तिलहोमसहस्रंतुवेदपारायणंतथेत्यादयः प्रत्याम्नायाश्चतुर्विंशति मन्वादिशास्त्रेऽभिहिताः षष्ठ्यधिकशतत्रयगुणितामहापातकेषु बोद्धव्याः ॥

न करणे वालाहै सो पुरुष गायत्रीके सठ लक्ष ६०००००जपकर्के शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ एह वाक्य वारां वर्षका जो व्रतहै तिसके तुल्य फलकों प्रतिपादन कर्ताहै प्राजापत्यकी प्रत्याम्नाय विधि विषे नहि जानणा तां कहा जो विषय प्रत्याम्नाय तिसतें भिन्न होणेंते एह कोई विरोधी वाक्य नहि है ॥ और वाक्य कहतेहैं कृच्छ्रइति कृच्छ्र व्रत और देवी गायत्रीका दश हजार १००००जप और दो सौ २००प्राणायाम गायत्री कर्के और एक हजार १०००तिलांका हवन मृत्युंजय मंत्र कर्के वा व्याहृति कर्के और सारी संहिताका पाठ एह कृच्छ्र व्रतके प्रत्याम्नाय क्या एक एकके अभाव विषे दूसरा दूसरा करणा ॥ सो चतुर्विंशति और मनु आदि कर्के कथन कीते होए एक सौ सठ १६० संख्या कर्के महापातकपापों विषे जानने योग्यहैं ॥

अतीति अतिपातक पापों विषे प्राजापत्य व्रतां की संख्या दो सौ सत्तर २७० कहीहै सो करणे योग्यहै वा तिसका प्रत्याम्नाय दोसौ सत्तर २७० धेनुदानतें लेकर होरभी जानणें ॥ पातकेष्विति पातक जो पाप हैं तिनां विषे एकसौ अस्सी १८० प्राजापत्य व्रत कहेहैं तिस विषे प्रत्याम्नाय प्रसूतहोई गौयांते आदिलेके एक सौ अस्सी संख्याहि कही है ॥ तैसे चतुर्विंशतिकें मतविषे कहाहै जन्मेति जन्मतें लेके ब्रह्महत्या तें विना जो वहुत अनेक तरांके पाप कीतेहैं तिनांके दूर करणे वास्ते छे ६ वर्ष के प्राजापत्य व्रत को करे और ब्रह्महत्या पापके दूर करणे विषे वारां वर्ष का व्रतहि कहाहै ॥ १ ॥ तिस छे वर्ष के प्रत्याम्नाय विषे धनवाले पुरुषकों एक सौ अस्सी गौ

अतिपातकेषु सप्तत्यधिकशतद्वयं प्राजापत्यानांकर्त्तव्यंतावंतोवाधेन्वादयः प्रत्याम्नायाः ॥ पातकेषुसाशीतिशतंप्राजापत्याः प्रत्याम्नायाधेन्वादय स्तावंतएववा ॥ तथाचतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् । जन्मप्रभृतिपापानिवहूनि विविधानिच कृत्वार्वाग्ब्रह्महत्यायाः षडब्दंव्रतमाचरेत् ॥ १ ॥ प्रत्याम्नायेगवांदेयं साशीतिधनिनांशतम् ॥ तथाष्टादशलक्षाणिगायत्र्यावा जपेद्बुध इति ॥ २ ॥ इदमेवचद्वादशवार्षिकेव्रतेद्वादशद्वादशदिनैरेकैकप्राजापत्यकल्पनायां लिंगम् ॥ एवमुपपातकेषु त्रैवार्षिकं प्रायश्चित्त विषयभूतेषु नवतिःप्राजापत्यास्तावंतएवप्रत्याम्नायाः ॥

यांकादान करणे योग्यहै तिसकी सामर्थ्य न होवे तां वुद्धिमान् पुरुष अठारांलक्ष १८००००० गायत्री का जप करे ॥ २ ॥ एहजो पूर्व कथन कीताहै प्रायश्चित्त सो वारां वर्ष केव्रत विषे वारां वारां दिनां कर्के एक एक प्राजापत्यकी कल्पना विषाचिन्ह जानणा ॥ जैसे पूर्व कहा है इसी प्रकार उपपातक जो पाप हैं त्रय ३ वर्षके प्रायश्चित्त व्रत कर्के दूर होणे वाले तिनां विषे नव्वे ९० प्राजापत्य व्रत कहेहैं वारां दिनांकर्के एक प्राजापत्य व्रतहोताहै तांते त्रय ३ वर्षां विषे नव्वे ९० होतेहैं जेकर उपपातक पापांके दूर करणे वाले जो नव्वे ९० प्राजापत्य व्रत तिनांके करणे विषे सामर्थ्य न होवे तां तिसकों प्रत्याम्नाय नव्वे ९० कहनें ।

त्रैमासिकेति त्रय ३ महीने कर्के हुंदा जो प्रायाश्चित्त तिसविषे साडे सत्त ७॥ प्राजापत्य व्रत कहेहैं तिसके प्रत्याम्नाय जप और गौ और उपवास व्रत आदि साडे सत्त ७॥हि कहेहैं परंतु इसजगा अर्द्धके स्थानमुल्ल देवे जो गौका कहाहै तिसते अर्द्ध व्रत हो जावेगा ॥ मासिकेति महीनेके व्रत विषे ढाई२॥ प्राजापत्य व्रत कहेहैं तिसकी असामर्थ्य विषे प्रत्याम्नाय भी ढाई २॥ कहेहैं चांद्रायणेति और एक चांद्रायण व्रत कर्के दूर होंनेवाले जो उपपातक पाप तिनांकें दूर करणे वास्ते प्राजापत्यव्रत त्रय ३ कहेहैं ॥ तिस प्राजापत्य त्रय ३ के करणे विषे जो असमर्थ पुरुष है तिसकों प्रत्याम्नायभी तावान् कहाहै ॥ जो फेर चतुर्विंशति मत विषे कहाहै कि चांद्रायण व्रतके प्रत्याम्नायके करण विषे अठ धेनु ८ का दान कहाहै सो एह धन वाले पुरुष विषे पिपीलिका मध्यादि नाम चांद्रायण व्रत के प्रत्याम्नाय क्या वदले विषे जानणा ॥

त्रैमासिकविषये पुनः सार्द्ध सप्त प्राजापत्याः प्रत्याम्नायाश्च धेनूपवासादयस्तावंतएव ॥ मासिकव्रतविषये तु सार्द्ध प्राजापत्यद्वयम् ॥ तावानेवप्रत्याम्नायः॥ चांद्रायणविषयभूतेषु पुनरुपपातकेषु प्राजापत्यत्रयम् ॥ तदशक्तस्यप्रत्याम्नायस्तावानेव ॥ यत्पुनश्चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् ॥ अष्टौचांद्रायणेदेयाः प्रत्याम्नायविधौसदेति अष्टौधेनवइत्यर्थः तदपि धनिनः पिपीलिकामध्यादिचांद्रायणप्रत्याम्नायविषयम् ॥ एतच्चैकैकंग्रासमश्नीयादित्यामलकपरिमितैकैकग्रासपक्षे वेदितव्यम् ॥ पाणिपूरान्नपक्षेतु पुनर्धेनुद्वयमेव । प्राजापत्यस्य षडुपवासतुल्यत्वात् । द्विगुणत्वाच्चातिकृच्छ्रस्य

एतदिति एह जो पूर्वोक्त विधि है सो (एकैकं) इत्यादि वचनकर्के कही जो प्रतिदिन एक एक ग्रास के भक्षण वाली चांद्रायण विधि तिस विषे जानणे योग्यहै और इस विधि विषे ग्रासभी आमलेके तुल्यहै इसकर्के कठिन चांद्रायणहै और तिसका प्रात्यम्नायभी अधिकहै॥ और जिसपक्ष विषे पाणि पूरान्न भोजन किहाहै क्या जितने अन्न कर्के एक हत्थ पूरण होवे तितना अन्न प्रतिदिन भक्षण करे इसपक्षविषे कष्ट थोडाहै इसकर्के दो२धेनु प्रत्याम्नायहै॥ अब फेर पूर्वोक्त मै अभिप्राय कहतेहैं कि प्राजापत्यकों ६ छे उपवासकी तुल्यताहै ॥ और अति कृच्छ्र कों इससे द्विगुण होणेतें अर्थात् अति कृच्छ्र इससे दूणाहै

अब और विचार कर्त्ते हैं यद्यपोति जों पाणि पूरान्न भोजन किहाहै सो ९ नौ दिनमे हि हुंदाहै बारां १२ दिनमे नहि तथापि निरंतर जो १२ बारांदिनका व्रत करणा सो बहुत क्लेशदेणे वाला हैं इसकर्के ६ छे उपवासके तुल्य जो प्राजापत्य दो २ तिसकी तुल्यता पाणि पूरान्न वाले व्रतको है ॥ अब प्राजापत्यको जिस तहां ६ छे उपवासकी तुल्यताहै सों कहते हैं तथाहीति पहले त्रय दिनविषे सायं कालके भोजनकी निवृत्ति होयां एक १ उपवास होआ और दूसरे त्रय दिनविषे प्रातः काल भोजनकी निवृत्ति होयां एक १ उपवास होर होया ॥ और अगले दिन त्राय विषे अयाचित व्रत विषे भी सायं कालके भोजन की निवृत्ति करणेतें एक उपवास हुंदाहै इसरीतिसें नो ९ दिनोंकर्के ३ त्रय उपवास होए ॥ और इसते

॥ यद्यपि नवसु दिवसेषु पाणिपूरान्नभोजनम् तथापि नैरंतर्य्येण द्वादशदिवसानुष्ठाने क्लेशातिशयेन षडहोपवाससमानप्राजापत्यद्वयतुल्यत्वमेव ॥ प्राजापत्यस्यषडुपवासतुल्यत्वंयुक्तमेव ॥ तथाहि प्रथमेत्र्यहेसायंतनभोजनत्रयनिवृत्तावेकोपवासस्थसंपत्तिः । द्वितीयेत्र्यहेप्रातः कालभोजन त्रयवर्जनेऽपरस्य तथाऽयाचित त्र्यहेपि सायंतनभोजनवर्जनेऽन्यस्यैवंनवाभिर्दिनैरुपवासत्रयम् ॥ तत श्चांत्यत्र्यहोपवासत्रयामितियुक्तं षडुपवासतुल्यत्वम् ॥ ऋषभैकादशगोदानसहितत्रिरात्रोपवासात्मक गोव्रतेतु सार्द्धैकादशप्राजापत्यास्तावत्संख्याकाश्चोपवासादयः प्रत्याम्नायाः मासपयोव्रतेतु सार्द्ध प्राजापत्यद्वयम् ॥ पराकात्मकेतूपपातकव्रतेप्राजापत्यत्रयम् ।

आगे त्रय उपवास करणे ते ६ उपवासकी तुल्यता प्राजा पत्य कौं उचितहै ऋषभेति बैलहै यारवां जिनां विषें ऐसीयां दशां १० गौयांके दानके साथ जो त्रय ३ उपवास व्रत हैं ऐसे गोव्रतविषें प्रत्याम्नाय कहतेहां ॥ सार्द्धइति साढे यारां प्राजापत्य व्रत अथवा साढे यार ११ ॥ उपवास अर्थात् साढे यारां दिन ११॥ निराहार स्थित रहणा इत्यादिजानणे ॥ मासेति एक मास तक जो दुधका व्रत तिस विषें प्रत्याम्नाय ढाई २॥ प्राजापत्य कहनें ॥ पराक व्रत कर्के दूर होता जो उपपातक पाप तिस व्रत बिषें प्राजापत्य त्रय ३ करणे चाहिए एह प्रत्या म्नाय है ॥

श्रोर कहतेहैं षराकेति श्रोर पराक व्रत श्रोर तप्तकृच्छ्र श्रोर श्रतिकृच्छ्र इनां विषे एक एक की जगा त्रय ३ प्राजापत्य व्रत करे श्रोर १ प्राजापत्य व्रतां विषें जो श्रसमर्थ हैं सो सांतपन व्रत के श्रद्धनूं करे श्रैसे षट्त्रिंशन् मत विषें कथन करणेतें ॥ चांद्रायणेति चांद्रायण श्रोर पराक कृच्छ्र श्रोर श्रतिकृच्छ्र एह व्रत एक एक त्रय ३ प्राजापत्य व्रतांके तुल्यहैं तातें वारांवर्षके व्रत विषे एक सौ बीस १२० श्रनुष्ठान करणे योग्य हैं ॥ तदिति श्रोर तिनां चांद्रायणादि व्रतांके प्रत्याम्नाय धेनु श्रादिक श्रर्थात् धेनु उपवास श्रोर गायत्रीका १०००० जप एह सब त्रय गुणां अधिक जानणे तातें प्राजापत्य व्रत त्रय सौ सठ ३६० कहनें तिस विषे चांद्रायण एकसौ वीस १२० तिस एक सौ बीस विषें धेनु श्रादिक त्रय सौ सठ ३६० कहनें ॥ श्रतीति श्रतिपातक पापविषे नव्वे९० संख्याकर्के चांद्रायण श्रादि कहने ॥ श्रोर श्रति पातक पापांके तुल्य जो पातक संज्ञाकर्के पापहैं तिनां विषे सठ ६० चांद्रायणादि कहने ॥ श्रोरत्रय

पराकतप्तातिकृच्छ्रस्थाने कृच्छ्रत्रयंचरेत् सांतपनस्यतश्चार्द्धमशक्तौव्रतमाचरेदिति षट्त्रिंशन्मतेऽभिधानात् ॥ चांद्रायण पराककृच्छ्रातिकृच्छ्रास्तुप्राजापत्यत्रयात्मकाद्वादशवार्षिकव्रतस्थाने विंशत्युत्तरंशतसंख्याश्रनुष्ठेयाः तत्प्रत्याम्नायास्तुधेन्वादयास्त्रिगुणाः । श्रतिपातके नवतिसंख्याकाश्चांद्रायणादयः।तत्समेषुपुनःपातकपदाभिधेयेषु षष्टिसंख्याः । उपपातकेषु त्रैवार्षिकविषयेषु त्रिंशत्संख्याः। त्रैमासिकेषुव्रतस्थानेषु गोमूत्रस्नानादीतिकर्त्तव्यतावाहुल्याच्चांद्रायणादित्रयम् मासिकव्रतेषु योगीश्वरोक्तमेकमेवचांद्रायणम् धेनूपवासादिप्रत्याम्नायस्तु सर्वत्र त्रिगुणएव। प्रकीर्णकेषु पुनःप्रतिपदोक्तप्रायश्चित्तानुसारेण प्राजापत्यं पादादिकं वा योजनीयम्। श्रावृत्तौ पुनश्चांद्रायणादिकमिति । एतद्दिगवलम्बनेनान्यत्रापि कल्पनाकार्य्या ॥

वर्षांके प्राजापत्यकर्के दूर होणें वाले जो उपपातक पाप तिनांविषे चांद्रायणादितीस ३० कहनें ॥ त्रैमासिकेष्विति त्रय३ महीनेके व्रतांविषे गोमूत्र स्नान श्रादि कर्मकी वाहुल्यतासें करणा कठिन है इसकर्के यथायोग्यताकों जाणकर्के चांद्रायण श्रादिव्रत त्रय ३ कहेहैं ॥ श्रोर एकमहीनेके व्रतां विषे योगीश्वरनें एकहि चांद्रायण कहाहै सो करणा ॥ श्रोर धेनु श्रोर उपवास श्रोर जप इत्यादि प्रत्याम्नाय संपूर्ण चांद्रायणादि स्थानविषे त्रय गुणां जानणा । प्रकीर्णेति प्रकीर्ण नामकर्के जो पाप तिनांविषे एकएक पापके दूरकरणे वास्ते प्रायश्चित्तके श्रनुसार कर्के प्राजापत्यव्रत करणा वा पादादिक जानणा ॥ श्रोर प्राजापत्यकी श्रावृत्ति विषे श्रर्थात् जिसजगा वहुत प्राजापत्य करणे होण तिसजगा चांद्रायण श्रादि कहाहै इसरस्तेके श्रनुसार कर्के होर स्थानविषे भी व्यवस्था जानणी ॥

जो फेर वृहस्पतिनें कहाहै ॥ जन्मतें लेकर जो कुछक पातक वा उपपातक है तिनांके दूर
करणे विषे संख्या कर्के एकतें लेके १ ॥ ६० ताईं प्राजापत्य करणा ॥ १ ॥ सो परस्त्रीके सं
भोगके पाप विषे दो वर्षतक व्रत करे एह गौत्तम जीके कहेहोए वचनतें दो वर्षके व्रतकी तुल्य
ताकों विषय करताहै ॥ तैसेंहि ३ त्रय महीनेके जो उपपातकके व्रत तिनकी आवृत्तिको क्या ब
हुत वार करणेकों विषय करताहै जो परस्त्रीका अभ्यास तिस विषे जानणा वा और फेर
पातक नाम कर्के जो चांडालादि स्त्रीके विषे दो २ वार अभ्यास करणा तिसविषे जानणा
बचन कहतेहैं तत्रेति इच्छा कर्के संभोग करे तां तिस पुरुषकों पापके दूर करणे वास्ते १

यत्पुनर्वृहस्पतिनोक्तम् जन्मप्रभृतियत्किंचित्पातकंचोपपातकम् तावदा
वर्त्तयेत्कृच्छ्रंयावत्षष्टिगुणंभवेत् ॥ १ ॥ तद्द्वेपरदारइति गौत्तमोक्तद्वैवा
र्षिकसमानविषयम् ॥ तथा त्रैमासिकादिविषयभूतोपपातकावृत्तिविषयं
वा पातकपदाभिधेयेचांडालादिस्त्रीगमे द्विरभ्यासविषयंच ॥ तत्र ज्ञानात्
कृच्छ्राब्दमुद्दिष्टमज्ञानादैन्दवद्वयमिति सकृद्बुद्धिपूर्वंगमे कृच्छ्राब्दवि
धानात् ॥ तदभ्यासे द्विवर्षतुल्यषष्टिकृच्छ्रविधानंयुक्तमेव । यत्तु सुमंतुनो
क्तम् ॥ यदप्यसकृदभ्यस्तंबुद्धिपूर्वमघंमहत् तच्छुध्यत्यब्दकृच्छ्रेणमहतः
पातकादृतइति ॥ १ ॥ तदप्युपपातकाद्यावृत्तिविषयम् ॥

क वर्षका प्राजापत्य व्रत कहाहै और इच्छातें विना परस्त्री विषे संभोगका अभ्यास होवे ति
स पापके दूर करणे वास्ते दो चांद्रायण व्रत कहेहैं इति ॥ इसका तात्पर्य कहतेहैं सकृदिति
एकवार इच्छा कर्के चांडालादि स्त्रीके संभोग विषे पापके दूर करणे वास्ते एक वर्षके प्राजाप
त्य कृच्छ्रके विधान होणेतें ॥ और वहुत वार अभ्यास विषे दो वर्षके तुल्य सठां प्राजापत्य व्र
तांका विधान युक्तहै ॥ जो फेर सुमंतुऋषिनें कहाहै कि जो वारंवार इच्छा कर्के वहुत पाप कीत
याहै सो एक वर्षके प्राजापत्य व्रत कर्के दूर होताहै परंतु महापातकतें विना ॥ १ ॥
सोभी उपपातक आदिके अभ्यास विषे जानणा ॥

येति तैसे अज्ञानतें चांडाली गमनरूप पापकों करे तां दो चांद्रायण व्रत करे एह धर्मराजने कहे जो चांद्रायण व्रत दो २ तिनां करके दूरकरी दे जो पातकतिनकी आवृत्ति विषे अथवा जानणा ॥ यइति जो पुरुष तप करणेविषे सामर्थ्यतें रहित है और अन्नकर्के समृद्धहै सो कृच्छ्र आदि व्रतांनू उत्तम ब्राह्मणों तांई भोजनदानसें संपादन करे अर्थात् भोजनकों देवे॥ तैसें होरी स्मृतिका वाक्य है इस भोजनके प्रकार विषे कृच्छ्रइति प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत जो बारां दिनाका है तिसके एक एक दिनविषे पंच पंच विद्वान् ब्राह्मणांके ताईं भोजनदेवे तिस पुरुषकों प्राजापत्य व्रतका फल होताहै तैसें अति कृच्छ्रके अर्थ एक एक दिन विषे पंदरां १५ ब्राह्मणांके ताईं भोजन देवे और तृतीय जो कृच्छ्रातिकृच्छ्रहै तिस विषे तीस ३० ब्राह्मण और तप्त

तथाऽज्ञानादैन्दवद्वयमिति यमोक्तैन्दवद्वयविषयभूतपातकावृत्तिविषयं वा यस्तु तपस्यसमर्थो धान्यसमृद्धश्च सकृच्छ्रादिव्रतानि द्विजाग्र्येभ्योभोजन दानेन संपादयेत् । तथास्मृत्यंतरम् । कृच्छ्रेपंचातिकृच्छ्रेत्रिगुणमहरहस्त्रिंश देवतत्तीये चत्वारिंशच्चतप्तेत्रिगुणितगुणिताविंशतिःस्यात्पराके कृच्छ्रेसांता पनाख्येभवतिषडधिकाविंशतिः सैवहीना द्वाभ्यांचांद्रायणेस्यात्तपसिकृश वलोभोजयेद्विप्रमुख्यानिति ॥ १ ॥ अहरहरिति सर्वत्र संबंधनीयम् ॥ तृतीयःकृच्छ्रातिकृच्छ्रः त्रिगुणितनएकेनगुणिताविंशतिःषष्टिः ॥ अत्र प्राजापत्यदिवसकल्पनया षष्टिविद्वद्विप्राणांभोजनंभवति ॥ यत्तु चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् विप्राद्वादशवाभोज्यापावकेष्टिस्तथैवच अन्यावापावनीकाचित्समान्याहुर्मनीषिणइति ॥ १ ॥

कृच्छ्र विषे चाली ४० और पराक कृच्छ्र विषे सठ ६० ब्राह्मण और सांतपन कृच्छ्र व्रत विषे छव्वी २६ ब्राह्मण और चांद्रायण व्रत विषे बाईं २२ ब्राह्मण इस विधि करके तप करणे विषे जेकर असमर्थ होवे तां भोजन देवे इति ॥ १ ॥ दिन दिन इस पदका संपूर्ण स्थानविषे संबंध करलेणा ॥ इस विषे प्राजापत्य व्रतके दिनांकी कल्पना करके सठां बुद्धिमानां ब्राह्मणां ताईं भोजन कहाहै ॥ जो फेर चतुर्विंशति मत विषे कहाहै कि बारां ब्राह्मणांके ताईं भोजन देणा तैसे पावकेष्टि यज्ञकरणा अथवा को इक पावनीइष्टि करणी इनांकों बुद्धिमान् सम कहतेहैं इति अर्थात् इन्हां सभनोंका तुल्यहि फलहै ॥ १ ॥

एह जो प्राजापत्य व्रतके स्थान प्रत्याम्नाय वारां ब्राह्मणांकों भोजन कहाहै सो निर्धन पुरुषके
विषे जानणा ॥ और जो चांद्रायण व्रतके प्रत्याम्नाय कर्के कहाहै कि चांद्रायण और
मृगारेष्टिः और पावनेष्टि और मित्रविंदा और पशुवाग और मास त्रय कृच्छ्र व्रत ॥ १ ॥
और नित्य कर्म और नैमित्तिक और काम्य कर्म और पशु वंध इष्टि इनांके अभाव विषे
क्या करणे विषे असामर्थ्यके होयां होयां इनों विषे जिस प्रत्याम्नाय करणे विषे सामर्थ्य होवे
सोहि अनुष्ठाने करणे योग्यहै ॥ २ ॥ एहि अर्थ स्पष्ट कर्के किहाहै एतदिति ॥
सोभी चांद्रायण व्रत करणे विषे जो असमर्थ है तिसपुरुषनें मृगारेष्टि आदि विचों एक करणा
चाहिये ॥ अब चतुर्थ पादका अर्थ कहतेहैं कृच्छ्रमिति इसका एह अर्थ है कि त्रय ३ प्राजापत्य

प्राजापत्यस्थाने द्वादश विप्राणां भोजनमुक्तं तन्निर्धनविषयम् ॥ यच्चां
द्रायणस्यापि तत्रैव प्रत्याम्नायेनोक्तम् ॥ चांद्रायणंमृगारेष्टिः पावने
ष्टिस्तथैवच ॥ मित्रविंदापशुश्चैवकृच्छ्रमासत्रयंतथा १ ॥ नित्यनैमित्तिका
नांचकाम्यानांचैवकर्मणां इष्टीनांपशुवंधानामभावेचवरः स्मृतइति ॥ २ ॥
एतदभावे कर्त्तुमशक्येवरोऽभीष्टः प्रत्याम्नायः कर्त्तुशक्यएवानुष्ठेयइत्यर्थः
तदपि चांद्रायणाशक्तस्य कृच्छ्रंमासत्रयं एकैकस्मिन्मासेएकैकंकृच्छ्रमित्य
र्थः ॥ यत्तु कृच्छ्रंमासत्रयंतथेति कृच्छ्राष्टकंप्रत्याम्नातं तदतिजरठमूर्खवि
षयम् ॥ चांद्रायणंत्रिभिःकृच्छ्रैरितिदर्शितत्वादलमतिप्रसंगेन । अपरार्के ।
अथातोऽनुग्रहान्वक्ष्येदुर्वलस्यात्मशालिनः ॥ यत्कृत्वामुच्यतेपापादुरगः
कंचुकाद्यथा ॥ १ ॥

जो फेर किसेका
कृच्छ्र व्रत तीन महीनयां विषे एक एक महीने विषे एक एक व्रत करणा ॥ जो फेर किसेका
मतहै कि कृच्छ्रंमासत्रयं इसका अर्थ प्राजापत्य व्रत त्रयमास तक जानणा तां तिनां तीन मही
नयां विषे साढे सत्त ७॥ प्राजापत्यहै सो अतिशयकर्के वृद्ध और मूर्ख पुरुषकों कहतेहैं अर्थात्
ऐसा कहणे वाला मूर्ख है अर्थको नाह जानदा क्योंकि तीन प्राजापत्यव्रतांके करणे करके
चांद्रायण व्रतका फलप्राप्त होताहै ऐसें दखाणेतें ॥ इसमे वहुत प्रसंग करणेकर्के प्रयोजन नहि
और मूलमे जो ८ कृच्छ्र कहेहैं सोइ महीनेतें ६ दिन अधिकको संभावनाते ॥ अब अपरार्क
विषे कहतेहैं अथेति वलतें रहित जो पुरुष और अपनी शुद्धिकी इच्छा वाला तिसकों उपाय
कहताहां जिनां उपायांके करणे करके पुरुष पापांतें रहित होताहै जैसें सर्प सवकुंजतें रहित
होताहै ॥ १ ॥

तिस विषे पराशरजी कहतेहैं कृच्छ्र इति कृच्छ्र प्राजापत्य और दश हजार १००००गायत्रीका जप और भोजन विना जलविषें दिन रात्र स्थित रहणा और ब्राह्मणके तांई नवीनप्रसूत होई होई गौकादान देणा एहचारे सम हैं अर्थात् इनमेंसे कोईभी उपाय करे तौभी शुद्ध होजाताहै ॥ १ ॥ समिधा और घृत और हविःऔर धान्य और तिल इनांमेसें किसे वस्तुकर्के गायत्री मंत्रसें एक हजार वारां अधिक १०१२आहुतियांदेवे और उपवास व्रतकों करे तां प्राजापत्य कृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहै वारांते अधिक जो सहस्र सो कहिये द्वादश सहस्र ॥ २ ॥ पाराशर जी कहतेहैं ॥ कृच्छ्रइति प्राजापत्य और गायत्रीका दशहजार १००००जप और दो सौ २००

पराशरः ॥ कृच्छ्रोयुतंतुगायत्र्याउपवासस्तथैवच ॥ धेनुप्रदानंविप्राय सममेतच्चतुष्टयम् ॥ १ ॥ समिद्घृतंहविर्धान्यंतिलान्वामरुताशनः हुत्वा द्वादशसाहस्रंगायत्र्याकृच्छ्रमाप्नुयात् २॥द्वादशभिराधिकंसाहस्रंद्वादश साहस्रम् ॥ पाराशरः ॥ कृच्छ्रोदेव्ययुतंचैवप्राणायामशतद्वयम् पुण्यतीर्थे नार्द्रशिरःस्नानंद्वादशसंख्यया ॥ १ ॥ यत्त्वपरार्के ॥ द्वादशैवसहस्राणिज पेद्देवीमुपोषितः जलांतेविधिवन्मौनीप्राजापत्योयमुच्यते इति ॥ १ ॥ जलांते जलसमीपे ॥ तथा तत्रैवचचतुर्विंशतिमते अ.तिकृच्छ्रेपराकेचाशक्तः प्राजापत्यत्रयं कुर्य्यात् कृच्छ्रेगोमिथुनामिति ॥

प्राणायाम और पुण्य तीर्थ विषे वारां वार १२ सहित शिरके स्नान करणा अर्थात् जलमें निमग्न होकर स्नान करणा इह चारभी प्राजापत्य के सम हैं १ ॥ जो अपरार्क विषें कहाहै ॥ वारां हजार १२००० गायत्रीके जपकों उपवास व्रत कर्के जलके समीप विधि कर्के मौन व्रतको धारके करे तां प्राजापत्य कहतेहैं ॥ १ ॥ तैसेंहि प्रसंग विषें चतुर्विंशति मत विषे कहाहै अति कृच्छ्र व्रत विषे और पराक विषे जेकर असमर्थ होवे तां तिसका बदला त्रय प्राजापत्यव्रत करे और कृच्छ्र व्रतविषें भी असमर्थ होवे तां तिसका बदला एक बलदके सहित एक गौका दान करे ॥

अत्रेति इस विषेहि बारांहजार १२००० गायत्रीके जप विषे वदला एक गौ और एक बलद दानकरे एह गौतम आदिक ऋषियांकर्के कहा जो प्राजापत्य व्रत तिसविषे जानणा ॥ अथवा समर्थ पुरुषविषे जानणा ॥ तिसी स्थानमे एह वाक्यहै अन्नेति सुवर्णके साथ अन्नदेकर्के शुद्ध जो वेदपाठी बारां ब्राह्मण तिनांको तृप्त करे और आप निराहारव्रत करे सो ऐसा व्रत प्राजापत्य कृच्छ्र कहा है ॥ १ ॥ और भी कहाहै कि उपवासव्रत कर्के पीछे श्रद्धा कर्के युक्त होयाहोया धर्मते बारां १२ वेदपाठी ब्राह्मणोंकेताईं तिलांके पात्रदेवे सो प्राजापत्यव्रतके सम फलकों प्राप्तहोताहे ॥ २ ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरविषे विशेष कहाहै प्राजापत्यकृच्छ्रके स्थानविषे दश हजार १०००० गायत्रीकाजप प्रत्याम्नाय कहाहै अथवा समिदाघृत और हविः और धान्य एनांवि

अत्र द्वादशसहस्रगायत्रीजपे गोमिथुनंच गौतमाद्युक्तप्राजापत्यविषयं शक्तविषयंवा। तत्रैव। अन्नंदत्वाहिरण्येनद्वादशब्राह्मणान्शुचीन्। तर्पयेन्मारुताशीचश्रोत्रियान्कृच्छ्रउच्यते १ उपोष्यश्रद्धयायुक्तस्तिलपात्राणिधर्मतः द्वादशब्रह्मवादिभ्यःप्राजापत्येनतत्समम्॥ २ ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरेविशेषः गायत्र्ययुतजपोवा प्राजापत्यकृच्छ्रस्थानेप्रत्याम्नायः॥ गायत्र्याद्वादशाधिकसहस्रसंख्याकः समिद्घृतहविर्धान्यानामन्यतमस्यहोमोवा। तिलहोमस्तुसाहस्रएवेतिकेचित्। घृताहुतिशतद्वयंवा वेदसंहितापारायणंवा प्राणायामशतद्वयंवा एकोपवासपूर्वकद्वादशतिलपात्रदानंवा तीर्थोद्देशेन योजनगमनंवा। शिरःशोषणपूर्वकंद्वादशसांगस्नानानिवा प्राजापत्यमेवकृच्छ्रम् ॥

चौंकिसे वस्तुका हवन करे गायत्रीके मंत्र कर्के एक हजार और बारां अधिक १०१२ मिण ती कर्के। कैक ऋषि कहते हैं एक हजार १००० तिलांका हवन करे व्याहृतियां कर्के ॥ अथवा घृतकीयां दो सौ २०० आहुतियां देवें अथवा सारीवेदसंहिताका पारायणवाचे। अथवा दो सौ २०० प्राणायाम करे गायत्रीमंत्रकर्के। अथवा एक उपवास व्रतकर्के बारां १२ तिलांके पात्रांका दान करे ॥ अथवा तीर्थयात्राके निमित्त चारकोश अपणे चरणांकर्के यात्राकरे ॥ शिरके साथ स्नान करे और फेर शिरकों सुकाके फेर शिरके साथ स्नान करे ऐसे बारां स्नान करे तो प्राजापत्य व्रत होताहै ॥

अब तिलांके पात्रका परिमाण कूर्म पुराण विषे कहाहे तिलेति तिलांके पात्रका परिमाण त्रयतरांका है एक कनिष्ठ दूसरा उत्तम तिसरा मध्यम तिसकों दिखाते हैं ताम्रेति तांमेका पात्र दश १० छटांकका कनिष्ट कहाहै और २० छटांकका मध्यम कहाहे और तीस ३० छटांकका उत्तम कहाहे इति ॥ १ ॥ कृच्छ्रका भेदें कहतेहैं गोमूत्रेणेति गोमूत्र कर्के भिज्जे होये यवांको पीवे एह एकदिनका कृच्छ्र व्रत आप अंगिरस ऋषिने दखायाहै । १ ।तिसी प्रकार उपवासव्रतकों रखके घासके बारां १२ भारांकों आप शिरकर्के चुकलेआवे और गौयां केतांई देवे परंतु सो गौवां बहुत होण तां कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्तहोताहे इसविषे संशय नहि है

तिलपात्रपरिमाणंतु कूर्मपुराणेउक्तम् । तिलपात्रंत्रिधाप्रोक्तंकनिष्ठोत्तममध्यमम् ताम्रपात्रंदशपलंजघन्यंपरिकीर्त्तितम् ॥ १ ॥ द्विगुणंमध्यमंप्रोक्तंत्रिगुणंचोत्तमंस्मृतमिति ॥ गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकंचोपयोजयेत् कृच्छ्रमेकाहिकंप्रोक्तंदृष्टमंगिरसास्वयम् १ ॥ तथा ॥ स्वयमाहृत्ययोमूर्ध्ना तृणभारानुपोषितः दद्याद्गोमंडलेकृच्छ्रंद्वादशैवनसंशयः २ ॥ प्राणायामशतंकृत्वाद्वात्रिंशोत्तरमार्त्तिषु अहोरात्रोषितास्तिष्ठत्प्राङ्मुखःकृच्छ्रउच्यते ॥ ३ ॥ नमस्कारसहस्राणिद्वादशैवदृढव्रतः ॥ गोविप्रपितृदेवेषुकुर्यात्कृच्छ्रत्रयंभवेत् ४ ॥ वशिष्ठः ॥ अपिचेच्चरितंकर्तुंदिवसंमारुताशनः । रात्रौस्थित्वाजलेव्युष्टः प्राजापत्येनतत्सममिति ॥ १ ॥

२ ॥ प्राणेति रोग आदि कर्के पीडाके होयां २ एक सौ बत्ती १३२ प्राणायामकोंकर्के दिनरात्र उपवास व्रतकों करे और पूर्व मुख कर्के स्थित होवे तां प्राजापत्य कृच्छ्रका फल होताहै ॥ ३ ॥ नमस्कारेति ॥ व्रतविषे दृढ व्रत होकर जो पुरुष गौ और ब्राह्मण और पितर और देवता इनांकों बारांहजार नमस्कार करे तां त्रय कृच्छ्र व्रतोंका फल तिसकों होताहै ॥ ४ ॥ अब वशिष्ठजी कहतेहं ॥ निश्चय कर्के जेकर व्रत करणे मे स्थित होवे तां दिने वायु भक्षण करे और रात्रिविषे जल विषे स्थितहोवे और व्युष्टः क्या प्रातः कालविषे बाहर होवे ऐसे एक दिनका व्रत प्राजापत्य व्रतके तुल्य होताहै ॥ १ ॥

इसतें उपरंत प्राजापत्य कृच्छ्र का समुद्र विषे प्राप्त होणे वालीयां नदीयां विषे जो स्नान करणा है सो प्रत्याम्नायकहाहै ॥ इसविषे देवलऋषिका वचनहै एह समुद्र विषे जाणे वालीयां नदीयां हैं भागीरथी गंगा १ यमुना २ नर्मदा ३ सरस्वती ४ गोदावरी ५ कृष्णवेणी ६ तुंगभद्रा ७ पिनाकिनी ८ (१) वलापहारी ९ भीमरथी १० वंजुला ११ भवनाशिनी १२ अखंडा १० कावेरी १४ ताम्रपर्णी १५ महानदी १६ (२) धनुःकोटी १७ प्रयाग १८ गंगासागरसंगम १९ एह पुण्य नदीयां हैं जिनांके दर्शन सें मनुष्योंके पाप नाशकों प्राप्त होतेहैं और स्पर्श करणेतें मोक्षकों देतीयां हैं और स्नान करणें तें मुक्ति कों देतीयांहैं ॥ ३ ॥ और जो सदाबीस २० योजनतक

अथ प्राजापत्य कृच्छ्रस्य समुद्रगनदीस्नानं प्रत्याम्नायः ॥ देवलः । समुद्रगनद्यः ॥ भागीरथीचयमुनानर्मदाचसरस्वती गोदावरी कृष्णवेणी तुंगभद्रापिनाकिनी ॥ १ ॥ वलापहारीभीमरथी वंजुलाभवनाशिनी अखंडाचैवकावेरीताम्रपर्णीमहानदी ॥ २ ॥ धनुःकोटिः प्रयागंचगंगासागरसंगमः ताएताः पुण्यनद्यस्तुदर्शनात्पापनाशनाः ॥ स्पर्शनान्मोक्षदान्नृणांस्नानान्मुक्तिप्रदायिकाः ॥ ३ ॥ सदाविंशद्योजनगा महानदी समुद्रगाच । एतासुस्नानमात्रेण मनुजः पूतोभवति प्राजापत्यकृच्छ्राचरणेऽसमर्थस्य तत्प्रत्याम्नायेगोदानाचरणेचाशक्तस्य नदीस्नानरूपमेव कलौयुगेसमीचीनम् । अतोनदीस्नानमेववयंब्रूमः ॥ गंगायांमौशलंस्नानंप्राजापत्यसमंविदुरितिभविष्योत्तरोक्तत्वात् गंगास्नानं विशुद्धिदमिति ॥

वगदी है अथवा समुद्र विषे प्राप्तहोती है सो महानदी कहीहै इनां विषे स्नान करणे कर्के मनुष्य पवित्र होताहै एही अर्थ विशद कर्के कहीदाहै ॥ प्राजापत्य कृच्छ्रके करणे विषें असमर्थ जो पुरुष है तिसकों गौका दान करणा एह प्रत्याम्नाय है तिसके करणे विषे भी जो असमर्थ है तिसकों कलि युगविषे नदीका स्नान रूप हि प्रत्याम्नाय युक्तहै इस कारणतें नदी स्नानकों हि असी कहतेहां गंगाविषे मुसलकी न्यांई जो स्नानहै तिसकों प्राजापत्यके तुल्य कहतेहैं ॥ एह भविष्योत्तर पुराण विषे कहणेतें ॥ और गंगा स्नान शुद्धिके देणे वाला है एभी वचन है ॥

पंच प्रकारको गंगा स्कंदपुराण विषे कहीहै भागीति भागीरथी और गौतमी और कृष्णवेणी और पिनाकिनी और अखंडा कावेरी एह पंच गंगा कहीयांहैं होर जो समुद्र विषे प्राप्तहोण वालीयां नदीयां सो पुरुषांके पापांके दूर करणे वालीयां कहीयां हैं ॥ १ ॥ जो पुरुष इनांविषे स्नानवास्ते यात्रा करतेहैं तिनांके पाप निश्चयकर्के दूर होतेहैं ॥ और तिनां नदीयांकी जो यात्रा करतेहैं तिनां विषे भिन्न फलकों गौतम ऋषि कहताहै स्वग्रामेति अपणे ग्रामके समीप जो नदीहै जो होर योजनमात्र विषे क्या चौंहकोंहां विषे नदी है तिस विषे स्नान करणे वास्ते अथवा दर्शन वास्ते जो प्राप्त होताहै तिस पुरुषकों इतना फल होताहै जितनयां योजनांकी यात्रा होवे अर्थात् दर्शनते स्नानका स्वल्प फल और स्नानतें जितने योजन दूर होण तितनें

पंचविधागंगास्कंदपुराणे। भागीरथीगौत्तमीचकृष्णवेणीपिनाकिनी अखंडाचैवकावेरीपंचगंगाःप्रकीर्त्तिताः ॥ १ ॥ अन्याः समुद्रगानद्योनृणांपापहारिण्यः ॥ एतासु महानदीषुयात्रया मवश्यं पापनाशोभवति । एताः प्रतियात्रयांपृथक्फलमाहगौतमः ॥ स्वग्रामस्यचयासिंधुर्यान्यायोजनमात्रगा तामुद्दिश्ययदागंतुःस्नानार्थंदर्शनायवा ॥ यावंतियोजनानीह फलंतावल्लभेतुसः ॥ १ ॥ परार्थयोऽनुगच्छेद्वास्नानमात्रंफलंलभेत् मूल्यं गृहीत्वायोगच्छेत्तस्योभयमस्तिहि ॥ २ ॥ विष्णुपादोद्भवागंगादशकृच्छ्रफलप्रदा यमुनाचतथान्दृणामष्टकृच्छ्रफलप्रदा ॥ ३ ॥

कृच्छ्रोंका फल होताहै तांते एकयोजन पर जाणे वालेको एककृच्छ्रका फलहोवेगा ॥ १ ॥ पर पुरुषके अर्थ वास्ते जो पुरुष स्नान करणे जाताहै तिसकों स्नान मात्रका फल प्राप्त होताहै अर्थात् यात्राका फल जो प्रतियोजन वृद्धिसें प्राजापत्यकी तुल्य ताकोदेणे वालाहै सो तिसीको हुंदाहै जिसने उसको भेजयाथा और अल्प फल जाणेवाले कों भीहै और मुल्लकों ग्रहणकरके जाताहै तिसकों न जाणेका फल न स्नानका फल प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ विष्णिवति विष्णुके चरणोंतें उत्पन्न होई जो गंगा सो स्नानकरणेतें दश १० कृच्छ्रव्रतके फलकों देतीहै तिसो प्रकार यमुना स्नानतें पुरुषांकों अष्ठ ८ कृच्छ्र व्रतके फल कों देतीहै ३ ॥

औॅर गौत्तमी और कृष्णवेणी स्नान करणेंते नौ९ कृच्छ्र व्रतके फलकों देतीहै और दाक्षायणी और कावेरी अष्ठ ८ कृच्छ्र व्रतके फलकों देणे वालीहै ॥ ४ ॥ और तुंगभद्रा भीमरथी पुरु षांकों सत ७ कृच्छ्र फलके देणेवालीयां हैं और वंजुला भवनाशी स्नानतें छे ६ जो कृच्छ्र व्रत तिनके फलकों देणे वालोयांहैं ॥ ५ ॥ और फाल्गुणी और ताम्रपर्णी पंचकृच्छ्र फलके दे णेवालीहैं चापाग्र जो धनुःकोटीहै तिसविषे स्नानमात्र करके अठां ८ कृच्छ्रांका फल प्राप्त होता है ॥ ६ ॥ श्रीशैलविषे और संगमविषे अर्थात् श्रीशैलमेजो पूर्वोक्त नदीयांका संगमहै तिस विषे और गंगासागरके संगमविषे स्नान करे वीस २० कृच्छ्र व्रतके फलकों प्राप्त होताहै इस कारणतें नदीयां वडीयां पवित्रहैं ॥ ७ ॥ प्राजापत्य कृच्छ्रका

गौत्तमीकृष्णवेणीचनवकृच्छ्रफलप्रदा दाक्षायणीचकावेरीह्यष्टकृच्छ्रफल प्रदा ॥ ४ ॥ तुंगभद्राभीमरथीसप्तकृच्छ्रफलप्रदा वंजुलाभवनाशीचषट् कृच्छ्रफलप्रदा ॥ ५ ॥ फाल्गुणीताम्रपर्णीचपंचकृच्छ्रफलप्रदा चापाग्रेस्नान मात्रेणह्यष्टकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ ६ ॥ श्रीशैलेसंगमेचैवगंगासागरसंगमे विंश कृच्छ्रफलंस्नानमतोनद्यश्चपावनाः ॥ ७ ॥ प्राजापत्याम्नायनदीस्नानप्रकार माह सएव पूर्ववत्पुण्याहवाचनसंकल्पादिकमृत्विजश्चकृत्वा नदीस्नाना भिमुखोभूयात् नदींगत्वा कर्त्ता पूर्ववत्स्नात्वागंधपुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य मयाप रिषत्संनिधौसंकल्पितस्यसर्वप्रायश्चित्तस्यसमग्रफलावाप्त्यर्थं परिषन्निर्णी तंप्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायभूतमब्दादिसंख्यया अहं ब्राह्मणैर्वा महानदी स्नानरूपमाचरिष्ये इतिसंकल्प्य ब्राह्मणान्प्रेषयेत् ॥

प्रत्याम्नाय जो नदीस्नान तिस का प्रकार गौत्तमही कहताहै पूर्ववतीन्याई पवित्र दिनविषे संकल्प को करके ऋत्विजांकों साथ लेकर नदीविषे स्नानके वास्ते प्राप्तहोवे नदीकों प्राप्तहोकर पूर्ववती न्याई स्नानकरके गंध और पुष्प और अक्षतोंकरके ऋत्विजांकों पूजके संकल्प करे कि मैंने सभा के समीप विषे संकल्प कीयाजो पूर्ण प्रायश्चित्त तिसके संपूर्ण फलकी प्राप्तिवास्ते सभा विषे निश्चय कीयाजो प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नायरूप वर्षआदिकी संख्याकरके तिसके अर्थमैं महानदी विषे स्नानकों करताहां अथवा ब्राह्मणा द्वारा कर्त्ताहां ऐसेसंकल्पकरके ब्राह्मणांकोंभेजे।

और ऋत्विज जो हैं यजमानके गोत्र और नक्षत्र और राशि और शाखा और नामका उच्चारणकरके इस यजमाननें अमुक गोत्रनें अमुक राशिविषे उत्पन्न होये होयेनें अमुक शाखाध्यायी नें अमुक नाम वालेने सभाके समीप विषे संकल्प कीया जो संपूर्ण प्रायश्चित तिसको सभा विषे निर्णीत जो कीयाहूया प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय जो महा नदीयां विषे स्नान तिनां नूं मुशलकीन्याईं सहित शिरके अर्सी करतेहां ऐसे ऋत्विज संकल्प करके महा नदी विषें नदी वल मुख करके मंत्रांतें रहित मूसलेकी न्याइं सहित शिरके स्नान को करके फेर तटकों प्राप्त होके दो वार आचमन करे और शुद्ध वस्त्रको धार करके शुद्ध वस्त्रके न होयां होयां तिसी वस्त्रको बांरां वार छंडके धारे और दो वार आच

ऋत्विजस्तुयजमानगोत्रनक्षत्रराशिशाखानामधेयानि समुच्चार्य्य एतेनयजमानेनामुकगोत्रेणामुकराशौजातेनामुकशाखाध्यायिनामुकनामधेयेनपरिषत्संनिधौसंकल्पितस्यसर्वप्रायश्चित्तस्यपरिषन्निर्णीतस्यप्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायपरिकल्पितानि महानदीस्नानानि मौशल्यवदाचरिष्यामः ॥ इतिसंकल्प्य महानद्यां नदीमुखा स्तन्मंत्रवर्जमौशलमज्जनवत्स्नानं कृत्वा तटमागत्य पुनर्द्विराचम्य धौतवस्त्रं परिधाय तदभावेद्वादशसंख्या वस्त्रावधूननंकृत्वा परिधायद्विराचम्य पूर्ववत् स्नायुः । एवंसंकल्पिताब्दादिसंख्या भवति तदा यजमानः स्नातृभ्य ऋत्विग्भ्योनिष्कंवा तदर्धंवापादंस्नानफलस्वीकारार्थंदद्यात् निष्कशब्दोदेवमानेन वराहद्वयम् ऋषिमानेन तदर्द्धम् मानुषमानेनापितदेवग्राह्यम् प्रभूणामुत्तमप्रकारमेव समर्थस्य मध्यममकिंचनस्य तदर्द्धं सुवर्णप्रमाणम् ।

मन करे फेर पूर्वकी न्याईं स्नानकरे ऐसें संकल्प कीयाजो व्रतके अर्थ वर्षादि काल तिसकी संख्या होतीहै अर्थात् जितने वर्षांका व्रतहै तितने दिनांके स्नान पूरे करणेहैं तिसवास्ते एक एक दिनांविषे बहुत स्नान कीते चाहिए अपनी शक्तिकी अनुसार रोज रोज १० वा २० आदि करके संख्या पूरी होगी ॥ तद यजमान जोहै स्नान करणे वाले जो ऋत्विज् तिनां तांईं स्नानके फलकी प्राप्ति वास्ते निष्क देवे निष्कका अर्द्ध देवे वा चौथाहिस्सा देवे निष्क शब्द देवमान करकेंदो २ वराहका अर्थात् १८ मासे स्वर्णकाहै ॥ ऋषियांके मानकरके अर्द्ध कहाहै मानुषके मानकरके सोहीवराहग्रहण करणा व्यवस्था कहतेहैं प्रतिराजालोकोंको उत्तम प्रकारहै और समर्थ क्या धनवालेकों मध्यम प्रमाण सुवर्णका॥निष्क कहाहै और इससे अर्द्धानिर्धनकों कहाहै

गौतम जी का वाक्य है ॥ गंगा विषें मूसलेकी न्यांइं जो सहित शिरके स्नानहै
तिसकों प्राजापत्य व्रत के सम कहतेहैं एह वाक्य पंजप्रकारकी गंगाके स्नानविषें जानणा
इतरेति ॥ इतर जो समुद्रविषें प्राप्त होणे वालियां नदियां तिनांविषें स्नानका संकल्प भिन्न भिन्न
करणा और कूलां विषें और तलाव विषें और पुष्करिणी क्या तलाईआं इनां विषें भिन्न संक
ल्प करणा ॥ और खंडानुवाक ऋचांका पठन करणा और सूर्यके सन्मुख स्थित होकर शुद्धि
तें पीछें प्राप्तहोके शुद्ध वस्त्रको धारके और एक सौ अठ १०८ वार गायत्रीके जप करणे
करके प्राजापत्य रूप व्रत होताहै ॥ अत्रेति ॥ इसी प्रसंग विषे स्मृति संग्रह और स्मृत्य
र्थसार आदि शास्त्र विषे कहा जो प्रकार तिसके अनुसार प्रकार दखाईदाहै ब्रह्महत्याको प्रसंग

गौतमः ॥ गंगायांमैसलंस्नानंप्राजापत्यसमंविदुः एतत्पंचगंगास्नानविष
यम् ॥ इतरासु समुद्रगनदीषु प्रतिस्नानं संकल्पः कुल्यायां तटाकपुष्करि
ण्यादिषुच पृथक्संकल्पःखंडानुवाकपठनंच। सूर्य्याभिमुखःसंमार्जनानंतरं
गत्वा धौतवस्त्रादिकं धृत्वाष्टोत्तरशतंगायत्त्रीं जप्त्वा कृच्छ्रात्मकंभवति ॥
अत्र स्मृतिसंग्रहस्मृत्यर्थसाराद्युक्तप्रकारानुसारीप्रकारःप्रदर्श्यते ब्रह्मह
त्यामुपक्रम्यभविष्यत्पुराणे॥विंध्यादुत्तरतोयस्यनिवासःपरिकीर्त्तितः परा
शरमतंतस्यसेतुबंधनिदर्शनमितिविंध्योत्तरवर्त्तिनमुक्त्वातत्रैव चतुर्विद्योपप
न्नस्तुविधिवद्ब्रह्मघातके समुद्रसेतुगमनंप्रायाश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ स्मृ
त्यर्थसारे तत्रसंकल्पपूर्वकं पद्भ्यां षष्टियोजनागतस्य भागीरथ्यां स्नानं
षडब्दकृच्छ्रसमम् ॥

विषे ल्याके । भविष्यत्पुराणविषे कहाहै विंध्येति विंध्याचल पर्वततें उत्तर पासें निवास करणेवाला
जो पुरुषहैं तिसको पराशर जीके मतके अनुसार करकें ब्रह्महत्या पाप के दूर करणे निमित्त
सेतुबंध रामेश्वरका दर्शन कहाहै ॥ १ ॥ ऐसें बिंध्याचलके उत्तर वर्त्ति पुरुषके प्रायश्चित्तकों कथन
करके तिसीविषे वाक्यहै चार विद्याविषे युक्त जो पुरुषहै सो ब्राह्मणके वधकरण वाले विषे वि-
धि करकें समुद्र सेतुके दर्शन वास्ते यात्राको कहे एहि पापके दूरकरणेके निमित्त प्रायश्चित्तहै
॥ १ ॥ और स्मृत्यर्थ सारविषे कहाहै कि पूर्वसंकल्प कों करके चरणां करके रुठां ६० योजनां
की यात्रा करकें गंगा विषें जो स्नानहै सो छे वर्षके ६ प्राजापत्य कृच्छ्र के तुल्य है

अत्रेति इहां यात्राविषे जेसें योजनांकी वृद्धि है योजन चारकोशका नाम है तैसे हि कृच्छ्र व्रतकी वृद्धि कल्पना करणें योग्यहै ॥ और एक योजनकी यात्राकों लेके नदीके स्नान वास्ते आयाजो पुरुष तिसकों रस्ते विषे पर्वतादिका व्यवधान होवे तां त्रय३ कृच्छ्र व्रतांका फल प्राप्त होताहै और तीसरा हिस्सा अधिक एक कोशकी यात्रांको करके भागीरथी गंगा विषे विधि कर्के स्नानकरे तां एक कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै । और सठ ६०योजनकी यात्राकों करके प्रयाग विषे क्या तीर्थ राज विषे विधि कर्के जो स्नान कर्ताहै सो पुरुष बारां वर्ष पर्यंत जो कृच्छ्र व्रत करणाहै तिसके तुल्य फलकों प्राप्त होताहै । ऐसे गंगाद्वार जो हरिद्वारहै तिस विषे और गंगासागर संगम विषे जानणा । और गंगाके स्नान वास्ते सठ योजनतें जो आयाहै तिसकों

अत्र यात्रायांयोजनवृद्धौ कृच्छ्रवृद्धिःपरिकल्पनीया ॥ एकयोजनागतस्यमध्ये पर्वतादिव्यवधाने कृच्छ्रत्रयम् ॥ तृतीयांशाधिकक्रोशादागतस्य भागीरथ्यां विध्युक्तस्नानमेककृच्छ्रः ॥ षष्टियोजनादागतस्य प्रयागस्नानं द्वादशाब्दकृच्छ्रसमम् ॥ गंगाद्वारे गंगासागरसंगमेचैवम् ॥ गंगास्नानार्थंषष्टियोजनादागतस्य षडब्दत्वाद्दशयोजनागतस्याब्दप्रायश्चित्तं भवतीत्यादिकमूहनीयम् ॥ वाराणस्यामगणितं फलं यतोवाराणस्यां पातकं न प्रविशति विंशतियोजनागतस्ययामुनंस्नानं द्व्यब्दकृच्छ्रतुल्यम् ॥ तदेवमथुरायांद्विगुणम् ॥ चत्वारिंशद्योजनागतस्य सरस्वतीमज्जनंचतुरब्दकृच्छ्रतुल्यम् ॥ प्रभासेद्वारवत्यांचाद्विगुणम् । यमुनासरस्वत्योर्यात्रायोजनवृद्धौ पादकृच्छ्रवृद्धिःपरिकल्पनीया

छे६ वर्षके कृच्छ्र व्रतकाफल प्राप्त होताहै इसीहिसाबसे जो गंगाके स्नान वास्ते दश योजनते आया है तिसको एक वर्षके कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै इत्यादिक जानलेणा ॥ और काशी विषे अगणित फल है क्योंकि तिसविषे पापका प्रवेश नहिहोता ॥ और बीस२०योजनतें जो यमुनाकों प्राप्त होयाहै स्नानवास्ते तिसको दोवर्षके कृच्छ्रव्रतका फल होताहै । और यमुनातें मथुरा विषे दूणा फल जानणा । और सरस्वतीविषे स्नान वास्ते चाली ४०योजनतें जो आयाहै तिसकों चारवर्षके कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै ॥ और प्रभासविषे और द्वारकाविषे सरस्वतीतें दूणा फल जानणा । और यमुनाते सरस्वतीके स्नान विषे जैसे जैसे यात्रा विषे योजन अधिक होवे तैसे तैसे पाद कृच्छ्र व्रतकी वृद्धि कल्पना करणी ॥

दृषेति दृषद्वती और शतद्रु और विपाशा वितस्ता शरावती मरुद्वधा असिक्नी मधुमती पयस्विनी घृतवती आदिक देवनदीयां विषे त्रिंशत् ३० योजनकी यात्रा करके जो स्नानहै सो वर्षके कृच्छ्र व्रतके तुल्यहै ॥ और पंदरां १५ योजनांकी यात्राकरके जो स्नानहै सो पंदरां १५ प्राजापत्यके तुल्यहै। चंद्रभागेति चंद्रभागा वेत्रवती सरयू गोमती देविका कौशिकी नित्य जला मंदाकिनी सहस्रका पौनः पुन्या पूर्णपुण्या वाहुदा गंडकी वारुणी आदिक देवनदीयां विषे वारां १२ योजनोंकी यात्राकरके जो स्नानहै सो सोलां १६ कृच्छ्रके तुल्यहै और पंदरां योजनांकी यात्रा करके इनां महानदीयांके आपस विषे संगम विषे जो स्नानहै सो पूर्वतें त्रय गुणा अधिक फलहै और होर जो समुद्र विषे प्राप्त होएं वालीयां नदीयां हैं तिनां विषें वारां १२ योजनकी यात्रा करके जो स्नान करताहै तिसकों छे ६ प्राजापत्यका फल होताहै ॥ और

दृषद्वतीशतद्रुविपाशावितस्ताशरावतीमरुद्वधाअसिक्नीमधुमतीपयस्विनी घृतवत्यादि देवनदीषु स्नानं त्रिंशद्योजनागतस्याब्दकृच्छ्रसमम् ॥ पंचदशयोजनागतस्य मज्जनं पंचदशकृच्छ्रसमम्॥चंद्रभागावेत्रवतीसरयू गोमती देविका कौशिकी नित्यजला मंदाकिनी सहस्रका पौनःपुन्या पूर्णपुण्या वाहुदा गंडकी वारुण्यादि देवनदीषु द्वादशयोजनागतस्य स्नानं षोडशकृच्छ्रसमम् ॥ पंचदशयोजनागतस्य एतासु महानदीष्वन्योन्यसंगमे त्रिगुणम् ॥ अन्यासु समुद्रगासु द्वादशयोजनागतस्य कृच्छ्रषट्कतुल्यम् अनुक्तस्थलेपुयात्रायोजनसंख्यया कृच्छ्रसंख्या ज्ञेया नदेषु नद्यर्द्धं महानदेषुमहानद्यर्द्धं फलं विज्ञेयम् शोणाख्यमहानदे गंगार्द्धफलम् पुष्करेप्रयागसमम्

अनुक्तेति नहि कहे जो तीर्थ और क्षेत्र आदिस्थान तिनांकी यात्रा विषे योजनांकी संख्या करके प्राजापत्यकृच्छ्र व्रतांकी संख्या जानणी और नदोंविषें स्नानका फल नदीसे अद्धा जानणा और महानदां विषे स्नानका फल महानदी के स्नानतें अद्धा जानणा ॥ और शोण नाम करके जो महानद तिस विषे स्नानका फल गंगाजीके स्नानतें अद्धाजानणा और पुष्कर विषे स्नानका जो फल है सो प्रयागके तुल्य जानणा

चतुरिति चव्वी २४ योजनकी यात्रा कर्के नर्मदा विषे जो स्नानहै तिसका फल चव्वी २४ कृच्छ्रके तुल्य जानणा और पूर्णा नदी विषें स्नानका फल अर्द्ध योजनकी यात्रा विषे एक कृच्छ्र होता है और कृष्णवेणी और तुंगभद्रा विषें एक योजनकी यात्रा विषे कृच्छ्र व्रतका फल जानणा और पंपासरो वर विषे स्नान करणेतें एकयोजनकी यात्रा विषे दो २ कृच्छ्रांका फलजानणा और हरिहर तीर्थ विषे स्नानका फल एक एकयोजनके प्रति तीन ३ कृच्छ्रांका फल जानणा और कुब्जिकासंगम विषे योजन प्रति दो २ कृच्छ्रजानणे और शुक्लतीर्थ विषे एकयोजन प्रति चार ४ कृच्छ्रांका फल जानणा और तापीविषे दश योजनयात्रासें स्नानका फल दश १० कृच्छ्रके तुल्य जानणा और पयोष्णीविषे स्नानका फल अठ ८ योजनकी यात्रा विषे अठ कृच्छ्र जानणे तिस तिस संगमविषे

चतुर्विंशतियोजनागतस्य नर्मदावगहनं चतुर्विंशतिकृच्छ्रतुल्यम् पूर्णायांयोजनार्द्धे कृच्छ्रः कृष्णवेणीतुंगभद्रयोः प्रतियोजनंकृच्छ्रसमम् पंपायांत्रिगुणम् हरिहरेत्रिगुणम् कुब्जिकासंगमेत्रिगुणम् शुक्लतीर्थे चतुर्गुणम् ताप्यां दशयोजनागतस्य दशकृच्छ्रसमम् पयोष्ण्यामष्टयोजनागतस्याष्टकृच्छ्रसमम् तत्रतत्रसंगमेत्रिगुणम् गोदावर्य्यां षष्टियोजनागतस्य त्र्यब्दसमम् त्रिंशद्योजनागतस्यैकाब्दम् ॥ सुतीर्थेषुप्रतिलोमानुलोमस्नानं षष्टिकृच्छ्रसमम् वंजरासंगमे प्रयागेद्विगुणम् सप्तगोदावरीभौमेश्वरेत्रिगुणम् कुशतर्पणेवंजरायां द्वादशयोजनागतस्य द्वादशकृच्छ्रसमम् गोदावर्य्यां विश्लेषे समुद्रांतंषड्गुणम् ॥ प्रणीतायांचतुः कृच्छ्रसमम्

तीगुणा फल जानणा और गोदावरीविषे सठ ६० योजनकी यात्रा विषे तीन ३ वर्षांके प्राजापत्यका फल होताहै और तीस ३० योजनकीयात्रा कर्के एक वर्षके कृच्छ्रका फल होताहै और सुतीर्थां विषे यात्रा कर्के और यात्राकी निवृत्तिकर्केअर्थात् जांदीवार और आउंदीवार मध्यतीर्थके स्नान विषे स्नानका फल सठां ६० कृच्छ्रांके तुल्य जानणा और वंजरासंगम प्रयाग विषे दूणा फल जानणा और सप्तगोदावरी भौमेश्वर विषे स्नानका त्रयगुणां फल अधिक जानणा और कुशतर्पण वंजराविषे बारां १२ योजनकी यात्रा कर्के स्नानका फल बारां १२ कृच्छ्रके तुल्य जानणा और गोदावरी विश्लेष विषे समुद्रपर्यंत स्नानविषे योजन प्रति छे ६ गुणा फल जानणा और प्रणीताविषें एक योजनकी यात्रा विषे चार ४ कृच्छ्रका फल जानणा

तुंगेति और तुंगभद्राविषें वीस २० योजनकी यात्रा कर्के स्नानका फल वीस २० कृच्छ्रके तुल्य होताहै और मलापहारिणी विषे अठ ८ योजनकी यात्राका फल अठ ८ प्राजापत्य कृच्छ्रके तुल्यहै और निवृत्ति विषे छे६ योजनकी यात्रा कर्के छे६ कृच्छ्रका फल होताहै और गोदावरी विषे एक एक योजनकी वृद्धि विषें पादकृच्छ्र जानणा और सिंहराशि विषे सूर्यके स्थित होयां होयां संपूर्ण तीर्थांविषें स्नानका फल गंगा स्नानके तुल्य जानणे योग्यहै कन्या राशिविषे वृहस्पतिके स्थित होयां होयां कृष्णवेणी और मलापहारिणीके संगमविषे जो स्नानका फल है सो सदा गंगा स्नानतें अर्द्ध जानणा ॥ और तुलराशिविषे सूर्यके स्थित होयांहोयां तुंगभद्रा विषे स्नानका फल गंगाके स्नानतें अर्द्ध जानणा ॥ और कर्क राशिविषे सूर्यके स्थितहोयां कृष्णवेणी और मलापहारिणीके संगम विषे ऐसे प्रयागविषे तीस ३० योजनकी यात्राकर्के

तुंगभद्रायांविंशतियोजनागतस्य विंशतिकृच्छ्रसमम् मलापहारिण्याम ष्टयोजनागतस्याष्टकृच्छ्रसमम् निवृत्त्यां षड् योजनागतस्य षट्कृच्छ्रसमम् गोदावर्य्यां यात्रायोजनवृद्धौयोजनेपादकृच्छ्रः सिंहस्थेरवौसर्वत्रजान्हवी समम् कन्यास्थेगुरौ कृष्णवेण्यांमलापहारिणीसंगमे सर्वत्र जाह्नव्यर्द्धम् ॥ तुंगभद्रायां तुलास्थेरवौजान्हव्यर्द्धम् ॥ कर्कटे कृष्णवेलायांमलापहारिणी संगमेप्रयागे त्रिंशद्योजनागतस्य त्रिंशत्कृच्छ्रसमम् ब्रह्मेश्वरेपंचगुणम् भी मरथ्याःसंगमे प्रयागे द्विगुणम् ॥ निवृत्तिसंगमे चतुर्गुणम् ॥ पाताल गंगायां मल्लिकार्जुनेचषड्गुणम् ॥ ततः पूर्वे षष्टिकृच्छ्रसमम् ॥ लिंगालये द्विगुणम् ॥ समुद्रगमनेचैवम् ॥ अत्र सर्वत्र त्रिंशद्योजनागतस्येतिसंबं धः ॥ दशयोजनागतस्य कावेर्य्यां महानद्यां पंचदशकृच्छ्रसमम् ॥

प्राप्त होया जो पुरुष तिसकों स्नानकाफल तीस ३० कृच्छ्रके तुल्य जानणा ॥ भीमेति और भीमरथीके संगम रूप प्रयागविषे एक एक योजनप्रति दूणा फल जानणा ॥ और निवृत्ति संगम विषे पूर्वोक्त चार ४ गुणां फल जानणा ॥ और ब्रह्मेश्वर विषे पंच ५ गुणां अधिकपूर्वोक्त फल एकएक योजनविषें जानणा । और पाताल गंगाविषे और मल्लिकार्जुनविषे योजनप्रति छे६ गुणां अधिक फल जानणा तिस पूर्वतीर्थ विषे सठां ६० कृच्छ्रांके तुल्य जानणा । और लिंगालय तीर्थ विषे दो २ गुणां अधिक कृच्छ्र जानणा । और समुद्रयात्राविषे भी दूणा फल जानणा इहां संपूर्ण स्थानांविषेतीस ३० योजनकी यात्राका संबंध कर लेणा ॥ और कावेरी महानदीविषे दश १० योजनकी यात्राकर्के प्राप्त होया जो पुरुष तिसको पंदरां १५कृच्छ्रके तुल्य स्नानकाफल होताहै

तात्रेति ताम्रपर्णी और कृतमाला और पयस्विनी इनांविषे वारां १२ योजनकी यात्रा करके प्राप्त होया जो पुरुष तिसकों स्नानकर्के वारां १२ प्राजापत्य कृच्छ्रके तुल्य फल होताहै॥ और सह्यपर्वतके पादांतें उत्पन्न होइयां जो नदीयां और वेंकटपर्वततें उत्पन्न होइयां जो नदीयां सो अपणी अपणी दीर्घताके अनुसारकर्के यात्राविषे योजनांकी वृद्धि कर्के एक १ दो २ त्रय ३ कृच्छ्रव्रतांके फलकोंदेणे वालीयांहैं और विंध्यपर्वततें उत्पन्न होइयां जो नदीयां सोपूर्वोक्तसैंदो गुणां अधिक फलकों देणेवालीहैं और हिमालयपर्वततें उत्पन्न होइयां जो नदीयां सो पूर्वोक्तसह्यपादजातनदीयांसें त्रयगुणांअधिक फलकों देणेवालीयांहैं और पिच्छे सह्यपाद वेंकटाद्रितें उत्पन्न होईयां नदीयांके पुण्यका विवेककरतेहैं स्मृताविति स्मृतिविषे और पुराणविषे जैसे कैसे नहि कथन कीयां जोकूल्हां सो त्रयरात्र निवास कर्के कृच्छ्र आदि फलके देणेवालीयां हैं और अल्पनदीयां एक कृच्छ्र फलके देणेवालीयां हैं ॥ और नदीयां दो २ कृच्छ्र फलकेंदेणे वालीयां हैं और महानदीयां त्रय कृच्छ्र फलके देणेवालीयां हैं

ताम्रपर्णी कृतमाला पयस्विनीषु द्वादशयोजने द्वादशकृच्छ्रसमम् ॥ सह्यपादोद्भूतावेंकटाद्रिपादोद्भूताश्च नद्यः स्वस्वदैर्घ्यानुसारेणैकद्वित्रिकृच्छ्रफलप्रदाः ॥ विंध्यशैलोद्भवाद्विगुणाः ॥ हिमोद्भूतास्त्रिगुणाः ॥ स्मृतौ पुराणेच यथाकथंचिदनुक्ताःकुल्यास्त्रिरात्रिफलदाः॥ अल्पनद्यःकृच्छ्रशः॥ नद्योद्विगुणकृच्छ्रशः महानद्यस्त्रिकृच्छ्रशः। सर्वत्र यात्रानुक्तौकृच्छ्रसंख्या योजनसंख्यया स्यात् ॥ एकयोजननादिषड्योजनान्ताः स्रवंत्यःकुल्याः ततोद्वादशयोजनगाअल्पनद्यः। चतुर्विंशतियोजनगानद्यः चतुर्विंशतियोजनाधिकानिवर्त्मानियासांताश्चमहानद्यः॥उपवाससहितंनदीस्नानं। योजनादर्वागपि। कृच्छ्रसमम्

जिसजगा यात्रा नहि कही तिस संपूर्ण स्थान विषे कृच्छ्र व्रतांकी संख्या योजनकी संख्या कर्के जानणी ॥ अत्र कूलका लक्षण कहतेहैं एकेति एक योजनतें लेके छे ६ योजन पर्यंत जों वगतीयांहैं तिनांका नाम कुल्याहै ॥ और वारां योजन पर्यंत जो पर्वाह वालीहैं सो अल्पनदीयांकहीयां हैं और चव्वी २४ योजन तक पर्वाह वालीयां हैं तिनकानाम नदी है और चव्वी २४ योजनतें अधिकहै मार्ग जिनांका सो महानदीयांकहीयां हैं और एक उपवास व्रतकों कर्के जो नदी विषे स्नानहै सो कृच्छ्र व्रतके तुल्यहै ॥ योजनतें न्यूनभी यात्रा होवे तदभीउपवासकर्के जो स्नानहैसो कृच्छ्र व्रतके तुल्यकहाहै ॥

शुनीति जिसनदीके प्रवाहते ऊपर और अधोभागके दोनों कनारयां विषे निवास करतेहैं श्वा क्या कुत्ते ऐसी नदीका नाम शुनीकहाहै तिसकी म्लेच्छ देशविषे संभावना करतेहैं कि कोई होवेगी ऐसे गर्दभी आदिकजानणी गधयांकर्के सेव्यमान नदी गर्दभी और चांडालांकर्के सेव्यमान नदी चांडाली और शूद्रांकर्के सेव्यमाननदी शूद्रीहै कष्टप्रवाहकर्के जो चलतीवांहैं अर्थात् अल्प है जल जिनांविषे ऐसीं जो नदीयांहैं और कर्मनाशा और करतोया और गंडकीतें आद लेके जो हैं एह सभ पापनदीयां हैं सो कहतेहां स्मृत्यंतर विषे कर्म्मेति कर्मनाशाके जल स्पर्श करणे कर्के धर्मका क्षय होताहै, और करतोया नदीके लंघणे कर्के और गंडकी नदीविषे भुजाकर्के तरणेतें और जो शुभ कर्म आपकीताहै सो अन्य पुरुषके तांई कहणेतें नष्ट होताहै ॥ १ ॥ पपानद्यःएह कथन भी पूर्व संबंधी है ऐसा कैंयांका मत है सर्वत्र समुद्र विषे स्नान

शुनीगर्दभीचांडालीशूद्रीकष्टगानद्यःपापनद्यश्चवर्जनीयाः। शुनीश्वभिःसे व्या यस्याऊर्ध्वाधोभागीयोभयतटवासिनः श्वानःसाशुनीत्यर्थः। एवंभूता पियावनादिदेशे काचित्संभाव्यते। एवंगर्दभैश्चांडालैःशूद्रैस्सेव्यासासाभि धेया कष्टेनकार्श्यभावाद्गच्छतीतिकष्टगा अल्पजलेत्यर्थः पापनद्यःकर्मना शाकरतोयागंडकीप्रभृतयः॥ कर्मनाशाजलस्पर्शात्करतोयाविलंघनात् गंडकीवाहुतरणाद्धर्मःक्षरतिकीर्त्तनादितिस्मृत्यंतरवचनात् इदमपिपूर्वसं वंधीतिकेचित्॥ सर्वत्रसमुद्रस्नानंदर्शेकार्य्यम्। देवतासमीपेद्विगुणम् तत्र स्नात्वातद्देवतादर्शनेत्रिगुणंसेतौगमनंत्रिंशद्योजनागतस्यत्रिंशत्कृच्छ्रस मम् ॥ तत्रस्नात्वारामेश्वरदर्शनेषष्टिकृच्छ्रसमम् विंध्यदेशीयानांरामेश्व रसेतुदर्शनेजाह्नव्यांचत्रिगुणफलम्। जाह्नवीकेदारयोश्च तथैव।

अमावस्यामे कहाहै ॥ और समुद्रके समीप देवताका स्थान होवे तां तिसविषे वीस ६०कृच्छ्रका फलप्राप्त होताहै तिससमुद्रविषे स्नानकर्के देवताका क्या जगन्नाथआदिका दर्शन करे तां त्रय गुणां अधिक फल क्या नब्वे ९० कृच्छ्रकाफल प्राप्तहोताहै और तीस ३०योजनकी यात्राकर्के सेतु बंधकों प्राप्त हो ३० योजनतें प्राप्तहोया जो पुरुष तिसकों स्नानकरणेतें दूणा क्या णेतें तीस ३० कृच्छ्रके तुल्य फलप्राप्त होताहै ॥ तिस सेतुबंध विषे स्नान कर्के रामेश्वरके दर्शन विषे सठ्ठां६० कृच्छ्रांकाफल प्राप्त होताहै और विंध्य देशविषे निवासकरणवाले जो पुरुष तिनांको रामेश्वर सेतुके दर्शन विषे और गंगाकेस्नान विषे पूरर्वोक्ततें त्रयगुणां अधिक कृच्छ्रका फलप्राप्त होताहै गंगा और केदारेश्वर विषे भी त्रयगुणां अधिक फल होताहै

दक्षीति दक्षिणदेश निवासीयांको गंगाविषे योजनयात्रातें छे६ गुणांअधिक फलहोताहै और गंगा देश निवासीयांको यात्रा योजनतें सेतुरामेश्वरके दर्शनतें छे ६ गुणाअधिकफल होताहै और तीस ३० योजनकी यात्रातें स्वामिकार्तिकके दर्शनविषे वीस २० कृच्छ्रके तुल्य फल होताहै ॥ जिसस्थान विषे गंगा संज्ञा है तिसी स्थान विषे श्रीरंग और पद्मनाभ और पुरुषोत्तम और चक्रकोट इनांका दर्शन होवे और लोणारस्थान विषे तीस ३० योजनकी यात्राकर्के दर्शनके निमित्त प्राप्त होया जो पुरुष तिसकों तीस३० कृच्छ्रके तुल्यफल प्राप्त होताहै और केदार विषे तीस३० योजनकी यात्राकर्के नब्बे ९० कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै और संपूर्ण जो वैष्णव स्थान और माहेश्वर स्थान और सूर्यजीके स्थान और शक्तिआदिक जो स्थान इनांपीठांके दर्शन कर्के तीस ३० योजनकी यात्रा विषे पंदरां १५ कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै और प्रख्यात

दक्षिणदेशीयानांचजाह्नव्यांषड्गुणम् गंगादेशीयानांचसेतुरामेश्वरेषड्गुणं स्कंददर्शनेत्रिंशद्योजनागतस्याविंशतिकृच्छ्रम् यत्रगंगासंज्ञास्ति तत्रैव श्रीरंगपद्मनाभपुरुषोत्तमचक्रकोटदर्शने लोणारस्थाने त्रिंशद्योजनागतस्य त्रिंशत्कृच्छ्रम् केदारेत्रिगुणम्। सर्ववैष्णवमाहेश्वरसौरशक्त्यादिपीठदर्शने पंचदशकृच्छ्रम् प्रख्यातेद्विगुणम् अहोवलेपितथा श्रीशैलप्रदाक्षिण्यंषष्टिकृच्छ्रम् श्रीशैलेप्येकैकशृंगदर्शने द्वादशकृच्छ्रसमम् ॥ अन्येषुप्रख्याततीर्थदेवदर्शनेषु षट्कृच्छ्रसमम् सिद्धक्षेत्रेऽन्यक्षेत्रेचस्वयंविभुदर्शने त्रिंशत्कृच्छ्रसमम्। त्रिंशद्योजनागतस्य सर्वत्र कृच्छ्रसंख्या योजनसंख्यया ज्ञेया

पीठ विषे तीस ३० योजनकी यात्रा कर्के सठ ६० कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै और अहोवल पीठ विषेभी सठ ६० कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै तैसे श्रीशैल पर्वतकी प्रदक्षिणाका फल तीस ३० योजनकी यात्रा कर्के सठां ६० कृच्छ्रांके तुल्य होताहै और श्रीशैलविषेभी एक एक शृंगके दर्शन करणेकर्के बारां १२ कृच्छ्रांके तुल्यफल प्राप्त होताहै होर जो प्रकट तीर्थहैं और देवता इनांके दर्शनविषे तीस३० योजनकी यात्राकर्के छे६कृच्छ्रकेतुल्य फल प्राप्त होताहै और सिद्ध क्षेत्र विषे और अन्य क्षेत्र विषे और अपणे अपणे इष्ट देवताके दर्शनाविषें तीस ३० योजनकी यात्रा कर्के तीस ३० कृच्छ्रके तुल्यफल प्राप्त होताहै तीस योजनकी यात्रा कर्के ईहां संपूर्ण स्थान विषे कृच्छ्रव्रतांकी संख्या योजन संख्या कर्के जानणे योग्यहै

अब देवलजी कहतेहैं अतीति तीर्थांको प्राप्त होके और जो पवित्र स्थान तिनांकों प्राप्त होके
और ब्राह्मण जो तपस्वी तिनांके स्थानकों प्राप्तहोके जो पुरुष कर्माकों करताहै सो पापतें
रहित होताहै ॥ १ ॥ समुद्रविषें प्राप्तहोणे वालियां सब नदियांपुण्यके देणेवालियांहैं और संपूर्ण
जो उत्तम पर्वत हैं सोभी पुण्यके देणे वाले कहेहैं और संपूर्ण उत्तम स्थान पवित्रहै अर्थात् इनां
सभ जगा मुनियोंके निवासहै और जो वनकेआश्रय जो जलस्थानहैं सो संपूर्ण पवित्र कहेहैं २
अवजामदग्न्यका वचनहै ॥ तीर्थांविषें स्नान करणेतें पादकृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहै और नदी
विषे स्नानसें अर्द्ध कृच्छ्रके फलको प्राप्त होताहै और महानदीविषे स्नानतें दूणे फलको प्राप्त हो

देवलः । अतिगम्यचतीर्थानिपुण्यान्यायतनानिच नरःपापात्प्रमुच्येतब्राह्म
णानांतपास्विनाम् १ सर्वास्समुद्रगाः पुण्याः सर्वेपुण्यानगोत्तमाः सर्वमाय
तनंपुण्यंसर्वेपुण्यावनाश्रयाइति २ ॥ जामदग्न्यः॥तीर्थेतुपादकृच्छ्रःस्यान्न
द्यांत्वर्द्धफलंभवेत् द्विगुणंतुमहानद्यांसंगमेत्रिगुणंभवेदिति ॥ १ ॥ अथपरार्थ
तीर्थगमनेफलम् परार्थगंता तीर्थे षोडशांशफलं लभते प्रसंगेनगंतार्द्ध
फलंलभते अन्योद्देशेनकृतकर्मणान्यस्यसिद्धिरूपोऽवांतरकार्यनिर्वाहः प्र
संगः ॥ अनुषंगेण तीर्थे प्राप्य स्नानेस्नानफलमेव॥ अन्योद्देशेनप्रवृत्तौतत्
क्रियानांतरीयकतयान्यस्यसिद्धिरनुषंगः ॥

ताहै और संगम विषे स्नानते त्रिगुणअधिक फलको प्राप्त होताहै इति ॥ १ ॥ इसते उपरंत हो
री पुरुष वास्ते जो तीर्थको जाताहै तिसके फलकों कहते हैं ॥ परपुरुषके वास्ते जो तीर्थ
कों जाता है सो पुरुष पुण्यके सोलवें हिस्सेकों प्राप्तहोताहै जो किसेके प्रसंग अर्थात् अन्य पुरु
षके निमित्त करकें यात्रा करणी और उसकी यात्रा विषे अपणी यात्राके निर्वाहकों करकें जा-
ताहै सो अर्द्ध फलको लभताहै और जो किसेके संग करकें अर्थात् अन्य पुरुषके निमित्त क
कें जो स्नानकों जाताहै अंतरीय करकें नहि जाता तिसको तीर्थ विषें प्राप्त होके यात्रा फ-
लतें विना स्नानका हि फल होताहै

मातेति मातामह क्या नाना और मतरेर भ्राताका मातामह क्या नाना और पिताका भ्राता और मातका भ्राता और श्वशुर क्या अपणी स्त्रीका पिता इनांके वास्ते जो स्नान करता है और गुरु और आचार्य जो कर्मांके करवाणे वाला और शास्त्रके पढाणे वाला इनांके वास्ते जो स्नानहै और इनां कियां स्त्रीयांवास्ते जो स्नान कर्ताहै और पिताकी भयण और माताकी भयण इनांवास्ते जो स्नानकर्त्ताहै सो आप अठवें ८ हिस्से फलकों प्राप्तहोताहै ॥ और माता पिताके वास्ते पुत्र स्नानकरे तां चौथे हिस्से फलकों प्राप्तहोताहै स्त्री और भर्त्ता और सपत्नीक्या साकणां इहसब आपसविषें स्नान करें तां अर्द्ध फलकों प्राप्तहोतेहैं ॥ और धनको लेके जो पुरुष तीर्थ कों जाताहै तिसको अल्प फलहै ॥ अब और विशेष कहते हैं कर्केति श्रावण और भाद्रो इनां

मातामहभ्रातृमातामहपितृव्यमातुलश्वशुरेशषकार्थम् ॥ गुर्वाचार्य्यो पाध्यायार्थं ततूपत्न्यर्थंपितृष्वसृमातृष्वस्त्रर्थंच स्नात्वा स्वयमष्टमांशंलभते पित्रोरर्थंकुर्वन्पुत्रश्चतुर्थांशम् । दम्पतीचसपत्न्यश्चलभंतेर्द्धंमिथःफलम् अर्थिनांचतत्फलह्रासः ॥ कर्कादिमासद्वये रजस्वलानद्य स्तास्वपि गोमती चंद्रभागासिंधुर्नर्मदासरयूश्चत्रिरात्रं वापीकूपतडागादिषु स्थितपुराणोदके षुत्रिरात्रम् ॥ सरस्वतीगंगायमुनागयादयोनकदापि रजस्वलाः ॥ इति प्राजापत्यकृच्छ्रस्यनदीस्नानप्रत्याम्नायः॥ । प्राजापत्यस्य ब्राह्मणभोजन रूपप्रत्याम्नायमाहदेवलः ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्य प्रत्याम्नायममुंशृणु यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्महद्भिरपिनारद ॥ १ ॥ पूर्ववत्संकल्पादिकं कृत्वा द्वादश ब्राह्मणान्निमंत्रयेत् ॥

दोनो महीनयां विषें नदियां रजस्वला होतीयांहैं तिनां संपूर्णा नदियां विषें गोमती नदी और चंद्रभागा और सिंधु और नर्मदा और सरयू एह त्रय रातीं अशुद्ध होतियांहैं और जिनांविषे चिर काल जल रहता है तिनां वाउलियां और कूप क्या खूह और तला विषें त्रय रात्र अशुद्धि कहीहै । सरस्वती और गंगा और यमुना और गयाते आद लेके जो नदियां हैं सो कदीभी रजस्वला नहि होतियां एह प्राजापत्यकृच्छ्रके स्थान वदला नदियां विषे स्नानकहाहै ॥ अब प्राजापत्य कृच्छ्रके बिषे जो प्रत्याम्नायहै ब्राह्मणोंकेतांई भोजनदेणा तिसकों देवलऋषि कहताहै प्रेति प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नाय क्या वदलेकों हेनारद श्रवण कर जिसके करणेसें पापी महा पापातें रहित होताहै ॥ १ ॥ पूर्वकी न्यांइ संकल्पकों करकेवारां ब्राह्मणाकों निमंत्रणकरे

अब पराशरजीकहतेहैं प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नायविषे ब्राह्मणांका पूजनकहाहै जिसके करणे कर्के पापी पुरुष पापांतें शुद्धिकों प्राप्त होताहै और प्राजापत्यके फलकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ पूजनकीविधि कहतेहैं ब्राह्मणाकों निमंत्रण करे कैसे ब्राह्मणहैं जो मनकर्के शांत और सहित स्त्रीयाके और वेदके पड़ने विषे युक्त और शुभ कर्मांके करणें कर्के शुद्ध हैं असयां ब्राह्मणांकों कृच्छ्र व्रतके फलकी प्राप्ति वास्ते पूजे ॥ २ ॥ अब आपस्तंबऋषिका वचनहै वीति ब्राह्मण मंत्रों कर्के युक्त और देशतें और कालतें और शौचतें और शुभ दान ग्रहणकरणेतें जो शुद्ध हैं तिनांकों संपूर्ण कृत्यविषे जोडे ॥ १ ॥ असे ब्राह्मणांकों निमंत्रण कर्के बहुत विस्तार वालेयां अन्नांकर्के भोजन खवाये और तिनांके तांई अपने धनके अनुसार दक्षिणा देणे योग्यहै २ ॥ इसतरह जो भली प्रकार कर्ताहै सो प्राजापत्यकें फलकों प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥ अब प्राजापत्यके

पराशरः ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायंद्विजार्चनं कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिप्राजापत्यफलंलभेत् १ विप्रान्शांतान्सपत्नीकान्वेदशीलपरिष्कृतान् सदाचारशुचीन्नित्यंकृच्छ्रार्थंतान्नियोजयेत् २ आपस्तंबोपि विप्रान्शुचीन्मंत्रवतःसर्वकृत्येषुयोजयेत् देशतः कालतः शौचात्सम्यक्प्रतिग्रहीतृतः १ ॥ एवंविप्रान्निमंत्र्यायभोजयेद्बहुविस्तरैः तेभ्यश्चदक्षिणादेयायथावित्तानुसारतः २ ॥ एवंयःकुरुतेसम्यक्प्राजापत्यफलंलभेत् ३ ॥ अथप्राजापत्यस्य प्रत्याम्नायंवेदपारायणमाहदेवलः ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यवेदपारायणं महत् प्रत्याम्नायंप्रशंसन्तिशाखामात्रंप्रहारणम् ॥ १ ॥ पारायणेनभगवान्कृतकृत्योभवेत्तदा फलंसंपूर्णंकृच्छ्रस्यप्रददातिनसंशयः ॥ २ ॥ प्रातःकालेशुचिर्भूत्वास्नात्वानित्यंसमाप्यच ॥ स्वगृहेदेवतागारेनद्यांवादेवतालये ॥ ३ ॥ प्राङ्मुखोदङ्मुखोवापिसंकल्पंपूर्वमाचरेत् ॥

वदले विषे संहिताके पाठकों देवलऋषि कहताहै प्रेति प्राजापत्यकृच्छ्रविषे संपूर्ण संहिताका उच्चारणकरणा तिसकों श्रेष्ट कहतेहैं ॥ शाखामात्र क्या अपनी अपनी एकशाखाकाहि पारायण करणा सारे वेदका नहि सो पारायण (प्रहारण) है क्या सर्व पाप नाशकहै १ ॥ इसपारायणकर्के भगवान् कृत कृत्य हुंदाहै अर्थात् प्रसन्न हुंदाहै और कृच्छ्रके संपूर्ण फलकों तिसतांई देताहै इसविषे संशय नहि है ॥ २ ॥ और प्रातःकालविषे शुद्धहोके स्नान करे और संध्यावंदनादि नित्य कर्मको करके अपणे गृह विषे वा देवताके मंदिर विषे वा नदी विषे वा देवताके स्थान विषे जाये और इसमें एह अभिप्रायहै कि जिस जगा देवतापहलेथा सो देवतागार किहाहै और जिस जगा देवता विद्यमानहि है सो देवता लयजानणा ॥ ३ ॥ पूर्वपासे मुखकर्के वा उत्तर पासे मुखकर्के फेर संकल्पकों पूर्वकीन्यांई करे

पारायण करणविषे एह विधिहै कि आदविषे ओंकारकोंपडके पारायणकापाठकरे ॥ ४ ॥ और पूर्वादि दिशा पासे न देखे और पापियां पुरुषांके साथ संभाषण त्यागे और मौन व्रतकया पाठते विनाहोर कुछ न कहे मौनको धारके हौली हौली वेदकोंपडे ॥ ५ ॥ अव पारायणविषे दोष कहतेहैं शीघ्रेति जो शीघ्र पाठ करणेवाला और पाठ करदयां शिरको हलाणेवाला और आपही लिखके पडणेवाला गद्गद क्या जिसकीवाणी स्पष्ट न होवे ऐसा जो है और स्वरतेहीन पठने वाला ॥ एह पंज पाठ करणे वालयांविषे अधम कहेहैं ॥ ६ ॥ इस कारणते हौली हौली विद्याका अभ्यासकरे क्या पाठकरे आत्माकी शुद्धिवास्ते सो पारायणकी समाप्तिके होयां होयां

पारायणेतुप्रणवंकृत्वापारायणंपठेत् ॥ ४ ॥ दिशस्त्वनलोकयैवह्यसंभाष्यैवपापिनः मौनव्रतंसमागम्यपठेद्वेदंशनैःशनैः ॥ ५ ॥ शीघ्रपाठीशिरःकंपीस्वयंलिखितपाठकः । गद्गदस्स्वरहीनश्चपंचैतेपाठकाधमाः ॥ ६ ॥ अतःशनैःशनैर्विद्यामभ्यसेदात्मशुद्धये यावत्समाप्तिर्भवतितावत्कृच्छ्रफलंलभेत् ॥ ७ ॥ स्वयमेवपठेद्वेदमुत्तमंपरिकीर्त्तितम् प्रमामापोमध्यमः स्याद्भृतकेनिष्फलंभवेत् ॥ ८ ॥ प्रमयायथार्थज्ञानेन मापयतिअहंयथार्थपाठीति वोधयतीति प्रमामापअन्यार्थपाठकः । सतु प्रयोजकस्य फलंदातुं प्रवृत्तत्वात् मध्यमः यद्वा प्रमांप्रकृष्टलक्ष्मींमापयति तुभ्यं वहुधनंदास्यामीतिविश्वासयति प्रमामापःप्रयोजकः ॥ भृतकेअनध्यायेइति

कृच्छ्र के फलको प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ अव और रीतिसे पाठकको उत्तमादि व्यवस्था कहतेहैं स्वयमेवेति आप वेदको पडे तां उत्तम कहाहै प्रमामापजोहै ॥ यथार्थ ज्ञानकरके जो अन्य पुरुष तांई वोधन करवाए क्या मैं यथार्थ पाठ करताहां ऐसें अन्यपुरुषके तांई फलके देणेनूं जो पाठ करताहै सो मध्यम पाठक कहाहै। यद्वा दूसरा अर्थहै वहुत धनको जो वोधन करवाताहै क्या मैं तेरेतांई वहुत धन देवांगा ऐसें प्रेरणा कर्त्ताहै ऐसा पाठ वेदका करवाणे वाला मध्यम फल भागी कहाहै और अनध्याय विषे पाठ करे तां निष्फल होताहै ॥ ८ ॥

अथ क्या इस पुराण प्रत्याम्नायकों कहकर्के अव प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नायविषें गायत्रीके जपकी विधि कहीहै अयुतमिति वेदकी माता जो गायत्री तिसके दश हजार १०००० जपके करणेंतें पुरुष संपूर्ण पापांते रहित होताहै अव जप करणेकी विधि कहतेहैं प्रातरिति जपकरता ऐसा करे कि पहले प्रातःकालविषें यथा चार क्या जिस २ वर्ण कों जो विधानहै जैसें ब्राह्मणकों १३ तेरां क्षत्रियकों १२ वैश्यकों ११ शूद्रकों १० स्त्री कों ४ अंगुलकीदातन कहीहै इत्यादि विधि कर्के दातनकोकरें फेर स्नान करे ॥ १ ॥ और अग्नि होत्र वाले स्थान विषें स्थित होके अथवा देवताके मंदिर विषें वा नदीके कनारे विषें वागोवांके स्थान विषें वा बृंदावन देश विषें इनां मेसें भांवें किसे स्थान विषें जपे १०००० ॥ २ ॥ अव जप माला कों दस्वाते है पर्वभिरिति हस्थके पर्वांकर्के वा जपकी माला कर्के वा

अथ प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायेगायत्रीजपविधिः ॥ अयुतंवेदमातुश्चसर्वपापैःप्रमुच्यते प्रातःस्नात्वायथाचारंदंतधावनपूर्वकम् ॥ १ ॥ अग्निहोत्रालयेदेवगृहेवापिनदीतटे गोष्ठेवृंदावनेदेशेजपेदयुतसंख्यया ॥ २ ॥ पर्वभिर्जपमालाभिः कुशग्रंथिभिरेवच स्वयंमौनमुपस्थायदिशश्चानवलोकयन् ॥ ३ ॥जपेन्महापापजालहननार्थंदिनेदिने अव्यग्रचित्तःप्रजपेदन्यथा दोषमश्नुते ॥ ४ ॥ मार्कंडेयः ॥ संदिग्धस्तुहतोमंत्रोव्यग्रचित्तोहतोजपः अब्राह्मण्यंहतंक्षात्रमनाचारंहतंकुलम् ॥ १ ॥

कुशाकियां गंडां कर्के आप मौनकों धारके परंतु और किसे दिशा विषेंभी दृष्टि न करे क्या एकाग्र चित्त कर्के ॥ ३ ॥ महा पापके समूहके नाश वास्ते दिन दिनविषें सावधानहोकर जपे दश हजार संख्यातक और ऐसें न जपे तां दोषकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ अव जपविषे मार्कंडेय जी कहतेहैं संदिग्ध इति संशय वाला मंत्र हत है क्या नहि सिद्धिके देणे वालाहै और एकाग्र चित्तवें विना जपभी हतहै क्या नहिसिद्धिके देणे वाला और जो क्षत्री ब्राह्मणको नहि मानता सो क्षत्रीभी नष्ट है और आचार ते हीन कुलभी नष्टहै ॥ १ ॥ इसमे एह अभिप्रायहै कि किसे पुस्तकमें क्षात्रकी जगा (शास्त्र) एह पाठहै तिसका अर्थ एह है कि जिस शास्त्रमें ब्राह्मणकी निंदा हैसो शास्त्र हत है ॥

इस कारणतें मन विषे जप करणे योग्यहै मन कर्के जो जप कीताहै सो कोड १००००००
गुणां अधिक फलके देणे वालाहै और दश हजार जप करे तां पूर्ण प्राजापत्य कृच्छ्रके
फलकों प्राप्तहोताहै ॥ २ ॥ कुछ और कहतेहैं अंगुलीति जो जप अंगुलीयांके अग्रकर्के जप
याहै और जो मेरुके मणकेकों लंघकर्के जपयाहै और दो प्रकारके चित्तकर्के जपयाहैक्या एका
ग्र चित्तकर्के नहि सो संपूर्ण निष्फल होताहै ३ पराशरजीकावचनहै हत्थकीयां पंजां अंगुली
यां विषे अंगुष्ठतें जो चौथी अंगुलिहै तिसकर्के विसकारले पर्वतें लेके दोपर्व हथवाले पास
यों लेके ग्रहण करे और अंगुष्टतें पंजवी अंगुलि जो कनिष्ठिकाहै तिसके त्रय पर्व हथवाले पास
यों लेके अग्रतक क्रमसें लये ॥ १ ॥ फेर चौथी अंगुली और तीसरी तिनां दोनोंके अगलयां

अतोमनसिजप्तव्यंमानसंकोटिरुच्यते अयुतंचजपेत्पूर्णप्राजापत्यफलंलभे
त् ॥ २ ॥ अंगुल्यग्रेणयज्जप्तंयज्जप्तंमेरुलंघने द्विधाचित्तेनयज्जप्तंतत्सर्वं
निष्फलंभवेत् ॥ ३ ॥ पराशरः ॥ हस्तस्यानामिकामध्यपर्वादारभ्यय
त्नतः तद्द्वितीयंकनिष्ठायाःपर्वत्रयमनुक्रमात् ॥ १ ॥ अनामिकोर्ध्वपर्वादे
र्मध्यमाद्यस्तुतर्जनी पर्वत्रयंतदाकृत्वातदेवाक्रम्यपूर्ववत् ॥ २ ॥ मेरोर्यावदं
गुष्ठं तस्यनातिक्रमंचरेत् पर्वभिर्गणयेत्सोपिगायत्रीमन्यमेववा ॥ ३ ॥
एकैकस्यशतंप्रोक्तंगणनंमुनिभिस्सदा अयुतेनजपेनाशुजप्तात्तत्फलंलभेत्
॥ ४ ॥ गौत्तमः ॥ कृषितोनास्तिदुर्भिक्षंजपतोनास्तिपातकं मौनेनकल
होनास्तिनास्तिजागरतोभयम् ॥ १ ॥

पर्वांकों ग्रहण करे फेर अंगुष्टतें दूसरी अंगुली जो तर्जनी है तिसके तीन पर्व ग्रहण करे
क्रमतें । २ । और मेरुके स्थान विषे जो अंगुष्टहै तिसकों न उल्लंघे इसतें एक आवृत्ति
को दश १० संख्या होजाती है इसप्रकार पर्वां कर्के जप करे गायत्रीका अथवा होर
किसे मंत्रका ॥ ३ ॥ एक एक आवृत्तिके अंगुलिके जपतें मुनियांने सौ गुणां अधिक
फल कहाहै इसी कर्के दश हजार १०००० जप करणेतें तत्काल कृच्छ्रके फलकों
प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ इसमे गौत्तमजी कहतेहैं खेती कर्मके करणेते काल नहि होता
और जपकरणेतें पाप नहि होता और मौनधारणेतें लड़ाई नहि होती और जागरण करणेतें
भय नहि होता ॥ १ ॥

जपतें पाप नाशकों प्राप्त होताहै इस कहणेतें कृच्छ्र व्रतका प्रत्याम्नाय गायत्री कहीहे ॥ इससें उपरंत प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय तिलांका होम कहाहै होमइति कीडयांते रहित जो तिल घृत कर्के युक्त तिनांकर्के जो होमहै मृत्युंजय मंत्रकर्के अंगन्यास और ध्यानकों पूर्व कार्के सो पापांके नाश करणे वाला कहाहै ॥ १ ॥ इसमे और विधि कहतेहैं संत्रस्तइति भय कर्के संयुक्त होया होया अग्नि विषे हवन न करे अर्थात् सावधान होकरके करे और ॐ ह्रौं जूंसः ॐ भूर्भुवः स्वः इनाबीजां कर्के तिलांका हवन करे संपूर्ण होम करणेकर्के तिसी क्षणमें पवित्र होताहै २ इसमे कुच्छ होरकहतेहैं किआप हवनकरे वा ब्राह्मणांपासो करवाये तिलांकी हजार

जपतोनास्तिपातकमितिस्मरणादयंप्रत्याम्नायः ॥ अथप्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायेतिलहोमविधिः ॥ होमस्तिलैरकीटैश्चघृतैःपापप्रणाशकृत् मृत्युंजयेनमंत्रेणन्यासध्यानपुरःसरः ॥ १ ॥ संत्रस्तोनहुनेद्दत्वाहुतीर्वीजपूरणैः सहोमंसकलंकृत्वापूतोभवतितत्क्षणात् ॥ २ ॥ संत्रस्तोनहुनेत्किंतुसमाहितएवजुहुयादित्यर्थः। तत्रापि वीजपूरणैः ॐह्रौंजूंसःॐभूर्भुवःस्वरितिवीजपूरणयुक्तैः। स्वयंवाऋत्विजोथोवातिलहोमसहस्रकम् कुर्यान्मासिनमेधावीप्राजापत्यफलंलभेत् ॥ ३ ॥ अथ प्राजापत्यकृच्छ्रस्यशतद्वयप्राणायामरूपप्रत्याम्नायमाहदेवलः प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायोमहत्तरः धर्मशास्त्रोक्तमार्गेणप्राणायामशतद्वयम् ॥ १ ॥ जपसंकल्पहोमेषुसंध्यावंदनकर्मसु प्राणायामांश्चरेद्विप्रस्तदानंत्यायकल्प्यते ॥ २ ॥

ऐसे दिन दिनाविषे आहुतिए कमासके व्रतकर्के वुद्धि मान् प्राजापत्यके फलको प्राप्त होताहै ३ अब प्राजापत्य कृच्छ्रका और प्रत्याम्नायहै क्या दो सौ २०० प्राणायाम तिसकों देवलऋषि कहताहै प्रेति प्राजापत्यकृच्छ्रका प्रत्याम्नाय एह वडा श्रेष्ठ कहाहै क्या धर्मशास्त्रकर्के कही जो विधिहै तिस विधिकर्के प्राणा यामदो सौ २०० वार करे गायत्रीके मंत्रकर्के ॥ १ ॥ जपेति जप और संकल्प और हवन इनांके प्रारंभविषे और संध्या वंदनादि कर्मांविषे जो ब्राह्मण प्राणायामांकों कर्ताहै सो अनंतफलकों प्राप्तहोताहै इसका सो पुण्यअक्षय कल्पना करिदाहै ॥ २ ॥

इत विषे मार्कंडेयजी कहतेहैं वामेति वाम क्या खब्बेपासेकी नासिकाकर्के वायुकों पूर्णकरे पूर्णकरणें तें तिसका नाम पूरक कहाहै और सज्जेपासेकी नासिकाकर्के वायुकों त्यागे वायुके त्यागणेंतें तिसका नाम रेचककहाहै ॥ १ और वायुकों रोकें दोनों नासिकां कर्के तिसका नाम कुंभक है और गायत्रीके स्वरूपका मनकर्के ध्यान करे और पूरकविषे कुंभक विषे रेचक विषे त्रवार जपे २ इसप्रकार त्रयबार जपीहोई संख्याके अभावमे होतीहै अर्थात् अनंत फलके देणे वालीहोतीहै ३ अबपराशरजीकहतेहैं वामेति खब्बी नासिकाकर्के वायुकों ग्रहणकरे मन कर्के उच्चारण गायत्रीका कर्त्ताहोया जलकर्के पूर्णहोए कुंभकीन्याई ब्रह्मविषे ध्यानलगाके स्थित होवे वायुकोंरोककर्केगायत्रीका मनकर्के उच्चारण कर्त्ता होआ ॥ १ ॥ औसे पूरक और कुंभककों

मार्कंडेयः ॥ वामेनपूरयेद्वायुंपूरणात्पूरकःस्मृतः सव्येनरेचयेद्वायुंरेचनाद्रेचकःस्मृतः ॥ १ ॥ वायुनापूरयेद्रंध्रान्गायत्रींमनसास्मरन् पूरणे कुंभकेचैवरेचनेतांजपेत्त्रिधा ॥ २ ॥ एवंत्रिवारंयाजप्तासंख्याभावेभवेदियम् ॥ ३ ॥ पराशरः । वामेन वायुनापूर्यगायत्रींमनसास्मरन् संपूर्णकुंभवत्तिष्ठेःपुनस्तामनुवर्त्तयन् ॥ १ ॥ रेचयन्सप्तरंध्रेणपुनस्तामेवसंस्मरन् ॥ एवंपूरककुंभाभ्यांरेचकेनसहामुना योवर्त्तयेत्रिधाब्रह्मन्प्राणायामइतीरितः ॥ २ ॥ श्राद्धेजपेचहोमेचसंध्याकर्मसुसर्वदा योवर्त्ततेप्रतिदिनंपरंब्रह्मतदुच्यते ३ एवंशतद्वयंकृत्वापूर्वोक्तविधिनाद्विजः प्राजापत्यस्य कृच्छ्रस्य प्रत्याम्नायोनिगद्यते सर्वपापविनिर्मुक्तः सयातिपरमंपदम् ॥ ४ ॥

कर्के रेचककोंकरे गायत्रीका स्मरणकर्ता होया वायुकों सप्तरंध्राके रस्ते त्यागे सप्तरंध्र नाम दक्षभागका है अथवा दक्षरंध्रेण औसाहि पाठ है ॥ २ ॥ औसे हे ब्रह्मन् पूरक और कुंभक और रेचक इसविधिकर्के जो त्रयवार गायत्रीका उच्चारण करणाहै तिसका नाम प्राणायाम कहाहै २ श्राद्धेति श्राद्धविषे और जपविषे और हवन विषे और संध्या बंदनादि कर्म विषे जो प्राणायाम कर्त्ताहै सो परंब्रह्म स्वरूप कहाहै ॥ ३ ॥ औसे पूर्व विधि कर्के जो ब्राह्मण दोसौ २०० प्राणायामकर्त्ताहै तिसकों प्राजापत्यके तुल्यफल देणे वाला वदला कहाहै तिसकेकरणेंतें संपूर्ण पापातें रहित होके परम पद वैकुंठकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥

अब सांतपन कृच्छ्र व्रतकों मनुजी कहतेहैं गवितिं गौका मूत्र औंर गोमय और दुग्ध और दधि
और घृत और कुशाके पत्रां कर्के मिलया होयाजल एह मिला कर्के एक दिनपीवे और दूसरे
दिन उप वास व्रत करे तिस व्रतका नाम कृच्छ्र सांतपन कहाहे ॥ १ ॥ अब याज्ञवल्क्य जी का
बचनहै गौकामूत्र और गुवा और दुग्ध और दधि और गौकाघृत और कुशाकाजल इना
कों एक दिन खाकर दूसरे दिन उपवास व्रत करे एह कृच्छ्र सांतपनकहतेहैं एह दो दिनका व्रत
है कृच्छ्रसांतपन १ अब सांतपनके लक्षणकों देवलऋषि कहताहे कृच्छ्र सांतपनकालक्षण जोहै सोसं

अथसांतपनकृच्छ्रमाह मनुः ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकं एक
रात्रोपवासश्चकृच्छ्रं सांतपनंस्मृतम् ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षी
रंदधिसर्पिःकुशोदकम् जग्ध्वापरेद्युरुपवसेत्कृच्छ्रंसांतपनंस्मृतामिति ॥
द्वैरात्रःसांतपनकृच्छ्रः । तल्लक्षणमाह देवलः कृच्छ्रसांतपनस्यास्यलक्षणं
सर्वपापहम् श्रीशैलं १ काशिकाक्षेत्रं २ गयाक्षेत्रंमहत्तरं ३ प्रयागं ४
यमुनां ५ सिंधुं ६ गंगासागरसंगमम् ७ कृष्णवेणीं ८ तुंगभद्रां ९ हे
मकूपं १० त्रिलोचनम् ११ मार्कंडेयं १२ सिंहगिरिं १३ ततोधर्म्म
पुरीश्वरं १४ द्राक्षारामं १५ जपावाटीं १६ मल्लिकार्जुनमेवच १७
अहोवलं १८ नृसिंहंच १९ तथैवभवनाशिनीम् २०

पूर्णपापांके नाश करणे वालाहै श्रीशैलमिति श्रीशैल १ और काशिका क्षेत्र २ और गयाक्षेत्र बहु
त श्रेष्टहै ३ और प्रयाग ४ और यमुना ५ और सिंधु ६ और गंगासागरकासंगम ७ और
कृष्णवेणी ८ तुंगभद्रा ९ और हेमकूप १० और त्रिलोचन ११ औरमार्कंडेय १२ और सिंहगिरि
१३ और धर्मपुरीश्वर १४ और द्राक्षाराम १५ और जपावाटी १६ और मल्लिकार्जुन १७
और अहोवल ॥ १८ ॥ और नृसिंह ॥ १९ ॥ और तैसे भवनाशिनी २०

और पिनाकिनी नदीके तीरविषे वैद्यनाथहरि नामकर्के प्रसिद्ध जो स्थान है २१ तैसे और वेंकटाद्रि २२ और स्वर्णमुखी २३ और कालहस्तीश्वर २४ और तैसे साक्षात् वरद राजहैं जोस्वयंभू ब्रह्माकावरस्वरूपहैं २५ और तैसे एकाम्रनामकर्के लिंग संपूर्णतीर्थों विषे श्रेष्ठ २६ और मध्यार्जुनेश पापांके नाश करणे वाला २७ और कुंभकोण वडाआश्चर्य २८ और श्रीरंग महाक्षेत्र २९ और इसतें परे जंबू नाममहाक्षेत्र ३० और कावेरी पापांके नाश करण वाली ३१ अब मथुरा विषयविषे जो तीर्थहैं तिनकों श्रवणाकर ॥ सुंदरेश १ और सुंदरेशकी पत्नीका स्थान २ और तैसे उग्रवती नदी ३ और तिसीस्थान आग्निकोण विषे गंधमादनपर्वत ४ और रामलिंग ५ और धनुःकोटी संपूर्ण तीर्थोंकर्के युक्त ६ और तैसे दर्भशमन ७ और तिसीस्था

पिनाकिनीनदी तीरेवैद्यनाथंहरिंतथा २१ वेंकटाद्रिं २२ स्वर्णमुखीं २३ कालहस्तीश्वरं तथा २४ साक्षाद्वरदराजंचवरभूतंस्वयंभुवः २५ एकाम्रंचतथालिंगं सर्वतीर्थमहत्तरम् २६ मध्यार्जुनेशंपापघ्नं २७ कुंभकोणंतदद्भुतम् २८ श्रीरंगं वामहाक्षेत्रं २९ जंबूनामह्यतःपरम् ३० कावेरींपापजालघ्नीं ३१ मथुराविषये शृणु । सुंदरेशंच १ तत्पत्नीं २ तथैवोग्रवतींनदीम् ३ तत्राग्नेयदिग्भागेपर्वतोगंधमादनः ४ रामलिंगं ५ धनुःकोटीं सर्वतीर्थपरिष्कृतां ६ तथैवदर्भशमनं ७ तत्रपंपामहत्सरः ८ ताम्रपर्णीमहाक्षेत्रं ९ तत्रत्याविष्णुदेवता १० अनंताख्यंरामक्षेत्रं ११ कौंडिन्योयत्रभाग्यवान् जनार्दनंमहाक्षेत्रं १२ गोकर्णपापनाशनम् १३ तथाहरिहरक्षेत्रं सुब्रह्मण्यंमहत्तरम् १४ एतानिपुन्यक्षेत्राणिदृष्ट्वापापहराणिच नीरोगीसुखजोयस्तु एतेषामेकमेववा नस्नायाद्वानपश्येद्वाकोन्यस्तस्मादचेतनः ॥

न पंपामहासर ८ और ताम्रपर्णी महाक्षेत्र ९ और तिसी स्थान विषे विष्णुमूर्ति १० और अनंतहै नाम जिसका ऐसा रामक्षेत्र ११ जिसस्थान विषे कौडन्यऋषि भाग्यकों प्राप्त होता भया और जनार्दन महाक्षेत्र १२ और गोकर्णतीर्थहै पापांके नाशकरणे वाला १३ और तैसे हरिहरक्षेत्र जो अतिशय कर्के ब्रह्मण्यहै बहुत श्रेष्ठ १४ एह जो पुण्यक्षेत्रहैं सो दृष्टि विषये प्राप्त होणेतेंहि पापांके नाश करणे वाले हैं जो ब्राह्मण रोगतें रहितहै और इनां तीर्थां और क्षेत्रांके मध्य विषे एक तीर्थ विषे भीस्नान नहि कर्त्ता और दर्शन नहि कर्त्ता तिसतें परे कोण अचेतनहै अर्थात् सोई ब्राह्मण पत्थरके तुल्य है

धर्मेति धर्मतें रहित जो पुरुषहै और कर्मातें हीन जो पापीपुरुषहै तिसका जन्म अजा क्या बकरीके गलविषे जो स्तन तिसकी न्याईंव्यर्थहै ॥ १ ॥ जो पुरुष जन्म दिनतें लेके सठ ६० वर्षकी आयुपर्यंन वर्त्ततांहै और तिनां वर्षांके मध्य विषे श्रीशैल कहणे कर्के श्रीशैल और चापाग्र और वेंकटाचल और वदरी और श्रीरंगनाथ तें आद लेके जो हैं इनांका ग्रहण करणा इनांका जो नास्तिकता कर्के दर्शन नहि कर्त्ता सो पुरुष संपूर्ण पापांको भोगके पीछे गर्दभ योनिकों प्राप्त होताहै एह वाक्य वामन पुराण विषे कहा है ॥ २ ॥ तिसीको मरीचिऋषि कहताहै ॥ श्रीति श्रीशैल और वेंकटाद्रि और कांची और

स्मृत्यंतरे। धर्महीनस्यमर्त्यस्यकर्महीनस्यपापिनःअजागलस्तनमिवतस्य जन्मनिरर्थकम्॥ १ ॥ योमर्त्योजन्मादिवसात्षष्टिवर्षाणिवर्त्तते नपश्येद्यदि श्रीशैलंतन्मध्येसतुगर्दभः॥ २ जन्मेति स्वजन्मदिवसादारभ्यषष्टिवर्षमध्ये श्रीशैलचापाग्रवेंकटाचलवरदराजश्रीरंगनाथादिकं नास्तिकतया न पश्येत् नदर्शनार्थंतिष्ठेत्ससर्वपापभोगानन्तरंगर्दभोभवेदिति वामनपुराणेश्रवणात् तदाहमरीचिः ॥ श्रीशैलवेंकटाद्रिंचकांचींश्रीरंगनायकम् रामेशंचधनुःकोटिंस्वभावात्षष्टिवर्षगः ॥ १ ॥ नपश्येन्नास्तिकतयागर्दभोभुविजायते तस्यैवनिष्कृतिर्नास्तिकृच्छ्रात्सांतपनादृते ॥ २ ॥ वृहस्पतिः ॥ पुण्यालयान्पुण्यनदीर्नपश्येत्षष्टिवर्षगः महांतंनरकंगत्वापश्चाद्रासभतांव्रजेत् ॥ १ ॥

श्रीरंगनायक रामेश और धनुःकोटि इनांका जो पुरुष अपनेजन्मतें लेके सठ ६० वर्षकी आयुतकनहि दर्शन कर्त्तां नास्तिक स्वभाव कर्के सो भोगतें अनंतर पृथ्वी विषे गर्दभ जन्मकों प्राप्तहोताहै तिसके पापकी निवृत्ति कृच्छ्र सांतपन व्रततें विना नहि होंती क्या कृच्छ्रसांतपन व्रतकर्के पापतें शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ अब वृहस्पतिजीका वचनहै ॥ पुण्येति दर्शन करणे कर्के पापांके दूर करणे वाले जो पुण्य देवतांके स्थान और पवित्र जो नदीयां तिनांकों जन्मतें लेकर सठ्ठां ६० वर्षांकी आयुतक न देखे सो पुरुष वडे नरककों भोगकर पीछे गधेके जन्मकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥

तस्येति तिसदोषके दूरकरणे वास्ते कृच्छ्र सांतपन व्रतकों करे पीछे पंचगव्यकों पीवे तो इस दोषतें रहित होताहै ॥ २ ॥ तिसके विधानकों देवल ऋषि कहताहै ॥ दिन दिन प्रति मांहकादाणा जिसविच छपजावे इतनें दुग्धकों बारां १२ दिनतक पीवे तां योगियांकोंभी दुर्लभ जो सिद्धि है तिसकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ प्रजापतिका वचनहै ॥ पूर्वेति पूर्वकी न्यांई प्रातःकालतें लेके स्नानकों कर्के और संकल्पकों कर्के नित्यकर्म जाणकर पूर्व कहा जो विभूत्यादिहै तिसका मनकर्के स्मरण करे ॥ १ ॥ और जिसकाल सूर्यका तेज मंदहोवे तिस समयविषे आदरथा भक्ति कर्के विष्णुके तांई नैवेद्यदे कर्के मांहकादाणा जिस विषे डूबे एतने मात्र दूधकोंव्रती

तस्यदोषोपशांत्यर्थंकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् पंचगव्यंपिवेत्पश्चाद्दोषादस्मात्प्रमुच्यते॥ २ ॥ तद्विधानमाहदेवलः ॥ प्रत्यहंमाषमग्नंचद्वादशाहंपयःपिवेत् शुद्धिमाप्नोतिराजेन्द्रयोगिनामपिदुर्लभाम्॥ १ ॥ प्रजापतिः ॥ पूर्ववत्प्रातरारभ्यस्नानंसंकल्पमेवच नित्यंकर्मतयाकृत्वापूर्वोक्तंमनसास्मरन् ॥ १ ॥ विभूत्यादिकमित्यर्थः ॥ यावन्मंदायतेभानुस्तावद्योदुग्धमादरात् विष्णवेतन्निवेद्याथमाषमग्नंपिवेद्व्रती २ स्वपेद्देवसमीपेतुगंधतांबूलवर्जितः ततःप्रभातवेलायामेकंकृत्वामहद्व्रतम् ॥ ३ ॥ द्वादशाहोभिरेतैश्चशुद्धोभवतिपूर्वजः पंचगव्यंपिवेत्पश्चात्सांतपनंमुनिसंमतम् ॥ ४ ॥ अथसांतपनकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह देवलः ॥ प्रत्याम्नायंप्रवक्ष्यामिकृच्छ्रस्यैतस्यपापहम् सर्वपापोपशमनं सर्वकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ १ ॥

पुरुष पीवे ॥ २ ॥ और देवताके समीप विषे शयन करे और सुगंधी और तांबूलका ग्रहण न करे तिस कारणतें प्रभात समय विषे बारां दिनां कर्के होणेवाला जो बडा पवित्रव्रत तिस एकहि व्रतके करणे करके ब्राह्मण शुद्ध होताहै और पीछे पंचगव्यकों पीवे एह सांतपन व्रत मुनियां विषे संमतहै ॥ ४ ॥ इसतें अनंतर सांतपन कृच्छ्र व्रतके स्थान जो बदला तिसकों देवल ऋषि कहताहै ॥ इस कृच्छ्र व्रतके बदलेको कहताहां कैसा बदला है पापके दूरकरणेवाला और सब पापांके नाश करणे वाला और संपूर्ण कृच्छ्र व्रतांके फल देणेवाला ॥ १ ॥

और फेर कैसाहै महापापांके नाश करणे वाला और धर्म कामअर्थकी सिद्धि देणे वाला
और एह कृच्छ्र सांतपनका प्रत्याम्नाय वडाहै तेजजिनांका असे जो व्यास तिनाने
पूर्व कृष्ण देवकेतांई कहाहै ॥ ॥ २ ॥ ॥ जो पुरुष पर धनके चुराणे वाले और परस्त्री
यां विषे प्रीति करणे वाले और जो मदिराके पीणे वाले और जो नहि भोगणे योग्य
भगिनी आदि स्त्री तिनां विषे गमन करणे वाले ॥ ३ ॥ और जो पुरुष नास्तिक शास्त्र
विषे प्रीति वाले और दुष्ट दानके ग्रहण करणे वाले और असत्यवाणी कहणे वाले और
मित्रांका आपस विषे विरोध पाणेवाले ॥ ४ ॥ और दीपके वुझाणे वाले और शीशेके
तोडन वाले अथवा व्यत्यय करण वाले क्या एकको उठायके दूसरे को वहाण वाले जो

महापापप्रशमनंधर्मकामार्थसिद्धिदं व्यासेनकथितंपूर्वंकृष्णायामिततेज
सा २ परस्वहारिणोयेचपरदाररताश्चये मद्यपानरतायेच अगम्यागमना
श्चये ३ असच्छास्त्ररतायेचयेचदुष्टप्रतिग्रहाःमिथ्याभिभाषिणोयेचयेचमित्र
विभेदिनः ॥ ४ ॥ दीपनिर्वापिनोयेचयेचमंडलभेदकाः मंडलेतिआदर्शभंज
काः स्थानव्यत्ययकारकाश्चेत्यर्थः ॥ दिवाकपित्थछायासुरात्रौचलद
लेषुच ॥ ५ ॥ तमालवृक्षछायासुरात्रौवायदिवादिवा गच्छतांपापनाशा
यप्रत्याम्नायोमहत्तरः ॥ ६ ॥ सदानिष्ठुरवक्तारःसदायाञ्चापरायणाः
परान्ननिरतायेच नित्यकर्मविरोधिनः ७ एषांचैवंविशुद्धिःस्यात्प्रत्याम्ना
यःपरात्परः ॥ गौतमः ॥ सांतपनस्यैवकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायोमहत्तरः सर्वा
लंकारसंयुक्तोगवांदशमहोन्नतइति ॥ १ महोन्नतअतिपुष्टोगोदशकगणः

पुरुष दिनविषे कपित्थ वृक्षकी छाया विषे और रात्रि विषे पिप्पलकी छाया विषे जाणेवाले
॥ ५ ॥ और रात्रि विषे अथवा दिन विषे तमाल वृक्षकी छाया विषे प्राप्त होणेवाले जो पुरुष
तिनांके पाप दूर करणे वास्ते वहुतश्रेष्ट प्रत्याम्नाय कहाहै ॥ ६ ॥ और जो पुरुष सदा कठो
र वाणीके कहण वालेहैं और सदा याचना विषे युक्तहैं और जो सदा पराये अन्नके भक्षण
करणे विषे युक्तहैं और जो नित्य कर्म जो संध्या वंदनादि तिसके त्यागको कर्त्तेहैं इनांको इस
प्रकार प्रत्याम्नाय कर्के शुद्धि होतीहै एह प्रत्याम्नाय श्रेष्टनेभी श्रेष्ट कहाहै ॥ ७ ॥ गौतम जीका
वाक्यहै सांतपन कृच्छ्र व्रतका प्रत्याम्नाय श्रेष्ठ कहाहै और अतिशय कर्के पुष्ट और संपूर्ण भूषणों
कर्के युक्त संख्या कर्के दश १० गौवां व्राह्मणांके तांई देवे इति ।१।

अथेति इसतें अनंतर महासांतपनव्रतकों याज्ञवल्क्यऋषि कहताहै पृथगिति पंचगव्य और कुशाकाजलएह जो छ ६ द्रव्यहैं गोमूत्र और गोमय और दधि और दुग्ध और घृत और कुशोदक इनां कों क्रमकर्कें छे ६ दिनभक्षणकरे और अंतविषें उपवासव्रतकरे तां सत्तां ७ दिनांकर्के महासांतपन कृच्छ्रव्रतकहाहै १ और यमजोने पंदरां १५ दिनांकर्के करणेयोग्य महासांतपनकहाहै सो दखाइदाहै त्र्यहमिति त्रय दिन गोमूत्र पीवे और त्रय दिन गोमयपीवे और त्रय दिनदधि पीवे और त्रय दिन दुग्ध पीवे और त्रय दिन घृत पीवे ईहां कुशोदक नही कहा इस करणे कर्के शुद्ध होताहै

⊛ अथमहासांतपनाख्यंव्रतमाहयाज्ञवल्क्यः पृथक्सांतपनंद्रव्यैःषडहःसोपवासकः सप्ताहेनतुकृच्छ्रोयंमहासांतपनःस्मृतः॥ १ ॥ द्रव्यैःपंचगव्यकुशोदकैःपृथक्प्रतिदिनंसेवितैः महासांतपनं भवति अस्यदिवसमर्यादांदर्शयतिसोपवासकःषडहइतिसप्ताहसाध्यइत्यर्थः ॥ १ ॥ यमेनतुपंचदशाहसाध्योमहासांतपनोऽभिहितः ॥ त्र्यहंपिबेत्तुगोमूत्रंत्र्यहंवैगोमयंपिबेत् त्र्यहंदधित्र्यहंक्षीरंत्र्यहंसर्पिस्ततःशुचिः महासांतपनंह्येतत्सर्वपापप्रणाशनमिति जाबालिनतु एकविंशतिरात्रनिर्वर्त्यैःमहासांतपनउक्तः षण्णामेकैकमेतेषां त्रिरात्रमुपयोजयेत् त्र्यहंचोपवसेदंत्यंमहासांतपनंविदुरिति ॥ १ ॥ यदातु षण्णांसांतपनद्रव्याणामेकैकस्यद्व्यहमुपयोगस्तदाऽतिसांतपनम् ॥

एह महासांतपन संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाहै इति १ जाबालऋषिनें इकीस २१ दिनकर्के महा सांतपन कहाहै छें ६ जो द्रव्यहैं गोमूत्रतें आदलेके तिनां विचों एक एक द्रव्यकों त्रय त्रय दिन भक्षण करे और अंत विषे त्रय दिन उपवास व्रत करे इसकों महासांतपन कहतेहैं इति ॥ १ ॥ जद फेर छे ६ जो महासांतपन विषे द्रव्य कहेहैं गोमूत्रते आदलेके कुशोदकतक तिनां विषे एक एक द्रव्यको दो दो दिन भक्षण करे तां अतिसांतपन व्रत होताहै ॥

जैसे धर्मराजजी कहते हैं एह जो गोमूत्रयों आदलेके पंचगव्यके द्रव्यहैं तिनां विषे ए
क एकको दो दो दिन पीवे तिस व्रतका नाम अतिसांतपन कहाहे पाप कर्के चांडालके तुल्य
भी जो पुरुषहै तिसको भी शुद्ध करताहै ॥ १ ॥ अब देवलजीका वचनहै महासांतपन नाम
कर्के जो कृच्छ्र व्रत है सो संपूर्ण फलके देणे वालाहै इस विषे प्रसंगहै पूर्व आप इंद्र गौत
मजीकी स्त्रीकों प्राप्त होता भया ॥ १ ॥ तिस महापापकर्के सो दोषकों प्राप्त होया होया वृक्षके
मूल क्या मुंडपास वडी भावना कर्के स्थित होया अर्थात् वडी चिंता कर्के युक्त हूआ
अथवा वृद्धभाव नाम वृद्धावस्थाका है पाप कर्के वुड्ढाहोगया एह अर्थ है ॥ २ ॥
तद वरके देणे वाले गरुडके ऊपर असवार होए होए भक्तांके प्यारे विष्णु इंद्रकों देखकर दया

यथाहयमः। एतान्येवयथापेयादेकैकंतुद्व्यहंद्व्यहं अतिसांतपनंनामश्वपाकम
पिशोधयेदिति ॥ १ ॥ देवलः । महासांतपनंनामकृच्छ्रंसर्वफलप्रदं पुरापु
रंदरःसाक्षाद्गौत्तमस्यसतींव्रजन् ॥ १ ॥ तेनपापेनमहतासपापफलदूषितः
वृक्षमूलमुपागम्यवृद्धभावमुपाश्रितः ॥ २ ॥ तदाप्रसन्नोवरदश्चक्रपाणिःस
वाहनः दृष्ट्वापुरंदरंप्राहदययाभक्तवत्सलः ॥ ३ ॥ एतत्पापविशुद्ध्यर्थंमहासां
तपनंचर गुरुदाराभिगामीचचंडालीगमनंचरन् ॥ ४ ॥ स्वसारंतुसमाग
म्यभगिनींयःप्रधर्षयन् ॥ ४ ॥ स्वसृभगिन्योस्स्वोदरभिन्नोदरत्वेनभेदइ
त्यर्थःप्रधर्षयन्निति कामुकत्वेनवलादभिगच्छन्नित्यर्थः । चरेद्वारजकीगामी
ग्रामचंडालदारगः ॥ विप्रश्चांडालदारेषुचरेत्तास्मिन्द्विजाधमः ॥ ५ ॥

कर्के कहते भये ॥ ३ ॥ हे इंद्र इस पापकी शुद्धि वास्ते महा सांतपन व्रतकों तूंकर जो पुरुष
गुरांकी स्त्रीके साथ गमन कर्ताहै और चांडाली साथ गमन कर्ताहै ॥ ४ ॥ और भगिनीके साथ
गमन कर्ताहै और अपणी दूसरी माताकी कन्याके साथ गमन कर्ताहै (प्रधर्षयन्) इसका
अर्थ एह है कि कामनातें वलकर्के जो भोगताहै ॥ वा छींवेकी स्त्रीके साथ गमन करे
और ग्राम विषे रहणे वाला जो चंडाल तिसकी स्त्रीके साथ जो गमन करताहै
और ब्राह्मण होकर चंडालकी स्त्री विषे जो गमन कर्ताहै ऐसा पापी भी तिस महा
सांतपन व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥

और इनां पापांको शुद्धि करणे वाला महासांतपन व्रतहि है हेराम एह देवलजी का वचन है और असत्यवाणी कहणे विषे जो पाप है और पापी पुरुषके साथ बोलणे विषे जो पाप है ॥ ६ ॥ और किसे पुरुष कर्के दित्ती होई कोई वस्तु तिसके खोलवणे विषे जो पाप और आप ही देणी आपही लय लेणी तिस विषे और जो रुधिरके पीणे वाला है रुधिरपान इसजगा मंत्रसाधनादिविषे जानणा और जो सदा औषधोंके करणे वाला है अर्थात् द्रव्यके लोभकर्के नीरोगकोंभी औषधिकर्के रोग वाला कर देताहै ॥ ७ ॥ और सदाहि प्रातःकालविषे और संध्याकालविषे और तैसे देवताके पूजने विषे जो पाखंडहि कर्ताहै ऐसेहि जो व्रात्यहै और तुलादानकों लेके जिसने प्रायश्चित्त नहि कीता ॥ ८ ॥ ऐसे को कर्म्म काल विषे स्मरण न करे और नादेखे पतितजाए कर्के अथवा और

तस्मिन्सांतपनेचरेत्प्रवर्त्ततइत्यर्थः एतेषांनिष्कृतीराममहासांतपनंपरम् असत्यभाषणेपापमसत्थानांचभाषणे ॥ ६ ॥ परदत्तापहारेचस्वदत्तापहरेतथा ॥ असृकूपानरतेचैवसदाभैषज्यवर्त्तिनि ॥ ७ ॥ प्रातःकाले सांध्यकालेतथादेवार्चनेयदि पाखंडयतितंव्रात्यंतुलास्वकृतनिष्कृतिम् ॥ ८ ॥ नस्मरेत्कर्मकालेपुनपश्येदेकदाचन एतेषांपापराशीनांमहासातपनंपरम् ॥ ९ ॥ तुलास्वकृतनिष्कृतिम् तुलादानंगृहीत्वाऽकृतप्रायश्चित्तमित्यर्थः। गालवः॥ द्विदिनंसमुपोष्यैवद्विदिनंपूर्ववत्पयः पूर्ववन्नियमंकृत्वा द्वादशाहेनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ पराशरः। माषमग्नंपिबेत्क्षीरंद्विदिनंसमुपोषयेत् एवंकुर्याद्द्वादशाहंपूर्ववन्नियमाश्रितः ॥ १ ॥

शुभ कर्मके करणे योग्यकाल विषे विष्णुकों जो नहि स्मरण करदा और कदीभी देव मूर्त्तिकों नहि देखता ऐसे जो महापापी हैं तिनां पापांके समूहकों दूरकरणे वाला महासांतपन व्रतहि कहाहै। ९ ॥ अब गालवऋषिका वचनहै द्वीति दो २ दिन उपवास व्रत करे और दो २ दिन दुग्धपीवे पूर्ववत् कथा गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत इनांकों दोदोदिन पीवे पीछेकी न्यांई नियमकरे इस प्रकार बारां १२ दिनांके व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब पराशर जीका वचनहै माषेति मांहका दाणा जिस विषे छपे ऐसे दुग्धको दो २ दिन पीवे पूर्वकी न्यांई गोमूत्र आदिक पीकर दोदिनउपवासव्रत करे सो पूर्वकी न्यांई नियमकों आश्रयकर्त्ता होया बारां १२ दिनांके व्रतकों करे ॥ १ ॥

अब मनुजीका वचनहै पूर्वेति पूर्वकी न्यांई प्रातः कालतें लेकेस्नान आदि नियमकों करे और सो द्विज जद सूर्य्यकीयां किरणां मंदतेजवालीयां होण तिसकाल विषे नियमकों त्यागता हुया ॥ १ ॥ दो २ दो दिनकें क्रमकर्के गोमूत्र आदिकों पींदा होया माषमन्न दुग्धकों विष्णुके तांई नैवेद्य लाकर्के दोदिन पीवे और दो दिन उपवास व्रत करे ॥ २ ॥ और देवताके समीप विषे शयन करे इस प्रकार बारां १२ दिनांके व्रत कर्के शुद्धिकों प्राप्त होताहै दो दिन है उपवास जिस विषें और दो दिन है दुग्ध पान जिस विषे ऐसा महासांतपन व्रत है ॥ ३ ॥ इसतें उपरंत महासांतपन कृच्छ्रव्रतके प्रत्याम्नायकों देवलऋषि कहताहै महासांतपन कृच्छ्रके प्र

मनुः ॥ पूर्ववत्प्रातरारभ्यद्विजोनियमपूर्वकम् यदामंदायतेभानुस्तदानि यममुत्सृजन् ॥ १ ॥ माषमन्नंपिबेत्क्षीरंविष्णवेतुनिवेदितम् दिनद्वयंपयः पीत्वाद्विदिनंसमुपोषयेत् ॥ २ ॥ स्वपेच्चपूर्ववद्देवसमीपेव्रतमाचरन् एवंद्वादशरात्रंचकृत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥ दिनद्वयमुपोषणंदिनद्वयंपयो भक्षः एवंक्रमेण द्वादशाहसाध्यंमहासांतपनम् ॥ अथ महासांतपनकृच्छ्र प्रत्याम्नायमाहदेवलः । महासांतपनकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायंशृणुध्वमे यदा चरणमात्रेणविप्रःपापात्प्रमुच्यते ॥ १ ॥ महाराजविजये । महासांतप नस्यास्यप्रत्याम्नायोमहानयम् कृच्छ्रस्यैतस्यविहितंकर्त्तुंसर्वमशक्तिमान् ॥ १ ॥ मानवोऽयंप्रकुर्वीत सर्वकृच्छ्रफलाप्तये गावोदेयाःप्रयत्नेन विप्रे भ्यःषोडशामलाः ॥ २ ॥ अलंकृताःसुपुष्पाद्यैर्वस्त्राभरणभूषिताः सुशी लाश्चपयास्विन्यःसवत्साःपापहारिणीः ॥ ३ ॥

त्याम्नायकों मेरेथों श्रवणकर जिसके करणेतेंहि ब्राह्मणपापतें रहित होताहै ॥ १ ॥ महाराज विज य ग्रंथ विषे कहाहै महासांतपनका प्रत्याम्नाय एह महाफलके देणे वालाहै इस कृच्छ्रके करणे विषे सामर्थ्यते रहित जो पुरुष है सो संपूर्ण कृच्छ्र व्रतके फलकी प्राप्ति वास्ते सोलां १६ गौ वां यत्नकर्के ब्राह्मणांकेतांई देवे ॥ २ ॥ कैसीयां गौयां जो पुष्पांकर्के और वस्त्रांकर्के और भूष णां कर्के युक्त हैं और सुशीलाहैं और सहित बच्छयांके हैं और दुग्ध देणे वालीयां हैं और पापांके नाश करणे वालीयांहैं ॥ ३ ॥

पराशरजीका वचन है महेति बुद्धिमान् जो ऋषि हैं सो महासांतपन व्रतके स्थान तुल्य फलके देणे वाले प्रत्याम्नायकों कहतेहैं सोलां १६ गौयां वस्त्रां करकें और भूखणां करकें युक्त दुग्धदेणे वालीयां सहित वछयांके साधु स्वभाववालीयां उत्कृष्ट सुखकी प्राप्ति वास्ते ब्राह्मणांके तांई देवे एह प्रत्याम्नाय तुल्य फलके देणे वाला कहाहै ॥ २ ॥ इसते उपरांत अतिकृच्छ्रव्रतकों मनुजी कहतेहैं एकैकामिति एक एक ग्रासकों पूर्वकीन्यांई त्र्यहानि त्रीणि क्या नौ ९ दिन खावे और अंत्य विषे त्रय दिन उपवास करे ऐसे द्विज अतिकृच्छ्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ अब देवलजीका वचनहै अतीति अतिकृच्छ्रव्रतकों कहताहां कैसा व्रतहै संपूर्णपापांके दूरकरणे

पराशरः । महासांतपनस्यास्यप्रत्याम्नायंविदुर्बुधाः गावःषोडशविप्रेभ्यो देयाः सम्यक् सुखाप्तये ॥ १ ॥ अलंकृताश्चवस्त्राद्यैः पयस्विन्यः पृथक्पृथक् ॥ सवत्साःसाधुशीलिन्यः प्रत्याम्नायउदीरितः ॥ २ ॥ अथातिकृच्छ्रमाह मनुः ॥ एकैकंग्रासमश्नीयात्त्र्यहाणित्रीणिपूर्ववत् ॥ त्र्यहंचोपवसेदंत्यमतिकृच्छ्रंचरन्द्विजः ॥ १ ॥ देवलः ॥ अतिकृच्छ्रंप्रवक्ष्यामि सर्वपापोपशांतिदम् सर्वकृच्छ्रप्रदंन्दृणांशृणुराजन्प्रयत्नतः ॥ १ ॥ अति कृच्छ्रस्यमाहात्म्यंवर्णितुंकेनशक्यते पुराहिकौशिकोनामऋषिर्धर्मपरायणः २ ॥ वसिष्ठात्मजघातीस्यात्तस्मात्कारणतःप्रभो तेषांहत्याविनाशार्थंकृच्छ्र माहप्रजापतिः ॥ ३ ब्रह्महत्यागुरोर्हत्याभ्रूणहत्यामहत्तरा कन्याहत्याशि शोर्हत्यातथातेषांमहत्यपि ॥ ४ ॥ वीरहत्याधेनुहत्यागजाश्वमहिषीवधः ॥

वाला और पुरुषांकों संपूर्ण कृच्छ्र फलकेदेणे वालाहै हेराजन् इसकों यत्नतें श्रवणकर ॥ १ ॥ अतिकृच्छ्रमाहात्म्यके कहणेकों कौण समर्थ होताहै इस विषे प्रसंगहै पूर्व धर्मात्मा विश्वामित्र नाम ऋषि वशिष्ठके पुत्रांकों मारताभया तिस कारणतें हेप्रभो तिनां बालकांकी हत्याके दूरकरणे वास्ते तिसकों प्रजापति ब्रह्मा अतिकृच्छ्र व्रत कहता भया ३॥ ब्रह्महत्याका पाप और गुरांकी हत्या और गर्भकी हत्या जो वडीहै और कन्याकी हत्या और बालककी हत्या तिनांकी जो वडी हत्या ॥ ४ ॥ और वीरकी हत्या क्या शूरमेंकी हत्या और प्रसूत होई होई गौकी हत्या और हाथी और घोडा और महिषी इनांका मारणा ॥

घास और काष्ठ और वृक्षांकाकटणा और खेत्ती और वाग इनांकाकटणा ५ और तला खूआ और जलके स्थान तिनांका और वेदशालाका नाशकरणा और गृहकादाहकरणा और ब्राह्मणके क्षेत्रविषे किसे शूकरादिको मारणा ऐसा जो पाप तिसको वधाणा ६ और अन्नकेस्थानांका दाहकरणा और महिषी और गौ इनांका दाहकरणा और शृंगकाभन्नणा और पुच्छका कटणा तैसे तिनांको विमर्द्दन क्या खस्सीकरणा ७ और तोता और विवींया और सर्प और मच्छ और हंस और कुत्ता और कुकुड और काक तिनांका मारणा और वनके मृगांका मारणा ८ और गृहके दरवाजेको भन्नणा और पात्थरांका भन्नणा और वनके पत्रांका साडना जो गिल्ले पत्रहैं हेराजन्

तृणकाष्ठद्रुमच्छेदःसस्यारामादिछेदनम् ॥ ५ ॥ तटाककूपकासारभेदनंवेदवेशमनाम् गृहदाहोद्विजक्षेत्रेमारणंपापवर्द्धनम् ॥ ६ ॥ धान्यारामादिदहनंदाहनंमहिषीगवाम् शृंगलांगूलविच्छेदस्तथातेषांविमर्दनम् ॥ ७ शुकचाषभुजंगानांमीनहंसशुनामपि कुकुटानांचकाकानांहिंसनंमृगमारणम् ८॥ दारुच्छेदः कपाटस्यपाषाणानांविभेदनम् दाहनंवनपर्णानामार्द्राणामिहभूमिप ॥ ९ ॥ सर्वासामेवहिंसानामतिकृच्छ्रंविशोधनं सर्वकृच्छ्रप्रदंचैवसर्वोपद्रवनाशनम् ॥ १० ॥ गालवः ॥ अतिकृच्छ्रस्यमहतःप्रकारमिहचोच्यते व्रतमात्रेयवान् शुभ्रान् श्यामाकांस्तंडुलानपि १ एकद्रव्यंसमादायव्रतादौपूर्ववच्चरेत् भागत्रयंतदाकृत्वातंडुलान्पूर्वमानतः ॥ २ ॥

॥ ९ ॥ संपूर्ण हिंसाके जो पापहैं तिनांतें शुद्धिके देणें वाला अतिकृच्छ्र व्रत कहाहै और एही संपूर्णकृच्छ्र व्रतांके फलको देणेवाला और संपूर्ण उपद्रवांके नाश करणे वाला है ॥ १० ॥ अत्र गालव ऋषिका वचनहै ॥ अतीति अतिकृच्छ्र जो वडाव्रत तिसका प्रकार इहां कहाहै व्रत मात्रविषें कहे जो यब सो श्वेत जानणे अथवा श्यामाकी क्या सांक अन्नविशेषहै तंडुलसो प्रसिद्ध हैं १ इनां विषेंएकद्रव्यकों ग्रहण करें व्रतके आद विषें पूर्व की न्यांई स्नान संध्यादि और व्रत चर्य्या करे और पीछे कथन कीया जो प्रमाण तिसी प्रमाण करके तंडुलादिकों ग्रहण करे और तिसकेतीन ३ भाग करे ॥ २ ॥

एक भागकों व्रतके आद विषे और दूसरे भागकों व्रतके मध्य दिनां विषे और तीसरे भागकों व्रतके अंत विषे ग्रहण करे आद मध्य अंत विषे त्रय त्रय दिन जानणे तां प्रथम भाग के तीन ग्रास करेतां आदके तीन ३ दिन एक एक ग्रास भक्षण करे पूर्वरीतिसे और स्नान आदि व्रतके नियमपूर्वकी न्याई करे ॥ ३ ॥ और संपूर्ण दिनांके चतुर्थ कालविषे हस्तपादोंको शुद्धकर्के अंगांकों जलसे स्पर्शकर और नारायण विषे मनको लगाकर देवताके समीप शयन करे ॥ ४ ॥ और प्रातः कालविषे पूर्वकी न्याई निर्मलहोकर संध्यादिकर्म करे इसीतरां तीन ३ दिनांकेपीछे त्रय दिन निराहार रहे ॥ ५ ॥ जैसे छे ६ दिन व्रतका आद कहाहै इसीतरां छे ६ दिन मध्यके और छे दिन व्रतके अंतके तां अठारां १८ दिन व्रतके सिद्ध होये ६ और व्रतके अंतविषे एक गौब्राह्म

व्रतादौमध्यदिवसेव्रतान्तेचदिनत्रयम् व्रतादौभक्षयेद्ग्रासंपूर्ववद्व्रतमाचरेत् ३ ॥ चतुर्थकालआयतिप्रक्षाल्यांगानिपूर्ववत् स्वपेद्देवसमीपेतुनारायणपरायणः ४ ॥ ततःप्रभातेविमलःसंध्यादीन्पूर्ववच्चरेत् निराहारस्तथाभूत्वा यावत्प्राप्तंदिनत्रयम् ॥ ५ ॥ तत्रैवभक्षयेद्ग्रासंद्वितीयार्द्धेविचक्षणः तत्रापिपूर्ववत्कृत्वाद्वादशेदिवसेशुभम् ॥ ६ ॥ तृतीयेत्र्यंतथाभुक्त्वागौरेकाविप्रसात्कृता ब्रह्मकूर्चंततःपश्चात्शुद्धिमाप्नोतिपूर्वजः ॥ ७ ॥ अतिकृच्छ्रमिदंसर्वमुक्तंमुनिभिरादरात् एतस्याचरणेनैवसर्वदोषात्प्रमुच्यते ॥ ८ ॥ अत्रायमभिप्रायः ॥ पूर्वमानत एकैकंग्रासमण्णीयादियुक्तमानतोभागत्रयम् षट्कत्रयंकुर्यात् ततश्चाष्टादशदिनसाध्यताजाता

णके तांई देवे इसको मूलकार फेर प्रकट कर कहतेहैं टीकाकारने इहांई स्पष्टकह दियाहै और पीछे ब्रह्म कूर्च करे तां ब्राह्मण शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ एह अतिकृच्छ्र संपूर्ण मुनियांने आदरतें कहाहै इसके करणेतें पुरुष संपूर्ण दोषांतें रहित होताहै ॥ ८ ॥ इस विषे एह अभिप्राय है पूर्वप्रमाणें (एक एक ग्रासकों भक्षण करे त्रय दिन तक और चौथे दिन उपवास करे इस रीतिसे तीन आवृत्ति करणे कर्के १२ दिन साध्यता व्रतकोंहोईथी और इस विषे ग्रासका मानआमलेके बराबरहै एह पीछे किहाहै ॥ इस उक्त मानतें जो भागत्रयहै चार दिनां कर्के सो छे दिनके करे तां इसका नियम अठारां दिनांकर्के सिद्ध होया ॥

तिसका प्रकार व्रतादौ इत्यादि करके कहाहै पूर्व त्रय३ दिनां विषे त्रय ग्रास भक्षण करे । और त्रय दिन उपवास करे फेर । ऐसेहि त्रय दिनां विषे त्रय ग्रास भक्षण करे और त्रय दिन उपवास करे ऐसे समाप्ति तक करे इस विषे अतिकष्ट होणेते महा अतिकृच्छ्र नाम इसका है और अगले श्लोकसे जाणीदाहै कि सर्वाति कृच्छ्र भी इसकानाम होवैगा द्वितीया दूसरे छके विषे तृतीये क्या तीसरेछके विषे तृतीयेत्थं इस विषे संधि आर्षहै क्या ऋषिके मुखसे इस वचाका उद्गम है सो सर्वज्ञ थे इसकरके एह निर्दोषहै जो याज्ञवल्क्यजीका वचनहै एहहि प्राजापत्य कृच्छ्र एक भक्त क्या दूसरे पहर विषे २२ ग्रास भक्षण करणे और दूसरे दिन नक्त व्रत विषे १२ वारां ग्रास भक्षण करणे और तीसरे दिन अयाचित दिनके २४ ग्रास

तत्प्रकारोव्रतादावित्यादिना पूर्वं त्रिदिनं ग्रासत्रयंभुक्त्वा त्रिदिनमुपवासः पुनरेवंयावत्समाप्तीत्यतिकष्टदायित्वान्महातिकृच्छ्रसंज्ञा । द्वितीयाद्वेद्वितीयषट्के तृतीयेतृतीयषट्केइत्यर्थः ॥ तृतीयेत्थमित्यत्रसंधिरार्षः ॥ यत्तु याज्ञवल्क्यः अयमेवातिकृच्छ्रः स्यात्पाणिपूरान्नभोजनइति अयमेवप्राजापत्यकृच्छ्रएकभक्तनक्तायाचितदिवसेषु पाणिपूरान्नभोजनयुक्तोऽतिकृच्छ्रइत्यर्थः तदेतदशक्तविषयम् पाणिपूरान्नस्यग्रासाम्नापेक्षयाधिकत्वात् ॥ ❁ अथातिकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः अतिकृच्छ्रस्यसर्वस्यप्रत्याम्नायोमनीषिभिः प्रोक्तःसर्वहितार्थायसर्वपापप्रणाशनः ॥ १ ॥ संकलीकरणानां चकन्याधेन्वादिविक्रये तिलतंडुलधान्यानांफलानांरसविक्रये महापातकभीतानांशोधनंपापनाशनम् ॥ २ ॥

भक्षण करणे इनांकी जगा एक हत्थका प्रसृति परिमाण अन्न जो भक्षण करणाहै अतिकृच्छ्र वा कहाहै एह असमर्थ विषे जानणा क्योंके पाणिपूरान्न भोजनकों ग्राससे अधिकहोणेते ❁ इससे अनंतर अतिकृच्छ्रके प्रत्याम्नायकों देवलऋषि कहताहै अतिकृच्छ्र संपूर्ण व्रतका प्रत्याम्नाय बुद्धि मानानें कहाहै संपूर्ण पुरुषांकेहितवास्ते जो वदला संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाहै ॥ १ ॥ संकली करणपाप और कन्या धेनुआदिके वेचणेविषे जो पाप और तिल और चावल और अन्न और फल और रस इनांके वेचणें विषे जो पाप है तिनां पापांके नाशकरणे वालाहै और महापापसे जो भयकरके युक्त हैं तिनांके भयकों दूर करणे वालाहै ॥ २ ॥

अब मार्कंडेयजीकावचनहै हेराजन् तूं श्रवणकर इस प्रत्याम्नायकों मैं कहताहां जिसप्रत्याम्नायकें करणे कर्के अतिकृच्छ्र व्रतके फलकों पुरुष प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ वस्त्रांकर्के अलंकृत दश १० गौयां ब्राह्मणांकेतांई भिन्न भिन्नकर्के देणेयोग्यहैं कैसीं गौयांहैं जो सुशील स्वभाव वालीयां और दुग्ध देणेवालीयां ॥ २ ॥ अब इसीविषे मनुजीका वचनहै अतिकृच्छ्र जो वडाव्रतहै तिसके बदलेकों मेरेतें श्रवणकर ब्राह्मणांकेतांई दश १० गौयां देणेयोग्यहैं सहित वछयांके पूर्वकी न्यांई पूजाकों प्राप्त होयीं होयीं ॥ १ ॥ सुवर्ण शृंगां कर्के युक्त और भली प्रकार शोभाकर्के युक्त तिसविषें भी आपशुद्ध होकर्के भिन्न भिन्न देणे योग्यहैं वेदोंके जानणे वालयांने ऐसे कही जो विधिहै तिस कर्के अतिकृच्छ्र व्रतके फल नूं प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ ❀अब इसतें उपरंत कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत

मार्कंडेयः॥ प्रत्याम्नायमिमंराजन्वक्ष्यामिशृणुपार्थिव यदाचरणमात्रेण अतिकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ १ ॥ दशगावःप्रदातव्यावस्त्राद्यैःसमलंकृताः ॥ साधुवृताःपयस्विन्योविप्रेभ्यश्च पृथक्पृथक्॥ २ ॥ मनुः। अतिकृच्छ्रस्यमहतः प्रत्याम्नायंशृणुष्वमे विप्रेभ्योदशगावस्ताः पूर्ववत्पूजिताअमूःवत्सावत्सवत्यइत्यर्थः ॥ १ ॥ स्वर्णशृंगादिभिःसम्यग्भूषयित्वापृथक्पृथक् शुचिभिस्तुप्रदातव्याविप्रेभ्योवेदवित्तमैः इत्थमुक्तेनमार्गेणकृत्वाकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ २ ॥❀ अथकृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रतमाहयाज्ञवल्क्यः ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रःपयसा दिवसानेकविंशतिम् गौतमेनतु द्वादशाहमुदकेनवर्त्तनं कृच्छ्रातिकृच्छ्र इत्युक्तम्अतश्चशक्त्यपेक्षया तयोर्व्यवस्था।तयोरेकविंशत्यहद्वादशाहयोः ❀॥ अथ तप्तकृच्छ्रमाह मनुः ॥ तप्तकृच्छ्रंचरन्विप्रोजलक्षीरघृतानिलान् प्रतित्र्यहंपिबेदुष्णान्सकृत्स्नायीसमाहितः ॥ १ ॥ अयमपिद्वादशदिनसाध्यः

नूं याज्ञवल्क्य ऋषि कहताहै कृच्छ्रेति दुग्ध कर्के इकी २१ दिनका जो व्रत है तिसकों कृच्छ्रातिकृच्छ्र कहतेहैं गौतम ऋषिने कहाहै कि जल कर्के वारां दिन वर्त्तन करणा अर्थात् जल पान विना होर कुछ नाहीं भक्षण करणा सों कृच्छ्रातिकृच्छ्र कहाहै इसकारणतें समर्थ और असमर्थ पुरुषकों देखकर तिनां इकीस दिन २१ और वारां दिन २१ के व्रतांकी व्यवस्था जानणी ॥ ❀इसतें अनंतर तप्तकृच्छ्र व्रतनूं मनुजी कहतेहैं तप्तेति त्रयदिन गरम जल पान करे त्रयदिन गरम दुग्ध पान करे और त्रयदिन गरम घृतपान करे और त्रय दिन गरम वायु कया हवा लेवे ऐसे एक काल स्नान को कर्के और निश्चलमन कर्के तप्तकृच्छ्र व्रतके करणेतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ एभी १२ दिककं हिसाध्यहै

अव याज्ञवल्क्य जी का वचन है तप्तेति तप्तदुग्ध और तप्तघृत और तप्तजल इनांकों क्रम
कर्के एक एक दिन पानकरे और एक दिन उपवास व्रत करे तां तप्त कृच्छ्र व्रत कहाहै १
एइहि व्रत चार दिनका चार गुणां होवे क्या दुग्ध और घृत और लज और उपवास इनांकों क्र
म कर्के चार चार दिन पानकरे तां महातप्त कृच्छ्र व्रत सोलां १६ दिनांका होताहै ॥
एभिरिति इनां तप्तक्षीर आदि संपूर्णंका एक दिन पान करे और एक दिन उप
वास करे ऐसे दो २ रात्रां कर्के सांतपनकी न्यांई तप्तकृच्छ्र भी द्विरात्रनाम व्रत होताहै ॥ मनु
जीने तप्तकृच्छ्रं चरन्नित्यादि कर्के पूर्व कहा जो श्लोक तिसकर्के बारां दिनांका व्रत हुंदाहै

याज्ञवल्क्यः तप्तक्षीरघृतांबूनामेकैकंप्रत्यहंपिवेत् एकरात्रोपवासश्चतप्तकृ
च्छ्रउदाहृतः ॥ १ ॥ एषएवप्रत्येकंदिवसचतुष्टयसंपाद्योमहातप्तकृच्छ्रः
तथाचायंषोडशादिनसाध्य एभिरेवसमस्तैः सोपवासैर्द्विरात्रसंपाद्यःसांतप
नवत्तप्तकृच्छ्रः मनुनातु पूर्वोक्तश्लोकेनद्वादशाहनिर्वर्त्योभिहितः ।क्षीरादिप
रिमाणंतु पराशरेणोक्तम् । अपांपिवेत्तुत्रिपलंद्विपलंतुपयःपिवेत् पलमेकंपि
वेत्सर्पिस्त्रिरात्रंचोष्णमारुतमिति ॥ १ ॥ त्रिरात्रंचोष्णमारुतमिति त्रिरात्र
स्यपूर्णउष्णोदकवाष्पंपिवेदित्यर्थः ॥ प्रकारांतरेण तप्तकृच्छ्रस्वरूपं पुनरे
वाह पराशरः ॥ षट्पलंतुपिवेदंभस्त्रिपलंतुपयःपिवेत् पलमेकंपिवेत्सर्पि
स्तप्तकृच्छ्रोविधीयतइति । १ । अत्र जलादिकमुष्णमेवग्राह्यम् । यदातु शी
तंक्षीरादिकंपीयते तदा शीतकृच्छ्रः

तिसविषें दुग्धादिकांका परिमाण पराशरनें कहाहै त्रय ३ छटांक जलपीवे और दोछटांक दुग्ध
पीवे और एक छटांक घृत पीवे और त्रय रात्रीके अंत विषें गरम जलकी हवाडको भक्षण करे
॥ १ ॥ अव होरो प्रकार कर्के तप्त कृच्छ्र व्रतके स्वरूपकों फेर पराशरजी कहतेहैं छे ६ पल परिमाण
गरम जल पीवे और त्रय पलकंपरिमाण गरम दुग्ध पीवे और एक पल परिमाण गरम घृत पीवे
तिसका नाम तप्त कृच्छ्र कहाहै इहां पल कर्के छटांक लैणी इसमें जलादिक सभगमंहि ग्रहण
करणे ॥ १ ॥ पूर्वोक्त और जद जल आदिक शीत वस्तु शीत क्या ठंडीयां होण और तिनांकों
पीवे तां तिसका नाम शीत कृच्छ्र कहाहै

सो दिखाई दाहै त्र्यह मिति त्रय ३ दिन शीत जल पीवे और त्रय दिन शीतल दुग्ध पीवें और त्रयदिन शीतलघृतपीबे और त्रयदिन वायु भक्षण करे इस कहणेंतें २ अब देवलऋषिका वचनहै त्रय दिन तक गर्म कीताजो जल तिस विषें वायुकी हवाड लये और त्रयदिन तक गरम जल और त्रयदिन गरम घृत इनांकों पीणेकर्के ब्राह्मण शुद्धिकोंप्राप्त होताहै इसके मतमे नौ दिनका एह व्रतहै १ अब इसीविषें मार्कंडेयजीका बचनहै त्रयदिन वायुगरम और त्रयदिन दुग्ध गरम और त्रयदिन घृत गरम तिनांके पीणे कर्केहि ब्रह्महत्याराभी शुद्धि को प्राप्त होताहै द्विजर्षभ क्या ब्राह्मणां विषे श्रेष्ट होताहै ॥ १ ॥ अब इसी विषे गौत्तमजीका ब-

त्र्यहंशीतंपिवेत्तोयंत्र्यहंशीतंपयःपिवेत् ॥ त्र्यहंशीतंघृतंपीत्वावायुभक्ष्यः परंत्र्यहमितिस्मरणात् ॥ २ ॥ देवलः ॥वायूष्णंत्रिदिनंविप्रःपयउष्णंदिनत्रयम् त्रिदिनंघृतमुष्णंचपीत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ १ ॥ मार्कंडेयः ॥ वायुमुष्णंपयस्तप्तंघृतमुष्णंदिनत्रयम् पीत्वाशुद्धिमवाप्नोतिब्रह्महापिद्विजर्षभः १ गौत्तमः । उष्णंपयःपयस्तप्तमुष्णंघृतमनंतरम् चतुर्णामपिपापानांपावनंमुनिभिःस्मृतम् । १। अत्रचतुःसंख्यास्थापनार्थमनंतरंत्र्यहमुष्णवायुपानं बोध्यम् ॥ आपस्तम्बः ॥ त्र्यहमुष्णंपिवेद्वारित्र्यहमुष्णंपिवेत्पयः त्र्यहमुष्णंपिवेत्सर्पिर्वायुभक्ष्योदिनत्रयम् ॥ १ ॥ ग्रंथांतरे त्र्यहमुष्णंपिवेद्वारि त्र्यहमुष्णंपिवेत्पयः त्र्यहमुष्णंपिवेत्सर्पिर्वायुभक्ष्योदिनत्रयम् ॥ १ ॥

चनहै गरम जल और गरम दुग्ध और गरम घृत और अनंतर कर्के गरम वायु जानणा इसप्रकार चारोंको ४ त्रयत्रय दिन पीवे तां संपूर्ण पापांके दूरकरणेवाला मुनियांने एहव्रत कहाहै १ ॥ अब इसी विषे आपस्तंव ऋषिका वचनहै त्रयदिन गरम जल पीवे और त्रय दिन गरम दुग्ध पीवे और त्रय दिन गर्मघृत पीवे और त्रयदिनगर्म पवनकाआहारकरे तां तप्तकृच्छ्रव्रत कहाहै एहवारांदिनकर्केसाध्यजानणा । १ । होरी ग्रंथविषे ऐसा कहाहै त्रय दिन गरम जल और त्रय दिन गरम दुग्ध और त्रय दिन गरम घृतपीवे और त्रयदिन गरम वायु पान करे ॥ १ ॥

और वायुका भक्षण गरम रात्रि विषं करे और जेकर शीतल वायु पान करे तां दिन विषं करे
और एह त्रय दिन वायुभक्षणभी वारांदिनांके पूर्णकरणे वास्ते कहाहै इसमे अभिप्राय कहतेहैं
यत्रेति ॥ जिस जिस स्थान विषं मुनियांनें कृच्छ्र व्रत कहाहै तिस तिस श्लोक विषं वारां दि
नांका जानणे योग्यहै ॥ सो बृहस्पतिजी कहतेहैं हेद्विजर्षभ मुनियांने जो शास्त्रां विषं कृच्छ्रव्रत
कहाहै सो वा ां दिनांकर्केहि साध्य है और देहकीशुद्धिके देणे वालाहै ॥ १ ॥ और जिस विषं
अब्द क्या वर्षदिनका कृच्छ्रव्रतांविषं कहाहै सो वर्षविषं वारां वारां दिनांके हिसाबसें तीस ३०
व्रत जानणे सोबृहस्पतिजी कहतेहैं प्रति प्राजापत्य जोकृच्छ्रव्रत कहेहैं तिनांविषं बुद्धिमानोनें जोवर्ष
दिनकहाहै तिसकी गिणती कर्के तीस ३० व्रत जानणे १एह प्राजापत्य कृच्छ्रकाहि लक्षणहै हारी

वायुभक्षणंतुउष्णमनक्तंवा द्वादशदिनपरिपूर्त्त्यर्थंकर्त्तव्यम् ॥ यत्रयत्रकृच्छ्रं
मुनिभिरुपदिष्टंतत्रतत्रद्वादशदिनकंवेदितव्यम् तदाह बृहस्पतिः मुनि
भिःकृच्छ्रमित्युक्तंशास्त्रेषुचाद्विजर्षभ तत्कृच्छ्रं द्वादशाहोभिः साध्यं देहवि
शुद्धिदम् १ यत्राब्दमित्युक्तंकृच्छ्रेषुतत्तुत्रिंशत्संख्याकंतदेवाह प्राजापत्ये
षुकृच्छ्रेषुअब्दमित्युच्यतेबुधैः त्रिंशत्संख्यांविजानीयात्प्राजापत्यस्यल
क्षणम् १ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यैव नान्यस्य । विष्णुः । सर्वेषामेवपापानां
तप्तकृच्छ्रंविशोधनम् ततःपरममित्युक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः १ तप्तकृच्छ्र
माधिकृत्याहहारीतः एषकृच्छ्रोद्विरभ्यस्तः पातकेभ्यःप्रमोचयेत् त्रिर
भ्यस्तोयथान्यायंशूद्रहत्यांव्यपोहति ॥ १ ॥ कृच्छ्रसामान्यविधिमाह
विष्णुः ॥ कृच्छ्राण्येतानिसर्वाणिकुर्वीतकृतवापनः नित्यंत्रिषवणस्नायी
चाधःशायीजितेंद्रियः ॥ १ ॥

व्रतका नाहि ॥ अव विष्णुजीकावचनहै संपूर्ण पापांके दूरकरणेवास्ते यथार्थदेखणवाले मुनियांने
परम हितजाणकर्के तप्तकृच्छ्र व्रत शुद्धिकरणवाला कहाहै १ अव तप्तकृच्छ्रको अंगीकारकर्के
हारीतऋषिका वचनहै एह तप्त कृच्छ्र व्रत दो वार कीता होया पापांतें शुद्धिको करताहै और
त्रायवार कीता होया यथा योग्य शूद्र हत्याके पापको दूरकरताहै॥ १॥ अव कृच्छ्र व्रतकी सा
मान्य विधिको विष्णुजी कहतेहैं इनां संपूर्णा कृच्छ्र व्रतांको पुरुष करे तिनां विषे एह विधिहै
मुंडन करवाये और नित्य त्रयकाल स्नान करे और पृथ्वी पर शयन करे और इंद्रियांको विष
यांते रोककर राखे ॥ १ ॥

और स्त्रीयां और शूद्र और पापीएनांके साथ संभाषणत्यागे और पवित्र जो मंत्र तिनांको नित्य जपे और अपनी समर्थातें हवन करे ॥ २ ॥ इसतें उपरंत तप्त कृच्छ्र व्रतके स्थान प्रत्याम्नाय जो बदलाहै जिस बदलेके कीतयां होयां तप्त कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै तिसको देवल ऋषिजी कहतेहैं तप्तेति तप्त कृच्छ्र संपूर्ण व्रतका प्रत्याम्नाय मनुने कहाहै जो पुरुष तप्त कृच्छ्र व्रतके करणे विषे समर्था वाले नहि हैं तिनां उपर कृपा कर्के पुरा कया पिच्छे हे अनघ हे पापांतें रहित तप्त कृच्छ्रका बदला कहाहै तिसको अब मैं कहताहां श्रवणकरो हे ब्राह्मणां विषें श्रेष्टांहो ॥ १ ॥ कालि युग विषे विशेष कर्के अन्नके त्यागतें पुरुष मृत्युकों प्राप्त होताहै तिसविषे पराशर जीका वचनहै कृतइति सत्ययुग विषे प्राणांकी स्थिति देहकें चर्म विषें रहतीहै और त्रेतायुग विषे प्रा

स्त्रीशूद्रपतितानांचवर्जयेदभिभाषणम् पवित्राणिजपेन्नित्यंजुहुयाच्चापिशक्तितः ॥ २ ॥ अथतप्तकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह ॥ देवलः ॥ तप्तकृच्छ्रस्यसर्वस्यप्रत्याम्नायोमनोःकृतः अशक्तानांचकृपयाकर्त्तुमुक्तःपुरानघ ॥ तमेवाहंब्रवीम्यद्यशृणुवंतुद्विजसत्तमाः ॥ १ ॥ कलौयुगेविशेषेणह्यन्नत्यागान्मृत्युंगच्छति ॥ पराशरः ॥ कृतेचर्माश्रितः प्राणः त्रेतायांकीकसाश्रयः द्वापरेरक्तमाश्रित्यकलावन्नंसमाश्रितइति ॥ १ ॥ कलौयुगेद्वादशरात्रसाध्यकृच्छ्राणांकर्त्तुमशक्तान् निरीक्ष्य ऋषयः प्रत्याम्नायमुक्तवंतस्तमेवाहात्रैव गौतमः महतस्तप्तकृच्छ्रस्यब्रह्महत्यानिवारिणः तुलाप्रतिग्रहीतॄणांशोधकः स्यान्महामुने ॥ १ ॥ प्रत्याम्नायस्तदाप्रोक्तोयदाचसुसमागमः ॥ स्वयंभूःकृपयान्दद्याणांगवांविंशतिमादरात् सवत्सावहुदुग्धाश्चसाधुशीलाद्विजातये २ ॥ द्विजातिभ्यइतिवक्तव्ये जातावेकवचनम्

णांकी स्थिति अस्थीयांविषे रहतीहै और द्वापरयुगविषे रुधिरके आश्रय प्राणस्थितिहै और कालियुगविषे अन्नके आश्रय प्राणांकी स्थितिहै १ इसकारणतें कालियुगविषे बारां १२ दिनांकर्के व्रत करणे विषे पुरुषसामर्थां वाले नाहि ऐसेविचार कर ऋषिं प्रत्याम्नायकों कहते भये तां तिस तप्तकृच्छ्रकों गौतम ऋषि कहताहै हेमहामुने तुला दानके प्रति ग्रहकों लयणें वाले जों पुरुष हैं तिनांके पापांकों दूर करणे वाला वडा जों तप्तकृच्छ् व्रत सो कहाहै कैसा व्रत है जो ब्रह्महत्याके भी दूर करणे वालाहै १ प्रत्याम्नाय तद कहाहै जद महात्माका संगमहोवे तो ब्रह्मा पुरुषां उपर कृपाकरके कहताहूया गोयांसहितवछयांके दुग्ध देणे वालीयां और भले स्वभाववालीयां वीस २० आदर कर्के ब्राह्मणांकेतांई देणे योग्यहैं द्विजातये एह जाति विषे एक वचनहै । २ ।

अव इसीविषे मरीचिऋषिका वचनहैं पापांके नाश करणे वाला जो तप्तकृच्छ्रहै वडा ब्रह्मरूप तिसका वदला एहहै वीस २० गौवां आदर कर्कें ब्रह्मणांके तांई देवे ॥ १ ॥ अव पराशरजी कावचनहै वडा जो तप्तकृच्छ्र तिसका वदला वस्त्र और भूषणांके साथ सहित वछयांके ॥ २० गौवां आत्मज्ञानके विचार कर्के युक्त जो ब्राह्मण तिनांके तांई देता हुवा ॥ १ ॥ शुद्धिकों प्राप्त होताहै हेराजेंद्र और तप्त कृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहै तिस कारणतें तिन्नांवर्णां विचों जो तप्तकृच्छ्र व्रतके करणे विषे नहि समर्थांवाले तिनांनें प्रत्याम्नाय करणे योग्यहैं और पीछे पंचगव्यका पान करणा ऐसा किहाहै ॥ २ ॥ और तुला आदिक दानके ग्रहण करणे वाले जो पुरुष हैं तिनांकों तिस प्रतिग्रहदोषके दूरकरणे वाले प्रायश्चित्त करण विषे एहि

मरीचिः पापनाशककृच्छ्स्यतप्तस्यब्रह्मरूपिणः दद्याद्द्विजातयेसम्यग्ग वांविंशतिमादरात् १ पराशरः॥ महतस्तप्तकृच्छ्स्याविप्रायाध्यात्मवेदिने सालंकारांसवत्सांचधेनुर्विंशतिकांददन् ॥ १ ॥ शुद्धिमाप्नोतिराजेंद्रतप्तकृ च्छ्रफलंलभेत् ततोद्विजातिभिःकार्य्यास्त्वशक्तैस्तप्तरूपिणः पंचगव्यंपिवे त्पश्चात्प्रत्याम्नायइतीरितः ॥ २ ॥ तुलादिप्रतिग्रहीत्वणामपीयमेवगति स्तत्प्रायश्चित्तकरणविषये ॥ अपरार्के ॥ अतिकृच्छ्रेपराकेचतप्तकृच्छ्रेतथै वच प्राजापत्यत्रयंकुर्यात् कृच्छ्रेगोमिथुनंभवेत् ॥ १ ॥ स्मृत्यर्थसारे। मासो पवासस्थाने पंचदशप्राजापत्याइति चतुर्विंशतिमते धर्मनिष्ठास्तपोनिष्ठाः कदाचित्पापमागताः जपहोमादिकंतेभ्योविशेषेणाभिधीयते ॥ १ ॥

तप्तकृच्छ्रव्रत कहाहै ॥ अव अपरार्क विषे कहाहै क्या अतिकृच्छ्रव्रत विषे और पराक व्रत विषे और तत कृच्छ्र व्रत विषे तिस प्रकार प्राजापत्यत्रय करे और कृच्छ्रव्रतविषे एक गौ और वलद दानकरे ॥ १॥ अव स्मृत्यर्थसारविषे कहाहै जो एक मासका उपवास व्रत कहाहै तिसका वदला पंद्रां १५ प्राजापत्यव्रत कहने इसमे एह अभिप्रायहै कि प्राजापत्य ६ उपवासके तुल्य हैं ऐसा अगेस्थापनहोणाहै तिसकेहिसावसें ५ पंच प्राजापत्यमासोपवासकी जगा आउतेहैं परंतु इसकों अति कष्टदायी जाणकर इसकी जगा १५ पंद्राकहेहैं ॥ और चतुर्विंशति मत विषे कहाहै धर्मेति जो पुरुषधर्म विषे युक्त हैं और तप विषे युक्तहैं कदाचित् पापकों प्राप्तहोवें कथं.तू पापकरें तो तिनां तांई विशेषकर्कें जप और हवन आदिक कहाहै ॥ १ ॥

और जो पुरुष केवल नाम करकेहि ब्राह्मणहैं संस्कारतें रहित और मूर्ख और धर्मतेंरहितहैं तिनांवांई विशेष कर्के कृच्छ्र चांद्रायणादि व्रत देणे योग्य हैं ॥ २ ॥ और धन कर्के युक्त जो पुरुष तिसनें पूर्वोक्त धेनु विंशतिकादिरूप दक्षिणा देणे योग्यहै जो दक्षिणा यत्न कर्के विधान कीतीहै इस प्रकार नर विशेषकर्के क्या जिसकों जैसा उचितहोवे तैसा मनुष्यकों विशेष कर्के प्रायश्चित्तकों पापके दूर करणेवास्ते देवे ॥ ३ ॥ ⊛इसते अनंतर पर्णं कृच्छ्र कों याज्ञवल्क्य कहताहै पर्णोविति ॥ १ ॥ इसकाअर्थ अपरार्क विषे कहाहै पर्णोदीति पलाइ और गूलर और कमल औरविल्व और कुशा इनांके भिन्न भिन्न पत्रांकोंलेकर

नामधारकविप्रायेमूर्खाधर्मविवर्जिताः कृच्छ्रचांद्रायणादीनितेभ्योदद्याद्विशेषतः ॥ २ ॥ धनिनादक्षिणादेयाप्रयत्नविहितातुया एवंनरविशेषेणप्रायश्चित्तानिदापयेदिति ॥ ३ ॥ ⊛ अथपर्णकृच्छ्रमाह याज्ञवल्क्यः ॥ पर्णोदुम्बरराजीवविल्वपत्रकुशोदकैः प्रत्येकंप्रत्यहंपीतैःपर्णकृच्छ्रउदाहृतः ॥ १ ॥ अत्रापरार्कः ॥ पर्णादिपत्रान्तानांकुशानां चैकैकस्यक्काथोदकमेकैकस्मिन्नहनिपीयते इत्येषपंचरात्रसाध्यःपर्णकृच्छ्रः । अत्रापि प्राशनमाहारांतरनिवर्त्तकम् ॥ पर्णः पलाशःराजीवंपद्मंप्रसिद्धमन्यत् विष्णुस्तुपर्णकृच्छ्रमन्यथाह कुशपलाशोदुम्बरपद्मशंखपुष्पीवटब्रह्मसुवर्चलापत्रैः ७ क्वथितस्यांभसःप्रत्यहंपानेपर्णकृच्छ्रं इति

काथकरें और तिसकाथके जलकों दिन दिन विषे क्रम कर्के पानकरे तांते एहपर्णं कृच्छ्र व्रत पंजां दिनां कर्के सिद्धहोताहै १ इसविषे प्राशन कहणे कर्के अन्य वस्तुके भक्षण कानिषेधहै ॥ विष्णुजी पर्ण कृच्छ्रकों और ही प्रकार कर्के कहतेहैं कुशा और पलाह और उदुंबर क्या गूलर और पद्म और शंखपुष्पी बूटी और वोड और ब्रह्मसुवर्चला बूटी इनांसत्तां ७के पत्रांकर्के जलकों भिन्न भिन्न काढे और तिनांके क्वाथकें जलको दिन दिन विषे क्रमकर्के पानकरे तां पर्णं कृच्छ्र होताहै इति

जावालऋषि औरही प्रकार कर्के कहताहै ॥ पलाह और विल्व और पद्म इनांके पत्र और गूलरकें पत्र और पिप्पलके पत्र इनांपत्रांकों दिन दिन विषे क्रम कर्के पीवे ॥ १ और पीछे दिन रात्र उपवास करे एह उपवास सहित छे ६ दिनका व्रतहै पूर्वजन्मके पापकों और इस जन्मके पापोंको दूरकरणे वालाहै इति २ ॥ शंख और लिखितजीभी इसमें कहतेहैं पद्म और विल्व और पलाह और गूलर और कुशोदक इनांकों भिन्न भिन्न क्रमकर्के भक्षण करे तां पर्णकृच्छ्र होताहै ॥ और इनां संपूर्णांकों त्रयदिन भक्षणकरे तांभी पर्णकृच्छ्रहोताहै ॥ पहला पांच दिनका दूसरा तीन दिनका ॥ अवयमजीकावचनहै पलेति पलाह और विल्वके पत्र और कुशाऔर पद्म इनांके पृथक पृथक पत्रांकोग्रहण करे और एक एक वृक्षके पत्रांकों त्रय त्रय

॥ जावालस्त्वन्यथाह ॥ पलाशविल्वपद्मानांपत्राण्यौदुम्वराणिच अश्वत्थस्यचपत्राणिअशेच्चैकैकशस्तथा ॥ १ ॥ अहोरात्रोपवासश्चपर्णकृच्छ्रःप्रकीर्त्तितः अन्यजन्मकृतंचैवपापंनाशयतेतुस इति ॥ २ ॥ शंखलिखितौ पद्मविल्वपलाशोदुम्वर कुशोदकान्येकैकमभ्यस्तानि पर्णकृच्छ्रः ॥ समस्तान्येतानित्रिरात्रेणोपभुक्तानि वापर्णकृच्छ्रः । यमः । पलाशविल्वपर्णानिकुशान्पद्मानिवान्यतःएकैकंत्र्यहमश्नीयात्पर्णकृच्छ्रोविधीयतइति १ अन्यतइति पृथगित्यर्थः । अत्र द्विजानांमध्यमानिपत्राणि शूद्रस्येतराणीतिवोध्यमिति यदातु पर्णादीनामेकीकृतानांक्वाथ स्त्रिरात्रोपवासांते पीयतेतदापर्णकूर्चः ॥ यथाहयमः ॥ एतान्येवसमस्तानित्रिरात्रोपोषितःशुचिः क्वाथयित्वापिवेदद्भिःपर्णकूर्चोभिधीयतइति ॥ १ ॥

दिन भक्षण करे एह वारां १२दिनांकर्के पर्णकृच्छ्र कहाहै ॥ १ ॥ इसविषे ब्राह्मण आदि तीनवर्णांकों पलाहकें मध्यम पत्रे कहले अर्थात् ब्राह्मणपलाशके विचले पत्र ग्रहणकरे और शूद्र इतर कया आसपासके पत्रकों ग्रहकरले असें जानणा इति यदेति जद फेर पलाह और गूलर और कमल और विल्व इनांके पत्रांकों एकत्र कर्के कुशाके जलकर्के काहडे और त्रय दिन उपवासकों कर्के पीछे पीवे तां पर्णकूर्च कहाहै जैसे यमजी कहतेहैं त्रय रात्रके उपवास व्रत कर्के शुद्ध होया होया इनां ह और गूलर और कमल और विल्वकें पत्रांकों जलके साथ काथकर्के पीवे तां पर्णकूर्च कहीदाहै इति १

यदैतिजद फेर विल्व आदि फल जलककें काहडे होये दिनदिनीवेष क्रमककें पीवे एकमास पर्यंत तां फल कृच्छ्रतें आदलेके नामकों प्राप्त होतेहैं ॥ जैसे मार्कंडेयजी कहते हैं फलांके काथकों एकमास पर्यंत पीवे तां बुद्धिमानोनें फलकृच्छ्र कहाहै ॥ और श्रीफल क्या विल्वफल इनांके काथकों एक मास पर्यंतपीवे तां तिसका नाम श्रीकृच्छ्र कहाहैं ॥ तैसे पद्मांकेकाथकों एक मास पर्यंत पीवे तिसका नाम पद्मकृच्छ्र कहा है ॥ १ ॥ ऐसे एक मास पर्यंत आमलेके काथ कों पीवे तां एह दूसरा श्रीकृच्छ्र कहाहै ॥ और विशेष कहतेहैं पत्रैरिति पत्रांके काथ क्यां काहडेकों पीवे तां पत्रकृच्छ्र हुंदाहै ॥ और पुष्पां ककें पुष्पकृच्छ्र होताहै ॥ २ ॥ और मूल ककें मूल कृच्छ्र और केवल जलके काथकों पीवे तां तोय कृच्छ्र कहा हैं ॥ २ ॥ इसमें एह विचारहै कि

यदातुविल्वादिफलानि प्रत्येकं कथितानि मासंपीयंते तदा फलकृच्छ्रादि व्यपदेशंलभंते । यथाहमार्कंण्डेयः ॥ फलैर्मासेनकथितःफलकृच्छ्रोमनीषिभिः श्रीकृच्छ्रःश्रीफलैःप्रोक्तःपद्मास्त्यैरपरस्तथा ॥ १ ॥ मासेनामलकैरेवंश्रीकृच्छ्रमपरंस्मृतम् पत्रैर्मतःपत्रकृच्छ्रःपुष्पैस्तत्कृच्छ्रउच्यते ॥ २ ॥ मूलकृच्छ्रःस्मृतोमूलैस्तोयकृच्छ्रोजलेनत्विति ॥ पत्रकृच्छ्रोत्रउदुम्वरपद्मविल्वपत्रभेदात्त्रिधा। तोयकृच्छ्रोऽपिकेवलजलकुशोदकभेदाद्द्विधा ॥ इत्येवमेकादशधापर्णकृच्छ्रइतिमिताक्षराशयः पुष्पकृच्छ्रस्तुपद्मपुष्पजोवोध्यः । मासशब्देनात्रसावनोमासोग्राह्यः तदुक्तंकालनिर्णये ॥ आयुर्दायविभागश्चप्रायश्चित्तक्रियातथा सावनेनैवकर्त्तव्याशत्रूणांवाप्युपासनेति १

अष्टप्रकारके कृच्छ्र जों दिखाएहैं तिनांविचों पत्रकृच्छ्र त्रय तरहांकाहै ॥ और जल कृच्छ्र दो प्रकारकाहै इसतें ११ प्रकार कृच्छ्रके होए एह मिताक्षरा ग्रंथका आशयहै और मूलमें अर्थ स्पष्टहै ॥ और विशेषकतेहैं मासेति मासशब्दके कथन करणे ककें तीस ३० दिनांका महीना इसजगा ग्रहण करणे योग्यहै और चांद्रमास नहि जानणा इसका निर्णय कहा है कालनिर्णय ज्योतिश्शास्त्र विषे ग्रहांके अनुसार कहा जो आयुर्दाय विभाग सो तीस ३० दिनकें मासतें जानणा तैसे प्रायश्चित्तका करणा और शत्रुयांकी उपासना कैदी आदिक अथवा तिनांकी हानि वास्ते अनुष्ठानादि भी तीस दिनके मास ककें जानणे योग्यहै ॥ १ ॥

अब देवलऋषिका वचनहै हेब्राह्मणा विषे श्रेष्टांहो पर्णकृच्छ्र नाम करकेंजो व्रतहै तिसकोंश्रवण करो जो अतिशय करके श्रेष्ट है और संपूर्ण पापोंके दूर करणे वाला और संपूर्ण दोषांके नाश करणे वाला है ॥ १ ॥ अब दोषां करकें युक्त जो पाप हैं अर्थात् जिनां पापा देभोगते पीच्छे क्षयादि रोग हुंदेहै तिनको कहतेहां तिनांकों हि पर्णकृच्छ्र व्रत दूर कर्ताहै ब्रह्महेति ब्राह्मणके मारणे वाला पुरुष क्षय जो श्वासकास रोग तिस करकें युक्त होताहै और मदिरा के पीणे वाला जो है तिसके काले दांत होतेहैं और जो सुवर्णकी चोरी कर्ताहै तिसके कुनख क्या निंदितनख होतेहैं और गुरुकी स्त्री साथ जो विषय भोगताहै सो कुष्टी होताहै ॥ २ ॥ अन्नेति और अन्नकों चुराणे वाला उदर विषे रोग युक्त होताहै ॥ और शाकके चुराणे वाला दर्दुर क्या डड्डू होताहै और धान्य क्या धाइयां चुराणे वालयांकों हे ब्राह्मणां खुरक रोग होताहै ॥ ३ ॥ ताम्रेति तांबेके

देवलः ॥ पर्णकृच्छ्रंद्विजश्रेष्ठाःशृण्वन्तुपरमंशुभम् ॥ सर्वपापप्रशमनं सर्वदोषोपशान्तिदम् ॥ १ ॥ ब्रह्महाक्षयरोगीस्यात्सुरापःश्यावदंतकः स्वर्णस्तेयीचकुनखीदुश्चर्मागुरुतल्पगः ॥ २ ॥ अन्नहर्त्ताभवेद्गुल्मी शाकस्तेयीतुदर्दुरः स्तेयिनांधान्यहारीणांकंडूतिःसंततांद्विजाः ॥ ३ ॥ ताम्रस्तेयीदीर्घवृषणःप्रमेहीपर्वमैथुनी शिरोव्रणीस्नानहीनःपित्तवांस्त्रपुसीसहा ॥ ४ ॥ गजचर्मानागहन्ताअश्वहन्तामहाव्रणी कंठभूपणहारी स्याद्गंडमालीभवेद्ध्रुवि ॥ ५ ॥ रक्तप्रमेहीमनुजोपुष्पवत्यंगनागमः भगिनीगमनोभूमौमधुमेहीभवेन्नरः ॥ ६ ॥ मातुःसपत्नींभगिनींजभत्कामातुरोनरः सपापमनुभूयाशुरोगीभूयाद्भगंदरी ॥ ७ ॥

चुराणे वालेके पतालू लंबे होतेहैं और संक्रांति आदिक पर्व विषे जो मैथुन कर्ताहै सो प्रमेहरोग करकें युक्त होताहै ॥ और स्नानतें रहित जो है सो शिर विषे व्रणवाला होताहै और लाख और सिक्केके चुराणे वाला पित्त रोग युक्त होताहै ॥ ४ ॥ गजेति हाथी के वध करणे करकें हाथीकी न्याईं चर्म वाला होताहै ॥ और घोडेके वध करणे वाला देह विषे वहुत व्रण युक्त होताहै ॥ और कंठके भूषण हरण वालेकों ह्जीरांरोग होताहै ॥ ५ ॥ रक्तेति ऋतुमती स्त्रीके साथ जो गमन कर्ताहै सो रक्तप्रमेहरोग करकें युक्त होताहै ॥ और जो भगिनी विषे गमन कर्ताहै सो मधुप्रमेहरोग करकें युक्त होताहै ॥ ६ ॥ मातुरिति दूसरी माताके साथ और माताकी भैणके साथ जो गमन कर्ता हे सो तात्काल भगंदररोगकरकें युक्त होताहै ॥ ७ ॥

स्वसारमिति जो पुरुष भैणविषे गमन कर्त्ताहै सो मूत्र कृच्छ्र रोगकर्के युक्त होताहै । और गौके मारणेवाला महापापी पुरुष सदा पृथ्वीविषे रोगी होताहै ॥ ८ ॥ गविति गौकेवच्छेके मारणेतें गुदाविषे ममैसी रोगकर्के युक्त होताहै । और शिवजीके निर्माल्यकों जो भक्षण कर्त्ताहै सो कफ रोगकर्के युक्त होताहै ॥ ९ ॥ अजीति जो पुरुषां विषे कठोरताकों अथवाछलको कर्त्ताहै सो उदर विषे अजर्णि रोगी होताहै शठ कृत् इस जगा (छलकृत्) ऐसा भी पाठ है और गृहकों दाहकरणे वाला शूलरोग युक्तहोताहै और वंदि ग्रहणजदोषसें अर्थात् जो विना अपराध किसीकों कैदकर्त्ताहै सो श्वासकासरोगवाला होताहै १० ॥ जो स्त्री विषांकर्के बालककों मारतीहै तिसका गर्भ सदाहि स्रव जाताहै ॥ और जो स्त्री अन्यपुरुषके साथगमन कर्त्ताहै सो स्तनांविषे फोडेवालीहोतीहै ११ क्षीरमिति जोस्त्री दुग्धकों चुरातीहै सो दूसरेजन्माविषे स्तनां

स्वसारंयःपुमान्गच्छेज्जायतेमूत्रकृच्छ्रवान् धेनुहन्ताम्हापापीसदारोगी भवेद्भुवि ८ गोवत्सहननान्मर्त्यःसभूयादर्शवान्भुवि शिवनिर्माल्यभुक्पापी जायतेकफवान्नरः ॥ ९ ॥ अजीर्णरोगीशठकृद्गृहदाहीचशूलवान् वंदिग्रहणजाद्दोषाज्जायतेश्वासकासवान् ॥ १० ॥ स्रवद्गर्भाभवेत्सातुबालकंहन्ति याविषैः अन्यमालिंगतेनारीसावैस्फोटस्तनीभवेत् ॥ ११ ॥ क्षीरंमुष्णातियानारीस्तन्यहीनान्यजन्मनि पतिव्रतापहारीचछूषणाव्रणरोगवान् १२ विधवासंगजाद्दोषाच्छिश्नदेशव्रणीभवेत् पुष्पस्तेयीविक्रनासःकोशस्तेयीतुपेटवान् ॥ १३ ॥ गन्धस्तेयीचदुर्गन्धःक्रमुकेसततंज्वरी विवाहविघ्नकृन्मर्त्योजायतेहीनदारवान् ॥ १४ मयूरहननान्मर्त्योजायतेकृष्णविंदुकःतडागारामविच्छेदीसदादुःखीभवेन्नरः ॥ १५ ॥ इत्येवमादयोदोषामहानरकदानृणाम् एतेषांशोधनाथायपर्णकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ १६ ॥

से दुग्ध रहितहोतीहै और जो पुरुष पतिव्रतास्त्रीकों हरताहै सो पतालूयांविषे छिद्रवाला होताहै १२ ॥ विधवेति विधवास्त्रीविषे संग करणेतें लिंगविषे छिद्रकर्केयुक्त होताहै । और पुष्पांके चुराणे वाला फीना होताहै और खजाने चुराणेवाला जलोदर रोग वाला होताहै १३ गंधेति सुगंधिवाली वस्तुके चुराणे वाला वगळ गंधवाला होताहै और सुपारीके हरणेवाला सदाज्वर रोगयुक्त होताहै और किसेके विवाह विषे जो विघ्न कर्त्ताहै सो स्त्रीतें रहित होताहै १४ मयूरेति मोरके मारणे वाला जोहै तिसके देह विषे कालीयां विंदु होतीयांहैं और तला और बाग इनांके नाश करणेतें सदादुःखी होताहै १५ इसतें आदलेके जो दोष हैं सो पुरुषांकों महानरकके देणे वाले कहेहैं इनांदोषांके दूर करणे वास्ते पर्ण कृच्छ्र व्रत कों करें ॥ १६ ॥

अवमार्कंडेयजीका वचनहै ॥ महेति महांपापांके जो समूहहैं और लघु जो पापहैं पृथ्वीविषे आर्द्र क्या इच्छा करके जो पापकीतेहै और इच्छातें विनाकीतेहैं अथवा आर्द्रक्या तत्कालके कितेहोए पाप और शुष्क क्या चिरकालके कीते होय पाप एह अर्थहै तिनां संपूर्णांकों शुद्ध करणे वाला पर्ण कृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ १ ॥ अव पराशरजीका वचनहै ॥ पर्णेति ब्राह्मण पर्ण कृच्छ्रके करण विषे मध्यम पत्र ग्रहण करे बारां दिन पर्यंत नित्यशुद्धहोकर तिलककों धारणकरके ॥ १ ॥ पूर्वकी न्याई गंध पुष्प आदिकां करके विष्णुकों पूजे जद सूर्य अस्त होवे तां पलाहके तीन पत्रांकके तीन डूनेबनावे ॥ २ ॥ और वेदके पठनकरणेविषे युक्त जो ब्राह्मण तिनांके तीन गृहांविषे जाकर तीनडूनयांविषे भिक्षात्रयकों ग्रहणकर ॥ ३ ॥ एक भिक्षाका डूना विष्णुकेतांई अर्पणकरे और एक

॥ मार्कंण्डेयः ॥ महापातकजालानांलघूनांभुविजन्मनाम् आर्द्राणांचै
वशुष्काणांपर्णकृच्छ्रंविशोधनम् ॥ १ ॥ पराशरः ॥ पर्णकृच्छ्रस्यपर्णानिम
ध्यमानिद्विजोत्तमः द्वादशाहानिपर्यन्तंनित्यंशुचिरलंकृतः ॥ १ ॥ पूर्ववद्वि
ष्णुमभ्यर्च्यरविरस्तंगतोयदा त्रिभिःपत्रैर्ब्रह्मभूतैःकृत्वाचैवपुटत्रयम् ॥ २
त्रीणिवेश्मानिविप्राणांवेदाध्ययनशीलिनाम् भिक्षात्रयंसमानीयात्रिपुप
त्रपुटेष्विह ॥ ३ ॥ एकंपुटंतुदेवायविप्रायैकंसमर्पयेत् अवशिष्टंतदाश्नी
याद्धरिनामपरायणः ॥ ४ ॥ स्वपेद्देवसमीपेतुसंचितंमनसास्मरन् ततः
संचितंपापमित्यर्थः ॥ ५ ॥ विप्राय
प्रभातवेलायांपूर्ववत्सकलंचरेत् ॥ पर्णकृच्छ्रमिदंभूपशोधनंपापकर्मणाम्
देयागौरेकापंचगव्यंपिवेत्ततः
यस्याचरणमात्रेणचान्द्रायणफलंलभेत् ॥ ६ ॥

भिक्षाका डूनाब्राह्मण तांई अर्पणकरे और तीसरे डूनेंको आप भक्षण करे और विष्णुके नामका उच्चारणकरे ॥ ४ ॥ और विष्णुकीमूर्त्तिके समीपशयनकरे संचित जो पापहै तिसका मनकरके स्मरणकरे मैंने एह पापकीताहै ॥ ५ ॥ ऐसे बारां दिनके व्रततें अनंतर प्रातःसमयविषे पूर्वकी न्याई नित्य कर्मकों करके ब्राह्मणके तांई एक गौ देवे और तिसतें अनंतर पंचगव्यका पानकरे एह पर्ण कृच्छ्र हेराजन् पापकर्मांके शुद्ध करणे वालाहै जिसके करणे करके पुरुष चांद्रायणके फलकों प्राप्त होताहै ॥ ६ ॥

इसतें उपरंत पर्णकृच्छ्र व्रतका वदला देवलऋषि कहताहै पर्णेति हेराजर्षे तेरे तांई पर्ण कृच्छ्र व्रतके वदले नूं कहताहां कैसा वदलाहै संपूर्ण पापांके दूर करणे वाला और संपूर्ण उपद्रवांके नाशकरणे वालाहै ॥ १ ॥ और मनुष्योंकों संपूर्ण कामना फलकें देणेवाला और संपूर्ण कृच्छ्र व्रतांकेफल देणे वाला सो कहतेहां पांच ५ गौयां पंजां ब्राह्मणांके तांई भिन्न भिन्नदेवे कैसीयां गौयांहैं वस्त्र आदि शोभाकरके युक्त और वछयांके सहित हैं ॥ २ ॥ और सुवर्णके हैं शृंगजिनां के और रुप्येकेखुरां करके युक्त और दोहनकरणेके लिये कांसपात्रकरके युक्त और सुशीला और जुवाण ऐसीयांविप्रांकोंदेणेयोग्यहैं एह प्रत्याम्नाय पर्णकृच्छ्रका वहुतश्रेष्ट कहाहै ३ ❀ इसतें उपरंत

अथपर्णकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः ॥ पर्णकृच्छ्रस्यराजर्षेप्रत्याम्नायंवदामि ते सर्वपापस्यशमनं सर्वोपद्रवनाशनम् । १ । सर्वकामप्रदंन्दणांसर्वकृच्छ्रफलप्रदम् पंचगावः प्रदातव्याः सालंकाराः सवत्सकाः ॥ २ ॥ हेमशृंग्योरौप्यखुराः कांस्यदोहनसंयुताः ॥ साधुशीलायुवत्यश्च विप्रेभ्यश्च पृथक्पृथक् ॥ पर्णकृच्छ्रस्यविप्रर्षेप्रत्याम्नायोमहत्तरः ॥ ३ ॥ ❀ अथफलकृच्छ्रलक्षणम् । तत्रदेवलः ॥ फलकृच्छ्रस्यदेवर्षे लक्षणंकथ्यतेमया शृणु ब्रह्ममुनेचित्रंसर्वपापप्रणाशनम् ॥ १ ॥ येमातृघातिनोलोकेतथैवपितृघातकाः येवास्युर्भ्रातृहंतारस्तेषामेषाविनिष्कृतिः ॥ २ ॥ येवागर्भविभेत्तारोयेवास्युर्गरदायिनः येवाग्रामविभेत्तारोयेवाकुलजभेदिनः ॥ ३ ॥ येपीहपिशुनालोकेयेवास्युःस्तेयिनः सदा येवावालविभेत्तारस्तेषामेषाविनिष्कृतिः ॥ ४ ॥

फलकृच्छ्रके लक्षणनूं कहतेहां तिसविषे देवलजीका वचनहै फलेति हेदेवर्षे फलकृच्छ्रका लक्षण मैनेकथनकरीदाहै हेब्रह्ममुने तूं श्रवणकर वडाआश्चर्यहै और संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाहै १ ॥ इसकरके दूर होणेवाले पापोंकों कहतेहां यइति जो पुरुषमाताका और पिताका और भ्राताका बधकर्तेहैं तिनोंकी शुद्धिकर्त्ताहै ॥ २ ॥ और जो गर्भपात करतेहैं और विषदेतेहैं और नगरांकों लूटतेहैं और कुलविषे संवधीयांका नाशकरतेहैं ॥ ३ ॥ और जो लोकविषे चुगली करतेहैं और सदा चोरीकरतेहैं औरवालकांकों मारतेहैं तिनांसंपूर्णांकी शुद्धि देणेवाला एह व्रत है ॥ ४ ॥

याइति जो स्त्रीयां भर्त्ताकों त्यागके अन्य पुरुषां विषे गमन करतीयां हैं तिनां स्त्रीयांकी शुद्धि वास्ते पूर्व ब्रह्माजीने फलकृच्छ्र व्रत रचीदाहोया ॥ ५ ॥ ब्रह्मस्वेति ब्राह्मणांके धनकों जो नाशकरतेहैं अथवा होरींपासों नाशकरवातेहैं और जोलोकविषे खेत्तीयांकोंचुरातेहैं तिनांकी फल कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्धि कहीहै ॥ ६ ॥ उच्छिष्टेति जो पुरुष किसके जूठे अन्नकोंभक्षणकरतेहैं औरझूठा वाद करतेहैं और मुडदेकों उठाकर हरतेहैं इसमे शवका हरणा मंत्रसिद्धि वास्ते अथवा चिकित्साके जानणे वास्तेहै तिनांकी कृच्छ्रव्रतकर्के शुद्धि कहीहै ॥ ७ ॥ मद्येति जो मदिराके पीनेविषे नित्ययुक्तहैं और नित्यकर्म जो संध्यावंदनादि तिनांका नाशकरतेहैं और पितरांके निमित्त जो श्राद्ध

याश्चनार्य्यः पतिंत्यक्त्वारमंतेऽन्यान्नरान्यदि तासामपिविशुद्ध्यर्थंपुरासृष्टं स्वयंभुवा ॥ ५ ॥ ब्रह्मस्वघातिनोनित्यंब्रह्मस्वानांचघातकाः क्षेत्राणांहारिणोलोकेतेषामेतद्विनिष्कृतिः॥ ६॥ उच्छिष्टभोजनायेचयेचमिथ्यापवादिनः थेवैकुणपहर्त्तारस्तेषामेतद्विनिष्कृतिः ॥ ७ ॥ मद्यपानरतानित्यंनित्यकर्मविभेदिनः पितृश्राद्धविभेत्तारस्तेषामेतद्विनिष्कृतिः ॥ ८ ॥ महापातकयुक्तोवायुक्तोवासर्वपातकैः कृच्छ्रेणैतेनमहतासर्वपापैःप्रमुच्यते॥९॥ महांतः पापकर्म्माणोमहापापहताःसदा एतेनकृच्छ्रराजेनपुनंतिसततंद्विजाः फलकृच्छ्रंमहापापहारिसंपत्प्रवर्धनम् ॥ १० ॥ दिनादिनेमुनींद्राश्चकृत्वैतच्छुद्धिमाप्नुयुः ॥ ११ ॥

तिसका खंडनकरतेहैं तिनांपुरुषांकी फलकृच्छ्रव्रतकर्के शुद्धि कहीहै ॥ ८ ॥ महेति जो महापापकर्के युक्तहै वा संपूर्ण होरना पापांकर्के युक्तहै इस वड्डे फल कृच्छ्र व्रतके करणेंकर्के शुद्धहोंताहैं ॥ ९ ॥ महांतइति जो ब्राह्मण आदि वर्ण हैं महापापांके करण वाले हैं और महापापां कर्के हत होये होये इसकृच्छ्र राज कर्के पवित्र होतेहैं एह फल कृच्छ्र व्रत महापापांके नाशकरणे वालाहै और संपदाके वधाणे वालाहै ॥ १० ॥ इसमे संप्रदाय कहतेहैं दिन इति दिन दिनविषे मुनींद्र इसफल कृच्छ्रके करणे करके शुद्धहोंते होये । ११ ।

कायेति एह फलकृच्छ्र देहको शुद्धकर्त्ताहै और संपूर्ण कृच्छ्र फलांकोदेताहै और संपूर्णपापांका नाशकर्त्ताहै एहफलकृच्छ्रवडा श्रेष्ठहै १२ प्रातरिति प्रातःकालविषे स्नानकर्के देहकी शुद्धिवास्ते पूर्वकीन्यांई मृत्तिकादिसें स्नानकर्के शुद्धहोया गायत्रीका जप सूर्यके अस्ततांई बारादिन करे ॥ १३ ॥ तावदिति तां व्रती पुरुष मनकों स्थिरकर्के नित्यकर्मकों समाप्तकरे विधि कहतेहैं कि केलेका एक फल विष्णुकेतांई अर्पण करे ॥ १४ ॥ और तिस फलकों पूर्व भक्षणकरे मौनकों धारके व्रत विषे स्थित होया होवा वीर्यसंपूर्ण अर्थात् पक्केहोये फल भक्षण करे जो शुष्क न होण और कच्चे और चिरकालके त्रुटित न होण ऐसे त्रय फल भक्षणकरे ॥ १५ ॥ और

कायशुद्धिप्रदंकृच्छ्रंसर्वकृच्छ्रफलप्रदम् सर्वपापहरंचेदंफलकृच्छ्रमहत्तरम् ॥ १२ ॥ प्रातःस्नात्वाशुचिर्भूत्वापूर्ववच्छुद्धिहेतवे तावज्जपन्सदातिष्ठेद्यावदस्तंगतोरविः ॥ १३ ॥ तावद्व्रतीस्थिरमनानित्यकर्मसमापयेत् कदलीफलमेकंचविष्णवेतन्निवेदयेत् ॥ १४ ॥ तदेवभक्षयेत्पूर्वंव्रतस्थोमौनपूर्वकम् एकैकंवीर्यसंपूर्णंभक्षयित्वाफलत्रयम् ॥ १५ ॥ एतच्चवनफलैर्विना ॥ एवंद्वादशरात्राणिस्वपेन्नारायणाग्रतः गांदद्याद्विप्रवर्य्याय ब्रह्मकूर्चंपिवेत्ततः ॥ १६ ॥ फलकृच्छ्रमिदंसर्वंकथितंब्रह्मणोदितम् ॥ कृच्छ्रस्यैतस्यमाहात्म्यान्नश्यत्येवमहद्भयम् ॥ १७ ॥ अथफलकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ देवलः कृच्छ्रस्यैतस्यमुनयःप्रत्याम्नायंमहोन्नतम् शृण्वंतुसर्वपापघ्नंसर्वश्रेयःप्रदंनृणाम् ॥ १ ॥

वनकेंफलांको न ग्रहणकरे इसप्रकार बारांदिन १२ व्रतकरे और नारायणके समीप शयनकरे और श्रेष्ट ब्राह्मणके तांई एक गौ देणेयोग्यहै तिसतें पीछेब्रह्मकूर्च पीवे ॥ १६ ॥ एह फलकृच्छ्र व्रत ब्रह्माजी कर्के कथित क्या किहाहोयाथा सो मैंने तुमकों कहाहै इस कृच्छ्रके माहात्म्यतें महाभय नष्टहोताहै ॥ १७ ॥ इसतें उपरंत फल कृच्छ्रका प्रत्याम्नायहै तिसके बदले विषे देवलजीकावाक्यहै कृच्छ्रेति हेमुनींद्राहो इस कृच्छ्रके उत्तम बदलेकों श्रवण करो जो पुरुषांके संपूर्ण पापांके दूरकरणे वाला और संपूर्ण कल्याणांके देणेवालाहै ॥ १ ॥

पुरेति पूर्वं गालवनामे ऋषि ब्रह्महत्याके भय करकें युक्त होया होया संपूर्ण लोकांकें हितकी इच्छावाले जो विष्णु तिनांकी शरणकों प्राप्तहोताभया ॥ २ ॥ हे भगवन् लोकांके हितकी इच्छावाला जो तूंहैं तेरेकर्कें मै अनुग्रह करणे योग्यहां हे देवतवांके देव हैं इंद्रआदिकांके स्वामी तुसांके चरणांकी शरणकों प्राप्त होया जो में मेरी रक्षाकरो ॥ ३ ॥ कैसे होंतुसी जो पुरुष तुसांके नामकों स्मरण कर्ताहै तिसके जो ब्रह्महत्या आदि पापहैं तिनांके नाशकरणेवाले हो इसकारणतें हेपुरुषोत्तम मेंनें तुसांके चरण देखेहैं ॥ ४ ॥ ब्राह्मणकी हत्या जो वडी मेरेदेह विषे हे प्रभो स्थितहै सो तूं दूरकर मेरे देहको जलातीहै जैसे शुष्क लकडीकों अग्नि शीघ्रता

पुराहिगालवोनामब्रह्महत्याभयातुरः विष्णुंशरणमापेदेसर्वलोकहितैषि ३
णम् ॥ २ ॥ अनुग्राह्योस्मिभगवंस्त्वयालोकहितैषिणा रक्षमांदेवदे
वेशत्वदंघ्रिशरणागतम्॥ ३ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानांस्मरणान्नाशहेतुकम्
अतस्त्वत्पादयुगलंदृष्टंमेपुरुषोत्तम ॥ ४ ॥ विप्रहत्यामहत्यासीन्मयितांनुद
हेप्रभो जरयत्याशुसादेहंवह्निःशुष्केंधनंयथा ॥ ५ ॥ नास्तिनिंदासमंपापं
नास्तिक्रोधसमोरिपुः नास्तिमोहसमःपाशोनदेवंकेशवात्परम्॥ ६ ॥
विष्णुः ॥ नास्तिक्रोधसमोमृत्युर्नास्त्यकीर्त्तिसमाक्षतिः नास्तिकीर्त्तिस
मोधर्म्मस्तपोनाऽनशनात्परम् ॥ १ ॥ प्रत्यहंत्रिषवणंस्नानंकृत्वामांमन
सिस्मरन् फलकृच्छ्रंपुराकृत्वाह्यशक्तोयदिगालव ॥ २ ॥

से जला देतीहै ५ सभ देवतां सें अधिकता विष्णुजीको है एह कहतेहैं नास्तीति निंदाकें तुल्य होरकोई पूर्णफलदाता पाप नहिहै और क्रोधके समशत्रु नहि और मोहकें तुल्य फाई नहि और विष्णुतें परे देवता नहि ६ विष्णुजीकावचनहै नेति क्रोधके तुल्य होरकोई मृत्यु नहि किसे जगा (क्रोधके तुल्य होर कोइं शत्रु नहि ऐसापाठहै) और अयशतें और कोइं हानि नहि कही क्या अपयशहि हानि है और यशके तुल्य होर धर्म नहि और निराहारतें परे तप नहि १ अब फेरप्रसंगकोकहतेहै प्रति दिन दिन विषे त्रय कालस्नान करें मेरे को स्मरणकर्ताहोया ऐसे फल कृच्छ्रको करके पुरुष शुद्धहोताहै एहअगेसाथ संबंधहै और हेगालव जोपुरुष फलकृच्छ्रके करणे विषें सामर्थ्यतें रहितहै सोजिसकों अगे करणाहै तिसको करे एहअर्थहै

सोपुरुष इसप्रत्याम्नायनूं करणेकर्के पापतें शुद्धहोताहै और गौकीपूजा भली प्रकारकरे धूप दीप कनैवेद्यकर्के युक्त ॥ ३ ॥ और पूजनतें पीछे प्रदक्षिणाकर्के और नमस्कारकोंकर्के श्रेष्ट ब्राह्मण तांई गौदेवे कैसीगौ है जो सहित वछेके है और दुग्धदेणे वाली और फलकृच्छ्रके वदलेकर्के फलके देणेवालीहै ॥ ४ ॥ ऐसे दानकर्के फलकृच्छ्रके संपूर्णफलकों प्राप्तहोताहै तां हे ब्राह्मणां विषे श्रेष्ट ऐसे व्रतनूं कर तिसीक्षणमें तूं पवित्रहोवेंगा ५ ऐसेविष्णुकर्के आज्ञाकों प्राप्तहोयाहोया और प्रत्याम्नायनूं करताहोया योगीयांकोंभी दुर्लभ जो सिद्धि है तिसनूं प्राप्तहोया ॥ ६ ॥ ❀ अवपराक कृच्छ्रकहींदाहै तिसविषे मनुजीका वाक्यहै यतेति मनकों रोकके और प्रमादतें रहित

प्रत्याम्नायमिमंकृत्वा शुद्धोभवतिपातकात् गोपूजासाधुसंयुक्ताधूपदीपनिवेदनैः। ३ ॥ परिक्रम्यनमस्कृत्यसवत्सांपयसावृताम् योदद्याद्द्विप्रवर्य्यायप्रत्याम्नायफलप्रदाम् ॥ ४ ॥ सम्पूर्णफलकृच्छ्रस्यह्यखंडंलभतेनरः एवंकुरुष्वविप्रर्षेपूतोभवसितत्क्षणात् ॥ ५ ॥ इत्याज्ञप्तस्तदातेनप्रत्याम्नायंतदाचरन् सिद्धिमापातिमहतींयोगिनामपिदुर्लभाम् ॥ ६ ॥❀ अथपराककृच्छ्रम् तत्रमनुः ॥ यतात्मनोऽप्रमत्तस्यद्वादशाहमभोजनम् पराकोनामकृच्छ्रोयं सर्वपापप्रणोदनः ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ द्वादशाहोपवासेनपराकःपरिकीर्त्तितः। देवलः। अथवक्ष्यामिकृच्छ्रस्यपराकस्यमहात्मनः सर्वदोषनिवृत्तिःस्यात्सर्वशास्त्रानुवर्त्तिनः ॥ १ ॥ पराकःकृच्छ्रइत्युक्तोविष्णुनाप्रभविष्णुना यदाचरणमात्रेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ २ ॥

होके जोवारां १२ दिन भोजनका त्याग करणा एह संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला पराकनाम कर्केकृच्छ्रकहाहै ॥ १ ॥ तिसविषे याज्ञवल्क्य जीकावचनहै द्वेतिवारां १२ दिनांके उपवास व्रतकर्के पराक कृच्छ्रकहाहै ॥ अव देवलजीकावाक्यहै इसतें उपरंत पराक कृच्छ्रकों कहताहां संपूर्ण शास्त्रोंकर्के वर्त्तनवाला जो पुरुष है तिसके संपूर्ण पापांकी निवृत्ति होतीहै पराक व्रतकर्के १ ॥ ऐसेविष्णु जो प्रभविष्णु हैं तिनांनें पराक कृच्छ्र कहाहै जिसके करणेकरके संपूर्ण पापांतें रहितहोताहै ॥ २ ॥

जेडेपाप इसकर्के दूर हुंदेहैं तिनको कहतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्महत्यापाप और मदिराके पीणे का पाप और सुवर्णके चुराणेका पाप और गुरुंकी स्त्री विषे गमन करणेका पाप और तिनांका संसर्ग और तिनाके तुल्यपाप ॥ ३ ॥ और संकलीकरणपाप और मलिनी करण और उपपातक एह नौ ९ प्रकारकापाप कहाहै ॥ ४ ॥ तुलेति तुलादान और हिरण्यगर्भ और ब्रह्मांड और घटदान और पंचलांगलक और पृथ्वीदान ॥ ५ ॥ और विश्वचक्र और कल्पलता और सप्तसागर और चर्म धेनु महती और महाभूतघट तैसे हि एह दान ॥ ६ ॥ और कालचक्र और राशिचक्र और इसतें अनंतर विश्वचक्र और लक्षकोड तिलांकर्के हवन करणा

ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वङ्गनागमः तत्संसर्गोपिपंचैतेह्यनुपातकनामकम्
३ संकलीकरणंचैवमलिनीकरणंतथा उपपातकमित्येतन्नवधापरिकीर्त्तितम्
४ तुलाहिरण्यगर्भश्चब्रह्माण्डोयंघटस्तथा पंचलांगलकंचैवधरादानमतःपरम्
५ विश्वचक्रंकल्पलतासप्तसागरमेवच चर्मधेनुश्चमहतीमहाभूतघटस्तथा
६ कालचक्रंराशिचक्रंविश्वचक्रमनन्तरम् कोटिलक्षतिलैर्होमोद्विमुखीसुर
भिस्तथा ७ आर्द्रकृष्णाजिनंचैववेंकटेपर्वसंगमे छागादिपंचकंचैवतथैवदश
धेनवः ८। तथादशमहादानान्यचलाःसप्तनामकाःरहस्यकृतपापानिब्रह्म
हत्यादिकानिच ९॥ पापानांनवविधानामितरेषांमुनीश्वराः तुलादिसंग्रहा
द्दणांपराकःकृच्छ्रनामकः ॥ १० ॥ सर्वपापहरोन्दृणांदेवानांचप्रियंकरः
सर्वेष्वेतेषुकृच्छ्रेषुमहान्प्रोक्तःस्वयंभुवा ॥ ११ ॥

और प्रसूत समयविषे गौका दान ॥ ७ ॥ और कृष्णहरिणका आर्द्र चर्म और वेंकट तीर्थविषे पर्वके होयां २ बकरेतें आदिलेकरके पंच अर्थात् बकरा १ भेडा २ गौ ३ महिषी ४ घोडा ५ इनका दान और दश धेनु दान ॥ ८ ॥ और सप्त ७ पर्वतदान और गुप्तपाप और ब्रह्महत्यादि पाप ॥ ९ ॥ तुलाआदि दानांको जो ग्रहण कर्त्तेहैं तिनांके पापनूं और नौ प्रकारके जो पापहैं इसतें इतर जो पापहैं तिनां संपूर्णांकों शुद्ध करणेवाला पराक कृच्छ्र नामकर्के व्रतहै ॥ १० ॥ और पुरुषांके संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला और देवतयांको प्रीति करणे वाला ब्रह्माजीनें संपूर्ण कृच्छ्र व्रतांविषे एह पराककृच्छ्र व्रत श्रेष्ठ कहाहै ॥ ११ ॥

अब गौतमजीका वाक्य है प्रत्यहमिति वारां १२ दिनपर्यंत दिन दिनविषे एक छटांकपरिमाण गौके घृतमात्रकों पीणेकर्के ब्राह्मण शुद्धिकों प्राप्त होताहै एह पराक नामक व्रतसंपूर्ण पापांके नाश करणे वाला प्रसिद्ध है ॥ १ ॥ और संपूर्ण पापांके और उपद्रवांके नाश करणे वाला और संपूर्ण स्वर्गादि लोकगतिके देणे वालाहै एह निश्चयकर्के विश्वके धारणे वाले हरि जो भगवान् सो आप कहते भये ॥ २ ॥ और स्मृतिविषेभी कहाहै दिन दिनविषे वारां १२ दिन पर्यंत एक २ छटांकी परिमाण गोघृतके पीणेकर्के ब्राह्मण संपूर्ण पापांतें शुद्धिकों प्राप्तहोताहै हे द्विज इसतें विना शुद्धि नहि ॥ ३ ॥ लौगाक्षिऋषिनेंभी कहाहै देति वारां १२ दिन एक छटांकी गौकेघृतकों अग्निमे तपाकर पीवे तां पुरुषसंपूर्ण पापांतें रहितहोताहै और शुद्धिकों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ अथप

गौतमः। प्रत्यहंघृतमात्रंचद्वादशाहंगवोद्भवम् पीत्वापलंद्विजःशुध्येत्पराक इतिविश्रुतः १ ॥ सर्वपापप्रशमनः सर्वोपद्रवनाशनः सर्वलोकप्रदोह्याह भगवान्हरिविश्वधृक् ॥ २ ॥ स्मृत्यंतरे ॥ प्रत्यहंगोघृतंविप्रोद्वादशाहं पलंमुदा पीत्वाशुद्धिमवाप्नोतिपापेभ्योनान्यथाद्विजइति ॥ ३ ॥ लौगाक्षिणाप्युक्तम् । द्वादशाहंघृतंतप्तंपलमात्रंगवामिव पीत्वाशुद्धिमवाप्नोतिसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ १ ॥ अत्रेवशब्दएवकारार्थः अयमेवपराकः ॥ अथ पराककृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ देवलः ॥ प्रत्याम्नायंपराकस्यवक्ष्याम्यह मनुत्तमम् सर्वपापोपशमनंसर्वपापनिकृंतनम् ॥ १ ॥ व्यासः ॥ परा कंनामयत्कृच्छ्रंतत्कर्तुमनुजोत्तमः अशक्तस्तस्यकृच्छ्रस्य प्रत्याम्नायंसमाचरेत् ॥ १ ॥ यस्याचरणमात्रेणपराकस्यफलंलभेत् प्रत्याम्नायंगवांदद्या द्दशपंचसवत्सकम् सर्वपापविनिर्मुक्तःप्रयातिपरमंपदम् ॥ २ ॥

राककृच्छ्रका वदलाहै तिसविषे देवलऋषिका वाक्यहै प्रेति प्पराककृच्छ्रके उत्तमप्रत्याम्नायकों कहताहां कैसा प्रत्याम्नाय जो संपूर्णपापांके नाश करणे वाला और संपूर्ण पापांके छेदन करणे वालाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि लघुपापोंका नाश और महापापोंका एक कर्के घाटा होताहै और वहुतयोंकर्के सभकानाश होजावेगा ॥ १ ॥ अव व्यासजीकावचनहै पराकमिति पराक नाम कर्के जो कृच्छ्र है तिसके करणेविषे पुरुष असमर्थ होवे तां तिसके प्रत्याम्नायनूं करे जिसके करणे कर्के पराक कृच्छ्रके फलनूं प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ सो कहतेहां ॥ प्रत्याम्नायमिति पंदरां १५ गौयां सहित वछयांके दान करे इस वदले कर्के संपूर्ण पापांतें रहित होताहै और परम पदकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

क्या कर्के महापापांकें समूहांकों तेसैं उपपातकांकों शीघ्रहि नाशकर्के शुद्धिकों देता है जैसैंअग्नि रूईकेसमूहकों दाह करताहै ॥ ३ ॥ अव मरीचिजीका वाक्यहै प्रेति पराकव्रतका जो वदलाहै पंदरां १५ गौयां तिनांका ब्राह्मण आदि वर्ण दान करे संपूर्ण पापांकी शुद्धि वास्ते और संपूर्ण कल्याणकी प्राप्तिवास्ते ॥ १ ॥ हेराजन् महापापांकर्के युक्तभी जो पुरुष है सो पराकके वदले कर्के पापांतें रहित होताहै ॥ २ ॥ और संपूर्ण कृच्छ्र ब्रतांके फलकों प्राप्त होके परम पद जो विष्णुका लोक तिसनूं प्राप्तहोताहै एह तेरेतांई मैंने पराक व्रतकी विधि कहीहै ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तहि अर्थको स्पष्टकर्तेहैं पराकेति पराककृच्छ्रव्रतके क॰णे विषें जो असमर्थ है तिस पुरुषके पाप दूरकरणे वास्ते प्रत्याम्नाय कहाहै ब्राह्मणांके तांईं भिन्न २ पंदरां १५ गौयांके देणेकर्के शुद्धि कों प्राप्तहोताहै एहि अर्थहै ॥ अपरार्कविषें चतुर्विंशति मतविषें कहाहै प्रेति पराककृच्छ्रव्रत और

महापातकजालानिह्युपपातकमेवच तत्सर्वंनाशयित्वाशुतूलराशिमिवानलः ३ मरीचिः प्रत्याम्नायंपराकस्यदशपंचगवांद्विजः दद्यात्पापविशुद्ध्यर्थंसर्वश्रेयोभिवृद्धये १ महापातकयुक्तोपिसर्वपापैःप्रमुच्यते प्रत्याम्नायेनकृच्छ्रस्यपराकस्यजनाधिप २ सर्वकृच्छ्रफलंलब्ध्वाप्रयातिपरमंपदम् इतितेहिसमाख्यातःपाराकोविधिरुत्तमः ३ पराककृच्छ्राचरणासमर्थस्य प्रत्याम्नायंपंचदशगवांविप्रेभ्यःपृथग्दत्त्वाशुद्ध्यतीतिवाक्यार्थः ॥ अपरार्के चतुर्विंशतिमते ॥ पराकतप्तातिकृच्छ्रस्थानेकृच्छ्रत्रयंचरेत् सांतपनस्यवाप्यर्द्धमशक्तोव्रतमाचरेत् १ स्मृत्यर्थसारेतु तप्तकृच्छ्रेषट्पराकेपंचेति। अत्रप्रत्याम्नायोमहत्तप्तकृच्छ्रे।तप्तकृच्छ्रेतु अपरार्के मार्कंडेयः प्राजापत्यसमाधेनुस्तद्द्वयंहिपराकके। विशेषमाहसएव पराकेतुसुवर्णंस्याद्धेमशृंगीतथैवचेति॥हेमशृंगीग्रहणेन कांस्यदोहाद्युपस्करवतींधेनुं लक्षयति ॥

जेकर तप्तकृच्छ्र और अतिकृच्छ्र इनांविषें एक एक व्रतका त्रयत्रय प्राजापत्य व्रत बदला कहाहै जेकर इनांतीनों विषे भी असमर्थहोवे तां सांतपन व्रतका जो आदका अर्द्धहै तिसकों करे ॥ १ जो स्मृत्यर्थसारविषें फेर कहाहै कि तप्तकृच्छ्र व्रतविषें छे६ प्राजापत्यव्रतवदलाकरे और पराकव्रतविषें पंच५ प्राजापत्यवदला करे सो एहप्रत्याम्नायमहातप्तकृच्छ्र विषे जानणा ॥ तप्तकृच्छ्रविषे अपरार्कविषे मार्कंडेयजीका वचनहै प्राजापत्यके तुल्य फलदेणवाली प्रसूता गौ १ कहीहै सो धेनु पराक व्रत विषे दोकहीयांहैं ॥ इस विषे मार्कंडेयहि विशेष कहताहै पराकव्रत विषें सुवर्ण दानकरे तैसे सुवर्णके शृंग और रूप्येके खुर और कांस्यपात्रतें आदलेके समग्रीकर्के युक्त धेनुका दान करे ॥

इसतें अनंतर मासोपवास कृच्छ्रकों जावाल ऋषि कहताहै अनेति एकमासपर्यंत उपवास व्रत महापापांके नाशकरणेवाला कहाहै ॥ अथ इसकाप्रत्याम्नायकहतेहां बारां १२ दिनके उपवासकर्के युक्त पराक व्रतहै अथवा दिन दिन प्रति सठ ६० ब्राह्मणकहणे तिसकारणतें मासकेउपवास व्रत विषे भी फलकी प्राप्तिवास्ते वदला सठ ६० ब्राह्मणहि कहने एह पक्ष ऐश्वर्य युक्तपुरुष विषे जानणा ॥ और निर्धनपुरुष तीस ३० ब्रह्मणांके तांई भोजन देवे दिनविषें ॥ इसतें उपरंत यावककृच्छ्र व्रतकहाहै तिसविषें शंखजीकावाक्यहै गवेति गौकेंगोयेतें यवांको चुगके एक मासपर्यं जो भक्षणहै सो संपूर्णपापांके दूरकरणेवास्ते यावककृच्छ्र किहाहै १ देवलजीका वाक्यहै

अथ मासोपवासकृच्छ्रम् ॥ जावालः । अनशनंमासमेकंतुमहापातकनाशन मिति अस्यप्रत्याम्नायोद्वादशाहोपवासरूपपराकः षष्टिमितब्राह्मणभोजनं प्रतिदिनंवाविहितम् ॥ तथात्रापि षष्टि ६० मिताब्राह्मणामासंयावत् प्रतिदि नंमासोपवासफलकामनयाभोज्याः इदंचधान्यसमृद्धिपरमितरस्यार्द्धादि व्यवस्थयायोज्यम् ॥ अथयावककृच्छ्रम् तत्रशंखः । गोपुरीषाद्यवानश्नन्मा समेकंसमाहितःव्रतंतुयावकंकुर्य्यात्सर्वपापापनुत्तये १ देवलः । अथातः संप्रवक्ष्यामिकृच्छ्रंयावकसंज्ञकम् यस्याचरणमात्रेणमुच्यतेब्रह्महत्यया १ ॥ शृणुध्वंमुनयःसर्वेयावकंकृच्छ्रमीरितम् विषदानेचयत्पापंयत्पापंगृहदाहके २ शस्त्रधारणयत्पापंयत्पापंविप्रनाशनात् विधवाव्रतलोपेचयातिसंन्यासि नोरपि ३ गृहस्थस्यसदाचारत्यागेयत्पापमुच्यते प्रकृतेनापियत्पापंतेषां विस्मयतस्तथा ॥ ४ ॥

अथेति यावकनामकर्के जो कृच्छ्रव्रतहै तिसनूं कहतेहां जिसके करणेकर्के पुरुष ब्रह्महत्यापापते रहितहोताहै ॥ १ ॥ अवमरीचिका वचनहै श्रेति हेसंपूर्णमुनीश्वरो श्रवणकरो मैनें यावककृच्छ्र नामव्रतकहीदाहै विषकेदेणकर्के जोपापहै और गृहविषें अग्निलाणेकर्के जोपापहै ॥ २ ॥ और शस्त्रके धारणेतें जो पापहै और ब्राह्मणके मारणेतें जो पापहै और विधवा स्त्री विषे गमन करणे काजो पापहै और ब्रह्मचारीके और संन्यासीके व्रतके दूरकरणेविषें जोपापहै ॥ ३ ॥ और गृहस्थीकों कर्मोंके त्यागविषें जो पापहै और स्वभावकर्के जो पापहै और तिनां विधवा स्त्री आदिकांकों भय देणेका जो पापहै ॥ ४ ॥

और अपणेमानवास्ते ब्राह्मणतांई दानदेकर जो कहणाहै मैंनेंदानकीया तिसकहणेंतें ओर ब्राह्मण के अवमानतें जोपाप और ब्राह्मणकी निंदाकरणे विषे और माताका निरादरकरणेतें जो पाप ॥ ५ ॥ और धेनुकी निंदाविषे औरशिवांकी निंदाविषें और विष्णुकी निंदाविषे और यज्ञांकी निंदाविषें जो पाप ॥ ६ ॥ और विना बुलाय परगृहभोजनविषे और अनध्याय दिनांविषें पढ नेका जो पाप है और दुष्टपुरुषके साथ संगतिकरणेतें जो पाप है और धनके मदतें जो पाप है ७ ॥ और दुग्धकर्के स्नानकरणेंते जो पापहै और स्त्रीके निरपराध त्यागणें कर्के जो पापहै यज्ञके त्यागविषे और भांडयांके वेचणेविषे जो पापहै ॥ ८ ॥ और विधवानें जो केशातें रहितस्नानक

दानस्यकीर्त्तनात्पापंयथाविप्रावमानतः यत्पापंविप्रनिंदायांयत्पापंमातृभ र्त्सनात् ॥ ५ ॥ यत्पापंधेनुनिंदायांयत्पापंशिवभर्त्सने यत्पापंविष्णुनिंदा यांयत्पापंक्रतुकुत्सने ॥ ६ ॥ अमानभोजनेपापमनध्यायेपुपाठने दुःसंगते श्चयत्पापंयत्पापंधनगर्वतः ॥ ७ ॥ यत्पापंपयसास्नानेयत्पापंदारमोचने यत्पापंक्रतुसंत्यागेयत्पापंभांडविक्रये ॥ ८ ॥ सकेशस्नानरहिता विधवा कांस्यभोजना पुनर्भुक्तासताम्बूलासदानिन्दापरायणा ॥ ९ ॥ सदाभ्रमति या नारीपतिद्वेषपरायणा पुत्रःपितृणांविद्वेषीसदाविप्रापराधकृत् ॥ १० ॥ कुचैलः सर्वदातिष्ठन्यथातत्क्षालनाद्विसः वह्वाशीनिष्ठुरंवक्ताविप्रदाने षुविघ्नकृत् ॥ ११ ॥

रणाहै और तिसकों जो कांस्यपात्रविषे भोजन करणेका पापहै और विधवाकों दूसरी वार भोजन करणे विषे और तांबूलके भक्षण करणे विषे जो पापहै और जो स्त्री सदानिंदाविषे युक्तहै तिसकों जो पापहै ॥ ९ ॥ और जो सदाघरघरविषे भ्रमतीहै और पतिविषे द्वेषकर्के युक्तहै तिसकों जो पाप और पुत्रकों पिताकें साथविरोध करणेका जो पापहै और ब्राह्मणविषे अपराधकरणे काजोपापहै ॥ १० ॥ और सर्वदामलिन वस्त्रधारणेका जो पाप और हच्छीतरहवस्त्रके अप्रक्षालणेका जो पाप और वहुत जगा भोजन खाणेविषे जो पाप और जो कठोरवचनकों कहताहै तिसका जो पाप और ब्राह्मणांके तांई दान देणे विषे विघ्न करणे वालेकों जो पापहै ॥ ११ ॥

इनां संपूर्णपापांके दूरकरणे वास्ते यावक कृच्छ्रव्रतकों करे ॥ पराशरजीका वचनहै सर्वेति संपूर्ण पापांके दूर करणे वास्ते यावक कृच्छ्र व्रतकहाहै तिसके करणे करके ब्राह्मण शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ इसकी विधि कहतेहैं अव्रेति जिनांके भक्षण करणेतें व्रत न दूर होवे ऐसयां यवांकों अर्थात् गोमयतें निकालके यवांकों आप ग्रहण कीतीहोई जो अग्नि तिस विषे छे गुणा अधिक जल करके पकाके व्रती जो पुरुषहै शुद्धिकों स्नान पूर्वक करे तिस पके होये यवागूकों पलाहपत्रांके डूने विषे रक्षकर ॥ २ ॥ और यव न होण तां व्रीहि ग्रहण करे वा श्यामाक क्या सवांक ग्रहणकरे इसके मानतें दिन दिनविषे प्रथम ब्राह्मणके तांई देकर विष्णुतांई सो अन्नअर्पण करे ॥ ३ ॥ और नित्यकर्मकों करकेसूर्यके अस्त

एतेषांपावनार्थाययावकंकृच्छ्रमाचरेत् ॥ पराशरः ॥ सर्वपापविशुद्ध्यर्थं यावकंकृच्छ्रमीरितम् तदाचरणमात्रेण विप्रोभवतिशुद्धिमान् ॥ १ ॥ अव्रतघ्नयवान्पक्त्वास्वगृह्याग्नौव्रतीशुचिः तद्यवागूंसमाधायब्रह्मपत्रपुटे वशी ॥ २ ॥ यवाभावेव्रीहयोवाश्यामाकाह्यस्यमानतः ॥ तदन्नंप्रत्यहं दत्त्वायवागूंविष्णवेऽर्पयेत् ॥ नित्यकर्मादिकंकृत्वायावन्नंदायते रविः ॥ ३ ॥ तावत्पर्य्यंतंपूर्वविभूतिं विश्वरूपादिकं पठन् । स्थित्वा नारायणमनुस्मरन् यवागूं पिवेत् ॥ तदाहगौतमः ॥ ब्रह्मपत्रपुटेराजन्भुक्त्वासायमतंद्रितः तावतामनसाविष्णुंस्मरन्नंदायतेरविः । १ । यवागूंविष्णवेदत्त्वापश्चात्पीत्वास्वयंमुदा पूर्ववत्क्षालनंकृत्वापादपाण्योर्यथाक्रमम् ॥ २ द्विराचम्यशुचिर्भूत्वास्वपेन्नारायणाग्रतः अजस्रंधारयेदग्निंयावत्कृच्छ्रंसमाप्यते ॥ ३ ॥ परेद्युरेवंकुर्वीतद्वादशाहोभिरीरितम् तदंतेगौः प्रदातव्यापंचगव्यंपिवेत्तदा ४ ॥ एवंकृत्वाद्विजोयस्तुसद्यः पापात्प्रमुच्यते

पर्यंत विभूति विश्वरूपादिका पाठकरे और नारायणका स्मरणकरेपीछे तिसयवागूका पानकरे ॥ तिसी नूं गौतम ऋषि कहताहै हेराजन् आलसतें रहित होके सायं काल विषे भक्षण करणे योग्य जो यवागू तिसकों पलाशपत्रांके डूनेविषे रक्षके मनकरके विष्णुकास्मरणकरे सूर्यके अस्ततक ॥ १ ॥ फेर विष्णुतांईदेके आप पानकरे हर्षकरके पीछेपूर्वकी न्यांईहस्थ और पैरोंकोंक्रमसें शुद्धकरके ॥ २ ॥ दो वार आचमन करे और नारायणके आगे शयन करे और निरंतर अग्निका धारण करे जितनापर्यंत कृच्छ्रव्रत नहि समाप्त होवे ॥ ३ ॥ तितना कालकरतारहै ऐसे संपूर्ण विधि दूसरे दिनसें लेके बारांदिनतककरके अंतविषे पंचगव्यकों पीवे और गौ दानकरे ऐसे करणे तें तत्काल द्विजपापतें रहितहोताहै ॥ ४ ॥

इसतें उपरंत यावक कृच्छ्रका वदलाहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै कृच्छ्रस्यंति इसयावककृच्छ्रके
प्रत्याम्नायनूं श्रवणकर जिसकें एकवार करणेकर्के ब्राह्मणादि तात्कालंहिपापतें रहितहोंताहै । १ ।
योगीश्वरका वाक्यहै प्रेति यावककृच्छ्रके वदलेनूं कहतेहां जों वदला संपूर्णपापांके नाश करणे
वाला और पुरुषांकों संपूर्ण कृच्छ्र फलकेदेणे वालाहै ॥ १ ॥ यावक कृच्छ्रकावदलेमें दश १०
गौयांसहित वछयांके दुग्धदेणे वालीयां और हछे स्वभाववालीयां वस्त्रभूषणांकर्के संयुक्त ॥ २ ॥
भिन्न भिन्न ब्राह्मणांके तांइं देणें योग्यहैं जो ब्राह्मण जीविकासें रहितहैं ॥ पीछे देहकी
शुद्धि वास्ते पंचगव्यकों पीवे एह वदला यावक कृच्छ्रके फलदेणें वाला सेवणे योग्यहै

अथयावककृच्छ्रप्रत्याम्नायः॥ तत्रदेवलः ॥ कृच्छ्रस्ययावकस्यास्यप्रत्याम्ना
यमिमंशृणु सकृत्कृत्वाद्विजोयस्तुसद्यः पापात्प्रमुच्यते १ योगीश्वरः प्रत्या
म्नायंप्रवक्ष्यामियावकस्यमहात्मनः सर्वपापप्रशमनं सर्वकृच्छ्रफलंनृणाम्
१ ॥ गावोदशप्रदातव्याः प्रत्याम्नायेप्रकल्पिताः सवत्सादुग्धसंयुक्ताः
सुशीलास्समलंकृताः २ विप्रेभ्यःप्रतिदातव्या अवृत्तिभ्यःपृथक्पृथक्
पंचगव्यंततःपश्चात्पिबेद्देहविशुद्धये ३ एतत्कृच्छ्रस्यफलदंयावकस्यसुखा
प्तये ॥ गौतमः ॥ यावकस्यमहापापहारिणःफलदायकम् सर्वपापोपशम
नंमहत्पुण्यप्रदायकम् ॥ १ ॥ सम्पूर्णवस्त्राभरणखुरशृंगोपशोभिताः स
वत्सायुवतीःसाध्वीर्गवांसंख्यादशस्मृताः ॥ २ ॥ पयस्विनीर्द्विजाग्र्येभ्यः
प्रदातव्याःफलाप्तये पंचगव्यंपिबेत्पश्चाच्छुद्धोभवतिमानवः ॥ ३ ॥

यावककृच्छ्र जों व्रतमहापापांके नाश
सुखकी प्राप्तिवास्ते ॥ ३ ॥ गौतमजी कावाक्य है येति यावककृच्छ्र जों व्रतमहापापांके नाश करणे वाला और
करणे वाला तिसका वदला फलके देणे वाला और संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला और
महत्पुण्यकेदेणें वालाहैं ॥ १ ॥ तिसमें संपूर्ण वस्त्र और भूषण और रुप्येके खुर और सुवर्णके
शृंगातिनां कर्के शोभायमान सहित वछयांके और जुवाण सुशीला दश गौयां १० देणे वास्ते
कथनकीतयांहै ॥ २ ॥ दुग्धदेणेवालीयां फलकी प्राप्ति वास्ते श्रेष्ट ब्राह्मणांकेतांइं देवे और पीछे
पंचगव्यका पानकरे तां मनुष्य शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥

जो पुरुष इस प्रकार करताहै सोयावकव्रतके फलकों प्राप्त होके शुद्धहोताहै ॥ ४ ॥ अवसौम्यकृच्छ्र कहतेहैं तिसविषे याज्ञवल्क्यकावचनहै पिण्येति प्रथम दिनविषे तिलांकों कुटकरभक्षण करे और दूसरे दिन चावलांकी पिछका पान करे और तीसरे दिन तक्र क्या छाहका पानकरे और चौथे दिन केवलजलका पानकरें और पांचमे ५ दिन यवांकेसक्तुयांकापानकरे और एक रात्रका उपवास करे एह छे दिनका सौम्यकृच्छ्रव्रत कहाहै । १ । इहां द्रव्यका परिमाण प्राणां के निर्वाह मात्राजानणा ॥ जावालऋषिनें तो चार दिनांका सौम्यकृच्छ्र कहाहै एक दिन विषे तिलांकों कुटकर भक्षण करें और दूसरे दिन सक्तु पान करे और तीसरे दिन छाइका पानकरे

एवंकृतेनरोयस्तुयावकस्यस्वरूपिणीम् गवांसंख्यांद्विजाग्र्यायदत्त्वाफलमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ अथसौम्यकृच्छ्रम् ॥ तत्रयाज्ञवल्क्यः ॥ पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तूनांप्रतिवासरम् एकरात्रोपवासश्चकृच्छ्रःसौम्योयमुच्यते १ ॥ द्रव्यपरिमाणंतुप्राणयात्रामात्रनिवन्धनमधिगंतव्यम् ॥ जावालेनतुचतुरहव्यापीसौम्यकृच्छ्रउक्तः । पिण्याकंसक्तवस्तक्रंचतुर्थेहन्यभोजनम् वासोवैदक्षिणांदद्यात्सौम्योयंकृच्छ्रउच्यते ॥ १ ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे ॥ वारणकृच्छ्रउक्तः ॥ मासंपरिमितसक्तूदकपाने वारणकृच्छ्रः ॥ श्रीकृच्छ्रस्तु ॥ त्र्यहंपिवेत्तुगोमूत्रंत्र्यहंवैगोमयंपिवेत् त्र्यहंयावकमेषश्रीकृच्छ्रःपरमपावनः ॥ १ ॥ अथ यावकृच्छ्रः ॥ यवानांपयःसाधितानां सप्तरात्रं पक्षंमासंवा प्राशने यावकृच्छ्रः ॥

और चौथें दिन विषे उपवासकरे और वस्त्र दक्षिणा देवे एह सौम्यकृच्छ्र कहाहै ॥ १ ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरविषे वारण कृच्छ्रव्रत कहाहै एकमासपर्यंत जलककें युक्त जो सत्तु तिनांके पान करणेंविषें वारण कृच्छ्रव्रतहोताहै । अब श्रीकृच्छ्रकहीदाहै त्र्यहमिति त्रय दिन गोमूत्रपीवे और त्रय दिन गौका गोयापानकरे और त्रय दिन जवांका काडा पीवे एह श्रीकृच्छ्रव्रत कहाहै ॥ १ ॥ अबयावकृच्छ्र कहीदाहै जलककें सिद्धकीते जो यव तिनांका सच दिन पानकरे वा पंदरांदिन वा एक मास भक्षण करण विषे यावकृच्छ्र कहाहै ॥ एह पूर्वोक्त यावक कृच्छ्रतें विलक्षण होणे करकें उसतें भिन्नहै

भोजनकों त्यागके जल विषे स्थितहोवे दिन रात्र तां जलकृच्छ्र होताहै ॥
अब जलकृच्छ्रहै ॥ गोमूत्र करकें युक्त जो यव तिनांकों एक दिन भक्षण करे तां वज्रकृच्छ्र
अब वज्रकृच्छ्र है ॥ अहोरात्रहि जानणा और पापपुरुषको वज्रकी न्याईं हे
व्रत होताहै इसजगाभी कालकानियम अहोरात्रहि जानणा और पापपुरुषको वज्रकी न्याईं है
इस करके वज्रकृच्छ्रनामहै ❁ अब तुला पुरुष नाम करके कृच्छ्रकहीदाहै तिस विषे याज्ञवल्क्यजी
का वचन है एषामिति तिल कुटे होये और चावलांकी पिछ और छाह और जल और
सतुयांकों क्रमकरकें एक एककों त्रय त्रय दिन भक्षण करे तां पंदरां १५दिनांकरकें तुलापुरुषनाम
कृच्छ्रव्रत होताहै ॥ १ ॥ इसतुलापुरुषका पंदरा दिनांकरकें विधान होणेतें उपवास नहि कहा ॥
यमजीनें इकीयां दिनांका तुलापुरुष व्रत कहाहै अचाममिति चावलांकी पिछ और तिलकुटेहोये

अनाशनोजलस्थोहोरात्रंक्षिपेदितिजलकृच्छ्रः ॥ वज्रकृच्छ्रस्तु गोमूत्रयाव
कपानेएकोवज्राख्यःकृच्छ्र ❁ अथतुलापुरुषाख्यकृच्छ्रः ॥ तत्रयाज्ञवल्क्यः ॥
एषांत्रिरात्रमभ्यासादेकैकस्ययथाक्रमम् तुलापुरुषइत्येषज्ञेयःपंचदशाहकः
१ ॥ एषांपिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तूनामित्यर्थः ॥ १ ॥ अत्रपंचदशाहकत्व
विधानादुपवासस्यानिवृत्तिः । यमेनत्वेकविंशतिरात्रिकस्तुलापुरुषउक्तः ॥
आचाममथपिण्याकंतक्रंचोदकसक्तुकान् त्र्यहंत्र्यहंप्रयुंजानोवायुभक्षस्त्र्य
हंद्वयम् एकविंशतिरात्रस्तुतुलापुरुषउच्यते ॥ १ ॥ ❁ अथकायकृच्छ्रम्
॥ तत्रदेवलः ॥ प्राजापत्यंतप्तकृच्छ्रंपराकंयावकंतथा ततःसांतपनंकृच्छ्रं
महासांतपनंतथा ॥ १ ॥ कायकृच्छ्रंतथाप्रोक्तमतिकृच्छ्रंविशुद्धिदम् ॥
औदुम्बरंचपर्णंचफलकृच्छ्रमतःपरम् ॥ २ ॥

और छाह और जल और सतु इनांकों क्रम करकें त्रय त्रय दिन भक्षण करे और छे ६
दिन वायु भक्षण करे ऐसे इकीस २१ दिनांका तुलापुरुष कहा है इसका नामभी
तुलापुरुषदानके तुल्यफल देणे करकें है तिसके तुल्यहै ॥ १ ॥ ❁ इसतें उपरंत कायकृच्छ्रहै
तिस विषे देवल जीका वाक्यहै प्रेति प्राजापत्यकृच्छ्र १ और तप्त कृच्छ्र २ पराककृच्छ्र
३ यावककृच्छ्र ४ सांतपनकृच्छ्र ५ महासांतपन ६ कायकृच्छ्र ७ अतिकृच्छ्र विशेष करकें
शुद्धिके देणे वालाहै और ८ औदुम्बरकृच्छ्र ९ पर्णकृच्छ्र १० और इसके अगे
फलकृच्छ्र ॥ ११ ॥ २

माहेश्वरकृच्छ्र १२ ब्रह्मकृच्छ्र १३ धान्यकृच्छ्र १४ स्वर्णमयकृच्छ्र १५ पिच्छे कृच्छ्र व्रत तेरां १३ कथन कीतेहैं अब लिंगपुराण विषे कथन कीते जो अतिकृच्छ्र और काय कृच्छ्र तिनां करकें पंदरां कृच्छ्र होतेहैं संपूर्णलोकांके उपकारवास्ते लिखेहैं ॥ कायकृच्छ्र और अतिकृच्छ्रका लक्षण जो लिंगपुराण विषे कहाहै तिसनूं कहतेहां कायेति कायकृच्छ्रनूं कहतेहां जो महापापांकों शुद्धकरणे वास्ते और उपपातकांकी शुद्धिकरणे वास्तेमुनियांने कथन कीताहै १ ॥अब जो पाप कायकृच्छ्र करकें दूर होतेहैं तिनको लिखतेहैं भविष्यत्पुराण विषे ॥ कायकृच्छ्रकरकें दूरहोणवाले पाप कहेहैं तुलेति एक हजारका जो दान कर्त्ताहै और हजार

एवंमाहेश्वरंचैवब्रह्मकृच्छ्रंतथैवच धान्यंस्वर्णमयंचैवदशपंचैवकीर्त्तितम् ३
पूर्वंत्रयोदशकृच्छ्राणीत्युक्तम् ।इदानींलिंगपुराणोक्तत्वादतिकृच्छ्रकायकृच्छ्रा
भ्यांसहपंचदशभवंतिसर्वेषामुपकारकत्वाल्लिखितम् ॥ कायकृच्छ्रातिकृच्छ्र
लक्षणंलिंगपुराणोक्तंविशिनष्टि ॥ कायकृच्छ्रंप्रवक्ष्यामिमहापातकशुद्धये
उपपातकशुद्ध्यर्थंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥ १ ॥ भविष्यत्पुराणे ॥ तुलाधे
नुसहस्राणिअष्टाब्दानिद्विजोत्तम दाताप्रतिग्रहीताचअन्योन्यंनावलोक
येत् ॥ १ । तुलाधेनुसहस्रदानानंतरमष्टवर्षपर्य्यन्तं दातृप्रतिग्रहीत्रोरव
लोकनादिनिषिद्धमित्यर्थः ॥ यदिदैवादनुप्राप्तंतीर्थेषुचमहोत्सवे तदातद्दो
षशांत्यर्थंकायकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ २ ॥ द्वितीयोजपकृत्पूतःसहस्रंविधिपूर्व
कम् द्वितीयःप्रतिग्रहीता उभयोर्दानयोराजातथाब्रह्मसदस्ययोः ॥ ३ ॥
चत्वार्य्येवहिवर्षाणितन्मुखंनावलोकयेत् ।

धेनुका जो दान कर्त्ताहै और तिनांदानांकों जो ग्रहण कर्त्ताहै इसमे दाता और प्रति ग्रहीताकों अष्ट वर्ष ८ पर्यंत आपसमें देखणाका निषेध है क्या आपस विषे दर्शन न करें ॥ १ ॥ जेकर तीर्थां विषे फेर महोत्सव विषे दैवकरके इनां पूर्वोक्तांका मिलाप होवे तां तिसदोषकी शांतिवास्ते काय कृच्छ्र व्रतकों करे दाताकों एह प्रायश्चित्तहै ॥ २ ॥ और दानके ग्रहण करणे वाला विधि पूर्वक एक हजार १००० गायत्रीके जप करकें शुद्ध होताहै तुलादान हजार और धेनुदान हजार इन दोनों दानों विषे राजा ब्रह्मा और सदस्यके मुखकों चारवर्ष पर्यंत न देखे ॥ ३ ॥

ब्रह्म और सदस्यका अर्थ शब्द कल्प द्रुम विषे कहाहै एकइति एक कर्मविषे नियुक्त होताहै और दूसरा कर्मका धारक होताहै और तीसरा प्रष्णकों कर्त्ताहै और चौथापुरुष कर्मकों कर्त्ताहै ॥ १ ॥ जोकर्मविषे निरंतर युक्तहै तिसका नाम आचार्य और सोहि पुरुष ब्रह्मांग जो होम कर्महै तिस विषे युक्त होवे सो ब्रह्मा कहीदाहै और सोहि ब्रह्माआप हवन करे तिसका नाम होताहै और जो (विधिके दखाणे वालाहै तिसका नाम सदस्य कहाहै इसअरमकोशके वाक्यतें) कदाचित् राजा ब्रह्मसदस्यके मुखकों देखे तां तिसकों पापदूरकरणवास्ते कायकृच्छ्रव्रतहै ब्रह्मा और सदस्य कों एक हजार१०००गायत्रीका जप शुद्धिवास्ते कहाहै ॥ ऐसे न करे तां दोषनूं बृहस्पति जी

ब्रह्मसदस्ययोःसंज्ञा शब्दकल्पद्रुमे एकःकर्मनियुक्तःस्याद् द्वितीयस्तत्र धारकः तृतीयःप्रष्णकंकुर्य्यात्ततःकर्मसमाचरेत् १ कर्मनियुक्तआचार्यः सच ब्रह्मांगके होमकर्मणिब्रह्मा स्वयंहोमकरोहोतापीत्यादि सदस्याविधि दर्शिनइत्यमराद्सदस्योविधिदर्शीबोध्यस्तत्परिहाराय दातुःकायकृच्छ्मि तरयोर्ब्रह्मसदस्ययोश्चसहस्रगायत्रीजपः। अन्यथादोषमाहवृहस्पतिः। दातुःप्रतिग्रहीतुश्चकायकृच्छ्रोजपोमहान् अन्योन्यालोकनेनोचेत्तदानंनि ष्फलंभवेत् १ महान्सचसहस्रावच्छिन्नोनोचेत् तन्निष्क्रियमकृत्वाचेदित्य र्थः॥ सर्वमहादानप्रतिग्रहेषुदातृप्रातिग्रहीत्रोःब्रह्मसदस्ययोश्चैवमुक्तं प्राय श्चित्तंसर्वत्र वेदितव्यम् लांगलपंचसंज्ञेचविश्वचक्रेमहत्तरे सप्ताब्दंचत

धाराजातन्मुखंनावलोकयेत् ॥ २ ॥

कहतेहैं ॥ दातुरिति दाता और प्रतिग्रहीता आपसविषे देखण तो दाता कायकृच्छ्रव्रत न करे और प्रतिग्रहीतामहान् क्या एकहजार गायत्रीका जप न करे तां सोदान निष्फल होताहै १ तिसकी शुद्धिकों जेकर नकरे संपूर्ण महादान प्रतिग्रहां विषे दाता और प्रतिग्रहीताकों और ब्रह्मा और सदस्यकों प्रायश्चित्त जैसे कहाहै सो संपूर्ण स्थानांविषे जानणेयोग्यहै ॥ और पंच लांगल दान विषे और विश्वचक्र महा दानविषे राजा तिनांदानांके ग्रहण करण वालयां पुरुषांके मुखनूं सत्त ७ वर्ष न देखे २ ॥

सप्तेति सप्तसागर दानां विषें और चर्मधेनुके प्रतिग्रह विषें और महाभूत घट दान विषे औरतु ला दानविषें कहे जो सप्त प्रतिग्रह तिनां दानां विषें आचार्य और ब्रह्मा क्याहोना और विधि के दखाणे वाला इनांके मुखकों राजा नदेखे कदाचित् देखेता पूर्वकी न्यांई कायकृच्छ्र आ, दिकों करे तांशुद्धहोताहै ॥ ३ ॥ और हिरण्य गर्भ दानविषें और ब्रह्मांड दानविषे दाता जेकर आपसविषें मुखदेखे तां दानके फलको नहि प्राप्तहोता इसजगाभी प्रायश्चित्त आचार्य और ब्रह्मासदस्यको पूर्वकी न्यांईहै ॥ ४ ॥ और सम्यक् कल्पवृक्षके दानविषे और तैसे कल्पलतादान विषे राजा छे६वर्षतक ब्राह्मणके मुखको नदेखे और ब्राह्मण राजाकों नदेखे १ कदाचित् आप सविषे देखें तां कायकृच्छ्र और गायत्रीका जपकरें तिसविषे संख्या क्रमकर्के जानणे योग्यहै

सप्तसागरदानेषुचर्मधेनोःप्रतिग्रहे महाभूतघटेचैवतुलायांनावलोकयेत् ३ ॥ उक्तेषुसप्तप्रतिग्रहेषु तदाचार्य्यब्रह्मसदस्यानां प्राग्वत्कायकृच्छ्रादिकं वेदितव्यम् ॥ हिरण्यगर्भेब्रह्माण्डेदातायदिहिपूर्ववत् अन्योन्यालो कनेराजन्नदानफलमश्नुते ॥ ४ ॥ आचार्य्यब्रह्मसदस्यानांपूर्ववत् ॥ संकल्पपादपादानेतथाकल्पलताग्रहे ॥ षडब्दंतन्मुखंराजाविप्रोवानावलोकयेत् ॥ ५ ॥ कायकृच्छ्रंगायत्रीजपंच तत्रसंख्याक्रमेणवेदितव्यम् ॥ हिरण्यधेनुदानेचहिरण्याश्वप्रतिग्रहे ॥ पूर्ववत्सप्तसंख्याब्दमन्योन्यंनावलोकयेत् ॥ ६ ॥ कृच्छ्रादिकंपूर्ववत् ॥ हिरण्याश्वरथेचैवहेमहस्तिरथेतथा धरादानेकालपुरुषेकालचक्रेतथैवच ॥ ७ ॥ तिलधेनौराशिचक्रेपंचाब्दंनावलोकयेत् यदिदैवात्समालोकोह्यतिकृच्छ्रंचरेद्व्रती ॥ ८ ।

॥ ५ ॥ अर्थात् राजाकायकृच्छ्रकरे और ब्राह्मणजप करे और सुवर्ण धेनुके दान विषे और सुवर्णके अश्व दानविषे पूर्वकी न्यांई सप्त ७ वर्षतक आपस विषे न देखें इसमेभी जेकर देखे तो कृच्छ्रादि व्रतपूर्वकी न्यांई जानणा ॥ ६ ॥ सुवर्णके अश्व कर्के युक्त जो रथ है तिस विषें और सुवर्णके हस्ति कर्के युक्त जो रथ है तिस दान विषें और पृथ्वी दान विषें और काल पुरुष दान विषे और कालचक्र दान विषे ॥ ७ ॥ तैसें और तिल धेनु दानविषें और राशि चक्र दानविषे दाता और प्रतिग्रहीता आपस विषे पंच वर्ष पर्यंत नदेखें जेकर देवकर्के आपस विषें देखणेतां दाता अतिकृच्छ्रव्रतकों करे ॥ ८ ॥

पुनरिति ब्राह्मणपटगर्भ विधानतें फेर संस्कारके करणेतें शुद्धिकों प्राप्तहोंताहै ऐसें न करे तां दो षकों प्राप्तहोताहै और दाताका दान निष्फलहोताहै ९ और कहतेहैं कोटीति कोटि होमविषे और लक्ष होमविषें और पाप पुरुषके प्रतिग्रहविषें दाता आचार्यके मुखकों न देखें १० जेकर दैवतें दर्शनकरे तिसविषेंभी दाताकों अतिकृच्छ्रव्रतकहाहै और इतर क्या आचार्यआदिकांकों फेर संस्कार शुद्धिके निमित्त कहाहै इसमें वाशब्दसें पूर्वोक्त ५ वर्ष तक निषेध जानणा ॥ श्वेत अश्व दानकों जो ग्रहण कर्त्ताहै और मृतपुरुषके निमित्त जो शय्या दान तिसको जो ग्रहण कर्त्ताहै और हाथि दानकों जो ग्रहण कर्त्ताहै तिसके मुखकों त्रय ३ वर्ष पर्यंत दाता न देखे ॥ ११ ॥ और जेकर दैवतें तीर्थआदिविषें देखे तां दाता अति कृच्छ्र व्रतकरे और ब्राह्मण पटगर्भ विधितें संस्कार करणेतें शुद्धिको प्राप्तहोताहै ॥ १२ ॥ और

पुनस्संस्कारभृद्विप्रःपटगर्भविधानतः अन्यथादोषमाप्नोतिदाताविफलमश्नुते ॥ ९ ॥ कोटिहोमेलक्षहोमेपापपुरुषप्रतिग्रहे आचार्य्यस्यमुखंदातादैवाद्यानावलोकयेत् ॥ १० ॥ तत्राप्यतिकृच्छ्रंदातुरितरेषांपुनःसंस्कारः श्वेताश्वमृतशय्यायांगजदानप्रतिग्रहे त्र्यब्दंहितन्मुखंदातादैवाद्यानावलोकयेत् ॥ ११ ॥ अतिकृच्छ्रीचदातास्याद्ब्राह्मणःपटगर्भतः १२ आर्द्रकृष्णाजिनेचैवसप्तशैलप्रतिग्रहे द्वित्र्यब्दंतन्मुखंदातापूर्ववन्नावलोकयेत् ॥ १३ ॥ ब्रह्मकृच्छ्रंचरेद्दाताइतरेपटगर्भतः शुद्ध्यंतिसततंविप्राःशातातपवचो यथा ॥ १४ ॥ ब्रह्मकृच्छ्रंप्राजापत्यमित्यर्थः ॥ कपिलाद्विमुखीदानेदासीगृहपरिग्रहे अब्दमेकंद्विजंदातापूर्ववन्नावलोकयेत् ॥ १५ द्विमुखीउभयमुखीत्यर्थः ॥ पर्णकृच्छ्रंततःप्रोक्तमितरेषांहिपूर्ववत् तुलादिसप्तदानेषु ऋत्विजोहोतृकानपि द्वारस्थान्नावलोकेद्दाफलकृच्छ्रमुदाहृतम् १६ मासत्रयमित्यर्थः

कृष्ण मृगके आर्द्र क्या गिल्लेचर्मके दानविषे दोवर्ष और सप्त७पर्वत दानकें ग्रहणविषे त्रयवर्ष पर्यंत दाता दानकें ग्रहण करणवालेके मुखकों न देखे १३ जेकर दैवतें देखे तां दाता प्राजापत्यकृच्छ्र व्रतकों करे और इतर जो आचार्य्यआदि सो पटगर्भ विधितें शुद्धहोतेहैं एह शातातपका वचनसत्यहै १४ और कपिलागौकें दानविषें और उभयमुखी गौके दानविषें और दासी और गृहदानविषे दाता एकवर्षपर्यंत दानग्रहीताके मुखको पूर्वकीन्याईं नदेखे १५ जेकर दैवतें देखे तां दाता पर्णकृच्छ्र व्रतकों करे और आचार्य्य आदिकांकी शुद्धि पूर्वकी न्याईं पटगर्भ विधानतें होतीहै और तुला आदिसप्त७दानां विषें दाता द्वारविषे स्थित जो ऋचांकों पठनवाले तिनांकों न देखे त्रयमास ३ पर्यंत जेकर देखे तां फल कृच्छ्र करके शुद्ध होताहै ॥ १६ ॥

सर्वेषामिति संपूर्ण ऋत्विजजोहैं तिनांकेदर्शनविषे दाता आदरकर्के गायत्रीका एक हजारज पकरे और आज्य और भूषण और धेनुइनांके दानविषे और वळद आदिके दानविषे १७ ॥ और महिषी और बकरी और भेड इनांके दान विषे एकमासपर्यंत निरंतरदर्शन न करे जेकर करे तां ऋत्विजांको एकशत १००गायत्रीकाजपकहाहै और जोदानकरणे वालाहै सो तिसदोष केदूर करणे वास्ते धेनुदान करे १८अब इसमे विशेषकहतेहैं सात्त्विकेति सात्त्विक क्या चवी यां२४ अवतारांकीयांमूर्त्तियांके दान ग्रहण करणेवाला जो पुरुष है तिसके दर्शनकरणेमे दोष नहिजानणा ॥ अब इसीविषे गालवजीकावचनहै हेब्राह्मणांके प्यारे चवीयां अवतारांकीयांमूर्त्ती आदिकके दानविषे और दशां १०अवतारांके मूर्त्तिदानविषे और हेंप्रभो लक्ष्मीनारायण प्रतिमा आदि दानविषे दाता और दानके ग्रहण करणवालेकों परस्परमुखके देखणेविषे दोषनहि १॥ और अर्द्धनारीश्वर शब्दका अर्थ कहतेहैं क्या पार्वती शिवांकी प्रतिमादिकके दान विषे और

सर्वेषामृत्विजांप्रोक्तंसहस्रजपमादरात् आज्यालंकारधेनूनामनडुवाहा दिसंग्रहे ॥ १७ ॥ महिषीछागवस्तानांमासमेकंनिरंतरम् ऋत्विजां शतगायत्रींदाताधेनुंसमाचरेत् ॥ १८॥ सात्त्विकदानेषुचतुर्विंशति मूर्त्यादिदानावलोकने न दोषः ॥ गालवः चतुर्विंशतिमूर्त्यादिदानेषुद्वि जवल्लभ दशावतारदानेषु अर्द्धनार्य्यादिषुप्रभो मुखावलोकनंदातृग्रहीत्रो र्नतुदोषभाक् ॥ १ ॥ अर्द्धनारीश्वरं लक्ष्मीनारायणप्रतिमा ॥ उमामहेश्व रप्रतिमादानेषु कृष्णाजिनतिलविरहितेषु दातृप्रतिग्रहीत्रोर्मुखावलोकनं न दोषहेतुः ॥

कृष्ण हरिणका चर्म और तिल इनांते रहित जो दानहैं तिनांविषे दाता और ग्रहीताकों परस्पर देखणेमे पूर्वोक्तदोष नहि ॥जेडीयां २४ मूर्त्तियां दानवास्ते वनाईआंजातीयांहैं सो पांचतांत्रविषे लिखतेहैं सशक्तिकाय केशवायनमः १ नारायणायनमः २ माधवायनमः ३ गोविंदायनमः ४ विष्णवेनमः ५ मधुसूदनायनमः ६ त्रिविक्रमायनमः ७ वामनायनमः ८ श्रीधराय नमः ९ हृषीकेशायनमः १० पद्मनाभायनमः ११ दामोदरायनमः१२इत्यादिमंत्रोंकर्के जों वारां मूर्त्ती हैं सों शक्तिके साथ गिणनेतें २४ जाणनीयां और दशावतारोंके दानमे मत्स्य १ कूर्म २ वराह ३ नरसिंह ४ वामन ५ रामचंद्र ६ पर्शुराम ७ बलदेव ८ बुद्ध ९ कल्की १० इसनामकीयां स्वर्णादिमयमूर्त्तियां जाणनीयां ॥ और जो पिछे पटगर्भ विधि कहीहै सों वस्त्रका गर्भ वनाके तिसकीयोनिसे निकालना एह संस्कार विशेष गोमुखप्रसवकी न्याईं जानणा

कृष्णेतिश्रीर काले हरिणका चर्म श्रौर तिल इनांतें रहित श्रेष्ठ प्रतिमाश्रादिदानके ग्रहणकरणे विषे विशेष जाबालिऋषिकहताहै दशेति इनांदस्सां १० अवतारांके दानके योगांविषे तिल चर्मादिदानांविषे चाहे पूर्वोक्तमूर्त्तिभी साथहोवे तांभी तिसजगाभोजनकरणे वाले ब्राह्मणकों दाता छेःमहीने तक न देखे ॥ १ ॥ उत्क्रांतिरिति मरणसमयविषे आतुरदानकों श्रौर वैतरिणी दान कों श्रौर पुतलादाह विषे जो ब्राह्मण दानकों ग्रहण कर्त्ताहै श्रौर प्रेतके निमित्त जो दान है तिसकों जो ग्रहण कर्त्ताहैं श्रौर प्राणिके मरणेतें यारमें ११ दिन विषे जो तिसके गृहविषे अन्नकों भक्षण कर्त्ताहै ॥ २ ॥ उग्रशांतियां क्या बालकांके जन्म विषे अभुक्तमूलादि

कृष्णाजिनतिलरहितेप्रधानप्रतिमाप्रतिग्रहे विशेषमाह जाबालिः ॥ दश स्वेतेषुयोगेषुभुक्तवत्सुद्विजोत्तमान् तिलाजिनप्रधानेषुषण्मासंनाऽवलोकयेत् १ उत्क्रांतिवैतरण्योश्चतथाप्रतिकृतौनृप अन्नप्रतिग्रहेतातएकाहभोजनेतथा २ । उग्रशान्तिषुसर्वत्रतथामाहिषसंग्रहे कर्त्तानालोकयेद्विप्रंकायकृच्छ्रमथाचरेत् ३ ॥ उत्क्रांतिर्मरणोपयोगिसमयः। प्रतिकृतिः पर्णशरदाहसमयः ॥ अन्नप्रतिग्रहः प्रेतान्नग्रहः ॥ एकाहभोजनं एकादशाहभोजनम् ॥ उग्रशान्तयः शिशूनांजनने अभुक्तमूलादयःस्पष्टमन्यत् । ⊛ कायकृच्छ्रंलक्षयतिमरीचिः ॥ चत्वार्य्यहानिग्रासाःस्युरेकैकंप्रत्यहंप्रति निराहारस्तथातेषुचतुर्ष्वासायभोजनम् ॥ १ ॥ तदंतेव्रतिभिर्देयागौरेकाचान्द्रभूषणा कायकृच्छ्रमिदंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ २ ॥ चतुर्षुदिवसेषु प्रत्यहमेकैकग्रासभोजनम् ततश्चतुर्षूपवासः ततश्चतुर्षुसायंभोजनमिति द्वादशाहनिर्वर्त्योयं कायकृच्छ्र इत्यर्थः ॥

तिनांविषे जो दानकों ग्रहण कर्त्ताहै श्रौर तैसे माहिषदानको जो ब्राह्मण ग्रहण कर्त्ताहै तिसकों दाता न देखे जेकर देखे तां कायकृच्छ्रव्रतकों शुद्धिवास्ते करे ३ ⊛ अवकायकृच्छ्र विधिके करणे वाला न देखे जेकर देखे तां कायकृच्छ्रव्रतकों शुद्धिवास्ते करे ३ ⊛ अवकायकृच्छ्र व्रतकों मरीचि ऋषिजीदखातेंहैं चेति चारदिन पर्यंत दिन दिनविषे एक एक ग्रास भक्षणकरे श्रौर तिसतें पछि चार दिन कुछ न भक्षणकरे श्रौर तिसतें पीछे चार दिन रात्रि विषे भोजनकरे श्रैसे बारां दिनांकर्के कायकृच्छ्रव्रतकों करे ॥ १ ॥ श्रौर व्रतकी समाप्तिविषे व्रतिपुरुषांनें रजत भूषण युक्त एक गौ देणेयोग्यहै एह काय कृच्छ्र व्रत यथार्थधर्मके देखणवालयां मुनियांनें कहाहै ॥ २ ॥

अवप्रजापतिका वचनहै चार ४ दिनां विषें चारहि ग्रास दिनविषें भक्षणकरे और चारदिन कुछ न भक्षण करे और चार ४ दिन रात्रिविषें भक्षणकरे एह वारांदिनांका परम श्रेष्ठ कायकृच्छ्रनाम व्रतहोताहै १ विधिवास्ते मरीचिऋषिकावाक्यहै प्रातःकालतेंलेके संध्याकालपर्यंत जैसेविधिहै तैसे ब्राह्मण स्नानकों करे गंधपुष्पआदिककें विष्णुका पूजनकरे जद सूर्य्यअस्तहोवे तांवुद्धिमान् १ विष्णुतांई निवेद्य देककें ग्रासका भक्षणकरे और पीछे हथपादशुद्धकर्के दोंआचमनकरे और नारायणकों स्मरणकर्त्ता होया समीपहि शयनकरे फेर दूसरे दिन प्रातःसमय उठके पूर्वकीन्यांई नियमकरे ३ तिस दिनविषेभी ग्रासभक्षणकरे ऐसे चारदिन ग्रास भक्षण कर्के तिसतें परे चार दिन

प्रजापतिः । चतुर्ष्वहस्सुग्रासाःस्युर्निराहारस्तथापुनः चतुर्ष्वासायभक्ष्यः स्यात्कायकृच्छ्रमिदंपरम् १ तद्विधिमाह मरीचिः। आसायंप्रातरारभ्यस्नात्वाविप्रोयथाविधि अभ्यर्च्यगन्धपुष्पाद्यैरविरस्तंगतोयदा १ तदाग्रासंसमश्नीयाद्विष्णवार्पितममुंसुधीःप्रक्षाल्यपूर्ववत्सर्वंद्विराचम्यशुचिस्तथा २ ॥ स्वपेद्देवसमीपेतुनारायणमनुस्मरन् पुनःप्रातःसमुत्थायकृत्वानियमपूर्वकम् ॥ ३ ॥ तत्रापिभक्षयेद्ग्रासमेवंचतुरहंप्रति ततःपरंनिराहारस्तथा चतुर्ष्वभोजनम्॥४॥ अभोजनमेकाहारइत्यर्थः॥ गोदानंव्रतपूर्त्यर्थं पंचगव्यंपिवेत्ततः कायकृच्छ्रमिदंदेवाद्विजानांपावनंस्मृतम् ॥ ५ ॥ अथकायकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुरामप्रवक्ष्यामिकायकृच्छ्रस्यधीमतः प्रत्याम्नायंमहापुण्यंशृण्वतांपापनाशनम् ॥ १ ॥ दशगावःप्रदातव्याः सवत्साभूषिताअपि पयस्विन्यःसुशीलाश्चस्वर्णशृंग्योमहत्तराः ॥ २ ॥

उपवासकरे वैसे चार दिनां विषे रात्रिविषें एक आहारकरे ४ और व्रतकेंपूर्णफलकी प्राप्तिवास्ते गोंदानकरे और पंचगव्यका पानकरे एहकायकृच्छ्र ब्राह्मण आदि वर्णकों पवित्रकरणेवाला कहाहै ५ ॥ अवकायकृच्छ्रका प्रत्याम्नायहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै हेराम कायकृच्छ्रकें वुद्धिके देणे वाले वदलेंनू श्रवणकर कैसा वदलाहै महापुण्यहै क्या वहुतपवित्रहै और जो श्रवणकर्तेहैं तिनांके पापकों दूरकरणे वालाहै १ दश १० गौवां सहित वच्छयांके दुग्धकर्केयुक्त सुशीला स्वर्णके शृंगांककें युक्त और पूजित देणे योग्यहैं वदले विषे ॥ २ ॥

इसी विषयमे गालवजीका वचन है सर्वेति संपूर्ण पापांके दूर करणे वाला जो कायकृच्छ्र व्रत है हेराजन् तिसका प्रत्याम्नाय एह है कि सहित बच्छयांके दश १० गौयां तिनांके दानकरणे करके साधुस्वभाववाला पुरुष कायकृच्छ्र व्रतके फल कों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ अब कण्वऋषिका वचन है कायेति संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला कायकृच्छ्र जो संपूर्ण व्रत है तिसका वदलाराजयांके संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला और महादानके ग्रहणकरणे वाले जो पुरुषहै तिनांके संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला कहाहै अथवा राजयांते प्रति ग्रहउठाणे वालयांके पापको दूर कर्चाहै ॥ १ ॥ स्नात्वेति पुण्यदिन विषे ब्राह्मण पूर्वकी न्याई संकल्पकों करके तिलक और पुष्प आदिकांकर्के दशां ब्राह्मणांकों

॥ गालवः ॥ सर्वपापहरस्यास्यकायकृच्छ्रस्यवैनृप प्रत्याम्नायोदशगवांसवत्साः साधुवृत्तिमान् एतदाचरणेनैवकायकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ १ ॥ कण्वः ॥ कायकृच्छ्रस्यसर्वस्यसर्वपापहरस्यच राज्ञांप्रतिग्रहीतृणां सर्वपापहरंपरम् ॥ १ ॥ स्नात्वापुण्यदिनेविप्रः सुसंकल्प्यैवपूर्ववत् विप्रानभ्यर्च्यगन्धाद्यैर्दशधेनूःपृथक्पृथक् ॥ २ ॥ दद्यात्प्रत्याम्नायभूताः सर्वपापापनुत्तये एतस्याचरणेपूर्णेकायकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ ३ ॥ ❀ अथौदुम्बरकृच्छ्रम् ॥ तत्रदेवलः ॥ औदुम्वरस्यकृच्छ्रस्यलक्षणंवच्मितत्त्वतः कृच्छ्रं महत्तरंभूपसर्वपापहरंपरम् ॥ १ ॥ पितृमातृपरित्यागःस्वदाराणांह्यनागसाम् भगिनीभागिनेयार्थिगर्भिण्यातुरकन्यका ॥ २ ॥ वालश्चकुलवृद्धश्च अतिथिश्चागतःप्रभो सामर्थ्येसतिवन्धूनांत्यागेदोषोमहत्तरः ॥ ३ ॥ ब्रह्महत्यामवाप्नोतियद्युपेक्षापरायणः ॥

१० पूजके भिन्न भिन्न एक एककों प्रसूतहोई गौंदेवे ऐसें दश १० गौवां दानकरे ॥ २ ॥ एह प्रत्याम्नाय संपूर्णपापांके नाशकरणवास्ते कहाहै इसके करणेकरके कायकृच्छ्रके फलनूं प्राप्तहोताहै ॥ ३ ॥ ❀ इसतें उपरंत औदुम्वरकृच्छ्रहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै आविति औदुम्वरकृच्छ्रके लक्षणनूं यथार्थकर्के कहतांहां एह कृच्छ्र वहुत श्रेष्ठहै हेराजन् संपूर्ण पापांकेनाशकरणे वालाहै ॥ १ ॥ अब इसकर्के दूरहोणेवाले पापोंको कहतेहां पीति पिता और माता और अपराधतें विना स्त्रीयां इनांका जो त्यागहै और भैण और भनेवां और अर्थी और गर्भिणी और रोगी और कन्या ॥ २ ॥ और वालक और कुलमे वृद्ध और अतिथि इनांसंवंधियांके कदाचित् त्याग विषे सामर्थ्यके होयां २ महा दोषहै ॥ ३ ॥ इनांकों सर्वदा त्यागणे वाला पुरुष ब्रह्महत्या पापकों प्राप्त होताहै ॥

भेति भैण और दूसरीमाताकीकन्या और संबंधितेरहितजो स्त्रीहै और जिसकाभर्त्ता विदेशगियाहै और अनाथ जो कन्याहै और विधवास्त्री इनांकों जो पुरुषकारणतें विनात्यागताहै । १ । और पिताकी भैण और माताकी भैण और विदेश गियाभर्त्ता जिसका ऐसी पुत्रतें रहित जो स्त्री है और पूजने योग्य जो स्त्री अर्थात् गुरुआदिकीस्त्री तिनांकों त्यागणे कर्के पुरुषनरककों प्राप्तहोताहै अथवा(अधनीयां)क्याधनतें रहितजो स्त्रीहै ॥ २ ॥ और महाभारतविषेंभी एहविषयकहाहै पितेति कौमार अवस्थाविषे पितारक्षाकरे और भर्त्ताजुवानी अवस्थाविषेरक्षाकरे और पुत्रवृद्ध अवस्थाविषें रक्षाकरे स्त्री अपने अधीन कदाचित् होणेकों योग्यनहिहै ॥ १ ॥ और उन्मत्त और पतित और नपुंसक और काण और बधिर ऐसें पिताकी पुत्र आदिअन्न वस्त्र आदिकांकर्के रक्षाकरे ॥ २ ॥ अवगोत्तमजीकावाक्यहै अरक्षेति रक्षणेयोग्यजोस्त्री नाहि तिसकीरक्षाकरताहै और जो रक्षणेयोग्यहै

भगिनींचस्वसारंह्यनाथांगतभर्तृकाम् पुत्रीमनाथांविधवांयस्त्यजेत्कारणं विना ॥ १ ॥ पितृभगिनींमातृभगिनीमपुत्रांगतभर्तृकाम् अर्चनीयांपरित्य ज्यसवैनरकमश्नुते यद्वाअधनीयामियमधनाइत्येवंज्ञाताम् २ महाभारते पितारक्षतिकौमारेभर्त्तारक्षतियौवने पुत्रस्तुस्थविरेभावेनस्त्रीःस्वातंत्र्यमर्ह ति ॥ १ ॥ उन्मत्तंपतितंक्लीबंकाणंबधिरमेवच पुत्रादिर्यत्नतोरक्षेदन्नवस्त्रा दिभिःशनैः ॥ २ ॥ गौत्तमः ॥ अरक्षणीयांयोरक्षेद्रक्षणीयांपरित्यजेत् सवै नरकमाप्नोतितिर्य्यग्योनिषुजन्यते ॥ १ ॥ किंचवेश्यादासीतन्मातरस्तत्पु त्राःकुण्डगोलकनटविटगायकचार्वाकास्त्वरक्षणीयाः ॥ अनाथगतभर्तृकानि ष्पुत्राःस्त्रियः पितृव्यज्येष्ठभ्रात्रादयोनिष्पुत्रानिर्धनिनः काणकुब्जादयो यत्नतोरक्ष्याः एतेषांपरित्यागेदोषः ॥

तिसकी रक्षा नहि करता सो पुरुषनरककों प्राप्तहोताहै और पशुआदिकजन्मकों प्राप्तहोताहै १ । और विशेषकहतेहै वेश्येति वेश्या और दासी और तिनांकीयांमाता और तिनांकेपुत्र और भर्त्ताके जीवतयांजो जारतें जन्मयाहै ऐसा कुंडपुत्र भर्त्ताके मृतहोयां होयां जो जारतेंजन्मयाहै गोलकपुत्र और नट और विट् क्या व्यभिचारी पुरुषका नौकर और गायक और चार्वाक क्या नास्तिक एह रक्षाकरणे योग्यनहिहैं ॥ और विशेषकहतेंहै अनेति संबंधियांतें रहित और जिसका भर्त्ता विदेश गियाहै और पुत्रातें रहित जो स्त्री है और पिताका भ्राता और पुत्रतें रहित अपणा बडा भ्राता धनतें रहित भी पूर्वोक्त और काणा अक्षि कर्के और कुबेतें आदलेके जो पुरुष वा स्त्रीहोवे सो एह यत्नतें रक्षाकरणे योग्यहैं इनांके त्यागविषे दोषहै ॥

तदिति तिस दोषके दूरकरणे वास्तें प्रायश्चित्तकों मार्कंडेयऋषि कहताहै सामर्थ्यके होयां २ जो
पुरुष इनां अपणे संबंधियांकों त्यागताहै सोकाकजन्मकों प्राप्तहोकर वारंवारदुःखी होताहै १ ॥
एकमास पर्यंत जो त्यागताहै सो पंचगव्यके पीणेकर्के शुद्ध होताहै और जोर पुरुष छे६ मास
पर्यंत संबंधीयांकों त्यागताहै सो स्वर्णकृच्छ्रव्रतकर्के शुद्ध होताहै और वर्ष पर्यंत संबंधियांके त्या
गविषे औदुम्बर कृच्छ्र कहाहै और वर्षतें अधिक त्यागविषे चांद्रायण व्रतकहाहै ॥ २ ॥ अब प
राशरजीकावचनहै औबिति औदुंबर व्रतविषे चावलांकों वासांकीकों जैसे विधिहै कि वारां १२

तत्प्रायश्चित्तमाहमार्कण्डेयः ॥ सतिसामर्थ्येत्यजेद्यस्तुएतान्वन्धुजनान्स्व
कान् सकाकयोनिमासाद्यदुःखीभूयात्पुनःपुनः १ ॥ मासंत्यक्त्वापंचगव्यं
षण्मासान्स्वर्णकृच्छ्रकृत् वत्सरऔदुम्वरंप्रोक्तमर्वाक्चान्द्रायणंपरम्
२ ॥ पराशरः औदुम्बरेतंडुलानांश्यामाकान्वायथाविधि दशद्वेधाविभ
ज्यैवप्रत्यहंपाचयेद्व्रती ॥ १ ॥ दशद्वेधाद्वादशधेत्यर्थः ॥ औदुम्वरैःशुष्क
पर्णैःपाचयेन्नान्यदारुभिः औदुम्वरैश्चपर्णैश्चआर्द्रैःपात्रमुदाहृतम् ॥ २ ॥
तत्रनिक्षिप्यतंग्रासंविष्णवेपूर्वमादिशेत् चतुर्थकालआयातेपूर्ववन्नियमंच
रेत् ॥ ३ ॥ ग्रासवचननियमादिकमित्यर्थः॥ एवंग्रासाद्वादशस्युर्द्वादशाहा
निभक्षयेत् अत्रापिगौःप्रदातव्यापंचगव्यंपिवेत्ततः ॥ ४ ॥

हिस्से करे ॥ १ ॥
विभागकर्के दिन दिनबिषे वारां दिन पर्यंतव्रतीपकावे दशद्वेधा क्या वारां १२ हिस्से करे ॥ १ ॥
गूलरवृक्षके शुष्कपत्रां कर्के पकावे होरी काष्ठ कर्के न पकावे और गूलरपत्रां कर्के मिश्रित जो
पलाहके पत्र तिनां कर्के पात्र बनावे ॥ २ ॥ तिस पात्रविषे तिसग्रासकों रखके विष्णु तांई पह
ले अर्पण करे और पीछे चौथे पहर विषे पूर्वकी न्यांई नियम करे क्या भक्षण करे नियम कर्के
ग्रासादिके भक्षणका विधान जानणा ॥ ३ ॥ इस प्रकार वारां ग्रासहैं वारां १२ दिन वास्तें
और इस विषे भी पंचगव्यका पान करे और एक गौदान करणे योग्यहै ॥ ४ ॥

एवमिति एह औदुम्बर नाम कृच्छ्र व्रतकहाहै सो विशेषकर्के करणे योग्यहै मौनव्रतविषेयुक्तहोके उत्तमग्रासका भक्षण करे ॥ ५ ॥ और हत्थां पादांकोंधोके दोवार आचमन करे विधिकर्के फेर सायंकालविषे कर्मकों करे तिसतें पीछे नारायणके आगें शयन करे ॥ ६ ॥ फेर प्रातःकालविषे निर्मलहोकर दूसरे दिनकीकृत्यकों पूर्वकीन्यांईकरे ऐसें शास्त्रकर्के कहीजो विधि तिसकेकरणेकर्के शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ इसतें उपरंत औदुम्बरकृच्छ्रका प्रत्याम्नायकहाहै तिसविषे देवलजी का वचनहै औदुम्बरेति औदुम्बर कृच्छ्रका प्रत्याम्नायपुरुषांकों श्रेष्ठकहाहै तिसके करणेकर्के संपूर्ण फलकोंप्राप्तहोताहै । १ । अब मार्कंडेयजीकावाक्यहै प्रत्येति हेरामपूर्व औदुम्वरकृच्छ्रकाप्रत्याम्नाय

एवमौदुम्बरंकृच्छ्रंकर्तव्यंचविशेषतः भक्षयेदुत्तमंग्रासंमौनव्रतपरायणः ५ ॥ पादौप्रक्षाल्यपाणीचद्विराचम्यविधानतः सायाह्निकंततःकृत्वास्वपेन्नारायणाग्रतः ॥ ६ ॥ पुनःप्रभातेविमलोद्वितीयंपूर्ववच्चरेत् एवंशास्त्रोक्तविधिनाकृत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ७ ॥ अथौदुम्बरकृच्छ्रप्रत्याम्नायः॥ तत्रदेवलः ॥ औदुम्बरस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायःपरंनृणाम् तस्याचरणमात्रेणसंपूर्णफलमश्नुते ॥ १ ॥ मार्कंडेयः ॥ प्रत्याम्नायःपुरारामजामदग्न्येनभाषितः मातृहत्याविशुद्ध्यर्थंकिमुतान्यस्यपापिनः ॥ १ ॥ राजविजये ॥ कृच्छ्रस्यौदुम्बरस्यास्यप्रत्याम्नायोमहानयम् सर्वपापविशुद्ध्यर्थंसृष्टवान्पद्मभूः पुरा १ ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ औदुम्बरस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायस्यलक्षणम् अष्टगावःप्रदातव्याःसालंकाराःसुलक्षणाः १ ॥ हेमशृंग्योरौप्यखुराःकांस्यदोहनसंयुताः सर्वपापविनिर्मुक्तःसंपूर्णफलमाप्नुयात् ॥ २ ॥

मातृहत्याकीशुद्धिवास्ते परशुरामनेंकथनकीताहै अन्यपापीकाक्या कहणाहै । १ । राजविजयग्रंथ विषे कहाहै कृच्छ्रेति इसऔदुम्बरकृच्छ्रकाएहप्रत्याम्नाय श्रेष्टहै संपूर्णपापांकी शुद्धि वास्ते इसकों पूर्वब्रह्माउत्पन्न करताभया ॥ १ ॥ चतुर्विंशति मतविषे कहाहै औदुंवरकृच्छ्रके प्रत्याम्नायकेलक्षण कों कहतेहैं अठ ८ गौयां देणेयोग्यहैं कैसीयां गौयां जो शोभाकर्के युक्तहैं और श्रेष्ट लक्षणा वालियांहैं ॥ १ ॥ और सुवर्णके शृंगों कर्के युक्त और रजत खुरां कर्के युक्त कांस्यके दोहन पात्र कर्के युक्त तिनां गौयांके देणे कर्के संपूर्ण फलकों प्राप्त होता है ॥ २ ॥

इसतें उपरंत माहेश्वरकृच्छ्रका लक्षणकहाहै कृच्छ्रमिति माहेश्वरनामककें जो कृच्छ्रव्रतहै सो संपूर्ण पापांके नाशकरणेवालाहै इसमें गाथाकहतेहैं पूर्वशिवजीक्रोधककें कामदेवकों यद दाहकरते भये तां शिवजीमें बडादोषहोताभया ॥ १ ॥ तिसदोषके दूरकरणेंवास्तेब्रह्माकों पुछताभयाहेदेव कामके दाहकरणेंतें मेरेविषें वहुतदोषस्थितहै तिसदोषकेदूरकरणेवास्तेउपायकहो। २। ब्रह्माजीकहतेभये सर्वेति संपूर्ण दोषांके दूरकरणे वाला और संपूर्ण उपद्रवांके नाशकरणेवाला और पुरुषांकों सं पूर्ण पुण्यके देणेवाला और संपूर्ण स्नानका फलदेणे वाला और वहुत श्रेष्ठहै ॥ ३ ॥ प्रातरिति प्रातः काल विषें दंतधावनकों करकें स्नानको करे और जैसें योग्यहै तैसें संध्या वंदनआदिक

* अथमाहेश्वरकृच्छ्रलक्षणम् ॥ कृच्छ्रंमाहेश्वरंनामसर्वपापप्रणाशनम् पु राकंदर्पदहनेमहान्दोषोभवेद्यदा ॥ १ ॥ तद्दोषपरिहारार्थंब्रह्माणंपर्य्य पृच्छत पंचवाणस्यदहनान्महान्दोषोमयिस्थितः ॥ २ ॥ तद्दोषपरिहा रार्थंनिष्कृतिर्देवकथ्यताम् ॥ ब्रह्मा ॥ सर्वदोषप्रशमनंसर्वोपद्रवनाशनम् सर्वपुण्यप्रदंन्हृणांसर्वस्नानफलंमहत् ॥ ३ ॥ प्रातःस्नात्वायथाचारंदंत धावनपूर्वकम् तावन्नारायणंस्मृत्वापूर्ववत्पापमोचनम् ॥ ४ ॥ यदामंदा यतेभानुस्तदाकापालमुद्वहन् श्रोत्रियाणांचविप्राणांगृहेपुत्रिपुसंख्यया ॥ ५ ॥ शाकंभक्ष्यंफलंवापियथासंभवमादरात् आनयित्वाथदेवायसम र्प्यविधिपूर्वकम् ॥ ६ ॥ भक्षयेत्तानिसर्वाणिवाग्यतोन्नमकुत्सयन् हस्तौ पादौतुप्रक्षाल्यद्विराचम्यशुचिःस्ततः ॥ ७ ॥ सायंकालेस्वपेन्नाथसमीपे नियतावसेत् ततःप्रातःसमुत्थायपूर्ववत्सर्वमाचरेत् ॥ ८ ॥

कर्मांकों करे तां फेर पापांके नाशकरणे वालेजो विष्णु तिनांको पूर्वकीन्याईं स्मरण करे ४ ॥ और यद सूर्यका तेज मंददोवे तद कापालको ग्रहणककें वेदपाठी जो ब्राह्मणतिनांके तीनगृहां विषें संख्याककें ॥ ५ ॥ भक्षण करणेकेयोग्य जो शाकवाथुआदिक और फलकदली आदिकहै जैसें प्रातहोवे भिक्षा तिसकों आदरतेंल्यावे और विधि पूर्वक विष्णुके तांईं अर्पणककें ॥ ६ ॥ भक्षणकरे संपूर्णांनूं मौनधारके अन्न निंदा न करे हत्थ और पादांको शुद्धककें दोवार आचमन करे ऐसें शुद्ध होके ॥ ७ ॥ रात्रिविषे विष्णुके समीप शयन करे इंद्रियांकों रोकके तिसते उपरंत दूसरे दिनबिषे प्रातःकाल उठके पूर्वकी न्यांईं संपूर्ण नियम करे ॥ ८ ॥

गौरिति एकगौ श्रेष्ठब्राह्मणकेतांई देवे कर्मोंके फलकी प्राप्तिवास्ते पीछे पंचगव्यनूं पीवे एह माहेश्वर कृच्छ्रकहाहै। ९। हेभगवन् इसव्रतकों कर संपूर्णदोषांकी शांतिवास्ते और संपूर्ण पापांके दूरकरणेवास्ते और संपूर्णकल्याणांकी प्राप्तिवास्ते। १०। असे श्रवणकर्के महादेव व्रतकों करता भया इसी कर्के इसका नाम माहेश्वर व्रत है महेश्वर जीने प्रकाशित कीताहै और इस माहेश्वर कृच्छ्रके करणेकर्के ब्राह्मण आदि वर्ण पापतें रहितहोताहै। ११ ॐ अब माहेश्वरकृच्छ्रकाप्रत्यात्रायहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै मेति माहेश्वर नामकर्के जो कृच्छ्रव्रत तिसके बदलेनूं श्रवणकर कैसा बदलाहै संपूर्ण पापांके दूर करणे वाला और संपूर्ण कृच्छ्र फलकेदेणे वालाहै १॥

गौरेकाद्विजवर्य्यायदेयाकर्म्मफलाप्तये पंचगव्यंपिवेत्पश्चात्कृच्छ्रंमाहेश्वरं त्विदम् ॥ ९ ॥ कुरुष्वचैनंभगवन्सर्वदोषोपशांतये सर्वपापविनिर्मुक्तैचसर्वश्रेयोभिवृद्धये ॥ १०॥ एवंकृत्वातदादेवीमहेशानस्तथाकरोत् एतस्याचरणेनैवद्विजः पापात्प्रमुच्यते ॥ ११ ॥ ॐ अथमाहेश्वरकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ तत्रदेवलः ॥ माहेश्वराख्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायमिमंशृणु सर्वपापोपशमनंसर्वकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ १ ॥ ब्रह्महत्यादिशमनंसर्वग्रहनिवारणम् तुलाप्रतिग्रहीतॄणांपापनाशनहेतुकम् ॥ २ ॥ संध्यादिनित्यकर्म्माणिपरित्यक्तानिसूरिभिः तेषांविशोधनेदक्षंसर्वपापहरंनृणाम् ॥ ३ ॥ गावोदेयाद्विजातिभ्योह्यर्चितावस्त्रभूषणैः हेमघंटादिभिःशुभ्रैरलंकारैरलंकृताः ॥ ४ ॥ स्वर्णशृंग्योरौप्यखुराःकांस्यदोहनसंयुताः रुद्रसंख्याःसवत्साश्चपयस्विन्यःपृथक् पृथक् ॥ ५ ॥

और ब्रह्महत्यादि पापके दूर करणेवाला और संपूर्ण ग्रह बलके दूर करणेवाला और तुलादानके ग्रहण करणे वाले जो पुरुष हैं तिनांके पापके नाशका हेतुहै ॥ २ ॥ और जिनों बुद्धिमानोनें संध्यावंदनादि कर्मत्यागेहैं तिनांके शुद्धकरणेविषे दक्षहै और पुरुषांके संपूर्णपापांका नाशकहै सो प्रत्यात्राय कहतेहां ॥ ३ ॥ गेति गोयां यारां ११ देणी योग्यहैं ब्राह्मणांकेतांई भिन्नभिन्न कैसीयां गोयां वस्त्र भूषणां कर्के युक्त और सुवर्णके घंटे आदि जो श्वेत अलंकार तिनां कर्के युक्त ४ ॥ और सुवर्णके शृंग और रूपेके खुर और कांस्यका दोहनपात्र तिनांकर्के युक्तसहित वछयांके और दुग्ध देणे वालीयां ॥ ५ ॥

प्रति प्रत्याम्नाय विधिविषे गौयां ११ वहुत श्रेष्टहैं रुद्रसंज्ञाक्यारुद्रहै देवता जिनांकाश्रेसयांहैं कि सवास्तेरुद्रकृच्छ्रके फलकी प्राप्तिवास्ते और संपूर्णपापांके दूरकरणेवास्तेहै ६ एवमिति असें जो द्विज प्रत्याम्नायनूं यथाविधिकरके कर्त्ताहै तिसकों संपूर्णकृच्छ्रका फलप्राप्तहोताहै जो फलमुनियांने कहाहै ॥ ७ ❋ अब ब्रह्मकृच्छ्रका लक्षणहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै हेसंपूर्णमुनीश्वरो अब ण करो ब्रह्मकृच्छ्रके लक्षणनूं निंदित अन्नके भक्षण करणे विषे जो पापहै और दुष्ट दानके ग्रहण करणेविषे जो पापहै ॥ १ ॥ और नहिपीणेयोग्य जो विनावच्छेके गौकादूधआदिवस्तु तिसके पीणेविषे जो पापहै और पूर्वकहि जो उग्रशांति तिसविषे जो अन्न और शूद्रकाअन्न ॥ २ ॥ और मठका स्वामी जो संन्यासी तिसका अन्न और छींवेका अन्न और वृषलीक्याशुद्रीकाव नाथहोया अन्न और ऋतुमतीस्त्रीकावनायाहोया अन्न । ३ । और विधवास्त्रीकके पकाअन्न और

प्रत्याम्नायविधौशस्तारुद्रसंज्ञामहत्तराः रुद्रकृच्छ्रफलप्राप्त्यैसर्वपापापनुत्तये ॥ ६ ॥ एवंकृत्वाद्विजोयस्तु प्रत्याम्नायंयथार्हतः तस्यसम्पूर्णकृच्छ्रस्यफलंमुनिभिरीरितम् ॥ ७ ॥ ❋ अथब्रह्मकृच्छलक्षणम् ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुध्वंमुनयस्सर्वेब्रह्मकृच्छ्रस्यलक्षणम् दुरन्नेनैवयत्पापंपापंदुष्टप्रतिग्रहे ॥ १ ॥ अपेयपानेयत्पापंयत्पापंदुष्टभोजने शांत्यन्नेषुचयत्पापंयत्पापंशूद्रभोजने ॥ २ ॥ संन्यासिनोमठपतेर्भोजनेयद्धवेन्नृणाम् यत्पापंरजकस्यान्नेयत्पापंवृषलीकृते ॥ ३ ॥ यत्पापंपुष्पवत्यन्नेयत्पापंविधवाकृते अमंत्रकेपैतृकान्नेयदनारायणीकृते ॥ ४ ॥ चौलेचपैतृकेचैवदीक्षितस्यैवभोजने सूतकद्वितयेचैवतथादुःपंक्तिभोजने ॥ ५ ॥ तथैवदुष्टसंघान्नेतथाक्रीतान्नभोजने पापंपर्युषितचान्नेतथातद्रसकस्यच ॥ ६ ॥ यत्पापमनृतेप्रोक्तमौपासनविवर्जिते एवमादीनिपापानिलघूनिचमहांतिच सर्वेषांहिविनाशायब्रह्मकृच्छ्रंविकात्थितम् ॥ ७ ॥ शान्त्यन्नमत्रपूर्वोक्तोग्रशान्तिभवंवोध्यम् यदनाराणीकृते नारायणाग्रेऽनिवेदितइत्यर्थः

और चौलक मंत्रतें रहितपितराका अन्न और नारायणकेतांई जो नहिअर्पणकीता अन्न । ४ । और चौलक र्मका अन्न और पितरांके निमित्त जो पहलीक्रियातिसका अन्न और यज्ञकी दीक्षा विषे युक्तका अन्न और सूतक मृतसूतकका अन्न और दुष्टपुरुषांकी पंकि विषे भोजन कीताजो अन्न ५ वा लण और दुष्टांके समूहका अन्न और अन्नके वेचण वालेका अन्न और वासी अन्न और रसके वेचण वालेका अन्न ॥ ६ ॥ इनां संपूर्णके सिद्धहोये होये अन्नकों भक्षण करणे विषे जो पाप है और जो असत्यवाणी विषे पाप है और जो पाप देवताकी उपासनाते रहित पुरुष विषे कहाहै इसते आदिके जो पापहैं थोडे वा वहुत तिनां पापांके दूर करणे वास्ते ब्रह्मकृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ ७ ॥

अब मार्कंडेयजीका वचनहै गवितिं गोमूत्रऔर गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशा का जल इनांकों पूर्वमानकर्के एकत्र करे शुद्धि कों कर्के सो शुद्धि इस जगा पंचगव्यके मंत्रां कर्के जानणी इसीरीतिसें दिनदिनविषे पानकरे ॥ १ ॥ ऐसे पूर्वकीन्याई स्नानादिको कर्ताहुआ बारां दिनां १२ का कृच्छ्र व्रत करे तिसी विधिको कहतेहैं प्रातरिति प्रातः काल विषे स्नानको कर्के जैसे समाहै तैसें नित्यकर्मकों समाप्तकर्के ॥ २ ॥ देवताके मंदिर विषे तैसे गौयांके स्थान विषे व्रती पंचगव्यका पान करे इसका परिमाण कहतेहैं गविति अठ ८ मासे गोमूत्र और सोलां १६ मासे गोमय ॥ ३ ॥ और अठ ८ मासे दुग्ध और त्रय ३ मासे दधि और त्रय ३ मासेघृत और कुशाका जल ॥ ४ ॥ तिस तिस मंत्र कर्कें

मार्कण्डेयः। गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् संपाद्यपूर्वमानेनप्रत्यहंशुचिपूर्वकम् ॥ १ ॥ द्वादशाहंचरेत्कृच्छ्रंपूर्ववत्स्नानमादितः प्रातःस्नात्वा यथाकालंनित्यकर्मसमाप्यच ॥ २ ॥ देवागारेतथागोष्ठेपंचगव्यंपिवेद्व्रती गोमूत्रंमाषकान्यष्टौगोमयस्यतुषोडश ३ ॥ क्षीरंमाषाष्टकंज्ञेयंदधिमाषत्रयं तथा घृतंमाषत्रयंप्रोक्तंतथैवचकुशोदकम् ४ तत्तन्मंत्रेणसंयोज्यंतत्तन्मंत्रेणहावयेत् होमशेषंपिवेत्पश्चाद्रवौमध्याह्नगेसति ५ आसायंमनसाविष्णुंस्मरन्सर्वेश्वरंप्रभुम् स्वपेद्देवसमीपेतुगन्धताम्बूलवर्जितः ६ ततःप्रातःसमुत्थायपूर्ववद्व्रतमाचरेत् एवंद्वादशरात्राणिचरेद्व्रतमनुत्तमम् ७ महापापंचोपपापंमद्यपानसमंतथा तत्सर्वंविलयंयातिहरिनाम्नोऽसुरायथा ॥ ८ ॥

तिनांकों इकठयां करे और तिस तिस पंचगव्यके मंत्रांकर्के हवनकरे और हवनशेषकों पीवे सूर्य्य के मध्यान्हग होयां २ ॥ ५ ॥ और सायंकालपर्यंत सर्वेश्वर जो विष्णु तिनांकों स्मरणकरे और देवताके समीपविषे शयनकरे और सुगंधि वस्तु और तांबूल इनांकोंत्यागे ॥ ६ ॥ तिसतें उपरंत प्रातः काल विषे उठ कर्के पूर्वकी न्यांई व्रत नूं करे ऐसे उत्तम व्रतकों बारां दिनकरे ॥ ७ ॥ और महापाप और उपपाप और मदिराके पीने के पापके तुल्य जो पाप एह संपूर्ण पाप ब्रह्मकृच्छ्र व्रत कर्केनष्ट होतेहैं जैसे हरिके नामतें दैत्य दूर होतेहैं ॥ ८ ॥

इसतें उपांत ब्रह्म कृच्छ्रका प्रत्याम्नायहै तिस विषे देवल जीका वाक्य है हेब्रह्मनुने तूं ब्रह्मकृच्छ्रके आश्चर्य प्रत्याम्नायनूं श्रवणकर जिसके करणे कर्के महापापां तें और उपपातकांतें रहित होताहै ॥ १ ॥ ब्रह्म कृच्छ्र है नाम जिसका सो महा पापांके दूर करणे वाला है तिसकों करे तिस विषे असमर्थ होवे तां फलकी प्राप्ति वास्ते प्रत्याम्नायनूं करें ॥ २ ॥ प्रत्याम्नाय विषे भी पुरुष महाकृच्छ्रकेफलनूं प्राप्तहोताहै अठ ८ गौयां देणयोग्यहैं पूर्वकी न्यांई स्वर्णके शृंगादिकर्के अलंकृत ॥ ३ ॥ वेदके पठनकरणेविषे युक्त जो ब्राह्मण

* अथब्रह्मकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुब्रह्ममुनेचित्रंप्रत्याम्नायं प्रजापतेः यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्महद्भिरुपपातकैः १ । प्रजापतेर्ब्रह्मकृच्छ्रस्य आचरेद्ब्रह्मकृच्छ्राख्यंमहापातकशोधनम् असमर्थःप्रकुर्वीतप्रत्याम्नायंफलाप्तये ॥ २ ॥ प्रत्याम्नायेमहाकृच्छ्रफलंप्राप्नोतिमानवः अष्टौगावःप्रदातव्या पूर्ववत्स्वर्णभूपिताः ॥ ३ ॥ विप्रेभ्योवेदविद्भ्यश्चपृथक्पृथगलंकृताःपयस्विन्यःशीलवत्यःसर्वदोषविमुक्तये ॥ ४ ॥ मार्कंडेयः ॥ प्रत्याम्नायंतदाकुर्याद्यद्यशक्तःप्रजापतेः अष्टौगावःप्रदातव्याःस्वर्णशृंग्यःपयोमुचः ॥ १ ॥ विप्रेभ्योवेदविद्भ्यश्चसर्वकृच्छ्रफलाप्तये एवंकृत्वाद्विजःसम्यक्फलमाप्नोतिकृत्स्नशः ॥ २ ॥

तिनांके तांई भिन्न भिन्न शोभाकर्के युक्त और दुग्धदेणे वालियां और शीलस्वभाव वालियां संपूर्ण दोषांके दूर करणे वास्ते ॥ ४ ॥ अब मार्कंडेयजी का वचनहै प्रेंति प्रत्याम्नायनूं तां करे जेकर ब्रह्मकृच्छ्रकें करणे विषे असामर्थ्य होवे स्वर्णके शृंगांकर्के युक्त दुग्ध देण वालियां अठ ८ गौयां देणे योग्यहैं ॥ १ ॥ वेदके जानणे वाले जो ब्राह्मण तिनांके तांई संपूर्ण कृच्छ्र ब्रत के फलकी प्राप्ति वास्ते असे करणे कर्के ब्राह्मणआदि वर्ण संपूर्ण फलकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

अथेति इसते अनंतरधान्यकृच्छ्रका लक्षणहै तिसबिषे देवलजीका वाक्यहै धान्येति तुसांताई धान्य कृच्छ्रका स्वरूप और लक्षण कहताहां संपूर्णकृच्छ्र व्रतांके करणविषे जो असमर्थहै सो पुरुषधान्यकृच्छ्रव्रतकों करे ॥ १ ॥ इसविषे मार्कंडेयकावचनहै तत्तेति तप्त कृच्छ्रव्रतते आदि लेके जो संपूर्ण कृच्छ्र व्रत हैं तिनांके करणेकी इच्छावाला जेकर कोई धनवाला होवे वा राजाहोवे तां धान्य कृच्छ्रव्रतकों करे जोजो मैनें कृच्छ्रव्रत कहाहै तिनां संपूर्णांके करणेकी इच्छावाला जेकर होवेतां ॥ १ ॥ खारीति खारी परिमित जो महाधान्यहै तिसके पांचमें ५ हिस्सेकों ग्रहण करे जो सारेका एक भी भाग है तिसका नाम कृच्छ्र धान्य कहाहै । २ । तिसधान्यकों हिस्सेकर्के देवे

अथ धान्यकृच्छ्रलक्षणम् ॥ तत्रदेवलः ॥ धान्यकृच्छ्रस्वरूपंचलक्षणंप्रवदामिवः सर्वेषामेवकृच्छ्राणामशक्तोधान्यमाचरेत् ॥ १ ॥ मार्कंडेयः ॥ तप्तादिसर्वकृच्छ्राणांकर्तुंयदिमहान्प्रभुः धान्यकृच्छ्रंतदाकुर्याद्यद्यत्कृच्छ्रंमयोदितम् ॥ १ ॥ यद्यद्यत्कृच्छ्रंमयाकथितंतेषांसर्वेषांस्थानेइदमेवकुर्य्यादित्यर्थः ॥ कश्चिन्महान्धनीवाप्रभूराजाकर्तुमिच्छेच्चेत्तदाधान्यकृच्छ्रंकुर्य्यादित्यर्थः । खारीधान्यस्यमहतःपंचधाभागमाहरेत् कृत्स्नस्यैकस्तुयोभागःस कृच्छ्रंधान्यसंज्ञितम् ॥ २ ॥ तद्धान्यंभागशोदद्यात्तत्कृच्छ्रंमुनिभिःस्मृतम् तत्कृच्छ्रमाचरेद्विप्रःसंपूर्णफलमश्नुते धान्यवृद्धेर्महाराज्ञःकृच्छ्रंपापापनुत्तये ॥ ३ ॥ मरीचिः ॥ खारीधान्यस्यपंचांशोधान्यकृच्छ्रमुदाहृतम् अतोन्यूनंनकर्तव्यमन्यथादानमीरितम् ॥ १ ॥

सो मुनियांनें कृच्छ्र व्रत कहाहै इसमें एह अभिप्रायहै कि पंचभागकर्के क्रमतें दान करसा जद समग्र दान हो जावेगा तद कृच्छ्रभी पूरा होवेगा अथवा एक खारीके पंच कृच्छ्र होतेहैं तिस कृच्छ्र धान्यनूं ब्राह्मण करे तां संपूर्ण फलकों प्राप्त होताहै धान्यकी वृद्धि कर्के युक्त जो महाराजाहै तिसकों पापांके दूर करणे वास्ते एह धान्य कृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ ३ ॥ अब निर्धन पुरुष वास्ते मरीचिऋषिका वचनहै खारीति खारी परिमाण धान्यका पांचमां हिस्सा धान्य कृच्छ्र कहाहै इसतें न्यून क्या घट नहि करणे योग्य जेकर घट होवे तिसका नाम दान कहाहै ॥ १ ॥

अव इसीमें लोगाक्षिऋषिकावचनहै पंचेति खारी प्रमाण महाधान्यका पंचमां५हिस्सा धान्य कृ
च्छ्रकहाहै इसप्रमाणतें घटहोवे तां धान्यदानकहाहै सो पुण्यके देणवालाहै और कृच्छ्रधान्यकेफल
वालानहिहोता ॥ १ ॥ और इसीकास्पष्टार्थहै संपूर्ण धान्य कृच्छ्रका पंचमां हिस्सा नहि करणा
चाहिए जेकर तिस धान्यतें हीन होवे तां कृच्छ्रकाफल नहि होता ॥ २ ॥ इसमै ऐसा अर्थ है कि
राजादिको सारी खारीके देणेसे धान्यकृच्छ्र हुंदाहै और निर्धनको तिसके पांचमे हिस्सेके देणेसे
एह होता अव कहतेहै कि राजा खारीसे न्यून न करे और दूसरा पांचमांसे थोडा न देवे हे बा
ह्मणांविषे श्रेष्ट इस धान्य कृच्छ्रका वदला नहि कहा स्वर्णकृच्छ्र व्रत और धान्य कृच्छ्र व्रत एह

लौगाक्षिः ॥ पंचमांशोधान्यकृच्छ्रंखारीधान्यस्यभूयसः अन्यथाधान्यदा
नंस्यात्कृच्छ्रशब्दोनपुण्यभाक् ॥ १ ॥ संपूर्णधान्यकृच्छ्रस्यपंचमांशोनावि
द्यते तेनहीनंधान्यदानंनकृच्छ्रफलमश्नुते ॥ २ ॥ कृच्छ्रस्यैतस्यविप्रर्षे
प्रत्याम्नायोनविद्यते स्वर्णकृच्छ्रस्यधान्यस्यसमर्थस्यमहात्मनः ॥ ३ ॥
प्रत्याम्नायोनगदितोमुनिभिर्धर्मवत्सलैः धान्यशब्दोव्रीहिएवकृच्छ्राणां न
धान्यांतरम् । केचिच्छ्यामाकधान्यमितिवदंति ॥ मनुः ॥ नीवाराव्रीहयो
धान्यंश्यामाकाःकृच्छ्रसाधनम् नधान्यांतरमस्तीहप्रभूतकृच्छ्रसाधनमिति
१ ॥ ⊛ अथसुवर्णकृच्छ्रम् ॥ तत्रदेवलः ॥ ब्रह्महत्यादिपापानामितरेषांमु
नीश्वराः तुलादिष्विहदानेषुग्रहीतृणांविशोधनम् ॥ १ ।

दोंव्रत समर्थ पुरुषकों कहने । ३ । इनांकाधर्मं वत्सल जो मुनि तिनांने वदला नाहि कहा धा
न्य शब्द करके व्रीहि कहने कृच्छ्र विषे होर धान्य नाहि कहे कै एक ऋषि श्यामाक धान्यको
कहंतेहैं कि धान्य कृच्छ्रमे सामर्थ्य न होवे तां श्यामाक उसकी जगादेणे इसी बिषे मनुजीका
वाक्यहै नीति सवांक और चावल और सांकी एह कृच्छ्र व्रत विषे कहेहैं होर धान्य कृच्छ्रके
सिद्ध करणे विषे नाहि कहे ॥ १ ॥ ⊛ इसतें अनंतर सुवर्ण कृच्छ्र कहाहै तिस विषे देव
ल जीका वाक्य है वह्मेति व्रह्महत्या आदिक जो पापहैं और इतर जो पापहैं और तुलाआदि
दानांकों जो ग्रहण करण वालेहैं तिनां संपूर्णाकों शुद्ध करणे वाला एह स्वर्ण कृच्छ्र कहाहै १ ॥

महेति महाप्रभुकों वराहपरिमाणसुवर्णकहाहै और मध्यमपुरुषकों वराह परिमाणतेंअद्धा सुवर्ण देणाकहाहै और जोनिर्धनहैं तिनांकों वराहपरिमाणतें चौथाहिस्साकहाहै तिसतेंन्यून न करे २ ॥ क्योंकि तिसतें जो न्यूनहै सो सुवर्ण दानकहाहै तिसकेदेणेवालेकों सुवर्णकृच्छ्रकाफलनाहिहोता ३ । इसमें मरीचिऋषिकावचनहै वेति राजाधनीनिर्धनकों इसव्यवस्थासे वराहपरिमाणसुवर्णहोवे तां सुवर्ण कृच्छ्रकहाहै और तिसतें अद्धभी सुवर्ण कृच्छ्रकहाहै वराहपरिमाणतें चौथाहिस्साभी कृच्छ्र है तिसते न्यून होवे तां सुवर्णदान कहाहै उसमें कृच्छ्रशब्दनहि कहा इहां वराहशब्दका अर्थ मानपरिभाषा विषे देखलेना ॥ १ ॥ और धनी पुरुष वराह परिमाणतें अद्धे सुवर्ण का कृच्छ्र करे जो असमर्थ इसके प्रत्याम्नायकी इच्छा करे तिस वास्ते कहतेहैं प्रभ्वेति इसकाप्रत्या

महाप्रभोर्वराहः स्यात्तदर्धंमध्यमस्यहि तदर्धमितरेषाचततोऽन्यूनंनकारयेत् २ ॥ ततोन्यूनंसुवर्णदानमात्रं न कृच्छ्रशब्दः। मरीचिः। वराहस्यतदर्धंचतदर्द्धंकृच्छ्रमीरितम् ततोन्यूनंदानमात्रंकृच्छ्रशब्दोनगद्यते ॥ १ ॥ वराहशब्दार्थोमानपरिभाषायांद्रष्टव्यः ॥ प्रभुमात्रेतदर्धंस्यात्प्रत्याम्नायोनविद्यते मरणांतप्रायश्चित्तानां ब्रह्महंतॄणामकृतनिष्कृतीनामितरेषांरहस्यकृतपापानामकृतनिष्कृतीनां तुलादिसंग्रहीतॄणां यागादिकरहितानां चतुर्भागव्ययाद्यकृतानां कालपुरुषादिप्रतिग्रहीतॄणांतत्तदुक्तसुवर्णकृच्छ्राचरणेन तत्पापक्षयोभवति॥ राजविजये॥ प्रमादाद्ब्रह्महंतॄणामितरेषांप्रभूयसा प्रायश्चित्तेनहीनानां सुवर्णकृच्छ्रमीरितम् ॥ १ ॥

म्नाय नहि मरण पर्यंतहै प्रायश्चित्त जिनांका ऐसे जो ब्राह्मणके मारणवाले और इतर जो पापीहैं नहि कीती शुद्धि जिनानें ऐसे जो गुप्त पापके करण वाले और तुलाआदि दानके ग्रहण करण वाले और पंचयज्ञ आदि कर्मतें जो रहित हैं और दानकों ग्रहणकर्के जो चतुर्थांश ब्राह्मणके तांई नहि देते और काल पुरुष आदि दानांके जो ग्रहण करण वाले तिनां संपूर्णांका पाप दूर होताहै सुवर्ण कृच्छ्र व्रतके करणेकर्के ॥ अब राज विजय ग्रंथ विषे कहाहै प्रेति प्रमादतें जो पुरुष ब्राह्मणका वध कर्तेहैं और इतर जो पापी हैं और जो वडे प्रायश्चित्त कर्के रहित हैं तिनांकी स्वर्ण कृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धि कहीहै ॥ १ ॥

तुलेति तुलाआदिदानांके ग्रहणकरणवाले जो पुरुषहैं और दानके चतुर्थांश देणेकर्के जो शुद्धिहै तिसते रहितहैं तिनांकी शुद्धिवास्ते ब्रह्माने स्वर्णकृच्छ्र प्रायश्चित्त रचयाहै ॥ २ ॥ सुवर्णकी प्रशंसा करतेहैं स्वर्णमिति सुवर्ण ब्रह्मस्वरूपकर्के ब्रह्माजीने रचयाहोयाहै पुरुषोंके स्वर्णकृच्छ्र व्रतके करणेकर्के कौणपापहै जो नहि दूरहोता अर्थात् संपूर्णपाप दूरहोतेहैं ॥ ३ ॥ अब गौतमजीका वाक्यहै रहेति एकांतविषे ब्रह्महत्याके करणवाले जो पुरुष हैं हेराजन् श्रवणकर तिनांकी दशहजार१००००स्वर्णकृच्छ्र दानकर्के शुद्धिहोतीहै ॥ १ ॥ और प्रत्यक्ष जो ब्रह्महत्याके करण वालेहैं तिनकीशुद्धि मरणपर्यंत प्रायश्चित्तकर्के होतीहै परंतु इसजगा अयुतभी चार ४ गुणा जानणा अगले वचनते सो ४००००चालीहजार होवेगा एह स्वर्णकृच्छ्र राजाके योग्यहै होरकोई नाह

तुलादिसंग्रहीतृणांरहितानांविशुद्धिभिः प्रायश्चित्तमिदंकृच्छ्रंब्रह्मणापरिकल्पितम् २ ॥ स्वर्णंब्रह्ममयंप्रोक्तंब्रह्मणानिर्मितंपुरासुवर्णकृच्छ्राचरणेकिमसाध्यंशरीरिणाम् ३ ॥ गौतमः। रहस्यकृतविप्रस्यहत्यायांशृणुपार्थिव अयुतस्वर्णकृच्छ्राणांदानेशुद्धिरवाप्यते ॥ १ ॥ रहस्यकृतपापस्यपापिभिःपरमार्थतः अयुतंपूर्ववज्ज्ञेयमन्यथामरणान्तिकम् २ ॥ प्रकाशकृतब्रह्महत्यानांमरणान्तिकंप्रायश्चित्तम् ॥ तद्रहितानांचतुर्भिरयुतकृच्छ्रैर्विशुद्धिरिति ॥ तदाहमनुः। प्रकाशयविप्रहंतॄणांचतुष्कंपापनाशनम् निमित्ताकृतशुद्धीनांजपयागाभिषेचनैः ॥ १ ॥ निमित्तैः प्रायश्चित्तैरकृताशुद्धिर्येषांते तेषांचतुष्कंचतुर्गुणमयुतमित्यर्थः स्मृत्यन्तरम् ॥ तुलाप्रतिग्रहीतृविषये ॥ नदीस्नानादिनाराजंश्चतुर्भागव्ययेन वा ब्रह्मराक्षसमुक्त्यर्थंचत्वार्यर्युतमाचरेत् १ ॥ चत्वार्ययुतकृच्छ्राणीत्यर्थः ॥

करसक्का इसके रुपैए पूर्वोक्त वराहपरिमाणवाले स्वर्णके मुद्ध ४८०००० के हुंदेहैं मरणांतक प्रायश्चित्तको जो नहि करै सो राजादि चालीहजार४००००स्वर्णकृच्छ्र कर्के शुद्ध होतेहैं २ । तैसे मनुजी कहतेहैं प्रेति प्रकाश्य क्या नहि प्रत्यक्ष जो ब्राह्मणके वधकों कर्तेहैं और गायत्री जपादि प्रायश्चितांकर्के नहि होई शुद्धिजिनांकी तिनांके पापनाश वास्ते चाली हजार पूर्वोक्तस्वर्णकृच्छ्र किहाहै ॥ १ ॥ औरहीस्मृति विषे तुला दानके ग्रहण करणे विषे एहवाक्यहै नदीति हेराजन् नदीविषे स्नानादिकर्के और दानके चौथे हिस्सेके देणेकर्के वा दोष दूर करे अथवा ब्रह्मराक्षसगतिके दूरकरणे वास्ते चाली हजार ४०००० कृच्छ्र व्रतकोंकरे परंतु एह अनेक तुलाग्रहणविषे जानणा प्रायश्चितको वहुत होणेते ॥ १ ॥

प्रति प्रभुकों उत्तमप्रकारकहाहै और मध्यमकों मध्यम और कनीयसकोंक्या छोटेकों पादप्रमाण कहाहै और नहि कीताउक्तप्रायश्चित्त जिनांनेंतिनांकी शुद्धिस्वर्णकृच्छ्रव्रतांके करणेकर्के होतीहै और उपपातकांके मध्यविषे जिस जिसपातकके दूरकरणेवास्ते जो जो कृच्छ्रव्रत कहेहैं तिनांके करण विषे सामर्थ्य न होवे तां तितनैंस्वर्णकृच्छ्रव्रतांकर्के शुद्धिहोतीहै। अबयाज्ञवल्क्यजीकावचनहै उपपति उपपातकांकेसमूहके दूरकरणेवास्तेमुनियांनें जो जो प्रायश्चित्तकहाहै तिसकेकरणविषे समर्थ नहि होवेतां तितनेहि स्वर्ण कृच्छ्रव्रतकरे ॥ १ ॥ अब मरीचिकावाक्यहै समिति संकली करण पाप

प्रभोरुत्तमप्रकारोमध्यमस्यमध्यमप्रकारःकनीयसःपादप्रमाणतः । कृच्छ्राणिकृत्वात्वकृतप्रायश्चित्तानांशुद्धिर्भवति । उपपातकानांयस्ययस्यचपातकस्य यानियानिकृच्छ्राणि प्रतिपदोक्तानि तेषामाचरणाशक्ततया तावद्भिः सुवर्णकृच्छ्रैःकृतैःशुद्धोभवति । याज्ञवल्क्यः । उपपातकजालानांमुनिभिर्यद्युदीरितम् तत्तदाचरणाशक्तःतावत्कृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ १ ॥ मरीचिः संकलीकरणेराजन्यस्ययस्ययथोदितम् तदाचरणशक्तस्तुफलमानंत्यमश्नुते ॥ १ ॥ अशक्तस्यद्विजस्यार्थसुवर्णकृच्छ्रमीरितम् यद्यत्पापस्ययत्कृच्छ्रंमुनिभिःपरिभाषितम् ॥ २ ॥ तदाचरणाशक्तानां तावन्तिहिरण्यकृच्छ्राणि प्रभुत्वदारिद्र्यतारतम्येन कृत्वाशुद्धिर्भवतीत्यर्थः ॥ एवंचाण्डालादिगमनेषु कृच्छ्रसंख्यया हिरण्यकृच्छ्राचरणैस्तत्प्रतिपदोक्तैः पूर्वोक्तैः शुद्धोभवति ॥

विषे हेराजन् जिस जिस पापका जो जो प्रायश्चित्त कहाहै तिसके करण विषे जो युक्त है सो अनंत फलकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ और जो ब्राह्मणादि असमर्थ है तिसकों सुवर्ण कृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ २ ॥ इसी अर्थकों स्पष्टकर्के कहतेहैं यदिति और धनी पुरुष और निर्धन पुरुष सुवर्ण कृच्छ्र विषें अधिक और न्यून परिमाण कर्के शुद्धिकों प्राप्त होतेहैं ॥ २ ॥ इसी प्रकार चांडाल आदिकोंयां स्त्रीयांके गमनकरणे विषे शुद्धिके निमित्त कृच्छ्रव्रतांकी संख्याकर्के कहे जो व्रत तिनांके प्रत्याम्नाय वास्ते उतनेहि स्वर्ण कृच्छ्र व्रतांकर्के शुद्ध होताहै ॥

एवमिति इसी प्रकार निंदित अन्नके भक्षण विषे और उद्बंधन और मरणादिकके होयां २ उपनयनादि कर्म्मोंके मुख्यकालके त्याग विषे जो प्रायश्चित्त निरूपण कीताहै तिसके बदले विषे तावत्संख्या कर्के स्वर्ण कृच्छ्र व्रतके करणे कर्के शुद्ध होताहै ऐसे संपूर्ण स्थान विषे आनणे योग्यहै ॥ तुला आदिक दानांके ग्रहण करण वालयां पुरुषांकों विशेष पैठीनसि कहताहै तुलेति तुलादान विषे जो धनकों ग्रहण कर्त्ताहै और तिस दानके चौथेहि सेकों जो ब्राह्मणकेतांई नहि देता और लोकविषे निंदाके भयकर्के अभिषेक और जपभी नहि कर्त्ता तिसकों ब्रह्मराक्षसगतिहोणीहै ब्रह्मराक्षस उसकों कहतेहैं जो ब्राह्मणोंके मारण वाला राक्षस होवे इसमें एह अर्थ है कि राक्षसभावमे भी ब्राह्मणको मारेगा तो निसहत्या

एवं दुरन्नभक्षणोद्बन्धनमरणादिषूपनयनकर्मणां मुख्यकालातिक्रमे प्रायश्चित्तंयन्निरूपितम् तावन्ति हिरण्यकृच्छ्राणि कृत्वा शुद्धोभवतीति सर्व प्रयोजनीयम् । तुलादिप्रतिग्रहीतॄणांविशेषमाह पैठीनसिः । तुलायांधन संधातायागंभागचतुष्टयम् अभिषेकंजपंवापिह्यकृत्वालोकनिंदया ॥ १ ॥ ब्रह्मराक्षसमुक्त्यर्थंकृच्छ्राण्येतानिसर्वशः चतुरयुतंप्रकुर्वीतधर्मशास्त्रोक्तमागतः ॥ २ ॥ पिशाचत्वविमुक्तिःस्यादिहलोकेपरत्रच सुवर्णकृच्छ्ररूपेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ३ ॥ हिरण्यगर्भसंधनेयोधर्मनिष्कृतिंविना चत्वारि कृच्छ्रसाहस्रंकृत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

कर्के बहुत काल राक्षस हिरहेगा ॥ १ ॥ तिसके दूर करणे वास्ते इतनेहि कृच्छ्र व्रत कहने संपूर्णताकर्के और धर्मशास्त्रकर्के कथनतें चालीहजार४००००सुवर्ण कृच्छ्रव्रतकरे २ ॥ तां पिशाच गति दूर होतीहै इसलोकविषे और परलोक विषे सुवर्ण कृच्छ्रके करणेकर्के संपूर्ण पापांते रहितहोताहै ॥ ३ ॥ और हिरण्य गर्भके प्रतिग्रहविषे जिसने शुद्धिका उपाय नहि कीता सो चारहजार कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै । ४ । इसमें ऐसा अर्थहै कि जिसका लिया हुया तुलादान थोडे मुल्लकाहोवे तां ४०००० हजार स्वर्ण कृच्छ्र किसतरह करे गा तो ऐसा करणा चाहिए कि लक्षसे अधिक जिसने तुलादान लियाहोवे उसको इतना प्रायश्चित्तहै और थोडे दान वालेकों लयेहोए दानके चौथे हिस्से अनुसार करणा चाहिए ऐसें आगेभी जानणा

ब्रति जो पुरुष ब्रह्मांड कुंभको ग्रहणकर्त्ताहै और तिसकी शुद्धिनिमित्त प्रायश्चित्ततें रहितहै सो त्रय ३०००हजार कृच्छ्रव्रत करे तां पूर्वकीन्यांई शुद्धिकों प्राप्तहोताहै ॥ ५ ॥ और कल्पवृक्षके दानकों ग्रहण करे तिस दोषको शुद्धिकों न करे तां पंजा५००००हजार स्वर्ण कृच्छ्र व्रतांकर्के शुद्धहोताहै ॥ ६ ॥ और सुवर्णकी धेनुके दानकों जो ग्रहणकर्त्ता है और शास्त्रकी विधिकर्के जिसनें अपणी शुद्धि नहि कीती सोभी पंजा हजार कृच्छ्र व्रतां कर्के पूर्वकन्यांई शुद्ध होताहै ७ ॥ और सुवर्णके अश्व दानकों जो ग्रहण कर्त्ताहै और पूर्व नहि कीती शुद्धिजिसनें सो पंज सउ५००सुवर्णकृच्छ्रव्रतकर्के पूर्वकीन्यांई शुद्धहोताहै ॥ ८ ॥ और सुवर्णके घोडेकर्के युक्त जो रथतिसनूं ग्रहणकर्त्ताहै और रथके ग्रहणकरणेंसे अशुद्ध जो पुरुषहै सो छे सउ ६०० सुवर्ण

ब्रह्मांडकुंभसंधातातन्निष्कृतिपराङ्मुखः त्रिसहस्त्रंचरेत्कृच्छ्रंशुद्धिमाप्नोति पौर्विकीम् ॥ ५ ॥ कल्पवृक्षस्यसंधानेत्यजन्तंनिष्कृतिंपुरा पंचायुतै श्चकृच्छ्रैश्चसुवर्णास्यैर्विशुध्यति ॥ ६ ॥ हिरण्यधेनुसंधाताशास्त्रैरकृतनि ष्कृतिः पंचायुतैश्चकृच्छ्रैश्चशुद्धिमाप्नोतिपौर्विकीम् ॥ ७ ॥ हिरण्याश्वस्य संग्राहीपुरात्वकृतशुद्धिमान् पंचशतैःस्वर्णकृच्छ्रैःशुद्धिमाप्नोतिपूर्ववत् ८ ॥ हिरण्याश्वरथीराजन्नशुचीरथसंग्रहात् षट्शतैःस्वर्णकृच्छ्रैश्चशुद्धोभवतिपू र्ववत् ॥ ९ ॥ हेमहस्तिरथंविप्रःप्रतिगृह्यधनातुरः अकृत्वानिष्कृतिंशा स्त्रमार्गेणाज्ञानपूरितः ॥ १० ॥ षट्शतैर्हेमकृच्छ्रैश्चशुद्धिमानुभयोर्द्विजः पंचलांगलसंग्राहीह्यकृत्वाधर्मनिष्कृतिम् ॥ ११ ॥ अयुतैस्स्वर्णकृच्छ्रैश्चशु द्धोभवतिपूर्वजः अन्यथानिष्कृतिर्नास्तिब्रह्मराक्षसशंकयेति ॥ १२ ॥

कृच्छ्र व्रतकर्के पूर्वकीन्यांई शुद्धहोताहै ॥ ९ ॥ और सुवर्णके हाथी और रथनूं ग्रहणकर्के और शास्त्रके द्वारा तिसकी शुद्धिकों न कर्के धनके ग्रहण करण विषे युक्तहै अज्ञान कर्के पूरित होया २ दोषकर्के युक्त सो ब्राह्मण ॥ १० ॥ छे सउ ६००स्वर्ण कृच्छ्रव्रत कर्के दोनोंदोषोंसें रहित होताहै अथवा सुवर्ण के हाथिआं कर्के युक्त सुवर्णका जो रथ है तिसको ग्रहण कर्के ऐसा अर्थ करणा और (उभयोः) क्या इस लोक विषे और परलोक विषे शुद्ध होताहै ॥ और पंचलांगल दानकों जो ग्रहणकर्त्ताहै और तिसकी शुद्धिकों नाहि कर्त्ता ११ ॥ सो दश हजार १०००० स्वर्ण कृच्छ्र कर्के ब्राह्मण शुद्ध होताहै ब्राह्मणकी शुद्धि अन्यथा नहि कही एह ब्रह्मराक्षसगतिकेंदेणेवाले प्रति ग्रह हैं ॥ १२ ॥

❀ अथेति इसतें अनंतर अघमर्षण कृच्छ्रव्रतमाधवनें कहाहै तिसविषे विष्णुजीका वाक्यहै अब
कृच्छ्र व्रतहैं त्रय३दिन उपवास करे और दिन दिन विषे त्रय३काल स्नान करे और जल विषे
डुब्बी लाके त्रयवार अघमर्षण मंत्रका उच्चारण करे ॥ और दिन विषे खलोवे रात्रि विषे स्थित
होवे और कर्मके अंतविषे दुग्ध देण वाली गौका दान करे एह अघमर्षण कृच्छ्रहै ॥ अब श
खऋषि औरहि प्रकारकर्के अघमर्षणकृच्छ्रनूं कहताहै त्र्यहमिति त्रयदिन त्रयकाल स्नानकों कर्के
मुनि मनकर्के जलविषे त्रयवार अघमर्षणमंत्रकोंजपे और त्रयादिन कुछ न भक्षण करे एह अघ

❀ अथाऽघमर्षणकृच्छ्रं माधवेनोक्तम् ॥ तत्रविष्णुः ॥ अथकृच्छ्राणिभव
न्ति त्र्यहंनाश्नीयात् प्रत्यहंचत्रिषवणंस्नानमाचरेत् जलेमग्नस्त्रिरघमर्षणं
जपेत् दिवातिष्ठेद्रात्रावासीत कर्मणोन्ते पयस्विनींगांदद्यादित्यघमर्षणम्
शंखस्तु ॥ प्रकारान्तरेणाघमर्षणकृच्छ्रमाह ॥ त्र्यहंत्रिषवणस्नायीमुनि
स्स्नात्वाघमर्षणम् मनसात्रिःपठेदप्सुनभुंजीतदिनत्रयम् अघमर्षणमित्ये
तद्व्रतंसर्वाघसूदनमिति ॥ १ ❀ अथयज्ञकृच्छ्रः । तत्रांगिराः ॥ युक्तस्त्रिषवण
स्नायीसंयतोमौनमास्थितः प्रातःस्नानसमारंभंकुर्य्याज्जप्यंचनित्यशः । १ ।
सावित्रींव्याहृतिंचैवजपेदष्टसहस्रकम् ओंकारमादितःकृत्वारूपेरूपेतथां
ततः । २ । भूमौवीरासनेयुक्तःकुर्याज्जप्यंसुसंयतः आसीनश्चस्थितोवापि
पिबेद्गव्यंपयःसकृत् ॥ ३ ॥

मर्षण कृच्छ्र संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला कहाहै ॥ १ ॥ ❀ इसतें अनंतर यज्ञकृच्छ्रहै तिसविषे
अंगिराऋषिकावचनहै युक्तइति मौन विषे स्थित होके इंद्रियांकोंरोकके विषयांतें निवृत्त होवे त्रय
दिन त्रय काल स्नान करे और प्रातःकाल विषे स्नानके समय प्रतिदिन जलविषे अघमर्षणकों
जपे । १ । और ओंकारका आदविषे उच्चारण कर्के सहित व्याहृतियांके गायत्रीका अठ ८०००
हजार जप करे २ पृथ्वी विषे वीरासन विषे स्थित होके और इंद्रियांको रोककर जपकरे बैठकर्के
वा उठ कर्के और गौके दुग्धका एकवार पान करे ॥ ३ ॥

गेति दुग्धप्राप्तनहोवें तां गौका दधिपानकरे श्रौर दधिकेश्रभावविषे छाहपीवे श्रौर छाहकेश्रभाव विषे यवांकेकाडेकोंपीवे ४ ॥ इनांविषे जो२ प्राप्तहोवे तिसकापानकरे यवांकापान गोमूत्रकर्के युक्तकरे ॥ ५ ॥ अंगिराजीनें एकदिनकेकृच्छ्रकर्के संपूर्णपापांके नाशकरणेवालायज्ञनामकर्के व्रत वहुतश्रेष्ठकहाहै ॥ ६ ॥ एह यज्ञकृच्छ्रव्रत जो पुरुष पातककर्के युक्तहैं श्रौर उपपातकांकर्के युक्त श्रौर महापापां कर्के युक्त हैं तिनांके शुद्धकरणे वालाहै ॥ ७ ॥ अब देवकृत कृच्छ्रव्रतनूं यमक हताहै यति छे ६ गुणा अधिक जल कर्के पक्के जो यव तिनांकों श्रौर शाककों श्रौर दुग्धकों श्रौर दधिकों उौर घृतकों त्रय त्रय दिनभक्षणकरे श्रौर तिसतें परे त्रयदिन वायु भक्षणकरे १ ॥

गव्यस्यपयसोऽलाभेगव्यमेवभवेद्दधि दध्नोभावेभवेत्तक्रंतक्राभावेतुयावकम् ॥ ४ ॥ एषामन्यतमंयद्यदुपपद्येततत्पिवेत् गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकंचोपयोजयेत् ५ ॥ एकाहिनतुकृच्छ्रेणउक्तस्त्वांगिरसास्वयम् सर्वपापहरोदिव्योनाम्नायज्ञइतिस्मृतः॥ ६ ॥ एतत्पातकयुक्तानांतथाचाप्युपपातकैः महद्भिश्चापियुक्तानांप्रायश्चित्तमिदंशुभमिति ॥ ७॥ देवकृतकृच्छ्रंदर्शयति यमः॥ यवागूयावकंशाकंक्षीरंदधिघृतंतथा त्र्यहंत्र्यहंतुप्राश्नीयाद्वायुभक्ष्यः परंत्र्यहम् १ ॥ कृच्छ्रंदेवकृतंनामसर्वकल्मषनाशनम् मरुद्भिर्वसुभीरुद्रैरादित्यैश्चरितंव्रतम् व्रतस्यास्यप्रभावेनविरजस्काहितेभवन्निति २ ॥ अथ प्रसृतयावकम् ॥ तत्रहारीतः ॥ अयमात्मकृतैःकर्मकृतैर्गुरुमात्मानंपश्येत् आत्मार्थं प्रसृतयावकंश्रपयेत् ॥

एह देवकृत नामकर्के कृच्छ्र व्रत संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाकहाहै मरुत्देवता श्रौर वसुदेवता श्रौर रुद्र श्रौर आदित्य इनांनें पिच्छे एह व्रत करीदा भया सो इस व्रतके करणे कर्के शुद्धहोतेभये ॥ २ ॥ अथेति अब प्रसृतयावक व्रत अर्थात् एकहाथके परमाणके अन्न खाणेका व्रत कहाहै तिसविषे हारीत ऋषिकावचन है अयमिति एह व्रत करणे वाला पुरुष ब्राह्मणां कर्के कहा जो कर्म तिनांकों आपकरे श्रौर तिनां आपकीते होये कर्मां कर्के अपणे आपकों गुरु क्या पूज्यदेखे अर्थात् शुद्धदेखे श्रौर अपणे व्रतवास्ते एकमुष्टिप्रमाणयव पकावे

और तिसतें अनंतर हवन करे और तिसीककें वैश्व देव बालिकरे और पके होये यवों कों अभिमंत्रण करे वक्ष्यमाण मंत्रां करकें पूर्वोक्तहि अर्थ स्पष्टककें किहाहै अयंमिति यवोसि इत्यादि हेयव तूंयवहैं क्या पापांके नाश करणें वालाहैं और अन्नांका राजा हैं वरुण तुजका देवताहै मधुककें युक्त हाया २ संपूर्ण पांपांके दूर करणें वालाहैं और संपूर्ण ऋषियांककें तूं पवित्र कहाहै ॥१॥ घृतमिति हेयवातुसीं घृतहो और तुसींहि मधुहो और आपोहिष्ठा क्या परमशुद्धकरणें वाले हो और अमृत हो मेरेसंपूर्ण पापकों दूरकरो जो मेनें दुष्कृतकीयाहै ॥२॥ और वाणी और कर्म और मनककें दुर्विचिंतन कीयाहै और अलक्ष्मीकों और काल

ततोऽग्नौजुहुयात् तदेववलिकर्मशृतंवाभिमंत्रयेत् (अयंपुरुषः आत्म कृतैःस्वयंसंपादितैः कर्मकृतैः कर्मणा प्रयोजकद्वारा कृतैः कर्मभिरि तिशेषः आत्मानंगुरुंपूज्यंपश्येदित्यर्थः) यवोसिधान्यराजोवावा रुणोमधुसंयुतः ॥ निर्नोदःसर्वपापानांपवित्रमृषिभिःस्मृतम् ॥ १ ॥ घृतंयवामधुयवाआपोहिष्ठामृतंयवाः सर्वंपुनंतुमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतम् ॥ २ ॥ वाचाकृतंकर्म्मकृतंमनसादुर्विचिंतितम् अलक्ष्मींकालकर्णींच सर्वं पुनीतमेयवाः ॥ ३ ॥ मातापित्रोरशुश्रूषांयौवनेकारितंतथा श्वशूक रावलीढंच उच्छिष्टोपहतंचयत् ॥ ४ ॥ सुवर्णस्तेयंव्रात्यत्वंवालत्वा दात्मजंतथा ब्राह्मणानांपरीवादंसर्वंपुनीतमेयवाः ॥ ५ ॥ वक्ष्यमाणां रक्षां कुर्यात् ॥

कर्णीकों जो मृत्युदाराक्षसीहै इससंपूर्णीकों यवपवित्र करे ॥ ३ ॥ और मातापिताकी अशुश्रूषा रूपपाप और युवावस्थाककें जो व्यभिचारादिरूप पाप और कुत्ते ककें और शूकर ककें जो उच्छिष्ट भक्षण का पाप और उच्छिष्ट ककें युक्त के भक्षण का जो पाप ॥ ४ ॥ और सुवर्णस्तेयकापाप और संस्काररहित होणेंका जो पाप और वाल्यावस्थाककें और ब्राह्मणकी निंदा ककें उत्पन्न जो पाप तिनां संपूर्णां कों दूरकरो ॥ ५ ॥ और आगे कथन करणी जो रक्षा तिसकों करे

नमोरुद्राय इत्यादि मंत्रांकर्के पात्रविषें स्थापनकरे ॥ और यद्देवा इत्यादि मंत्रांकर्के अपणे विषें हवनकरे क्या पानकरे अन्य पुरुषांके अर्थवास्ते त्रय रात्रां पीवे और जिसने पाप कीता है सो छे६ रात्र पीवे तां शुद्ध होताहै और महापापी सप्तरात्रपर्यंतपीवें और बारां१२रात्रपर्यंत पीणेकर्के संपूर्ण पापदूर होताहै ॥ और गोमयतें क्या गोहेतें निकाले जो यव हैं तिनांको इक्की दिन पर्यंत पीणे कर्के गणांको देखताहै और गणाधिपतिका दर्शन करताहै और विद्याकों देखताहै और विद्याके पतिकों देखताहै और स्मृति कहतेहैं पूर्णायामिति जो पुरुष गोमूत्र विषे पकेहोये यवांकों वा गोमूत्र और गोमय और दधि और दुग्ध और घृतइनांकों पान कर्ताहै सो

नमोरुद्रायभूताधिपतयेद्यौःसावित्रीमानस्तोकेति पात्रेनिषिच्ययद्देवानमो यातामनोजवाः सुदक्षोदहंपितरस्तेनःपांतुतेनोबंतुतेभ्योनमस्तेभ्यः स्वाहे त्यात्मनिजुहुयात् । त्रिरात्रमेवार्थीपापकृत् षड्रात्रंपीत्वापूतोभवतिसप्तरात्रं महापातकीद्वादशरात्रंपीत्वासर्वम्पुरुषकृतंपापंनिर्दहति निःसृतानांयवाना मेकविंशतिरात्रंपीत्वागणान्पश्यति गणाधिपतिंपश्यति विद्यांपश्यतिवि द्याधिपतिंपश्यति । पूर्णायांयावकंपक्वंगोमूत्रंवासकृद्दधिक्षीरंसर्पिःप्रगेभु क्त्वामुच्यतेसोंहसःक्षणादित्याह भगवान् मैत्रावरुणिरिति । अर्थीलौकि ककार्य्यसाधकःत्रिरात्रमेवपिवेत् ॥ पापकृत्तुषड्रात्रमितिसंवन्धः ॥ ※ ॥ अथब्रह्मकूर्चव्रतमाहजावालः ॥ अहोरात्रोषितोभूत्वापौर्णमास्यांविशेष तः ॥ पंचगव्यंपिबेत्प्रातर्ब्रह्मकूर्चविधिःस्मृतः ॥ १ ॥ यथाह पराशरः ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् ॥ निर्दिष्टंपंचगव्यंतुप्रत्येकंकाय शोधनम् । १

क्षणतें हिपापतें रहित होताहै ऐसें भगवान् मैत्रा वराणि कहते भये एह अर्थ स्पष्ट कर्कें किहाहै अर्थीति लौकिककार्य्य करणे वालेकानाम अर्थीहै ॥ ❁ ॥ इसतें अनंतर ब्रह्मकूर्च व्रतकों जावालऋषि कहताहै एक दिन रात्र उपवास करे चाहें किसे दिनहोवे परंतु पूर्णमासी विषें विशेष कर्कें कहाहै प्राताकाल विषें पंचगव्य पानकरे एहब्रह्म कूर्चकी विधि कहीहै १ ॥ जैसें पराशर कहता भया गवित्ति गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत कुशोदक एह पंच गव्य कहाहै एक एकगोमूत्र आदि देहके शुद्धकरणे वाले कहेहैं ॥ १ ॥

इसमें विशेष कहतेहैं गवितिं तांबे की न्यांई है वर्ण जिसका ऐसी गौका गोमूत्र
ग्रहण करे और श्वेत वर्ण वाली गौका गोमय ग्रहण करे और सुवर्ण की न्यांई
वर्णवाली गौका दुग्ध और नीलवर्ण गौका दधि ॥ २ ॥ और कृष्णवर्णा गौका
घृत जेकर पूर्वोक्त रंगा वालियां गौयां न प्राप्तहोवें तां कपिलागौका हि संपूर्ण ग्रहण करे
पंचगव्यविषे एहविधिहै ॥ ३ ॥ अब पंचगव्यका परिमाणहै गविति गोहतें दूणा गोमूत्र और
चारगुणा घृत और अठगुणा दुग्ध और तैसे अठगुणा दधि पंचगव्यविषे एहपरिमाणहै ॥ ४ ॥
इस जगा एह प्राचीनोंका मत किहाहै ॥ अब नवीनोंका मत दिखाइंदा है गविति गोमूत्र

गोमूत्रंताम्रवर्णायाः श्वेतायाश्चापिगोमयम् पयःकांचनवर्णायानीला
याश्चतथादधि ॥ २ ॥ घृतंचकृष्णवर्णायाःसर्वंकापिलमेववा अला
भेसर्ववर्णानांपंचगव्येष्वयंविधिः ॥ ३ ॥ पंचगव्यपरिमाणंतु ॥ गो
शकृद्द्विगुणंमूत्रंघृतंविद्याच्चतुर्गुणम् क्षीरमष्टगुणंप्रोक्तंपंचगव्येतथादधि
॥ ४ ॥ तथाष्टगुणमितिप्राचः ॥ गोमूत्रमाषकास्त्वष्टौगोमयस्यतुषोडश
क्षीरस्यद्वादशप्रोक्तादध्नस्तुदशकीर्तिताः ॥ ५ ॥ गोमूत्रवद्घृतस्याष्टौतद
र्द्धंतुकुशोदकम् अर्वाचीनैश्चऋषिभिःपरिमाणमुदाहृतम् ॥ ६ ॥
गायत्र्यादायगोमूत्रंगन्धद्वारेतिगोमयम् आप्यायस्वेतिचक्षीरंदधिक्रा
व्णेतिवैदधि ॥ ७ ॥

विषे अठ ८ मासे परिमाण और गोहा सोलां माष परिमाण और दुग्धचारां १२ मासे परिमाण
और दधिदश १० मासेपरिमाण ॥ ५ ॥ और गोमूत्रकी न्यांई घृतका भी अठ ८ मासे परि
माण और तिसतें अद्ध क्या चार४मासे कुशाका जल इहां माषकहणे कर्के मासयांका ग्रहणहै
॥ ६ ॥ अब इनके मंत्रोंकों कहते हैं गायेति गायत्री मंत्र कर्के गोमूत्रकों ग्रहणकरे और गंध
द्वारा इस मंत्र कर्के गोमयकों ग्रहणकरे और आप्यायस्व इस मंत्र कर्के दुग्धकों ग्रहण करे
और दधि क्राव्ण इस मंत्रकर्के दधिकों ग्रहण करे ७ ॥

तयिति और तेजोसिशुक्र इस मंत्र करके घृतकों ग्रहण करे और देवस्यत्वा इस मंत्र करके कुशाके जलनू ग्रहण करे इस रीतिसें ऋचां करके पवित्र जो पंचगव्य है तिसका अग्नि विषे हवन करे ॥ ८ ॥ सत्तहैं पत्र जिनांके और नहि छेदया है अग्र जिनांका और तोतेकी न्यांईहै वर्ण जिनांका ऐसीयां कुशा करके जैसे विधिहै तैसे पंचगव्यका हवन करे ॥ ९ ॥ और इरावती इदं विष्णु मानस्तोकेतिशंवती एनां चार ऋचां करके हवनकरणे योग्यहै और हवनकेशेषनू पिच्छों ब्राह्मण पीवे ॥ १० ॥ और ओंकारकरके पंचगव्यविषे अंगुष्ट और अनामिकाकों फेरे और ओंकारकों पढ़करके शुद्धकरे और ओंकार मंत्र के उच्चारण करके

तेजोसिशुक्रमित्याज्यंदेवस्यत्वाकुशोदकम् पंचगव्यमृचापूतंहोमयेदग्नि सन्निधौ ॥ ८ ॥ सप्तपत्राश्चयेदर्भाअच्छिन्नाग्राःशुकत्विषः एतैरुद्धृत्यहोतव्यंपंचगव्ययथाविधि ॥ ९ ॥ इरावतीइदंविष्णुर्मानस्तोकेतिशंवती एताभिरेवहोतव्यंहुतशेषंपिवेद्द्विजः ॥ १० ॥ प्रणवेनसमालोड्यप्रणवेनाभिमंत्र्यच प्रणवेनसमुद्धृत्यपिवेत्तत्प्रणवेनतु ॥ ११ ॥ मध्यमेनपलाशस्यपद्मपत्रेणवापिवेत् स्वर्णपात्रेणताम्रेणब्रह्मतीर्थेनवापुनः ॥ १२ ॥ यत्त्वगस्थिगतंपापंदेहेतिष्ठतिमामकम् ब्रह्मकूर्चोपवासस्तुदहत्यग्निरिवेन्धनमिति ॥ १३ ॥ इदंपंचगव्यपरिमाणादिद्वितीयतृतीयप्रकरणयोरुक्तमपिप्रसंगादत्राप्युक्तमिति न पौनरुक्त्यम्

अंगुष्ट और तर्जनीके साथ त्रयवार ऊर्द्धत्यागे अथा उप्परले पासे सुट्टे और ओंकार करके पीवे ११ ॥ पलाहके मध्यम पत्रकरके वा कमलपत्रकरके वा सुवर्णके पात्रकरके अथवा तांबेके पात्र करके वा ब्रह्मतीर्थकरके पंचगव्यकों पीवे ॥ १२ ॥ अब प्रार्थनाकरतेहैं यदिति जो पाप मेरीयां अस्थियांविषे स्थितहै और देहविषे स्थितहै तिसको एह ब्रह्म कूर्च उपवास व्रत दाह करे जैसे अग्निकाष्टकों दाहकर्ताहै १३ ॥ एह पंचगव्य परिमाणदूसरे तीसरे प्रकरणविषे कहाहोयाभीथा तथापि इस स्थान प्रसंगतें कहाहै पुनरुक्ति दोष नहि जानणा ॥

यदेति जद फेर एह पंचगव्य मिलया होया त्रय रात्रां विषे पीवें तां तिस ऋषिनें व्रत का नाम यतिसांतपन कहाहै इस शंख जीके स्मरणतेंहै ॥ जावालनेतां फेर सत्तां ७ दिनांका सांतपन व्रत कहा है गवितिं गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशोदक इनांमेंसें दिन दिन विषे क्रम करकें एक एकका पान करकें दिन रात्रउपवास करे तां इसका नाम कृच्छ्र सांतपन कहाहै एह संपूर्ण पापांके नाश करणे वालाहै ॥ १ ॥ इनां गुरु लघुकृच्छ्र व्रतोंकी व्यवस्था सामर्थ्यको देखके जानणे योग्यहै। ऐसे आगेभी व्यवस्था

यदा त्वेतदेवपंचगव्यमिश्रितंत्रिरात्रमभ्यस्यते तदा यतिसांतपनसंज्ञां ल भते एतदेवत्र्यहाभ्यस्तंयतिसांतपनंस्मृतमिति शंखस्मरणात् ॥ जावाले नतु सप्ताहसाध्यंसांतपनमुक्तम् गोमूत्रगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकैकंप्रत्यहंपीत्वात्वहोरात्रमभोजनम् कृच्छ्रंसांतपनंनामसर्वपापप्रणाश नमिति १ ॥ एषांच गुरुलघुकृच्छ्राणां शक्त्याद्यपेक्षया व्यवस्था विज्ञेया एवमुत्तरत्रापिव्यवस्थावोद्धव्येति ॥ ❀ अथचान्द्रायणं वक्तुंतावत्तस्यकार्य्य विशेषोपयोगिता प्रदर्श्यते तत्र याज्ञवल्क्यः ॥ अनादिष्टेषुपापेषुशुद्धिश्चां द्रायणेनतु धर्मार्थंयश्चरेदेतच्चन्द्रस्यैतिसलोकतामिति ॥ १ ॥ तथाचषट् त्रिंशन्मतेऽभिहितम् यानिकानिचपापानिगुरोर्गुरुतराणिच कृच्छ्राति कृच्छ्रचान्द्रैस्तुशोध्यन्तेमनुरब्रवीदिति ॥ १ ॥

जानणे योग्यहै ❀ इसतें अनंतर चांद्रायणव्रतकथन करणे तां आदविषे तिस चांद्रायणके कार्य विषें उपयोगिता दखाईदीहै तिस विषे याज्ञवल्क्यजीका वचन है अनेति अनादिष्ट पापांके होयां २ चांद्रायण व्रत करकें शुद्धि कहीहै जो धर्मके वास्ते चांद्रायणकों करताहै सो चंद्रमाके लोककों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ तैसें षट् त्रिंशन्मत विषे कहाहै येति जो कुछक पापहैं वडे तों वडे सों कृच्छ्र और चांद्रायण व्रत करकें शुद्ध होतेहैं एह मनुजी कहते भये ॥ १ ॥

अत्रेति इहांकृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायण इन तीन व्रतोंकाहि करणा कहाहै और शुक्रजीनेंदोनोंका समुच्चयकहाहै तिसकोकहतेहैं दुरीति दुरित जो उपपातकहै और दुरिष्ट जो पातकहै इनके और महापापांके और चपुनःसंपूर्ण पापांके नाश करणेवाले कृच्छ्र चांद्रायणाव्रत कहेहैं १ गौत्तमजीने कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र एह दोनोंव्रत चांद्रायणकेतुल्यहैं ऐसाकिहाहै संपूर्णप्रायश्चित्त के संक्षेपकर्के करणेविषे कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रतके करणेविषे चांद्रायण व्रतकी नि-पेक्षताहै क्या कुछ इच्छानहि सूचनकीहै ॥ अथवा इतिशब्दकर्के तीनोंकाहि समुच्चय जानणा(वा समुच्चय इतिकोधः द्वित्र्यादीनां राशौ परस्पर निरपेक्षाणामेकस्मिन्नक्रियादा वन्वयः यथा देवदत्तो यज्ञदत्तश्च

अत्र त्रयाणांसमुच्चयःप्रतिपादितः उशनसाच द्वयोःसमुच्चयउक्तः ॥ दुरितानांदुरिष्टानांपापानांमहतामपि कृच्छ्रंचान्द्रायणंचैवसर्वपापप्रणाशनमिति १ ॥ दुरितमुपपातकम् ॥ दुरिष्टंपातकम् ॥ गौत्तमेनतु ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रौचान्द्रायणमिति सर्वप्रायश्चित्तसमासकरणेनैन्दवनिरपेक्षता कृच्छ्रातिकृच्छ्रयोःसूचिता ॥ चान्द्रायणस्य तन्निरपेक्षता ॥ इतिशब्देन त्रयाणांसमुच्चयोवाकेवलप्राजापत्यस्यतुनैरपेक्ष्यं चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् ॥ लघुदोषेत्वनादिष्टेप्राजापत्यंसमाचरेदिति॥ गौत्तमेनापि प्राजापत्यनैरपेक्ष्यमुक्तम् प्रथमंचरित्वाशुचिःपूतः कर्मण्योभवति द्वितीयंचरित्वा यदन्यन्महापातकेभ्यः पापंकुरुते तस्मान्मुच्यते तृतीयंचरित्वा सर्वस्मादेनसोमुच्यत इतिमहापातकादपीत्यभिप्रेतम् ॥

गच्छतीति) जैसे देवदत्त और यज्ञदत्तका आपसविषे निरपेक्षता कर्के एक गमन विषे अन्वयहै तैसेंहि तीनोंकी आपसविषे निरपेक्षता कर्के पापके दूरकरणे विषे अन्वयहै ॥ केवल प्राजापत्यकों दूसरेकी नैरपेक्षता चतुर्विंशति मतविषे कहीहै सो कहतेहां लघ्विति जिसका थोडादोषहै ऐसा जो अनादिष्टपापहै तिसविषें प्राजापत्यकोंकरे ॥ गौत्तमजीनेभी प्राजापत्य नैरपेक्ष्यकहाहै ॥ एक प्राजापत्य करणेकर्के देह और अंतष्करणकी शुद्धि और कर्म करणेकी योग्यता वाला होताहै ॥ और दूसरी वार करणे कर्के महापापातें जो अन्यपापहैं तिनांते शुद्ध होताहै ॥ और तीसरेके करणे कर्के संपूर्ण पापतें रहित होताहै महापापतेभी एह अभिप्रायहै

पेति पराकनाम कर्के जो एह कृच्छ्रहै सो संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला क
मनुंनेंभी कहाहै
हारीतऋषिनेंभी कहाहै चांद्रेति चांद्रायणव्रत और पराकव्रत और तुलापुरुष दान और
हाहै ॥
गौयांको घास चुगाणा वनविषे पीछे जाणा एह चार संपूर्ण पापांके नाश करणे वाले कहेहैं
१ ॥ तैसें गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशोदकइनांकों भक्षणकर्के
उपवास व्रतकों करे एह व्रत पापकर्के चांडाल तुल्यकों भी शुद्ध कर्ताहै २ ॥ ❀ इसतें अनंतर
चांद्रायण व्रतका प्रकारहै ॥ तिसविषे मनुजीका वाक्यहै अयिति एक एक ग्रासनूं कृष्णपक्षविषे
घटावे और शुक्लपक्ष विषे वधावे कृष्णपक्षकी एकमते लेके शुक्लपक्षकी पूर्णमासी तक व्रत
करे और त्रयकालस्नान करे एह चांद्रायणव्रतकी विधिहै ॥ १ ॥ अब याज्ञवल्क्यजीकावचनहै

मनुनाप्युक्तम् ॥ पराकोनामकृच्छ्रोयंसर्वपापप्रणोदनइति ॥ हारीतेनाप्यु.
क्तम् ॥ चान्द्रायणंपराकश्चतुलापुरुषएववा गवांचैवानुगमनंसर्वपापप्र
णाशनम् १ ॥ तथा गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकरात्रोप
वासश्चश्वपाकमपिशोधयेत् २ ❀ अथचान्द्रायणव्रतप्रकारः ॥ तत्रमनुः ॥
एकैकह्रासयेत्पिंडंकृष्णेशुक्लेचवर्द्धयेत् उपस्पृशंस्त्रिषवणमेतच्चान्द्रायणंस्मृ
तम् १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ तिथिवृद्ध्याचरेत्पिंडानुशुक्लेशिख्यंडसंमितान्
एकैकंह्रासयेत्कृष्णेपिंडंचान्द्रायणंचरन् ॥ १ ॥ वशिष्ठः ॥ एकैकंवर्द्धयेत्पिं
डंशुक्लेकृष्णेचह्रासयेत् इन्दुक्षयेनभुंजीतएषचान्द्रायणेविधिरिति ॥ १ ॥
चन्द्रस्यायनमिवायनंचरणंयस्मिन्कर्मणिह्रासवृद्धिभ्यां तच्चान्द्रायणम्
संज्ञायांदीर्घः । यमः वर्द्धयेत्पिंडमेकैकंशुक्लेकृष्णेचह्रासयेत् एतच्चान्द्राय
णं नामयवमध्यंप्रकीर्त्तितम् ॥ १ ॥

तिथीति शुक्लपक्षविषे जैसे एकम और द्वितीयातें आदलेके तिथीयांकी वृद्धि होतीहै तैसे मो
रके आंडे प्रमाण ग्रासांकी वृद्धि करे और कृष्णपक्ष विषे ग्रासांकों घटावे और अमावस्या
विषे उपवासकरे चांद्रायण व्रतकों कर्ताहोया १ ॥ वसिष्ठजीके वाक्यकाभी एहि अर्थहै ॥ चां
द्रायण शब्दका अर्थ कहतेहां कि चंद्रमा जैसें शुक्लपक्षविषे किरणां कर्के वृद्ध होताहै और कृ
ष्ण पक्ष विषे किरणांके कम होणे कर्के कम होताहै असे ग्रासां कर्के वधाणा और घटाणा
तिस विषे चांद्रायण कहाहै संज्ञा होणे कर्के चकारकों दीर्घ होया यमनें ॥ १ ॥ इसीका नाम
यवमध्यचांद्रायण कहाहै एहि कहतेहैं वर्द्धयेदिति ॥ १ ॥

अब पराशरजीकावाक्यहै यवेति यवमध्यकृच्छ्रके स्वरूपकों कहतेहां जिसके करणेकर्के पापीपुरुष संपूर्णपापांतें रहित होताहै इसविषे संशयनाहिहै॥ १॥ शुक्लपक्षकी प्रतिपदातें लेके व्रतकरणे वाला पुरुष नियमकरेप्रातःकल उठकर दातनकोंकर्के जैसेआचारहै तैसें स्नानकरे ॥ २ ॥ और दो शुद्ध वस्त्र धारणकरे और नित्यकर्मकोंसमाप्तकर्के सूर्यकेअस्ततकमौनधारके गायत्रीकाजपकरे। ३। और तिसी समय गंध पुष्प आदिकां कर्के विष्णुकी पूजा करे और मयूरके आंडे परिमाण ग्रासकों कर्के। ४। विष्णुनांई नैवेद्यदेकर्के भक्षणकरे एकवार भक्षण करणाविषे असमर्थहोवेतां दो भाग

पराशरः। यवमध्यस्यकृच्छ्रस्यस्वरूपंप्रवदाम्यहम् यत्कृत्वासर्वपापेभ्योमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ १ ॥ शुक्लप्रतिपदारभ्यव्रतीनियमपूर्वकम् प्रातःस्नात्वा यथाचारंदंतधावनपूर्वकम् ॥ २ ॥ तथावस्त्रेपरीधायनित्यकर्मसमाप्यच जपेत्तावन्महामौनीयावम्मंदायतेरविः ॥ ३ ॥ तदाहरिंसमाराध्यगन्धपुष्पादिभिःशनैः मयूराण्डप्रमाणेनग्रासंकृत्वाकृतीतथा ॥ ४ ॥ विष्णवेतन्निवेद्याशुतंग्रासंभक्षयेत्ततः एकवारमशक्तत्वाद्द्विधाकृत्वैवभक्षयेत् ॥ ५ ॥ उत्तरापोशानंकृत्वावाहिर्जगत्वाथवाग्यतः प्रक्षाल्यपाणीतोयेनगंडूषैर्द्वादशात्मकैः ॥ ६ ॥ पादौप्रक्षाल्यचाचम्यपुनर्गत्वास्वमालयम् स्वयमेवपुनःकृत्वाशुद्धंगोमयवारिभिः ॥ ७ ॥ पुनःप्रक्षाल्यतंपाणिंदेवंनत्वाथसंविशेत् पापंडादीन्नपश्येतनसंभाषेत्कदाचन ॥ ८ ॥ सायंसन्ध्यामुपासीतत्वासायंहोममथाचरेत् ॥

कर्के भक्षणकरे ॥ ५ ॥ देवस्थानतें बाहरजाकर अमृतोपस्तरणमासि इसकर्के आचमनकरके ग्रासको भक्षणकर्के अमृतापधानमसि इसकर्के आचमनकरे और मौनधारकरहथांको शुद्धकर्के जलकर्के मुखकी शुद्धिवास्ते वारां १२ चुलीयांकरे ॥ ६ ॥ फेर पादांको जलकर्के शुद्धकरे और आचमन करे पीछे अपणे स्थानको प्राप्तहोकर गोमय और जलकर्के स्थानको शुद्धकरे ॥ ७ ॥ फेर हथांकोधोवे देवताको नमस्कार करे पाषंडियांको न देखे और तिनके साथ संभाषणकदीभी ॥ न करे ८ ॥ और सायंकाल संध्या उपासे और पीछे सायंकाल तक होम करे ॥

सो पुरुष देवताके समीप स्थंडिलमे शयन करे ॥ ९ ॥ फेर प्रातः
नियतकर्केहै व्रत जिसका सो पुरुष देवताके समीप स्थंडिलमे शयन करे ॥ ९ ॥ फेर प्रातः
समय दूसरे दिन उठके स्नानकरे और पूर्वकी न्यांई नियमको करके ग्रासको भक्षण करे एक
एक ग्रास वधायके ॥ १०॥ वुद्धिमान् दिन दिन विषे एक एक ग्रासकी वृद्धिकरे पूर्णमासी तक
दिव्य जो ग्रासहैं अर्थात् मंत्रकर्के शुद्धहैं ॥ ११ ॥ और पूर्णमासीविषे पंदरां १५ ग्रास भक्षण
करे और क्रमतें कृष्ण पक्षविषे एक एक ग्रासको घटावे हर्षकर्के ॥ १२ ॥ पूर्वकीन्यांई एक मास
पर्यंत स्थित होवे तां मासके अंत विषे एक ग्रासको भक्षण करे परमेश्वरके ध्यान विषे युक्त

स्वपेच्चस्थंडिलेदेवसमीपेनियतव्रती ॥ ९ ॥ ततःप्रातःसमुत्थायपरेद्युःस्ना
नमादिशेत् पूर्ववन्नियमंकृत्वाभक्षयेदेकवृद्धितः ॥ १० ॥ एकोत्तरत
याराजन्वृद्ध्याप्रतिदिनंवुधः भक्षयेत्कवलान्दिव्यान्यावतापौर्णिमादि
नम् ॥ ११ ॥ दशपंचैवकवलान्भुक्त्वातत्रव्रतेक्रमात् एकैकंह्रासयेद्ग्रासं
कृष्णपक्षेव्रतीमुदा ॥ १२ ॥ पूर्ववन्नियमंकृत्वामासंयावत्प्रवर्त्तते तत्रापि
भक्षयेदेकंहरिध्यानपरायणः ॥ १३ ॥ व्रतांतेगौःप्रदातव्याव्रतस्यपरिपूर्त्त
ये पंचगव्यंपिवेत्पश्चाद्यवमध्यमुदाहृतम् ॥ १४ ॥ एतदाचरणेनैवब्रह्म
हत्यांव्यपोहति इतराणिचपापानिनश्यंतीतिकिमद्भुतम् १५ ॥ देवलः ॥
अन्नमात्रतृतीयांशैस्तण्डुलैःपाचयेद्धविः तावदन्नंमयूराण्डमितिसन्तोवदं
तिहि ॥ १ ॥ अन्नमात्रंसार्द्धमुष्टिद्वयमितंतत्तृतीयांशैरित्यर्थः

होया होया १३ और व्रतके अंत विषे पूर्ण फलकी प्राप्ति वास्ते एक गौका दान करे और
पीछे पंचगव्यको पानकरे एह यव मध्य चांद्रायण व्रत कहाहै ॥ १४ ॥ इसके करणे करकेहि
ब्रह्महत्यादिपापांको दूरकर्त्ताहै इतरपापांके दूरकरणेविषे क्या आश्चर्यहै ॥ १५ ॥ देवलजीकावा
क्य है अन्नेति ढाई २॥ मुठ चावलांका जो तीसरा भागहै तिस करके युक्त दुग्धको पकावे
तितने प्रमाण अन्नको मोरके आंडके तुल्य वुद्धिमान् कहतेहैं १ ॥

इतीति ऐसे यवमध्य पवित्रचांद्रायण व्रतकों करके पुरुष तिसी क्षणतें ब्रह्महत्यादि पापतें रहित होताहै ॥ २ ॥ इस यवमध्य चांद्रायणव्रतकरणेकों जो प्रारंभकर्त्ताहै तिसके पापनष्ट होतेहैं और जो कोई इसव्रतको करचुकाहै उसकी क्या बात कहणीहै । ३ । विष्णुकी प्रीतिके करणे वालाहै और स्त्रीयां और विधवा और यती और ब्रह्मचारी ॥ ४ ॥ और गृहस्थीइनांके महापापांके नाशक रणेवाला विशेषकर्के एहकहाहै चंद्रमाकी वृद्धि और क्षय किरणाकर्के जैसे होताहै तिसकी न्याई वृद्धि और क्षय चांद्रायणव्रतका ग्रासोंकरके जानणा जदशुक्ल पक्षसें प्रारंभ होवे तां यवमध्यहै एहअर्थहै चंद्रमाकीन्यांई वृद्धिक्षयहोणेतें इस यवकृच्छ्रका नाम यवमध्य चांद्रायण कहाहै धर्मरा

इतिचांद्रायणंकृत्वायवमध्यंसुपावनम् ब्रह्महत्यादिभिःपापैर्मुक्तोभवतितत्क्षणात् ॥ २॥ यवमध्यामिदंचान्द्रंकर्त्तुंयस्तदुपक्रमेत् ॥ तस्यपापानिनश्यन्तिकिंपुनर्व्रतचारिणः ॥ ३ ॥ विष्णुप्रियकरंचैवसर्वपापप्रणाशनम् नारीणांविधवानांचयतीनांब्रह्मचारिणाम् ४ गृहस्थानांविशेषेणमहापातकनाशकम् वृद्धिःक्षयश्चचन्द्रस्यवर्त्ततेतद्वदिदमपि एतद्व्रतनामधेयचांद्रस्य शुक्लपक्षेवृद्धिः कृष्णपक्षेक्षयस्तन्नामधेय एष यवकृच्छ्रःएतश्चयववत्प्रांतयोरणीयः मध्येस्थवीयइतियवमध्यमितिकथ्यते एतदेवव्रतं यदाकृष्णपक्षप्रतिपदिप्रक्रम्यपूर्वोक्तंक्रमेणानुष्ठीयते तदापिपीलिकामध्यमितिकथ्यते ॥ यमः ॥ एकैकंह्रासयेत्पिंडंकृष्णेशुक्लेचवर्द्धयेत् एतत्पिपीलिकामध्यंचान्द्रायणमुदाहृतम् ॥ १ ॥

जका वाक्यहै अथेति कृष्णपक्षविषें पूर्वग्रासांकों घटावे और पीछेशुक्लपक्षविषे वृद्धिकरे इसका नाम पिपीलिका मध्य चांद्रायण कहाहै १ जैसे कीटीका मध्य सूक्ष्महोताहै तैसेहि इसव्रतकाभी मध्य सूक्ष्महै क्या अमावास्याके दिन कुछभोजन नहि सो व्रतकामध्य दिनहै और जैसे यवमध्य विषे स्थूलहै दोनोंपासयां विषे सूक्ष्महै इसप्रकार मध्यविषे स्थूलहोणेतें तिसका नाम यवमध्य चांद्रायणहै अर्थात् पूर्णिमाके दिन १५ पंदराग्रासका भोजन है सो व्रतका मध्य है एहि व्रत कृष्णपक्षकी १ एकमते ग्रहणकरिये तां तिसका नाम पिपीलिकामध्यहै १ ॥

यथेति तैसे पूर्वकहा जो क्रम तिसकर्के कृष्णपक्षकी प्रतिपदाविषे चौदां १४ ग्रासांकों भक्षणकरे एकएक ग्रासघटावे चतुर्दशीतक तां चतुर्दशीविषे एक ग्रास रिहा तिसको भक्षणकरे श्रौर श्रमावास्याविषे उपवास करे श्रौर शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे एकहि ग्रास भक्षण करे तिसते पीछे एकएक ग्रासको वधाये पक्षके श्रंतविषें जो दिनहै पूर्णमासी तिसविषें पंदरां १५ग्रास भक्षणकरे ऐसे पिपीलिकामध्य युक्तहै ॥ श्रव वसिष्ठजीकावचनहै मेति मासाविषे कृष्णपक्षके श्रादविषे चौदां १४ ग्रासांकों भक्षणकरे श्रागे दिनदिनविषे घटावे और पक्षके श्रंतविषे उपवासकरे ॥ १ ॥

तथाहि पूर्वोक्तक्रमेण कृष्णपक्षप्रतिपदि चतुर्दश ग्रासान्भुक्त्वा एकैकग्रासापचयेनचतुर्दशींयावद्भुंजीत ततश्चतुर्दश्यामेकंग्रासंग्रासित्वा श्रमावास्यायामुपोष्य शुक्लप्रतिपदिएकमेवग्रासंप्राश्नीयात् ततएकोपचयभोजनेन पक्षशेषनिर्वर्त्यम।नेपौर्णमास्यांपंचदशग्रासाःसंपाद्यंतइति युक्तैव पिपीलिकामध्यता । वशिष्ठः मासस्यकृष्णपक्षादौग्रासानद्याच्चतुर्दश ग्रासाऽपचयभोजीसन् पक्षशेषंसमापयेत्॥ १ ॥ तथैवशुक्लपक्षादौग्रासंभुंजीतचापरम् ग्रासोपचयभोजीसन्पक्षशेषंसमापयेत् ॥ २ ॥ यदात्वेकस्मिन्पक्षेतिथिवृद्धिह्रासवशाद्दिनानिषोडश भवन्ति चतुर्दश वा तदा ग्रासानामपिवृद्धिह्रासौज्ञातव्यौ तिथिवृद्ध्यापिंडांश्चरेदितिनियमात् ॥ चान्द्रायणान्तरमाह याज्ञवल्क्यः ॥ यथाकथंचित्पिंडानांचत्वारिंशच्छतद्वयम् मासेनैवोपभुंजीतचान्द्रायणमथापरम् ॥ १ ॥

वैसे शुक्लपक्षके श्रादविषें एकग्रासकों भक्षणकरे श्रागे दिनदिन विषें ग्रासकों वधाये ऐसे समाप्त करे । २ । जदपक्षविषे सोलां १६ तिथियां होण वा चौदां १४ होण तां ग्रासांकोभी वधावें घटावे इसमें वचनकहाहै तिथिके वृद्धिक्रमकर्के ग्रासांकों भक्षणकरे इसनियमते जानणा ॥ श्रौर भीचांद्रायणका भेदहै तिसकों याज्ञवल्क्यकहताहै यथेति जिसकिसे तरह श्रर्थात् मध्यान्ह कालविषे नित्य श्राठ ८ ग्रास भक्षण करे श्रथवा चार ग्रास दिन विषे श्रौर चार रात्रिविषे भक्षणकरे श्रैसे एक मासकर्के दोसउचाली २४०ग्रासभक्षणकरे एहचांद्रायणका भेद कहाहै १

अर्थेति एक दिनविषे चारग्रासांकों और दूसरे दिनवारां १२ ग्रासांकों भक्षणकरे तैसें एक रात्र उपवासकरे और दूसरे दिन सोलां ग्रास भक्षणकरे इत्यादि प्रकारांविषे किसे प्रकारकर्के अपणी सामर्थ्यतेंकरे एह पूर्व कथनकीते जो दो चांद्रायण तिसतें एह भिन्नचांद्रायणकहाहै॥इसकारणतें इनदोनों विषे ग्रासांकी संख्याका दोसउ चाली २४०एहनियमनहि क्यानियमहै दो सउ पंजी २२५ग्रासहैं सो कहतेंहै शुक्लेति शुक्ल प्रतिपदातें लेकर पूर्णिमा पर्य्यंत एक एक वृद्धि कर्के एक सो वीस १२० ग्रासहैं कृष्णपक्षकी प्रतिपदासें लेकर चतुर्दशीतक एक एक ग्रासके ह्रासकर्के

पिंडानांचत्वारिंशदधिकंशतद्वयंमासेनभुंजीत ॥ यथाकथंचित्प्रतिदिनंम ध्याह्नेष्टौग्रासान्यथानक्तंदिनयोश्चतुरश्चतुरोवा ॥ अथैकस्मिंश्चतुरोऽपर स्मिन्द्वादशतथैकरात्रमुपोष्यापरस्मिन्षोडशेवेत्यादिप्रकाराणामन्यतमेन शक्त्याद्यपेक्षयाभुंजीतेत्येतत्पूर्वोक्तचान्द्रायणद्वयादपरंचान्द्रायणम् अत स्तयोर्नायंग्राससंख्यानियमःकिंतुपंचविंशत्यधिकशतद्वयसंख्यैव॥तद्यथा शुक्लप्रतिपदमारभ्यपूर्णिमापर्य्यन्तमेकैकवृद्ध्या १२० ग्रासाः ॥ कृष्ण प्रतिपदमारभ्यचतुर्दशी १४ प्रभृत्येकैकग्रासह्रासेन १०५ ग्रासाभवंती त्यनयारीत्या २२५ मनुरप्याह ॥ अष्टावष्टौसमश्नीयात्पिंडान्मध्य दिनेस्थिते नियतात्माहविष्याशीयतिचान्द्रायणंपरम्॥ १ ॥ यतिचान्द्रा यणमितिसंज्ञामात्रम् ॥ तेन न यतिमात्रस्यैवाधिकारःकिन्तुसर्वेषाम् ॥

एक सउपांचग्रास १०५ हुए इसरीति कर्के दो सौ पंचीस २२५ ग्रासहैं ॥ मनुजीभी कहतेंहैं अष्टाविति मध्याह्नदिन विषे अठ अठ ग्रासभक्षणकरे मनकों एकाग्र करे परंतु हविष्यकों भक्षण करे एह वडा श्रेष्ट यति चांद्रायणहै ॥ १ ॥ परन्तु यति चांद्रायण केवल इसका नामहिहै ति सकों यतिचांद्रायणनाम होणे कर्के केवल यतिकों हि नहि अधिकर।किंतु संपूर्णाकोंहि अधिकारहै

तैसेहि कहतेहैं चेति चार ४ ग्रासां नूं प्रातः कहणे करके दिनविषे भक्षणकरे इंद्रियांकों विषयांतें रोकके स्थितरहे ब्राह्मण और चारग्रास रात्रिविषे भक्षणकरे एक मासतक ऐसे नियमकरे तिसका नाम शिशुचांद्रायणहै ॥ १ ॥ इस व्रत विषे भी संपूर्णांका अधिकारहै केवल बालककों नहि इसीको स्पष्ट करके कहतेहैं यथेति जिसकिसे तरह हविष्य अन्न के दोसउचाली २४० ग्रास भक्षण करे एक मासपर्य्यंत तां चंद्रके लोककों प्राप्तहो ताहै २ ॥ तैसे दोसउचाली २४० ग्रासतें घट ग्रासांकेभक्षण करणे विषे औरहि चांद्रायणकहाहै ॥ ऋषिचांद्रायणको कहतेहैं तिसविषे यमजीका वाक्यहै त्रीनिति दृढ है व्रत जिसका

तथाच चतुरःप्रातरश्नीयात्पिंडान्विप्रःसमाहितः चतुरोस्तमयेसूर्य्येशिशु चान्द्रायणंचरन् ॥ १ ॥ अत्रापिचसर्वेषामधिकारोःन शिशुमात्रस्य ॥ यथाकथंचित्पिंडानांतिस्त्रोशीतीःसमाहितः मासेनाश्नन्हविष्यान्नंचन्द्रस्यै तिसलोकताम् ॥ २ ॥ तथाच चत्वारिंशच्छतद्वयन्यूनसंख्याग्राससंपा द्यस्यापिसंग्रहार्थमपरग्रहणम् ● अथऋषिचान्द्रायणम् ॥ तत्रयमः ॥ त्रीं स्त्रीन्पिंडान्समश्नीयान्नियतात्मादृढव्रतः हविष्यान्नस्यवैमासमृषिचान्द्राय णंस्मृतमिति ॥ १ ॥ एषुच यतिचान्द्रायणप्रभृतिषु न चन्द्रगत्यनुसरणमपे क्षितम् ॥ अतास्त्रिंशद्दिनात्मकं साधारणेन मासेन नैरंतर्येण चान्द्रायणानु ष्ठाने यदि कथंचित्तिथिवृद्धिह्रासवशात् पंचम्यादिष्वारंभोभवति तथापि न दोषः ॥

और निश्चलहै मन जिसका सो पुरुष हविष्य अन्नके त्रय३ग्रासदिने और त्रयग्रास रात्रि विषे भक्षण करे एकमास पर्यंत तां तिसका नाम ऋषिचांद्रायणकहाहै ॥ १ ॥ एह जों यतिचांद्रायणतें आदि लेके व्रत हैं तिनां विषे चंद्रमाकी गति करके शुक्ल कृष्ण पक्षका नियम नहि इसकहणेतें त्रीहां ३० दिनांका ग्रहणहै साधारण एक मास निरंतर चांद्रायणविषे जानणा ॥ जेकर कदी एकम आदि ति थिंत पीछें वा आगे पंचमी आदि तिथि ओहि हैं इस विषे प्रारंभ करे तद करणेका भी नहिदोष त्रीह दिन ३० का साबन नाम करके मास पूर्णकरे ॥

❀ इसतें अनंतर चांद्रायण व्रतकी विधिहै कृच्छ्र व्रत विषे मुंडनकों करवाके व्रतकों करे दूसरे दिन पूर्णमासी विषे उपवास करे और आप्यायस्वसंतें पयांसि नमो नम इति इनां मंत्रां कर्के तर्पण और आज्य होम और हविकों अभिमंत्रण करणा और चंद्रमाका उपस्थान करणा इनां मंत्रांको तर्प्पणादि कार्य्योंमे प्रत्येक विषे पढे सबकों पढकर तर्प्पणकरे और सभको पढकर होम करे एह अर्थ आगे स्पष्ट होणाहै यद्देवा देव हेडन मिति चारों मंत्रों कर्के आज्य होम करे (देवकृतस्य इस कर्के अंत विषे समिधाकर्के हवनकरे और ॐभूः इसतें आदि लेकर

❀ अथ चान्द्रायणव्रतविधिः ॥ कृच्छ्रेवपनव्रतंचरेत् श्वोभूतांपौर्णमासीमुपवसेत् आप्यायस्वसंतेपयांसिनमोनमइति चैताभिस्तर्पणमाज्यहोमोहविषश्चानुमंत्रणम् ॥ उपस्थानंचन्द्रमसः ॥ यद्देवादेवहेडनमिति चतसृभिराज्यंजुहुयाद्देवकृतस्येतिचांतेसमिद्भिः ॥ ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् ॐयशः ॐश्रीः ॐऊर्कः ॐइट् ॐओजः ॐतेजः ॐपुरुषः ॐधर्मः १५ शिव इत्येतैर्ग्रासानुमंत्रणम् ॥ प्रतिमंत्रंमनसानमःस्वाहेति वा सर्वानेतैरेवग्रासान्भुंजीत ॥ चरुभैक्ष्यसक्तुकणयावकशाकपयोदधिघृतमूलफलोदकानि हवींषि उत्तरोत्तरप्रशस्तानि पौर्णमास्यांपंचदशग्रासान्भुक्त्वा एकैकापचयेनअपरपक्षमश्नीयात् अमावस्यामुपोष्यैकैकोपचयेन पूर्वपक्षंविपरीतमेकेषामेषचान्द्रायणोमासइति

शिवःतकइनांकर्के ग्रासांको अभिमंत्रणकरे और मंत्र मंत्र प्रतिमनकर्के नमःस्वाहा उच्चारणकरे अथवा संपूर्णग्रासांनूं इनांकर्केहि भक्षणकरे । और कुछ कहतेहैं चर्वित्ति चरुभैक्ष्य क्या भिक्षान्न सत्तु शिलाअन्न और जवांका पाक और शाक दुग्ध दधि घृत और मूल शकरकंदी और फल आम्रादि और जल एह हवींषि जानणे एह सब उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं पूर्णमासीविषे पंदरां१५ ग्रासांनूं भक्षण कर्के एकैकह्रासकर्के दूसरे पक्षविषे भक्षणकरे । अमावस्या विषे उपवास कर्के एक एक की वृद्धि कर्के पूर्व पक्ष विषे करे और कोई इसतें विपरीत चांद्रायण कहतेहैं १

अत्रेति इस विषे ग्रासका परिमाण असे जानणा जो मुख विषे सुख कर्के प्रविष्ट होवे एह कहाहै सो वालकांविषे जानणा ॥ हेतुकहतेहैं शिखीति मयूरअंडके परिमाण पंचग्रास भोजन करणाविषे सामर्थ्य नहि होणेतें ॥ इसमें एभी विचार जानणा कि दुग्धादिकं ग्रास कैसे होण गे तिसवास्ते ग्रासोंकी कल्पना करलेणी क्षीरादि द्रवहविकें ग्रास जो मयूर अंडका प्रमाण सो दूनेकर्के वनाकरजानणा ॥ और विशेषकहतेहैं तथेति कुकुड अंडकेप्रमाण और गिल्हेआंवलेके प्रमाण ग्रास समर्थताकों देखकर अन्य स्मृतियां कर्के कहे होये शक्ति विशेषको देखकर जानणे मयूर अंडप्रमाणतें तिनांकों लघु होणेतें । अव चांद्रायण व्रतके प्रसंगविषे पराशरजीका वचनहै

अत्रग्रासप्रमाणमास्याविकारेणेति यदुक्तंतद्बालाभिप्रायम् शिखयण्डप रिमितपंचग्रासभोजनाशक्तेः क्षीरादिद्रवहविषां ग्रासाःकल्पनीयाः शि ख्यण्डपरिमितत्वंतु पर्णपुटकादिनासंपादनीयम् ॥ तथा कुक्कुटाण्डार्द्राम लकादिपरिमितानिकवलानि स्मृत्यंतरोक्तानिशक्तिविशेषविषयाणि । शि ख्यण्डपरिमाणाल्लघुत्वात्तेषां ॥ चान्द्रायणप्रकरणे पराशरस्तु ॥ कुक्कु टाण्डप्रमाणंतुग्रासंवैपरिकल्पयेत् ॥ शंखस्तु ॥ आर्द्रामलकमात्रास्तुग्रा साइन्दुव्रतेस्मृताइति ॥ एतेषांपरिमाणानांविकल्पोवोध्यः ॥ ॐ अथव्रतांत तरसंपातेनिर्णयः ॥ एकादश्यादौनित्यप्राप्तउपवासस्तावच्चान्द्रायणवि धिनावाध्यते एतस्यचचरेदेतच्चन्द्रस्यैतिसलोकतामिति काम्यत्वात्

क्केति कुक्कुड अंडके प्रमाण ग्रासकी कल्पनाकरे । शंखजीकातो एह वचनहै जो गिल्हाआंवलाहै तिसप्रमाण ग्रासचांद्रायण व्रतविषेकहेहैं इहांपरिमाणांका यथाशक्तिसें विकल्पजानलेणा ॐ इसतें अनंतर व्रतांतर संपात विषे निर्णयहै अर्थात् चांद्रायणके वीच कोई और व्रत आजावे तिसका निर्णयहै एकादशी आदिक विषे नियम कर्के जो उपवासहै सो चांद्रायण विधि कर्के वाधया जावेगा क्योंकि जो चांद्रायणकोंकरताहै सो चंद्रलोककों प्राप्तहोताहै इसफलके सुणनेसे काम्य होणेतें ॥

लैंति उँर लसुनके भक्षण आदिक निमित्तके होयां होयां विधान करणेकर्के चांद्रायणकों ग्राह्यताहै और निमित्तविषेभी ग्राह्यताहै इस कारणतें एह सिद्ध होया कि निमित्ततें नैमित्तिक बलवान् है काम्य इति उँर काम्य जो चांद्रायणहै उँर एकादशीव्रत जो काम्यहै सों अन्य पुरुष द्वारा करवाणा होरी कर्के कीतयां होयांभी फलकी प्राप्ति होतीहै ऐसे कात्यायनादि ऋषियां कर्के कथन करणेतें उँर एह एकादशी व्रतके बाधका अभाव अर्थात् एकादशीके व्रतका बाधा कदे भी नहि होता किंतु उँर व्रत तिस विषे आवे तां एकादशी कर्के तिसकाहि बाधा हुंदाहै सों चांद्रायणतें भिन्न व्रतां विषे हि जानणा क्योंकि तिस विषे दिन दिन प्रति ग्रास ग्रहण विषे

लशुनभक्षणादिनिमित्ते विहितत्वेन नैमित्तिकत्वाच्च काम्यस्त्वेकादश्याद्युपवासोऽन्यद्वाराकरणीयः प्रतिनिधिना कृतेपि फलप्राप्तेः कात्यायनादिभिरुक्तत्वात् ॥ अयंचैकादश्युपवासबाधाभावः सामान्यश्चांद्रायणभिन्नेष्वेव तत्रप्रतिदिनंग्रासग्रहणेनियमाभावात् ॥ यत्पुनरुक्तंश्वोभूतां पौर्णमासीमुपवसेदित्यत्र चतुर्दश्यामुपवासमभिधाय पौर्णमास्यां पंचदश ग्रासान्भुक्त्वेत्यादिना द्वात्रिंशदहरात्मकं चान्द्रायणमुक्तंतत्पक्षान्तरप्रदर्शनार्थं नसार्वत्रिकम् योगीश्वरवचनानुरोधेनत्रिंशदहरात्मकस्यैवदर्शितत्वात् ॥ यद्येतत्सार्वत्रिकंस्यात्तदा नैरंतर्येण संवत्सरे चांद्रायणानुष्ठानानुपपत्तिश्चन्द्रगत्यनुवर्तनानुपपत्तिश्च स्यात् ॥

नियमका अभाव होताहै ॥ जो होर कहाहै कि अगलेदिनहै पूर्णमासी जिसके ऐसी चतुर्दशी कों उपवास करे उँर पूर्णमासी विषे पंदरां १५ ग्रास भक्षण करे इस कर्के वत्ती ३२ दिनका चांद्रायण कहा सो अन्य पक्षकें दखाणे वास्ते जानणा संपूर्ण स्थान विषे नहि योगीश्वरवचनकें अनुसार कर्के त्रीहां ३० दिनाकोंहि दखाणेंते । जेकर एह संपूर्ण स्थान विषे होवे तां निरंतर कर्के वर्षके चांद्रायणकी सिद्धि नहि होंती उँर चंद्रमाकी गतिके अनुसार वर्त्तनेकी भी सिद्धि नहि होती

॥ ● अथेति इसतें अनंतर विशेषता करकें चांद्रायण कल्पका व्याख्यान करेंहां शुक्ल पक्षकी चतुर्दशी विषे उपवास व्रत करे वा कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी विषे उपवासकरे केश औंर श्मश्रु औंर नख औंर लोम इनांकों मुंडन करवाके वा श्मश्रूकाही मुंडन करवाके व्रत करे अव यमजीकावचनहैं आयेति लोहेंका पात्र औंर तेंजस क्या सुवर्ण पात्र औंर घट शराव क्या प्याला आदिपात्रांकों त्यागे एह पात्र असुरांके कहेहैं औंर देवपात्र अचक्रक है ॥ १ ॥ यमजीकहतेहैं अंगुलीयांके अग्र विषे स्थित जो ग्रास तिसका सावित्रीककें मंत्रण करे इस विषे ग्रासां करकें प्राणरूप जो अग्नि तिस विषे हवन करे ॥ असे बौधायन ऋषि कहता है प्रथम ग्रासकों

● अथातोविशेषतयाचान्द्रायणकल्पंव्याख्यास्यामः ॥ शुक्लचतुर्दशीमुपवसेत्कृष्णचतुर्दशींवाकेशश्मश्रुनखलोमानि वापयित्वा श्मश्रूणिवेत्यादि यमः ॥ आयसंतैजसंपात्रंचक्रोत्पन्नंविवर्जयेत् असुराणांहितत्पात्रंदेवगात्रमचक्रकम् १ चक्रोत्पन्नंघटशरावादि सएव ॥ अंगुल्यग्रस्थितंग्रासंसाविञ्याचाभिमंत्रयेत् अत्रग्रासैरेवप्राणाग्निहोत्रमाह ॥ बौधायनः ॥ अश्नीयात्प्राणायेतिग्रासंप्रथमम् १ अपानायेतिद्वितीयम् २ व्यानायेतितृतीयम् ३ उदानायेतिचतुर्थम् ४ समानायेतिपंचमम् ५ यदाचत्वारस्तदाद्वाभ्यांग्रासंपूर्वम् यत्रत्रयस्तदाद्वाभ्यांद्वाभ्यांपूर्वौ यदाद्वौतदात्रिभिःपूर्वंद्वाभ्यामेवोत्तरम् एकंतुसर्वैरिति ग्रासद्वयपक्षे प्रथममाद्यैस्त्रिभिरंतंद्वाभ्याम् एकपक्षेसर्वैरेकामित्यर्थः

प्राणाय स्वाहा इस करकें भक्षण करे १ औंर अपानाय स्वाहा इसकरकें दूसरे ग्रासनूं २ औंर व्यानाय स्वाहा इस करकें तीसरेनूं ३ औंर उदानाय स्वाहा इस करकें चोथेनूं ४ औंर समानाय स्वाहा इस करकें पंचम ५ ग्रासनूं भक्षणकरे जेकर चार ग्रास होवणतां दोनों मंत्रां करकें प्रथम ग्रासकों भक्षण करे औंर जां त्रय ग्रासहोंण ता दुंह दुंह मंत्रांकरकें प्रथम दो २ ग्रास भक्षण करे। औंर जद दो २ ग्रास होंण तांतीन मंत्रां करकें प्रथन एक ग्रासकों भक्षण करे औंर अंतके ग्रासकों दोनों मंत्रां करकें भक्षण करे औंर जां एक हिग्रास होवे तां पांचो मंत्रां करकें एकग्रासका भक्षण करे दुंह मंत्रां करकें दूसरेग्रासका भक्षण करे

अब स्पष्ट कर्के प्रयोग कहतेहां चतुर्दशीविषे कीताहै नित्यकर्म जिसने पूर्वाह्न कालविषे प्राणायामकों कर्के उोमद्य मासपक्षआदिका उच्चारण कर्के अमुक पापके दूर करणे वास्ते श्रीकी कामना देवताकी प्रीतिकी इच्छाकर्के वारसा यनादिके सिद्धिकी कामना कर्के इस चांद्रायण व्रत कों कर्त्ताहां ऐसे संकल्पकरे ॥ ओं अग्ने व्रत पते व्रतं चरिष्यामि इत्यादि मंत्रां कर्के व्रतनूं सूर्य्यके तांई अर्पण कर्के ॥ केश और श्मश्रुकाहि मुंडन करवाके अथवा केवल श्मश्रुका हि मुंडन कर वाके तिस दिन विषें उपवासकर्के और तिसी दिन विषे जेकर अमावस्या होवे तां तिस विषे भी उपवास कर्के और जेकर पूर्णमासी होवे

● अथ स्पष्टप्रयोगः ॥ चतुर्दश्यांकृतनित्यक्रियः पूर्वाह्णे प्राणानायम्य मासपक्षाद्युल्लिख्यामुकपापक्षयकामः श्रीकामोदेवताप्रीतिकामोरसायनादिसिद्धिकामोवा अमुकचान्द्रायणंकरिष्य इतिसंकल्पः ॥ ओंअग्नेव्रतपतेव्रतं चरिष्यामीत्यादिमंत्रैर्व्रतमादित्यायनिवेद्य केशश्मश्रुलोमनखानिश्मश्रूण्येव वा वापयित्वातद्दिनमुपोष्य तद्दिनेऽमाचेत्तत्राप्युपोष्य पौर्णिमाचेत्पंचदशग्रासान्भुंजीत ॥ तत अमोत्तरपक्षे उपचयः ॥ पौर्णिमोत्तरपक्षेऽपचयोग्रासानाम् ॥ प्रतिदिनमुदितेचन्द्रे आप्यायस्वसोमंतर्पयामि संतेपयांसि सोमंतर्पयामि नमोनमश्चन्द्रमसंतर्पयामीतितर्पयित्वा आज्येनैतैरेवमंत्रैर्लौकिकेग्नौहुत्वैतैरेवपात्रस्थंहविरनुमंत्र्यैतैरेवचन्द्रमुपस्थाय ॥ यद्देवादेवहेडनमितिचतसृभिश्चप्रत्यृचमाज्यंजहुयात् ॥ सर्वत्राग्नये नममेतित्यागः

तां पंदरां १५ ग्रास भक्षण करे और अमावस्यातें उत्तर शुक्लपक्ष विषें ग्रहण करे तांक्रम कर्के ग्रासां कों वधाये और पूर्णमासीते पीछे कृष्ण पक्ष विषे ग्रासांको घटावे ॥ और दिन दिन विषे चंद्रमाके उदयहोयां होयां आप्यायस्व सोमंतर्पयामि ॥ संते-नमोनमश्चंद्रमसंतर्पयामि इनां मंत्रां कर्के तर्पणकरे और इनांमंत्रांकर्केहि लौकिक अग्निविषे घृतका हवन करे और एनांहि मंत्रां कर्के पात्र विषे हविका अनुमंत्रण करे और इनां मंत्रां कर्के चंद्रमाकी पूजा करे ॥ और यद्देवादेवहेडन मितिचार ऋचां कर्के ऋचा ऋचा प्रतिघृतका हवन करें और सभजगा न मम ऐसा कह कर्के अग्निमें त्याग करे

ततइति तिसतें उपरंत देवकृतस्य इनतीन ऋचांकर्के त्रयसमिधांका हवनकरे ॐभूः १ ॐभुवः २ ॐस्वः ३ ॐमहः ४ ॐजनः ५ ॐतपः ६ ॐसत्यं ७ ॐयशः ८ ॐश्रीः ९ ॐऊर्क् १० ॐइट् ११ ॐतेजः १२ ॐपुरुषः १३ ॐधर्मः १४ ॐशिवः इनांपंदरां १५ मंत्रां कर्के पात्रमे स्थितएकएक ग्रासका एकएक मंत्र कर्के अनुमंत्रण करे मनकर्के(नमःस्वाहा) असे मंत्रके अंत विषे कहकर संपूर्ण ग्रासांका अनुमंत्रण कर्के और अंगुलीयांसाथ एकएक ग्रासनूं ग्रहण कर्के गायत्री मंत्राकों पढकर भक्षण करे ॥ तां प्रथमदिन के ग्रासके भक्षण विषे प्राणायस्वाहा इत्यादिक पूर्व क्रम कर्के पंचमंत्रां कर्के पंचग्रास भोजन करे पंजांते अधिक जेकर ग्रास होण तां तूष्णी होके

ततोदेवकृतस्येतित्रिभिःसमित्त्रयंहुत्वा ॐभूः १ ॐभुवः २ ॐस्वः ३ ॐ महः ४ ॐजनः ५ ॐतपः ६ ॐसत्यम् ७ ॐयशः ८ ॐश्रीः ९ ॐऊर्क् १० ॐइट् ११ ॐतेजः १२ ॐपुरुषः १३ ॐधर्मः १४ ॐशिवः १५ इत्येतैः पंचदशभिरेकैकंक्रमेणपात्रस्थग्रासमनुमंत्र्य मनसानमः स्वाहा इत्युक्त्वा सर्वाननुमंत्र्यैकैकमंगुल्यग्रैर्गृहीत्वा सावित्र्याऽनुमंत्र्यभक्षयेत् ॥ तत्रप्रथम दिन एकग्रासभक्षणे प्राणायस्वाहा इत्यादयः पूर्वोक्तप्रकारेण पंचापिमं त्रायोज्याः ॥ पंचभ्योऽधिकाग्रासास्तूष्णीमेवभक्षणीयाः ॥ समाप्तौत्र्यव रान्विप्रान्भोजयित्वागांदक्षिणांदद्यात् ॥ आसमाप्तिप्रत्यहं त्रिषवण स्नानम सौरमंत्रैः कृतांजलेरादित्योपस्थानम् गायत्र्याव्याहृतिभिः कूष्मांडैर्वाज्यहोमः ॥ दिवास्थितिः ॥ रात्रावुपवेशनम् ॥ अशक्तौश यनंयथाशक्ति ॥ आपोहिष्ठेतिसूक्तम् ॥ यतोत्विन्द्रः ऋचंचेति

क्या मौनधार कर भक्षण करणे योग्यहैं ॥ और समाप्ति विषे तीनतें अधिक ब्राह्मणांके तांई भोजन देकर एक गौदक्षिणा देवे ॥ और व्रतकी समाप्तिपर्यंत त्रिकाल स्नान करे और सूर्यके मंत्रां कर्के हाथ जोडकर सूर्यके उपस्थानकों करे और गायत्री कर्के व्याहृतियांकर्के अथवा कूष्मांड मंत्रों कर्के घृत कर्के हवन करे ॥ और दिन विषे खलोतारहे और रात्रि विषे स्थित होवे औंर जेकरसामर्थ्य न होवें तां जैसें शक्तिहै तैसे शयन करे आपोहिष्ठा इति सूक्तं यतोत्विद्रः ऋचंचेति इनकोजपें

ऋचंशन्न इन्द्राग्नीस्वस्तिनामिति इनकों जपे और पुनंतुमादेवजनाः इनको ॥ और ऋषभं विरजं रौरवयोधाजयें सामोकों जपन क्या इनांऋचांकों जपे इनांके अभाव विषे गायत्रीकों जपे और व्याहृतियांकों जपे वा ओंकारकों ८ जपे ॥ एह किहाहै इसजगा परन्तु ब्राह्मण भोजन और दक्षिणादान आदि और जप एह संपूर्ण प्राजापत्यआदि व्रतांविषेभी जानणे ❀ इसतें अनंतर सोमायन व्रतका वर्णन है तिसविषे मार्कंडेयजी का वचन है गविति सप्त रात्र ७ पर्यंत गौके चार ४ स्तनांते दुग्धपीवे और सप्तरात्र ७ तीन ३ स्तनांतें दुग्धपीवे और सत्तरात्र ७ दुंह २ स्तनांका दुग्धपीवे ॥ १ ॥ और छेः६ रात्र गौके एक स्तनका दुग्ध पीवे और त्रय ३ रात्रां कुछ

ऋचंशन्नइन्द्राग्नी स्वास्तिनामिति ॥ पुनंतुमादेवजनाः ॥ ऋषभं विरजं रौरवयोधाजयेसामनीचजपन् एतेषामसंभवेगायत्रींव्याहृतिंप्रणवं वा जपेत् एतच्चविप्रभोजनदक्षिणादानादिजपांतं सर्वेष्वपि प्राजापत्यादिव्रतेषु कल्प्यम् ॥ ❀ अथसोमायन व्रतवर्णनम्॥ तत्रमार्कण्डेयः ॥ गोक्षीरंसप्तरात्रंतुपिबेत्स्तनचतुष्टयात् स्तनत्रयात्सप्तरात्रंसप्तरात्रंस्तनद्वयात् ॥ १ स्तनेनैकेनषड्रात्रंत्रिरात्रंवायुभुग्भवेत् एतत्सोमायनंनाममहाकल्मषनाशनमिति २ ॥ अत्रेदंबोध्यम् ॥ यस्यागोःस्तनचतुष्टयेनव्रतानुष्ठातुस्तृप्तिःस्यात्साविड्भोजनादिदोषशून्याऽत्रार्थेप्रयोज्येति ॥ स्मृत्यंतरे सप्ताहंचेत्पिवेद्दोस्तनमखिलमथत्रीन्स्तनान्द्वौतथैकं कुर्यात्त्रींश्चोपवासान्यदि भवतितदामासिसोमायनंतत् ॥ १ ॥ एतदपिचान्द्रायणधर्मकमेव

नभक्षण करे एह त्रीह ३० दिनका सोमायन नामकर्के व्रत कहाहै महापापांके नाशकरणेवाला है ॥ २ ॥ इस विषे एह जानणा कि जिस गौकें चार स्तनांके दुग्धकर्के व्रत करण वालेकी तृप्ति होवें सो गौ विट भोजन आदि दोषतें रहित होवे तां तिसका दुग्ध ग्रहण करणा ॥ होरी स्मृति विषे भी कहाहै सप्तेति जेकर सत्त दिन गौके चारस्तनांतें संपूर्ण दुग्धपीवे और सत्त दिन त्रुंहस्तनांतें और सत्तदिन दुहस्तनांतें और छे६दिन एक स्तनतें पीवे और त्रय दिन उपवासकरे तां महीने कर्कें सोमायन व्रत होताहै ॥ १ ॥ एह सोमायन व्रतभी चांद्रायण रूपहि है

क्यों कि हारीत ऋषिनें इसतें आगें चांद्रायणकों कहतेहां इस कर्के सहित कर्त्तव्यताके चांद्रायणव्रतकों कहके पीछे ऐसे सोमायनभी जानणा इक कर्के सोमायनको भी कहणेतें ॥ जो फेर तिसनें कृष्ण चतुर्थीतें लेकेशुक्ल द्वादशी पर्य्यंत सोमायन व्रत कहाहै सो कहतेंहां चतुर्थीतें लेके त्रयदिन चार स्तनांकेदुग्धकोंपीवें और तिसतें पीछे त्रयदिन तीन स्तनांके दुग्धकों पीवे और त्रयदिन दुंह स्तनांके दुग्धकों पीवे और त्रय दिन एक स्तनके दुग्धकों पीवे ऐसे वारां १२ दिन कर्के फेर त्रयदिन एक स्तनके दुग्धकों पीवें और त्रयदिन दुंहस्तनां के और त्रयदिन त्रयस्तनां

हारीतेन अथातश्चान्द्रायणमनुक्रमिष्यामइत्यादिना सेतिकर्त्तव्यताकंचान्द्रायणमभिधायैवं सोमायनमित्यतिदेशाभिधानात् ॥ यत्पुनस्तेनकृष्णचतुर्थीमारभ्यशुक्लद्वादशीपर्यंतंसोमायनमुक्तम् ॥ चतुर्थीप्रभृतिचतुःस्तनेनत्रिरात्रम् ॥ ततस्त्रिस्तनेनत्रिरात्रम् ।। द्विस्तनेनत्रिरात्रम् एकस्तनेनत्रिरात्रम् १२ एवमेकस्तनप्रभृतिपुनश्चतुःस्तनान्तम् ॥ १२ ॥ यातेसोमचतुर्थीतनूस्तयानः पाहितस्यैनमः स्वाहा ॥ यातेसोम पंचमी षष्ठीत्येवं यथार्थास्तिथिहोमाःएकमासं एनोभ्यःपूतश्चन्द्रमसःसमानतां सलोकतां सायुज्यंच गच्छतीति ॥ चतुर्विंशतिदिनात्मकसोमायनमुक्तम् ॥ तदशक्तविषयम् ॥ ※ अथयतिचान्द्रायणमाह गौत्तमः ॥ मासस्यादौयतिर्विप्रोव्रतंकुर्य्याद्यथाशृणु कृत्वामूत्रपुरीषेतुशौचंकुर्य्याद्यथाविधि ॥ १ ॥ दन्तान्संशोध्ययत्नेनह्यपामार्गस्यशाखया स्नानंकृत्वानदीतोयेतडागेवाहूदेपिवा ॥ २ ॥

के और त्रयदिन चोंहस्तनांके दुग्धकों पीवे ऐसे चव्वी २४ दिनका सोमायन व्रत कहाहै इस विषे (याते सोमतुर्थी) इति(यातेंसोम पंचमी)इति और एक मासं एनोभ्यः इत्यादि ऋचांका पाठ करे एह चौवी २४ दिनका व्रत असामर्थ्य विषे जानणा ॥ ※ इसतें अनंतर यति चांद्रायणनूं गौत्तम ऋषि कहताहै मासेति मासके आदविषे यति व्राह्मण जैसें व्रतनूं कर्त्ताहै तैसे श्रवण कर मूत्र पुरीषके त्यागकोंकर्के जैसे विधिहै तैसे शौचकों करे॥ १ ॥ पीछेपुटकं डेकी वीढी कर्के यत्न कर्के दंतांकों शुद्धकरे फेर स्नानकरे नदी विषे वा तलाय विषे वा हूद विषे २ ॥

धृत्वेति शुद्ध दुंह वस्त्रांको धारके नित्यकर्मोंकोंसमाप्त करे ३ पीछे उपासनाकों क्यान्यासादिकोंकर्के देवताका पूजनकरे और मंत्रकों स्मरण कर्के संकल्प करे और फेर विष्णुका ध्यानकरे हस्थ पादांकी शुद्धिपर्यंत ४ हत्थपाद शुद्ध कर्के दोवार आचमनकरे असे शुद्ध होकर संध्या काल विषे संध्या उपासे और नारायणकीमूर्त्ति आगेशयनकरे ५ तिसतें अनंतर प्रातःकालविषे उठकर पूर्वदिनकी न्यांई संपूर्णकर्मकरे और उपवासव्रतकोकरे शुक्लपक्षकीअष्टमीतक ६ और तिस शुक्लाष्टमीविषे पूर्वकी न्यांई पंचग्रासभक्षणकरे और तैसे पूर्णमासी और कृष्णाष्टमी और अमावस्या जैसे क्रमहै ७ पंच पंच ग्रास भक्षण करे और भक्ति युक्त होवे पृथ्वी विषे नित्य शयन करे और सुगंधितांबू

धृत्वाचोद्गमनीयंतुनित्यकर्म्मसमापयेत् ॥ औपासनादिकंकृत्वादेवपूजामथाचरेत् ॥ ३ ॥ उद्गमनीयं धौतवस्त्रद्वयमित्यर्थः ॥ संकल्पमेवंकुर्वीतपूर्वमंत्रमनुस्मरन् तावद्ध्यायेन्महाविष्णुंयावन्नक्षालयेत्करौ ४ ॥ पादौ चक्षालयेत्पश्चाद्द्विराचम्यशुचिर्भवेत् सायंसध्यामुपासीतस्वपेन्नारायणाग्रतः ॥ ५ ॥ ततःप्रातःसमुत्थायसर्वंपूर्ववदाचरेत् तावदुपोषणंकृत्वायावच्छुद्धाष्टमीभवेत् ॥ ६ ॥तत्रैवपूर्ववत्पिंडान्भक्षयेत्पंचसंख्यया पूर्णायांवहुलाष्टम्यांतदमायांयथाक्रमम् ७ ॥ भक्षयेत्पंचपंचैवकवलान्भक्तिपूर्वतः अधः शायीभवेन्नित्यंगन्धताम्बूलवर्जितः ॥ ८ ॥ मासान्तेगौःप्रदातव्याव्रतस्यपरिपूर्त्तये पंचगव्यंपिवेत्पश्चाद्यतिचान्द्रायणंचरेत् ॥ ९ ॥ अनेनविधिनायस्तुयतिचान्द्रायणंपरम् कृत्वापापविशुद्धात्माप्राप्नुयात्परमांगतिम् ॥ १० ॥ विधवावायतिर्वापिव्रतीवापापनाशनम् गृहेवाकुरुते सम्यक्सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ११ ॥ ❀ अथशिशुचान्द्रायणलक्षणांतरमाह देवलः ॥ शृणुराममहावाहोसर्वपापहरंपरम् शिशुचान्द्रायणंनाम सुरर्षिगणसेवितम् ॥ १ ॥

लकों त्यागे ॥ ८ ॥ मासके अंत विषे व्रतके पूर्णफलकी प्राप्ति वास्ते गौदान करे पीछेसें पंचगव्यका पान करे असे यति चांद्रायण व्रतकों करे ९ इस विधिकर्के जो यतिचांद्रायणव्रतकों कर्त्ताहै सो संपूर्णपापांतें शुद्धहोकर परमगतिकों प्राप्तहोताहै १० इसपापांके नाशकरण वाले व्रतकों विधवास्त्री वा यति वा व्रती वनविषे वागृहविषे करे संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ११ ❀ अव शिशुचांद्रायणकें लक्षणनूं देवलऋषि कहताहै श्रिति हे परशुराम हे महावाहो शिशु चांद्रायणनाम कर्के संपूर्ण पापके नाश करण वाले व्रतनूं श्रवणकर जो सुरर्षियांके गणा कर्के सेव्यमानहै १

पूर्व कालमें उद्दालक नाम कर्के ऋषि जद माताके गर्भतें जन्मकों धारताहोया
तद अंजालि विषे नाभि नालनूं ग्रहण कर्के पृथ्वीमें भ्रमताभया नाभिनाल इसपदकर्केजणाया
कि जन्मकालतेहि उठकर्केचलागिया नालुछेद तक भीनहिरिहा एह ऋषिलोकोका प्रभावहै
२ ॥ और गर्भतें अष्टमवर्ष के होयां होयां उद्दालक ऋषि गोत्र नाम कर्के अर्थात् शिशु नाम
कर्के व्रतनूं कर्त्ता भया यद्वा गोत्रेण क्या कुलकी स्थिति वास्ते व्रत कर्त्ताभया ॥
इस कारणते शिश्वर्थंक्रियमाण होणेतें अर्थात् बालकके अर्थ होणेतें शिशुचांद्रायण नाम
व्रत है अथवा गोत्र व्रतकर्के संततिव्रत जानणा अथवा गोत्रशब्द छत्रका वाचीहै अर्थात् छत्रा

पुरातूद्दालकोनाममातृगर्भाद्विनिर्गतः नाभिनालमुपादायस्वांजलौपर्य्य
टन्महीम् ॥ २ ॥ गर्भाष्टमेसमायातेसगोत्रेणव्रतंचरेत् ॥ गर्भेति ॥ गर्भा
धानादष्टमेऽब्देसउद्दालकोगोत्रेण नाम्ना अर्थात् शिशुनाम्नाव्रतं चेरदचर
दित्यर्थः ॥ यद्वा गोत्रेण कुलेन हेतुनाकुलस्थित्यर्थं व्रतमकरोदित्यर्थः ॥
अतएवाशिश्वर्थंक्रियमाणत्वाच्छिशुचान्द्रायणंनाम ॥ यद्वा गोत्रेणेति ना
मार्थेतृतीया गोत्रव्रतंसंततिव्रतामित्यर्थः ॥ अथवा गोत्रशब्दोऽत्रछत्रवा
ची ॥ छत्रव्रतंछत्राकारंव्रतम् सर्वोत्तममित्यर्थः ॥ तदाप्रभृत्यसौयो
गीसायान्हेभैक्ष्यमाचरन् ॥ ३ ॥ श्रोत्रियाणांद्विजातीनांत्रिषुवेश्मसुसंच
रन् कवलत्रयमानीयप्रक्षाल्यशुद्धिभिर्जलैः ॥ ४ ॥ भागत्रयंतदाकृत्वा
भागमेकंहरेर्ददौ द्वितीयमग्नौनिक्षिप्य तृतीयंचात्मानिन्यसेत् ॥ ५ ॥
रात्रौस्वपेत्स्थंडिलेषुगन्धपुष्पादिवर्जितः ॥ एवंवैप्रत्यहंकुर्व्वन् यावत्पुत्र
समागमः ६ ॥ नासिकेतोत्पत्तिपर्य्यन्तामित्यर्थः तदाप्रभृतिलोकेस्मिन्नाशि
शुचान्द्रायणंस्मृतम् कलौयुगेविशेषेणमहापातकनाशनम् ॥ ७ ॥

आकार व्रत संपूर्ण व्रतांविषें उत्तमहै एह अर्थहै तिसदिनतें लेके योगी सायंकालविषें भिक्षाकों
जाताभया ॥ ३ ॥ और वेदपाठियांब्राह्मणांके तीन घरांते भिक्षाकोंलयके तीन ग्रासांकों शुद्धज
लसाथ धोकर ॥ ४ ॥ त्रयभागकर्के एकभागविष्णुकेताईं अर्पणकर्त्ताभया औरदूसराभागअग्निवि
षें हवनकर्के औरतीसरा आपभक्षणकर्त्ताभया ॥ ५ ॥ रात्रिविषें गंधपुष्पआदिकों त्यागकरस्थंडि
लविषें शयनकर फेर प्रातःकाल उठकर इसी विधि मे प्रवृत्त हुंदा होया इसप्रकार उद्दालकऋषि
नासकेतुंपुत्रकी उत्पत्ति पर्यंत दिनदिनविषें विधिकर्त्ताभया ॥ ६ ॥ तिसदिन तेलें के लोक
विषे शिशुचांद्रायणनाम व्रत प्रसिद्ध होया कलियुगविषें विशेष कर्के महापापांके नाशकरणे
वाला कहाहै ७ ॥

इस उत्तम व्रतके करणे करके महापापीभी शुद्ध होताभया ॥ अब गौत्तमजीका वचनहै शीति शिशुचांद्रायण जो व्रतहै तिसविषे प्रतिदिन एकहि ग्रास भक्षण करणेयोग्यहै तिसकोकरके महापापियोंके मध्यविषे वर्त्तमानभीहोवे तथापि तिस महापापते शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अब जावालिऋषिका वचनहै शीति जो ब्राह्मणपापां के दूरकरणेवास्ते शिशुचांद्रायण व्रतकोकर्त्ताहै सो तात्काल पापतेशुद्धिको प्राप्तहोकर परमगतिकों प्राप्तहोताहै १ तिसशिशुचांद्रायणके प्रकारको देवलऋषि कहताहै मेति मासके आद विषे प्रतिपद्दिनाविषें पूर्वकीन्यांई स्नानकरे पूर्व दंतधावनकोकरके धौतवस्त्र कों धारके और त्रयकाल संध्याबंदनादि कर्मको करके १ ॥ चौथे पहर पत्रांके डूणेविषे

महापापीविशुद्धोभूत्कृत्वैतद्व्रतमुत्तममिति ॥ गौत्तमः ॥ शिशुचान्द्रायणं सम्यग्ग्रासमेकंनिरंतरम् कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिमहापातकिनामपि ॥ १ ॥ महापातकिनांमध्येवर्त्तमानोपियःकश्चिदेतत्कृत्वाशुद्धिमाप्नोतीत्यर्थः ॥ जावालिः ॥ शिशुचान्द्रायणंकृत्वाद्विजोयःपापमुक्तयेससद्यः पापनिर्मुक्तःप्रपेदेपरमांगतिम् ॥ १ ॥ अवश्यंभाविनिभूतवन्निर्देशात्प्रपेदेप्रपत्स्यतइत्यर्थः ॥ तत्प्रकारमाहदेवलः ॥ मासादौप्रतिपद्दिवसेपूर्ववत्स्नानमाचरेत् दंतधावनधौतवस्त्रत्रिसन्ध्यावन्दनादिकम् ॥ १ ॥ चतुर्थयामेपर्णपुटेह्यपश्यन्पापिनःखलान् श्रोत्रियाणां द्विजातीनांत्रिषुवेश्मसुसंचरेत् २ कवलत्रयमानीयप्रक्षाल्यशुचिभिर्जलैः भागत्रयंतथाकृत्वाभागमेकंहरौक्षिपेत् ३ प्रक्षाल्यपूर्ववद्धस्तौद्विराचम्यशुचिर्भवेत् रात्रौस्वपेद्धरेरग्रेस्थंडिलेगन्धवर्जितः ॥ ४ ॥पुनःपरे द्युरेवंहि कुर्यात्पापविशुद्धये

वेदपाठी ब्राह्मणांके गृहांविषें भ्रमे और नीच और जो पापी हैं तिनांको न देखें ॥ २ ॥ और ग्रास कों लयावे पवित्र जलकरके शुद्ध करे और त्रयभागकरके एकभाग विष्णुके तांईं अर्पणकरे॥३ ॥ एकग्रासका अग्निविषें हवनकरे और एक ग्रास भक्षण करें और पूर्वकी न्यांई हस्तपाद शुद्ध करके दोवार आचमन करे तांशुद्ध होताहै और रात्रिविषे विष्णुके आगे स्थंडिल विषे शयन करे गंधपुष्प आदिको त्यागे ॥ ४ ॥ फेर दूसरे दिन ऐसेहि विधिको करे पापेकदुरकरणे वास्ते

ऐसें एकमासके व्रतकोंकर्के अंतबिषें ब्राह्मणकेंताईं गौदेणेयोग्यहै ५ पीछे पंचगव्यकापानकरे ऐसें
जो पुरुष कर्ताहै सो संपूर्णपापांतेंरहितहोंताहै ६ ❀ अवमहाचांद्रायणकहींदाहैतिसाविषेंदेवलजीका
वाक्यहै हेराम हेमहाभुजांकर्के युक्तमहाचांद्रायणव्रतकों तूं श्रवणकरजो श्रेष्ठ औरहै ब्रह्महत्यादिपापो
के दूरकरणेंवाला और संपूर्ण मंगलरूपहै १ इसकर्के दूरहोणवाले पापाकों कहतेहैं गुर्वीति गुरोंके
द्रोहविषें जो पाप है और जो पाप पापीयांकी संगातिविषें और चांडालीकेगमनविषे और विधवा
स्त्रीके संग विषे २ और श्रेष्ठ स्त्रीके संगम विषें और परअन्नके भक्षण विषें और नीचस्त्रीके
संगमविषें और भर्त्ताके जीवतयां जों जारतें उत्पन्न होयाहै और भर्त्ताके मृतहोयांहोयां जों जारतें

एवंमासव्रतंकृत्वामासांतेगौर्यथार्थवत् ५ देयाविप्रायसहसापंचगव्यंपि
वेततः एवंकृत्वानरोयस्तुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ६ ॥ ❀ अथमहाचान्द्राय
णम् ॥ तत्रदेवलः । शृणुराममहावाहोमहाचान्द्रायणंपरम् ब्रह्महत्यादि
पापानांशोधनंसर्वमंगलम् १ गुरुद्रोहेचयत्पापंयत्पापंपापिसंगमे चाण्डा
लीगमनेपापंयत्पापंविधवागमे २ परस्त्रीषुचयत्पापंयत्पापंपरभोजने य
त्पापंवृषलीसंगेयत्पापंकुण्डगोलयोः ३ शूद्रवृत्त्याश्चयत्पापंयत्पापंर
सविक्रये पुरोहितस्ययत्पापंयत्पापंपरदारगे ४ यत्पापंसर्वसंगेचयत्पा
पंधनुविक्रये यत्पापंरजकीसंगेयत्पापंपतिनिन्दया ५ यत्पापंविप्रनिंदायांक
न्यासंदूषणेपिच एवमादीनिपापानिगुरूणिचलघूनिच ६ आर्द्राणि
चाथशुष्कानियानिपापान्यनेकशः तेषांनाशकरंचेदंमहाचान्द्रायणंव्रतम्
यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्गुरुभिर्लघुभिस्तथा ॥ ७ ॥

जन्मयाहै तिनांके संवंधविषे जों पापहै ३ और शूद्रकीजीविकाविषे जों पाप और रसांकेवेचने
विषें और पुरोहितकों और परस्त्रीके संगमकरणे वाले पुरुषके साथ संवंधविषें जो पापहै ४ और
संपूर्णांकी संगातिविषें अर्थात्सर्वंगीवणनविषें और धेनु क्या सूईहोई गौकेवेचणेविषे और धो
वणके संगम विषें और भर्त्ताकी निंदाविषें ५ और ब्राह्मणकी निंदाविषें और कन्याके दूषणाविषे
जो पापहै इसतें आदलेके जो वडे और छोटेपापहैं ॥ ६ ॥ और इच्छा कर्के और जों
नहि इच्छा कर्के कीते होए अनेक पाप हैं तिनांसंपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला महाचंद्रायण व्रत
कहाहै जिसकेकरणेकर्के वडयांछोटयांपापांते रहित होताहै ॥ ७ ॥

तिसके प्रकारको गौतम ऋषि कहताहै शुक्लेति शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषें शुद्धजलकर्के स्नानको श्रौर पूर्वकी न्यांई संध्या वंदन श्रादि नियमको कर्के चौथे पहर विषें ॥ १ ॥ विष्णुकी पूजाको करता होया पहले संकल्प करे श्रौर पूर्वकी न्यांई मंत्रका उच्चारण करे श्रौर उपबास कर्के शयनको करे ॥ २ ॥ तिसते उपरंत प्रातःकालविषे उठकर स्नान करे श्रौर जैसे विधि है तैसे श्राचमन करे श्रौर पूर्वकी न्यांई नित्यकर्मोको समाप्तकरे ॥ ३ ॥ श्रौर चौथे पहरविषें देवताकी पूजाकरे तिसतें उपरंत सो पूर्वकीन्यांई इंद्रियांको रोकके शयनकरे ४ श्रैसें दिनदिन विषें करणें योग्यहै श्रौर जितना कालव्रतविषें स्थितहै श्रौर पक्षके श्रंत विषें पूर्णमासीके दिन पूर्वकी न्याई नित्यकर्मोको कर्के समाहित क्या निश्चल मत होयाहोया दशग्रा

तत्प्रकारमाह गौतमः। शुक्लप्रतिपदिस्नात्वापूर्ववच्छुद्धतोयतः पूर्ववन्निय मंकृत्वाचतुर्थेकालश्रागते ॥ १ विष्णुपूजापरोभूत्वापूर्वंसंकल्पमाचरेत् पूर्ववन्मंत्रमुच्चार्य्यनिराहारःस्वपेत्तदा ॥ २ ॥ ततःप्रभातउत्थायस्नात्वाच म्ययथाविधि पूर्ववन्नित्यकर्म्माणिसमाप्यविधिपूर्वकम् ॥ ३ ॥ चतुर्थ कालश्रायातेपूर्ववद्देवमर्चयेत् ततोप्येषयथापूर्वंपूर्ववन्नियतःस्वपेत् ॥ ४ एवंप्रतिदिनंकार्य्यंयावत्तत्रप्रवर्त्तते तत्रापिपूर्ववत्कृत्वानित्यकर्म्माणिसर्वशः ५ तत्रैवभक्षयेत्पश्चाद्दशग्रासान्समाहितः तत्रापिहरिसांनिध्येस्वपेद्ग न्धादिवर्जितः ६ उपोषणंप्रकर्त्तव्यममायावत्प्रवर्त्तते तत्रापिभक्षयेत् पिंडान् पूर्ववत्पूर्वसंख्यया ७ शुद्धप्रतिपदिस्नात्वागोर्दद्याव्रतपूर्त्तये ॥ शुद्धप्रतिपदिशुक्लप्रतिपदि ॥

स भक्षणकरे तिस दिनविषेंभी विष्णुके समीप शयनकरे पुष्पादि सुगंधिको त्यागकर्के ५ श्रौर श्रमावास्या तक उपवासव्रतकरे तिसश्रमावास्याके दिन पूर्वकीन्यांई संख्याकर्के दशग्रासभक्षण करे ६ श्रौर व्रतके श्रंतविषें शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषें स्नान कर्के गोदानकरे पूर्ण फलकी प्राप्ति वास्ते ७ एहव्रत शुक्ल पक्षकी प्रतिपदाते लेके शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा तक कहाहै इसमे एह श्रभिप्रायहै कि पहली श्रमावास्याके दिन दशग्रास खाकर्के शुक्ल प्रतिपदाके दिन व्रतका' श्रारंभकरे

पीछे पंचगव्यका पान करे तां महा चांद्रायण व्रत होताहै ॥८॥ एह व्रत संपूर्ण लोकां करके अशक्य क्या नहि होसकता क्योंकि अन्नके त्याग विषे वहुत क्लेशहै ॥ सो कहतेहां कृतइति सत्ययुग विषें प्राण चर्म विषे स्थितथे और त्रेतायुगविषे अस्थियां विषे स्थित और द्वापर विषे रक्त विषें स्थित रहे और कलियुग विषे अन्नविषे स्थित हैं ॥ ९ ॥ चांद्रायण व्रतकी महि मामैंनेहै अनघ क्या निष्पाप कहीहै जिसके करणें करके महापातकतें और उपपातकांतें रहित होताहै १०॥ इसते अनंतर पंचप्रकारके चांद्रायणांके वदलेनूं देवल ऋषि कहताहै अथेति इसतें अनंतर हेरा जेंद्र चांद्रायण व्रतका जो प्रत्याम्नाय महापापांके नाश करणे वाला और विष्णुलोक केदेणे

पंचगव्यंपिबेत्पश्चान्महाचान्द्रायणंभवेत् ॥८॥अशक्यंसर्वलोकानामन्नत्या गोमहत्तरः ॥ कृतेचर्माश्रिताःप्राणास्त्रेतायामस्थिसंश्रयाः द्वापरेरक्तमाश्रि त्यकलावन्नगताः सदा॥९॥महाचान्द्रस्यमहिमा कथितोऽयंमयाऽनघ यत्कृ त्वामुच्यतेपापैर्महद्भिरुपपातकैः १०॥ अथ पंचविधानां चान्द्रायणानांप्र त्याम्नायमाहदेवलः ॥ अथवक्ष्यामिराजेन्द्रमहापातकनाशनम् ॥ प्रत्या म्नायंहिचान्द्रस्यविष्णुलोकप्रदायकम् ॥ १ ॥ अशक्तत्वा दुर्बलत्वादायु र्नाशस्यहेतुतः भक्तिश्रद्धाविहीनत्वादालस्यान्नास्तिकादपि॥ २ ॥ चान्द्रा यणेप्यशक्तश्चेत्प्रत्याम्नायंकुरुष्वतत् शुक्लप्रतिपदिस्नात्वा नित्यकर्मसमा प्यच ॥ ३ ॥

वाला है ॥१॥असामर्थ्यंते और वलते रहित होणेतें और जेकर हठकर्के करे तो आयु नाश होताहै इसहेतुतें और भक्तिश्रद्धाते रहित होणे तें और आलसते और नास्तिकतातें नास्तिक शब्द इ सजगा अधर्मपर समझणा इसते और शक्ति करके मनकाउत्साह १ बल करके देहपुष्टि २ इनके ना होनेते आलस करके इन्द्रिय शैथिल्य ॥ २ ॥ चांद्रायण व्रतके करण विषे असमर्थ होवे तां तिसकेवदलेको करेंसोकहतेहां ॥ शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे स्नान कों करके और नित्यकर्मको समाप्त करे ॥ ३ ॥

समिति पूर्वकीन्यांई संकल्पकोंकर्के कहे मै उत्तम व्रतकों कर्त्ताहै ऐसे विधिपूर्वकपूर्वकी न्यांई संकल्पकोमनकर्के करे ॥४॥ स्वर्णके शृंगां कर्के युक्त गौयां पंजाह ५० सहितवछयांके दुग्धके देणे वालीयां ब्राह्मणांकेतांई देणे योग्यहैं ऐसे शास्त्रकी विधि कर्के चांद्रायण व्रतका वदलाद खायाहै ॥ ५ ॥ अव गौत्तमजीका वाक्यहै चामिति एह ब्राह्मण चांद्रायणव्रतके प्रत्याम्नायनूं करेगंध पुष्यादि कर्के पूजीयांहोइयां और सुवर्ण भूषणां कर्के भूषितकीतियांहोइयां ॥ १ ॥ गौयांयत्न कर्के पंजां ५० ब्राह्मणांके तांई देणें योग्यहैं इस प्रत्याम्नायकर्के हरि साक्षात् प्रसन्न होताहै इस

संकल्पंपूर्ववत्कृत्वा करिष्येव्रतमुत्तमम् इतिसंकल्प्यमनसापूर्ववद्विधिपूर्व्वकम् ॥ ४ ॥ गावोदेयाःप्रयत्नेन पंचाशत्स्वर्णभूषिताः सवत्सावहुक्षीरिण्योविप्रेभ्योजलपूर्वकम् ॥ ५ ॥ अनेनकृतवांश्चान्द्रं शास्त्रमार्गेणदार्शितम् ॥ गौत्तमः । चान्द्रायणस्यविप्रोसौप्रत्याम्नायंसमाचरेत् अर्चितागन्धपुष्पाद्यैर्भूषिताः स्वर्णभूषणैः १ पंचाशद्गाः प्रयत्नेन विप्रेभ्यश्च पृथक् पृथक् प्रत्याम्नायैर्हरिः साक्षात्सतुष्टोभून्नसंशयः ॥ २ ॥ अशक्तश्चान्द्रविषयेप्रत्याम्नायंतदाचरेत् एतेनशुद्धिमाप्नोतिचान्द्रायणफलंलभेत् ॥ ३ पिपीलिकायवमध्यचान्द्रायणविषयेऽतिधनिनः ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ अष्टौ चान्द्रायणेदेयाः प्रत्याम्नायविधौसदेति ॥ धेनवइतिशेषः ॥ अल्पधनविषयकमिदम् ॥ [निर्धनविषयेतूक्तंप्राक् ॥

विषे संशय नहि । २ । जेकर चांद्रायणव्रतकरणे विषे असमर्थ होवे तां प्रत्याम्नाय कों करेऐसे करणेकर्के शुद्धिको प्राप्तहोताहै और चांद्रायणके फलको प्राप्त होताहै ३ । और पिपीलिकामध्य और यवमध्य चांद्रायणके विषे अति धनवाले को हए प्रत्याम्नाय कहाहै ॥ अव चतुर्विंशति मत विषे कहतेहां चांद्रायण के प्रत्याम्नाय विषेअठ ८ प्रसूत होइयां होयां गौयां देणेयोग्यहैं परंतु एहप्रत्याम्नाय जिसके पास धन थोडाहै तिसके योग्यहै और जिसके पास कुछभी धननहि तिसके अर्थ प्रत्याम्नाय पहिले प्राजापत्य व्रत अ्यरूप कियाहै सो १ जानणा ॥

यतिचांद्रायण व्रत विषे वृहद्विष्णुका वाक्यहै चामिति जो पुरुष यतिचांद्रायणव्रतकों अशक्ति आदि हेतुतेंनहि करै सो तिसका वदला चार प्राजापत्यकृच्छ्रकरे १ ऋपि चांद्रायण विषयविषे भी वृहद्विष्णु काहि वाक्यहै चामिति चांद्रायण और पराककर्के प्रायश्चित्तके करणविषे असमर्थ होवे तो अपणी शुद्धि वास्ते पच प्राजापत्य व्रत करे १ अब शिशु चांद्रायण के अर्थमदनरत्नग्रंथविषे संगृहीत स्मृतिविषे कहाहै ब्रेति प्राजापत्य विषे एक गोंदान करे और अतिकृच्छ्र विषे दोगौयां दान करे और चांद्रायण और पराक विषे त्रय गौयांदानकरे १ ※ इसतें अनंतर व्रतके अंग भूतयम और नियम

यतिचान्द्रयणविषये वृहद्विष्णुः ॥ चान्द्रायणमकुर्व्वाणाःकुर्युःकृच्छ्रचतुष्टय मिति। ऋषिचान्द्रायणविषयेसएवाह चान्द्रायणपराकाभ्यांनिष्कृतियोनश क्नुयात् सकरोत्यात्मशुद्ध्यर्थंप्राजापत्यस्यपंचकमिति १ शिशुचान्द्रायणविष येमदनरत्नेस्मृतौ ॥ प्राजापत्येतुगामेकामतिकृच्छ्रेद्वयंस्मृतम् चान्द्रायणेप राकेचतिस्रोगादक्षिणास्तथेति १ ※ अथव्रतांगभूतव्रतायमानियमाश्चयाज्ञ वल्क्ये । ब्रह्मचर्य्यंदयाक्षान्तिर्दानंसत्यमकल्कता अहिंसास्तेयमाधुर्य्येदम श्चेतियमाःस्मृताः ॥ १ ॥ स्नानंमौनोपवासेज्यास्वाध्यायोपस्थनिग्रहाः वि धिवद्गुरुशुश्रूषाशौचक्रोधाप्रमादता ॥ २ ॥ इतिदशनियमाः ॥ १० ॥

याज्ञवल्क्यविषे कहेहैं ब्रेति ब्रह्मचर्य और दया और क्षांति क्या सहिष्णुता और अभयदान और वाणीकर्के सत्यकहना और क्रोधका त्यागणा और हिंसातें रहितहोणा और चौरीकात्याग और माधुर्य्य क्या सौम्यवाक्य और विषयातें इंद्रियांकों रोकणा एह १० यमकहेहैं १ अवनियमक तेहां स्नानमिति स्नान और मोनता क्या वृथावाक्यतेंनिवृत्ति और मानकर्के अन्नकों भक्षणकरणा और यज्ञ और वेद पाठ करणा और जितेंद्रियहोणा और गुरांकी सेवा और शौचता और क्रोधका त्याग और प्रमादतें रहित होणा क्या सत्कर्म्म विषे नाहि भुलणा एह दश १० नियम कहेहैं २

इसमें ब्रह्मचर्य्यहै संपूर्ण इंद्रियांकारोकणा उपस्थनिग्रह क्या लिंगमात्रका रोकणा इतनाभेदहै अब इसीमें मनुजीका वाक्यहै अहिंसेति किसेजीवकी हिंसा न करे और सत्यकहे और क्रोधकों त्यागे और कुटिलताकों त्यागे त्रय वार दिनविषे और त्रय वार रात्रिविषे सहित वस्त्रांके स्नान करे १ ॥ स्त्रीति स्त्री और शूद्र और पतित इनांके साथसंभाषण कदीभी न करे और स्थान आसनकों ना त्यागे असमर्थ होवे तां और जेकर समर्थ होवे तां भिक्षाटनादिके लिये दूरभी जावे और पृथ्वी विषे शयन करे ॥ २ ॥ व्रती पुरुष ब्रह्मचर्यकों धारके गुरु और देवता और ब्राह्मणांका पूजन करे और गायत्रीका नित्य जप करे और पवित्र ऋचा जो सहस्रशीर्षादि आशुशिशानइत्या

अत्र ब्रह्मचर्य्यंसर्वेन्द्रियनिग्रहः उपस्थनिग्रहोलिंगमात्रनिरोधइतिभेदः॥ मनुः ॥ अहिंसासत्यमक्रोधमार्जवंचसमाचरेत् त्रिरह्निस्त्रिर्निशायांचस वासाजलमावसेत् १ स्त्रीशूद्रपतितांश्चैवनाभिभाषेतकर्हिचित् स्थानास नाभ्यांविहरेदशक्तोधःशयीतवा २ ब्रह्मचारीव्रतीचस्याद्गुरुदेवद्विजार्चकः सावित्रींचजपेन्नित्यंपवित्राणिचशक्तितः ३ सर्वेष्वेवव्रतेष्वेवंप्रायश्चित्तार्थ मादृतइति ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्र भुवररणवीरसिंहाज्ञप्तश्रीसारस्वतपण्डितोपनामदेवदत्तसुतपण्डितगंगा राम संगृहीते धर्म्मशास्त्रमहानिबन्धे प्रायश्चित्तभागे व्रतप्रकरणंपंचमम्

॥ ५ ॥

दि तिनांकों पढे जैसे सामर्थ्याहै ॥ ३ ॥ संपूर्ण व्रतां विषे ऐसे प्रायश्चित्तके वास्ते आदर करके कहाहै ॥ इसप्रकार श्रीकर्केयुक्त जो महाराजयांके अधिराज और जंम्बू काश्मीर आदि अनेक देशके स्वामी प्रभुवर रणवीरसिंह जीतिनाककें आज्ञप्त पंडित गंगाराम ककें संगृहीत जो धर्म्मशास्त्रका महानिबंध तिसके प्रायश्चित्त भागविषे व्रत प्रकरण पंचम समाप्तहोया ॥ ५ ॥ एह व्रतप्रकरण सभ तहाँके प्रायश्चित्तके उपयोगी व्रतांकके संपूर्णहै और इसमे अपने अपणे विषयमै जोजो पाप दूरहोण वालेहै सोलिखेहैं और प्रकरणांतरमै भी इसका उपयोगहै ॥ व्रत विधान मनु आदका जानो धर्म्मनिधान सर्वपाप नसजातहै जो इसपढे सुजान ॥ १ ॥

स्वतइति इसकाअर्थ पीछेसें जानलेणा अथेति विशेष प्रायश्चित्त कथनतें उपरंत अब छेवें प्रकरणमें संपूर्ण पापोंका सांझा प्रायश्चित्त कथन करते हैं तिसके विषे पहलें मनुका वाक्य है यतात्मनइति रोक लिआ है चित्त जिसने और सावधान है तिसकों वारां १२ दिनका उपवास करणा लिखा है एहि पराक नाम करके कृच्छ्र संपूर्ण पापां के नाश करणे वाला है ॥ १ ॥ विगतेति इसमें पूर्व श्लोककाहि अर्थ है सकृदिति इसका एह तात्पर्य है कि जेकर बहुत पाप होवे तां एह पराक कृच्छ्र एक वार संपूर्ण करणा जेकर पाप थोडा होवे तां एक पाद न्यून नौं९दिन करणा जेकर इसतें भी पाप न्यून होवे तां अर्द्धक्याछें६दिनकरणा जेकर इसतेंभी पाप न्यून होवे तां एक पाद तीन३ दिन करणा १ ॥ अब वेद पाठ पंच यज्ञ इनांका फल कथन करते हैं वेदाभ्यास इति दिन दिन प्रति वेद पाठ करणा १ शक्तिकरके पाठ होम अभ्यागतका पूजन तर्पण वैश्वदेव बलि एह पंच महा

ॐनमः स्वतोमिस्वातस्त्वामित्यादि अथसर्वपापसाधारणप्रायश्चित्तम् तत्र मनुः यतात्मनोऽप्रमत्तस्यद्वादशाहमभोजनम् पराकोनामकृच्छ्रोयंसर्व पापापनोदनः ॥ १ ॥ विगतानवधानस्यसंयतेंद्रियस्य द्वादशाहमभोजन मेव पराकाख्यःकृच्छ्रः सकृदावृत्तितारतम्येनगुरुलघुसमफलपापनाशकः ॥ तथा वेदाभ्यासोऽन्वहंशक्त्यामहायज्ञक्रियाक्षमा नाशयन्त्याशुपापा निमहापातकजान्यपि ॥ १ ॥ क्षमाअपराधसहिष्णुता साचाकस्मिकसद् वृत्तापराधे नतु चौराद्युपद्रवीये यथैधांस्तेजसावन्हिःप्राप्तान्निर्दहतिक्षणात् तथाज्ञानकृतंपापंविप्रोदहतिवेदवित् ॥ १ ॥ अत्र वन्हिदृष्टान्तेन ज्ञानकृ तमज्ञानकृतं च पापंवेदविद्विप्रोदहतीत्यर्थः

॥ १ ॥ अब यज्ञ २ कीते होए अर क्षमा ३ एभी ब्रह्महत्यादि महापापका नाश करदेते हैं क्षमा पदका अर्थ करतेहैं क्षमेति परकरकें कीते होए अपराधका सहारणा इसका नाम क्षमाहै अर सो क्षमा एक वार स्वाभाविक महात्मा करके होआ जो अपराधहै तिसके विषे युक्तहै अर चौरादिकां करके कीताहोआ जो अपराधहै तिस विषयमे क्षमा युक्त नहि अब वेद पाठका विशेष फल कथन करतेहैं यथेति जिस प्रकार प्राप्त होआं काष्टांनूं तेज करकें क्षणमात्रतें अग्नि दग्ध कर देताहै तिस प्रकार वेदके जानने वाला ब्राह्मण अज्ञान करके कीते होए पापकों दग्ध करदेताहै ॥ १ ॥ इसमे वन्हि दृष्टांत करके अग्नि क्या लैणा जिस प्रकार अग्नि स्वाभाविक लग पवे तां भी दग्ध कर देताहै अर जेकर कोई लादेवे तांभी दग्ध कर देताहै तिस प्रकार ज्ञान करके और अज्ञान करकें कीते होए पापकों वेदके जानने वाला ब्राह्मण दग्ध कर देता है ॥१

अब प्राणायाम करके पापकी शुद्धि कथन करतेहैं सव्याहृतीति ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यं तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् ॐआपोज्योतीरसोमृतंब्रह्मभूर्भुवःस्वरों इह जो सप्त व्याहृतिआं अर गायत्री अर ॐकार इनां के सहित जो सोलां १६ प्राणायाम हैं सो दिन दिन प्रति मास पर्यंत कीते होए गर्भके हत करण वालेनूं भी पवित्र करदेतेहैं ।२। इसश्लोकमें व्याहृति अर प्रणव तिनों दोनों करके गायत्री अर शिरस् एभि जानलैने क्योंकि गायत्री शिरसा सार्द्ध इत्यादि जो आगे संवर्त्तका वाक्यहै तिसमें अन्वहं एह जो पूर्व पद कथन कीता है तिस करके भी मास पर्यंत लैणा ॥ अब संवर्त्त ऋषिका वाक्य कथन करतेहैं अनादिष्टेष्विति अज्ञान करके कीते होए जो पाप हैं तिनके विषे प्रायश्चित्त कथन करते हैं दानों कर

सव्याहृतिप्रणवकाःप्राणायामास्तुषोडश अपिभ्रूणहनंमासात्पुनंत्यहरहःकृताः ॥ २ ॥ अत्रव्याहृतिप्रणवौगायत्रीशिरसोरुपलक्षकौ गायत्रींशिरसासार्द्धमित्यादिवक्ष्यमाणसंवर्त्तवाक्यात् अन्वहमित्यत्रापिकालाकांक्षायांमासादित्यन्वेति॥ संवर्त्तः॥अनादिष्टेषुपापेषुप्रायश्चित्तमथोच्यते दानैर्होमैर्जपैर्नित्यंप्राणायामैर्द्विजोत्तमः पातकेभ्यःप्रमुच्येतवेदाभ्यासान्नसंशयः॥ १ ॥ सुवर्णदानंगोदानंभूमिदानंतथैवच नाशयंत्याशुपापानिह्यन्यजन्मकृतान्यपि।२।तिलधेनुंचयोदद्यात्संयतायद्विजन्मने ब्रह्महत्यादिभिःपापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ ३ ॥ संयतायजितात्मने द्विजन्मनेविप्राय

के १ अर होमों करके २ अर जपों करके ३ अर नित्य प्राणायाम करणे करके ४ अर वेद पाठ करणे करके ५ श्रेष्ठ ब्राह्मण पापांतें रहित होजाताहै इसमें संदेह नहिहै ॥ १ ॥ अब सुवर्णादि दान करके पाप की शुद्धि कथन करतेहैं सुवर्णेति स्वर्णदान १ अर गोदान २ अर पृथ्वी दान ३ एह पूर्व जन्म के विषे कीते होए जो पापहैं तिनांका भी नाश करदेतेहैं ॥ २ ॥ अब तिल दान करके पापांकी शुद्धि कथन करतेहैं तिलधेनुमिति तिलांकी गौकों रचकर जो जितेंद्रिय ब्राह्मणके तांई देताहै सो ब्रह्महत्यादि पापांतें रहित हो जाता है इसमें संदेह नहिहै ३ ॥ तिल धेनु का प्रकार लिखतेहैं पद्मपुराणमें क्या सोलां १६ आढककी धेनु बनानी अर चार ४ आढक का वछा अर इक्षुओंके पाद अर पुष्पोंके दांत अर नासां चंदनकीआं अर जिन्हा गुडकी अर आसन काले हरिणकेचर्मका अर वस्त्र रत्न एनां कर्केयुक्त इसप्रकारकी धेनु बनावै

अब पौर्णमासी के विषे तिलदानका विशेष फल कथन करतेहैं ॥ मासइति मास मासके विषे पौर्णमासीके दिन उपवास कों रखकर ब्राह्मणके तांई तिलांकों देकरके पापांते रहित होजाताहै ॥ ४ ॥ अब कार्त्तिक मासकी पौर्णमासीका अधिक फल कथन करते हैं ॥ उप वासीति उपवासकों रखकर कार्त्तिक मासकी पौर्णमासीके दिन स्वर्ण १ अर वस्त्र २ अर अन्न ३ इनांके दान करके संपूर्ण पापांते रहितहोताहै ॥ ५ ॥ अब दानके विषे श्रेष्ठ तिथिआंकों कथन करते हैं ॥ अमावास्येति अमावास्या १ अर द्वादशी २ अर विशेष करके सूर्य संक्रांति ३ एह तिथीआं श्रेष्ठ कथन कीतिआं हैं अर तिस प्रकार आदित्यवार भी

मासेमासेचसंप्राप्तेपौर्णमास्यामुपोषितः ॥ ब्राह्मणेभ्यस्तिलान्दत्त्वासर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ४ ॥ उपवासीनरोभूत्वापौर्णमास्यांचकार्त्तिके हिरण्यंवस्त्रमन्नंवादत्त्वामुच्येतदुष्कृतैः ॥ ५ ॥ अमावास्याद्वादशीचसंक्रान्तिश्चविशेषतः एताःप्रशस्तास्तिथयोभानुवारस्तथैवच ॥ ६ ॥ तत्रस्नानंजपोहोमोब्राह्मणानांचभोजनं उपवासस्तथादानमेकैकंपावयेन्नरम् ॥ ७ ॥ स्नातःशुचिर्धौतवासाःशुद्धात्माविजितेन्द्रियः सात्त्विकंभावमाश्रित्यदानंदद्याद्विचक्षणः ॥ ८ ॥ सप्तव्याहृतिभिर्होमोद्विजैःकार्योहितात्मभिः उपपातकशुद्ध्यर्थंसहस्रपरिसंख्यया ॥ ९ ॥

श्रेष्ठहै ॥ ६ ॥ इनांके विषे स्नान १ अर जप २ अर होम ३ अर ब्राह्मणांको भोजन खुआणा ४ अर उपवास ५ अर दान ६ इनांके विचों एकभी कीताहोंआ मनुष्यकों पवित्र करदेताहै ७ अब दानका प्रकार कथन करते हैं ॥ स्नात इति कीताहै स्नान जिसने अर पवित्र है अर धोतेहैं वस्त्र जिसने अर शुद्ध है अंतः करण जिसका अर जीतेहैं इंद्रिय जिसने सो बुद्धिमान् सतो गुणकेआश्रय होकर दानको देवे ॥ ८ ॥ अबहोमका फल कहतेहैं सप्तेति हितकी इच्छा वाले जो ब्राह्मण और वैश्य तिनांने पापकी शुद्धिके वास्ते ऊँभूः ऊँभुवः इत्यादि सप्त व्याहृतिआं करके हजार १००० संख्या करके होम करणा चाहिए अर्थात् हजार आहुति करणी चाहिए ॥ ९ ॥

अब ब्राह्मणांको भोजन खुलाणेका फल कथन करतेहैं ॥ महापातकइति ब्रह्म हत्यादि पाप करके संयुक्त भी ब्राह्मण क्षत्रि वा वैश्य होवे जीवन पर्यंत मास मासके विषे अथवा वर्ष वर्षके विषे लक्ष १००००० ब्राह्मणां को भोजन खुलाकर ब्रह्महत्यादि जो संपूर्ण पाप हैं तिनांतें रहित होजाताहै अर तिसप्रकार गायत्रीके जपकरणे वाला भी ब्रह्महत्यादि संपूर्ण पापांतें रहित होजाताहै ॥ १० ॥ अब गायत्रीके जपका विशेष फलकहतेहैं अभ्यसेदिति वनको जाकर नदीके कनारे उपर संपूर्ण पापांकी शुद्धिके वास्ते अतिशय कर्के पवित्र और वेदांके उत्पन्न करणेवाली जो गायत्रीहै तिसनूं जपे ॥ ११ ॥ अब गायत्रीके जपका प्रकार कथन करतेहैं ॥ स्नात्वेति ब्राह्मण क्षत्रि वा वैश्य नदीके विषें विधिसें स्नानको करके प्राणात्माको पवित्रकरे अर्थात् तीन ३ प्राणायाम करे फेर तीन ३ प्राणायाम करके शुद्ध

महापातकसंयुक्तोलक्षभोजंसदाद्विजः मुच्यतेसर्वपापेभ्योगायत्र्याश्चैव जापवान् ॥ १० ॥ अभ्यसेच्चमहापुण्यांगायत्रींवेदमातरं ॥ गत्वारण्यंनदीतीरेसर्वपापविशुद्धये ॥ ११ ॥ स्नात्वाचविधिवत्तत्रप्राणात्मानमपावयत् प्राणायामैस्त्रिभिःपूतोगायत्रींतुजपेद्द्विजः १२ अक्लिन्नवासाःस्थलगःशुचौ देशेसमाहितः पवित्रपाणिराचांतोगायत्र्याजपमारभेत् १३ ऐहिकामुष्मिकंपापंपापंसर्वंविशेषतः पंचरात्रेणगायत्रींजपमानोऽव्यपोहति ऐहिकामुष्मिकं ऐहिकफलकमामुष्मिकफलक मित्यर्थः ॥ १४ ॥ गायत्र्यास्तुपरंनास्तिशोधनंपापकर्मणाम् महाव्याहृतिसंयुक्तांप्राणायामेनसंयुताम् ॥ १५ ॥

होआ होआ गायत्रीकों जपे ॥ १२ ॥ अक्लिन्नवासा इति सुके हैं वस्त्र जिसके अर्थात् और शुद्ध वस्त्रांको लयकर नदीदे कनारेको प्राप्तहोआ होआ शुद्ध देशविषें स्थित होकर रोकलयेहैं इंद्रियजिसनें अर पवित्रंहस्तवाला और कीताहै आचमन जिसने ऐसाहोकर गायत्रीके जपका आरंभ करे ॥ १३ ॥ ऐहिकेति इसलोक विषें फल देणवाले जो पापहैं अरपरलोक विषें फल देणवाले जोसंपूर्ण पापहैं तिनांकोंभी गायत्रीके जपकरण वाला पंच ५ रात्रि करके नष्टकर देताहै १४ ॥ अब गायत्रीकी संपूर्णतें श्रेष्ठताकथनकरतेहैं गायत्र्याइति गायत्रीतें परे औरको ई दूसरा पापकर्मके नाशकरणे वाला नहि अर्थात् गायत्रीहि संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाली है। और ओंभूः ओंभुवः इत्यादि सप्त महाव्याहृतिआं कर्के युक्त और प्राणायाम करके जो संयुक्तहै ऐसी गायत्रीकों जपने वाला पुरुष संपूर्ण पापांतें रहित होजाता है ॥ १५ ॥

अब और प्रकार कथन करतेहैं ब्रह्मचारीति ॥ ब्रह्म आचार वाला जोहै अर्थात् अष्ट प्रकार के मैथुनतें रहितहै अर थोडें भोजन के खाने वाला अर संपूर्ण जीवोंके हितकी इच्छाकरता है ऐसा पुरुष गायत्री के लक्ष १०००० जप कर्के संपूर्ण पापांतें रहित हो जाताहै ॥ १ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं ॥ अयाज्येति पतितादिकों यज्ञ करवा कर और चंडालादिके अन्न नूं खाकर गायत्रीके अष्ठ हजार ८००० जप कर्के संपूर्ण पापांतें रहित होजाताहै २ अब और प्रकार कथन करतेहैं अहनीति दिन दिन प्रति निश्चय कर्के ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांके मध्यमें श्रेष्ट जो गायत्रीनूं पडताहै अर्थात् जो जप करता है सो पुरुष एक मास करके संपूर्ण पापतें रहित हो जाताहै इसमें दृष्टांत है क्या कि जिस प्रकार सर्प कुंजतें रहित होजाताहै इस दृष्टांत करके क्या लेना कि जिस प्रकार सर्प सुखसें कुंजकों

ब्रह्मचारीमिताहारःसर्वभूतहितेरतः गायत्र्यालक्षजप्येनसर्वपापैःप्रमुच्यते॥१॥ अयाज्ययाजनंकृत्वाभुक्त्वाचान्नंविगर्हितं गायत्र्यष्टसहस्रंतुजाप्यंकृत्वाविमुच्यते ॥ २ ॥ अहन्यहनियोऽधीतेगायत्रींवैद्विजोत्तमः मासेनमुच्यतेपापादुरगः कंचुकाद्यथा ३ ॥ गायत्रींयःसदाविप्रोजपतेनियतःशुचिः सयातिपरमंस्थानंवायुभूतःखमूर्तिमान् ४ ॥ प्रणवेनतुसंयुक्ताव्याहृतीस्सप्तानित्यशः गायत्रींशिरसासार्द्धंमनसात्रिःपठेद्द्विजः निगृह्यचात्मनःप्राणान्प्राणायामोविधीयते ॥ ५ ॥

उतार देताहै तिस प्रकार गायत्री के जप करके सुखसें हि पापतें रहित होजाताहै ॥ ३॥ अब गायत्री के जप कर्के मोक्ष कथन करतेहैं गायत्रीमिति नियम वाला अर शुद्ध जो ब्राह्मण सदा काल गायत्री नूं जपताहै सो वायुस्वरूप होकर आकाशके स्वरूप वाला अर्थात् सर्वव्यापी होआ होआ वैकुंठको प्राप्त होवाहै ॥ ४ ॥ अब प्राणायामका स्वरूप कथन करतेहैं प्रणवेनेति अपणेआं प्राणांनूं रोक कर ओंकारके सहित सप्त व्याहृतिआं नूं और शिरके साथ गायत्री नू मन कर्के तीन ३ वार पडे अर्थात् ओंभूः ओंभुवः ओंस्वः ओंमहः ओंजनः ओंतपः ओंसत्यं तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात् ओंआपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरों इह तीन३ वार मनविषें पडे इसका नाम प्राणायामहै ॥ ५ ॥

अब उसीका प्रकार कथन करतेहैं प्राणायामेति दिन दिन प्रति समाधि लगा कर पुरुष पूरक कुंभक रेचक करके तीन ३ वार प्राणायाम करे ॥ अब प्राणायामका फल कथन करते हैं मानसमिति तीन ३ वार प्राणायामके करणे करके मन करकें कीता जो पाप और वाणी करकें कीता जो पाप और देहकरकें कीता जो पाप एह संपूर्ण पाप नष्ट होजातेहैं ॥ ६ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं ऋग्वेदमिति जो ऋग्वेद नूं और यजुर्वेदकी शाखाकों पडताहै अर सहित रहस्यके सामवेदकों जो पडताहै सो पुरुष संपूर्ण पापांते रहित होजाता है ॥ ७ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं पावमानीमिति पावमानी ऋचानूं अर कौत्ससंज्ञिक मंत्रां कों जप कर और सहस्रशीर्षापुरुष इत्यादि २२ मंत्रां कों जप कर संपूर्ण पापांतें रहित होजाताहै अर पितृभ्यः स्वधा इत्यादि ५० मंत्रां नूं जप कर संपूर्ण पापांतें रहि

प्राणायामत्रयंकुर्यान्नित्यमेवसमाहितः मानसंवाचिकंपापंकायेनैवतुयत्कृतं तत्सर्वंनश्यतेतूर्णंप्राणायामत्रयेकृते॥ ६ ॥ऋग्वेदमभ्यसेद्यस्तुयजुःशाखाम थापिवा सामानिसरहस्यानिसर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ७॥ पावमानींतथाकौ त्संपौरुषंसूक्तमेवच जप्त्वापापैःप्रमुच्येतपित्र्यंचमधुछांदसम् ॥८॥ मंडलं ब्राह्मणंरुद्रंसूतोक्ताश्चबृहत्कथाः वामदेव्यंबृहत्सामजप्त्वापापैःप्रमुच्यते ॥ ९ ॥ चांद्रायणंतुसर्वेषांपापानांपावनंपरं कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिपर मंस्थानमेवचेति ॥ १० ॥

त होताहै अर मधुवाताऋतायतेमधुक्षरंतिसिंधवःमाध्वीर्नःसंत्वोषधीःमधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवंरजःमधुद्यौरस्तुनःपितामधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमानस्तुसूर्य्योमाध्वीर्गावोभवंतुनः मधुमधुमधु इति इस मंत्रनूं भी जप कर संपूर्ण पापां तें रहित होताहै ॥ ८ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं मंडलमिति यदेतन्मण्डलंतपति इत्यादि जो ब्राह्मण मंडलके २२ मंत्र हैं अर ॐनमस्ते रुद्रमन्यवेइत्यादि जों रुद्रसूक्तके ६६ मंत्रहैं अर सूतप्रोक्तकथा अर ब्राह्मण जो है और वामदेव्य संज्ञिक जों मंत्र १ हैं और बृहत्साम संज्ञिक जो मंत्र हैं इनां मंत्रांके जपकरणे करकें भी संपूर्ण पापांतें रहित होजाताहै ॥ ९ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं चांद्रायणमिति संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला जो चांद्रायण व्रतहै तिसके करणे वाला जो पुरुष है सो भी पापांतें रहित होजाताहै अर स्वर्गादि स्थान को प्राप्त होताहै ॥ १० ॥

अवइसीविषय में माधवीय ग्रंथके विषें कथन कीता जो यम ऋषि का वाक्य सों कथन करतेहैं सहस्रेति हजार १०००जप गायत्री का उत्तम कथन कीता हैं अर सउ १०० जप मध्यमहै अर दश १०वार जप न्यून कथन कीताहै अर्थात् ब्रह्महत्यादि पापां के नाश करणे वाली गायत्री कों हजार १०००अर शत १००अरदश१०वार जो जपताहै सोसंपूर्ण पापांते रहित होताहै १ अव और प्रकार कथन करतेहैं विरुजमिति विरुजसंज्ञिक मंत्रां कों दो २ वार जप कर्के तिस दिनमें हि शुद्ध होताहै और वाम देव्य संज्ञिक पूर्व लिखाजो मंत्रहै इसकों भीदो२ वार जप कर्के तिसदिनमें हि शुद्धहोताहै ॥ २ ॥ अव और प्रकार कथन करतेहैं पौरुषमिति और सहस्र शीर्षाकों एक १ वार जपकर संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ अव और प्रकार कथनकरतेहैं वृषभमिति वृषभसंज्ञिक मंत्रांनूं सौ १००वार पड कर तिस दिनमेंहि शुद्ध होजाताहै ॥ ३ ॥

माधवीयेयमः सहस्रपरमांदेवींशतमध्यांदशावराम् गायत्रींसंजपेन्नित्यं महापातकनाशिनीम् ॥ १ ॥ विरुजंद्विगुणंजप्त्वातदह्नैवविशुध्यति वामदेव्यंद्विरावर्त्यतदह्नैवविशुध्यति ॥ २ ॥ पौरुषंसूक्तमावर्त्यमुच्यते सर्वकिल्विषात् वृषभंशतशोजप्त्वातदह्नैवविशुध्यति ॥ ३ ॥ वेदमेकगुणंकृत्वातदह्नैवाविशुध्यति रुद्रैकादशकंजप्त्वातदह्नैवविशुध्यति ४ ॥ आथर्वणाश्चयेकेचिन्मंत्राःकामार्थवर्जिताः तेसर्वेपापहंतारोयाज्ञवल्क्य वचोयथा ॥ ५ ॥ ब्राह्मणानिचकल्पांश्चषडंगानितथैवच आख्यानानि तथान्यानिजप्त्वापापैःप्रमुच्यते ॥ ६ ॥ इतिहासपुराणानिदेवतास्तवनानिच जप्त्वापापैःप्रमुच्यंतेधर्मख्यानैस्तथापरैरिति ॥ ७ ॥

अव और प्रकारकथनकरतेहैं और वेदनूं एक १ वार जप कर तिस दिनमें हिं शुद्धहोजाताहै ॥ अव और प्रकार कथन करतेहैं रुद्रैकादशकमिति रुद्रियके यारां ११ अध्यायां नूं जप कर तिस दिनमें हि शुद्धहो जाताहै ४ ॥ अव और प्रकार कथन करते हैं आथर्वणाइति अथर्वणवेदके जेडे मंत्र निष्काम हैं अर्थात् मारण मोहन स्तंभन इत्यादि कामनातें रहित हैं सो संपूर्ण पापांके नाश करण वालेहैं एह याज्ञवल्क्य ऋषिका वचनसत्यहै । ५ । अव और प्रकार कथन करतेहैं ब्राह्मणानीति ब्राह्मण मंत्र औपनिषदः और शिक्षादि जो वेदके अंगहैं और जो ऋषिओं के वाक्य हैं इनां नूं जप कर संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ ६ ॥ अव और प्रकार कथन करते हैं इतिहासेति महाभारतादि जो इतिहास हैं और भागवतादि जो पुराणहैं और जो देवताके स्तोत्रहैं और मनुस्मृत्यादि जो हैं इह्नां के पाठ करणें कर्के भी संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ ७ ॥

इसी विषयमें वौधायन जीका वाक्यहै विधिनेति शास्त्र कर्के देखी जो विधि तिस विधि क र्के दिन दिन प्रति मासपर्यंत प्राणायाम नूं करे लिंग कर्के कीता जो पाप और चरणों कर्के और वाहुं आं कर्के और मन कर्के और वाणी कर्के और कर्णों कर्के और त्वचा कर्के और नासां कर्के और नेत्रों कर्के कीता जो पाप एह संपूर्ण पाप प्राणायाम के करणें कर्के शीघ्रहि नष्ट हो जातेहैं ॥ १ ॥ चतुर्बिंशतिका वाक्यहै मृगारेष्टिरिति मृगारेष्टि और पवित्रेष्टि और त्रिहवि और पावमानी एह संपूर्ण इष्टिआं वैश्वानर इष्टि कर्के युक्त होइयां होइयां पापांके नाश क

बौधायनः ॥ विधिनाशास्त्रदृष्टेनप्राणायामान्समाचरेत् यदुपस्थकृतंपापं पद्भ्यांवायत्कृतंभवेत् ॥ वाहुभ्यांमनसावाचाश्रोत्रत्वग्घ्राणचक्षुषेति ॥ १ ॥ प्राणायामाःमासपर्यन्तंप्रातिदिनम् ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ मृगारेष्टिःपवित्रेष्टिस्त्रिर्हविःपावमान्यपि इष्टयःपापनाशिन्योवैश्वानर्यासमन्विताः १ कौर्मे ॥ जपस्तपस्तर्थिसेवादेवब्राह्मणपूजनम् ग्रहणादिषुकालेषुमहापातकशोधनम् ॥ १ ॥ पुण्यक्षेत्राभिगमनंसर्वपापप्रणाशनम् देवताभ्यर्चनंपुंसामशेषाघविनाशनम् ॥ २ ॥ अमावास्यांतिथिंप्राप्यमासमाराधयेद्भवम् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ३ ॥

रणे वालीआं हैं ॥१॥ कूर्म पुराणमें भी लिखयाहै जपइति जप और तप और तीर्थ सेवन और देवताका पूजन और ब्राह्मणोंका पूजन एह संपूर्ण ग्रहणादि काल विषे कीतेहोए ब्रह्महत्यादि पापों के नाश करणे वालें हैं १ और पवित्र स्थान का सेवनभी संपूर्ण पापांका नाश कर देताहै और देवताका जो पूजनहै सो पुरुषां के संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला है ॥ २ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं अमेति अमावास्या तिथितें लेकर एक मास पर्यंत शिवजी का पूजन करे पीछे ब्राह्मणा नूं भोजन देकर संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ ३ ॥

अब और प्रकार कथन करतेहैं कृष्णेति कृष्णपक्षकी अष्टमीके विषे तिसप्रकार कृष्णपक्षकी चतुर्दशी के विषे शिवजीकों पूजकर्के और वहुतिआं ब्राह्मणानूं पूज कर्के संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ ४ ॥ ब्राह्मणान् इसस्थानमें सुज्ञान् एभी पाठ होताहै ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं त्रयोदश्यामिति तिसप्रकार त्रयोदशीकेदिन रात्रिके पहले पहरके विषे सहित भेटादे शिवजीनूं पूजकर्के संपूर्ण पापांते रहित होताहै ॥ ५ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं एकादश्यामिति शुक्लपक्षकी एकादशीके विषे उपवास व्रत रक्खकर द्वादशीकेदिन विष्णुकों पूज कर्के संपूर्ण पापांतें रहितहोताहै । ६ । अब और प्रकार कथनकरतेहैं उपोषितइति कृष्णपक्षकी

कृष्णाष्टम्यांमहादेवंतथाकृष्णचतुर्दशीं संपूज्यब्राह्मणान्सर्वान्सर्वपापैः प्रमुच्यते ४ ब्राह्मणान्सुज्ञानितिपाठः सर्वान्वहूनित्यर्थोवा ॥ त्रयोदश्यांतथारात्रौसोपहारंत्रिलोचनं दृष्ट्वेशंप्रथमेयामेमुच्यतेसर्वपातकैः ५ एकादश्यां निराहारः समभ्यर्च्यजनार्दनम् द्वादश्यांशुक्लपक्षस्यसर्वपापैःप्रमुच्यते ६ उपोषितश्चतुर्दश्यांकृष्णपक्षेसमाहितः यमायधर्मराजायमृत्यवेचांतकाय च ७ वैवस्वतायकालायसर्वभूतक्षयायच प्रत्येकंतिलसंयुक्तान्दद्यात्सप्तोदकांजलीन् ८ स्नात्वानद्यांतुपूर्वाह्णेमुच्यतेसर्वपातकैः॥ तत्रैव नान्यत्पश्यामिजंतूनांमुक्त्वावाराणसींपुरीं सर्वपापप्रशमनंप्रायश्चित्तंकलौयुगे ॥ १ ॥

चतुर्दशीके दिन उपवास व्रत रक्षकर दिनके प्रथमपहरमें नदीके विषे स्नान कर्के और इंद्रियांकों रोककर्के यम धर्मराज मृत्यु अंतक वैवस्वत काल सर्वभूतक्षय एहजो धर्मराजके सप्तनामहैं इनांसत्तांकेतांईं भिन्न भिन्न तिलांकर्के संयुक्त सप्त जलकीअंजलियांदेवें तद संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ८ कूर्मपुराणमेंहि किसे ऋषिका किसेके प्रति वाक्य है नान्यदिति काशीपुरीकों साग कर्के कलियुगमें पुरुषोंके संपूर्ण पापांके नाश करणे वाले और प्रायश्चित्तनूं नहि देखताईं अर्थात् कलियुगमें संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाली काशीहै ॥ १ ॥

यमजीका वाक्यहै जप्येदिति इस वामदेवकी वामीय ऋचानूंपडे औौर पावमानीऋचानूं पड कर्के औौर कुंताढ्य ऋचानूं पड कर्के औौर वालखिल्यजो ऋचा हैं तिनानूं पड कर्के औौर निवृत्प्रैषा ऋचानूं पड कर्के औौर वृषाकपिनूं पड कर्के औौर होता यक्षत इत्यादि जो ऋचा हैं तिनानूं पड कर्के औौर नमस्तेरुद्रमन्यवे इत्यादि जो ऋचा हैं तिनांनूं एकवार जप कर्कें संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ १ ॥ मनुजीकाभी वाक्यहै एनसामिति वहुत औौर थोडे जो पाप हैं तिनके नाशकी इच्छावाला अवतेहेलो वरुण नमोभिरित्यादि जो अवेत्यृक् ऋचाहै इसनूं औौर यत्किंचेदमित्यादि ऋचानूं एक वर्ष जपे औौर जपके मध्यमे होर कार्य्य न करे

यमः ॥ जप्येद्वाप्यस्यवामीयंपावमानीरथापिवा कुंताढ्यंवालखिल्यांश्चनिवृत्प्रैषांवृषाकपिम् होतॄन्रुद्रान्सकृज्जप्त्वामुच्यतेसर्वपातकैः १ मनुः। एनसांस्थूलसूक्ष्माणांचिकीर्षन्नपनोदनं अवेत्यृचंजपेदब्दंयत्किंचेदमितीतिच १ अवेत्यृक् अवतेहेलोवरुणनमोभिरित्यादिका। जपस्त्वर्थांतराविरुद्धेकाले॥ प्रायश्चित्तमयूखे हिरण्यदानंगोदानंभूमिदानंतथैवच नाशयंत्याशुपापानिमहापातकजान्यपि १ गौत्तमः ॥ संवत्सरःषण्मासाश्चत्वारोमासास्त्रयोद्वावेकश्चतुर्विंशत्यहोद्वादशाहःषडहस्त्र्यहोऽहोरात्रइतिकालाः एतान्यनादेशेविकल्पेनक्रियेरन् एतानिपूर्वोक्तकालपरिच्छिन्नानिगायत्र्याद्यनुष्ठानानि एनसिगुरुणिगुरूणिलघुनिलघूनिकृच्छ्रचांद्रायणादीनि ॥

॥ १ ॥ प्रायश्चित्तमयूखमें भी लिखाहै ॥ हिरण्येति स्वर्णदान औौर गोदान औौर तिस प्रकार पृथिवी दान एह ब्रह्महत्यादितें उत्पन्नहोएजो पापहैं तिनानूंभी तातूकाल नष्ट करदेतेहैं ॥ १ ॥ गौत्तमजीकावाक्यहै संवत्सरइति एक वर्ष औौर छे ६ मास औौर चार ४ मास औौर तीन ३ मास दो २ मास औौर एक १ मास औौर चौवी २४ दिन औौर वारां १२ दिन छे ६ दिन औौर तीन ३ दिन औौर एक १ दिन एह काल जपके कथन कीतेहैं ॥ जिस स्थानमें जपका काल नहि लिखा तिसस्थानमें पापकों देख कर्के काल कथन करणा ॥ औौर वहुते पापमें वहुत औौर थोडे पापमें थोडे करणे कृच्छ्र औौर चांद्रायणादि प्रायश्चित्त करणे

चतुर्विंशतिका मतहै अथेति इसके अनंतर संपूर्ण यत्न कर्के संपूर्ण पापांके विषे ब्रह्महत्यादि
पापोंके नाशकरणें वाले जप होमादिकों करे आदिशब्दतें चांद्रायणादि व्रत ग्रहण करणे १ ॥
जपेति इस लोकके विषे फलदेने वाला जो पापहै और परलोकविषे फलदेनें वाला जो पाप
है तिनांका जप और होमां कर्के नाश करे जप और होम कर्के हि मोक्षकों प्राप्त होताहै
एहगर्गजीका वचन यथार्थहै ॥ २ ॥ इहां जप होमकर्के हजार १००० गायत्रीकेमंत्रकर्के ग्रहण
करणें जितने पर्यंत शरीर भी हच्छारहे इसपूर्वोक्तयमजीकेवचनतें क्षत्रियइति क्षत्री अपनी भुजा
दे बल कर्के आपद तरे । वैश्य और शूद्र धन कर्के तरें और ब्राह्मण जप और होमांकर्के तरें
३ ॥ विष्णुधर्मोत्तरमें भी लिखाहै सायमिति सायं कालके विषे और तिस प्रकार प्रभात

चतुर्विंशतिमते । अथवासर्वयत्नेनसर्वेष्वपिचपाप्मसु जपहोमादिकंकु
र्याद्ब्रह्महत्यादिनाशनम् १ जपहोमैर्दहेत्पापमैहिकामुष्मिकंचयत् ताभ्यांप
रमवाप्नोतिगर्गस्यवचनंयथा २ जपहोमौचाऽत्रसहस्रावच्छिन्नगायत्रीमंत्रे
ण यावच्छरीरस्वास्थ्यमितिपूर्वोक्तयमवाक्यात् ताभ्यांजपहोमाभ्यांपरंमो
क्षमवाप्नोतीति ॥ क्षत्रियोबाहुवीर्येणतरेदापदमात्मनः धनेनवैश्यशूद्रौतुजप
होमैर्द्विजोत्तमः ३ विष्णुधर्मोत्तरे ॥ सायंप्रातस्तथाकृत्वावासुदेवस्यकीर्त्त
नम् सर्वपापविनिर्मुक्तःस्वर्गलोकेमहीयते १ प्रभासखंडेश्रीभगवद्वाक्यम् ॥
प्रायश्चित्तमशेषाणांपापानांमोच
नाम्नांमुख्यतरंनामकृष्णाख्यंहेपरंतप ॥
कंपरम् १ वाराहे ॥ वासुदेवस्यसंकीर्त्यासुरापोव्याधितोपिवा मुक्तोजायेत
नियतंमहाविष्णुःप्रसीदति ॥ १ ॥

स्वर्गके विषे पूजीदाहै ॥ १ ॥
कालके विषे विष्णुके कीर्त्तनकर्के संपूर्ण पापांते रहित होकर
प्रभासखंडके विषे भी श्रीभगवान् जी का किसेके प्रति वाक्यहै नाम्नामिति हे परंतप मेरे
नामांके मध्यमे मुख्य कृष्ण एह जो नाम है सो संपूर्ण पापांके नाश करणे वालाहै
और प्रायश्चित्त रूप है अर पवित्रहै ॥ १ । बाराह पुराणमेंभी लिखा है वासुदेवेति विष्णु
के कीर्त्तन कर्के मदिराके पीने वाला और रोगी भी निश्चय कर्के पापांतें रहित होताहै अर
विष्ण्वादि संपूर्ण अवतारांका मूल रूप जो महाविष्णु है सो भी तिस पुरुषके उपर प्र
सन्न होताहै अर्थात् मोक्षकों देताहै ॥ १ ॥

व्याधित इस पद करके पूर्वजन्म के विषे भी मदिरा आदि पान करण वाला ग्रहण करणा॥ गोविंदेति भक्ति करके संयुक्त जो पुरुष हैं अथवा भक्तितें रहित जो पुरुष हैं तिनां करके हे गोविंद ऐसे कथन कीता होआ संपूर्ण पापांको भस्म करदेताहै जिस प्रकार प्रलय कालके विषे उठिआ होआ अग्निजगतनूं भस्म करदेताहै। २। विश्वामित्रजीका वाक्यहै कृच्छ्रेति कृच्छ्र और चांद्रायण आदि जो प्रायश्चित हैं सो सब शुद्धि और मुक्तिके कारणहैं प्रत्यक्ष जो पाप कीता है और एकांत विषे जो पाप कीता है और जिस पापका प्रायश्चित्त नहि और जिस पाप मे संदेहहै और नि

व्याधितः पूर्वजन्मन्यपि सुरादिपानकर्त्ता विष्ण्वाद्यवतारमूलभूतोमहाविष्णुः॥ गोविन्देतितथाप्रोक्तंभक्त्यावाभक्तिवर्जितैःदहतेसर्वपापानियुगांताग्निरिवोत्थितः॥२॥ विश्वामित्रः॥ कृच्छ्रचांद्रायणादीनिशुद्ध्यभ्युदयकारणं प्रकाशेचरहस्येचअनुक्तेसंशयेस्फुटे ॥ १ ॥ प्राजापत्यःसांतपनःशिशुकृच्छ्रः पराककः अतिकृच्छ्रःपर्णकृच्छ्रःसौम्यकृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रकः॥ २ ॥ महासांतपनःसिद्धैतत्तप्तकृच्छ्रस्तुपावकः जपोपवासकृच्छ्रास्तुब्रह्मकूर्चस्तुशोधकः ॥ ३ ॥ एतेव्यस्ताःसमस्तावाप्रत्येकंह्येकशोपिवा पातकादिषुसर्वेषुउपवासेपुयत्नतः ॥ ४ ॥

श्चित कीता जो पाप है इनां संपूर्ण पापांकी शुद्धिके कारण कृच्छ्र चांद्रायणादि हैं॥ १ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं प्राजापत्य इति प्राजापत्य १ और सांतपन २ और शिशुकृच्छ्र ३ और पराकक ४ और अतिकृच्छ्र ५ और पर्णकृच्छ्र ६ सौम्यकृच्छ्र ७ अतिकृच्छ्रक ८ महासांतपन ९ और पवित्र जो तप्त कृच्छ्र १० और जप ११ और उपवास १२ और कृच्छ्र १३ और शुद्ध जो ब्रह्म कूर्च ॥ १४ ॥ एह संपूर्ण मिले होए अथवा भिन्न भिन्न अथवा एक एक भी संपूर्ण पापोंके बिषे और उपवासों के विषे शुद्धिके वास्ते यत्न करके करणे चाहिदेहैं ॥ ४ ॥

कार्य्याइति प्राजापत्यादि संपूर्ण प्रायश्चित्त चांद्रायणों कर्के संयुक्त अथवा भिन्न भिन्न पापकी शुद्धि वास्ते करणे चाई देहैं ॥ अब चांद्रायण व्रतके भेद कथन करते हैं ॥ शिशिवति एक शिशु चांद्रायण एक यतिचांद्रायण ॥ ५ ॥ एक यवमध्यचांद्रायण अर एक पैपीलिकाकृति चांद्रायण कथन कीताहै इनके स्वरूप व्रत प्रकरणमें देखलैने ॥ तीन ३ दिनका उपवास १ और मास उपवास २ और पंद्रां १५ दिनका उपवास ३ और आठ ८ दिनका उपवास ॥ ६ ॥ और छे ६ दिनका और वारां १२ दिनका उपवास पापांकी शुद्धि दी इच्छा करदा जो पुरुषहै तिसने करणे चाईबेहैं उपपातकां कर्के युक्त जो पुरुष हैं तिनां नें अनादिष्ट

कार्य्याश्चांद्रायणैर्युक्ताःकेवलावापिशुद्धये शिशुचान्द्रायणंप्रोक्तंयतिचां द्रायणंतथा ॥ ५ ॥ यवमध्यंतथाप्रोक्तंतथापैपीलिकाकृति ॥ उपवास स्त्रिरात्रंवामासःपक्षस्तदर्द्धकम् ॥ ६ ॥ षडहोद्वादशाहानिकार्य्यंशुद्धिफला र्थिना उपपातकयुक्तानामनादिष्टेपुचैवहि ॥ ७ ॥ प्रकाशेवाऽप्रकाशेवाऽअ भिसंध्याद्यपेक्षया जातिशक्तिगुणान्दृष्ट्वानुसकृद्द्विःकृतंतथा ॥ ८ ॥ अनुवंधादिकंदृष्ट्वासर्वंकार्य्यंयथाक्रमम् ॥ अनुवंधःप्रकृतस्यानिवर्त्तनम् ॥ प्रकाशउक्तंयत्किंचिद्विंशभागोरहस्यके त्रिंशद्भागःषष्टिभागःकल्प्योजा त्याद्यपेक्षया ॥ ९ ॥

पापां के विषे चांद्रायणादि व्रत करणे चाईदेहै ॥ ७ ॥ प्रकाशइति प्रकट पापके विषे और गुप्त पापके विषे प्रायश्चित्तीकी प्रतिज्ञा आदिकी अपेक्षा कर्के जाति और शक्ति और गुण इनां नूं देख कर्के अर तिस प्रकार एक वार कीते होए पाप कों अर दो वार कीते होए पाप को भी देखकर्के ॥ ८ ॥ अर प्रायश्चित्ती के हठकों भी देखकर्के संपूर्ण प्रायश्चित्त क्रमसें करणा चाई दाहै ॥ प्रकट पापके विषे जितना प्रायश्चित्त कथन कीताहै तिसतें वीवां २० हिस्सा गुप्त पाप के विषे ब्राह्मण कों कथन कीताहै अर क्षत्रीको त्रीवां ३० हिस्सा कथन कीताहै अर वैश्य को सठवां ६० हिस्सा कथन कीताहै ॥ ९ ॥

याज्ञवल्क्यजी का वाक्यहै ॥ अनादीति अनादिष्ट पापां की चांद्रायण व्रत कर्के हि शुद्धि है और धर्मके अर्थ भी चांद्रायण व्रत कों करे सो चांद्रायण व्रतका कर्त्ता चंद्रमाके लोककों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ षड्त्रिंशत्के मतमें कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायण इन तीनों ३ का समुदाय कथन कियाहै ॥ यानीति जो कोई पाप ब्रह्महत्यादितें वडे हैं सो कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायण कर्के नष्ट होजाते हैं एह मनु कथन करता भया ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिके मतमें केवल प्राजापत्य हिं पापांको नष्ट करताहै ॥ लघ्विति थोडे अनादिष्ट पापके विषे प्राजापत्यकों हिकरे इति ॥ शुक्र जी कृच्छ्र और चांद्रायण

॥ याज्ञवल्क्यः ॥ अनादिष्टेषुपापेषुशुद्धिश्चांद्रायणेनच धर्म्मार्थंयश्चरे देतच्चन्द्रस्यैतिसलोकताम् ॥ १ ॥ षड्त्रिंशन्मते त्रयाणांसमुच्चयःप्रति पादितः ॥ यानिकानिचपापानिगुरोर्गुरुतराणिच ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रचां द्रैस्तुशोध्यंतेमनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ निरपेक्षोहिप्राजापत्यश्चतुर्विंशतिमते ॥ लघुदोषेत्वनादिष्टेप्राजापत्यंसमाचरेदिति ॥ द्वयोः समुच्चयमाहोशनाः ॥ दुरितानांदुरिष्टानांपापानांमहतामपि कृच्छ्रंचांद्रायणंचैवसर्वपापप्रणा शनमिति॥ १ ॥ दुरितमुपपातकम् ॥ दुरिष्टंपातकम् ॥ कृच्छ्रानुवृत्तौ गौ तमः ॥ प्रथमंचरित्वाशुचिःकर्म्मण्यःपूतोभवति द्वितीयंचरित्वायदन्यन्म हापातकेभ्यःपापंकुरुते तस्मात्प्रमुच्यते तृतीयंचरित्वा सर्वस्मादेनसोमु च्यत इति ॥ प्रथमादिपदैः कृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रःकृच्छ्रातिकृच्छ्रश्चोच्यते ॥

कर्के हि पापांके नाशकों कथन करतेभये ॥ दुरितानामिति वडे जो उपपातक पाप हैं और वडे जो पातक पाप हैं इनां संपूर्णांके नाश करणे वाले कृच्छ्र और चांद्रायण हि हैं इति ॥ १ ॥ गौतमजी वारंवार कृच्छ्रकेहि करणे करके पापका नाश कथन करते हैं ॥ प्रथममिति कृच्छ्र कों कर्के कर्म करणे वाला शुद्ध होताहै अतिकृच्छ्रकों कर्के ब्रह्महत्यादि महापातकर्तें और जिस पाप कों करताहै तिसतें रहित हो जाताहै कृच्छ्रातिकृच्छ्रकों कर्के संपूर्ण पापातें रहित होजाताहै ॥ इनां तीनों ३ का स्वरूप रहस्य प्रकरण मे देख लैणा ॥

हारीतजीका वाक्यहै चांद्रायणमिति चांद्रायण व्रत और पराकव्रत और तुला दान और गौआंके पीछे चलना एह संपूर्ण पापांके नाश करणे वालेहैं ॥ १ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं तथेति तिसप्रकार गोमूत्र और गौका गुहा और गौकादुग्ध और दधि और घृत और कुशाका जल और एक १ रात्रका उपवास एह संपूर्ण चंडालतुल्यपुरुषकोंभी शुद्धकरदेतेहैं ॥ २ ॥ इनांसंपूर्णांकी व्यवस्था विष्णु पुराणमें कथन कीतीहै पापइति ॥ मैत्रेयके प्रति किसे ऋषिका वाक्यहै हे मै त्रेय प्रायश्चित्तांके जानणे वाले मन्वादि वडे पापकेविषें बडे प्रायश्चित्तकों करें अर थोडेपापके विषें थोडे प्रायश्चित्तकों करें एह कथन करते भए ॥ १ ॥भविष्य पुराणमें भी लिखाहै एवमिति पुत्रके प्रति किसेका वाक्यहै हे पुत्र इसतरह पापके भेदकर्के बडे और थोडे संपूर्ण प्रायश्चित्त करणे

हारीतः चांद्रायणंपराकंचतुलापुरुषएवच गवांचैवानुगमनंसर्वपापप्रणाश नमिति॥ १ ॥ तथा। गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकरात्रोपवास श्चश्वपाकमपिशोधयेत्। २ एतेषांसर्वेषांव्यवस्थोक्ताविष्णुपुराणे पापेगुरू णिगुरुणिस्वल्पान्यल्पेचतद्विदः प्रायश्चित्तानिमैत्रेयजगुस्स्वायंभुवादयः १। भविष्ये॥ एवंविषयभेदेनव्यवस्थाप्यानिपुत्रक प्रायश्चित्तानिसर्वाणि गुरूणिचलघूनिच॥ १ ॥ अन्यथाहिमहाबाहोलघूनामुपदेशतःगुरूणामुप देशोहिनिष्प्रयोजनतांव्रजेत् ॥ २ ॥ गौत्तमः ॥ एनसिगुरुणिगुरूणिलघु निलघूनि ॥ हविष्यान्प्रातराशान्भुक्त्वातिस्रोरात्रीर्नाश्नीयात् अथापरं त्र्यहंनक्तंभुंजीत अथापरंत्र्यहं न कंचन याचेत अथापरं त्र्यहमुपवसेत्

योग्यहैं अर्थात् बडे पापके विषे बडा प्रायश्चित्त करणा अर थोडे पापके विषे थोडा प्राय श्चित्त करणा ॥ १ ॥ हे महाबाहो इसते जब व्यत्यय करें तो थोडे प्रायश्चित्तके कहनेसें बडे जो प्रायश्चित्तहैं सो निष्फलहि होवेंगे ॥ २ ॥ गौत्तम जीका वाक्य है एनसीति बडे पापमें बडा प्रायश्चित्त करें और थोडे पापमे थोडा प्रायश्चित्त करे इति ॥ हविष्यानिति प्रातःकाल तीन दिन ३ घृत और तिल और यव इत्यादि जो हविष्य हैं तिनांका भक्षण करें अर रात्रिके विषे कुछ न भक्षण करे इसतें उपरंत तीन ३ दिन रात्रिके विषे भक्षण करे इसते उपरंत तीन ३ दिन किसेसें नहि मांगे जेकर कोई देजावे तब भक्षण कर लेवे इसतें उपरंत तीन ३ दिन उपवास करे इस व्रतके दिन दिनकी कृत्य कहतेहैं

तिष्ठदिति शीघ्रहि फलकी कामना वाला दिनविषे खडा रहे अर रात्रि विषे बैठा रहै अर सत्य कथन करे ऊर नीचों के साथबातां नकरे ऊर रौरवयोधा संज्ञिक और जयसंज्ञिक मंत्रांकानित्य पठन करे ऊर तीन ३ दिन त्रिकाल स्नान करे ऊर ओंआपोहिष्ठा मयो भुवः १ ओंतानऊर्जे दधात नर ओंमहेरणाय चक्षसे ३ एह पवित्र जो तीन ऋचा हैं इनों करके मार्जन करे ऊर हिरण्य वर्णाः शुचयः पावका इत्यादि अष्ठ ८ ऋचां करके भी मार्जन करे इसते उपरंत ओंनमो हमा यइत्यादि मंत्रों करके जलके विषे तर्पण करे ऊर ओं अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिर नुष्टुप् छंदः भावभृतं दैवतं अश्वमेधावभृथेविनियोगः ओंऋतंच सत्यं चाभीद्धा त्तपसोऽध्य जायत ततो रात्रिरजायत ततः समुद्रो ऽर्णवः समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोऽजायत अहोरात्राणि

तिष्ठेदहनिरात्रावासीताक्षिप्रकामः सत्यंवदेद्नार्य्यैर्नसंभाषेत रौरवयो धाजयेनित्यंप्रयुंजीतानुसबनमुदकोपस्पर्शनम् आपोहिष्ठेतितिसृभिः पवित्रवतीभिश्चमार्जयेत् हिरण्यवर्णाःशुचयःपावकाइत्यष्टाभिः ॥ अथोद कतर्प्पणम् ओंनमोहमायित्यंतर्जलेवाघमर्षणं त्रिरावर्त्तयन्सर्वपापेभ्यो मुच्यतेइति ॥ वृहन्नारदीये ॥ प्रायश्चित्तानियःकुर्यान्नारायणपरायणः तस्यपापानिनश्यंतिअन्यथापतितोभवेत् ॥ १ ॥ यस्तुरागादिनिर्मुक्तअनु तापसमन्वितः सर्वभूतदयायुक्तोविष्णुस्मरणतत्परः ॥ २ ॥

विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी सूर्याचंद्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवंच पृथि वींचांतरिक्ष मथो स्वः इति इस मंत्रकी तीन ३ वार पाठ करे तो संपूर्ण पापांतें रहित होताहै इति ॥ वृहन्नारदीय पुराणमें भी लिखाहै प्रायश्चित्तानीति जो प्रायश्चित्तां नूं करता होआ ईश्वरपरायणहै अर्थात् ईश्वरका स्मरण करताहै तिसके संपूर्ण पाप नष्ट होतें हैं जेकर इसते व्यत्यय करे तब पापी होताहै ॥ १ ॥ यइति जो पुरुष राग द्वेषादितें रहितहै ऊर पश्चात्ताप करके युक्त है ऊर संपूर्ण जीवांके उपर दया करणे वाला अर विष्णुके स्मरण विषे तत्परहै ॥ २ ॥

महेति ब्रह्महत्यादिपापांककें अथवा होरना संपूर्ण पापांककें युक्त होवे, तदभी संपूर्णपापांतें तात्काल रहित होताहै जिस कारणतें तिसका चित्त विष्णुके विषेस्थितहै ॥३॥ नारायणमिति आद और अंततें रहित और जगत्स्वरूप और अवीनाशी ऐसा जो विष्णुहै तिसका जो पुरुष निस स्मरण करता है सो संपूर्ण पापांते रहित होजाता है ॥ ४ ॥ विष्णुके विस्मरणविषे दोष कहते हैं विष्णिवति विष्णुका स्मरण न करणा पापहै अर उसकास्मरण पापांके छेदन करणे वाला है इसमे दृष्टांत है कि जिस प्रकार वडे दीपकदे जगां नेसें गुफाके मध्यमें जो अंधकारहै तिसके वलका नाश होजाताहै ॥५॥ और प्रकार कहतेहैं स्मृतइति स्मरणकीताहोआ अर पूजन कीता होआ अर चिंतन कीताहोआ अर नमस्कार विषय कीता होआ जो सनातन विष्णु

महापातकयुक्तोवायुक्तोवासर्वपातकैः सर्वैःप्रमुच्यतेसद्योयतोविष्णुपरंमनः ३ नारायणमनाद्यंतंविश्वाकारमनामयम् यस्तुसंस्मरतेनित्यंसर्वपापैःप्र मुच्यते ४ विष्णुविस्मरणंपापंस्मरणंपापकृंतनम् गुहांतर्ध्वांतवलभिन्महा दीपोदयोयथा ५ स्मृतोवापूजितोवापिध्यातोवानमितोपिवा नाशयत्येवपापा निविष्णुरेवसनातनः ६ संपर्काद्यदिवामोहाद्यस्तुपूजयतेहरिम् सर्वपापविनि र्मुक्तः प्रयातिपरमंपदम् ७ सकृत्संस्मरणाद्विष्णोर्नश्यतिक्लेशसंचयः स्वर्गा दिभोगप्राप्तिस्तुसुलभापरिकीर्त्तिता ८ तस्मात्तडिल्लतालोलंमानुष्यंप्राप्यदुर्ल भम् हरिंसंपूजयेद्भक्त्यासर्वपापविमोचकम् ९ सर्वेन्तरायानश्यंतिमनःशु द्धिश्चजायते परंमोक्षंलभेच्चैवपूज्यमानेजनार्दने ॥ १०

है सो निश्चयककें पापांकानाश करदेताहै ॥६॥ संपर्केति किसेदे संगतें अथवा मोहतें जो पुरुष विष्णुनूंपूजताहै सो संपूर्ण पापां तें रहित होकर विष्णुके लोकनूंप्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ सकृदिति विष्णुके एकवार स्मरणकरणेतें दुःखांके समूहका नाशहोजाताहै अर स्वर्गादि भोगां की प्राप्ति सुखाली प्राप्त होतीहै ॥८॥ तस्मादिति तिस कारणते विजलीकी न्यांई चंचल अर दुर्लभ मनुष्यजन्मकों प्राप्त होककें संपूर्णपापांके नाशकरणेवाले विष्णुकों भक्तिककें पूजे ॥९॥ इसका फलकहतेहैं सर्वइति तद संपूर्ण विघ्न नष्ट होजाते हैं अर चित्तकी शुद्धि होतीहै अर विष्णुके पजया होआं निश्चयककें मुक्तिकों भी प्राप्त होताहै ॥१०॥

धर्मेति धर्म अर अर्थ औंर काम औंर मुक्ति एह सब पुरुषोंके अर्थ बिष्णुकी पूजाकरण वालिओंके निश्चयकर्के सिद्धहोतेहैं इसमें संदेह नाहिहै ॥ ११ ❀ अग्नि पुराणमें औरभी अग्निपुष्करसंवादके विषे एक विष्णुजीका स्तोत्र सर्वपापहर लिखाहै परेति परस्त्री औंर परधन औंर परका मारणा इत्यादिओं विषे जद पुरुषांका मन प्रवृत्त होवे तब बिष्णुकी स्तुति प्रायश्चित्तहैं ॥ १ ॥ विष्णुकी स्तुति कथन करतेहैं विष्णवइति विष्णुके तांई वारंवार ४ नित्य नमस्कारहोवे मनकेविषे स्थित अर अहंकारकास्थान जो विष्णुहै तिसनूंमै नमस्कार करताहां २ ॥ चित्तस्थमिति जो विष्णुमन केंविषे स्थितहै अर एकहै अर नाहिप्रकटहै अर नहि नाश जिसका अरनहि किसेकर्के जितयाजांदा

धर्मार्थकाममोक्षाख्याःपुरुषार्थाःसनातनाः हरिपूजापराणांतुसिद्ध्यंतेऽत्र नसंशयः११❀अग्निपुराणेअग्निपुष्करसम्वादे परदारपरद्रव्यपरहिंसादिके यदाप्रवर्द्धतेनृणांचित्तंप्रायश्चित्तंस्तुतिस्तदा १ विष्णवेविष्णवेनित्यंविष्णवे विष्णवेनमः नमामिविष्णुंचित्तस्थमहंकारगतंहरिम् २॥ चित्तस्थमेकमव्य क्तमच्युतंह्यपराजितम् विष्णुमीशमशेषेणअनादिनिधनंविभुम् ३॥ विष्णुं चित्तगतंजानन्विष्णुंवुद्धिगतंचयः यश्चाहंकारगंविष्णुंसाविष्ण्वार्पितसंस्थि तिः ४ करोतिकर्त्तृभूतोसौस्थावरस्यचरस्यच तत्पापंनाशमायातितास्मिन्वि वतुचिंतिते ५॥ ध्यातोहरतियःपापंस्वप्नेदृष्टस्तुभावतः तमुपेंद्रमहंविष्णुंप्रण तार्त्तिहरंहरिम् ॥ ६॥

अर संपूर्णांका स्वामी अर जन्म मरणतें रहित अर सर्वव्यापी ऐसा जो विष्णुहै तिसनूं मै नम स्कार करताहां । ३ ।विष्णुमिति जो पुरुष मनर्क विषे अर वुद्धिके विषे अर अहंकारके विषे प्राप्त होए होए विष्णुनूं जानताहै सो बिष्णुकेविषेहि स्थित है ॥ ४ ॥ करोतीति जेडा एह विष्णु कर्त्तारूपहोकर पर्वतादि अर मनुष्यादिआंनू करताहै तिस विष्णुके स्मरण कीतिआं होआं तिस पुरुषकापाप निश्चयकर्के नाशकों प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ ध्यातइति जेडाविष्णु भक्तिकर्के चिंतितकी ता होआ अर स्वप्नेके विषे देखिआ होआ पापका नाश करदेताहै तिस शरणागतकी पीडाहरण वाले विष्णु नूं मै नमस्कार करताहों ॥ ६ ॥

जगतीति ॥ आश्रयते रहित जो एह जगत् है इसके नरकके विषे हिठा पौंदिआं होआं हस्त का आश्रयदेणवाला और परतें भी परे जो विष्णुहैं तिस नूं मैनमस्कारकरता हां॥७॥सर्वेति हेसर्व पूर्णांके ईश्वर हेसर्वव्यापक हेपरमात्मन् हे अधोक्षज हे इंद्रियांके ईशर हेकृष्ण वर्ण केशा वाले तेरे तांई नमस्कार होवे ॥ ८ ॥ नृसिंहेति हेनृसिंह हेअंततें रहित हेगौआंके पालन कर णे वाले हेजीवांके उत्पन्न करणे वाले हे सुंदरकेशां वाले मुझका खोटा कथन और कर्म और चिंतन और मानस दुःख का नाशकर अर्थात् वाणी करके और शरीर करके और मन करके कीता जो पापहै तिस कों दूरकर तुझकों नमस्कार होवे।९।ब्रह्मण्येति हे ब्राह्मणांके पूजने वाले हे गोविंद हेपरात्पर हेपरायण हे जगत्के ईश्वर हे जगत्के पालन करण वाले हे अच्युत मुझके पापका

जगत्यस्मिन्निराधारेमज्ज्यमानितमस्यधः हस्तावलंबनंविष्णुंप्रणमामिपरा
त्परम् ॥ ७॥ सर्वेश्वरेश्वरविभोपरमात्मन्नधोक्षज हृषीकेशहृषीकेशकृष्णके
शनमोस्तुते ॥ ८॥ नृसिंहानंतगोविंदभूतभावनकेशव दुरुक्तंदुष्कृतंध्यातंश
मयाधिंनमोस्तुते ॥ ९ ॥ ब्रह्मण्यदेवगोविंदपरात्परपरायण जगन्नाथज
गद्धातःपापंप्रशमयाच्युत॥१०॥यच्चापराह्णेसायाह्णेमध्याह्णेचतथानिशि
कायेनमनसावाचाकृतंपापमजानता ॥ ११ ॥ जानताचहृषीकेशपुंडरीकाक्ष
माधव पापंप्रशमयाद्यत्वंवाकूकृतंममपाधव ॥ १२ ॥ यदश्नन्यत्स्वपंस्ति
ष्ठन्यद्गच्छन्स्विच्छयास्थितः कृतवान्पापमद्याहंकायेनमनसापिवा ॥ १३ ॥
यत्सूक्ष्ममपियत्स्थूलंकुयोनिनरकावहम् तद्यातुप्रलयंसर्वंवासुदेवादिकी
र्त्तनात् ॥ १४ ॥

नाशकर ॥१०॥ यच्चेति प्रातः काल और सायंकाल और मध्याह्नकाल और रात्रि इनों विषे शरीर करके और मन करके और वाणी करके और अज्ञान करके॥११॥ और ज्ञान करके मैंनें कीतो जो पाप है तिसका हेहृषीकेश हे पुंडरीकाक्ष हेमाधवतूं नाशकर॥ १२ ॥ यदिति भक्षण करदा हो आ और शयन करदा होआ और खडा हुंदा होआ और गमनकरदा होआ और अपनी इच्छा सें स्थित हुंदा होआ मैं शरीर करके और मन करके आदिशब्दने वाणीकरकेभी जो पाप कर्त्ता भया हे माधव तिस का तूं नाशकर॥ १३ ॥ यदिति खोटीयोनि और जोगर्भआदि योंकीहै नरककों प्राप्तकरणे वाला थोडाऔर बहुत जो मुझका पापहै सो संपूर्ण वासुदेवादि नामके कथन करणे तें नाशकोंप्राप्त होवें एह मेरी प्रार्थना आपकोंस्वीकृतहोवे ॥१४

परामिति परमब्रह्म और परम तेजरूप और परमपवित्र ऐसा जो विष्णुहै तिसके कीर्त्तन कीतिश्रां होश्रां संपूर्ण पाप नाशकों प्राप्तहोवे ॥ १५ ॥यदिति बुद्धिमान्पुरुष जिस स्थानकों प्राप्तहोकर्के फेर जन्मकों नहि प्राप्त हुंदे और गंध स्पर्शादि विषय सुखतें रहित और अपूर्वक जो विष्णुका स्थानहै सो मेरे पापका नाश करे ! १६ । इस स्तोत्रका फल कथन करतेहैं पापेति पापकेनाशकरणें वाले इस स्तोत्रका जो पाठकरताहै और जोसुणताहै सो पुरुष शरीरकर्के और चित्तकर्के और वाणी कर्के कीते होए जो पापहै तिनांते रहित होजाताहै १७ सर्वेति और संपूर्ण पापी सूर्यादि ग्रहांसें मुक्तहो ताहै अर्थात् सूर्यादिपापग्रह उसकों पीडा नहि देतें और विष्णुके परमपदकों प्राप्तहोताहै तिस कार णते पापदेकीतिश्रां होश्रां संपूर्णपापोंके नाशकरणे वाला एह स्तोत्रजपना चाहिए १८ प्रायश्चित

परंब्रह्मपरंधामपवित्रंपरमंतुयत् तस्मिन्प्रकीर्त्तितेविष्णौपापंसर्वंप्रणश्यतु १५ यत्प्राप्यननिवर्त्तन्तेगंधस्पर्शादिवर्जितम् सूरयस्तत्पदंविष्णोस्त्वपूर्वं शमयत्वघम् १६ पापप्रशमनंस्तोत्रंयःपठेच्छृणुयादपि शरीरैर्मानसैः कायैःकृतैःपापैःप्रमुच्यते १७ सर्वपापग्रहादिभ्योयातिविष्णोःपरंपदम् तस्मात्पापेकृतेजप्यंस्तोत्रंसर्वाघमर्दनम् १८ प्रायश्चित्तमघौघानांस्तोत्रं व्रतकृतेवरम् प्रायश्चित्तैःस्तोत्रजापैर्व्रतैर्नश्यतिपातकम् १९ प्रायश्चित्तेंदु शेखरेपि * तत्रमहापातकादर्वाचीनेषु वहुविधेष्वज्ञानकृतेषुप्रतिनिमित्तंक र्तुमशक्तौसर्वप्रायश्चित्तंषडब्दम् ॥ अत्यंतगुणवतोविरक्तस्याऽभ्यासेद्वि गुणम् ॥ मत्यात्रिगुणम्॥ मत्याऽभ्यासेचतुर्गुणम् ॥ अत्यंताभ्यासेनिरंतरा भ्यासे वा पंचगुणम् ॥

मिति व्रतांकीकृत्यकेविषे एह स्तोत्र पापांके समूहोंका श्रेष्ट प्रायश्चित्तहै प्रायश्चित्तोंकर्के और स्तोत्रों कर्केजपों कर्के और व्रतां कर्के पाप दूर होताहै १९॥ *प्रायश्चित्तेंदुशेखर में भी लिखाहै तत्रेति पा पोंके मध्यमें ब्रह्महत्यातें विना वहुत प्रकारके अज्ञान कर्के कीते होए जो पापहैं तिनांके विषे कहा जो प्रायश्चित्तहै तिसके करणेविषे जद सामर्थ्य न होवे तद छे६वर्षका संपूर्ण प्रायश्चित्त कर णा चाहिए ॥ अतिशयतकर्के गुणवाला और विरक्तहोवें तिसके पापके अभ्यासमें वारां१२ वर्ष का प्रायश्चित्त लिखाहै और वुद्धिकर्केकीतें होए पापके विषे चौवी२४वर्षका व्रत और अतिशय कर्के अभ्यासके विषे अथवासर्वदाकालपापांके अभ्यासमें पंचगुणक्यातीस३०वर्षका व्रत करणाचा हिएप्रतिदिन वहुवारकरणेमे अत्यंताभ्यासहै और विच्छेदसे प्रतिदिन करणेमे निरंतराभ्यास कहीदाहै

अर इसमेभीवहुतकालके अभ्यासमें छत्ती३६ वर्षकाप्रायश्चिचलिखाहै और गोहत्यादितेंलेकरके उरेहोणेवाले अज्ञानकर्केकीतेहोएजो जातिभ्रंशादि पापहैं तिनमे कथन कीता जो प्रायश्चित्तहै तिसकेकरणेमे जव सामर्थ्यनहोवेतवदो२ वर्षकाप्रायश्चित्तलिखाहै। अभ्यासादिउंमें पूर्वकीन्याईकरणा जैसेगुणवालेविरक्तके अभ्यासमेंचार ४ वर्षका अरवुद्धिकर्के कीते होएमें छे ६ वर्षकाअर वुद्धिके अभ्यासमें आठ८ वर्षका अर अतिशय और निरंतरअभ्यासमे दश१०वर्षका अर वहुतकालके अभ्यासमे वारां१२ वर्षका प्रायश्चित्त लिखाहै और तिउंजोए प्रकीर्णक जोपापहैं तिनकेविषे उक्त प्रायश्चित्तकरणे असमर्थहोवे तद एक १ वर्षका प्रायश्चित्तकरे और गुणवालें विरक्तकों दो२ वर्षकाअर वुद्धिकर्के कीतेमेंतीन३ वर्षकालिखाहै औरसवपूर्वकीन्याईं जानलैनें। क्षुद्रेति अर थोड़े

वहुकालाभ्यासेषड्गुणम् उपपातकमारभ्यार्वाचीनेषु पापेष्वज्ञानकृतेषु प्रतिनिमित्तंकर्तुमशक्तौद्य्ब्दंप्रायाश्चित्तम् अभ्यासादौप्राग्वत् प्रकीर्णकेषु तादृशेषुतादृशस्यैकाब्दम् अभ्यासादौप्राग्वत् क्षुद्रपापेषु तादृशेषु तादृशस्य कृच्छ्रातिकृच्छ्रचांद्रायणानि तत्स्थाने द्वादश कायानिवा अभ्यासादौप्राग्वत् चतुष्टयमिदं चोत्तमस्य मध्यमस्यद्विगुणम् उत्तममध्यमादिविषये द्विगुणादिव्यवस्थातु वर्णाश्रमसाधारणीवोध्या यथोत्तमब्राह्मणस्योक्तमेव मध्यमब्राह्मणस्यद्विगुणमेवमग्रेपि अधमस्यत्रिगुणम्

जो पापहैं तिनके विषे लिखा जो प्रायश्चित्तहैं तिसके विषे जव सामर्थ्य न होवे तव कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायणकों करे अथवा वारां१२ प्राजापत्य करे॥ अभ्यासादिउंमें पूर्वकीन्याईं जानलैना एह चारे ४ प्रायश्चित्त महांपातकांके उरले १ और उपपातकांके उरले २ और प्रकीर्णक ३ और अनस्थिजीववध और अस्थिवाले कहेहोए ते विलक्षण जो जीवतिनांकावध ४ एह सभ व्यवस्था जैसी वर्णोंमेंहै तैसी आश्रमोंमे भीजानणी उत्तम ब्राह्मणकों एक वार करणे चाहिए अर गुणांकर्के मध्यमजो ब्राह्मणहै तिसकों दो२ वार करणा चाहिए और नीच ब्राह्मणकों तीन३ वार करणा चाहिए

अर इसतेंभी जो नीच ब्राह्मणहै तिसको चवीस २४ वर्षका करणा चाहिए इस प्रकार क्षत्री उौर वैश्य उौर शूद्र इनकों भी क्रम कर्के प्रायश्चित्त जान लैना ब्रह्म हत्यादि जो संपूर्ण पापहैं तिनोंका एह प्रायश्चित्तहै अर जिनो पापोंका प्रायश्चित्त नहि लिखा तिनके विषें प्रायश्चित्तकी सामर्थ्य देख कर्के एकछे अथवा भिन्न भिन्न कृच्छ्र उौर चांद्रायणादि व्रत दसने चाहिए अर थोंडिओं पापोंके विषे एक दिनका उपवास उौर तीन ३ रात्र उपवास उौर प्राजापत्य योग्यता कर्के दसने चाहिए उौर बहुत थोंडे जो पापहैं तिनकें विषे वारां १२ अथवा छे ६ अथवा तीस ३० प्राणा याम करणे चाहिए ॥ स्त्रीआं को उौर शूद्रांको मंत्रांतें विना प्राणायाम करणे चाहिए अथवा जितने अन्नसें एक पुरुष तृप्त होजावे अथवा गिआसन

ततोप्यधमस्यद्वादशाब्दंद्विगुणं महापातकावधिसकलपापप्रायश्चित्तमिति सर्वत्रानुक्तनिष्कृतौ कृच्छ्रचांद्रायणादीनि समस्तव्यस्तरूपेण योग्यतयायोज्यानि ॥ क्षुद्रेषुपापेषुउपवासत्रिरात्रप्राजापत्यानि अतिक्षुद्रेषु द्वादशषट्त्रिंशद्वाप्राणायामाःकार्य्याःस्त्रीशूद्राणाममंत्रकास्तेपुरुषाहारहंतकाराग्रदानानिवा मौनलोपेविष्णुस्मरणम् ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजंम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीश प्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतश्रीदेविकोपकण्ठवासिदेवीदत्तसुतपण्डितगंगारामसंगृहीते पंचविषयात्मप्रातिरूपकेधर्म्मशास्त्रमहानिवन्धिप्रायश्चित्तभागेसाधारणप्रकरणं षष्ठम् ॥ ६ ॥ * *

इत्यादि अन्न दानकरणा चाहिए और मौनव्रतके लोपके विषे विष्णुका स्मरण करणा (इति) एह पद प्रकरण की समाप्तिके विषे जानणा लक्ष्मीकर्के युक्त जो बडे राजेहैं तिनोंकाभी राजा अर जंबू उौर काश्मीर आदि पद कर्के गिलगित्तादि जो अनेक देशहैं तिनोंका स्वामी श्रेष्ठ जो राजा रणवीर सिंह तिस कर्के आज्ञप्त कीते होए सारस्वत ब्राह्मण संज्ञा वाले और श्रीदेविका जीके कनारे पर रहण वाले और पंडित देवी दत्तके पुत्रपंडित गंगा रामजी तिनों कर्के संग्रह कीतेहोए धर्मशास्त्र महानिवंधके प्रायश्चित्त भागमे छेमां साधारण प्रकरण समाप्त होया ॥ ६ ॥●

साधारणप्रकरणतें उपरंत अब विधान कीता जोंकर्म तिसका नकरणा १ अर वर्जित कर्मका करणा २ अर इन्द्रियों का रोकणा एह जो कारण तीन ३ हैं इनातें उत्पन्न हुए जो जातिभ्रंशकरतें आदलेकर नौं ९ प्रकारके पापहैं सो ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त प्रकरणमें कथन करेहैं ॥ तिनां नवांके मध्यमे जातिभ्रंशकर पापां कों मनुजी कहतेहैं ॥ ब्राह्मेति ब्राह्मणकों दंडादि करके दुःखदेणा १ और अति शय करके दुर्गंध वाला जो थोम अर विष्टादिहैं इसका अर मदिराका सिंघणा २ ॥

॥ ऊँश्रीगणेशायनमः ॥ अथविहिताकरणादिहेतुत्रयोत्पन्नजातिभ्रंशक रादिनवविधानि पापानि ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तप्रकरणउक्तानि तत्र जाति भ्रंशकराण्याह मनुः । ब्राह्मणस्यरुजःकृत्वाघ्रातिरघ्रेयमद्ययोः जैह्म्यंच मैथुनंपुंसिजातिभ्रंशकरंस्मृतम् ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्यदंडादिनापीडाकरणं १ अतिशयदुर्गंधियल्लशुनपुरीषादि तस्य मद्यस्यचघ्रातिराघ्राणं २ जैह्म्यंमित्रे ३ पुंसिमुखादौचमैथुनं ४ प्रत्येकंजातिभ्रंशकरं नतु समस्तम् याज्ञवल्क्येनात्र पशुमैथुनमप्युक्तम् ॥ इमान्येव प्रायश्चित्तप्रकरण प्राय श्चित्तरत्न प्रायश्चित्तमुक्तावली प्रायश्चित्तशेखर प्रायश्चित्तमयूख प्राय श्चित्तकदंवादौ प्रोक्तानि २

और मित्रके साथ द्रोह करणा ३ और पुरुषके साथ अर स्त्रीके मुखमें मैथुन करणा ४ एह एकभीपाप कीता होआ जातितें भ्रष्ट करदेताहै ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्य इत्यादि पदों करकें इसी श्लोककाहि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥ अर याज्ञवल्क्यजीनें पशुके साथ जो मैथुनहै सोभी जातितें पतित करण वाला कथनकीताहै अर प्रायश्चित्त प्रकरण अर प्रायश्चित्तरत्न अर प्रायश्चित्तमुक्तावली अर प्रायश्चित्तशेखर अर प्रायश्चित्तमयूख अर प्रायश्चित्त कदंव इत्या दि ग्रंथोंमें भी एही चार ४ पाप जातितें गिडा देणवाले लिखें हैं ॥

जातीति ब्राह्मणस्यरुज
तिनांके मध्यमें जातिभ्रंशकर पापके प्रायश्चित्तकों मनुजी कहतें हैं
इसतें आदलेकर जो जातिभ्रंशकर कर्म कथन कीतेहैं तिनके मध्यमें इच्छासें
किसी कर्म्मनूं करकें सत्त ७ दिनका जो सांतपन कृच्छ्र व्रतहै तिसकों करे जेकर जातिभ्रं
शकरादिकर्म इच्छासें न करें तद प्राजापत्य व्रत करे इसमें एह (प्रश्ण) है कि जो पाप
इच्छासे होताहै तिसका प्रायश्चित्त वहुतहै और जो विनाइच्छा से कीताहो आ पापहै तिसका
थोडा प्रायश्चित्त होणा चाहिए और इस जगा विपरीतक्योंहै सांतपन ७ दिनका और प्राजा
पत्य १२ दिनकाहै (उत्तर) इसजगा सांतपनशब्द करकें महासांतपन जानणा सो २१
दिन करकें होताहै इसतें विरोध नहि अथवा अर्थ से विपरीत कर लेणा इच्छामें
प्राजापत्य और अनिच्छामें सांतपन तदभी विरोध नहि आउंदा ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्य इत्यादि

तत्रजातिभ्रंशकरपापप्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ जातिभ्रंशकरंकर्म्मकृत्वान्य
तममिच्छया चरेत्सांतपनंकृच्छ्रंप्राजापत्यमनिच्छया ॥ १ ॥ ब्राह्मण
स्यरुजइत्याद्युक्तजातिभ्रंशकरकर्म्मोक्तं तन्मध्यादन्यतममपि कर्म कृ
त्वा सांतपनंसप्ताहसाध्यंकृच्छ्रंव्रतंचरेत् इदमिच्छयाकामेन अनिच्छ
यातु प्राजापत्यंकुर्य्यात् केचित्तु इच्छयैतत्कर्म्मकृत्वाप्राजापत्यमनिच्छ
यातुसांतपनंचरेदित्याहुः वृहस्पतिनात्रविशेषउक्तोयथा ब्राह्मणस्यरु
जःकृत्वारासभादिप्रमापणम् निंदितेभ्योधनादानंकृच्छ्रार्द्धंव्रतमाचरेदिति
॥ १ ॥ इदमेवप्रायश्चित्तंप्रायश्चित्तेन्दुशेखरे प्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानं
तदशक्तौ चूर्णीदानंयथाशक्तिदक्षिणा ॥

पद करके इसी श्लोककाहि अर्थ दिखायाहै ॥ वृहस्पतिजीनें इसमें विशेष कहाहै ॥ ब्रा
ह्मेति ॥ ब्राह्मणकों दंडादि करके दुःख देकरके और गर्दभादिकोंकों मार करके और
निषिद्ध पुरुषोंतें धनका ग्रहण करकें अर्द्धा कृच्छ्र व्रत करे ॥ १ ॥ एही प्रायश्चित्त प्रायश्चित्तें
दुशेखरमेंभी लिखाहै प्रायेति॥जब कृच्छ्रादि व्रत करणेमें सामर्थ्य ना होवे तब प्रसूतहुइ गौका
दान करे अर जब गौके दानमें भी सामर्थ्य ना होवे तब चूर्णीदानकरे अर्थात् एक सौ
१०० कौडीदानकरे अर जैसी सामर्थ्य होवे तैसी दक्षिणा देवे (प्रश्ण) जिसने १००
कपर्दिका मात्र दान कीता उसकी शक्तितो प्रतीत होगई फेर यथाशक्ति क्योंकिहा (उत्तर)
चूर्णीदान इसजगा गोदानकी जगाहै तिसके पीछे यथाशक्ति मुद्रिकादि दक्षिणा देवें एह
अभिप्रायहै ॥ ऐसे आगेभी जानणा ॥

जेकर ब्राह्मणकों इच्छा करके पीडा देवे तद सांतपन व्रतकों करे ॥ अर जब व्रत करणे में शक्ति न होवे तब गोदानकरे जब गौदानकी भी समर्था न होवे तब षट्कार्षापणदेवे अर्थात् सत्त हजार ७००० अर आठ ८०० सौ अर अस्सी ८० कौडिआंका दानकरे अर यथा शक्ति दक्षिणा देवे ॥ इसप्रकार जब थोमादि अर विष्टा और मदिरा इनांकों इच्छासें न सिंघे तब प्राजापत्य व्रतकरे। जब व्रतकरणमें सामर्थ्य नहोवें तब एक प्रसूत गौकादानकरे जब गौ दानमेंभी सामर्थ्य ना होवे तद तीन ३ कार्षापणका दानकरे जदमित्रके विषें इच्छा करके द्रोहकरे तब प्राजापत्य व्रतकरे ॥ जद व्रतकरणेकी समर्था ना होवे तदगो दानकरे ॥ जद गोदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापणका दानकरे ब्राह्मणाकों पाषाणादि के उग्रणेमें अर्थात् प्रहार करणेकी इच्छा विषें प्राजापत्य व्रतकरे जद व्रतकरणकी समर्था ना होवे तद एक गौदानकरे गौदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापण दान करे और

ब्राह्मणपीडाकरणेकामतः सान्तपनंतदभावेधेनुदानं तदभावेषट्कार्षापणाः यथाशक्तिदक्षिणा एवंलशुनादिमद्ययोराघ्राणेऽकामतः प्राजापत्यम् तदशक्तौ १ धेनुःतदभावेकार्षापणाः३ मित्रकौटिल्येसाभ्यासेचैवम् ॥ ब्राह्मणावगूरणेप्राजापत्यंतदशक्तौधेनुः १ तदभावेत्रयःकार्षापणाःपुंसिमैथुने ब्राह्मणेदंडादिपातनेच अतिकृच्छ्रम् तद. धेनुः तद. कार्षा- ३ यथाशक्तिदक्षणा ॥ब्राह्मणशोणितोत्पादनेकृच्छ्रातिकृच्छ्रंतद.५ धेनवःतद. १० कार्षापणाःयथाश- ब्राह्मणांगच्छेदनेप्येवम् ॥ अत्यंताभ्यासेचान्द्रम् दशगोदानंच ॥ तद.७ धेनवःतदभावे २१ यथाशक्तिदक्षिणा ॥

जद पुरुषके साथ मैथुनकरे अर ब्राह्मणकों दंडादिडों करके पीडादेवे तद अति कृच्छ्र व्रतकरे जद व्रतमें समर्था ना होवे तदगोदान करे गोदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापण दान करे अर शक्तिके अनुसार दक्षिणादेवे अर जब ब्राह्मणकों रुधिर वगादेवे तबकृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रतकरे अर व्रतकरणेमें समर्था नाहोवे तद पांच ५ गौंकादानकरे जबतिसमेंभी सामर्थां नाहोवे तब दश १० कार्षापणदानकरे अर यथाशक्तिसें दक्षिणादेवे ॥ अर जब ब्राह्मणका अंग कट्ट देवे तदभी इसीप्रकार व्रतादिकरे जब इसमें वहुत अभ्यास होवे तब चांद्रयणाव्रत करे ॥ जदइसमें सामर्था नाहोवे तद दस १० गौकादान करे इसमेंभी सामर्था ना होवे तद नवीन सूईआं हाईआं सच ७ गौआंका दानकरे इसमेंभी सामर्था ना होवे तब २१ कार्षापण का दानकरे अर यथाशक्तिसेंदक्षिणादेवे ॥ एह जातिभ्रंश करपापसमाप्तभये ॥

इतिजातिभ्रंशकराणि

अथेति जातिभ्रंशकरां पापांते उपरंत संकरीकरण संज्ञिक पापांकों कहतेहैं ॥ तिन कि विषे मनुजी का वाक्य है खरेति गधा और घोडा और ऊट और हरिण और हस्ती और बकरा भिड्डू और मच्छी और सर्प और महिषी इनांमेंसे एकका भी मारणा संकरी करण पाप जानना चाहिए ॥ १ ॥ गर्दभइत्यादि पदों कर्के इसीका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै याज्ञवल्क्य जीनें इसमें भेद कथन कीताहै ॥ ग्राम्येति ग्रामके और वनके पशुआंका मारणा हि संकरीकरण कथन कीताहै । तिस विषे देवताके निमित्त मारिया जों पशुहै तिसका पाप नहिहै ॥ प्रायश्चित्त प्रकरण आदि ओंमें मनुने कहा जो संकरी करण है सोई लिखाहै अर

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ अथसंकरीकरणानि ॥ तत्रमनुः ॥खराश्वोष्ट्रमृगेभानामजाविकवधस्तथा संकरीकरणंज्ञेयंमीनाहिमहिषस्यच ॥ १ ॥ अस्यार्थःखरेति गर्दभतुरगोष्ट्रमृगहास्तिछागमेषमत्स्यसर्पमाहिषाणां प्रत्येकं वधः संकरीकरणंज्ञेयम् १ याज्ञवल्क्येनतु ग्राम्यारण्यपशूनां हिंसनमेवसंकरीकरणमुक्तम् तत्रदेवतोद्देशेनवधेकृते न दोषः ॥प्रायश्चित्तप्रकरणे प्रायश्चित्तरत्ने प्रायश्चित्तमुक्तावल्यां प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे प्रायश्चित्तमयूखेप्रायश्चित्तकदंबादौमनूक्तमेवसंकरीकरणम् संकरीकरणा पात्रीकरणमालिनीकरणीयेषु पापेषु प्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ संकरापात्रकृत्यासुमासंशोधनमैन्दवम् मलिनीकरणीयेषुतप्तः स्याद्यावकैस्त्र्यहम् ॥ १ ॥ खराश्वोष्ट्रेत्यादिनासंकरीकरणान्युक्तानि तेषां मध्यादन्यतममिच्छातः कृत्वाचांद्रायणं मासंशुद्ध्यैकुर्यात्

याज्ञवल्क्य वाला नहि लिखा ॥ संकरीकरण अपात्रीकरण अर मलिनीकरण एह जो पाप हैं इनके विषे प्रायश्चित्त नूं मनुजी कहतेहैं ॥ संकरेति संकरीकरण और अपात्रीकरण एह जो पाप हैं इनके करण विषे एक १. मास तक चांद्रायण व्रत करे अर मालिनी करण जो पाप हैं इनांमें जवां कर्के तीन ३ दिन तप्तकृच्छ्र व्रत करे १ एहि अर्थ प्रकट कर्के कहतेहैं खरेति खराश्वोष्ट्र इत्यादि कर्के जो संकरीकरण पाप कहेहै तिनके मध्यमें इच्छासें एक पापकों कर्के शुद्धिके वास्ते एक मास पर्य्यंत चांद्रायण व्रत कों करे ॥ इन व्रतोंका स्वरूप व्रत प्रकरणामे देख लैणा ॥ १ ॥

तिस प्रकार प्रायश्चित्तमयूखमें भी विष्णुजी का वाक्यहै ॥ संकेति संकरीकरण पापनूं कर्के एक मास पर्यंत जवां का भक्षणाकरे अथवा कृच्छ्रातिकृच्छ्र प्रायश्चित्त नूं करे ॥ १ ॥ इस विषेमें अज्ञानतें कीता जो संकरीकरण पापहै तिसके अनुष्ठानमें एक मास पर्यंत जवांका भक्षण करे और जब ज्ञान कर्के संकरी करण पाप नूं करे तब कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे और अज्ञानाभ्यासमें चांद्रायण व्रत करें और ज्ञानाभ्यासमें दो २ चांद्रायण व्रत करे और याज्ञवल्क्यजीने भी इसमे कुछ कहाहै गजके हत कीतियांहोयां पांच ५ नीलवृष देणे और खर बकरा

तथाच प्रायश्चित्तमयूखेविष्णुः ॥ संकरीकरणंकृत्वामासमश्नीतयावकम् कृच्छ्रातिकृच्छ्रमथवाप्रायश्चित्तंतुकारयेदिति॥ १ ॥अत्राज्ञानात्संकरीकरणानुष्ठाने मासंयावकाशनम् ज्ञानात्कृच्छ्रातिकृच्छ्रम् अज्ञानाभ्यासेतु चान्द्रायणम् ज्ञानाभ्यासेतुचान्द्रायणद्वयंकल्प्यम् ॥ याज्ञवल्क्येनतु गजेनीलवृषाःपंचखराजमेषेषुवृषोदेयःहयेंशुकम् उरगेआयसोदंडः॥ उष्ट्रेगुञ्जाक्रव्यान्मृगे वस्तिका जलचरे गौः ॥ यमेनापीदमेवोक्तम् ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरे अज्ञानतःसंकरीकरणानुष्ठाने मासंयावकाशनम् ॥ ज्ञानतःकृच्छ्रातिकृच्छ्रः अज्ञानतोऽभ्यासेचांद्रम् ज्ञानतस्तथात्वेचान्द्रायणद्वयम् प्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानम्

भेढा इनके हतकीतियां होयांएक १ वृषदान करणा और घोडेके वधमें वस्त्र और सर्पके वधमें लोहदंड और ऊटके वधमें गुंजाफलभूषण और अमांसाशी मृगके वधमें वस्तिकाक्या वस्त्रविशेष और जलचरके वधमे गोदानकरे ॥ यमजीनेंभी एहि कहाहै अर प्रायश्चित्तें दुशेखरमेंभी लिखाहै अज्ञेति जानकर्केनहिकीता जो संकरी करण पाप तिसके अनुष्ठानमें एकमास जवांकाभक्षण करे और ज्ञान कर्के कीता जो है तिसकें विषें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे।अज्ञानते अभ्यासमें चांद्रायण व्रत करे।ज्ञानते अभ्यासमे दो२ चांद्रायण व्रत करे॥ और जद प्रायश्चित्तकरणेकी ना समर्था होवे तद धेनु दानकरे

तिसमें भी ना शक्तिहोवे तद सौ १०० कौडीका दान करे अर यथाशक्तिदक्षिणा देवें गधा और घोडा और ऊठ और हरिण और हस्ती और बकरा और भिडु और मछ और सर्प और महिष इनके मध्यमें एककोंभी एक वार मारकर्के एक मास जवांकापान करे जद इसमेंना सामर्थ्या होवें तद दो २ धेनु दानकरे अर तिसमें भी ना सामर्थ्या होवे तव छे ६ कार्षापण दान करे अरशक्तिके अनुसार दक्षिणा देवे अर अभ्यासमें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे इसमे ना सामर्थ्या होवे

तदशक्तौचूर्णीदानम् कपर्दिकाशतं १०० चूर्णी दक्षिणायथाशक्ति खराश्वोष्ट्रमृगहास्तिच्छागमेषमीनाहिमहिषाणांवधरूपेपुसकृत्करणेमासं यावकपानम् तदशक्तौद्वेधेनू ० तदभावे षट्कार्षापणाः यथाशक्ति दक्षिणा अभ्यासेकृच्छ्रातिकृच्छ्रम् तदशक्तौ पंचधेनवः तदभावेपंचदश कार्षापणाः दक्षिणायथाशक्ति अत्यंताभ्यासे चान्द्रायणम् तदशक्तौसार्द्धसप्तधेनवः तदभावेसार्द्धद्वाविंशतिकार्षापणाः दक्षिणायथाशक्ति ॥

इतिसंकरीकरणानि ॥ २ ॥ ❁ ❁

तव पंच ५ धेनु दानकरे तिसमे भी ना सामर्थ्या होवे तव पंदरां १५ कार्षापण दानकरे और शक्तिसें दक्षिणा देवेंअर अतिशय कर्के अभ्यासमें चांद्रायण व्रतकरे तिसमें ना सामर्थ्या होवे तव साडिआं सत्त ७ धेनु दानकरे इसमें भी ना सामर्थ्या होवे तव साडिबाईस २२ कार्षापण दान करे अर शक्तिसें दक्षिणा देवे धेनुका अर्द्ध पूर्वोक्त मुल्ल कर्के हिजानणा एह संकरी करण

॥ पाप समाप्त भया ॥ ❁❁

अथेति संकरीकरणतें उपरंत अपात्री करणपाप कहतेहैं ॥ इसकेविषें मनुजीकावाक्यहै ॥ निंदि तेति शूद्र और पापी इत्यादिउंतें दानलैणा औरशूद्रका कर्म करणा और शूद्रकी सेवा करणी और झूठ बोलना एह एक भी कर्म कीता होआ अपात्री करण पाप होताहै ॥ अप्रति इत्या दिपदोंककें इसी श्लोककाहि अर्थ कीताहै ॥ १ ॥ और याज्ञवल्क्यजीनें इसमें भेद कहाहै ॥ निंदेति ॥ निंदितादिउंतें दान लैणा और शूद्रका कर्म करणा और ब्याज कर्के जीवि का करणी और झूठ बोलना और शूद्रकी सेवाकरणी एह अपात्री करण पाप कहेहैयन और इसमें पूर्वोक्तसे वृद्धि जीवन अधिकहै प्रायश्चित्त रत्नादिग्रंथोंमें मनु वालाहि अपात्री

अथापात्रीकरणम् तत्रमनुः ॥ निंदितेभ्योधनादानंवाणिज्यंशूद्रसेवनम् अपात्रीकरणंज्ञेयमसत्यस्यचभाषणम् । १ । अस्यार्थःअप्रतिग्राह्यधनेभ्यः प्रतिग्रहो वाणिज्यं शूद्रस्यपरिचर्य्या अनृताभिधानं इत्येतत्प्रत्येकमपात्री करणंज्ञेयम् ॥ याज्ञवल्क्येनतु निंदितेभ्योधनादानं वाणिज्यं कुसीदजीवन मसत्यभाषणंशूद्रसेवनमित्यपात्रीकरणान्युक्तानि प्रायश्चित्तरत्नादौमनू क्तमेवापात्रीकरणलक्षणम् ॥ विष्णुस्मृतौतु याज्ञवल्क्यसमानम् ॥ अपा त्रीकरणपापापायप्रायश्चित्तमाहमनुः। संकरापात्रकृत्यासुमासंशोधनमैन्द वमिति ॥ निन्दितेभ्योधनादानमित्यादिनाचापात्रीकरणान्युक्तानि तेषांम ध्यादन्यतममिच्छातः कृत्वा चान्द्रायणंमासंशुद्धयेकुर्यादिति ॥ प्रायश्चित्त मयूखेविष्णुः अपात्रीकरणंकृत्वातप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति

करण कथन कीताहै और विष्णुस्मृतिमें याज्ञवल्क्य वाला अपात्री करण कहाहै । अपात्रीकरण पापके दूर करण वास्ते प्रायश्चित्तकों मनुजी कहतेहैं संकरेति संकरी करण और अपात्री करण पापों के विषें एक मासपर्यंत चांद्रायण व्रत करे तदशुद्धिहोतीहै इसीके अभिप्रायको कहतेहैं निन्दि तेभ्य इति निंदितेभ्य इत्यादि कर्के कहे जो अपात्री करण पापहैं तिनके मध्यमे एक किसीनें इच्छानालकीताहोवे तां तिसकी शुद्धि वास्ते एक मासपर्यंत चांद्रायण व्रतकों करे ॥ प्रायश्चित्त मयूख विषें विष्णुजीने कहाहै ॥ अपेति अपात्री करणपापनू करनवाला तप्तकृच्छ्रनालशुद्ध होताहै

और शीतकृच्छ्र करके अथवा बारंबार महासांतपन व्रत करणेकरके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अज्ञानतें अपात्री करण पापके विषें तप्त कृच्छ्र अथवा शीत कृच्छ्र करे ॥ ज्ञानके विषेमें पूर्व की न्याईं महासांतपन अथवा चांद्रायण व्रत नूं करे ॥ प्रायश्चित्त मयूखमें कहाहै कि आपदाकेविषे श्रेष्ट शूद्रकी सेवादे कीतिआं भी प्रायश्चित्तके योग्य नहि होता ॥ एह भेद दिखाआहै और प्रायश्चित्तें दुशेखरमें भी लिखाहै ॥ अज्ञेति ॥ अज्ञानतें अपात्री करण पापकेविषे तप्तकृच्छ्र अथवा शीतकृच्छ्र नू करे ॥ जब जानकरके करे तब महासांतपन अथवा चांद्रायण व्रत पूर्वकी न्याईं करे जब व्रतों मे ना सामर्था होवे तब नवीन सूई होई गौकादान करे इसमें भी ना समर्थाहोवे तब सौ १०० कौडीका दानकरे और शक्ति नाल दक्षिणा देवे ॥ और कहतेहैं निंदितेभ्य इति पतितादिउंतें दान लेणा और शूद्रका कर्म करणा और शूद्रकी

शीतकृच्छ्रेणवाभूयोमहासांतपनेनवा १ अज्ञानादपात्रीकरणेतप्तकृच्छ्रम् शीतकृच्छ्रंवा ज्ञानतोमहासांतपनं चांद्रायणंवापूर्ववत्। प्रायश्चित्तमयूखेए वापदिसच्छूद्रस्यकृतेऽपिसेवने प्रायश्चित्ताधिकारी न भवतीतिभेदोदार्शितः। प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे अज्ञानादपात्रीकरणे तप्तकृच्छ्रम् शीतकृच्छ्रंवा ॥ ज्ञानतोमहासांतपनंचान्द्रंपूर्ववत् तदशक्तौधेनुदानम् तदशक्तौचूर्णीदानं दक्षिणायथाशक्ति ॥ निंदितेभ्योधनादानेवाणिज्येशूद्रसेवने असत्यभाषणेच सकृत्करणे चतुरहःसाध्यंतप्तकृच्छ्रंशीतकृच्छ्रं वा तदशक्तौसपाद धेनुः तदभावेएकोनचत्वारिंशत्कार्षापणाः अभ्यासेमहासांतपनम् तदशक्तौषड्धेनवः तदभावे अष्टादशकार्षापणाः यथाशक्तिदक्षिणा अत्यन्ताभ्यासेचान्द्रायणम् तदशक्तौसार्द्धसप्तधेनवः तदभावेसार्द्धद्वाविंशति कार्षापणाः। यथाशक्तिदक्षिणा ॥ इत्यपात्रीकरणानि ॥ ३ ॥ ❀

सेवाकरणी और झूठ बोलना इनके एक वार करणे में चार ४ दिनका तप्त कृच्छ्र अथवा शीत कृच्छ्र करे इसमें ना समर्था होवे तद एक धेनुका चौथाइंमुल्लउंर एक धेनुका दान करे इसमेंभी ना समर्था होवे तब उनताली ३९ कार्षापण दानदेवे अभ्यासके विषें महासांतपन व्रत करे इसमें ना सामर्था होवे तब छे ६ धेनु दानकरे ॥ एभी ना होसके तब अठारां १८ कार्षापणदानकरे और शक्तिनाल दक्षिणा देवे ॥ और अत्यंतअभ्यासमें चांद्रायण व्रत करे ॥ एभी ना होसके तद एक धेनु का आधा मुल्ल और सत्त ७ धेनु दान करे और एभी ना होसके तब साडे वाईस २२ कर्षापण दान करे और सामर्था नाल दक्षिणा दान देवे एह अपात्री करण पाप समाप्त भये ॥ ३ ॥ ❀ ❀

क्रम करके प्राप्त होआ जो मलावह पाप तिसकों मनुजी कहतेहें ॥ कृमीति कीडिआं और कीडे और पक्षी इनांका मारणा और जो मदिराके साथ लिआंदा शाकादिहै तिसका भक्षण करणा और फल और लकडीआं और पुष्प इनां का चुराणा और थोडी जहि हानि दे होआं होआं वहुत व्याकुलता होणी एह एक भी कर्म मलिनी करण पाप है ॥ १ ॥ कृमि पद करके छोटे कीडे ग्रहण करणे ॥ तिनांते कुछक वडे जोहयन सों कीट पद करके ग्रहण करणे(वयः) इसपद करके पक्षिग्रहणकरणे इनांका मारणा अर एहि अर्थ स्पष्ट

क्रमप्राप्तंमलावहमाहमनुः ॥ कृमिकीटवयोहत्यामद्यानुगतभोजनम् फलैधःकुसुमस्तेयमधैर्य्यंचमलावहम् ॥ १ ॥ कृमयःक्षुद्रजंतवःतेभ्यईषत्स्थूलाःकीटाः । वयांसिपक्षिणःतेषांहत्यावधः मद्यानुगतं शाकाद्येकत्रापिप्यकादौकृत्वामद्येनसहानीतंयद्भोज्यंतस्यभोजनम् केचित्तु मद्यानुगतंमद्यसंस्पृष्टमित्याहुः प्रायश्चित्तगौरवात्तदुपेक्ष्यम् ॥ फलकाष्ठपुष्पाणांचौर्य्यं देवतार्थपुष्पचौर्य्येनदोषः ॥ अल्पेऽपचयेप्यत्यंतवैक्लव्यं एतत्प्रत्येकंमलिनीकरणम् याज्ञवल्क्येनतु जलचरपक्षिघातनमपिमलावहमुक्तम् इदमेवप्रायश्चित्तप्रकरणप्रायश्चित्तकदंवादौ वर्त्तते विष्णुस्मृत्यांच ॥

करी दाहै मद्येति मद्यानुगतं इस पद करके क्या लयणा कि मदिराके साथ एक टोकरे विच आंदाजो शाकादि भक्ष्यहै तिसका भक्षण करणा ॥ केईक मद्यानुगतं इसपद करके मदिरा करके स्पर्श कीते होए कों ग्रहण करते हैं सो यथार्थ नहि क्योंकि उसमे प्रायश्चित वहुतहै ॥ इसमे इतनाभी अर्थ प्रकरणांतरका किहा होआ जानणा कि देवताके अर्थ पुष्प चुराणे का दोष नहि ॥ अर याज्ञवल्क्यजीने जल चर पक्षिका भी मारणा मलिनी करण पाप कहाहै ॥ एहि प्रायश्चित्त प्रकरण अर प्रायश्चित्तकदंव अर विष्णु स्मृति इत्यादिकोंमें भी लिखाहै ॥

मलावह पाप के प्रायश्चित्तको मनुजी कथन करतेहैं ॥ मलिनीति मलिनी करण पापों के बिषे जवां के काडे करके तीन ३ दिन तप्त कृच्छ्र करे इति ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहै कृमीति कृमिकीट वयोहत्या इत्यादि करके कथन कीते जो मलिनी करण पाप हैं तिनके मध्यमें इच्छा नाल एक कों भी करके तीन ३ दिन जवांके कोटेकों काहड करके भक्षण करे ॥ प्रायश्चित्त मयूख अर विष्णु स्मृति इनमें भी विष्णु जीका वाक्य है ॥ मलिनीति मलिनी करण पापोंके दूरकरणे वास्ते तप्त कृच्छ्र व्रत है अथवा कृच्छ्रातिकृच्छ्र प्रायश्चित्त पापका शोधन वाला है ॥ १ ॥ इसमें अज्ञानतें मलिनी करण विषे तीन ३ दिन जवां को भक्षण करे । जब जान करके पाप करे तब तप्त कृच्छ्र करे ॥ अर अज्ञानते अभ्यासमें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरमें भी लिखा है ॥ अज्ञानेति ॥ अज्ञानतें कीता जो मलिनी करणहै तिसके प्रायश्चित्ताऽनुष्ठानके विषे तीन ३ दिन जवांकों काहड करके पानकरे ॥ अर ज्ञानके विषे में तप्त कृच्छ्र अथवा महा सांतपन व्रत करे ॥ अर अज्ञानतें अभ्यासके विषेमें कृच्छ्राति कृच्छ्र व्रत करे ॥ अर ज्ञानते अभ्यासके विषेमें दो २ कृच्छ्रातिकृच्छ्र करणे चाहिए ॥

मलावहप्रायश्चित्तमाहमनुः ॥ मलिनीकरणीयेषुतप्तःस्याद्यावकैस्त्र्यहम् ॥ कृमिकीटवयोहत्येत्यादिनामलिनीकरणान्युक्तानि तन्मध्यादेकमपीच्छातः कृत्वात्रिरात्रंयवागूंक्वथितामश्नीयात् ॥ प्रायश्चित्तमयूखे विष्णुस्मृत्यांच विष्णुः ॥ मलिनीकरणीयेषु तप्तकृच्छ्रंविशोधनम् कृच्छ्रातिकृच्छ्रमथवाप्रायश्चित्तंविशोधनम् १ अत्राज्ञानात्त्र्यहंयावकम् ज्ञानात्तप्तकृच्छ्रं अज्ञानतोऽभ्यासे कृच्छ्रातिकृच्छ्रम्॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे अज्ञानतोमलिनीकरणानुष्ठाने त्र्यहंतप्तयावकपानम् ज्ञानात्तप्तकृच्छ्रः महासांतपनंवा अज्ञानतोऽभ्यासे कृच्छ्रातिकृच्छ्रः ज्ञानतोऽभ्यासेद्विगुणम् ॥

अर जब व्रत करणमें ना सामर्थां होवे तब नवप्रसूता गौका दान करे ॥ इसमें भी ना सामर्था होवे तद सौ १०० कौडीका दान करे ॥ अर शक्ति नाल दक्षिणा देवे ॥ कृमि और कीडे और पक्षि इनके एक वार मारणेमें तीन ३ दिन जवांका जल भक्षण करे अर मद्यानुगत द्रव्यके भोजनमे अर्थात् जिसवस्तुके साथ मदिराकापात्र ल्यांदाहै तिसवस्तुके भोजनमे अर फल और काष्ट और पुष्प इनके चुराणके अभ्यासमें तप्तकृच्छ्र व्रत करे ॥ इसमें ना सामर्था होवे तब चार ४ नव प्रसूता गौआंका दानकरे इसमें भी ना शक्ति होवे तद बारां

प्रायश्चित्ताशक्तौधेनुदानम् तदशक्तौचूर्णीदानम् यथाशक्तिदक्षिणा ॥ कृमिकीटपक्षिणांहननेसकृदाचरणे त्र्यहंयावकम् मद्यानुगतद्रव्यभोजने फलकाष्ठपुष्पाणांस्तेयेऽभ्यासेतप्तकृच्छ्रम् तदशक्तौचतस्रोधेनवः तदभावे द्वादशकार्षापणाः ॥ अधैर्य्येऽत्यंताभ्यासे कृच्छ्रातिकृच्छ्रम् तदशक्तौपंच धेनवः तदभावेपंचदशकार्षापणाः यथाशक्ति दक्षिणा ॥ एतच्चतुष्टये प्रायश्चित्तानुक्तौ तारतम्यंस्वयमूह्यम् ॥ इतिमलावहानि ॥ ४ ॥ ※

१२ कार्षापण दानकरे अर अधैर्य्यता जो पीच्छेकहीहै तिसके अत्यंताभ्यासमे क्या वहुवारकरणेमे कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे ॥ अर व्रतमें ना शक्ति होवे तव पांच ५ धेनुका दान करे ॥ अर एभी ना कर सके तब पंदरां १५ कार्षापणका दान करे ॥ अर शक्ति नाल दक्षिणा देवे ॥ इन चारों पापांमें जहां प्रायाश्चित्त नहि कहा तिस स्थानमें पापकी न्यूनता अधिकता देख करके प्रायाश्चित्त करणा ॥ एहमलावहनाम वाले पापोंका प्रायश्चित्त किहाहोआ समाप्तहोया ॥ ४ ॥ ※ ॥

अथेति मलिनीकरण पापतें उपरंत क्रम करके प्राप्त होए जो प्रकीर्णक पापोंके प्रायश्चित्तहैं तिनांको कहतेहैं तिनके विषे मनुजी का वाक्यहै अन्येति पूर्व कथन कीते जो पापहैं तिनांते भिन्न संपूर्ण प्रकीर्णक पापहैं तिसनू कथन करतेहैं ॥ सो कहाहै प्रायश्चित्त मुक्तावली के विषें नारदजीने राज्ञामिति राजउों की आज्ञाका अर तिस प्रकार तिनकेकथित कर्म का न करणा उौर एकवार संकल्प कीती होई वस्तु का फेर संकल्प करणा उौर स्वामी उौर वजीर उौर मित्र उौर तोशे खाना उौर राज्य उौर किला उौर सेना उौर पुरके लोकोंकीआं पंक्तिआं इन की बुद्धिकी विपरीत ता होणी अर्थात् स्वोचित धर्म्म का परित्याग १ उौर वेदके प्रमाणनूना मन्नन वाला उौर नास्तिक उौर तरखाण अर लुहारादि दश संस्कार रहित ४ इनके संगते अधर्म

अथ क्रमोपस्थितानि प्रकीर्णकपापप्रायश्चित्तानि तत्रमनुः अन्यत्सर्वंप्रकीर्णकमिति पूर्वेभ्योऽन्यत् तत्तुवक्ष्यते तदुक्तं प्रायश्चित्तमुक्तावल्यां नारदेन राज्ञामाज्ञाप्रतीघातस्तत्कर्माकरणंतथा पुनःप्रदानंसंभेदःप्रकृतीनांतथैवच ॥ १ ॥ पाषण्डिनैगमश्रेणिगणधर्म्मविपर्य्ययाः पितापुत्रविवादश्चप्रायश्चित्तावपर्य्ययः ॥२॥ प्रतिग्रहविलोपश्चकोपश्चाश्रमिणामपि वर्णसंकरदोषश्चतद्वृत्तिनियमस्तथा नदृष्टंयत्तुपूर्वेषुसर्वंतत्स्यात्प्रकीर्णकम् ॥३॥ पुनः प्रदानं दत्तस्यैवदानम् संभेदोवैमत्यम् प्रकृतीनामित्यर्थः पाषण्डिनोवेदस्यप्रामाण्यमेवनमन्यमानाःसौगतादयः नैगमाविदस्यान्यप्रणीतत्वेनाप्रामाण्यवादिनः श्रेणयएकशिल्पोपजीविनः गणोव्रात्यःएषांसंबंधाद्धर्मविपर्ययोऽधर्मः ॥

होणा उौर पिता पुत्रका झगडा उौर प्रायश्चित्त का विपर्य्यय करणा अर्थात् चांद्रायण व्रत के विषे कृच्छ्र करणा अर कृच्छ्रके विषे तप्त कृच्छ्र करणा इत्यादि विपर्य्ययकरणाहै । २। उौर दाननू चुककर फेर उसकों छपालैणा उौर ब्रह्मचारी १ उौर गृहस्थी २ उौर वानप्रस्थी ३ उौर संन्यासी ४ इनके उप्परवृथाक्रोधकरणा उौर वर्ण संकर दोष उौर ब्राह्मणने क्षत्रियादिउोंके कर्म करके उपजीविका करणी उौर वडउोंके विषें नही देखिआ जो कर्महै तिसका करणा एह संपूर्ण प्रकीर्णक पाप कहाहै ॥३॥ पुनः प्रदानं इत्यादि पदों करके इना श्लोकोंकाहि अर्थ स्पष्ट कीताहै इन संपूर्णोंका प्रायश्चित्त साधारण प्रकरणमें देखलैणा ॥ और जो इसमें विशेष आवेगा सो किहाजावेगा ॥

औंरं प्रकार कथन करतेहैं ॥ तिसकें विषे याज्ञवल्क्य जीका वाक्यहै ॥ प्राणेति गर्दभ १ और ऊट २ इन करके युक्त जो बग्गी आदिक है तिसके उपर चढ करके जो पुरुष जाताहै और नंगा जो स्नान करताहै और धोती ना लाकर जो पुरुष अन्न खांदाहै और दिने अपणी स्त्रीके साथ मैथुन करताहै सो पुरुष तला और नदी आदि औंकेविषे स्नान नूं करके पश्चात् प्राणायामकों करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ एह इच्छाके विषयमें जानना इसी विषयमे मनुजी का वाक्यहै उष्ट्रेति ऊट और गर्दभ करके युक्त जो असवारीहै तिस उपर इच्छा सें जो आरूढ होताहै सो पुरुष सहित वस्त्रोंके जलविषे स्नान करके पश्चात्

प्रायश्चित्तविपर्ययो व्यत्ययेन चांद्रेकृच्छ्करणं कृच्छ्रे तप्तकृच्छ्रमित्यादि प्रतिग्रहविलोपोगृहीतप्रतिग्रहसंगोपनम् तद्वृत्तिनियमोवर्णसंकरवृत्तिः क्षत्रियादिवृत्तिस्तयानापद्यपिजीवनम् ॥ एषांप्रायश्चित्तं साधारणप्रकरणे द्रष्टव्यम् विशेषस्तूच्यते) ❀ तत्रयाज्ञवल्क्यः प्राणायामीजलेस्नात्वाखर यानोष्ट्रयानगः नग्नःस्नात्वाचभुक्त्वाचगत्वाचैवदिवास्त्रियम् १ ॥ अस्यार्थः खरयुक्तंयानंखरयानम् उष्ट्रयुक्तंयानमुष्ट्रयानम् रथगंत्र्यादि तेनाध्वगम नंकृत्वादिगंवरः स्नात्वाऽभ्यवहृत्यवा वासरेच निजांगनासंभोगं कृत्वाच तडागतरंगिण्यादाववगाह्यकृतप्राणायामःशुद्ध्यति ॥ इदंच कामकारविषय म् उष्ट्रयानंसमारुह्यखरयानंतुकामतः सवासाजलमाप्लुत्यप्राणायामेनशु द्ध्यतीति मनुस्मरणात् अकामतःस्नानमात्रंकल्प्यम् साक्षात्खरारोहणे तुद्विगुणावृत्तिः कल्पनीया तस्य गुरुत्वात् ॥१॥ विष्णुरपि ॥ उष्ट्रेणवाग त्वानग्नःस्नात्वाभुक्त्वाच प्राणायामंकुर्य्यादिति ॥साक्षात्खरोष्ट्रारोहणेयमः खरयानमुष्ट्रयानंवाधिरोहेद्द्विजोत्तमः अपोवाप्रविशेन्नग्नस्त्रिरात्रंक्षप णंस्मृतमितिप्रायश्चित्तमयूखः ॥ १ ॥

प्राणायामके करणे करके शुद्ध होताहै और अकामके विषयमे केवल स्नानाहैं कहाहै साक्षात् गर्द भउपर आरूढ होणेमें दो २ वार स्नान और प्राणायाम करणा चाहिए क्यों कि इसको वडा पाप होणेतें ॥ १ ॥ विष्णु जीका भी कथन है ऊटके उपर चडकर और नग्न होकर स्नान करके और नग्न होकर अन्न खा करके प्राणायाम नूं करे इति ॥ साक्षात् ऊट और गर्दभके विषे प्रायश्चित्त मयूखमें यमजीने कहाहै खरेति गर्दभ और ऊट इनकरके युक्त जो असवारीहै तिस उपर अथवा साक्षात् गर्दभ और ऊट उपर जो आरूढ होताहै और नग्न जो स्नान करताहै तिस पुरुषकी शुद्धिके वास्ते तीन रात्रि उपवास लिखाहै ॥ १ ॥

गुरुमिति पिता श्रौर ताउ श्रौर चाचू इत्यादिश्रां कों झिडक करके अर्थात् तूंहि केंदाथा अर तैनेंहि एह कीता इस प्रकार एक वचन उच्चारण करणे करके झिडक कर के श्रौर ब्राह्मण श्रौर बडाभ्राता श्रौर छोटाभ्राता इनानूंभी क्रोधसें झिडक करकें अर्थात् तूंचुप करके बैठ मत बोल इसप्रकार झिडक करके श्रौर झगडे सें अथवा हासेंसें ब्राह्मणनूं जित्त करके अर वस्त्र करके थोडा जिश्राभी गलकें विषें बांधे तब उसके चरणानूं पकडकर क्रोधनूं त्यागकरा करके एकदिन उपवासकरे १। गुरुं जनकादिकं इत्यादि पदोंमें इस काहि अर्थहे ॥ जो यमजीनेकहाहै वादेनेवि ब्राह्मणनूं झगडेसें जित्त करके प्रायश्चित्तकी इच्छा

गुरुंहुंकृत्यतुंकृत्यविप्रंनिर्जित्यवादतः वद्ध्वावावाससाक्षिप्रंप्रसाद्योपवसेद्दिनम्॥१॥ गुरुंजनकादिकंतुंकृत्यत्वमेवमात्थ त्वयैव कृतमित्येकवचनांतयुष्मच्छब्दोच्चारणेन निर्भर्त्स्यविप्रं वा ज्यायांसं समंकनीयांसं वा सक्रोधंहुंतूष्णीं मास्वहुंमावहुवादीरित्येवमाक्षिप्य जल्पवितंडाभ्यां जयफलाभ्यांविप्रंनिर्जित्यकंठे वाससा मृदुस्पर्शेनापि वद्ध्वा क्षिप्रंपादप्रणिपातादिनाप्रसाद्य क्रोधंत्याजयित्वादिनमुपवसेत् अनश्नन्कृत्स्नंवासरंनयेत् । यत्तुयमेनोक्तम् वादेनब्राह्मणंजित्वाप्रायश्चित्तविधित्सया त्रिरात्रोपोषितःस्नात्वाप्रणिपत्यप्रसादयेदिति ॥ १ ॥ तदभ्यासविषम्॥मनुः ॥ हुंकारंब्राह्मणस्योक्त्वा त्वंकारंचगरीयसः स्नात्वानश्नन्नहःशेषमभिवाद्यप्रसादयेत् १ ताडयित्वा तृणेनापिकण्ठेचावध्यवाससा विवादेवाविनिर्जित्यप्रणिपत्यप्रसादयेत् २ अर्थः हुंतूष्णींस्थीयतामित्याक्षेपंब्राह्मणस्यकृत्वा विद्यादिनाधिकस्य त्वंकारंचोक्त्वा अभिवादनकालादारभ्याहःशेषं यावत्स्नात्वा भोजनानिवृत्तः पादोपग्रहणेनापगतकोपं कुर्य्यादिति ॥

करके तीन ३ रात्रि उपवास रक्षकर स्नान करके ब्राह्मणके चरणांनूं पगड करके प्रसन्नकरे १॥ एह अभ्यासका विषयहै अर्थात् वहुतवार पाप करणेमे प्रायश्चित्तहै ॥ मनुजीका भी वाक्यहै हुमिति तूं चुप करके बैठ इसप्रकार ब्राह्मणकों झिडककर कहे अर तूंहि केंहदाहैं तैनेंहि कीताहै इसप्रकार विद्या करके अधिकनूं झिडक करके अर नमस्कार श्रौर स्नान इनांनूं करके तिससें लैकर रैंदा जेडा दिनहै तिसके विषें ब्राह्मणके चरणोंकों पगड करकें प्रसन्नकरे ।१। अर जब तृणभी ब्राह्मणको मारे अर गल विषें वस्त्रपाए अर झगडे करकें जित्ते तौंभी चरणां पगड करके प्रसन्नकरे अर्थः इत्यादि पदोंसें इसीका अर्थ स्पष्टकीताहै ॥ २॥

॥ कुशक और कहतेहैं ॥ विप्रेति ॥ ब्राह्मणकों मारणदी इच्छा करके सोटा उग्रणे में कृच्छ्र व्रत अर डंडा मारणेमें अति कृच्छ्र अर रुधिर निकालनेंमें कृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रत शुद्धिका कारणहै ॥ अर मारणे करके अंदर रुधिर पाणेमें भी कृच्छ्र व्रत शुद्धिका कारणहै ॥ १ ॥ विप्रजिघांसया इत्यादि पदोंमे इसीश्लोककाहि अर्थहै ॥ वृहस्पतिजीने इसमें विशेष कहाहै ॥ काष्ठेति काष्ठादिके मारणें करके त्वचा छेदन करे तब कृच्छ्र व्रतनूं शुद्धिके वास्ते करें अर जब पाषाणादि मार करके हड्डी भग्न देवे तब अतिकृच्छ्र व्रतनूं करे अर अंग छेदनमें पराकव्रत शुद्धिका कारणहै ॥ १ ॥ यमजीकाकथनहै॥ पादेनेति चरणकरके ब्राह्मणनूं स्पर्शकरे तब प्रायश्चित्तके विधानकी इच्छा करके दिनके विषे उपवास करें अर स्नान करे ब्राह्मणनूं चरणातें पकड कर प्रसन्नकरे ॥ १ ॥ एह सानुबंध विषयमेंहै अर्थात् अनुबंध साथजो

किंच विप्रदंडोद्यमेकृच्छ्रस्त्वतिकृच्छ्रोनिपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसृकपाते कृच्छ्रोभ्यंतरशोणितइति १ विप्रजिघांसयादंडोद्यमेकृच्छ्रःशुद्धिहेतुः निपातनेताडनेअतिकृच्छ्रः रुधिरस्त्रवणेकृच्छ्रातिकृच्छ्रः ताडनादिनाअभ्यंतरशोणितेपिकृच्छ्रःशुद्धिहेतुः॥ वृहस्पतिनाप्यत्रविशेषउक्तः॥ काष्ठादिना ताडयित्वात्वग्भेदेकृच्छ्रमाचरेत् अस्थिभेदेऽतिकृच्छ्रःस्यात्पराकस्त्वंगकर्तने १ यमः॥ पादेनब्राह्मणंस्पृष्ट्वाप्रायश्चित्तविधित्सया दिवसोपोषितः स्नात्वाप्राणिपत्यप्रसादयेत् १ सानुबंधेएतत्अनुबंधश्ववाचाधर्षणम् इच्छा पूर्वकदोषकरणमनुबंधइतिशब्दार्थचिंतामणिः॥ तथा ॥ अवाच्यंब्राह्मणस्योक्त्वाप्रायश्चित्तंविधीयते कृच्छ्रातिकृच्छ्रंकृत्वातुप्राणिपत्यप्रसादयेत् १ ॥ एतत्तुपीडातिशयऽनुबंधातिशयेच आक्रोशमनृतंहिंसामनुबंधंसमाचरेत्

एकरात्रंत्रिरात्रंवाषड्रात्रंवाविधीयते ॥ २ ॥

पाद स्पर्शहै तिस विषे जानणा अनुबंध क्या वाणी करके जो निरादर करणा तिसका नामहै इच्छा सें जो दोष करणाहै तिसका नाम अनुबंधहै एह शब्दार्थ चिंतामणिमें लिखा है॥ तिस प्रकार औरभी कहतेहैं अवेति ब्राह्मणकों खोटा वचन कहके प्रायश्चितनूं करे क्या कृच्छ्राति कृच्छ्र व्रतनूं करके चरणोंतें पकड कर ब्राह्मणकों प्रसन्न करे॥ १ ॥ एहअतिशयकरकें पीडा अर अतिशय करकें अनुबंधके विषे जानणा॥ अब और कथन करतेहैं आक्रोशमिति ब्राह्मण और गुरु और वृद्ध और सिद्ध इनको झूठी चोरी लगाणी और झूठा कथन करणा और हिंसा और इच्छा सें व्यभिचारादि अपराध करणा इनांनूं आचरण करके एकरात्र अथवा तनि ३ रात्र अथवा छे६ रात्र उपवासकरे ॥ २

मनुजीका वाक्यहै ॥ विनेति जलतेंविना अथवाजलकेमध्यमें जो पुरुष मूत्रऔर विष्ठा नूं करताहै सो ग्रामतेबाहर जाकर सहितवस्त्रोंकि नद्यादिमें स्नानकरके पीछेसें गौनूंस्पर्शकरके शुद्ध होताहै १ ॥ एह विनाकामनासें जो पापहै तिसकाविषयहै । असन्निहित इत्यादिपदोंमें इसश्लोककाहि अर्थहै अबकामनाके विषयमेंकहतेहैं आपेति आपदाकेविषे जोपुरुषजलतें विनामूत्र और पुरीष कों करदाहै अर्थात् जलतें बिना पिशाव और दिशा वैठदाहैं सो एक दिन उपवास नूं करकें पश्चात् समेत वस्त्रांदे जल विषे स्नानकरे एह यमजीका कथन जानना ॥ १ ॥ अनापदा केविषे इसतें दूणाकरे ॥ जो सुमंतुजीकावाक्यहै कि जलांके मध्यमें और अग्नि के विषे मूत्र और पुरीषकों जो पुरुष त्यागता है तिसको तप्तकृच्छ्र व्रत करणा चाहिए ॥ एह सुखवालेपुरुषका और अभ्यासकाविषयहै । अनभ्यासके विषे शंख और लिखितजी कहतेहैं रेत इति

मनुः ॥ विनाद्भिरप्सुवाप्यन्तः शारीरंसन्निषेव्यतु सचैलोवहिराप्लुत्यगामा लभ्यविशुद्ध्यति।१ असन्निहितजलोजलमध्येवाशारीरंमूत्रपुरीषादिकंकृत्वा सवासावहिर्ग्रामाद्नद्यादौ स्नात्वा गां च स्पृष्ट्वाशुद्ध्यति ।इदमकामतः का मतस्तु आपद्गतोविनातोयंशारीरंयोनिषेवते एकाहंक्षपणंकृत्वासचैलो जलमाविशेदितियमोक्तंवेदितव्यम् अनापदितु द्विगुणम् यत्तु सुमंतुवचन म् अप्स्वग्नौ वामि हतस्तप्तकृच्छ्रमिति तदनार्त्तविषयमभ्यासविषयंवा अ नभ्यासेतु शंखलिखितौ रेतोमूत्रपुरीषाण्युदकेकृत्वात्रिरात्रोपोषितइदमा पः प्रवहतेत्यृचंजपेत् यमः अटव्यामटमानस्यब्राह्मणस्यविशेषतः प्रणष्टस लिलेदेशेकथंशुद्धिर्विधीयते॥१॥अपोदृष्ट्वैवविप्रस्तुकुर्य्याच्छौचंसचैलकम्॥ गायत्र्यष्टशतंजप्यंस्नानमेतत्परंभवेत् ॥ २॥ देशंकालंसमासाद्यानावस्था मात्मनस्तथा धर्म्मंशौचंचसंतिष्ठेन्नकुर्य्यान्वेगधारणम् ॥३॥ वेगोमलवेगः

जोपुरुष वीर्य और मूत्र और पुरीष इनांनू जलके विषे त्यागताहै सो पुरुष तनि १ रात्र उपवासनू रक्षकर इद माप प्रवहतइस ऋचांकों एकवार अथवा १० वार जपे यमजीका वाक्यहै (प्रश्न) अटव्यामिति वनके विषे गमन करदा होआ सुचेतहोणेकी इच्छावालाजो ब्राह्मणहै जलतें रहित देशके विषे तिसकी किसप्रकार शुद्धि विधानकीतिहै ॥ १ ॥ (उत्तर) तिसकी शुद्धि कहतेहैं ॥ अपइतिसो ब्राह्मणजलनूं देख कर्के सहित वस्त्रांदे शुद्धि नूं करेपश्चात् एक सौ आठ १०८ वारगायत्रीको जपे एह परम स्नानहोताहै ॥२॥ देशमिति देश और काल और अपनी अनवस्थाकों प्राप्तहोकरके धर्म और शुद्धि नू जैसादेखेतैसा कर लेवे और मलके वेग नू कदेभी ना धारण करे क्यों किमलकावेग सहारणे सेरोगकी उत्पत्ति होजातीहै॥३

नित्यकर्मांके नाशके विषे मनु जी प्रायश्चित्त कथन करतेहैं ॥ वेदविति वेदके विषें विधान कीते जो संध्यावंदन अग्नि हवनादि नित्य कर्महैं तिनके और मनुस्मृतिके चौथे ४ अध्यायमें कथन कीते जो स्नातक व्रतहैं तिनके नाशहोआं होआं एक १ उपवास व्रत कोंकरे ॥१॥ वेद विहित इत्यादिपदोंकर्केइसी श्लोककाहि अर्थस्पष्ट कीताहै ॥इसी विषे में बृहस्पति जीका भी वाक्यहै ॥ अनीति पाठ १ और होम २ अतिथि पूजन ३ और तर्पण ४ और वैश्वदेववलि ५ इनापंचमहायज्ञांको न कर्के रोगादितें रहित होआ होआ और धनके भी होआं होआं जो गृहस्थी पुरुष अन्नका भक्षण करदाहै सो आधे कृच्छ व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥१॥ आहितेति अग्नि होत्री जो पुरुष अष्टमी १ और द्वादशी २ और अमावास्या ३ और पौर्णमासी ४ और सूर्य्य संक्रांति ५ इन पंचपर्वांके विषे होमनूं नहि करदा

नित्यकर्म्मलोपेतुमनुः ॥ वेदोदितानांनित्यानांकर्म्मणांसमतिक्रमे स्नातकव्रतलोपेचप्रायश्चित्तमभोजनम् ॥१॥ वेदविहितकर्म्मणामग्निहोत्रादीनामनुपदिष्टप्रायश्चित्तविशेषाणांचपरिलोपे मनुचतुर्थाध्यायोक्तानांस्नातकव्रतानांच लोप जाते एकाहोपवासंव्रतंकुर्य्यात् ॥ बृहस्पतिः ॥ अनिर्वर्त्यमहायज्ञान्योभुंक्तेप्रत्यहंगृही अनातुरः सतिधनेकृच्छार्द्धेनसशुद्ध्यति॥१॥ आहिताग्निरुपस्थानंनकुर्य्याद्यस्तुपर्वाणि ऋतौनगच्छेद्भार्य्यांयः सोपिकृच्छार्द्धमाचरेदिति॥२॥ स्नातकव्रतमधिकृत्यक्रतुनाप्युक्तम्॥एतेषामाचाराणामेकैकस्यव्यतिक्रमेगायत्र्यष्टशतंजप्त्वापूतोभवति॥ अत्रविशेषोऽग्रेबोध्यः । ऋष्यशृंगः ॥ इन्द्रचापपलाशाग्नियद्यन्यस्यप्रदर्शयेत् प्रायश्चित्तमहोरात्रंधनुर्दंडश्चदक्षिणेति ॥१ ॥इन्द्रचापोमेघांतरीयः अकस्मात्पलाशेषुपत्रेषुजातोयोऽग्निःसपलाशाग्निः इंद्रचापप्रदर्शनेधनुर्दक्षिणा पलाशाग्निप्रदर्शनेदंडइति

और जो पुरुष ऋतुकालके विषे अपणी स्त्रीमें गमन नहि करदा सोभी अर्द्धकृच्छ्र व्रत नूं करे ॥ २ स्नातक व्रतकों अधिकार करके ऋतुजीनेभी कहाहै ॥ एतइति इनां कर्म्मां के मध्यमें एकके भी व्यतिक्रमके विषय अर्थात् नाशदे होआंहोआं गायत्रीको एकसौ आठ वार १०८ जप करके पवित्रहोता है ॥ इसके विषय अधिक कहणाहै सो आगे जाणलैणा ऋष्यशृंग जीका वाक्यहै मेघ वर्षणतें पीछे जो आकाशके विषें इंद्रका धनुष पडताहै तिसकों और पत्रांके विचस्वभावक उत्पन्न होआ जो अग्नि है तिसकों जद औरी पुरुषकों दखावे तब एक दिन रात्र उपवास करे अर धनुष और दंड एह दक्षिणा देवे अर्थात् इंद्रचाप दखांणेमें धनुष दक्षिणा अर पलाशअग्नि दखाणेमें दंडा दक्षिणा ॥ १ ॥

शंखऋषिका वचनहै अध्येति॥पलाशवृक्षकी खट्ट और गाडी और पौये और दातन इनांकों प्राप्तहोकरके ब्राह्मण और क्षत्रि और वैश्य तीन ३ रात्र उपवास व्रतकरे।१। अब क्षत्रीकों युद्ध के विषय नसनेका दोष कहतेहैं क्षत्रीति क्षत्रीजो युद्धके विषय मृत्युतें डरता होआ नस्सआवे अर फलवाले वृक्षकों जो काटताहै सो पुरुष एक वर्षपर्यंत व्रतकोंकरे इसमें यावक व्रतग्रहण करणा अर्थात् यव भक्षणकरणे पूर्वोक्त शंखजीके वाक्यतें।२। दो ब्राह्मणआदिके वीचलंघणे का दोष कहतेहैं ॥ द्वाविति दो ब्राह्मण १ ब्राह्मण और अग्नि २ अर स्त्री और पति १ अर गौ और बैल ४ इनके मध्यमे जवपुरुष लंघे तव सांतपन कृच्छ्र व्रतकों करे ॥ ३॥ इसी विषयमें जो अंगिरा ऋषिका बाक्यहै ॥ दंपती स्त्री और भर्त्ता अर दो ब्राह्मण

शंखः ॥ अध्यास्यशयनंयानंपादुकांदन्तधावनम् द्विजःपलाशवृक्षस्यत्रि रात्रंतुव्रतीभवेत्।१।क्षत्रियस्तुरणेपृष्ठंदत्त्वाप्राणपरायणः।संवत्सरंव्रतंकुर्या च्छित्त्वावृक्षंफलप्रदम्।२।व्रतमत्रयावकंशंखोक्तत्वात्।॥।द्वौविप्रौब्राह्मणा ग्नीबदंपतीगोवृषौतथा अन्तरेणयदागच्छेत्कृच्छ्रंसातपनंचरेत्॥ ३ ॥ यत्त्व गिराः दंपत्योर्विप्रयोरग्न्योर्विप्राग्न्योर्वाद्विजातिषु अंतरंयोऽवगच्छेतुद्विज श्चान्द्रायणंचरेदित्येतत्कामकारविषयमभ्यासविषयंच॥होमकालेतथादोहे स्वाध्यायेदारसंग्रहे।अन्तरेणयदागच्छेद्द्विजश्चान्द्रायणंचरेत्।२। एतच्च मार्गान्तरसंभवेसतिद्रष्टव्यम् दोहे सान्नाय्यांगभूते ॥

२ दो अग्निआं ३ अर ब्राह्मण और अग्नि ४ इनकेमध्यमे ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य जो लंघता है सो पुरुष शुद्धिके वास्ते चांद्रायण व्रतकोंकरे । १ । एहकाम और अभ्यासका विषयहै ॥ अव और कथन करतेहैं । होमेति होम कालके विषय तिसप्रकार गौके दोहन स- मयमें अर अध्ययन समयमें अर विवाह समयमें ब्राह्मण अर क्षत्रि अथवा वैश्य जद मध्यमें लंघताहै सो शुद्धिके वास्ते चांद्रायण व्रतकोंकरे एहदोष दूसरे मार्गके होआंहोआ जानणा जेकर और मार्ग नहोवे तव इसका दोषनहि जानणा इसजगा जो दोहनहै सो सान्नाय्यांग रूपजो यज्ञ कर्म्म तिसके अर्थवाले दोहनमे जानणा ॥ २ ॥

जलतें बिना मूत्र उोर पुरीष करणमें सुमंतुका भी वाक्यहै अनुदेति जलतें विना मूत्र उोर पुरीषइ नके त्यागनेके विषय अर नख उोर वाल उोर रुधिर इनके भक्षण करणेमें तात्काल स्नान करे अर घृत उोर कुशा उोर स्वर्ण इनका जल पानकरे इसमें घृतादि पानकों प्रायश्चित्तके अर्थ हो णेतें भोजन भक्षण न करणा किंतु उसीको भोजनके स्थानसमझणा यत्त्विति जो मूत्रउोर पुरीष इनके कीतिआं जइ जल न होवे तब जलकोंप्राप्त हो करके सहित वस्त्रांदे स्नान करके पी छेतें शुद्ध होताहै इह वाक्यहै ॥ १ ॥ उोर जो शातातपका वाक्यहै अनुदेति जलतें विना मूत्र उोर पुरीष करणेमें सहित वस्त्रांके स्नानकरे उोर सप्त महाव्याहृतिआं करके हवन करे एह

अनुदकमूत्रपुरीषकरणे सुमंतुरपि अनुदकमूत्रपुरीषकरणेनखकेशरुधि रप्राशने सद्यःस्नानं घृतकुशहिरण्योदकपानंचेति अत्र घृतादिपान स्य प्रायश्चित्तार्थत्वाद्भोजननिषेधः यत्तुकृतेमूत्रेपुरीषेवायदानैवोदकंभ वेत् स्नात्वालब्ध्वोदकंपश्चात्सचैलस्तुविशुद्ध्यतीति १ यच्च शातातपः अनुदकमूत्रपुरीषकरणे सचैलस्नानंमहाव्याहृतिहोमश्चेति तदकामतः तथा नोदन्वतोंभासिस्नायान्नचश्मश्र्वादिकर्त्तयेत् अंतर्वत्न्याः पतिःकुर्व न्नप्रजोभवतिध्रुवम् ॥ १ ॥ अयंचनिषेधःसप्तममासादूर्ध्वम् तथाच त्रि स्थलीसेतौवचनम् वपनंमैथुनंतीर्थंवर्जयेद्गुर्विणीपतिःश्राद्धंचसप्तमान्मा सादूर्ध्वंनाऽन्यत्रवेदविदिति ॥ १

वाक्य अकामके विषयमे जानने॥तिस प्रकार गर्भवाली स्त्रीके पतिको समुद्र स्नानादिका निषेध करतेहैं नविति गर्भवाली स्त्रीका पति समुद्रके जलविषय स्नान न करे अर दाडीआदिके वा लांनू भी न कटावे जो कदाचित् एह काम करे तब निश्चय करके संतानतें रहित होताहै एह निषेध सप्तम मासते उपरंत जानना सप्तम मासतें उरे इनका दोष नहि जानना १ ॥ तिस प्रकार त्रिस्थली सेतुमें भी किसेका वचन लिखाहै वपनमिति गर्भवाली स्त्रीकापति वेदके जानने वाला सप्तम मासतें उपरंत मुंडन उोर मैथुनउोर तीर्थयात्रा उोरश्राद्धका भोजन इनानूं नसेवे १

इस विषय साधारण प्रायश्चित्त जोडनें योग्यहै तैसै दखाते हैं॥ प्राणेति इसजगा ऐसा अर्थ करणाकि उपपातक जिनोंतें उत्पन्न होतेहैं जैसे अवगूरणादिते गोवध रूप उपापतक उत्पन्न होताहै ऐसे सभपापांके दूरकरणें वास्ते और अनादिष्टजोपाप हैं (नोंदन्वतोंभसिस्नायात्) इत्यादिश्लोंकांककें कहेहोए तिना सबनां पापांके दूरकरणे वास्ते १०० प्राणायामकिहाहै सर्व शब्दका अन्यइस रीतिसें लगाणा यथा श्रुत नहि लगाणा क्योंकि १०० प्राणायामसे सारे पाप नहि दूरहो सक्के ॥१॥ याज्ञवल्क्यजीका वाक्य कथनकरतेहैं देशमिति देश

श्राद्धंश्राद्धभोजनमित्यर्थः अत्र सामान्यप्रायश्चित्तंयोज्यम् तद्यथाप्राणायामशतंकार्य्यंसर्वपापापनुत्तये उपपातकजातानामनादिष्टस्यचैवहीति ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः देशंकालंवयःशक्तिंपापंचावेक्ष्ययत्नतःप्रायश्चित्तंप्रकल्प्यंस्याद्यस्यचोक्तानानिष्कृतिरिति १ ॥ मनुः॥शरणागतंपरित्यज्यवेदंविप्लाव्यचद्विजः संवत्सरंयवाहारस्तत्पापमपसेधति॥१॥अर्थः॥परित्राणार्थमुपगतं शरणागतं शक्तःसन्नुपेक्षतेयोद्विजःअनध्याप्यवेदमध्याप्य एतज्जनितंपापं संवत्सरं निरंतरं यवाहारोऽपनुदति उपपातकानिगोवधादीनि जातानियेभ्योऽवगूरणादिभ्यस्तानितेषांचपुनरनादिष्टस्यनोदन्वतोंभासिस्नायादित्यादिनाकथितसर्वपापापनुत्तये प्राणायामशतंकार्य्यमित्यर्थः

और कालऔर आयुषा और वल और पाप इनांनू देखकरके यत्ननाल प्रायश्चित्त कल्पना करना चाहिए अरजिसपापका प्रायश्चित्त नहिकहा तिसका भी यथा योग्य प्रायश्चित्त कल्पना करण चाहिए।१।आगे मनुजीका वाक्यहै॥ शरेति रक्षाके अर्थ वास्ते शरणी आनपडा जोपुरुषहै तिसनू जो समर्थ होआ पुरुष त्याग देताहै और वेदनू आप ना पड करके जो पुरुष दूसरे नू भडाताहै सो पुरुष एक १ वर्ष पर्यंत यवांनू भक्षण करदा होआ तिस पापनूं दूर करताहै अर्थः इत्यादि पदों कर्के इसी श्लोक का हि अर्थ कीताहै ॥ १॥

षट्त्रिंशत्के मतविषय यमजीका वाक्यहै ॥ चांडालेति वेदऔर मन्वादिस्मृति इनके पाठनूं चांडाल श्रवण कर लेवे तव पाठ करणेवाला पुरुष एकरात्र उपवास व्रत करे ॥ वसिष्ठजी कहतेहैं ॥ पतितेति ॥ पापी और चंडाल और धूर्त इनके समीप जानकरके जो वेद पढे तव तीन ३ रात्र उपवास करें वाणनूंरोक करके स्थितहोंणा भोजन नूं न भक्षण करदेहोए स्थित होणा अथवा जितनाक पाठ चांडालादियोंने श्रवण कीताहै तितने पाठ नूं हजार १०००वार जपें तद पवित्र होतेहैं ॥ शठश्रावणं इत्यादिपदोंमें एहि अर्थहै ॥ सर्पादिकेमध्यमें गमन करणेमें यमजी

षट्त्रिंशन्मते ॥ यमः ॥ चांडालश्रोत्रावकाशे श्रुतिस्मृतिपाठे एकरात्रमभोंजनमिति वुद्धिकृते तु वासिष्ठश्राः ॥ पतितचांडालशठश्रावणे त्रिरात्रम् वाग्यता अनश्नंत आसीरन् सहस्रपरंवा तदभस्यन्तःपूताभवंतीति विज्ञायते शठश्रावणं शठसंन्निधावध्ययनम् सहस्रपरमितियावान्भागश्चांडालादिभिःश्रुतस्तावंतंभागंसहस्रकृत्वोजपेदित्यर्थः ॥ सर्पादेरंतरागमनेतुयमआह ॥ सर्पस्यनकुलस्याथअजमार्जारयोस्तथा मूषकस्यतथोष्ट्रस्यमंडूकस्यचयोषितः १ पुरुषस्यैडकस्यापिशुनोऽश्वस्यखरस्यच अन्तरागमनेसद्यः प्रायश्चित्तमिदंशृणु त्रिरात्रंह्युपवासश्चत्रिरहश्चाभिषेचनामिति २

किसेके प्रति कहतेहैं ॥ सर्पेति सर्प और नेउल ॥ और वकरा और विल्ला ॥ और तिसी प्रकार चूहे और तिसी प्रकार ऊठ॥ और डिड्डू और स्त्री ॥१॥ और पुरुष और भिड्डू और कुत्ता और घोडा अथवा गधा इनके मध्यमें लंघनके विषय तात्काल प्रायश्चित्तनूं श्रवण कर क्याकि तीन रात्र उपवास अर तीन दिन तिन्नां कालांके विषय स्नान करणा २ ॥ इस विषयमें भी दोष और किसी मार्गके विद्यमान होआं जानना जेकर होर मार्ग न होवे तां इनकें मध्यमें लंघनें का दोष नहि ॥

प्रकीर्णेति प्रकीर्णक प्रायश्चित करणमें जद समर्थ न होवे तद नवीन सूई होई एक गौका दानकरे जब इसमें भी समर्था न होवे तव एक सौ १०० कौडी दान करे अर शक्तिके अनुसार दक्षिणा देवे ॥ अपणी स्त्रीकों मिथ्यादोषारोपणके विषय यम जीका वाक्यहै स्वभार्यामिति तूं नहि मैथुन करणेके योग्य ऐसें जद पुरुष अपणी स्त्रीको क्रोधतें कथन करे तद ब्राह्मण प्राजापत्य व्रत कों करे अर क्षत्री नौ ९ दिन व्रत करे अर वैश्य छे ६ रात्र व्रत करे अर शूद्र तीन ३ रात्र व्रत करे ॥ १ ॥ स्नानतें विना भोजनादिके विषय हारीतजी कथन

एतदपिमार्गांतेरसंभवेसतिज्ञेयम्) प्रकीर्णकप्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानम् ॥ तदशक्तौचूर्णीदानम् ॥ कपर्द्दिकाशतंचूर्णी यथाशक्ति दक्षिणा स्वभार्याभिशंसनेतुयमः ॥ स्वभार्यांतुयदाक्रोधादगम्येतिनरोवदेत् प्राजापत्यंचरेद्विप्रःक्षत्रियोदिवसान्नव षड्रात्रंतुचरेद्वैश्यस्त्रिरात्रंशूद्रआचरेत् ॥ १ ॥ अस्नातभोजनादौ हारीतआह ॥ वहन्कमंडलुं रिक्तमस्नातोऽन्नंश्चभोजनम् अहोरात्रेणशुद्धःस्याद्दिनजप्येनचैवहीति ॥ १ ॥ एतच्चा रोगिस्नाने क्लेशदायिस्थानविशेषादिस्नानव्यतिरिक्तेद्रष्टव्यम् एकपंक्त्युपविष्टानांस्नेहादिना वैषम्येण दानादौ यमआह ॥

करतेहैं वहेति ॥ सखणे लोटे नू धारदाहोआ और स्नानतें विना जो पुरुष भोजन भक्षण करदाहै सो एक दिनरात्र उपवास करणे करके अर दिनके विषय जप करणे करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ एह प्रायश्चित्त अरोगि स्नान विषें और कष्टदे देणे वालाजो पर्वतादिहै तिसतें विनाग्रहण करणा अर्थात् रोगी पुरुषकों और वरफादि करके युक्तजो स्थानहै उसके विषय दोष नहि ॥ एक पंक्तिके विषें वैठे होए जो पुरुष हैं तिनकों न्यून अधिक घृतादि देणेकें विषय यमजी दोष कहतेहै ॥

नेति एकपंक्तिके विषें भेदकरके न देवे अर न मांगे अर नकिसीको दुवाए क्यों कि मांगने वाला अर दुवाणेवाला अर देणे वाला एह स्वर्गकों नहि प्राप्तहोते अर्थात् नरककों प्राप्त होते हैं और प्राजापत्य अथवा कृच्छ्र व्रतकोंकरके तिसकर्मतें शुद्धहोतेहैं ॥१॥ इसस्थानमें विषम क्या न्यूनताअधिकता भोजनखानवालिआंकी इच्छादे होआं होआं जाननी अर्थात् भोजन खाण वालेकी इच्छाहोवे अर वो न देवे तद दोषहैजेकर तृप्त होरएहोण एक न तृप्त होवे तदभी दोष नहि इसीविषयमें शंखजीका वाक्यहै एकेति एकपंक्तिकेविषें भोजन करदे जो पुरुषहैं तिनाकों जोभेद सें देताहै अर्थात् एककों बहुत एककों थोडा देताहै और जो भेदकरके मांगता है सो पुरुष ब्रह्महत्यारेके व्रत नूं एकपक्ष १५ पर्यंत करे ॥ १ ॥ यमजीका वाक्य है ॥ नदीति

नपंक्त्यांविषमंदद्यान्नयाचेतनदापयेत् याचकोदापकोदातानवैस्वर्गस्य गामिनः प्राजापत्येनकृच्छ्रेणमुच्यंतेकर्मणस्ततः १ विषममत्रसहोपविष्टभोजकांतराकांक्षानिरासे सति बोध्यम् ॥ शंखः ॥ एकपंक्त्युपविष्टानांविषमंयःप्रयच्छति यश्चयाचत्यसौपक्षंकुर्याद्ब्रह्महणिव्रतम् १ याचति याचते ॥ यमः ॥ नदीसंक्रमहंतुश्चकन्याविघ्नकरस्यच समेविषमकर्त्तुश्च निष्कृतिर्नोपपद्यते ॥ १ ॥ त्रयाणामपिचैतेषांप्रत्यापत्तिंतुमार्गताम् भैक्ष्यलब्धेनचान्नेनद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति ॥ २ ॥ संक्रम उदकावरणमार्गः समे पूजादौ ॥ पतितादिसंभाषणे तु गौत्तमआह ॥ नम्लेच्छाशुद्धाधार्मिकैः सहसंभाषेत संभाष्यपुण्यकृतोमनसाध्यायेद्ब्राह्मणेन वासहसंभाषेत

नदीके घाटकों जो ढादेताहै अर कन्याके विवाहादिके विषय विघ्नकों करदा है अर पूजादिके विषयमें विषमता करदा है इनकी शुद्धि नहि होती ॥ १ ॥ इनतीनोंकीशुद्धिदेखणी चाहिए किभिक्षादे अन्नकरके ब्राह्मण अर क्षत्रि अथवा वैश्य चांद्रायणव्रतनूंकरे । २ संक्रमइत्यादिपदोंमें इसीका अर्थस्पष्टकीताहै और पतितादिके संभाषणके विषय गौत्तमजीका वाक्यहै नेति म्लेच्छ और अशुद्ध औरअधार्मिक इनके साथ धार्मिक पुरुष संभाषण न करे जेकर संभाषण करेतांपुण्यदेकरण वालिआं पुरुषांनूं राजा नल और युधिष्ठिरादिकाकों मनकरके स्मरणकरे अथवा ब्राह्मणके साथ संभाषण करे तो शुद्ध होताहै

म्लेच्छ नाम उसकाहै जो गौका मांसभक्षण करणवाला यवनजाति विशेष होवे और अशुद्ध उसका नामहै जो रजस्वलागमनादिवालाहोवे शय्या और धनके लाभके विघ्न विषय भिन्न भिन्न वर्षांकों कहतेहैं ॥ इसी स्मृति का अर्थ लिखतेहैं भार्य्येति स्त्री अर अन्न अर धन एह किसीकों प्राप्त होने लगें तिस विषय जो विघ्न करणाहै तिसके विषयमें एक एक वर्ष सामान्य ब्रह्मचर्य लिखाहै अर्थात् इस ब्रह्मचर्य्यमे स्त्री संभोगते विना और कोई विधान नहि चौरादिके दंड त्यागके विषय वसिष्ठजी का वाक्यहै दंडविति राजा चोरादिकों जब दंड न देवे तब एक रात्र उपवासकरे अर राजाका पुरोहित तीन ३ रात्र उपवासकरे अर दंडके योग्य नहि जो पुरुष तिसको जब राजा दंडदेवे तब पुरोहित कृच्छ्र व्रत करे अर राजा तीन ३ रात्र उपवासकरे ॥ कुनेति कुनखी क्या खोटे नखां वाला अर स्वभाव

म्लेच्छा गोमांसभक्षका यवनविशेषाः अशुद्धाउदक्यादिगामिनः तल्पान्न धनलाभवधे पृथग्वर्षाणीति ॥ भार्यान्नधनानांलाभस्यवधे विघ्नकरणेप्रत्ये कंसंवत्सरंप्राकृतंब्रह्मचर्य्यमित्यर्थः प्राकृतंसामान्य मष्टविधस्त्रीसंभोग त्यागरूपं नतु सविधानम् ॥ चौराद्युत्सर्गादौवसिष्ठः ॥ दंडोत्सर्गेराजैकरात्र मुपवसेत्त्रिरात्रंपुरोहितः कृच्छ्रमदंडयदंडे पुरोहितास्त्रिरात्रंराजा कुनखी श्यावदंतश्च कृच्छ्रं द्वादशरात्रंचरित्वोद्धरेयातामिति ॥ दंतान्नखांश्चेत्य भिप्रेतम् ॥ स्तेनपतितादिपंक्तिभोजनेतु मार्कण्डेयः ॥ अपांक्तेयस्ययःक श्चित्पंक्तौभुंक्तेद्विजोत्तमः ॥ अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्धयतीति १

तेंहैं कालिआं दंदां वाला एह दोनों बारां १२ दिन कृच्छ्र व्रत कों करके खोटिआं नखां की अर दंतांकी कृष्णता कों त्यागदेतें हैं अर्थात् तिन्नरोगतें रहित होतेहैं क्योंकि लिखाहै कि स्वर्णके चुराणे वाला कुनखी होताहै अर मदिराके पान करणे वाला श्यावदंतक होताहै इस वास्ते तिनकों प्रायश्चित्त करणा चाहिए ॥ चोर और स्वधर्म त्यागी इत्यादियों की पंक्तिके भोजन विषयमें मार्कंडेयजीका वचनहै ॥ अपामिति पंक्तिके अधिकारतें रहित जो चोरादि हैं तिनके साथ एक पंक्तिके विषय बैठ करके ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य इनके मध्यमें श्रेष्ट जो पुरुष भोजन करताहै सो एक १ दिन रात्र उपवास रक्ष कर पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

भविष्य पुराणमें नीलका दोष लिखाहै ॥ नीलीति नीलके क्षेत्रके विचों जद अज्ञानतें कदाचित् ब्राह्मण लंघजावे तद एक दिन रात्र उपवासकों करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अव नीलकी दातनका दोष कहतेहैं ॥ कुर्य्येति जो पुरुष अज्ञानतें नीलके काष्टकी दातन करताहै तद सो पुरुष एक दिन रात्र उपवासकों करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै २ ॥ नीलीरसकें अंदर जानेमें आप स्तंवजी दोष कहतेहैं रोमेति जव तीनो वर्णों मेंसें किसीपुरुष के रोमकूपोमें नीलीका रस चला जावे तो सामान्य से तप्तकृच्छ्र व्रत प्रायश्चित्त कहाहै ॥ १ उर ब्राह्मणका पाप तीन ३कृच्छ्रों कर्के शुद्ध होताहै औरनीलीकी दातनादिकरनेसें ब्राह्मणके

भविष्ये नीलीमध्येयदागच्छेत्प्रमादाद्ब्राह्मणःक्वचित् अहोरात्रोषितोभूत्वा पंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ कुर्य्यादज्ञानतोयस्तुनीलीजंदंतधावनम् एक रात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ २ ॥ आपस्तंवः॥ रोमकूपेयदागच्छे द्रसोनील्यास्तुकस्यचित् त्रिवर्णेषुचसामान्यंतप्तकृच्छ्रंविशोधनम् ॥ १ ॥ पातनंचभवेद्विप्रैस्त्रिभिःकृच्छ्रैर्व्यपोहति ॥ नीलीदारुयदाभिंद्याद्ब्राह्मणस्यश रीरतः शोणितंदृश्यतेयत्रद्विजश्चांद्रायणंचरेत् ॥ २ ॥ नीलीरक्तंयदावस्त्रं ब्राह्मणांगेषुधारयेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ भृगुः स्त्रीधृताशयनेनीलीब्राह्मणस्यनदुष्यति नृपस्यवृद्धवैश्यस्यपर्ववर्जंविधारण म् ॥ १ ॥ विधिनाधारणंविधारणं नसाक्षात् तदपि पर्वसु संक्रांत्यादिषु न धार्य्यमित्यर्थः ॥

शरीरतेंजव रुधिर निकले तव द्विज अर्थात् व्रह्मण क्षत्री वैश्यएह चांद्रायणव्रतकों करे वो शुद्धहोताहै २ नीलीति जद नील करके रंगे होए वस्त्रकों ब्राह्मण शरीरके विषय धारण करे तव एक १ दिन रात्र उपवास व्रत कों करके पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होता है ॥ ३ ॥ इसीमें भृगुजीका भी वचन है ॥ स्त्रीति स्त्रीनें धारिआ होआ जो नीला वस्त्रहै स्त्रीकी क्रीडा समयके विषय ब्राह्मणकों तिसका दोष नहि क्षत्री अर वृद्धवैश्यइनकों पंच पर्वोतें विना विधिकरके नीले वस्त्रका धारण लिखाहै अर्थात् संक्रांति अर अष्टमी और द्वादशी और अमावस्या और पौर्णमासी इनपंचपर्वोंमें विधि करके भी नहि धारणा लिखा १

वस्त्रके भेद करके इसका दोष नहि सो दखातेहैं ॥ कंवेति कंवलके विषय अर पट्टके वस्त्रके विषें नीलके रंगका दोष नाहि अर्थात् नीली लोई अर नीला पट्टका वस्त्र इनके धारणेका दोष नहि ॥ भविष्य पुराणके बिषये और भेद कहाहै ॥ शृणुष्वेति किसे ऋषिका किसे राजाके प्रति कथनहै ॥ हे वडीआं भुजांवाले हेगणांके मध्यमे श्रेष्ट संपूर्णतासें कथन करदा जो मै हां ऐसे मेरेतें नीले वस्त्रके धारणेतें दोषकों श्रवण कर ॥ १ ॥ पालेति नीलका पालना अर नील करके उपजीविका करणी इनोंकर्मों करके ब्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्य पतितहोताहै अर तीन ३ वर्षों कर्के अर्थात् तीनवर्षतक कृच्छ्र व्रतकरणे कर्के शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ और प्रकार कथन करतेहैं नीलेति नीले वस्त्रकों धार कर्के जिस कर्म कों

वस्त्रविशेषकृतोपिक्वचित्प्रतिप्रसवो यथा ॥ कंवलेपट्टसूत्रेचनीलीरागो नदुष्यतीति ॥ भविष्येऽपरोविशेषः ॥ शृणुष्वेतिमहावाहोनीलरक्त स्यधारणात् वाससोगणशार्दूलगदतोममकृत्स्नशः ॥ १ ॥ पालना द्विक्रयाच्चैवतद्वृत्तेरुपजीवनात् पतितस्तुभवेद्विप्रस्त्रिभिर्वर्षैर्विशुद्ध्यति २॥ नीलरक्तेनवस्त्रेण यत्कर्म्मकुरुतेद्विजःस्नानंदानंतपोहोमःस्वाध्यायः पितृ तर्प्पणम् ॥ ३ ॥ वृथातस्यमहायज्ञानीलवस्त्रस्यधारणात् नीलरक्तंयदाव स्त्रंकश्चिद्विप्रस्तुधारयेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ ४ एवमेव केशनिर्म्मितवस्त्रपरिधारणेचोपवासः पंचगव्यंहिरण्योदकंचाधि कमिति केशाश्चात्रोर्णाव्यतिरिक्ताः स्थूलावोध्याः ॥स्त्रीणांक्रीडार्थसंभो गेशयनीयेनदुष्यतीति ॥

करताहै और स्नान और दान और तप और होम और पाठ और पितृतर्पण ॥ ३ ॥ और पंच पूर्व लिखे जो पंच महायज्ञ एह संपूर्ण नीलवस्त्रके धारणेतें तिस पुरुषके वृथाहि होतेहैं और प्रकार कहतेहैं नीलेति नीलेवस्त्रकों जदकोइ ब्राह्मण धारदाहै तद एक दिन रात्र उपवासकों करके पश्चात् पंचगव्यकेपीने करके शुद्ध होताहै ॥ ४ ॥ इसी प्रकारवालांका जो वस्त्र तिसके धारणेमे उपवास और पंच गव्य और स्वर्णका जल इन करके शुद्धि होतीहै ॥ केश पद करके इहां उन्नके वस्त्रतें विना वकरे आदिके केश ग्रहण करणे स्त्रीयोंकी क्रीडाके अर्थ शय्याके विषय नीले वस्त्रका दोष नहि ॥

सहित छेकके सूर्य और चंद्रादि औरअशुभ शिवारुतादि इनके दर्शनके विषय शंख जीका वा कयहै ॥ दुरिति खोटास्वप्न और उत्पात इनके दर्शनादिके विषय घृत और स्वर्णदान करै यमजीका वचन है प्रत्येति सूर्यके सन्मुख होकर लघी न करे क्या न मूत्रे अर दिशा वे ठाहोआ अपणे विष्टेनूं न देखे जबदेखे तद पश्चात् सूर्य और ब्राह्मण अथवा गौ इनका दर्शनकरे । १ । शंखजीका वाक्यहै ॥ पादेति अग्निके विषय पयरांनूं सेक करके अर पयर सें अग्नि नू हिठां दवाकरके अर कुशानाल पयरां नू पूंजकरके एक दिनउपवास व्रत करे॥ १ वृद्धपराशरकाभीएही कथनहै ॥ क्षत्रियादिकों नमस्कारकरणके विषय हारीतजीका वचनहै क्षत्रीति क्षत्रीकों जद ब्राह्मण नमस्कार करे तव एक दिनरात्र उपवास करे अर वैश्यकों नमस्कार करेतद

सछिद्रादित्याद्यरिष्टदर्शनादौ शंखः दुःस्वप्नारिष्टदर्शनादौ घृतंहिरण्यंच दद्यादिति ॥ यमः ॥ प्रत्यादित्यंनमेहेतनपश्येदात्मनःशकृत् दृष्ट्वासूर्यं निरीक्षेतब्राह्मणंगामथापिवा ॥ १ ॥ शंखः ॥ पादप्रतपनंकृत्वाकृत्वावाह्नि मधस्तथा कुशैःप्रमृज्यपादौतुदिनमेकंव्रतीभवेदिति ॥ १ ॥ वृद्धपराशरोक्तिरपीयम् ॥ क्षत्रियाद्यभिवादने हारीतः ॥ क्षत्रियाभिवादनेऽहोरात्रमुपवसेत् ॥ वैश्यस्याभिवादनेद्वौशूद्रस्याभिवादनेत्रिरात्रमुपवासः॥तथा॥ शय्यारूढपादुकोपानदारोपितपादोच्छिष्टांधकारस्थश्राद्धकृज्जपदेवपूजादिरताभिवादने त्रिरात्रमुपवासःस्यादन्यत्रनिमंत्रितेनान्यत्र भोजनेऽपि त्रिरात्रमिति ॥

दो २ दिन उपवास करे अर शूद्रकों नमस्कार करे तब तीन ३ रात्र उपवास करे तिस प्रकार शय्यादिओंके ऊपर आरूढ पुरुषकों नमस्कार करणेका दोष कथन करतेहैं शय्येति खट्ट ऊपर जो स्थित होआ होआहै और पौए और जोडा एह जिसने पयरोंमेलाए होए हैं और जूठाजो है और अंधकारविषे जो स्थित है और श्राद्ध नूं जो करता है और जप और देव ताको पूजा इत्यादियोंमें जो लगाहुआ है इनके नमस्कार करणेमे तीन ३ रात्र उपवास लिखाहै।और निमंत्रण कीता होआ और स्थानमें भी जो भोजन करताहै अर्थात् एकस्थानमें भोजन करके और स्थानमेभी जो खाताहै तिसकोंभीनमस्कार करणेमें तीन३ रात्रहि उपवासलिखाहै

समीति समिधां और पुष्प इत्यादि जिसके हाथमेंहैं तिसकोंभी नमस्कार करणेमें तीन ३ रात्रहि उपवास लिखाहै ॥ आपस्तंवस्मृतिमें भी एही लिखाहै ॥ समीति समिधां और पुष्प और कुशा और घृत और जल और मृत्तिका और अन्न और अक्षत एह हैं हाथमें जिसके अर जप और होम नूं करदा जो ब्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्यहै तिसनूं नमस्कार न करे ॥ १ ॥ जेकर जप आदिकां नूं करदा होआ जो पुरुष नमस्कार नूं करदा है तिस पुरुष कों भी एहि प्रायश्चित्त करणा लिखाहै॥जिस प्रकार शंखजी कहतेहैं ॥ नोदेति जलका कुंभहैहाथमे जिसके और मलोत्सर्गादिककर्के अशुद्ध जो है जप और देवताकार्य्य और पितृकार्य्य इनानूं करता होआ और खट्ट उपर आरूढ होआ होआ नमस्कारको नकरे ॥ यज्ञोपवीततें विना विष्ठा और मूत्रके त्यागआदिकांके विषय किसे स्मृतिमें प्रायश्चित्त कहाहै ॥ जैसे ॥ विनेति यज्ञोप

समित्पुष्पादिहस्तस्याभिवादनेऽप्येतदेव समित्पुष्पकुशाज्यांबुमृदन्नाक्षतपाणिकम् जपहोमंचकुर्वाणंनाभिवादेतवैद्विजमित्यापस्तंवीये ॥ जपादिभिःसमभिव्याहारादभिवादकस्यापीदमेवप्रायश्चित्तम् ॥ यथाह शंखः नोदकुंभहस्तोऽभिवादयेन्नाशुचिर्नजपन्नदेवपितृकार्य्यंकुर्वन्नशयानइति ब्रह्मसूत्रंविनाविण्मूत्रोत्सर्गादौस्मृत्यंतरे प्रायश्चित्तमुक्तम् ।यथा। विनायज्ञोपवीतेनयद्युच्छिष्टोभवेद्द्विजः प्रायश्चित्तमहोरात्रंगायत्र्यष्टशतंतुवा १। तत्रऊर्द्धोच्छिष्टे उपवासअधउच्छिष्टेऽन्नभक्षणउदकपानेचगायत्रीजपइति व्यवस्था ।भोजनेनोर्ध्वोच्छिष्टोविण्मूत्रोत्सर्गेणाधउच्छिष्टोभवतीत्यर्थः । अकामतस्तु ॥ पिवतोमेहतश्चैवभुंजतोऽनुपवीतिनः प्राणायामत्रिकंषट्कं नक्तंचत्रितयंक्रमादिति स्मृत्यंतरे ॥

वीततें रहित ब्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्य उच्छिष्ट जद होवे अर्थात् भोजनादि कर्के अपवित्र होवे तद एक १ दिन रात्र उपवास अथवा एक १ सौ१००अठ ८ वार गायत्री नूं जपे ॥ १ ।तिसके विषय एह व्यवस्थाहै कि जब भोजनकर्के उच्छिष्ट होवे तब एक दिनरात्र उपवासकरेअर जब विष्ठा और मूत्रकों त्यागकर और विनाशौचते अन्न भक्षण और जलकापान करे तव गायत्रीका जप करे इति ॥ भोजनखाकर ऊर्द्ध्वोच्छिष्ट होताहै और विष्ठा और मूत्रकों त्यागकर अधउच्छिष्ट होताहै॥ जब इच्छा सें न करे तिस विषय कहतेहैं ॥ पिवेति यज्ञोपवीतेंरहित जो जलादिकापान करदाहै तिसकों तीन ३ प्राणायाम करणे लिखेहैं अर विष्ठा और मूत्र नूं जो त्यागताहै तिसको छे६ प्राणायाम लिखेहैं अर भोजननूं जो करदाहै तिसको नक्त व्रत त्रय लिखेंहैं एह भी किसीस्मृतिमें कहाहै ॥ १ ॥

जो वृद्धपराशर जीने कहाहै सो इच्छा सें कीता जो अभ्यास तिसविषयमें है क्योंकि यज्ञोपवीति ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य यज्ञोपवीततें विना भोजन करताहै अथवा मूत्र और पुरीष और वीर्य इनानूं त्यागताहै ॥ १ ॥ तब ब्राह्मण तीन ३ रात्र उपवास करे अर क्षत्री कृच्छ्र व्रत का एक १ पाद करे अर्थात् चौथाहिस्सा कृच्छ्रव्रतका करे अर वैश्य एक १ दिनरात्र उपवासकरे इहशुद्धि सनातनीहै सो एहकामनातेबहुवारकरणेमेहै । २ । अन्नखाकर्के शुद्धिके वास्ते आचमननूं नकरके उठणके विषय पराशरजीहि कहतेहैं यदिति जइभोजननूं खाकर अर आचमन नूं नकर्के जोपुरुष आसनतें उठबैंदाहै तिसतें उपरंत सो पुरुष शुद्धिके अर्थ तात्काल स्नाननूं करें जेकर स्नान न करे तद प्रायश्चित्ती होताहै ३ ॥ नित्ययज्ञादिके न करणेमें आचारमाधवीयमें प्रजापतिने

यत्तु वृद्धपराशरः।यज्ञोपवीतेनविनाभोजनंकुरुतेद्विजः।अथमूत्रपुरीषेवारेतः सेचनमेववा १ ॥ त्रिरात्रोपोषितोविप्रःपादकृच्छ्रंतुभूमिपः अहोरात्रोषितोवैश्यःशुद्धिरेषासनातनीति। २। तत्कामतभ्यासे ॥ भुक्त्वाशौचार्थाचमनमकृत्वोत्थानेतुसएव ॥ यद्युत्तिष्ठेदनाचांतोभुक्तवानासनात्ततः सद्यःस्नानं प्रकुर्वीतसोऽन्यथाप्रयतीभवेदिति। ३ प्रयतीप्रायश्चित्ती। नित्ययज्ञाद्यकरणेतुआचारमाधवीयेप्रजापतिः ॥ दर्शंचपौर्णमासंचलुप्त्वाथोभयमेवच एकस्मिन्कृच्छ्रपादेनद्वयोरर्द्धेनशोधनम् १ ॥ हविर्यज्ञेप्यशक्तस्यलुप्तमप्येकमादितः प्राजापत्येनशुद्ध्येतपाकसंस्थासुचैवहि २ विधानपारिजातेएकविंशतिसंख्यागणनायां अष्टकापार्वणश्राद्धश्रावण्याग्रहायणीप्रोष्टपदीचैत्र्याश्वयुजीतिसप्तपाकयज्ञसंस्थाः अग्न्याधेयाग्निहोत्रदर्शपौर्णमासाग्रयणचातुर्मास्यनिरूढपशुबंधसौत्रामणीति सप्त हविर्यज्ञसंस्थाः ॥ अग्निष्टोमात्यग्निष्टोमोक्थषोडशीवाजपेयातिरात्राप्तोर्यामेति सप्त सोमसंस्थाः।

कहाहै दर्शमिति दर्श अथवा पौर्णमास यज्ञ नूं जो नहि करदा तिसकों कृच्छ्रव्रतका एक पाद करणा लिखाहै जो पुरुष दोनों कों नहि करदा तिसको आधा कृच्छ्र करणा लिखाहै ॥ १ ॥ जो पुरुष हविर्यज्ञके विषय असमर्थहै अर आदतें लेकर एकभी हविर्यज्ञ जिसका लोपहोंगिआहै सो पुरुष प्राजापत्य व्रतकर्के शुद्ध होताहै इसी प्रकारपाक संस्थाके विषय जान लैणा ॥ २ ॥ इसमे विधानपारिजातका वचनहै विधेति अग्न्याधेय १ और अग्निहोत्र २ और दर्शपौर्णमास ३ और आग्रयण ४ और चातुर्मास्य ५ और निरूढपशुबंध ६ और सौत्रामणी ७ एह सप्त हविर्यज्ञसंज्ञिकहैं पाकसंस्था क्याहै कि अष्टकाश्राद्ध १ और पार्वण श्राद्ध २ और श्रावणी ३ और आग्रहायणी ४ और प्रोष्टपदी५ और चैत्री ६ और आश्वयुजी७ एहसप्तपाकयज्ञसंस्थाहैं

संध्येति संध्योपासन और नित्यस्नान और होम और नित्यकर्म इनके भी नाश होआं होआं शुद्धि के वास्ते अठहजार ८००० गायत्रीका जप करें ॥ ३ ॥ सेति अग्निष्टोम १ और अत्याग्निष्टोम २ और उक्थ ३ षोडशी ४ और वाजपेय ५ और अतिरात्र ६ और आप्तोर्याम ७ एहसप्त यज्ञ सोमसंस्था हैं वर्षके अंतमे सोमयज्ञांके नाशदे होआं होआं चांद्रायण व्रत नूं करे और अधिकारहोणेतें इन यज्ञांके मध्यमे एक किसी नूं भी न करके उपवास व्रत करके शुद्ध होताहै पाकसंस्थाके विषय भी इसी प्रकार जाणा लैणा ॥ ४ ॥ कात्यायनजीका वचनहै पित्रिति पितृ यज्ञके नाशके विषय अर्थात् पितृतर्पणके नकीतिआं होआं और वैश्वदेव बलिके नकीतिआं होआं और नवें अन्नके भक्षण समयके विषय नवयज्ञ कर्के नपूजन कर्के और तिसी प्रकार पतितके अन्न का भक्षण कर्के शुद्धिके वास्ते चातुर्वैश्वानरी इष्टि नूं करे ॥ १ ॥ बौधायनजीका वाक्यहै यस्येति जिस पुरुषके

संध्योपासनहानौतुनित्यस्नानंप्रलोप्यच होमंचनैत्यकंशुद्ध्यैगायत्र्यष्टसहस्रकम्३ समांतेसोमयज्ञानांहानौचान्द्रायणंचरेत् अकृत्वान्यतमंयज्ञंयज्ञानामधिकारतःउपवासेनशुद्ध्येतपाकसंस्थासुचैवहीति ४ कात्यायनः। पितृयज्ञात्ययेचैववैश्वदेवात्ययेपिच अनिष्ट्वानवयज्ञेननवान्नप्राशनेतथाभोजनेपतितान्नस्यचातुर्वैश्वानरोभवेत् १ चातुर्वैश्वानरीमिष्टिंकुर्यादित्यर्थः ॥ बौधायनः ॥ यस्यनित्यानिलुप्तानितथैवागंतुकानिच विपद्यापिनसस्वर्गंगच्छेताऽऽपतितोहिसः१ तस्मात्कंदैःफलैर्मूलैर्मधुनाज्यरसेनवा नित्यंनित्यानिकुर्वीतनचनित्यानिलोपयेदिति २ ऋतौस्वपत्न्यगमनेतुविष्णुः। पर्वाऽनारोग्यवर्जंऋतावगच्छन्पत्नींत्रिरात्रमुपवसेदिति अत्र पर्वपदं ब्रह्मचर्य्यादिलोपोपलक्षकम् ऋतूरजःस्नानादिनादारभ्यद्वादशादिनानि

आपदा काल विषय भी नित्यकर्म अर्थात् पंचयज्ञ और आगंतुककर्म नष्ट होगयेहैं सो पुरुष स्वर्ग नूं नहि प्राप्त होता किंतुचारे और तें पतित होताहै ॥ १ ॥ तिस कारणतें कंद और फल और मूल और मधु और घृत और रस इनों कर्के दिन दिन प्रति अवश्यनित्यकर्मा नूं करे कदे भी नित्यकर्मांका नाश न करे ॥ २ ॥ ऋतुसमयके विषय अपणी स्त्रीके अगमनके विषय विष्णुजी का वचनहै पर्वेति संक्रांत्यादि पंच पर्व और रोग इना नूं वर्जित कर्के ऋतुसमयके विषय जो पुरुष अपणी स्त्रीके साथ मैथुन नहि करदा सो तीन ३ रात्र उपवास करे अर्थात् पंचपर्व और रोग इनके विषय ऋतुकालमें भी न गमन करे इस स्थानमे पर्व पद कर्के ब्रह्मचर्य्य और व्रतादि इनाके लोपकाभी ग्रहण करणा अर ऋतुपद कर्के क्या लैणा कि स्नानदिनतें आद लेकर बारां १२ दिनपर्यंत ग्रहण करणा ॥

जो संवर्त्तजीने कहाहै सो अकामके विषयमेहै अर्थात् उसकों कामनाथी परंतु किसे कार्य्यवशाथे गमन नहिहोया इसवास्ते थोडा प्रायश्चित्तकहाहै ऋताविति जो पुरुष ऋतुकालके विषय व्रतके आचरण करणवाली अपणी स्त्रीमे गमन नहिकरदा नियमके अतिक्रमकेभयतें तिस पुरुषकों एकसौ १०० प्राणायाम कथनकीताहै । १ । एह वाक्य निकट देशकेविषय रहणे वालेपर ग्रहण करणा अर दूर देशके विषय स्थित होवे तव दोष नहि क्योंकि मिताक्षरामें कहाहै ऋताविति समीपकेविषये निवास करदा होआ जो पुरुष ऋतु स्नात अपणी स्त्रीमेगमन नहि करदा सो पितरांके सहित वडी जो गर्भकी हत्याहै अर्थात् गर्भ हत्या वाला जो नरक है तिसमें डूवताहै ।२। इसवचनतें स्त्रीकोंभी ऋतुकालके विषयमें भर्ताके समीप न प्राप्तहोणका एहि प्राय

यत्तुसंवर्त्तः।ऋतौनोपैतियोभार्य्यांनियतांव्रतचारिणीं नियमातिक्रमात्तस्यप्राणायामशतंस्मृतमिति तदकामतः १ ॥ एतच्चसमानदेशविषयम् ॥ ऋतुस्नातांतुयोभार्यांसन्निधौनोपगच्छति घोरायांभ्रूणहत्यायांपितृभिःसह मज्जतीतिमिताक्षरावचनात् २ ऋतौभर्त्तुरनुपसर्पणेस्त्रिय अपि एतदेव प्रायश्चित्तम् ॥ तस्याअपिनारदीयेदोषश्रवणात् ॥ आहूतायातुवैभर्त्रानोपयातित्वरान्विता साध्वांक्षीजायतेपुत्रदशवर्षाणिपंचचेति ॥ १ ॥ तासुतुस्त्रीत्वादर्द्धम् ॥ अंगिराः ॥ अनापदिचरेद्यस्तुसिद्धांभिक्षांगृहेवसन् दशरात्रंपिवेद्वज्रमापत्कालेत्र्यहंद्विजः ॥ १ ॥ वज्रंवज्रकृच्छ्रसंबंधिद्रव्यमित्यर्थः देवादीनामाभिमुख्येनिष्ठीवनादौ सुमंतुः ॥

श्चित्त लिखाहै १ तिसकोंभी नारदीयपुराणकेविषय दोषकेश्रवण करणेतें सोकहतेहैं आहूतेति ऋतुकालके विषय भर्ता करके वुलाई होई जो स्त्री शीघ्र नहि प्राप्तहोती हेपुत्र सोस्त्रीपंदरां १५ वर्ष तककाकयोनिमेंप्राप्त होतीहै ।१। परंतुस्त्रीभावहोणेतें तिनांके विषय अद्धा प्रायश्चित्त लिखाहै अंगिराजीकावाक्यहै अनेति आपदाकालतें विनागृहके विषय निवास करदाहोआ जोपुरुष सिद्ध भिक्षाका आचरण करदाहै सो दश १० रात्र वज्रकृच्छ्र व्रतके विषय लिखीजो वस्तुहै तिसकापानकरे जब आपदाकालके विषय व्राह्मण और क्षत्रीअथवा वैश्यभिक्षाका आचरणकरे तव तीन ३ दिनपीवे १ । देवादिकोंके सन्मुख थुकणादिकांके विषयमें सुमंतुजीका वचनहै

देवैति देवता और ऋषि और गो और ब्राह्मण और गुरु और माता और पिता और राजाइ नके सन्मुखजोथुकेउँरझूठकहे सोअग्निकर्के जिह्वानूं साडदेवे औरस्वर्णदानकरे परंतु तिनना जिह् वानूंसेकदेवे जितने करके जीवतारहे एह जानलेणा। जनांका निवास स्थान और बाग और देवताका मंदिर इत्यादिके ढाणके विषयमें काश्यपजीका वचनहै वापीति बावली और खूआ और बाग और पुल और वेल और तला और नदी आदिकोंका कनारा और देवताकास्थान इनके ढाणके विषयमें ब्राह्मणांके तांई प्रायश्चित्त दस करके अर्थात् तिनांते पुछकर्के पश्चात्चार ४ घृतकीआं आहुतीआंका हवन करे आहुतीआं दखावतेहैं इदमिति(इदं विष्णु) इसमंत्र करके पहली आहुति करे (मानस्तोक)इसकरके दूसरी आहुति करणी अर (विष्णोःकर्माणि)इस कर

देवर्षिगोब्राह्मणाचार्य्यमातृपितृनरेंद्राणां प्रतिष्ठीवने आक्रोशने च जिह्वांदहेद्धिरण्यंदद्यादिति ॥ दाहोजीवनाविरोधेन ॥ मंडपोद्यानदे वतागारादिभेदे ॥ काश्यपः ॥ वापीकूपारामसेतुलतातडागवप्रदेवता यतनभेदनेप्रायश्चित्तंब्राह्मणेभ्योनिवेद्य ततश्चतस्र आज्याहुतीर्जुहुयात् इदंविष्णुरितिप्रथमाम् मानस्तोक इतिद्वितीयाम् पादोस्यांत्यामितिचतु र्थीम् ॥ देवतामुच्छेदयति तस्यैदेवतायै ब्राह्मणान्भोजयेदिति ॥ एत च्चाल्पोपघाते ॥ महत्युपघातेऽभ्यासेच प्राजापत्यादि कल्पनीयम् देव ताचात्रमृण्मयीपूजिताऽपूजिता वा ग्राह्या प्रायश्चित्तस्याल्पत्वात् अन्य त्रतु दंडगौरवदर्शनेन प्रायश्चित्तं कल्प्यम्

के तीसरी अर(पादोस्यांत्यां) इस करके चौथी आहुति करणी जो पुरुष देवताकी मूर्त्तिकों छेद ताहै सो तिस देवताके वास्ते ब्राह्मणानूं भोजन खुवाए एह प्रायश्चित्त थोडे नाशके विषय जानना अर जब बहुत छेदनकरे अर तिसीमें बहुत अभ्यासकरे तब प्राजापत्यादि व्रतकों करे। इस स्थानमें देवता मृत्तिकाकी पूजी होई अथवा न पूजी होई ग्रहण करणी प्रायश्चित्तकों थोडा होणेतें उँरजगां दंडको बडा देखणे करके प्रायश्चित्त बडा कल्पनाकरणा क्योंकि दंडकी न्याईंप्रायश्चित्त होताहै इसवचनतें अर्थात् थोडा पापहोवेतां थोडा प्रायश्चित्त अर बहुतपापहोवें तां बहुत प्रायश्चित्त दस्सणा ॥

तिसप्रकार इसके विषय दंडकीगौरवताकों कात्यायनजी कहतेंहैं हरेदिति जोदेवताकी प्रतिमाकों जद चुरालये अर खंडित करदेवे अर दग्धकरदेवे अर देवताके स्थानका भेदनकर देवे तद सो पुरुष उत्तम दंड कों प्राप्तहोवे ॥ १ तीन ३ प्रकारका दंड याज्ञवल्क्यजीने लिखाहै उत्तमदंड १ औंर मध्यमदंड २ औंर अधमदंड ३ जों एक हजार १००० औंर अस्सी ८० पैसे चढ़ा है सों उत्तमदंडहै अर इसते आधा मध्यमदंड है अर इसतेंभी आधा अधम दंड है ॥ इति ॥ विष्णुजीका वाक्यहै अभेति थोमादि औंर नहि वेचने योग्य जों वस्तु इनके वेचने वाला औंर

दंडवत्प्रायश्चित्तंभवतीतिवचनात्) तथाऽत्रदंडगौरवमाहकात्यायनः हरे
च्छिद्याद्दहेद्वापिदेवानांप्रतिमांयदि तद्गृहंचैवयोभिंद्यात्प्राप्नुयात्पूर्वसाहसम् १
विष्णुरपि ॥ अभक्ष्यस्याविक्रेयस्यचविक्रयी प्रतिमाभेदकश्चोत्तमसाहसंदं
डनीयः ॥शंखलिखितौ ॥ प्रतिमारामसंक्रमध्वजसेतुनिपातनभंगेषु तत्समु
त्थापनंप्रतिसंस्कारोऽष्टशतंचेति कूपादिसमीपेऽल्पजलाशयोनिपातनम्
यद्वाप्रतिमादीनांनिपातनेभंगेचसति ॥ निपातनेतत्समुत्थापनंभंगेप्रतिसं
स्कारइत्यर्थः ॥ मनुः ॥ संक्रमध्वजयष्टीनांप्रतिमानांचभेदकः ॥ प्रति
कुर्य्याच्चतत्सर्वंपंचदद्याच्छतानिच ॥ १ ॥

देवताकी मूर्त्तिके छेदने वाला एहदोनों उत्तम दंडके योग्यहैं इसी विषयमें शंख औंर लिखितका भी वचनहै प्रतीति देवताकी मूर्त्ति औंर वाग नदी तला आदिक पत्तन औंरपुल औंर कूपदिके समीप थोंटा जिआ जलका स्थान इनके भेदन करणे वाला तिनानूं फेर नवीन वणावे अथवा पांचसौ ५०० पयसा दान करें ॥ इसीवाक्यमे मनुजीने भी लिखाहै ॥ संक्रेति जलका घाट औंर धजा औंर लाठी औंर देवताकी छोटी जैसी मृत्तिकादि मूर्त्ति इनके छेदन करणे वाला इनां संपूर्णां नूं नवीन वणावे अथवा पांचसौ ५०० पण दान करें ॥ १ ॥

सामिति संक्रम इत्यादि पदोंमें इसी श्लोककाहि अर्थ स्पष्ट कीताहै इसस्थानमें प्रतिमाके छोटे बडे भेद करकेअर प्रतिमाके छोटे वडे छेदनके भेद करके दंड और प्रायश्चित्तकाभी भेद जानना अर्थात् थोडा छेदन करे तां थोडा दंड अथवा प्रायश्चित्तकरे जेकर वहुता छेदनकरे तां वहुत दंड अथवा प्रायश्चित्त करे एह व्यवस्थाहै ॥ दारिद्र्यादिकरके भर्त्ताके निरादरके विषय आपस्तंवजीका वाक्यहै भर्त्तु रिति निर्धनता और क्रोध और चुगली इत्यादि करके भर्त्ताका जवस्त्री निरादर करे तव कृच्छ्र व्रत करे इति ॥ पर्वके विषय मैथुन करणेका दोष विष्णु पुराणमें लिखाहै ॥ किसे ऋषिका किसे राजाके प्रतिवचनहै हे राजन् चतुर्दशी १ और अष्टमी २ और अमाव

संक्रमोजलोपरिगमनार्थकाष्ठशिलादिरूपः ध्वजश्चिह्नंराजद्वारादौ यष्टिः पुष्करिण्यादौ प्रतिमाश्च क्षुद्राश्मृण्मय्यादयः एतद्भेदकःपुनर्नवंकुर्य्यात् पणानांपंचशतानिचदद्यात् ॥ अत्रच प्रतिमातारतम्येन तद्भेदतारतम्येन दंडप्रायश्चित्तयोर्व्यवस्था ॥ दारिद्र्यादिना भर्त्तुरतिक्रमे आपस्तंवः भर्त्तुरतिक्रमेकृच्छ्रइति ॥ अतिक्रमोदारिद्र्यक्रोधमात्सर्य्यादिनाऽवमाननम् पर्वणिमैथुनेविष्णुपुराणे। चतुर्दश्यष्टमीचैवअमावास्याथपूर्णिमा पर्वाण्येतानिराजेन्द्ररवेः संक्रांतिरेवच १ स्त्रीतैलमांससंभोगीपर्वस्वेतेषुयोनरः विण्मूत्रभोजनंनामप्रयातिनरकंमृतः २ अस्यप्रतिप्रसवः ॥ शनिषष्ठ्यांस्मृतं तैलंमहाष्टम्यांपलाशनम् तीर्थेक्षौरंचतुर्दश्यांदीपावल्यांचमैथुनम् ॥ १ ॥ महाष्टमी आश्विनशुक्लाष्टमी ॥

स्या ३ और पूर्णमासी ४ और सूर्यकी संक्रांति ५ एह पंच पर्वहैं ॥ १ ॥ इनोंके विषय जो पुरुष स्त्री और तेल और मांस इनानूं भोगताहै सो मरकरके विष्टा और मूत्रहै भोजन जिसके विषय ऐसे नरकको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ इसका भिन्न भिन्न दोष निवारणकहतेहैं शनीति ॥ शनिवार षष्ठीके विषय तेल मले अर आश्विनके शुक्ल पक्षकी अष्टमीके विषय मांस भक्षणकरे अर तीर्थके विषय चतुर्दशीके दिन क्षौर कराए अर दिवालीके विषय मैथुन करे तौभी इसी नरककों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥

श्रीर किसे स्मृतिकाभी वाक्य है अष्टेति अष्टमी ८ और चतुर्दशी १४ और दिन और पर्व इनके विषय मैथुन कों करके सहित वस्त्रांके स्नान नूं करके पश्चात् वरुण है देवता जिनां का तिनां मंत्रों करके मार्जन् करे ॥ १ ॥ उलटीके विषय शातातप जीका वाक्य है विच्छेति ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य इनकी उलटीके विषय और भन्ने होए पात्रक विषय भोजन करणेके विषय पंच गव्य करके शुद्धि होतीहै ॥ १ ॥ मांसादिके वमनके विषय यमजी विशेष कहतेहैं ॥ मसूरेति जो ब्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्य मसर और मांह और मांसको भक्षण करके उलटी करताहै तिसकों तीन ३ रात्र उपवास प्रायश्चित्त करणा लिखाहै अर स्नान करके अर तीन ३ प्राणायामों करके अर घृतका भक्षण करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ यज्ञोपवीतादियोंके नाशके विषय भी यम

स्मृत्यंतरे अष्टम्यांचचतुर्दश्यांदिवापर्वणिमैथुनम् कृत्वासचैलंस्नात्वाचवारुणी भिश्चमार्जयेदिति १ वारुणीभिर्वरुणदेवताकैर्ऋग्भिरित्यर्थः।वमनेशातातपः विच्छर्दनेद्विजातीनांभिन्नभांडेचभोजने पंचगव्येनशुद्धिःस्यादितिशातातपो ऽब्रवीत् १ मांसादिवमनेतुविशेषमाह यमः॥ मसूरमाषमांसानिभुक्त्वावावम तिद्विजः त्रिरात्रमुपवासोऽस्यप्रायश्चित्तंविधीयतेप्राणायामैस्त्रिभिः स्नात्वा घृतंप्राश्यविशुद्ध्यति १ यज्ञोपवीतादिनाशेपि सएव मेखलादंडाजिनयज्ञोप वीतावपातेषु मनोव्रतवतीभिःसप्तआज्याहुतीर्जुहुयात्पुनर्यथार्थंप्रतीयात् असकृद्भैक्ष्यभोजनेऽभ्युदितेऽभिनिर्मुक्तेवांतेदिवास्वप्नेनग्नस्त्रीदर्शनेनग्नस्वापे श्मशानमाक्रम्यहयादींश्चारुह्यपूज्यातिक्रमेचैताभिरेवजुहुयादग्निसामिधने

जीनेहि प्रायश्चित्त लिखाहै ॥ मेखेति तडागी और दंड और चर्म और यज्ञोपवीत इनके नाशके विषय मनोव्रतवती इत्यादि मंत्रों करके घृतकीआं सप्त ७ आहुतीआं करके पश्चात् मेखलो दिकों धारणकरे अर अनेकवार भिक्षाकों भोजन करणा और जिसके सुतिआं होआं सूर्य उदय होताहै अर जिसके सुतिआं होआं अस्त होताहै उलटी होणी और दिनके विषय सौना और नग्नस्त्रीकों देखणा और नग्न सौणा और श्मशान भूमिके विचों लंघना और घोडे आदि कोंके उपर चडकर और महात्माकों उल्लंघन करणा अर्थात् तिनकी आज्ञाकों नहि म न्नणा अथवा विना नमस्कारके चलेजाणा इन संपूर्णांके विषयमें बलदी अग्निके विषय मनो व्रतवती इत्यादि सप्त मंत्रों करके आहुतीआं करे॥ ॥

स्थेति वृक्षादि और महिष्यादिकी हिंसाकरणेकेविषें (यद्देवादेवहेडनं) इत्यादि जो कूष्मांड संज्ञिकमंत्रहैं इनोंकरके घृतका होमकरे ॥ मणि और वस्त्र और गौ और स्वर्ण इत्यादियोंका दानलेकरके गायत्रीका अठ हजार ८००० जपकरे इति ॥ अर्थः (मनोजूतिर्जुषतां) इत्यादि मंत्रों करके अर (त्वमग्नेव्रतपाअसि) इत्यादिमंत्रोंकरके होमकरे अर यथार्थक्या उपनयन विधि करके सहितमंत्रांके यज्ञोपवीतका ग्रहणकरे ॥ अभ्युदितादिके स्वरूप नूं यमजी कथन करतेहैं ॥ सूर्य्येति जो पुरुष सूर्यके उदयहोआं होआं सुत्तारहिताहै तिसको अभ्युदित कहतेहैं अर जोपुरुष सूर्यके अस्त होआं होआं सुत्ता रहिताहै तिसको निर्मुक्त कहतेहैं ॥ १ ॥ अभ्युदितके विषय प्रायश्चित्त नूं भी यमजी कहतेहैं ॥ अजीति अन्नका नपचना और अभ्यु

स्थावरसरीसृपादीनांवधे यद्देवादेवहेडनमितिकूष्मांडीभिस्त्रिरात्रमाज्यंजुहुयान्मणिवासोगवादीनांचप्रतिग्रहे गायत्र्यष्टसहस्रंजपेदिति मनोजूतिर्जुषतामितिमनोलिंगाभिःत्वमग्नेव्रतपाअसीतिव्रतलिंगाभिश्च यथार्थमुपनयनोक्तेनविधिनासमंत्रकं प्रतीयाद्गृह्णीयात् । अभ्युदितादिस्वरूपमाहयमः। सूर्योदयेतुयश्शेते ससूर्योदितउच्यते अस्तंगतेतुयःशेतेसूर्येनिर्मुक्त एवसः १ अभ्युदितेप्रायश्चित्तमाहसएव अजीर्णेऽभ्युदिते वांतिश्मश्रुकर्मणि मैथुनेदुःस्वप्नेदुर्जनस्पर्शेस्नानमात्रंविधीयते ॥ २ ॥ अत्रैवकामतोगौतमः सूर्याभ्युदितेब्रह्मचारीतिष्ठदहन्यभुंजानोऽस्तमितेरात्रौसावित्रींजपेत् । अभ्यासेत्वावृत्तिरूह्या। गर्भाधानादिसंस्कारातिपत्तौतु आश्वलायनः। आरभ्याधानमाचौलात्कालातीतेतुकर्मणाम् व्याहृत्याज्यंसुसंस्कृत्यहुत्वाकर्म यथाक्रमम् ॥ १ ॥ एतेष्वेकैकलोपेपि पादकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥

दित और उद्वमन और घोडा क्षौर कर्म और मैथुनकरणा और खोटास्वप्न और दुष्ट पुरुषके साथ स्पर्शकरणा इनकेविषयस्नानहि विधानकीताहै ॥ २ ॥ इसकेविषयहि कामनाकेविषयमें गौतमजी कावाक्यहै सूर्य्येति अभ्युदितके विषय दिनके विषय अन्नकों न भक्षण करदाहोआ अष्टांगमैथुनतेंरहितहोकर स्थितहोवे सूर्यकेअस्तहोआंहोआं रात्रिके विषय गायत्री नूं जपे इसकि अभ्यास केंविषयमें एहिप्रायश्चित्त दोवारकरे इति ॥ गर्भाधानादिसंस्कारके नाशके विषय आश्वलायनजीका वाक्यहै आरेति गर्भाधान कर्मतें लेकर चौलकर्म पर्यंत कर्मांका कथनकीता जो काल है तिसके वीतिआंहोआं व्याहृतीआं करके हछी तरां संस्कारकों करके क्रमसें घृत करके होमनूं करे १ इनकर्मोंके मध्यमे एककर्मकेभी नाश होआं होआं एक पाद कृच्छ्र व्रतको करे ॥

चूडेति चूडा कर्मके नाशके विषय आधा कृच्छ्रव्रतकरे आपदासमय मेंभीएहि करणा अर जब आपदा न होवे अर संस्कार कर्मका नाशहो जावे तव संपूर्णस्थानके विषय दूणा प्रायश्चित्त करे ॥ २ ॥ इसीमें कात्यायन जी भी कहतेहैं ॥ लुप्त इति संस्कार कर्मके नाशके विषय संपूर्णस्थानके विषय प्रायश्चित्त करे अर प्रायश्चित्तके कीतिआंहोआं पीछेसें नाश होए कर्म नूं करे ॥ १ ॥ त्वन्नइति(त्वन्नःसत्वन्न)इनांमंत्रांकरके और तिसप्रकार(इममे)इसमंत्रकरके आहुतीआंनूं करे अर(येतेशतमयाश्चाभ्यामुदुत्तममृचा)इत्यादिऋचा करकेहोम नूंकरे २ ॥ हुत्वेति भिन्न भिन्न हवन नूं करे पश्चात् कृच्छ्रव्रत का एकपादकरे अर चौल कर्मकें विषय आधो कृच्छ्रव्रतकरे स्त्रीआंकां भी इसीप्रकार मंत्रांकर्के जातादि कर्म करणा ॥ ३ ॥ गर्भाधान कर्मके न करणे के विषय

चूडाया अर्द्धकृच्छ्रः स्यादापदीत्येवमीरितम् ॥ अनापदितुलुप्तेतुसर्वत्रद्विगुणंचरेत् २ ॥ कात्यायनोपि ॥ लुप्तेकर्मणिसर्वत्रप्रायश्चित्तंविधीयते । प्रायश्चित्तेकृतेपश्चाल्लुप्तंकर्मसमाचरेत् ॥ १ ॥ त्वन्नःसत्वन्नइत्याभ्यां इममेतुतथाहुतीः येतेशतमयाश्चाभ्यामुदुत्तममृचाहुतीः ॥२॥ हुत्वापृथक् पृथक्पादमर्द्धंचौलेसमाचरेत् स्त्रीणामप्येवमेवस्याज्जाताद्यामंत्रिकाक्रियेति ॥३ ॥ गर्भाधानाकरणआश्वलायनः ॥ गर्भाधानस्याकरणेतस्यांजातस्तुदुष्यति अकृत्वागांततोदत्त्वाकुर्यात्पुंसवनंपतिरिति ॥ १ ॥ क्षुताद्यौवृद्धपराशरः विप्रः क्षुत्कृत्यनिष्ठीव्यकृत्वाचानृतभाषणम् वचनंपतितैःकृत्वादक्षिणंश्रवणंस्पृशेत् प्रेक्षणंशशिनोऽर्कस्यब्रह्मेशहरिसंस्मृतिः ॥१॥ एतच्चजलाभावेकर्मण्यापृतेवा अतएव वृद्धशातातपः ॥

आश्वलायनजी का वाक्यहै । गर्भेति ॥ जिस स्त्रीका गर्भाधानसंस्कार नहि कीआ तिस केविचों उत्पन्न होआ बालक दुष्ट होताहै अर गर्भाधान संस्कार नू नकरके तिसतें उपरंत गोदान करके पश्चात्- भर्त्ता पुंसवन संस्कारकों करे ।१। छिक्यादिकांकेविषय वृद्धपराशरजी का वचनहै विप्रइति छिक औंर थुक औंर झूठ वचन औंर पतितांके साथ वार्त्ता इनां नू-करके ब्राह्मण सज्जे कांन नू हाथ लगावे औंर चंद्रमा अर सूर्यका दर्शन करे औंर ब्रह्मा औंर शिवजी औंर विष्णु इनका स्मरण करे ।१।एह वार्ता कबकरे जव पासजल नहोवे अथवा किसी काममे लगा होआ होवे ॥ इसी कारणतें वृद्धशातातपनें कहा है ॥ ॥

क्षुत्वेतिंछिक्कमार करके और थूक करकें और वस्त्र कों पहिर कर बुद्धिमान् पुरुष आचमन करे अथवाब्राह्मणकों स्पर्श करे अथवा गौकी पिठका दर्शनकरे॥१॥यथेति जिस प्रकार एह कथन कीतेहैं तिस प्रकार प्रथमके अभावमें अगले कों ग्रहण करे प्रथमके नाशमें दूसरेकी प्राप्ति इच्छित है अर्थात् जलके अभावमें ब्राह्मण कों स्पर्श करे अर ब्राह्मणके अभावमें गौका दर्शन करे ॥ २ ॥ संवत्सर कर्मके नाशके विषय विष्णु पुराणमें किसे ऋषिनें किसीके प्रति कहाहै। संवेति एक वर्ष पर्य्यत जिस पुरुष के कर्मका नाश होआहै अर्थात् जिस पुरुषने एक वर्ष नित्य कर्म नहि कीता तिसके दर्शन करणेतें श्रेष्ट पुरुषांनें सर्वदा काल सूर्यका दर्शन करणा योग्यहै॥१॥हे महामते तिसके स्पर्शमें सहित वस्त्रां के स्नान करणा एही

क्षुत्वानिष्ठीव्यवासस्तुपरिधायाचमेद्बुधः कुर्य्याद्वाब्राह्मणस्पर्शंगोपृष्ठस्यचदर्शनम् ॥ १ ॥ यथाविभवतोह्येतत्पूर्वाभावेततःपरम् अविद्यमानेपूर्वोक्तेउत्तरप्राप्तिरिष्यतइति ॥ २ ॥ संवत्सरक्रियातिपाते विष्णुपुराणे ॥ संवत्सरंक्रियाहानिर्यस्यपुंसःप्रजायते तस्यावलोकनात्सूर्य्योनिरीक्ष्यःसाधुभिःसदा ॥ १ ॥ स्पृष्टेस्नानं सचैलंतुशुद्धिहेतुर्महामते पुंसोभवति तस्योक्तानशुद्धिःपापकर्मणइति ॥२॥अत्रच प्रायश्चित्तविशेषाश्रवणादेकाहातिक्रमेचैकाहमभोजनेनतस्योक्तत्वात्तदनुसारेणच षष्ट्यधिकशतत्रयदिनापचारे तावदुपवासकरणाशक्तेस्तत्प्रत्याम्नायत्वेन षडुपवासैरेकैकप्राजापत्यकल्पनयायोज्यम् ॥ निमंत्रणत्यागेतुयमः

शुद्धिका कारणहै अर जिसके दर्शनादितें एह सूर्य्य निरीक्षणादि प्रायश्चित्तहै तिस पापी पुरुषकी शुद्धि नहि कथन कीती ॥ २ ॥ इसके विषयप्रायश्चित्तके बहुत भेदकें देखणेतें क्योंकि एक दिन कर्मके न करणेमें एक उपवास तिसकोंकथन कीताहै तिसके अनुसार करके अर्थात् तिस हसाव करके तीन सौ अर साठ ३६० दिन के बीतिआं होआं तिस उपवास करणेके विषय समर्थाके न होणेतें तब तिस प्रायश्चित्तकें बदले करकें छिआं ६ उपवासां करके एक एक प्राजापत्य व्रत की कल्पना करके जोडने योग्यहै निमंत्रण कों ग्रहण करके तिस के त्यागके विषयें यमजीका वचनहै ॥

केतेति जो ब्राह्मण श्राद्धादिके निमंत्रण कों करवाके अर्थात् भोजनकों मान करके पश्चात् नहि खांदा सो ब्राह्महत्याके पाप कों प्राप्त होताहै अर मर करके शूद्र योनिकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ इस पापके प्राप्त होआं होआं ब्रह्मण नियम कों धार करके यति चांद्रायण व्रत कों करके तिस पापतें रहित होताहै ॥ २ ॥ निमंत्रित कीते होए ब्राह्मण के न बुलाणेमें भी एही प्रायश्चित्त जानना ॥ एह वाक्य कामके अभ्यासमेंहै ॥ झूठे वचनादिके विषयमें शंख और लिखितका वाक्य है आक्रोशेति तुमने स्वर्ण चुराआहै इस मिथ्याका नाम आक्रोश है आक्रोशनऔरझूठ कथन करणा इनके विषयमें एक १ रात्र अथवा तीन ३ रात्र उपवास करणा इति अर कामतें अभ्यासके विषयमें असत्यभाषण

केतनंकारयित्वातुयोनिपातयतिद्विजः ब्रह्महत्यामवाप्नोतिशूद्रयोनौच जायते ॥ १ ॥एतस्मिन्नेनसिप्राप्तेब्राह्मणोनियतव्रतः यतिचांद्रायणंचीर्त्वा ततःपापात्प्रमुच्यते इति २ श्राद्धादौनिमंत्रणंकेतनम् ॥ निमंत्रितस्याऽनाहूवानेप्येतदेव एतच्चकामाभ्यासे ॥ अनृतवचनादौ शंखलिखितौ ॥ आक्रोशनानृतवादे एकरात्रंत्रिरात्रं चोपवास इति ॥ कामतोभ्यासेतु असत्यभाषणं शूद्रसेवनम् इत्यपात्रीकरणंकृत्वा तप्तकृच्छ्रंकृत्वा शुद्ध्यतीति विष्णूक्तंज्ञेयम् ॥ वधफलकेऽनृते तुव्यसनप्रायश्चित्तप्रसंगेनोपपातकेषूक्तं द्रष्टव्यम् ॥ व्रणमध्ये कृमिपाते गरुडपुराणे ॥जायंतेयस्यशिरसि कृमयोविनतात्मज कृच्छ्रंतदाचरेत्प्राज्ञःशुद्ध्येकश्यपात्मज इति १ यत्तुच्यवनः ॥ कृमिदर्शने सांतपनम् ॥ वृषभोदक्षिणेति ॥

और शूद्रसेवन इस अपात्री करण संज्ञिकपापकों करके तप्त कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै एह विष्णुजीका कहाहोया वचन जानना हिंसा है फल जिसका ऐसा जो झूठ है तिसके विषय प्रायश्चित्त व्यसन प्रायश्चित्तके प्रसंग करके उपपातकांके मध्यमें कथन कीताहै सो तिस स्थानमें देख लेणा इति जखमके मध्यमें कीटों के पोणेमें गरुड पुराणमें कहा है ॥ जायमिति । हे गुरुड जिस पुरुषके शिरके विषये कीडे उत्पन्न होतेहैं हे कश्यपके पुत्र सो बुद्धिमान् पुरुष शुद्धिके वास्ते कृच्छ्र व्रतकों आचरण करे ॥ १ ॥ जो च्यवनजीनें कहाहै कि कृमिउंके पोणेमें सांतपन व्रत करे और एक बैल दक्षिणा देवे

एह वाक्य जब एकसमयके विषय अनेकों जखमोंके विषय तीक्ष्णकी डे उत्पन्न होवें तिस विषय विषे जानना इसस्थानमे क्षत्री आदिओंकों एह प्रायश्चित्त एक एक पाद न्यूनजानना अर्थात् क्षत्रीकों तीन ३ पाद सांतपन व्रत अर वैश्यकों, आधा अर शूद्रकों एकपाद जानना ॥ दिनमे मैथुनादिके विषयमे शंखजीने कहाहै दिवेति दिनके विषय मैथुननूं करके और तिसी प्रकार जलके विषय नग्न होंकर स्नान करके और नंगी बगानी स्त्रीनूं देखके एक दिन भोजन न करें इति ॥ १ ॥ नग्न शब्दका अर्थ दिखावतेहैं नग्न इति एकवस्त्र वाला पुरुष नग्न होताहै इस वचनतें दो २ वस्त्र लय करके अर्थात् धोती और एक उपरणा

तद्युगपदनेकव्रणेषु खरकृम्युत्पत्तौज्ञेयम् ॥ अत्रक्षत्रियादीनांपादपा दन्यूनम् ॥ दिवामैथुनादौतुशंखः ॥ दिवाचमैथुनंकृत्वानग्नःस्नात्वातथांभसि नग्नांपरस्त्रियंदृष्ट्वादिनमेकमभोजनमिति ॥ १ ॥ नग्नस्त्वेकवासाः स्यादितिवचनाद्वस्त्रद्वयवान्स्नायादित्यर्थः अत्रनग्नस्नानादावेकरात्रत्रिरात्रयोरभ्यासाद्यपेक्षयाव्यवस्था द्रष्टव्या निषिद्धकाष्ठदंतधावने वृद्धपाराशरःप्राह ॥ पलाशशिंशपाकाष्ठदंतधावनकृन्नरः दिवाकीर्त्तिसमस्तावद्यावद्गांनैवपश्यतीति ॥ १ ॥ एतच्चनिषिद्धकाष्ठांतराणामप्युपलक्षणम् ॥

इनानूं धार करके स्नान करे ॥ इस स्थानमें नग्न स्नानादियोंके विषय एक रात्र और तीन ३ रात्र इनकी व्यवस्था अभ्यासादियोंकी इच्छा करके जाननी अर्थात् कामतें अभ्यासके विषय तीन ३ रात्र उपवास जानना ॥ निषिद्ध काष्ठकी दातनकें विषय वृद्धपाराशरजी कहतेहैं पलेति पलाह और टाली इनके काष्ठांकी दातन करणे वाला पुरुष तितना पर्यंत नाईके तुल्य होवाहै जितना पर्यंत गौकों न देखे ॥ १ ॥ पलाशशिंशपा इस पद करके खजूर और केउडा और नारकेल इत्यादि जौं निषद्ध काष्ट हि इनकाभी ग्रहणकरणा

ब्रह्मचारीके धर्मके नाशके विषय बौधायनजीका वाक्यहै शौचेति शौच और आचमन और संध्यावंदन और कुशा और भिक्षा और होम इनका त्याग और शूद्रादिके साथ स्पर्श और कौपीन और कटिसूत्र और यज्ञोपवीत और तडागी और दंड और मृगाण इनका त्याग और दिने सौणा और छतडीका धारणा और पौये पाणे और पुष्पादि मालाका धारण करणा और वुटना मलना और चंदनादि सुगंधि वाले द्रव्यका मलना और सुरमा पाणा और जलक्रीडा और जूवाखेलणा और नृत्य अर गायन अर वाजा इनके विषय प्रीति करणी और पाषंडी अर चंडाल इत्यादियोंके साथ संभाषण करणा

ब्रह्मचारिधर्मलोपेबौधायनः॥ शौचाचमनसंध्यावंदन दर्भभिक्षाग्निकार्यराहित्यशूद्रादिस्पर्शन कौपीनकटिसूत्रयज्ञोपवीतमेखलादंडाजिनवर्जन दिवास्वाप छत्रधारण पादुकाध्यारोहण मालाधारणोद्वर्तनानुलेपनांजनजलक्रीडाद्यूतनृत्यगीतवाद्याद्यभिरति पाषंडिचंडालादिसंभाषण पर्युषितभोजनादि ब्रह्मचारिव्रतलोपसकलनिर्हारार्थं ब्रह्मचारी कृच्छ्रत्रयंचरेत् महाव्याहृतिहोमं चकुर्यात् प्रथमंव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिश्चतस्रआज्याहुतीर्हुत्वा ॥ ओंभूरग्नयेपृथिव्यै महतेचस्वाहा ओंभुवोवायवे चांतरिक्षायमहतेचस्वाहा ओंस्वरादित्यायचदिवेचमहतेचस्वाहा ओंभूर्भुवःस्वश्चंद्रमसेचनक्षत्रेभ्यश्चमहतेचस्वाहा ओंपाहिनोअग्नएनसेस्वाहा

और वेहे अन्नका भक्षण करणा इन संपूर्णोंके विषय और ब्रह्मचर्य व्रतके नाशके विषय संपूर्णपापके त्यागणके अर्थ ब्रह्मचारी तीन ३ कृच्छ्र व्रत करे अर महाव्याहृतिआं करके हवन करे अर प्रथम एक एक महाव्याहृति करके तीन ३ आहुतिआं करे पश्चात् सभना महाव्याहृतिआं करके क्या ओंभूः स्वाहा १ ओंभुवःस्वाहा २ ओंस्वःस्वाहा ३ ओंभूर्भुवःस्वःस्वाहा ४ इसरीतिसें तीनके पीछे एक आहुति करे इस प्रकार व्याहृतिआं करकें चार घृतकीआं आहुतिआं करके पश्चात् ओंपाहिनो अग्न एनसेस्वाहा इत्यादि करके हवन करे सो मूलमेंहि स्पष्टकीता होआहै ॥

ऐसे नउ ९ आहुति करके पुनारेति फेर महाव्याहतिआंकर्के हवनकरे इति एह प्रायश्चिच थोड़े धर्मके नाशके विषय करणा॥ अर वहुते धर्मकेनाशके विषय अधिक प्रायश्चित्तनूं ऋग् विधान ग्रंथ विषय शौनकजी कहतेहैं तमिति श्मशानके शिवालयके विषय बैठकरके(तंवोधिया)इत्यादि मंत्रकाएक लक्ष १०००००जपकरे ब्रह्मचारिका धर्म शून्यभी होवे तदभी इसजपकरके पूर्ण होताहै इति॥ ग्रहण कीता होआ जो व्रत तिसके भंगके विषय वायुपुराणमें लिखाहै लोभेति लोभ उौर मोह और प्रमाद इनसें कदाचित् व्रतभंग होवे तब तीन ३ उपवास व्रत करे अथवा

उंपाहिनोऽग्नेविश्ववेदसेस्वाहा ॥ उंयज्ञंपाहिविभावसोस्वाहा ॥ उंसर्वं पाहिशतक्रतोस्वाहा ॥ उंपुनरूर्जानिवर्त्तस्वपुनरग्नइवायुषा पुनर्नःपाह्यं हसः सहरय्यानिवर्त्तस्वाग्नेपिवस्वधारयाविश्वशियाविश्वतस्परिस्वाहा पुनर्व्याहृतिभिर्जुहुयादिति ॥ एतदल्पधर्मलोपे ॥ वाहुल्येतु प्रायश्चित्तविशेषमाह ऋग्विधानेशौनकः॥ तंवोधियाजपेन्मंत्रंलक्षंप्रेत्याशिवालये ब्रह्मचारिणोहिधर्मंशून्यंचेत्पूर्णमेवहीति प्रेतानांयोग्यंस्थानंप्रेत्यंश्मशानमित्यर्थः॥ गृहीतव्रतभंगेवायुपुराणे॥ लोभान्मोहात्प्रमादाद्वाव्रतभंगोयदाभवेत् उपवासत्रयंकुर्यात्कुर्याद्वाकेशमुंडनम् प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरेवव्रतीभवेत् अत्र वाशब्दः॥ समुच्चयेमिथ्याशपथे यमः ॥ विप्रस्यवधसंयुक्तंकृत्वातुशपथंमृषा ब्रह्महायावकान्नेनव्रतंचांद्रायणंचरेत् ॥ १ ॥ एतच्चशपथांततरस्याप्युपलक्षकम् ॥

केशांकामुंडनकरावे ॥ इस प्रायश्चित्तनूं करके पश्चात्व्रतकाधारणकरे १ झूठीसुगंदके विषय यमजीका वचनहै विप्रेति ॥ मैंने ब्रह्महत्याकीतीहै जेकरएह कामकीताहै ऐसै ब्राह्मणकी झूठी सुगंद चुक्कके ब्रह्मघाती होताहै सो यवांके अन्नकरके चांद्रायण व्रतनूं करे ॥ १ ॥ उौर सुगंदकाभी एही प्रायश्चित्त जानना अर्थात् उौर तरहांसेभी जेकर कोई शपथकरेगा किं मेरेकोंगौकी शपथ है जैसे वेश्या द्वारपरभीगयाहोयांइत्यादि तौभी यावकान्न करके चान्द्रायण व्रत करे ॥

सुकृतमिति जेडे पुरुष संपूर्ण आयुषाके विषय कीते होए पुण्य नू किसेके तांई देदेतेहैं सो ध र्म्मराज जीकी आज्ञासे शिलाकर्के पेषणकरीदेहैं जिस प्रकारतैसे पापी पुरुष पेषण करीदेहैं १ एहमार्कंडेयपुराणकेवाक्यतें जानना ॥ ऐसे स्थानों विषेप्रायश्चित्तकी व्यवस्था करदेहैं यत्रेति जि स स्थानमें प्रायश्चित्त कथन कीताहै अथवा जिस स्थानमें नहि कथन कीताहै इस उशनसजीके बाक्यतें तिस स्थानके विषय प्राजापत्य व्रत कल्पन करणा ॥ ब्राह्मणकों क्षत्रियादि वृत्ति करके धनके संचयकरणेमें प्रचेतसजीने कहाहै ॥ ब्राह्मणेति पिता और माता और बहु भृत्य इनके ना शके विषय आपदसमयमें क्षत्रीके धर्मनूं ब्राह्मण जद अंगीकार करे अर तिसके विषय एक वर्ष

सुकृतंयेप्रयच्छंति यावज्जीवकृतंनराः तेंपिष्यंतेशिलापेषैर्यथैतेपापकारिण इतिमार्कंडेयपुराणवाक्यात् यत्रोक्तंयत्रवानोक्तमित्यौशनसवाक्यात्तत्र प्राजापत्यः ॥ कल्पनीयःब्राह्मणस्यक्षत्रियादिवृत्त्याधनार्जने प्रचेताः । ब्रा ह्मणस्यापत्कालेपितृमातृबहुभृत्यस्यानंतरंक्षत्रोपनिवेशःआपत्कालेसवद र्शयति पित्रिति पित्राद्यभावेक्षत्रोपनिवेशः क्षत्रधर्म्मस्वीकाररेचत्तदा तत्रे त्यादि तत्रसंवत्सरमर्थप्राप्तौ ॥ चांद्रायणंचरेदिति वैश्यवृत्तिजीवने तत्र वर्षाभ्यंतरे मासादौचांद्रायणभागहारःकल्पनीयः संवत्सरादूर्ध्वेद्वैगुण्यत्रै गुण्यादिकल्पनीयम् शूद्रवृत्त्याधनार्जने मनुः ॥ नकथंचनकुर्वीतब्राह्मणः कर्मवार्षलम् बृषलःकर्मवाब्राह्मंपतनीयेहितेतयोः ॥ १ ॥ वार्षलंकर्म सेवा

व्यतीतहोजावे तब चांद्रायणव्रतकरे। अर जब वैश्यवृत्ति करके उपजीविकाकरे अर तिसस्थान के विषय वर्षके मध्यमेंहि मासादिके व्यतीतहोनेमें चंद्रायणव्रतके तीन ३ भाग अर्थात् तीनपा द कल्पन करणे योग्यहैं अर जेकदाचित् वर्षतें उपरंतहोजाए तब कालके अनुसारदूणा अथ वा त्रिणाइत्यादि चांद्रायणव्रत कल्पना करणे योग्यहै ॥ शूद्रवृत्ति करके धनके एकत्रकरणेमे मनुजीने कहाहै नेति ब्राह्मण शूद्रके कर्म नूं कदाचित् भी न करे अर्थात् सेवा न करे अर शूद्र ब्राह्मणके कर्मनूं न करे क्योंकि ब्राह्मण और शूद्र इनोको परस्पर कीतेहोये कर्म्म पतित कर देते हैं ॥ १ ॥

इसप्रकार उपक्रम करके फेर उपनयन कर्मके साथ कृच्छ्रादि व्रतकी पश्चात् प्रवृत्तिके विषय मनु जीकावाक्यहै प्रेति परकर्मके विषये स्थित होकर जेडे ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य प्रायश्चि न नूं करतेहैं और अपणी जातितें भ्रष्ट होए होएजो ब्राह्मणहैं तिनांकोंभी एही प्रायश्चित्त कथन करे १ ॥ शूद्रकोंभी ब्राह्मण औरक्षत्री अथवा वैश्यके कर्मकरणेके विषय एहि प्रायश्चित्तहै क्योंकि शूद्रकों भी पर कर्म होनेसें अर्थात् निंदित कर्म होनेसें परंतुपरवृत्तिकर्के एकत्र कीता होआ जो धनहै तिस त्यागके सहित एह प्रायश्चित्त है क्योंकि जिस कारणतें निंदित कर्म केधन नूं संचितकरतेहैं सो तिसधनके त्यागणेते पछि प्रायश्चित्त से शुद्ध होतेहै इस मनुके वचनतें जानना ॥ स्त्रीके धन कर्के उपजीविका करणेमे कहते हैं चांद्रेति एक चांद्रायण व्रत कर्के संपूर्ण पापांका नाश होताहै सोधन स्त्रीके ताईं दे करके चांद्रा

एवमुपक्रम्य पुनरुपनयनसहितकृच्छ्राद्यनुवृत्तौ सएव ॥ प्रायश्चित्तंप्रकुर्वं तिविकर्मस्थास्तुयेद्विजाःब्राह्मण्याच्चपरित्यक्तास्तेषामप्येतमादिशेत् १ ॥ शूद्रस्यापिद्विजकर्मकरणेऽप्येतदेव ॥तस्यापि तद्विकर्मत्वात् अर्जितधनत्या गपूर्वकंचैतत् ॥ यद्गर्हितेनार्जयंतीति मनूक्तेः ॥ स्त्रीधनोपजीवनेतु सएव चांद्रायणेनचैकेन सर्वपापक्षयोभवेत् ॥ चान्द्रायणंस्त्रियैतद्धनंदत्वाकार्य्य म् ॥ भार्यायामुखमैथुनेतूशनाः ॥ यस्तुब्राह्मणोधर्मपत्नीमुखेमैथुनंसेवेतस दुष्यतीति वैवस्वतः ॥ प्राजापत्येनशुध्यतीति ॥ गोयुक्तयानस्थस्यमैथु नेयमः ॥ यदिगोभिःसमायुक्तंयानमारुह्यवैद्विजः मैथुनंसेवतेचैवमनुःस्वा यंभुवोऽब्रवीत् ॥ १ ॥ त्रिरात्रंक्षपणंकृत्वासचैलस्नानमाचरेत् गोभ्योयवस कंदद्याद्घृतंप्राश्यविशुध्यतीति ॥ २ ॥ यत्तु स्मरणम्

यण व्रत करणा स्त्री धन इस जगाउहै जो विवाह विषे पित्रांदियोने दित्ताया और श्वशुरके घर पाद वंदनके समय दित्ताहै ॥ स्त्रीके मुखके विषय मैथुन करणेमें उशनसका वचन है यइति जो ब्राह्मण अपणी धर्म पत्नीके अर्थात् विवाहिता स्त्रीके मुखमे मैथुन करताहै सो पतित होताहै अर्थात् पापी होताहै इसका प्रायश्चित्त वैवस्वत मनुजीने कहाहै कि प्राजापत्य व्रत कर्के सो शुद्ध होताहै इति ॥ बैल कर्के युक्त जो गाडी तिसके वि षय स्थित पुरुषके मैथुनमें यमजीका वचनहै यदीति जद ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य बै ल कर्के युक्त जो गाडी किसके विषय स्थित होकर्के मैथुन करताहै इसमे स्वायं भुव मनुजी कहते भये ॥ १ ॥ तीन ३ रात्र उपवास कों कर्के सहित वस्त्रांदे स्नान करे अर बैलांके ताईं घासदेदेवे अर्थात् बैलांनूं चारे पश्चात् घृतका भक्षणकरे तो शुद्धहोताहै ॥ २ ॥ जो कथनहै

मैथुनमिति ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य बैलां कर्के संयुक्त जो गाडी तिसके विषयस्थित होकर्के स्त्रीकें अथवा पुरुषके साथ दिनमे मैथुनकों करताहै सो सहित वस्त्रांके स्नानकरे । १ । एह अकामतें एक वारकरणेके विषय जानना ॥ अर काम कर्के पुरुषके साथ मैथुन करणेका प्रायश्चित्त जाति भ्रंशादिके विषय कहाहै । तूं मेरीमाताके समानहैं ऐसे जो पुरुष क्रोधतें अपणी स्त्रीकों कह कर्के फेर मैथुनके वास्ते इच्छा करताहै तिसके विषय पराशरजीने कहाहै यइति जो पुरुष क्रुद्धहो कर्के अपणी स्त्रीकों मैथुनके अयोग्यनूं कहताहै अर्थात् तूं मेरी माताहैं ऐसें वचन कहताहै अर फेर मैथुनके वास्ते इच्छा करताहै सो पुरुष ब्राह्मणांके मध्यमें अपणे प्रायश्चित्त कों कथन करवाए । १ । इसीमें औरवचन है आर्तइति आर्त क्या दुःखी अथवा क्रोध अथवा अज्ञान अथवा क्षुधा अथवा तृषा अथवा भय इनां कर्के पीडित होआ होआ

मैथुनंतुसमासाद्य पुंसियोषितिवाद्विजः गोयानेपुदिवाचैवंसवासाःस्नानमाचरेत्१ तदकामतः सकृत्करणेज्ञेयम् क्रोधाद्भार्यात्वंमेमात्रासदृशीत्युक्त्वा पुनःसंभोगेपराशरः । यस्तुक्रुद्धःपुमान्ब्रूयाज्जायायास्त्वगम्यताम् पुनरिच्छतिभर्यांचविप्रमध्येतुवाचयेत् १ आर्तःक्रुद्धस्तमोघोवाक्षुत्पिपासाभयर्दितःदानंपुण्यमकृत्वावा प्रायश्चित्तंदिनत्रयम् २ उपस्पृशेत्त्रिषवणंमहानद्युपसंगमे स्नानांतेचैवगांदद्याद्ब्राह्मणान्भोजयेद्दशेति ३ वाचयेत्स्वस्यप्रायश्चित्तस्योपदेशंकारयेत् पुण्यंयागादिसंकल्पितंदानयागाद्यकृत्वेत्यर्थः वस्तिकर्मणियमः । वस्तिकर्मणिरूढैश्चप्रच्छर्दनविरेचनैः शिशुकृच्छ्रेणशुद्ध्येततस्मात्पापान्नसंशयः १ प्रच्छर्दनविरेचनयोरभ्यासएवशिशुकृच्छ्रः अन्यत्रतुस्नानमात्रम्

दान और यज्ञादि नूं न कर्के तिसस्त्रीनूं गमन करे तां प्रायश्चित्त तीन ३ दिन करे । २ । और जेकर दानादि होण तो व्रतका प्रयोजन नहि तिसके विना कहतेहैं उपेति अर तीन काल महानदीके संगमके विषय स्नान करे और स्नानके अंतमें गौसंकल्प करे और दश १० ब्राह्मणां नूं भोजन खुलावे ॥ ३ ॥ वस्तिकर्मके विषय यमजीका वचनहै वस्तीति मूत्राशयकी चिकित्साकानाम वस्तिकर्महै मूत्राशयके शोधन करणके वास्ते उलटी अथवा जिलाब करवाए तिस पापतें पुरुष शिशु कृच्छ्र व्रतकर्के शुद्ध होताहै इसमें संदेह नहि । १ उलटी और जलाबके अभ्यासके विषय शिशुकृच्छ्र व्रत नूं करे जेकरकदाचित् करवाए तद स्नान कर्के हि शुद्ध होजाताहै अर वस्तिकर्मका स्वरूपदेखणा होवे तब भाव प्रकाशमें देखलेणा

तिस प्रकार अजीर्णादिकेविषयभी यमजीका कथनहै । अजीति अन्नकान पचना और पूर्वकहा जो अभ्युदित और उद्वमन और क्षौर कर्म और मैथुन और खोटा स्वप्न और दुष्ट पुरुषके साथ स्पर्श इनके विषयमें स्नान मात्र अर्थात् केवल स्नानाहि कहाहै । २ । देवताके मंदिरके शिलादि करके अपने गृहके वनानेमेंयमजी निंदाकरतेहैं इष्टेति देवताके मंदिरमें लगिआंहोआं जो पक्कि आं इट्टां और काष्ट और लोहा और पाषाण इनानूं ल्या करके लोभतें अपणे गृहके विषय जो पुरुष जोडतें हैं अर्थात् इनां करके अपणे गृहनूं बनातेहैं । १ । सो एकले और भयभीत और क्षुधातृषा करके दुःखी होए होए जितना पर्यंत पापका नाश नहि होता तितना पर्यंत बंधनमें

तथाच सएव ॥ अजीर्णेऽभ्युदितेवान्तेश्मश्रुकर्मणिमैथुने दुःस्वप्नेदुर्जनस्प र्शेस्नानमात्रंविधीयते॥२॥ देवागारशिलादिना स्वगृहकरणंनिंदति यमः इष्टकाकाष्ठलोहाश्मदेवालयसमन्वितम् गृहीत्वात्मगृहंचैवलोभाद्वैयोजयं तिये १ ॥ एकाकिनस्तथोद्विग्नाः क्षुत्तृषापरिपीडिताःबंधनेतेतुतिष्ठंतियाव त्पापस्यसंक्षयः २॥ अत्र प्राजापत्यचान्द्रायणादिकल्प्यम्॥ वानप्रस्थय त्योर्व्रतभंगे सएव वानप्रस्थोदीक्षाभेदकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वामहाकक्षंव र्द्धयेत् ॥ भिक्षुर्वानप्रस्थवत्सोमवृद्धिवर्जंस्वशास्त्रसंस्कारंचेति दीक्षाभे दोयमनियमातिक्रमः महाकक्षमौषधवनप्रदेशमुदकसेचनादिना वर्द्धयेत् सोमशब्देनौषधिसामान्यंलक्ष्यते ॥ तद्वृद्धिःपरंभिक्षोर्निवर्त्तते परंतु स ममित्यर्थः स्वशास्त्रसंस्कारः प्राणायामाभ्यासः ॥

अर्थात् नरकमें स्थित होतेहैं ॥ २ ॥ इसके विषय प्रायश्चित्त प्राजापत्य और चांद्रायणादिव्रत कल्पन करणा ॥ वानप्रस्थ और यति के व्रत भंगमेंभी यमजीका वचनहै ॥ वानेति वानप्रस्थी जब यम और नियम कर्मांका उल्लंघन करे तव द्वादश १२ रात्रके कृच्छ्र व्रत नूं करके पश्चात् औषधिके वन नूं जलके संचन करणे करके वधावे ॥ और संन्यासी भी जव यम और नियमादि कर्मांका उल्लंघन करे तव औषधिकी वृद्धितें विना अपणे शास्त्रके संस्कारनूं करे अर्थात् प्राणायामके अभ्यास नूं करे अर औषधिआंकी वृद्धिका संन्यासीको निषेधकिताहै (दीक्षाभेदोयमनियमातिक्रमः) इत्यादि पदां करके पूर्वले वाक्यका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥

हारीतजीका वाक्यहै झूठ और चुगली इनके वचनमे अर्थात् झूठ और चुगली कथन करके संन्यासी तप्त कृच्छ्र व्रत नू करे ॥ क्रोध और अहंकार और चुगली इनके विषय छागलेय जीका कथनहै व्रतेति संन्यासियोंके जो व्रत अर तिसी प्रकार जो उपव्रत हैं इनां मेसें एक एकके भी उल्लंघनके विषय प्रायश्चित्त बिधानकरीदाहै कि एक १ दिन रात्र उपवासनू रक्षकरके पश्चात् कृच्छ्र व्रतके सहित चांद्रायण व्रत नूं करे ॥ १ ॥ व्रत और उपव्रतां नू वैधायनजी कहतेहैं आदिके विषय मौनिके व्रतांनू कहतेहैं ॥ अहिंसेति जीवोंको न मारणा और सत्य कहणा और चोरी न करणी और मैथुन नकरणा एह संन्यासीके व्रत कहे हैं ॥ इसतें उपरंत उपव्रतांनू कहतेहैं अक्रोध इति क्रोध न करणा और गुरुकी शुश्रूषा करणी और सर्वदा काल प्रसन्न

हारीतः अनृतपिशुनवचने भिक्षूणांतप्तकृच्छ्रः ॥ क्रोधाहंकारपिशुनेषुच छागलेयः ॥ व्रतानियानिभिक्षूणांतथैवोपव्रतानिच एकैकातिक्रमेतेषांप्रायश्चित्तंविधीयते अहोरात्रोषितोभूत्वाकृच्छ्रचांद्रायणंचरेत् १ । कृच्छ्रपदंचांद्रायणविशेषणम् व्रतोपव्रतान्याह वौधायनः अथ मौनिव्रतानि। अहिंसासत्यवचनमस्तेयंमैथुनस्यचवर्जनम् ॥ अथोपव्रतानि ॥ अक्रोधोगुरुशुश्रूषाप्रसादशौचमाहारशुद्धिश्चेति जलप्रतिविंवदर्शनादौयाज्ञवल्क्यः ॥ मयितेजइतिच्छायांस्वांदृष्ट्वांवुनिवैजपेत् सावित्रीमशुचौदृष्टेचापलेचानृतेपिच ॥ १ मयितेज इतिमंत्रोवाजसनेयिप्रसिद्धः

रहणा और शौच करणी और शुद्ध भोजन करणा एह उपव्रत कथन कीते हैं ॥ जलके विषय छायाके दर्शनादिमें अर्थात् जलमै अपना स्वरूपदेखनेमें याज्ञवल्क्यजीने कहाहै मयीति जलके विषय अपणी छायानूं देखकरके (मयितेजः) इत्यादि वाजसनेयिके मंत्र नूं जपे और अशुद्धवस्तुके दर्शनमें अर चित्तकीअनवस्थिति औरझूठवचन इनके बिषयमें सावित्रीनूं जपे अर्थात् गायत्रीका जप करे ॥ १ ॥ इसजगा मयितेज इसमंत्रका और गायत्रीका जप एकवारहि करणा चाहिए और जेकर बहुतवार प्रतिविंवादि दर्शनहोवे तों बहुवार करणा

अशुचिस्थान और मूत्र और पुरीषादि और अनवस्थिति और निरर्थक शरीरकी क्रिया
और अंगीकार करके पश्चात् झूठ कथन करणा इनके विषय हारीतजीका वाक्यहै ॥ प्रतीति
जोपुरुष प्रथम अंगीकार करके पश्चात् झूठ अथवा मिथ्याकों सत्य कथन करे सो
तप्तकृच्छ्रके सहित चांद्रायण व्रतकों करे ॥ १ ॥ एहवाक्य गुरुकों प्रथम कथन कीता जो है
क्याकि में तुसाडा एह काम करांगा अथवामैं तुसानूं एह वस्तु दिआंगा इतना वचन कहकर
पश्चात् न करणा तिसके विषय जानना क्योंकि प्रायश्चित्तकों बडाहोणेते । भोजन कालके विषय
जो मौनव्रतहै तिसके नाशके विषय पराशरजीका वचनहै मौनेति मौन व्रतकों अंगीकार करके
ब्राह्मण और क्षत्री अथवा शूद्र स्थित होआ होआ न कथन करे अर्थात् भोजनतें पहले बोल
णाथा तिस विषय न बोले अर भोजन भक्षण करदा होआ जो बोले सो पुरुष शेष
अन्ननूं त्यागदेवे क्या बोलणेतें पीछे भोजन न करे ॥ १ ॥ केवल मुखककें

अशुचौ मूत्रपुरीषादौचापले वृथाचेष्टायांप्रतिश्रुत्यानृतोक्तौहारीतः ॥ प्रति
श्रुत्यानृतंब्रूयान्मिथ्यासत्यमथापिवा सतप्तकृच्छ्रसहितंचरेच्चान्द्रायणव्रत
मिति।१।गुरुवस्तुविषयकप्रतिश्रुताकरणपरमेतत् प्रायश्चित्तस्य गुरुत्वात्
भोजनकालीनमौनव्रतलोपे पराशरः मौनव्रतंसमाश्रित्यआसीनोनवदेद्
द्विजः भुंजानोहिवदेद्यस्तुतदन्नंपरिवर्जयेत् ॥१॥ केवलमुखेन जलपानेस
एव । विद्यमानेषुहस्तेषुब्राह्मणोज्ञानदुर्बलः तोयंपिबतिवक्त्रेणश्वयोनौजाय
तेध्रुवम् ।२। असपिंडैःसहरोदने पारस्करः। मृतस्यबांधवैःसार्द्धंकृत्वातुपरि
देवनम् वर्जयेत्तदहोरात्रंदानंश्राद्धादिकर्मचेत्यनेनैकाहः॥१॥एतच्च कामतः
अकामतस्तुस्नानमेव ॥ प्रेतालंकरणेशंखः॥कृच्छ्रपादःसपिंडस्यप्रेतालंकर
णेकृतेअज्ञानादुपवासःस्यादशक्तौस्नानमिष्यतइति ॥ १ ॥ कामतोद्विगुणम्

जल पीणेके विषयभी पराशरनेहि कहाहै विद्येति हत्थांके हुंदिआं जो ज्ञानदुर्बल अर्थात् मूर्ख
ब्राह्मण जलकों केवल मुख करके पीवताहै अर्थात् लंम्मा पैकर मुखके साथ पान करता
है सो निश्चय करके कुत्तेकी योनिकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ असपिंडांके साथ रुदन
करणके विषय पारस्करजीका कथनहै मृतेति मृत होआ जो कोई असंबंधी पुरुषहै तिस
के संबंधिआंके साथ रुदननूं करके तिस दिन रात्रके विषय दान और श्राद्ध अर आदिपद
करके तर्पणादि इनानूं न करे क्योंकि तिसते वोह अशुद्धहै १ सो एह इच्छा करके जब करे तब
एक दिन वर्जन करे अर जब इच्छासें न करे तब स्नान करकेहि शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ प्रेतके
भूषण करणे विषय शंखजीका वचनहै कृच्छ्रेति भिन्न पिंड वाला जो प्रेतहै तिसके भूषण
करणेमें अर्थात् स्नानादि कराणेमें कृच्छ्र व्रतका एक पाद करे अर जब अज्ञानतें करवाए तब
एक दिन उपवास करे अर जब इसमे शक्ति न होवे तब स्नानमात्रहि इच्छितहै ॥ १ ॥ अर
कामके विषयमें दूणा प्रायश्चित्त करे ॥

जो तप्त कृच्छ्रकी प्रवृत्तिके विषय अंगिराजी का वाक्यहै कि आत्मत्याग करणवाले प्रेतांके संस्कार करणके विषय अर्थात् शवांके स्नानादि करवाणेमें पातकी होताहै अर्थात् तब कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै सो एह वाक्य अभ्यासके विषयमें जानना ॥ सजाति और भिन्न जाति के शवके पीछे गमनके विषयमें मनुजीका वचनहै अन्विति सजाति और भिन्नजाति वाला जो शवहै तिसके पीछे इच्छासें जो पुरुष जाताहै अर्थात् मुरदेके दाह करण वास्तें जो साथ जाताहै सो सहित वस्त्रांके स्नान करके और अग्निनूं स्पर्श करके अर घृतका भक्षण करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ इस स्थानमें इच्छया इस पदके ग्रहण करणेसें एह कामके विषयमें जानना ॥ अर अकामके विषयमें केवल स्नानहि कथन कीताहै ॥ फेर याज्ञवल्क्यने जो कहाहै कि ब्राह्मेति भिन्न पिंड वाले ब्राह्मणने ब्राह्मण और क्षत्री

यत्तु तप्तकृच्छ्रानुवृत्तौ अंगिराः ॥ आत्मत्यागिनांच संस्कृतौ तदस्तुपा तककारीचेति तदभ्यासे ॥समानेतरजातिप्रेतानुगमने मनुः। अनुगम्येच्छ याप्रेतंज्ञातिमज्ञातिमेवच स्नात्वासचैलःस्पृष्ट्वाग्निंघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति १ अत्रेच्छयेतिग्रहणादेतत्कामतः अकामतस्तुस्नानमेव यत्तुयाज्ञवल्क्यः ब्राह्मणेनानुगंतव्योनशूद्रोनद्विजःक्वचित् अनुगम्यांभसिस्नात्वास्पृष्ट्वाग्निं घृतभुक्छुचिः ॥१॥ ब्राह्मणेनासपिंडेन द्विजोविप्रादिः ॥ अस्यचघृतप्राशन स्यभोजनकार्यविधाने प्रमाणाभावान्नभोजननिवृत्तिरितिमिताक्षरायाम् तन्मानवसमानविषयम् ॥ वस्तुतोघृतस्यप्रायश्चित्तार्थत्वादभोजनमेवयु क्तम् अतएववासिष्ठेन मनुष्यास्थिस्निग्धंस्पृष्ट्वात्रिरात्रमस्निग्धेत्वहोरात्रं शवानुगमनेचैवमिति ॥

और वैश्य अथवा शूद्र इनके मृत होयां पीछे गमन नहि करणे योग्य जे कदाचित् जाएभी तब जलके विषय स्नान करके अर अग्निनूं स्पर्श करके और घृतका भक्षण करके शुद्ध होवाहै ॥ १ ॥ इस घृतभक्षणकों भोजन कार्यकी विधिके विषयमें अप्रमाण होणेतें और भोज न की निवृत्ति नहि जाननी एह मिताक्षरामें लिखाहै सो मनुजीके वचनके तुल्यहि जानना वास्त वतें घृत भक्षणकों प्रायश्चित्तके अर्थ होणेतें भोजन नहि भक्षण करणे योग्य ॥ इसी कारणसें वसिष्ठजीने कहाहै मनुष्येति पुरुषकी नवीन हड्डीका स्पर्श करके तीन ३ रात्र उपवास करे अर पुराणी हड्डीका स्पर्श करके एक १ दिन रात्र उपवास करे इसी प्रकार शवके पीछे गमनके विषय जानना चाहिए ॥

विप्रेति ब्राह्मण प्रेतके पीछे गमनके विषय एक दिन कथन करणेतें क्षत्री प्रेत और वैश्य प्रेत के पीछे गमनके विषय कुछक अधिक प्रायश्चित्त कल्पन करणा चाहिए ॥ ब्राह्मणकों शूद्रके पीछे गमनके विषय पराशरजीका वाक्यहै । प्रेतीति लेजाईदे होए शूद्र शवके पीछे जो मूर्ख ब्राह्मण जाताहै सो तीन ३ रात्र व्रत करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ तीन रात्र व्रतके कीतिआं होआं पश्चात् समुद्रमे प्रवेश करण वाली जो नदी है तिसकों प्राप्त हो करके अर्थात् वडी नदीके विषय स्नान करके अर पश्चात् सौ १०० प्राणायाम कों करके और घृतका भक्षण करके शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ इस स्थानमें घृत भक्षणकों शुद्धिके अर्थ कथन करणेतें भोजनका निषेध नहि एह वाक्य कामका विषयहै ॥ अकामके विषयमें इसतें आधा प्रायश्चित्त करणा ॥ इसी प्रकार क्षत्रीकों वैश्य और शूद्रप्रेतके पीछे गमनमें अर वैश्यकों शूद्र प्रेतके पीछे गमन करणेमें प्रायश्चित्त कल्पन करणा ॥ अग्निहोत्रादि कर्म और वा

विप्रानुगमने एकाहस्योक्तत्वात् क्षत्रियवैश्यानुगमने त्वधिकं कल्प्यम् ब्राह्मणस्य शूद्रानुगमने पराशरः॥ प्रेतीभूतंतुयःशूद्रंब्राह्मणोज्ञानदुर्बलःअ नुगच्छेन्नीयमानंसत्रिरात्रेणशुद्ध्यति १ त्रिरात्रेतुततश्चीर्णेनदींगत्वासमुद्र गाम् प्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति २ अत्र घृतप्राशनस्य शुद्ध्यर्थाभिधानान्नभोजननिवृत्तिः॥ एतच्चकामतःअकामतस्त्वर्द्धम् ॥ एवं क्षत्रियस्यवैश्यशूद्रानुगमने वैश्यस्य शूद्रानुगमनेकल्प्यम् ॥ इष्टापूर्त्तशुभा शुभमहाकर्म्मस्वनुपहतानामपिऋत्विगाचार्यादीनांत्रीणि कृच्छ्राणि चांद्रा यणास्यसर्वप्रायश्चित्तमाह प्रयोगपारिजाते आचार्यः॥ सएवरजस्वलाक न्यारक्षणे प्रायश्चित्तमाह॥कन्यामृतुमतींशुद्धांकृत्वानिष्कृतिमात्मवान्तथा तुकारयित्वातामुद्वहेतानृशंसधीः १ दद्यात्तदृतुसंख्यागाःशक्तःकन्यापिता यदि दातव्यैकापिनिःस्वेनदानेतस्यायथाविधि ॥ २ ॥ तस्यागोर्दानेयथा विधि ऋतुसंख्याकविधि यथास्यात्तथाऽचरणीयमित्यर्थः

पी कूपादि और शुभ और अशुभ एह जो महाकर्म हैं इनके विषयमे चतुर भी हैं ऋत्विक् और आचार्यादि इनकों भी त्रय कृच्छ्र और चांद्रायण संपूर्ण प्रायश्चित्तकों प्रयोग पारिजातमें आचार्यजी कथन करते भये ॥ सोई आचार्यजी रजस्वला कन्याके रक्षणमें प्रायश्चित्त कों कहते हैं । कन्यामिति ज्ञानवाला और नहि निंदाके योग्य बुद्धि जिसकी ऐसा पुरुष प्रथम प्रायश्चित्तकों करके अर कन्याकों भी प्रायश्चित्त करवाके पश्चात् ऋतुवाली कन्याकों विवाह लये ॥ १ ॥ दद्येति अर कन्याका पिता जद समर्थ होवे तब कन्याकी ऋतुके समान गौआं देवे अर्थात् जितनीयां ऋतु लंघीयां होण विवाहतक तितनीयां गौयांका दान करे एह अर्थ है अर कन्याके विधि पूर्वक दानके विषय निर्धनने भी एक गौ देणी योग्यहै परंतु तिस गौके दान विषय ऋतु संख्याके नाम करके संकल्प करणा ॥ २ ॥

सो गौआं जामाता को देणियां अथवा ब्राह्मणको इसका उत्तर कहतेहैं ॥ गा इति अर कन्याका पिता धनी होवे तव ब्राह्मणांकों गौआं देवे अर जव निर्धन होवे तव दक्षिणा मात्रदेवे तिस कारणतें ऋतुकी संख्याके समान ब्राह्मणांकों गौआं देवे अथवा कन्या पासों दुवाए ॥ ३ ॥ उपोष्येति अर कन्या तीन ३ दिन उपवास रखकर पश्चात् रात्रिके विषय गौआंके दुग्धकों पीवे जब ऋतुतें रहित कन्या होवे तिस कालके विषय कन्याके तां ई भूषण देवे उौर तिस कन्याकों विवाहन वाला वर भी कूष्मांड संज्ञिक मंत्रों करके घृतका हवन करे ॥ ४ ॥ श्राद्ध और उपवासके दिनमें दातन करणके विषय विष्णु रहस्यमें लिखाहै । श्राद्धविति श्राद्ध और उपवासके दिनमें दातनकों करके गायत्रीके सौ १०० मंत्र करके पवित्र होआ जो जलहै तिसका आचमन करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और

गादद्याद्ब्राह्मणेष्वेवानिःस्वोनिःस्वस्तुदक्षिणाम् तस्मात्तद्दतुसंख्येषुब्राह्मणेषुप्रदापयेत् ॥ ३ ॥ उपोष्यत्रिदिनंकन्यारात्रौपीत्वागवांपयः अदृष्टरजसेदद्यात्कन्यायैतत्रभूषणम् तामुद्वहन्वरश्चापिकूष्मांडैर्जुहुयाद्घृतमिति ४ श्राद्धोपवासदिने दंतधावने विष्णुरहस्ये ॥ श्राद्धोपवासदिवसेखादित्वादंतधावनम् गायत्र्याःशतसंपूतमंबुप्राश्यविशुद्ध्यतीति ॥ १ ॥ अन्यान्यपिप्रकीर्णकान्यपरार्के शंखः ॥ प्रेतस्यप्रेतकार्याणिअकृत्वाधनहारकः वर्णानांयद्वधेप्रोक्तंतदर्धंप्रयतश्चरेत्॥१॥ अतिमानादतिक्रोधाद्भयादज्ञानतोपिवा उद्बध्नीयात्स्त्रीपुमान्वापिगतिरेषांनविद्यते ॥ २ ॥ पूयशोणितसंपूर्णेतमस्यंधेसुदारुणे षष्टिवर्षसहस्राणिनरकेयद्रुपासते ॥ ३ ॥ गोभिर्हंततथोद्बद्धंब्राह्मणेनचघातितम् संस्पृशंतेतुयेविप्रागरदाश्चाग्निदाश्चये ॥ ४

भी प्रकीर्णक प्रायश्चित्त अपरार्कमें शंखजीने कथन कीते हैं॥ प्रेतेति ॥ प्रेतके धन कों ग्रहण करणे वाला जब प्रेतके कर्मांकों न करे तब वर्णाके हत करणेके विषय जो प्रायश्चित कहाहै तिसतें आधा प्रायश्चित इंद्रियोंकोंरोककरकरे १ अब और कहतेहैं अतीति बहुत मान और बहुत क्रोध और भय अथवा अज्ञान इनतें स्त्री अथवा पुरुष किसीकों फांसी दे देवे तिनकी गति नहि होती । २ । तिनकी व्यवस्था कहतेहैं पूयेति पाक और रुधिर करके पूर्ण होआ होआ और अंधकार करके युक्त और भयानक जो नरक है तिसके विषय सठ हजार ६०००० वर्ष रहतेहैं ॥ ३ ॥ और कथन करतेहै ॥ गोभिरिति गौआंने जो मारिआ है और तिस प्रकार फांसी ले करके जो मृत होआ है उौर ब्राह्मणने जो मारिआ है इनाकों जेडे ब्राह्मण स्पर्श करते हैं और जेडे विषके देणे वाले हैं और जेडे अग्निके देणे वालेहैं ॥ ४ ॥

अन्विति और जेडे फांसी कर्के मृतहोयेके पीछे जातेहैं और जेडे पाशके छेदने वाले हैं सो संपूर्ण पापकर्के संयुक्तहोतेहैं तिनांकी शुद्धिनूं मैं कहताहुं । ५ । तप्तेति सो सब तप्तकृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धहोतेहैं और ब्राह्मणांकोंभोजन खुलावें अर ब्राह्मणाकेताईं बैलकेसहित गौ दक्षिणादेवें ६ ॥ इहां एकवचन वहुवचनके स्थानजानना इसी विषयमें संवर्त्तजीका वाक्यहै गविति गौआने जो ब्राह्मणने हतकीताहैं उोर आप पाश्चादिकर्के मृतहोआहै कल्याणकी इच्छा करदे जो सत्पुरुषहैं तिनानें इनके विषय रोदन न करणा चाहिए। १ । और कथन करतेहैं एषामिति इनांके मध्यमें एक किसी प्रेतनूं जो पुरुष आच्छादनकरताहै अथवा चुकताहै अथवाकटोदक क्रियानूं करताहै

अनुयातारोऽपियेचान्येयेषान्येपाशछेदकाः सर्वेतेपापसंयुक्तास्तेषांवक्ष्या मिनिष्कृतिम्॥ ५॥ तप्तकृच्छ्रेणशुध्यंतिकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् अनडुत्सहितां गांचदद्याद्विप्रायदक्षिणाम् ॥ ६ संवर्त्तः॥ गोभिर्हततथाविप्रैतथाचैवात्मघा तिनि नैवाश्रुपातनंकार्यंसद्भिःश्रेयोऽभिकांक्षिभिः ॥ १ ॥ एषामन्यतमंप्रेतं योवसेतवहेतवा कटोदकक्रियांकृत्वातप्तकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ २ ॥ तच्छवंके वलंस्पृष्ट्वमश्रुवापातितंयदि पूर्वोक्तानामकर्त्ताचेदेकरात्रमभोजनम् ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तानांकटोदकक्रियादीनामकर्त्ता केवलं तच्छवस्पर्शाश्रुपातकर्त्ताचेत्त देदमल्पप्रायश्चित्तमिति ॥ तथा ॥ यश्चात्मत्यागिनःकुर्यात्स्नेहात्प्रेतक्रियां नरःसतप्तकृच्छ्रसहितंचरेच्चांद्रायणव्रतम् ॥ १ ॥ बुद्धिपूर्वकएतत् ॥

अर्थात् उठाणे वास्ते किडा वनाकर लेजाताहै और जल देताहै सो पुरुष तप्त कृच्छ्र नूं करे । २ । और कहतेहैं तदिति अर जिसने केवल शवकेसाथस्पर्श कीताहै अथवा रोदन कीताहै अर कटोदकादि क्रिया जिसने नहिकीती तिसको एक रात्र उपवास कहाहै॥३॥पूर्वोक्तानांइत्या दि पदों कर्के इसी श्लोकका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥ तिस प्रकार औरभी कहतेहैं यइति जो पुरुष आत्मत्यागीहै अर्थात् पाशादि कर्के जो आप मृत होआहै तिसकी प्रेतक्रिया नूं जो पुरुष स्नेहतें करताहै सो तप्त कृच्छ्रके सहित चांद्रायण व्रतनूं करे॥ १॥एह ज्ञानके विषयमें जानना

इसी विषयमें यमजीका वाक्यहै नेति ब्राह्मणांके दंड कर्के हतहोए जो पुरुषहैं तिनके अ शौच और उदक और रोदन और निंदा और दया और तखतेका चुकणा इनां नूं नकरे ।१। ब्रह्म दंड नाम शापकाहै परंतु किसे तहीं ब्राह्मणांतें मृतहोवे सो सभ ब्रह्मदंडहत जानणा और कहतेहैं ॥ स्नेहाति स्नेह और अपना कोई कार्य तिसको सिद्धि वास्ते और भय इत्यादितें जो पुरुष आत्मत्यागीके अशौचादि नूं करताहै सो गोआंके मूत्रकर्के यवांके आहार नूं करदा होया तप्तकृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै।२।एतानि इत्यादि पदोंमेंइसी श्लोककाहि अर्थस्पष्टकीताहै और कथन करतेहैं कृत्वेति आत्मात्यागीकों अग्नि और उदक और स्नान करवाणा और स्पर्श

यमः ॥ नाशौचंनोदकंचाश्रुनापवादानुकंपने ब्रह्मदंडहतानांतुनकार्य्यंकट धारणम्॥१॥स्नेहकार्य्यभयादिभ्योयस्त्वेतानिसमाचरेत् गोमूत्रयावकाहारैः सतुकृच्छ्रेणशुध्यति॥२॥एतानिआत्मत्याग्याद्यशौचादीनि कटःशवखट्वा कृत्वाग्निमुदकंस्नानंस्पर्शंवहनमेवच रज्जुच्छेदाश्रुपातेच तप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्य ति॥३॥एतत्समुदितानां कर्म्मणां मतिपूर्वके संवर्त्तः वोढ़ॄणामग्निदात्दणांसं विधानविधायिनाम् तप्तकृच्छ्रद्वयाच्छुद्धिरेकमेवानुयायिनाम् १संविधानवि धायिनःप्रेतालंकारकारिणः एतदपिसमुदितकरणे

और चुकणा और पाथका छेदन और रोदन इना नूं जो पुरुष करदाहै सो तप्त कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥३॥ कथन कीते जो आत्मत्यागीके कर्महैं सभना इनकों ज्ञान कर्के जब करे तब एह प्रायश्चित्त जानना॥संवर्त्तजीका भी इसी विषयमें वाक्यहै वोढ़ॄणामिति चुकणे वाले और अग्निके देणे वाले और प्रेतकों भूषण करणे वाले इन संपूर्णांको दों २ तप्त कृच्छ्रतें शुद्धि होतीहै अर पीछे जान वाल्यांकी एक तप्त कृच्छ्र कर्के शुद्धि होतीहै ॥ १ संविधान इस पदका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै कथन कीते जो कर्महैं इनके विषय भीएभी जानना इति

उशनसजीका वचनहै प्रायेति ॥ अतिशयकरके लंघनलेणे और शस्त्र और अग्नि और विष और पाश और पर्वतके शृंग उपरों गिड कर और जल और काष्टादि इनों करके जो पुरुष अपणे आपनू हत करताहै और राजा और ब्राह्मण और वडे वडे सर्प ॥ १ ॥ और शृंगांवाले और दाडांवाले और नखांवाळे और सर्प विजली इनों करके जो हत होआ है और तिसी प्रकार संकर जातितें उत्पन्नजो होआहै इनकों अशौच और जल और अग्नि इह न देवे २ ॥ तिनके स्पर्श अथवा रोदन इनके विषयमें एक १ दिन उपवास करे अर अज्ञानतें उद्वहनादिके विषयमें अर्थात् शवादिके उठाणे विषे सांतपन कृच्छ्रव्रतका आचरण करे ३ अर जान करककरे तेवर्गौके मूत्रके सहित यवांनूं भक्षणकरदा होआ कृच्छ्रव्रत करे अथवा तप्तकृच्छ्र व्रत करे व्रतमें शक्ति न होवे तव एक मास भिक्षा अन्न खावे ।४। कृत्वेति आपेमृत होयेके चुक

उशनाः ॥ प्रायानशनशस्त्राग्निविषोद्बंधभृगुदकैः काष्ठाद्यैश्चात्मनोहंतुर्नृपब्रह्मसरीसृपैः ॥ १ ॥ शृंगिदंष्ट्रिनखिव्यालविद्युताभिहतस्यच तथासंकरजातस्यनाशौचोदकवह्नयः ॥ २ ॥ तत्स्पर्शेयदिवाक्रोशेदिनमेकमभोजनम् अज्ञानोद्वहनादौतुकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ ३ ॥ बुद्धिपूर्वेपुनस्तस्मिन्कृच्छ्रोगोमूत्रयावकः तप्तकृच्छ्रोप्यशक्तौतुमासंभिक्षाशनोपिवा ॥ ४ ॥ कृत्वातुवाहनादीनिप्रायश्चित्तमकुर्वताम् तप्तकृच्छ्रद्वयाच्छुद्धिरेकमेवानुयायिनाम् ॥५॥यस्त्ववशेषाःक्रियाःकुर्यात्स्नेहान्मूल्येनवापुनः। भवेत्तस्यपुनस्तप्तकृच्छ्रंचांद्रायणोत्तमः ॥६ ॥ वृहस्पतिः । विषोद्बंधनशस्त्रैणयस्त्वात्मानंप्रमापयेत् मृतोमेध्येनलिप्तोयोनान्यंसंस्कारमर्हति १ ॥ पाशंछित्वातुयस्तस्यवोढावह्निप्रदस्तथा सोपिकृच्छ्रेणशुद्ध्येतघातकोपिनराधमः २ ॥

णादि कर्म नूं करके जेडे पुरुष प्रायश्चित्त नूं नहि करदे तिनकीशुद्धि दो २ तप्तकृच्छ्रसें होतीहै अर साथजान वाल्यांकी शुद्धि एक तप्तकृच्छ्रसे होतीहै ॥ ५ ॥ यइति स्नेहतें अथवा मजूरी करके जेडा पुरुष आत्मघातीकी संपूर्ण क्रिया कों करताहै तिसकी शुद्धिके वास्ते तप्तकृच्छ्र और चांद्रायण श्रेष्ठहै ॥ ६ ॥ इसी विषयमें वृहस्पतिजीने कहाहै ॥ विषेति विष और पाश और शस्त्र इनों करके जो पुरुष अपणे आपनूं हत करता है अर अपवित्र वस्तु करके लिप्त होआ होआ जो मृत होआहै सोपुरुष और संस्कारके योग्य नहि अर्थात् मरणानंतर दाहादिसंस्कार उसका नहि करणा किंतुइसीतहाँ जलविषें प्रवाहदेणा १। पाशमिति तिसके पाश का छेदन करके जो पुरुष तिसनू चुकणे वाला और अग्निके देणे वालाहै सोभी कृच्छ्रव्रत करकें शुद्ध होताहै अर तिसके मारणे वाला भी नरांके मध्यमे नीच कृच्छ्रव्रत करके शुद्धहोवाहै २

दक्षजीकावाक्यहै ॥ आरूढेति संन्यास मार्गकों प्रथम धारण करके पश्चात् विषयांकी अभिला
षा करके तिसतें पतित होआ जो ब्राह्मण है अर चंडालांके दोष करके अपणी जातितें बा
हर कीताजो पुरुष है और पाशकरके जो पुरुष मृत होआहै इनांनूं स्पर्श करके चांद्रायण व्रत
नूं करे ॥ १ ॥ इसी का अर्थ स्पष्ट कीता है चांडालैरिति चांडालोंने पकड कर जेंडा बंधनमें
जोडया है सोचांडाल विनिःसृत है अथवा चांडालांके साथ रहकर जो आया है तिसका एह
नाम है ॥ और स्मृतिमे इसकी जगा मंडलतें जो बाहर होया ऐसा अर्थ कीता है सुमंतु
जीने कहाहै उद्बंधेति अपरा धी कों फांसी देणा

दक्षः ॥ आरूढपतितंविप्रंचांडालाच्चविनिःसृतम् उद्बंधनमृतंचैवस्पृष्ट्वाचां
द्रायणंचरेत् १ ।चांडालैर्गृहीत्वोद्बंधने योजितं चांडालैःसहोषित्वापरावृत्तंवा
स्मृत्यंतरेतु मंडलाच्चविनिःसृतमितिपाठः तत्र सजातीयसमूहेनदूषयित्वाव
हिष्कृतमित्यर्थः सुमंतुः । उद्बंधनपाशच्छेदनवहनेषु मासं भैक्षभक्षणंत्रिषव
णंच स्नायात् । च्यवनः॥ आत्मघातकस्यस्पर्शनेवहने तप्तकृच्छ्रंचरेत् ॥ विंश
तिर्गावोदक्षिणा ब्राह्मणेषु दद्यात् ॥ तथा ॥ शृंगिदंष्ट्रिनखिव्यालविषवह्नि
महाजलैः सदूरात्परिहर्त्तव्यः कुर्वन्क्रीडांमृतस्तुयः ॥ १ ॥ नागानांविप्रियं
कुर्वन्दग्धश्चाप्यथविद्युता निगृहीताश्चयेराज्ञाचौरदोषेणकुत्रचित् ॥ २ ॥

और पाशका छेदनकरणा और तिसकों चुकणा इस विषयमें एक १ मास तक भिक्षाका
अन्न भक्षण करे और तीन ३ काल स्नान करे ॥ च्यवन जीका वाक्य है आत्मेति
आत्मघातीके स्पर्श और चुकणेके विषयमें तप्तकृच्छ्र व्रत का आचरण करे और बीस २०
गौआं ब्राह्मणों कों दक्षिणादेवे तैसे और कहतेहैं शृंगीति शृंगांवालें अर्थात् गोमाहिष्यादि और सिंहा
दि औरनखां वाले और सर्प और अग्नि और वडाजल इनोंकरके और क्रीडा करदा होआ जो
पुरुष मृत होआहै सो दूरतें हि त्याग करणे योग्यहै ॥ १ ॥ नागेति और सर्पांनू पगडदा
होआ जो पुरुष मृत होआहै अथवा विजलीनें जो दग्ध कीता हैऔर चोरीके दोषकरके
राजाने जेंडे पुरुष पकडें हैं ॥ २ ॥

परेति परस्त्रीके हरणवाले अर क्रोधतें तिनां स्त्रीआंके पतिआंनें जो हत कीतेहैं अर भिन्न जातिवालोंनें अर संकीर्णजातिवालोंनें अर चांडालादियोंनें हत कीते भी पुरुष हैं ३ ॥ चौरेति चोर और अग्नि और विषइनके देणे वाले जोहैं और पाषंडी और खोटिआंबुद्धिआं वालेजो पुरुषहैं उर क्रोधतें अतिशयकरके विषउर अग्नि और शस्त्र और पाश और जल। ४। और पर्वत और वृक्ष इनांके गिडानेवाले नरांके मध्यमें नीच जेडेपुरुष तिनांकर्मानू करदेहैं अर्थात् विषआदि करके जेडेपुरुष मृतहोवेहैं वा मारतेहैं और जेडे निंदित चित्राकारि करके उपजीविका करतेहैं और जेडे स्थानांकों भूषण करतेहैं अर्थात् स्थान भूषण करणे करके उपजीविका करतेहैं ॥ ५ मुखइति जेडे कोईक पुरुष मुखे भग हैं अर्थात् जिनांके मुखसें दुर्गंध आवतीहै उर जेडे नमर्दहैं उर जेडे नपुंसकहैं अर्थात् जिनांका कीताहोया काय्यं नहि सिद्धहुंदा असे जो हैं

परदाराह्रंतश्चरोषात्तत्पतिभिर्हताः असमानैस्तुसंकीर्णैश्चांडालाद्यैस्तथाहताः ॥ ३ ॥ चौराग्निविषदाश्चैवपाषण्डाःक्रूरबुद्धयः क्रोधात्प्रायोविषंवह्निंशस्त्रमुद्बंधनंजलम् ॥ ४ ॥ गिरिवृक्षप्रपातांश्च येकुर्वन्तिनराधमाः कुशिल्पजीविनोयेचस्थानालंकारकारिणः ॥ ५ ॥ मुखेभगास्तुयेकेचित्क्लीवप्रायानपुंसकाः ब्रह्मदंडहतायेचयेचवाब्राह्मणैर्हताः ॥ ६ ॥ महापातकिनोयेचपतितास्तेप्रकीर्त्तिताः पतितानांनदाहःस्यान्नांत्येष्टिर्नास्थिसंचयः ॥ ७ ॥ नचास्रुपातःपिंडोवाकार्यंश्राद्धादिकंक्वचित् एतानिपतितानांतुयःकरोतिविमोहितः तप्तकृच्छ्रद्वयेनैवतस्यशुद्धिर्नचान्यथा ॥ ८ ॥ पराशरः ॥ चांडालेनश्वपाकेनगोभिर्विप्रैर्हतोयदा आहिताग्निर्मृतोविप्रोविषेणात्महतोपिवा लौकाग्निनाप्रदग्धव्योमंत्रसंस्कारवर्जितः ॥ १ ॥

उर जेडे ब्राह्मणांके शापकरके हतहोएहैं उर जेडे ब्राह्मणांने हतकीतेहैं । ६ ।महेति उर जेडे महापातकीहैं एह संपूर्णपतितकथन कीतेहैं और इनांपतितांका दाह उर अंत्येष्टिकर्म उर अस्थिआंका चुणना ७ ॥ उर रोदन उर पिंडदान उर श्राद्धादिकर्म इनांनूंनकरे पतितांके इना कर्मांको जो पुरुष मोहित होया होया करताहै तिसकी शुद्धि दो २ तप्त कृच्छ्रव्रतकरके होतीहै उर प्रकार करके नहि होती ॥ पराशरजीका वाक्यहै ॥ ८ चंडेति चंडाल और श्वपाक अर्थात् चंडाल भेद उर गौ उर ब्राह्मण इनांने जो हतकीताहै और विषकरके मृत होआजो अग्निहोत्री ब्राह्मणहै और आपजो हत होआहै अर्थात् आप पाशादि ले करकेजो हतहोआहै मंत्रांकरके संस्कारतें रहित लोककी अग्निकरके इनका दाह करणा हवन वालीअग्नि करके नहिकरणा १

स्प्रष्टेति सजातियोंके मध्यमें इसकों जो स्पर्श करणे वाला और चुकणे वाल, है सो प्राजापत्य व्रतनूंकरे अर पश्चात् ब्राह्मणांकी शिक्षानूं ग्रहण करे अर्थात् ब्राह्मण जो आज्ञा करें तिसनूंकरे ॥ २ ॥ दग्ध्वेति दाहकरके तिसकी अस्थिआंनू ग्रहण करके पश्चात् बुद्धि मानू पुरुष तिनाको दुग्धकरके धोदेवे अर पश्चात् हवनवाळी अग्नि करके अपणे मंत्रकों पडकर भिन्न २ दाहकरे ॥ ३ ॥ वशिष्ठजीका वचनहै जीवेति जो पुरुष पाश उार विष आदिकरके मृत होनेलगे अर मृत नहि होआ जीवतारहाहै सो बारां १२ रात्रकृच्छ्रव्रतनूं करे उार तीन ३ रात्र उपवास करे उार नित्य हि गिल्ले वस्त्रनूं धारणाकरके ॥ १ ॥ अर प्राणांनूं आत्माके विषय रोक करके तीन ३ वार अघमर्षण मंत्रका पठनकरे इसतें उपरंत तिसीविधिकरके गायत्रीकों जपे २

स्प्रष्टादग्धाचवोढाचसपिंडेषुचसवंशः ॥ प्राजापत्यंचरेत्पश्चाद्विप्राणा मनुशासनम् ॥ २ ॥ दग्ध्वास्थीनिपुनर्गृह्यक्षीरेणक्षालयेद्बुधः ॥ स्वे नाग्निनापुनर्दाहःस्वमंत्रेणपृथक्पृथक् ॥ ३ ॥ वसिष्ठः ॥ जीवन्ना त्मपरित्यागात्कृच्छ्रंद्वादशरात्रकम् ॥ चरेत्त्रिरात्रंचोपवसेन्नित्यंक्लिन्ने नवाससा ॥ १ ॥ प्राणानात्मनिचायम्यत्रिःपठेदघमर्षणम् अथवैते नकल्पेनगायत्रींपरिवर्त्तयेत् ॥ २ ॥ अपिवाग्निंसमाधायकूष्माण्डैर्जुहुया द्घृतम् यदन्यन्महापातकेभ्यस्सर्वमेतेनपूयते ॥ ३ ॥ अथवाचामेत् अग्निश्चमामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यःपापेभ्यो रक्षंतांयदह्नापापम कार्षंमनसावाचाहस्ताभ्यांपद्भ्यामुदरेण शिश्नाअहस्तदवलुम्पतुयत्किंचि दुरितंमयीदमहमापोऽमृतयोनौसत्येज्योतिषिजुहोमिस्वाहेति ॥ विष्णुः ॥ उद्बंधनमृतस्ययःपाशंछिंद्यात्सप्तरात्रेणकृच्छ्रेण शुद्ध्यति तप्तकृच्छ्रेणाशु

द्धयतीति पाठांतरम्

अथवाअग्निनूं समाधानकरके कूष्मांड संज्ञिक मंत्रोंकरके घृतका हवनकरे अर औरभी महापात कांतें जो पाप होआहै सोभी संपूर्ण इसअनुष्ठान करके नष्टहोताहै ३ । अथवा आचमनकरके अग्निश्चमेति इस मंत्रकरके होमकरे इति ॥ इसमंत्रका अर्थ संध्याके व्याख्यानमे स्पष्टकरके लि खाहै सो उसीजगासें देखलेना । पापांतेंरक्षाहोणी तिसमे प्रार्थनाहै इसमंत्रमे । विष्णुजीकावचन हैउद्बंधन करके अर्थात् फांसी लेकरके जोमृतहोआहै तिसके पाशकों जोपुरुष छेदताहै सो सप्तरात्रके कृच्छ्रव्रत करके शुद्ध होताहै । १ । और किसेजगा तप्त कृच्छ्र करके शुद्ध हुंदाहै ऐसा लिखाहै

आत्मेति पाशादिककरके जेडेदेहकों त्यागतेहैं अर्थात् फांसी और विष इत्यादिकरके जो मृत होएहैं तिनाकों स्नानादि पूर्वकभूषण करणे वाला और तिनाके निमित्तरोदनकरणे वाला और संपूर्ण प्रेतके वांधवांके साथरोदन करणे वाला स्नान करके शुद्धहोताहै और प्रेतकेवांधवांके साथ अस्थिसंचयनकों करके साहितवस्त्रांके स्नानकरे तो शुद्धहोताहै जो ब्राह्मणक्षत्री अथवा वैश्य शूद्र शवकेसाथ जावे तब नदीकों प्राप्त होकरके आठ सें अधिक हजार १००८ गायत्रीका जप करे (अर्थ) केवल ब्राह्मण शवके साथ जावे तव आठ से अधिक हजार १००८ गायत्रीका जप करे अर शूद्र किसे शवके साथ गमन करके स्नानकों करे ॥ अर प्रेतके संबंधिआंके साथ रोदन कों करके भी स्नान करके शुद्ध होताहै अर प्रेतके वांधवांके साथ अस्थिसंचयनकों करे तब समेत वस्त्रांके स्नानकों करके शुद्ध होताहै ॥ अथेति इसतें उपरंत अनाशका दि जो व्रत कुरुक्षेत्रादि विषे धारण कीते होए तिनांसें यो हट जाण

आत्मत्यागिनांच संस्कर्त्ता तदश्रुपातकारीच सर्वस्यैवप्रेतस्य तद्बान्धवैःसहा श्रुपातंकृत्वास्नानेवाकृतेऽस्थिसंचयने सचैलस्नानाद्द्विजःशूद्रःप्रेतानुगमनंकृत्वा स्रवन्तीमासाद्यगायत्र्यष्टसहस्रंजपेत्। द्विजःप्रेतानुगमनेष्टाधिकसहस्रम् शूद्रःप्रेतानुगमनंकृत्वास्नानमाचरेत् । तद्बांधवैःसहाश्रुपातंकृत्वास्नानेनशुद्ध्यति। तद्बांधवैःसहास्थिसंचयने कृते सचैलस्नानाच्छुध्यतीत्यन्वयः

॥ अथानाशकादिप्रच्युतप्रायश्चित्तानि ॥ तत्रमार्कण्डेयः ॥ येप्रत्यवसिता विप्राः प्रव्रज्यादिजलाग्नितः अनाशकान्निवृत्तायेवांछंतिगृहमेधिताम् १ ॥ तांश्चारयित्वात्रीन्कृच्छ्रांस्त्रीणिचान्द्रायणानिवा जातकर्मादिसंस्कारैः संस्कृताः शुद्धिभाजनाः ॥२॥ पराशरः ॥ अनाशनान्निवृत्तस्तुचातुर्वर्ण्येव्यवस्थितः चांडालस्सतुविज्ञेयोवर्जनीयःप्रयत्नतः ॥ १ ॥

तिनके प्रायश्चित्तांकों कहतेहैं। तिनांके विषय प्रथम मार्कंडेयजीका वाक्यहै । यइति जो ब्राह्मण संन्यासकर्म और जल और अग्नि इनके विषय मरणके वास्तें प्रथम उद्यत होए हैं अर फेर हट गये है और जिनांने इच्छा सें अन्नका त्याग कीता है तिसतें जेडे हट गये है अर फेर गृहस्थ की इच्छा करतेहैं ॥ १ ॥ तानिति तिनां कों तीन ३ कृच्छ्र व्रत अथवा तीन ३ चांद्रायण व्रत करवाके पश्चात् जात कर्मतें आद लेकर संस्कारां करके संस्कृत कीते होए शुद्ध होतेहैं ॥ २ ॥ पराशर जीका वाक्यहै अनेति अनाशक तें जो हटिआ है और ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य अथवा शूद्र जलादिके विषय मरणके वास्ते प्रथम निश्चय करके फेर जो हट गयाहै सो पुरुष चंडाल कथन कीताहै अर सो यत्न करके दूरतें हि त्यागना चाहिए ॥ १ ॥

एह उनको कथन कीताहै जेडे पुरुष चिर काल पिछे प्रायश्चित्तकों करतेहैं अर जेडे तात्काल प्रायश्चित्तकों करतेहैं तिनको फेर संस्कार नहि करवाणा ॥ पूर्वोक्त हि अर्थ स्पष्ट करके किहाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि मरणेवास्ते पिछले कहेहोए हेतुयोंकर्के प्रवृत्ती कहीहै सो जेकरधर्म्म के वास्ते होवे तां पूर्वोक्त दोष जानणा सो किहाहै कि गंगा प्रवाहलेणे कर्के जो मृत होए हैं और कुरुक्षेत्रादिविषे अनशन कर्के और बदरिकाश्रमादिस्थानके समीपजो स्थान तिसमे पर्वतपर आरूढ होकर डिगणेकर्के और उसी स्थानविषे कोइ स्थानहै जिसमे उइंधनकी विधिहै तिस कर्केऔर उसी स्थानविषेकोइ अग्निकास्थानहै तिस कर्के जो मरणहै सो सुगतिकाहेतुहै इस प्रसिद्धिसें॥और जेकर क्रोध आदिकर्के मरण वास्ते प्रवृत्ति होवे तदतिसते हटणेहि दोष नहि जानना

चिरकालंप्रायचिश्त्तमकुर्वतोऽवस्थानेएतत् ॥ जलेऽग्न्यादौ वा मरणायनिश्चित्यप्रवृत्तःप्रत्यवसितः इयंचपूर्वोक्तहेतुभिर्मरणायप्रवृत्तिर्धर्म्मायचेत्तदोक्तं वोध्यम् ॥ गंगाप्रवाहस्वीकारेण कुरुक्षेत्रादावनशनेन वदरिकाश्रमादिसामीप्यभृगुपातेन तत्रैव स्थानविशेषेणो इंधनेन तत्रैवस्थानविशेषेणाग्निना मरणं सुगतिहेतुकमितिप्रसिद्धेः॥क्रोधादिनाप्रवृत्तिश्चेत्तदानदोषः आपस्तम्बः॥चितिभ्रष्टातुयानारीमोहाद्विचलिताततः प्राजापत्येनशुद्ध्येत्तुतस्माद्धिपापकर्मणः ॥ १ ॥भविष्यत्पुराणम् ॥ आरूढोनैष्ठिकंधर्मं प्रत्यावृत्तिंव्रजेत्तुयः चांद्रायणंचरेन्मासमितिविद्धिखगाधिप॥ १ ॥ मानस्यांप्रत्यापत्तावेतत् ॥ ❀ अथस्पर्शप्रायाश्चित्तानिदक्षः॥पानेमैथुनसंसर्गेतथामूत्रपुरीषयोः। संस्पर्शंयदिगच्छेत्तुशवोदक्यांत्यजैस्सह॥ १ ॥

आपस्तंवजीका वचन है चितीति चिखा उपर चड करके जो स्त्री पीछेसें मोहतें हट गईहै सो तिस पापकर्मतें प्राजापत्यव्रत करकें शुद्ध होतीहै ॥ १ ॥ विष्णुजीने भविष्यत्पुराणमें गरुडजीके प्रति कहाहै आरूढइति जो पुरुष संन्यास मार्गके विषय स्थित हो करके पीछेसें गृहस्थ धर्मको प्राप्तहुआहै सो एक मास पर्यंत चांद्रयण व्रतकोंकरे हे गरुड ऐसेतूं जान । १ । एह प्रायश्चित्त तव जानना जबमन करके निवृत्त होवे ।❀ अथेति इसतें उपरंतदक्षजी स्पर्शके प्रायश्चित्तानूं कथन करते हैं पानइति जलादिका पान और मैथुन और मूत्र और पुरीष इनके करणेतें पिछे जद मनुष्य शव ओर रजस्वला स्त्री और चंडाल इनके साथ स्पर्शनूं करे १ ॥

संवर्त्त जीने कहाहै संन्येति जो खोटी बुद्धि वाला पुरुष संन्यासकों प्रथम धार कर के पश्चात् निवृत्त होताहै सो श्रमतें रहित होकर अर्थात् श्रमकों न मानकर छे ६ मास निरंतर कृच्छ्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ पराशरजीका वचन है जलेति जल और अग्नि इनके पतनके विषय और संन्यास और अन्न जलके त्याग व्रतके विषय मरणके वास्ते निश्चयनूं करके पश्चात् निवृत्त होए जो पुरुष हैं तिनकी शुद्धि किस प्रकार होवे ॥ १ ॥ तिनकी शुद्धि नूं आपहि पराशरजी कहतेहैं ब्राह्मेति ब्राह्मणांकी प्रसन्नता करके और तीर्थांके सेवन करणे करके और सैकडे गौआंके दान करके तीनों ३ वर्ण शुद्धहोते हैं ॥ २ ॥ इसीमें यमजीकहतेहैं जलेति जल और अग्नि और पाश और संन्यास और अनाशक अर्थात् अन्न जल

संवर्त्तः ॥ संन्यस्यदुर्मतिःकश्चित्प्रत्यापत्तिंभजेत्तुयः सकुर्यात्कृच्छ्रमश्रांतः षण्मासान्प्रत्यनंतरम् ॥ १ ॥ अश्रांतः श्रममन्यमानोनिरालसो वा प्रत्यनंतरंकृच्छ्रोत्तरकृच्छ्रंयथा ॥ पराशरः ॥ जलाग्निपतनेचैवप्रव्रज्यानशनेतथा अध्यवस्यानिवृत्तानांप्रायश्चित्तंकथंभवेत्॥ ॥ १ ॥ ब्राह्मणानांप्रसादेनतीर्थानुगमनेनचगवांचशतदानेनवर्णाःशुद्ध्यंतिवैत्रयः ॥ २ ॥ यमः ॥ जलाग्न्युद्बंधनभ्रष्टाःप्रव्रज्यानाशकच्युताः विषप्रपतनप्रायशस्त्रघाताच्चयेच्युताः ॥ १ ॥ सर्वेतेप्रत्यवसिताः सर्वलोकविगर्हिताः चान्द्रायणेनशुद्ध्येयुस्तप्तकृच्छ्रद्वयेनवा ॥ २ ॥ असमर्थविषयमेतत् । अंगिराः । यः प्रत्यवसितोविप्रःप्रव्रज्याग्निजलादितः अनाशननिवृत्तस्तुगृहस्थत्वंचिकीर्षति ॥ १ ॥ चारयेत्त्रीणिकृच्छ्राणित्रीणिचांद्रायणानितु जातकर्मादिभिः प्रोक्तंपुनःसंस्कारमर्हति ॥ २ ॥

का त्याग और विषभक्षण और पर्वतादितें पतन और शस्त्र इनके विषय मरणके वास्ते निश्चय करके फेर तिनातें निवृत्त होएहैं ॥ १ ॥ एह संपूर्ण प्रत्यवसित हैं और संपूर्ण लोकके विषय निंदितहैं और चांद्रायणव्रत अथवा दो २ तप्त कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होतेहैं ॥ २ ॥ एह असमर्थताका विषयहै २ इसी विषयमें अंगिराजीकाभी वचनहै यइति संन्यास और जल और अग्नि इनके विषय मरणके वास्ते निश्चय करके फेर जो ब्राह्मण निवृत्त होआहै और अनाशनव्रततें जो निवृत्त होआहै अरतिनातें हट कर फेर गृहस्थकी इच्छा करता है ॥ १ ॥ तिस पुरुषकों तीन ३ कृच्छ्र अथवा तीन ३ चांद्रायण कर वाके फेर जातकर्मादि संस्कार कर्मकरवाणे योग्यहै ॥ २ ॥

मूत्रेतितव मूत्रकरणेतंअनंतर स्पर्शके विषयमें एक १ दिन उपवास करे और पुरीषके विषयमें दो २ दिन और मैथुनके विषयमे तीन ३ दिन और पानके विषयमे चार ४ दिन उपवास करे॥२॥ चंडालके ष्ठी वनादिके स्पर्शके विषय तात्काल स्नान नूं आपस्तंवजी कथन करेंगे ॥ भुक्तेति भक्षण करके उच्छिष्ट होआ होआ आचमननूं नकरके प्रमादते जद चंडाल अथवा श्वपचके साथ स्पर्शनूं करे तब तात्काल स्नान नूं करे।३। पश्चात् गायत्रीका आठसअधिक हजार १०८ तिसप्रकार द्रुपदादि वइत्यादिमंत्रोंका एकसौ १०० जपकरे और तीन ३ रात्र उपवास नूं रक्षकर पीछेंसे पंचगव्यकें पीनेकरके शुद्ध होताहै॥४॥ शातातपने भी कहाहै उच्छिष्टइति उच्छिष्ट होआ होआ ब्राह्मण जद

दिनमेकंचरेन्मूत्रेपुरीषेतुदिनद्वयम् दिनत्रयंमैथुनेस्यात्पानेतुस्याच्चतुष्टयम् ॥ २ ॥ चांडालष्ठीवनादिस्पर्शे सद्यःस्नानंवक्ष्यत्यापस्तंवः भुक्तोच्छिष्टस्त्व नाचांतश्चांडालैःश्वपचेनवा प्रमादात्स्पर्शनंगच्छेत्तत्रकुर्याद्विशोधनम् ॥ ३ ॥ गायत्र्यष्टसहस्रंतुद्रुपदानांशतंतथा ॥ त्रिरात्रोपोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ ४ ॥ शातातपः ॥ उच्छिष्टस्तुस्पृशेद्विप्रश्चांडालंचेत्कथंचन ॥ ऊर्ध्वोच्छिष्टस्तु संस्पृश्यद्विजस्सांतपनंचरेत् ॥ अधोच्छिष्टस्त्रिरात्रांतेपंचगव्येनशुध्यति ॥ १ ॥ भुक्तोच्छिष्ट ऊर्ध्वोच्छिष्टः उत्सृष्टमूत्रपुरीषःअधउच्छिष्टः ॥ उशनाः ॥ चांडालश्वपचैःस्पृष्टोविण्मूत्रेकुरुतेद्विजः त्रिरात्रेणविशुद्ध्येत्तुभुक्तोच्छिष्टः षडाचरेत् ॥ १ ॥

कदाचित् चंडाल नूं स्पर्शकरे॥ ऊर्ध्वोच्छिष्ट होआ होआ ब्राह्मण चंडाल नूं स्पर्श करे तब सांतपन व्रतका आचरण करे अर जब अधोच्छिष्ट होकर चंडालनूं स्पर्श करे तब पंचगव्यकेपान करके और तीन ३ आचमन करेतो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अन्ननूं भक्षण करके ऊर्ध्वोच्छिष्ट होताहै अर मूत्र और पुरीष नूं त्याग करके अध उच्छिष्ट होताहै एह इनका भेद है । उशनसजी का वचन है चांडेति चांडाल और श्वपच इनकरके स्पर्श कीता होआ ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य जब विष्टा और मूत्रकों त्यागता है तब तीन ३ रात्रकरके शुद्ध होता है अरभुक्तोच्छिष्ट क्याभोजनकेपीछे जेकर इनके साथ स्पर्शकरे तां छे ६ रात्र करके शुद्ध होवा है ॥ १ ॥

व्याघ्रजीका वाक्य है चंडेति जो पुरुष चंडालके जल करके स्पर्श करताहै सो स्नान करके शुद्ध होताहै उच्छिष्ट जब चंडालके जलकरके स्पर्शवालाहोवे तब तीन३ रात्र व्रत करके शुद्ध होताहै १ ॥ कश्यपजीने कहाहै श्वेति कुत्ता और सूर और निंदित और चंडाल और मदिराका भांडा और ऋतुवाली स्त्री इनांकों जब उच्छिष्ट होआ होआ स्पर्श करे तब कृच्छ्रसांतपनव्रत नूं करे ॥ १ ॥ एह प्रायश्चित कामतें अभ्यासके विषयमे जानना क्योंकि अकामके विषयमें थोडा प्रायश्चित्त कथन करणेंते ॥ तिस प्रकार वृद्धशातातपजीने कहाहै उच्छिष्टति ॥ २ ॥ उच्छिष्ट होआ ब्राह्मण मदिरा और शूद्र और कुत्ता और जो अपवित्रवस्तु हैं इनांनूं

व्याघ्रः॥ चंडालोदकसंस्पृष्टः स्नानेनसविशुद्ध्यति उच्छिष्टस्तेनसंस्पृष्टस्त्रि रात्रेणविशुद्धति १ कश्यपः॥ श्वसूकरांत्यचंडालमद्यभांडरजस्वलाःबघ्रुच्छिष्टः स्पृशेत्तष्टकृच्छ्रसांतपनंचरेत् १ एतत्कामतोभ्यासि मद्यंसुराअन्यत्राल्पप्राय श्चित्तस्योक्तत्वात् तथाचवृद्धशातातपः॥ उच्छिष्टः संस्पृशेद्विप्रोमद्यंशूद्रंशुनो ऽशुचीन्अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति १ आपस्तम्बः॥ भुक्तोच्छि ष्टोंत्यजैःस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् अधोच्छिष्टस्मृतः पादःपादआचमनेत था १ अधोच्छिष्टोवर्त्तमानभोजनः भोजनसमयेआचमनसमयेवायदाऽधो च्छिष्टोभवेत्तदेदंप्रा एकवृक्षेसमारूढौचांडालब्राह्मणौयदि फलंभक्षयतस्त त्रप्रायश्चित्तंकथंभवेत् ॥ २ ॥

जब स्पर्श करे तब एक दिनरात्र उपवास को रक्षकरके पश्चात् पंचगव्य के पीनेसें शुद्ध होता है ॥ १ ॥ आपस्तंवकावाक्यहै भुक्तविति अन्ननूं भक्षणकरके उच्छिष्टहोआ चंडालां केसाथ स्पर्श करे तब प्राजापत्यव्रतनूं करे अर भोजनकालविषय और आचमन काल विषय जब अधोच्छिष्ट होवे तब प्राजापत्यव्रतका एक १ पाद करे अर्थात् चौथाहि स्सा करे ॥ १ ॥ और कथनकरतेंहैं(प्रश्ण)एकेति एक वृक्षके विषय स्थित होए होए चांडाल और ब्राह्मण जब फल कों भक्षण करे तब तिसकी शुद्धि किस प्रकार होवे २ (उत्तर)इसकी शुद्धिनूं आपहि आपस्तं वजी कहतेहैं

आह्लेति अपने पापनू ब्राह्मणांनूं दसकरके सहित वस्त्रांके स्नान करे और एक दिन रात्र उपवासनू करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ इसमें व्यवधान करके अर्थात् दूरकर्के और अव्यवधानकर्के क्यासमीपकर्के त्र्यरात्र अर एक रात्रका व्रतग्रहण करणा बुद्धिकेविषयमें एह प्रायश्चित्त जानना ॥ अर अज्ञानके विषयमें ब्रह्म पुराणमें कहाहै विप्रइति ब्राह्मण चंडालके सहित एक जिस वृक्षके विषय अज्ञानतें फलनूं भक्षण करे तब अघमर्षण नूजपे १ ॥ सो जप पूर्वोक्त वचनसे तीनवार जलविषे निमग्न होकर करणाचाहिए ॥ एकेति जद ब्राह्मण चंडालके साथ वृक्षकी एक शाखाके विषे स्थित होआ होआ फलांनू भक्षणकरे तब तीन ३ रात्र प्रायश्चित्तहै अर पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होताहै इसमे समीपताके

ब्राह्मणान्समनुज्ञाप्यसवासाःस्नानमाचरेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्ये नशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ अत्राग्रिमश्लोकेच व्यवधानसंनिधानाभ्यामेकरात्र त्रिरात्रे ॥ मतिपूर्वेचैतत् अमतिपूर्वेतु ब्रह्मपुराणे विप्रश्चांडालसहितोयत्र कस्मिन्वनस्पतौ ॥ अज्ञानात्तुफलंभुक्केचरेत्तत्राघमर्षणम् ॥ १ ॥ एकशाखांसमारूढःफलान्यश्नात्यसौयदि प्रायश्चित्तंत्रिरात्रंस्यात्पंचगव्येनशुध्यति ॥ २ ॥ चांडालेनगृहीतंयस्त्वज्ञानादुदकंपिबेत् तत्रशुद्धिंविजानीयात्प्राजापत्येननित्यशः ॥ ३ ॥ भुक्तोच्छिष्टस्त्वनाचांतोह्यमेध्यंयदिसंस्पृशेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुध्यति ॥ ४ ॥ बृहस्पतिः॥ उच्छिष्टोच्छिष्ट संस्पृष्टःशुनाशूद्रेणवाद्विजः कृत्वोपवासंनक्तंचपंचगव्येनशुध्यति १ ॥

विषय तीन ३ रात्र प्रायश्चित्त जानना ॥ २ ॥ और कहतेहैं चांडेति जो पुरुष चंडाल कर्के ग्रहण कीते होए जलनू अज्ञानसें पानकरे तिसकी शुद्धि प्राजापत्य व्रत करके जाननी चाहिए । ३ । भुक्तेति भुक्तोच्छिष्ट अथवा अनाचांत अर्थात् आचमन नूं न करके अपवित्र वस्तुनू जद स्पर्शकरे तब एक दिनरात्र उपवासनू रक्ष करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ ४ ॥ बृहस्पतिजीने कहा है । उच्छिष्टेति ॥ ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य उच्छिष्ट करके उच्छिष्ट स्पर्शकीताहोआ अर्थात् जूठे कर्के जूठाछोताहोया पश्चात् कुत्ता अथवाशूद्र इनके साथ स्पर्श नू करे तब उपवास अथवा नक्त व्रत नू करके पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होता है ॥ १ ॥

एहप्रायश्चित्त इच्छाके विषयमें है ॥ अकामके विषयमें छागलेयजीने कहाहै ॥ उच्छीति उच्छिष्टकर्के उच्छिष्ट स्पर्शकीता होआ स्नाननू करे अर जव स्नानकर रहे अर फेर उच्छिष्ट करकें स्पर्श करे तव प्राजापत्य व्रतनू करे ॥ १ ॥ संवर्त्त जीका वाक्यहै ॥ कृतेति त्यागया है मूत्र और पुरीष जिसने अर्थात् अथ उच्छिष्ट अथवा भुक्तोच्छिष्ट ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्यजद कुत्ता और चंडाल इन करके स्पर्श करे तव प्रथम स्नान करके देवीका एकहजार १०००जप करे अर्थात् गायत्रीका जप करे१ कर्मेति लुहार और धोवा और घुमार और झीवर और नठ इनांकरके उच्छिष्ट जद स्पर्श करे तव एक रात्रजल पानकरे अर जव लुहारादि उ

कामकारविषयमेतत् ॥ अकामतस्तुछागलेयोदितम्। उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टःस्नानंयेषुविधीयते तेनैवोच्छिष्टसंस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् १ संवर्त्तः कृतमूत्रपुरीषोवाभुक्तोच्छिष्टोथवाद्विजः श्वादिस्पर्शेजपेद्देव्याःसहस्रंस्नानपूर्वकमिति १ तेनस्नातेनपुनरुच्छिष्टःसंस्पृष्टश्चेत्तदाप्राजापत्यमित्यर्थः कर्मारंरजकंवेनंधीवरंनटमेवच एभिःस्पृष्टस्तथोच्छिष्टएकरात्रंपयःपिवेत् १ ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायांजातोम्वष्ठः ब्राह्मण्यांविशोजातोवैदेहकः वैदेहकादम्वष्ठायांजातोवेनः संकरजातीयः ॥ तैरुच्छिष्टैस्त्रिरात्रंस्याद्घृतं प्राश्यविशुद्ध्यति ॥१ ॥ भुंजानेनतुविप्रेणस्पृष्टायदिरजस्वला ॥ शिशुकृच्छ्रेणशुद्ध्येतुप्राणायामशतेनच॥ २ ॥ आपस्तंवः ॥ उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टोविशोचंस्तुद्विजोत्तमः ॥ उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १॥ चांडालादिविषयमेतत् ॥

च्छिष्टहोन तिनकरके स्पर्शकरे तवतीन३ रात्रजलपान करे पश्चात् घृत नू भक्षणकरके शुद्धहोताहै १ भुंजेति ॥ भोजनकरदे होए ब्राह्मणने रजस्वला स्त्री जद स्पर्श करी तव शिशुकृच्छ्र व्रत अथवा सौ १०प्राणायाम करके शुद्धहोता है ॥ २ ॥ आपस्तंबजीका बचनहै ॥ उच्छिष्टइति विशोचनक्या विशेष कर्के शोक कर्त्ताहोया ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य इनकेमध्यमें श्रेष्ठ उच्छिष्ट चंडालनें जद स्पर्श कारिए तबएक १ रात्र उपवास रक्ष कर्के पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै १ चंडालादिका एहविषयहै

हारीत जीका वाक्यहै ॥ महेति ब्रह्महत्यादि पाप नू करण वालेके साथ स्पर्श होवे तब स्नानमात्र करे जब चंडालादिके साथ स्पर्श कीता होश्रा फेर चंडालादिकें साथस्पर्श करे तब ब्रह्मकूर्च करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ श्रौर कहते हैं त्रीति तीन ३ रात्र अथवा एक १ रात्र जो पुरुष अन्न नू न भक्षण करदा होश्रा अर पंच गव्य नू भक्षण करदा होश्रा इच्छीतरां ओंकार नू जपे सो भी शुद्धि नू प्राप्तहोताहै अर्थात् शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ कृतेति मूत्र अथवा पुरीष इनके त्यागयां होश्रां अथवा भुक्तोच्छिष्ट ब्राह्मण श्रौर क्षत्री अथवा वैश्य जब कुत्ता श्रौर चंडाल इत्यादि कर्के स्पर्श करे तब स्नान नू करके पश्चात् हजार गायत्री काजपकरे ॥ ३ ॥ आपस्तंबजीनेकहाहै विप्रइति जब उच्छिष्ट ब्राह्मणकेसाथ कदाचित् ब्राह्मण स्पर्श करे तब आचमनकर्के शुद्ध होताहै एह आंगिरसजीने कहाहै ॥ १ ॥ श्रौर कथन करतेहैं

हारीतः महापातकिसंस्पर्शेस्नानमेवविधीयते संस्पृष्टस्तुयदास्पृष्टोब्रह्मकूर्चेनशुद्ध्यति १ स्पर्शानंतरंपुनः स्पृष्टइत्यर्थः त्रिरात्रमेकरात्रंवायोनश्नन्पंचगव्यभुक् जपेच्चप्रणवंसम्यगेवंशुद्धिमवाप्नुयात् २ कृतमूत्रपुरीषोवाभुक्तोच्छिष्टोथवाद्विजः श्वादिस्पृष्टोजपेद्देव्याः सहस्रंस्नानपूर्वकम् ३ देव्यागायत्र्याः आपस्तंबः विप्रोविप्रेणसंस्पृष्टउच्छिष्टेनकथंचन आचम्यैवतुशुद्धःस्यादित्यांगिरसभाषितम् १ उदक्यास्पृष्टउच्छिष्टेविड्वराहश्वकुक्कुटैःकाकमार्जारकृव्याद्भिरुपवासेनशुद्ध्यति २ येनकेनविदुच्छिष्टोह्यमेध्यंयदिसंस्पृशेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ३ छागलेयः ॥ उच्छिष्टःसंस्पृशेद्विप्रोमद्यशूद्रशुनोशुचीन् अहोरात्रोषितःस्नात्वापंचगव्येनशुद्ध्यति १ उच्छिष्टःस्पृष्टआचामेदुच्छिष्टेनस्वजातिना नक्तेनचोपवासेनक्षत्रविट्स्पर्शनेक्रमात् ॥ २ ॥

उदेति रजस्वलास्त्री श्रौर वैश्य श्रौर ग्राम्य सूकर श्रौर कुत्ता श्रौर कुक्कुड श्रौर काक श्रौर बिल्ला श्रौर गिरजादि इनकरके जद उच्छिष्ट स्पर्श करे तब एक १ उपवासकर्के शुद्ध होताहै २ ॥ येनेति जिस किसि वस्तु करके उच्छिष्ट होश्रा पुरुष अपवित्र वस्तु नू जद स्पर्श करे तब एक १ दिन रात्र उपवास रक्षकर्के पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ छागलेयजीकावाक्यहै उच्छिष्टइति उच्छिष्ट ब्राह्मण मदिरा और शूद्र श्रौर कुत्ताश्रौर अपवित्र वस्तु इनांनू जद स्पर्श करे तबएक दिनरात्र उपवास नू रक्षकर्के पश्चात् स्नान करे फेर पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होजाताहै ॥ १ ॥ उच्छिष्टइति उच्छिष्ट सजातिकरके उच्छिष्ट पुरुष जब स्पर्शकरिए तब आचमन कर्के शुद्ध होताहै अर जब उच्छिष्ट क्षत्री कर्के ब्राह्मण स्पर्शकरे तब नक्तव्रतकर्केशुद्ध होताहै अर जद उच्छिष्ट वैश्य कर्के ब्राह्मण स्पर्श करे तब उपवास करके शुद्धहोताहै ॥ २ ॥

इसीमे शातातपजीका वाक्यहै जो ब्राह्मण जेकर चांडालकी छाया विषे आजावे तद तिसकी शुद्धिवास्तेस्नान और घृतप्राशन किहाहै । १ । और जब ब्राह्मण चांडालादिने हस्थलए काष्ठ कक अथवा वस्त्रकर्के स्पृष्ट क्या छोता होवे तद अंगांनु धो कर्के आचमनकरे और जेकर उह जूठा भीया तद रात्रि भोजनका त्यागभी करे । २ । औपकायन ऋषिका वाक्यहै अस्पृश्य जो चांडालादि तिनांके साथ व्यवधानसें वेडी आदिकर्के तरणेकी इच्छावाला होया होया जावेतद हस्थ और पाद जलविच्चपारक्षे परंतु साक्षात् स्पर्श नकरे तां उसको दोष नहि ॥ १ ॥ शातातपजी का वचनहै कापालिक जो हैं पाषंडी तिनके साथ जब ब्राह्मणादि स्पर्श करे तद विधि पूर्वक स्नानकर्के १०० इकसउ प्राणायामकरे और तप्तघृतकापानकरे तां शुद्ध हुंदाहै । १ । षट्त्रिंशन्मत

शातातपः । यस्तुछायांश्वपाकस्यब्राह्मणोप्यधिगच्छति तत्रस्नानंतुतस्यैवघृतप्राशश्चशोधनम् ॥ १ ॥ अंत्यजैर्हस्तकाष्ठेनवाससास्पृष्टएवच प्रक्षाल्यांगंतदाचामेदुच्छिष्टस्तुनिशांक्षिपेत् ॥ २ ॥ औपकायनः । अस्पृश्येनसहैकांतेतरन्नौसंक्रमादिभिः निदध्याद्प्सुपाण्यादीन्नदुष्येत्तेनचास्पृशन् ॥ १ ॥ शातातपः ॥ कापालिकानांसंस्पर्शेस्नानंःकृत्वायथाविधि प्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ १ ॥ षट्त्रिंशन्मते ॥ बौद्धान्पाशुपतांश्चैवलोकायतिकनास्तिकान् विकर्म्मस्थान्द्विजान्स्पृष्ट्वासचैलोजलमाविशेत् ॥ १ ॥ मनुः ॥ दिवाकीर्त्तिमुदक्यांचपतितंसूतिकांतथा शवंतत्स्पर्शिनंचैव स्पृष्ट्वास्नानंसमाचरेत् ॥ १ ॥ दिवाकीर्त्तिश्चाण्डालः ॥ एतदकामतः तथाचबृहस्पतिः ॥ दिवाकीर्त्तिंचितियूपंपतितंचरजस्वलां स्पृष्ट्वाप्रमादतोविप्रः स्नानंकृत्वाविशुद्ध्यति ॥ १ ॥

जो३६ छत्री ऋषियों ने कठे होंकर्के बनायाहै तिसमै लिखयाहै । बाविति बौद्ध नास्तिक लोक और पाशुपत पशुपतिजीकेमतवाले और लोकायतिकएभी तिन्हांकेमतमैमिलतेहैं और नास्तिक और विरुद्ध कर्म्मवाले जो त्रयवर्ण इनको स्पर्शकर्के सहित वस्त्रांके जलमै प्रवेशकरे । १ । मनु जी कहतेहैं दिवाकीर्त्ति इसजगा चांडालजानणा और रजस्वलास्त्री और पतित और सूतिकाक्या प्रसूतास्त्री और शव क्या मृतदेह और तिसके स्पर्श करणे वाला इनका स्पर्शकर्के स्नानकरे १ ॥ एह प्रायश्चित्त अकामते कीते होए पापविषे जानणा। सोई बृहस्पति जी कहतेहैं दिवेति चांडाल और चिता शवखट्वा और यूप जिसस्तंभके साथ पशुको वांध कर्के मारतेहैं और पतित और रजस्वला इनांको जेकर प्रमादसे ब्राह्मण स्पर्श करे तां स्नान कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

और कामनाकर्के इसकोंजो कर्त्ताहै तिसवास्तेभी वृहस्पतिजी कहतेहैं पततीति पतित और सूतिका और नीच और शव इनका कामनाते दर्शनकरे तां स्नानकर्के और पवित्रवस्तुस्पर्शते अनंतर घृतको प्राशनकरे तो शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ और शव इसजगा मृत मनुष्यका जानणा जेकर कुत्ते आदि मृत होए के साथ स्पर्शादि होवे तां अधिककल्पना करणी अर्थात् गायत्रीका जपभी साथ करणा और मृत चांडालके स्पर्शविषे आगे प्रायश्चित्त आवेगा ॥ और मोल लेकर मुर्दा उठाणे वाले जो पुरुषहैं तिनांको प्राजापत्य कराणा परंतु तिसके स्पर्श विषे गायत्रीका जपभीकराणा ॥ आगेकहणा जो वाक्य तिसतेंइहबहुतवार करणेमें जानना ॥ और एकवारकरणेमें मार्कण्डेयपुराण विषे वचनहै अभोज्येति अभोज्य और सूतिका और खंडक्या नपुंसक और मा

कामतोपिसएव पतितंसूतिकामंत्यंशवंस्पृष्ट्वातुकामतःस्नात्वाचैवशुभंस्पृष्ट्वा घृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ १ ॥ शवेति मृतमनुष्यशवस्पर्शे मृतश्वादिस्पर्शेत्वधिकंकल्प्यम् मृतचांडालस्पर्शेवक्ष्यते मूल्येनशवहारकाणां प्राजापत्यं । तत्स्पर्शेगायत्रीजपोपिवक्ष्यमाणवाक्यात् ॥ एतच्चाभ्यासेसकृद्विषये मार्कण्डेयपुराणे अभोज्यसूतिकाखण्डुमार्जाराखुश्वकुक्कुटान् पतितापविद्धचांडालमृतहारांश्चधर्म्मवित् संस्पृश्यशुद्ध्यति स्नानादुदक्याग्रामसूकरौ ॥ १ ॥ कापालिकानांस्वरूपं यथा नरास्थिमालाकृतभूरिभूषणः श्मशानवासीनृकपालभोजनः पश्यामियोगांजनशुद्धदर्शनोजगन्मिथोभिन्नमभिन्नमीश्वरादिति॥१॥अभोज्यारजकादयः अपविद्धोवहिष्कृतः मृतहारोमूल्येनशवहारकः मार्जारोवनमार्जारःस्नानेविशेषमाहगार्ग्यः

जार क्या बिल्ला और चूहा औरकुत्ता औरकुक्कुट और पतित और अपविद्ध और चांडाल और मृतके उठाणेवाला और रजस्वला औरग्रामशूकरइनांके साथधर्म्मवेत्तापुरुष स्पर्शकरेतां स्नानतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ कापालिकादियोंका स्वरूपकहतेहैं नरेति मनुष्यकी हड्डिओंकीमालाकर्के जो भूषित होवे और श्मशानवासी और नृकपाल जो मनुष्यके मस्तककी हड्डी तिसविषे भोजन करे और कहे किजगत् ईश्वरसें भिन्नहै और अभिन्नभी है ऐसे मैं देखताहुं ऐसे योगरूपी अंजन कर्के शुद्धहै दर्शन जिसका ऐसे का नाम कापालिकहै ॥ १ ॥ अभोज्यनाम रजकादि का है अपविद्ध नाम उसका है जो लोकसे बाहरनिकालयाहै और मृतहार वोहै जो मोल लेके मुर्दको उठाताहै और मार्ज्जार इसजगा बनका बिल्ला ग्रहण करणा ॥ स्नानमे विशेष गार्ग्यजी कहतेहैं ॥

क्रव्येति कच्चे मांसनूं भक्षणे वाला जीव अर्थात् गिरझ काकादि घोडा और गधा और ऊंट इनके साथ जद व्यवधान करके स्पर्श करे तव वस्त्रांतें रहित अथवा वस्त्रांके सहित स्नाननूं करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ जब जानके स्पर्श करे तवसहित वस्त्रांके स्नानकरे अर जब जानके न करे तव वस्त्रांतेंरहित स्नान करे ॥ और कथन करते हैं । शूद्रमिति शूद्र और मलाह इनांनूं स्पर्श करके ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य आचमनहि करके शुद्ध होजाताहै अर सूर्यका दर्शन अथवा स्नान अथवा प्राणायाम अथवा तपका वल अथवा गायत्र्यादिका जप इनकरके भी सो प्रायश्चित्तहो जाताहै ॥ २ ॥ जो पुरुष स्नानमें अशक्त है तिसकों शूद्रके स्पर्शमें आचमनही कहाहै अर समर्थकों स्नानहि कहाहै इस कारणतें और किसे स्मृतिकाभी वाक्यहै ॥ एडेति ग्रामका सूर और कुक्कड और काक और कुत्ता और शूद्र और चांडालइनांनू

क्रव्यादश्वखरोष्ट्रैश्चस्पर्शेऽव्यवहितेद्विजः ॥ अचैलंवासचैलंवास्नानंकृत्वाविशुद्ध्यति ।१ । सचैलंमतिपूर्वेऽन्यत्राचैलम् शूद्रंस्पृष्ट्वानिषादंचशुद्ध्येदाचमनाद्द्विजः तद्वानदर्शनस्नानप्राणायामतपोवलात् । २ । तत्प्रायश्चित्तं हि इनस्यसूर्य्यस्यदर्शनेनस्नानेनप्राणायामेनतपोवलेन गायत्र्यादिनावा भवति स्नानासमर्थस्यशूद्रस्पर्शनेआचमनम् समर्थस्यतु स्नानमेव अतएवस्मृत्यन्तरम् । एडकंकुक्कुटंकाकंश्वशूद्रांत्यावसायिनःदृष्ट्वैतान्नाचरेत्कर्म्म स्पृष्ट्वैतान्स्नानमाचरेदिति १ एतान्दृष्ट्वाकर्म्मनाचरेत्किंतुआचम्याचरेदित्यर्थः॥ यद्वा दृष्ट्वैतानाचमेत्प्राज्ञइतिपाठान्तरम् यद्वा सच्छूद्रस्पर्शेआचमनमसच्छूद्रस्पर्शेस्नानम् ॥ एडकोग्राम्यशूकरः॥ वृद्धयाज्ञवल्क्यः॥चांडालपुस्कसम्लेच्छभिल्लकापालिपारदान् उपपातकिनश्चैवस्पृष्ट्वास्नानंसमाचरेत् ॥ संवर्त्तः ॥ कैवर्तमृगयुव्याधसौरशाकुनकानपिरजकंचतथास्पृष्ट्वास्नात्वैवाशनमाचरेत् ॥ १ ॥

देख करके कर्मनूं न करे क्या करे आचमन नूं करके कर्मनूं करे अर इनांनूं स्पर्श करके स्नाननूं करे ॥ १ ॥ एतान् इत्यादि पद करके इसीका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै और भीहै क्या श्रेष्ठशूद्रके स्पर्शमें आचमन करे असत् शूद्रके स्पर्शमें स्नान करे इति ॥ वृद्धयाज्ञवल्क्यजीनें कहा है ॥ चांडेति । चंडाल और चांडाल भेद और म्लेछ और भील और सर्वंगी और परस्त्रीके गमन करणे वाला पुरुष (पारदान्) इसजगा (रा) कालोंपसमझणा अथवा पारलघाणे वाला और गोवधादि पापके करणवाला पुरुष इनांनूं स्पर्श करके स्नाननूं करे ॥ १ ॥ संवर्त्त जीका वचनहै । कैवेति झीवर और मृगोंके मारण वाला पुरुष और फंधक और वावुरीआ और पक्षिहंता अर्थात् माछी और धोबा इनांनूं स्पर्शकरके पश्चात्स्नानकरके भोजनकरे १ ॥

वृद्धशातातपजी विशेषकहतेहैं चांडालमिति चांडाल और पतित और व्यंगक्या काणादि और उन्मत्त मदिरापानादि कर्के औरशव और अंत्यज और प्रसव करवाणे वाली और प्रसूता स्त्री और रजस्वला ॥ १ ॥ उँर कुत्ते आदलेके जो पशु हैं इनांको जेकर कोई स्पर्शकरे तां वस्त्रांके साथ शिर तक स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ २ ॥ जेड़ी प्रसूतिकों करावे सोभी सूतिका कहीदी है॥ जेकर अशुद्धांको आपभी अशुद्ध होकर स्पर्श करे तद एक उपवास कर्के शुद्ध हुंदाहै और जेकर भोजनतें उपरंत स्पर्श करे तां त्रिरात्र व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै॥ ३ ॥ हारीतजीके मतमें विशेषहै चांडालोंके साथ संयोगके होयां २ प्राजापत्य व्रतकर्के शुद्ध होताहै परंतु क्या कर्के १०

वृद्धशातातपः ॥ चांडालंपतितंव्यंगमुन्मत्तंशवमंत्यजम् ॥ सूतिकांसूतिकां नारीं रजसाचपरिप्लुताम् १ श्वकुक्कुटवराहांश्चग्राम्यान्संस्पृश्यमानवःसचैलः सशिरःस्नात्वातदानीमेवशुध्यति २ प्रसवंयाकारयतिसासूतिका॥ अशुद्धान्स्वयमप्येतानशुद्धश्चयदिस्पृशेत् विशुद्ध्यत्युपवासेनत्रिरात्रेणोत्तरेणातु उत्तरेणभुक्तोच्छिष्टेनेत्यर्थः हारीतः ॥ चांडालैःसहसंयोगेप्राजापत्येन शुद्ध्यति विप्रानूदशवरान् कृत्वातैरनुज्ञाप्यशासनात् दशविप्रान् वरान्सभ्यान्कृत्वा शासनात्शास्त्राद्धेतोःतैर्दशभिरनुज्ञाप्यआत्मानमनु शास्येत्यर्थःअथवा आढकस्यप्रमाणंतु कुर्य्याद्गोमयकर्दमम् तत्रास्थित्वात्वहोरात्रं वायुभक्षःसमाहितः ॥ १ ॥ वालकृच्छ्रंततः कुर्य्याद्गोष्ठेवसतुसर्वथा सकेश वपनं कुर्य्यात्परमां शुद्धिमृच्छतीत्येषवालकृच्छ्रम् ॥ २ ॥

दसां ब्राह्मणांकों सभामें ल्याकर्के और शासन जो शास्त्र तिसतें तिनांकर्के बोधकरवा कर्के १ ॥ अथवा प्राजापत्य विषे समर्था न होवे तां आढक जो द्रोणका चौथा हिस्सा तितने प्रमाणकें गोमयका क्या गोएका कर्दम चिक्कड करे तिस विषे एकदिनरात्र स्थित होकर्के परंतु वायुके बिना और कुछ भक्षण नकरे और समाहित क्यासमाधानहोकर रहे ॥ १ ॥ इस व्रतका नामवाल कृच्छ्रहैं। इसको करे और सर्वथा गोष्ठी विषे क्या गौआंके स्थानविषे वसे और साहित केशांके मुंडन करावे अर्थात् सारे देहके वाल दूर करे जोपरम शुद्धिकी इच्छा करदाहै। एह वाल कृच्छ्रकाभी स्वरूप दिखायाहै ॥ २ ॥

और जो वृद्धहारीत जीने किहा है कि चांडालादि के साथ यद सवंध होवे तद एक दिन रात्र अथवा २ दोरात्रां अथवा तीनरात्र अथवा ६ छेदिनका व्रत करे ॥ १ ॥ और ना जाणया होंग्रा चांडाल सत्तरोजतक जब किसे ब्राह्मणादिके घरमे रहे तां तिस चांडालादि संसर्गि पर जिसका वृत्तांत अच्छीतरहसे जाणचुकेहैं सो ब्राह्मण धर्म्मशास्त्री अनुग्रह करें ॥ २ ॥ दधिक्षीर घृत करके युक्त गोमूत्रविषे पकाहोग्रा जवांदा काहडा तिसकों सहित सेवकादि के एक महीना निरंतर भक्षण करदा रहे विनातृप्तिसे जिसकर्के एह व्रतहैं ॥ ३ ॥ सो एह वचन जिसका वहुत संवंधहो चुकाहै तिसपरजानणा ॥ इसीमें पराशरजीका वचन है । रजकीआदिक्या

यत्तुवृद्धहारीतः ॥ चंडालश्वपचानांचसंकरेसमुपस्थिते अहोरात्रंद्विरात्रंवा त्रिरात्रंषडहंस्मृतम् ॥ १ ॥ अविज्ञातस्तुचंडालःसप्ताहंनिवसेद्यदि तस्य ज्ञानोपपन्नस्यविप्राःकुर्य्युरनुग्रहम् ॥ २ ॥ दधिक्षीरघृतैर्युक्तैःकृच्छ्रगोमूत्र यावकं प्राशयेत्सहभृत्यैस्तुमासमेकंनिरंतरमिति ॥ ३ ॥ तस्यचांडाल संसर्गिणेद्विजस्य ज्ञानोपपन्नस्य ज्ञाततत्संसर्गस्य तदतिसंकरेज्ञेयम् ॥ पराशरः । रजकीचर्म्मकारीचलुब्धकीवेणुजीविनी चतुर्वर्णस्यगेहेतुअज्ञाता ह्यधितिष्ठति । १ । ज्ञात्वातुनिष्कृतिंकुर्य्यात्पूर्वोक्तस्यार्द्धमेवतु गृहदाहंनकुर्वीतशेषंसर्वंसमाचरेदिति । २ । अत्रयादृशसंसर्गेयादृशप्रायश्चित्तमुक्तंत दर्द्धमित्यर्थःस्नात्वैवभुंजीतेत्यर्थः । एवंचयद्रजकादिस्पर्शेष्वाचमनं तद्व्या धितादिविषयेद्रष्टव्यम् ॥ षट्त्रिंशन्मते ॥ चांडालशवसंस्पर्शनेकृच्छ्रंकुर्यात् यानशय्यासनेषुचत्रिरात्रेण चांडालशवस्पर्शनइति ॥ चांडालस्यश वत्वमापन्नस्यस्पर्शने इत्यर्थः ॥

धोवण आदिस्त्री चारवर्णके घरविषे नजाणीहोईरहे ॥ १ ॥ तां जबप्रतीतहोवे तब तिस दोषकें दूर करणे वास्ते पूर्वोक्त प्रायश्चित्तका अर्द्ध करे और घर दाह नहि करणा होर सभकृत्य करणी २ ॥ परंतु इसमे ऐसा अभिप्रायहै किजैसा जैसा पिच्छे संसर्गकाप्रायश्चित्त किहाहै तिसीका अर्द्ध करणा एह अर्थहै । स्नान करके भोजनकरे एह अर्थहै । एवमिति इसीतरहोंजो रजकादियोंका स्पर्शकरे सो आचमनकरे एह वचन व्याधिकर्के ग्रसे होएपर जानणा और षट्त्रिंशन्मत विषें कहाहै मृतहोए चांडालके स्पर्शविषें कृच्छ्र करे अर्थात् प्राजापत्यकरे और यान क्या इकठे चांडालसाथ घोडे आदिपर चढना और शय्याविषें और आसनविषें तिससाथ इकठा होवेतां त्रिरात्र व्रत करके शुद्ध हुंदाहै ॥

मृत चांडाल विषें कहकर जीवित चांडाल विषें कहतेहैं कि जीवते चांडालके साथ स्पर्श करे यानादि विषें तां त्रिरात्र व्रतकरकेहि शुद्ध हुंदाहै तथेति तैसें हि व्रणक्या किसे कारणतें देहविषे शस्त्र लगाणा चांडाल ब्राह्मणादिकों लगावे वा ब्राह्मणादि चांडालकोंलगावे एह अर्थ आगेभी जानणा और बंधन करणा और तैलादिका मलना और विस्रावण क्या दस्तां आदिका कराणा और रुधिरोत्पादन क्या रोग निवृत्ति वास्ते लहु छुडाणा इनां ५ पंजांके होयां होयां १२ बारां रात्रिका प्रायश्चित्त कराणा इसोंमें आपस्तंवजी कहतेहैं येनेतिजिस किसे करकें तैलादिके मर्दन करकें स्पृष्ट होया चांडाल द्विजातिकों स्पर्शकरे और तैलादि करकें संस्कृत द्विजादि चांडालकों स्पर्श करे तां १ उपवास करकें और पंचगव्य करकें शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ तैलकों मलायाहै जिसने सो और वमन जिसको होयासो और दाडीकों स्पष्ट कराणवाला और मैथुन

जीवताचांडालेन सह यानादिषुत्रिरात्रमिति ॥ तथा व्रणबंधनाभ्यंजनाविस्रावणरुधिरोत्पादनेषुकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरेत् ॥ व्रणबंधनादीनांचंडालंप्रतिकरणेचंडालेनात्मनिकरणेएतत् ॥ आपस्तम्बः ॥ येन केनचिदभ्यक्तश्चंडालंयदिसंस्पृशेत् उपवासेनचैकेनपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ येनकेनेति तैलोद्वर्तनादिनाऽभ्यक्तः कृतमर्दनइत्यर्थः ॥ तैलाभ्यक्तस्तथावांतःश्मश्रुकर्मणिमैथुने मूत्रोच्चारंयदाकुर्यादहोरात्रेणशुद्ध्यति ॥ २ ॥ प्रचेताः ॥ स्वकायेचंडालकायादिस्पर्शनेद्विरात्राभोजनाच्छुद्धिः ॥ इदंपरिष्वंगविषयम् ॥ चंडालोयदिकायस्यरक्तमुत्पादयेत्क्वचित् त्रिरात्रेणविशुद्धिःस्यादेकह्रासेनचोत्तरे ॥ १ ॥ उत्तरेक्षत्रियादौत्रिरात्रादेकैकस्याहोरात्रस्यह्रासः ॥ क्रतुः ॥ चंडालस्योच्छिष्टदानेचंडालनृत्यदर्शने गीतवादित्रश्रवणे भैषज्यक्रियायांच त्रिरात्राभोजनेन शुद्धिः ॥

करणवाला जब स्नानादि शुद्धि विना मूत्रऔर विष्टेकोत्यागेतां अहोरात्र करकें क्या दिनरातकेव्रत करकें शुद्धहुंदाहै । २ । प्रचेताजीकावचनहै अपणे देहविषें चांडालके देहका स्पर्शहोवे तां दोरात्र तक भोजनकी निवृत्ति करकें शुद्ध हुंदाहै परंतु एह स्पर्श गलविषें बाहुलगाकर होवे तां द्विरात्र व्रत जानणा ॥ और कहतेहैं कि चांडाल किसे ब्राह्मणके देहतें रक्त निकाले तां तिसकी शुद्धि तिन्ना रातांके व्रत करकें हुंदीहै और क्षत्रियादिके देहतें निकाले तां एक एक रात्रके घटाणे करकें जानणा १ जैसें क्षत्रियके देह विषें रक्तनिकाले तां दो२ रात्र औरवैश्यके देहतें निकाले तां एक रात्र और शूद्रके देहतें निकाले तां स्नान करकें शुद्ध हुंदाहै ॥ क्रतुजीकहते हैं चांडाल तांई उच्छिष्ट देणाविषे और चांडालकी नृत्य देखणे विषें और तिसके गीतवादित्रके सुणने विषें और तिसकी औषध करणे विषें तिन्नांरात्रांके भोजनके त्याग करकें शुद्धि हुंदीहै

श्रौर कहतेहैं कि अशुचिकों क्या चांडालको देखकर्के सूर्य्यकों देखकर श्रौर पंदरां १५ प्राणायाम करके शुद्धहुंदाहै। अब पराशरजी कथनकरतेहैं श्वेति चूडा डूम चंडाल इनांके साथ संभाषणकरे तद ब्राह्मणोंके साथ संभाषण करके अथवा गायत्रीका एकवार जप करके शुद्ध होताहै । १ । उोर चांडालके साथ शयन करके त्रय ३ रात्रि व्रत करके शुद्ध होताहै श्रौर चंडालैकमयीकों प्राप्त होकरके गायत्रीके स्मरणतें शुद्ध होताहै।२। अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं यत्रेति जिस सभाविषेंअथवा पंक्तिविषें चंडालहि एकक्याकेवल होवें सो चंडालैकमयीकहीहै एह सभाका नामहै अथवा चंडालहै एक प्रधान जिस विषे एह अर्थहै अब श्रौर प्रकार प्रचेताजी कथन करतेहैं चंडालेति जो चंडालके घरमे प्रवेश करणे विषें श्रौर चंडालकें साथ घर विषें अथवा

अशुचिंदृष्ट्वाआदित्यमीक्षेत प्राणायामंकृत्वापंचदशमात्रकम् अशुचिश्चां डालादिः। पराशरः। श्वपाकडोम्बचंडालान्मिथःसंभाषतेयदि द्विजसंभाष णंकुर्यात्सावित्रींवासकृज्जपेत् १ चंडालेनसमंसुप्त्वात्रिरात्रेणविशुद्ध्यति चंडालैकमयींगत्वासावित्रीस्मरणाच्छुचिः ॥ २ ॥ यत्रसभायांपंक्तौवा एकेकेवलाश्चंडालाः सा चंडालैकमयी चंडालएकःप्रधानंयत्रेतिवेत्यर्थः प्रचेताः। चंडालगृहप्रवेशने चंडालेनैवगृहे वृक्षच्छायायांवा सहावस्थानेचं डालएवस्यात् ब्राह्मणानुदिष्टंषाण्मासिकंप्रायश्चित्तंकृच्छ्रंवा ब्राह्मणस्य चतु स्त्रिद्व्येकमासाः शेषाणाम् । शेषाःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रःकैवर्त्तादिश्च एषां यथासंख्यंचतुस्त्रिद्व्येकमासाःकृच्छ्राः

वृक्षच्छाया विषें साथस्थित होणेंतें चंडालहि होजाताहै इस विषें ब्राह्मणांको दिखायाहै कि छे ६ महीनें कावत अथवा छे ६ महीने तक कृच्छ्र करे परंतु एह व्रत वो हैकि जो ब्राह्मणाकों उद्दिष्ट न होवे अर्थात् उपवास न होवे किंतु एकभक्तादिविधां होवे सो छे महीने तक करणा किहाहै ॥ श्रौर शेषां को चार ४ त्रय ३ दो२ एक १ महीनेका पूर्वोक्त व्रत क्रम करके करें शेष शब्दका अर्थ कहतेहैं शेष जो हैं क्षत्री वैश्य शूद्र झीवरादि अर्थात् शूद्रोकी अधम जाति एह संपूर्ण क्रम करके चार ४ त्रय ३ दो२ एक १ महीनें का कृच्छ्र व्रत करें ॥ क्षत्री चार ४ महनिका वैश्य त्रय ३ महीनेका शूद्र दो२ महीनेका झीवरादि एक १ महीनेका व्रत करें तो शुद्ध होते हैं ॥

उशनाजी कहतेहैं अनिष्टगंध जो विष्टादिकी है तिसके आघ्राण विषे क्या सिंघण विषे और अनिष्ट शब्द जो किसेका किहाहोआ विष्टा मूत्रादिका शब्द तिसके श्रवण विषे और अनिष्टरूप जो गर्द्दभादिका स्वरूप तिसके दर्शन विषे और अनिष्टवाक्य जो तूंबि ष्टादि भक्षण कर ऐसा वाक्य इसकें उदाहरणदेणे विषे सूर्य्यजीके दर्शनते शुद्धि होतीहै देवलजीका वचनहै चांडालके उपदेश लैणवाला पुरुष प्राजापत्य करे तद शुद्ध हुंदाहै और चांडालों कर्के वनाया होआ और चांडालों कर्के सेव्यमान जो कूपहै तिसके सेव नतें द्विजादि त्रिरात्र व्रत करे १ और कहतेहैं दृष्ट्वेति चांडालकों और पतितकों देख कर्के संध्या काल विषे संध्या वंदनते अनंतर सूर्य्यजीका दर्शन करे तां शुद्ध हुंदाहै तैसेहि रजस्वला कों देखकर्के और विष्टा मूत्रादिको देख कर्केभी सूर्य्यका दर्शन करे। २। इसमे मनुजीकहतेहैं

उशनाः अनिष्टगंधाद्युपाघ्राणश्रवणदर्शनोदाहरणे आदित्यदर्शनाच्छौचम् अनिष्टानां गंधशब्दरूपवाक्यानामुपाघ्राणश्रवणदर्शनोदाहरणेष्वादित्यदर्शनाच्छुद्धिरित्यर्थः देवलः। चंडालधर्मसंयोगेप्राजापत्यंसमाचरेत् चरेत्रिरात्रंचंडालकूपतीर्थनिषेवणात् १ धर्मस्यसंयोगउपदेशःदृष्ट्वाचंडालपतितौसंध्याकालउपस्थिते ईक्षेतादित्यमुद्यंतंतथोदक्यांमलानिच २ उदक्यां रजस्वलां.मलानिविण्मूत्रादीनिदृष्ट्वाप्यादित्यमीक्षेतेत्यर्थः मनुः। आचम्य प्रयतोनित्यंजपेदशुचिदर्शने सौरान्मंत्रान्यथोत्साहंपावमानीश्चशक्तितः १ अशुचीनां चंडालश्वपचविण्मूत्रादीनांदर्शने आचमनानंतमाकृष्णेत्यादिसूर्यमंत्रान् जपेत् ॥ पराशरः अविज्ञातस्तुचांडालोनिवसेद्यस्यवेश्मनि विज्ञातेतूपसन्नस्याद्द्विजाःकुर्युरनुग्रहम् १ उपसन्नस्येति विज्ञातेसत्युपसन्नस्यपरिषदुपासत्तिंविधायास्थितस्योपरिद्विजाःपरिषदुपसन्नाअनुग्रहं वक्ष्यमाणश्लोकोक्तरीत्याकुर्युरित्यर्थः ॥

आचम्येति जेकर अशुचि वस्तु जो है पूर्वोक्त तिसके दर्शन विषे इंद्रियोंको रोकता होआआच मन कर्के नित्यहि सूर्य्यजीके मंत्रांकोंपढे और पावमानीजो ऋग्वेदके मंत्र तिनांकोभी यथाशक्तिसें जपें; ऐहि अर्थ स्पष्टकर्के कहीदाहै अशुचीनामिति अशुचि जोहै चांडाल और श्वपच तिसीका भेद और विष्टामूत्रादि इनांके दर्शन होआं होआं आचमनकरे पीच्छे (आकृष्णेनरजसा) इत्यादि मंत्रांका जपकरे और (उद्वयंतमसस्परिस्वः) इत्यादि उपस्थानके मंत्रांका जपकरे इसमे पराशरजी कहते हैं अवीति अविज्ञात चांडाल क्या नहि जाणयाथाकि एह चांडालहै सो जिसके घरविषे रहे और जद जाणयाजावे कि एह चांडालहि साडेघरमो रैंहदाया तद उस ऊपर धर्मशास्त्री ब्राह्मण अनुग्रह करें ॥ १ ॥

(उपसन्नस्य) इसका अर्थ कहतेहैं ज्ञानते पीछे सभाकी सेवा करके जेडा स्थित होरिहाहै तिसपर प्रायश्चित्तका उपदेशाकरें वक्ष्यमाण रीतिसें ❀ (प्रश्न) सभजगा पापके होआं होआं सभामें जाणा वणदाहै इसजगा वकूखरा करके क्यों लिखाहै (उत्तर) रहस्य प्रायश्चित्त विषे सभाकी आज्ञा नहि इसकरके किहाहै कि इसजगा रहस्यभी करणा होवे तांभी प्रकाश करणा इस अभिप्रायसे लिखाहै उपसन्नस्येति उपदेशका प्रकार कहतेहैं ऋषेति सो धर्मशास्त्रके पाठक ब्राह्मण ऋषियोंके मुखते निकले होए धर्म्मांकागायनकरदेहोए तिस पतितका उद्धार करें शास्त्रकरके कहेहोए कर्म्म करके ॥ २ ॥ दहीं करके और घृतकरके और दुग्ध करके गोमूत्र विच्चों निकालकर थवांके काडेको भक्षणकरे जितने घरके लोकहैं सेवकादि तिनके साथ और त्रयकाल स्नानकरे ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तकोहि व्यवस्था

अत्र परिषदुपसत्त्यर्थमुपसन्नस्येत्युक्तम् यद्यपि सर्वत्र पापे परिषदुपसत्तिरभिहिता तथापि रहस्ये परिषदुपसत्तेरननुज्ञानादत्र रहस्यमपिप्रकाशनीयमित्येतदर्थमिदमिति ॥ ऋषिवक्त्रच्युतान्धर्मान्गायंतोधर्मपाठकाः पतंतमुद्धरेयुस्तंशास्त्रदृष्टेनकर्मणा ॥ २ ॥ दध्नाघृतेनक्षीरेणकृच्छ्रगोमूत्रयावकं भुंजीतसहितोभृत्यैस्त्रिसंध्यमवगाहनम् ॥ ३ ॥ त्र्यहंतुदध्नाभुंजीत सर्पिषातुत्र्यहंततः क्षीरेणतुत्र्यहंभोज्यमेकैकेनपुनस्त्र्यहम् । ४ भावदुष्टंनभुंजीतभोक्तव्यंगोरसप्लुतं तिष्ठेद्दिनानियावंतितावंत्येवसमाचरेत् ५ त्रिपलंतुदधिक्षीरंपलमेकंतुसर्पिषः आकरेतुभवेच्छुद्धिरारकूटेसकांस्यके ६ आकरउत्पत्तिस्थानं सजातिसमूहोमह्यांखननंवा आरकूटेरीतिकम्

करदेहैं त्र्यहमिति तिन्नदिन दहींकेसाथ गोमूत्र यावकका भोजनकरे और त्रयदिन घृतकरके खावे और त्रयदिनदुग्धकरके खावे और इसी प्रकार पीछे इनांहि वस्तुयोंके साथ एक २ दिन खावे तो एभीद्वादश दिनका व्रतहोआ।४। और भावदुष्ट जो वस्तुहै जैसे तक्रपाकमें पतले दस्तकी भावनाहै।तिसको न भोजनकरे और गोरस जो दहीं तिसकरके मिले होएका हि भोजन करे परंतु जितने दिन सो चांडाल घरविषे रहाहै तितने दिन इसव्रतकों करे ॥ ५ ॥ तिनका परिमाणकहतेहैं त्रीति तिन्न ३ पा दहीं और दुग्ध और १ एकपा घृत इसमर्य्यादासें लए और उसघरमें जितने भांडेहैं पित्तलके और कांस्यके तिनांको शुद्धि आकरमें रक्षणेकरके जानणी ६। आकरनाम उत्पत्ति स्थानकाहै तिसविषे अथवा सजातिकासमूह तिसविषे स्थापन करणा अथवापृथ्वीविषे दब्बदेणा ठौर आरकूटनाम पित्तलकाहै

अंगिराजी कहतेहैं ॥ कांस्यके भांडेविच चुली नहि करणी और पैर नहि धोणे जेकर ऐसा करे तां पृथ्वी विच छे ६ महीने तिस कांस्यभाजनकों रक्षकर पीछे वहुते भांडे विच रक्षे तां शुद्ध हुंदा है ॥ १ ॥ वस्त्रजेडे उस घर विषे हैं सो जल कर्के शुद्धकरणे और जे हे मृत्तिकादे भांडेहैं सो सभत्यागदेणे और कुसुंभा १ गुड २ कपाह ३ लून ४ मधु ५ घृत ६ इनाकों दरवाजेविच ल्या रक्षणा वायुकर्के शुद्ध होणगे इसी तहीं धान्यभी शुद्ध करणे और घर विषे अग्नि लगाणी तिसके सेक लगणे कर्के घर पवित्र हुंदाहै एह मनुजीका वाक्यहै ॥ ३ और सहित पुत्रके और सहित सेवकांके ब्राह्मणांकों भोजनदेवे और २० गौआं और १ बैल दक्षिणा देवे ॥ ४ ॥ पीछे लेपन और किसेजगा खातकरणे कर्के और होम और जप

अंगिराः ॥ गंडूषंपादशौचंतुनकुर्यात्कांस्यभाजने भूमौनिक्षिप्यषण्मासा न्पुनराकरमादिशेदिति ॥ १ ॥ जलशौचेनवस्त्राणिपरित्यागे नमृण्मयम् कुसुंभगुडकर्पासलवणंमधुसर्पिषी ॥ २ ॥ द्वारिकुर्वी तधान्यानिदद्याद्वेश्मनिपावकम् हुताशज्वालासंस्पृष्टंशुचितन्मनुरब्रवी त् ॥ ३ ॥ सपुत्रःसहभृत्यैश्चकुर्याद्ब्राह्मणभोजनं गोविंशतिंवृषंचैकंदद्या द्विप्रेषुदाक्षिणाम् ४ पुनर्लेपनखातेनहोमजप्येनचैवहि अवधारणेनविप्रा णांतत्रदोषोनविद्यते ॥ ५ ॥ स्वल्पकालसंपर्केएतत् संवर्त्तः ॥ अंत्यजः पतितोवापिनिगूढोयत्रतिष्ठति सम्यग्ज्ञात्वातुकालेनततःकुर्याद्विशोधनम् ॥ १ ॥ चांद्रायणपराकौवाद्विजातीनांविशोधनम् प्राजापत्यंतुशूद्राणां शेषाणामिदमुच्यते ॥ २ ॥ यैस्तत्रभुक्तंपक्वान्नंतेषामुक्तोविधिक्रमः ॥ प्राजापत्यइत्यर्थः ॥ तेषामपिचयैर्भुक्तंकृच्छ्रपादोविधीयते ३ ॥

कर्के ब्राह्मणां के अनुग्रह कर्के तिसविषे दोष नाहि ॥ ५ ॥ परंतु एह प्रायश्चित्त थोडे संबंध विषे है तिसचांडालका संबंध उसमे वहुतहोवे तां तिस वास्ते प्रायश्चित्त होर है ॥ संवर्त्तजी कहतेहैं ॥ अंत्यज क्या चांडाल अथवा पतित जिसके घर छपकर्के रहे और पिच्छे जद मलूम होवे तां इसतहीं शुद्धि करे। १ । चांद्रायण अथवा पराककर्के ब्राह्मणादिकी शुद्धि और शूद्रांकी शुद्धि प्राजापत्य करके है और इनांतेंजो होर हैं आश्रमी लोक तिनके अर्थ भी एहहै ॥ २ ॥ जेडे होर दूसरे घरवाले हैं तिनांकोंभी कहतेहैं कि जिनांने तिस घर विषे पक्वान्न भक्षण कीताहै तिनां वास्ते प्राजापत्य किहाहै और जिनांनें इनके घर अर्थात् चांडलवाले घर खाणा वालेके घर खादाहै तिनकी शुद्धि पादकृच्छ्र कर्केहै ॥ ३ ॥

और कहतेहैं कूपैकेति जेडे एक खूएके जल पान कर्के दोष वालेहैं अर्थात् जिस खूए विषें चांडालपींदेहैं तिसी खूये विषें जलपान करणवाले । और संसर्ग जो परंपरा संसर्गहै तिसकर्के दोष वाले जो हैं इनसभनांकों उपवास कर्के और पिच्छे पंचगव्य के पान कर्के शुद्ध करे ॥ ४ ॥ जिस स्त्रीका वालक छोटाहोवे और रोगी और गर्भिणी और वृद्ध इनांकों नक्त क्या नक्त देणा चाहिए और वालकांकों २ पहरका व्रतदेणा चाहिए ॥ ५ ॥ अथवा जिनांकों व्रतकरणेसें पीडा वहुत होवे तिनांकों थोडा व्रतदेणा उचितहै जिसतें व्रतिकी मृत्यु न होवे ॥ ६

कूपैकपानदुष्टायेतथासंसर्गदूषिताः सर्वानेवोपवासेनपंचगव्येनशोधयेत् ॥ ४ ॥ बालापत्यातथारोगीगर्भिणीवृद्धएववा तेषांनक्तंप्रदातव्यंबालानांप्रहरद्वयम् ॥ ५ ॥ अथवाक्रियमाणेषुयेषामार्त्तिःप्रदृश्यते ॥ शेषंसंपादयेत्तेषांविपत्तिर्नभवेद्यथा ॥ ६ ॥ अंत्यजोऽत्रचंडालः ॥ वसिष्ठः ॥ चंडालेनिवसेद्यत्रगृहेत्वज्ञातएवतु तस्यान्नंतुद्विजोभुक्त्वाप्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ १ ॥ अकामतःसकृद्भुक्त्वाकुर्य्यादितद्द्विजोत्तमः कामाच्छुद्धिः पराकेणमहासांतपनेनवा॥२॥चांद्रायणंपराकोवाद्विजातीनां विशोधनम् प्राजापत्यंतुशूद्राणांशेषाणामिदमुच्यते॥३॥योन्योपिभुंक्तेपक्वान्नंकृच्छ्रंस्यात्तस्यशोधनम् शुष्कान्नभोजनेपादमित्याहभगवान्मनुः ॥ ४ ॥

अंत्यज नाम इसजगा चंडालकाहै ॥ इसमें वसिष्ठजी कहतेहैं ॥ चांडाल जिसके घर अज्ञात हो या २ वसे तिसका अन्न द्विजक्या ब्राह्मणादि जेकर खावे तां प्राजापत्य व्रतकरे ॥ १ ॥ परंतु अकामते एक वार खाणेमें एह प्रायश्चित्तहै कामनातें खावे तां पराक कर्के शुद्ध हुंदाहै अथवा महासांतपन कर्के ॥ २ ॥ चान्द्रायण अथवा पराक द्विजातियोंका शोधकहै और प्राजापत्य शूद्रों का शोधकहै और जो दूसरे घरवालेहैं तिनांवास्ते कहतेहैं ॥ ३ ॥ जो होर तिस घरविषे पक्वान्न खावे तिसके शोधन करणे वाला कृच्छ्रहै और जो सुका अन्न खावे तिसके वास्ते लघुकृच्छ्रहै एह भगवान् मनुजी कहतेहैं ॥ ४ ॥

तैसेहि जेकर तिनां चांडालघरवालयोंनें स्पर्श कीतेहोए अन्नको जद भोजनकरे और विधिवालें स्नानतें विना जो भोजन करदाहै तां भोजनमे कृच्छ्र किहाहै और पानविषें तिसका चौथा हि रसाकिहाहै ॥ ५ ॥ और चांडालकर्के जद संस्पृष्टहोवे कांसका भांडा अथवा मृत्तिकाका और अज्ञानतें जो कांस्यके भांडेमें भोजन करता है और मृत्तिकाके भांडेमें जलपान करताहै तिनांमें कांस्यभोजीकृच्छ्र व्रतकरे और जलपानवाला कृच्छ्रका पादव्रतकरे ६ कांस्यभाजन इसजगा भज्ना दा समझणा । ६ । अब च्यवन ऋषिजी और प्रकार कहतेहैं चंडाल घरविषे प्रवेश करें तो घर कों फूक देवे संपूर्ण मृत्तिकाके भांडे भन्न देवे और लकडीको छिला देवे और शंखसिप्पी सो

तथा ॥ तैःस्पृष्टोयदिभुंक्तेन्नमस्नात्वाविधिवज्जले विहितांभोजनेकृच्छ्रंपाने स्यात्पादएवतु ॥ ५ ॥ चंडालैनतुसंस्पृष्टंकांस्यभांडंसमृण्मयं ॥ अज्ञा नात्कांस्यभोजीतुमृण्मयेजलपानकृत् कांस्यभुक्त्वाचरेत्कृच्छ्रंजलपानेतुकृ च्छ्रकम् ६ ॥ कृच्छ्रकः कृच्छ्रपादः ॥ च्यवनः ॥ चंडालसंकरेस्वभवनदहनं सर्वमृद्भांडभेदनं दारवाणांतुतक्षणं शंखशुक्तिसुवर्णरजतवैदलानामद्भिः क्षालनं कांस्यताम्राणामाकरेशुद्धिः ॥ आकरशब्दार्थस्तूक्तः पूर्वम् ॥ सौवी रपयोदधितक्राणापरित्यागः ॥ सौवीरं वदरं ॥ गोमूत्रयावकाहारोमासं क्षिपेत् वालवृद्धस्त्रीणामर्द्धंप्रायश्चित्तम् ॥ आषोडशाद्बालःअशीत्यूर्ध्वंतुवृद्धः चीर्णेप्रायश्चित्तेब्राह्मणभोजनं गोशतंदद्यात्तदभावेसर्वस्वम् ॥

ना चांदी वंझ इनके जो पात्र हैं तिनां पर जल सिंचन करे और कांस ताम्रकी आकर विषे शुद्धि कहीहै आकर शब्दका अर्थ पिच्छे कहाहै ॥ और वेर दुग्ध दधि छाह इनांको त्यागें देवे और गोमूत्र युक्त यवोंका भक्षण करदा होया महीना रोज व्यतीत करे और वालक वृ द्ध स्त्री इनको अर्द्ध प्रायश्चित्त देणा अर्थात् पंदरां १५ दिन । और सोलां १६ वर्षतें उरें वालक होता है और अस्सी ८० बर्ष तें उपरंत वृद्ध होताहै और प्रायश्चित्तके कीते होयां ब्राह्मणोंकों भोजन देवे और सौ १०० गौ देवे जेकर एह न मिले तां सर्वस्व दे देवे ॥

अब वौधायन जी और विशेष कहतेहैं चंडालके देखणे विषें तारयोंका दर्शन करे तो शुद्ध होताहै और चंडालके साथ संभाषण क्या बोले तो ब्राह्मणके साथ संभाषण करे और स्पर्श करे तो स्नान करके शुद्ध होताहै और जूठा होकर चंडालका दर्शन करे तो एक रात्र उपवास व्रत करे और संभाषण करे तो दो २ रात्र उपवास करे और स्पर्श करे तो त्रय रात्रि उपवास करे और जूठे चंडालके दर्शन संभाषण स्पर्श करणे में भी एही व्रत करणे ॥ और चंडालके साथ मार्ग चले तो सवस्त्र स्नान करे ॥ अब प्रायश्चित्त मयूख विषें कहतेहैं द्रव्येति द्रव्यहै हत्थ बिषें जिसके सो जूठेका स्पर्श करे तिसमे मनुका वचन है द्रव्यहस्तवाला होया १ जूठेके साथ स्पर्श करे तो तिस द्रव्यको हत्थमें हि रख कर आचमन करे तो शुद्ध होता है

वौधायनः। चंडालदर्शनेज्योतिषांदर्शनं संभाषणेब्राह्मणसंभाषणम् स्पर्शनेस्नानम् उच्छिष्टदर्शन एकरात्रमुपवसेत् संभाषणे द्विरात्रं स्पर्शने त्रिरात्रम् चंडालिनसहाध्वगमनेसचैलस्नानम्। प्रायश्चित्तमयूखे द्रव्यहस्तस्योच्छिष्टस्पर्शे। मनुः। उच्छिष्टेनसमंस्पृष्टवाद्रव्यहस्तः कथंचन अनिधायैव तद्द्रव्यमाचांतः शुचितामियात् १ एतच्चामान्नविषयम्। भोज्याविषयेतु वसिष्ठः। प्रचरन्नन्नपानेषुयदुच्छिष्टमुपस्पृशेत् भूमौनिधायतद्द्रव्यमाचांतः प्रचरेत्ततः ॥ १ ॥ तद्द्रव्यस्यह्यभ्युक्षणं कार्य्यमित्याहतुः शंखलिखितौ॥ द्रव्यहस्तोच्छिष्टेनिधायाभ्युक्षयेद्द्रव्यमिति उच्छिष्टउच्छिष्टस्पृष्टः। एतच्चानुच्छिष्टहस्तादिनास्पर्शे ॥ साक्षादुच्छिष्टहस्तादिस्पर्शेत्वभोज्यमेव

एह कच्चे अन्नके विषयमें जानणा। १। और भोज्यअन्नके विषयमे वसिष्ठजीकहतेहैं प्रेति प्रचरनक्या अन्न वरतांदा होया जूठेका स्पर्श करे तो तिसद्रव्यको भूमि पर स्थापन करके आचमन करे फेर तिस अन्न नूं वरतावे। १। परंतु तिसद्रव्यको सेचन करणा एह किहाहै शंख और लिखितजी ने द्रव्येति अपूपादि भक्ष्य द्रव्य जिसके हाथ मे है और जूठेके साथ स्पर्श वाला होवे तां उस वस्तु को हेठ रक्षकर जल साथ सिंचे पीच्छे ग्रहण करके वर्ता देवे तां दोष नहि परंतु एहप्रायश्चित्त जेडा हत्थ नहि जूठा तिसके स्पर्शविषे जानणा जेकर साक्षात् जूठे हत्थनाल स्पर्श होवे तां नहि भोजन करणा

सोई वसिष्टजी कहतेहैं उच्छिष्टमिति गुरुका उच्छिष्ठ होवे तां भोजन करलेणा और किसेका होवे तां नहि भोजन करणा और अपणां जूठा और जूठेके साथ जेडा मिलया होआहै तिसका भी भोजन नाहि करणा ॥ जेकर भोजन करे तां स्नानतें पीच्छे १०० प्राणायाम करे एह जान लेणा ॥ जूठे मनुष्यको सूर्य्यादिका दर्शन करणेमे मार्कंडेयपुराणमै दोष कहाहै सूर्य्येंद्विति सूर्य्य और चंद्रमा और तारे जिसजूठे ने दिक्खे होए कदाचित् तिहां पुरुषांदे अक्षिपर अग्निको रक्षकर यमदूतांने फूकां लगाइंदेआंहैं ॥ १ ॥ उच्छिष्टने पलांडुआ दिके स्पर्शविषे वृहस्पतिजीका वचनहै सुरेति मदिरा १ गंडा २ लस्सन ३ इनांके कामनाकर्के

यथाहवसिष्ठः.उच्छिष्ठमगुरोरभोज्यंस्वमुच्छिष्टोपहतंचेति उच्छिष्ठस्यसूर्या दिदर्शनेदोषउक्तोमार्कंडेयपुराणे ॥ सूर्येंदुतारकादृष्टायैरुच्छिष्टैः कदाचन तेषांयाम्यैर्नरैरक्षिन्यस्तोवह्निःसामिध्यते ॥ १ ॥ उच्छिष्ठस्यपलांड्वादिस्प र्शे वृहस्पतिः ॥ सुरापलांडुलशुनस्पर्शेकामकृतेद्विजः त्र्यहंपिबेत्कुशजलं सावित्रींचजपेत्तथा ॥ १ ॥ इदमूर्ध्वोच्छिष्टस्येति शूलपाणिः ॥ यत्तु सएव पलांडुलशुनस्पर्शेस्नात्वानक्तंसमाचरेत् कृतोच्चारस्त्वहोरात्रमुच्छि ष्टोद्व्यहमाचरेदिति १ तदधोच्छिष्टविषयमूर्ध्वोच्छिष्टेऽकामविषयंवा नक्तं शूद्रोच्छिष्टविषयं द्व्यहमूर्ध्वोच्छिष्टद्विजविषयमितिकेचित् ॥

स्पर्श कीतिआं होआं द्विजक्यो ब्राह्मणादि त्रयदिन कुशाकाजलपीवे और गायत्रीको १० दशा दिकीसंख्यासेंजपे ॥ १ ॥ परंतुएह ऊर्ध्वोच्छिष्टजोपुरुषहै तिसपर जानणा एह शूलपाणिजी कहतेहै । और जो सोईशूल पाणि कहतेहैं पलेति पलांडुक्या और लशुन इनके स्पर्शविषे स्नानतें पिछे नक्त व्रत करे क्या एकाहारकरे और कृतोच्चार क्या जिसने दिशा होकर दिनरात्र तक शौच नहि कीता और भोजन करचुकाहै सो दो २ दिन उपवासकरे तां शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ सो एहअधोच्छिष्टका विषयहै अथवा ऊर्ध्वोच्छिष्टमे अकामका विषयहै और कोई कहतेहैं किनक्त व्रत शूद्रोंके लियेहै और दो दिनका व्रत ऊर्ध्वोच्छिष्ट ब्राह्मणादिको विषयकरताहै ॥

एह पूर्वोक्त व्रत त्रय अकामके विषयहै और सावित्रीके जपसाथ तीन रात्र कुश जलको पानकी अशक्ति होयां २४ चौवी पण मुल्लवाला सुबर्ण देणा चाहिए । और जो उच्छिष्ठ नहि है और लशुनादिको स्पर्श करे तिसको स्नानमात्रहि किहाहै ॥ और शूलपाणि जाके बनाएहोए ग्रंथमे वृद्धशातातपजीका वचनहै ॥ उच्छिष्ट होआ होआ विप्र मदिराको और कुत्तेको लशुनादिको स्पर्शकरे सो दिनरात्रके व्रत कर्के पीछे पंचगव्यके पीणे कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ सोएह ऊर्ध्वोच्छिष्टके काम कर्के कीते होये स्पर्श विषे जानणा ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं मद्यमिति मद्य क्या सुरातें पृथक् जानणा क्यों कि सुराके स्पर्शमे अधिक प्रायश्चित्त होणेते और शूद्रक्या शूद्रकाजूठा अशुचि क्या लस्सनादि

तथात्रयमिदमकामतः सावित्रीजपान्वितत्रिरात्रकुशवारिपानाशक्तौ चतुर्विंशतिपणलभ्यं कांचनंदेयम् अनुच्छिष्टस्पर्शेकेवलस्नानमेव ॥ शूलपाणौ वृद्धशातातपः ॥ उच्छिष्टःसंस्पृशेद्विप्रोमद्यंशूद्रंशुनोऽशुचीन् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुध्यति १ एतदूर्ध्वोच्छिष्टस्यकामतः ॥ मद्यंसुरेतरं शूद्रंशूद्रोच्छिष्टं अशुचीन्लशुनादीन् ॥ सुरानुवृत्तौ यमः ॥ दर्शनात्स्पर्शनाद् घ्राणात् प्रायश्चित्तंविधीयते प्राणायामैस्त्रिभिःस्नात्वा घृतं प्राश्यविशुद्ध्यति १ दर्शने कामतः स्पर्शनेऽकामतः घ्राणेवाकामतः कामतोजातिभ्रंशकरत्वं तथा ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ आघ्रायरसगंधंच सुरागंधंचसोमपाःस्नात्वाऽपःस्पृश्यकृत्वात्रीन् प्राणायामान्विशुद्ध्यति १ ॥

सुराकी अनुवृत्ति विषें यमजी कहतेहै देति सुराके दर्शनतें स्पर्शतें सिंघणतें प्रायश्चित्त होताहै कि तीन ३ प्राणायाम करके स्नानकरे और घृतका भक्षणकरे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और इसमे ऐसी व्यवस्थाहै कि देखणेंमें इच्छा विषे जानणा और न इच्छातें स्पर्श विषें और सिंघण विषे इच्छातें जानणा ॥ और इच्छातें करणें विषे जातिभ्रंशकर पाप होताहै ॥ तैसेंहि इसीमें याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं आघ्रायेति रसगंध क्या विष्टा दि और सुरागंध क्या मदिरादि इनांनू सोमपा पुरुष सिंघे तो स्नान कर्कें जलका स्पर्श करेऔर त्रय ३ प्राणायाम करे तो शुद्ध होताहै१ ॥

जो सुमंतुजीने किहाहै सो कहतेहैं मद्येति मदिराके साथ स्पर्श करणेमें ऋषभ मंत्रका जप करे और मदिराके सिंघण विषें प्राणायाम करे सो एह न इच्छातें करण विषें जानणा और इच्छातें करणेंमें विष्णुजी कहतेहैं सुरामिति सोमपा पुरुष मदिराका गंध सिंघकर्के जल विषें डुब्बा होया त्रय ३ अघमर्षण जपे फेर घृत प्राशनकरे तो शुद्धहोताहै ॥ अब जूठे पुरुषकों नरादिकी विष्टा स्पर्श विषें लघुहारीतजीकहतेहैं श्वेति कुत्तेकी विष्टा और काक विष्टा और कंक गिरज पक्षिकी विष्टा और पुरुषकी विष्टाका और अधोच्छिष्टका स्पर्श करे तो सवस्त्र जलमें स्नान करे ॥ १ ॥ और जूठे पुरुषको स्पर्श करणेमे एह प्रायश्चित्त करे कि एकरात्रि उपवासकर्के पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होताहै २ इस जगा अधोच्छिष्ट क्या विष्टाके

यत्तुसुमंतुनोक्तम् मद्यसंकरेऋषभंजपेत् सुराघ्राणेप्राणायामइति तदकामतः ॥ कामतस्तु विष्णुः ॥ सुरामाघ्रायगंधंसोमपउदकेमज्जमा नस्त्रिरघमर्षणंजप्त्वाघृतप्राशनमाचरेदिति अधोच्छिष्टस्यनरादिपुरीष स्पर्शेलघुहारीतः । श्वविष्ठांकाकविष्ठांवाकंकगृध्रनरस्यच अधोच्छिष्टंतुसं स्पृश्यसचैलोजलमाविशेत् ॥ १ ॥ ऊर्ध्वोच्छिष्टंतुसंस्पृश्यप्रायाश्चित्तमि दंचरेत् उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ २ ॥ अत्राधोच्छिष्टस्यपु रीषस्यस्पर्शेस्नानम् ऊर्ध्वोच्छिष्टस्यतूपवासःपंचगव्यंचपेयम् । अथानुच्छि ष्टस्यमलस्यस्पर्शे तत्रांगिराः ॥ ऊर्ध्वंनाभेःकरौमुक्त्वायदंगमुपहन्यते तत्र स्नानमधस्तात्तुक्षालनेनैवशुद्ध्यति ॥ १ ॥

ना।तू

स्पर्श विषें स्नान करे तो शुद्ध होताहै एह अर्थ है इस जगा प्रायश्चित्त वहुत होणेतें जानणा कि उच्छिष्टहि जद उच्छिष्टको स्पर्श करे तां ऐसा करे एह अभिप्रायहै और जेडा आप जूठा होवे और जूठेको अथवा मनुष्यादिमलको छोए सो उपवास कर्के पंचगव्यकों पीवे । अब जो जूठा नहि तिसको मलके स्पर्शविषे अंगिराजी कहतेहैं ऊर्ध्वमिति हत्थांदे विना नाभिते उपर जेकर कोई अंग मलादि कर्के (उपहन्यते) क्या स्पृष्ट होवे तां तिस विषे स्नान करणा किहाहै और उसके हेठ स्पर्शहोवे तां तिस जगाके धोणेकर्के हि शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥

एह प्रायश्चित्त विष्टादि स्पर्श विषें है तिसमें भी गाढा अंगमै जद लगे तां है इसी मै शंखजी कहतेहैं ॥ रथ्येति गली कूचेके जल कर्के और थुक कर्के श्लेष्मादि कर्के नाभिते उपर पुरुष स्पृष्ट होवे तां शीघ्र स्नान कर्के शुद्धहुंदाहै ॥ १ ॥ और अंगिराजीने किहा कि धोणा जो है नाभिके हेठले अंगका सो मृत्तिका करके और जल करके करणा विष्णुजीभीकहतेहैं नाभेरिति नाभिके हेठले अंगांविषे देहदीमलकर्के और सुराकर्के मद्यकर्के जो युक्त होवे सो निरालस होआ होआ मृत्तिका और जलकर्के धोवे तां शुद्ध हुंदाहै ॥ जेकर और जगा अर्थात् नाभितें उपर मलादि कर्के युक्त होवे तां मृत्तिका जल कर्के तिस

अमेध्यादिस्पर्शविषयमिदम् निविडांगादिस्पर्शविषयमपि ॥ तथाह शंखः रथ्याकर्दमतोयेनष्ठीवनाद्येनवापुनःनाभेरूर्ध्वंनरःस्पृष्टःसद्यः स्नानेनशुध्यति १ अंगिरसोक्तंक्षालनंमृदंभसाकार्य्यमित्यत्र विष्णुः ॥ नाभेरधस्तात्प्रवाहेषुचकायिभिर्मलैः सुराभिर्मद्यैर्वोपहतोमृत्तोयैस्तदंगप्रक्षाल्यातंद्रितः शुद्ध्येत् अन्यत्रोपहतोमृत्तोयैस्तदंगं प्रक्षाल्य स्नानेन चक्षुष्युपहत उपोष्य पंचगव्येनदशनच्छदोपहतः प्रवाहेषु करयोः ॥ अत्रमृत्तोयपदमुपलक्षणं अन्यदपिगंधलेपक्षयकरंज्ञेयम् ॥ तथाचदेवलः ॥ प्रलेपगंधस्नेहानामशुद्धौ व्यपकर्षणम् शौचलक्षणमित्याहुर्मृदंभोगोमयादिभिः ॥ १ ॥ लेपन स्नेहगंधेषुव्यपकृष्टेषुदूरतः पश्चादाचमनंवापिशौचार्थंवक्ष्यतेबुधैः २

अंगनु धो कर्के और पिच्छे स्नान कर्के और नेत्रां विषे मलादि कर्के युक्त होवे तां उपवास ते पिच्छे पंचगव्य पान कर्के और जेकर उंठां विषे युक्त होवे और कपोलांदिविषे हत्थां विषे युक्त होवे तांभी स्नानादि कर्के हि शुद्ध हुंदाहै परंतु सभनांके पिच्छे पंचगव्यका पान हि करणा ॥ सोई देवलजी कहतेहैं प्रलेपेति प्रलेप गंध स्नेह इनांकी अशुद्धि विषें मृत्तिका जल गोमयादि करके इनोंका दूरकरणा हि शुद्धिका लक्षण कहाहै इस जगा आदिशब्द कर्के आटा तोआंका ग्रहण करणा १ और लेप स्नेह गंध इनांको दूरतेंहि हटा देवे पीछेतें आचमन करे एहि बुद्धिमानों नें शुद्धि कहीहै ॥ २ ॥

जो फेर व्यासजीने कहाहै सो कहते हैं मांसमिति वानर बिल्ला गधा ऊट कुत्ता इनांका मांस और शूकरोंकी मिंज इनांका स्पर्श करके सवस्त्र स्नान करें ॥ १ ॥ सो एह भी न जूठे को नाभि तें उपर लेपके दूर करणे के विषय में जानणा। अर्थात् जो झूठा नहि होवे तिसको प्रायश्चित्त थोडाहै ॥ अथवा लघुहारीत का किहा होया अधोच्छिष्ट के विषय में जानणा । इसी वास्ते आपस्तंबजी कहतेहैं यदिति जो काक डोर वगुले करके वेष्टित वस्तु और मिंज करके लिप्त शरीर होवें और मुख कर्ण विषें लगीहोई न शुके तिस जगाहै और स्नेह करके लेप दूरकरणकी शुद्धि पूर्वोक्त गोमयादि करके हि जानणी ॥ १ ॥ अब इसीका अर्थ मूल में स्पष्ट करके किहाहै

यत्पुनर्व्यासेनोक्तम् । मांसंवानरमार्जारखरोष्ट्राणांशुनांतथा सूकराणाममेध्यंवैस्पृष्ट्वास्नायात्सचैलकमिति १ तदप्यनुच्छिष्टस्यनाभ्यूर्ध्वलेपोपहत विषयम् लघुहारीतोक्ताधउच्छिष्टविषयंवा अतएवाहापस्तंबः यद्वेष्टितंकाकवलाकिकाभ्याममेध्यलिप्तंचभवेच्छरीरं श्रोत्रेमुखेनप्रतिशेतसम्यक्स्नेहेनलेपोपहतस्यशुद्धिः ॥ १ अमेध्यादिलिप्तशरीरंमुखेश्रोत्रेवानप्रतिशेतन शुष्कंभवेदित्यर्थः ॥ मलमाहमनुः वसाशुक्रमसृङ्मज्जामूत्रविट्कर्णविण्नखाः श्लेष्माश्रुदूषिकास्वेदोद्वादशैतेनृणांमलाः १ अमेध्यमाहदेवलः ॥ मानुषास्थिशवोविष्टारेतोमूत्रार्त्तवंवसा ॥ स्वेदोश्रुदूषिकाश्लेष्मामलंवामेध्यमुच्यते १ एषांदेहात्प्रच्युतानामेवामेध्यत्वम् ॥ देहाच्चैवच्युतामला इतिमनुवचनात् ॥

अमेध्येति ॥ अब मनुजी मलां कों कहतेहैं वसेति मिंज १ वीर्य २ रुधिर ३ मज्जा ४ मूत्र ५ विष्टा ६ कर्ण मल ७ नख ८ श्लेष्म ९ अश्रु १० नेत्र मल ११ परसीना १२ एह वारां पुरुषको मल होतेहैं ॥ १ ॥ अमेध्य को देवल जी कहते हैं मानुषेति मनुष्यकी हड्डी शव विष्टा वीर्य मूत्र ऋतुकाल मे स्त्री का रुधिर मिंज परसीना अश्रु नेत्रमल श्लेष्म मल एह अमेध्य कहीदे हैं परंतु इनांकों देहतें वगकर वाहर होयां कों हि अमेध्यत्व किहाहै देहादिति देहतें जो वगे सो मल कहाहै इसमनुजी के वचन तें ॥

अब ऋष्य शृंगजी कहतेहैं मद्येति मदिरा विष्टा मूत्रके किणके करके मुख जिसका स्पर्शवाला होवे सो मृत्तिका और गोए करके लेपकरे फेर पंचगव्यपानकरके शुद्धहोताहै । १ । इसको स्पष्ट कर्के कहतेहैं स्नात्वेति स्नानकरके उपवास करे फेर पंचगव्यपान करके शुद्ध होताहै इसपूर्वोक्त विष्णुके वचनतें । इस विषय देवलजी विशेष कहतेहैं मनुष्यकीयां हड्डीयां चरवी विष्टा और रजस्वलाका रुधिर मूत्र वीर्य मिंज रुधिर एह संपूर्ण जेकर दूसरेके होवें इनांका स्पर्श करे । १ । तां स्नान करके लेपादियोंकों दूर करके आचमन करे तो शुद्धहोताहै सो एह अपणे होवें तद इनांका स्पर्श करे तो मार्जन करणे करके शुद्ध होताहै । २ । और इसीका तात्पर्य्य

ऋष्यशृंगः ॥ मद्यविण्मूत्रविप्रुड्भिःसंस्पृष्टंमुखमंडलं मृत्तिकागोमयैर्लेपात्पंचगव्येनशुद्ध्यति १ स्नात्वोपोष्यपंचगव्येनशुद्ध्यतीत्यर्थः पूर्वोक्तविष्णुवचनात् ॥ अत्रविशेषमाह देवलः ॥ मानुषास्थिवसांविष्ठामार्त्तवंमूत्ररेतसी मज्जानंशोणितंवापिपरस्ययदिसंस्पृशेत् १ स्नात्वापमृज्यलेपादीनाचम्यसशुचिर्भवेत् तान्येवस्वानिसंस्पृश्यपूतःस्यात्परिमार्जनात् ॥ २ ॥ अतःपरमलस्पर्शेस्नानमात्ममलस्पर्शे प्रक्षालनमाचमनंच ॥ सुमंतुः ॥ चंडालंपतितंवापितथानारींरजस्वलां उच्छिष्टस्तुद्विजःस्पृष्ट्वाप्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ १ ॥ एतत्कामतः ॥ यत्त्वापस्तंबः ॥ भुक्तोच्छिष्टोंत्यजैःस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ अर्द्धोच्छिष्टेस्मृतः पादः पाद आस्याशनेतथा ॥ १ ॥

कहतेहैं इसतें दूसरेको मल स्पर्श विषे स्नानमात्र है और अपणी मल क्या विष्टादिके स्पर्श विषे सिंचन और आचमन करणा । अब सुमंतु जी कहते हैं चंडालमिति चंडाल और पतित तैसेंहि रजस्वला कों जूठा होया २ ब्राह्मणादि स्पर्श करे तो प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ सो एह इच्छातें करण में जानणा । जो आपस्तंब जीने कहाहै सो कहतेहैं भ्विति भक्षणकरके जूठेकों हि चंडाल स्पर्श करे तो सो ब्राह्मणादि प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होताहै और अर्द्धोच्छिष्टविषें एह पाद व्रत कहाहै और एक पाद मुख स्पर्श मात्रविषे जानणा । १ ।

इस विषें अर्द्धोच्छिष्ट मुख विषें ग्रास पाणे मात्रमें जानणा निगलने में नहिं है। और न इच्छातें करण में सोई आपस्तंव जी कहतेहैं ॥ भोजन करके जूठा होया २ आचमनतें रहित हि प्रमादतें चंडाल अथवा नीच करके स्पर्श वाला होवे ॥ १ ॥ तिसकी शुद्धि इस तहाँ करे गायत्रीका आठ सें अधिक १००८ हजार जप और सौ १०० (द्रुपदादिव) इसमंत्रका जप करे और त्रय ३ रात्रि उपवास करके पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होताहै। २। जो सोई आपस्तंव जी कहतेहैं चमिति चंडाल करके स्पर्श वाला ब्राह्मण विशेष कर्के शोककरताहुआ शुद्धिकों करे क्या एक रात्रि उपवासव्रत करके पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होताहै। ३। सो एह आपत्ति विषें इच्छातें विना करण विषें जानणा लघुहारीतस्मृति मे लिखाहै ॥ जूठा मनुष्य जेकर स्पर्श करे नटुएकों ललारीकों

अत्रार्द्धोच्छिष्टो मुखेग्रासप्रक्षेपमात्रिकृते नतु निगीर्णे आस्याशनेमुख स्पर्शमात्रे अकामतः सएव भुक्तोच्छिष्टस्त्वनाचांतः चांडालैःश्वपचेनवाप्र मादात्स्पर्शनंगच्छित्तत्रकुर्याद्विशोधनम् १ गायत्र्यष्टसहस्त्रंतुद्रुपदानांशतंत था त्रिरात्रोपोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति २ यत्तुसएव ॥चंडालेनतुसं स्पृष्टोविशेषंचरस्तुद्विजोत्तमः उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ ३ तदापद्यकामतः। लघुहारीतः। उच्छिष्टः संस्पृशेद्यस्तुनटरंजकमोचकान् अधोच्छिष्टोयदास्यादेकरात्रमभोजनम् १ ऊर्ध्वोच्छिष्टोयदास्यात्प्राय श्चित्तंभवेदिदम् उपवासस्त्रिरात्रंस्याद् घृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति २ अतश्चऊ र्ध्वोच्छिष्टस्यतैरुच्छिष्टैः स्पर्शेषड्रात्रम् एवमेव यत्रोर्ध्वोच्छिष्टस्यचांडालादि स्पर्शेषड्रात्रम् तत्राधोच्छिष्टस्यतदर्द्धंत्रिरात्रम् कालिकापुराणे स्पृष्ट्वारुद्रस्य निर्माल्यंसवासाआप्लुतःशुचिरिति मलादिदूषितकूपादिजलपाने संवर्त्तः चंडालभांडसंस्पृष्टंपिवेत्कूपगतंजलम् गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति १

मोचीकों सो जेकर दिशा फिरकर आयाहै इसतहाँका जूठा होवे तां एकरात्र भोजन न करे ॥ १ ॥ और जेकर भोजन करणेतें पिच्छे इनांकों छोवे तां इस प्रायश्चित्तनुं करे कि तीनरातां उपवासकरकेपिच्छे घृतपानकरे तोशुद्धहुंदाहै ॥ २ ॥ इसीकारणतें और जिनांके साथ स्पर्श होया है जेकर सोभी जूठे होण तां ६ छेरात्रका व्रत करे इसी तहाँ जित्थे ऊर्ध्वो च्छिष्टका चांडालादिके स्पर्श विषे छे ६ रात्रिका व्रतहै तिस जगा अधोच्छिष्टका तिसी के स्पर्शमें तीन ३ रात्रिका व्रत जानणा ॥ और विशेष कालिका पुराणविषे किहा हैं। शिवके निर्माल्यकों स्पर्श कर्के सहित वस्त्रांके स्नानकरे तां शुद्ध हुंदा है ॥ मलमूत्रादि जि सखूएमे पडे होण तिसके जलपानविषें संवर्त्तजी कहतेहैं चांडालके भांडे कर्के स्पर्श वाला जो खूयाँहै तिसके जलको पीवेसो गोमूत्रयावकके आहारकर्के तीन३रात्र व्यतीतकरेतो शुद्ध हुंदाहै १

और कहतेहैं अंत्यजैरिति चांडालों कर्के सेवितजो तडागक्यातला और नदिआं तिस विषे जलपीके अकामनाते पंचगव्य पीणे कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ २ मदिरा वाला घडा और धर्म्मशालाका जल और पनालेका जल इनको पीके दिनरात्रका उपवास रक्षकर पंचगव्य पीवे तां द्विजक्यात्राह्मणादि शुद्ध हुंदाहै ॥ ३ ॥ जेकर खुया विष्टामूत्र कर्के युक्त होवें तिस विचों ब्राह्मणादि जलपान करे तां तीनरात्रके व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै और जेकर ऐसा घडाहि होवे क्या विष्टा मूत्र वाला होवे और तिसके जलको पीवेतांसांतपनव्रतकरे ॥ ४ ॥ और वाउलीं १ खूया २ तलाओ ३ एह जेकर दूषितहोण तां इनकी शुद्धि इसतर्हां जानणी जलका १०० सउघडा

अंत्यजैःस्वीकृतेष्वेवतडागेषुनदीषुच शुद्ध्यतेपंचगव्येनपीत्वातोयमकामतः २ सुराघटप्रपातोयंपीत्वाकाशजलंतथा अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्यंपिवेद्द्विजः ३ कूपेविण्मूत्रसंस्पृष्टेप्राश्यचापोद्विजातयः त्रिरात्रेणैवशुद्ध्यंतिकुंभेसांतपनंस्मृतम् ४ वापीकूपतडागानांदूषितानांविशोधनम् अपांघटशतोद्धारःपंचगव्यंचनिःक्षिपेत् ५ प्रसंगाज्जलशुद्धिरप्युच्यते तत्रपराशरमाधवः वापीकूपतडागेषुदूषितेषुकथंचन उद्धृत्यवैघटशतंपंचगव्येनशुद्ध्यतीति १ कूपादिदूषणंद्विधा श्वमार्जारादीनांतत्रपततंमरणात् मृतशरीराणांतत्रैव चिरंजरणाच्च तत्र मरणविषयमिदंविशोधनम्

निकाल कर पंचगव्य उसमे पावे तां शुद्धहुंदाहै ॥ ५ ॥ प्रसंगतें जलशुद्धिभी कहिदीहै तिसमे पराशर माधवजीका वचनहै वाउली १ खूया २ तलाओ कदाचित् दूषितहो जाण तां जलका सउ १०० घडा कडा कर पंचगव्य तिस विचपाणा तिसकर्के शुद्ध हुंदेहै ॥ १ ॥ पिछलाहि अर्थहै।कूपादियोंका सो दूषण दोतर्हांकाहै कुत्ते बिल्ले आदिका तिनमैंपैं कर्के मरणा और मृतहोयांका चिरकाल कर्के जीर्ण होणा इनमेसैं पहलेकी क्या जो मृतहोआ और जिसते शीघ्रनिकाललिआ तिसकी एह सउ १०० घडे वाली शुद्धिहै

इसी कों हारीत जी भी कहतेहैं वाउली खूत्र्या तला एह किसे करके दूषित होवें तो इनांकी शुद्धि करे क्यासौ १०० घडा जल कडा करके पंचगव्य तिसमे पादेवे। १। संवर्त्त जी भी इसी मे कहतेहैं वापीति वाउली खूत्र्या तलाश्रो एह कदाचित् मलादि करके दूषित होवें इनांकी शुद्धि वास्ते जलका सौ १०० घडा निकाल करके पंचगव्य तिसमें पादेवे। १। एही शुद्धि जोडे आदिके दूषण बिषें भी देखणे योग्यहै। सोई आपस्तंब जी कहतेहैं उपेति जोडा और पुराणे जोडेका एक भाग छिप्य किहाहै और विष्ठा मूत्र स्त्रीका रज मदिरा इनांके पैने करके दूषित जो खूत्र्या तिसतें सौ १०० घडा जलका निकाल देवे। १। अव इसीमे और विचार कर्तेहैं उच्छीति(प्रश्ण)जूठा और अपवित्र ऊौर जो विष्ठा करके लिप्त होवे एह संपूर्ण जल करके शुद्ध होते

एतदेवहारीतोप्याह वापीकूपतडागेषुदूषितेषुविशोधनम् घटानांशतमुद्धृत्यपंचगव्यंक्षिपेत्ततइति १ संवर्त्तोपि वापीकूपतडागानांदूषितानांचशुद्धये अपांघटशतोद्धारः पंचगव्यंचशोधनमिति १ इयमेवशुद्धिरुपानहादिदूषणेपिद्रष्टव्या तदाहापस्तंबः उपानच्छिप्यविण्मत्रस्त्रीरजोमद्यमेवच पतितैर्दूषितंकूपेकुंभानांशतमुद्धरेदिति ॥ १ ॥ पुरातनोपानदेकभागश्छिप्यम्। उच्छिष्टमशुचित्वंचयच्चविष्ठानुलेपनम् सर्वंशुद्ध्यतितोयेनतत्तोयंकेन शुद्ध्यति ॥ २ ॥ सूर्यरश्मिनिपातेनमारुतस्पर्शनेनच गवांमूत्रपुरीषेणतत्तोयंतेनशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ अस्थिचर्मादियुक्तंतुखरश्वानोपदूषितं उद्धरेदुदकंसर्वंशोधनंपरिमार्जनम् ॥ ४ ॥ कूपोमूत्रपुरीषेणयवनेनापिदूषितः श्वसृगालखरोष्ट्रैश्चक्रव्यादैश्चजुगुप्सितः ॥ ५ ॥

हैंऔर सो जल किस करके शुद्ध होताहै २ (उत्तर)सूर्यकी किरणांके डिगणें करके और वायुके स्पर्श करणें करके सो जल शुद्ध होताहै ऊौर गौत्र्यांकें मूत्र करके और गोए करके सो जल शुद्ध हुंदाहै। ३। अव छोटे जलाशयके वास्ते कहतेहैं अस्थीति हड्डीयां करके और चम्म करके आदि शब्दते मलमूत्र करके युक्त होवे और गधा कुत्ता इन करके दूषित होवे तां तिस जलाशयतेंसाराजल निकाल कर उसके तलकों पूंज देवे तां शुद्ध होवेगा ॥ ४ खूत्र्या मूत्र पुरीष करके अर यवन जो नीचजाति तिस करके दूषित होवे अथवा कुत्तेकरके गिद्दडकरके गधे करके ऊट करकें व्याघ्रादि करके दोषवाला होवे ॥ ५ ॥

तां तिसके सारे जलको निकाल करके सत्त टोकरिआं मिट्टीकिआं काढे और ऋचा करके पवित्र होआ २ पंचगव्य उस खूये विषे पावे ॥ ६ ॥ इसीमे विशेष कहतेहैं कि जिस खूएका जल शुक न सके तिस विचों १०० सउघडाजलदा निकालके पंचगव्य पावे एह पिछलाहि अर्थहे ॥ ७ ॥ अब प्रासंगिकको कहतेहैं यच्चेति जेडा ब्राह्मण दुष्ट खूए का जल पीवे खूया कैसाहैं कि मुडदे करके दोषवालाहै तां किसतर्हां तिसकी शुद्धि होतीहै एह मेरेको संशयहै ८ (उत्तर)जेकर मुडदा तिसविषे गलया नहि औरटुट्टा नहि केवल दूषण मात्र हि होआहै तां तिसके जल पीणे करके जो दोषहै सो पंचगव्य करके दूरहुंदाहै ९ और जेकर जल विषे मुडदा गलगया होवे तो तिस जल को पान करण वाला चांद्रायण अथवा तप्त कृ

उद्धृत्यैवचतत्तोयंसप्तपिंडान्समुद्धरेत् पंचगव्यमृचापूतंकूपेतच्छोधनंस्मृत म् ६ वापीकूपतडागानांदूषितानांचशोधनम् कुंभानांशतमुद्धृत्यपंचगव्यंत तःक्षिपेत् ॥ ७ यच्चकूपात्पिवेत्तोयंब्राह्मणःशवदूषितात् कथंतत्रविशुद्धिः स्यादितिमेसंशयोभवेत् ८ ॥ अक्लिन्नेनाप्यभिन्नेनकेवलंदूषिताच्चहि पीत्वा कूपादहोरात्रंपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ ९ ॥ क्लिन्नेभिन्नेशवेचैवतत्रस्थंयदित त्पिवेत् शुद्धिश्चांद्रायणंतस्यतप्तकृच्छ्रमथापिवा ॥ १० ॥ अत्रकामतश्चां द्रायणमकामतस्तप्तकृच्छ्रमितिव्यवस्था ऽपरार्के ॥ पराशरः ॥ कूपेतुपति तंदृष्ट्वाश्वसृगालंचमर्कटं अस्थिचर्मादिपतनात्पीत्वामेध्याद्यपोद्विजः १ नारंतुकुणपंकाकंवेड्वराहंखरोष्ट्रयोः गावयंसौप्रतीकंचवाभ्रवंत्वाखुजंत या ॥ २ ॥ वैयाघ्रमार्गसैंहंवाकूपेयद्यस्थिमज्जति तडागस्यैवदुष्टस्यपी तंस्यादुदकंयदि ॥ ३ ॥ प्रायश्चित्तंभवेत्तस्यक्रमेणैतेनसर्वशः ॥ ४ ॥

च्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै ॥ १० ॥ इस विषे इच्छातें करणे में चांद्रायण और न इच्छातें करणें विषे तप्त कृच्छ्र व्रतकरे एह व्यवस्था अपरार्कमें कहीहै अब पराशर जी कहतेहैं कूपेति कुत्ता गिदड वानर इनांनु खूए विषे डिगे होआं नूं देख करके औरहड्डी चर्मादिके डिगणे तें अपवित्र जो जल तिसनूं ब्राह्मण पान करके ॥ १ और पुरुषका मुडदा काक विट् भक्षक शू-कर गधा ऊट गोइंद हस्ती नौल चूआ ॥ २ ॥ व्याघ्र मृग शेर इनका मुडदा खूए विषें डिगया होवे और हड्डि डिगे खूए विषें अथवा तलाओ विषें इनका जेकर जल पान करे ३ तो इसका प्रायश्चित्त संपूर्ण इस क्रम करकें करणे योग्यहै ॥ ४ ॥

विप्र इति ब्राह्मण त्रय ३ रात्रि करके और क्षत्रि दो २ दिनतें वैश्य एक दिन करकें शूद्र उपवास करके शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ एह तलाओंकें जल पानमें जानणा ॥ और खूएके जल पान में अधिक प्रायश्चित्त कल्पना करणा । मृत शरीर जिस विषें गल गया होवे तिस जल कें पान में विष्णु जी कहतेहैं मृतेति मृत होंए पंचनख जिस खूएमें डिगें तैसें मुडदा जिसमे गल जावे तो तिस संपूर्ण जलकों निकाल देवे वाकी दें जल कों शास्त्र करके शुद्ध करे ॥ १ ॥ और अग्नि जगा करके पीछे पक्का वणाजो खूआ तिस विषें पंचगव्य पा देवे फेर नवीन जल उत्पन्न होवे तो जानणा शुद्ध भया ॥ २ ॥ और कुष्ठ्यादि मनुष्यके श

विप्रः शुद्ध्येत्त्रिरात्रेण क्षत्रियश्चदिनद्वयात् ॥ एकाहेनचवैश्यस्तु शूद्रो नक्तेनशुद्ध्यति ॥ ५ ॥ सुप्रतीकोगजःतस्येदंसौप्रतीकम् ॥ तडागोदको पयोगविषयमेतत् कूपोदकोपयोगेत्वधिकंकल्प्यम् ॥ मृतशरीरजरणकृता यामत्यंतोपहतौ विष्णुराह मृतपंचनखात्कूपादत्यंतोपहतात्तथा ॥ अपस्तदुद्धरेत्सर्वाः शेषंशास्त्रेणशोधयेत् १ वह्निप्रज्वालनंकृत्वाकूपेपक्केष्टि काचिते पंचगव्यंन्यसेत्तत्रनवतोयसमुद्भव इति ॥ २ ॥ कुष्ठ्यादिम नुष्यशरीरजरणेप्येषैवशुद्धिः ॥ तदाहहारीतः ॥ वापीकूपतडागेषु मानुषं शीर्य्यतेयदि अस्थिचर्मविनिर्मुक्तैर्दूषितंश्वखरादिभिः उद्धृत्यतज्जलंसर्वंशो धनंपरिमार्जनम् १ ॥ मानुषंशवम् ॥ अत्रसर्वजलोद्धारप्रकारोजलोद्धारक यंत्रविशेषेण वा तावन्मृदापूर्य्यपश्चात्सर्वमृदुद्धरणेनभवतीतियौक्तिकोऽर्थः

रीर गलनें में भी एही शुद्धि जानणी । सोई हारीत जी भी कहतेहैं वापीति वाडली खूआ तलाओ इनां विषें जेकर पुरुषका मुडदा अर्थात् किसें कुष्ठी आदिका मुडदा गल जावे और हड्डी चर्म इन करकें रहित कुत्ता गधादि करके दूषित जो जल तिस सारें जलकों हि निकाल देवे और परिमार्जन करकें क्या यछा सोत देवे तां शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अत्रेति इस विषें संपूर्ण जल निकालनेंका प्रकार एहहै जलोद्धारक यंत्र विशेष करके निकाल देवे अथवा जितना जल होवे तितनी मृत्तिका पाकर पूर्ण कर देवे पीछेंतें सं पूर्ण मृत्तिका निकालनें करके शुद्ध होताहै एह युक्ति सिद्ध अर्थहै वचन करके नाहीं है ॥

श्रीर वडे तला श्रादिविषें दोष नाहीं है सो विष्णुजीकहतेहैं जलेति छोटे जो जलस्थान श्रीर वडे जो पृथ्वी विषें जल स्थान जेडे स्थावरहैं क्या वगदे नहि तिनांकी शुद्धि खूए की न्यां ई कही है श्रीर वडे जल स्थानों में दोष नहिहै। १। इसी में देवलजी भी कहते हैं वडे जो जल स्थान हैं तिनांमें दोष नाहीं है श्रौर जिनां में सें जल वगता है तिनांमें भी दोष नाहीं है श्रौर छोटे की जल निकालनें सें शुद्धि कही है क्योंकि जिस करके मल विषें हि दोष होंताहै। १। श्रल्प जल स्थानों विषें भी पूर्व कथन कीत्ता होया जो दोष तिसतें श्रल्प दोष विषें विष्णु जी कहते हैं श्रन्यात्तमिति श्रपवित्र वस्तु थोडी जगामें जिस जल में पडी हो और तैसें हि जिस में पत्थर लगे हों तिनकी शुद्धि चंद्रमा सूर्यकी किरणां करके श्रौर वायु

प्रौढेषुतडागादिषुनास्तिदोषस्तदाहविष्णुः ॥ जलाशयेषुस्वल्पेषुस्थावरेषुमहीतले कूपवत्कथिताशुद्धिर्महत्सुचनदूषणमिति ॥ १ ॥ देवलोपि श्रक्षुद्राणामपांनास्तिप्रस्नुतानांचदूषणम् ॥ स्तोकानामुद्धृतानांचकश्मलेदूषणंभवेदिति १ अल्पोदकेष्वपिपूर्वोदाहृताद्दोषादल्पेदोषेविष्णुराह श्रन्यात्तंचदमेध्येनतद्वदेवाशिलागतम् सोमसूर्यांशुपातेनमारुतस्पर्शनेनच गवां मूत्रपुरीषेणशुद्ध्यंत्यापइतिस्मृताइति ॥ जानुदघ्नाधिकजलेकूपेंऽत्यजैस्सहजलोद्धरणे न दोषस्ततोऽल्पेतु दोषएव। तथाचापरार्केऽत्रिः॥ म्लेच्छादीनांजलंपीत्वापुष्कराणांहृदेपिवा जानुदघ्नंशुचिज्ञेयमधस्तादशुचिस्मृतम् ॥ १ ॥ मूलेच्छादीनांसंबंधिनांपुष्कराणां तडागादिजलाशयानांवाहृदेतादृशहृदेजलंपीत्वातृप्तस्यशुद्ध्यर्थंजानुदघ्नंशुचि ततोऽल्पमशुचीत्यर्थः

स्पर्श करकें श्रौर गौश्रां के मूत्र पुरीष करके होतीहै एह स्मृतिकार कहते हैं अब इसीमे श्रौर विशेषकहतेहैं जान्विति जानुतक अर्थात् गोडेतक जिसखूएमे जलहोवे श्रौर उसीसे ब्राह्मणादि श्रौर नीचादि जलपीतेहोण तां ब्राह्मणादिको कोई दोष नहि श्रौर जेकर इससे जलवहुतहोवे तां क्याकहणा श्रौर जेकर गोडेसें थोडा जल होवे तां पूर्वोक्तमे दोषहि है एहश्रर्थ श्रपरार्क विषें श्रत्रिजीने किहाहै म्लेच्छेति म्लेच्छादिषांके संबंधिजोतडागादि वा हृदतिनांका जलपीके तृप्तहोया जो द्विजादि तिसको जानुके वरावर जलपवित्रहै हेंठहोवेतां श्रपवित्रहै ॥ १ ॥

तिस जलको जेडा ब्राह्मण कामनातें अथवा अकामते पीवे तां अकामके पान विषे नक्तभोजी होवे क्या रात्रिमे भोजन करे और कामनाते पीवे तां दिनरात्रके व्रतकर्के शुद्धहुंदा है ॥ २ ॥ और शातातपजी कहते हैं चांडेति चांडालके जलपात्रतें तृषातुर पुरुष जलपीवे तां तत्क्षणाहि उसको त्यागकर प्राजापत्यसे शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ जेकर सो जल तिसके उदर विषेहि जीर्ण होजावे तां शुद्धिवास्ते प्राजापत्य और सांतपनभीकरे ॥ २ ॥ इसीमें और विशेषकहते हैं कि जूठे आदिवस्तुका संयोग जिसजलमें नहि और गौओंके पीणेंते क्षय नाहि होआ ऐसा जो पृथ्वीविषे स्थित जलहै सोई शुद्धहै और तिसतें थोडा होवे तां शुद्ध नहि सोई देवलजी कहतेहैं अवीति दुर्गंधिसे जो रहित और रसवाले क्या स्वादु और निर्म्मल

तत्तोयंयः पिबेद्विप्रः कामतोऽकामतोपिवा अकामान्नक्तभोजीस्या दहोरात्रंतुकामतः ॥ २ ॥ शातातपः ॥ चंडालोदकभांडेषुयः पिबे त्तृषितोजलम् ॥ तत्क्षणात्क्षिपतेतच्चप्राजापत्येनशुध्यति ॥ १ ॥ यदिनक्षि पतेतोयंचिरेणैवास्यजीर्यते प्राजापत्यंतुकर्त्तव्यंकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ २ ॥ उच्छिष्टाद्युपघाताभावेपि गवांपानाद्यदुदकंनक्षीयतेतदेवशुद्धंनतुततोल्पम् तदाहदेवलः अविगंधारसोपेतानिर्मलाः पृथिवीगताः अक्षीणाश्चैवगोपा नादापः शुद्धिकराः स्मृताइति १ मनुरपि ॥ आपः शुद्धाभूमिगतावैतृष्ण्यं यासुगोर्भवेत् अव्याप्ताश्चेदमेध्येनगंधवर्णरसान्विताइति १ नवोदकेकाला च्छुद्धिमाहयमः अजागावोमहिष्यश्चनार्य्यश्चैवप्रसूतिकाः दशरात्रेणशुध्यंति भूमिष्ठंचनवोदकमिति १ उद्धृतोदकंप्रतिदेवलआह। उद्धृताश्चापिशुध्यंति शुद्धैः पात्रैःसमुद्धृताः एकरात्रोषिताश्चापस्त्याज्याः शुद्धाअपिस्वयमिति १

और पृथिवीविषे स्थित और गौओंके पीणेते नष्ट नहिहोए सोजल शुद्धिके करणेवाले हैं। १। मनुजीभीकहतेहैं ॥ जो जल पृथ्वीविषे स्थितहैं जिनां विषे गौ तृप्तहोजावे और विष्टा आदि कर्के युक्त नहि और अपणा गुण जो है मधुर रसादि तिसकर्के युक्त हैं सो जल शुद्धजानणे। १। नवीन जलविषे कालते शुद्धि यमजीकहते हैं ॥ अजाइति बकरी १ गौ २ महिषी ३ स्त्री ४ एह प्रसूत होइआं होइआं १० दस्सां दिनां कर्के शुद्ध हुंदीआंहैं और पृथ्वीविषे नवीनजो जल है सोभी १० रात्रकर्केहि शुद्धहुंदाहै। १। और जोजल खूए आदिते निकालयाहोवे सोजल जेकरशुद्धपात्रसाथ निकालयाहोवे तां शुद्धहै एहदेवलजी कहते हैं जेकर सो निकालयाहोआ जल एक १ रात्र उसपात्रमै रहे तां अशुद्धहुंदाहै उसको त्यागदेणा चाहिए चाहे प्रथमशुद्धभीया। १।

इसमे यमजी कहतेहैं अपइति जलको रात्रिमें नहिभरणा अर्थात् खूएआदिसे नहिनिकालना जेकर किसेकार्य्यवशतें निकाले तां अग्निउपररक्खे और धाम्नो धाम्न इसमंत्रका उच्चारणकरे तां शुद्ध होतेहैं ❀ १ अब रजस्वला स्त्रियोंके आपसमें स्पर्श विषे प्रायश्चित्तमयूखविषे किहाहै तिस विषे सपत्नी आंजेडीआं रजस्वलाहैं और एक कुलदीआंहैं तिनके आपसमें स्पर्शविषे वसिष्ठजी कहते हैं स्पृष्ट इति कदाचित् दोए रजस्वला एक कुलदीआं एक पति वालियां आप समें जाण कर्के अथबा नजाणकर्के छोणतां शीघ्रहि स्नान करणे कर्के शुद्ध हुंदिआंहैं। १। और जेकर भिन्न पति वालिआं और इक्क कुल दिआंहोण तां मार्कंडेयजी कहतेहैं उदक्येति ॥ इक्कुलदिआं रजस्वला साथ जेकर तैसी दूसरी स्पर्श करे तां तिसीदिनाविषे स्नानकर्केशुद्ध

यमोपि अपोनिशिनगृह्णीयाद्गृह्णीतापिकदाचन निधायाग्निमुपर्यासांधाम्नोधाम्नइतीरयन् ॥ १ ॥ ततश्चशुद्धाभवेयुरित्यर्थः ॥ ❀ अथ रजस्वलायाअस्पृश्यस्पर्शे प्रायश्चित्तमयूखे तत्ररजस्वलयोः सपत्न्योरेकगोत्रयोः स्पर्शेवसिष्ठः स्पृष्टेरजस्वलेन्योन्यंसगोत्रेत्वेकभर्तृके कामादकामतोवापिसद्यःस्नानेनशुध्यतः १ असपत्न्योस्तुसवर्णयोर्मार्कण्डेयः उदक्यातुसवर्णायास्पृष्टाचेत्स्यादुदक्यया तस्मिन्नेवाहनिस्नाताशुद्धिमाप्नोत्यसंशयः १ इदंचाकामतः ॥ कामतस्तु काश्यपः । रजस्वलातुसंस्पृष्टाब्राह्मण्याब्राह्मणीयदि एकरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुध्यति १ यत्तुपराशरः ॥ स्पृष्ट्वारजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणीब्राह्मणींतथा तावत्तिष्ठेन्निराहारात्रिरात्रेणैव शुध्यतीति १ तत्कामतोभ्यासे सहशयनादिचिरस्पर्शेवा ॥असवर्णास्पर्शे पुनः सएव ! रजस्वलातुसंस्पृष्टाराजन्याब्राह्मणीचया त्रिरात्रेणविशुद्धिःस्याद्व्याघ्रस्यवचनंयथा १

हुंदीहै इसमें संशयनहिंहै ॥ १ ॥ एह अकामकृत स्पर्शमे है जेकर कामकृतमें होवे तां कश्यप जीकहतेहैं रजइतिरजस्वलाब्राह्मणीजेकर रजस्वला ब्राह्मणीके साथ छोजावे तां एकरात्र निराहार रहकर पंच गव्य कर्के शुद्ध होतीहै । १ । और जो पराशर जीने किहाहै कि आपसमे ब्राह्मणीआं रजस्वला स्पर्श करें तां तिन्न रात्र तक निराहार स्थित रहें तां शुद्ध हुंदीआंहैं एह प्रायश्चित्त कामनाते वहुत वारकरणे मैहै अथवा एकठीआंदे शयनादि स्पर्श विषे है ॥ जो एक वर्णकीआं नहि तिनाके आपसमें छोणे विषे सोई पराशरजी कहतेहैं जेकर ब्राह्मणी रजस्वला क्षत्रियाणी रजस्वलाके साथ स्पर्शवाली होवे तां तिन्नांरात्रांकर्के शुद्ध हुंदीहै एह व्याघ्रजीका वचनहै ॥ १

और रजस्वला ब्राह्मणी वैश्या रजस्वला कर्के स्पर्श वाली होवे तां पंज रातां निराहार रहकर पीछे पंचगव्यके पान कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ २ ॥ और रजस्वला ब्राह्मणी शूद्रा रजस्वला कर्के स्पर्शवाली होवे तां छे ६ रात्र कर्के शुद्ध हुंदीहै एह सभकामनाके स्पर्शविषे है ॥ ३ ॥ अकाम ते स्पर्श विषे ब्राह्मणी सभजाति विषे अर्द्ध प्रायश्चित्त करे ॥ ४ ॥ इसमें ऐसा जानणा कि जिसतरहीं ब्राह्मणीआं रजस्वला आपसमें स्पर्श वालिआं होण तां तिनांकों उपवास और पंचगव्यपान किहाहै तिसतरहीं होरणांको समान कुल वालि आंके स्पर्श विषे भी उपवास

रजस्वलातुसंस्पृष्टावैश्ययाब्राह्मणीचया पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ २ ॥ रजस्वलातुसंस्पृष्टाशूद्रयाब्राह्मणीचया षड्रात्रेणविशुद्धिः स्याद्ब्राह्मण्याः कामकारतः ॥ ३ ॥ अज्ञानतश्चरेदर्धंब्राह्मणी सर्वजातिषु ॥ ४ ॥ अत्र यथा ब्राह्मणी रजस्वलयोःस्पर्शेउपवासः पंचगव्याशनंच तथाऽन्यासामपि सवर्णरजस्वलास्पर्शेपि तदेव ॥ असवर्णेतु यथाब्राह्मण्याःक्षत्रियास्पर्शेत्रिरात्रम् ॥ तथाक्षत्रियायावैश्यास्पर्शे ॥ वैश्यायाःशूद्रास्पर्शेपितदेव ॥ तथाचभवदेवनिबंधस्मृतिः ॥ रजस्वलातुयानारी अन्योन्यसुभयंस्पृशेत् सवर्णेपंचगव्येनत्रिरात्रमसवर्णके ॥ १ ॥ पंचगव्येनउपवाससहितेनेतिभवदेवः ॥ तथाशातातपः रजस्वलेउभेनार्यावन्योन्यंस्पृशतोयदि सवर्णेपंचगव्येनब्रह्मकूर्चमतःपरमिति १ ब्रह्मकूर्चप्रकारोव्रतप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥

और पंचगव्यपानहै और असमानवर्णविषें जैसे ब्राह्मणीको क्षत्रियाणीके स्पर्शविषे त्रिरात्रहै इतनाहि क्षत्रियाणीको वैश्याकेस्पर्शविषेहै और वैश्याको शूद्राके स्पर्श विषेभी सोई है तैसेहि भवदेवके निबंधमें स्मृतिहै रजइति रजस्वलाजो स्त्रीहै सो दो आपसमें स्पर्शकरें अपणे वर्णमै तां उपवाससहित पंचगव्यकर्के और भिन्नवर्ण विषे त्रिरात्र व्रत कर्के शुद्धहुंदीआंहैं । १ । तैसेहि शातातपजी कहतेहैं दोस्त्रीयां रजस्वला आपसमै स्पर्शकरें तां सवर्णविषे पंचगव्यके पीछे ब्रह्मकूर्च करने कर्के शुद्ध हुंदिआंहैं ॥ १ ॥ सो ब्रह्मकूर्चका प्रकार व्रतप्रकरणमें देखलेना

जो वृद्ध वसिष्टजीने किहाहै स्पृष्टेति ब्राह्मणी और शूद्रा एह दोनो रजस्वलाहोवें और आपसमै स्पर्श करें तां ब्राह्मणी प्राजापत्य कर्के और शूद्रा गोदान कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ १ ॥ और ब्राह्मणी वैश्या एह दोनो रजस्वलाहोण और परस्पर स्पर्श करें तां पूर्वा क्या ब्राह्मणी पादोन प्राजापत्य करे क्या ९ दिनका व्रत करे और उत्तरा क्या वैश्या तिसका इक्कपाद व्रत करे ॥ २ ॥ और ब्राह्मणी तथा क्षत्रियाणी एह आपसमे रजस्वला होकर स्पर्श करें तां पहली अद्धे कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदीहै और दूसरी लघु कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ ३ ॥ और क्षत्रि

यत्तुवृद्धवसिष्ठः ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीशूद्रजापिवा कृच्छ्रेणशुध्यतेपूर्वाशूद्रादानेनशुध्यति ॥ १ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीवैश्यजापिवा पादहीनंचरेत्पूर्वाकृच्छ्रपादंतथोत्तरा ॥ २ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीक्षत्रियातथा कृच्छ्रार्धात् शुध्यतेपूर्वाइतरातुतदर्द्धतः ॥ ३ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंक्षत्रियाशूद्रजापिवा उपवासैस्त्रिभिःपूर्वात्वहोरात्रेणचोत्तरा ॥ ४ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंक्षत्रियावैश्यजापिवा त्रिरात्राच्छुध्यतेपूर्वात्वहोरात्रेणचोत्तरा ॥ ५ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंवैश्याशूद्रातथैवच त्रिरात्राच्छुध्यतेपूर्वा उत्तरातुदिनद्वयात् ॥ ६ ॥ वर्णानांकामतःस्पर्शेशुद्धिरेषासनातनीति ❁ ❁ ❁

याणी तथा शूद्रा एह रजस्वला होयां होयां आपसमे स्पर्श करें तां पहली क्या क्षत्रियाणीतिन्नां उपवासां कर्के शुद्ध हुंदीहै और दूसरीक्याशूद्रा अहोरात्रके अर्थात् दिनरात्रके व्रत कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ ४ ॥ और क्षत्रियाणी तथा वैश्या एह रजस्वलाहोइयांदीआं आपसमे स्पर्श करें तां तिन्नांरातां कर्के क्षत्रिया और दिनरातके व्रत कर्के वैश्या शुद्ध हुंदीहै ॥ ५ ॥ और वैश्या और शूद्रा एह दोनो रजवालिआं होकर स्पर्श करें तां तिन्नांरातां कर्के वैश्या और दोदिन कर्के शूद्रा शुद्ध हुंदीहै ॥ ६ ॥ एह वर्णकी कामकृत स्पर्श विषे शुद्धि कहीहै सो सनातनीहै ❁

एह व्रत कामनासें वहुतवार करणेमें जानणा। दान करकें पादकृच्छ्रके प्रत्याम्नाय विषे और पतित चांडालादिके स्पर्श विषे वृद्धवसिष्ट और वृद्धवृहस्पतिजीका वचन है ॥ पतीति पतित १ अंत्यक्याडूम २ श्वपाक चांडाल ३ इनांकर्कें कदाचित् रजस्वला स्त्री स्पर्श वाली होवे तां तिनां दिनानूं लंघकर्कें प्रायश्चित्त करे ॥ १ ॥ पहले दिनहि पतिता दिके साथ स्पर्श होवे तां तिन्न ३ रातां व्रत करे परंतु स्नान दिनतें पीछे इसीतरहांदूसरें दिन स्पर्श होवे तां दो २ दिन और तीसरें दिन दिनरात्रका व्रतकरे और चौथे दिन स्पर्श करे तां नक्त करे तां शुद्धहुंदीहै ॥ २ ॥ और जूठीशूद्रा कर्कें और कुत्ते कर्कें स्पर्श वाली रजस्वला होवे तां भी दो २ दिनका हि व्रतकरे इस स्मृतिका अर्थ

एतच्चकामतोऽभ्यासे ॥ दानेनपादकृच्छ्रप्रत्याम्नाये ॥ पतितचांडालादिस्पर्शे वृद्धवसिष्टवृद्धवृहस्पती ॥ पतितांत्यश्वपाकेन संस्पृष्टाचेद्रजस्वला तान्यहानिव्यतिक्रम्यप्रायश्चित्तंसमाचरेत् ॥ १ ॥ प्रथमेह्नित्रिरात्रंस्याद्द्विती येद्व्यहमेवतु अहोरात्रंतृतीयेह्निचतुर्थेनक्तमेवच ॥ २ ॥ शूद्रयोच्छिष्टयास्पृष्टाशुनावाद्व्यहमाचरेदिति चत्वारिदिनान्यस्पृश्यानि रजस्वलायाय स्मिन्दिनेस्पर्शोजातस्तदाग्रिमाणिदिनानि व्यतिक्रम्यानाशकेन नात्येत्यर्थः।अत्रसर्वत्रपंचगव्यप्राशनमपिकर्त्तव्यमिति चतुर्थेनक्तमिति विशुद्धिस्नानात्पूर्वम् ॥ तथाचविष्णुः। रजस्वलाचतुर्थेह्निस्नात्वाशुद्ध्येत् ॥ त्रिरात्राशक्तौ पणचतुर्विंशतिलभ्यंकांचनंदेयम् उपवासद्वये पुराणैकमूल्यं कांचनं देयम्

स्पष्ट कर्कें कहीदा है ॥ चार दिन रजस्वला स्त्रीके हैं जिनोमे स्पर्श नहि करणा तिनां विचों जिस दिन स्पर्श होवे तिसके अगले दिन व्यतीत कर्कें क्या निराहार कर्कें लंघकर एह अर्थ है परंतु इसजगा पंचगव्यका पान अंत्यमे अवश्य कर्के है और जो चौथे दिनमें नक्त किहा है सो स्नानते पहले स्पर्श होवे तां जानणा। सोई विष्णुजी कहते हैं रजइति रजस्वला चौथे दिन विषे शुद्ध हुंदीहै और जो पिच्छे त्रिरात्र व्रत किहा है तिस विषे सामर्थ्य न होवे तां २४ चौवी पैसेके मुल्लका सुवर्ण दान करे और जो दो २ उपवास किहेहैं तिनांविषे सामर्थ्य न होवे तां इक्क पुराणके मुल्लका सुवर्ण दानकरे ॥ और पुराणादिमान व्रत प्रकरणविषे कहीहोई मानपरिभाषासें जानणा

इसमे भवदेव जी का वचन है रजइति जेकर रजस्वला चांडाल १ गर्दभादि २ काक ३ इनां कर्के छोजावे तां तितने दिन निराहार रहे जितने दिनां कर्के सो शुद्ध होवें एह वौधायन जीका वचन असमर्थ रजस्वला विषे और अकाम स्पर्शविषे जानणा ॥ १ ॥ और कामना विषे वृद्ध शातातप जी कहते हैं रजइति रजस्वला स्त्री जद चांडाल १ अंत्यक्या नीच २ कुत्ता ३ काक ४ इनांकर्के स्पर्श वाली होवे तितना काल निराहार रहेजितने काल कर्के स्नानसें शुद्ध हुंदीहैं ॥ १ ॥ इसका अर्थ कहते हैं रजस्वला स्त्री चांडालादि स्पर्श वाली जिसकालमे होवे तिस कालतें लेकर जितने दिनां कर्के शुद्धि होवे

भवदेवः।रजस्वलातुसंस्पृष्टाचांडालाऽपशुवायसैः तावत्तिष्ठेन्निराहारायावत्कालेनशुद्ध्यतीति ॥ १ ॥ वौधायनीयमशक्ताया मकामेवावोध्यम् ॥ अपशवोगर्दभादयः॥यावत्कालेन रजस्वलीयास्पृश्यद्दिनावच्छिन्नेन ॥ कामतस्तुवृद्धशातातपः ॥ रजस्वलायदास्पृष्टाचांडालांत्यश्ववायसैः तावत्तिष्ठेन्निराहारा स्नात्वाकालेनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ अस्यार्थः ॥ रजस्वलाचांडालस्पर्शकालादूर्ध्वं यावद्दिनैः शुद्ध्यति तावत्संख्यंदिनं चतुर्थदिनेविशुद्धिस्नानं कृत्वापंचमदिनात्प्रभृतिनिहारातिष्ठेदिति॥ यत्तु ॥ शातातपः ॥ उदक्यासूतिकावापिशवांगंसंस्पृशेद्यादि त्रिरात्रेणैवशुद्ध्येत इतिशातातपोब्रवीत् ॥ १ ॥ तथा चांडालैः श्वपचैर्वापिआत्रेयीस्पृशतियदि त्रिरात्रोपोषिताभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ तथा काश्यपः ॥ चांडालेनतुसंस्पृष्टा कदाचित्स्त्रीरजस्वला तान्यहानिव्यतिक्रम्यप्रायश्चित्तंसमाचरेत् ॥ १ ॥

तितने दिनोंकी संख्याकर्के चौथे दिनशुद्ध स्नान कर्के पंचम दिनतें लेकर निराहार रहे ॥ जो शातातपजी कहतेहैं उदेति रजस्वला और प्रसूति वालीस्त्री शवांगक्यामुडदेदेअंगको जद स्पर्श करे तां तिन्नांरातांकर्केशुद्धहोतीहैं एह शातातपजीका वचनहै ॥ १ तैसेहिओरवचनहै चांडालैरिति चांडालोंकेसाथ और श्वपचांकेसाथ जोतिनकेतुल्यहै आत्रेयीक्या रजस्वला जदस्पर्शकरेतां त्रिरात्रउपवासकेअनंतर पंचगव्यपानकर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ १ ॥ तैसेहिकश्यपजीकावाक्यहै चांडालके साथ कदाचित् रजस्वलास्त्री स्पर्शवालीहोवे तांतिन्नांदिनानुलंघकर प्रायश्चित्तकरे ॥ १

त्रिरात्रउपवासकर्के पंचगव्यपानकर्केशुद्धहुंदीहै और तिन्हारातांकोव्यतीतकरकेवकरीसेअपणेदेह कोंसिंहणदेवे ॥ २ ॥ एहपहलेदिनके स्पर्शमेंहै एह कैंक कहतेहैं और शूलपाणिजी ने कश्यपजीकेवचनमें प्रथमदिनकी व्यवस्था नहि है किंतु वृद्धशातातपजीके वचन ते कामनाके स्पर्शको विषय करताहै एह कहाहै ॥ और पहलेदिनकेविषयकरणवाला(प्रथमेऽह्नित्रिरात्रंस्यात्) इत्यादि बृहस्पतिजीका वचनहै एहियुक्तहै ॥ उपवासमे असमर्थ जोस्त्रीतिसमे अंगिराजीकह तेहैं चंडालइति ॥ चंडाल और श्वपच जेकर रजस्वलाकोंस्पर्शकरें तांअपक्कअन्नकों सोस्त्रीखावे तितनेदिन और स्नानतेपीछे पंचगव्यकापानकरेतांशुद्धहोतीहै ॥ १ ॥ अपक्केति जो वस्तु अग्नि

त्रिरात्रमुपवासःस्यात्पंचगव्येनशोधनम् तानिशास्तुव्यतिक्रम्यअजाघ्राणं तुकारयेत् २ इत्येतत्प्रथमदिनविषयमितिकेचित् शूलपाणिस्तुकाश्यपवा क्येप्रथमदिनव्यवस्थानास्ति त्रिरात्रेणैवेतिवृद्धशातातपवचनात्कामविषय मेवैतादित्याह प्रथमदिनविषयंतुप्रथमेऽह्नित्रिरात्रंस्यादित्यादिवार्हस्पत्यमे वन्याय्यम् ॥ उपवासासमर्थायांत्वंगिराः। चंडालःश्वपचोवापियद्यात्रेयींस्पृ शेत्तदा अपक्वकृष्टंवर्त्ततपंचगव्येनशुध्यति १ पंचगव्यपानंस्नानानंतरंकार्य्य म्। अपक्वकृष्टमग्निपक्वहलकृष्टोत्पन्नव्यतिरिक्तम् चंडालेनसहैकवृक्षाद्यारोह णे पराशरः ॥ एकवृक्षसमारूढौ चंडालोथरजस्वला अहोरात्रोषिताभूत्वा पंचगव्येनशुद्ध्यति १॥ एकशब्द एकावयव्युपलक्षणएतच्चविशुद्धिस्नानानं तरमित्यापस्तंबीयमग्रे श्वादिस्पर्शेविशेषमाह यमः॥ रजस्वलातुसंस्पृष्टा शुनाजंबुकवायसैः निराहाराभवेत्तावद्यावत्कालेनशुद्ध्यति ॥ १ ॥

कर्केनहिपकी औरहलकर्के नहिपैदेहोईतिसकानामहै । औरचांडालकेसाथएकवृक्षपरआरूढ रज स्वलाविषे पराशरजीकहतेहैं एकेति एकवृक्षमैआरूढहोणचांडालऔररजस्वला तां सो स्त्रीदिनरा तकेव्रतपीछेपंचगव्यकर्केशुद्धहुंदीहै ।१। इसजगाएकशब्दएकअवयविकावाचकहै एहविशुद्धिस्नान तेपीछेपीणा ऐसावचनआगेआवेगा । कुत्तेआदिकेस्पर्शमेंयमजीविशेषकहतेहैं रजइति रजस्वला जद कुत्ता १ गिद्दड २ काक ३ इनांकर्केस्पर्शवालीहोवेतां तितने दिन निराहाररहेजितनेकाल कर्के शुद्ध हुंदी है ॥ १ ॥

एह विना कामनातें स्पर्शविषे जानणा और कामनाकर्के स्पर्शविषे रजस्वलापदकी अनुवृत्ति विषे वृहस्पति जीका वचनहै शुनेति कुत्तेकर्के और जूठीस्त्री कर्के और शूद्राकर्के स्पर्शवालीहोवे तां दोरात्रकाव्रतरक्षे परंतुजदतीसरेदिनस्पर्शहोवेतां एकदिनरात्रकाव्रतकरे और चउथेदिनस्पर्श करे तां नक्तकरे । १ ।और पहलेदूसरेदिनके स्पर्शविषे दोदिनकाव्रतजानणा और इसजगाभीसो दिनव्यतीतकर्के असाअर्थकरलेना ॥ जोवौधायनजी कहतेहैं रजइति रजवालीस्त्री ग्राम्यकुक्कुट और काक कुत्ता इनांकर्के स्पर्शवाली होवे तां जवतकचंद्रदर्शन नहि होयाहै तांतक निराहाररहे अर्थात् नक्तव्रतकरे ॥ १ ॥ एह चौथे दिनके स्पर्शविषे अशक्त स्त्री विषे जानणा॥

एतदकामतः॥ कामतस्तुरजस्वलानुवृत्तौ वृहस्पतिः। शुनावोच्छिष्टयाशूद्रासंस्पृष्टाद्व्यहमाचरेत् अहोरात्रंतृतीयेह्निपरतोनक्तमाचरेत् १ प्रथमद्वितीयदिनेश्वादिस्पर्शेद्व्यहम् परतश्चतुर्थे अत्रापितान्यहानिव्यतिक्रम्येतियोज्यम् यत्तुवौधायनः।रजस्वलातुसंस्पृष्टाग्राम्यकुक्कुटवायसैः श्वभिःस्नात्वापिवेत्तावद्यावच्चन्द्रस्यदर्शनमिति १ चंद्रदर्शनंनक्तमित्यर्थः एतदशक्तायाश्चतुर्थदिनविषयम्।रजकादिस्पर्शेतु चंडालस्पर्शसमानमेव तयोः समानत्वादितिशूलपाणिः॥यत्तुप्रचेताः॥ रजस्वलातुसंस्पृष्टाशुनाचंडालरासभैः पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यति १ तत्कामतोभ्यासे॥भोजनकालेश्वांत्यजादिस्पर्शेतु ।वौधायनः ।रजस्वलांतुभुंजानांश्वांत्यजोयदिसंस्पृशेत् गोमूत्रयावकाहाराषड्रात्रेणविशुद्ध्यति॥ अशक्तौकांचनंदद्याद्विप्रेभ्योवापिभोजनमिति॥ १ ॥

उौर धोवे आदि के स्पर्श में तुपुनः चंडाल स्पर्शके समान है तिना दोआंको तुल्य होणेतें एह शूलपाणिने किहा है॥ जो तुपुनः प्रचेताने किहाहै कि कुत्ता उौर चंडाल उौर गर्दभ इनां कर्के स्पर्श होइहोइ रजस्वला स्त्री पंच दिन निराहार व्रतकरणेकर्के पीछेतें पंच गव्यपानक के शुद्ध हुंदी है॥ १॥ एह इच्छा तें अभ्यास विषे जानणा॥ उौर भोजन समय विषे कुत्ते चांडाल आदिके स्पर्शमे वौधायन जी कहते हैं भोजनकों कर्दी होइ रजस्वलाकों जेकर कुत्ता उौर चंडाल स्पर्शकरे तां छे ६ दिन गोमूत्र कर्के यावक भक्षण करणेंते शुद्ध हुंदीहै उौर न समर्थाहोवे तां सुवर्ण वा भोजन ब्राह्मणांके तांई देवे ॥ १ ॥

जेकर दोए रजस्वला जूठीआं होण तां तिना उच्छिष्टोंमे स्पर्श विषे तुपुनः अत्रिजीका वाक्यहै ॥ कदाचित् रजस्वला स्त्री जूठी होवे और दूसरी जूठी रजस्वलाके साथ स्पर्श वाली होवे तां पूर्वा क्याब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या एह प्राजापत्य कर्के और शूद्री दानकर्के और उपवासकर्के शुद्ध हुंदीहै १ परंतु एकहि जातिकीआं दोए होण तिनांविषे एह है जेकर भिन्नजातिकियां होण तां ब्राह्मणी क्षत्रियाणीके स्पर्श मे २ दो प्राजापत्य और वैश्या रजस्वलाके स्पर्शमें ३ त्रय इत्यादि जानणा। और शूद्रीआं रजस्वलाके परस्पर स्पर्शमें २ दो उपवास सहितप्राजापत्यके प्रत्याम्नाय दानकर्के शुद्धिहुंदीहै एहकामनातें करणेमेंहै अकामकृतमे अद्धा है शूलपाणि जी ने इसतर्हों पाठ लिखाहै जूठे कर्के कदाचित् रजस्वला स्त्रीछोजावे तां

उच्छिष्टयोःपरस्परंस्पर्शे त्वत्रिः । उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टाकदाचित्स्त्रीरजस्वला कृच्छ्रेणशुद्ध्यतेपूर्वाशूद्रादानैरुपोषितेति १ अत्रपूर्वाशब्देनब्राह्मणक्षत्रियवैश्यस्त्रियोभिधीयंते॥तेनरजस्वलयो;समानजातीययोरुच्छिष्टयोःब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानांपरस्परस्पर्शेप्राजापत्यम् ॥ स्वस्वानंतरस्पर्शे त्वेकैकवृद्धिरूहनीया ॥ तादृशशूद्रयोःस्पर्शेपरस्परंतूपवाससहितप्राजापत्यप्रत्याम्नायदानेनशुद्धिः । एतच्च कामतः । अकामतस्तदर्द्धम्॥ शूलपाणिस्तु उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टाकदाचित्स्त्रीरजस्वला कृच्छ्रेणशुद्ध्यतेपूर्वाशूद्रादानेनशुद्ध्यतीतिपपाठ १ तत्रोच्छिष्टेन चांडालादिना । दानेन कृच्छ्रप्रत्याम्नायेन एषुरजस्वलात्वमेव निमित्तमतोनक्षत्रियवैश्ययोर्ब्राह्मण्यादिभ्यो विशेषइत्याह । उच्छिष्टद्विजसंस्पर्शेतुमार्कंडेयः ॥ द्विजान्कथंचिदुच्छिष्टान्रजःस्त्रीयदिसंस्पृशेत्, अधोच्छिष्टेत्वहोरात्रमूर्ध्वोच्छिष्टेत्र्यहंक्षिपेदिति १

पूर्वा क्या ब्राह्मणी आदि प्राजापत्य कर्के शुद्ध हुंदीहै औरशूद्रा दान कर्के १ इस जगा उच्छिष्ट चांडाल समझणा और दान कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय जानणा। और इसमें रजस्वलात्व धर्म हि उक्त प्रायश्चित्तका निमित्त है कोई ब्राह्मणत्वादि जाति नहि इस कर्के सभना वर्णा कीआं स्त्रीयां का तुल्यहि प्रायश्चित्त है किसेमें विशेष नहि ऐसा किहाहै ॥ जूठे द्विजके क्या ब्राह्मणादिके स्पर्शविषे मार्कण्डेय जी कहते हैं॥ द्विजानिति कदाचित् ब्राह्मणादिकों जूठआं कों रजस्वला स्त्री स्पर्श करे जेकर अधोच्छिष्टांको स्पर्श करे तां दिनरात्रव्रत करे और ऊर्ध्वोच्छिष्टांको स्पर्श करे तां त्रय दिन व्रत करे ॥ १ ॥

इस विषे यद्यपि विशेष नहिसुणींदाहै तथापि ब्राह्मणादिकी अपेक्षा कर्के उच्छिष्टक्षत्रियादि स्पर्श विषे ब्राह्मणीको अधिक कल्पना करणी । इसी तहीं हीनजाति की रजस्वला ते अधिकजातिवालीके स्पर्श विषेहै जैसे क्षत्रियाणीकों ब्राह्मणी के स्पर्श विषे कुछ न्यून क्या थोडा कल्पना करणा ॥ भोजनकालमें रजस्वला दूसरी रजस्वलाकों देखे तां तिसमे आप स्तंवजी कहते हैं उदे ति। जेकर रजस्वला भोजन करदी होई दूसरी रजस्वला कों देखे तां स्ना नके दिन तक भोजन न खावे और पीछे ब्रह्मकूर्च पीवे ॥ १ ॥ एह कामनाके दर्शन विषे जानना । और चांडालादि के दर्शनमें अत्रिजी कहतेहैं रजस्वलेति भोजन कों करदीहोई रजस्वलास्त्रीचंडालकों देखे तां त्रय उपवास व्रत करे उर इच्छातें देखे तां

अत्रयद्यपि नविशेषः श्रूयते तथापिब्राह्मण्यपेक्षया उच्छिष्टक्षत्रियादिस्पर्शे ब्राह्मण्या अधिकंकल्प्यम्।एवंहीनायाउच्छिष्टस्पर्शेन्यूनम्। भोजनकालेरज स्वलांतरंदृष्ट्वापुनर्भोजनेत्वापस्तंवः उदक्यायदिवाभुंक्तेदृष्ट्वान्यांतुरजस्व लाम् आस्नानकालंनाश्नीयाद्ब्रह्मकूर्चंततःपिवेत् १ एतच्चकामतः चांडालादिदर्श नेत्वत्रिः रजस्वलातुभुंजानाचंडालंयदिपश्यति उपवासत्रयंकुर्यात्प्राजापत्यं तुकामत इति १ रजस्वलायाः श्वादिदंशनेव्यासः रजस्वलायदादष्टाशुना जंवुकरासभैः पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ रजस्वलायाआ शौचिस्पर्शेशातातपः ॥ आर्त्तवाभिप्लुतानारीस्पृशेच्चशवसूतकम् ऊर्ध्वं त्रिरात्रंस्नातांतांत्रिरात्रमुपवासयेत् १ स्पृष्ट्वाभोजनादौत्वत्रिः आर्त्तवाभि प्लुतानारीमृतसूतकयोःस्पृशेत् भुक्त्वापीत्वाचरेत्कृच्छ्रंस्पृष्ट्वातुत्र्यहमेवच १

प्राजापत्यकरे ॥ १ ॥ रजस्वलाकोंकुत्ते आदिके डंगनमेंव्यासजीकहतेहैं कुत्ता उर गिद्दड उर गर्दभ रजस्वलाकों दंश करें क्या वडण तां पांच दिन निराहार व्रतकर्के पंच गव्यकापानकरे तां शुद्धहोतीहै ॥ १ रजस्वलाकों सूतकीके स्पर्शमें शातातपजीकावचनहै ॥ ऋतुकर्के युक्तस्त्री मरणके सूतकी पुरुषकों स्पर्श करे उर त्रयदिनतें उपरंत स्नातहोवेतां त्रयदिन उपवास व्रतकरे। १। स्पर्शकर्के भोजनके खाणेमें अत्रिजीका वाक्यहै रजस्वला स्त्री जन्म सूतक उर मृतसूत कियोंके साथ स्पर्शकरे उर पीछे अन्न जलकों भक्षणकरे तां कृच्छ्र व्रतकों करे उर केवल स्पर्शमें त्रयदिन व्रतकरे १

सूतकी के साथ स्पर्श में स्नानतें पूर्व ऋतुके देख एोंमें मार्कंडेयजी का वाक्य है मृत सूतक के स्पर्श हायां हायां जेकर स्त्री ऋतुकों देखे तां क्या करे सो कहते हां चारदिन पर्य्यंत न भक्षण करे जेकर भक्षण करे तां चांद्रायणव्रतकों करे ॥ १ ॥ मदन रत्नमें स्मृत्यंतरविषेंकहाहै मृत सूतकके हायां हायां जेकर रजस्वला होवेतां अभिषेक कर्के शुद्धि होतीहै और तात्काल स्नान कर्के भोजनकर्के एहअसमर्थ स्त्रीमें जानणावा वालक संतानवालीमेंजानणा । १ । इनांतें अन्य स्त्रीकोंत्रयदिन उपवासकिहाहै । संवंधीकेमरणआदिके सुणनेविषे व्यास

स्पर्शानंतरंभोजनादौकृच्छ्रंकेवलस्पर्शेतुत्र्यहम् आशौचिस्पर्शेस्नानात्प्राग्रजोदर्शनेमार्कंण्डेयः ॥ मृतसूतकसंस्पर्शेऋतुंदृष्ट्वाकथंभवेत् नास्नानकालमश्नीयाद्भुक्त्वाचांद्रायणंचरेदिति १ आस्नानकालपर्यंतंचतुर्थदिनपर्यंतम् मदनरत्नेस्मृत्यंतरे ॥ अप्रायत्येसमुत्पन्नेमलवद्वाससीयदि अभिषेकेण शुद्धिः स्यात्सद्यःस्नानेनभोजनम् १ इदमशक्तायावालापत्यावियर्यंवा॥अन्यस्यास्तुत्रिरात्रोपवासः अप्रायत्यंमृतसूतकम् । मलवद्वाससीरजस्वलाशुद्धिःस्पर्शयोग्यता ॥वंधुमरणश्रवणादौव्यासः॥ मलवद्वसनायास्तुअप्रायत्यंभवेद्यदि अभिषेकेणशुद्धिःस्यान्नाशनंवादिनत्रयमिति १ अत्रापिपूर्ववद्व्यवस्थादिनत्रयमित्यवशिष्टकालोपलक्षणम् ॥ अप्रायत्यंवंधुमरणादिना सएव आर्त्तवाभिप्लुतानारीनावगाहेत्कदाचन उद्धृतेनजलेनैवस्नात्वाशेषंसमापयेत् २ सिक्तगात्राभवेदाद्भिःसांगोपांगमलैर्युता नवस्त्रपीडनंकुर्यान्नान्यवासाभवेत्पुनरिति ३ तत्रपराशरः ॥ स्नानेनैमित्तिकेप्राप्तेनारीयदिरजस्वला पात्रांतरिततोयेनस्नानंकृत्वाव्रतंचरेत् ॥ १ ॥

जीका वाक्यहै ऋतुके हायां हायां मरण सूतक होवे तांअभिषेक कर्के शुद्धि कहीहै आगेपूर्वकीन्याईं अर्थजानणा ॥ १ ॥ सोई व्यासजीकहतेहैं ऋतुयुक्त स्त्रीतलाआदिमें स्नाननकरे जलकों वाहर निकासकर स्नानकरें शेषकर्म्मसोहै जिसका आरंभ कीता होआहै तिसकों पूराकरे।२ पक्षांतर कहतेहैं सिक्तेति अथवा जलकर्के अंगाकों सिंचन करावे और सांगोपांगमल कर्के युक्तरहे और वस्त्रकों निष्पीडनन करें और दूसरे वस्त्रकों नधारणकरे । ३ । तिसमें पराशरजीका वाक्यहै रजस्वलास्त्री नैमित्तिक स्नानके प्राप्तहोयांहोयां पात्रकेजलकर्के स्नानकरे और व्रतकरे १

❀अब परंपरा स्पर्श विषे तिसविषे भी अचेतन दंडादि व्यवधान विषे याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं उदेति रजस्वला अशुचि पतितादि तिनांकर्के स्पर्श वाला पुरुष स्नान करे और आपः पुनंत्वित्यादि मंत्र और गायत्रीका एकवार मनकर्के जपकरे और जेडा रजस्वला दिकर्के स्पर्श वालाहै तिसकर्के जिसको स्पर्श होवे सो आचमन कर्के शुद्धहुंदाहै क्योंकि इसको साक्षात् स्पर्श नहि किंतु परंपरा स्पर्श हैं १ ॥ और चेतनके व्यवधान विषे मनुजी कावचनहै ॥ मुडदेका और तिसके स्पर्शवालेका तृणादि व्यवधान कर्के जो स्पर्श वाला है सो स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ पहलेश्लोकमेजो (अशुचिभिः) एहपदहै सो कुत्तेआदिका वाचकहै ॥ परंपराकेहि स्पर्श मै शातातपजीका वचनहै जेडा अशुचिजो मलमूत्रादि तिसको

❀अथपरंपरास्पर्शे तत्राप्यचेतनदंडादिव्यवधानेयाज्ञवल्क्यः उदक्याशुचि भिःस्नायात्संस्पृष्टस्तैरुपस्पृशेत् अब्लिंगानिजपेच्चैवगायत्रींमनसासकृ दिति १ तैरुदक्याशुचिसंस्पृष्टैःसंस्पृष्टउपस्पृशेदाचामेदित्यर्थः अशुचिरत्र शुनकादिःचेतनव्यवधानेतुमानवं शवंतत्स्पर्शिनंचैवस्पृष्ट्वास्नानेनशुद्ध्य तीति ॥ स्पृष्टस्पर्शनेतुशातातपः । अशुचिंसंस्पृशेद्यस्तुएकएवसदुष्यति तंस्पृष्ट्वान्योनदुष्येतसर्वद्रव्येष्वयंविधिरिति ॥ १ तथासंहतानांतुपा त्राणांयद्येकमुपहन्यते तस्यतच्छोधनंप्रोक्तंनतुतत्स्पर्शिनामपि २ क्वचि दचेतनव्यवधानेपिवचनात्प्रायश्चित्ताधिक्यम् यथाहापस्तंवः ॥ एकशा खासमारूढश्चांडालादिर्यदाभवेत् ब्राह्मणस्तत्रनिवसन्स्नानेनशुचिता मियात् १ ॥ आदिशब्दादुदक्यादीनांग्रहणम् ॥ शाखाग्रहणमवयव्यु पलक्षणमिति

स्पर्शकरे सोई अपवित्र हुंदाहै और इसकेसाथ जो दूसरा स्पर्शकरे उसको दोष नहि सभना वस्तुयों विषे एहि विधि जानणी।१।तैसेहि जेडेपात्र इकट्ठे हैं तिनां विचों एकपात्र मलादि कर्के दूषित होवे तां तिसीकी शुद्धि करणी होर सभ पवित्रहैं।२।और किसे जगा अचेतनके व्यवधान विषे भी वचनते प्रायश्चित्त वहुतहै जैसे आपस्तंवजी कहते हैं एकशाखामे क्या वृक्षमें चंडाल आदि जद स्थित होवे और तिसमे ब्राह्मण भी स्थित होवे तां स्नानकर्के शुद्ध हुंदा है।१।इसजगा आदि शब्दतें रजस्वला पतितादिका ग्रहणहै और शाखाग्रहणतें सभना अंगांवालेवस्त्रादियोंका ग्रहण है॥

इसमे परंपरास्पर्शमे स्पर्शशब्दगौणहै तिसमै वचनते प्रायश्चित्तहै इसमे अपवादकों पराशरजीक हतेहैं ॥ गलीका चिकड और जल और वेडीऔर मार्गऔर तृणघास और पकीयांइटांकीकंध एह स्पर्शतें दोष वालियां नाहि १ स्पर्श प्रायश्चित्तके अपवादकों वृहस्पतिजीकहतेहैं तीर्थ और विवाह और यात्रा और युद्ध और भाजड और नगर ग्राम आदिकादाहतिन्हांमें स्पर्शास्पर्शि दोष नाहि अर्थात् परंपरास्पर्शका दोष नहिहै १॥ ऐसेहि होर वाक्यभीहैं और ब्राह्मणकों चैत्यवृक्ष आदिके स्पर्शमें पराशरजी कहतेहैं चैत्यवृक्ष क्या मार्गादि विषे साधारण वृक्ष साधारण पुरुषां कर्के जो नमस्कार करीदाहै और श्मशानकाष्ट और पशुयांके मारणे वास्ते जो वंधने वाला काष्ट

अत्रपरंपरास्पर्शेपि स्पर्शशब्दोगौणस्तत्रवचनात्प्रायश्चित्तम् अत्रापवादमाहपराशरः ॥ रथ्याकर्दमतोयानिनावः पंथास्तृणानिवा स्पर्शनान्नप्रदुष्येतपक्केष्टकचितानिच १ स्पर्शप्रायाश्चित्तापवादमाह वृहस्पतिः ॥ तीर्थे विवाहेयात्रायांसंग्रामेदेशविप्लवे नगरग्रामदाहेपुस्पृष्टास्पृष्टिर्नदुष्यति एवमन्यान्यप्यपवादवचनानिव्यवस्थापनीयानि ॥ ब्राह्मणस्यचैत्यवृक्षादिस्पर्शे पराशरः॥ चैत्यवृक्षश्चितिर्यूपश्चंडालःसोमविक्रयी एतांस्तुब्राह्मणःस्पृष्ट्वासवासाजलमाविशेदिति १ क्षत्रियादीनांन्यूनंकल्पनीयम् चैत्यवृक्षोग्रामादौसाधारणजनवंद्यः।चितिःश्मशानकाष्ठम्। यूपःपशुमारणार्थंवन्धनकाष्ठम् उपरिभागस्पर्शेशंखः॥ रथ्याकर्दमतोयेनष्ठीवनाद्येनवात्वथ नाभेरूर्ध्वंनरःस्पृष्टःसद्यःस्नानेनशुध्यतीति १ अधोभागस्पर्शेयमः सकर्दमंतु वर्षासुप्रविश्यग्रामसंकरम् जंघयोर्मृत्तिकास्तिस्रःपादयोःषण्मृदः स्मृता इति इत्यस्पृश्यस्पर्शप्रायाश्चित्तानि ॥

और चांडाल और सोमविक्रयी इनांके साथ ब्राह्मण स्पर्श करे तो सहित वस्त्रांके जलमें स्नान करे १ क्षत्रियांदिकों थोडा किहाहै ऊपर भागमें स्पर्शविषे शंखजीकावाक्यहै गलीका चिकड और थुक इनांकर्के नाभितें ऊर्ध्व स्पर्शमे तात्काल स्नान कर्के शुद्ध होताहै १ और नाभितें अधो भाग स्पर्शमें यमजी कहतेहैं वर्षामें नगरके कूडेके साथ जो चिकड जंघामें स्पर्शहोवे तां त्रय बार मृत्तिका लगांणे कर्के और पैरांविषे ६ बार लगाणे कर्के शुद्धि होतीहै ॥ १ ॥ एह जिनका स्पर्श नहि करणा तिनांके स्पर्शका प्रायश्चित्त समाप्त हुया ॥ ॥

अब कुत्ते आदिके डंगमें मनुजी कहतेहैं श्वेति कुत्ता और गिदड और खोता और जोमांसके भक्षणकरणेवाले नगरमें जीवहैं और घोडा और ऊट और सूकर इनांकर्के वडया होया जो पुरुष है सो प्राणायामकर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ प्राणायाममें विशेषघृतभक्षणकों याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं ॥ पुंश्चली और वानर और खोता और ऊट आदिक और काक इनांकर्के वडया होया पुरुष जलमें प्राणायाम कर्के और घृतभक्षण कर्के शुद्धहुंदाहै २ एहनाभितें हिठां थोडे वडणेमें जानणा ॥ जोतुपुनः सुमंतुने किहाहै ॥ कुत्ता और गिदड और मृग और महिष और बकरा और भेड और खोता और करभक्याऊट और नेवल और

अथश्वादिदंशे मनुः ॥ श्वसृगालखरैर्दष्टोग्राम्यैः क्रव्याद्भिरेवच ॥ नराश्वोष्ट्रवराहैश्चप्राणायामेनशुध्यतीति १ प्राणायामेविशेषंघृतप्राशनंचाह याज्ञवल्क्यः ॥ पुंश्चलीवनरखरैर्दष्टश्चोष्ट्रादिवायसैः प्राणायामंजलेकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति २ एतच्चनाभेरधस्तादीषद्दष्टस्य। यत्तुसुमंतुः ॥ श्वसृगालमृगाज महिषाजाविखरकरभनकुलमार्जारमूषकाप्लवकाकपुरुषदष्टानामापोहिष्ठीयाभिःस्नानंप्राणायामत्रयंचेति ॥ एतच्चपादयोःकिंचिदधिकदंशेनाभेरूर्ध्वदंशेतु बौधायनः॥ शुनादष्टस्तुयोविप्रोनदींगत्वासमुद्रगां प्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति १ नाभेरधस्तादतिगाढदंशविषयं ॥ एतस्मिन्नेवविषयेदेवलः ॥ श्वदष्टःसागरगायांनद्यांस्नातोनिराहारः प्राणायामशतमावर्त्यत्रिरात्रादपगतपाप्माभवति ॥ तन्नाभेरूर्ध्वं गाढदंशे ॥

बिल्लाऔर चूहा और डड्डू और काक और पुरुष इनांकर्के डंगेहोये जोपुरुषहैं सो आपोहिष्ठा आदिक ऋचाकर्के स्नानकरे और त्रय ३ प्राणायामकरे एह पादोंमें वहुत डंगणेमें प्रायश्चित्तहै नाभितें ऊपर डंगणेमें बौधायनजीकहतेहैं कुत्तेकर्के डंगया होया ब्राह्मण समुद्रमें प्राप्त होणवालीनदीकों प्राप्त होकर सउ१००प्राणायामकर्के और घृतभक्षणकर्के शुद्धहुंदाहै १ ॥ एहनाभितें अधःक्याहेठवहुत डंगणेमें जानणा ॥ इसीविषयमे देवलजीकहतेहैं ॥ कुत्तेकर्के वडया होया पुरुष समुद्रमें जाणेवाली नदीमें स्नानकोंकरे और निराहारव्रतकरे सउ १०० प्राणायामकरे त्रयदिनतें उपरंत शुद्ध हुंदाहै एह नाभितें उपरवहुते डंगमें जानणा ॥

इसीमें शंखजीकावाक्यहै वसमेंकेकाष्ठकर्के क्षतहोयाहोया और तैसेकुत्तेकर्के डंगयाहोया और व्यभिचारिणीस्त्रीके दंदांकर्के डंगयाहोयात्रयदिनके व्रतकर्केशुद्धहुंदाहै १ इसीवाक्यकोंयमजीकहते हैं ॥ गिदड और सूर और खोता और ऊठ और कुत्ता और वानर और हाथी इनांकर्के डंगयाहोया ब्राह्मणदिनमें त्रयआचमनकरे तांशुद्धहुदाहै और पंजवासत्त ब्राह्मणाकेतांई हविष्यभोजन देवें १ ब्रह्मचारिमें हारीतजीकहतेहैं कुत्तेकर्के डंगयाहोयादिनमें एकवारभोजनकरे और समुद्रपर्यंत नदीमें प्राप्तहोकर सौप्राणायामकरे और घृतभक्षणकरे तां शुद्धहुंदाहै ॥ इसीप्रकार गिदड और विल्ला और नेवल और चूहा इनांकर्के डंगयां होयांकों भीजानणा ॥ अब ब्रह्मचारीके अधिकारमें पैठीनसीजीकहतेहैं ॥ कुत्तेकर्के वडेहोयेको त्रयदिनउपवासव्रत और ब्राह्मणकेगृहमेंनि

अत्रैवशंखः । नीलीकाष्ठक्षतोविप्रः शुनादष्टस्तथैवच त्रिरात्रंतुव्रतंकुर्यात्पुंश्चलीदशनक्षतइति १ यमोपि सृगालसूकरखरोष्ट्रश्ववानरकुंजरैः एतैस्तुब्राह्मणोदष्टस्त्रिरह्नःसमुपस्पृशेत् १ हविष्यंभोजयेदन्नंब्राह्मणान्सप्तपंचचेति १ ब्रह्मचार्यधिकारेहारीतः॥ शुनादष्टस्त्वहन्येकाहारः समुद्रगांनदींगत्वाप्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यततःशुचिरेवंगोमायुमार्जारनकुलमूषकैर्दष्टानाम् ॥ ब्रह्मचार्यधिकारे पैठीनसिः शुनादष्टस्यत्रिरात्रमुपवासोविप्रगृहेवासश्च ॥ यत्तुशातातपः ॥ गवांशृंगोदकस्नातः शुनादष्टस्तुब्राह्मणः समुद्रदर्शनाद्वापिशुनादष्टःशुचिर्भवेत् ॥ १ ॥ अत्रसमुद्रेत्यादिसाक्षाद्धेतुप्रदर्शनेनपूर्ववाक्यवैलक्षण्यात्पुनःशुनादष्टइत्युपात्तम् ॥ १ ॥ वेदविद्याव्रतस्नातः शुनादष्टस्तुब्राह्मणः हिरण्योदकमिश्रंचघृतंप्राश्यविशुध्यति ॥ २ ॥ तन्नाभेरधस्ताद्दीपदष्टविषयम् वचनाद्विशिष्टब्राह्मणमात्रविषयं वा समुद्रदर्शनंतुतत्तीरवासिनाम्॥ व्रतस्थस्यविशेषमाह बौधायनः । व्रतस्थस्तुशुनादष्टस्त्रिरात्रमुपवासयेत् सघृतंयावकंपीत्वाव्रतशेषंसमापयेत् ॥ १ ॥ यत्तु शातातपः॥ अव्रतःसव्रतोवापिशुनादष्टोभवेद्द्विजः ॥

वासशुद्धिकेदेणवालाकिहाहै जोतुपुनःशातातपनेंकिहाहै कुत्तेकर्के डंगयाहोया गौयांके शृंगांके जलकर्के स्नानकीतयां होयां शुद्धहोताहै और समुद्रके दर्शनकर्केभी शुद्ध होताहै १ वेदविद्याव्रतमें जिसनें स्नानकीताहै अर्थात् वेदविद्यामे चतुरहै तिसकों जेकर कुत्तावडे तां सुवर्णके जलकर्के रलयाहोया जोघृत तिसकों भक्षणकर्के शुद्ध हुंदाहै २ सोनाभिकेहेठां थोडे डंगमेजानणा इसवचनतें अथवाविशिष्टगोत्री ब्राह्मणके विषय जानणा और समुद्रदेखणा तिसके कनारेमें रहणवालयांविषें जानणा ॥ जो व्रतमे स्थितहै तिसकोविशेष बौधायनजीकहतेहैं व्रतमेंस्थित पुरुषको कुत्ताडंगें तां त्रयदिनउपवासव्रतकरे सहितघृतके यावककोंपीकरशेषव्रतकों समाप्तकरे १ जोतुपुनःशातातपनें किहाहै अव्रतइति व्रततें रहितहोवे वा युक्तहोवें कुत्तेकर्के डंगयाहोवे

सो सुवर्णके जलकर्के मिश्रितजोघृत तिसकों पीकरशुद्धहुंदाहै १ सोअतिअसमर्थमेंजानणा ब्राह्मणांते रहित ग्राममें पराशरजी कहतेहैं ब्राह्मणांते रहित ग्राममें कुत्ते कर्के डंगया होया पुरुष वैलकी प्रदक्षिणा और शीघ्रहि स्नानकर्के शुद्धहुंदाहै ॥ १ ॥ स्त्रीयांकों विशेष पराशरजीक हतेहैं ॥ ब्रह्मणी कों जेकर कुत्ता वा गिद्दड वाविगहाड वडे तां उदय होयेग्रहनक्षत्रकों देख कर तात्काल शुद्धहुंदीहै १ वैधायनजी कहतेहैं ब्राह्मणी कुत्ते कर्के डंगीहोवे तां चंद्रमाकेदे खणेकर्के वानक्षत्रांकेदेखणेकर्के शुद्धहुंदीहै १ जेकर कृष्णपक्षमें चंद्रमानादिस्से तद जिसदिशामें चंद्रमास्थितहै तिसादिशापासेदेखे २ अंगिरसऋषिनें पंचगव्यकाभीभक्षण किहाहैं ब्राह्मणीति इ सका अर्थपूर्वकहीदित्ताहै कुछ विशेष कहतेहां १ सोममार्गकर्के क्या तिसके देखणे कर्के पवित्र होई २पंचगव्यकर्केशुद्धहुंदीहै २ ब्राह्मणीकाग्रहण उपलक्षणमात्रहै॥ व्रतमें स्थितजो स्त्रीतिसवि

हिरण्योदकमिश्रंतुघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ १ ॥ तदत्यंताशक्तविषयम् ब्राह्मणरहितग्रामेतुपराशरः॥ असद्ब्राह्मणकेग्रामेशुनादष्टोद्विजोत्तमः वृषं प्रदक्षिणीकृत्यसद्यःस्नात्वाशुचिर्भवेत् ॥ १ ॥ स्त्रीणांविशेषमाहपराशरः॥ ब्राह्मणीतुशुनादष्टाजंबुकेनवृकेणवा उदितंग्रहनक्षत्रंदृष्ट्वासद्यःशुचिर्भवे त् १ वैधायनोपि ॥ ब्राह्मणीतुशुनादष्टासोमेदृष्टिंनिपातयेत् नक्षत्रदर्शना द्वापिशुनादष्टाशुचिर्भवेत् १ कृष्णपक्षेयदासोमोनदृश्येतकदाचन यांदिशं व्रजतेसोमस्तांदिशंत्ववलोकयेदिति २ अंगिरसा त्वत्र पंचगव्यप्राशन मप्युक्तम् ब्राह्मणीतुशुनादष्टासोमेदृष्टिंनिपातयेत् यदानदृश्यतेसोमःप्रा यश्चित्तंकथंभवेत् १ यांदिशंतुगतःसोमस्तांदिशंचावलोकयेत् सोममार्गेण सापूतापंचगव्येनशुद्ध्यतीति २ ब्राह्मणीग्रहणमुपलक्षणम् व्रतस्थस्त्रीवि षयेपराशरः॥ त्रिरात्रमेवोपवसेच्छुनादष्टातुसव्रता सघृतंयावकंभुक्त्वाव्रत शेषंसमापयेत् १ रजस्वलायाविशेषमाह पुलस्त्यः रजस्वलायदादष्टाशु नाजंबुकरासभैः पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यति १ ऊर्ध्वंतुद्विगुणंना भेर्वक्रेतुत्रिगुणंतथा चतुर्गुणंस्मृतंमूर्ध्निदष्टेन्यत्राशुचिर्भवेत् ॥ २ ॥ अन्यत्ररजस्वलावस्थाया इतिशेषः

षय पराशरजी कहतेहैं व्रतकर्के युक्त जोस्त्री तिसकों कुत्तावड्डे तां त्रयदिन उपवासव्रतकोंकरे और सहितघृतके यावककों भक्षण कर्के व्रतकी न्यूनताकों पूर्णकरे१ रजस्वला स्त्रीमें विशेष पुलस्त्य जी कहतेहैं रजस्वलाकों कुत्ता गिदड खोता जेकर वडे तां पंच ५ दिन निराहार व्रतकों करे पीछे पंचगव्य कर्के शुद्ध हुंदीहै १ नाभितें ऊपरडंगहोवेतां दूणा व्रत किहाहैं और मुखमें त्री णाव्रत किहाहै शिरमें चारगुणा अधिक किहाहै ॥ २ ॥ और जोरजस्वला नहिहै तिसकों व्रत नहि किहाहै किंतुअशुद्धि कहीहै सो पूर्वोक्त प्रकार कर्के हि दूरहोवेगी ॥

कुत्तेके सिंघणे आदिमे शातातपजी कहतेहैं जिस पुरुषकों कुत्तेने सिंघयाहै वा चटयाहै वा नखां कर्के विलुंद्रया है तिसकी शुद्धि जल कर्के धाणेनें और अग्नि कर्के तपाणेनें हुंदीहै ॥१ और व्रणमे काडेकी उत्पत्तिमें बौधायनजी कहतेहैं(प्रश्न)जिस ब्राह्मणके फटमें पाक और रुधिरके होयांहोयां कीडे उत्पन्न होण तिसका प्रायश्चित्त कैसे हुंदा है ॥ १ ॥ (उत्तर) गोमूत्र गोमय और दुध दधि घृत कुशाका जल इनां द्वारा त्रय दिन स्नान करके और पान कर्के कृमिदष्ट होया होया शुद्ध हुंदाहै।२।एह नाभितें हिठां जानणा॥मनुजीभी कहतेहैं ब्राह्मणस्ये ते इ

शुनाघ्रातादिषुशातातपः ॥ शुनाघ्रातावलीढस्यनखैर्विदालितस्यच अद्भिः प्रक्षालनंशौचमग्निनाचोपचूलनमिति १ उपचूलनंतापनम् ॥ व्रणेकृम्युत्पत्तौतु बौधायनः ॥ ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेयस्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १ ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् त्र्यहंस्नात्वाचपीत्वाचकृमिदष्टःशुचिर्भवेदिति २ एतच्चनाभेरधस्ताद्ज्ञेयम्। मनुरपि ॥ ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेयस्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् ॥ १ गवांमूत्रपुरीषेणत्रिसंध्यंस्नानमाचरेत् त्रिरात्रंपंचगव्याशीत्वधोनाभ्याविशुद्ध्यति ॥ २ ॥ नाभिकंठांतरोद्भूतेव्रणेचोत्पद्यतेकृमिः षड्रात्रंतुतदाप्रोक्तंप्राजापत्यंशिरोव्रणइति ॥ ३ यत्तुशातातपः । ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेयदासंपद्यतेकृमिः प्रायश्चित्तंतदाकार्यमितिशातातपोऽब्रवीत् १ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् त्र्यहंस्नात्वापीत्वाचकृमिदष्टःशुचिर्भवेदिति ॥ २ ॥ तदीषद्दष्टविषयम् ॥

सके पूर्व श्लोकका जोहि अर्थ कथन कीताहै ॥ १ ॥ और गोवांके गोहे और मुत्र कर्के त्रय काल स्नान करे त्रयदिन पंच गव्य भक्षण करे नाभिते हिठां कृमि डंगणेसे शुद्ध होताहै ॥ २ और नाभि कंठके मध्यमे फट विषे कीडयांकी उत्पत्ति होवे तां छे ६ दिनका व्रत किहाहै और शिरके फटमें कृमि होण तां प्राजापत्य किहाहै ॥ ३ जो तुपुनः शातातपजीने किहाहै सो बौधायन जीके वाक्यके तुल्य अर्थ जानणा परंतु एकदिन करणा ॥ १ ॥ एह थोडे दंशमें जानणा ॥ २ ॥

वर्णभेद करके तिसीनें क्या मनु जीने प्रायश्चित्तकहाहै ब्राह्मणस्येति ब्राह्मणके व्रणमें क्या फट विषें रक्त पाक वालेविषें कृमि उत्पन्न होण तां तिसका प्रायश्चित्त किस तरहां होवे ॥ १ ॥ इस प्रश्नका उत्तर ॥ गौआंके मूत्रादि पंचगव्य करके स्नान करे त्रय दिन और पीवेतां कृमिदष्ट पवित्र होवेगा ॥ २ ॥ और ऐसा जेकर क्षत्री होवेतां पंजमासे सोना दान करे और वैश्य जेकर ऐसा होवे तां उपवासके पीछे गोदान करे ३ ॥ और शूद्र जेकर ऐसा होवे तां गोदान हि केवल करे उपवास न करे तां शुद्ध होताहै ॥ एभि नाभितें हेठ कृमि होण तां जानणा ॥ तिस

वर्णभेदेनप्रायश्चित्तविशेषउक्तस्तेनैव ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेयस्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् ॥ १ गवांमूत्रपुरीषेणदधिक्षीरेणसर्पिषा त्र्यहंस्नात्वाचपीत्वाचकृमिदष्टःशुचिर्भवेत् २ क्षत्रियोपिसुवर्णस्यपंचमाषान्प्रदापयेत् गोदक्षिणांतुवैश्यस्याप्युपवासंविनिर्दिशेत् ३ शूद्राणांनोपवासःस्याच्छूद्रोदानेनशुद्ध्यतीति स्नानंपानंचपंचगव्येनैव दानंगोदानम् ॥ एतदपिनाभेरधस्तात्क्रिम्युत्पत्तौज्ञेयम् नाभेरुपरिविशेषउक्तोभविष्यत्पुराणे ॥ ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेयस्यनिष्कृतिंतस्यवच्मितु १ गवांमूत्रपुरीषेणत्रिसंध्यंस्नानमाचरेत् दधिक्षीरंघृतंप्राश्यपंचगव्येनशुद्ध्यतीति २ ॥ अधोनाभेःप्रदष्टस्यआपादाद्विनतात्मज एतद्विनिर्दिशेत्प्राज्ञःप्रायश्चित्तंयथाभवेत् ३ नाभिकंठांतरेवीरयदाचोत्पद्यतेकृमिः षड्रात्रंतुतदाप्रोक्तंप्रायश्चित्तंमनीषिभिरिति ॥ ४ ॥

जगातें उपर जेकर होण तां तिस विषे विशेष किहाहै भविष्यत्पुराणमें ब्राह्मेति ब्राह्मणके व्रण विषें कृमि होजाण तां तिसकी निष्कृतिकों क्या प्रायश्चित्तकों कहताहुं ॥ १ ॥ गौआंके मूत्र करके और गोहे करके त्रय काल स्नान करे और दाहिं १ दुध २ घृत ३ इनकों खा करके पीछे पंचगव्य पान करके शुद्ध हुंदाहै एह विधि त्रय दिन तकहै ॥ २ ॥ नाभिके हेठ पैरां तक जेकर दशवाल होण हेविनताके पुत्र इसप्रायश्चित्तकों बुद्धिमान् कहे ॥ ३ और नाभि और कंठके ; मध्यमें कृमि होण तां छे ६ रात्रिकपरिमाणवाला व्रत मुनियोंनें शुद्धि वास्ते किहाहै ४ ॥

आपस्तंब जी कहते हैं बलादिति बलते क्या जोरावरीते जो दास बना लये हैं म्ल छोने क्या मुसलमानोंने और चांडालोंने दस्यु जो नीच जाति तिनोंने उर अशुभ कर्म्म गो वधादि जिनांते कराया है १ तिनांका जूठा उठाणा और जूठाहि खाणा और गधा १ ऊट ग्राम्य वराह ३ इनका मांस भक्षण करणा ॥ २ ॥ और तिनांकिआं स्त्रीआंका संग और तिनां स्त्रीयां साथ भोजन करणा जेकर महीना रोज द्विजाति असा करे तां तिसका शोधन प्राजापत्यसे हुंदा है ॥ ३ ॥ और अग्निहोत्री जेकर असा कर्म करे तां चांद्रायण कर्के अथवा पराक कर्के शुद्ध होवे और जो आहिताग्नि नहि है परंतु वर्ष रोज तक तिनके साथ रिहा होवे सो जैसा कैसा हो चांद्रायण वा पराक करे ॥ ४ ॥ और जेकर शूद्र वर्ष रोज रहे तां अद्धा महीना यावक पीवे और जेकर महीना रोज पूर्वोक्त म्लेच्छा

आपस्तंबः । बलाद्दासीकृतायेतुम्लेच्छचंडालदस्युभिः अशुभंकारिताःकर्मगवादिप्राणिहिंसनम् ॥ १ ॥ उच्छिष्टमार्जनंचैवतथातस्यैवभोजनम् खरोष्ट्रविड्वराहाणामामिषस्यचभक्षणम् ॥ २ ॥ तत्स्त्रीणांचतथासंगस्ताभिश्चसहभोजनम् मासोषितेद्विजातौतुप्राजापत्यंविशोधनम् ॥ ३ ॥ चांद्रायणंत्वाहिताग्नेः पराकस्त्वथवाभवेत् चांद्रायणंपराकंचचरेत्संवत्सरोषितः ॥ ४ ॥ संवत्सरोषितःशूद्रोमासार्द्धंयावकंपिवेत् मासमात्रोषितःशूद्रः कृच्छ्रपादेनशुध्यति ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वंसंवत्सरात्कल्प्यंप्रायश्चित्तंद्विजोत्तमैः त्रिभिःसंवत्सरैश्चापितद्भावमनुगच्छतीति ॥ ६ ॥ हीनवर्णस्तुयःकश्चिदंत्यजैःसहसंवसेत् सशिखंवपनंकृत्वामासमेकंयवान्पिबेत् ॥ ७ ॥ सर्वाण्येतानि प्रायश्चित्तानि यथाशक्तियथानुबंधप्रत्ययाभ्यासापेक्षया व्यवस्थापनीयानीत्यपरार्के ॥ इदंचमहापातकिसंसर्गिप्रायश्चित्तानंतरं देवलस्मरणेनाप्युद्घाटितं तत्र द्रष्टव्यम् ॥

से तिनां साथ रहे तां लघु कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ ५ ॥ वर्षते उपरंत तिनांके साथ रहे तां प्रायश्चित्त विद्वानोंने कल्पना करणे योग्य है और त्रय वर्ष पर्यंत तिनांके साथ रहणे कर्के तिनांके हि स्वरूपको प्राप्त हुंदा है ॥ ६ ॥ जो कोई हीनवर्णदा नीचांदे साथ वासकरे तां सहित शिखादे मुंडन करावे और महीना रोज जवानू पींदा रहे अर्थात् जवांनू बनाकर खांदा होया महीना व्यतीत करे ॥ ७ ॥ संपूर्ण एह प्रायश्चित्त यथाशक्तिसे और पाप करणे मैं दृढतासे और एक वार बहुवार के ज्ञान से जोड लेने एह अपरार्क में लिखया है ॥ और एह म्लेच्छ संसर्ग प्रायश्चित्त महापातकि संसर्गि प्रकरण में देवल स्मृति के दिखाणे कर्के प्रकट कीता है सो तिस जगाहि देखलेना इस जगा प्रसंगसें किहा है और उपपातक प्रकरण विषे भी किहा है प्रसंग वशाते

● अब जो लोक केदरह कर पीछे अपणेघरआवतेहैं तिनकेअर्थ प्रायश्चित्त कहींदाहै जेडे मनुष्य राजाने अपराध जाण कर जोरसे दास वनाए हैं और तिनांतें स्नानादि नित्य कर्म्मभी छुडाआ है सो उसजगाते छुट्टेहोए वर्षादि कालके उचित जो चांद्रायणादि तिनांका संकोच करके प्राजापत्य करके शुद्धकर लेने उसमेंभी तिनके निवासकी अल्पता और वाहुल्यताको देख कर द्विकृच्छ्र लघु कृच्छ्रादि व्यवस्था कर लेणी ॥ धर्म्म शास्त्रके योग्य जेडा न्यायाधि कारीराजा है तिसने वंदीघरविषें जोडे हैंये लोक सो केवल नित्य कर्म्मके लोप करणे वि षेहि हैं तिनांका प्रायश्चित्त केवल नित्यकर्म्म लोपनिमित्त हि कहणा ॥ सो कहतेहैं

● अथवंदीगृहनिवासपरावृत्तप्रायश्चित्तम् येतुराज्ञाऽपराधपूर्व्वंवलाद्दासी कृताअशुभंकारिताश्चतन्मुक्तास्तेपूर्व्वोक्तसंवत्सरोचितचान्द्रायणादिह्रासा पेक्षयाप्राजापत्यं कुर्य्यु स्तत्रापि वासतारतम्येन द्विकृच्छ्रलघुकृच्छ्रा दिव्यवस्थोह्या ॥ येतुधर्म्मशास्त्रोचितन्यायाधिकारिणा क्षत्रियादिराज्ञावं दीगृहेनियुक्तानित्यकर्म्ममात्रलोपिनस्तेषांनित्यकर्म्महानिनिमित्तम् ॥सं ध्योपासनहानौतुनित्यस्नानंप्रलोप्यच होमंचैनैत्यकंशुद्ध्यैगायत्र्यष्टसहस्र कमित्यादि पूर्व्वोक्तंप्रायश्चित्तंज्ञेयम् स्वयं परेण वा कारयेत् ॥ अ त्रान्यत्रवानुक्तविषये देशकालौचित्यं संभावनीयम् ॥

संध्योपेति संध्योपासन की हानि होयां क्या किसें कारण ते लोप होयां चपुना नित्य स्नानको लोप करके और नित्य करीदा जो हवन है तिसका लोप करके शुद्धिवास्ते आठसें अधिक हजार १००८ गायत्री जपे एह पीछें कहा होआ जानणा १ सो जप आपकरे अ थवा दूसरेंते करावे ॥ इस जगा वा और जगा जो विषय कहणेमें नहि आया जैसें जिनां कीडयांतें पट्टकी उत्पत्ति है तिनांके मारणेका प्रायश्चित्त जुदे नहि लिखया तां इ त्यादियोंमें देशकालोचितकी भावना करणी तां इनका प्रायश्चित्त (किंचित्सास्थिवधेदे यंप्राणायामस्त्वनस्थिके) इत्यादि वचनते एकके वधमें १ प्राणायाम है तिना वहुतयांके वधमें तिस द्रव्यका दशांशदान कल्पना मे आवेगा ॥

सोई याज्ञवल्क्य जीने किहाहै । देशमिति देश १ काल २ और अवस्था ३ शक्ति ४ पाप ५ इनाकों यत्नतें देख कर प्रायश्चितकी कल्पना करे ॥ जिस जगा प्रायश्चित्त इस पापका एहहै ऐसा नहि किहा १ इसका अर्थ कहतेहैं जद निमित्त क्या पाप वहुत होवे तां तिसका नैमित्तिक प्रायश्चित्त वहुत हि होणा चाहिए जैसें वस्त्रांके भांडेआंके चुराणेका प्रायश्चित्त एक एकका वक्खरा कर्के नहि हो सक्ता इसवास्ते व्यवस्था करदे हैं कि जित्थे प्रायश्चित्तका उपदेश करणाहै उस जगा देशादिको देख कर कहे जैसे करण वाले का प्राणवियोग न होवे तिस तर्हां करे जैसे प्रायश्चित्तहै ॥ वाय्विति वायु भक्षण करदा होया दिने खलोता रहे और रात्रिमैं जलोंमै वास करे और सूर्य्यके सामणे दृष्टि रक्खे रात्रिमै सूर्य्य

तथाचयाज्ञवल्क्यः । देशंकालंवयःशक्तिंपापंचावेक्ष्ययत्नतः प्रायश्चित्तं प्रकल्प्यंस्याद्यत्रचोक्ताननिष्कृतिः १ अर्थः । निमित्तवाहुल्येन प्रतिव्यक्तिनैमित्तिकस्यवक्तुमशक्यत्वादुक्तानुक्ताविषये व्यवस्थोच्यते । यत्रप्रायश्चित्तमादिश्यते तद्देशादिकमपेक्ष्य यथाकर्त्तुः प्राणवियोगोनस्यात् तथा विषयविशेषोविधेयः ॥ तथा वायुभक्षोदिवातिष्ठे द्रात्रिंनीत्वाप्सुसूर्य्यदृगित्यत्रयदिहिमवद्गिरिनिकटवर्त्तिनामुदकवासउपादिश्यतेअतिशीताकुलितवाशिशिरादिकालेतदाप्राणवियोगोभवेदिततिदेशकालपरिहारेणोदवासः कल्पनीयः तथावयोविशेषादपि यदि नवतिवार्षिकादेरपरिपूर्णद्वादशवार्षिकस्यवाद्वादशाब्दिकं प्रायश्चित्तमुपदिश्यते तदाप्राणाविपद्येरन् ततो वयोविशेषादपि अन्यवयस्केतत्प्रायश्चित्तंकल्प्यम् ॥ अतएवस्मृत्यंतरे क्वचिदर्द्धंक्वचित्पादइति वृद्धादिषु प्रायश्चित्तस्य ह्रासोदर्शितः तच्च प्राक् प्रपंचितम् ॥

न देखण मे आवे तां तिस की दिशाको देखतारहे ॥ एह प्रायश्चित्त जद हिमालय वासियोंको अथवा पोषमाघमै दित्ता जावे तां प्राणवियोगकी भावना होवेगी तां तिसके परिहार करके उसके जल वासकी कल्पना करणी तैसेहि अवस्थाके देखणेतेहै । जैसे ९० नब्बे वर्ष की आयु वालेकों अथवा १२ वारां वर्षकी आयु वालेको जेकर वारां वर्षका प्रायश्चित्त किहाजावे तां तिसके प्राण दूर हो जाणगे इस करके उनको ऐसा नहि कहणा किंतु जुयानकों देखकर कहणा इसी कर्के और स्मृतिमै किहाहै । कि किस जगा अद्धा और किसे जगा चौथा हिस्सा प्रायश्चित्त वाल वृद्धादि विषे कहणा इसका प्रपंच पिच्छे भी होचुकाहै

एव मिति इसीप्रकार निर्धन पुरुषविषे गजदानकी आज्ञा और आतुर जो रोगादि करकें पीडितहै तिसमे बारांदिनके उपवासवाले पराक व्रतकी आज्ञा और स्त्री शूद्रादिके विषय गायत्री जपादिकी आज्ञा और वालादिविषय समग्रकी आज्ञा नहि होणीचाहिए किंतु कृच्छ्रकी जगा लघु कृच्छ्रादि हि उपदेशकरणे ॥ इसतें एह वार्त्ता सिद्ध होई कि प्रायश्चित्तदेणके समयमें सारे धर्म्मशास्त्रके देखणेका आवश्यकहै । इसी करकें पहले १ दूसरे २ तीसरे ३ प्रकरणोंमे कामाकामादि एकबार बहुवारादिका निर्णय विस्तरसें किहाहै ॥ इसजगा मिताक्षराकी व्यवस्था औ

एवंनिर्धने गजदानादि आतुरादौ पराकादि स्त्रीशूद्रादौजपादिकं वालादौ समग्रं नोपदिश्यते किंतु कृच्छ्रोपवासपादाद्येवोपदिश्यते एवंच प्रायश्चित्तदाने सकलधर्म्मशास्त्रावलोकनमपेक्षितंभवति अतएव प्रथमद्वितीयतृतीयप्रकरणेषु कामाकामसकृदभ्यासादिनिमित्तता प्रपंचिता अत्रमिताक्षरा तथा महापापोपपापाभ्यांयोभिशंसेन्मृषापरम् अब्भक्षोमासमासीतेत्युक्तम् तत्रमहापापोपपापयोस्तुल्यप्रायश्चित्तस्याप्युक्तत्वात्पापापेक्षयोपपातके मासिकव्रतस्यह्रासःकल्पनीयः तत्रच हासितजृंभितास्फोटनानि नाकस्मात्कुर्य्यात् तथा नोदन्वतोंभसिस्नायान्नचश्मश्रुवादिकर्त्तयेत् अंतर्वत्न्याःपतिः कुर्वन्नप्रजोभवतिध्रुवमित्यादौ प्रायश्चित्तंनोपादिष्टम् ।

सोहै महेति महापापकरकें और उपपाप करकें जो झूठा दोष किसेकों लगावे सो महीना रोज जल पानमात्र करदा होआ व्यतीतकरे एह महापाप और उपपापाक तुल्यकप्रायश्चित्त किहाहै परंतु पूर्वोक्त वचनते उपपातकमे पूरामहीना नहि कहणा किंतु १० दिनकहणाचाहिए ॥ हासितेति और हस्सणा १ उवासी लयणी २ बाहु ठोकणी ३ इनकों कारणते बिना नकरे तैसेहि समुद्रके जलविषे स्नान १ और दाढीका कटाणा गर्भिणीकापति नकरें जेकर करे तां सतानसें रहित होताहै १ इत्यादि स्थानों मे प्रायश्चित्त नहि किहा ॥

तिसजगाभी देशादिकी अपेक्षाकर्के प्रायश्चित्त कल्पनाकरणी (प्रष्ण) जितने निमित्त क्या पाप मनुजीके कहे होएहैं सो सभ प्रायश्चित्त कर्के युक्तहिहैं जैसे (प्राणेति) १०० सउप्राणायाम करणा चाहिए सभना पापांकेदूर करणे वास्ते उपपातकांदे समूहां वास्ते और अनादिष्ठ क्या जिनका प्रायश्चित्त विशेषकर्के नहि किहा तिनां वास्ते इसकर्के सभका प्रायश्चित्त होचुका है किसकर्के कहतेहोकि आप कल्प लयना ॥ और गौतमजीने भीकिहाहै कि एहि एकाहादि व्रतरूप प्रायश्चित्त आदेश विना जो स्थानहैं तिसजगा विकल्प कर्के कीत्तेजाण (उत्तर) यद्यपि सभजगा प्रायश्चित्तोपदेश है परंतु सामान्यकर्केहै विशेष कर्के नहि तिसवास्ते देशकालादिकी

तत्रापिदेशाद्यपेक्षयाप्रायश्चित्तंकल्प्यम् ननुकिंचिदपिनिमित्तजातंमनूक्तं निष्कृतिकमुपलभ्यते प्राणायामशतंकार्य्यं सर्वपापापनुत्तये उपपातकजातानामनादिष्टस्यचैवहीत्यनुक्तनिष्कृतिष्वपिप्रायश्चित्तस्यविद्यमानत्वात् गौतमेनाप्येतान्येवानादेशेविकल्पेन क्रियेरन्नित्येकाहादयः प्रतिपादिताः उच्यते । सत्यमस्त्येव सामान्यतःप्रायश्चित्तोपदेशस्तथापि सर्वदेशकालादीनामपेक्षितत्वादस्त्येवकल्पनावसरः नच हसितादिषु सर्वत्र प्राणायामशतंयुक्तंनिमित्तस्यलघुत्वादतःपापापेक्षया ह्रासः कल्पनीयः प्रायश्चित्तांतरंवा ॥ ननु कथंपापस्यलघुत्वं येनप्रायश्चित्तस्य ह्रासस्यवाकल्पनास्यात् नचप्रायश्चित्ताल्पत्वादितिवाच्यम् अनुक्तनिष्कृतित्वादितिचेत्

अपेक्षाहोणेते कल्पनाकरणीआवश्यकहै एहिअर्थ स्पष्टकरीदाहै नचेति जेडे पिच्छे हसितादिपाप कहेहैं तिनां सभनांविषे १०० प्राणायाम उचित नहि क्योंकि निमित्तको लघुहोणेतें इसकारणते पापकी अपेक्षाकर्के १०० सउप्राणायामको थोडा करणा होगा अथवा कोई और प्रायश्चित कल्पनाकरणाहोगा (प्रष्ण)किसतर्हां पाप छोटाजानणा जिसकर्के १००सउका और प्रायश्चित का ह्रास क्या अल्पत्वकीकल्पनाहोवे जेकर कहो कि थोडा प्रायश्चित्तदेखणेकर्के मलूमहुंदाहै ऐसा मत कहणा कि इसजगा प्रायश्चित्तका नहि कथनहोणेते ॥ जिसजगा प्रायश्चित्तका उपदेश हि नहि उसजगा किसतर्हां जाणेगे ॥

सत्यमिति (उत्तर) एहआपने सच्च किहाहै तथापि कुछक अर्थवाद क्या प्रशंसाके पहलै कहणेते पीछे जाणकर करना और नजाण कर करना और हठकर करणा और विनाहठसे करना इत्यादि विचारसे पापका थोडा वहुत होनेका ज्ञान सुखालाहिहै और तहांसेभी थोडे वहुतेका ज्ञान हुंदाहै इसको कहहैंते तथाति जिसजगा राजदंडका प्रसंगहै तिसतेभी एह प्रतीत होवेगा सो दंड बिधान विधि विषें देख लेना जैसे ब्राह्मणको दुर्वचन पूर्वक दंड उठाणे आदि अपराध विषें अपणी जाति विषें प्राजापत्यादिक कहेहैं तिसमें जद आनुलोम्य कर्के क्या ब्राह्मणादिसे क्षत्रियाणी आदिसे उत्पन्न होयां विषें तिस ब्राह्मणावगूरणादि पापका पूर्वोकसे थोडा देखणेते और मूर्द्धावसिक्तादियोंने ब्राह्मणां विषें पूर्वोक्त अपराध

सत्यं किंचिदर्थवादसंकीर्त्तनाद्बुद्धिपूर्वाबुद्धिपूर्वानुवंधाद्यपेक्षया चसुवोधएव दोषस्यगुरुलघुभावः तथादंडह्रासवृद्ध्यपेक्षयाच प्रायश्चित्तस्यगुरुलघुभावः सतु दण्डप्रणयनविधौद्रष्टव्यइति यथा ब्राह्मणावगूरणादौ सजातिविषयेप्राजापत्यादिकमुक्तम् तत्र यदानुलोम्येनप्रातिलोम्येन वाऽवगूरणादिक्रियते यदावामूर्द्धावसिक्तादिभिस्तदादंडस्यतारतम्यदर्शनाद्दोषाल्पत्वमहत्त्वावगमात् प्रायश्चित्तस्यापि गुरुलघुभावः कल्पनीयः । दर्शितश्चदण्डस्यगुरुलघुभावः प्रातिलोम्यापवादेषुद्विगुणास्त्रिगुणोदमइत्यादिनेति ॥ अथप्रायश्चित्तविवेके ॥ प्रायश्चित्तीयतेनर इत्यत्र नरपदोपादानात्सर्वेषां चांडालादीनामपि तद्धर्मप्रदर्शनपूर्वं प्रायश्चित्तं प्रदर्शितम् ॥

विषें वहुत दंडहै इसीसें प्रायश्चित्तमेभी ऐसा देखणेते विचार सुगमहै सो तिसजगा दिखायाहिहै (प्रातिलोम्यापवादेषु) इत्यादि श्लोकों कर्के शूद्रादिसे क्षत्रियाणी आदि विषें उत्पन्न होए अपणेते उच्चीजाति वाले विषें अपराधकरें तां तिनांको दूणादंड करणा एह अर्थहै । अब प्रायश्चित्त विवेक ग्रंथमें और विचार लिखाहै सो कहीदाहै विहितके नकरणेसे १ और निंदितके सेवनेसे २ इन्द्रियोंके नरोकणेसे ३ नर प्रायश्चित्तीहुंदाहै इसजगा (नर) ऐसा किहाहै ॥ द्विज ॥ ऐसा नहि किहा इसते प्रतीत होया कि चांडालादिकोभी कोई अपना धर्म्महै और तिसके त्यागणेते तिनोंकोभी प्रायश्चित्त है ॥

सो देवलजीने किहाहै कि अपणी जातिका पोषण करणा १ और सभको प्रणाम करणी २ शीतोष्णादिका सहारणा ३ व्यवहारशुद्ध रक्षणा ४ और किसेका अनादर नहि करना ५ और अपणे सेवककों पालना ६ प्रधानकर्म्मपरिवर्जन क्या उत्तम जातिके योग्य जो कर्म्म तिसका त्यागणा ७ एह चांडालोंके धर्म्मकी हानिहोयां मनुजी प्रायश्चित्त कहतेहैं ब्राह्मणके अर्थ और गौआंके अर्थ जो देह त्यागहै और जेकर चांडाल किसेकी स्त्रीको वावालकको मारे तां शस्त्रादिके विना अर्थात् अनशनादि कर्के देह त्यागहै एह वाह्य क्या जो वर्णाश्रमते हीन तिनांकी शुद्धिका हेतुहै परंतु इसमे एभी अर्थहै कि जद थोडा अपराधहै तां गो ब्राह्मणके अर्थ देह त्याग करणा क्या देहको समर्प्पण करणा तिनांकी सेवा वास्ते जद सेवा

तद्यथा देवलः॥ स्वजातिपोषणंसर्वप्रणामस्तितिक्षाव्यवहारशुद्धिरपरानवमाननंस्वभृत्यपोषणंप्रधानकर्म्मपरिवर्जनमितिचांडालधर्म्मःएतदादिधर्म्मप्रच्युतौ स्वजातिवैमुख्ये प्रायश्चित्तमाहमनुः ॥ ब्राह्मणार्थेगवार्थेवादेहत्यागोऽनुपस्कृतः स्त्रीवालाभ्युपपत्तौचवाह्यानांशुद्धिकारणम् ॥ १ ॥ चाण्डालादिकर्तृकस्त्रीवालादिविपत्तौजायमानायामनुपस्कृतः शस्त्रादिसंभारशून्योदेहत्यागोगोब्राह्मणरक्षार्थंवाह्यानांवर्णाश्रमहीनानां शुद्धिहेतुः ॥ अत्राल्पेऽपराधे गोब्राह्मणकार्य्यार्थं देहत्यागोदेहसमर्पणम् तत्प्रीतौसत्यां तच्छुद्धिरित्यर्थोवसेयः ॥ स्त्रीवालेतिपदंगवादिहिंसोपलक्षणपरम् ॥ अत्रसाधारणप्रकरणोक्ततीर्थसेवापि पापतारतम्येन योज्या प्रायश्चित्तानंतरंसजातिभोजनमपि ॥ इतिवर्णाश्रमवाह्यशुद्धिहेतुप्रायश्चित्तम् ॥ ❀ किंतुकालमवेक्ष्यप्रायश्चित्तंदातव्यमित्यत्रेदमपिचिन्तनीयम् पूर्वोक्तसंसर्गादिप्रायश्चित्तं प्रायोयुगान्तरयोग्यमेव तस्याधुनाकलौसंकोचःकर्त्तव्यः ॥

कर्के सो प्रसन्न होणगे तां शुद्ध होवेगा ऐसा जानणा १ और स्त्रीवाल पद गवादिके मारणेका उपलक्षणहै अर्थात् तिनांके मारणेमेभी पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा इसजगा साधारण प्रकरणमे किहा जो तीर्थ सेवनादि सोभी पापकी न्यूनता वा अधिकता देखकर जोडने और जद प्रायश्चित्त हो जावे तां पीछे सजातियोंको भोजन देणा एह वर्णाश्रमते हीन जो लोकहैं तिनकी शुद्धि करने वाला प्रायश्चित्त पूराहोआ ❀ अव और विचार करतेहैं किंचेति कालको देखकर प्रायश्चित्तदेणा इसमे एभीविचार है कि जेडा पिच्छे छोणे का और परंपरा छोणेका प्रायश्चित्त किहाहै सोसभ और युगोंमेहैं कलियुगमे नहि

क्योंकि जिनके साथ छोकर प्रायश्चित्त करणा है सोई कलियुगमै राजा हैं किसप्रकार अथवा कितने वार एकवृक्षकी छाया विषे वैठ कर अथवा लकडी पर किसे शाखापर एकफरसवाली सभामै और संभाषण करणा क्या तिनके साथ वातां करणीयां तिसमे संवंधवालाहोकर प्रायश्चित्तकरे इसते औसा करणा चाहिए कि साथभोजनमै जलपीणेमैं तिनकी स्त्रीके भोगमै और तिनको पढाणेमैं और तिनसे पढनेमैंहि प्रायश्चित्त कल्पनाकरना और इनसे होरनां छोटे पापांमे सूर्यादि दर्शन और मध्यममे १०० सउ गायत्रीका जप और उससे जो वडेहैं तिनमैं नक्त और स्नान रूप प्रायश्चित्त किहाहै सो महापातकिके संसर्गि प्रकरणमे देखलेना क्योंकि इससमयाविषें तिसतहाँके संसर्गकों अवश्यहोणे तें तैसे प्रायश्चित्तकों कदेभी नहि होणेतें देशकालके देखणेसे और अनुग्रह

यैःसंसृज्यप्रायश्चित्तीयते तएव यत्र राजानः कथंकतिवारान्वातत्रैकवृक्षच्छायादौ एकशाखादावेकवस्त्रास्तृतसभादौ संभाषणादिप्रवृत्तौ संसर्गीभूत्वा प्रायश्चित्तंकुर्य्यादतस्तत्र सहभोजनपानयौनादौ सत्येव प्रायश्चित्तंकल्प्यम् एतदतिरिक्तसंसर्गेलघौ सूर्य्यादिदर्शनंमध्यमे शतंगायत्रीजपः १००उत्तमेनक्तं स्नानं चेति महापातकिसंसर्गिप्रकरणेपि द्रष्टव्यम् ॥ साम्प्रतंतेषांतथाविधस्यन्यूनस्यापिसंसर्गस्यनाप्राप्तत्वात् तथाविधप्रायश्चित्तस्यकर्त्तुमशक्यतयादेशकालावेक्षणेनानुग्रहस्यशास्त्रानुमतत्वेनाल्पतरप्रायश्चित्तोपदेशस्ययुक्तत्वादेवंचांडालादिधूमयंत्रेण ॥ द्विजात्यादिना धूमपाने उच्छिष्टभक्षणादौसाक्षात्तच्छब्दानुपादानात्तदुपलक्षणेनैवतत्प्रायश्चित्तोपलंभोभवति यथा अन्त्यानांभुक्तशेषंतुभक्षयित्वाद्विजातयःचान्द्रंकृच्छ्रंतदर्द्धंचब्रह्मक्षत्रविशांविधिरित्यापस्तंवीयेभुक्तशेषंधूमयंत्रोपभुक्तिशेषोपलक्षणम् अत्रक्षत्रियविशोःकृच्छ्रतदर्धविधानंतदापदिवलात्कारादन्नेतरताम्वूलाद्युच्छिष्टपरमितिप्रायश्चित्तकदंवः अत्रादिनातदुच्छिष्टधूमोगृह्यते

करणेसें शास्त्रकी संमतिसें प्रायश्चित्तोपदेशकों युक्तहोंणेतें ॥ इसी प्रकार चांडालादिके धूमयंत्रकर्के द्विजात्यादिके धूमपानविषें अर्थात् तमाकूके पीणे विषें उच्छिष्ट भक्षणादि विषें साक्षात् कोईतिसका वाचकपद नहि लभदा तथापि उपलक्षण विधानसेक्या चांडालादिका जूठाजाणकरके प्रायश्चित्त देणाचाहिए ॥ जैसे नीचांके भुक्तशेष कों क्या जूठेकों द्विजाति खाकर व्राह्मण चांद्रायण करे क्षत्री प्राजापत्यकरे वैश्य अर्द्धकृच्छ्रकरेतां शुद्ध हुंदाहै एहआपस्तंवजीका वचनहै भुक्तशेषपद झारी नरेले आदिका वोधकहै अत्रेति इसजगा क्षत्रिय वैश्यका कृच्छ्रका और तिसके अर्द्धका जो विधानहै सो आपत्ति विषेक्या किसेक्लेशाविषे अथवा वलत्कारतों अन्नते विना तांवूलादि जूठेके भक्षणके विधान विषे जानणा एह प्रायश्चित्तकदंवाविषेलिखयाहै इसमें आदिशब्दतें जूठे धूमकाभी ग्रहण करना

और जगानकहणेते एहकामनामेंहै विनाकामनाते अदाजानणा सोई अंगिराजीने किहाहै चांडाल पतितादिओंके जूठेखाणेविषे ब्राह्मण चांद्रायणकरे और क्षत्रीसांतपनकरे औरवैश्यको ६रात्रका और शूद्रको तिन्ना३रातांका व्रतकिहाहै १ इसमे सांतपनकर्के महासांतपन समझणा बहुत पाप होणेते इहांभी अन्नपद धूमका उपलक्षणहै भोजनभी जोउदरमें चलाजावे सोजानणा मुखप्रवेश मात्रनहि जानणा तिसविषेभी बहुतवार करणेमे जानणा एकवार करणेमे लघुकृच्छ्रकी विधिहै यत्रोक्तं) इस उशनाजीके वचनसे १ इसका अर्थ पीछे होचुकाहै इसमे कुछ और पराशरजी कहतेहैं भांडेति नीचांके भांडे विषे जो जल १ दही २ दुध ३ है इसको ब्राह्मण क्षत्री वैश्य

अन्यत्रानुक्तत्वादिदंकामतःअकामतस्त्वर्द्धम् तथांगिराअपि चांडालपतितादीनामुच्छिष्टान्नस्यभोजने चांद्रायणंचरेद्विप्रःक्षत्रःसांतपनंचरेत् षड्रात्रंच त्रिरात्रंचवर्णयोरनुपूर्वशइति १ सांतपनमत्रमहासांतपनंद्रष्टव्यम् अत्राप्यन्नपदंधूमोपलक्षणम् भोजनंचगलाधोदेशसंयोगानुकूलव्यापारएव इदमभ्यासविषयम् सकृद्विषयेतुलघुकृच्छ्रं यत्रोक्तंयत्रवानोक्तमिहपातकनाशनम् प्राजापत्येनशुद्ध्येतेत्युशनस्सामान्यप्रायश्चित्तस्मरणात् किंच पराशरः भांडस्थमंत्यजानांतुजलंदधिपयःपिबेत् ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चैवप्रमादतः १ ब्रह्मकूर्चोपवासेनद्विजातीनांतुनिष्कृतिः शूद्रस्यचोपवासेनतथादानेनशक्तितः २ इत्यत्रापिभांडपदंधूमयंत्रोपलक्षणम् ॥ जलंधूमोपलक्षणंवोध्यम् ॥ प्रायश्चित्तस्योचितत्वादन्यत्रानुक्तत्वाच्च ॥ किंच साधारणप्रकरणे विश्वामित्रः कृच्छ्रचान्द्रायणादीनिशुच्यभ्युदयकारणम् प्रकाशेचरहस्येचअनुक्तेसंशयेस्फुटे १

शूद्र भुल्लकरपीवे १ तांतिन्नावर्णाकी ब्रह्मकूर्चके साथ उपवासकर्के शुद्धिहुंदीहै औरशूद्रकोदानके साथ उपवास कर्के हुंदीहै ॥ २ ॥ इसजगाभी भांडपद धूमयंत्रका उपलक्षणहै और जल धूमका उपलक्षण क्यावोधकहै क्योंकिप्रायश्चित्तको उचितहोणेतें और दूसरी जगा नहि कथनतें ॥ कुछ होर कहते हैं किंचेति साधारण प्रकरणमे विश्वामित्रजीका वचनहै कृच्छ्र चांद्रायणते लेकर जोव्रतहैं सोसभ पवित्रताके और अभ्युदयके क्यावृद्धिके कारणहैं प्रकाशविषे क्या जोसभको विदितहोवे तिसके प्रायश्चित्त विषे और रहस्य विषे और अनुक्त प्रायश्चित्तविषे और जिसमे संशयहै तिसमे और स्फुटक्या जिसपापका निर्णय होचुकाहै ॥ १

तिसमै प्राजापत्य इत्यादि १२ वारां व्रतहैं एहसभ इकठे अथवा जुदे जुदे इकपापमै० इकप्रा० अथवा दो तिन्न आदिपापमै एकप्रा० सवनांपातकांविषे और उपपापांविषे ॥ ४ ॥ चांद्रायणकर्के युक्त होएहोए करनेयोग्यहैं अथवा विना चांद्रायणके करणेयोग्यहैं चांद्रायणके भेदकहतेहैं शिशिवाति शिशुचां.१ यति.२यव.३ पिपीलका. ४ और उपवासादि ७ एहसभ शुद्धि फलकी इच्छावालेने करनेचाहिए उपपातकादि सभना पापांके दूरकरणेकी इच्छावालयोंने ७ प्रकाशविषे अप्रकाशविषे पापिके आभिप्रायको जाणकरके और जाति शक्ति गुणानुं देखकर्के एकवार दोवारको जाण कर्के ॥ ८ ॥ और अनुवंधादिको देखकर्के सभएह प्रायश्चित्त यथाक्रम कर्के करे ॥

प्राजापत्यः सांतपनः शिशुकृच्छ्रःपराककः अतिकृच्छ्रः पर्णकृच्छ्रः सौम्यकृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रकः २ महासांतपनःसिद्धैतप्तकृच्छ्रस्तुयावकः जपोपवासकृच्छ्रस्तुब्रह्मकूर्चस्तुशोधकः ३ एतेव्यस्ताःसमस्तावाप्रत्येकद्वेकशोऽपिवा पातकादिषुसर्वेषुउपवासेषुयत्नतः ॥ ४ ॥ कार्याश्चान्द्रायणैर्युक्ताःकेवलावाविशुद्धये शिशुचान्द्रायणंप्रोक्तंयतिचान्द्रायणंतथा ॥ ५ ॥ यवमध्यंतथाप्रोक्तं तथापैपीलिकाकृतिः उपवासस्त्रिरात्रंवामासः पक्षस्तदर्द्धकम् ६ षडहोद्वादशाहानिकार्य्यंशुद्धिफलार्थिना उपपातकयुक्तानामनादिष्टस्यचैवहि ७ प्रकाशेवाऽप्रकाशेवाअभिसंध्याद्यपेक्षया जातिशक्तिगुणान्दृष्ट्वाअसकृद्द्विः कृतंतथा ८ अनुवंधादिकंदृष्ट्वासर्वंकार्य्यं यथाक्रममिति एषुपक्षेषुजातिशक्तिगुणावस्थाद्यपेक्षयाविषयविभागोवसेयः ॥ इतिचंडालाद्युच्छिष्टधूमपानप्रायश्चित्तम् ❁ क्षुद्रजन्तुवधप्रा- उपपातकप्रकरणेहिंसाप्रसंगेऽवगंतव्यम् ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतपंडितदेवीदत्तसुतपंडितगंगारामसंगृहीतेपञ्चविषयात्मकप्रतिरूपके धर्म्मशास्त्रमहानिवन्धे प्रायश्चित्तभागेजातिभ्रंशकर. संकरीकरण.अपात्रीकरण ❁ मलिनीकरण. प्रकीर्णकानिपंचप्रकरणानि ७ ८ ९ १० ११ ॥❁॥

एह चांडालादिकर्के जूठा धूआं तिसके पीणेका प्रायश्चित्त पूराहोया ❁ । होर निक्के जीवांके मारणेका प्रा० उपपातक प्रकरणमै हिंसाके प्रसंगविषे देखलेना ॥ ❁ ॥ एहश्रीराजाधि राज रणवीर सिंह जीकी आज्ञासे पंडितवरसारस्वत देवीदत्तजीके पुत्र पंडित गंगारामने संग्रहकीतेहोएधर्म्मशास्त्रके ग्रंथके प्रायश्चित्त भागविषे जातिभ्रंशादि ४ और प्रकीर्णक प्रकरण पूराहोआ ॥ ४ ॥ शुभं भूयात् ॥॥ ७।८।९।०१ ११ ॥

॥ पंचमप्रकरणसूचीपत्रमिदम् ॥

षष्ठप्रकरणशुद्धिपत्रम्

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१६४	मू०५	स्तार्थे	स्तीर्थे
१६४	टी०५	त्रिर्हावि	त्रिर्हवि
१६७	मू०१	ष्वंपि	ष्वपि
१६८	मू०२	हहते	दहते
१७०	टी०३	आति	अति
१७२	मू०३	तिष्ठद	तिष्ठेद

पृ०	प	अशुद्ध	शुद्ध
१७३	मू०६	नृश्यति	नश्यति
१७३	मू०७	ष्णोन्	ष्णोर्न
१७३	टी०७	पजया	पूजया
१७४	टी०२	मनकं	मनके
१७४	टी०५	नमस्कर	नमस्कार
१७५	टी०५	अदिशव्दने	अपिशव्दतें
१७५	मू०१	निमज्य	निमज्ज्य
१७६	टी०७	वर्प	वर्ष
१७६	टी०८	औरविच्छेद	औरविनाविच्छेदसे
१७७	टी०६	तियोजोए	तियोजिए
१७८	टी०७	तासि	तीस
१७८	टी०५	तीनों	तिनों
१७८	म०५	जंम्बू	जम्बू
१८४	टी०१	देवैं	देवे
१९०	टी०१	व्रके	व्रतके
१९०	टी०७	वेगा	वेगासो
१९२	मू०८	विषम्	विषयम्
१९७	मू०१	कशे	कश
१९९	मू०२	आः	आह
२००	मू०१	तेर	तर
२१०	मू०५	तीयामग्रेत्रुटी०	विष्णोःकर्माणीतितृतीयां
२१४	मू०८	तिष्ट	तिष्टे
२१७	मू०९	तत्मज	तात्मज
२१७	टी०२	व्राह्म	ब्रह्म
२२०	मू०१०	ततर	तरे
२३३	मू०८	कूत्र	कुत्र

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
२३७	मू १	चिशत्त	श्चित्त
२५६	मू ४	स्पृष्टवा	स्पृष्ट्वा

॥ व्रतादिप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते ॥

पृ०	पं०	प्रतीक	
१९	१	हिरण्यति	हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकायासुयातः सवितायास्वग्निया अग्निंगर्भंदधिरे सुवर्णास्तानआपःसंस्योनाभवंतु ॥ १ ।
१९	७	देवकृतस्येति	देवकृतस्यैनसोवयजनमसिमनुष्यकृतस्यै नसोवयजनमसिपितृकृतस्यैनसोवयजनमस्यात्मकृतस्यैनसोवयजनमस्येनसऽएनसोवयजनमासि यच्चाहमेनोविद्वांश्चकारयच्चाविद्वांस्तस्यसर्वस्यैनसोवयजनमासि य ० सं० अ०८
१९	७	तरत्समिति	तरत्समंदीधावतिधारासुतस्यांधसः तरत्समंदाधावति
६१	२	त्र्यंबकइति	त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिंपुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिवबधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥
१३०	३	मानस्तोकेति	मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेपुरीरिषः मानोव्वीरानूरुद्रभामिनोवधीर्हविष्मंतःसदमित्त्वाहवामहे ॥

१४० २ संतेपयांसि संतेपयांसिसमुयंतुवाजाःसंवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः आ प्यायमानोअमृतायसोमदिविश्रवांस्युत्तमानिधिष्व

१४५ ११ यतइति यतऽइंद्रभयामहेततोनोअभयंकृधि मघवांछगधितवतन्न ऊतिभि विद्विषोविमृधोजहि ॥

१४६ १ शन्नइति शन्नइंद्राग्नीभवतामवोभिःशन्नइंद्रावरुणारातहव्या शमिं द्रासोमासुवितायसंयोःशन्नइंद्रापूषणावाजसातौ ॥

१४६ १ पुनंतुमामिति पुनंतुमादेवजनाःपुनंतुमनसाधियः पुनंतुविश्वाभूता निजातवेदःपुनाहिमां

१६६ ४ अवतइति अवतेहेडोवरुणनमोभिरवयज्ञेभिरीमहेहविर्भिःक्षयंनस्म भ्यमसुरप्रचेताराजनेनांसिशिश्रथःकृतानि

२१० ५ विष्णोरिति विष्णोःकर्माणिपश्यतयतोव्रतानिपस्पशे इंद्रस्ययुज्यः सखा ॥

२१५ ३ इमंमेति इमंमेवरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय त्वामवस्युराचके ॥

३ उदुत्तममिति उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमंश्रथायाथवयमादित्यव्रतेतवानागसोअदितयेस्याम ॥

२७० २ धाम्नोधाम्नइति धाम्नोधाम्नोराजंनितोवरुणमुंचनयदापोअघ्न्याइतिवरुणेतिशपामहेततोवरुणनोमुंच दतोभितधमिवानति

॥ दोहा ॥

रामचंद्रकरुणानिधिभक्तलोकउरधार
महाराजरणवीरके सभकारजसुधयार
॥ १ महाराजरणवीरसिंहदूसरोहैं हर
नाम इसवलसे शोधनकरे जुपंढत गं
गाराम ॥ २ ॥

स्वत इत्यादि श्लोक पिच्छें आगिआहै इसको स्मरण करलेणा ॥ अब श्रीरमंगला चरणकर्दहैं नत्वेति मैं कवि गंगाराम शर्माने प्रायश्चित्त शब्दार्थ कथन १ और तिसकी प्रशंसा २ और सभाका विधान ३ और कर्म्मविपाक ४ और व्रतविधि ५ और तिसके आगे जाति भ्रंशकरा दिछे प्रकरण कहकर इसके अनंतर पापोंके विषे जो उपपातक पाप हैं तिनांकी संख्या क्या गणना और तिनके दूर करणें वास्ते प्रायश्चित्त कहीदा है क्या कर्के लक्ष्मी कर्के युक्त जो रामचंद्र तिनांके चरण कमल नूं नमस्कार कर्के कैसे चरणकमल हैं श्री क्या संपत्ति और सिद्धि और सर्वत्र प्रसरणशीलाबुद्धि तिसके देणे वाले हैं और जम्बूद्वीपकी न्याईं प्रसिद्ध जो जम्बूराजधानी तिसके वहुत प्रताप युक्त श्री स्वामी रणवीरसिंह नृपति जीकी प्रकट आज्ञाकों ले कर्के ॥ चपुनः क्या कर्के उपपातकांके और तिनके प्रायश्चित्तोंके अधिकारकों संग्रह कर्के अर्थात् तिसके प्रतिपादक अनेक ग्रंथोंको देख कर्के ॥ कैसी उह संख्याहै मनुसें ले कर्के जो धम्मशास्त्री तिनांनें अंगीकार कीतीहै १ अब आगे महापातक प्रकरण विषे कहणी जो है पाप गणना तिसविषें जाति भ्रंशकरसें आदलेकर छेमे स्थानविषें आएहोए उपपातकके कथन

ओंश्रीगणेशायनमः स्वतोमित्वातत्वमित्यादि० नत्वाश्रीरघुनाथपादवनजं श्रीसिद्धिबुद्धिप्रदं जम्बूनाथमहानुभावनृपतेराज्ञांनिधायस्फुटाम् पापानामुपपापभेदगणनांमन्वादिभिःस्वीकृतां प्रायश्चित्तमथोवदामिनितरां संगृह्यतत्प्रक्रियाः १ अथवक्ष्यमाणजातिभ्रंशकरादिपापगणनयापद्यमुपपातकमभिधास्यमानेनप्रथमंतद्गणनोच्यते ॥ तत्रमनुः ॥ गोवधोऽयाज्यसंयाज्यपारदार्य्यात्मविक्रयाःगुरुमातृपितृत्यागःस्वाध्यायाग्न्योः सुतस्यच १

करणें वास्ते प्रथम तिसकी गणना कहीदीहै तिसविषें मनुजीका वाक्यहै गोवध इत्यादि ॥ इनका अर्थ भिन्न २ कर्के किहाजावेगा अब क्रमकर्के इनकानामार्थकहतेहां ॥ गोवध नाम उसकाहै कि जो गौके देहका वध क्या शस्त्रादि कर्के नाश करणा अर्थात् पाषाणादि प्रहार मात्रका नाम गोवध नाहिं जानणा १ और नाहिं यज्ञ करवाणे योग्य जो जाति कर्के दुष्ट और कर्म्मोंकर्के दुष्ट शूद्र और व्रात्यक्या संस्कारतें रहित इनांते लेकर जो हैं तिनांकों यज्ञ करवाणा अर्थात् शूद्रादितें समंत्रश्राद्ध सोम यागादि करवाणे परंतु इसमें इस वातका विचार रखणा कि शूद्र भी दो प्रकारका होताहै इक सच्छूद्र और दूसरा असच्छूद्र तिसमें सच्छूद्रसें याग कराणेका दोष नहिंहै एह विचार आगे तिनके निरूपण विषें आवेगा २ और पारदार्य्य क्या परस्त्रीका संभोग एह जो परस्त्रीका संभोगहै सो गुरुकी स्त्रीतें और तिसके तुल्य पापतें भिन्न जानणा गुरुस्त्रीके संभोगको महापातक कहीदाहै और तिसके तुल्य पापकों अनुपातक कहीदाहै ३

आत्मविक्रयः क्या पहलां धनको लेकर्के पीछे तिसका दास्य कर्म्म करणा अर्थात् तिसके दासहो कर्के रहणा परन्तु एह आत्मविक्रय किसे द्यूतादि व्यसन पूर्वक होवे तद दोषहै इस विषे याज्ञवल्क्यजीका वचनहै व्यसनेति ४ और गुरु और माता और पिता इनांका त्याग अर्थात् सेवा न करणी अथवा पापतें रहित भीहैं तथापि तिनांको अपणे घरतें बाहर कर देणा ॥ इस जगा याज्ञवल्क्यजीने पितृमातृसुतत्याग ऐसा पाठ किहाहै सो इसमें सुतत्याग अधिकहै और गुरुका बोध पितृपदसें हि जाणयाहै इस कर्के एह तीन उपपातक हैं ७ स्वाध्यायेति स्वाध्याय क्या पडे होए वेदका किसे कारण तें कुटुंबादिके पालनादि कर्के व्याकुल होणेतें

परिवित्तिताऽनुजेनूढेपरिवेदनमेवच तयोर्दानंचकन्यायास्तयोरेवचयाजनम् २ कन्यायादूपणंचैव वार्द्धुष्यंव्रतलोपनम् तडागारामदाराणामपत्यस्यचविक्रयः ३ व्रात्यतावांधवत्यागोभृत्याध्यापनमेवच भृताच्चाध्ययनादानमपण्यानांचविक्रयः ४ सर्वाकरेष्वधीकारोमहायंत्रप्रवर्त्तनम् हिंसौषधीनांस्त्र्याजीवोऽभिचारोमूलकर्म्मच ५ इन्धनार्थमशुष्काणांद्रुमाणामवपातनम् आत्मार्थंचक्रियारंभोनिंदितान्नादनंतथा ६ अनाहिताग्नितास्तेयमृणानामनपाक्रिया असच्छास्त्राधिगमनंकौशीलव्यस्यचक्रिया ७ धान्यकुप्यपशुस्तेयंमद्यपस्त्रीनिषेवणम् स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधोनास्तिक्यंचोपपातकम् ८ अर्थः गोवधोगोपिण्डव्यापादनम् १ अयाज्यानांजातिदुष्टकर्म्मदुष्टानां शूद्रव्रात्यादीनां संयाज्यंयाजनम् २ पारदार्य्यंपरस्त्रीसंभोगः इदंचगुरुतल्पतत्समव्यतिरेकेणबोध्यम् ३ आत्मविक्रयोद्रव्यग्रहणेनपरदास्याचरणम् अयंचव्यसनान्यात्मविक्रयइत्यादियाज्ञवल्क्योक्तव्यसनपूर्वकोबोध्यः ४ गुरुमातृपितॄणांत्यागःशुश्रूषाद्यकरणं वाऽपतितानांतेषांगृहान्निष्कासनम् याज्ञवल्क्यस्मरणेतु पितृमातृसुतत्यागइतिपाठः ७ स्वाध्यायाग्न्योःसुतस्यचत्यागः॥ सर्वदाब्रह्मयज्ञत्यागो नवेदविस्मरणं ब्रह्मोज्झतेत्यनेनोक्तत्वात् ८ अग्नीनांश्रौतस्मार्त्तानांत्यागःअग्नेः स्मार्त्तस्य त्यागोन श्रौतस्य अग्निहोत्र्यपविद्धाग्नीमित्यादिनोक्तत्वादितिव्याख्याता ॥ ९ ॥ सुतत्यागस्संस्कारभरणाद्यकरणम् १०

अथवा सच्छास्त्र जो हैं व्याकरणादि तिनके परिचयते त्याग करणा ॥ और जो अनुपातकोंकी गणनामें वेदका त्यागहै सोभी स्वाध्यायत्याग है परंतु सो असच्छास्त्रके परिचय निमित्त कर्के जानणा अधिक दोषहोणेंतें ८ अग्नीनामिति अग्नि जो श्रौत क्या गार्हपत्य आहवनीय दक्षिणाग्नि और स्मार्त्त जो आवसथ्यादि तिनांकात्यागकरणा इसमें कुल्लूकभट्टजीकहतेहैं कि स्मार्ताग्निका परित्यागउपपातकहै औरश्रौताग्निकानहि सो अनुपातकहै ९ और सुतत्यागक्या जो दश संस्कार जातकर्मादि और भरण क्या पालनादि तिनांका न करणा १०

कनीति और छोटे भ्राताका वडे भ्राताके विवाहतें पहिले विवाह होवे तो वडे भ्राताकी परिवित्ति संज्ञा कहीहै ११ और छोटेका नाम परिवेत्ताहे १२ और सो जो हैं दोनों तिनांको कन्या देणी १३ और तिनांदोआंको विवाह होमादि कर्म विषे आर्त्विज्य करणा अर्थात् तिनांते विवाहादि करवाणे १५ और कन्याकी योनि विषे मैथुन के बिना अंगुली कर्के दूषण करणा एह अर्थ इस कर्के कीताहे कि मैथुन कर्के जो कन्या दूषणहै तिसकी महापातकमें गणनाहे सो मैथुनभी (रेतःसेकः) इत्यादि वचन तें वीर्य्यपात पर्य्यंत जाणना अव कन्यादूषणका और निमित्त कहतेहैं । कि तूं नाहिं कन्या तूं मैथुन करणे योग्यहैं ऐसे वचनकर्के भी कन्या दूषण होताहे एह पापभी सोम विक्रय और कृतघ्नतादि काभी उपलक्षण हे सो प्रायश्चित्त निरूपण विषे कहेंगे १६ वार्द्धुष्य क्या प्रतिषिद्ध वृद्धि कर्के

कनीयसआदौविवाहेज्येष्ठस्यपरिवित्तित्वंभवति ॥ ११ ॥ कनिष्ठस्यपरिवेत्तृत्वंभवति ॥ १२ ॥ तयोः परिवित्तिपरिवेत्रोः कन्यायादानम् ॥ १४ तयोरेवविवाहहोमादियागेष्वार्त्विज्यम् १५ कन्यायामैथुनंविनांगुल्यादिनादूषणं रेतःसेकपर्य्यंतं मैथुनेपुरेतःसेकःकुमारीपुस्वयोनिष्वित्यादिनामहापातकेषुगणनात् त्वंनकन्याकिंतुमैथुनार्हेत्युक्तिर्वाइदंचसोमविक्रयकृतघ्नताद्युपलक्षणं तच्चतत्प्रायश्चित्तनिरूपणावसरेनिरूपयिष्यते १६ वार्द्धुष्यंप्रतिपिद्धवृद्धिजीवनम् मुद्रिकाशतर्णदानेसवंधकावंधकविभागशः सपादमुद्रिकाधिकंद्विकाधिकंवाप्रतिषिद्धवृद्धिः १७ व्रतलोपनम् ॥ ब्रह्मचारिणःस्त्रीसंगः १८ तडागोद्यानभार्य्यापत्यानांविक्रयः २२ यथाकालमनुपनयनंव्रात्यता तथाचोक्तम् ॥ अतऊर्ध्वंत्रयोप्येतेयथाकालमसंस्कृता इति व्रात्यता असोमयाजित्वमित्यपिकेचित् २३

जीविका करणी प्रतिषिद्ध वृद्धि उसको कहतेहैं कि जो गहणा रक्षणें वालेतें १।) सवा रुपैया सैकडेतें अधिक होवें और विना गहणेतें २) दोरुपैए सैकडेतें अधिक होवे । जेकर इतनी होवे तद दोष नाहिंहै १७ व्रतेति व्रत लोपन उसको कहतेहैं कि ब्रह्मचारीने स्त्रीसंग करणा १८ और तलाओ और वाग और स्त्री और पुत्र इनांका वेचणा २२ यथाकाल क्या ब्राह्मणको गर्भस्थितितें अष्टमें ८ वर्षतें लेके सोलमें १६ वर्ष तक और क्षत्रीकोंगर्भतें यारमें ११ वर्ष तें वाईस २२ वर्ष तक और वैश्यकों गर्भस्थितितें वारमे १२ वर्षतें लय के चौवी २४ वर्ष पर्य्यंत यज्ञोपवीतका धारण कहाहे । एनां समयां विषे जो ना धारणकरे उसको व्रात्यता कहीहै कि उनां समयां तो पीछे ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य तीनोंवर्ण संस्कार रहितव्रात्यकहेहैं और कोईकऋषिकहतेहैं किजो सोमयज्ञ नाहिंकरणा तिसकानामव्रात्यताहै २३

वान्धवेति वान्धवत्याग क्या पिताका भ्राता और माता का भ्राता इनांते लेकर्के जो संबंधि. यांका त्याग करणा धनके होयां२ भी ना रखणा २४ भृत्येति भृत्याध्यापन क्या मजूरी ले कर्के नौकर होकर शिष्यकों पडाणा २५ और पंडितको नौकर रखकें पडना इसमें एहवि चारहै कि पडन वाला ऐसा अपने चित्तमें जानताहै कि मैं मजूरी देके पडताहां और पंडित जानताहै कि मैं मजूरी लेके पडांताहां इनां दोआं के पठनमें कोई परमार्थ वुद्धि नहिं इसक र्के दोषहै २६ अपेति और अपण्य क्या नहिंवेचणेके योग्य लूण और तिलांते लेकर अन्न वा रस तिनांका वेचणा परंतु इसमें यथायोग्यता कर्के दोष है जैसे ब्राह्मणको रसविक्रय है ऐसे और भी जानणे २७ सर्वेति सुवर्णते आदलेके जो धातु तिनांकीयां जो खाणा उत्प त्तिस्थान तिनां विषें राजा की आज्ञा लेके जो अधिकार होणा २८ महेति महायंत्र जो हैं इ

वान्धवत्यागःवान्धवानांपितृव्यमातुलादीनांत्यागःसतिविभवेऽपरिरक्षणम् २४ भृत्या- प्रतिनियतवेतनग्रहणपूर्वकमध्यापनम् २५ प्रतिनियतवेतन दानपूर्वकमध्ययनम् २६ अपण्यानांलवणतिलादीनांविक्रयः २७ सर्वा करेषुसुवर्णाद्युत्पत्तिस्थानेषुराजाज्ञयाऽधिकारःस्वामित्वं २८ महेतिमहतां यंत्राणांतिलेक्षुपीडाकराणांप्रवर्त्तनं हिंस्रयंत्रप्रवर्त्तनमितियाज्ञवल्क्यीयपा ठःप्रवाहप्रतिवन्धहेतूनांसेतुवंधादीनांप्रवर्त्तनम् २९ ओषधीनांजातिमात्रा दीनांहिंसाहिंसनंज्ञानपूर्वकाभ्यासविषयमेतत्प्रायश्चित्तगौरवात्। यत्तूक्त छजानामोषधीनामित्यादिनावक्ष्यतितत्सकृद्धिंसायांवेदितव्यं प्रायश्चित्त लाघवात् ३० स्त्रीतिभार्य्यादिस्त्रीणांवेश्यात्वंकृत्वातल्लब्धधनेनोपजीवनम्। स्त्रीधनेनोपजीवनंवा ३१

क्षुयंत्र और तिलयंत्र इनसें आदलेकरपीडाके स्थान तिनांका स्थापन करणा ॥ इसी कर्के याज्ञ वल्क्य जीने (हिंस्रयंत्र प्रवर्त्तनं) ऐसा पाठ किहाहै इसमें भी ओहि अर्थहै २९ ओषधीनामि ति जोजातिमात्र ओषधिआंहै क्या जो अपणे स्थानपर स्थित हैं तिनांका मूलतों लयके पुट णा परंतु जाणकर्के और वहुतवार कर्के एह इनांका प्रायश्चित्तहै क्योंकि वडा होणें तें ॥ और इसका प्रायश्चित्त आगेभी आवेगा सो थोडाहै उह एकवार हिंसा करणेमें जाणणा ॥ इस वि षें याज्ञवल्क्य जीने (स्त्रीहिंसौषधिजीवनं) ऐसापाठकिहाहै इसका अर्थ एहहै कि स्त्रीकर्के और हिंसाकर्के और ओषधिकर्के क्या वशीकरण कर्के जीवनहै सो उपपातक जानणा ३० स्त्रीति अपणी स्त्रीकों वेश्या वनायके जो धनका ग्रहणकरणा तिसकर्के जीविका करणी वा स्त्रीके धन कर्के जीविका करणी ३१

अभीति और वाजके यज्ञकर्के अपराधतें विनामारणा ३२ मूलेति मंत्र वा औषधी कर्के वश करणा ३३ इन्धनेति गिल्लयां वृक्षांका छेदणा तिसकाप्रयोजन कहतेहैं पाकेति भोजन का जो पकाणा एहहीहै प्रयोजन जिसका प्रयोजन दो प्रकारका है दृष्ट और श्रुत केवल देहके ही सुख वास्ते जो प्रयोजनहै सो दृष्टहै जोपरलोकके सुख वास्तेहै सोश्रुतहै ३४ आत्मेति देवता पितरांके निमित्ततों विना जों आपसे वास्तेही अन्नसिद्ध करणा ३५ निन्दीति निंदित जों अन्नहै वा थोम इसतें आद लेकर्के इनांका एकवार इच्छातें विना भक्षण करणा सो उपपात कर्म किहाहै जो इच्छाकर्के इनांका वहुतवार भक्षण करणाहै सो (गर्हितान्नाद्ययोर्जग्धिः) इसवचनते सुरापानके वरावरहोणे कर्के अनुपातकमे किहाहै इसमेविशेष कहतेहैं कि जो योगीश्वरनें किहाहै (निन्दितार्थोपजीवनमिति) इसका अर्थ एहहै राजाकर्के दूरकीती जो उपजी

अभीति श्येनयज्ञेनानपराद्धस्यमारणम् ३२ मूलेतिमंत्रौषधिनावशीकरणम् ३३ इन्धेति अशुष्काणामार्द्राणांवृक्षाणांपाकादिदृष्टप्रयोजनार्थमात्रमवपातनंछेदनम् ३४ आत्मेति स्वस्थस्यदेवपित्राद्युद्देशंविना पाकाद्यनुष्ठानम् ३५ निंदितेति निन्दितान्नस्यलशुनादेःसकृदनिच्छयाभक्षणम् इच्छापूर्वकाभ्यासभक्षणेतुगर्हितान्नाद्ययोर्जग्धिरित्यादिनासुरापानसमीयम् निन्दितार्थोपजीवनमितियोगीश्वरोक्तेऽराजस्थापितार्थोपजीवनमित्यर्थः ३६ अनेति सत्यधिकारेऽग्न्यनाधानम्। अत्रमिताक्षरा ननुज्योतिष्टोमादिकामश्रुतयः स्वांगभूताग्निनिष्पत्त्यर्थमाधानंप्रयुंजतइतिमीमांसकप्रसिद्धिः अतश्चयस्याग्निभिःप्रयोजनंतस्यतदुपायभूताधानेप्रवृत्तिर्व्रीह्यार्थिनइवधनार्जने यस्यपुनराग्निभिःप्रयोजनंनास्तितस्याप्रवृत्तिरितिकथमनाहिताग्निताद़ोषउच्यते

विका तिसीकर्के जों उपजीविकाकरताहै सो निंदितधनोपजीवीहै जैसें राजानें हटाया जो जूआ और तिसते ही जो उपजीविकाकरताहै सो उपपातकीहै ३६ अनेति अग्निके अधिकार के होयां होयां जो अग्निका ना स्थापन करणा इस विषें मिताक्षराका वाक्यहै (प्रश्न) नन्विति ज्योतिष्टोमादियज्ञके विधान करणे वालीयां जों कामश्रुतियां हैं सो अपणे अधिकार युक्त अग्निकी सिद्धिवास्ते अग्निके आधाननूं कहतीयांहैं एह मीमांसकांके मतविषें प्रसिद्धहै इसकारणतें जिसकों अग्नियां कर्के प्रयोजनहै तिसकों तिनां अग्नियांके उपायभूत स्थापनविषें प्रवृत्ति कहीहै जैसें चांवलांके इकठेकरणे वालेकों धनके इकठे करण विषें प्रयोजनहै और जिसकों अग्नियां कर्के प्रयोजन कुछ नही तिसकी अग्निके आधानविषें प्रवृत्ति नहिहै एहप्रसिद्ध लोकवाणीभी है कैसे अनाहिताग्नि दोष किहाहै(उत्तर)

असमेति इसीवचनतें अग्निस्थापनको आवश्यक प्रतीतहुंदाहै क्योंकि नित्य कर्मकीयां कहण
वालियाजो श्रुतियां सो प्रयोजन कौलयके स्थितहैन विशेषतें रहित अग्नि आधानकीयां प्रयो
जकहैन एहस्मृतिकारोंका अभिप्रायहै इसकर्के अनाहिताग्नि उपपातकयथार्थहै ॥ इसमें वचन
भीहै(वसंतेअग्नीनाधीत) इस वाक्य कर्के सव पुरुष अग्निकाआधान करण असीआज्ञाहै
३७ स्तेयमिति सुवर्णतेंविना होर सारधनका चुराणा उपपातकहै असारधनका चुराणा अग्गे
कहांगेधान्यकुप्यइत्यादिकर्के ३८ ऋणेति देवता औरपितर और ऋषिइनांके त्रय जो ऋणहैं
तिनांकर्के ऋणवालापुरुषहै तिनां ऋणोंका ना दूरकरणा उपपातकहै चपुनःग्रहणकीतेहोए सुवर्णा
दीका नादेणा उपपातकहै ऋणदूरकरणे वास्ते श्रुतिप्रमाणदेतेहैं ऋणैस्त्रिभिरिति ३९ असदिति
श्रुति स्मृतितें विरुद्धशास्त्र जो आधुनिक रचेहोए विरुद्धमतवालयोंकेशास्त्र तिनोकापडना अथवा
खोटा शास्त्र जो चार्वाकादि क्या प्रत्यक्ष प्रमाणादिवोधक तिसका पडना ४० कौशीति नृत्य

अस्मादेवाधानस्यावश्यकत्ववचनान्नित्यश्रुतयोपिसाधिकाराश्चविशेषादा
धानस्यप्रयोजकाइतिस्मृतिकाराणामभिप्रायोलक्ष्यतइत्यदोषः ३७ स्ते
यम् सुवर्णादन्यस्यसारद्रव्यस्यापहरणम् असारापहरणंवक्ष्यते ३८
ऋणानामिति ऋणैस्त्रिभिर्ऋणवान्नरोजायतेतदनपकरणम् गृहीतस्यसु
वर्णादेरप्रदानंच ३९ असदिति श्रुतिस्मृतिविरुद्धशास्त्रशिक्षणम्असच्छा
स्त्रस्यचार्वाकादेरधिगमोवा ४० कौशीति नृत्यगीतवादित्रादेरुपसेवनम्
याज्ञवल्क्येतुव्यसनान्यात्मविक्रयइत्यनेनकौशीलव्यंसंगृहीतम् ४१ धा
न्येति धान्यंव्रीह्याद्यादिकुप्यमसारंत्रपुसीसादिपशवोगवादयःतेषामपहरण
म् ४४ मद्येतिद्विजातीनांपीतमद्यायाःस्त्रियागमनम् ४५ स्त्रीतिस्त्रीशूद्रवै
श्यक्षत्रियहननम् ४९ नास्तीतिअदृष्टार्थकर्म्माभाववुद्धिः नास्तिपरलोक
इत्याद्यभिनिवेशोवा ५०इमानिमनूक्तानियोगीश्वरेणत्विमानिस्वीकृत्यषड
धिकान्यपिपठितानियथाशूद्रप्रेष्यंहीनसख्यंहीनयोनिनिषेवणम् तथैवाना
श्रमेवासःपरान्नपरिपुष्टता ॥ शूद्रसेवनम् १ हीनेषुमैत्रीकरणम् २ अनूढ
सवर्णदारस्यकेवलंहीनवर्णदारोपसेवनम् साधारणस्त्रीसंभोगश्चेति ॥ ३

और गीत और वादित्रआदिकोंका ग्रहण करणा जो वीणादि और मुरजादि और वंशादि
और कांस्यतालादिहैं इनांका इकट्ठा नाम वादित्रहै ॥ याज्ञवल्क्यजीने(व्यसनान्यात्मविक्रयः) इस
कर्के कौशीलव्यकाग्रहणकीताहै ४१ धान्येति व्रीहिआदि और कुप्य क्या असारवस्तुलाषसिका
आदि पशु गौआदि इनांकाचुराणा ४४ मद्येति व्राह्मण क्षत्रिय वैश्यइनांनेजिसने मदिरा पीताहो
आहै तिसस्त्रीकेसाथ मैथुन करणा ४५ और स्त्री शूद्र वैश्य क्षत्रीका मारणा ४९ नास्तीति क
र्मोंका जो फल परलोक विषें होणा तिसविषें अभाववुद्धि क्या कोई फल नाहि एहवुद्धि वा स्व
र्गादि कोई नहि एह निश्चय होणा ५० एह पंजाहउपपातक मनुजीनें कहेहैं योगीश्वरनें इ
नांको अंगीकार कर्के छेअधिककहेहैं शूद्रप्रेष्यमित्यादि इनांकाअर्थ किहा जाताहै शूद्रकीसे
वाकरणी १ हीनजाति विषें मैत्री करणी २ अपने तुल्य जाति वाली स्त्रीतों विना केवल ही
नजाति वाली स्त्रीके साथ विवाह करणा चपुनः साधारण स्त्रीविषें संभोग करणा ३

सत्येति अधिकारके होयां २ गृहस्थादि आश्रमका ना ग्रहण करणा अथवा ब्रह्मचारि गृहस्थादि क्रम कर्के आश्रमका नहिग्रहणकरणा ४ परेति दूसरेके पकाए होए अन्न विषे प्रीति करणी इसमें एह अभिप्रायहै कि जो कोई अन्न पकावे तिसका विना विवेकके भोजन करणा ५ व्रतेति व्रतलोपभी इसविषे अधिकहै इसके समाधानमें तिसजगा दूसरे वार जो व्रतलोपका ग्रहणहै उसमें मिताक्षराकारजी ऐसा कहतेहैं कि किसेने ऐसी प्रतिज्ञा कीती कि ठाकुरजी के दर्शनविना मैं भोजन नहिं करांगा एह भी इक व्रत होया सो जद नाहिं कीता तद व्रतलोप होया इसके अर्थ दूसरा व्रतलोपहै ६ इनां कर्के छपुंजा ५६ उपपातकांकेभेद दखाएहैं और

सत्यधिकारेऽगृहीताश्रमत्वम् ४ परपाकरतित्वम् ५ व्रतलोपोऽप्यन्यो धिकस्तत्र मिताक्षरा पुनर्व्रतलोपग्रहणमशिष्टाप्रतिपिद्धेष्वपि श्रीहरिचरणकमलप्रेक्षणात्प्राक्तांबूलादिकं न भक्षयामीत्येवंरूपेषुप्राप्त्यर्थंनतुस्नातकव्रतप्राप्त्यर्थम् तत्रस्नातकव्रतलोपे प्रायश्चितंचाभोजनमिति मनुना लघुप्रायश्चित्तत्वस्यप्रतिपादितत्वात् ६ एभिः षट्पंचाशद्भेदाउपपातकानामितिप्रदर्शितंभवति । प्रायश्चित्तेंदुशेखरे । भार्य्यात्यागःअसत्प्रतिग्रहोपि पठितोऽत्र शूलपाणिनाऽयाज्यसंयाज्येत्यनेनवासत्प्रतिग्रहाध्यापने उपलक्षणविधया संगृहीते सुतस्यचेत्यत्र चकाराद्भार्य्यात्यागोपिसंगृहीतः किञ्च याज्ञवल्क्येन मिथ्याभिशंसी मिथ्याभिशस्तश्च प्रायश्चित्तेन शोधितौततश्चमतांतरे षष्टिभेदाअवगंतव्याः ६० अथैषांक्रमेणप्रायश्चित्तानि तत्रादौगोवधप्रायश्चित्तम् । मनुः। उपपातकसंयुक्तोगोघ्नोमासंयवान्पिवेत् कृतवापोवसेद्गोष्ठेचर्मणातेनसंवृतः १ चतुर्थकालमश्नीयादक्षारलवणंमितम् गोमूत्रेणचरेत्स्नानंद्वौमासौनियतेंद्रियः २ दिवानुगच्छेद्गास्तास्तुतिष्ठन्नूर्ध्वरजःपिवेत् शुश्रूषित्वानमस्कृत्यरात्रौवीरासनंवसेत् ३ तिष्ठंतीष्वनुतिष्ठेत्तुव्रजंतीष्वप्यनुव्रजेत् आसीनासुतथासीनोनियतोवीतमत्सरः ४

प्रायश्चित्तेंदुशेखर विषे भार्य्यात्याग और असत्प्रतिग्रहभी किहाहै और शूलपाणिजीने अयाज्य संयाज्यविषे उपलक्षणविधिकर्के असत्प्रतिग्रह और असत्कोंच्या शूद्रादिकों पडानाभीसंग्रह कीताहै और सुतस्यच इस चकारते भार्य्यात्यागभी संग्रहकीताहै किञ्चेति याज्ञवल्क्यजीने मिथ्याभिशंसी क्या तैनें मेरी वस्तु चुराई है ऐसे झूठ कहने वाला उसकोभीप्रायश्चित्तहै औ जिसको किहाहै उसकोभी जन्मांतरके दोषकी संभावना तें प्रायश्चित्त दखायाहै॥ इस कर्के इनां दोआं कोमिलाकर सठ ६० भेद उपपातकां दे निर्णय होएहैं ॥

पीछे कहे जो उपपातक अव उनोंका क्रमकर्के प्रायश्चित्त कथन करतेहां तिसके पहिले गोवधका प्रायश्चित्तहे इसमें मूलकी व्याख्याकोहि व्याख्याहै श्लोकोंकीनहि तिस विषें मनुजीका वाक्यहै ॥ उपेति इसश्लोकतें लेकर अष्टां ८ श्लोकांतक कुलकहै अनेन विधिना इसश्लोकपर्यंत उपपातक एह पद संज्ञाके दखाणे वास्तेहैं जिसने गो घात कीताहै सो पुरुष शिथिल क्या पतला जौं यवांदा काडा तिसको प्रथम एक मास क्या महीनापीवे इसमें गोघ्न शब्दका अर्थ शूलपाणिजीने दखायाहै (प्रश्न) गोघाती पदसे उपपातकीपदका अर्थ सिद्धहै फेर (उपपातक संयुक्तः) असा क्यों किहा(उत्तर)जो यज्ञविषे स्थितगौहै तिसके वधकरणे वाला उपपातकी नहिहै किंतु अनुपातकोहि इसकर्के उपपातकपद किहाहै एहि स्पष्टकर्के मूलमें लिखयाहै ॥ असा गोघाती दाडी औंर शिरको मुनायके तिसगौके

आतुरामभिशस्तांवाचौरव्याघ्रादिभिर्भयैः पतितांपंकलग्नांवासर्वोपायैर्विमोचयेत् ५ उष्णेवर्षतिशीतेवामारुतेवातिवाभृशम् नकुर्वीतात्मनस्त्राणंगोरकृत्वातुशक्तितः ६ आत्मनोयदिवान्येषांगृहेक्षेत्रेथवाखले भक्षयंतींनकथयेत्पिवंतंचैववत्सकम् ७ अनेनविधिनायस्तुगोघ्नोगामनुगच्छति सगोहत्याकृतंपापंत्रिभिर्मासैर्व्यपोहति ८ उपेत्यष्टभिःकुलकम् । अनेनविधिनायस्त्वितियावत् । गोघ्नोगोघातीशिथिलयवागूरूपेण प्रथममासं यवान्पिवेत् उपपातकेतिसंज्ञाप्रदर्शनार्थम् उपपातकसंयुक्तोगोघ्नोनतुयागादिविहितगोवधकर्त्तापीतिशूलपाणिः । कृतवापःसशिखंमुंडितशिराःलूनश्मश्रुःतेनहतगोचर्मणाछादितदेहोमासत्रयंयावद्गोष्ठेवसेत् १ किंच । नियतेंद्रियः सन्गोमूत्रेणस्नानमाचरेत् अक्षारलवणंकृत्रिमलवणवर्जितं हविष्यान्नंचतुर्थकालं एकाहंभुक्त्वाद्वितीयेह्निसायंद्वितीयतृतीयमासंयावदश्नीयात् २ दिवाप्रातस्तागाअनुगच्छेत् खुरप्रहारादूर्ध्वमुत्थितंरजस्तिष्ठन्सन्नास्वादयेत् शुश्रूषित्वाकंडूयनादिना तागाःपरिचर्य्यप्रणम्यच रात्रौभित्त्यादिकमनुवेष्ठ्यउपविष्ट आसीत अहनितिष्ठेद्रात्रावासीतेतिस्मृत्यंतरात् । उत्थितस्तुदिवातिष्ठेदुपविष्टस्तथानिशि एतद्वीरासनंनामसर्वकल्मषनाशनमिति ३

चर्मको ऊपर लयके त्रय ३ महीनें तकगौवांकीशालाविषें निवासकरे १ किंचेति इन्द्रियांको रोकके स्थितरहे औरगौके मूत्रकर्के स्नानकरे और कृत्रिम लूणतें रहित हविष्यान्नको चौथे पहर एकदिन भक्षणकरे और दूसरे दिन संध्याकाल विषें भक्षणकरे इसीतरां दूसरा तीसरा महीना व्यतीत करे २ दिवेति दिने प्रातः काल विषें गौवांको चारदा होया पीछे जावे और खुरां कर्के उठी जो धूड तिसको स्थित होके स्वाद लेवे और गौवांके खुरका पूजन करे और नमस्कारकरे और रात्रि विषें गौवांकी शालाविषें भित्तको चढाकर स्थित होवे ॥ दिनबिषें खडारहे और रात्रिबिषें बैठ कर निवास करे एह और स्मृतिविषें किहाहै ॥ उत्थितइति उठकर दिनें स्थित होवे रात्रिविषे बैठ जावे इसका नाम वीरासनहै जो संपूर्ण पापां के नाश करणेवालाहै ३

तथेति गौवांके उठयां होयां पीछे उठे और जद वनविषे फिरें तां पीछे पीछे वनविषेंफिरे तिनां गौवांके वैठयां होयां पीछेआप वैठे और इन्द्रियोंकों जितकर्के स्थित होवे इसमेभी छलतें रहित और क्रोधतें रहित होया होया ४ किंचेति और जो रोग कर्के युक्त गौ है अथवा चौर कर्के और व्याघ्रादिभयकर्के युक्त है और जो डिगोहै और जो चिकड विषे खुब्बी हैं तिनां दुःखां तें गौवांकी जैसें समर्थाहोवे तैसें हि उपायकर्के रक्षा करे ५ और गौवोंकीसेवाका प्रकार कहतेहैं तथेति तिस प्रकार सूर्य के ततहोयां होयां और वर्षा विषें और शीतविषें और अतिशयकर्के चलती जो वायुहै तिस विषें प्रथम गौवांकी रक्षा कर्के पीछे अपणी रक्षा करे ६ तैसेंहि अ पणे तें होरणांके घरविषें वा क्षेत्रविषें वा खलवाडे विषें क्षेत्र आदिकों भक्षणकरतीकों किसे ताईं

तथा उत्थितासुगोषुपश्चादुत्तिष्ठेत् वनादौपरिभ्रमंतीषुपश्चात्परिभ्रमेत् तासूपविष्टासूपविशेत् नियतोजितेंद्रियः वीतमत्सरोविगतक्रोधः ४ किंच आतुरांव्याधितांवाचौरव्याघ्रादिभयहेतुभिरभिशस्तामाक्रांतांपतितांकर्द्दम मग्नांवा यथाशक्तिसर्वोपायैर्विमोचयेत् ५ तथाउष्णेसूर्य्येतपति मेघेच वर्षति वाशीतेजातेसतिवाऽत्यर्थंवायौवातिसति यथाशक्ति गोरक्षामकृत्वा त्मरक्षांनकुर्यात् ६ तथाआत्मनोऽन्येषांवागृहेक्षेत्रे खलेसस्यादिभक्षयन्तींन कथयेत् क्षीरंपिबंतंवत्सकंच अनेनविधिना पूर्वोक्तप्रकारेण यो गोघ्नो गाः परि चरति सगोहत्याकृतं पापंत्रिभिर्मासैर्व्यपोहति अपनुदति ७।८ व्रतांतरद्वयमाहसएव वृषभैकादशकागाश्चदद्यात्सुचरितव्रतः अविद्यमा नेसर्वस्ववेदविद्भ्योनिवेदयेत् १ वृषभएकादशोयासांतागाःसुचरितव्रतः सम्यक्कृत पूर्वमासोक्तप्रायश्चित्तोदद्यादितिद्वितीयम्

न कहे और दुग्ध पींदा जो वच्छाहै तांभी किसेको न कहे और नआप हटाए ७ इस विधि कर्के पिछले प्रकार कर्के गौवांकी सेवा करता होया सो पुरुष गोहत्याकरणेसें प्राप्त होया जो पाप तिस कों तीन ३ महीनें कर्के दूर कर्ताहै ८ एह गोघ्न इत्यादि कर्के कहे होए श्लोकांकाहीअर्थ कीताहै अब मनुजी और दो व्रत कहतेहैं वृषेति सो उपपातकी वृषहै यारवां ११ जिनां विषे ऐसीयां दश १० गौवां को दान करे कैसा है उपपातकी भलीप्रकार प्रथमकीताहै पूर्वमासोक्त प्रायश्चित्त जिसने एह दूसरा व्रत किहाहै ॥ १॥

अब होर व्रतकहतेहैं तावेति तितने धनके ना होयांहोयां जितना अपणे पास धन है सो सं पूर्ण, वेदके जानणे वाले जो ब्राह्मण हैं तिनके ताईं दे देवे इस विषें भी पूर्वमासोक्त व्रतको पहिलेकरलेवे ऐसाजानणा एह तीसरा व्रत किहाहै ३ एह जो त्रय व्रत कहेहैं सो याज्ञवल्क्य कर्के कहे होए जो व्रत मास प्राजापत्य १ और मासपंचगव्याशन २ और वृषहै यारवां जिनां विषें ऐसीयां दस्सां गौवांका दान और साथ त्रिरात्रोपवासरूप व्रत त्रय ३ इनां कर्के बराबर हैं एह मिताक्षराकार का वाक्य हैजिसकाएहव्याख्यानहै तिसको अब कथन कर्तेहैं पंचेति जो पुरुष गोहत्या करणेवाला है सो एक महीना इंद्रियांको राकके स्थिर होवे

तावतिधनेऽविद्यमानेवेदविद्भ्यः सर्वस्वंदद्यादितितृतीयम्अत्रापिपूर्वमासोक्त व्रतानुवृत्तिः ३ एतच्चव्रतत्रितयंयाज्ञवल्कयीयमासप्राजापत्यमासपंचगव्या शनं ऋषभैकादशगोदानयुक्तत्रिरात्रोपवासरूपव्रतत्रितयेनसमानमितिमि ताक्षरा तद्यथा पंचगव्यंपिबेद्गोघ्नोमासमासीतसंयतः गोष्ठेशयोगोनुगामी गोप्रदानेनशुद्ध्यति १ कृच्छ्रंचैवातिकृच्छ्रंचचरेद्वापिसमाहितः दद्यात्त्रिरात्रं चोपोष्यवृषभैकादशास्तुगाः २ गांहंतीतिगोघ्नःअसौसमाहितआसीत किंकु र्वन्पंचतानिगव्यानिगोमूत्रगोमयक्षीरदधिघृतानि यथाविधिमिलितानि मिश्रितानिपिबन् आहारांतरपरित्यागेन भोजनकार्येतस्यविधानात् तथा गोष्ठेशयः प्राप्तशयनानुवादेन गोष्ठविधानेनदिनेशयननिषेधाद्रात्रौ गोघ्नो गोशालायांशयानः गोनुगामीगवानुगमनव्रतीव्रतेणिनिः अत्रयासांगवांस न्निधौगोष्ठेशेते वनमनुगच्छंतीःप्रातस्ताएवानुगच्छेत् अनुगमनवचनात्

और गो मूत्र और गोमय क्या गोआ और दुग्ध और दधि और घृत एह जो पंचगव्य है इस कोविधिके साथ रलाकर पीवे और कुछ ना भक्षण करे इसतरां एक महीना स्थित रहे जद और तिसीप्रकार गोष्ठेशयः इसवाक्य कर्के एह अभिप्राय हैं कि दिनविषें शयन का निषेध होणेतें रात्रिको गौशाला विषें शयन करें और गोनुगामी क्या गौआंके पीछे वन विषें जावें व्रत कर्के युक्त होया इसमेंभी ऐसाजानणा कि जिनांगोवांके समीप विषें शयन करे सोगौआं वन विषें जाण तां प्रातः काल विषें पीछे जावै जो किहाहै अनुगच्छेत् इस वाक्य कर्के

असी प्रतीति होइहै कि गौआं आपणी इच्छा कर्के वनकों जाण तां पीछे जावे जद गौआं
स्थित होण तां आपवी स्थित होवें क्योंकि तिसमें अनुगमनका संभव नहिहै १ और जद सायं
काल विषें गौआं शयन करण वाले स्थान कों प्राप्त होंण तां आपभी प्रात होवे और जेकर पी
छे गौशाला विषें प्राप्त होंणेकी सामर्थ्य न होवे तां वाहर स्थित होवे दरवाजे कों वंदकर्के एह
भी इसमें अभिप्राय जानणा ऐसें ही महीने पर्य्यन्त करे और महीने के पीछे एक गोदानकरे
ऐसें अनुष्ठान करणे कर्के गौ हत्या पापतें शुद्धिको प्राप्त होताहै इह इक व्रत किहाहै यद्वा
एक महीना गौशाला विषें शयनकों करता होया और गौआं के पीछे वनविषें फिरता

यदातागच्छंतितदाऽनुगच्छेत यदात्वनुतिष्ठंत्यासतेवा तदास्वयमपि
तिष्ठेदासीतवातत्रानुगमनस्याशक्यत्वादित्यर्थः १ तस्मादेवयदासायंगो
ष्ठेप्रविशेयुस्तदा ताभिःसह स्वयमपितदनुप्रविशेदित्यपिज्ञायते मासांते
गोप्रदानेनएकांगांदत्वाऽनुष्ठानेनगोहत्यायाः शुद्ध्यतीत्येकंव्रतम मासंगो
ष्ठेशयोगोऽनुगामीतिपदत्रयमनुवर्त्त्यं यद्वा मासंगोष्ठेशयोगोनुगामीसन्
कृच्छ्रप्राजापत्यंनिरंतरंसमाहितमनोवृत्तिश्चरेदित्यपरम् ❀ जावालेनापि
मासंप्राजापत्यस्यपृथक्प्रायश्चित्तत्वमुक्तम् यथाप्राजापत्यंचरेन्मासंगोहं
ताचेदकामतः गोहितोगोनुगामीस्याद्गोप्रदानेनशुध्यतीद्वितीयम् एवमेवा
तिकृच्छ्रंचरेदितितृतीयम्अथवात्रिरात्रमुपोष्य

होया और मनकीयां वासनाकों जित कर्के कृच्छ्र नाम जो प्राजापत्य व्रत है तिसकों निरंतरकरें
एह और प्रायश्चित्त किहाहै मतांतरदिखातेहैं जावालि ऋषिनें भी एक महीना प्राजा
पत्यकों करे एह पृथक् प्रायश्चित्त किहाहै तिसका वचन दिखाईदाहै यथेति एक महीना प्राजा
पत्यकों करे जेकर इच्छातें विना गौको मारे और गौआं की सेवाकों करदा होया और गौआं
के अनुसार पीछे वन विषें जांदा होया नित्य काल ऐसें हीं स्थित होकर गौका दानकरे तां गो
हत्या पापतें शुद्धिकों प्राप्तहोताहै एहदूसरा व्रत किहाहै और इसी प्रकार अतिकृच्छ्र व्रतकों क
रे एह तीसरा व्रत है अथवा त्रय दिनरात्र उपवास व्रतकों करके

वृषहै यारवां जिनांविषैऐसीयां गौत्र्यांको देवे अर्थात् दश गौत्र्यां एक वैल साथदान करे एह चौथा व्रत किहाहै ४ इसविषैंनो चौथाव्रत किहाहै सोमनुजीके वाक्य कर्के किहा जो पीछे सर्वस्वदान अर्थात् संपूर्ण धनकादेणा तिसके तुल्य है तिसका विषय दिखातेहैं अकामेति जो जातिमात्र ब्राह्मणहै संध्यावंदनादि कर्म तों रहित तिसकी जो सौशील्यादि गुणोंते रहित गौ तिसके इच्छातें विना वध विषेएह प्रायश्चित्त देवणे योग्यहै और जोब्राह्मण संध्यावन्दनादिकर्मोंकर्केयुक्त है तिसकी जो गुणों कर्के युक्त गौं तिसके वध विषे द्विगुण क्या दूणा प्रायश्चित्त किहाहै और क्षत्रिय संवन्धीजो गुणों कर्के युक्त गौहै तिसके वध विषे पाप के दूरकरणवास्ते महीना पर्यंत पंचगव्यकों भक्षण करे इस मनुजीके वाक्यकर्के किहा होत्र्या जो द्वितीय प्रायश्चित्त तिसके समहै और वैश्यसंबंधी जो गुणों कर्के युक्त गौहै तिसके मारणे विषे एक महीना अतिकृच्छ्र व्रतके करणे सें शुद्ध होताहै

वृषभएकादशोयासांतागादद्यादितिचतुर्थम् अत्रचतुर्थंमानवीयसर्वस्वदानात्मकतुल्यम् अकामकृतेज्ञातिमात्रब्राह्मणस्वामिकगोमात्रवधेद्रष्टव्यं विशिष्टस्वामिकायाविशिष्टगुणवत्याश्चवधेद्विगुणंकल्प्यम् क्षत्रियसंबंधिन्यास्तादृशायागोर्वधेमासपंचगव्याशित्वरूपं मानवीयद्वितीयसमम् वैश्यसंबंधिन्यास्तुतादृग्विधेव्यापादने मासातिकृच्छ्रंकुर्यात् शूद्रस्वामिकगोहत्यायांमासप्राजापत्यरूपंमानवीयप्रथमसमम् अत्रपूर्वपूर्वतउत्तरोत्तरस्यलघीयस्त्वंप्रत्याम्नायविधया विज्ञानेश्वरेणोक्तं ततएवावधार्य्यम् ब्राह्मणसंबन्धिद्रव्यस्यगुरुत्वम् देवब्राह्मणराज्ञांतुविज्ञेयंद्रव्यमुत्तममिति नारदोक्तवचनाद्बोध्यम् एतदेवव्रतचतुष्टयम् साक्षात्कर्त्रनुग्राहकप्रयोजकानुमंतृषुगुरुलघुभावतारतम्यापेक्षयापूर्वविषयेप्रयोजनीयम्

और शूद्रकी गौके मारणें विषे एकमहीना प्राजापत्य व्रत कों करे एह मनुजीने किहा जो प्रथम व्रत तिसके तुल्यहै इस विषे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इनांको प्रायश्चित्त क्रम कर्के थोडा थोडा किहाहै एह निर्णय पीछे भी आयाहै फेर प्रसंगते किहा है प्रत्याम्नाय क्या परंपरासंप्रदायविधि कर्के अथवा विज्ञानेश्वरजीने कहा है इसकाविशेष उसी जगाते धारणे योग्यहै इसमें बीज एह हैकि ब्राह्मण संबंधि वस्तु सबतें श्रेष्ठ कहीहै सो नारदजीके वाक्य कर्के जानणे योग्य है तिसवचनकोंदिखातेहैं देवेति क्या देवता ब्राह्मण राजा एनांका द्रव्य जो है सोउत्तम किहाहै परंतु एह जो गोवधके चार व्रतहै सोंजोंसाक्षात् वधकरणेवालाहै और जोवधकर्के आधा पुरुष तिसका रक्षाकरणवालाऔर जों प्रेरणाकरणवाला और जोवधकरणे विषे युक्तहै तिसको प्रेरणेवाला इनांको गुरुलघुभावकर्के प्रायश्चित्त देणेयोग्यहै पहिले को संपूर्ण दूसरे को पाद तीसरेको आधा चौथेको एकपाद इस क्रम कर्के जानणा

इसविषे धर्म्मराज जपणे योग्य जो गोमती विद्या तिसकों कहताहै गोमतीमिति जोमें धर्म्मरा ज गोमती विद्याकों कहताहां तिसको मेरेतें श्रवण करो हेब्राह्मणो मनकों एकाग्र करके १ गौआं नित्य सुरभियां हैं अर्थात् यशवालियांहैण औार गुग्गुल धूपकी गंधवालियांहैं अर्थात् तिनके दुग्धादिसें देवताके प्रसन्न करणे वाला गुग्गुलगन्धके तुल्य गंधआउताहै औार जीवांकी प्रतिष्ठारूप हैं क्याजिसके घर गौआं होण उसकी अभ्यागतादिके सत्कारसे लोक प्रतिष्ठा कर तेहैं इसीकर्के स्वस्त्ययनरूप क्या स्वस्त्ययनसे प्रारब्धकार्य्योंकीयां सहायकहैं २ औार देवतयांका उत्तमहवि अन्नरूपभी गौआंहि हयण औार सवजीवां को पवित्रकरण वालीयां औार रक्षाकरण वालीयां औार दुग्धकों देणवालीयां औार वस्तुओंके पुचाणवालिआंहैन ३ औार मंत्रांकर्के पवि

अत्रजप्यांगोमतींविद्यांयमत्राह गोमतींकीर्त्तयिष्यामिसर्वपापप्रणाशिनीं तांतुमेवदतोविप्राः शृणुध्वमुसमाहिताः १गावःसुरभयोनित्यंगावोगुग्गुल गंधिकाः गावःप्रतिष्ठाभूतानांगावःस्वस्त्ययनंमहत् २ अन्नमेवपरंगावोदे वानांहविरुत्तमम् पावनंसर्वभूतानांरक्षंतिचवहंतिच ३ हविषामंत्रपूतेनत र्पयंत्यमरान्दिवि ऋषीणामग्निहोत्रेषुगावोहोमप्रयोजिकाः ४ सर्वेषामेव भूतानांगावःशरणमुत्तमम् गावःपवित्रंपरमंगावोमंगलमुत्तमम् ५ गावःस्व र्गस्यसोपानंगावोधन्याःसनातनाः नमोगोभ्यःश्रीमतभ्यःसौरभेयीभ्य एवच नमोब्रह्मसुताभ्यश्चपवित्राभ्योनमोनमइति ६ अपरार्केवहुकर्तृकेतुह नने संवर्त्तापस्तंवौ विशेषमाहतुः

त्र जो हवि तिसकर्के देवतयांकी स्वर्ग विषें तृप्तिकरण वालीयां औार ऋषियां को अग्निहोत्र वि षें होमकी प्रवृत्ति कराण वालीयांहैं ४ औार संपूर्ण जीवांकी शरण क्या रक्षारूपहैं औार परम पवि त्रहयण औार मंगलरूप हयण अर्थात् दर्शनसेंभी पुण्यजनकहैं ५ औार स्वर्गकी पौडी रूप हय ण सो असीयां गौआं धन्य हयण औार सनातनहैं तिनां गौआं ताई नमस्कार होवे जो शोभा कर्के युक्तहैं औार सुरभिकीयां कन्याहैं तिनांताई नमस्कार होवे औार जो ब्रह्माकीयां कन्यासर्व था पवित्रहैं तिनाताई नमस्कार होवे नमस्कार होवे एह अधिकआदरविषे पुनरुक्तिहै ६ अपरार्कवि षें जो किहाहै वहुतयां कर्के गौके मृत होयां होयां तिसविषें संवर्त्त औार आपस्तंवऋषि विशेषकहतेहैं

एकेति जिसतरांकर्के गोहत्या होईहै तिसके अनुसार जो व्रत कहाहै तेंकर वहुत पुरुष एकगौंकों मारण तां तिसव्रतकें एकएकपादको सब भिन्न २ करण १ परन्तु ऐसाभी विचारहै कि चार व्रतों विचों जिसको जो व्रत व्यवस्था सें आवे तिसीका पाद जानणा एकेति एह जो पद है सो औरके दखाने मात्रहै इसकारणतें वहुतयां पुरुषां कर्के एक गौ वा दो गौआं वा वहुत गौआं मृतहोण तां इक इक पुरुषनें त्राय त्रय पाद अथवा दो दो पाद गोहत्या पापकें दूर करणे वास्ते व्रत करणे योग्य है १ अब इसीका प्रतिद्वंद्वि अर्थ कहतेहैं एकेनेति जद इकपुरुषसें वंधनादि कर्के अथवा रोकणे कर्के वहुत गौआं मृत होण तिसविषें संवर्त्तऋषि

एकाचेद्बहुभिःकाचिद्दैवाद्व्यापादिताक्वचित् पादंपादंतुहत्यायाश्चरेयुस्तेपृथक्पृथगिति १ यादृग्विधगोहत्यायांयद्व्रतमुपदिष्टंप्रत्येकंतत्पादंपादंकुर्य्युः एकाचेदित्युपलक्षणम् अतोबहुभिर्द्वयोर्बहूनांचव्यापादनेप्रतिपुरुषंपादद्वयं पादोनंवा कल्पनीयम् यदातु एकेनैवरोधनादिव्यापारेणबहवोगावोव्यापादितास्तत्रसंवर्त्तापस्तंबौविशेषमाहतुः व्यापन्नानांबहूनांतुरोधनेबंधनेपिवा भिषङ्मिथ्योपचारेचद्विगुणंगोव्रतंचरेत् १ बहुष्वपिव्यापन्नासु न प्रतिनिमित्त नैमित्तकानुष्ठानं नापितंत्रेण किंतुवचनाद्द्विगुणमेवेत्यर्थः यत्तुपराशरवचनम् ग्रामघातेशरौघेणवेश्मभंगनिपातने अतिवृष्टिहतानांचप्रायश्चित्तंनविद्यते१

और आपस्तंबऋषि विशेष कहतेहैं व्यापन्नानामिति रोकणे कर्के वन्नणे कर्के और औषधिआं कें मिथ्या प्रचार कर्के क्या देणी थी होर औषधी और होर दित्तीजावे अथवा और विधिसे देणीथी और होर विधिसें दित्तीगई तिसकर्के जद वहुत गौआं मृत होण तो दूणा गोव्रत करे १ इसमें ऐसा विचारहै कि वहुतियां गौयांके मारयां होयां एक एकके निमित्ततें वहुतहि व्रत करणे चाहिए अथवा सबके निमित्त एकहि व्रतकरणाचाहिए एहदोनो पक्ष नहि स्वीकार करणे किंतु दूणा व्रत करणे योग्यहै क्योंकि वचनके वलसे एह विचार दूसरे प्रकरणाविषेंभी आचुकाहै १ पहलेंतें विशेष कहतेहैंयत्त्विति जोपराशरजीका वचनहै ग्रामके नष्टहोयां २ और वाणकेंसमूहकर्के औरघ रदे डिगयां होयां जकरऔर वडीवर्षादे होयां वहुत गोवां मृतहोण तां तिसविषेंप्रायश्चित्तनहिंकरणा१

कूपइति और किसे धर्म्मके अर्थ करके वनाए होए खूये विषें और गृहके दाह विषें और ग्रामके दाह विषें और किसेस्थानके दाहके होयां २ गौ मृत होवे तां प्रायश्चित्त नहि करणा२ एह वाक्य जिस पशुको वन्धन नहिहै तिसविषे जानणे योग्यहै जिसको वंधनहै तिसके अर्थ आपस्तंवजीने भिन्नकर्के किहाहै ॥ कांतारेष्विति कांतार क्या वनादि और गृह क्या घर तिनके दाहविषें और खलवाडेकेदाहाविषें जेकर गौ मृत होवे तां एकपाद व्रत करणेसें शुद्ध होजाताहै १ और विशेषवास्ते वृहस्पति का वचनहै गर्भीति गर्भवाली और कपिला और दुग्धदेणें वाली और होमधेनु और सुंदर स्वभाव वाली गौ इनांकों मोहआदि कर्के मारे तां दूणा व्रत करे १ इसमें भी विशेष कहतेहैं यदीति और जेकर दंडके मारणे कर्के गौ जीवती रहे और

कूपेखातेचधर्म्मार्थेगृहदाहेचयामृताः ग्रामदाहेतथागारेप्रायश्चित्तंनविद्यतइति२ इदंतुवंधनरहितेपशौवोध्यम् इतरथातुआपस्तंवेनोक्तम् कान्तारेष्वथसर्वेषुगृहदाहेखलेषुच यदितत्रविपत्तिःस्यात्पादएकोविधीयतइति १ वृहस्पतिः गर्भिणींकपिलांदोग्ध्रींहोमधेनुंचसुव्रताम् मोहादिनाघातयित्वा द्विगुणंगोव्रतंचरेत् १ यदिलगुडादिघातेनगौर्जीवतिगर्भमात्रघातोभवति तदाविशेषमाहयमः पादमापन्नमात्रेतुद्वौपादौगात्रसंमिते पादोनंव्रतमाचष्टेहत्वागर्भमचेतनम् १ चेतनगर्भघातेतु कृत्स्नमेवप्रायश्चित्तमितिकेचित् पराशरस्तु निष्पन्नसर्वगात्रस्तुदृश्यतेवासचेतनः अंगप्रत्यंगसंपूर्णोद्विगुणंगोव्रतंचरेत् १ पादेंगरोमवपनंद्विपादेश्मश्रुणोपिच त्रिपादेतुशिखावर्जंसशिखंतुनिपातने २

गर्भ छणजावे तिसविषें धर्म्मराज कहताहै पादमिति अंगांतें रहित गर्भके पातविषें एकपाद व्रतकरे और अंगउत्पत्तिके होयां२ गर्भके पातविषें दोपाद व्रतकरे और अचेतन गर्भके पातविषें तीनपाद व्रतकरे १ और सचेतन गर्भके पातविषें संपूर्ण प्रायश्चित्त करे एह केंकहतेहैं पराशरजी और कहतेहैं निष्पन्नेति जेकरगर्भ निष्पन्नगात्रहोवे क्यासब अंगां वाला होवे और सचेतन प्रतीत होवे क्याजिसवेले वाहरहोवे उसवेले थोडा चिर जीवित रहकर मृतहोवे और अंगोकेसाथ प्रत्यंगअंगुल्यादिभी स्पष्टकर्के होण ऐसी गौ के हतहोयां २ गौवधका प्रायश्चित्त करे १ इसमेंमुंडनकी विधि कहतेहैं पादइति एकपाद व्रतविषें अंगां उप्पर जो रोम तिनांका मुण्डन करावे और दोपाद व्रतमे श्मश्रु क्या दाडीकाभीसाथ मुंडन करावे और त्रिपाद व्रत विषें शिखातें विना मुण्डन करावे और संपूर्ण प्रायश्चित्त विषें सहित शिखाके मुण्डन करावे २

अब इसमें दानविशेष भीकहतेहैं पाद इति और पाद व्रत विषे दोवस्त्र देवे और दोपाद व्रत विषें कांस्यपात्र देवे और त्रिपादव्रतविषे एकगौ और वृषदेवे और संपूर्ण व्रतविषें दो गौआंदा नकरे तदशुद्धहोताहै२ अबवृहस्पतिजीकावचनहै जेकर पुरुष वहुत वृद्धगौ और बहुवलिस्सी और बहुत छोटी और रोगवाली ऐसीआंगौयांको मारें तां पूर्व विधिकरकेअर्द्ध व्रतकोंकरें१ इसकातात्पर्य कहतेहैं नीति जितना प्रायश्चित्त नीरोगगौकाहै एह प्रायश्चित्त साक्षात् गौवधकेविषे कहाहै साक्षात् गौवधके प्रकार आपस्तंब ऋषिनें दखाए हयण पाषाणेरिति पत्थरकर्के और दंडकर्के और शस्त्र कर्के वा और किसे साधन कर्के वा वलतें मोहतें गौ को जो पुरुष मारते हयण तिनां कों

पादेवस्त्रयुगंचैवद्विपादेकांस्यभाजनम् त्रिपादेगोवृषंदद्याच्चतुर्थेगोद्वयंस्मृतम् ३वृहस्पतिः अतिवृद्धामतिकृशामतिबालांचरोगिणीम् हत्वापूर्वविधानेनचरेद र्द्धव्रतंनरःनीरोगादिवधेयत्प्रोक्तंतस्यार्द्धम्एतत्प्रायश्चित्तंसाक्षाद्गोवधविषयम् साक्षाद्गोवधप्रकारास्त्वापस्तम्बेनदर्शिताः पाषाणैर्लगुडैर्वापिशस्त्रेणान्येनवा वलात् निपातयंतियेमोहात्तेषांसर्वंविधीयते १वृहत्प्रचेतसाप्यत्रविशेषउक्तः एकवर्षेहतेवत्सेकृच्छ्रपादोविधीयते अबुद्धिपूर्वंपुंसःस्याद्द्विपादस्तुद्विहायने त्रिहायनेत्रिपादःस्यात्प्राजापत्यमतःपरमिति १ वैर्य्यादिद्वेषेणकामकृतगो वधे निमित्तविशेषे प्रायश्चित्तमाह वृहत्पराशरः काष्ठलोष्टकपाषाणैःशस्त्रै णैवोद्धतोवलात् व्यापादयतियोगांतुतस्यशुद्धिंविनिर्द्दिशेत् १ चरेत्सांतप नंकाष्ठेप्राजापत्यंतुलोष्टके तप्तकृच्छ्रंतुपाषाणेशस्त्रेणैवातिकृच्छ्रकमिति २

संपूर्णव्रत किहाहै१ इसविषे वृहत्प्रचेतस ऋषिनें विशेष किहाहै एकेति न जानकर्के एक वर्षके वच्छे कोमृतहोयां २ कृच्छ्र व्रतके पादकों करे और दोवर्षके वच्छेके मृतहोयां २ दोपादव्रत करे और त्रयवर्षके वच्छेके मृतहोयां २ त्रयपादव्रतकरे इसते उपरंतहोवेतां प्राजापत्य व्रतकरेतो शुद्धहोताहै१ और वैर कर्के इच्छा पूर्वक गौके वध विषें प्रायश्चित्तकों वृहत्पराशरजी कहतेहैं काष्ठेति काष्ठकर्के मृत होवे तां सांतपन व्रत करे लोष्ट कर्के मृत होवे तां प्राजापत्य व्रत करे पत्थर कर्के मृतहोवे तां तप्तकृच्छ्र व्रत कों करे शस्त्र कर्के मृत होवे तां अति कृच्छ्र व्रत कों करे तां शुद्धहोताहै २

मुष्टीति और मुक्कीके मारणे कर्के और किछे कर्के और शृंगादिके पुट्टणे कर्के और दंडके मारण कर्के जिस पुरुषसें गौ मृत होवे तिसकों गोवध कहे और तिसकोंभी अतिकृच्छ्रका निर्देशहै ॥ ३ ॥ इसीकाविशेष कहतेहैं हलइति हल विषेंऔर गड्डे विषें जो पुरुष निर्बल बैलकोंजोडताहै सो पुरुष तिसप्रत्यवायके होयां होयां गोवध पापकों प्राप्त होताहै तिसकोंभी पूर्वोक्तप्रायश्चित्त है ॥ ४ ॥ इसमें और विशेषवास्ते नारदजीका वचनहै दमनइति खस्सी करणे कर्के और किसें पासोंकरवाणे कर्के और रोकणे कर्के और बलवालीआं गौयांके साथ निर्बल गौयां के जुटणे कर्के स्तंभके साथ संगल पाणे कर्के और फाही कर्के गौके मृत होयां होयां त्रयपाद व्रतकों कर्के शुद्ध होताहै १ अतिदाहेति अतिशयकर्के अग्निके दाह कर्के औरबहुत वाहणें कर्के और नासिका विषें रस्सी पाणे कर्के और नदीपर्वतविषें रोकणे कर्के गौ मृत होवे तां त्रिपाद व्रतकरे २

मुष्टिघातेनकीलेनतथाशृंगादिमोटनैः लगुडादिप्रहारेणगोवधस्तस्यनिर्दिशेत् ३ तस्याप्यतिकृच्छ्रकं प्रायश्चित्तंनिर्दिशेदित्यर्थः हलेचशकटेचैवदुर्बलंयोभियोजयेत् प्रत्यवायेसमुत्पन्नेतत्रप्राप्नोतिगोवधम् ४ अत्रापि पूर्वोक्तमेव प्रायश्चित्तम् विशेषमाहनारदः दमनेदामनेचैवरोधेसंघातयोजने स्तंभशृंखलपाशैश्चमृतेपादोनमाचरेत् १ बलवतीभिःसहनिर्बलायायोजनंसंघातयोजनम् अतिदाहातिवाहाभ्यांनासिकाछेदनेतथा नदीपर्वतसंरोधेमृतेपादोनमाचरेत् २ दीर्घरज्वाकृतेचैवप्रग्रहेयुग्मयोजिते लग्नयुग्यमृतेचैवद्विपादंतत्रनिर्दिशेत् ॥ ३

इसमे भी विशेष कहतेहैं दीर्घेति वडीरस्सी कर्के गौके ग्रहण विषे इसमे एह अभिप्रायहै कि लम्मी रस्सी कर्के किसे जगां घासके अर्थ गौ वद्धी औरपीछे व्याघ्रादिनें मारी तद एह अदाव्रतहै और एक वाहकों दूसरेके साथ वाहणे कर्के सो वाह इसजगा दोप्रकारकाहै एक पंजाली पाणे कर्के और दूसरा लादे कर्के दोनों विषे एह विचार जानणाकि इसमें जुंगलेका लागा लगणे पिछे कीडे आदिक रोगकी मृत्यु विषे एह है और किसें जगा लग्नयुग्ममृते ऐसाभी पाठहै तिसजगा दोरस्सेदी गंड कर्के अथवा दो गंडी कर्के मृत होवे ऐसा अर्थहै और जुंगले के जुटणे कर्के मृत्यु विषे दोपाद व्रत करे३

घंटेति और घंटा भूषण के दोष कर्के गौकी मृत्यु होवे तां अर्द्ध व्रतकोंकरे क्योंकि सो घंटा भूषण वास्ते पायाहै इस कारणतें अर्द्ध व्रत किहाहै ४ अब पराशरजीका वचन कुच्छ पूर्वोक्तसें विलक्षण दखाईदाहै अतीति बहुत दाह विषे और बहुत वाहणे विषे और नासिकाके छिद्र करणे विषे और नदी और पर्वत के उप्पर रोकणे कर्के गौकी मृत्यु होवे तां प्रायश्चित्तकों करे अर्थात् उपकारके अर्थभी एह अतिदाहादि होण तथापि प्रायश्चित्त करणा चाहिए एहआभि प्रायहै परंतु इसमें भी पूरा प्रायश्चित्त करणा चाहिए॥ १ ॥ इसकाविवेक पराशरजी कहतेहैं अतीति बहुत अग्निके दाह कर्के मृत्यु होवेतां एक पाद व्रत करे और बहुत वाहणे विषे मृत्यु होवे तां दोपाद व्रत करे और नासिका के छिद्र करणे विषे त्रयपाद व्रत करे इसजगा नासिका पद कर्के नासिकाका छेदन जानणा अतपदलोपी समास होणेतें ॥ और नदी और पर्वत विषे डिगे तां

घंटाभरणदोषेणविपत्तिर्यत्रगोर्भवेत् गोघ्नोर्द्धंतुचरेत्तत्रभूषणार्थंहितत्स्मृतम् ४
पराशरःअतिदाहेतिवाहेचनासिकाभेदनेतथा नदीपर्वतसंचारेप्रायश्चित्तंवि
निर्दिशेत् १ अतिदाहेचरेत्पादंद्वौपादौवंधनेचरेत् नासिकापादहीनंस्याच्चरे
त्सर्वंनिपातने २ काष्ठलोष्टाश्मभिर्गावःशस्त्रैर्वानिहतायदि प्रायश्चित्तंकथंत
त्रशास्त्रेणात्रविधीयते ३ काष्ठेसांतपनंकुर्यात्प्राजापत्यंतुलोष्टके तप्तकृच्छ्रं
तुपाषाणेशस्त्रेवाप्यतिकृच्छ्रकम् ४ प्रत्याम्नायोपितेनैवदर्शितः पंचसांत
पनेगावःप्राजापत्येतथात्रयः तप्तकृच्छ्रेभवंत्यष्टावतिकृच्छ्रेत्रयोदश ५ ॥

संपूर्ण व्रत करे इसमें ऐसा जानणा कि आप धक्का देकर्के जेकर गौकों गिडावें तद एह प्राय श्चित्त है ॥ २ ॥ काष्ठेति और काष्ठ और मृत्तिका की जिल और पत्थर और शस्त्र इनां कर्के जद गौकी मृत होवे तां शास्त्रकी विधि कर्के प्रायश्चित्त कों करे तद शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ पूर्वोक्त निमित्त विषें कहतेहैं काष्ठेति काष्ठ कर्के गौ मृत होवे तां सांतपन व्रत करे और लोष्ट कर्के मृत होवे तां प्राजापत्य करे और पत्थर कर्के मृत्युहोवेवां तप्त कृच्छ्र व्रतकों करे और शस्त्र कर्के मृत होवें तां अति कृच्छ्रव्रतकों करे ॥ ४ ॥ इसी विषें पराशरजीने प्रत्याम्नाय दिखायाहै प्रत्या म्नाय नाम उसकाहै कि उक्त विधिके करणे को असमर्थ देखकर तिसके तुल्य दूसरी विधि करणी जिस पुरुषसें सांतपन व्रत नहोवे तां पञ्च गौआं दान करे और प्राजापत्य विषे त्रय गौआंदान करे और तप्त कृच्छ्र विषें अठ ८ गौआं और अतिकृच्छ्र विषें तेरां १३ गौआं देवे ॥ ५

अब और विशेषकहतेहैं प्रमेति प्राणधारी और जीवांकी हिंसा विषे जिसका उह प्राणी होवें
तिसके तांई मारेहोए जीवके तुल्य वस्तुदेवे अथवा तिसका मुल्ल देवे और पिच्छे प्रायश्चित्त करे
अथवा तिसके तुल्यदानकरे तद शुद्ध होताहै ॥ जैसे अश्वके मारणेविषें अश्वदानकरे वा तिसके
तुल्यमुल्लकोंदेवे एह मनुजीका वाक्यहै ॥६॥ अस्थीति और गौआं की हड्डीकों भन्ने वा पुछ को
कटे वा कर्ण वा शृंगकोकटेतो अर्द्ध महीनाजवांको पीवे तां शुद्धहोताहै ॥ ७ ॥ भवदेवजीके व
नायें होऐ ग्रंथविषें किहाहै किगौके स्वामीके तांई जो गौ मृत्यु होइ है तिसीके तुल्यगौ देककें
एह प्रायश्चित्तकरे अब इसमै और स्मृतिके वचनसे गोघात प्रायश्चित्तका विशेष अर्थ कहतेहैं

प्रमापणेप्राणभृतांदद्यात्तत्प्रतिरूपकम् तस्यानुरूपंमूल्यंवाददद्यादित्यब्रवी
न्मनुरिति ६ अस्थिभंगंगवांकृत्वालांगूलस्यचभेदनम् पाटनेकर्णशृंगाणां
मासार्द्धंतुयवान्पिवेत् ७।भवदेवीये।इदंचप्रायश्चित्तं गोस्वामिने व्यापन्नस
दृशींगांदत्वैवकार्य्यम्। पाषाणेनैवदंडेनगावोयेनाभिघातिताः शृंगभंगेचरे
त्पादंद्वौपादौनेत्रघातने १ लांगूलेपादकृच्छ्रंतुद्वौपादावस्थिभंजने त्रिपा
दंचैवकर्णेतुचरेत्सर्वंनिपातने २ शृंगभंगेस्थिभंगेचकटिभंगेतथैवच यदिजी
वतिषण्मासान्प्रायश्चित्तंनविद्यते ३

पाषाणेनेति पत्थर ककें और दंडककें गौआंको जिसनें मारयाहै सो पुरुष शृंगकेभज्जयां
होयां पाद व्रत करे और नेत्रके घात होयां होयां दो पाद व्रत करे ॥ १ ॥ और
पूछल के दूर होयां २ पाद व्रत करे और अस्थि के भज्जयां होयां दोपाद व्रत करें और कर्णाके
दूर होयां त्रिपाद व्रत करे और मृत्युके होयां २ संपूर्ण व्रत करें ॥ २ ॥ अब इसमें और विशे
षकहतेहैं शृंगेति शृंगकेभंगाविषें और अस्थिकेक्या हड्डीकेभंगाविषें और कटिके भंगविषें अर्था
त् मध्यभागके भंगविषें जेकर गौ छे ६ महीनें जीवती रहे फेर मृत होजावे तां पीछे प्रायश्चित्त
नहिं करणा परन्तु शृंगादि भंग करणे वाला गौयोंकीसेवापरायण रहे तद दोष नहिंहै ॥ ३ ॥

अब इसीबात कों कथन करतेहैं व्रणेति व्रण भंग उसको कहतेहैं जो शृंगादिकांदे भंग कीत्ते होयां अधिक व्रण हो जावे तिसके होयां होयां अपणे हत्थ कर्के घृत आदि मले और घासभक्षणकरवाए जितनापर्यंत गौवलसंयुक्त न होवे इसमें कोईक (अंग भंगेचकर्त्तव्यः) ऐसा पाठभी कहतेहैं ॥ ४ ॥ यावदिति जितना पर्यंत संपूर्ण अंगां कर्के वल संयुक्त नहि होवे तितना काल पर्यंत तिसकी पालना करे फेर गौका रूप सुवर्ण वा चांदीदावणाकर ब्राह्मणकों नमस्कार कर्के देवे इतना प्रायश्चित्तभीकरे ॥ ५ ॥ यदीति जेकर गौकी चिकित्साकर्के संपूर्ण अंग न होण तद तिसका नाम हीनदेहहै तां सो अंगभंग करणे वाला गोहत्याका जो अर्द्ध प्रायश्चित्तहै तिसकोंकरे

व्रणभंगेचकर्त्तव्यःस्नेहाभ्यंगस्तुपाणिना यवसश्चोपहर्त्तव्योयावद्दृढवलो भवेत् ४ यावत्संपूर्णसर्वांगस्तावत्तंपोषयेन्नरः गोरूपंब्राह्मणस्याग्रेनमस्कृत्वाविसर्जयेत् ५ यद्यसंपूर्णसर्वांगोहीनदेहोभवेत्तदा गोघातकस्यतस्यार्द्धं प्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ६ इतिपराशरकथनात्। तथाचमनुः। योयस्याहिंस्याद्द्रव्याणिज्ञानतोऽज्ञानतोपिवा सतस्योत्पादयेत्तुष्टिंराज्ञेदद्याच्चतत्समम्। इति १ एतच्च प्रायश्चित्तं ब्राह्मणस्यैवहन्तुर्वेदितव्यम्। क्षत्रियादेस्तुहंतुर्विशेषमाह वृहद्विष्णुः ॥ विप्रेतुसकलंदेयंपादोनंक्षत्रियेस्मृतम् वैश्येर्द्धंपादएकस्तुशूद्रजातिषुशस्यतइति ॥ १ ॥

इस पराशरजीके कथनतें ६ तथेति तैसेंहि मनुजीकहतेहैं यइति जो पुरुष जिसके पशु आदि पदार्थका जाण कर्के वा नजानकर्के नाशकरे सो जिसका द्रव्य नाश कीत्ताहै तिसकी प्रसन्नताकरे और तिसीके तुल्य धन राजाकेतांई देवे तदशुद्धहोताहै ॥ १ ॥ एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त गोहत्याकरण वाले ब्राह्मणकों किहाहै और क्षत्रियादि मारण वाला होवेतां तिस विषें बृहद्विष्णुजी कहतेहैं विप्रइति ब्राह्मण विषें संपूर्ण प्रायश्चित्त देवे और क्षत्री विषे त्रिपाद देवे और वैश्यविषें दो पाद व्रतदेवे और शूद्रविषें एकपाद व्रत किहाहै ॥ १ ॥

और स्मृतियों मैभी किहाहै प्रायइति जो प्रायश्चित्त ऋषियोंनें ब्राह्मणकों किहाहै तिस प्रायश्चित्तकों क्षत्री पादऊन करे और वैश्य दोपाद करे और शूद्र एकपाद करे संपूर्ण पापां विषें एही विधिहै परंतु एह प्रायश्चित्त प्रातिलोम्यानुष्ठितसाहसतें भिन्नजानणा अर्थात् शूद्र तिन्नां ३ वर्णोंका अपराध करे और वैश्य दो २ का और क्षत्री एक १ ब्राह्मण का अपराध करे तद प्रातिलोम्यापराधहै इसविषें ऐसीव्यवस्थाहै किं ब्राह्मणको क्षत्रियादिके अपराध विषें जितना दंडहै तिसतें दूणा क्षत्रीकों ब्राह्मणके तिसी अपराध विषें जान्नणा ऐसे औरभी जाणो १ अब चार प्रकारका साहस कहतेहैं मनुष्येति मनुष्यका मारणा और वस्तुकाचुराणा और परस्त्रीका सेवणा और दोप्रकारका पारुष्यहैं एक कठोरवचन और दूसरा दंडमारणा एह चारप्रकारका साहसहै २ अब

स्मृत्यंतरेतु प्रायश्चित्तंयदाम्नातंब्राह्मणस्यमहर्षिभिः। पादोनंक्षत्रियःकुर्यादर्द्धवैश्यःसमाचरेत्शूद्रःसमाचरेत्पादमशेषेष्वपिपाप्मस्विति ॥ १ ॥ इदंच प्रातिलोम्यानुष्ठितचतुर्विधसाहसव्यतिरिक्तविषयम् मनुष्यमारणंचौर्यंपरदाराभिमर्शनम् पारुष्यमुभयंचेतिसाहसंस्याच्चतुर्विधम् २ स्त्रीणांविशेषमाहपराशरः ॥ प्रायश्चित्तंहिनारीणांनप्रव्रज्याजपादिकम् नगोष्ठेशयनंतासां नवसीरन्गवाजिनम् १ सर्वान्केशान्समुद्धृत्यच्छेदयेदंगुलिद्वयम् सर्वत्रैवंहि नारीणांशिरसोमुंडनंस्मृतमिति २ पुरुषेषुविशेषःसंवर्तेनदर्शितः। पादेंगरोमवपनंद्विपादेश्मश्रुणोपिच त्रिपादेतुशिखावर्जंसशिखंतुनिपातन इति १ ॥

स्त्रीयांको पराशरऋषि विशेष कहतेहैं प्रेति स्त्रीयांको ऐसा प्रायश्चित्तहै संन्यास नहिं लयणा और जपआदि नाहिं करणे और गौशालाविषें शयन नहिं करणा और गोचर्मउप्पर नहिं लेणा १ सर्वातिनि स्त्रीयांकोदोअंगुली प्रमाण शिरके वाल कटाणे योग्यहैं संपूर्ण केशों के उठाणे पूर्वक त्यागके एही स्त्रीयांको संपूर्ण शास्त्रांविषें मुंडनकिहाहै २ और मुंडनकापुरुषां विषें विशेष संवर्त्त ऋषिनें दखायाहै पादइति एक पाद व्रत विषें शरीरकेही वालांनू मुनावे और दो पाद व्रत विषें दाडीको मुनावे और त्रिपाद व्रत विषें शिखातें विना मुंडन करावे और संपूर्ण व्रतों विषे सहित शिखाके मुंडन किहाहै ॥ १ ॥

प्रायाश्चित्त विवेक विषे गौआंका न पालना इसनिमित्तकर्के जो गोवधहै तिसर्के प्रायश्चित्तकों परा शरजीकहतेहैं शीतेति शीत और अग्नि कर्के और वन्नणे कर्के मृत होवे और जिसगृहविषे मनुष्य कोई नाहिं होवे तिसविषे गौकों त्यागकर उपेक्षाकतियांहोयां मृत होवे तो प्राजापत्यव्रत कों करे तो शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अपेति पीछे गौके न रक्षा करणेतें तृणकों चुगती होई मृत होवे अथवा जल विषे डूब कर्के अथवा सर्पकेंलडने कर्के अथवा विजली कर्के मृत होवे ॥ २ ॥ अथ वा डूंगे स्थानविषे डिगणे कर्के अथवा व्याघ्रादिके भक्षण करणेकर्के गौ मृत होवे तां गौका स्वामी न रक्षा करण वाला उत्तम जो कृच्छ्र प्राजापत्य व्रत तिसको करे तदशुद्धहोताहै इसमें एह अभिप्रायहै कि सर्प दंशमें और विद्युत्पातमें यद्यपि स्वामीका दोष नहिंहै तथापि सर्पदं

प्रायश्चित्तविवेके अपालननिमित्तगोवधप्रायश्चित्तम्। शीतानलहताचैवउ
द्बंधनमृतापिवा शून्यागाराद्युपेक्षायांप्राजापत्यंविनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ अपाल
नात्त्ररण्येयत्तुगौश्चरंतीकथंचन जलौघपटलैमग्नानागाविद्युद्धतापिवा ॥२॥
श्वभ्रेवापतिताऽकस्माच्छ्वापदैर्वापिभक्षिता प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंगोस्वामी
व्रतमुत्तमम्॥ ३ ॥ सशिखंवपनंकार्यंत्रिसंध्यमवगाहनम् शृंगैर्वापिखुरैर्युक्तं
लांगूलश्रवणादिभिः ॥ ४ ॥ आर्द्रमेवहितच्चर्मपरिधायसगांव्रजेत् तासांम
ध्येवसेद्रात्रौदिवाताभिःसमंव्रजेत् ॥५ ॥ ब्राह्मणस्यविशेषेणतथाराजन्यवै
श्ययोः प्रायश्चित्तेततश्चीर्णेकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ ६ ॥

शते उपरंत औषधी करणेथी और विद्युत्पातकी संभावनामें तिसको अपणे पासे खिचणवाली यां लोहशलाकादि वस्तु गौआंके समीप रखणेथी एह गोस्वामीने नहिं कीता इसवास्ते तिसको दोष जानणा ॥ ३ ॥ सेति और सहित शिखाके मुंडन करबाके त्रिकाल स्नानकों करे शृंग और खुर और पूछल और कर्ण ॥ ४ ॥ एनांके साथ गिल्लाहि जोगोचर्म तिसकों उपर लैके गौआंके पीछे वनविषे जावे और रात्रिमें तिह्नांके मध्यविषें निवास करे और दिनमे तिनांके साथ जावें ॥ ५ ॥ ब्राह्मेति ब्राह्मणकों विशेष कर्के प्रायश्चित्त कहाहै और तिसी प्रकार क्षत्री और वैश्य प्रायश्चित्त कर्के ब्राह्मणांके तांई भोजन देवे ॥ ६ ॥

और वैलके साथ गौ दक्षिणा देवे ब्राह्मणके तांई इसमें (ब्राह्मणस्य विशेषेण) इस वचनतें ब्राह्मणकों विशेष कर्के प्रायश्चित्त कहाहै क्या गौआंके पीछे वन विषें जाणा मुख्यहै इसका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं एतेनेति इस कहणे कर्के एह सिद्ध होया क्या गौआंकी पालनातें विना मृत्यु होवे तद प्राजापत्य व्रत करणे योग्यहै और ना समर्थ होवे तां एक गौ ब्राह्मणके तांईदेवे और वैलके साथ गौ दक्षिणा देणे योग्यहै ॥ यदेति ॥ पालनके होयां होयां गत्त आदि कर्के मृत्यु होवे तो तिस विषें प्रायश्चित्तकों विष्णु जी कहतेहैं पल्वलेति पल्वलौघ क्या छपडीयां और भगयाड और चित्रा और श्वापद क्या हिंसक शृंगिविशेष और गत्त और वंधन और सर्प्प

अनडुत्सहितांगांच दद्याद्विप्रायदक्षिणाम्। ब्राह्मणस्यविशेषेणेति। ब्राह्मणस्य गवानुगमनं मुख्यमित्युक्तम्॥ एतेनापालनादिकृतगोवधेप्राजापत्यं करणीयम् अशक्तौधेनुरेकादातव्या वृषभसहितागौर्दक्षिणादेया इत्यादि वोध्यं वक्ष्यमाणवचनात्। यदातु सत्येव पालने श्वभ्रादिपातादेर्मरणं स्यात्तदा प्रायश्चित्तमाह विष्णुः॥ पल्वलौघवृकव्याघ्रश्वापदादिनिपातनात् श्वभ्रोद्बंधनसर्प्पाद्यैर्मृतेपादोनमाचरेत् अपालनेतुकृच्छ्रंस्याच्छून्यागाराद्युपेक्षया ॥ १ ॥ अत्रपादोनंप्राजापत्यस्यैव उत्तरवचनेकृच्छ्रश्रवणात्। तथा पादश्चाऽप्राप्तकेदेयो वत्सस्वामिन्यपेक्षिते ॥ अप्राप्तकेऽप्राप्तदृश्यावस्थेऽस्मिन्श्वभ्रपातादिना मृते वत्सस्वामिना प्राजापत्यपादः करणीय इत्यर्थः

इन्हां निमित्तां कर्के मृत्यु होयां होयां त्रिपाद व्रतकों करे और नापालनके होयां होयां अर्थात् मनुष्यांतें रहित जो शून्यगृह तिसविषें ना रक्षा करणेतें मृत्यु होवे तां कृच्छ्र व्रतकों करे । १ । इसका स्पष्टार्थ एह है कि इस विषें पादऊन प्राजापत्यका हि जानणा क्यों कि पिछले वचन विषें कृच्छ्र व्रतका श्रवण होणेतें और वचनहै तथेति तैसेंही वच्छेके स्वामिने बच्छा ढूंडयाहै परंतु तिसकों प्राप्त नहिं होआ और ढूंढणेतें उपरंत गत्त आदि कर्के मृत्यु हो गयाहै तद वच्छेके स्वामीने प्राजापत्य व्रतका एक पाद व्रत करणे योग्यहै एह अर्थ है ॥

अब गोवध प्रायश्चित्तका अपवाद क्या किसें जगा प्रायश्चित्त नहिं करणा तिसमें पराशरजी कहतेहैं ॥ धुर्य्येष्विति गड्डे आदिमें जुगडे होए जो बैल तिनां विषे दंड कर्के ताडना कीतयां होयां और काष्ठ कर्के वा लोष्टकर्के क्या ढीम कर्के वा कोरडेकर्के वा पत्थर कर्के मारयांहोयां ॥ १ ॥ मूर्छाकों प्राप्तहोजावे वा डिगजावे वा शतावी मृत होजावे इसप्रकार मृतहोए जो बैल तिनांको विधिकोंकहताहां । २ । पूर्वोक्तनिमित्ततें मूर्छावाला होया होया फेर उठकर्के जेकर पंच ५ वा सत ७ वा दश १० पैर चले और ग्रासभी ग्रहण करे और जलभी आपपीवे ॥ ३ ॥ और पीछे पूर्वव्याधि कर्के मृत होए जो बलद तिनांका प्रायश्चित नाहिं कहाहै ॥ ४ ॥ इसी अर्थ

अथगोवधापवादः ॥ अत्रपराशरः ॥ धुर्य्येषुवहमानेषुदंडेनाभिहतेषुच ॥ काष्ठलोष्टेनग्रावणाऽपिपाषाणेनापिताडितः ॥ १ ॥ मूर्छितःपतितश्चैवम्रृतोवा सद्यएवच ॥ एवंगतानांधुर्याणांप्रवक्ष्यामियथाविधि ॥ २ ॥ उत्थितस्तुयदा गच्छेत्पंचसप्तदशापिवा । ग्रासंवायदिगृह्णाति तोयंवापिबतिस्वयम् ३ । पूर्वव्याधिविनष्टानां प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ ४ ॥ यदिव्याधियुक्तानां वृषभाणां हलयोजनमात्रेण दंडादिघातेन वा मूर्छया पतनं भवति तदा गमन ग्रासग्रहणतोयपानकरणेन तदानींतनमरणहेत्वभावं निश्चित्य पूर्व व्याधिनष्टत्वम् अतःप्रायश्चित्ताभावः ॥ सद्योमरणेतु प्रायश्चित्तमस्त्येव । दंडप्रमाणमाह पराशरः ॥ अंगुष्ठमात्रस्थूलस्तु वाहुमात्रःप्रमाणतः आर्द्र स्तुसपलाशश्चदंडइत्यभिधीयतइति ॥ यदिच पूर्वव्याधिरहितएव प्रहारजनितव्याधिना पश्चान् म्रियते तदा प्रायश्चित्तमस्त्येव ॥

कों स्पष्टकर्के मूलमें लिखाहै यदीति ॥ एह इसकालके दंडादिनिमित्तते मृत नहि होया किंतु इसकों कोई पिच्छे व्याधिथी तिसकर्के मृत होयाहै इसकारणतें उसका प्रायश्चित्त नहिंहै और शतावी मृत होवे तां प्रायश्चित्तहै ॥ अबदंडका प्रमाण पराशरजीकहतेहैं ॥ अंगुष्ठमात्र मोटा होवे और वाहु जितना लंबाहोवे और गिल्लाहोवे और पत्रांवाला होवे सो दंडकहाहै इसके यथायुक्ति लगाणे कर्के दोष नहि औरइसतें भिन्न होवे तां प्रायश्चित्तहै जेकर प्रथमपीडासें रहित होवे और दंडादि प्रहारतें उत्पन्न जो व्याधि तिस कर्के मृत्त होवे जो गौ तिसविषे प्रायश्चित्तहै सो प्रायश्चित्त ॥ व्रणभंगके प्रसंगविषे पिच्छे आगिआहै उसीसे जानलेणा ॥

लकुटेति और सोटे आदिके मारणें विषें इसीवास्ते प्रायश्चित्त पराशर जी कहतेहैं ॥ दंडादिति दंडमारणेतें उपरंत तिसी प्रहारतें जद गौ मृत होवे वा मरणेंके योग्य होवे तिसविषें दूणा गोघातका व्रतकरें तां शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अब इसीका अपवाद संवर्त्त ऋषि कहतेहैं ॥ यंत्रणइति गौको चिकित्सावास्ते अच्छीतरह बंधन कीते होयां तिसविषें और मृत जो गर्भ तिसका निकालनातिसविषें यत्नकीते होयां जद गौ मृतहोवे तां प्रायश्चित्तनहिंकरणा ॥ १ ॥ और दाह क्या रोग निवृत्तिवास्तें किसे अंगकों गुल देणा अथवा रुधिर निकालना इनांयत्नांकर्के जो द्विज गौआंके हितवास्ते उपकार करें तिनांको प्रायश्चित्त नहिंहै अथवा द्विजां किएं गौ आंके उपकार करण वालेयांकों प्रायश्चित्त नहि एह अर्थ है ॥ २ ॥ एह वाक्य शास्त्र कर्के कही जो औषधि तिसकर्के मृत होवे तिसमें जानणे योग्यहै । और इसतें भिन्न करे तां प्रायश्चि

लकुटादिपातनेऽतएवप्रायश्चित्तमाह ॥ पराशरः ॥ दंडादूर्ध्वंयदन्येन प्रहाराद्यदिपातयेत् ॥ प्रायश्चित्तंतदाप्रोक्तंद्विगुणं गोव्रतंचरेत् ॥ १ ॥ पातयेन्मारयेत् ॥ मरणयोग्यांवाकुर्यादित्यर्थः ॥ संवर्त्तः ॥ यंत्रणेगोश्चिकित्सार्थंगूढगर्भविमोचने यत्नेकृतेविपत्तिः स्यात्प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ १ ॥ दाहच्छेदशिराभेदप्रयोगैरुपकुर्वताम् ॥ द्विजानांगोहितार्थायप्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ २ ॥ द्विजानांगवांहितार्थमित्यर्थः गूढगर्भोमृतगर्भः ॥ एतद्यथावदुपचारेविदितव्यम् ॥ नपुनः सन्निपाताभिभूतस्योदकपानादिनेव ॥ अतएव चिकित्सतांचसर्वेषांमिथ्याप्रहरतांदमइति मनुनोक्तम् ॥ मिथ्याचिकित्सतांमिथ्याप्रहरतांचदमोदंडइत्यर्थः ॥ एतएव काश्यपोप्यत्र प्रायश्चित्तमाह ॥ औषधंलवणंचैवस्नेहंपिण्याकमेवच अतिरिक्तंनदातव्यं कालेस्वल्पंतुदापयेत् ॥ १ ॥ अतिरिक्तेविपन्नानां कृच्छ्रपादोविधीयते ॥ औषधेतुनदोषास्तिस्वेच्छयापिवतेयदि अन्यथादीयमानेतु प्रायश्चित्तंनसंशयः ॥ २ ॥

नहै जैसें सन्निपातादि कर्के युक्त जो कोई होवे तिसकों जलपानादि करवाणा । तिस कर्के मृत होयां तिसविषें प्रायश्चित्त करणे योग्यहै ॥ इसीवास्ते मिथ्याचिकित्सा कर रहे जो पुरुष और मिथ्या प्रहारकरें जो पुरुष तिनकों दंड मनुजीनें पीछे कहाहै ॥ इसीवास्ते काश्यप जी इस विषें प्रायश्चित कहतेहैं ॥ औषधमिति औषधी और लूण और स्नेह क्या तैलादि और खल एह उपाय करणेंके समय विषें अधिक नहिं देवे किन्तु प्रथम थोडे देणे योग्यहैं ॥ १ ॥ अधिक दिते होयां जद गौ मृत होवे तां तिसविषें कृच्छ्र व्रतका एक पादव्रत करे और औषधि देणेंविषे दोष नहिहै जेकर गौ अपनी इच्छा कर्के पीवे और जेकर जोरावरी देवे तां तिसविषें प्रायश्चित्तहैं इसमें संशय नहि करणा ॥ २ ॥

अब अंगिराजी विशेष कहतेहैं । शृंगेति शृंगकाभन्नणा औरअस्थिका भन्नणा औरचर्मका उखे ड़ना इनकेविषे दशरात्र वज्र पानकरे जेकर स्वस्थ गौ होजावे ॥ १ ॥ अब वज्रका लक्षणकहते हैं गोमूत्रेति गोमूत्र कर्के युक्त जो यवोंका काडा तिसनू पीवे एह एक दिनका कृच्छ्र व्रत अंगि रानें आपकिहाहै संपूर्ण पापोंकों दूर कर्त्ता है और दिव्यहै और नाम कर्के वज्र किहाहै ॥ २ ॥ इसमें और विशेष कहतेंहै अन्यत्रेति अन्यत्र क्या औरके मत विषे अंकन और लक्ष्म और वाहन और मोचन इनां विषे दोष नहिहै और सायं काल विषे वंधन वास्ते जो रोकणा और वन्नणा इनां विषे भी दोष नहिं है क्योंकि दूसरेके क्षेत्रमे न पडणे वास्ते वंधन किहाहै ॥ ३ ॥ इसविषे जो सायं पदहै सो दूसरेके क्षेत्र विषे गौका जाणा तिसका उपलक्षण जानणा । अब श्लोककाअर्थ

अंगिराः ॥ शृंगभंगेस्थिभंगेवाचर्मनिर्मोचनेपिवा दशरात्रंपिवेद्वज्रंस्वस्थासा यदिगौर्भवेत् ॥ १ ॥ गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकंचोपयोजयेत् एकाहेनैवकृच्छ्रो यमुक्तश्चांगिरसास्वयम् सर्वपापहरोदिव्योनाम्नावज्रइतिस्मृतः ॥ २ ॥ अ न्यत्रांकनलक्ष्मभ्यांवाहनेमोचनेपिवा सायंसंगोपनार्थंतुनदुष्येद्रोधवंधयोः ३ ॥ अत्रसायमितिपरकीयक्षेत्रपाताद्युपलक्षणार्थम् । वृषार्थमंककरणेचिन्ह करणेच वाहनादिना चर्मनिर्मोचनेच सायं रक्षार्थरोधवंधनयोः शृंगभंगा दि न दुष्येत् शृंगभंगादौ न दोष इत्यर्थः। अंकनंतप्तत्रिशूलादेर्लक्ष्म कुंकुमा देरित्यपिकेचित् । तथाचमाधवः ॥ अंकनंतप्तलोहादिना स्थिरचिन्हकरणं लक्ष्म गोमयादिनातात्कालिकचिन्हम् अत्रवाहनमोचनयोःशास्त्रविहित त्वात् सांकलक्ष्मयोर्वाहने मोचने तु दोषएव शास्त्रनिषिद्धत्वादिति

स्पष्ट कर्के कहतेहैं वृषेति वृषवास्ते अंक करणे विषें और चिन्ह करणें विषे वाहनादिकर्के चर्म्म उखेडने विषे और सायं काल रक्षा वास्ते जो रोकणा और वन्नणा इनां विषें शृंगभंगहोवे तां दोष नहिंहै ॥ अब मतांतरकहतेंहैं अंकनामिति अंकन क्या तायें होएं त्रिशूलादियोंका लगाणा एह कैयोंका मतहै इसीमें माधवजी कहतेहैं अथवा अंकन नामहै तायेहोए त्रिशूलादि कर्के स्थिर चिन्ह वनाणा और लक्ष्महै गोमयादिकर्के तात्कालिकचिहूनकरणा इह्नां वाले वैलांते होरनां वैलां विषें वाहन विषें और मोचन [क्या भारस्थापन विषें दोष नहिं क्योंकि तिनके वाहनादि विषें शास्त्रका निषेध नहिं और अंकनाचिन्ह वालेआं विषें वाहनादिविषें शास्त्रका निषेधहै इसीका स्पष्टअर्थहै

यदीति जेकर कहे जो प्रयोजनइनांतें विना वंधनादिकरणातिसतें अकाल मृत्युहोवे तां दोषहै तिस विषे दशरात्र वज्रव्रतकरे। परंतु इसविषें एहविचारहै जो तीसादिनका वज्रव्रतहै तिसविषें स्मृतियोंनें १२वारां धेनु दानका प्रत्याम्नाय किहाहै सो व्रतप्रकरणमें देखणे योंग्यहै इसकारणतें तिस व्रत विषें द्वादश १२ धेनुकर्के मिलित जो महीनेका गोमूत्रयावकव्रत तिसका तीसरा भाग होणेंतें चार ४ धेनुदेवें ॥ अब घातकों चारप्रकारकर्के पराशरजीकहतेहैं ॥ रोधेति रोकणा और बन्नणा और योक्र और घात एह चारप्रकारका वधका निमित्तहै इनके लक्षण अग्गे कहेंगे एकेति रोकणेंविषें एकपादव्रत करे और बन्नणेंविषें द्विपादव्रत करे और योक्र विषें त्रिपाद व्रत करे और घातविषें

यदितूक्तप्रयोजननिरपेक्षबंधनादिकारितोऽकालिकोमृत्युर्भवति तदा दोषोभवत्येव दशरात्रवज्रव्रते धेनुद्वादशसंकलितमासगोमूत्रयावकव्रततृतीयभागत्वाद्धेनुचतुष्टयंदेयमिति ॥ घातस्यचातुर्विध्यमाहपराशरः ॥ रोधबंधनयोक्त्राणिघातश्चेतिचतुर्विधम् वधनिमित्तमितिशेषः । एकपादंचरेद्रोधेद्वौपादौबंधनेचरेत् योक्त्रेषुचत्रिपादंस्याच्चरेत्सर्वंनिपातने ॥ १ ॥ अत्रैकपादादिव्यवस्था पराशरांगिरःसंवर्त्तापस्तंबोक्तानांप्राजापत्यमासद्वयकृच्छ्रपक्षकृच्छ्रषोडशदिनसाध्यकृच्छ्रादीनां निर्गुणवनस्थगुणवद्बालगोवालवत्सायाश्चविषयत्वेन माधवेनोक्ता ज्ञेया ॥

संपूर्ण व्रतकरे। १। इसविषें माधवजीकी वनाई होई व्यवस्था इसतरां जानणी पराशरजीनेंकहाहै कि निर्गुण पुरुषकी गौ मृतहोवे इसविषें प्राजापत्यव्रतके ही एकपादादि जानणें और अंगिरा जीने किहाहै कि वनाविषें स्थितहोणवाले जो ऋषि तिनकी गौ मृतहोवे उसमें मासद्वयकृच्छ्र व्रत के एकपादादिजानणें और संवर्त्तनीनें कहाहै कि गुणवाले पुरुषकी गौ मृत होवे तां पक्षकृच्छ्र व्रतकेपादादि जानणे और आपस्तम्बजीने कहाहै कि बालहै बच्छा जिसका ऐसी गौ मृत होवे उसमें १६ सोलां दिनां कर्के साध्य जो कृच्छ्र तिसके पादादि जानणे ॥ अब रोधादिचारोंका अर्थ कहतेहैं ॥

गाविति गौआंके वाडेविषें वा गृहविषे वा किलेविषे और उच्ची नीमी जगाविषे और नदी विषे और समुद्र विषें और किसें सोपद्रव स्थान विषे और नदी मुख विषें और दग्ध देश विषे अर्थात् जिसमें तृणादि न होण उसजगा विषें रोकणें कर्के जद गौआं मृत होवें उसकों रोध नामघात कहतेहैं ॥ १ ॥ योक्रेति योक्र और दामक और डोर एहरस्सीआंके भेदहैं इनांकर्के वा कंठके जो भूषण इनांकर्केगृहविषे वा वनविषे बन्नीहोई गौ जदमृतहोवे उसकोंबंधन नाम घात कहतेहैं तिसकों इच्छाकर्के करे वा ना इच्छाकर्केकरे एह दोप्रकारकाबंधनहै ॥ २ ॥ अब योक्रा दिशब्दका अर्थ कहतेहैं पाशइति योक्र नाम फाईकाहै और गड्डेकें युगविषे जो छिद्र तिसमें संबद्ध जो रज्जुहै उसकों दाम कहतेहैं । और डोर रज्जुमात्रकोंकहतेहैं॥ अब योक्र वध दिखाईदाहै

गोवाटेवागृहेवापिदुर्गेष्वप्यसमस्थले नदीष्वथसमुद्रेषुत्वन्येषुचनदीमुखे दग्धदेशेमृतागावःस्तंभनाद्रोधउच्यते । १ । योक्रदामकडोरैश्चकंठाभरण भूषणैःगृहेवापिवनेवापिबद्धास्याद्गौर्मृतायदि तदेवबंधनंविद्यात्कामाकामकृ तंचयत् । २ । योक्रंपाशःशकटयुगाच्छिद्रसंबद्धारज्जुर्दामकं डोरकंरज्जुमात्र म् ॥ हलेवाशकटेपंक्तौपृष्ठेवापीडितोनरैः गोपतिर्मृत्युमाप्नोतियोक्रोभवति तद्वधः ॥ ३ ॥ पंक्तिर्गलेमेढीबंधनम् ॥ मत्तःप्रमत्तउन्मत्तश्चेतनोवाप्यचे तनः कामाकामकृतक्रोधोदंडैर्हन्यादथोपलैः प्रहतोवामृतोवापितद्धिहेतुर्नि पातने । ४ ॥ मत्तोधनादिनादृप्तः प्रमत्तोमद्यपानादिना परवशः ॥ उन्म त्तोव्याध्यादिना विभ्रांतः अचेतनोमुग्धः मारयिष्यामीतिबुद्धिःकामः ॥

हलइति हलविषे वा गड्डेविषे वा पंक्ति विषे वा पृष्ठविषे पुरुषोंकर्के ताडया होया बैल मृतहोवे तां तिसवधका नामयोक्रहै ३ ॥ जो गलविषे मेढ बन्नणा उसका नाम पंक्तिहै ॥ मत्तइति मत्त और प्रमत्त और उन्मत्त और चेतन वा अचेतन इच्छाकर्के वा ना इच्छाकर्के कियाहै क्रोध जिसने ऐसे पुरुषने दंडकर्के वा पत्थर कर्के ताडया होया बैल मृत होवे सो निपातन विषे हेतु है अर्थात् इस वधका नामघात है ॥ ४ ॥ अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं ॥ मत्त इति मत्त उसकों कहतेहैं जो धन कर्के अभिमानी होवे और प्रमत्त उसकों कहतेहैं जो मदिरापानादि कर्के परवश होवे और उन्मत्त उसकों कहतेहैं जो व्याधिकर्के भ्रमित होवे और अचेतन नाम मुग्धकाहै अर्थात् मूर्खकों अचेतन कहतेहैं ॥ मै मारां गा एह जो बुद्धि इसको काम कहतेहैं ॥

व्यर्थ जो चेष्टाका धारणा इसकों अकाम कहतेहैं इनांदोआं कर्के उत्पन्न होयाहै क्रोध जिसको सोकामाकामकृतक्रोधीहै होर अर्थसुगमहै ४ ॥ अवकुलविशेषदखातेहैं दहनादिति जो जोडया होया वैल दाह होणेतें मृत होवे तिस विषे पराशरजीने कहाहै कि एकपाद व्रतकरे यथाविधि कर्के परंतुइसजगाकोई (वहनात्) ऐसापाठकहतेहैं क्योंकि जुगडेहोए वैलको दाहकासंभव नहि हैं।णेतें आरै वहनकाअर्थ भारउठाणा एह होसकाहै और पादव्रत भी इहां मासत्रयका अथ वा मासद्वयका जानणा प्राजापत्यका नहिंपापके अधिकहोणेतें । १ । अव और मतकर्के वधके निमित्त कहतेहैं रोधनमिति रोकणा औरवन्नणा और भारदेणा और प्रहारकरणा और दुर्ग में फैंकणा और जोत्रणा एह छे निमित्त वधकेहैण ॥ २ ॥ पूर्वोक्त सें उौर विशेष कहतेहैं ॥ वंधेति ॥ वंध और पासकर्के युक्तहैं अंग जिस्के ऐसा गोपशु जिस्के गृह विषे मृतहोवे सो

व्यर्थचेष्टाधारणमकामः ताभ्यामुत्पादितःक्रोधोयस्यासौतथा) दहनात्तुवि पद्येतअनड्वान्योक्रयंत्रितः उक्तंपराशरेणैवह्येकपादंयथाविधि ॥ १ ॥ रो धनंवंधनंचैवभारःप्रहरणंतथा दुर्गप्रेरणयोक्त्रंचनिमित्तानिवधस्यषट् ॥ २ ॥ वंधपाशसुयुक्तांगोम्रियतेयदिगोपशुः भुवनेयस्यपापीस्यात्प्रायश्चित्तार्द्धम र्हति ॥ ३ ॥ ननारिकेलैर्नचशाणवालैर्नचापिमौंजैर्नचवल्कशृंखलैः एतैस्तु गावोननिवंधनीयावध्वातुतिष्ठेत्परशुंगृहीत्वा ॥ ४ ॥ कुशैःकाशैश्चवध्नीयाद्गो पशुंदाक्षिणामुखम् पाशलग्नाग्निदग्धेषुप्रायश्चित्तंनाविद्यते । ५ । यदितत्रभवे त्काष्ठंप्रायश्चित्तंकथंभवेत् जपित्वापावनींदेवींमुच्यतेतत्रकिल्विषात् ॥ ६ ॥

पुरुष पापीहै तिसकों प्राजापत्यादिका अर्द्ध प्रायश्चित्त करणे योग्यहै । ३ । अवगौआंकेवंधनका प्रकार कहतेहैं ॥ नेति ॥ नरेलदे रस्सेकर्के वा शणदे रस्से कर्के वा मुंजकर्के वावलूंगड़दे जो रस्से उौर संगुलजो है इनांकर्के गौआंको न वंधन करे जेकर वंधन करे तां कुहाडा लेकर पासस्थि तरहे जद गौकों कष्ट वणे तां रस्सेनूं कटदेवे । ४ । जिनांकर्के वंधनेमे दोष नहि तिनको कहतेहैं ॥ कुशैरिति कुशा और काई इनां कर्के गौकों दक्षिण पासे मुख कर्के वन्न देवे इसमे जेकर रस्से विषें लगी जो अग्नि तिसकर्के दग्ध होवे तां उसमे प्रायश्चित्त नहिंहै ॥ ५ ॥ जेकर तिसविषें काष्ठहोवे तां प्रायश्चित्त कैसें होवेगा तिसकोकहतेहैं कि तिसविषें पवित्रजो गायत्री तिनका जप करणेतें पापते शुद्धहोताहै ॥ ६ ॥

और विशेष कहतेहैं ॥ प्रेति खूआ और बाउली इनां विषे गौनू प्रेरणा करे ॥ और जिसज गाविषे वृक्षांको कटदेहोण तिसके हेठ गौनू लेजावे और कसाईके पास वेंचणे कर्के पुरुष गोबध पापको प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ अब पिछले श्लोकका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं ॥ पाशेति कुशादिके जो रस्से इनाको शीघ्र भस्म होणेंतें एकवेरही दुःखकोप्राप्तहोताहै और मृत नहिं होताहै इसकारणतें तिसविषें प्रायश्चित्त नहिंहै । यदीति गलविषें प्राप्त जो पाश तिसके दग्धहोयां जेकर कुशमूलादिका कुछककाष्ठ तिस रस्सेविषे स्थित होवे तां तिस चुआंतीके स्पर्शतें थोडाचर्म दाह होवे तिसविषें गायत्री जप कर्केहि शुद्ध होताहै(पावनीयं)इस पाठ विषें इसी सूक्तकाजपकरे

प्रेरयन्कूपवापीषुवृक्षच्छेदेषुपातयन् गवाशनेषुविक्रीणंस्ततःप्राप्नोतिगोवधम् ७ पाशेति कुशादिमयपाशानांशीघ्रंभस्मीभावात्सकृत्संपातमात्रंसंपद्यतेनतुप्राणांतिकउपद्रवः अतोनतत्प्रत्यवायः । यदीति गलगतेपाशेदह्यमानेयदिकुशमूलादिरूपंकिंचित्काष्ठंतस्मिन्पाशेऽवतिष्ठेत तदा तदुल्मुकसंस्पर्शादीषत्त्वग्दाहोभवेत् तत्र गायत्रीजपेनैवशुद्धिः पावनीयामितिपाठेसूक्तंजपित्वेतिव्याख्येयम् । प्रेरयन्निति यत्रचारणप्रदेशेजीर्णकूपादयः यत्रच प्रौढावृक्षाःछिद्यंतेतत्रप्रेरयन्पातयन् गवाशनेषु गोमांसभक्षकेषु विक्रीणन् गोवधप्रायश्चित्तंप्राप्नोतीतिमाधवः।आराधितस्तुयःकश्चिद्भिन्नकक्षोयदा भवेत् श्रवणं हृदयंभिन्नंमग्नोवाकूपसंकटे ॥ ८ ॥ कूपादुत्क्रमणेचैवभग्नोवाग्रीवपादयोः सएवम्रियतेतत्रत्रीन्पादांस्तुसमाचरेत् ॥ ९ ॥ उद्वृषभयज्ञादौउपघातेपादत्रयंप्रायश्चित्तमाह ॥

ऐसा व्याख्यान कियाहै । प्रेरयन्निति जहां चारणे वाले देशविषें पुराणे कूपादि होण जहां वडे वृक्ष कटे होण तहां गौआंको प्रेरणा करे और कसाई के पास गौकों वेचेतद गोवधप्रायश्चित्तको प्राप्त होताहै एह माधवजीने किहाहै । आरेति आराधित होया जो वैल जेकर उसकी वक्खी भेदी जावे वा कर्ण वा हृदय भेद्या जावे वा वडे कूपविषें डुबजावे । ८ । और कूपतें निकालदे होयां ग्रीवा वापाद टुट जावे वा तिसविषे मृतहोजावे तां तिस विषे त्रिपादव्रत करणे योग्यहै ॥ ९ ॥ अब इसश्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं ॥ उद्वृषभेति उद्वृषभ नाम जो यज्ञहै तिस विषे हिंसा करे तिसविषे त्रिपाद व्रत कहतेहैं माधवजी ॥

आराधितइति उद्वृषभनाम जो यज्ञ है तिसविषे वैलनूं आराधन कर्के दुडातेहैं तिसविषे अति वेग कर्के दौडता जो वैल तिसकी कदाचित् कक्ष भेदी जावे वा कण वा हृदय भेदया जावे तिसविषे एह जानणे योग्यहै ॥ और विशेषहै जद तृषा कर्के युक्त गौ आपही कूपादिमें प्रवेश कर्के मृत होजावे और कूपका स्वामी एह वात नहिं जानता है इसतें तिसमें कूपके स्वामीकों दोष नाहिं है परंतु गौआंके स्वामी को दोष है ऐसे और भी जाणो ॥ इस कर्के एह श्लोक कहतेहैं कूपेति कूपखात विषे और तटावंध विषे और नदीवंध विषे और जल विषे जद पशुमृत होजावे तिसमें प्रायश्चित्त नहिं कहाहै ॥ १० ॥ अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं बहुतडूंगा जो खूआ तिसको कूपखात कहतेहैं। कनारे जिसमें वन्हेजावें सो तडावंध क्या तलाओ कहिये। नदीवंध नामपुलकाहै पत्थर कर्के वणाई जो पौडी सो प्रपा कहीदीहै और कूपादि

आराधितइति उद्वृषभयज्ञेहिवलीवर्द्दमाराध्यधावयंति तत्रातित्वरया धावतः कदाचित्कक्षोभिद्यते तदेदंवोध्यम्। कूपखातेतटावंधेनदीवंधेप्रपासुच पानीयेषुविपन्नानांप्रायश्चित्तंनविद्यते। १०। अगाधःकूपःकूपखातः। तटेन तीरेणआवध्यतइति तटावंधस्तटाकः॥ नदीवंधःसेतुः। पाषाणादिद्रोण्यःप्रपाःकूपखातेतटाखातेदीर्घखातेतथैवच स्वल्पेषुधर्मखातेषुप्रायश्चित्तंनविद्यते। ११ । कूपादिनिर्मातुर्गवादिमरणोद्देश्यकप्रवृत्त्यभावान्नप्रायश्चित्तमितिभावः॥ वेश्मद्वारेनिवासेषुयोनरःखातमिच्छति स्वकार्यगृहखातेषुप्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥ १२॥

निर्माण करण वाला जो पुरुष तिसकों प्रायश्चित्त क्यों नाहिंहै इसआशंका कर्के एहश्लोक कहतेहैं कूपखातइति कूपका जो गर्त्त और तटाखात और वाउलीयां और जो धर्मवास्ते खातहैं इनांविषे पशु आपहि मृत होजावे तां जिस पुरुषनें कूपादि वणाएहैं तिसको दोष नहिंहै क्योंकि तिस खूए आदिक धर्मवास्ते वणायेहैं गौआंके मरणवास्ते नहिं वणाये इस वास्ते तिसको प्रायश्चित्त भी नहिं है और कूपखातादिकों न्याईं गृह विषे जो खात तिसमूं मृत होवे तां दोष है क्योंकि सो धर्मार्थ नाहिं है ॥ ११ ॥ इसवास्ते एह श्लोक कहतेहैं ॥ वेश्मेति घरका जो दरवाजा और गौआंके स्थान इनोंमे जो पुरुष गर्त्त करताहै और अपणे कार्य वास्ते जो घरमे गर्त्त करणा इनोंमें जो पशु मृत होवे इसमें उस पुरुषको पूर्वोक्त त्रिपाद व्रत करणे योग्यहै ॥ १२ ॥

वेश्मेत्यादि खात जो हैं सो धर्म्मवास्ते नहिंहैं इसकारणतें तिनां विषे पशु मृत होजावे तां प्राय श्चित्तहै (प्रश्ण) गृहखातादिकी न्यांई गृहविषे सर्पादि कर्के मृत होवे तिसमें भी प्रायश्चित्त होणा चाहिये इसको इस श्लोक कर्के दूर कर्त्तेहैं ॥ निशीति रात्रिविषे रक्षाकरण वास्ते बंधन कर्के रोकियां जो गौआं सो सर्पव्याघ्रादिकर्के जद मृत होजावें तद स्वामीको दोष नाहिं है और अग्निकर्के वा बिजलीकर्के मृत होजावें तां प्रायश्चित्त नाहिं है ॥ १३ ॥ विद्युत् के दाह की न्यांई ग्रामघातादि कर्के मृत होवें तां दोष नाहिं है इस अभिप्राय कर्के एह श्लोक कहतेहैं ॥ ग्रामेति ग्रामके घात विषे और बाणोंके समूहकर्के अथवा बाणांके समूह कर्के ग्रामके धा तहोयां वा घरके डिगयां होयां और बडीवर्षाहोवे इनां निमित्तांकर्के गौयां मृत होवें तांप्रायश्चित्त नहिंहै इसमे एह अभिप्रायहै कि किसेराजादिके परस्पर विरोधकर्के एकने दूसरेके ग्रामका घात

वेश्मेत्यादि खातानांधर्म्मार्थत्वाभावात्तत्रपातेभवत्येवप्रायश्चित्तम् ॥ निशि वंधनिरुद्धेषुसर्पव्याघ्रहतेषुच अग्निविद्युद्विपन्नानांप्रायश्चित्तंनविद्यते १३ । ग्रामघातेशरौघेणवेश्मभंगनिपातने ॥ अतिवृष्टिहतानांचप्रायश्चित्तंनविद्य ते ॥ १४ ॥ संग्रामेप्रहतानांचयेदग्धावेश्मकेषुच ॥ दावाग्निग्रामघातेषुप्रा यश्चित्तंनविद्यते ॥ १५ ॥ यंत्रितागौश्चिकित्सार्थंगूढगर्भविमोचने ॥ यत्ने कृतेविपद्येतप्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ १६ ॥ व्यापन्नानांवहूनांचरोधनेवंधनेपिवा भिषङ्मिथ्योपचारेणप्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥ १७ ॥ अयथाशास्त्रंचिकि त्सनंभिषङ्मिथ्योपचारः ॥ गोवृषाणांविपत्तौचयावंतःप्रेक्षकाजनाः अनि वारयतांतेषांसर्वेषांपातकंभवेत् ॥ १८ ॥

कीता तद उसग्राममे मृतहोइआंगौआंके स्वामिआंको दोष नहि क्योंकि उह उनकी रक्षामे स मर्थ नहिंहैं ॥ १४ ॥ और लडाई विषे मृत होवे वा घरमे दग्ध होजावे वा दावाग्निकर्के ग्राम के घातविषे गौमृत होवे तां प्रायश्चित्त नाहिं है ॥ १५ ॥ और चिकित्सा वास्ते गौ बांधी जावे तिसमें वा मृतगर्भके निकालनमें यत्नके कीत्ते होयां जेकर गौ मृत होवे तां प्रायश्चित्त नहिं है १६ ॥ इसमें भी कुछ विशेष कहतेहैं व्यापेति रोकणे विषे वा बंधन करणे विषे वहुत पुरुषोंकर्के जेकरगौ मृत होवे वा शास्त्ररहित चिकित्सा कर्के मृत होवे तिसमें प्रायश्चित्त करणे योग्य है ॥ १७ ॥ अब गो घातको देखणे वालेको भी दोष कहतेहैं गोवृषाणामिति गौआं और वृष इनांको विपत्तिके होयां जितने देखणवाले पुरुष हैं और तिस विपत्तिकोदूर नाहिं करते हैं तिन संपूर्णांको पाप प्राप्त होताहै ॥ १८ ॥

शक्काविति समर्थदे होयां उपेक्षा करण वाले पुरुषकों भी दोषहै केवल कर्त्ताकों ही नहिंइस अभिप्राय करके प्रेक्षका एह किया है ॥ एह हंता और मंता और उपदेष्टा इत्यादि जो पापी दूसरे प्रकरणमें कहेहैं उनका भी उपलक्षण जानणा ॥ अववहुकर्तृक घात विषें कहतेहैं एकेति वहुत पुरुषोंनें एक पशु मारयाहै और जिस पुरुषके प्रहारतें मृतहोयाहै सो नहिं जानयाजाता तिनां वहुत पुरुषां विर्षों दिव्य क्या सुगंदककें प्रतीत होवे सो राजाके नौकरोंनें पृथक् करणें योग्य है ॥ अव इसी श्लोकका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं यस्येति जिसनें गोवृषादि मारयाहै सो हंताकिहाहै इहां कर्त्ता में क्त प्रत्यय है ॥ यद्वेति अथवा जिसपुरुषके मारणेंतें सो वृषादि मृतहोगयाहै सो पुरुष नाहिं जानया जाता एह अर्थहै । मारणतें उपरंत मारण वाले जो वहुतहैं उनांके मध्य विषे नहिं जाणया तहांसुगंदी देणेकरके राजाके जो नौकरहैं तिनोंने निवर्त्तनीय क्या

शक्तौसत्यामुपेक्षकस्यापिप्रत्यवायो न केवलं कर्त्तुरेवेत्यभिप्रेत्योक्तंप्रेक्षकाइत्यादि इदंचहंतामंतोपदेष्टेत्यादिद्वितीयप्रकरणोक्तोपलक्षणम् ॥ एकोहतो यैर्वहुभिःसमेतैर्नज्ञायतेयस्यहतोभिघातात् ॥ दिव्येनतेषामुपलभ्यहंतानिवर्त्तनीयोनृपसन्नियुक्तैः ॥ १९ ॥ यस्यगोवृषादेर्हतःकोर्थोहंताकर्त्तरिक्तःयद्वा यस्यपुरुषस्याभिघातात्सवृषादिर्हतः सपुरुषोनज्ञायतइत्यर्थः अभिघातादनंतरंमारकवाहुल्यांतः पातित्वेनचेन्मारकोनज्ञायतेतदादिव्यक्रिययानृपसन्नियुक्तैराजभृत्यैर्निवर्त्तनीयःपृथक्करणीयइत्यर्थः ॥ इदंचगोघ्नप्रायश्चित्तार्थम् ॥ तदितरप्रायश्चित्तार्थमुच्यते। एकाचेद्वहुभिःकाचिद्दैवाद्व्यापादिताक्वचित् ॥ पादंपादंतुहत्यायाश्चरेयुस्तेपृथक्पृथक् २० ॥ हतेतुरुधिरं दृश्यंव्याधिग्रस्तःकृशोभवेत् लालाभवतिदष्टेषुएवमन्वेषणंभवेत् ॥ २१ ॥ यत्र । वहुषुनिमित्तेषु संदेहस्तत्र वधनिमित्तं कथं ज्ञायेतेत्येतदर्थमिदम् ॥

तिनां वहुत पुरुषांके मध्यतें जुदा करणे योग्य है एह अर्थ है १९ ॥ एह जो प्रायश्चित्त है सो गौ मारण वाले पुरुषकों जानणा तिसतें और प्रहार वालेकों प्रायश्चित्त कहीदा है ॥ एकेति एक गौ वहुत पुरुषों नें मारी होवे तिसमें संपूर्ण पुरुष गोहत्याका जो व्रत पीछे कियाहै तिसका एक एक पाद पृथक् पृथक् करें ॥ २० ॥ जहां वहुत निमित्तों करके संदेह होवे तहां किस तरहां वध निमित्त जानणा इस आशंकाके होयां चिन्ह विशेष करके निश्चयकरणा अव तिनां चिन्हांको दिखातेहैं हतइति जहां रुधिर होवे तहां प्रहार निमित्त जानणा और जो कृश होवे सो व्याधि युक्त जानणा और जहां लाला होवे उसके विषें सर्पका दंश जानणा एह तीन प्रकारके मृत्युके चिन्ह जानणे योग्यहैं अर्थात् मृत्यु मै तीनोंचिह्न होतेहैं ॥ २१ ॥

अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं यत्रेति जिसके मृतहोयां रुधिर देखणेमें आवे उसमें बध निमित्त पत्थर आदिका प्रहारजानणा और कृशके उपलंभ विषे क्या लिसयाई देखणे विषे मृत्युकी हेतु व्याधि जानणी और लालाके देखणेविषे सर्पदंश निमित्त जानणा इत्यादि कहे जो चिन्ह इनों कर्के निमित्तकास्वरूप निश्चय करणे योग्यहै ॥ बाहरले अंगके चिन्होंकों कह कर्के अब अंतरवाले अंगके चिन्होंकों कथन कर्तेहैं ग्रासेति ग्रास वास्ते प्रेरित जो गौ सो ग्रास न भक्षण करे औरमार्ग में भी न चले तिस विषे एक जो मनु संपूर्ण शास्त्रके जानण वाला ॥ २१ ॥ तिसने किया है गौ मारण वाला पुरुष चांद्रायण व्रत करे तां शुद्ध होताहै ॥ केशांके

यत्र हते रुधिरंदृश्यते तत्र वधनिमित्तं पाषाणादिप्रहारः। कार्श्योपलंभेमृ तिहेतुर्व्याधिर्ज्ञेयः। लालादर्शने सर्पदंशोनिमित्तमित्याद्युचितैर्लिंगैर्निमि त्तस्वरूपंनिश्चेतव्यम् वाह्यावयवभंगचिन्हमभिधायाभ्यन्तरावयवभंग चिन्हमाह ग्रासेति ग्रासार्थंचोदितावापिअध्वानंनैवगच्छति मनुनाचैवमेके नसर्वशास्त्राणिजानता ॥ २१ ॥ प्रायश्चित्तंतुतेनोक्तंगोघ्नश्चांद्रायणंचरेत् केशानांरक्षणार्थायद्विगुणंव्रतमाचरेत् ॥ २२ ॥ द्विगुणेव्रतआदिष्टेदक्षिणा द्विगुणाभवेत् ॥ २३ ॥ यस्यनद्विगुणंदानंकेशाश्चपरिरक्षिताः तत्पापं तस्यतिष्ठतित्यक्त्वाचनरकंव्रजेत् ॥ २४ ॥ स्त्रीणामपिगोवधादौकर्त्तव्य तामाह ॥ यत्किंचित्क्रियतेपापंसर्वंकेशेषुतिष्ठति सर्वान्केशान्समुद्धृत्य

छेदयेदंगुलिद्वयम् ॥ १ ॥

रक्षणवास्ते दूणा व्रतकरे २२ और दूणेव्रतके कीतयां होयां दक्षिणा भी दूणी देणे योग्यहै २३ ॥ यस्येति जिस पुरुषने दूणी दक्षिणा नहिं दित्ती और केशोंकी रक्षा करी है तिस पुरुषका पाप स्थिर रहताहै और पछे देहकों त्यागकर्के नरककों प्राप्त होताहै ॥ २४ । अब स्त्रीयांकोंभी गोवधादि पाप विषे कर्त्तव्यता कहतेहैं यदिति जो कुछ पाप स्त्रीकर्तीहै सो संपूर्ण केशोंविषे स्थित रहताहै उन स्त्रीयांकों चाहिए कि संपूर्ण केशांकों रखकरके दो २ अंगुलि प्रमाण केश कटादेण परंतु एह विधि सधवाकों है और विधवाकों अधिक कटाणेमे भी दोष नहिंहै १

इस प्रकार स्त्रियां और कुमारीयांको शिरका मुंडन किहाहै और स्त्रियां को केश कटाणे योग्य नहिहै और ना पतितें दूरविषें शयन करणा २ और रात्रीमे गौ शाला विषें वास नाहिं करणा और दिनमे गौआंके पीछे नहिं जाणा और नदीविषें वा संगमविषें वा वनविषें नहिं जाणा ॥ ३ ॥ स्त्रीयांको चर्म का वस्त्र नाहिं लेणा इसप्रकार व्रतकों स्त्री करे अर्थात् एह संपूर्ण वार्त्ता नहिं करे ॥ जो करणा है तिसको कहतेहैं त्रीति त्रिकाल स्नानकों करे और देवतयोंका पूजन करे ४ और कृच्छ्र चांद्रायणादि जो व्रत तिसकों स्त्री वंधुओं के मध्यविषें हि करे और घरविषें सदाहि स्थित रहे पवित्र हों कर्के व्रत नूं करे ५ अव पापछपाणे वालेकी निंदाकरतेहैं इहेति इससंसार विषें जो पुरुष गोवधकर्के पीछे उसपापको छपातेहैं सो पुरुष घोर नरकविषे प्राप्तहोतेहैं कैसा

एवंनारीकुमारीणां शिरसोमुंडनंस्मृतम् नास्त्रियाःकेशवपनंनदूरेशयनासनम् २ ॥ नचगोष्ठेवसेद्रात्रौनदिवागाअनुव्रजेत् नदीपुसंगमेचैवअरण्येपुविशेषतः ३ नस्त्रीणामजिनंवासोव्रतमेवंसमाचरेत् त्रिसंध्यंस्नानमित्युक्तंसुराणामर्चनंतथा ॥ ४ ॥ वंधुमध्येव्रतंतासांकृच्छ्रंचांद्रायणादिकम् गृहेपुसततंतिष्ठेच्छुचिर्नियममाचरेत् ॥ ५ ॥ इहयोगोवधंकृत्वाप्रच्छादयितुमिच्छति सयातिनरकंघोरं कालसूत्रमसंशयम् ॥ ६ ॥ विमुक्तोनरकात्तस्मान्मर्त्यलोकेप्रजायते क्लीवोदुःखीचकुष्ठीचसप्तजन्मानिवैनरः ७ तस्मात्प्रकाशयेत्पापंस्वधर्मंसततंचरेत् स्त्रीवालभृत्यविप्रेषुअतिकोपंविवर्जयेत् ।८ ❀ इत्युपपातकप्रायश्चित्तेषुगोवधप्रायश्चित्तं प्रथमम् । १ ।❀ अथायाज्ययाजने प्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ व्रात्यानांयाजनंकृत्वापरेषामंत्यकर्म्मच अभिचारमहीनंचत्रिभिःकृच्छ्रैर्व्यपोहति ॥ १ ॥

नरकहै कालसूत्र है नाम जिसका ६ तिस नरकतें विमुक्त होकर मनुष्यलोक विषे उत्पन्न होताहै तिसविषे भी नपुंसक और कुष्टी और दुःखी सप्त जन्मपर्य्यंत सो पुरुष रहताहै ७ तिस कारणते पुरुष अपने पापकों प्रकट कर देवे अपने धर्म्मकों सदा करता रहे स्त्री और वालक और नौकर और ब्राह्मण इनांविषें वहुत कोप न करे । ८ ❀ एह उपपातक प्रायश्चित्त विषें गोवधका प्रायश्चित्त प्रथम किहाहै ॥ ❀ अव नहिं जो यज्ञका अधिकारी तिसको यज्ञकरवाणे विषें मनुजी प्रायश्चित्त कहतेहैं व्रात्येति संस्कारते हीन जो पुरुष इनकों यज्ञ कराणा और वंधुआंतें भिन्न उरोंका अंत्यकर्म्म करणा और अहीन जो अभिचार इनके विषे जो दोषहै सो तिन्न कृच्छ्रवतों कर्के दूर होताहै ॥ १ ॥

परेषामंत्यकर्म्म एह अत्यंत अभ्यासका विषयहै अर्थात् वहुत वार करणेका विषयहै वा शूद्रके अंत्यकर्मकराणेका विषयहै प्रायश्चित्त वहुत होणेतें अहीन क्या यज्ञविशेष दो रात्रीतें लेकर बारां १२ दिन तक जो दूसरेके मारणका उपाय करणा सो अभिचार कियाहै ॥ इसमे एह अभिप्रायहै कि एह अभिचार गुरुआदिका करें तो दोषहै होरकाकरे तो दोष नहिहै इसमें वचनहै (अभिचारोऽनभिचारणीयस्येति) और वो अभिचार भी दोतीनदिनआदिकर्के साध्य जानना एक दिनसाध्य नहि जानना इसमे श्रुतिप्रमाणहै(अहीनेति)याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं त्रीनिति संस्कार रहित पुरुषकों यज्ञ करवाणवाला और अभिचारी तीन कृच्छ्र व्रत करे और वेदभुलाणे वाला वर्ष पर्य्यंत यवभक्षण करे किसे शरणागतकों त्यागे तौंभी यवभक्षणकरे तां शुद्धहोताहै १ इसका तात्पर्य्य एहहै किप्राजापत्यप्रभृति जो तीनकृच्छ्रहैं तिनांको गुरु लघु भावहै क्या इनमें कोई गुरुहै और कोइ लघुहै तिसी तरह इनांको त्रित्वनिमित्तके गुरु लघु भाव कर्के कल्पना

परेषामंत्यकर्म्मेत्यत्यंताभ्यासविषयम् शूद्रांत्यकर्म्मविषयंवा प्रायश्चित्तस्य गुरुत्वात् अहीनोद्विरात्रादिद्वादशाहपर्य्यंतोहर्गणः।अयमभिचारोऽभिचारा नर्हस्य गुर्वादेःकृतोदोषावहोनान्यस्य अभिचारोऽनभिचारणीयस्येतिवच नात् सोप्यहीनो द्वित्रिरात्रादिसाध्यः नत्वेकदिनीयइत्यर्थः अहीनयजनम शुचिकरमितिश्रुतेः।याज्ञवल्क्यः।त्रीन्कृच्छ्रानाचरेद्व्रात्ययाजकोभिचरन्नपि वेदप्लावीयवाश्यब्दंत्यक्त्वाचशरणागतम् १ त्रीन्कृच्छ्रान्प्राजापत्यप्रभृतीन् तेषांचगुरुलघुभूतानांत्रित्वं निमित्तगुरुलघुभावेनकल्पनीयम् किंच उपपा तकशुद्धिःस्यादेवंचांद्रायणेनतु पयसावापिमासेनपराकेणाथवापुनः२ एवं गोवधोक्तव्रतप्रकारेण मासं पंचगव्याशनादिना अन्येषां व्रात्यतादीना मुपपातकानां शुद्धिर्भवेत् वा वक्ष्यमाणलक्षणेन चांद्रायणेन मासंपयोव्रते नवापराकेणवाशुद्धिर्भवेत् ॥

करणे योग्यहै अर्थात् निमित्त अधिक होवें तद इनांको गुरु करणा जेकर निमित्त लघु होवे तां लघु करदेणा जेकर निमित्त मध्यम होवे तां एक लघु दूसरा गुरु करणे योग्यहै १ कुछक और कहतेहैं उपेति एवं क्या गोवधोक्त प्रकार कर्के और चांद्रायण व्रत कर्के उपपातककी शुद्धि होतीहै वा महीने पर्य्यंत जलपान करणे कर्के अथवा पराक व्रत कर्के शुद्धि होती है २ इसी अर्थकों स्पष्ट कर्तेहैं एवमिति इसतरां गोवध विषे कहा जो व्रतप्रकार मास पंचगव्याशनादि तिस कर्के और व्रात्यतादि उपपातकोंकी शुद्धि कहीहै वा आगे कहणा है लक्षण जिसका ऐसे चान्द्रायण कर्के वा महीनेका जो पयोव्रत तिस कर्के वा पराक व्रत कर्के शुद्धि कहीहै एह चार व्रत दिखाएहैं ॥

परंतु इसी विषे अन्यत्र सिद्धका अन्यत्र समर्थनरूप जो अतिदेशवाक्य तिसतें गो चर्म का वस्त्र और गोसेवादिक गोवध विषे कितनेक असाधारण धर्म्महैं तिन्हां कर्के कुछक न्यूनता जानणें योग्यहै ॥ अर्थात् गोचर्म्मधारणादि इसमें नहि करणे योग्य ॥ एह व्रत चतुष्टय कामनाके विना करणे वाला जो पुरुष तिस विषे शक्तिकी अपेक्षा कर्के विकल्पकरणे योग्यहै अर्थात् जैसी शक्ति होवे तैसा करणें योग्यहैं और कामना कर्के करणे वालाजो पुरुष तिसविषें कहतेहै ॥ एतदिति ॥ उपपातकी जो द्विज हैं सो अवकीर्णिकों त्याग कर्के अपणी शुद्धि वास्ते चांद्रायण व्रतकों करें इसकों स्पष्टकर्त्तेहैंकि जिसका स्वप्नादिविषें वीर्य्यादि स्खलन होवे उसका नाम अवकीर्णीहै एह जो मनुका कथनकिया होया तीनमहीनेका व्रत एहि देख णे योग्यहै ॥ इसी वचनतें एह प्रायश्चित्तका अतिदेश है सो सब उपपातक गणों विषे पठित जो पाप हैं सो कैसेहैं कि कियाहै प्रायश्चित्त जिनांकावा नहि कियाहै प्रायश्चित्त जिनांका

अत्रातिदेशसामर्थ्याद्गोचर्मवसनगोपरिचर्यादिभिर्गोवधासाधारणैः कतिपयैर्न्यूनत्वमवगम्यते एतच्चव्रतचतुष्टयमकामकारेशक्त्यपेक्षयाविकल्पितं द्रष्टव्यम् ॥ कामकारेतु ॥ एतदेवव्रतंकुर्युरुपपातकिनोद्विजाः अवकीर्णिवर्जं शुद्ध्यर्थंचांद्रायणमथापिवेति मनूक्तंत्रैमासिकंद्रष्टव्यम् अतएववचनादयं प्रायश्चित्तादेशःसर्वेषामुपपातकगणपठितानामुक्तप्रायश्चित्तानामनुक्तप्रायश्चित्तानांचावकीर्णिवर्जितानामविशेषेणवेदितव्यः अवकीर्णिनस्तुप्रतिपदोक्तमेव अतोव्रात्यतादिषु अस्मिन् शास्त्रे शास्त्रांतरे वा दृष्टैः प्रायश्चित्तैःसहोपपातकशुद्धिःस्यादेवमित्यादिना प्रतिपादितव्रतचतुष्टयस्य समविषमताकल्पनेन विकल्पोविषयविभागोवाश्रयणीयइतिमिताक्षरा ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरेपीत्थमेवव्याख्यातम् । तद्यथा अयाज्ययाजकोव्रात्ययाजको व्रात्योपनेता व्रात्याध्यापकः ॥

और अवकीर्णि कर्के रहित जोहैं तिनांका अविशेष कर्के जानणे योग्यहै अर्थात् एह प्रायश्चित्त सभना उपपातकोंदा सांझाहै २ और अवकीर्णि का पृथक् प्रायश्चित्त किया है इस कारण तें व्रात्यतादियोंको इस शास्त्र विषे वा शास्त्रांतर विषें देखे होए जो प्रायश्चित्त तिनांके साथहि-(उपपातकशुद्धिःस्यात्) इत्यादि वचन कर्के प्रतिपादन कीते जो चारव्रत तिनांको सम और विषमताके कल्पना करणें कर्के विकल्प वा विषयविभाग आश्रय करणे योग्यहै एह मिताक्षरामें कहाहै और प्रायश्चित्तेन्दु शेखरविषेंभी इसी प्रकार व्याख्यान कियाहै सो जैसें हैंतेसै कथन करतेहैं अयाज्येति नहिं जिसको यज्ञका अधिकार तिसको यज्ञ करवाणवाला १ और संस्कारतें हीन जोपुरुषतिसको यज्ञ करवाण वाला २ और व्रात्यपुरुषको यज्ञोपवीत करवाण वाला ३ और व्रात्य कोंपढाणवाला ४

और अपवित्र पुरुषकों यज्ञ करवाण वाला ५ और शूद्रका जो कर्म्म क्रियादि करवाणवाला ६ और वेद भुलाण वाला ७ और चोरतें विना जो शरणागत पुरुष तिसको त्यागण वाला ८ और जो पुरुष चोरकी रक्षा करण वाला ९ और वशीकरण उच्चाटनादि करके जो अभिचार कर्त्ताहै १० एह संपूर्ण न जाणकरके करें तां कृच्छ्र और सांतपन और अतिकृच्छ्र इनांको यथा योग्यकरें परंतु एह व्यवस्थाहै कि कितेक तीन इकठे करणे कितेक इक करणा अर्थात् जैसा पाप होवे तैसाही व्रतकरणा ॥ अब प्रायश्चित्तविवेकविषें मनुजी कहतेहैं असदिति खोटे दानके लयणेवाला उभयमुखीगौ और तिलधेनु आदिदानका जो प्रतिग्रहीता सोहै असत्प्रति ग्रहीताहै और नांहि यज्ञका जो अधिकारी तिसको यज्ञ करवाणवाला और नक्षत्रोंकरके जीवकाकरण

अहीनयाजकः शूद्रांत्येष्टिकर्म्मयाजको वेदविप्लावी तस्करेतरशरणागत त्यागी तस्कररक्षकः वशीकरणोच्चाटनादिरूपाभिचारकर्त्ताचाऽमत्या कृच्छ्रसांतपनातिकृच्छ्रेषु त्रिषु यथायोग्यंक्वचित्समुदितंक्वचिदेकंकुर्य्यादिति प्रायश्चित्तविवेकेमनुः। असत्प्रतिग्रहीतारस्तथैवायाज्ययाजकाः नक्षत्रैर्जीवंतेयश्चसेंधकारंप्रपद्यते वसिष्ठः ॥ श्रद्दधानस्यभोक्तव्यंचौरस्यापिविशेषतः नत्वेववहुयाज्यस्ययश्चोपनयतेवहून् १ प्रायश्चित्तेत्रवौधायनः। वहुप्रतिग्राह्यस्यवाप्रतिगृह्य अयाज्यान्याजयित्वाअप्रातिग्राह्यस्य वा प्रतिगृह्य अनाश्यस्यवाअन्नमशित्वातरत्समंदीयंजपेत् इत्ययाज्ययाजकप्रायश्चित्तं द्वितीयम् ॥ २ ॥ ❀

वाला पुरुष एह सभ अंधकार नरकविषें प्राप्तहोतेहैं १ अब वसिष्ठजीकहतेहैं श्रदिति श्रद्धावाला चोरभी होवे तिसका अन्न भक्षण करलैणा और वहुत यज्ञ करवाणवाले पुरुषका और वहुतयोंकोयज्ञोपवीत करवाण वालेका अन्न भक्षण नहिं करणा ॥ इस प्रायश्चित्तविषें वौधायनजी कहतेहैं ॥ वहुत दान लयण वाले पुरुषका दान लयणा। और अयाज्यपुरुषकों यज्ञकरवाणा और जिसका अन्न नहिं खाणा होवें तिसका भी खाई लयणा इनां सभनां विषे तरत्समंदीय नाम जो ऋचा तिसका जप करणें योग्यहै ॥ एह नांहि यज्ञका जो अधिकारी तिसको यज्ञ करवाण वाले पुरुषका प्रायश्चित्त कियाहै एह उपपातक गणनामें दूसरा है ॥ २ ॥ ❀

अब परस्त्री गमनका प्रायश्चित्त कहतेहैं पारदार्य्यमिति इसविषे जो पारदार्य्यपापहै सो गुरुतल्प और तत्सम और तदतिदेशिक इनांतें भिन्न विषयजानणा तिनांविषे उपपातकका जो सामान्य प्रायश्चित्तहै तिसका गुरुदारादिविषे अपवाद पिच्छे कियाहै तैसें अपवादान्तर गौतमजी कहतेहैं वार्षिकमिति वर्ष ब्रह्मचर्यके प्रसंगमें कियाहै कि ऐसें एक वर्षहि ब्रह्मचर्य्य उपपातक विषे जानणा दोवर्ष परस्त्रीगमनविषे ब्रह्मचर्यजानणा और त्रयवर्ष ब्रह्मचर्य्यवेदपाठीकी स्त्रीविषे जानणा इसविषे इसप्रकार व्यवस्था कहतेहैं ॥ ऋत्विति ऋतुकालविषे कामना करके जातिमात्र ब्राह्मणीके गमन विषे दोवर्ष ब्रह्मचर्य धारणातिसीविषे वेदपाठीकी स्त्रीविषे गमनकरे तां तीनवर्ष ब्रह्मचर्य धारणकरे

* अथपारदार्य्यम् पारदार्य्यंचात्र गुरुतल्पतत्समतदातिदेशिकव्यतिरिक्तविषयम् तत्रोपपातकसामान्यप्रायश्चित्तस्य गुरुदारादावपवादउक्तएव। तथाऽपवादान्तरमाह गौत्तमः। वार्षिकंब्रह्मचर्यंप्रस्तुत्योपपातकेषुचैवमिति द्वेपरदारे त्रीणिश्रोत्रियस्येति अत्रेत्थंव्यवस्थामाहुः। ऋतुकाले कामतोजातिमात्रब्राह्मणीगमने वार्षिकं ब्रह्मचर्यम् तस्मिन्नेवकाले कर्मशालित्वादिगुणयोगिन्या ब्राह्मण्यागमने द्वे वर्षे तत्रैव श्रोत्रियभार्यागमने त्रैवार्षिकमिति यद्वा ब्राह्मणीक्षत्रियावैश्यापरत्वेन त्रैवार्षिकद्वैवार्षिकैकवार्षिकाणां व्यवस्थेति ऋतुकालादन्यत्रगमनेतूपपातकेष्वौत्सर्गिकतयोक्तंवोध्यमितिदिक्
॥ अत्रोशनाः ॥ गमनेतुव्रतंयत्स्याद्गर्भेतद्द्विगुणंचरेत् ॥ १ ॥

इसी विषे और पक्ष कहतेहैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी और क्षत्रियाणी और वैश्यकी स्त्री इनांकों गमनकाविषय रक्ष करके तीनवर्ष वा दो वर्ष वा एकवर्ष इनकी व्यवस्था जानणी अर्थात् ब्राह्मणी विषे गमन करणेंतें तीनवर्ष ब्रह्मचर्य करणा और क्षत्रियाणी विषे गमन करणेतें दो वर्ष ब्रह्मचर्य धारणा और वैश्यकी स्त्री विषे गमन करणेंतें एकवर्ष ब्रह्मचर्य धारणा ऐसी व्यवस्थाहै और ऋतुकालतें अन्यत्र गमन विषे उपपातक विषे उपपातकशुद्धिःस्यादित्यादि वाक्य करके जो सामान्य प्रायश्चित्त कियाहै सो जानणे योग्यहै ॥ इसीविषे शुक्रजी कहतेहैं गमनइति गमन विषे जो व्रत कियाहै जेकर गमनकरणेंतें गर्भ होवे तां दूणा व्रत करे १ ॥

संवर्त जी कहतेहैं कथमिति क्षत्री वा वैश्य ब्राह्मणीविषें गमनकरे तद कृच्छ्र वा सांतपन व्रतकों पापकी शुद्धि वास्ते करे १ और शूद्र कामके वश होया होया ब्राह्मणी विषें गमन करे तद गोमूत्र युक्त जो यव तिनांको पापकी शुद्धि वास्ते एक महीना भक्षण करे २ परंतु एह प्रायश्चित्त अत्यंत व्यभिचारिणी ब्राह्मणीके गमन विषें जानणा ॥ होरनां विषें कहतेहैं प्रातिलोम्येति प्रातिलोम्यविषें पुरुषका वध करणा वा नासा कर्णादिका कट देणा अर्थात् शूद्र वैश्यादि स्त्री मेंगमन करे वैश्य क्षत्रियादिस्त्री विषें गमन करे क्षत्री ब्राह्मणी विषें गमन करे तद इसमें ऐसी व्यवस्थाहै परंतु इसका ऐसा अभि प्रायहै कि (प्रातिलोम्ये)इत्यादि वचन दंडपारुष्यके दंडविषेहै तिस जगादंडवहुत श्रवण करणेंकर्के प्रायश्चित्तभी वहुत जानणा ॥ अव नीचजातिकी स्त्रीविषे आपस्तंवजी कहतेहैं म्लेच्छीति म्लेच्छकी स्त्री अर्थात् मुसलमानकी स्त्री म्लेच्छ शब्दका अर्थआगे

संवर्त्तः कथंचिद्ब्राह्मणींगच्छेत्क्षत्रियोवैश्यएवच कृच्छ्रंसांतपनंवास्यात् प्रायश्चित्तंविशुद्धये १ शूद्रस्तुब्राह्मणींगच्छेत्कथंचित्काममोहितः गोमूत्रयावकाहारोमासेनैकेनशुद्ध्यति २ इदंचात्यंतव्यभिचारितब्राह्मणीगमनविषयम् अन्यत्रतु। प्रातिलोम्येवधःपुंसोनासाकर्णादिकर्त्तनमितिदंडगौरवस्मरणात्प्रायश्चित्तमपिगुरुतरं कल्प्यम् आपस्तंवः। म्लेच्छीनटीचर्मकारीरजकीवरटीतथा एतासुगमनंकृत्वाचरेच्चान्द्रायणद्वयमिति १ रजकश्चर्मकारश्च नटोवरटएवच कैवर्त्तमेदभिल्लाश्चसप्तैतेह्यंत्यजाःस्मृताः २ एतासांचांत्यजस्त्रीणांमध्येयदेकस्याव्यवायेप्रायश्चित्तमभिहितंतत्सर्वासुभवति सर्वासां सदृशत्वात् ॥ तथाहोशनाः॥ वहूनामेकधर्म्माणामेकस्यापियदुच्यते सर्वेषांतद्भवेत्कार्य्यमेकरूपाहितेस्मृताइति १ ॥

आवेगा जो गोमांसकाभक्षक है और सदाचारतेहीनइत्यादि और नट्टुए की स्त्री और चमयारी और धोवण और डूमणी इनांविषे गमनकर्के दो चांद्रायण व्रत करे तां शुद्ध होताहै १ चर्म्मकार पदसें औरकाभी स्मरण आयाहै इसकर्के तिनकी गणना करतेहैं रजक इति धोवी और चमयार और नटुआ और डूम और मलाह और मेद इनकाहि भेदहै जिनकोंदडई कहतेहैं और भिल्ल बेलदार अथवा वनमें रहण वाले किरातलोक एह सत्त अत्यजजाति कही है २ एह जो अंत्यज इनांकी स्त्रियांके मध्यविषें जो इकके गमनविषें प्रायश्चित्त है सो सभनां विषें जानणा क्योंकि सभनांकी तुल्य होणेते ॥ तैसेंहि शुक्रजी कहतेहैं वहूनामिति एकधर्म्मवाले जो वहुत होण तिनांविषें एकका जो कार्य कहीदाहै सो कार्य सभनां को होताहै जिसकर्के सो सम्पूर्ण एक रूप कहेहैं ॥ १ ॥

बृहत्संवर्त्तनेंभी एही कियाहै ॥ रजकेति रजककी स्त्री और फंदकीकी स्त्री और नटुए की स्त्री और वंज वा चर्म्म इनां कर्के जो उपजीविका करण वाले तिनांकी जो स्त्री इनांविषें ब्राह्मणादि गमनकरे तां दो चान्द्रायण व्रत करणें कर्के शुद्ध होताहै १ ॥ शुक्रजी कहतेहैं चांडाल्यामिति चांडालीविषें गर्भको स्थापनकरे तां गुरुतल्प व्रत करें अर्थात् गुरुतल्प तुल्य पाप होताहै ॥ जो आपस्तंवजीका वचनहै कि अंत्यजायामिति पीछे कथन कीचे जो अन्त्यज तिनांकी स्त्री विषें जद ब्राह्मणादिकी प्रसूतिहोवे तां तिसविषें प्रायश्चित नहि होताहै तिसपुरुषको विदेशमें निकाल देणा इसमें संशय नहि करणा एह इच्छा कर्के करण वाले पुरुष विषे जानणा ॥ १ ॥ इसका स्पष्टार्थ कहतेहैं ॥ इसका एह अर्थहै अन्त्यजाके साथ गमन करण वाला कृतागस्य क्या किया है अपराध जिसनें कृतांक

बृहत्संवर्त्तः ॥ रजकव्याधशैलूषवेणुचर्मोपजीविनीः एतास्तुब्राह्मणोगत्वा चरेच्चांद्रायणद्वयम् ॥ १ उशनाः ॥ चांडाल्यांगर्भमारोप्य गुरुतल्पव्रतंचरेत् यत्त्वापस्तंववचनम् । अंत्यजायांप्रसूतस्यनिष्कृतिर्नविधीयते निर्वासनंकृताग स्यतस्यकार्य्यमसंशयमिति १ तत्कामकारविषयमिति अंत्यजायांप्रसूतस्य अं त्यजागामिनः कृतागस्यकृतापराधस्य कृतांकस्येतिवापाठः अत्रसर्वत्रमत्या भ्यासेप्रतिनिमित्तनैमित्तिकानुवृत्तौप्रसक्तायांविशेषमाह लौगाक्षिः । अभ्या सेऽहर्गुणाद्वृद्धिर्मासादर्वाग्विधीयते ततोमासगुणाद्वृद्धिर्यावत्संवत्सरंभवेत् १ अमतिपूर्वावृत्तौविशेषमाह । सकृत्कृतेषुयत्प्रोक्तंत्रिगुणंतत्त्रिभिर्दिनैः मासा त्पंचगुणंप्रोक्तंषण्मासाद्दशधाभवेत् २ संवत्सरात्पंचदशद्यब्दाद्विंशगुणंभवेत्

स्य इसपाठमें एह अर्थ है क्या कीताहै अंक क्या चिन्हभगका अथवा लिंगकाजिसको ऐसा कर्के निकाल देणा ॥ इन्हां सभना विषे जाण कर्के बहुत अभ्यासदे होयां २ जितने निमित्त होवें उतने ही नैमित्तक होनेचाहिए अर्थात् जितने पाप होवें उतनेहीं प्रायश्चित्त होनेचाहिए इस न्या यके प्रसंग के होयां विशेष कहतेहैं लौगाक्षिजी अभ्यासइति महीनेके उरें अभ्यासदें होयां एकादिन प्रायश्चित्त की वृद्धि करणी जैसें अठ दिनके प्रायश्चित्तमें नव ९ दिन होण और वर्ष तक अभ्यासदे होयां महीनेकी वृद्धिकरणी १ अज्ञान पूर्वक अभ्यास विषे विशेष कहतेहैं सकृदिति एकवेर पापविषे जो प्रायश्चित्त कियाहै सोप्रायश्चित्त तीन दिन पाप करणेंमें त्रिगुणकरणा और महीनें तक पाप करणेंमें पंचगुणा करणा और छे ६ महीनें तक पाप करणेंमें दश गुणा करणा औरवर्ष तक पाप करणे में पंद्रां १५ गुणाकरणा दोवर्ष पाप करणे में वीस गुणा करणा

इसप्रकार कल्पना करणे योग्यहै और इसके आगे होवे तां अपनी कल्पना करणी चाहिए जैसें एकवार करणेमें जो कियाहै सो दोवर्षउप्पर जद तीनदिन होण तां वीस गुणांकर्के पीछे एकवारकरणे वालेकों त्रिगुणकरणा इसके आगे मासादिविषें ऐसेंहि कलपनाकरलयणी चारव र्ष तक तिसके आगे छेवर्ष तक फेर ऐसेहि जाणो इसमें कोईं ऐसा अर्थकरतेहैं कि दोवर्षतें आगे तीसरेवर्षविषे पंचगुणा वृद्धिके हसावसें २५ गुणाकरणे चाहिए परंतु इसमें एहवातध्यान करणी चाहिए कि दोवर्षतें जद एकमहीनाअधिकहै वा ४ अथवा १०तांभी पंजहिवधेंगे और चौथे वर्ष विषे३० व्रत पांचमें ३५ ऐसेहि जाणो यह शातातपजीका वचन यथार्थहै ३ अब दूसरे व्रतकी व्यवस्थाकहतेहैं विधेरिति एहजो पहलीविधिहै इसतें दूसरी विधिविषे दूणा करणा एहजो आवृत्ति विधानहै सो महापातकके विषयमे जानणे योग्यहै अब औरकहतेहैं पुषेति किसेपुरुषकें

अतोप्येवंप्रकल्प्यंस्याच्छातातपवचोयथा ३ यत्तु विधेःप्राथमिकादस्माद् द्वितीयेद्विगुणंभवेत् इत्यावृत्तिविधानम् तत्तुमहापातकविषयमितिदिगिति पुरुषांतराव्यभिचारितां जातिमात्रविप्रास्तौ विप्रोगत्वापूर्वोक्तंवार्षिकंब्र ह्मचर्य्यंव्रतम् धर्मादिकर्म्मशीलत्वादिगुणशालिनीं तादृशींगंतुर्विप्रस्यद्वि वार्षिकंप्रायश्चित्तम् श्रोत्रियपत्न्यांतादृश्यांत्रिवार्षिकंतत् ताभिर्यदिद्रव्यं दत्तंभवेत्तर्हितत्संत्यज्यप्रायश्चित्तम् द्वित्रिचतुर्वारगमने क्रमेण द्वित्रिचतुर्गु णम् अग्रेचपातित्यम् एवंद्वितीयतृतीयादिगमनेपि

साथजिसने व्य भिचार नाहीं किया ऐसी जो जातिमात्र ब्राह्मणीतिसके साथ ऋतुकालविषे ब्राह्मण गमनकरे तां विषे पूर्वोक्तवर्षतक ब्रह्मचर्य्य व्रतकरे तदशुद्धहोताहै और धर्मादि कर्म्म और शील त्वादिगुणों कर्के युक्त ब्राह्मणी गमन करण वाले ब्राह्मणकों दोवर्षका प्रायश्चितहै और ॥ वेदपा ठीकी धर्मादि कर्के युक्तस्त्रीविषे गमन करे तां तीन वर्ष प्रायश्चित्तकरणा तिनां स्त्रियांने जो कुछ द्रव्य दित्ताहै तिसको त्याग कर्के प्रायश्चित्तकरणा परंतु दोवार अथवा तीनवार अथवा चारवार उसीस्त्रीविषे गमन करणेमें दूणा त्रीणा चौगुणा व्रत करणा चाहिए और इसतें अधिक गमन करे तां पतितहोताहै अर्थात् तिसका प्रायश्चित्त नहिहै एह किसेका मतहै ॥ और कलियुगमें पतितकाभी प्रायश्चित्तहै एह आगे महापातकि प्रकरण विषे आवेगा एवमिति इसी तरह दो त्रय और चार स्त्री विषे गमनकरणेमे प्रायश्चित्त जानणा

और इससें विलक्षण शूलपाणि मिताक्षरादिकारोंने कियाहैं ॥ एकेति एकस्त्री विषे दो त्रय वार गमनदे होयां पूर्वोक्त ही द्वि त्रि चतुर्गुण व्रतका एकपादन्यून करणा और क्षत्रियादि अपणे वर्णकीस्त्रीविषें गमन करें तां पूर्वोक्त व्रतका एक पाद ऊन व्रत करे और ब्राह्मणको गुणवाली जो क्षत्रियादियोंकी स्त्री तिसाविषें गमन करणेतें दो वर्ष इकवर्ष छे ६ महीने तक क्रमतें व्रत करणा चाहिए अर्थात् क्षत्रीकी स्त्री विषें दो वर्ष और वैश्यकी स्त्रीमें एक वर्ष शूद्रकी स्त्रीमें छे महीनें इस तरांव्यवस्थाजानणी पराई जो गुणवालीहै शूद्री तिसाविषें शूद्र गमन करे तां छे ६ महीनेका व्रत करे इसमें अज्ञान करके करे तां सबजगा अर्द्ध व्रत जानणा अपणे भर्त्ता से अतिरिक्त समान वर्णके एक पुरुष साथ गमन करण वाली स्त्री के साथ गमन करण वालेकों पूर्वोक्तहि व्रत क्या द्वेपरदारे इसीका इक पाद न्यून व्रत करणा उचित है ॥ दो पुरुष साथ गमन करण

शूलपाणिमिताक्षराकारादयस्तु एकस्यामेवद्वित्रिवारगमने पूर्वोक्तमेवपाद हान्येतिप्रोचुः। क्षत्रियादीनांच स्वस्ववर्णासु गमनेपादहानिः विप्रस्यगुण वतीषुक्षत्रियादिस्त्रीषु द्विवार्षिकैकवार्षिकषण्मासिकानीति शूद्रस्यपरकी यायांगुणवत्यांशूद्रयांगंतुः पाण्मासिकम् अकामतःसर्वत्रैतदर्धम् । स्वभ र्तृव्यतिरिक्तसवर्णैकपुरुषगामिन्यां गंतुः पूर्वोक्तमेव पादहान्याकार्यम् पुरु षद्वयगामिन्यांद्विपादहानिः पुरुषत्रयगामिन्यांत्रिपादहानिः पुरुषचतुष्ट यगामिन्यां स्वैरिणीसंज्ञायां विप्रायां गंतुस्त्र्यहोपवासपूर्वकं घृतपात्रदानम् तादृश्यां क्षत्रियायामुपवासपूर्वकमाढकयवदानम् ॥ वैश्यायांगंताचतु र्थकालाहारोविप्रान्भोजयेदिति शूद्रायांगंतुः सचैलस्नानपूर्वकमुदकुंभदा नम्। पंचमादिगामिन्यांबंधकीसंज्ञायां अष्टमुष्टियवदानम् तादृश्यांशूद्रायां विप्रस्योदकुंभदानम्

वाली के साथ गमन करण वालेकों दो पाद न्यून व्रत करणा त्रय पुरुष साथ गमन करण वालीके साथ गमन करण वाले कों त्रय पाद न्यून व्रत करणा ॥ चार पुरुषके साथ गमन करण वालीको स्वैरिणी संज्ञाहै ऐसी ब्राह्मणी विषें गमन करण वाला त्रय उपवास पूर्वक घृतपात्र दान करे ॥ तैसीहि क्षत्रियाणी विषें गमन करणेतें उपवासपूर्वक एक आढकयवदान करे ॥ तैसेहि वैश्यकीस्त्रीके साथ गमन करण वाला चौथे काल भोजन करे और ब्राह्मणांकों भोजन देवे ॥ तैसी शूद्री विषे गमन करण वाला सचैल स्नान पूर्वक जलपूर्णघटका दान करे ॥ पंचमादि पुरुष साथ गमन करण वाली की बंधकी संज्ञाहै इस विषे गमन करण वालेकों अष्ठ मुष्ठी यवदान करणा योग्यहै बंधकी संज्ञावाली शूद्रीविषे गमन कर णेतें ब्राह्मणको जलपूरितघटका दान देणा उचितहै

क्षत्रीति वंधकीक्षत्रियाणीविषे गमनकरणेतें गोदानकरणा और वैश्याविषे गमन करणेतें वस्त्र दानकरणा ॥ जेकर बहुत वेर गमन करे तां प्रायश्चित्त भी बहुत वेर करे । इससे विशेष वंधकी गमन विषे षड्त्रिंशन्मतमें भी कियाहै ब्राह्मणीमिति वंधकी ब्राह्मणी विषे गमन करे तां अष्ट मुष्टि अन्न ब्राह्मणके ताईं देवे और वंधकी राजाकी स्त्री विषे गमन करे तां धनुष देवे परंतु राजा इसजगा जातिमात्र जानणा पृथिवीपति नहि पृथ्वीपतिकी स्त्रीकों औसाहोणा संभावना विषे नहि आउताहै और वैश्याविषें गमन करे तां वस्त्र दान करे १ शूद्री विषें गमन करें तां जलका घट ब्राह्मणके ताईं देवे वा एक दिन उपवास करे और ब्राह्मणकों भोजन देवे २ किंचित् नाम अष्टमुष्टि धान्यका है ॥ अव प्रचेताजी और प्रायश्चित्त कहतेहैं शूद्री वंधकीके साथ गमनदेहोयां आचमन करके प्राणायाम करे ॥ ब्राह्मण वंधकी साथ गमन करे तां गडवी दान करे

क्षत्रियायांधेनुदानम् वैश्यायांवस्त्रदानम् । अभ्यासेप्रायश्चित्तावृत्तिः वंधकी गमनेषड्त्रिंशन्मतेपि । ब्राह्मणींवंधकींगत्वाकिंचिद्दद्याद्द्विजातये राजन्यां चधनुर्दद्याद्वैश्यांगत्वातुचैलकम् १ शूद्रांगत्वातुवैविप्रउदकुंभंद्विजातये दिवसोपोषितोवास्याद्दद्याद्विप्रायभोजनमिति २ किंचिदष्टमुष्ट्यात्मकंधान्यम् प्रायश्चित्तांतरमाह प्रचेताः । वंधकीगमने उपस्पृश्य प्राणायामं । ब्राह्मण वंधकींगत्वाकमंडलुंदद्यात् क्षत्रियवंधकीमायुधम् वैश्यवंधकींप्रतोदमिति अत्र त्रिषु वर्णत्रयोपादानात्प्रथमंशूद्रवंधकीपरम् स्वैरिणीवंधक्योर्लक्षणं स्मृत्यंतरे । चतुर्थेस्वैरिणीप्रोक्तापंचमेवंधकीमतेति १ गौडास्तु ॥ विप्रादेः क्षत्रियादिगमनस्यैवार्धार्धादिहानिमाहुः ॥

क्षत्रिय वंधकी विषे गमन करे तां धनुष दान करे ॥ और वैश्यवंधकी विषे गमन करें तां प्रतोद नाम कोरडा दान करे परंतु इसके विषे तिन्नां वर्णांकि ग्रहण होणेतें पहिला जो है सो शूद्रवंध की पर लगाणा ॥ अव स्वैरिणी और वंधकीकालक्षण और स्मृतिसें कहतेहैं ॥ चतुर्थ इति चारपुरुषसाथ गमनकरणे वाली स्वैरिणी कही है ॥ पंच पुरुषोंके साथ गमन करण वाली वंधकी कहीहै १ अव गौडों का मत कहतेहैं विप्रेति विप्रादियों को क्षत्रियादि गमन विषे अर्द्ध अर्द्ध प्रायश्चित्त कयाहै अर्थात् विप्रको क्षत्रियाणीके गमनविषे जो ब्राह्मणी के गमनमें प्रयाश्चित्तकिहाहै तिसका अर्द्ध करणा और वैश्याणी विषे जो क्षत्रियाणी में प्रायश्चित्तहै तिसका अर्द्ध करणा और शूद्री विषे जो वैश्याणी में प्रायश्चित्त है तिसका अर्द्ध करणा ॥ एसें ही क्षत्री को क्षत्रियाणी में जो प्रायश्चित्तहै तिसका अर्द्ध वैश्याणी विषे करणा एसेंअग्गे भी जानणा

अनृताविति ऋतुतें विना जातिमात्र ब्राह्मणी विषे ब्राह्मण गमन करे तां मनुने कहा जो तीन महीनेंका व्रत सो करे ॥ ऐसेंहि क्षत्रियादि स्त्रियां विषे गमन करणेंतें क्रम कर्के दो महीनें वा चांद्रायण वा महीना व्रत करे अर्थात् क्षत्रियाणीमें दो महीने और वैश्यामें चांद्रायण और शूद्रीमें एक महीना व्रत करे तां शुद्धहुंदाहै और क्षत्रियादि अपणे अपणे वर्णकी स्त्रीविषे ऋतुतें विना गमन करेतां दो महीनेका व्रत करे और इनांविषे जेकर गर्भ होवे तां तिस तिस विषयमें सभ जगा व्यभिचारी पुरुष दूणा व्रत करे शूद्रीविषे गर्भ होवे तां त्रय वर्ष पर्यंत चौथे काल एक वेर भोजन करे तद शुद्धहोताहै जेकर ब्राह्मण नहिं इच्छाकरती जो विप्रादि योंकी स्त्री तिसविषे गमन करे तां क्रमकर्के गोघ्नको अर्थात् गोघातीकों किहा जो प्रायश्चित्त

अनृतौ जातिमात्रविप्रांविप्रोगत्वामानवं त्रैमासिकं कुर्यात् ईदृशक्षत्रियादि स्त्रीषुक्रमेण द्वैमासिकचांद्रायणमासिकानि क्षत्रियादीनांस्वस्ववर्णास्वनृतौग मनेद्वैमासिकान्येव आसुगर्भोत्पत्तौतु तत्तद्विषये सर्वत्रोक्तमेवद्विगुणंकार्यम् शूद्रायांगर्भोत्पत्तौतु त्रीणिवर्षाणि चतुर्थकालेनक्तं भुंजीत। विप्रस्यानिच्छन्ती षुविप्रादिस्त्रीषुगंतुरनुक्रमेणगोघ्नत्रैमासिकद्वैमासिकचांद्रायणानि। अत्रवासि ष्ठंस्मरणम्। शूद्रश्चेद्ब्राह्मणीमभिगच्छेद्वीरुद्भिर्वेष्टयित्वेत्यादिरूपंगुरुतल्पप्रक रणेद्रष्टव्यम् ॥ प्रायश्चित्तमयूखेचतुर्विंशतिमताद्यदाभिहितम् ॥ वृषल्यामभि जातस्तु त्रीणिवर्षाणिचतुर्थकालसमये नक्तंभुंजीतेति एतच्च कामतोऽत्यंताभ्या सेन गर्भोत्पत्तौवेदितव्यम्। अभिजातइत्याहितगर्भः यत्तुहारीतः॥ ब्राह्मणो वृषलींगत्वात्र्यहंभवतिसूतकी अथास्यगर्भमाधत्तेब्राह्मण्यादेवहीयत इति १

त्रय महीनें का वा दो महीनेंका वा चांद्रायण व्रत तिसको करे ॥ इसमें वसिष्ठ जीकी स्मृति है शूद्रइति जेकर शूद्र ब्राह्मणीके साथ गमन करे तां तिस शूद्रकों घाससें लपेट कर्के फूक देवे इत्यादि रूप गुरुतल्प प्रकरण विषे देखणें योग्यहै ॥ प्रायश्चित्त मयूख विषे चतुर्विंशति मतसें कहतेहैं वृषल्यामिति। वृषलीविषे जद गर्भ धारण करे तां तीन वर्ष तक चतुर्थकाल विषे एक वेर भोजन करे। सो एह कामनातें वहुत अभ्यासकर्के गर्भकी उत्पत्तिविषे जानणा और जो हारीत जीनें कियाहै सो कहतेहैं ब्राह्मणइति ब्राह्मण वृषली विषे गमन करे तां त्रय दिन सूतक वाला रहता है जेकर वृषली विषे गर्भ करे तां ब्राह्मण्यतें अर्थात् ब्राह्मणजातिसें दूरहुंदाहै ॥ १ ॥

तैसेंहि और कहतेहैं ब्राह्मणइति ब्राह्मण वृषली विषे गमन कर्के शीघ्रहि अधोगतिकों प्राप्तहो ताहै जेकर इसीविषे गर्भ करे तां पतित होताहै इसमें संशयनहिं करणा २ सो एह सभ वचन पापके गौरवपर व्याख्यानकीतेहैं ॥ अब कण्वऋषिजी कहतेहैं प्रसूतइति जो ब्राह्मण वैश्याविषे जन्मे क्या वैश्याणी विषे गर्भ धारण करे सो भिक्षा कर्के अन्न खावे और इन्द्रियांकों रोकरखे एक लक्ष गायत्रीजपकरे तो शुद्ध होताहै १ इसीविषे मलाह की स्त्री और धोबीकी स्त्री और वैश्यकी स्त्री इनां विषे पुरुष गमन करे तां प्राजापत्य व्रत कों करे तां शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ इस शाततपके वाक्यविषे वैश्यापदके साथ कथन करणें कर्के कैवर्त्त्यादियोंके गर्भोत्पादन विषे भी एह प्रायश्चित्त करणा वेश्याविषे गमनका हीनयोनि सेवना के प्रसंग विषें प्रायश्चित्त कहांगे

तथा ब्राह्मणोवृषलींगत्वासद्योगच्छेदधोगतिम् अथास्यगर्भमाधत्ते पतत्या शुनसंशय इति २ तान्येतानिपापगौरवव्याख्यानपराणि कण्वः । प्रसूताय स्तुवैश्यायांभैक्षभुङ्नियतेन्द्रियः शतंसहस्रमभ्यस्यगायत्रीमितिशुद्धतामि ति १ शतंसहस्रंलक्षमित्यर्थः लक्षगायत्रीजपपर्य्यन्तंभैक्षभुक्स्यादितिया वत् अत्रकैवर्त्तीरजकींचैववैश्यांवापिगतोनरः प्राजापत्यविधानेन कृच्छ्रेणै केनशुद्ध्यतीति २ शातातपवाक्ये वैश्यासममितिव्याहृतकैवर्त्त्यादिषु गर्भो त्पादनेपीदमेवप्रायश्चित्तमिति वारस्त्रीगमनेहीनयोनिनिषेवणप्रसंगे प्राय श्चित्तंवक्ष्यते ॥ किंच । याज्ञवल्क्यः अनियुक्तोभ्रातृजायांगच्छंश्चांद्रायणं चरेत् त्रिरात्रांतेघृतंप्राश्यगत्वोदक्यांविशुद्ध्यति १ ॥ शास्त्रीयविनियोगंवि नायोज्येष्ठस्यकनिष्ठस्यवाभ्रातुर्जायांकामुकतयागच्छति सचांद्रायणंकु र्य्यात् सकृदमतिपूर्वविषयमेतत्

कुच्छ और भी याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं अनियुक्तइति किसे कर्के नहिं प्रेरयाहोया भरजाईके साथ गमन करे तां चांद्रायण व्रत करे तद शुद्ध होताहै और रजस्वलाविषें गमन करे तां त्रयरात्रि घृतप्राशन कर्के शुद्ध होताहै १ शास्त्रकी विधि तें विना जो पुरुष ज्येष्ठकी वा कनिष्टभ्रा ताकी स्त्री विषे इच्छा कर्के गमन करे तां सो पुरुष चांद्रायण व्रतकरे तां शुद्ध होताहै ॥ एहअ ज्ञान कर्के एकवेरकरणे विषे जानणे योग्यहै इसमे एहअभिप्रायहै कि देवरतें पुत्रकी उत्पत्ति शास्त्रनें कहीहै तिसविषें जेकर आज्ञाहै तदभरजाई विषें गमनका दोष नहि और तिसवि नादोषहै इसकर्केकिहाहैकि (अनियुक्तः) इसमेभी ऐसा जानणा कि उहपुरुष कामुकहै परंतु भरजाईकों नहि जानदा

इच्छा कर्के करणे विषे शंख ऋषिजी कहतेहैं परिविचिरिति वडे भ्राताके विना छोटेका विवाह होवे सो परिवेत्ता है और वडेका नाम परिवित्तिहै सो दोनों प्रायश्चित्तके अधिकारी हैं सो अपने पापके दूर करणे वास्ते एकवर्ष ब्राह्मणके गृह से भिक्षाका अन्न लेकर भोजन करते रहें और ज्येष्ठ भ्राताकी भार्याविषे नहि किसेकर्के प्रेरयाहोया गमन करे तां उसमे जो प्रायश्चित्तहै सोही छोटे भ्राताकीभार्य्याके गमन विषे करे ॥ इसमेभी जाणकर्के किया जो अभ्यास तिसके विषे गुरुतल्पका अतिदेश जानणा अर्थात् गुरुतल्प मे जो प्रायश्चित्तहै सोकरणा ॥ रजस्वलाके गमन विषे त्रयरात्रि उपवासतें पीछे घृतका भक्षण शुद्धि का कारण है परंतु रजस्वला इसविषे अपणी स्त्री जानणी और गमन अज्ञान पूर्वक एकवार कीता होवेसो जानणा ॥ शातातप जी भी कहतेहैं अनुदकेति जलके विना मूत्र और विष्टाके

कामतः प्रवृत्तौ ॥ शंखः ॥ परिवित्तिःपरिवेत्ताचसंवत्सरंब्राह्मणगृहेभैक्षंच रेयातां ज्येष्ठभार्य्यामनियुक्तोगच्छंस्तदेवकनिष्ठभार्य्यांचेति मतिपूर्वक साभ्यासेगुरुतल्पातिदेशः ॥ रजस्वलागमनेत्रिरात्रोपवासानंतरंघृतप्राशनंशुद्धिहेतुः ॥ रजस्वलात्रस्वभार्य्या गमनममतिपूर्वकंसकृत्कृतम् ॥ शातातपोपि। अनुदकमूत्रपुरीषकरणेसचैलस्नानंमहाव्याहृतिभिर्होमश्चरजस्वलाभिगमनेचैतदेव। तत्रैवाभ्यासे।रजस्वलागमनेसप्तरात्रमिति। गोवर्ज्जममानुषीषुपरदारेषुरजस्वलासुचमतिपूर्वकसकृद्गमने वसिष्ठः। रजस्वलाव्यवाये कृष्णवृषभंदद्याच्छुक्लिंगमिति लिंगंलांछनं यत्तुमनुः। अमानुषीषुपुरुषउदक्यायामयोनिषु रेतःसिक्त्वाजलेचैवकृच्छ्रसांतपनंचरेदिति १ तन्मतिपूर्वकेसाभ्यासे परस्त्रीगमनेद्रष्टव्यमिति

करणेविषे सचैलस्नान करे और महाव्याहृतियां जो(ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः) इनां कर्के हवनकरे और रजस्वलाके गमनविषे भी एही जानणा ॥ जेकर रजस्वला गमन मे अभ्यास होवे तां सप्तरात्रि उपवास करणा ॥ और गौतें विना पशुयोनि विषे और परस्त्री विषे और रजस्वला विषे जाणकर्के एकवार गमन कीता होवे उसमे वसिष्ठजी कहते हैं रजस्वलेति रजस्वला गमनविषे काला वैल दान करे कैसा उह वैलहै कि श्वेत है चिन्ह जिसको इसमेजो मनुजीने कथन कियाहै सो कहतेहैं अमानुषीष्विति पशुयोनि विषे और रजस्वला विषे और अयोनि क्या वालकविषे पुरुष वीर्य्यत्यागे वा जलविषे तां तिसकोंकृच्छ्र सांतपन व्रत करणे योग्यहै ॥ १॥ सो एह जाण कर्के अभ्यास वाले परस्त्री गमनविषे देखणे योग्यहै सर्वत्र नहि प्रायश्चित्तके अधिक होणेतें और पशुयोनि क्योंकि विषे भी एही जानणा

इसी विषें नहिं इच्छा वाली स्त्री विषे गमन करणे वाले प्रति वृहत्संवर्त्तजी कहतेहैं रजस्वला मिति जो पुरुष रजस्वलां विषें गमन करे वा गर्भिणीविषे वा पतितस्त्रीविषे तिस पापकी शुद्धि वास्ते अतिकृच्छ्र व्रत करे १ शंख लिखितजीकी स्मृतिमें विशेष कहाहै रजइति रजस्वला और खोटी स्त्री विषे गमन करे तो तीन रात्रि उपवासव्रत और घृत भक्षण करे अवधूतानाम वन्धकी काहैतिसके गमनका पृथक् निमित्तहै एह अपरार्कमें कियाहै और इच्छा कर्के वहुत अभ्यासविषे वेदपाठीकीस्त्रीके गर्भ तक वारां १२ वर्ष व्रत के प्रसंगकों लयकर शंखजी कहतेहैं ⊛ पादमिति शूद्रहत्या विषें रजस्वला गमन विषे एक पादव्रत करे अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं शूद्रहत्या और रजस्वला गमन इनां निमित्तां विषे वारां १२ वर्षव्रत का पाद करणा अर्थात् त्रय वर्ष व्रत करणा चाहिए ॥ इसमे भी अब और विशेष कहतेहैं श्रोत्रियेति जेकर श्रो

अत्रैवानिच्छंतींगच्छंतंप्रति। वृहत्संवर्त्तः।रजस्वलांतुयोगच्छेद्गर्भिणींपतितां तथा तस्यपापविशुद्ध्यर्थमतिकृच्छ्रविशोधनम् १ शंखलिखितौ रजस्वला ऽवधूताभिगमनेत्रिरात्रमुपवासः घृतप्राशनंचेति अवधूता वन्धकी तद्गमनं चपृथङ्निमित्तमित्यपरार्कः ॥ कामतोऽत्यंताभ्यासे॥श्रोत्रियभार्य्यायागर्भ पर्य्यतंद्वादशवार्षिकंप्रकृत्य। शंखः पादंतुशूद्रहत्यायामुदक्यागमनेतथेति शूद्रहत्यायामुदक्यागमनेचनिमित्तेद्वादशवार्षिकस्यपादः त्रैवार्षिकमित्यर्थः श्रोत्रियपत्नीत्वाभावेगर्भाभावेच। वृहस्पतिः अकामात्पुल्कसींगत्वाकामाद्ग त्वारजस्वलाम् शिष्यभार्य्यांनरोगत्वापराकेणविशुद्ध्यतीति १।अत्रपरभा र्य्यानिमित्त मुदक्यागमननिमित्तं च प्रायश्चित्तंपृथक्कार्य्यम् द्वयोरपिनि मित्तयोरन्योन्यानिरपेक्षत्वात्

त्रियपत्नीके अभावमें वा गर्भके नाहिं होणेंमें गमन करे तिसमें वृहस्पति जी कहतेतेहैं अका मादिति विना इच्छातें नीचजातिकी स्त्री विषें गमन करे और इच्छा सें रजस्वला विषें गम न करे और शिष्यकी स्त्री विषें पुरुष गमन करे तां पराक व्रत जो वारां दिन का उपवासहै तिसकें करणें कर्के शुद्ध होताहै १। इस विषे परस्त्री निमित्त और रजस्वला गमन निमित्त का प्रायश्चित्त पृथक् करणा क्योंकि दोआं निमित्तांकों परस्परमें न अपेक्षा होणेंतें अर्थात् परस्त्री गमन निमित्त प्रायश्चित्त विना रजस्वला गमनतेंभी हुंदाहै और रजस्वला निमित्त प्रायश्चित्त तिसके विना क्या अपनी स्त्रीविषेभी हुंदाहै

।जिसक विषे एक निमित्त और निमित्त विना न होवे तिसके विषे एकही निमित्तका प्रायश्चित्तहै जैसें गुरु दाराका गमन परदारा विना नहिं हैं तिसके विषें गुरुतल्पगमनका प्रायश्चित्त पृथक् नहिं करणा ॥ कुछक औरभी कहतेहैं ॥ चतुर्विंशति मत विषे। भ्रातु रिति छोटे भ्राताकी स्त्री विषे जो पुरुष इच्छा कर्के गमन करताहै सो सांतपन व्रत करे वा दो कृच्छ्र व्रत करे तां शुद्धहोताहै १ मातुरिति माताकी जो भैण तिसकी कन्याविषें गमन करे तैसेंहि चाचेकी कन्या विषे गमन करे तां तप्तकृच्छ्र व्रत कर्के शुद्धहोताहै और मासीकीकन्या और चाचेकीकन्याकी कन्या विषे गमन करे तां छे ६ रात्रि व्रत करणा योग्यहै २ गुरोरिति गुरुकी कन्या विषें जो गमनकरे तां पराक जो बारां १२ दिनका व्रतहै सोकरणा भनेई विषे जेकर द्विज क्या ब्राह्मणादि गमन करे तां चांद्रायण व्रत करणें कर्के तिसका पाप दूर होताहै ३ मातुलस्येति मामेंकी कन्या विषे गमन करे तैसें ही पिता की भयणकी कन्या विषे गमन करे तां प्राजापत्य व्रतकरे

यत्रनिमित्तं निमित्तांतराविनाभूतं तत्रैकमेवानिमित्तकंप्रायाश्चित्तम् यथा गुरुदारगमनंपारदार्य्याविनाभावि नहि तत्र गुरुतल्पगमनं पृथगिति किंचचतुर्विंशतिमते ॥ भ्रातुश्चैवकनिष्ठस्यभार्य्यांगत्वातुकामतः सांतपनं प्रकुर्वीतकृच्छ्रद्वयमथापिवा ॥ १ ॥ मातुश्चस्वस्त्रियांगत्वापितृव्यतनयांतथा तप्तकृच्छ्रंप्रकुर्वीतषड्रात्रंतत्सुतासुच ॥ २ ॥ गुरोर्दुहितरंगत्वापराकंतुसमाचरेत् भागिनेयींद्विजोगत्वाचरेच्चांद्रायणव्रतम् ॥ ३ मातुलस्यसुतांगत्वापितुश्चस्वस्त्रियांतथा प्राजापत्यंप्रकुर्वीतहारीतवचनंतथा ४ मातुश्चस्वस्त्रियांचैवभार्य्यांगत्वातुकामतः पितृव्यतनयस्यैवसपादंकृच्छ्रमाचरेत् ५ दौहित्रींपुत्रतनयांचरेच्चांद्रायणव्रतम् तत्सुतांचस्नुपांगत्वापराकंतु समाचरेत् ६ चरेच्चान्द्रायणंविप्रोगत्वोपाध्याययोपिताम् आचार्यस्यपराकं तुबौधायनवचोयथा ७ संबन्धिनःस्त्रियंगत्वासपादंकृच्छ्रमाचरेत् विधवागमनेकृच्छ्रमहोरात्रसमन्वितम् ८

एह हारीतकावचनहै ४ मातुरिति और माताकी जो भयणतिसकी कन्या और चाचेकेपुत्रकी स्त्रीविषे इच्छा कर्के गमन करेतां एक पाद सहित कृच्छ्रव्रतकरे तां शुद्ध होताहै ५ दोत्री और पुत्रकी स्त्रीकी कन्या अर्थात् पोत्री तिस विषे गमन करे तां चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धहोताहैऔर दौहित्रीकी कन्या और पुत्रकी कन्याकी कन्या विषे गमन करे तां पराक व्रत कर्के शुद्ध होताहै ६ चरेदिति और गुरु की स्त्री विषे ब्राह्मण गमन करे तां चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै और आचार्यकी स्त्री विषे गमन करे तां पराक व्रत कर्के शुद्ध होताहै एह बौधायन जी का बचनहै ७ संमिति और संबंधि जो हैं मामेंके पुत्रादि तिसकी स्त्री विषे गमनकरे तां एक पाद सहित कृच्छ्र व्रत करणें कर्केशुद्ध होताहै विधवा स्त्री साथ गमन करे तां दिनरात्र युक्त जो कृच्छ्र व्रत तिसको करे तोशुद्धहोताहै ८

व्रतेति और व्रतमें स्थित जो स्त्री तिसविषे गमनकरे तां एक पाद सहित कृच्छ्र व्रतकरे और मित्र की स्त्री वा अपणी जाति की स्त्री वा संबंधीकी स्त्री विषे गमन करे तां पूर्वला जो कृच्छ्र व्रत तिसकोंकर्के फेर एक पाद व्रत करे और कुमारी गमन विषे ब्राह्मण चांद्रायण व्रत करे और पतित स्त्री विषे द्विज गमनकरे तां भी चांद्रायण व्रतकर्के शुद्ध होताहै १० इहां कथन कीते होए जो संपूर्ण व्रत इनां विषें गौरव लाघवकी परीक्षा कर्के यथार्थ अयथार्थ बुद्धि पूर्व अभ्यासादिकेविषय कर्के जोडने योग्यहैं व्रेति ब्राह्मण नहिं इच्छावाली जो ब्राह्मणी तिस विषे इच्छाकर्के गमनकरे तां कृच्छ्र और चांद्रायण व्रत करे जेकर प्रमादतें करे तां अर्द्ध व्रत करे इच्छावाली स्त्री विषे करे तां भी अर्द्ध व्रत करणा एक वार जाणकर्के करे तां तप्तकृच्छ्र करे और नृपादियोंकी स्त्रीविषे वा ब्राह्मणकी स्त्री विषे गमन करे तां अर्द्धव्रत करे १२ एतदिति और वेदपाठीकी स्त्री विषे गमन करे

व्रतस्थागमनेकृच्छ्रंसपादंतुसमाचरेत् सखिभार्य्यांसमारुह्यज्ञातिस्वजनयोषिताम् ॥ ९ ॥ सकृत्वाप्राकृतंकृच्छ्रपादंकुर्यात्ततःपुनः कुमारिगमनेविप्रश्चरेच्चांद्रायणव्रतम् पतितांतुद्विजोगत्वातदेवव्रतमाचरेदिति १० अत्र प्रोक्तेषुसर्वेषुव्रतेषुगौरवलाघवे परीक्ष्य यथायथं बुद्धिपूर्वाभ्यासादिविषयत्वंयोजनीयम् ॥ ब्राह्मणोब्राह्मणींगच्छेदकामांयदिकामतः कृच्छ्रंचांद्रायणंकुर्य्यादर्द्धमेवप्रमादतः ११ अर्द्धमेवसकामायांतप्तकृच्छ्रंसकृन्मतौ अर्धमर्धंनृपादीनांदारेषुब्राह्मणेषुच १२ एतद्व्रतंचरेत्सार्द्धंश्रोत्रियस्यपरिग्रहे अश्रोत्रियश्चेत्त्रिगुणमगुप्तामर्द्धमेवचेति १३कण्वोपि शूद्रदारान्गतोविप्रोऽतिकृच्छ्रंसमाचरेत् चांद्रायणंविशोराज्ञःसमंचब्राह्मणव्रतमिति १ विशइतिवैश्यदारान्गत्वाचांद्रायणं राज्ञोदारान् गत्वा ब्राह्मणव्रतंसमंकृच्छ्रचांद्रायणस्वरूपंसमाचरेदित्यर्थः यदिब्राह्मणेनैवचातुर्वर्ण्यप्रसूतासुक्रमेणनिविष्टं तदानींब्राह्मणस्यब्राह्मणीगमने यदुक्तं तदेव पादहीन क्षत्रियादिगमनेद्रष्टव्यम् व्याघ्रवचनात्

तां एही व्रत अर्द्ध सहित एक अर्थात् डेढ व्रत करे जेकर सो ब्राह्मण आप वेदपाठी न होवे तिसमे दूणा व्रत करणा और अगुप्ताविषे अर्थात् जो स्त्री पतिकर्के रक्षित नहि तिसविषे गमन करे तां अर्द्ध व्रत करणा १३ अब इसी विषयमें कण्वजी कहतेंहैं शूद्रेति शूद्रकीस्त्रीविषे ब्राह्मण गमन करे तां अतिकृच्छ्र व्रतकर्के शुद्ध होताहै और वैश्यकी स्त्री विषे गमन करे तां चांद्रायण व्रत करणा और राजाकी स्त्री विषे ब्राह्मण गमन तां कृच्छ्र चांद्रायण स्वरूप व्रतकरे १ जेकर ब्राह्मणनें चार वर्णकी प्रसूता विषे क्रम कर्के प्रवेश कीता होवे तां तिस काल विषे ब्राह्मण को ब्राह्मणी गमन विषे जो व्रत कयाहै तिसीका एक पाद हीन क्षत्रियादि गमन विषे देखणें योग्यहै व्याघ्र जीके वचन सें

सोंवचनकहतेहैं विप्रेति ब्राह्मणनेंहि चारवर्णकी प्रसूतीविषे गमन कीत्ताहोवे तां सोब्राह्मण तिसमें क्रमकर्के एक एक पाद हीन व्रत करे १ विधवा गमन विषे चतुर्विंशतिके मतसें कहतेहैं विधवे तिविधवागमन विषे दिनरात्र युक्त जो कृच्छ्र व्रत तिसको करे और व्रतविषे स्थित जो स्त्री तिस विषे जेकर गमन करे तां एकपादसहित कृच्छ्र व्रत करे तां शुद्धहोताहै १ अब मुख मैथुन विषे उशना जोने जो कयाहै सो कहतेहैं यस्त्विति जेकर ब्राह्मण अपणी स्त्री विषे मुख मैथुन करे तां प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होताहै और जेकर परस्त्रीहोवे तां द्विगुण करे एहअर्थसेंहि प्रतीतहुंदाहै और पश्वादि गमनका पितृदारातें उरें होणें कर्के तिस विषे थोडा प्रायश्चित्त करणा उचितहै तिसको कहतेहैंपश्विति पशु और वेश्यादि गमन विषे और महिषीऊटणी और वान

विप्रेणैवनिविष्टाश्चेच्चातुर्वर्ण्यप्रसूतयः क्रमेणपादशोहीनंव्रतंतासुगतश्चरेत् ॥ १ ॥ विधवागमनेचतुर्विंशतिमते विधवागमनेकृच्छ्रमहोरात्रसमान्वितम् व्रतस्थागमनेकृच्छ्रंसपादंतुसमाचरेदिति ॥ १ ॥ मुखमैथुनेतूशनसोक्तम् यस्तुपुनर्ब्राह्मणोधर्म्मपत्नीमुखमैथुनं सेवेत सदुष्यातिप्राजापत्येनशुद्ध्यतीति पश्वादिगमने पितृदारादर्वाचीनत्वेन तत्राल्पं प्रायश्चित्तम् पशुवेश्यादिगमने महिष्युष्ट्रीकपीस्तथा खरींचसूकरींगत्वाप्राजापत्यंसमाचरेदितिस्मृत्यंतरात् ॥ गर्भेतुकएवआह प्रसूतोयस्तुवेश्यायांभैक्षभुङ्नियतेंद्रियः शतंसहस्रमभ्यस्यसावित्रीमेतिशुद्धतामिति १ गोसंयुक्तशकटादिवाहनेऽवस्थायस्त्रियंभुंजानस्ययमआह यदिगोभिःसमायुक्तंयानमारुह्ययोद्विजः मैथुनंसेवतेतत्रमनुःस्वायंभुवोऽब्रवीत् ॥ १ ॥

रोंसेंही गधी सूरणी इनां विषे गमन कर्के प्राजापत्य व्रत करे इसमें कोई ऐसा विचार कर्तेहैं कि उष्ट्री खरीआदिमे पुरुषका गमन नाहीं होसक्ताहै इस कर्के उष्ट्रीप्रभृति किसे स्त्रीकी संज्ञाहै किसे अपलक्षणते अथवा तादृश स्वरूपते ऐसीसंज्ञाहै तिसविषे गमनकाएह प्रायश्चित्त होणाहै एह और स्मृति में कयाहै ॥ जेकर गर्भ होवे तां तिसमें कएवजीकहतेहैं प्रसूतइति इसश्लोक का अर्थ पीछे कयाहै । गोसंयुक्त जो गड्डादिवाहन तिसविषे स्थित होकर्के स्त्रीको भोगण वाला जोपुरुष तिसका प्रायश्चित्त यमजी कहतेहैं यदीति जेकर बैलों कर्के युक्त जो यान क्या रथ तिसमे जो द्विज आरूढ होकर्के मैथुन करताहै तिसकेविषे मनु जो स्वायंभुवजी सोकहतेहैं १

त्रीति त्रय रात्रि उपवास कर्के सहित वस्त्रों के स्नान करे पीछें गौत्र्यांके तांई यवोंका आढकदे कर्के घृतका भक्षण करें तां शुद्ध होताहै अष्ठ मुठी का कौंच होता है और अष्ठ कौंच का एक आढक कयाहै २ इसमे मनु जी भी कहते हैं मैथुनमिति पुरुष विषे वा स्त्रीविषे जोंद्विज मैथुन करे परंतु गोरथविषे वा जल विषें वा दिन विषे गमन करे तां वस्त्रोंके सहित स्नान करे तो शुद्धहोताहै १ ॥ अव कहतेहैं कि पीछे महिष्यादि गमन विषें जो प्राजापत्य कयाहै सो वहुत अभ्यास विषें जानणा एकवार गमन विषे अव कहतेहैं महिषीति महिषी और उष्ट्रीऔर गधी इनांविषे गमन करणवाला पुरुष एक उपवासकर्के शुद्धहोताहै १ पिताकी भैणकी कन्या दि विवाह विषे प्रायश्चित्त सुमंतु नाम ऋषिजी कहतेहैं पित्रिति पिताके भैणकी कन्या और

त्रिरात्रंक्षपणंकृत्वासचैलस्नानमाचरेत् गोभ्योयवाढकंदत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति ॥ २ ॥ मनुरपि ॥ मैथुनंतुसमारोप्यपुंसियोषितिवाद्विजः गोयानेषुदिवाचैवसवासाःस्नानमाचरेदिति १ ॥ पूर्वंमहिष्यादिगमनेयत्प्राजापत्यमुक्तं तदभ्यासविषयम् सकृद्गमनेत्विदानींमाह ॥ महिष्युष्ट्रीखरीगामीत्वहोरात्रेणशुद्ध्यतीति १ महिषीचउष्ट्रीचखरीचतागच्छतीतिमहिष्युष्ट्रीखरीगामी स एकोपवासेन शुद्ध्यतीति ॥ पितृष्वसृसुताविवाहे प्रायश्चित्तमाह सुमन्तुः ॥ पितृष्वसृसुतां मातुलस्यसुतां मातृसगोत्रां समानार्षेयीं विवाह्य चांद्रायणंचरेत् परित्यज्यैनांविभृयात् ॥

मामेंकी कन्या और माताकेगोत्रवाली कन्या और समानप्रवरवाली कन्या इनांको विवाह कर्के चांद्रायण व्रत करे तां शुद्धहोताहै और व्रतके पीछे भोगकर्मतें इनांको त्याग कर्के पालतारहे इसजगा मातृसगोत्रापद जातिपरहै जैसें पंडितजातिवालेने पंडितजातीकी स्त्री विवाही तांदोषहै क्योंकि गोत्रनामवंशकाहै सो अर्थ इसमें आवेगा और यद्यपि वसिष्ठ गोत्रीपुरुषने वसिष्टगोत्री स्त्रीके विवाहमेंभी एह अर्थ आवताहै तथापि वसिष्टगोत्रादिव्यवहार व्यापकहै और पंडितजात्यादि व्यवहार व्याप्यहै सो व्यापकतें व्याप्यवलवान्है एह किसे विद्वान्ते निश्चय करलैणा तद एह अर्थ साधु प्रतीत होवेगा॥

शातातपजीभी कहतेहैं परीति समानगोत्र वालीकों और समान प्रवर वाली स्त्रीकों विवाहकर्के अतिकृच्छ्रव्रत करे परंतु पहिले मैथुनादितें तिसकोंत्याग देवे और पीछेव्रत करे १ मातुलस्येति और मामेंकी कन्या नूं तैंसेंहि माताके गोत्र वाली नूं और समान प्रवर वाली नूं द्विज विवाह कर्के चांद्रायण व्रत करे २ अव स्त्रियां के व्यभिचारका प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं वीति व्यभिचारिणी स्त्री नूं भर्त्ता एक गृह विषें रोक कर्के जो पुरुष नूं परस्त्री विषें व्रत कियाहै सो करवावे १ अव इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं परेति परस्त्री गमन विषें पुरुषको जो वसिष्ठादियों ने प्रायश्चित्त कियाहै सो इसव्यभिचारिणीनूं स्त्रीकार्य्यतें दूर कर्के घर विषें रोकक र्के करवावे एह वाचानिक क्या वचनका अतिदेश होणेंतें एक पाद ऊन करणा एह

शातातपोपि। परिणीयसगोत्रांतुसमानप्रवरांतथा कृत्वातस्याःसमुत्सर्गमतिकृच्छ्रंसमाचरेत् १ मातुलस्यसुतामूढ्वामातृगोत्रांतथैवच समानप्रवरांचैव द्विजश्चांद्रायणंचरेदिति२ अथ स्त्रीणांव्यभिचारे प्रायश्चित्तम्। मनुः॥ विप्रदुष्टांस्त्रियंभर्त्तानिरुंध्यादेकवेश्मनि यत्पुंसःपरदारेषुतच्चैनांकारयेद्व्रतम् १ परस्त्रीगमने पुंसःपुरुषस्य यद्वसिष्ठादिभिः प्रायश्चित्तमुक्तं तत् एनां विप्रदुष्टां विशेषेण प्रदुष्टां व्यभिचारिणीं स्त्रीकार्य्येभ्यो निवर्त्त्य गृहेनिरुध्य कारयेत् एतच्च वाचनिकातिदेशात्पादोनमितिकेचित् पूर्णमेवेतिनीलकंठः ।यत्तुवसिष्ठादिभिः ॥ स्त्रीणामर्द्धंप्रदातव्यमित्युक्तंतदनिच्छयाव्यभिचारे द्रष्टव्यम्। मिताक्षरायाम् ब्राह्मण्याः प्रातिलोम्येनाद्विजातिव्यवाये संवर्त्तोक्तं प्रायश्चित्तांतरमप्युक्तम् ब्राह्मण्यकामागच्छेत्क्षत्रियंवैश्यमेववा गोमूत्रयावकैर्मासात्तदर्द्धाच्चविशुध्यतीति १ एतदेवकामतोद्विगुणम्॥ कामतो द्विगुणंचरेदित्यादिवचसः

किसीका मत है अथवा संपूर्ण हि करणा एह नीलकंठजीका मत है और जो वसिष्ठादियोंने स्त्रियां कों अर्द्ध प्रायश्चित्त देणा एह कियाहै सो इच्छा विना जो व्यभिचार तिसके विषें देखणें योग्यहै । मिताक्षराविषें कहतेहैं ब्राह्मण्याइति ब्राह्मणीको प्रातिलोम्य कर्के क्षत्रिय और वैश्यके गमन विषें संवर्त्तजीका कियाहोया प्रायश्चित्त कहतेहैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी इच्छाते विना क्षत्रियविषें वा वैश्यविषें गमन करे तां गोमूत्रकर्के युक्त जो यव तिनको महीना पर्य्यंत भक्षण करे अथवा अर्द्ध महीना करे अर्थात् क्षत्रिय गमनविषे अर्द्ध महीना भक्षण करणेतें शुद्ध होतीहै और वैश्यकें गमनविषें महीना भक्षण करणेतें शुद्धहोतीहै इसमैं क्रम विवक्षा नहिंहै १ जेकर सोस्त्री इच्छातें गमन करे तां एहीव्रत दूणाकरे एह कामतो द्विगुणं चरेत् इत्यादिवचनते जानणा

षट्त्रिंशत् कें मत विषे भी कहतेहैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी क्षत्रीके साथ गमन करे तां अतिकृच्छ्र व्रत करे और वैश्यके साथ गमन करे तां कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे और क्षत्रीकी स्त्री ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनके साथ गमन करे तां दिनरात्र वा त्रयरात्र वा कृच्छ्र व्रत का अर्द्ध करे एह क्रम कर्के जानणा जैसें ब्राह्मणमें दिनरात्र व्रत करणा इत्यादि और भी जानलेणे परंतु एह नहिं इच्छा वाली स्त्रीमे वा अपणे पतिकी भ्रांतिकर्के जद गमनकीताहोवे उसमें जानणा शूद्र सेवाविषेविशेष वृहत्प्रचेताजीकहतेहैं विप्रेति ब्राह्मणी शूद्रकेसाथ गमनकरे जेकर तिसते प्रसूति न होवे तिसका प्रायश्चित कयाहैकि एक कृच्छ्र और त्रय चान्द्रायण व्रत करे तां शुद्धहोतीहै १ ॥

षट्त्रिंशन्मतेपि । ब्राह्मणीक्षत्रियवैश्यसेवायामतिकृच्छ्रंकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरेत्क्षत्रिययोषिता ब्राह्मणराजन्यवैश्यसेवायांत्वहोरात्रत्रिरात्रकृच्छ्रार्द्धमिति एतदनिच्छंत्यांस्वपतिभ्रांत्यावागमनेवेदितव्यम् ॥ शूद्रसेवायांतु विशेषो वृहत्प्रचेतसोक्तः विप्राशूद्रेणसंपृक्तानचेत्तस्मात्प्रसूयते प्रायश्चित्तंस्मृतं तस्याः कृच्छ्रंचांद्रायणत्रयम् ॥ १ ॥ चान्द्रायणेद्वेकृच्छ्रंचविप्रायावैश्यसेवने कृच्छ्रचांद्रायणेस्यातांतस्याःक्षत्रियसंगमे ॥ २ ॥ क्षत्रियाशूद्रसंपर्के कृच्छ्रंचांद्रायणद्वयम् चान्द्रायणंसकृच्छ्रंतुचरेद्वैश्येनसंगता ३ शूद्रंगत्वा चरेद्वैश्याकृच्छ्रंचांद्रायणोत्तरम् आनुलोम्येप्रकुर्वीतकृच्छ्रंपादावरोपितामिति ४ पादावरोपणंपादह्रासः प्रजातायास्तुचतुर्विंशतिमतेविशेषउक्तः

चांद्रेति और ब्राह्मणीको वैश्यके साथ गमन करणे तें दो चान्द्रायण और कृच्छ्र व्रत करणेयोग्य हैं और ब्राह्मणीकों क्षत्री साथ गमन करणेतें कृच्छ्र और चान्द्रायण व्रत करणे योग्यहैं २ और क्षत्रियाणी शूद्र साथ गमन करे तां कृच्छ्र और दो चान्द्रायण व्रत करे और वैश्यसाथ गमन करे तां सहित कृच्छ्रके चान्द्रायण व्रत करे ३ शूद्रामिति और शूद्र साथ वैश्यकी स्त्री गमन करे तां कृच्छ्र और चान्द्रायण व्रत करे और आनुलोम्य कया अपणें तें छोटी जाति विषे गमन करणें तें पादऊन एहि कृच्छ्र व्रत करणे योग्यहै ४ प्रसूति होवे जिस स्त्रीको तिसकों चतुर्विंशति मत विषे विशेष कयाहै

विप्रेति ब्राह्मणका गर्भ होवे किसे स्त्रीको तां पराक व्रत करे एह चारवर्णकी साधारण व्यवस्था है ऐसे हि आगे भी जानणा और कोई कहतेहैं कि ब्राह्मणके अनुलोम और शूद्रके प्रतिलोम और क्षत्रियवैश्यके दोनोंमें एह व्यवस्थाहै और क्षत्रीका गर्भ होवे तो चांद्रायण व्रत करे नहिं इच्छातें वैश्यकेसाथ गमन करणें तें गर्भ होवे तां चांद्रायण और पराक व्रतकरे १ शूद्रेति और शूद्रसें गर्भके होयां त्याग करणा चाहिए जिस कारणतें सो चांडाल होताहै और धातुदोषकर्के गर्भ पात होवे तां त्रय चांद्रायण करणें तें स्त्री शुद्ध होतीहै २ ॥ अब अर्थको स्पष्टकरतेहैं (अकामेतिः) अकामकारतइस विशेषणके ग्रहण होणेतें इच्छा कर्के करणेंविषे फेर पराकादि व्रत द्विगुणकरणें जेकर गर्भ दस महीने स्थित होकर्केभी प्रतीतनाहोवे तां प्रायश्चित्त नहिं करणा सोई कहतेहैं ब्राह्मेति ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य इनांकीस्त्री शूद्रके साथगमनकरें और जेकर

विप्रगर्भेपराकःस्यात्क्षत्रियस्यतथैन्दवम् ऐंदवश्चपराकश्चवैश्यस्याकामकारतः ॥ १ ॥ शूद्रगर्भेभवेत्त्यागश्चांडालोजायतेयतः गर्भस्रावेधातुदोषेश्चरेच्चांद्रायणत्रयमिति ॥ २ ॥ अकामकारतइतिविशेषणोपादानात् कामकारे पुनःपराकादिकंद्विगुणंकुर्यात् यदात्वनिःसृतगर्भैवदशममासंस्थित्वाप्रजायतेतदाप्रायश्चित्ताभावः ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशांभार्याःशूद्रेण संगताः अप्रजाताविशुद्ध्यंतिप्रायश्चित्तेनतेनरा इति ॥ ३ ॥ अयमर्थः शूद्रादिनासंगताब्राह्मण्यादिकायदागर्भशंकास्पदाजाता तदादशमासप्रतीक्षानंतरमनिःसृतगर्भैवप्रजायते प्रतीता तदा प्रायश्चित्तंविनैव शुद्धाभवति तावतैवप्रायश्चित्तोपपत्तेः तेनराव्यभिचारिणस्तु प्रायश्चित्तेनैवशुद्ध्यंतीतिवसिष्ठस्मरणात् यदात्वाहितगर्भैवपश्चाच्छूद्रादिभिर्व्यभिचरति तदा गर्भपातशंकयाप्रसवोत्तरकालमेवप्रायश्चित्तंकुर्यात्

प्रसूतिनाहोवे तां सोस्त्रीशुद्धहै और सो पुरुष प्रायश्चित्तकर्के शुद्धहोतेहैं ३ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं शूद्रेति शूद्रादिके साथ ब्राह्मण्यादि स्त्री गमन करे जेकर गर्भशंकावाली होवे तद दसमहीनेतें उपरंत नाहिं होया गर्भकासंभव किंतु व्यभिचारमात्रहि प्रतीतहोयाहै जिसको तां प्रायश्चित्त विनाहि शुद्धहोतीहै क्योंकि तितनें कर्केही तिसका प्रायश्चित्त होणेंतें अर्थात् उसकेगर्भकी शंकाकर्के उतनाकाल वाहर निकालदिया सो उसको कष्ट वहुत होया वोहि उसका प्रायश्चित्त जानणा और सो व्यभिचारीपुरुष प्रायश्चित्त कर्के हिशुद्धहोतेहैं एहवसिष्टजीकी स्मृतिसेंकिहाहै अब इसीमें और विशेषकहतेहैं यदेति जेकर प्रथमगर्भ पतिकाहि स्थितहोवे और पीछे शूद्रादि केसाथ व्यभिचारकरे तद उसस्त्रीको गर्भपातकीशंकाकर्केप्रसूतितेंअनंतरहिप्रायश्चित्त करणेयोग्यहै

सोई स्मृतिमे क्रियाहै अंतर्वत्नीति गर्भवती जो स्त्री सो कामीपुरुष करके वलने प्रेरित होई गमन करे तां प्रायश्चित्त नहिं करणा परंतु जितना काल गर्भ नहिं निकले १ जातइति गर्भदे निकले होयां पश्चात् व्रतकरे कया महीना पर्यंत यवोंका काढा पीवे तद गर्भ दोष तिसकों नाहिं हैं और जो जन्मयाहै तिसका यथाविधि संस्कार करे २ और स्मृतिमें कहतेहैं यदेति जेकर सो व्यभिचारिणीस्त्री उन्मादतें प्रायश्चित्त नू न करे तां उसका कर्णादि कटदेणा एह देखणे योग्यहै ॥ अब नीचके साथ गमन करणें विषे स्त्रियांकों और स्मृति विषे प्रायश्चित्त दखायाहै रजकेति धोवा और फंदक नटुआ और वंजां करके और चर्म्म करके उपजीविका करण वाला इनां विषे इच्छातें विना ब्राह्मणी गमन करे तां त्रय चांद्रायण व्रत करे १ तैसेंहि चांडालादि नीचके साथ गमन विषे भी

अन्तर्वत्नीतुयानारीसमिताक्रम्यकामिना प्रायश्चित्तंनकुर्यात्सायावद्गर्भो ननिःसृतः १ जातेगर्भेव्रतंपश्चात्कुर्यान्मासंतुयावकं नगर्भदोषस्तस्यास्तिसंस्कार्यःसयथाविधीति २ स्मृत्यंतरेदर्शनात् ॥ यदात्वौद्धत्यात्प्रायश्चित्तंनकरोति तदानार्याः कर्णादिकर्त्तनमितिद्रष्टव्यम् । अंत्यजगमनेपिस्त्रीणांस्मृत्यंतरे प्रायश्चित्तंदर्शितम् रजकव्याधशैलूषवेणुचर्मोपजीविनः ब्राह्मण्येतान् यदागच्छेदकामादैंदवत्रयमिति १ तथा चांडालाद्यंत्यजगमनेपि । चांडालंपुल्कसंम्लेच्छंश्वपाकंपतितंतथा ब्राह्मण्यकामतोगत्वाचांद्रायणचतुष्टयम् १ अकामतइतिवचनात्कामतोद्विगुणंकल्प्यम् तथा चांडालेनतुसंपर्कंयदि गच्छेत्कथंचन सशिखंवपनंकुर्याद्भुंजीयाद्यावकौदनम् ॥ १ ॥ त्रिरात्रमुपवासःस्यादेकरात्रंजलेवसेत् आत्मनासंमितेकूपेगोमयोदककर्दमे ॥ २ ॥ तत्रस्थित्वानिराहारासात्रिरात्रंततःक्षिपेत् शंखपुष्पीलतामूलंपत्रंवाकुसुमंफलम् ॥ ३ ॥

कहतेहैं चांडालमिति चांडाल पुल्कस म्लेछ श्वपाक एह चार चांडालकेहि भेदहैं और जातितें जो वाहरहैं इनां विषे ब्राह्मणी इच्छातें विना गमन करे तां चार चांद्रायण व्रत करे अकामतः इस वचन तें जेकर इच्छातें करे तो दूणा व्रत करणें योग्यहै १ तैसेंही और कहतेहैं चांडालके साथ जेकर स्त्री गमन करे तां सहित शिखाके मुंडन करावे और यवोंका काढा पीवे १ त्रीति और त्रयरात्रि उपवास व्रत करे और एकरात्रि जल विषे वास करे और अपणें वरावर खूआ वणावे तिसको गोआ जल चिकड इनां करके भरे २ तत्रेति तिसके विषे स्थित हो करके निराहार सो स्त्री त्रयरात्रि व्यतीत करे और शंखपुष्पीकी वेलका मूल वा पत्र वा पुष्प वा फल ३ ॥ ॥

क्षीरइति इनकों दुग्धमें पावे और सुवर्ण पावे इनांका काथ कर्के पानकरे और पश्चात् एक वखत भोजन खावे जितना काल रजस्वला न होवे ४ जितना काल बाहर स्थित होवे जितनें तब व्रत नूं करे तिसतें उपरंत प्रायश्चित्तके होयां ब्राह्मणोंको भोजन करावे ५ और दो गौआं दक्षिणा देके तां शुद्ध होतीहै एह मनुजीनें कयाहै एह भी नहिं इच्छातें गमन विषे जानणा(यदिगच्छेत्कथंचन) इसवचनतें अब पिच्छे किहा जो दूसरा श्लोक तिसका अर्थकहतेहैं आत्मनेति चांडाल साथ गमन वालीस्त्रीअपने देहके बराबर बनायागोमययुक्तजलकर्के पूरित जो कूपतिसविषे एह अर्थहै ऋष्यशृंगीजीनेभी नीचके साथ गमनविषें और प्रायश्चित्तकयाहै समिति जोस्त्री नीचके साथगमन करे सो एकवर्ष कृच्छ्रव्रतकरे परंतु एह इच्छाकर्के एकवारगमनविषें जानणाजेकर पहिले स्थितहै

क्षीरेसुवर्णसंमिश्रंक्काथयित्वाततःपिवेत् एकभुक्तंचरेत्पश्चाद्यावत्पुष्पवती भवेत् ॥ ४ ॥ वहिस्तावच्चनिवसेद्यावच्चरतितद्व्रतम् प्रायश्चित्तेततश्चीर्णेकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ ५ ॥ गोद्वयंदक्षिणांदद्याच्छुद्ध्येत्स्वायंभुवोऽब्रवीदिति ॥ एतदप्यकामविषयमेव यदिगच्छेत्कथंचनेतिवचनात् आत्मनासंमितचांडालगादेहमात्रेगोमययुक्तजलपूरितेकूपइत्यर्थः ॥ ऋष्यशृंगेणाप्यंत्यजव्यवायेप्रायश्चित्तांतरमुक्तम् संपृक्तास्यादथांत्यैर्यासाकृच्छ्राब्दंसमाचरेदिति कामतःसकृद्गमनेइदम् यदात्वाहितगर्भायाएवपश्चाच्चांडालादिव्यवायस्तदा तेनैव विशेषउक्तः। अंतर्वत्नीतुयुवतिःसंपृक्ताचांत्ययोनिना प्रायश्चित्तंनसाकुर्याद्यावद्गर्भोननिःसृतः १ नप्रचारंगृहेकुर्यान्नचांगेषुप्रसाधनं नशयीतसमंभर्त्रानवाभुंजीतवांधवैः २ प्रायश्चित्तंगतेगर्भेविधिकृच्छ्राब्दिकंचरेत् हिरण्यमथवाधेनुंदद्याद्विप्रायदक्षिणामिति ३ यदातु कामतोऽत्यंतसंपर्कं करोति तदा ॥ अंत्यजेनतुसंपर्के भोजनेमैथुने कृते प्रविशेत्संप्रदीप्तेऽग्नौमृत्युनासाविशुद्ध्यतीत्युशनसोक्तंद्रष्टव्यमिति ॥

गर्भ जिसकों सो स्त्रीपश्चात् चांडालादिके साथगमनकरे तिसमेंभी ऋष्यशृंगीजीने विशेषकयाहै अंतारेति गर्भवाली स्त्री नीचकेसाथ गमन कर्के प्रायश्चित्त न करे जितने तक गर्भ नहिं निकले १ और गृहविषे प्रचार न करे और अंगकी शुद्धि नकरे और भर्ताकेसाथ शयननकरे और बंधुयोंकेसाथ भोजन नकरे २ और गर्भके निकले होआं प्रायश्चित्त विधि जो कृच्छ्रव्रत वर्षका है तिसनूं करें और सुवर्ण वा गौको ब्राह्मणके तांई दक्षिणा देवे ॥ ३ - जेकर इच्छाते बहुत संसर्ग करे तिसमे कहतेहैं ॥ अंत्यजेनेति द्विजकीस्त्री नीचके साथ गमन करे वा भोजन करे वा मैथुन करे तां अच्छीतरह प्रज्वलित जो अग्नि तिसविषें प्रवेश करे सो मृत्युके साथहि शुद्धहोतीहै एह उशनसाजीका कया होया प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै ॥

यदेति जेकर कथनकीते होए प्रायश्चित्तकोंनकरे तद तिसस्त्रीके मस्तकविषे लोहेकों तपाकर्के पुरुष केलिंगकर्के चिन्हलगावे वा मारदेवे। इसमे वचन कहतेहैं हीनेति हीनबर्णकर्के भोगीहोवे जो स्त्री सो चिन्हकरणे अथवामारणेयोग्यहे एहव्यासस्मृतिमेकथाहै १ पूर्वमिति पिच्छेसमानवर्णवालीस्त्रीको अनुलोमक्या अपणेते छोटो जातिकेगमनविषे स्त्रीवा पुरुषको स्वभावते समान प्रायश्चित्त कयाहै तिसका किते अपवादहै तेसेहि संवर्त्तजी कहतेहैं बलादिति बलते खिच्चकर्के भोगी होवे का मकर्के पीडित होया जोचित तिसकर्के तद तिसका परमपवित्र करणेवाला प्राजापत्य व्रतहै तिस कर्के शुद्ध होतीहै १ इसमे पराशरजीभीकहतेहैं सकृदिति नाहीं इछाकरतीस्त्री पापीपुरुषोने एक वार भोगी होवे तां प्राजापत्यकर्के शुद्धहोतीहै वा रुधिरके निकालनेकर्के अर्थात् ऋतुके आवणे कर्के शुद्धहोतीहै १ वृहस्पतिजीकहतेहैं अनीति नहिं इच्छा वाली स्त्री भोगी जावे तां तिसनूं गुप्त

यदातूक्तंप्रायश्चित्तं न करोति तदा पुल्लिंगेनांकनीया वध्या वा भवेत्। हीन वर्णोपभुक्तायासांक्यावध्याथवाभवेदिति पाराशर्यस्मरणात्। पूर्वसवर्णानु लोमव्यवाये स्त्रीपुंसयोरौत्सर्गिकंप्रायश्चित्तंतुल्यमुक्तं तस्य क्वचिदपवाद स्तथाचसंवर्त्तः। बलात्प्रमथ्यभुक्ताचेदर्द्यमानेनचेतसा प्राजापत्येनशुद्धास्या त्तत्तस्याःपावनंपरमिति १ पराशरोऽपि। सकृद्भुक्तातुयानारीनिच्छंतीपापक र्म्मभिः प्राजापत्येनशुद्ध्येतऋसृक्प्रस्त्रवणेनवेति १ वृहस्पतिरपि। अनि च्छंतीतुयाभुक्तागुप्तांतांकारयेद्गृहे मलिनांगीमधःशय्यांपिंडमात्रोपजी विनीं १ कारयेन्निष्कृतिंकृच्छ्रंपराकंवासमंगतां हीनवर्णोपभुक्तायात्याज्या वध्यापिवाभवेदिति २ समंसमानजातीयम् ॥ अत्रसकृदुपगमेकृच्छ्रम् द्विरभ्यासेपराकः ॥ अभ्यासेतुचांद्रायणम्। तदाहोशनाः। व्यभिचारिणीं भार्य्यां कुचैलां पिंडगुप्तां निवृत्ताधिकारां चांद्रायणं पराकं प्राजापत्यं वा कारयेदिति

घरविषे रक्खे और उहस्त्री मलीन अंगां वाली पृथ्वीविषे शयन करे और तिसकों अन्न मात्र खाणेको देवे २ पीछे तिसकी शुद्धि करावे जेकरतिसने समानजातिके साथ गमनकीताहोवें तां कृच्छ्रऔर पराक व्रत करे और हीन वर्ण कर्के भोगी होवे तां सो त्यागणे और मारणे योग्य है इसमे व्यवस्थाकरतेहैं अत्रेति इहां एकवार गमन विषे कृच्छ्र व्रत जानणा और दोवार गमन विषें पराक व्रत जानणा और वहुत वार गमन विषे चांद्रायण व्रत जानणा। तिसीको उशन ऋषि जो कहतेहैं व्यभिचारिणीमिति व्यभिचारिणी जो स्त्री कैसी है मलीनहैं वस्त्र जिसके और अन्नमात्र भक्षण करण वाली और घरके कार्यते दूर कीती होई है तिसको चांद्रायण वा पराक वा प्राजापत्य व्रत करवावे

अबइसमें मनु जी कहतेहैं ॥ सेति सो स्त्री फेर दोषवालीहोवे क्या तुल्यकर्के प्रेरित कीतीहोई तिसके साथक्रीडाकरे तां इसके पापकों दूर करणवाला कृच्छ्र और चांद्रायणव्रतहै १ परंतु एह प्रायश्चित्त इच्छातें विनाकीताहै व्यभिचार जिसने तिसमें जानणा और जो इच्छा तें कीता है तिसमें दूणा व्रत करणे योग्यहै अवकहतेहैं कि जो ऋष्य शृंगीजीनें कया है तिसकों कहते हैं वलेति वल कर्के तुल्य जातिवालेनें स्त्री साथ गमन कीता होवे अर्थात् ब्राह्मणने ब्राह्मणी साथ और क्षत्रीनें क्षत्रियाणीसाथ तां तिसस्त्रीकी शुद्धिवास्ते त्रय रात्रिका प्रायश्चित्त कथन करे १ सो एह वीर्य्य स्खलिततें प्रथम निवृत्तिविषे देखणे योग्यहै ॥ पराशरजीभी कहतेहैं वंदीति कैद कर्के वा ताडना कर्के वा वंन्न कर्के वा वलतें वा भयतें स्त्रीकों भोगे तां सांतपन व्रत कर्के सोस्त्री शुद्ध होती है १ एह पाराशर जीनें कया है इच्छाकर्के प्रवृत्ति विषे तिसी स्त्री

मनुः। साचेत्पुनःप्रदुष्येत्तुसदृशेनोपयंत्रिता कृच्छ्रंचांद्रायणंचैवतदास्याःपापशोधनमिति १ इदंचाकामतः कामतस्तुद्विगुणम् यत्तुऋष्यशृंगः। वलेनकामितानारीसवर्णेनकथंचन प्रायश्चित्तंत्रिरात्रंवैतस्याःशुद्ध्यर्थमादिशेदिति १ तद्रेतःसेकात्प्राङ्निवृत्तौद्रष्टव्यम् पाराशरोपि। वंदीग्राहेणवाभुक्ताहत्वाववध्वावलाद्भयात् कृत्वासांतपनंकृच्छ्रंशुद्ध्येत्पाराशरोब्रवीत् १ इच्छयाप्रवृत्तौ तु तस्याःपुंतुल्यमेवप्रायश्चित्तम् तदाहतुःशंखलिखितौ। इच्छयाव्यभिचारिणींपरदारेषुपुंसोविहितंतांकारयेदिति अंगिराः। व्रतंयच्चोदितंपुंसांपतितस्त्रीनिषेवणात् तच्चापिकारयेन्मूढांपतितासेवनात्स्त्रियमिति आसेवनादिति पदच्छेदः तच्चकामतः अकामतस्त्वाहसंवर्त्तः॥ ब्राह्मण्यकामाद्गच्छेच्चेत्क्षत्रियंवैश्यमेववा गोमूत्रयावकैर्मासात्तदर्द्धाच्चविशुद्ध्यति १ ब्राह्मण्याशूद्रसंपर्केकथंचित्समुपागते चांद्रायणेनशुद्धिःस्यात्तत्तस्याःपावनंस्मृतमिति २

कों पुरुष तुल्यही प्रायश्चित्तहै ॥ तिसीको शंख और लिखित कहतेहैं इच्छेति इच्छा कर्के जो व्यभिचारिणी स्त्रीहै तिसनूं और परस्त्रीविषे पुरुषको जो प्रायश्चित्तहै सोकरवावे ॥ अंगिरा जीकहतेहैं व्रतमिति पुरुषांकों पतित स्त्रीके सेवणेंतें जोव्रत कयाहै सो पतित पुरुष नुं सेवनवाली स्त्रीनूं करवावे आसेवनात् एह पदच्छेद करणा सो एह इच्छा कर्के करणें विषे जानणा १ नाहिं इच्छा तें करणें विषे संवर्त्त जी कहते हैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी इच्छातें विना क्षत्री वा वैश्य साथ गमन करे तां गोमूत्र कर्के युक्त जो यव उनांको महीना वा अर्ध महीना भक्षण करणेंतें शुद्ध होती है ॥ क्षत्री विषे अर्ध महीना और वैश्यमें महीना इसमें क्रम विवक्षा नाहिं है १ एह पूर्वोक्तहि ब्राह्मणीका कदाचित् शूद्र साथ गमन होवे तां तिसकी चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धि होतीहै जिस कारणसें वो परमपवित्र कहाहै २

और शूलपाणिजीकहतेहैं कि एह नहिं इच्छावाली स्त्रीके विषयविषें जानणा और संवर्त्तजीके वाक्यविषें मासात् इसकर्के वैश्य जानणा और क्षत्रीविषे अर्द्धजानणा एहपूर्वोक्तहि अर्थहै और हीनवर्णकर्केभोगी जोस्त्रीसो त्यागणेयोग्यहै एहपीछेंकयाहै तिसविषे वसिष्टऋषिजीविशेषकहतेहैं चतस्त्रइति चार स्त्रियां त्यागणे योग्यहैं एक शिष्य साथ गमन करण वाली और दूसरी गुरु साथ गमन करण वाली और तीसरी पतिमारण वाली और बिशेष कर्के जुंगित साथ गमन करण वाली १ अब जुंगितशब्दका अर्थदिखातेहैं जुंगितइति शूद्रके घरमें वैश्या क्षत्रियाणीवाब्राह्मणीरहे और वैश्यके घरमे क्षत्रियाणी वा ब्राह्मणी रहे और क्षत्रीके घर मे ब्राह्मणी रहे इन छेः तें जो उत्पन्नहोवे सो जुंगितहै तिस साथ गमन करणवाली एहि चार त्यागणेयोग्यहैं होर नहि इसके विषे विशेष विधानतें परित्याग क्या घरते निकाल देणा हि जानणा औरके विषे अतिशयकर्के

शूलपाणिस्तुअनिच्छतीतिविषयमेतदिति मासादितिवैश्ये क्षत्रियेत्वर्धमिति पूर्वंहीनवर्णोपभुक्तात्याज्येत्युक्तंतत्रविशेषमाह वसिष्ठः। चतस्त्रस्तुपरित्याज्याःशिष्यगागुरुगाचया पतिघ्नीचविशेषेणजुंगितोपगताचयेति १ ॥ जुंगितः प्रतिलोमजः अत्रचविशेषविधानात् परित्यागोगृहान्निर्वासनमेव अन्यत्रतु विप्रदुष्टांस्त्रियंभर्तानिरुंध्यादेकवेश्मनीतिमनूक्तोनिरोधः ॥ याज्ञवल्क्योपि। हताधिकारांमलिनांपिंडमात्रोपजीविनीं परिभूतामधःशय्यां वासयेद्व्यभिचारिणीमिति ॥ १ ॥ अत्र वासनंवैराग्यजननार्थमेव यत्तु चतुर्विंशतिमते। स्त्रीणांनास्तिपरित्यागोब्रह्महत्यादिभिर्विना तत्रापिगृहमध्येतु प्रायश्चित्तानिकारयेत् ॥ १ परित्यक्ताचरेत्पापंवह्वल्पंवापिकिंचन तत्पापंशतधाभूत्वाबांधवानपिगच्छतीति ॥ २ ॥ तद्गर्भानुत्पत्तिपरम्

दोष वाली स्त्री नूं पति एक घरमे रोक कर्के प्रायश्चित्त करवावे एह मनुका कयाहोया निरोधहै और याज्ञवल्क्य जी भी कहतेहैं हतेति दूरहै अधिकार जिसका और मलीन वस्त्र वाली और अन्न मात्र ते जीविका करण वाली और तिरस्कृतकीती होई और पृथ्वीमे शयन करण वाली ऐसी व्यभिचारिणी स्त्री नूं वासनमात्र करवावे १ परंतु इसके विषे वासन विरक्तताके उत्पन्न करणे वास्ते जानणा ॥ अब इससे कुछ विलक्षण दखातेहैं यत्त्विति जो चतुर्विंशतिमत विषे कया है कि स्त्रीणामिति ब्रह्महत्यादितें विना स्त्रीयांका परित्याग नाहिं है तिसके विषे भी घरके मध्य विषें प्रायश्चित्तनूं करवावे १ क्योंकि त्यागी होई स्त्री थोडा वा वहुत पापकरे तां सो पाप सौ १०० प्रकारका हो कर्के बंधुआंकों प्राप्त होताहै २ सो एह चतुर्विंशतिका मत गर्भ के न उत्पन्न होणेमें जानणे योग्यहै

तदिति सो व्यभिचारिणी गर्भकर्के युक्त होवे तां तिसकात्यागपराशरजी कहतेहैं ॥ जारेणेति जेकर स्त्री जार कर्के गर्भकों उत्पन्न करे पतिके मृत होआं अथवा पतिकें व्यक्त क्या प्रकट पास होयां अथवा पतिके गयां होआं तां तिस स्त्री कों दूसरे देश विषें त्याग देवे कैसी है सो स्त्री पतितहै और पाप करण वाली है ॥ अर्थको स्पष्ट कर्के कहतेहैं कि अपरेराष्ट्रे इसके कयां होआं घरतें निकाल देणा जाणीदा है इसी कारणतें चतुर्विंशति मत विषें कहतेहैं चतस्रइति पतित होआं भी चार स्त्रियां त्यागणे योग्यहैं चांडालके साथ गमन करण वाली और पतिके मारणवाली और यति साथ क्यासंन्यासी साथवा पुत्रसाथगमन करण वाली १ इसके विषें शिष्यादिसाथ गमन करण वालीयांका त्याग गर्भ विषय बिषे जानणा ॥ इसीमे और वचनहै व्यभिचारादिति व्यभिचारतें ऋतुविषें शुद्धि होतीहै और गर्भ विषें

तद्युक्तायास्तुपरित्यागमाह ॥ पराशरः ॥ जारेणजनयेद्गर्भंमृतेव्यक्तेगते पतौ तांत्यजेदपरेराष्ट्रेपतितांपापकारिणीमिति ॥ १ ॥ अपरेराष्ट्रेइत्युक्ते गृहान्निष्कासनंगम्यते अतएवचतुर्विंशतिमते॥ चतस्रएवसंत्याज्याःपतने सत्यपिस्त्रियः श्वपाकोपहतायातुभर्तृघ्नीयतिपुत्रगेति ॥ १ ॥ अत्रशिष्य गादीनांत्यागोगर्भविषयएव ॥ व्यभिचाराहतौशुद्धिर्गर्भेत्यागोविधीयते ग र्भभर्तृवधादौचतथामहतिपातकइति याज्ञवल्क्योक्तेः । गर्भः शूद्रादिकृतः ब्राह्मणक्षत्रियविशांभार्याःशूद्रेणसंगताः अप्रजाताविशुद्ध्यंति प्रायश्चित्ते नतेनरा इति वसिष्ठस्मरणात् शूद्रग्रहणंप्रतिलोमजोपलक्षणार्थम् नतुत्रैव र्णिकव्यावृत्त्यर्थम् ॥ तेनाशिष्यगागुरुगयोरपित्रैवर्णिक प्रवेशनत्यागःअयं चत्यागोनगर्भमात्रेकिंतुप्रसवमात्र इतिप्रामाणिकाः ॥ अयमेवाभिप्रायो माधवाचार्य्याणाम्

त्याग विधान कियाहै गर्भ विषें और पतिके वधादि विषें तैसें हि वडें पापके विषें त्यागहै १ इस याज्ञवल्क्यकी उक्तिते त्यागका अर्थ किहाहै परंतु जिसगर्भके दोषकर्के त्यागहै सोगर्भ शूद्रादिका कीत्ता होआ जानणा इसमै वचन कहीदाहै ब्राह्मण इति इसतें लेकर वसिष्ठस्मरणात् इस तक अर्थ पिछे लिखयाहैइस विषे शूद्रग्रहण प्रतिलोमज जो पिछें कयाहै तिसके उपलक्षण वास्ते है और त्रय वर्णकी व्यावृत्तिवास्तेनाहींहै तिस कर्के एहवात सिद्ध होंई कि शिष्य साथ गमन करण वाली और गुरु साथगमन करण वाली स्त्रीकी त्रय वर्ण विषें हि स्थि ति होणेतें त्याग कयाहै तथापि एह त्यागगर्भमात्रविषेंनाहींहै किंतु प्रसूतिमात्रविषें है एह प्रामाणि कोंका मतहै एही अभिप्राय माधवाचार्य्योका है

व्यवेति और त्याग शब्द करके व्यवहार तिसस्त्री साथ नहिं करणा एही कया है कोई घरतें निकालनेका नाम त्याग नहि एह मिताक्षरा में कया है ॥ अब स्त्रीको मनके पापका और वाणीके पापका प्रायश्चित्त वसिष्ठस्मृतिसें कहतेहैं मानसेति मनकरके पतिके मारणे विषे त्रय रात्रि यवोंका काडा और क्षीरोदनका भोजन करे और पृथ्वी विषे शयन करे और त्रयरात्रितें उपरंत जल विषे डुब्ब करके गायत्रीकी चारमालाका शिर विषे हवन करे तां पवित्र होती है एह जाणीदाहै परंतु जिसकरके हवन करणाहै सो द्रव्य नहि लिखया सो इसप्रकरणसें जलहि प्रतीतहुंदाहै अथवा घृत करके हवन करे और चार माला तक श्वासरोध नहि हुंदा इस करके जाणीदाहै कि श्वास संचार रक्षकर निमग्न होवे और हवनादि दूसरेसे करावे आपजलमे निमग्नरहे इतनाभी विचारकरणा ॥ अभिचार नाम मारणकाहै वाणीके पाप

व्यवहारनिरोधएवत्यागशब्देनोक्तो नतु गृहान्निर्वासनमपीतिमिताक्षरा ॥ मानसवाचिकयोः प्रायश्चित्तंवसिष्ठस्मरणे।मनसाभर्तुरभिचारेत्रिरात्रंयावकं क्षीरोदनंवाभुंजानाअधः शयीत ऊर्ध्वंत्रिरात्रादप्सुनिमग्नायाःसाविच्याचतुर्भिरष्टशतैःशिरोभिर्जुहुयात्पूताभवतीतिविज्ञायते अभिचारोहिंसा वाक्संबंधेएतदेवमासंचरित्वा ऊर्ध्वमासादप्सुमग्नायाःसाविच्याचतुर्भिरष्टशतैः शिरोभिर्जुहुयादिति ॥ अष्टाधिकंशतमष्टशतंतैश्चतुर्भिःशिरोभिःशिरसीत्यर्थः ॥ इदंच मानसिकव्यवहारेप्रायश्चित्तं रजोदर्शनादर्वाग्व्यवहार्यत्वसिद्धये ॥ रजोदर्शनेतु सति तेनैवशुद्धिः । तथाचमनुः । मृत्तोयैःशोध्यतेशोध्यंनदीवेगेनशुद्ध्यति ॥ रजसास्त्रीमनोदुष्टासंन्यासेनद्विजोत्तमइति १ ॥

इतिस्त्रीव्यभिचारप्रायश्चित्तम् ॥ ❀ ॥

विषे इसी व्रतको महीना रोज करे महीनेतें उपरंत जलविषे गायत्रीकी चारमाला करकेशिर विषे हवन करावे अठां तें अधिक सौ १०० नूं अष्टशत कहतेहैं तिनां चऊं करके सिरविषे हवन करे एह मनके व्यभिचार विषे प्रायश्चित्तहै परंतु रज देखणेंतें उरे व्यवहार्यत्वकी सिद्धि वास्तेहै ॥ और रजदेखणें विषे तिसी रजकरके शुद्धि होवीहै ॥ तैसेंही मनुजीकहतेहैं मृदिति शोधने योग्य जो वस्तु सो मृत्तिका और जलकरके शुद्ध होतीहै और नदी वेगकरके शुद्ध होतीहै और दुष्टहैमन जिसका ऐसी स्त्री रजकरके शुद्ध होतीहै और द्विज संन्यास करके शुद्ध होताहै १ एह स्त्रीयोंके व्यभिचारका प्रायश्चित्त कया है ॥ ❀ ॥

अब पशु गमन विषे शंख और लिखित कहतेहैं तिर्यगिति गौके विना और पशुयोंनिविषे गमन करे तां सचैल स्नानकर्के घासकाभार गौआंको देवे तां शुद्धहोताहै ॥ एहि पराशरजी कहतेहैं महिषीति महिषी ऊटणीगधी इनके साथ गमनकरे तां दिनरात्रके व्रतकर्के शुद्ध हाताहै परंतु एह नहिं कामना कर्के कीताहोवे तिसमे जानणा ॥ और कामनाकर्के करण वालेविषे जावाली जी कहतेहैं इतरेषामिति और पशुयोंविषे गमनकरे तां कृच्छ्रव्रतकाएकपाद व्रतकरे ॥ इसीमे कामनाकर्के बहुत अभ्यास विषे संवर्त्तजी कहतेहैं पश्विति पशु और वेश्याके गमनविषे प्राजापत्य व्रतकरे ॥ कुत्तीके साथ गमन करणें विषें विशेष चतुर्विंशति मत विषें कहतेहैं शुनीमिति कुत्तीके साथ द्विज गमन करे तां अतिकृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धहोताहै ॥ अब जो गौत्तमजीने कयाहै सो कहतेहैं अमानुषीष्विति

अथपशुगमनेशंखलिखितौ ॥ तिर्यग्योनिषुगोवर्जंसचैलस्नातोयवसभारंदद्यात् ॥ पाराशरः ॥ महिष्युष्ट्रीखरीगामीत्वहोरात्रेणशुद्ध्यति इदमकामतः कामतस्तु ॥ जावालः ॥ इतरेषांपशूनांतुकृच्छ्रपादोविशोधनमिति कामतोऽभ्यासे संवर्त्तः ॥ पशुवेश्याभिगमनेप्राजापत्यंविधीयतइति ॥ शुनीगमने विशेषश्चतुर्विंशतिमते ॥ शुनींचैवद्विजोगत्वातिकृच्छ्रंसमाचरेदिति ॥ यत्तु गौतमः ॥ अमानुषीषुगोवर्जंस्त्रीषुगमने कूष्मांडैर्घृतहोमइति तदकाम कामसकृदभ्यासेष्वष्टाविंशत्यष्टोत्तरसहस्रादिसंख्ययायोज्यम् ॥ अथगोगमने ॥ पराशरः ॥ गोगामीचत्रिरात्रेणगामेकांब्राह्मणेदद्यात् इदमकामतः सकृद्गमने कामतोविष्णुः ॥ गोव्रतंगोगमनेच ॥ कामतोऽभ्यासेतुशंखलिखितौ ॥ गोष्ववकीर्णःसंवत्सरं प्राजापत्यंचरेदिति ॥

गौके विना पशुयोनिकी स्त्रीविषें गमन कीते होयां कूष्मांड मंत्रों कर्के घृतका हवनकरे सो एह नहिं इच्छाते करणेंविषें अष्टाविंशति संख्याकर्के जोडनेयोग्यहै ॥ इच्छाकर्के करणेंविषें अष्टोत्तर सहस्र संख्या कर्के जोडना ॥ एकवार गमन विषें अष्टा विंशति जोडना ॥ और वहुत अभ्यास विषें अष्टोत्तर सहस्र जोड कर्के हवन करणा ॥ अब गौके साथ गमन करणें विषें प्रायश्चित्त पराशरजी कहतेहैं गविति गौके साथ गमन करण वाला त्रय रात्रि व्रतकर्के एक गौ ब्राह्मणके तांई देवे तथापि एह नहिं इच्छातें एकवार गमनविषें जानणा ॥ इच्छातें करणें विषें विष्णुजी कहतेहैं गोव्रतमिति गौके गमनविषें भी जोगो घातकाव्रतहै सो करे अवइसमे वहुवार इच्छातें करणें विषें शंख और लिखित जी कहतेहैं गोष्विति गौ विषें गमन करणेतें वर्ष पर्यंत प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्ध होताहै

जो गोतमजीने कयाहै सो कहतेहैं गवीति गौके गमनविषें गुरु तल्पके तुल्यप्रायश्चित्त करणा सो एह ज्ञानतें जन्मसें लेकर वहुत अभ्यास विषें जानणा एह परस्त्री व्यभिचारका प्रायश्चित्त पूरा होया ❀ इसतें उपरंत आत्मविक्रयके प्रायश्चित्त कहतेहैं तत्रेति तिस विषें सामान्य प्रायश्चित्त जो याज्ञवल्क्यनें (उपपातकशुद्धिःस्यादेवंचांद्रायणेनतु) इत्यादि पिछे कथन कीत्तेहोए चार हैं अथवा तिनांके तुल्य मनुजीनेकहे होएहैं सो यथा प्रकार जोडने योग्यहैं अर्थात् जैसा पाप होवे तैसाही व्रत जोडने योग्यहै ॥ सो अयाज्य संयाज्य प्रकरण विषें कहेहैं ॥ कुछक और कहतेहैं कि याज्ञवल्क्यकी उपपातक गणना विषें व्यसनतें उपरंत आत्मविक्रय प्रतिपादन कीता है तिसका प्रायश्चित्त स्कंदपुराणके पातालखण्डसें कहतेहैं पानमिति मदिरा पान करणा १ और

यत्तुगौतमः गविगुरुतल्पसम इति तद्ज्ञानादाजन्माभ्यासे इतिपारदार्यम् ३ ❀ एतदनंतरमात्मविक्रयः ॥ तत्र सामान्यप्रायश्चित्तानि याज्ञवल्क्योक्तानिचत्वारि ॥ तत्समानि मानवीयानि वा यथायथंयोज्यानि तानिचायाज्यसंयाज्यप्रकरणेप्रोक्तानि किंच याज्ञवल्क्योपपातकगणनायांव्यसनान्यात्मविक्रय इतिव्यसनोत्तरमात्मविक्रयः प्रतिपादितः। तत्प्रायश्चित्तं स्कंदपुराणे पातालखण्डे ॥ पानमक्षाःस्त्रियश्चैवमृगयाचोग्रदंडनम् अतीवपरुषंवाक्यंसर्वस्वदानमेवच १ एतानिसप्तव्यसनानि ❀॥ अथापराणिसप्तव्यसनानि अनृतंगंधपुष्पाणांसेवनंदोषचारिणाम् ऋणंकृत्वाघृतंपीत्वा प्रत्यहंभोजनेस्पृहा स्वंकिंचनपणंकृत्वाऋणंकृत्वाव्रतंचरेत् १

जूआ खेलना २ और परस्त्रीका सेवणा ३ और मृगया क्यावहुताशिकार खेलना ४ और थोडे पापमेंवहुनदंड देणा ५ और वहुतकठोर वचनवोलणा ६ और कुटुंवदे होआं २ संपूर्ण धनका दानकरणा ७ एह सत्तव्यसनकहेहैं ॥ १ ॥ अव और सत्तव्यसनकहतेहैं अनृतमिति झूठवोलणा १ गंधपुष्पोंका सेवणा २ और दोष वाले पुरुषका अर्थात् मदिरापानी वेश्यागामी आदिपुरुषका सेवणा ३ और ऋण उठाय करकें घृत पीणा ४ और नित्यंप्रति नवीन पदार्थ खाणेकी इच्छा करणी ५ और मेरेको इतना धन देओ में आपका व्रत करूंगा ऐसा व्यवहार करणा ६ और ऋण करकें व्रत करणा अर्थात् व्रतके उद्यापनादि विषें वहुत धन लगाणा ७ एह सत्त व्यसनहैं ॥ १ ॥

एष्विति इनां व्यसनांके भोगमें आसक्त होआ अपणे आपनू वेचकर्के वर्त्तेगा ॥ आत्माके वेचणे का प्रकार कहतेहैं वर्षमिति एक वर्ष वा छे महीनें भगवान्का आराधन करोंगा ऐसें संविद नूं कर्के जेकर पापवुद्धि वाला पुरुष वर्त्तन करे ॥ १ ॥ तद नित्यकर्म्म जो संध्या वंदनादि और काम्यकर्म्म जो यज्ञादि एह संपूर्ण तिसके होतेहैं जिसते धन लेकर बनावे आप निष्फल होताहै ॥ २ ॥ अव द्यूतकी निंदाकरतेहैं अग्नाविति अग्निविषें दग्ध होवे वा जलविषें डुव्व जावे जो पृथ्वीविषें डिग पडे सो संपूर्ण वस्तु परलोक वास्ते होतीहै और जूए विषें जो धन जावे सो नष्ट होताहै अर्थात् फेर कदाचित् प्राप्त नहीं हुंदाहै ॥ ३ ॥ सो पापी

एषुभोगासक्तःस्वात्मानंविक्रयित्वावर्त्तयेत् ॥ वर्षंवाथतदर्द्धंवाभगवदाराध नंचरे इतीवसंविदंकृत्वावर्त्तयेद्यदिपापधीः १ नित्यकर्म्माणिकाम्यानि इष्टापूर्त्तादिकानिच सर्वंतत्रैवभवतिस्वयंवैनिष्फलोभवेत् २ अग्नौदग्धंजले मग्नंभूमौनिपतितंचयत्।तत्सर्वंपरलोकायद्यूतेनष्टंविनश्यति ३ पतितःसभवे त्पापीभ्रंशाद्यैर्नित्यकर्मणाम् नरकेनियतंवासःपापकारीभवेद्यतः ४ तस्यवै निष्कृतिर्दृष्टामुनिभिर्धर्मकोविदैरिति ५ हिरण्यगर्भप्रतिग्रहप्रायश्चित्तव त्सर्वंकुर्यात् तत्तुप्रायश्चित्तंतुलादानादिप्रतिग्रहप्रायश्चित्तप्रकरणेद्रष्टव्यम् इत्यात्मविक्रयप्रायश्चित्तम् ४ ॥ ❀ ॥ अथगुरुमातृपितृत्यागेप्रायश्चित्तम्

पुरुष नित्यकर्म्मोंका जो नाहिं करणा तिसकर्के पतित होताहै और तिस पाप करण वाले पुरु षका नियम कर्के नरक विषें वास होताहै क्योंकि जिसकारणतें उह पापकारीहै ४ परंतु तिस पुरुषकोभी धर्म्मके जानण वाले मुनियोंने पापके दूर करणेका उपाय देखयाहै ॥ ५ ॥ सो दि खाईदाहै हिरण्येति हिरण्यगर्भके दानके प्रतिग्रहकी न्याईं प्रायश्चित्त इसका संपूर्ण करे सो प्रायश्चित्त तुलादानादि प्रतिग्रहके प्रायश्चित्त प्रकरण विषे देखणे योग्यहै ॥ एह संपूर्ण आत्मविक्र यका प्रायश्चित्त कया है ॥ ❀ ॥ अव गुरु और माता और पिताके त्याग विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं

एतदिति इनांके त्याग करणवालेको पंक्तिरहित पुरुषोंविषे पढ कर्के मनुजी कहतेहैं षष्ठेति षष्ठ काल विषे महीना पर्य्यंत भोजन करे क्या छेमे कालविषे भोजनकरे इसका अर्थ आगे आवेगा और संहिताका जप करे और नित्य शाकलमंत्रोंका हवन करे एह अपांक्त्य पुरुषोंके शुद्धकरणे वास्ते कयाहै ॥ इसी श्लोकका अर्थस्पष्टकर्के कहतेहैं अपांक्त्य जो पतितहैं (स्तेनक्लीबा) इत्यादि श्लोक कर्के कहे होए सो और विशेषते नहिं दिखायाहै प्रायश्चित्त जिनांको तिनांको महीना पर्य्यंत त्रयदिन जलपान कर्के तीसरे दिनविषें सायं काल भोजन करे और वेदसंहिता का जप करे ॥ हवनके मंत्रदखाईदेहैं देवेति (देवकृतस्यैनसो अवयजनमसी) इत्यादि अष्ट

एतच्चापांक्तेयमध्येपठित्वाप्राहमनुः षष्ठान्नकालतामासंसंहिताजपएववहि ॥ होमश्चशाकलोनित्यमपांक्त्यानांविशोधनमितिअस्यार्थः अपांक्त्यायेपतिताः स्तेनपतितक्लीवाइत्यादिनोक्तास्तेषांविशेषतोऽनुपदिष्टप्रायश्चित्तानांमासं त्र्य हमपोभुक्त्वातृतीयेह्निसायंभोजनं वेदसंहिताजपोदेवकृतस्यैनसो अवयज नमसीत्यादिनाउद्गात्राऽष्टभिर्मंत्रैर्होमःप्रत्येकंकार्यः एतत्समुद्दिष्टंपापशोधन म् षष्ठान्नकालतायामयमभिप्रायः। सायंप्रातर्द्विजातीनामशनंमुनिनोदितम् याममध्येनभोक्तव्यं यामयुग्मंनलंघयेदित्युक्तप्रतिदिनभोजनद्वयनियमेन तृतीयदिनोत्तरार्द्धभोजनकालः ॥ जलपानंतुप्रातिदिनकमेवेतिबोध्यम् ॥

मंत्रोंकर्के उद्गाता एक एक का हवन करे एह पापशोधनका प्रकार कियाहैं और षष्ठान्नकालता इसविषे एह अभिप्रायहैं कि द्विजातियांको सायंकाल प्रातःकाल मुनियोंनें भोजन कया है एक प्रहरके मध्य विषें भोजन न करे और दोप्रहर न लंघनकरे अर्थात् दो प्रहरके अंदर ही भोजन करे ॥ ऐंसा कहा जो नित्यंप्रति दो वार भोजनका नियम तिस कर्के तीसरे दिनके उत्तरार्द्ध विषें भोजनका काल आवता है इसीकों षष्ठान्नकालता कहतेहैं और जलपान जो है सो प्रतिदिन करणा एह जानणे योग्यहे ॥

अपांक्तेयाइति अपांक्तेयभी तिसीविषे जानणेयोग्यहैं। जेडे ब्राह्मण चोर और पतित और नपुंसक और नास्तिक हैं तिनां ब्राह्मणांका देवकर्म्म पितृकर्म्म विषे अधिकार नाहिं है एह मनुजीनें कयाहै इसकाउपक्रमकर्के क्या आरंभकर्केकहतेहैं कारणतें विनाही माता पिता और गुरु कों त्यागणे वाला जो ब्राह्मणादिहै सोभी हव्य कव्यतें बाहर है अर्थात् पूर्वोक्त प्रायश्चित्त इसते कराणा चाहिए और एहि प्रायश्चित्त भार्य्याके त्याग विषेभी जानणा और माता जो है सो संपूर्णदोषों वालीभी होवे तांभी नहिं त्यागणी सो सदैव रक्षा करणे योग्यहै एह नागेशका वाक्यहै एह मातापिता गुरुके त्यागविषे प्रायश्चित्त समाप्तहोयाहै ❀ अब स्वाध्यायअग्निपुत्रके त्यागका प्रायश्चित्तकहतेहैं(प्रश्ण) वेदकाविस्मरणतो ब्रह्महत्याके तुल्यकिहाहै सोउसका प्रायश्चित्त

अपांक्तेयाअपितत्रैव । येस्तेनपतितक्लीवायेचनास्तिकवृत्तयः तान्हव्यकव्ययोर्विप्राननर्हान्मनुरब्रवीदित्युपक्रम्य अकारणपरित्यक्तामातापित्रोर्गुरोस्तथेत्यादिना भार्यात्यागेप्येवम् मातुस्तुसर्वदोषेप्यत्याज्यतैव सर्वथा रक्षणीयत्वादितिनागेशः इतिगुरुमातृपितृत्यागप्रा❀७ अथस्वाध्यायाग्निसुतत्यागप्रायश्चित्तम् ॥ अधीतस्यचनाशनमितिब्रह्महत्यासमत्वेनकथनं तुव्यसनासक्तयात्यागेवोध्यम् शास्त्रश्रवणव्याकुलतयात्यागेतु त्रैमासिकाद्युपपातकप्रायश्चित्तानिशक्त्याद्यपेक्षयायोज्यानि ॥ यत्तुवसिष्ठस्मरणं ॥ ब्रह्मोज्झिता कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा पुनरुपयुंजीत वेदमाचार्य्यादिति तदत्यंतापद्विषयमितिमिताक्षरा ॥

अनुपातकमें आवेगा इसमेक्योंलिखयाहै इसकाउत्तरकहतेहैं अधीतस्येति पढे होए वेद का भुलाणा एह पिच्छे ब्रह्महत्याके तुल्य कहाहै सो भुलाणा व्यसनकी आसक्ति कर्के होवे तां तिसविषे जानणा सो एह अनुपातकों में गिणयाहै और शास्त्रके श्रवण कर्के जोव्यकुलताक्या न्यायादि शास्त्रके अभ्यासमें जो खचितहोणा सो उपपातकहै तिस विषें त्रैमासिकादि उपपातकका प्रायश्चित्त कियाहै सोई तिनांनूं शक्त्यादिकी अपेक्षा कर्के जोडना ॥ और इससे विलक्षण जो वसिष्ठ स्मृतिमें कहाहै सो कहतेहैं ब्रह्मेति वेदनूं भुलाणवाला बारां १२ रात्रि का कृच्छ्र व्रत कर्के फेर आचार्य्य तें वेद नूं पढे सो एह अत्यंत आपत्तिविषे जानणा एह मिताक्षरामें कयाहै

अब अग्नित्याग रूप उपपातकका प्रायश्चित्त कहतेहैं तिसमें मनुजीका वचनहैं अग्नीति इच्छाकर्के पापकरण वाला जो ब्राह्मण सो अग्निहोत्रविषे अग्नियांका एक महीना त्यागकरे तां चांद्रायणव्रत कर्के शुद्ध होताहै पापकास्वरूपकहतेहैंकि सो अग्नित्यागरूपपाप यजमानहत्याके तुल्य होताहै १ तैसेंही श्रुतिमें कहाहै जो पुरुष अग्निकात्याग करताहै सो देवतयांको यजमान हत्याके तुल्य प्रतीत हुंदाहै परंतु एह इच्छातें करण वाले विषे जानणा ॥ और जोहारीतजीनेकयाहै सोकहतेहैं संवत्सरइति जेकर अग्निहोत्री अग्निहोत्र नूं वर्ष रोज त्यागे तां चांद्रायण व्रत कर्के फेरअग्नि स्थापन करे और दोवर्ष त्यागेतां सोमायनऔर चांद्रायण व्रतकोंकरे सोमायन औरचांद्रायणकाभेद व्रतप्रकरण विषे देखणा और त्रयवर्ष त्यागे तां वर्ष पर्य्यंत कृच्छ्र व्रत कर्के फेर अग्नि स्थापन करेतांशुद्धहुंदाहै

अग्नित्यागेमनुः । अग्निहोत्रेऽपविद्धयाग्नीन् ब्राह्मणःकामकारकः चांद्रायणं चरेन्मासंवीरहत्यासमंहितत् । १ । अपविद्ध्य त्यक्त्वा वीरोयजमानःमास मपविद्ध्येत्यन्वयः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ वीरहावाएषदेवानांभवतियोऽग्निमुद्वासयते इति इदंचकामतः । यत्तुहारीतः ।संवत्सरोत्सन्नेऽग्निहोत्रेचांद्रायणंकृत्वा पुनरादध्यात् द्विवर्षोत्सन्ने सोमायनचांद्रायणेकुर्यात् त्रिवर्षोत्सन्ने संवत्सरंकृच्छ्रमभ्यस्यपुनरादध्यादिति तदकामतोज्ञेयम् ॥ शंखस्तु वर्षोत्सादे गोदानमप्यधिकमाह । अग्न्युत्सादी संवत्सरंप्राजापत्यंचरेद्गांचदद्यादिति विष्णुरपि वेदाग्न्युत्सादीत्रिषवणस्नाय्यधःशायीसंवत्सरंभैक्षेणवर्त्तयेदिति कामतस्त्वेतान्येवस्वस्वविषयेद्विगुणानि ॥

परंतु सोएह नाहीं इच्छातें करणें विषे जानणा शंखजी कुछ पूर्वोक्तसें विलक्षण कहतेहैं वर्षेति वर्ष रोज त्यागणें विषें चांद्रायण कर्के गोदान अधिक करे अर्थात् अग्निके त्यागण वाला पुरुष एक वर्षका प्राजापत्य व्रत कर्के पीछे गोदान करे ॥ विष्णुजी कहतेहैं वेदेति वेद और अग्नि के त्यागण वाला पुरुष त्रयकाल स्नान करे और पृथ्वी में शयन करे और वर्ष पर्य्यंत भिक्षाके अन्न कर्के उपजीविका करे तदशुद्धहुंदाहै परंतु एभी इसमेजान्नणाकिइनांनूंइच्छातें जेकर त्याग देवें तां अपणें अपणें विषय विषें द्विगुण व्रत करणे योग्यहै ॥ जैसे एकवर्ष अग्निके त्यागण वालेको दो वर्षका प्राजापत्य और दो गौका दानकरणा उचितहै ऐसे औरभी जानलेणा ॥

जो वसिष्ट जीने कया है सो कहतेहैं यइति जो पुरुप अग्नियां नूं त्यागें सो वारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रत करकें फेर अग्नि स्थापन करे किन्हाअग्नियांके त्यागविषे एहप्रायश्चित्तहै तिनकों जना तेहैं अग्नीनिति अग्नियां जो दक्षिणाग्नि और गार्हपत्य आहवनीय अवसथ्य और सभ्य इनांपं आं नूं त्याग देवे तां पूर्वोक्त व्रतकरे इसमे द्वादशरात्रग्रहण उत्तमकालादिकी अपेक्षा करकें प्राजापत्यादि जो गुरु लघु कृच्छ्र इनांकी प्राप्ति वास्तेहै इसजगा उत्तम काल नाम एक ऋतुका और तिसते अधिककाहै तिसविषें दो महीनें त्यागे तां प्राजापत्य व्रत करे और चार महीनें त्यागे तां अतिकृच्छ्र व्रत करे और छें ६ महीनें त्यागे तां पराक व्रत करे ॥ और ६ महीनें उपरंत योगीश्वरोंनें कहे होए जो उपपातकमें सामान्य प्रायश्चित्त सो कालादियोंकी अपेक्षा करकें जोडनें योग्यहैं एहमिताक्षरामें कयाहै परंतु एह नास्तिक बुद्धितें त्यागणें विषें जानणा तैसेंहि

यत्तुवासिष्ठः। योग्नीनपविध्येत्सकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वापुनराधानंकारयेदिति अग्नीनूदक्षिणाग्निगार्हपत्याहवनीयावसथ्यसभ्यान् अपविध्येत्परित्यजेत् द्वादशरात्रग्रहणमुत्तमकालापेक्षया प्राजापत्यादिगुरुलघुकृच्छ्राणां प्राप्त्यर्थं तत्रमासद्वयेप्राजापत्यंमासचतुष्टयेऽतिकृच्छ्रःषण्मासोत्सन्नेपराकः षण्मासादूर्ध्वंयोगीश्वरोक्तान्युपपातकसामान्यप्रायश्चित्तानि कालाद्यपेक्षया योज्यानीतिमिताक्षरा एतच्च नास्तिक्यात्त्यागेज्ञेयम् तथाचव्याघ्रः॥ मासद्वयंतुयोवन्हिंत्यजेदेवंसमाचरेत् नास्तिक्यात्कृच्छ्रमेकंतुहोमद्रव्यंददातिच १ होमद्रव्यंयावत्कालंहोमोनकृतस्तावद्धोमपर्याप्तम् तथाभरद्वाजगृह्ये ॥ यावत्कालमहोमीस्यात्तावद्द्रव्यमशेषतः तद्दानंचैवविप्रेभ्योयथाहोमस्तथैवचेति १ जातूकर्ण्योपि अतीतकालंजुहुयादग्नौविप्रायवास्वयम् दद्याद्वेदविदेसम्यक्कृत्वाधानंपुनर्द्विजइति १ इदंचहोमद्रव्यदानंस्मार्त्ताग्नित्यागविषयमितिमाधवः

व्याघ्र ऋषि जी कहतेहैं मासद्वयमिति दो महीना जो पुरुष अग्निकोत्याग देवे नास्तिकबुद्धितेंतां एक कृच्छ्रव्रत करे और होमद्रव्यका दान करे १ अब होम द्रव्यकापरिमाण कहतेहैं कि जितना काल होम न कीता होवें तितनां हि होम परिपूर्णजानणा जैसे दोमहीने होम जद नहि कीता तां जितना घृतादि उसमें लगाणाथा उतना घृतादि ब्राह्मणकेतांई देकर प्रायश्चित्तकरे तां शुद्धहोताहै तैसेंहि भरद्वाजका वणाया जो गृह्यसूत्र तिसमें कहतेहैं यावदिति जितना काल हवन न करे तितनां हि संपूर्ण द्रव्य ब्राह्मणको देदेवें जैसा होमहै तैसा हि दानहै १ जातूकर्ण्य जीभी कहतेहैं अतीति अतीत काल में अग्निविषें हवन करें वा वेदके जानणे वाले ब्राह्मणतांई होम द्रव्य देदेवे फेर द्विज अग्नि स्थापनकरे परंतु एह होमद्रव्यकादान स्मार्त अग्निके त्याग विषें जानणा एह माधवजीने कया है

उभेति श्रौत और स्मार्त्तअग्निकेत्यागविषैंभी एहयुक्त है एहअर्थयथायोग्य प्रतीत हुंदाहै एहभीकिसे कामतहै और अपणाभी मतहै । अब और इसमें विशेषहै मासेति चार महीनें अग्निके त्यागविषे माधवजीकहतेहैं ॥ चेति संपूर्ण चारमहीनें अग्निकें त्यागविषें अतिकृच्छ्र व्रत करे तां तिस पाप ते रहित होताहै १ जेकर छे ६ महीनेत्याग करे तां पराकव्रतकर्के शुद्ध होताहै इसते उपरंत त्यागकर्के रहे तां वर्ष पर्य्यंत पयोव्रत करे अर्थात् वर्षपर्य्यंत परिमित दूधपान करतारहे ॥ जैसा उशनाजी कहतेहैं षडिति छे६ महीने जो अग्नि त्याग करे सो पराक व्रत कर्के शुद्ध होताहै और छे महीनें ते उपरंत त्याग कर रहे तां सावधान होकर एक महीना एक वर्ष पर्य्यंत पयो व्रत करे ॥ कीतेहैं व्रत जिनोंने ऐसे मुनियोंने एह कयाहै ॥ १ ॥ छे ६

उभयत्यागेऽपियुक्तमितितुप्रतिभाति मासचतुष्टयत्यागेतुसएव चतुष्टये तुसंपूर्णमासानांतुहुताशनं त्यक्त्वातिकृच्छ्रंकुर्वीत ततःपापात्प्रमुच्यते १ षण्मासत्यागेपराकः ॥ अतऊर्ध्वमब्दपर्य्यंतंपयोव्रतम् ॥ यथाहोशनाः षण्मासांस्त्यजतेयोवैपराकंतुसमाचरेत् ॥ ऊर्ध्वंपयोव्रतंकुर्यान्मासमेकं समाहितः ॥ वर्षपर्य्यंतमेवाहुर्मुनयःशंसितव्रताः ॥ १ ॥ मासषट्कादूर्ध्वं संवत्सरंयावत्याज्ञवल्क्योक्तान्युपपातकसामान्यप्रायश्चित्तानिजातिशक्ति गुणाद्यपेक्षयायोजनीयानि संवत्सरादूर्ध्वंसंवत्सरानंतरमपित्यागेमनूक्ते द्वैमासिकत्रैमासिके कालाल्पत्वमहत्त्वापेक्षयायोज्ये ॥ एतदपिनास्तिक्य त्यागविषयम् ॥ प्रमादत्यागेभारद्वाजगृह्योक्तोविशेषः ॥

महीने तें उपरंत एक वर्ष तक याज्ञवल्क्य जीने कहे होए जो उपपातक में सामान्य प्रायश्चित्त सो जाति शक्ति गुणादिकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहैं अर्थात् जातिमें ब्राह्मणकों पूर्णव्रत देणा क्षत्रीको एक पाद ऊन देणा वैश्यको आधा देणा शूद्रको एक पाद देणा वा जैसी शक्ति होवे तैसाहि प्रायश्चित्त करणा और गुणवान् कों पूर्ण व्रत देवे निर्गुणकों आधा देवे और वर्षतें उपरंत अग्नि त्याग रहे तां मनुके कथन कीते होए जो दो २ महीनें त्रय महीनेके व्रत सो थोडे काल वा वहुत कालकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहैं अर्थात् थोडे कालमें थोडा दो महीनेका व्रत वहुत कालमें वहुत त्रय महीनेका व्रत करणा परंतु एह भी नास्तिक बुद्धि तें त्याग विषें जानणा ॥ प्रमादतें त्याग विषें भारद्वाजका वणाया जो गृह्यसूत्र तिसमें विशेष कयाहै

प्रति त्रय रात्रि त्यागणे विषे एक सौ १०० प्राणायाम करे और वीस २० रात्रि त्यागणे विषे उपवासकरे इसतें उपरंत सठ ६० रात्रि तक त्यागणे विषे त्रय रात्रि उपवास व्रत करे इसतें उपरंत एक वर्ष त्यागणे विषे प्राजापत्य व्रत करे इसते उपरंत बहुत काल विषे दोष बहुत है अर्थात् बहुत काल मे एहीव्रत बहुत करणा ॥ एही इच्छाते गृह्य अग्निके त्याग विषे जानणा एह अपार्क मे कयाहै ॥ इसी विषयमे स्कंदपुराण विषे कहतेहैं हुताशन मिति हे प्रभो जो ब्राह्मण प्रमाद तें अग्नि कों त्याग देवे सो ब्राह्मण एक सौ १०० प्राणायाम और उपवास व्रत करे तां शुद्ध होताहै १ इच्छाते अग्निके त्याग विषे भी स्कंद पुराण विषे वचन है द्वादशेति बारां दिन त्यागे तां त्रय ३ दिन उपवास व्रत करे औ

प्राणायामशतमात्रिरात्रात् ॥ उपवासःस्यादाविंशतिरात्रात् अत ऊर्ध्वमाषष्टिरात्रात्तिस्त्रोरात्रीरुपवसेत् अतऊर्ध्वमासंवत्सरात्प्राजापत्यंच रेत् अतऊर्ध्वंकालबहुत्वेदोषबहुत्वमिति इदमेवकामतोगृह्याग्नित्यागइत्य परार्के अत्रैवविषयेस्कांदे ॥ हुताशनंतुयोविप्रः प्रमादात्त्यजतिप्रभो प्राणा यामशतंकुर्याद्रुपवासमथापिवेति १ कामतस्त्यागितुतत्रैव। द्वादशाहातिक्र मेत्र्यहमुपवासः मासातिक्रमेद्वादशाहमुपवासः संवत्सरातिक्रमेमासोपवा सःपयोभक्षणं वा कूष्मांडीभिर्होमः क्रमेणोभयंवेति उपवासाशक्तौमासं पयोभक्षणम् संवत्सरानंतरमधिककालाभिक्रमउभयमिति मदनपारि जाते। इदमेवचालस्येनश्रौताग्नित्यागेष्विति तथास्मृत्यंतरे आलस्येनयदा वह्निंद्वादशाहेत्यजेत्प्रभो त्रिरात्रमुपवासंचचरेत्पापविशुद्धय इति १ इत्य ग्नित्यागेप्रायश्चित्तम् ॥ ९ ॥

र एक महीना त्याग करे तां बारां १२ दिनका उपवास व्रत करे और एक वर्ष त्याग करे तां एक महीना उपवास व्रत करें वा जल भक्षण करे और यद्देवा देवहेडनमित्यादयः कूष्मांडमंत्राः इनां मंत्रों कर्के हवन करे अथवा क्रम कर्के दोनो करे॥ जेकर उपवास करणे की सामर्थ्य न होवे तां महीनारोज जलभक्षण करे॥ एक वर्षते उपरंत जो जो अधिक कालका प्रथम क्रम ति स विषे एह दोवो जानणे॥ मदन पारिजात विषे कहतेहैं इदमिति जो कयाहै सो एह आ लस कर्के श्रौत अग्निके त्याग विषे जानणा॥ तैसे हि और स्मृति मे कहतेहैं आलस्येनेति जेकर आलस कर्के अग्निका बारां दिन त्याग करे तां अपणे पापकी शुद्धि वास्ते त्रय ३ रात्रि उपवास व्रत करे॥ एह अग्निके त्यागका प्रायश्चित्त समाप्तहोया ॥ ९ ॥

अथेति अग्नित्यागतें अनंतर सुत त्यागका प्रायश्चित्त कहतेहैं अत्रेति इसविषे उपपातकशुद्धिःस्या तू इत्यादि सामान्य उपपातक का प्रायश्चित्त कल्पनाके योग्य है ॥ तैसें हिनागेश जी कहतेहैं संस्कारेति संस्कारादियोंका न करणा वा ऐश्वर्य के होयां रक्षा नहि करणी ऐसा जो सुत त्याग तिस विषें पूर्वोक्त चांद्रादिका एक व्रत करणा ॥ और एभी कियाहै कि सुत त्याग विषें और बंधु त्याग विषें त्रय महीने का गोवध व्रत करे तथापि एह इच्छा तें करण वाले विषें जानणा जेकर इच्छातें न करे तां तिसविषें योगीश्वरजीके कहे होए चार व्रत सो शक्त्यादिकी अपेक्षा कर्के जो इने योग्यहैं एह मिताक्षरामे कयाहै एह पुत्रत्यागका प्रायश्चित्त समाप्तहोया १० ❀ अव परिवित्तिता और परिवेदनादि के प्रायश्चित्त विषें वासिष्ठ का कया होया विशेष कहतेहै परीति

अथसुतत्यागप्रायश्चित्तम् अत्रोपपातकशुद्धिःस्यादित्यादिसामान्योपपातकप्रायश्चित्तंकल्प्यम् तथाचनागेशः । संस्काराद्यकरणरूपेविभवेसत्यरक्षणरूपेचसुतत्यागेचांद्रादिष्वेकमिति ॥ सुतत्यागेबंधुत्यागेचत्रैमासिकंगोवधव्रतंकामतएतत् अकामतस्तुयोगीश्वरोक्तव्रतचतुष्टयंशक्त्याद्यपेक्षयायोज्यमितिमिताक्षरा इतिसुतत्यागेप्रायश्चित्तम् १० ❀ अथपरिवित्तितापरिवेदनादिप्रायश्चित्तेवसिष्ठाभिहितोविशेषः परिविविदानःकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरित्वातांतस्मैदत्वापुनर्निविशेत् तांचैवोपयच्छेतेति ॥ परिविविदानःपरिवेत्तोच्यते तत्स्वरूपंपरिगणनायांप्रागुक्तमेव असौकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरित्वा तस्मैज्येष्ठाय तां स्वोढांदत्वा ब्रह्मचर्याहृतभैक्ष्यवद्गुरुपरिभवपरिहारार्थंनिवेद्यपुनरुद्वहेदिति

परिविविदान कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रत कर्के तिस स्त्री कों वडे भ्राता कों दे कर फेर विवाह करे वा विवाह ते पहले भ्राताकी आज्ञा ले कर्के तिसो नूं विवाहे ॥ अव इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं परिविविदान नाम परिवेता का है तिसका स्वरूप परिगणना विषे पिच्छे कया ॥ है एह कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रतकर्के वडे भ्राताके तांई तिस विवाहितास्त्रीकों देकर्के फेर विवाह करे इसमे दृष्टांत है जैसे ब्रह्मचर्यमे इकठा कीता होया जो भिक्षाका अन्न तिसको गुरुके अनादर कें दूर करण वास्ते निवेदन करे गुरु आज्ञा देवे तां अन्न खावे न आज्ञा देवे तां नाहिं खावे तिसकी न्यांइ एह जानणा

कामिति किसनूं विवाहे इस अपेक्षाविषे कहतेहैं तामेवोपयच्छेत ज्येष्ठभ्राताके तांई निवेदनकी होई स्त्री जोहै तिसीत्रिवाहिता नूं भ्राताकी आज्ञा लेकर्के विवाह लेवे ॥ अपरार्कके आरंभविषे तो एह वसिष्टजीका कथन है ॥ परिवित्तिरिति परिवित्ति जो है वडाभ्राता सो बारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रत कर्के विवाह करे ॥ नहिं कीता है विवाह जिसनें ऐसा जो वडा भ्राता सो प्रथम कीता है विवाह जिसने ऐसे छोटे भ्राताकर्के उल्लंघित हुंदाहै सो परिवित्ति कयाहै ॥ सो जेडी छोटे भ्रातानें प्रथम विवाही होवे तिसनूं तिस कर्के दित्ती होई नूं स्वीकार करे इसकर्के वढे भाईके पास दो २ स्त्री होईं इसमे इतना विचार मनमै रक्षणा चाहिए कि वढेकों जो प्राय श्चित्त दित्ताहै सो इसने छोटेके विवाह समे तिसके हटाणेमे यत्न नहि कीता एहि अपराधहै

कामित्यपेक्षायामुक्तं तामेवोपयच्छेतेति तामेवस्वोढंज्येष्ठायानिवेदितां ते नचानुज्ञातामुद्वहेत्। अपरार्केतूपक्रमेवासिष्ठमिदम्। परिवित्तिःकृच्छ्रंद्वादश रात्रंचरित्वानिर्विशेततांचैवोपयच्छेत अकृतविवाहोऽग्रजोऽनुजेनप्रागात्म नोविवाहंकुर्वताऽतिक्रांतःसपरिवित्तिः सच कृच्छ्रंद्वादशरात्रंप्राजापत्यंचरि त्वा निर्विशेतोद्वहेत तांच कनीयसापूर्वपरिणीतांतेनदत्तामुपयच्छेत स्वीकु र्य्यादितियावत् तस्यैव सा भार्य्या नानुजस्याशास्त्रीयत्वात्तद्विवाहस्य भा र्य्यात्वंच शास्त्रीयविवाहजन्यत्वमिति यदत्रहारीतेनोक्तम् ज्येष्ठेनिर्विष्टेकनी यान् निर्विशमानः परिवेत्ता भवति परिवित्तिर्ज्येष्ठः परिवेदनीकन्या परि दायीदाता परियष्टायाजकः तेसर्वेपतिताःसंवत्सरंप्राजापत्येनकृच्छ्रेणपा वयेयुरिति

और जेकर यत्न कीताहै परंतु तिसको औरने नहि मन्नया तद ज्येष्ठकों वचनते थोडाहि प्रायश्चित्त होणाचाहिए एह निश्चित अर्थ है ॥ सो स्त्री तिसीकी है छोटे भ्राताकी नहिं है तिसके विवाहकों शास्त्र रहित होणेतें ॥ भार्य्यात्व क्या है जो शास्त्रीय विवाहतें उत्पन्न होवे इससें कुछविलक्षण जो हारीत जी नें कया है सो कहतेहैं ज्येष्ठ इति वडे भ्राता के स्थित होयां छोटा भ्राता विवाह कर लेवे तां सो परिवेत्ता कया है १ और परिवित्ति नाम वडे भ्राताका है २ और परिवेदनी नाम कन्याका है ३ और परिदायी नाम दाताका है ४ और परियष्टा नाम विवाह करवाणे वालेका है ५ एह संपूर्ण पतितहैं इनकी शुद्धि एक वर्षके प्राजापत्य व्रत कर्के होतीहै

अत्रेति जेकर वर्षरोज प्राजापत्यव्रत न करसके तां तीस ३० धेनुकादानकरे एहइसका प्रत्याम्नायहै परंतु एइ प्रायश्चित्त ज्येष्ठभ्राताके उद्देशकर्के कन्या त्यागतें अनंतर जानणा अर्थात् ज्येष्टभ्राताके तांई तिसकन्याकोदेके प्रायश्चित्तकरणा एह प्रायश्चित्तकदंवमें कयाहै ॥ इसतें विलक्षण जो शंखनें कयाहै सो कहतेहैं ॥ परिवित्तिरिति और परिवेत्ता एक वर्ष ब्राह्मणके घरविषे भिक्षा करें हारीत और शंखके वचन दोनो भी इच्छा कर्के कन्या के पित्रादिकी आज्ञा विना कीता जो विवाह तिसविषे जानणा क्योंकि प्रायश्चित्तको वहुत होणेतें ॥ जेकर गुणवालें ज्येष्ठभ्राता कर्के वारंवार हटाया होय कनिष्ठभ्राता विवाह करें तिसविषे जानणा एह अपरार्कमें कयाहै अव इसीमे और दूसरामतकहतेहैं कन्येति कन्याके पित्रादिके नाहिं जाणतेहोयां और इसीकर्के पित्रादियोंने नाहिं दित्तीहोईनूं वालात्कारादिकर्के इच्छाते जाण कर्के विवाह करे तां विवाह

अत्रत्रिंशद्धेनवः प्रत्याम्नायः।इदंतुज्येष्ठमुद्दिश्यकन्यात्यागानंतरमितिप्रायश्चित्तकदंबे यदपिशंखेनोक्तम् । परिवित्तिः परिवेत्ताचसंवत्सरंब्राह्मणगृहेषुभैक्ष्यं चरेयातामिति तदुभयमपिकामकारेण कन्यापित्राद्यननुज्ञातोद्वाहविषयम् प्रायश्चित्तस्यगुरुत्वात् ॥ यदागुणवताज्येष्ठेनवार्य्यमाणःकनिष्ठःकरोति तद्विषयमित्यपरार्कः ॥ कन्यापित्राद्यपरिज्ञानेतत्पित्रादिभिरदत्तां वलात्कारादिनाकामतोज्ञात्वाचोद्वोढुरब्दंप्राजापत्यपूर्वकंपूर्वोक्तमितिनागेशः । यदापुनः कामतःकन्यांपित्रादिदत्तामेवपरिणयति तदा मानवंत्रैमासिकम् पूर्वोक्तौकृच्छ्रातिकृच्छ्रौ याज्ञवल्क्यीयव्रतचतुष्टयंचाज्ञातविषयम् ॥ यमेनाप्यत्रविशेषउक्तः ॥ कृच्छ्रौद्वयोःपारिवेद्यकन्यायाःकृच्छ्रएवच ॥ अतिकृच्छ्रंचरेद्दाता होताचांद्रायणंचरेदिति ॥ १ ॥ एतच्च पर्याहिताग्न्यादीनामपिसमानम् । एकयोगनिर्देशात् ॥

करणवाला वर्ष रोजके प्राजापत्य पूर्वक पूर्वोक्त व्रत करे एह नागेशका मतहै ॥ जेकर फेर इच्छा तें पित्रादियोंने दित्तीहोई कन्या नूं विवाहे तां मनुजीका कथन कीता होया त्रैमासिक व्रत करे और पिच्छले कहे होए जो कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रत और याज्ञवल्क्यके कहे होए चार व्रतसो एह नहिं जाण कर्के विवाह करणे विषे जानणे ॥ यमजीनेभी इस विषे विशेषकयाहै कृच्छ्राविति परिवित्ति और परिवेत्ता दोए कृच्छ्र व्रत करें क्रम कर्के और कन्या एक कृच्छ्र व्रत करे और दाता अतिकृच्छ्र व्रतकरे और होताचांद्रायण व्रत करे १ एह अग्निहोत्रादियोंके विषे भी तुल्य जानणा अर्थात् वडे भ्राता विना छोटा भ्राता प्रथम अग्न्याधान करे इसमेंभी पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा एकयोगका निर्देश होणेतें

गौत्तम जी कहतेहैं परीति परिवित्ति परिवेत्ता और पर्याहित और पर्याधाता अग्रेदिधिषू वडी भगिनीके न विवाहित होयां छोटीजो विवाहित है तिसका पति और वडीका पति एह संपूर्ण तीनसौ ३६० सठ दिनका जो वर्ष तिसतक ब्रह्मचर्य धारण करें पर्य्याहित नाम उसकाहै जिस ज्येष्ठने पीछेते अग्न्याधान कीता है और पर्य्याधाता नाम उसकाहै कि जिसकानिष्ठने पहले अग्न्याधान कीता है इसी कारणतें वसिष्ठ जीनें अग्रेदीधिषूकेपत्यादियों विषे एहि प्रायश्चित कया है अग्रेदिधिषूका पति बारां १२ रात्रीका कृच्छ्र व्रत करकें फेर विवाह करे चपुनः तिसीनूं विवाह लेवे और दिधिषूका पति कृच्छ्र और अति कृच्छ्र व्रत करकें और छोटी भगिनीके पतिके तांई तिसस्त्रीनूं देकरकें फेर अपणा विवाह करें अग्रेदिधिष्वादियोंका लक्षण और स्मृतिसें कहतेहैं ज्येष्ठायामिति जेकर वडी कन्या विवाहित न

यथाहगौतमः। परिवित्तिपरिवेत्तृपर्याहितपर्याधात्रग्रेदिधिषूदिधिषूपतीनां संवत्सरंप्राकृतंब्रह्मचर्यमिति पर्य्याहितः येनज्येष्ठेनपश्चादग्न्याधानंकृतं पर्य्याधातायेनकनिष्ठेनप्रथममग्न्याधानंकृतंसः अतएववसिष्ठेनाग्रेदिधिषूपत्यादाविदमेवप्रायश्चित्तमुक्तम् अग्रेदिधिषूपतिः कृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वानिर्विशेत्तांचैवोपयच्छेत दिधिषूपतिःकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचारित्वातस्मैदत्वापुनर्निर्विशेतेतिअग्रेदिधिष्वादेर्लक्षणंस्मृत्यंतरेऽभिहितम् ज्येष्ठायांयद्यनूढायांकन्यायामूह्यतेनुजा यासाग्रेदिधिषूर्ज्ञेयापूर्वातुदिधिषूःस्मृतेति॥ १ तत्राग्रेदिधिषूपतिःप्राजापत्यं कृत्वा तामिवज्येष्ठांपश्चादन्येनोढामुद्वहेत् दिधिषूपतिस्तुकृच्छ्रातिकृच्छ्रौकृत्वा स्वोढांज्येष्ठांकनीयस्याःपूर्वविवोढ्रेदत्वान्यामुद्वहेदिति अत्रापरार्कः॥ यत्तुशंखेनोक्तम् परिवित्तिःपरिवेत्तायययाचपरिविद्यते व्रतंसंवत्सरंकुर्य्युर्दातृयाजकपंचमाइति तत्पंचानांमिथःकृतसंकेतानांसम्मत्यापरिणयेसतिद्रष्टव्यम् ॥

होवे और छोटीका प्रथम विवाहहोवे सो अग्रेदिधिषू कहीदीहै और वडी कन्याका नाम दिधिषूहै॥ १॥ अवसंज्ञादिखाकरपूर्वोक्त वसिष्ठ स्मृतिका अर्थ कहतेहैं तत्रेति तिसकेविषे अग्रेदिधिषूका पति प्राजापत्य व्रत करकें दूसरे करकें विवाही होई जो वडी कन्या तिसीनूं फेर विवाहे और दिधिषूका पति कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रत करकें विवाही होई जो ज्येष्ठा तिसनूं छोटी कन्याका जो प्रथम विवाहण वालाहै तिसके तांई देकरकें और कन्या नूं विवाहे इसविषे अपरार्क में जो शंख जी नें कयाहै सो कहतेहैं परीति परिवित्ति और परिवेत्ता और जिसकरकें परिवित्तिदोष होयाहै और दाता और विवाह करणे वाला और याजक एह संपूर्ण एकवर्ष का व्रत करें परंतु एह आपसमें कीताहै संकेत जिनोंनें ऐसे पंचोंकें विवाह विषे देखण योग्यहै

जो सुमंतुजीनेकयाहे सो कहतेहैं परिवित्ति श्रौर परिवेत्ता श्रोर कन्या श्रौर दाता श्रौर याजक एह संपूर्ण वारां १२ रात्रि सत्तु पानकरें श्रौर ब्राह्मणोंकी तृप्ति करवावें तद शुद्धहोतेहैं श्रौर तिसकन्या नू पुनर्भू कहतेहैं फेर इसनू विवाह लेवे एह क्षत्रियादियोंके असमर्थ वालक विषे जानणा क्यों कि थोडाप्रायश्चित्त होणेतें ॥ अब इसतें अधिक प्रायश्चित्त प्रचेताजीकहतेहैं परिवित्तीति परिवित्ति परिवेत्ता श्रौर पर्य्याहित पर्याधाता अग्रेदिधिषूपति दिधिषूपति एह संपूर्ण प्राकृत वर्ष तकब्रह्मचर्य धारण करें श्रौर ब्रह्महत्याका व्रत करें प्राकृत नाम सठ ६० उपर त्रय सौ ३० दिनकर्के युक्त श्रौर स्वाधीनहै आरंभ जिसका ऐसें वर्षकाहे श्रौर स्वाधीनारंभ उसकोंकहतेहैं कि जिसदिन जिसकी इच्छा होवे उसी दिनसे प्रारंभकरणा श्रौर विशेषकहतेहैं कि दत्तकादिपुत्रोंको एह परिवित्ति परिवेत्तादोष नहिं है इसमेंवचनहै भीति मात्रयांका पुत्र श्रौर दत्तपुत्र श्रौर पितृव्यतनय इनांको दार

यत्तुसुमंतुनोक्तम् । परिवित्तिपरिवेत्तृकन्यादातृयाजकानांद्वादशरात्रंसक्तुपानं ब्राह्मणतर्पणंच तांपुनर्भुवमित्याचक्षतेभूयश्चैनामभिगच्छेदिति तत्क्षत्रियाद्यसमर्थवालकविषयम् ॥ प्रचेताः ॥ परिवित्तिपरिवेत्तृपर्याहितपर्याधात्रग्रेदिधिषूदिधिषूपतीनां प्राकृतंसंवत्सरंब्रह्मचर्यंब्रह्महव्रतम् । प्राकृतंषष्ठ्युत्तरशतत्रयदिनमितंस्वाधीनारंभकंवत्सरमित्यर्थः ।दत्तकादीनांतुनायंदोषः ॥ भिन्नोदरेचदत्तेचपितृव्यतनयेतथा दाराग्निहोत्रसंयोगेनदोषः परिवेदने १ इतिगौतमस्मरणात् । भिन्नोदरइतिसापत्नभ्रातृविषयम् दत्तेचेति जनककुलेज्येष्ठभ्रातृसत्त्वेनदत्तकस्यविवाहादौपरिवेत्तृत्वं नापिज्येष्ठस्य परिवित्तित्वमित्यर्थः पितृव्यतनयइति देवरेणोत्पादितस्यभ्रातुःक्षेत्रजपुत्रस्यविवाहादौ देवरपुत्रादेः परिवेत्तृत्वादिकंनेत्यर्थः ॥ अत्रपराशरः ॥

कया स्त्री श्रौर अग्निसंयोगविषें परिवित्ति परिवेत्तादोषनहिंहै ॥ १ ॥ एह गौतमस्मृतिमेंकयाहै श्रौर दत्तक आदि पुत्रोंकेलक्षण ग्रंथांतरसें जानणें इसमेभी भिन्नोदर एह सापत्न भ्रातृकेविषें जानणा श्रौर सापत्नभ्राता उसको कहतेहैं कि जिनकापिता एकहै श्रौर माता दोहैं ॥ अब जिसप्रकार दत्तकोदोष आउता है इसका उद्घाटन कर्के दूर कर्तेहैं दत्तेचेति एह पिताके कुल विषें वडे भ्राताके होयां दत्तक पुत्रको विवाहादि विषें परिवेत्तृत्व नहिं है श्रौर ज्येष्ठ भ्राताको परिवित्तित्व नहिंहै पितृव्यतनय इति देवर कर्के उत्पन्न जो भ्राताका क्षेत्रज पुत्र तिसके विवाहादि विषें देवरपुत्रादियोंको परिवेत्तृत्वादि दोष नहिं है एह अर्थ भया है इसजगा पितृव्यतनय चाचेके पुत्रकानाम नहि इसीवास्ते इसशब्दका अर्थ कीताहै इसी विषें पराशर ऋषि जी कहतेहैं

परिविचिरिति परिवित्ति और परिवेत्ता और जिसकर्के परिविचि दोषहोयाहै अर्थात् कन्या और दाता दानकरणेवाला और यज्ञकरवाणेवाला एह पञ्चजनरकको प्राप्तहोतेहैं १ एक कृच्छ्रव्रत परिवेत्ता करे और एककृच्छ्र परिवित्ति करे और एक कृच्छ्र कन्याकरे कृच्छ्र और अतिकृच्छ्रव्रत दाता करे और हवनकरवाणेवालेको चांद्रायणव्रतकरणेयोग्यहै २ इसमे विशेषकहतेहैं कि कुब्ज और वामना और नपुंसक और स्खलितवाणीवाला और जडजन्मांध बोला मूक इनांको परिवित्ति परिवेत्ता दोष नाहिं है ३ पितृव्येति पितृव्यपुत्र जो पिच्छे किहाहै और मात्रयांका पुत्र और परस्त्री का सुत इनांको दारसंयोगमे वा अग्निहोत्र विषे परिवित्ति परिवेत्ता दोष नहिंहै ४ जेकर ज्येष्ठ भ्राता स्थितहोवे तां अग्न्याधान न करे वा आज्ञालैकर्के करलेवे तां दोषनहिं है एह शंख जी का

परिवित्तिः परिवेत्ता ययाचपरिविद्यते सर्वेतेनरकंयांतिदातृयाजकपंचमाः १ द्वौकृच्छ्रौपरिवेत्रोस्तुकन्यायाःकृच्छ्रएवच कृच्छ्रातिकृच्छ्रौदातुस्तुहोता चांद्रायणंचरेत् २ कुब्जवामनषंडेषुगद्गदेषुजडेषुच जात्यंधेवधिरेमूकेनदोषःपरिविंदतः ३ पितृव्यपुत्रःसापत्नःपरनारीसुतस्तथा॥ दाराग्निहोत्रसंयोगेनदोषः परिवेदने ४ ज्येष्ठोभ्रातायदातिष्ठेदाधानंनैवकारयेत् अनुज्ञातस्तुकुर्वीतशंखस्यवचनंयथा ५ अत्रेदमपिविचार्य्यम् परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठइत्यत्र ज्येष्ठपदं स्वजन्मतःपूर्वजन्मपरं नतुप्रथमोत्पन्नपरम् तेनभ्रातृत्रये प्रथमोत्पन्ने कृतविवाहे मध्यमेऽकृतविवाहेतत्कनिष्ठेन विवाहे कर्त्तव्ये परिवेदनंभवति पूर्वजन्मनोऽकृतविवाहत्वात् यदातुप्रथमोत्पन्नोऽकृतविवाहोमध्यमस्तुकृतविवाहस्तदापितत्कनिष्ठेन विवाहे कर्त्तव्येत्रयाणांदोषः एवंभ्रातृचतुष्टयादावपिज्ञेयम् इतिपरिवेदनादिप्रायश्चित्तम् ॥

वाक्यहै ५ इसविषें एहभी विचारणेयोग्यहै कि(परिवेत्ताऽनुजोऽनूढेज्येष्ठे दारपरिग्रहात) इस श्लोक विषे ज्येष्ट पद अपणे जन्मतें पूर्वजन्मपरजानणा प्रथमकी उत्पत्ति पर नहिं जानणा ॥ तिस कर्के त्रय भ्राताविषे प्रथमोत्पन्नने विवाह कीताहै और मध्यम भ्राताने विवाह नहिं कीता और तिसके छोटे भ्राताके विवाह करणे विषे परिवित्ति परिवेत्ता दोषहै किसतें वडे भ्राताको विवाह नहिं करणेतें जेकर प्रथमोत्पन्नने विवाह नहिं कीता है और मध्यम भ्राताने विवाह कीता है तां भी तिसके छोटे भ्राताके विवाह करणेविषे तिन्नां भ्रातांको दोषहै इसी प्रकार चार भ्रातादिके विषे भी जानणे योग्य है एह परिवेदनआदि प्रायश्चित्त समाप्तहोया

अब कन्या दूषण विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं तदिति तिसका स्वरूप पिछे उपपातकोंकी गणना विषे कहाहै तिसमें शंखजी कहतेहैं कन्येति कन्या दूषण करण वाला और अमृतवल्लीका रस वेचनवाला वर्ष रोजका कृच्छ्र व्रत करे परंतु तिसविषे समान वर्णकी कन्या दूषणमें चांद्रायण वा त्रय महीनेकाव्रतकरे और आनुलोम्यकर्के असवर्ण कन्याके दूषणमें अर्थात् ब्राह्मणक्षत्रियादिकी कन्या दूषणमे और क्षत्रियादिक वैश्यादिकी कन्यादूषणमे और वैश्य शूद्रादिकीकन्या दूषणमें महीनारोज जल पान करे वा प्राजापत्य करे और क्षत्रीको ब्राह्मणकी कन्या दूषणमें वैश्यको ब्राह्मणक्षत्रीकी कन्या दूषणमें वर्ष रोज कृच्छ्र व्रत करणाचाहिए अवइसीमें अपने धर्म्म शास्त्रके

अथकन्यादूषणेप्रायश्चित्तम् तत्स्वरूपमुपपातकपरिगणनायामभिहितम् तत्रशंखः ॥ कन्यादूषीसोमविक्रयीचकृच्छ्रमब्दंचरेयातामिति तत्रसवर्ण कन्यादूषणे चांद्रं त्रैमासिकं वा आनुलोम्येनासवर्णकन्यादूषणे मासंपयः पानं कार्यंवा ॥ प्रातिलोम्येतुक्षत्रियवैश्ययोःकृच्छ्राब्दम् ॥ हारीतोपि ॥ कन्यादूषीत्याद्युपक्रम्य एते ग्रीष्मवर्षाहेमंतेषु क्रमेण पंचतपोऽभ्रावकाशजल शयनपूर्वकंमासंगोमूत्रयावकपानंकुर्युः शूद्रस्यतु विप्रादिकन्यादूषणे वध एव अत्यंताभ्यासे सवर्णस्यापिकृच्छ्राब्दम् सोमविक्रयी ॥ वृषलीपतिः कौमारदारत्यागी शूद्रयाजकः ॥

द्वारा हारितजीभीकहतेहैं कन्यादूषी इसते प्रारंभ कर्के वचनहै एह कन्यादूषण करणवालेतें आदि कर्के जो लोकहैं सो संपूर्ण ग्रीष्म वर्षा हेमंत ऋतुविषे क्रमकर्के पंचतप अभ्रावकाश जलशयन पूर्वक महीनारोज गोमूत्र युक्त जवोंका पानकरें अर्थात् ग्रीष्ममें पंचाग्नि तपें वर्षाऋतुमे नग्नहोके वर्षामें स्थित रहें और हेमंत मे जलशय्या करें तद शुद्धहोतेहैं शूद्रको विप्रादिकी कन्या दूषण में मारदेणाहि योग्यहै और वहुत अभ्यास विषे समानवर्णवालेकोंभी वर्ष रोजका कृच्छ्र व्रत करणा उचितहै और अमृतवल्लीका रस वेचण वाला और वृषलीकापति और कौमार अवस्थामे स्त्री त्यागण वाला और शूद्रकों यज्ञ करवाण वाला ॥

गुरोरिति और गुरुके मारण वाला और पेष्टी मदिरातें भिन्न मदिराका पान करण वाला और ब्राह्मण वृत्तिके दूर करणवाला झूठा व्यवहार करणवाला मित्रसे द्रोहकरणवाला और शर णागत पुरुषको मारणवाला और वहु रूपिया एह संपूर्ण अज्ञानतें प्रवृत्त होंण तां त्रय महीनेंका व्रतकरें ॥ और जेकर जाण कर्के करें तां छे ६ महीनेका व्रतकरें॥ वहुतअभ्यासविषें वर्ष रोज का कृच्छ्रव्रत करें तद शुद्ध होतेंहैं ॥ अव हारीत स्मृतिमें कहतेहैं कन्येति कन्याकोंदूषण करण वाला अमृतवल्लीका रस वेचण वाला वृषलीका पति और कौमार अवस्थामे स्त्री त्यागण वाला पेष्टी मदिराते भिन्न मदिराका पान करण वाला शूद्रको यज्ञ करवाणवाला गुरुको मारण वाला नास्तिकवृत्तिवाला कीतें होए उपकारकों दूरकरण वाला झूठा व्यवहार करण वाला मित्र

गुरोःप्रतिहंतासुराभिन्नमद्यपोब्राह्मणवृत्तिघ्नः कूटव्यवहारी मित्रध्रुक् शर णागतघाती प्रतिरूपवृत्तिश्चैतेऽमत्या प्रवृत्तास्त्रैमासिकंव्रतंकुर्युः मत्याषा ण्मासिकम् अभ्यासेकृच्छ्राब्दम् ॥ हारीतस्मृतिश्च ॥ कन्यादूषीसोमविक्र यीवृषलीपतिः कौमारदारत्यागीसुराभिन्नमद्यपः शूद्रयाजको गुरोःप्रति हंतानास्तिकवृत्तिःकृतघ्नःकूटव्यवहारी मित्रध्रुक् शरणागतघातीप्रतिरूप कवृत्तिरित्येतेपंचतपोभ्रावकाशजलशयनान्यनुतिष्ठेयुर्ग्रीष्मवर्षाहेमंतेषुमा संगोमूत्रयावकमश्नीयुरिति ॥ प्रतिरूपकवृत्तिः ॥ अन्यरूपानुकर णेनजीविकासंपादकः ॥

साथ द्रोह करण वाला शरणागत पुरुषको मारण वाला प्रतिरूपक वृत्ति वाला एह संपूर्ण पंच तप अभ्रावकाश जलशयन करें अर्थात् ग्रीष्मवर्षा हेमंतऋतुमें महीनारोज गोमूत्रयुक्त जवोंका भक्ष णकरें ग्रीष्मऋतुमें पंचाग्नितपें वर्षाऋतुमें नग्नहोके वर्षामे स्थितरहें हेमंतमे जलशय्याकरें ॥ प्रति रूपकवृत्ति नाम और रूपकर्के जीविकाकरणवालेका है इसको भाषामे वहुरूपिया कहतेहैं सो अनेकरूपोंकों वनाकर लोकोंकोंप्रसन्नकर्के जीविकाकरदाहै अथवा जो सुंदर स्वरूपवा लीस्त्रीको देखकर तिसमेंवर्त्ते सोभी प्रतिरूपकवृत्ति कहिदाहै इसका प्रायश्चित्त पारदार्य्ये मे हिहेविगा

एह शंख हारित कीयां जो पीछे दो स्मृतियां हैं सो क्षत्रिय वैश्यके प्रातिलोम्य कर्के जो दूषण तिसविषें जोडनेयोग्यहैं एह मिताक्षरामेंकयाहै। एह कन्या दूषणादिका प्रायश्चित्तसमाप्त होया १६ ❁ अब वार्द्धुष्य और लवण क्रियाका प्रायश्चित्त कहतेहैं इसकाविवरण पीछे उपपातकोंकी गणना विषें होचुकाहै तिस विषें (उपपातकशुद्धिःस्यादेवंचांद्रायणेनतु) इत्यादि याज्ञवल्क्यके कथन कीत्ते होए जो वृषभैकादशकागाश्च ॥ वा एतदेवव्रतं कुर्युरित्यादि दो श्लोककर्के मनुजीने कथन कीत्ता होया जो त्रय महीनेका व्रत है तिसको करे एह जाति शक्ति गुणादियोंकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहै अतिदेशवाक्यतें ॥ और जगा कहे होएकों दूसरी जगामें कथन करणासो अतिदेश किहाहै ॥ तिसविषें लवणक्रिया क्या लवणके उत्पत्तिकरणेकी रीति जानणी तिसविषें भी एहि प्रायश्चित्त विधि जानणी ॥ मिताक्षराकार तो कुछ इस विषें विलक्षण कहतेहैं वार्द्धुष्येति वार्द्धुष्य और लवण क्रिया विषें मनु और याज्ञवल्क्यके कथन कीत्ते होए जो सामान्य उपपातक

शंखहारीतस्मरणद्वयंक्षत्रियवैश्ययोःप्रातिलोम्येन दूषणे योज्यमितिमिताक्षरा इतिकन्यादूषणादिप्रायश्चित्तम् ❁ १६ अथवार्द्धुष्यलवणक्रियाप्रायश्चित्तम् तच्चोपपातकगणनायांविवृतंप्राक् तत्रचांद्रादिष्वेकं त्रैमासिकंवा जातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयायोज्यम् अतिदेशवाक्यात् लवणक्रिया लवणोत्पादनं तत्राप्येवं ध्येयम् मिताक्षरायांतु वार्द्धुष्यलवणक्रिययोर्मनुयोगीश्वरोक्तसामान्योपपातकप्रायश्चित्तानि जातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयायोज्यानीति इतिवार्द्धुष्यादिप्रायश्चित्तम् १७ ❁ अथब्रह्मचारिणोव्रतलोपेप्रायश्चित्तम् ॥ तत्रमनुः अवकीर्णीतुकाणेनगर्दभेनचतुष्पथे पाकयज्ञविधाने नयजेतनिर्ऋतिंनिशि १

के प्रायश्चित्त सो जाति शक्ति गुणादियोंकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहैं अर्थात् जैसी जाति और जैसी शक्ति और जैसा गुण होवे तिनांको तैसाही प्रायश्चित्त करवाणा योग्य है जैसे ब्राह्मणको अधिक क्षत्रियादिको न्यून और समर्थको अधिक असमर्थको न्यून गुणवान्को अधिक निर्गुणको न्यून सोभी प्राजापत्यसें चांद्रायण अधिक और चांद्रायणसे पराक इत्यादिजाण लेणे एह व्याजले कर्के और लूण बनाकरजीविका करणी इनका प्रायश्चित्त पूराहोया ❁ ॥ १७ ॥ इसमें एभी जानणे योग्य है कि लवण क्रिया मनुजीके मतमें नहि किंतु याज्ञवल्क्यके मतमें है ॥ अब ब्रह्म चारिके व्रत लोप विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं तिस विषे मनुजीका वाक्यहै अवकीर्णीति अवकीर्णी पुरुष काणे गधे कर्के चुरस्ते विषे पाकयज्ञके विधान कर्के रात्रि विषें निर्ऋति देवताका पूजन करे ॥ १ ॥

अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं अग्गे कहणाहै लक्षण जिसका ऐसा जो अवकीर्णी ब्रह्मचारी सो रात्रिको चुरस्ते विषें पाकयज्ञ तंत्र कर्के निर्ऋति नाम देवताका यज्ञ करे और पशुके अभावविषें चरु कर्के यज्ञ करे अथवा निर्ऋतिनूं वणाकर्के चरुसें पूज्ये फेर तिसका हवनकरे इनां नामां कर्के कामायस्वाहा कामकामायस्वाहा निर्ऋत्यैस्वाहा रक्षोदेवताभ्यःस्वाहा एह वसिष्ठस्मृतिमें कहाहै परंतु एह अशक्त विषयविषे जानणा और समर्थ पुरुषको ऐसाकरणाचाहिए कि अवकीर्णी गर्दभ कर्के निर्ऋतिका चुरस्ते विषे यज्ञ करे तिस गर्दभका चर्म सहित वालोंके धारण करे फेर लोहेके पात्रविषे सत्तां ७ घरांते भिक्षा करे कर्म्म नूं कथन करता होया कि मैं अवकीर्णी हां ऐसाकथन करता होया अमे तद वर्ष कर्के शुद्धहोताहै ॥ एह पूर्वोक्त गौतम जी

अवकीर्णीवक्ष्यमाणोब्रह्मचारी रात्रौ चतुष्पथे पाकयज्ञेन तंत्रेणनिर्ऋतिसंज्ञितांदेवतांयजेत पशोरभावेचरुणायष्टव्यम् निर्ऋतिंवाचरुंनिर्वपेत् तस्य जुहुयात् कामायस्वाहा कामकामायस्वाहा निर्ऋत्यैस्वाहा रक्षोदेवताभ्यःस्वाहेतिवसिष्ठस्मरणात् एतच्चाशक्तविषयम् । शक्तस्यतुगर्दभेनावकीर्णीनिर्ऋतिंचतुष्पथेयजेत् तस्याजिनमूर्ध्ववालंपरिधायलोहितपात्रेसप्तगृहान् भैक्ष्यं चरेत्कर्म्माचक्षाणः संवत्सरेणशुद्ध्यतीतिगौतमोक्तोवार्षिक तपः समुचितः पशुयागश्चरुर्वाद्रष्टव्यः । अपरार्के ॥ रात्रिपदेनकालः सचामावास्यायाः । उक्तंहितैत्तिरीयके । योब्रह्मचार्य्यवकिरेदमावास्यायांराज्यामग्निंप्रणीयोपसमाधायेत्यदि ब्रह्मचार्य्यत्रोपकुर्वाणोनैष्ठिकश्चसचयोपितंगत्वाऽवकीर्णीभवति । तथाचयाज्ञवल्क्यः । अवकीर्णीभवेद्गत्वाब्रह्मचारीतुयोषितम् गर्दभंपशुमालभ्यनैर्ऋतंसविशुद्ध्यतीति अत्रव्याख्या चरमधातोर्विसर्गोऽवकीर्णम् तद्यस्यास्तीतिसोऽवकीर्णी सनिर्ऋतिदैवत्येन गर्दभपशुना यागंकृत्वाविशुद्ध्यति ॥

का कथन कीताहोया वर्ष रोजका तपके उचित पशुयाग कयाहै वा चरु देखणें योग्यहै ॥ अपरार्कमें कयाहै कि रात्रि पदकर्के काल जानणा सो अमावास्याका है इसमे सम्मति देतेहैं तैत्तिरियकइति सोई तैत्तिरीय उपनिषद्में कहाहै कि जो ब्रह्मचारी भ्रष्टहोजावे सो अमावास्याकी रात्रिविषें अग्निमें हवनकरे इत्यादि जानणा ॥ परंतु ब्रह्मचारी चारप्रकारकेहैं सो इसविषे उपकुर्वाण और नैष्ठिकका ग्रहणहै सो एह स्त्री साथगमनकरे तां अवकीर्णी होतेहैं ॥ तैसेंहि याज्ञवल्क्य जीनें कयाहै ॥ अवकीर्णीति ब्रह्मचारी स्त्री साथ गमन करे तां अवकीर्णी होताहै और निर्ऋतिहै देवता जिसका ऐसे गर्दभ पशुका आलंभन करे तां शुद्ध होताहै अर्थात् निर्ऋति देवता के निमित्त गर्दभ पशूनूं मार कर्के शुद्ध होता है इस विषें इसकी एह व्याख्या है कि अंत धातुके त्यागणेको अवकीर्ण कयाहै सो विद्यमान है जिसविषें सो अवकीर्णीहै सो निर्ऋति देवताके निमित्त गर्दभ पशु कर्के यज्ञ करे तां शुद्धहोताहै ॥

अव इसमे शास्त्रार्थ कर्त्तेहैं गर्द्दभेति कि गर्द्दभको पशुत्वके सिद्ध होयांभी अर्थात् गर्द्दभको आलभ करे इस वचनतें भी पशुका अर्थ प्रतीत होताहै फेर पशु ग्रहण जो कीयाहै सो अथपशु कल्प इत्यादि आश्वलायन के कहे होये गृह्य सूत्रमें जो पशु धर्म्म तिसकी प्राप्ति वास्तेहै सो पंद्रां सूत्र उती जगाते देखणेयोग्यहैं अवकीर्णिकालक्षणमनुजीनेंभी कयाहै कामतइति व्रत विषे स्थित जो ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मचरी तिसका इच्छातें वीर्य्य स्खलित होवे तां व्रतका उल्लंघन कयाहै धर्म्म के जानणें वाले ब्राह्मवादियोंनें १ ब्रह्मचर्य्यका अतिक्रम अवकीर्ण रूप हि जानणा इसमें हवनका विधान भी मनु जी नें कयाहै हुत्वेति (अंतत और समेति) इस ऋचा करके विधिनें होमा नू अग्निविषे हवन करे और वात इंद्र गुरु वन्हि इनांको घृत करके आहुतियां देणे योग्यहैं। १ अव इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं तिसतें अनंतर निर्ऋति देवताके तांई गर्द्दभ

गर्द्दभस्य पशुत्वेसिद्धेपिपुनः पशुग्रहणमथपशुकल्पइत्याश्वलायनादिगृह्यो क्तपशुधर्म्मप्राप्त्यर्थम् तत्रोत्तरतोऽग्नेरित्यादिपूर्वेणसहपंचदशसूत्रीततएवा नुसंधेया। अवकीर्णिलक्षणंमनुनापिदर्शितम् कामतोरेतसःसेकंव्रतस्थस्यद्वि जन्मनः अतिक्रमंव्रतस्याहुर्धर्म्मज्ञाब्रह्मवादिनइति व्रतस्यब्रह्मचर्य्यस्याति क्रममवकीर्णरूपम् हवनविधानमपितेनैवोक्तम् हुत्वाग्नौविधिवद्धोमानंतत श्चसमेत्यृचा वातेंद्रगुरुवह्नीनांजुहुयात्सर्पिषाहुतीः १ अस्यार्थः ततोनि र्ऋत्यै गर्द्दभवपादिहोमान्यथावच्चतुष्पथे कृत्वा तदंतेसमासिंचंतुमरुतइत्ये तयाऋचा मारुतेंद्रवृहस्पत्यग्नीनांघृतेनाहुतीर्जुहुयादिति ॥ एतद्धोमेहे तुमाहसएव मारुतंपुरुहूतंचगुरुंपावकमेवच चतुरोव्रतिनोऽभ्येतिब्राह्मं तेजोऽवकीर्णिनः ॥ १॥ अस्यार्थः ॥ व्रतचारिणोवेदाध्ययननियमानुष्ठा नजं तेजः तदवकीर्णिनःसतो मरुदिंद्रवृहस्पतिपावकांश्चतुरः संक्रामति अतस्तेभ्यआहुतीर्जुहुयादितित्याज्याहुतेरयमनुवादः अत्रत्रिषवणस्नानमे ककालभोजनमपियावद्व्रतसमाप्ति

की मिंज का हवन चुरस्तें विषे विधितें करके तिसतें उपरंत समासिंचंतुमरुत इस ऋचाकरके वायु और इंद्र और वृहस्पति और अग्नि इनांका घृतकी आहुतीतें अच्छी तरह हवनकरणेयोग्यहै इसी हवनविषें मनुजी हेतु कहतेहैं मरुतइति वायु इन्द्र वृहस्पति अग्नि एह जोचार हैं इनांको व्रति अवकीर्णिका जो ब्राह्म तेजहै सो प्राप्त होताहै १ अव इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं व्रतचारि पुरुषका वेदका पडना और नियम और अनुष्ठान इनांते उत्पन्न होया जो तेज सो अवकीर्णिका मरुत् इंद्र वृहस्पति अग्नि इनां चारों को प्राप्त होताहै इस कारणतें तिनांके तांई आहुतियांदेवे एह त्याज्य आहुतीका अर्थात् देणे योग्य जो आहुतियांहैं तिनका अनुवादहै इसविषें त्रयकाल स्नान करे और एक काल भोजन करे जवतक व्रत की समाप्ति नहिंहै

तैसेंहि मनुजी कहतेहैं एतस्मिन्निति इस अवकीर्णरूप पापके प्राप्तहोयां गर्द्दभके चर्म को उपर लयकर्के सत्तां ७ घरांते भिक्षाकरे अपणे कर्म नूं कथन करदा होया अर्थात् मैं अवकीर्णी हां इसतरां कथन करे १ तिनां घरां ते प्राप्त होया जो भिक्षाकाअन्न तिस कर्के एककाल भोजन करे और त्रय काल स्नान करता रहे इसी प्रकार एक वर्ष करदा रहे तां शुद्ध होताहै २ एह जो वर्षका व्रतहै सो वेदपाठ रहित ब्राह्मणकी स्त्री विषें अवकीर्णी होवे और वेदपाठीकी वैश्या विषें अवकीर्णी होवे तिस विषें जानणा जेकर सो दोए वेदपाठीकीयां स्त्रियां होण अथवा ब्राह्मणी और क्षत्रियाणी आपही गुणवालीयां होण तिनांविषे अवकीर्णीहोवे तां त्रयवर्ष और दोवर्षका व्रत क्रमकर्के करे अर्थात् ब्राह्मणी मे त्रयवर्ष का व्रत क्षत्रियाणीमे दोवर्षका व्रत

तथाचमनुः ॥ एतस्मिन्नेनसिप्राप्तेवसित्वागर्द्दभाजिनं सप्तागारांश्चरेद्भैक्ष्यं स्वकर्मपरिकीर्त्तयन् ॥ १ ॥ तेभ्योलब्धेनभैक्ष्येणवर्त्तयन्नेककालिकम् ॥ उपस्पृशंस्त्रिषवणंत्वब्देनसविशुद्ध्यति २ एतस्मिन्नवकीर्णरूपे एनसि पापे वार्षिकव्रतमिदमश्रोत्रियब्राह्मणपत्न्यां श्रोत्रियपत्न्यांवैश्यायांचज्ञेयम् यदातु तेश्रोत्रियपत्न्यौब्राह्मणक्षत्रियेस्वयमपिगुणवत्यौ तत्रावकीर्णीचेत्तदा द्विवार्षिकत्रिवार्षिकेक्रमेणद्रष्टव्ये । इदमेवाहतुःशंखलिखितौ । गुप्तायांवैश्याया मवकीर्णःसंवत्सरं त्रिषवणमनुतिष्ठेत् क्षत्रियायांद्वेवर्षेब्राह्मण्यांत्रीणिवर्षाणीति । अवकीर्णनिमित्तंतुब्रह्महत्याव्रतंचरेत् चीरवासास्तुषण्मासांस्तथा मुच्येतकिल्बिषादित्यंगिरोवचनमकामतोऽवकीर्णे ईषद्व्यभिचारिण्यामवकीर्णेवाद्रष्टव्यम् अत्रसार्द्धसप्तधेनवः प्रत्याम्नाय इति शूलपाणिःएतद्विषय एवाभ्यासेशातातपवचः ॥

करणा और इसीको शंख लिखितजी अपनीस्मृतिमें कहतेहैं गुप्तायामिति तीसरे वर्णकी वैश्या विषें अवकीर्णीहोवे तां एकवर्ष पर्य्यंत त्रिकाल स्नान कर्के अनुष्ठान करे और क्षत्रियाणी विषें दो वर्षका व्रतकरे और ब्राह्मणी विषें त्रय वर्षका व्रत करे तां शुद्ध होताहै ॥ अब और कहतेहैं अवेति अवकीर्णीके प्रायश्चित्त करणवाला ब्रह्महत्याका व्रतकरे । ताडपत्रदे वस्त्र लगा कर छे ६ महीने का व्रतकरे तां पापते मुक्त होताहै १ एह अंगिरा जीका जो वचनहै सो नहिं इच्छातें अवकीर्णीविषें वा थोडीव्यभिचारिणी स्त्री विषें अवकीर्णी होवे तिसविषें जानणा जेकर एह व्रत न होसके तां साढियां सत्त गौयां दान करे अर्थात् तिनांका मुल्लदें देवे एह शूलपाणि नें कयाहै इसी विषयमें वहुत अभ्यास होवें तां तिसविषें शातातपजो वचनहै सो तिसीस्मृतिसें जानणा

अब और मतककेंभी इसविषयकों कहतेहैं अथेति इसतें उपरंत अवकीर्णिका प्रायश्चित्त कहतेहैं ब्रह्मचारी जेकर अवकीर्णीहोवे तां चौथेपहर अष्ठवर्ष तक भिक्षाका अन्न खावे इसप्रकार करे तां पविताहोताहै तैसेंही पैठीनसिजीकहतेहैं अवकीर्णी गर्दभकेचर्मकों धारणकरें और वर्ष तक प्राजापत्य व्रतकरे तिसके प्रायश्चित्तविषे ओंकार पूर्वक महाव्याहृतियोंकर्के अर्थात् ओंभूः ओंभुवः ओंस्वः इनांकर्के हवनकरे १ अथवा वर्षतकएककाल भिक्षाकाअन्न खावे २ वा चतुर्थकाल नियत कर्केंभोजन करें और गायत्रीका जप करे ३ गायत्री जप भी वर्षरोज तक करणा विशेषकहतेहैं स्वैरिणीति स्वैरिणी जो वृषल्यादि स्त्री तिसविषें अवकीर्णीहोवेतां सचैल स्नानकर्के जलदा घट ब्राह्मणके तांई देवे और वैश्याविषें अवकीर्णीहोवे तां चौथे काल भोजन करे और ब्राह्मणोंको भोजन देवे और घासका भार गौआंके तांई देवे और क्षत्रियाणीविषें अवकीर्णी होवे तां त्रिरात्रि

अथातोऽवकीर्णिप्रायश्चित्तंव्याख्यास्यामः । ब्रह्मचारियदाऽवकीर्येत चतुर्थकालमष्टसंवत्सरान्भैक्ष्यंचरेदेवंपूतोभवतीति तथापैठीनसिरपि अवकीर्णी गर्दभाजिनंसंवसेत्संवत्सरंप्राजापत्यंचरेदिति तत्रप्रायश्चित्तम् महाव्याहृतिभिर्जुहुयादोंपूर्वकाभिःसंवत्सरं वानक्तंभैक्ष्यंचरेच्चतुर्थकालेनियतभुग्गायत्रींवाजपेदिति गायत्रीजपेपिसंवत्सरमितिसंवन्धः॥ स्वैरिणीवृषल्यादाववकीर्णश्चेत्तदासचैलस्नानमुदकुंभंदद्याद्ब्राह्मणाय वैश्यायांचतुर्थकालाहारोब्राह्मणान्भोजयेत् यवसभारंचगोभ्योदद्यात् क्षत्रियायांत्रिरात्रमुपोषितोघृतपात्रंदद्यात् ॥ ब्राह्मण्यांषड्रात्रमुपोषितोगांचदद्यात् गोष्ववकीर्णःप्राजापत्यंचरेत् षंडायामवकीर्णः पलालभारंसीसमापकंचदद्यादितिशंखलिखितोदितं कुर्यात् षंडावंध्या । वंध्यातुवृषलीज्ञेयावृषलीतुमृतप्रजा अपरावृषलीज्ञेया कुमारीयारजस्वलेति ॥ उशनाः ॥ एतच्चावकीर्णिप्रायाश्चित्तंत्रैवर्णिकस्यापि ब्रह्मचारिणः ॥समानम् ॥ अवकीर्णीद्विजोराजावैश्यश्चापिखरेणतु इच्छाभैक्ष्याशिनोनित्यंशुद्ध्यंत्यब्दात्समाहिताइतिशांडिल्यस्मरणात्

उपवास व्रत कर्के घृत पात्रका दान करे तां शुद्ध होताहै ॥ ब्राह्मणीविषें अवकीर्णी होवे तां छे ६ रात्रि उपवासकर्के फेर गौ दान करे तद शुद्ध होताहै । और गौआंविषें अवकीर्णी होवें तां प्राजापत्यव्रत करे ॥ और षंडा विषें अवकीर्णीहोवे तां परालीका भार और एक मासासिक्का दान करे तां शुद्ध होताहै एह शंख लिखित स्मृतिमें कयाहोया प्रायश्चित्तकरणे योग्यहै ॥ षंडा नाम वंध्या स्त्री का है इसकोस्पष्टकरतेहैं वंध्या नाम वृषलीकाहै औरजिसकी संतान मृत होजावें उसका नाम वृषली है जो कुमारी हि रजस्वला होवे उसका नाम भी वृषलीहै उशनानें कया है और व्यवस्था कहतेहैं एह अवकीर्णि का प्रायश्चित्त त्रयवर्णके ब्रह्मचारिके तुल्य है अवकीर्णी द्विजक्या ब्राह्मण और राजा और वैश्य होवें तद गर्द्दभ कर्के यज्ञ करे और भिक्षाका अन्न नित्यखावे तद वर्ष कर्के शुद्ध होताहै एह शांडिल्य जीका स्मरणहै

यदेति जदस्त्री संभोगके विना ब्रह्मचारि अपनीइच्छातें वीर्य स्खलितकरे और दिनविषे वा स्वप्न विषे करे तां तिसविषे नैर्ऋत यज्ञमात्र देखणे योग्यहै ॥ इसीको कहतेहैं कि वीर्य्यका प्रयत्नतें त्याग दिन विषे वा स्वप्नविषे होवे तां नैर्ऋत यागमात्रकरे इसवासिष्टकर्के यज्ञ मात्रका अतिदेशहोणेतें अतिदेश कियाहै ब्रह्मचर्य्यका जिनां विषे ऐसे जो कृच्छ्र चांद्रायणादि व्रतांतर तिनां विषे भीजेकर अवकीर्णिहोवे तिसविषे पूर्वोक्तहि यज्ञमात्रकरणा अर्थात् गर्दभकाआलंभननहि करणा इसमै वचन कहतेहैं व्रतेति व्रतांतरों विषे भी एही करणा एहतिसी वसिष्टकर्के अतिदेश होणेंते अव स्वप्न विषे वीर्य्य स्खलितहोने मे मनुजी कहतेहैं ॥ स्वप्न इति द्विज ब्रह्मचारी वीर्य्यकों इच्छाते विना स्वप्न विषे स्खलित करे तां स्नान कर्के सूर्य्यका पूजन करे और त्रयवार पुनर्मा)

यदा स्त्रीसंभोगमंतरेण कामतश्चरमधातुंविसृजति दिवाचस्वप्नेवाविसृजति तदानैर्ऋतयागमात्रंद्रष्टव्यम् ॥ एतदेवरेतसः प्रयत्नोत्सर्गे दिवास्वप्नेचे तिवासिष्ठेनयागमात्रस्यातिदिष्टत्वात् ॥ व्रतांतरेषुचकृच्छ्रचांद्रायणादिष्वति दिष्टब्रह्मचर्येषुच स्कंदने सत्येतदेव यागमात्रम् ॥ व्रतांतरेषुचैवमितितेनै वातिदिष्टत्वात् ॥ स्वप्नस्कंदनेतुमनुः ॥ स्वप्नेसिक्त्वाब्रह्मचारीद्विजःशुक्र मकामतः स्नात्वार्कमर्चयित्वात्रिः पुनर्मामित्यृचंजपेदिति १ यमोपि ॥ प्रकीर्यरेतःस्वप्नेतुब्रह्मचार्यप्यकामतः स्नात्वार्कमीक्ष्यप्रयतोगायत्र्यष्टशतं जपेत् १ तथा ब्रह्मचारीतुयोगच्छेत्स्त्रियंकामप्रपीडितः प्राजापत्यंचरेत्कृ च्छ्रमब्दमेकंसुयंत्रितः १ भूयोऽभ्यासविषयमेतत् ॥ वानप्रस्थादीनांचेदमे वब्रह्मचर्यखंडने अवकीर्णिव्रतंकृच्छ्रत्रयाधिकंभवति ॥ वानप्रस्थोयतिश्चै वस्कंदनेसतिकामतः पराकत्रयसंयुक्तमवकीर्णिव्रतंचरेदितिशांडिल्यस्मर णात् ॥ यस्तुसंन्यासीभूत्वागार्हस्थमिच्छतिचेत्तत्रसंवर्त्तोक्तंप्रायश्चितम्

इस ऋचाका जपकरे १ ॥ यम भी कहताहै प्रकीर्येति ब्रह्मचारी इच्छाते विना स्वप्नविषे वीर्य्य स्खालित कर्के सूर्य्यकों देखे फेर प्रयत्नते अष्टोत्तर शत गायत्रीका जपकरे १ तैसें हि और कहतेहैं ब्रह्मचारीति जो ब्रह्मचारी कामकर्के पीडितहोया २ स्त्री साथगमन करे तां समाधानहोकर्के वर्षरोजका कृच्छ्र प्राजापत्य व्रत करे तां शुद्धहोताहै १ एहबहुत अभ्यास विषय विषे जानणा वानप्रस्थादियांको एही ब्रह्मचर्यखंडनविषें कृच्छ्रत्रय हैं अधिक जिसविषें ऐसा अवकीर्णिका व्रत करणाउचितहै वचनकहतेहैं वेति और वानप्रस्थ और यतिइनांकोंइच्छातें वीर्य्यदेस्खलित होयां त्रयपराकव्रतकर्के युक्तजो अवकीर्णिकाव्रतहै सो करणा उचितहै एह शांडिल्यस्मृतिमें कयाहै १ जोसंन्यासीहोकर्के फेर गृहस्थकी इच्छा करे तिसविषे संवर्तजीका कया होआ प्रायश्चित्तकहतेहैं

संन्यस्येति कोईक दुर्म्मतिपुरुष संन्यासी हो करके जेकर गृहस्थाश्रम स्वीकार करे सो श्रश्रांत होया २ छे ६ महीने का कृच्छ्र व्रतकरे १ इसीमें वासिष्ठजी कहतेहैं यस्त्विति जो संन्यासीहोकर्के फेर मैथुन करे सो सठ ६०००० हजार वर्ष विष्टाविषें कीडा होताहै १ पराशरजी भी कहतेहैं य इति जो प्रत्यवसित होया ब्राह्मण संन्यासतें दूर हो जावे और अनाशक होकर्के फेर हटजावे फेर गृहस्थकी इच्छाकरे १ सो पुरुष त्रयकृच्छ्र और त्रय चांद्रायण व्रत करे और संपूर्ण जातकर्म्मादि संस्कारोंकर्के शुद्धिको प्राप्त होताहै २ अब पिच्छले श्लोकका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं यइति जो प्रत्यवसित क्या संन्यासादि धर्म वाला होया और जो अनाशक क्या महीने आदिकी अवधिकर्के अर्थात् महीनापर्य्यंत अन्न नहिंखाणा ऐसी प्रतिज्ञाकर्के फेर तिसनूं न करे एह अर्थहै ॥ तिसविषें ब्राह्मण को छे ६ महीनेका कृच्छ्रहै फेर संन्यास लयणा उचितहै ॥ और

संन्यस्यदुर्म्मतिःकश्चित्प्रत्यापत्तिंचरेद्यदि सकुर्यात्कृच्छ्रमश्रांतःषण्मासान्प्रत्यनंतरामिति १ प्रत्यापत्तिर्गृहस्थाश्रमस्वीकारः ॥ अतएववासिष्ठः ॥ यस्तुप्रव्रजितोभूत्वापुनःसेवेतमैथुनम् षष्टिवर्षसहस्राणिविष्टायांजायतेकृमिरिति १ पराशरोपि यःप्रत्यवसितोविप्रोप्रव्रज्यातोविनिर्गतः अनाशकोनिवृत्तश्चगार्हस्थ्यंचेच्चिकीर्षति १ सचरेत्त्रीणिकृच्छ्राणित्रीणिचांद्रायणानिच जातकर्मादिभिःसर्वैःसंस्कृतःशुद्धिमाप्नुयात् २ यःप्रत्यवसितःस्वीकृतसंन्यासादिव्रतइत्यर्थः । यश्चाऽनाशकोभूत्वामासाद्यवधिंकृत्वाऽनशनीभूत्वापुनर्निवृत्त इत्यर्थः ॥ तत्रब्राह्मणस्यषाण्मासिकःकृच्छ्रः पुनःसंन्यासः ॥ क्षत्रियस्यचांद्रायणत्रयम् ॥ वैश्यस्यकृच्छ्रत्रयमितिव्यवस्था ॥ वाविप्रस्यैवशक्तिसकृदभ्यासाद्यपेक्षया व्यवस्थितं प्रायश्चित्तत्रयंद्रष्टव्यम् तथातुरसंन्यासिनामपि ॥ यमेनापि ॥ प्रायश्चित्तमुक्तम् ॥ जलाग्न्युद्बंधनभ्रष्टाः प्रव्रज्यानाशकच्युताः विषप्रपतनप्रायःशस्त्रघातच्युताश्चये १

क्षत्रीको त्रय चांद्रायण हैं ॥ और वैश्यको त्रय कृच्छ्र हैं ॥ इसमे ऐसी व्यवस्था जानणी अथवा ब्राह्मणको हि शक्ति और सकृत् क्या एकवार परावृत्ति और अभ्यासादिकी अपेक्षा कर्के व्यवस्थित जो पिछले त्रय प्रायश्चित्तहैं सो देखणे योग्यहैं ॥ शक्ति में छे ६ महीनेका कृच्छ्र व्रतकरणा ॥ और सकृतमें त्रयकृच्छ्र व्रत करणे ॥ और अभ्यासमें क्या वहुतवारमें त्रय चांद्रायण व्रत करणे ॥ तैसेंही जिसने आतुर समयमें संन्यास लेआ फेर राजीहोकर गृहस्थी होगया तिसविषें यमनेंभी प्रायश्चित्तकयाहै ॥ जलेति प्रायश्चित्तवास्ते जलविषें पडे वाअग्निविषें वा फाह लयणा इनांते भ्रष्ट होजावे और प्रायश्चित्तके अर्थ संन्यास लयणा और अनाशक क्या इतनें दिन अन्न नहिं खाणा ऐसा कह कर व्रती होवे और पीछे इनांते भ्रष्ट होवे वा प्रायश्चित्तके अर्थ विष पान करणा वा किसे जगाते डिगणा और शस्त्र सें मरणा इनांते भ्रष्ट होवे १

नेति एह संपूर्ण प्रत्यवसितनहिंहैं अर्थात् संन्यासादि व्रतोंसेंरहितहैं और संपूर्ण लोकोतें वाहरहैं चांद्रायणकर्केवा दो २ तप्तकृच्छ्रव्रतकर्केशुद्धहोतेहैं २ इसमें ऐसाजानणा कि जो एह चांद्रायण व्रतकृच्छ्रात्मक दो प्रायश्चित्तहैं सो शक्त्यादिकी अपेक्षा कर्के व्यवस्थित जानणेंयोग्यहैं ॥ अव इसीमे विशेष कहतेहैं ॥ जीवन्निति प्रायश्चित्तके अर्थ अपणे आपनूं त्यागे फेर जीउंदा होजावे तिसमें वारां रात्रिका कृच्छ्र व्रत करे और त्रय रात्रि उपवास व्रत करे एह वसिष्ठकाकथा होया जोवचनहै सो स्वीकार कीत्ता जो शास्त्रीय मरण जिसने तिसके मुड़ने विषे जानणा ॥ इसमे व्यवस्थाकरतेहैं॥ तादिति जिसने व्रतके उद्यममे संकल्पकीत्ताहै सो तिसकेहटणेविषे त्रयरात्रि व्रत करे ॥ और प्रवृत्तितेउपरंत हटणेविषे वारां १२ रात्रिका व्रतकरे एह व्यवस्था जानणी ॥ इसमें ऐसा विचारहै गुरुकी स्त्री साथ गमनकरणा और तिसके तुल्य जो अगम्यागमनहै तिस विषे प्रायश्चित्तको वहुत होणेते एह जो अव कीर्णीका व्रत है सो इनांते पृथक् स्त्रियां मे अवकीर्णी

नैवैतेप्रत्यवसिताःसर्वलोकवहिष्कृताः चांद्रायणेनशुद्ध्यंतितप्तकृच्छ्रद्वयेनचे ति २ इदंचचांद्रायणतप्तकृच्छद्वयात्मकं प्रायश्चित्तद्वयं शक्त्याद्यपेक्षयाव्यव स्थितंविज्ञेयम् जीवन्नात्मत्यागीकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरेत्त्रिरात्रंचोपवसेदितिवा सिष्ठंतु स्वीकृतशास्त्रीयमरणस्यप्रत्यावृत्तौवोध्यम् । तदुद्योगसंकल्पमात्रात्प रावृत्तौत्रिरात्रम् प्रवृत्त्यनंतरपरावृत्तौद्वादशरात्रमितिव्यवस्था ॥ गुरुदार तत्समागम्यागमनेप्रायश्चित्तस्य गुरुतरत्वादिदमवकीर्णिव्रतंतद्यातिरिक्ताव कीर्णिद्रष्टव्यम॥ नचलघुनाऽवकीर्णिव्रतेन गुरुदारादिगमनमहापातकोचि तप्रायश्चित्तवाधोविशेषविधानादितिवाच्यम् ॥ ब्रह्महननप्रकरणे ब्रह्मचा र्य्यादीनांद्वैगुण्यादेर्विधानात् ॥ अत्रागम्यागमननिमित्तंप्रायश्चित्तंनपृथका र्य्यांस्त्रियांब्रह्मचारिणोब्रह्मस्खलनस्यागम्यागमनेनांतरीयकत्वात् ॥ यत्र निमित्तेनिमित्तांतरंसमं न्यूनंवाऽवश्यंभावि तत्रनपृथङ्नैमित्तिकंप्रयुज्यते॥

होवे तिसमे जानणा(प्रश्न)करतेहैं नचेति छोटा जो अवकीर्णिका व्रत है तिसने गुरुदारादि गमनका जो महापातको के उचित प्रायश्चित्त सो वाधयाहै क्योंकि विशेषविधान होणेतें (उत्तर) ऐसा मत कहो किसते ब्रह्महत्याके प्रकरण विषे ब्रह्मचार्य्यादियोंको द्विगुण प्रायश्चित्तके विधान होणेतें ॥ अर्थात् ब्रह्मचारीको हि अवकीर्णि व्रत है और इसीको महापातकोमे दूणा व्रत है इसतें प्रतीत होया कि महापातकों वाला व्रत जुदाचाहिए॥ अव इसीमे और विचार करतेहैं इसमे अगम्यागमनका प्रायश्चित्त भी होणा चाहिए इसवास्ते कहतेहैं ॥ अत्रेति इस विषे अ गम्यागमन निमित्तप्रायश्चित्त पृथक् नाहिं करणा स्त्रीविषे ब्रह्मचारिके ब्रह्मस्खलन को अगम्यागमन कर्के अंतरीयक होणेंतें अर्थात् अवकीर्णि व्रत विषे हि अगम्यागमनकाभी व्रतहै जिस निमित्त विषे और निमित्त वरावर वा थोडा अवश्य होवेगा तिसके विषे पृथक् नैमित्तिक नाहिं होताहै

अव इसांमें दृष्टांतकहतेहैं यथेति जैसें गौकेताईं लाठीगूरें तां कृच्छ्रव्रतकरे और लाठी आदिके प्रहारविषें अति कृच्छ्रव्रत करे और रुधिर निकालनेंविषें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे और जिसप्रहार तें अंदररुधिर होजावे तिसमें कृच्छ्रव्रत करे १ ऐसीआज्ञाहै तथापि इसरुधिर निकालनें निमित्त विषें गूरणादि जो निमित्त हैं सो अंतर स्थितहैं परंतु कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र पृथक् नहिं करी दें किन्तु कृच्छ्रातिकृच्छ्रहि करीदा है ऐसें हि और जगा भी जानणा ॥ जिसविषें अंतर्भाव का नियम नहिं है जैसा पर्वकालमें रजस्वला जो परस्त्री तिससाथ गमन करे इसमें ऐसाअभि प्रायहै कि एह नियम नहिंहै कि पर्व कालमेंहि रजस्वलाहोतीहै किंतु तिसविनाभी हुंदीहै और परस्त्री विना भी पर्वमें गमन हुंदाहै तिसतें तद वडा दोषहै इत्यादियोंविषें निमित्त पृथक् जो

यथा अवगूर्य्यचरेत्कृच्छ्रमतिकृच्छ्रंनिपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसृक्पातेकृच्छ्रो भ्यंतरशोणितइत्यत्र शोणितोत्पादननिमित्तेऽवगूरणादिनिमित्तद्वयमवश्य मंतःस्थितं परन्तु कृच्छ्रमतिकृच्छ्रंचनपृथक्क्रियते अन्यत्राप्येवमेवोह्य म् यत्रांतर्भावनियमोनास्ति पर्व्वणि परस्त्रींरजस्वलांगच्छतीत्यादौ तत्र निमित्तानि पृथक्प्रयुज्यंते अत्रपूर्वपक्षसिद्धांतौमिताक्षरायांद्रष्टव्यौ व्रतां तरलोपेप्यवकीर्णिव्रतमतिदिशति मनुः अकृत्वाभैक्ष्यचरणमसमिध्यचपा वकम् अनातुरःसप्तरात्रमवकीर्णिव्रतंचरेदिति ॥ १ अथब्रह्मचारिव्रतलो पप्रायश्चित्तप्रसंगादन्यदनुपपातकपापस्याऽपिप्रायश्चित्तमाह याज्ञव ल्क्यः भैक्ष्याग्निकार्येत्यक्त्वातुसप्तरात्रमनातुरः कामावकीर्णइत्याभ्यांजु हुयादाहुतिद्वयम् ॥ १ ॥

डी दे हयण अर्थात् त्रयप्रायश्चित्त पृथक् २ करणे ॥ इस विषें पूर्व पक्ष और सिद्धांत मि ताक्षरा विषें देखणेयोग्यहैं ॥ अव और व्रतके लोपविषें अवकीर्णीका व्रत दिखाईदाहै ॥ इस में मनु जी कहतेहैं ॥ अकृत्वेति अग्नि होत्र करण वाला पुरुष अनातुर क्या स्वस्थ चित्त वाला होया २ भिक्षा न करे और अग्नि नूं न जगावे तां तिस को सप्त ७ रात्रि पर्य्यन्त अवकी र्णीका व्रत करणे योग्यहै १ अव ब्रह्मचारिके व्रत लोपके प्रायश्चित्तप्रसंगतें और अनुपपातक पापकाभी प्रायश्चित्त याज्ञवल्क्यजी कहते हैं । भैक्षेति भिक्षा और अग्नि कार्य जेकर सप्तरा त्रि त्यागे तां (कामावकीर्ण) इनमंत्रों करके दो २ आहुतियांका हवन करे ॥ १ ॥

अब इसी श्लोक का अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं यस्त्विति जो ब्रह्मचारी सावधान होया २ निरं तर सत्तरात्रि भिक्षाअथवा अग्निकार्य त्याग देवे तां॥ कामावकीर्णोऽस्म्यवकीर्णोऽस्मिकामकामाय स्वाहा ॥ इस मंत्र कर्के एक आहुती देवे और कामावपन्नोऽस्म्यवपन्नोऽस्मि कामकामायस्वाहा इसमंत्रकर्के दूसरी आहुतीदेवे तां शुद्ध होताहै इस तें उपरंत फेर समासिंचतुमरुतः समिंद्रःसं वृहस्पतिः संमायमग्निः सिंचंतांयशसाब्रह्मवर्चसेन इसमंत्रकर्के अग्निका उपस्थानकरे क्याउठकर्के इसमंत्रके अर्थका स्मरणकरे सो अर्थऐसाहै कि मरुतःक्या ४९ देवता और इंद्रऔर वृहस्प ति और यम अग्नि एह सभ यशकर्के और ब्रह्म तेंज कर्के मेरेविषे सिंचनकरण अर्थात् जो मेरा यश और ब्रह्म तेज नष्ट होगयाथा उसको पुनः स्थापन करण ॥ इसको स्पष्ट कर्के कहतेहैं कि भिक्षाकर्के गुरु सेवा होनीथी सो नहिहोई इसतें गुरुजीका अपराध होणेतें प्रायश्चित्त दिखाया है परंतु एह गुरु सेवादि जो कोई गृह निर्माणादि वड़ा कार्य तिस विषे खचित होणे कर्के भि

अस्यार्थः यस्त्वनातुरएव ब्रह्मचारी निरंतरंसप्तरात्रंभैक्ष्यमग्निकार्यंवात्यज तिअसौकामावकीर्णोऽस्म्यवकीर्णोऽस्मिकामकामायस्वाहा कामावपन्नोऽस्म्य वपन्नोऽस्मिकामकामायस्वाहा इत्येताभ्यांमंत्राभ्यामाहुतीर्हुत्वा समासिंचंतु मरुतः समिंद्रः संवृहस्पतिःसंमायमग्निःसिंचंतांयशसाब्रह्मवर्चसेनेत्यनेन मंत्रेणाग्निमुपतिष्ठेत इदंचगुरुपरिचर्यादिगुरुतरकार्यव्यग्रतयाअकरणेद्रष्ट व्यम् ॥ यदात्वव्यग्रएवभैक्ष्याग्निकार्ये त्यजति तदा अकृत्वाभैक्ष्यचरणम समिध्य चपावकम् अनातुरःसप्तरात्रमवकीर्णिव्रतंचरेदितिमानवंद्रष्टव्यम् अत्रैववृहस्पतिः संध्यामुपास्योपस्थितःसावित्र्याः सहस्रेणादित्यमुपति ष्ठेत उत्क्रमाग्निकार्यंव्रतपत्याहुत्यातीतंसंपाद्योपस्थितंकुर्यात् ॥ यज्ञोपवी तादिनाशेतु हारीतेनप्रायश्चित्तमुक्तम् मनोव्रतपतीभिश्चतस्रआज्याहु तीर्हुत्वापुनर्यथार्थंप्रतीयात् असकृद्भैक्ष्यभोजनेभ्युदितेऽभिनिर्मुक्तेवांते

क्षादिके न करणे विषे देखणे योग्य है ॥ जेकर तिसमे नहिं खचित होवे और भिक्षा और अग्नि कार्य त्याग देवे तां एह मनुजीका कथन कीता होया प्रायश्चित्त देखणे योग्य है । इस श्लोक का अर्थ पिछे कहा है इसी विषे वृहस्पति जी कहते हैं संध्यामिति प्रातःकालकी संध्या कर्के फेर उठ कर्के एक हजार गायत्री कर्के सूर्यकी स्तुति करे और उल्लंघन होया जो अग्नि कार्य तिसनूं ॥ व्रतपति ॥ इस मंत्र कर्के पिछलीयां आहुतियां दे कर्के फेर उपस्थान करे और यज्ञोपवीता दिके नाश विषे हारीतजीनें प्रायश्चित्त कया है मन इति (मनोव्रतपतीभिः) इस मंत्र कर्के चार आहुतियां घृतकीयां दे कर्के फेर यथार्थ कर्के यज्ञोपवीत पावे भिक्षासें प्राप्त होया जो अन्न तिसके वहुत वार भक्षण विषे प्रायश्चित्तहै और सुत्ते होयां सूर्य उदय होवे वा अस्त होवे और वमन होवे तांभी प्रायश्चित्त करे

दिवेति दिनविषे शयनकरे और नग्नस्त्रीके देखणेंविषे और नग्न होकरशयन करे और श्मशानकों उल्लंघन करकें घोडे उप्पर चड कर चले और पूज्य जो हैं गुर्वादि उनको प्रणामादि न करे एह जो संपूर्ण पूर्वोक्तहैं इनां विषे इनांहि पूर्वोक्त मंत्रां करकें घृतकीयां आहुतियां देवे ॥ और अग्निके प्रज्वलित करदें होयां वृक्ष वा सर्पादियोंके मारणे विषें (यद्देवादेवहेडनम्) इत्यादि जो कूष्मांड मंत्र हैं इनांकरकें त्र्यरात्रि घृतकरकें हवन करे ॥ मणि और वस्त्र और गवादि इनांके दान लैणें में अठ सैंअधिक १००० हजार गायत्रीका जपकरे इतनीहिस्मृति हारीतजीकी है ॥ अब इसका अर्थ स्पष्टकरकें कहतेहैं (मनोव्रतपतीभिः) मनोज्योतिः इत्यादिजो मंत्रा हैं मनहै चिन्ह जिनांका और ; त्वमग्ने व्रतपाअसि ! व्रतहै चिन्ह जिसविषे इनांकरकें हवनकरे ॥ यथार्थ प्रती

दिवास्वप्ने नग्नस्त्रीदर्शने नग्नस्वापे श्मशानमाक्रम्य हयादीनारुह्य पूज्याति क्रमेचैताभिरेवाज्याहुतिभिर्जुहुयात् । अग्निसमिंधनेस्थावरसरीसृपादीनांवधे यद्देवादेवहेडनमितिकूष्मांडीभिस्त्रिरात्रमाज्यंजुहुयात् मणिवासोगवादीनां प्रतिग्रहेसावित्र्यष्टसहस्रंजपेदितिमनोव्रतपतीभिरिति मनोज्योतिरित्यादि ॥ मनोलिंगाभिस्त्वमग्नेव्रतपाअसीत्यादिव्रतलिंगाभिरित्यर्थः यथार्थंप्रतीयादिति उपनयनोक्तमार्गेणसमंत्रकंगृह्णीयादित्यर्थः । अपरार्केपैठीनसिः नष्टेदंडकाष्ठेभैक्ष्यंदत्वाब्राह्मणायतदहरेवोपवसेत्कमंडलावप्येवमेव नष्टायांमेखलायांद्वेऋचावुद्धरेत्। इयंदुरुक्तेति । संवर्त्तः । भिक्षाटनमकृत्वाचः स्वस्थएकोन्नमश्नुते अस्नात्वाचैवयोभुंक्तेगायत्र्यष्टशतंजपेत् १ उपासीतन चेत्संध्यामग्निकार्यंनचेत्कृतम् स्नात्वासूर्यंसमभ्यर्च्यप्राणायामेनशुध्यति २

यात् इसकाअर्थ कहतेहैं यज्ञोपवीतमें कहा जो मार्ग तिसकरकें समंत्राक ग्रहणकरे ॥ अपरार्कमे पैठीनसिजी कहतेहैं नष्टइति ब्रह्मचारी दंड काष्ठके नाशहोयांभिक्षाकाअन्न ब्राह्मणांको देदेवे और उसदिन उपवासकरे और कमंडलुके नाशमेंभी ऐसेंहि करे ॥ ब्रह्मचारी तडागीके नाश होयां दो २ ऋचा का पाठ करे इयंदुरुक्ता इत्यादि ॥ संवर्त्त जी कहतेहैं भिक्षेति स्वस्थचित्त होया २ जो ब्रह्मचारी भिक्षाटन करकें इकल्लाहि अन्न खावे और स्नान तें विना जो भोजन करताहै सो अठसे अधिक १०८ सौ गायत्री का जपकरे तां शुद्धहोताहै १ जो संध्या नकरे और अग्नि कार्य्य न करे तां स्नान करकें सूर्यका पूजन करकें और प्राणायाम करणेंतें शुद्ध होताहै २

दिवेति स्वस्थ चित्तवाला ब्रह्मचारी जेकर दिनविषें शयन करें तद स्नानकर्कें सूर्यका पूजन करे और गायत्रीका अठसे अधिक सौ जप करे तदशुद्ध होताहै ३ जिस पुरुषनें यज्ञोपवीत विना संध्याकी तोहैसो ब्रह्मचारी स्नान कर्के समाधान होया २ अठसें अधिक हजार १००८ गायत्री का जप करे तदशुद्ध होताहै ४ जोपुरुष यज्ञोपवीत विना भोजन करदाहै सो अठसे अधिक १०० सौ गायत्रीका जप करे और एक प्राणायाम करे तद शुद्ध होताहै ५ यम जीकहतेहैं सूर्य इति जो पुरुष सूर्यकेउदय तक शयन करदाहै उसकानाम सूर्योदितहै और जो सूर्यके अस्ततक शयन करदाहै उसका नाम सूर्यनिर्मुक्तहै १ सो दोए ब्रह्मस्तेन कहेहैं अर्थात् वेदके चुराणे वालेहैं दिन रात्रिके उपवास करणेंतंशुद्धहोतेहैं दशतें अधिक गायत्रिका पृथक् २ जपकरें २ अवइसीका अर्थ

दिवास्वपितिचेत्स्वस्थोब्रह्मचारीकथंचन स्नात्वासूर्यंसमभ्यर्च्यगायत्र्यष्टश तंजपेत् ३ ब्रह्मसूत्रंविनायेनसन्ध्योपास्तिर्यदाकृता गायत्र्यष्टसहस्त्रंतुजपे त्स्नात्वासमाहितः ४ ब्रह्मसूत्रंविनायस्तुभोजनंकुरुतेजनः गायत्र्यष्टशतेनैव प्राणायामेनशुध्यति५। यमः। सूर्योदयेतुयःशेतेससूर्योदितउच्यते अस्तंगते तुयःशेतेसूर्यनिर्मुक्तएवसः १ ब्रह्मस्तेनावुभौसम्यगहोरात्रोपितौशुची गाय त्र्यादशसाहस्त्रंकुर्यातामाह्निकंपृथक् २ सूर्योदितोहरुपोषितःसूर्यनिर्मुक्तो रात्रिमुपोषितःएवमुभावहोरात्रोषितौगायत्र्यादशाधिकंसहस्त्रजपमहानिकु र्याताम् वसिष्ठः। सूर्याभ्युदितःसन्नहास्तिष्ठेत्सावित्रींजपेत् ॥ एवंसूर्याभिनि र्मुक्तोरात्रावासीत। विष्णुः। सूर्याभ्युदितोनिर्मुक्तःसचैलस्नातःसावित्र्यष्ट शतमावर्त्तयेत् ॥ संध्याधिकारेबौधायनः॥ तत्रसायमतिक्रमेरात्र्युपवासः प्रातरुपक्रमेहरुपवासः ॥

स्पष्टकर्के कहतेहैं सूर्येति सूर्योदित पुरुष दिनमें उपवास करे और सूर्यनिर्मुक्त पुरुष रात्रिमें उपवास करे इसप्रकार दोनों दिनरात्रिके उपवास वालें गायत्रीका दश १० तें अधिक हजार जपदिन विषेंकरें ॥ वसिष्ट जी कहतेहैं ॥ सूर्येति सूर्योदित पुरुष दिनविषें स्थितहोकर्के गायत्रीकाजपकरे ॥ ऐसेंही सूर्यनिर्मुक्त पुरुष रात्रिमें स्थित होकर्के रहपरंतु दिनविषे जप करे विष्णुजी कहतेहैं सूर्येति सूर्योदित वा सूर्यनिर्मुक्त पुरुष सचैल स्नान कर्के गायत्रीका अठ से अधिक १०० सौ जपकरे अबसंध्याके अधिकारमें बौधायनजी कहतेहैं तत्रेति जेकर सायंकालकी संध्या न करे तद रात्रि उपवास करणा और प्रातःकालकी संध्या न करणेमे एकदिनका उपवास करणे योग्यहै

आपस्तंवजीकहतेहैं स्वपन्निति जिसको सुत्तेहोयां सूर्य अस्तहोवे सो भोजन न करे और वाणी रोकरक्खे रात्रिमें स्थितरहे और दूसरे दिन जलकास्पर्शकर्के वाणीनूंखोलदेवे और जेकर सुत्तेहोयां सूर्य उदय होजावे तदभीभोजन न करे और वाणीनूं रोकरक्खे और दिनमें स्थितरहे और नम्र होया २ प्राणायामकरे एहकिसीका मतहै । आत्निमितः! इसपाठविषे अस्तपर्य्यंत स्थितरहे एह अर्थहै ॥ कुछक और कहतेहैं मध्विति ब्रह्मचारीको मखीरमांसकेभक्षणविषे कृच्छ्रव्रतकरणेयोग्यहै फेर शेष व्रतांनूं करे ब्रह्मचारीनें मखीरभक्षण विषे और शिष्ट पुरुषोंके भोजन योग्य जोमांसति सकेभक्षणविषे प्राजापत्यव्रतकरणेयोग्यहै ॥ तिसतेंउपरंत प्रारंभकीता होया जो ब्रह्मचर्य वा वेद व्रतइनांविच्चों शेषरिहा जो व्रत सो करे ॥ तिसतेउपरंत अग्गेकरणे जो व्रत तिनांनूं समाप्तकरे

आपस्तंवः स्वपन्नभिनिर्मुक्तोनश्नन्वाग्यतोरात्रिमासीत । श्वोभूतेउदकमुपस्पृश्यवाचंविसृजेत् । स्वपन्नभ्युदितोनश्नन्वाग्यतोहस्तिष्ठेदान्मितः प्राणान्नियच्छेदित्येके ॥ अनश्नन्नभुंजानः किंच मधुमांसाशनेकार्यःकृच्छ्रःशेषोव्रतानिच ब्रह्मचारिणामधुभक्षणेशिष्टभोजनीयमांसभक्षणेचप्राजापत्यंकार्यम् ॥ तदनंतरमुपक्रांतस्यब्रह्मचर्यस्यवेदव्रतानांवान्यतमस्यशेषःकार्यःतदनंतरंक्रियमाणानिव्रतानिसमापनीयानि मधुमांसाशनेकार्य्यःकृच्छ्रःशेषव्रतानिच प्रतिकूलंगुरोःकृत्वाप्रसाद्यैवविशुध्यतीतिमिताक्षरास्थःपाठःनपुनर्ब्रह्मचर्यारम्भशंकानिवृत्त्यर्थायाविधिः तदाशंकायांच पुनरुपनयनविधानात् । तथाचसंवर्त्तः ॥ ब्रह्मचारीतुयोश्नीयान्मधुमांसेकथंचन सकृत्वाप्राकृतंकृच्छ्रंमौंजीहोमेनशुध्यतीति मांसस्यचशिष्टभोजनीयस्यभक्षणेएतत्

इसमें विशेषकहतेहैं मध्विति ब्रह्मचारी मखीरमांसके भक्षणविषे कृच्छ्रव्रतकरे फेर शेष व्रतकरे औरगुरुका अनादराकरेतां गुरुकीप्रसन्नताकर्के शुद्धहोताहै एहमिताक्षरामेकहाहै १ परंतुएह फेर ब्रह्मचर्यके आरंभकी शंकको निवृत्तिवास्ते विधि नहिंहै अर्थात्इसीकृत्यकर्के एहशंका निवृत्तहो गई पुनर्ब्रह्मचर्यकी आशंका विषे फेर यज्ञोपवीतका विधान होणेतें सो इसमें नहिंहै । तैसेहि संवर्त्तजीकहतेहैं ब्रह्म चारीति जो ब्रह्मचारी मखीर और मांसका भक्षण करे सो प्राकृत कृच्छ्रव्रत कर्के और मौंजीहोम कर्के शुद्धहोताहै १ प्राकृतकृच्छ्र नाम सामान्यकृच्छ्र जो द्वादशाहसाध्य है तिसकाहै यज्ञोपवीतविषे प्रतिपादन कीत्ता जो होम तिसकर्के शुद्ध होताहै परंतु शिष्टोंके भोजन योग्य जो मांस तिसके भक्षण विषे एहजानणा ॥

जोवसिष्टजीनें कहाहै सो कहतेहैं ब्रह्मचारीति ब्रह्मचारी जेकर शिष्टोंके योग्य जो मांस तिसनूं खावे तद बारां १२ रात्रीका कृच्छ्र व्रत कर्के शेषव्रतनूं समाप्त करे सोभी एह व्याधिरहितकोजानणा श्रौर व्याधियुक्तकों मधु मांस भक्षणमें दोष नहिंहै सोई वसिष्ट एह कहताहै कि सो जेकर व्याधियुक्तहोवे तद गुरुका जूठांमांस औषधीवास्ते सागाही खालेवे क्योंकि मधुमांसादि जो हैं सो रोगिपुरुषको स्वीकार करणेयोग्यहैं इसमे जो सर्वग्रहणहै सो मांसलशुनादि जो अभक्ष्य तिसके ग्रहण वास्तेहै गुरुकाजूठा भोजनकर्के वा वचनकर्के जानणाहै ॥ इच्छातें विना प्राप्तहोया जो मधु तिसके भक्षणमें दोष नहिंहै एह वसिष्टजीने कहाहै सो कहीदाहै अकामेति इच्छातें विना प्राप्तहोयाक्या भक्षण कीताजो मखीर वाजसनेयीशाखावाले ब्रह्मचारीकों तिसके भक्षणमें दोष नहिंहै एहजाणीदाहै ॥ इसकों स्पष्टकरतेहैं कि वाजसनेयी यजुः शाखाका भेदहै ॥ अब ब्रह्मचर्यके अधिकारविषे पैठीनसिजीकहतेहैं मध्विति ब्रह्मचारी मधुमांसके भक्षण विषे त्रयरात्रि

यदाहवसिष्ठः ब्रह्मचारीचेन्मांसमश्नीयाच्छिष्टभोजनीयंकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वाव्रतशेषंसमापयेदिति एतच्चाव्याधितस्य व्याधितस्यतुमधुमांसभक्षणेपि नदोष इत्याह सएव सचेद्व्याधीयीतकामंगुरोरुच्छिष्टंभेषजार्थंसर्वंप्राश्नीयादिति मधुमांसाद्यप्रतिषिद्धम् सर्वग्रहणंमांसलशुनाद्यभक्ष्यमात्रग्रहणार्थम् गुरोरुच्छिष्टमपिभोजनेनवचनेनवाज्ञेयम् अकामोपनतंमधुभक्षणे नदोष इत्याहसएव अकामोपपन्नंमधुवाजसनेयकेनदुष्यतीतिविज्ञायते । वाजसनेयंयजुःशाखान्तरम् ॥ ब्रह्मचर्याधिकारेपैठीनसिः मधुमांसप्राशने त्रिरात्रंपुनरुपनयनंच प्राजापत्यासमर्थविषयमेतत् ॥ मनुः ॥ मासिकान्नंतुयोश्नीयादसमावृत्तकोद्विजः सत्रीण्यहान्युपवसेदेकाहंचोदकेवसेत् १ ॥ मासिकमत्रप्रतिमासंस्मृताहनियद्विहितंतच्छ्राद्धम् नपुनरमानवस्याम् सूतिकान्नंनवश्राद्धंमासिकान्नंतथैवच ब्रह्मचारीतुयोश्नीयात्त्रिरात्रेणसशुद्ध्यतीति संवर्त्तवाक्येन नवश्राद्धसाहचर्यात् ॥ बौधायनः ॥ सचेद्व्याधीयीत

कामंगुरोरुच्छिष्टंभेषजार्थंसर्वमश्नीयात्

उपवासकरे फेर यज्ञोपवीतपावे ॥ एह प्राजापत्य व्रत के असमर्थ विषयविषे जानणा अर्थात् जिससे प्राजापत्यनाहि होसक्ता सो इसव्रतको करे ॥ मनुजीकहतेहैं मासिकेति जो ब्राह्मण ब्रह्मचारी मासिकान्न भक्षणकरे सो त्रयदिन उपवासकरे श्रौर एकदिनजलविषे वास करे तां शुद्धहोताहै १ इस विषे मासिक शब्दका अर्थ कहतेहैं महीनें महीनें मृत होए पुरुषके दिन विषे जो विधान किया है सो ग्रहण करणा योग्यहै ॥ अवइसीमेंहेतु कहतेहैं नेति फेर अमावास्या नवमीविषे जो श्राद्ध है तिसकोभी मासिक कहतेहैं परंतुसो नाहिं ग्रहण करणा क्योंकि सूतिकान्न श्रौर नवश्राद्ध श्रौर मासिकान्न इनांको जो ब्रह्मचारीभक्षण करे सोत्रयरात्रि कर्के शुद्धहोताहै एह संवर्त्तके वाक्य कर्के नव श्राद्धकी साहचर्यताहोणेतें बौधायनजीकहतेहैं सइति सोब्रह्मचारी जेकर पाडी कर्के युक्तहोवे तद अतिशय कर्के गुरुकाजूठा औषधीवास्ते संपूर्ण खालेवे

येनेति जिसककें इच्छाहोवेतिसकिकें चिकित्सा करे सो जद रोगरहित होवे तद उठ कर्के सूर्य का उपस्थान करे हंसः शुचिषत् इस ऋचाकर्के ॥ इसीमें वृद्धयाज्ञवल्क्य जी कहतेहैं ब्रह्मचारीति ब्रह्मचारी व्रती और विधवा ब्राह्मणी एह मधु मांस भक्षण करें तद त्रयरात्रिके व्रत कर्के शुद्ध होतेहैं ॥ यमजीभी कहतेहैं मध्विति जो ब्रह्मचारी मधु मांस भक्षण करे और श्राद्धका वा सूतक का अन्न खावे तद प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत कर्के शेष व्रतनूं समाप्तकरे १ एह जेकर उलटी न होवे तिसमें जानणा और उलटीविषे लघुकृच्छ्र व्रतकरे १ शातातपजीकहतेहैं सूतकइतिजेकर सूतक

येनेच्छेत्तेनविचिकित्सेत् सयदाऽगदोभवति तदोत्थायादित्यमुपतिष्ठेद्धंसः शुचिषदित्येतयर्चा । अगदोरोगरहितः । वृद्धयाज्ञवल्क्यः । ब्रह्मचारिव्रतीचैवब्राह्मणीविधवाचया अशित्वामधुमांसानित्रिरात्रेणैवशुध्यतीति १ । यमः मधुमांसंचयोश्नीयाच्छ्राद्धंसूतकमेवच प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंव्रतशेषंसमापयेत्१ छर्दनाभावएतत् छर्दनेतुलघुकृच्छ्रम् । शातातपः । सूतकेतुयदाविप्रोब्रह्मचारी विशेषतः पिबेत्पानीयमज्ञानात्समश्नीयात्स्पृशेतवा १ पानीयपानेकुर्वीतपंचगव्यस्यभक्षणम् त्रिरात्रंभोजनेप्रोक्तंस्पृष्ट्वास्नानंविधीयतइति २॥ विष्णुः ब्रह्मचार्यामश्राद्धान्नंप्राश्नीयादज्ञानदुर्बलः पराकेनविशुद्धिःस्यान्निष्कृतिर्नान्यथाभवेत् १ उच्छिष्टंक्षत्रियविशोःशूद्रोच्छिष्टमथापिवा ब्रह्मचारीयदाश्नीयात्तस्यशुद्धिःकथंभवेत् २ स्नानंतथैवकृत्वातुगायत्र्यष्टशतंजपेत्

विषे ब्राह्मण ब्रह्मचारी विशेषतें पानी पीवे अज्ञानतें भोजनकरे वा स्पर्शकरे १ तद पानी पीने विषे पंचगव्य का भक्षण और भोजन विषे त्रयरात्रि उपवास करे और स्पर्श विषे स्नान करे तद शुद्ध होताहै १ अब विष्णुजी कहतेहैं ब्रह्मचारीति जो ज्ञान रहित ब्रह्मचारी श्राद्धका कच्चा अन्न खावे तद बारां १२ दिनका जो पराक व्रत तिस कर्के शुद्ध होताहै और किसे कर्के भी शुद्धि नाहीं होतीहै १ उच्छिष्टमिति क्षत्री वैश्य शूद्र इनका जूठा अन्न ब्रह्मचारी जेकर खावे तिसकी शुद्धि कैसे होवे ॥ २ ॥ उत्तर तिसीकालमें स्नान कर्के अष्टोत्तर शत गायत्रीका जपकरे

उपोष्येति और बारां दिनका उपवास व्रतकरे असें पृथक् २ क्या जुदे जुदे तीनोंकी शुद्धि कही है इसी प्रकार गृहस्थीको पाद ऊन व्रत करणा योग्यहै ३ इसकोंस्पष्टकरतेहैं ब्राह्मणेति ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांको क्रमकर्के क्षत्री वैश्य शूद्र के उच्छिष्ट प्राशनमें एह जानणा अर्थात् ब्राह्मणको क्षत्रीके उच्छिष्ट भक्षणमें और क्षत्रीकों वैश्यके और वैश्यको शूद्रके एहप्रा० और एही व्रत ब्राह्मणको क्षत्री वैश्य शूद्रके उच्छिष्ट भक्षणमें और क्षत्रीके वैश्य शूद्रके जूठाभक्षण करणेंमें और वैश्यको शूद्रका जूठा भक्षण करणे में कुछक अधिक करणा योग्यहै ॥ देवलजी कहतेहैं मध्विति मधुमांस और सूतकका अन्न जो व्रती भक्षण करे तद त्र्यरात्रि उपवासव्रत कर्के एकरात्रिजलविषें वास करे १ इसकर्के रात्रिविषें जलमें वास विधानाकियाहै ॥ और मनुनें दिनविषें जलवासकियाहै तिसतें विकल्प जानणा ॥ और जेकर

उपोष्यद्वादशदिनमेवंशुद्धिःपृथक्पृथक् एवमेवगृहस्थस्यपादोनमितिनिश्चयः ३ ब्राह्मणाक्षत्रियविशांयथाक्रमंक्षत्रियवैश्यशूद्रोच्छिष्टप्राशनेएतत् एतच्चब्राह्मणस्यक्षत्रियवैश्यशूद्रोच्छिष्टं क्षत्रियस्यवैश्यशूद्रोच्छिष्टं वैश्यस्यशूद्रोच्छिष्टमश्नतःकिंचिदधिकंकल्प्यम् ।देवलः। मधुमांसंसूतकान्नंयश्चाश्नातिव्रतीक्वचित् त्रिरात्रोपोषितःसम्यग्रात्रिमेकांजलेवसेत् १ अनेनरात्रौ जलवासोविहितः मनुनात्वहनीत्युक्तं ततोविकल्पः दोषभूयस्त्वेतुसमुच्चयः ब्रह्मचारिप्रसंगाद्गुरुविषयंकिंचिदाह । कृच्छ्रत्रयंगुरुःकुर्यात्प्रहितोम्रियतेयदि । ब्रह्मचारीगुरुणाप्रहितःप्रेषितःशंक्यमानार्थविषयेयदिम्रियते तदागुरुःप्राजापत्यसहितांस्त्रीन्कृच्छ्रानाचरेत् । शंक्यमानविषयस्तुचौरोरगव्याघ्रादिनासांद्रतरांधकाराकुलितनिशीथावसरादिनाभवति अत्रपूर्ववाक्याद्ब्रह्मचारीतिशब्दोऽनुवर्त्तते

दोषबहुतहोवे तां दिनरात्रि जलमें वासकरणा ॥ अब ब्रह्मचारीके प्रसंगतें गुरुविषय कुछक प्रायश्चित्तकहतेहैं कृच्छ्रेति जेकर ब्रह्मचारी गुरु कर्के प्रेरित कीता होया मृत हो जावे तद गुरु त्रयकृच्छ्र व्रत करे ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं ब्रह्मचारी गुरुकर्के भेजया होया शंक्यमान विषयविषें जेकर मृतहोजावे तद गुरु प्राजापत्य सहितत्राय कृच्छ्रव्रत करे (प्रश्न) शंक्यमानविषय कौणसाहै ॥ (उत्तर) चोर सर्प व्याघ्रादिकर्के वडेगाडे अंधकार कर्के युक्त अर्धरात्र में किसी स्थानमे जाणा इत्यादि करके होवाहै इसविषे पूर्ववाक्य तें ब्रह्मचारी एह शब्द अनुवर्त्तन करीदाहै ॥

अतइति इसीकारणतें ब्रह्मचारिकें प्रायश्चित्तके प्रसंगतें गुरुको दुःख देणे विषे भी याज्ञवल्क्यनें प्रायश्चित्त दिखाईदाहै प्रतीति गुरु का प्रतिकूल कर्के गुरु को प्रसन्न करे तां शुद्ध होताहै अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं गुरुको प्रतिकूल क्या दुःख दें कर्के गुरुनूं प्रसन्न कर्के हि शुद्ध होताहै ॥ इसी में वसिष्ट जी कहते हैं गुरुके साथ झूठ कह कर्के फेर उसी झूठ कों सच्चा करे तिसमें सचैल स्नान कर्के और गुरु नूं प्रसन्न करे तद शुद्ध होताहै एह जाणींदाहै ॥ एह अज्ञानतें जो एक वार थोडा अपराध तिसविषें जानणा ॥ अतिशयतें हठ कर्के ज्ञान पूर्वक जो गुरुको दुःख देणा तिस विषें वारां १२ वर्ष का जो ब्रह्महत्याका व्रत तिसकी प्राप्ति वास्ते कयाहै मनुनें एह समग्र श्लोकहै (उक्त्वाचैवानृतंसाक्ष्येप्रतिरुध्यगुरुंतथा अपहृत्यचनिःक्षेपंकृत्वाच

अतएव ब्रह्मचारिप्रायश्चित्ते प्रकृते प्रसंगाद्गुरोःप्रातिकूल्येऽपि याज्ञवल्क्येनप्रायश्चित्तमुपदिश्यते ॥ प्रतिकूलंगुरोःकृत्वाप्रसाद्यैवविशुद्ध्यतिगुरोःप्रतिकूलंदुःखकरं कृत्वा गुरुं प्रसाद्य व्यपगतकोपं कृत्वा विशुद्ध्यति विपापोभवति । अत्रवसिष्ठः ॥ गुरोश्चालीकनिर्वंधेसचैलस्नानतोगुरुंप्रसादयेत्पूतोभवतीतिविज्ञायते । एतदमतिपूर्वकंसकृदल्पापराधविषयम् ॥ अत्यंतसानुवंधमतिपूर्वकमहाऽपराधेतु गुरुप्रातिकूल्ये द्वादशवार्षिकब्रह्महव्रतप्राप्त्यर्थमुक्तंमनुना प्रतिरुध्यगुरुंतथेति यद्वा पितृविषयंमानवं वासिष्ठयाज्ञवल्क्यीयंचौपचारिकगुरुविषयम् ॥ मानवंब्रह्महत्याप्रकरणेद्रष्टव्यम् ॥ विष्णुः ॥ समुत्कर्षानृतेगुरोश्चालीकनिर्वंधे तदाकारणेच मासंपयसा वर्तेत तस्यगुरोराकारणेआव्हानेचेत्यर्थः स्वल्पाभ्यासविषयमिदम् ॥ इतिब्रह्मचारिव्रतलोपेप्रायश्चित्तम् ॥ १८ ॥ ❁

स्त्रीसुहृद्धम् १) कोइक कहते हैं एह जो मनुजीका कथन कीता होया वारां वर्ष का व्रत सो पिता रूप जो गुरुहै तिसविषें जानणा वहुत प्रायश्चित्त होणेंतें । और वसिष्ट याज्ञवल्क्यजीका वचन पितातें विना और गुरुविषें जानणा क्योंकि थोडा प्रायश्चित्तहोणेंतें ॥ मनु जीकावचन ब्रह्महत्या प्रकरण विषें देखणें योग्यहै ॥ अव विष्णुजीकहतेहैं समिति गुरुके साथ अपणी वडयाई वास्ते झूठ वोलणें विषें और किसी वातका झूठाहठ करणेंविषें और गुरुके वुलाणे विषें अर्थात् गुरुके साथ कुछकामहोवे तदआपगुरुपासनहिजाणा किंतु गुरुको अपणे पास वुलाणा एह वडा दोषहै इसवास्ते प्रायश्चित्तहै कि महीना पर्य्यंत जल पान करे तद शुद्ध होताहै एह थोडे अभ्यास विषें जानणा एह ब्रह्मचारिके व्रत लोपका प्रायश्चित्त समाप्तहुआ ॥ ८ ॥ ❁

इसतें उपरंत तला बगीचा पुत्र स्त्री इनका वेचणा पीछे किहाहै तिस विषें प्रायश्चित कहतेहैं पूर्वोक्त जो मनुजी का किहा होयाव्रत है(एतदेवव्रतं कुर्युरुपपातकिनोद्विजा)इत्यादि और याज्ञवल्क्यका किहा होया जो है(उपपातकशुद्धिःस्यात्)इत्यादि उपपातकोंके जो सामान्य प्रायश्चित्त चांद्रायणादि व्रत सो जाति शक्ति गुणकी अपेक्षा करकें देखणें योग्यहैं अर्थात् जैसी जाति ब्राह्मणादि होवे वा जैसी सामर्थ्य होवे वा जैसा गुण होवे तैसाहि प्रायश्चित्त करणा ॥ आपत्तिकालमें इच्छातें विना वेंचणेंविषें शंखजीकहतेहैं देवेति देवताका मंदिर और जिस घरविषें यज्ञ होवे तिसको वेच करकें और वगीचा वा छोटी वगीची और सभा स्थान वा धर्मशाला तला और व्रतादि वा पुल पुत्र इनांको वेंचकरकें तप्त कृच्छ्रव्रतकरे तद शुद्ध होताहै ॥ इसीमे पराशरजीभी कहतेहैं विक्रीयेति कन्या और गौको वेचकरकें कृच्छ्र सांतपन व्रत करे ॥ इच्छातें वेचणेंविषें चतुर्विंशातिमतमें कहतेहैं नारीणामिति स्त्रीको वेच करकें चांद्रायण व्रत करे तद शुद्ध होताहै और पुरुषके वेचण विषें दूणा व्रत बुद्धिमानोंनें किहाहै १ अवइसमें जो पैठीनसि जीनेंकियाहै

अनंतरं तडागारामसुतदारविक्रयइत्युक्तं तत्र पूर्वोक्तमनुयोगीश्वरोक्तोपपातकसामान्यप्रायश्चित्तंचांद्रायणादि जातिशक्तिगुणापेक्षया द्रष्टव्यम् आपद्यकामतोविक्रये शंखः देवगृहप्रतिश्रयोद्यानारामसभाप्रपातडागपुण्यसेतुसुतविक्रयंकृत्वातप्तकृच्छ्रंचरेदिति। पराशरोपि विक्रीयकन्यकांगांचकृच्छ्रंसांतपनंचरेदिति। कामतोविक्रये चतुर्विंशतिमते। नारीणांविक्रयंकृत्वाचरेच्चांद्रायणव्रतम् द्विगुणंपुरुषस्यैवव्रतमाहुर्मनीषिणइति १ यत्तुपैठीनसिः। आरामतडागोदपानपुष्करिणीसुकृतसुतविक्रये त्रिषवणस्नाय्यधःशायीचतुर्थकालाहारः संवत्सरेणपूतोभवतीति गुरु प्रायश्चित्तमुक्तवान् तदेकपुत्रविषयम् इतितडागारामादिप्रायश्चित्तम् २२॥ अथव्रात्यता। व्रात्यइतिव्रातशब्दादिवार्थयप्रत्ययेननिष्पन्नः यद्वा व्रातमर्हतीति व्रातंनीचकर्म्म दंडादिभ्योयइति व्रात्यःशरीरायासजीवी व्याधादिक अष्टाविंशतिसंस्कारहीनोभ्रष्टगायत्रीकः षोडशवर्षादूर्ध्वमप्यकृतव्रतबंधोदानाद्यकर्त्ताद्विजो व्रात्य इत्यमरटीकाराजमुकुटी ॥

सो कहतेहैं आरामेति वगीची तला झुवचा वाउली पुण्य पुत्र इनके वेचणें विषें त्रिकाल स्नान करे और पृथ्वी विषे शयन करे चौथे पहर भोजन करे तद वर्षकरकें शुद्ध होताहै जो एह बहुत प्रायश्चित्तकियाहै सो एकपुत्रविषें जानणा। एह तलाआदि चारवस्तुके वेंचणेका प्रायश्चित्तसमाप्त होया २२ ॥ अब व्रात्यताका प्रायश्चित्तकहणें वास्ते पहले तिसशब्दका अर्थकहतेहैं व्रात्यइति व्रातशब्दतें परे सादृश्य अर्थमें यप्रत्यय आया तद व्रात्य सिद्ध होया १ दूसरा अर्थ कहतेहैं व्रात जोहै नीचकर्म तिसके योग्यजोहोवे(दंडादिभ्योय)इससूत्रकरकें यप्रत्यय आया तद व्रात्यसिद्ध होया सो किसका नामहै कि शरीरके आयासकरकें जीविका करणेवाले जो भारवाहकहैं अठाई२८ संस्कारोंतेंहीन और गायत्रीसेंभ्रष्ट और सोला१६वर्षतेंउपरंतनहिंहोया यज्ञोपवीत जिसकाऔरदानादिके न करणेवाला जो द्विजतिसकानामव्रात्यहै एह अमरकोशकी राजमुकुटीटीकामें किहाहै

(व्रातच्फञोरस्त्रियाम्) एह जो कौमुदीका सूत्रहै इसविषे बहुतजातिवाले और नहिंहै नियमकर्के वृत्ति जिनांकी अर्थात् कदी भारका कम्मकरणा कदी लकडीका वा चर्म्मका कम्मकरणा और शरीरकर्के जीविका करणवाले इनका जो समूहहै तिसको व्रात कहतेहैं ॥ तैसेंहि व्रातेनजीवति इससूत्रविषे व्रात क्या शरीरके आयासकर्के जीविका करता है बुद्धिकर्के जीविका ना करे एह अर्थ है ॥ व्रातेनजीवति इस सूत्र विषे महाभाष्य का भी प्रमाण कहते हैं किंव्रातमित्यादिना ॥ अब व्रात्यां को मनु जी कहते हैं द्विजातयइति जो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांतें समान जाति को स्त्री विषे व्रतरहित उत्पन्न होवें और गायत्रीसें भ्रष्ट होवें तिनका नाम व्रात्य है १ व्रात्य ब्राह्मण तें तुल्यजातिकी स्त्री अर्थात् ब्राह्मणी तिस विषे जो उत्पन्न होवे तिसका नाम भूर्ज कंटक है तैसें आवंत्य वाढधान पुष्पध शैख एह एककेहि देश भेद कर्के प्रसिद्ध नामहैं १ झल्ल

व्रातच्फञोरस्त्रियामितिसूत्रे कौमुद्यांतु नानाजातीया अनियतवृत्तयः ॥ उत्सेधजीविनःसंघाव्राताइति.। तथाव्रातेनजीवतीतिसूत्रे व्रातेनशरीरायासेनजीवति नतुबुद्धिवैभवेनेति। व्रातेनजीवतीति सूत्रेमहाभाष्यम् किंव्रातं नाम नानाजातीया अनियतवृत्तय उत्सेधजीविनः संघा व्राता इति॥ व्रात्यानाहमनुः॥ द्विजातयःसवर्णासुजनयंत्यव्रतांस्तुयान् तान्सावित्रीपरिभ्रष्टान्व्रात्यानितिविनिर्दिशेत् १ व्रात्यात्तुजायतेविप्रात्पापात्माभूर्जकंटकः आवंत्यवाढधानौचपुष्पधःशैखएवच १ झल्लोमल्लश्चराजन्याद्व्रात्यान्निच्छिविरेवच नटश्चकरणश्चैवखसोद्रविडएवच ॥ २ वैश्यात्तुजायतेव्रात्यात्सुधन्वाचार्यएवच कारुषश्चविजन्माचमैत्रःसात्वतएवच ॥ ३ ॥ तपोबीजप्रभावैस्तुतेगच्छंतियुगेयुगे उत्कर्षंचापकर्षंचमनुष्येष्विहजन्मतः ॥ ४ ॥ शनकैस्तुक्रियालोपादिमाःक्षत्रियजातयः वृषलत्वंगतालोकेब्राह्मणादर्शनेनच ॥ ५ पौंड्रकाश्चौंडद्रविडाःकांबोजायवनाःशकाः पारदाःपल्हवाश्चीनाः किरातादरदाःखसाः ६ ॥

इति व्रात्य क्षत्रियते समानजातिकी स्त्रीविषे उत्पन्न होवे तिसके नाम झल्ल मल्ल निच्छिवि नट करण खस द्रविड हैं एहभी एककेहि नामहैं २ वैश्यादिति व्रात्यवैश्यतें समान जातिकीस्त्री विषे जो उत्पन्न होवे तिसके नाम सुधन्वाचार्य कारूष विजन्म मैत्र सात्वतहैं एहभी एककेहि नाम हैं ३ तपइति तपके और बीजके प्रभाव कर्के पूर्वोक्त जो हैं सो इस जन्मतें मनुष्यों विषे चौथी पीडी मै जाकर उत्कर्ष और अपकर्ष नूं प्राप्त होतेहैं अर्थात् व्रात्य ब्राह्मणादि सत्कर्म करते रहें तद चौथी पीडीमें जाकर शुद्ध होतेहैं और नीचकर्मकरें तद बहुत नीच होजातेहैं ४ अब इसीमे हेतु कहतेहैं शनकैरिति मंद मंद क्रियाका लोपहोणेतें और ब्रह्मणके अदर्शनसें एहक्षत्रिजाति लोक विषे शूद्र भाव नूं प्राप्तहोगई अर्थात् क्षत्रिलोक शत्रुआदि के भयतें देशांतर मे जाकर जातिभ्रष्ट होगए ५ पौंड्रक चौंड द्रविड कांबोज यवन शक पारद पल्हव चीन किरात दरद खस ६

मुखेति ब्राह्मणक्षत्रि वैश्य शूद्र इनांतें उत्पन्नहोंई जो वाहर लीयां जातियां कायस्थ कोलीमाली इत्यादि सो म्लेच्छ भाषाकर्के युक्त अथवा श्रेष्ट भाषाकर्के युक्त एह संपूर्ण दस्यु कहातेहैं ७ अव इसीका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमें कहतेहैं व्रात्येत्यादि ॥ २ ॥ ३ ॥ अव शूद्र कमला करविषे कहतेहैं भूर्जकंटकादिति भूर्जकंटकतें आवन्त्य होआ और आवन्त्यंत जो उत्पन्न होया सो वाढधानहै और वाढधानतें जो उत्पन्न होया सो पुष्पधहै इत्यादि जानणे ॥ इसीप्रकार क्षत्रि वैश्य व्रात्य तें जो उत्पन्न होवें · तिनां विषे भी क्रम कर्के नाम भेद जानणे योग्य हैं

मुखवाहूरुपज्जानांयालोकेजातयोवाहिः म्लेच्छवाचश्चार्यवाचःसर्वेतेदस्यवः स्मृताः ७ व्रात्येत्यादि ॥ व्रात्याद्ब्राह्मणात्सवर्णास्वित्यनुवृत्तेः ब्राह्मण्यां पापस्वभावोभूर्जकंटकोजायते तथा आवन्त्यवाटधानपुष्पधशैखाजायंते एकस्यचैतानिदेशभेदप्रसिद्धानिनामानि ॥ क्षत्रियाद्व्रात्यात्सवर्णायांझल्लमल्लनिच्छिविनटकरणखसद्रविडाख्याजायंते एतान्यप्येकस्यैवनामानि २ वैश्यात्पुनर्व्रात्यात्सवर्णायांसुधन्वाचार्यकारूपविजन्ममैत्रसात्वताख्याजायंते ॥ एकस्यचैतान्यपिनामानि ३ शूद्रकमलाकरेतु भूर्जकंटकादावन्त्यः आवन्त्याद्वाढधानो वाढधानात्पुष्पधइत्यादि । एवमेवक्षत्रियवैश्यव्रात्योत्पन्नविषयेक्रमेणनामभेदएवोक्तः ॥ अथव्रात्यप्रायश्चित्तम् ॥ तत्रयाज्ञवल्क्यः ॥ उपपातकशुद्धिःस्यादेवंचान्द्रायणेनवा ॥ पयसावापिमासेनपराकेणाथवापुनरिति १ एवं मासंपंचगव्याशनेन चान्द्रायणेन मासंपयोव्रतेन पराकेणवाशुद्धिरित्यर्थः ॥ एतच्चाकामकारेशक्त्यपेक्षयाविकल्पितं व्रतचतुष्टयं द्रष्टव्यमितिमिताक्षरा ॥ कामकारेचाहमनुः ॥ एतदेवव्रतंकुर्युरुपपातकिनोद्विजाः अवकीर्णिवर्जंशुद्ध्यर्थंचांद्रायणमथापिवेति १ ॥

अव व्रात्यका प्रायश्चित्त कहतेहैं तिस विषें याज्ञवल्क्यजीका वचन है उपेति इसतरां गोवध विषें कहा जो व्रतप्रकार मास पंचगव्याशनादि तिस कर्के और जो व्रात्यतादि उपपातक तिनांकी शुद्धि कहीहै वा चांद्रायण कर्के वा महीनेंका जो पयोव्रत तिस कर्के वा पराक व्रत कर्के शुद्धि कही है १ एह अज्ञानतें करण वाले विषें शक्तिकी अपेक्षा कर्के विकल्पित चार व्रत जानणें योग्यहैं एह मिताक्षरामें कहाहै ॥ इच्छातें करण वाले विषें मनुजी कहतेहैं एतदिति उपपातकी जो द्विज हैं सो अवकीर्णिकों त्यागकर्के अपनी शुद्धिवास्ते इसी त्रैमासिक व्रतकों करें अथवा चांद्रायणकरें १

इसी त्रयमहीनेके व्रतमें चौथे पहर विषें अक्षार लवण विना परिमित यवोंका पानकरें ॥ १ ॥ अक्षारलवण और स्मृतिमें कहतें हैं ॥ गोक्षीरमिति गौकादुग्ध और गौका घृत वा धान्य मुंग तिल यव समुद्रकाजल सिंधूलूण इतनें अक्षार लवणहैं १ एह अतिदेशतें प्राप्त होया है व्रत पंचक अर्थात् पीछे इसको कह चुकेहैं परन्तु इसमें भी इसका प्रयोजनथा इस वास्ते किहाहै इसीमें मनुजी विशेष कहतेहैं येषामिति जिनों द्विजोंनें गायत्री यथाविधि कर्के गुरु पास नहिं पढी तिनांनूं त्रय कृच्छ्र व्रत करवा कर्के फेर यथाविधि कर्के यज्ञोपवीत पावे १ असमर्थके अर्थ कहतेहैं प्रति प्राजापत्य त्रय विषें गौआं त्रय देणीयां परंतु एह जो प्राजापत्यत्रय रूप व्रतकिहाहै सो एह पिता रहित जो पुरुष है तिसके गायत्री पात विषें जानणा और जो आलस्यादि कर्के

एतदेवत्रिमासंचतुर्थकालेऽक्षारलवणमितयवपानरूपंकुर्य्युः ॥ अक्षारलवणंस्मृत्यंतरे ॥ गोक्षीरंगोघृतंचैवधान्यमुद्गतिलायवाः सामुद्रंसैंधवंचैवमेते ह्यक्षारलवणकाइति ॥ १ ॥ एतच्चातिदेशप्राप्तंव्रतपंचकम् ॥ विशेषमप्याहमनुः ॥ येषांद्विजानांसावित्रीनानूच्येतयथाविधि तांश्चारयित्वात्रीन्कृच्छ्रान्यथाविध्युपनाययेत् १ प्राजापत्यत्रयेधेनुत्रयम् एतत्पितृरहितस्य सावित्रीपातेज्ञेयम् आलस्यानवधानादिनासावित्रीपातेतु याज्ञवल्क्यः ॥ आषोडशाद्द्वाविंशाच्चतुर्विंशाच्चवत्सरात् ब्रह्मक्षत्रविशांकालऔपनायनिकःपरः १ अत्रयमः ॥ सावित्रीपतितायस्यदशवर्षाणिपंचच सशिखंवपनंकृत्वाव्रतंकुर्यात्समाहितः १ एकविंशतिरात्रंचपिवेत्प्रसृतियावकम् हविष्यंभोजयेच्चैवब्राह्मणान्सप्तपंचवाततोयावकशुद्धस्यतस्योपनयनंस्मृतम् २

गायत्री न पढे तिस विषें याज्ञवल्क्य जी कहते हैं आषोडशादिति सोलां १६ वर्ष तक और बाई २२ वर्षतक औरचौवी २४ वर्षतक ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांका एह उपनयन काल है इसतें उपरंत व्रात्य होताहै अर्थात् ब्राह्मणकों सोलां वर्ष तक और क्षत्रिकों बाई २२ वर्ष तक और वैश्यको २४ चौवी वर्ष तक यज्ञोपवीतका काल है १ इस विषें यमजी कहतेहैं सावित्रीति जिस पुरुषकी गायत्री पंद्रां १५ वर्ष तक पतित होवें सो पुरुष सहित शिखाके मुंडन करवाकर समाधान होया २ व्रत नूं करे १ और ईकी २१ रात्रि तक यवोंका काढा लप्प मात्र प्रतिदिन पानकरे और सत्त ७ वा पंच ५ ब्राह्मणनूं हविष्य जो तिल मुंग यव तण्डुल इत्यादि इनांका भोजन करवावे तिसतें उपरंत यावक कर्के शुद्ध जो पुरुष तिसकों यज्ञो पवीत किहाहै २ ॥

वशिष्ठ जी भी कहतेहैं पतितेति पतित है गायत्री जिस पुरुषकी सो उद्दालक व्रत क्या शि शुचांद्रायण व्रतकरे दो २ महीनें यवोंका काढ़ापीवे वा महीना रोज जल पानकरे वा एक पक्ष आमिक्षा क्या विच्छयादा दुग्ध तिसकर्के रहे जो गर्म दुद्धविषे दहीपाके वर्णे सो आमिक्षा है वा अष्ठ ८ रात्रि घृत पान करे वा छे ६ रात्रि अयाचित क्या किसेसे भोजनकी याचना न करे और त्रय रात्रि जल पान करे वा एक दिनरात्र उपवास करे वा अश्वमेध यज्ञ का जो यज्ञांतस्नान तिसनूं करे अथवा व्रात्यस्तोम नाम यज्ञकरे ॥ इसमें व्यवस्था कहतेहैं मिताक्षराविषे यस्येति जिस पुरुषको यज्ञोपवीत विषे आपत्ति होणें कर्के पीछे जो काल कहेहैं तिनका उल्लंघन होजावे तद तिसपुरुष को व्रतो विच्चों एक व्रत शक्ति की अपेक्षा कर्के करणे योग्यहै ॥ और आपत्तिते विना जो कालका उल्लंघन तिसविषे मनुजी का कथन कीताहोया त्रयमहीने का व्रत

वशिष्ठोपि ॥ पतितसावित्रीकउद्दालकव्रतंचरेत् । द्वौमासौयावकेन मासंप यसा पक्षमामिक्षया अष्टरात्रंघृतेन षट्रात्रमयाचितेन त्रिरात्रमब्भक्षोऽहो रात्रमुपवसेदश्वमेधावभृथंगच्छेत् व्रात्यस्तोमेनवायजेदिति अत्रव्यवस्था मिताक्षरायाम् यस्योपनयनेआपद्भावेनतत्कालातिक्रमस्तस्यव्रतानामन्य तमंशक्त्यपेक्षयाभवति ॥ अनापद्यतिक्रमेतुमानवंत्रैमासिकम् पंचदशवर्षा दूर्ध्वमपिकियत्कालातिक्रमेतूद्दालकव्रतं व्रात्यस्तोमोवेति येषांतुपित्रादयो प्यनुपनीतास्तेषामापस्तंबोक्तम् ॥ यस्यपितृपितामहावनुपनीतौस्यातां तस्यसंवत्सरंत्रैविद्यकंब्रह्मचर्यम् ॥ यस्यप्रपितामहादेर्नानुस्मर्यते उपनयनं तस्यद्वादशवर्षाणित्रैविद्यकंब्रह्मचर्यमिति ॥ तथाचापस्तम्बः ॥ अतिक्रां तेसावित्र्याःकालेऋतुंत्रैविद्यकंब्रह्मचर्यंचरेदथोपनयनम्

जानणा और पंद्रां १५ वर्षते उपरंत भी कुछक कालके उल्लंघन विषे भी उद्दालक व्रत करे वा व्रा त्यस्तोम नाम यज्ञ करे । जिनांपुरुषोंके पिता पितामह प्रपितामह भी यज्ञोपवीतसें रहित होण तिनांको आपस्तंब जींका कथन कीता होया प्रायश्चित्त करणा योग्यहै ॥ यस्येति जिसके पिता पितामह दोनो अनुपनीत होवे अर्थात् दोनोंका यज्ञोपवीत संस्कार नहिं होया होवे तिसको वर्षमात्र त्रैविद्यक ब्रह्मचर्यहै अर्थात् ब्रह्मचर्य्य धारकर्के ऋग्यजुःसाम एह जो वेदत्रय हैं इनको वर्ष तक अध्ययनकरे ॥ जिसके और प्रपितामहादिकायज्ञोपवीत नहि होयाहोवे तिसको बारां वर्षका त्रैवि द्यक ब्रह्मचर्य है ॥ सोई आप स्तंब जी भी कहतेहैं अतिक्रांतइति गायत्रीकालके व्यतीत होयां २ ऋतुक्या दो २ महीने का त्रैविद्यक ब्रह्मचर्य करे इसते उपरंत यज्ञोपवीत पावे

तिसतें उपरंत वर्ष भर जलका स्पर्श करे इसका अर्थ अगेंभी आवेगा फेर सों पढाणे योग्यहैं जिसके पिता पितामह यज्ञोपवीत से रहित होवें सो तीनो पुत्र पिता पितामह ब्रह्महत्या करण वालेके तुल्यहैं तिनोका अभिगमन क्या सन्मुखआउना और भोजन विवाह अतिशयकर्कें वर्जितहै और जेकर ओही प्रायश्चितकी इच्छाकरें तव वो प्रथम अतिक्रमविषेदो २ महीनेका ब्रह्मचर्य करे और वर्षमे यज्ञोपवीतकरें फेर उदकोपस्पर्शकर्म्मकरें और प्रतिपुरुष क्या पुरुषपुरुषप्रति संख्या कर्कें जितने वर्षतक यज्ञोपवीत रहित होवें (पवित्रेणांतरसेन) इस मंत्रकर्के वा सत्तां व्याहृतियोंकर्कें पढाणेयोग्यहै और जिसके प्रपितामहादिका यज्ञोपवीत नहिंहोया सो श्मशानसंभूतकहेहैं अर्थात् श्मशानकी न्याईं अपवित्रहैं और तिनकाजोअभ्यागमन क्यासंमुख आउना और भोजनविवाह इनकों अतिशय कर्कें त्यागे और जेकर सो प्रायश्चित्तकी इच्छा करें तद वारां १२ वर्षब्रह्मचर्य्य

ततःसंवत्सरमुदकोपस्पर्शनमथाध्याप्यः। अथयस्यपितृपितामहावनुपनीतौस्यातांते ब्रह्महसंस्तुताः तेषामभिगमनंभोजनंविवाहमितिवर्जयेत् तेषामिच्छतांप्रायश्चित्तम्॥ यथा॥ प्रथमेतिक्रमेऋतुरेव संवत्सरेचोपनयनम् तवोदकोपस्पर्शनम्॥ प्रतिपुरुषंसंख्यायसंवत्सरान्यावतोऽनुपनीताःस्युः पवित्रेणांतरसेनेत्यनेनसप्तभिर्व्याहृतिभिरेववाध्याप्यः। यस्यप्रपितामहादेर्नानुस्मर्यते उपनयनम् ते श्मशानसंभूतास्तेषामभ्यागमनं भोजनंविवाहमिति वर्जयेत्तेषामिच्छतांप्रायश्चित्तंद्वादशवर्षाणिब्रह्मचर्यंचरेदथोपनयनम ततउदकोपस्पर्शनम्॥ पावमान्यादिभिरथगृहमेधोपदेशोनाध्यापनम्॥ ततोयोनिवर्त्तते तस्यसंस्कारोयथा॥ प्रथमे तिक्रमेततऊर्ध्वप्रकृतिवत्॥ अस्यार्थः॥ अतिक्रांतेसावित्र्याःकालेउपनयनकालेविप्रादीनांषोडशद्वाविंशतिचतुर्विंशतिवर्षात्मके ऋतुंमासद्वयंयावत्त्रैविद्यकं वेदत्रयसंबंधि ब्रह्मचर्य्यं भैक्ष्याशनगुरुशुश्रूषादिकंचरेत् वेदत्रयार्थंब्रह्मचर्य्यंचरेदिति

धारणकर्कें फेर यज्ञोपवीत पावे तिसतें उपरंत जलका स्पर्शन करे और पावमान्यादि जो मंत्रहैं तिन्होंकर्कें गृहस्थकाउपदेशकरे और इनकों अजेतकपढाणा नहिं। तिसतें उपरंत जो तिसका संस्काररिहाहै सो करे प्रथम अतिक्रमविषें तिसतें उपरंत गायत्री पढाकर तिसके साथ व्यवहार करलेवेकोई स्पर्शादिविवेक न करे॥ अब इसीपूर्वोक्त स्मृतिका अर्थस्पष्टकर्कें कहतेहैं अतिक्रांत इतिव्यतीत जो गायत्रीका काल तिसमें यज्ञोपवीत काल जो विप्रादियोंका ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनका सोला १६ वाई २२ चौवी २४ वर्ष तक जिसका नहि होया है सो ऋतु क्या दो २ महीने संपूर्ण त्रैविद्यक जो वेदत्रयसंबंधि ब्रह्मचर्य्य तिसकों करे और भैक्षाशन क्या भिक्षाका अन्न मांग कर्कें भोजन करे और गुरु शुश्रूषादि क्या गुरुकी सेवा तिसकों करे और वेद त्रय जो ऋग्यजुसाम इनके निमित्त ब्रह्मचर्य्य धारण करे तद शुद्ध होताहै

ब्रह्मचर्य्यतें उपरंत यज्ञोपवीतपावे तिसतें उपरंत एकवर्षपर्य्यंत उदकोपस्पर्शकर्म्म करे अर्थात् दिन दिनमे मंत्र सहितअपणेसूत्रोक्तविधिकर्के स्नानकरे तिसतें उपरंतपढाणेयोग्यहै इसमे कोई कहतेहैं कि उदकोपस्पर्शनकाहि अर्थहै प्रत्यहमित्यादिएभीध्यान रक्षणाचाहिए। और जिसव्रात्यके पिता पितामह व्रात्यहोवे सो तीनों ब्रह्महत्या करणवालेके तुल्यहैं तिनोंका मंगल स्थानमे जो आगमन और तिनके प्रति ज्ञातिकार्य्य सिद्धिके निमित्त जो गमनहै और भोजन विवाह तिनके वर्जितहैं जेकर एह शुद्धिकी इच्छा करे तां अग्गे कहणा जो प्रायश्चित्तहै सो करे। ऋतुके स्थान एक वर्ष जानणा। तिसतें पुरुष पुरुष प्रति तीनवर्ष ब्रह्मचर्य्य करणे योग्यहै इसतें उपरंत यज्ञोपवीतपावे तिसतें उपरंत एकवर्षपूर्वोक्तउदकोपस्पर्शनकरे अब तिसमें जोमंत्रहैं सोकहतेहैं(यादंतियच्चदूरकेइति सप्तयेनदेवाःपवित्रेणेति। यजुःपवित्रम्। कयानश्चित्रआभुवदूतीसामपवित्रम्। हंसः शुचिषदित्यांगिर

अथब्रह्मचर्य्यानंतरमुपनयनम् ततःसंवत्सरंयावदुदकोपस्पर्शनम्। प्रत्य हंसमंत्रकंस्वगृह्योक्तविधिनास्नानम् ॥ तदनंतरमध्याप्यः। यस्यतुव्रात्य स्यापितृपितामहौव्रात्यौस्यातांतेत्रयोपिब्रह्महशब्दवाच्याः ॥ तेषामागम नम्। तान्प्रतिज्ञातिकार्य्यसिद्ध्यर्थं गमनं भोजनविवाहौच वर्जयेत्। तेषांशु द्धिमिच्छतांवक्ष्यमाणंप्रायश्चित्तम् ऋतोःस्थानेसंवत्सरः तेन प्रतिपुरुषंव त्सरत्रयंब्रह्मचर्य्यंकार्य्यम्॥ ततःसंवत्सरमुदकोपस्पर्शनम् तत्रमंत्राः यादं तियश्चदूरकेइति। सप्तयेनदेवाः पवित्रेणेति ॥ यजुःपवित्रम्। कयानश्चि त्रआभुवदूतीतिसामपवित्रम् हंसःशुचिषदित्यांगिरसम्। एतेचमंत्राःप्राय श्चित्तार्थमध्येतव्याः। कृतप्रायश्चित्तोवाध्याप्यः ॥ यस्यतुप्रपितामहादेरुप नयनंनस्मर्यते तत्रार्थादेतेषामपिपुरुषाणामनुपनीतत्वम् तेसर्वेश्मशानव दशुचयः तेष्वागतेष्वभ्युत्थानं भोजनंच वर्जयेत् आपद्यपिनकुर्यादित्य र्थः तेषांस्वयमेवशुद्धिमिच्छतांप्रायश्चित्तानंतरमुपनयनम् तदनंतरंसंव त्सरमुदकोपस्पर्शनं पूर्वोक्तैर्मंत्रैस्ततोनाध्यापनं किंतुगार्हस्थ्योपदेशनम्

सम्)इतनें मंत्र प्रायश्चित्तके निमित्त पढाणेयोग्यहैं परंतु जिससमय प्रायश्चित्त कर लेवे तव पढाणें योग्यहैं जिसके प्रपितामहादिका उपनयन नहिं स्मरणकीता अर्थात् एह वात श्रवणमे नहि आई कि इनके प्रपितामहादिको यज्ञोपवीतथा जिनके सो प्रपितामहादिथे तिनांपुरुषांको भी अनुपनी तत्वहै सो संपूर्ण श्मशानकी न्यांई अपवित्र होतेहैं ॥ तिनके आगमनमें अभ्युत्थान जो है उठ खडेहोणा सो नहिं करे और भोजनभी तिसके साथ नहिं करे संपत्तिकी क्या वातहै आपत्तिमें भी भोजन अभ्युत्थानको नहिं करे ॥ सो जेकर आपहि शुद्धिकी इच्छाकरें तव तिनको प्रायश्चित्त करणेंतें उपरंत उपनयन करणें योग्यहै। तिसतें उपरंत वर्षभर जलका आचमन रूप जो वेदोक्त कर्म तिसको पूर्वोक्त मंत्रों कर्के करें और तिसते अनंतर तिसको नहिं पढाणा किंतु गृहस्थ धर्मका जो उपदेश तिसको करे ॥

और तिसतें उपरंत उपदिष्ट जो गायत्रीका काल तिसके अतिक्रम विषे वचनहै ततइति इस का अर्थ एह है कि तिसतें उपरंत प्रकृतिकी न्याईं जानणा और नहि उल्लंघन होया जोगायत्री काल तिसकी न्याईं व्यवहार करणें योग्य है अर्थात् उसकी निन्दा नहि करणी ॥ अब आग राजी कहतेहैं व्रात्यस्तोमैरिति व्रात्यस्तोम नाम जो यज्ञ तिसतें पूजन करवाकर्कें संपूर्ण द्विजा तियानें एह प्रायश्चित्तके निमित्त कर्कें फेर यथा विधि कर्कें उपनयनकोंप्राप्त करणा१ अब इसी विषें शंखलिखित स्मृतिसें कहतेहैं व्रात्यइति व्रात्यपुरुष चांद्रायण व्रत करे चपुनः गोदान करे इस का और पूर्वोक्त उद्दालकके व्रतका प्रत्याम्नाय सवा नौ गौआं दानकरे अर्थात् इनका मुल्ल दे देवे। देशके उपद्रवादि कर्कें पतितहै गायत्री जिसकी तिसविषें यमजी कहतेहैं पतितेति जि सकी गायत्री दश १० वर्ष वापंच ५ वर्ष पतितहोवे ब्राह्मणकी विशेष कर्कें तैसेंहि राजन्य

ततउपदिष्टसावित्रीकालातिक्रमे ततऊर्ध्वंप्रकृतिवदनतिक्रांतसावित्रीकाल वत्तव्यवहार्यता। अंगिराः। व्रात्यस्तोमैर्याजयित्वाद्विजातीन्सर्वमेवहि नि ष्कृत्यर्थमिदंकृत्वायथाविध्युपनाययेत् १ अत्रशंखलिखितौ व्रात्यश्चान्द्राय णंचरेत् गोप्रदानंचकुर्य्यादिति। एतस्यचपूर्वोक्तोद्दालकव्रतस्यसपादनवधे नुरूपस्यतत्प्रत्याम्नायस्यतुल्यत्वम् देशोपद्रवादिनापतितसावित्रीके यमः। पतितायस्यसावित्रीदशवर्षाणिपंचच ब्राह्मणस्यविशेषेणतथाराजन्यवैश्य योः१ प्रायश्चित्तंभवेत्तेषांप्रोवाचवदतांवरः ॥ विवस्वतःसुतःश्रीमान्यमोध र्म्मार्थतत्त्वतः २ सशिखंवपनंकृत्वाव्रतंकुर्यात्समाहितः हविष्यंभोजयेदन्ये ब्राह्मणान्सप्तपंचवा ३ एकविंशतिरात्रंतुपिबेत्प्रसृतियावकं ततोयावकशुद्ध स्यतस्योपनयनंस्मृतम् ४ अत्रैकविंशतिरात्रयावकप्रसृतिपानेमासंपयः पानाल्पत्वात्सपादधेनुत्रयमेव

वैश्यकी पतित होवे १ तिनांको प्रायश्चितहोताहै कहण वालेयां विषे श्रेष्ठ और सूर्य्यजीका पुत्र और शोभा वाला ऐसा जो यम सो धर्म्मार्थतत्त्वतें कहताहै२सहित शिखाके मुंडन कर्कें समा धानहोया २ व्रतकों करे और कहतेहैं सात्त ७ वा पंच ५ ब्राह्मणाकों हविष्य भोजन करवावे इसमें एह अभिप्रायहै कि महीनेका जो पयोव्रतहै सो २ प्राजापत्यसें दूणाहै इसकर्कें तिसका प्रत्याम्नाय ५ धेनुहैं तिसके हसाबसे ३ धेनु कहीहैं और इकीस २१ रात्रि प्रसृति क्या लप्प मात्र यवोंका काढा पान करे तिसते उपरंत यावक कर्कें शुद्ध होया जो पुरुष तिसका उपनय न कहाहै ४ इसविषें इकीस २१ रात्रि यावक प्रसृति मात्र पान करणें विषे महीना रोज ज लपानतें इसको छोटा होणेते इसके प्रत्याम्नाय वास्ते सवा त्रय गौआं दान करदेवे अर्थात् इ नका मुल्ल कलपना कर्कें देदेवे

तथेति तैसैंहि इसी पूर्वोक्त विषय विषें गायत्रीकालके व्यतीत होयां तिसमें व्रात्यके अधिकार विषें हारीत जी कहतेहैं तेषामिति तिनांकों प्रायश्चित्त होयाहै क्या महीना रोज दुग्ध पान करे और गौकी सेवा करें और जो पुरुष प्रायश्चित्त कर चुकाहै तिसकों वसिष्टके कहेहोए जो व्रत तिनां कर्के यज्ञोपवीत पावे जैसी प्रकृति क्या ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अपणी अपणी जातीके अनुसार पावे और जैसी ऋतु जैसा छंद होवे तैसा हिकेर ब्राह्मणको वसंत ऋतु क्षत्रीको ग्रीष्म वैश्यको शरद् ऋतु कहीहै और यथाछंद क्या अपणे २ वेदकी विधि कर्के करे ॥ इसमे और विशेष कहतेहैं यद्यपीति इत्थें यम जीका कथन कीयाहोया इक्कीस २१ रात्रिका व्रत है। तांभी इसके विषें महीनेंका जो व्रत किहाहै सो पृथक् जानणा परंतु इसमें क्षीर क्या दुग्ध पानके परिमाणकों न कहणेंतें जितनीक इच्छा होवे तितनाही पान करणा योग्यहै ॥ और यम जी के कथनमें यावक पान है प्रसृति क्या लप्प मात्र तितनाही परिमाणका किहाहै ति

तथास्मिन्नेवविषयेऽतिक्रांतकाले व्रात्याधिकारे हारीतः तेषांप्रायश्चित्तंमासंपयोभक्ष्यंगामनुगच्छेत् ॥ यश्चीर्णप्रायश्चित्तस्तंवसिष्ठव्रतैरुपनयेयुः यथाप्रकृतिऋतुछंदोविशेषात् । ऋतुर्वसंतग्रीष्मशरदादिकःछंदोवेदः स्ववेदोक्तविधिनेत्यर्थः ॥ यद्यपियमोक्तमेकविंशतिरात्रमत्रानुमासंपृथगपिक्षीरपरिमाणानुपदेशाद्यथेष्टमेवपानम् यावकपानंतुप्रसृतिपरिमितमल्पत्वाद्विकल्पः अत्रत्येतिकर्तव्यतायांकिंचिद्गुरुत्वाद्यथोक्तमेवेति इतिव्रात्यता प्रायश्चित्तं त्रयोविंशम् २३ ❀ अथबंधुत्यागेप्रा०एतच्चप्राग्विवृतम् बंधुत्यागे त्रैमासिकंगोवधव्रतं कामतः अकामतस्त्यागेयोगीश्वरोक्तंव्रतचतुष्टयं योज्यमितिमिताक्षरा इतिबंधुत्यागेप्रा०२४ ❀ अथभृत्याध्यापनप्रा० ॥ एतल्लक्षणंतूक्तंप्राक् तच्चपिवेद्ब्रह्मसुवर्चलामित्यनुवृत्तौ विष्णुः भृतकाध्यापनं कृत्वाभृतकाध्यापितस्तथा अनुयोगप्रदानेनत्रीन्पक्षान्नियतः पिबेत् १ पक्षत्रयंब्रह्मसुवर्चलांपिबेदित्यर्थः

सको थोडा होणेंतें विकल्प जानणा ॥ और इस कर्तव्यताविषें यम जीके कथन किये होए प्रायश्चित्तको गुरु क्या वडा होणेंतें यथोक्तहि प्रायश्चित्त करे अर्थात् महीनें वालाही प्रायश्चित्त करे क्यों कि इसमें विकल्प नहिंहैं ॥ एह व्रात्यतारूप जो उपपातक तिसके प्रायश्चित्तका प्रकरण पूराहोयाहै एहप्रकरण तेयांहै २३ ❀ अब बंधुके त्याग विषें प्रायश्चित्त कहतेहैं एतदिति इसका लक्षण पीछे किहाहै इच्छातें बंधुत्याग विषें त्रय ३ महीनेंका गोवध व्रत करें ॥ अकामतें त्यागण विषें याज्ञवल्क्यके कथन कीते होये चार व्रत करे एह मिताक्षरामें कयाहै एह यथाशक्तिकर्के जोडने योग्यहै एहबंधुके त्यागका प्रायश्चित्त समाप्तहोया २४ ॥ ❀ अब मजूरी लेकर्केजो पढाना तिसके विषें प्रायश्चित्त कहतेहैं एतदिति इसका लक्षण पीछे कयाहै ब्रह्मसुवर्चला बूटी नूं पीवे इस प्रसंग विषें विष्णु स्मृतिमे विष्णु जी कहतेहैं ॥ मजूरीले कर्के जो पढावे और मजूरीदे कर्के जो पढे और अनुयोगके प्रदानकर्के त्रय पक्ष ब्रह्मसुवर्चलाबूटीकोपानकरे अनुयोगका अर्थ अगेहै १

अन्विति अनुयोग नाम यशके अथवा द्रव्यके अर्थ अच्छीतरह पडन वालेको भीतुं नाहिं अच्छीतरह पडताहै ऐसा गुरुके कहणेका नामहै और पडन वाला पडाने वालेको अपणी वडयाई वास्ते प्रश्ण पूर्वकखंडनकरे अर्थात् भाक्सेि न पडे तदभीएही प्रायश्चित्त करणायोग्यहै अब इसीमे उदाहरण कहतेहैं यथेति जैसे अहिंसा जो है सो परमधर्म्महै ऐसा गुरुने कहा तो शिष्य कहताहै कैसे यज्ञमे हिंसा होतीहै तो गुरु कहताहै कि यज्ञकी जो हिंसा है उसका नाम हिंसा नाहिं है तो शिष्यकहताहै कि हिंसाशब्दका अर्थ प्राण वियोगहै सो यज्ञमें भी है सो किसप्रकार अहिंसाहै इत्यादिरूप जो खंडनहै इसप्रकार विवाद करदे होए मेरेको लोक अधिक विद्यावान् जाणेगे एह शिष्यका अभिप्राय हैं और गुरुके पक्ष मे स्पष्ट जानणा तैसेहि और स्मृतिमे कहतेहैं

अनुयोगोयशोर्थंद्रव्यार्थंवा सम्यगधीयानस्य न सम्यगधीषे इत्याक्षेपः अध्येताऽध्यापयितारंस्वोत्कर्षार्थंप्रश्णपूर्वमाक्षिपतिचेत्तदापीदंप्रायाश्चित्तं कुर्यादित्यर्थः यथाऽहिंसा परमोधर्म्मइति गुरुणोक्ते कथंयागेहिंसा तत श्चयागीयाहिंसानहिंसेत्युक्तेहिंसाशब्दार्थोवाच्यः प्राणवियोगानुकूलव्या पारश्चेत्तदायागेपि सवर्त्तते सा कथमहिंसेत्यादिरूपआक्षेपः॥ एवंविवदं तंमांलोकोऽधिकंविद्यावंतंजानीते इतिशिष्याभिप्रायः गुरुपक्षेस्पष्टम् तथा चस्मृत्यन्तरम् कृतानुयोगानध्येतुः पतितान्मनुरब्रवीदिति त्रीन्पक्षांस्तु पयःपिवेदितिहारीतीयपाठः॥ उत्कर्षहेतोरधीयानस्यकिंपठसिनाशितं त्वयेत्येवंपर्य्यनुयोगोऽनुयोगप्रदानमितिशेखरः अनुयोगप्रदानाभ्यासेपा तित्यमिति॥ शातातपः॥ ब्रह्मविक्रयानुयोगनियोगेषुचतुर्विंशतिर्ब्रह्मरूपा णिदध्यादिति॥ ब्रह्मरूपंवेदपारायणम् ब्रह्मविक्रयोमूल्येनवेदपाठोवे दाध्यापनंवा अनुयोगस्तिरस्कारार्थंहेतुवादप्रश्णः नियोगोभयंकरस्था नादौशिष्यादेःप्रेरणम्

कृतेति पडाने वाले साथ जो अनुयोग करतेहैं सो मनु जीने पतित कहेहैं त्रय पक्ष दुग्ध पान करे एह हारीत जीका वचनहै॥ अपणी वडयाई वास्ते अच्छीतरह पडनवाले शिष्यको कहणा कि तूं क्यापडताहैंतैनें नाशकियाहै इसप्रकार जो कथन करणा उसका नाम अनुयोगप्रदानहै एहशेखरका मतहै अनुयोगप्रदानविषे वहुतअभ्यास होवे तद पतित होताहै अब शातातपजी कहतेहैं ब्रह्मेति वेद वेचणेके विषे और अनुयोग नियोग विषे चौवीस २४ वेदके पारायण करे तद शुद्ध होताहै। ब्रह्मविक्रय क्या मुल्लेकर वेद पाठ करणा अथवा मुल्लेकर वेदका पढाणा॥ और अनुयोगक्या अनादरकरणेवास्ते जो हेतुपूर्वक प्रश्णहै॥ और नियोगक्या भयवाले स्थानविषे जो शिष्यादियोंका भेजणा।

अस्येति इस प्रायश्चित्तका (एतदेवव्रतंकुर्यु रुपपातकिनोद्विजाः अवकीर्णिवर्जंशुद्धयर्थं चांद्रायण मथापिवेति) एह मनुजीके कथन किये होए और (उपपातकशुद्धिः स्यादेवंचांद्रायणेनतु पयसावापिमासेनपराकेणाथवापुनः) एहयाज्ञवल्क्यजीके कथन कीते होए प्रायश्चित्तों करके जात्यादियोंकी अपेक्षा करके इसमे विकल्प जानणे योग्यहै अर्थात् जैसीजाति ब्राह्मणा दिकी होवे वा जैसी शक्ति होवे तैसाहि प्रायश्चित्तकरे ॥ इस विषे प्रसंगमे जो आयाहै सो कुछक वसिष्टजी कहतेहैं पतितेति पतित चण्डाल शवको वेद सुनाणेमे त्रयरात्रि वाणी रोकरक्खे और भोजन न करे सहस्रपरमको अभ्यास करे तद पवित्र होताहै अव इसीका अर्थ स्पष्ट कक कहतेहैं शवश्रवण क्या मुडदे पास वेद पढना तिसका प्रा० इनप्रकारहै कि पतितादियोंके समीप जितनाकाल वेद पढे तितने हजार १००० मंत्रोंकाअभ्यासकरे तद

अस्यप्रायश्चित्तस्यमनुयोगीश्वरोक्तसामान्यप्रायश्चित्तैर्जात्याद्यपेक्षयावि कल्पः ॥ अत्रप्रासंगिकंकिंचिदिति वसिष्ठः ॥ पतितचण्डालशवश्रवणे त्रिरात्रंवाग्यताअनश्नंतआसीरन् ॥ सहस्रपरमंवाऽभ्यस्यन्तःपूताभवं तीतिविज्ञायते ॥ शवसमीपेऽध्ययनं शवश्रवणम् ॥ पतितादिसन्निधौ यावद्ब्रह्माधीतं तावद्ब्रह्मसहस्रपरमं सहस्रसंख्या यथाभवतितथाऽभ्य स्यन्तः पूयंतइत्यर्थः ॥ इदंचप्रकीर्णकेप्युक्तमिति इतिभृत्याध्यापनादिप्राय श्चितम् २५ २६ ॥ अथापण्यविक्रयेप्रा० । प्रदर्शितोऽस्यविषयः पू र्वम् ॥ हारीतः ॥ गुडतिलपुष्पमधुफलपक्वान्नविक्रये सोमायनम् (सोमकृ च्छ्रः)लाक्षालवणमधुमांसतैलक्षीरदधिघृतगंधतक्रचर्म्मवाससामन्यतमवि क्रयेचांद्रायणम् ॥

पवित्र होताहै एह प्रकीर्णक प्रकरणमें भी कहाहै परंतु अभ्यास इसजगा गायत्रीका अथवा जोमंत्रउसजगापढेथे तिनांकाजानणा एह मुल्लेकर पढानेका प्रायश्चित्तसमाप्तहोया २५ । २६ अव जिनोंवस्तुयोंके वेचणेमें पापहोताहै तिनका प्रायश्चित्तकहतेहैं इसकालक्षण पीछेकहाहै इ समें हारीत जीकावचनहै गुडेति गुड तिलपुष्प मूलक्या कचालू आलू इत्यादि फल अंब केला आरु खरवूजा इत्यादि वहुत और पक्वान्न इन संपूर्ण वस्तुयोंके वेचणेतें सोमायण व्रत करे तद शुद्ध होताहै ॥ इसीकानामसोमकृच्छ्रभीहै और लाख लूण मखीर मांस तेल दुग्ध दधि घृत गंध वालीवस्तु तक्र क्या छाह चर्म्म वस्त्र इनमेंसें एकके वेंचणेमेभी चांद्रायण व्रत करे तद शुद्धहोताहै अर्थात् एक एकके वेंचणेमे चान्द्रायणहि व्रत करणा योग्यहै और चांद्रायण सोमायन का विशेष देखणा होवे तां व्रत करणमे देखलेणा ॥

तथेति तैसेही उन्न केश केसर पृथ्वीगौ बैल घर पत्थरशस्त्र इनके वेचणेविषे और मच्छीमांस आंदर हड्डी शंख नख शिप्पी इनके वेचणे विषे तप्तकृच्छ्र व्रतकरे तद शुद्ध होताहै ॥ तैसेहि ऊर्णि केशि केसरी इसपाठ विषे ऊर्णी क्याभिड्डुतें आदलेकर और केशीक्या चमर मृगादि और केसरि क्याघोडेतोंआदलेकर जानणें ॥ पूर्व पाठ विषें केसर क्या मृग विशेष जानणा और हिंगु गुग्गुल हडताल मनःशिलाक्या धातु विशेष सुरमा गेरी लाख लूण मणि मोंती मुंगा वैणव क्या वंजकेपात्र और वंज मृत्तिकाकापात्र इनके वेचणे विषे तप्तकृच्छ्र व्रत करे तद शुद्धहोताहै ॥ और वगीचा तलाआ झवचा बाउली और सुकृत जो व्रत वा पुण्य इन संपूर्णांके वेचणे विषे त्रिकाल स्नानकरे और पृथ्वीमे शयनकरे और चौथे पहर भोजन करे और दश तेंअधिक हजार

तथोर्णाकेशकेसरभूधेन्वनुडुद्वेश्मशस्त्रविक्रये मत्स्यमांसस्नाय्वस्थिशंखशुक्तिविक्रयेचतप्तकृच्छ्रः। तथोर्णिकेशिकेसरीतिपाठांतरम् तत्रोर्णिनोमेषादयः केशिनश्चमरादयःकेसरिणोऽश्वाद्याः । पूर्वपाठेकेसरामृगविशेषाःहिंगुगुग्गुलहरितालमनःशिलांजनगैरिकलाक्षालवणमणिमुक्ताप्रवालवैणववेणुमृण्मयविक्रयेचतप्तकृच्छ्रः ॥ आरामतडागोदपानपुष्करिणीसुकृतविक्रये त्रिपवणस्नाय्यधःशायीचतुर्थकालाहारोदशसहस्रंगायत्रींजपन् संवत्सरेण पूतोभवति हीनमानोन्मानद्रव्यसंकीर्णविक्रयेचेति हीनमानंकूटप्रस्थादि हीनोन्मानंकूटतुलादि ताभ्यांविक्रये अन्यवस्तुमिश्रितमन्यवस्तुद्रव्यसंकीर्णं यथा जलमिश्रितंदुग्धम् यवमिश्रितोगोधूमस्तद्विक्रये विषमतुलादिधारणे त्रिषवणेत्यादि इदमभ्यासे सकृद्विषयेतुकृच्छ्रार्द्धम्

१०१० गायत्रीका जपकरतारहे तद वर्ष रोज करकें पवित्रहोताहै और हीनमान हीनोन्मान और द्रव्यसंकीर्ण इनकें वेचणे विषे भी एहि व्रतजानणा इनकों स्पष्ट करकें अग्गे कहलेहैं हीन मानक्या झूठा सेरटुपे रखणे और हीनोन्मान क्या झूठी कंडीतकडी रखणी तिनां करकें वेचणे विषे और दूसरी वस्तु करकें युक्त जो वस्तु सो द्रव्यसंकीर्ण किहाहै जैसें जलयुक्त दुग्धहै और यवयुक्त कणकहै तिसके वेचणे विषे और झूठे तोलकेधारण विषे अर्थात् सेर वट्टे और तकडी खोटीनहि परंतु तोलणवालेकी क्रिया खोटीहै तिसविषे त्रिषवण इत्यादि पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा परंतु एह वहुत अभ्यास विषे जानणा एकवार विषे अर्द्धकृच्छ्रव्रत करे तद शुद्धहोताहै ॥

नोति रस्से आदिके वेचणेविषे प्राजापत्य व्रतकरे अब शंख लिखितस्मृतिका वाक्य कहतेहैं नेति नहिं वेचणे योग्य जो वस्तु तिनांको न वेचे ॥ तिल तेल दधि मखीर लूण लाख मदिरा मास सुकृत क्या पुण्य अन्न स्त्री पुरुष हस्ति अश्व गंध पट्रस क्षौमक्या अलसीका कपडा काला चर्म सोमवल्लीका जल नील इन संपूर्णवस्तुयोंके वेचणे करके शीघ्र हि पुरुष पतित होताहै ब्राह्मणवेचे तद वर्षरोज तप्तकृच्छ्र व्रतकरे तो शुद्धहोताहै ॥ तैसेंहि शस्त्र रस्से भूमि अश्वादि इनके वेचणे विषे भी पूर्वोक्तप्रायश्चित्त करणा और घर यज्ञशाला बाग बगीचा सभा पानीकी धर्मशाला तलाओ खाता पुल इनांको वेचकरके तप्तकृच्छ्र व्रत करे तद शुद्ध होताहै ॥ उद्यानागम इस पाठ विषे आगम नाम वेद जानणा ॥ अब पराशर जी कहतेहैं विक्रीयेति कन्या और गौको वेच

निगडादिविक्रयेप्राजापत्यम् ॥ शंखलिखितौ नविक्रीणीयादविक्रेयाणि ॥ तिलतैलदधिक्षौद्रलवणलाक्षामद्यमांससुकृतान्नस्त्रीपुरुषहस्त्यश्वगंधरस क्षौमकृष्णाजिनसोमोदकनीलीविक्रयात्सद्यः पतति ॥ ब्राह्मणइत्युपक्रम्य संवत्सरंतप्तकृच्छ्रमाचरेदिति ॥ तथा शस्त्रबंधनभूम्येकशफविक्रयेचैतदेव गृहप्रतिश्रयोद्यानारामसभाप्रपातडागपूर्त्तसेतुविक्रयं कृत्वा तप्तकृच्छ्रमा चरेत् । बंधनं निगडादि उद्यानागमेतिपाठे आगमोवेदः । पराशरः ॥ विक्री यकन्यकांगांचकृच्छ्रंसांतपनंचरेदिति । चतुर्विंशतिमते । सुरायाविक्रयं कृ त्वाचरेत्सौम्यचतुष्टयम् लाक्षालवणमांसानांचरेच्चांद्रायणत्रयम् १ मध्वा ज्यतिलसोमानांचरेच्चांद्रायणद्वयम् पयःपायसपूपानांचरेच्चांद्रायणव्रतम् २ ॥ दध्नश्चेक्षुरसस्यैवगुडखंडादिविक्रये सर्वेषांस्नेहपक्वानांपराकंतुसमाच रेत् ३ कदलीनारिकेरंचनारंगबीजपूरकम् एतेषांपादकृच्छ्रस्याजंबीरा देस्तथैवच ॥ ४ ॥ कस्तूरिकादिगंधानांविक्रयेकृच्छ्रमाचरेत्

करके कृच्छ्र सांतपन व्रतकरे तद शुद्ध होताहै । चतुर्विंशतिमतविषे कहतेहैं सुरायाइति मदिरा को वेचकरके चार चांद्रायण करे और लाख लूण मांसको वेचे तद तीन चांद्रायण व्रत करे १ और मखीर घृत तेल अमृतवल्लीका रस इनांको वेचकरके दो २ चांद्रायण व्रत करे और दुग्ध क्षीर पूडे इनांके वेचणेविषें चांद्रायण व्रत करे २ और दधि गन्नेकारस गुड खंड इनांके वेचणे विषें और संपूर्ण स्नेहकरके पक्के होएके वेचणे विषें पराक व्रत करे ३ और केला नरेल नारंगी मौकडी और जंवीरी तें आद लेकर जो फल तिनांके वेचणे विषें कृच्छ्रका एक पाद व्रत करे तद शुद्ध होताहै ४ और कस्तूरिकादि सुगंधिके वेचणे विषें कृच्छ्र व्रत करे

केति कर्पूरादिके वेचणें विषें अर्द्ध कृच्छ्र व्रत करे और हिंग ते आद लेकर वेचणेंविषे एकदिनका कृच्छ्र व्रतकरे तदशुद्ध होताहै ५ और तिलां को वेचकर्के प्राजापत्य व्रतकरे तद शुद्धहोताहै धर्म्मेति धर्मवास्ते इक्कठाकीताजोअन्नादिहै सोकहिए धर्मार्थ ऐसे यज्ञार्थ भी जानणा और क्रिमिजात जो हैं पट्टवस्त्रादि अथवा कीडोंके समूह जिनतें वस्त्रबनतेहैं तिनको वेंचे और रक्त पीतादिवस्त्र काला चर्म धर्मके अर्थ वेचे तद त्रय दिनका व्रत करे एह गर्ग जीका वचनहै ६ धनकर्के मोहि तहोया २ लाभके वास्ते गौको वेचे तद प्राजापत्य व्रत करे और हस्तिके वेचणेंमें चांद्रायण व्रत करे ७ और गधा अश्व खचरा उष्ट्र इनांके वेचणे विषें पराक व्रत करे और पुत्रके वेचणे विषे एही व्रत दूणा करणा ८ और स्त्रीयोंके वेचणें विषे चांद्रायण व्रतकरे तद शुद्धहोताहै और पुरुषके

कर्पूरादेस्तदर्धंस्याद्दिनंहिंग्वादिविक्रये ५ दिंनमेकदिनीयंकृच्छ्रम्।तिलानां विक्रयंकृत्वाप्राजापत्यंसमाचरेदिति धर्मार्थंकृमिजातांश्चयज्ञार्थंविक्रयंनयेत् रक्तपीतादिवस्त्राणिकृष्णाजिनमथापिवा ॥ विक्रयेत्र्यहमेतेषांगर्गस्यवचनं यथा ६ गोविक्रयंनरःकृत्वालाभार्थंधनमोहितः प्राजापत्यंप्रकुर्वीतगजाना मैन्दवंस्मृतम् ७ खराश्वाश्वतराणांचकरभाणांचविक्रये पराकंतत्रकुर्वीतसु तानांद्विगुणंचरेत् ८ करभाउष्ट्राः नारीणांविक्रयंकृत्वाचरेच्चांद्रायणव्रतम् द्विगुणंपुरुषस्यैवव्रतमाहुर्मनीषिणः ९ चांद्रायणंप्रकुर्वीतएकाहाद्वेदविक्रये अंगानांतुपराकःस्यात्स्मृतीनांकृच्छ्रमाचरेत् १० इतिहासपुराणानांचरेत्सां तपनंद्विजः।रहस्यंपंचरात्राणांकृच्छ्रमेवसमाचरेत् ११ गाथानांनीतिशास्त्रा णांप्राकृतानांतथैवच सर्वासामेवविद्यानांपादकृच्छ्रंसमाचरेत् १२

वेचणे विषे बुद्धिमानोंने एही व्रतदूणाकिहाहै ९ और एकदिनके वेदपाठके वेचणे विषे चांद्रायण व्रत करे और वेदके अंगवेचणेविषें पराक व्रतकरे और स्मृतियोंके वेचणेंम कृच्छ्र व्रत करे १० और इतिहास पुराणके वेचणे विषे सांतपनव्रत करे और रहस्य शास्त्र और पंचरात्र जो तांत्रिक इनांके वेचणें विषे कृच्छ्रव्रतहि करे ११ और गाथा नीतिशास्त्र जो साहित्य और प्राकृत जो प्रकृतिपुरुषका कथन अर्थात् सांख्यशास्त्र इनांके वेचणेंमें भी कृच्छ्र व्रत करे और इनांते अतिरिक्त विद्याके वेचणेमे पाद कृच्छ्र व्रतकरे तद शुद्ध होताहै १२ परंतु वेचणा इसजगा ऐसे जानणा कि तिसतिस शास्त्रके अध्ययनका फल वेचणा अथवा तिनके पुस्तकवेचणें एह अर्थहै

च्यवनऋषिजीकहतेहैं ॥ दधीति दधि मधु पिष्ट क्या पीतीहोई श्रौषधादि वस्तु घृत पकान्न तेल छाछ दुग्धरस विष शस्त्र तिल अश्व नील रेशमके वस्त्र लाखकर्के रंगेहोए वस्त्र लूण इनांके वेचणें विषे प्राजापत्यव्रत करणे योग्यहै ॥ अब शातातपजी कहतेहैं आमेति कच्चामांस मदिरा अमृतवल्लीकारस लाखलूण घृत और संपूर्ण पुण्यके वेचणविषे द्विजचांद्रायणव्रतकरे तद शुद्धहोताहै पिछे लाक्षारक्त किहाथा इसमें लाक्षा कहीहै इतना विशेषहै १ विष्णुजी कहतेहैं ॥ रक्तेति लालवस्त्र लालरंग गुड गंध मखीर रस उन्न इनांके वेचणें वाला पुरुष त्रयदिनका उपवासव्रत करे १ और पुरुषादिके विना प्राणी जो कुकुट मेषादि तिनांका वेचणा क्योंकि हिंसाका संभव होणेतें ॥ और भू

च्यवनः। दधिमधुपिष्टसर्पिःपकान्नतैलतक्रक्षीररससविषशस्त्रतिलाश्वनीलकौशेयवासोलाक्षारक्तलवणविक्रयेप्राजापत्यंचरेत्। शातातपः। आममांसमुरासोमलाक्षालवणसर्पिषाम् विक्रयेसर्वपुण्यानांद्विजश्चांद्रायणंचरेत् १ ॥ विष्णुः ॥ रक्तवस्त्ररक्तरंगगुडगंधमधुरसोर्णाविक्रयीत्रिरात्रमुपवसेत् ॥ प्राणिभूपुण्यसोमविक्रयीतप्तकृच्छ्रंकुर्यात् ॥ तंचभूयश्चोपनयेत् ॥ शंखः ॥ धारयित्वातुलांवक्रांविषमांकारयन्वणिक् सुरालवणमद्यानांकृत्वाक्षीरस्यविक्रयम् १ लाक्षायाश्चैवमांसस्यकुर्य्यादेवमहाव्रतम् विक्रेताप्राणिनामब्दं तिलस्यचतथाचरेदिति २ ॥ महाव्रतंद्वादशाब्दम् एतत्तुवहुशोऽभ्यस्तेवोध्यमिति ॥

मि पुण्य सोमइनांकों वेचणवाला तप्तकृच्छ्र व्रतकरे फेर यज्ञोपवीत पावे तद शुद्धहोताहै ॥ अब शंखजी कहतेहैं ॥ धारयित्वेति तकडीकों टेडी धारणकर्के जो वणियां विषम करे अर्थात् देणेमें जिसकर्के थोडा जावे और लयणेंमें वहुतआवे ऐसी करे तिसकों और मदिरा लवण मद्य दुग्ध इनांकों वेच कर्के १ और लाख मांसके वेचणें विषें महाव्रत करे अर्थात् वारां १२ वर्षका व्रतकरे तदशुद्धहोताहै और प्राणी जो पुरुषादिके विना गौ हस्ति अश्व गर्दभ पक्षि इत्यादियोंके वेचणें में और तिलके वेचणेंमें भी वर्ष रोजका व्रतकरें। एह प्रायश्चित्त पुरुषके वहुत अभ्यास विषें जानणेयोग्यहै और अल्पापराधविषे पूर्वोक्त विष्णुजीकाहि वचन देखणेयोग्यहै

ब्राह्मेति ब्राह्मण लवण पक्कान्न मधु दुग्ध दधि घृत जल संपूर्ण गंध तिल रक्त वस्त्र गुड तैल ग्राम्यके पशुयांविचों घोडा गधा इत्यादि और संपूर्ण वनके पशु बकरी भेड इत्यादि विद्या गौ शंख उन इनमेंसे एक एकके वेचणें में प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्धहोता है। शंख जी कहतेहैं आरामेति बगीचा तलाओ झवचा बाउली पुण्य सोम क्या अमृत वल्लीका रस इनांके वेचणे में त्रिकाल स्नान करे पृथ्वीमें शयन करे चौथे पहर भोजन करे तो वर्ष रोज करकें शुद्ध होताहै ॥ सुमन्तुजीकहतेहैं देवर्षीति देवर्षि करकें देवताकी और ऋषिकी प्रतिमा सोम और संपूर्णलोकोंके विश्राम स्थानकेवृक्ष और अपनी संतान और कूप झवआदान क्या दित्तिहोई वस्तु और अपणे आपका वेचणा इनमें त्रयकृच्छ्र व्रत करे ॥ भविष्यत्पुराणविषे

ब्राह्मणस्यलवणंपक्कान्नंमधुक्षीरंदधिघृतमुदकंसर्वगंधास्तिलारक्तंवासोगुड तैलानि ग्राम्यपशूनामेकशफाश्च सर्वेचारण्याःपशवोविद्यागावःशंखश्चो र्णश्चेति विक्रयणेएकैकस्मिन्प्राजापत्यंचरेदिति ॥ सएव ॥ आरामतडागोद पानपुष्करिणीसुकृतसोमविक्रयेत्रिषवणस्नाय्यधःशायीचतुर्थकालाहारः ॥ संवत्सरेणपूतोभवतीति ॥ सुमन्तुः ॥ देवर्षिसोमचैत्यात्मापत्यकूपोदपानदा नात्मनांविक्रयेकृच्छ्रत्रयंचरेदिति । देवर्षीतिप्रतिमाभिप्रायेण ॥ भविष्यत्पु राणे गुडंतिलांस्तथानीलींकेशगोधूमशल्यकान् विक्रीयब्राह्मणोगांचकृच्छ्रं सांतपनंचरेदिति १ ॥ गोविक्रयेनिंदार्थवादमाह यमः ॥ गवांविक्रयकारी तुगविरोमाणियानितु तावद्वर्षसहस्राणिगवांगोष्ठेकृमिर्भवेदिति १ एता निलघुगुरुप्रायश्चित्तानि कामाकामसकृच्छक्त्याद्यपेक्षया योजनीयानि ॥ इदंचसर्वप्रायश्चित्तजातमापदि वैश्यवृत्त्याजीवतोब्राह्मणस्यैव इतरेषां त्वापदिनदोषः ॥ वैश्यवृत्त्यात्चविक्रेयंब्राह्मणस्यपयोदधीतिनारदोक्तेः

लिखतेहैं ॥ गुडामिति गुड तिल नील केश कणक और शल्यक क्या मृगाविशेष और गौ इनां को वेचकरकें कृच्छ्र सांतपन व्रतकरे १ अवगौके वेचणविषे निंदाकहतेहैं यमजी ॥ गवामिति गौ आंको वेचण वाला पुरुष जितनें गौके रोमहैं तितनें हजार वर्ष गोशाला विषें कीडारहताहै एह जो लघु गुरु प्रायश्चित्तहैं सो काम अकाम एकवार बहुत वार शक्त्यादियोंकी अपेक्षा करकें जोडने योग्यहैं परंतु इसमें ऐसाविचारहै कि एह संपूर्ण जो पूर्वोक्त प्रायश्चित्तका समूहहै सो एह आपत्ति विषें वैश्यवृत्ति करकें जीविका करण वाले ब्राह्मणकोंहि जानणा औरोंको आप त्तिविषें दोष नहिंहै इसमें प्रमाणकहतेहैं वैश्येति वैश्य वृत्तिविषें ब्राह्मणको पय दधि नहिं वेचणा चाहिए एह नारदजी का कथनहै ।

और मिताक्षरा विषें कहाहै यत्रेति जिसविषें निषेधहै तिस विषें विधिभीहै इसी कारणतें किते कितेक प्रायश्चित्त विधिविषें ब्राह्मणका ग्रहण कियाहै और शूद्रकों आपत्ति विषेंहि दोषकाअभाव शूलपाणि जीनें कहाहै सो अच्छानहि तैसेंहि पराशरजीकहतेहैं लवणमिति लवण मखीर मदिरा दधि तक्रघृत दुग्ध इसकर्के शूद्र शूद्रजातिकों दोष नाहिं कहतेहैं इनके वेचणे विषें सभनों विषें विक्रयकों करे १ और कालिकापुराण विषें भी कहाहै विक्रयमिति संपूर्ण वस्तुयोंकों वेचता होया शूद्र दोष वाला नहि होताहै मखीर चर्म मदिरा लाख मांस इनांका त्यागकर्के और संपूर्ण वस्तुको वेच लेवे १ तिसके विषे पराशर और कालिकापुराण इनके दोनो वाक्योंको आपत्ति विषयविषे प्रमाणका अभावहोणेतें अर्थात् आपत्तिमे हि दोषका अभावहै और आपत्ति विना दोषहै एह

मिताक्षरायाम् यत्रचानिषेधस्तत्रैवप्रायोविधेयः अतएव क्वचित्क्वचित्प्राय श्चित्तविधौब्राह्मणग्रहणंकृतम् ॥ शूद्रस्यापद्येवदोषाभावमाहशूलपाणिः ॥ तन्नसाधीयः तथाचपराशरः। लवणंमधुमद्यंवादधितक्रंघृतंपयः नदुष्येच्छू द्रजातीनांकुर्यात्सर्वेषुविक्रयम् १ कालिकापुराणेपि । विक्रयंसर्ववस्तू नांकुर्वन्शूद्रोनदोषभाक् मधुचर्मसुरांलाक्षांत्यक्त्वामांसंचपंचमामिति १ ॥ तत्रानयोर्वाक्ययोरापद्विषयत्वेप्रमाणाभावात् अतश्चशूद्रस्यानापद्यपिम ध्वादिपंचव्यतिरिक्तानिविक्रेयाणि क्षत्रियवैश्ययोस्त्वनापदिशूद्रवत्प्रतिप्र सवाभावात्सर्वाण्यविक्रेयाणि । आपदितुनदोषः ॥ निषेधानांप्रायश्चित्तानां चब्राह्मणमात्रविषयत्वोक्तेः ॥ ब्राह्मणानामेवत्वापदिवैश्यवृत्त्याजीवितुंदो षइतित्वार्षः ॥ इदंचप्रायश्चित्तजातमपण्यविक्रयार्जितधनपरित्यागपूर्व कंकार्यमित्याह मनुः

निर्णय नहि हुंदा इसी कारणतें शूद्रको आपत्तिके विनाभी मध्वादि पंचते अतिरिक्त वस्तु वेचणे योग्यहैं ॥ और क्षत्रिय वैश्यकों आपत्तिते विना शूद्रको न्यांई प्रतिप्रसवके अभाव होणेतें (निषेधका जो निषेधहै सो प्रतिप्रसव किहाहै) संपूर्ण अविक्रेय क्या नाहिं वेचणेयोग्यहैं ॥ और आपत्ति विषे दोष नहिंहै क्योंकि निषेधोंकों और प्रायश्चित्ताको ब्राह्मण मात्राका विषय होणेतें ॥ और ब्राह्मणांकोहि आपत्तिविषे वैश्य वृत्तिकर्के जीविकाकरणे सें दोषहै एह ऋषियोंका मतहै ॥ एह संपूर्ण प्रायश्चित्तोंका जो समूह है इसको अपण्य क्या जोनाहि वेचणे योग्य वस्तु तिसका वेचणा तिसकर्के इकठा कीता जो धनतिसको त्याग कर्के पिच्छें करे । इह मनुजी कहतेहैं

यदिति जो ब्राह्मण खोटे कर्म कर्केधन इकठा करतेहैं तिस कें त्यागणे कर्के हि शुद्ध होतेहैं जप करणे कर्के वा तपकरणे कर्के शुद्ध होतेहैं १ इस विषें जप और तपका विकल्प जानणा अर्थात् चाहे जप करे अथवा तप करे ॥ काममिति खेती करण वाला पुरुष आपही खेती विषे कामनासें उत्पन्न कर्के थोडा काल स्थित रहण वाले जो शुद्ध तिल तिनांको धर्मके वास्ते वेचदेवे २ इसी विषे कृष्यादि ग्रहण नियम वास्ते जानणा और तिस कर्के खरीदे जो तिल तिनांके वेचणे विषे दोषहोताहै इस विषें भी पूर्वोक्त सामान्य उपपातक प्रायश्चित्तों कर्के विकल्प जानणा तिसविषे आपत्ति विना त्रयमहीने का मनुजीका व्रत जानणा और आपत्ति विषे याज्ञवल्क्यके चारव्रत जानणे एह व्यवस्थाहै एह नहि वेचणे योग्य जोवस्तु तिसके वेचणेके प्रायश्चित्तका प्रकरणपूराहोआ ॥ २७ ॥ ❀ इससे उपरंत

यद्गर्हितेनार्जयंतिकर्मणाब्राह्मणाधनम् ॥ तस्योत्सर्गेणशुद्ध्यंतिजप्येनतपसैवचेति ॥ १ ॥ अत्रजपतपसोर्विकल्पइति ॥ काममुत्पाद्यकृष्यांतुस्वयमेवकृषीवलः विक्रीणीतातिलान्शुद्धान्धर्मार्थमचिरस्थितान् ॥ २ ॥ कृष्यादिग्रहणंनियमार्थम् ॥ तेनक्रीतानांतिलानांविक्रयेदोषएवअत्रापिसामान्योपपातकप्रायश्चित्तैर्विकल्पः तत्रानापदित्रैमासिकंमानवम् आपदितुयाज्ञवल्कयीयव्रतचतुष्टयमितिव्यवस्था इत्यपण्यविक्रयेप्रा ० २७ ❀ एतदनंतरमाकराधिकार १ महायंत्रप्रवर्तनौ २ षधीहिंसा ३ स्त्र्याजीवना ४ भिचार ५ मूलकर्माणि ६ गणनायांव्याकृतानि । तत्रसामान्योपपातकप्रायश्चित्तानि मनुयाज्ञवल्क्योक्तानि अभ्यासे त्रैमासिकंमानवमनभ्यासेयोगीश्वरोक्तंव्रतचतुष्टयम् तत्रापिजातिशक्तिगुणापेक्षयातारतम्यंबोध्यम् अभिचारप्रायश्चित्तमयाज्ययाजनप्रसंगेपिप्रागुक्तम् ओषधीहिंसाप्रायश्चित्तमग्रेद्रुमच्छेदेपिवक्ष्यते इत्याकराधिकारादिप्रा ०।२८।२९।३०।३१।३२।३३

आकराधिकार १ महायंत्रप्रवर्त्तन २ ओषधीहिंसा ३ स्त्र्याजीवन ४ अभिचार ५ मूलकर्म ६ इनोंके अर्थ पीछे गणना विषे कहेहैं तिनांविषे सामान्य उपपातक प्रायश्चित्त मनु याज्ञवल्क्यकेकहे होए अभ्यास विषे त्रय ३ महीनेंका मनुजीका व्रत जानणा औंर अनभ्यास विषें याज्ञ वल्क्यके कथन कीयेहोए चारव्रत जानणे तिनां विषेभी जाति शक्ति गुणकी अपेक्षा कर्के न्यूनाधिकताजानणी अर्थात् जैसी जाति शक्ति औंर गुणहोवे तैसाही प्रायश्चित्त करणे योग्यहै कैवार इसका अर्थ पिछे होचुकाहै और अभिचारका प्रायश्चित्त अयाज्ययाजनके प्रसंग विषेभी पीछे कहाहै ओषधीहिंसाका प्रायश्चित्त अग्गे वृक्षच्छेद विषेभी कहेंगे एहखाणाजोहैं लूणलोहादिकी तिनके अधिकारका और महा यंत्रके प्रवर्त्तनादिका प्रायश्चित्त पूरा होया २८।२९।३०।३१।३२।३३)

अब वृक्षके कटणे विषे प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं फलेति फलदेणे वाले वृक्षोंके कटणे विषें गायत्र्यादि ऋचाका सौं १०० जपकरे और गुल्म वल्ली लता पुष्प वाले वृक्ष वीरुध इनांके कटणें विषेभी पूर्वोक्त जप करे ता शुद्धहोनाहै॥ १ ॥ इसका अर्थ स्पष्टकर्के दिखातेहैं फलदानामिति फल देणे वाले जो आम्र पनसादि वृक्षहैं तिनांके कटणे विषे तैसेहि गुल्म जो हैं डालेसें रहित जानणे चपुना कुब्जकादि जानणे और वडीलता जो हैं ग्लोतें लेकर और लता जो हैं वृक्षोंकी शाखामे सक्त और गुच्छे कर्के युक्त जो लता है सोवीरुधकहीहै सो कूष्मांडयादि अर्थात् पिंठदीवेलतें आदिलेकरजानणी और मतकहतेहैं गुल्म मालत्यादि जानणे और लता द्राक्षादि जानणी इनोंके विषे वहुवचन आदि के अर्थ वास्ते है

अथद्रुमच्छेदेप्रा० ।मनुः। फलदानांतुवृक्षाणांछेदनेजप्यमृक्शतम् गुल्मवल्लीलतानांचपुष्पितानांचवीरुधाम् १ फलदानामाम्रपनसादीनांवृक्षाणांछेदने तथा गुल्माअप्रकांडाः कुब्जकादयश्च वृहल्लतावल्ल्योगुडूच्यादयः लतावृक्षशाखासक्ताः प्रतानिन्योलतावीरुधःकूष्मांडयादयः॥ गुल्मामालत्यादयः लताद्राक्षादयः वहुवचनमाद्यर्थं ततः क्षुपाः करवीरादयः प्रतानाः सारिवादयः ओषध्यःशाल्यादय इतिशेखरः ॥ पुष्पितानामितिगुल्मादिभिःसंवद्ध्यतइत्यपरार्कः ॥ पुष्पितानामुक्तेतराणांपूजार्हाणांमुनिवृक्षाणामित्यन्ये ॥ एतच्छेदनेचसावित्र्यादेर्ऋचःशतंजप्यम् इदंफलवद्वृक्षादिच्छेदनेलघुप्रायश्चित्तं अज्ञानतः सकृद्विषयम् अपरिग्रहीतेपुवृक्षादिष्वेतत्

और क्षुप करीरतें लेकर जानणे और प्रतान क्या सारिवावृक्षविशेषतें लेकर जानणे और औषधियां धान्यतें आदलेकर जानणीयां एह शेखरकामतहै और (पुष्पितानां) इसपदका गुल्मादि साथ संबंध करणा एह अपरार्कमे कहाहै ॥ और पूजाके योग्य और पीछे कहे जो वृक्ष उनोंसें विना पुष्पवाले मुनियोंके वृक्ष इसविषें जानणे एह किसी आचार्य्यका मतहै । इनोंके कटणे विषें सावित्र्यादि ऋचा का सौं १०० जप करे तद शुद्ध होताहै ॥ एह फल वाले वृक्षादिके कटणें विषे थोडा प्रायश्चित्तहै सोअज्ञानकर्के एकवार करणे विषे जानणा डेंार नाहिं है किसका स्वत्व जिनां वृक्षोमे तिनां विषे एह प्रायश्चित्त जानणे योग्यहै ॥

और स्वत्वहै जिनांविषें तिनांमें प्रायश्चित्त कहतेहैं ॥ तृणमिति तृण वा काष्ट वा पुष्प वा फल इनांको न पुछकर्के ग्रहण करे तद उसके हाथकटणें योग्यहैं १ इसमें दण्डको अधिक देखणेंतें स्वत्व वालें विषें द्विगुण प्रायश्चित्त जानणा एह व्याख्याकरणेवालेउंका मतहै और यज्ञादिवास्ते कटणेंमेंदोष नहिंहै और खेतांके निमित्त हलादि वास्ते कटणेंमेंभी दोष नहिंहै इसविषें वसिष्टजीकहतेहैं पुष्पेति पुष्प और फलके देणे वाले वृक्षोंको न कटे और हलचलाणें वास्ते कट लेवे क्योंकि हलादि वास्ते कटणेके दोषको यज्ञकर्के दूर होणेतें एह मिताक्षरामें किहाहै इसमें एह अभिप्रायहै कि जो लोकखेती करतेहैं उनको वीजणे के समय अथवा दाणे घरल्याउणे के समय एक यज्ञकरणाहोताहै तिसकर्के उक्तदोष नहिंहै ॥ अब यमजी कथन

तृणंवायदिवाकाष्ठंपुष्पंवायादिवाफलम् अपृष्ट्वापरिगृह्णीतहस्तच्छेदनमर्हतोति दण्डाधिक्यदर्शनात् परिग्रहीतिषुद्विगुणमितिव्याख्यातारः यज्ञार्थंछेदने न दोषःतथाकर्षणांगभूतहलाद्यर्थत्वेपिनदोषः अत्रवसिष्ठः ॥ पुष्पफलोपगान्पादपान्नहिंस्यात् कर्षणकरणार्थंचोपहन्यादिति कर्षणार्थच्छेदनदोषस्ययज्ञेनपरिहार्यत्वादितिमिताक्षरा यमः। वृक्षलतागुल्मतृणच्छेदने पादकृच्छ्रकः फलवतांप्राजापत्यम् सएव त्रिरात्रंतुव्रतंकुर्य्याच्छित्वावृक्षंफलप्रदम् ॥ प्रसंगात्प्राणिवधप्रायश्चित्तावसरेवक्तव्यस्यफलाद्याश्रितानांवनस्पतिच्छेदेऽवश्यंमर्त्तव्यानांप्राणिनांवधस्यप्रायश्चित्तमाहमनुः ॥ अन्नादिजानांसत्त्वानांरसजानांचसर्वशः फलपुष्पोद्भवानांचघृतप्राशोविशोधनम् १

करतेहैं वृक्षेति वृक्ष और लता और गुल्म गुच्छे तृण इनांके कटणे विषे लघुकृच्छ्र व्रत करे तो शुद्धहोताहै और फलवाले वृक्षोंके कटणेंविषे प्राजापत्य व्रतकरे और फल देण वाले वृक्षकों कटकर्के भी त्रय रात्रि व्रत करणाचाहिए एहभी यमजीने कहाहै ॥ और प्रसंगतें प्राणिवधके प्रायश्चित्तके अवसरमें फलादियोंके आश्रय वृक्षोंके कटणे विषे अवश्य कर्के मरणे योग्य जो प्राणी तिनांके मारणे विषे प्रायश्चित्तको मनुजी कहतेहैं अर्थात् वृक्ष फलमें रहण वाले जो जीव तिनांके मारण विषे प्रायश्चित्तकहतेहैं ॥ अन्नादीति अन्नादितें उत्पन्न जो जीव और रसतें उत्पन्न जो जीव और फल पुष्पतें उत्पन्न जो जीव इनांके मारणें विषें घृत प्राशन करे तद शुद्ध होताहै १

रसेति रस जो गुडादि इनांतें उत्पन्न और ऊंवलादि फलोंतें उत्पन्न और मधूकादि पुष्पोंतें उत्पन्न जो प्राणी तिनांके मारण विषें घृत प्राशन करे और भोजन न करे उसी दिन पाप नष्ट होतेहैं ॥ और औषधियां जो ग्राम्य वा वनकीयां तिनांके वृथाहि कटणे विषें एकदिन सारा गौआंकी सेवा वास्ते पीछेजावे तिसतें उपरंत सायंकाल दुग्धपान करे और भोजनका परित्याग कर देवे तो शुद्धहोताहै ॥ तैसेंहि याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं वृक्षेति वृक्ष गुल्म लता वीरुध इनांके कटणे विषें सा १०० ऋचा का जप करे और औषधीके वृथा कटणे विषें क्षीरभोजन करे और एकदिन गौकी सेवाकरे तद शुद्ध होताहै १ तैसेंहि मनुजी कहतेहैं वृष्टिजानामिति वृष्टितें उत्पन्न जो औषधियां वा आपही वनविषे उत्पन्न होइ

रसजानां गुडादिजातानामुदुंबरादिफलजातानां मधूकादिपुष्पोद्भवानांप्राणिनांवधेघृतप्राशनंभोजनांतररहितंतद्दिनमेवपापनाशनम् औषधीनांतुग्राम्यारण्यानांवृथैवछेदनेदिनंकृत्स्नमहर्गवांपरिचर्य्यार्थमनुगमनंतदंतेक्षीरपानम्। आहारांतरपरित्यागः। तथाचयाज्ञवल्क्यः। वृक्षगुल्मलतावीरुच्छेदनेजप्यमृक्शतम्। स्यादोषधीवृथाछेदेक्षीराशीगोनुगोदिनम् १ ॥ तथाचमनुः वृष्टिजानामोषधिनांजातानांचस्वयंवने वृथारंभेनुगच्छेद्गांदिनमेकंपयोव्रतम् १ वृथारंभोनिष्प्रयोजनंछेदनम् कुत्रचित्स्थानविशेषवृक्षादिच्छेदेदंडाधिक्यंदृष्टं तत्र प्रायश्चित्तमपितथा ॥ तदुक्तं ॥ चैत्यद्रुमश्मशानसीमासुपुण्यस्थानेसुरालये जातद्रुमाणांद्विगुणोदमोवृक्षेषुविश्रुतइति १ ॥ अयंचऋक्शतजपोद्विजातिविषयोनपुनःशूद्रादिविषयः तेषांजपेऽनाधिकारात् अतस्तेषांदंडानुसारेणद्विरात्रादिकंकल्पनीयम् ॥

यां जो औषधियां तिनांके वृथारंभविषे गौके पीछे जावे एक दिन दुग्ध पान करे तो शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ वृथारंभ नाम निष्प्रयोजन कटणेका है ॥ कुत्रचिदिति कितेक स्थान विशेष विषें वृक्षादिके कटणेमें दंडकी आधिक्यता जाणीदीहै इस करके तिस विषें प्रायश्चित्त भी कहतेहैं ॥ चैत्येति जो आश्रम श्मशान हद्द पुण्यस्थान देवताका मंदिर इनांविषें उत्पन्न होए वृक्षको कटदेवे तिसको पूर्वोक्त दूणा दंड जानणा १ परंतु एह जो ऋचाका शत जपहै सो ब्राह्मण क्षत्री वैश्यमें जानणा और शूद्रादिविषें नहिं जानणा क्योंकि तिनांको जपका अधिकार नाहिं है इस कारणतें तिनांको दंडके अनुसार दो २ अथवा तीन रात्रिका व्रत कल्पना करणा चाहिए इस वातका भी इस जगा ध्यान रखणा

उपेति कि उपपातकविषें इस पाठकी अनर्थकताहोगी क्योंकि पूर्वोक्त प्रायश्चित्तका अनधिकार होणेतें तिस अनर्थकताके दूर करण वास्ते उपपातकोंका साधारण प्रायश्चित्त मनु याज्ञवल्क्यजी का कथन किया होया इसविषें जानणा ॥ और इस सामान्य प्रायश्चित्तको गुरु होणेतें अभ्यास विषयविषें कल्पना करणी योग्यहै ॥ और बडे फलोंके देण वाले जो नारिकेलादिवृक्ष तिनांको इच्छातें कटणेका जो अभ्यास तिस विषें वर्ष रोजका व्रत करे तो शुद्ध होताहै और इच्छातें एक वार कटणें विषें पीछे किहा जो जप तिसीको दूणा कर लेवे ॥ एह वृक्षोंके कट्टणें विषें जो प्रायश्चित्त था तिसका प्रकरण पूराहोया ॥ ३४ ॥

अब आत्मार्थ क्रियारंभका प्रायश्चित्त कहतेहैं इसका अर्थ पीछे प्रायश्चित्त गणनामें किहाहै अत्रेति इसविषेंभी यथा योग्य उपपातकोंके मनु योगीश्वरके कथन कीते होए सामा

उपपातकमध्ये ॥ विशेषतः पाठस्यानर्थक्यपरिहारार्थमुपपातकसाधारण प्रायश्चित्तमप्यत्रभवति। एतच्चगुरुत्वादभ्यासविषयंकल्प्यम् ॥ महाफल प्रदानांनारिकेलादिवृक्षाणांकामतःछेदनात्यंताभ्यासेसंवत्सरव्रतम् ॥ स कृच्छेदेतुपूर्वोक्तजपोद्विगुणोविधेयः ॥ इतिद्रुमच्छेदेप्रायश्चित्तम् ॥ ३४ ॥ ॥ अथात्मार्थक्रियारंभप्रा० ॥ अत्रापियथायोग्यमुपपातकसामान्यप्राय श्चित्तम् ॥ ३५ ॥ अथनिंदितान्नादनप्रा- ॥ इदंचमनुनोपपातकमध्येपठि तम् ॥ अनुपपातकंनिदमितिविज्ञानेश्वरः ॥ निन्दितस्यान्नस्यादनमित्य न्नस्यनिन्दितत्वं स्वभावकालसंपर्कक्रियाभावपरिग्रहरूपोपाधिषट्केनभ वति तत्रस्वभावाल्लशुनादेः १ ग्रंथांतरेस्वभावदुष्टमेवजातिदुष्टम् ॥ काल तःशुक्तादेः ॥ २ ॥ संपर्कात्श्वस्पर्शादेः ३ क्रियातोहस्तदत्तव्यंजनादेः ४

न्य प्रायश्चित्त जानणें ॥ एह अपणे वास्तेहि भोजनादि क्रियाका आरंभ करणा इसका प्रायश्चित्तपूरा होया ३५ अब निंदित अन्नके भक्षण में प्रायश्चित्त कहतेहैं इदमिति एह मनुनें उपपातकोंके मध्य विषें पढयाहै और विज्ञानेश्वरने अनुपपातकोंके विषें पठित कीताहै ॥ निंदित अन्न का भक्षण करणा इस जगा अन्नको निंदितत्व छे ६ प्रकारका ॥ स्वभाव १ काल २ संपर्क ३ क्रिया ४ भाव ५ परिग्रह ६ इनकर्के होताहै तिसविषें स्वभावतें लशुनादियोंको निंदित जानणा और ग्रंथांतरविषें स्वभाव दुष्टकों ही जाति दुष्ट कहतेहैं ॥ १ ॥ और कालतें शुक्तादि निंदित जानणे २ और संपर्कतें कुत्तेके साथ स्पर्शादि होणेतें अशुद्धि कहीहै ३ और क्रियातें हत्थ कर्के दित्ते जो व्यजन क्या लवणादि तिनकी अशुद्धि जानणी ४

भावइति और भाव क्या और वस्तुमें और वस्तुका भ्रम होणा जैसें गन्नेके रसविषें मदिराका भ्रम और तिसमें गन्नेका रस प्रतीत होणा ५ परिग्रहतें क्या पतितके अन्नादितें ६ इस विष भी ब्राह्मणादियोंकों संपूर्ण पादोन अर्द्धपाद इस व्यवस्थातें प्रायश्चित्त जो देणा सो पूर्वोक्त हि जानणा ॥ ब्राह्मणकों संपूर्ण क्षत्रीको पादोन वैश्यको अर्द्धपाद एह व्यवस्था जानणी अब जाति दुष्टका उदाहरण कहतेहैं लशुनमिति लस्सन गाजरां अथवा थोमका कोई भेदहै और कोई कहतेहैं कि विषवाले वाण कर्के मारे होए मृगके मांसकानाम गृंजनहे गंडे छत्रियां शाकविशेष नालिका नलीकाशाक अलावु क्या घीआ एह सब जातिदुष्ट कहेहैं १ तिस विषें स्वभावतें अभक्ष्य भक्षणमें अर्थात् जातिदुष्टके भक्षणमें प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं

भावोह्यन्यवस्तुनोऽन्यत्रसंभावना यथेक्षुरसादौसुरेयमितिसंभावना ततो पीक्षुरसादेः ५ परिग्रहात्पतितान्नादेः ६ अत्रापिब्राह्मणादिभ्यः सकलपादोनार्द्धपादशोव्यवस्थापनदिशा प्रायश्चित्तदानं पूर्वोक्तमेव बोध्यम् ॥ जातिदुष्टोदाहरणम् ॥ लशुनंगृंजनंचैवपलांडुःकवकानिच वार्त्तिकानालिकालाबुउपेयाज्जातिदूषितम् १ कवकंछत्राकम् । तत्रस्वभावतोऽभक्ष्यभक्षणेप्रा. ॥ मनुः । छत्राकंविड्वराहंचलशुनंग्रामकुक्कुटम् पलांडुंगृंजनंचैवमत्याजग्ध्वापतेन्नरः १ स्मृत्यंतरे ॥ पलांडुंविड्वराहंचछत्राकंग्रामकुक्कुटम् लसुनंगृंजनंचैवजग्ध्वाचांद्रायणंचरेत् १ पलाण्डुःकंदविशेषः विड्वराहोग्रामसूकरःछत्राकंछत्रसदृशम् । ग्रामकुक्कुटलशुनेप्रसिद्धे गृंजनंकंदविशेषः गंत्रेनकइतिउदीच्यप्रसिद्धः एतानिकामतःसकृद्भक्षयित्वाचांद्रायणंचरेत् ॥

छत्राकमिति छत्रियां विड्वराह लस्सन ग्राम कुक्कड गंडा गाजरां इनांकोइच्छातें भक्षण करे तद द्विज पतित होताहै १ कुछक और भी स्मृत्यंतरमें कहतेहैं पलांडुमिति गंडा विड्वराह छत्राक ग्रामकुकुट लस्सन गाजरां इनांको भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ पलांडु नाम कंदविशेषकाहै और विड्वराह नाम ग्रामसूकरकाहै और छत्राक छत्रीकीन्यांई जो शाक विशेषहै तिसका नामहै और ग्राम कुकुट लशुन प्रसिद्धाहिहै और गृंजन भी कंद विशेष जानणा गंत्रेनक इस नाम कर्के उत्तर दिशामें प्रसिद्धहै एह संपूर्ण जो पीछे कहे हैं इनांको इच्छातें एकवार जो पुरुष भक्षण करता है सो चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥

अब ब्रह्मपुराणमें जो लिखाहै सो कहतेहैं । लशुनमिति लशुनक्या लस्सन और गृंजनक्या गाजर फलांडु क्या गंडा और परारि क्या शाकविशेष और वनकी परारिका और इसीका नाम दीर्घ पत्र भी किहाहै ॥ १ ॥ इसमें किसे वचनमें वस्तुका विशेष और किसे वचन विषे प्रायश्चित्तका विशेषहै इसवास्ते वहुवचन संग्रहहै । चार प्रकार करके उपलक्षित अलम्नसा किहाहै १ कृतनाम २ महौषधि ३ और गृंजन ४ यवनेष्ट ५ और स्वयं वनतें उत्पन्न होया होया सेहा ६ और सूमन ७ सनाशाक ८ तुंवर ९ गवेढक १० और यूपनक ११ लवतर्क १२ एह तेरां १३ जाति गंडे कीयांहैं वहुत निंदितहैं ॥ ३ ॥ और पिंडकी न्यांई और एक छे ६ टोटे करके युक्त एक दंडकी न्यांई और एक छत्रीके तुल्य एह

। ब्रह्मपुराणम् । लशुनंगृंजनंचैवपलांडुंचपरारिका ॥ वन्यापरारिकाचान्या दीर्घपत्रंतदुच्यते ॥ १ ॥ अलम्नसाचतुर्भिस्तुकृतनामामहौषधम् गृंजनं यवनेष्टंचशशस्त्वयंवनाच्चतत् २ सूमनंचसनाशाकंतुंवरंचगवेढकम् ॥ अथ यपनकंनामलवतर्काचदारुणा त्रयोदशैतास्तस्यापिजातयश्चातिगर्हिताः ३ पिंडोपमंतुपट्खंडंकवकंदंडसन्निभम् ॥ छत्राकंछत्रसदृशंत्रयंभूमिसमुद्भव म् ४ चतुर्भिःप्रकारैरुपलक्षिताअलम्नसा ॥ नानाविधाःशाखिनोयेछत्रा कंचतदुद्भवम् शस्त्रच्छेदेपुवृक्षाणांयश्चोद्भवतिकुत्रचित् ५ तत्पर्यंतेचसर सोलोहितान्यंकुराणिच पलांडुप्रमुखैरेभिःप्रमादाद्भक्षितैरपि ६ चांद्रा यणंचरेद्विप्रःकृत्स्नंसांतपनंचवा वनेवासर्वतोमासंचरेद्वासुसमाहितः ७॥ असमर्थादिविषयोविकल्पः ॥

त्र पृथ्वीतें उत्पन्न होए जानणे ४ और चार प्रकारकर्के उपलक्षित अलम्नसा जानणी ॥ अथवा एहि पिंडोपमतें लेकर चारतहींकी अलम्नसाहै नानेति अनेक प्रकारके जो वृक्षहैं तिनांतें उत्पन्न छत्राक वहुत प्रकारके जानणे और वृक्षोंके शस्त्र छेद विषें अर्थात् वृक्षमें जो शस्त्र कर्के लगा फट तिसमें जो कहिंक उत्पन्न होतेहैं ५ और तिनांके समीप रस कर्के युक्त लाल रंगके अंकुर और पलांडुतें आदि लेकर जो पूर्वोक्तोंको भक्षणकरे तो ब्राह्मण चांद्रायण व्रत करे वा संपूर्ण सांतपन व्रत करे तो शुद्ध होताहै अथवा वन विषें एक महीना बास करे समाधान चित्तवाला होया २ तो शुद्ध होताहै ७ इस जगा असमर्थादि विषय में विकल्प जानणा अर्थात् जैसी २ सामर्थ्य होवे तैसाहि तिसको व्रत देणा ॥

अब और भी स्मृति में कहतेहैं फरंडइति फरंड क्या फरण गंडा लवतर्के परारिका गाजरां यवनेष्ट लस्सन गृंजन पलांडु परारिका एह दश पलांडुकीयां जातियां जानणीयां छे एह और चार दूसरीयां ६ परंतु इनमे परारिका वनपरारिका जानणी ॥ १ ॥ अपरार्कमें कथन कियाहै छत्राकमित्यादि श्लोक ते उपरंत अपणी न इच्छा करके इनां छे ६ को भक्षण करे पुरुष तो कृच्छ्र सांतपन व्रत करे तद शुद्ध होताहै अथवा यतिचांद्रायण व्रत करे और औरोंके भक्षण करणमे एकदिन उपवास करणा योग्यहै १ और इच्छापूर्वक छत्राकादिके भक्षणविषे पुरुष पतित होताहै कैसा उहपतितहोताहै कि द्विजाति कर्मकी हानिका लक्षणहै अर्थात् द्विजाति

स्मृत्यंतरम् ॥ फरंडश्चपलांडुश्चलवतर्कःपरारिका गृंजनंयवनेष्टंचप
लांडोर्दशजातयः ॥ लशुनंगृंजनंचैवपलांडुश्चपरारिकेतिचतुष्टयसहिताः१
अपरार्कः ॥ छत्राकमित्यादिश्लोकानंतरंअमत्यैतानिपडजग्ध्वाकृच्छ्रंसांतप
नंचरेत् यतिचांद्रायणंवापिशेषेषूपवसेदहः १ मतिपूर्वकेछत्राकादिभक्षणे
पातित्यंद्विजातिकर्महानिलक्षणं । प्रायश्चित्तं तत्र सुरापकत्वात्मकमेव ॥
ब्रह्मोज्झतावेदनिंदाकूटसाक्ष्यंसुहृद्वधः गर्हितान्नाद्ययोर्जग्धिःसुरापानस
मानिपडितिसुरापानसमत्वंमनुनैवोक्तम् अमत्याएतेषांसाभ्यासभक्षणे
चान्द्रायणम् ॥ शेषेष्वभक्ष्येषुभक्षितेष्वहरुपवासः ॥

और प्राय
कर्मकी हानिरूप पातित्य उसकोहोताहै कोई स्पर्शादि अयोग्यताका जनक नहि है
श्चित्त तिसविषे सुरापानकेयोग्य जोयत्नहै तिसको करणाउचितहै सो तिसीप्रकरणमे देखलैणा ॥
और इसीको स्पष्टकरतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्मका त्यागणा और वेदकी निंदाकरणी और झूठीसाक्षी दे
णी और मित्रका वध करणा और निंदित अन्नादियोंका भक्षण करणा एह षट् ६ सुरापानके
तुल्यहैं १ एह मदिरापानके तुल्य मनुनेहि कथनकीएहैं और न इच्छा करके वहुत वार भक्षण
करण विषे चांद्रायणव्रतको करे तो पुरुष शुद्धहोताहै और वाकीको जो वस्तु नहि भक्षण करणे
योग्य तिसके भक्षण करणेविषे एक दिनका पुरुष उपवास व्रत करे तद शुद्ध होताहै ॥

अब चतुर्विंशति मतसें कथनकरतेंहैं लशुनमिति लस्सन गाजर तृणराज क्या तालवृक्ष तिसका फल और नीली क्या औषधिविशेष इनांको द्विजभक्षणकर्के चांद्रायणव्रतकरे तद शुद्धहोताहै १ एह नइच्छातें वहुतवार वा इच्छातें एकवार भक्षणकरणेंमें पूर्वोक्तवतजानणा॥ अलावुमिति और अलावु क्या घीआ और श्वेत भंठे कंडेतें रहित कुसुंभा और नालिकासाग और शणकेपुष्प इनां को भक्षणकरे तो एकदिनका उपवासव्रतकरे २ कंदेति और भ्रमवाले जो कंद मूल फलादि अर्थात् जिनका निर्णय धर्मशास्त्रसे नहि होया भक्ष्या भक्ष्यविचारमें इनांको भक्षणकरे तिसकेविषें उपवास होताहै एह शातातपजीका वचनहे॥ ३ ॥ और इसीका अर्थ कहतेहैं संभ्रांत क्या भक्ष्यहैं वा अभक्ष्यहैं इस संदेहवाले जानणे और शणका पुष्प सिंवल और हस्तकर्के मथन

चतुर्विंशतिमतात्तु॥ लशुनंगृंजनंचैवतृणराजफलंतथा नीलींचैवद्विजोभुक्त्वा चरेच्चान्द्रायणव्रतम् १ अकामतोऽभ्यासेकामतोवासकृद्भक्षणएतत् तृण राजस्तालः॥ अलावुंशुभ्रवृंताकंकुसुंभकमकंटकम् नालिकाशाणपुष्पंच जग्ध्वादिनमभोजनम् २ कंदमूलफलादीनिसंभ्रांतानिनभक्षयेत् उपवासो भवेत्तत्रशातातपवचोयथा ३ संभ्रांतानिभक्ष्याभक्ष्यत्वेनसंदिग्धानि॥ श णपुष्पंशाल्मलंचकरनिर्मथितंदधि वहिर्वेदिपुरोडाशंजग्ध्वानाद्यादहर्निश म् ४ लशुनादिषुयेतुल्यागंधवर्णरसादिभिः अभक्ष्यास्तेद्विजातीनांभुक्त्वा चांद्रायणंचरेत् ५ शंखः॥ लशुनपलांडुगृंजनच्छत्राकनालिंगविड्वराहग्रा मकुक्कुटनखरोममांसभक्षणेचान्द्रायणंकुर्य्यात्॥ गृंजनमत्रलशुनानुकारि

कीताहोया दधि और वहिर्वेदिका पुरोडाश इसका अर्थ पिच्छे कहचुकेहैं इनांको भक्षण कर्के एक दिनरात्र भोजन न करे॥ ४॥ और लस्सनादिके जो गंध वर्ण रसादि कर्के तुल्यहैं सो द्विजातियोंको अभक्ष्यहैं जेकर भक्षण करें तो चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धहोतेहैं॥ ५॥ अव शंखजीका मत कथन करतेहैं लशुनमिति लस्सन गंडा गाजर छतड़ियां नालिंग क्या फलविशेष ग्रामसूकर ग्रामकुक्कुट नख रोम मांस इनांके भक्षणविषे चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै। और गृंजनपद इस विषे लस्सनका अनुकारि क्या तुल्य जानणा

विषेति विष करके मिलित जो शस्त्र तिस करके जो मृग मृत होवे तिसका मांस अभक्ष्यहै ति सीका नाम गृंजनहै एह किसीका मतहै १ अब शातातपजी कथन करतेहैं लशुनमितिलसस न गंडे गाजरां और दुष्टगंधि वाली वस्तु जैसें लस्सनादि और ग्रामसूकर ग्रामकुक्कुट मनुष्यमां स गोमांस इनां संपूर्णोके भक्षण विषे द्विजातियोंको प्रायश्चित्तते उपरत संस्कार करणा उचि तहै इसमें एसा नहिं जानणा कि पलांडु भक्षण में प्रायश्चित्त थोडा है और गोमांस भक्षण में बहुत प्रायश्चित्त है इनका कैसें सहचार है इसवास्ते कथन करतेहैं कि प्रायश्चित्तके अंतमें संस्कार वास्ते पलांडु गोमांसका सहचार है अर्थात् सो दोनोमें एक जैसाहिहै ॥ सुमंतुजी क थन करतेहैं लशुनामिति लस्सन गंडे गाजरां कुंभीक क्या शाकविशेष श्राद्धका अन्न सूतक

विषदिग्धेनशस्त्रेणयोमृगःपरिहन्यते अभक्ष्यंतस्यतन्मांसंतद्धिगृंजनमिष्य ते इतिकेचित्पठंति ॥ शातातपः ॥ लशुनपलांडुगृंजनपिच्छगंधिविड्वरा हग्रामकुक्कुटनरगोमांसभक्षणेच सर्वेष्वेतेपुद्विजातीनांप्रायश्चित्तांते पुनः सं स्कारंकुर्यात् । प्रायश्चित्तपार्थक्येऽपि प्रायश्चित्तांतसंस्कारार्थं पलांडुगो मांसयोःसहचारः ॥ सुमंतुः ॥ लशुनपलांडुगृंजनकुंभीकश्राद्धसूतिकाभो ज्यान्नमधुमांसमूत्ररेतोऽमेध्याभक्ष्यभक्षणेसावित्र्यष्टसहस्रंमूर्ध्निसंपातानव नयेत् उपवासश्च। मूर्ध्निमस्तकेसंपातान् अवनयेत् उदकविन्दून्पातयेत् एतान्येव व्याधितस्य भिषक्क्रियायामप्रतिषिद्धानि भवंति यानिचैवंप्रका राणितेष्वप्यदोषः । संपातावनयोपवासावनुपनीतवालविषये ॥ प्रचेताः

पीयूषंश्वेतलशुनंवृंताकफलगृंजनम्

का अन्न और अभोज्य अन्न मधु मांस मूत्र वीर्य विष्टा एह जो अभक्ष्य इनके भक्षणविषे एक हजार १००८ अठ गायत्री मंत्र करके शिर विषे जल विन्दु पावे और उपवासभी करे एहि अर्थ स्पष्टकीताहै मूर्ध्नीति परंतु एह जो पूर्वोक्तहैं सो व्याधिवाले पुरुषको औषधि करणें विषे अप्रातिषिद्ध क्या स्वीकार करणे योग्यहैं पूर्वोक्तकी न्यांई औरोंविषे दोष नहिं जानणा और जल बिंदुका पाणा उपवास एह यज्ञोपवीत रहित बालक विषे जानणा ॥ और गायत्रीको पूर्वोक्तजपके साथ एह यज्ञोपवीत वालेको जानणा और शूद्रादि विषे इसका प्रायश्चित्तहि नहि मद्यादि मिलितवस्तुयां विषे औषधिके अर्थ असाविवेक करणा उचितहै ॥ अब प्रचेताजी कथन करतेहैं पीयूषमिति पीयूष श्वेत लस्सन भठे और गाजरां

गंडे गुंद देवताका धन छतडियां १ ऊठणीका दुग्ध भेडीकादुग्ध इनको जो द्विजअज्ञानतें पान करे सो तीनरात्रिका उपवासव्रतकरे और पंचगव्य पान करे तो शुद्धहोताहै २ पीयूष नवीन प्रसूता गौके दुग्धका नामहै और इसमें असमर्थपुरुषको दानकरणाहियोग्यहै परंतु एभी जिसनें पान करकें उलटी कीतीहै तिसविषें जानणा और जिसनें पानकरकेंपचायाहै सो दूणा प्रायश्चित्तकरे ॥ अब यमजी कथन करतेहैं तंडुलीयकेति तंडुलीयक क्या शाकविशेष और कुंभीक शाकविशेष और एकवृक्षको काठ कर उसीपर दूसरा वृक्ष लगाणा अर्थात् पीउंदलगाणी तिसते उत्पन्नजो शाक अथवा व्रश्चनप्रभावनाम गुंदकाभीहै परंतु प्रकरणशाककाहै इसतें शाक विशेषहि समझणाउचितहै और नालिकाशाक और नालिकेरी और लस्सूडेके फल १ और सुगंधि

पलांडुवृक्षनिर्यासदेवस्वंकवकानिच ॥ १ ॥ उष्ट्रीक्षीरमविक्षीरंयस्त्वज्ञाना
त्पिबेद्द्विजः त्रिरात्रमुपवासश्चपंचगव्येनशुध्यति ॥ २ ॥ पीयूषंनवप्रसू
तायागोःक्षीरम् ॥ असमर्थस्यतुदानमेवप्रच्छर्दितवतएतत् ॥ यमः ॥
तंडुलीयककुंभीकव्रश्चनप्रभवास्तथा नालिकानालिकेरीचश्लेष्मांतकफला
निच १ भूस्तृणंशिग्रुकंचैवखुखंडंक्षवकंतथा एतेषांभक्षणंकृत्वाप्राजापत्यंच
रेद्व्रतम् ॥ २ ॥ नालिकेरीशाकविशेषः ॥ क्षवकंराजसर्षपः ॥ खुखंडाख्यं
शाकविशेषः ॥ आपस्तंबः ॥ भक्षयेद्यदिनीलींतुप्रमादाद्ब्राह्मणःक्वचित् चा
न्द्रायणेनशुद्धिःस्यादापस्तंबोऽब्रवीन्मुनिः १ अथस्वभावदुष्टदुग्धपानेप्रा०
॥ संवर्त्तः ॥

वाला तृण और सुभांजना खुखंड क्षवक इनांको पुरुष भक्षण करे तो प्राजापत्यव्रत करणें करकें शुद्ध होताहै २ और नालिकेरीभी शाकविशेष जानणा और क्षवक नाम राजसर्षप क्या राईका जानणा परंतु एह राई सभदेशकी निषिद्धनहि किंतु यवनदेशकी निषिद्धहै ऐसाभी किसेका समाधानहै और खुखंड नाम करकें भी शाकविशेष जानणा ॥ अब आपस्तंबजी कथन करतेहैं भक्षयेदिति जेकर ब्राह्मण प्रमादतें नीली क्या वसमेंका भक्षण करे तो चांद्रायण व्रतकरकें शुद्ध होताहै एह आपस्तंब मुनिनें किहाहै इसमें एह अभिप्रायहै कि नीलीको शाकके वास्ते कोई भक्षण नहि करता परंतु कल्पके वास्ते किसे भक्षण कीती होवे तिसमें जानणा १ अब स्वभावतें जो खोटे दुग्धहैं तिनके पानविषेंप्रायश्चित्त संवर्त्तजी कहतेहैं

अवत्सेति वत्स कर्के रहित गौका दुग्ध और गधीका दुग्ध स्त्रीका दुग्ध इनांकों ब्राह्मण पानकरे और नवीन प्रसूत गौका दुग्ध दश दिनके उरे पान करे तो त्रयरात्रि यवोंका काढा पानकरे तदशुद्ध होताहै १ परंतु इस विषे यावकका पानमात्र हि करे तिस कर्के तृप्त न होवे एह अर्थ सिद्धहै और तिस विषे इच्छातें विना एकवार पान विषे उार स्मृतिका वचनहै अनिर्दशायाइति और नवीन प्रसूता गौका दश दिनते उरे दुग्ध ऊटनी गधी भेडीका और जिस गौकें पीछे वैल लगाहै और वत्स रहित गौका दुग्ध १ और महिषीतें विना संपूर्ण वनके मृगोंकी स्त्रीका दुग्ध एह संपूर्ण वर्जित हैं और संपूर्ण वस्तु जो दो २ चार दिनकीहै अर्थात् वासीहै सोभी वर्जित जानणी २ परंतु दो २ चार ४ दिनका दधि होवे

अवत्सैकशफास्त्रीणांक्षीरंप्राश्यद्विजोत्तमः अनिर्दशायागोश्चैवत्रिरात्रंयावकंपिवेत् १ यावकस्यचपानमात्रंकार्य्यं नतु तेनतृप्येत् तत्रचाकामतःसकृत्पानेस्मृत्यंतरम् अनिर्दशायागोःक्षीरमौष्ट्रमैकशफंतथा आविकंसंधिनीक्षीरंविवत्सायाश्चगोःपयः १ आरण्यानांचसर्वेषांमृगाणांमहिषींविना स्त्रीक्षीरंचैववर्ज्यानिसर्वशुक्तानिचैवहीति २ दधिभक्ष्यंचशुक्तेषुसर्वंचदधिसंभवमित्युक्त्वा शेषेषूपवसेदहरितिमनूक्तउपवासोद्रष्टव्यः। कामतस्तुयोगीश्वरोक्तस्त्रिरात्रोपवासोद्रष्टव्यः ॥ यत्तुपैठीनसिनोक्तम् ॥ अविखरुष्ट्रीमानुषीक्षीरप्राशनेतप्तकृच्छ्रःपुनरुपनयनंच ॥ अनिर्दशाहगोमहिषीक्षीरप्राशने षड्रात्रमभोजनम् ॥

सो भक्षण करणें योग्यहै और संपूर्ण दहीसें उत्पन्नहोएजो व्यंजनकडी और मंधरेसें आदलेकर सो सभ शुक्तभी होवें तथापि भक्ष्यहैं इनकेभक्षणमें दोष नहि औरोंके भक्षण करणें विषे एक दिनका उपवास व्रत करणाचाहिए एह मनुजीका कथन कीता होया उपवास देखणें योग्यहै ॥ और इच्छातें भक्षण विषे याज्ञवल्क्यजीका कथन कीता होया त्रयरात्रिका उपवास व्रत जानणा योग्यहै ॥ जो पैठीनसिजीनें कथन कियाहै सो कहतेहैं अवीति भेडी गधी ऊटणी स्त्री इनांके दुग्ध पानकरणें विषे तप्तकृच्छ्र व्रत कर्के यज्ञोपवीत पावे तो शुद्ध होताहै और नवीन प्रसूत गौका वा महिषीका दश दिनके उरे दुग्ध पान कर्के छे ६ रात्रिका उपवासव्रत करे तो शुद्धहोताहै ॥

सर्वेति और संपूर्ण जो दोस्तनवालीयां पूर्वोक्त खरीते आदिलेकर कहिआंहैं परंतु वकरीते विना तिनांके दुग्ध पान विषे भी पूर्वोक्त व्रत जानणा ॥ जो शंखजी ने कथन कियाहै सो कहतेहैं क्षीराणीति जितने दुग्ध अभक्ष्य कहेहैं तिनांके भक्षणविषे प्रायश्चितहै परंतु तिनके विकार जो हैं दधि मावा इत्यादि तिनके भक्षणविषेभी बुद्धिमान् कहतेहैं जेकर भक्षणकरे तो सप्तरात्रिका व्रत समाधान होया २ करे तद शुद्धहुंदाहै १ एह यावक व्रत कथन कियाहै सो दोनो भी पैठीनसि और शंखजीके कहेहोए तप्त कृच्छ्र और यावक व्रत इच्छाते अभ्यास विषय विषे जानणे ॥ और जो शंख जी कथन करतेहैं संधिनीति संधिनीगौ और विष्टाभक्षण करण वाली गौ इनके दुग्ध पान विषे एक पक्ष का व्रत कथन कियाहै ॥ तिसवचनको दखातेहैं संधिनीति संधिनी और विष्टाभक्षक गौ के दुग्ध पान करणेमे पक्ष व्रत करे सो एह अभ्यासवि

सर्वासांद्विस्तनीनांक्षीरपानेप्यजावर्जमेतदेवेति ॥ पञ्चशंखेनोक्तम् ॥ क्षीराणियान्यभक्ष्याणितद्विकाराशनेबुधः ॥ सप्तरात्रंव्रतंकुर्यात्प्रयत्नेनस माहितइतियावकव्रतमुक्तंतदुभयमपिकामतोभ्यासाविषयम् ॥ यत्तुशंखेन संधिन्यमेध्यभक्षकक्षीरप्राशने पक्षव्रतमुक्तम् ॥ संधिन्यमेध्यभक्ष्याया भुक्त्वापक्षव्रतंचरेदिति ॥ तदभ्यासविषयम् ॥ सकृत्पानेतु गोऽजम हिषीवर्जंसर्वाणिपयांसिप्राश्योपवसेत् अनिर्दशाहंतान्यपि॥ संधिनीयम सूस्यंदिनीविवत्साक्षीरंचामेध्यभुंजश्चप्राश्योपवसेदितिविष्णुनोपवासस्यो क्तत्वात्॥ संधिनीवृषभेणोपजिगमिषुः ॥

षय विषे जानणा और एकवार दुग्ध पान करणेमें विष्णुजीका वाक्यहै गवितिगौ वकरी महिषी इनांते विना और संपूर्णांके दुग्धकों भक्षण करे तो उपवासव्रतकरणेसें शुद्ध होताहै और गौ अजमहिषीका दुग्ध जेकर दश दिनते उरे होवे तद तिसके पानविषेभी उप वासकरणा चाहिए जेकर दशदिनते अगेहोवेतां दोषनहि इसमे वचन कहितेहैं ॥ संधिनीति संधिनी गौ और यमसू क्या जिस गौने दो २ वछे दित्ते होण और स्यंदिनी क्या जिसका दुग्ध सदाहि चलतारहे और वच्छेरहित गौके दुग्धपानमे और विष्टाभक्षण वाली गौके दुग्ध पान विषे विष्णु जीने उपवास ही कथन कियाहै और संधिनी नाम उसकाहै जो वैल साथ गमन करणेकी इच्छा वालीहै

और स्पंदिनी नामदुग्ध वगाण वाली गौकाहै ॥ स्पष्टकर्के कहतेहैं गवितिगौ बकरी महिषी इनां के विना होरनेंके दुग्ध पान विषे पूर्वोक्त प्रायश्चित्त है और दश दिनके उरे गौ अज महिषी इनांके दुग्ध पानमें भी उपवास करणा उचितहै ॥ और तैसेंहि वर्णोंके निबंधमेंभी प्रतिषेध है सो कहतेहैं अर्थात् किसे वर्णने कोई दूधपीणा और किसेने नहिपीणा इसकी व्यवस्था करतेहैं ॥ क्षत्रियइति अपनी वृत्तिमें स्थित क्षत्रिय वा वैश्य वा शूद्र जो कपिला गौका दुग्ध पान करें तो इनांतें परे पापी कोई नहिंहै अर्थात् इनकों बहुत पापहै केवल ब्राह्मणकों ही अधिकारहै १ इस विषयकी प्रकरण साथ संगति करतेहैं एवमिति इत्यादिविषे यद्यपि प्राय

स्यंदिनीस्त्रवत्क्षीरा गोऽजमहिषीवर्जदुग्धपानेप्रायश्चित्तमिदम् ॥ दशाहाभ्यंतरेतु ॥ गोऽजमाहिषीदुग्धपानेप्युपवासइत्यर्थः ॥ तथावर्णनिबंधनश्चप्रतिषेधः । क्षत्रियश्चापिवृत्तस्थोवैश्यःशूद्रोथवापुनः यःपिबेत्कापिलाक्षीरंनततोन्योस्त्यपुण्यकृदिति । एवमादौचयत्रप्रतिपदोक्तंप्रायश्चित्तंन दृश्यते तत्र शेषेपूपवसेदहरितिसाधारणप्रायश्चित्तंमनूक्तंद्रष्टव्यम् चतुर्विंशतिमते स्त्रियाःक्षीरंद्विजःपीत्वाकथंचित्काममोहितः पुनःसंस्कृत्यचात्मानंप्राजापत्यंचरेत्ततः १ स्मृत्यंतरम् ॥ त्वग्मांसमूर्णयासार्धमाविकंत्रितयं शुचि पुरीषमूत्रेसक्षीरेअपवित्रंत्रयंपुनः ॥ प्रमादादशनेतस्यदिनमेकंव्रतंचरेत् १ तस्यापवित्रत्रयस्यव्रतमभोजनम् ॥ पूर्वोक्तविषयमेतत् ॥

श्चित्त नहि किहा तथापि (शेषेपूपवसेदहः) एह साधारण प्रायश्चित्त मनुजीका कथन कीता होया जानणा अब चतुर्विंशति मतविषे कहे होएका कथनकरतेहैं स्त्रियाइति जो द्विज कामके वश होया २ स्त्रीका दुग्ध पान करे तो अपणे आपका संस्कार करके प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ अब और स्मृतिसें कथन करतेहैं त्वगिति चर्म मांस उन्न एह त्रय वस्तु भेडकी यां पवित्रहैं और विष्टा मूत्र दुग्ध एह त्रय भेडके अपवित्र कथन कियेहैं और तिसके प्रमादतें भक्षणमें एक दिनका व्रत करणा योग्यहै १ एह भी पीछे कथन कीता जो विषय तिसविषे हि जानणे योग्यहै अर्थात् दुग्ध पानके विषयके प्रसंगमेहि एह कथनहै

अब शातातप जी कथन करते हैं उष्ट्रीति ऊटणीका दुग्ध और भेडीका दुग्ध और मृत होए सूतकका अन्न और चोरका अन्न और नव श्राद्धका अन्न इनांकों पुरुष भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ एह इच्छातें अभ्यास विषय विषें जानणा । अब पेठीनासि जी कहतेहैं अवीति भेडी गधी ऊटनी स्त्री इनके दुग्ध पान विषें प्राजापत्य व्रत कर्के यज्ञोपवीत पावे तो शुद्ध होताहै अव ॥ जावालजी कहतेहैं दश दिनतें उरे गौका दुग्ध और स्त्रीका दुग्ध ऊटनीका दुग्ध मदिरा और नव श्राद्धका अन्न इनांको भक्षण कर्के सांतपन व्रत करे १ परतु एह इच्छातें विना एकवार भोजन विषे जानणा ॥ मदिरा नाम मद्यकाहै सो सुरातें अतिरि

॥ शातातपः ॥ उष्ट्रीक्षीरमाविक्षीरमन्नंमृतकसूतके ॥ चौरस्यान्नंनवश्राद्धं भुक्त्वाचांद्रयणंचरेत् १ कामतोभ्यासविषयमेतत् ॥ पैठीनसिः ॥ अवि खर्युष्ट्रीमानुषीदुग्धप्राशनेपुनरुपनयनंप्राजापत्यंच ॥ जावालिः ॥ अनिर्दशायागोःक्षीरंमानुष्यंचौष्ट्रमेवच मदिरांचनवश्राद्धंभुक्त्वासांतपनंचरेत् १ अज्ञानतःसकृद्भोजनेएतत् ॥ मदिरामद्यम् सुराव्यतिरिक्तम् । द्रव्यांतर ॥ तिरोहितरसरूपम् ॥ अंगिराः माहिष्यंगव्यमाजंचभक्ष्यंक्षीरेषुनिर्दिशेत् भुक्त्वापरमतःक्षीरंकृच्छ्रपादंसमाचरेत् ॥ १ ॥ अथस्वभावदुष्टमांसादि भक्षणेप्रा० ॥ तत्रग्रामकुक्कुटविड्वराहयोःप्रायश्चित्तंपलांड्वादिप्रसंगे प्रागुक्तमप्यत्रपुनःप्रासंगिकंनदोषाय ॥ अत्रमिताक्षरा ॥

क्त विषय विषे जानणा और जो द्रव्य तिनांतें तिरोहित रसरूप है अर्थात् मदिरा और द्रव्यकी होतीहै सुरा और द्रव्यकी होतीहै जिसकर्के एह प्रायश्चित्त थोडाहै अव अंगिराजी कथन करतेहैं माहिष्यमिति महिषीका दुग्ध गौकादुग्ध वकरीका दुग्ध एह त्रय भक्ष्य कहेहैं इनांते विना औरोंके दुग्ध पान विषें एकपाद कृच्छ्र व्रत करे १ अव स्वभावतेंहि दुष्ट मांसादिके भक्षण विषें प्रायश्चित्त कथन करतेहैं तत्रेति तिसविषें ग्राम कुकुट विड्वराह इनका प्रायश्चित्त पलांड्वादि प्रसंग विषें पीछे कहाभीहै इस विषें प्रकरण वास्ते फेर कथन कीताहै सो दोष वास्ते नाहिं जानणा इस विषें मिताक्षराकार कथन करतेहैं

तत्रेति तिस विषे इच्छातें एक वार भक्षण विषे (शेषेषूपवसेदहः) एह मनु जी का कथन कीता होया साधारण प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै ॥ और इच्छातें भक्षण विषे कहतेहैं चापानिति पिपीहा लालपादोंवाले सोन पक्षी और कसाईकी हट्टीकामांस और वल्लूर क्या सुकामांस और मच्छ इनांको पुरुष इच्छातें भक्षण करे तो त्रय दिन उपवास व्रतकर्के शुद्ध होताहै १ एह याज्ञवल्क्य जी का किहा होया देखणे योग्यहै ॥ और इच्छातें बहुत अभ्यास विषे अभक्ष्यमांसके भक्षण कर्के सप्तरात्रि जल पान करे एह मनुजीका कया होया जानणा परंतु एह विट् सूकरादि मांसतें अतिरिक्त विषयविषे जानणा ॥ क्रव्येति और गृध्रादि सूकर उष्ट्र कुक्कुट मनुष्यकाक गधा

तत्र कामतः सकृद्भक्षणे शेषेषूपवसेदहरितिमनूक्तंसाधारणप्रायश्चित्तंद्रष्टव्यम् ॥ कामतस्तु चापान्रक्तपादांश्चसौनंवल्लूरमेवच मत्स्यांश्चकामतोजग्ध्वासोपवासस्त्र्यहंवसेदितियोगीश्वरोक्तंद्रष्टव्यम् ॥ कामतोभ्यासेतु जग्ध्वामांसमभक्ष्यंतुसप्तरात्रंपयःपिबेदितिमनूक्तंद्रष्टव्यम् ॥ इदंविट्सूकरादिमांसव्यतिरिक्तविषयम् ॥ क्रव्याद्विट्सूकरोष्ट्राणांकुक्कुटानांचभक्षणे नरकाकखराणांचतप्तकृच्छ्रंविशोधनमितिमनुनाजातिविशेषेणप्रायश्चित्तविशेषस्योक्तत्वात् ॥ एतन्मूत्रपुरीषप्राशनेप्येतदेव ॥ वराहैकशफानांतुकाककुक्कुटयोस्तथा क्रव्यादानांचसर्वेषामभक्ष्यायेचकीर्त्तिताः १ मांसमूत्रपुरीषाणिप्राश्यगोमांसमेवच श्वगोमायुकपीनांचतप्तकृच्छ्रंविधीयते॥ २

इनांके भक्षण विषे तप्तकृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ एह मनुने जाति विशेष कर्के प्रायश्चित्त विशेषको कथन करणेते अर्थात् पिच्छे केवल अभक्ष्य मांस किहाथा अब सूकरादिजातिनिर्देश कर्के किहाहै एही प्रायश्चित्त पूर्वोक्तोंके मूत्र विष्ठाके भक्षण विषे भी जानणा ॥ वराहेति और वराह क्या सूकर और एकशफ जो हैं गर्दभादि और काक कुक्कुट क्रव्याद जो व्याघ्रादि तिनां सभनांके मध्यविषे जो अभक्ष्य कथन कीतेहैं १ तिनका मांस मूत्र पुरीष क्या विष्ठा और गौका मांस कुत्ता गोमायु क्या गिदड वानर इनांका मांस भक्षण जो पुरुष करता है सो तप्तकृच्छ्र नामक जो व्रत है तिसको करे तो शुद्ध होताहै ॥ २ ॥

अथवा बारां १२ दिनका उपवास व्रत करे और पिछेकर्के घृतका हवन करे अथवा कूष्मांडसंज्ञकमंत्रोंकर्के घृतकाहवनकरे एह वृद्धयमस्मृतिमें कयाहि तिसके तिसविषें इच्छाते भक्षणमें तप्तकृच्छ्र व्रतकरे और अभ्यासविषे कूष्मांडहवनसहित पराकव्रतकरे एह व्यवस्था जानणी ॥ तैसेंहि प्रचेता जी भी कहतेहैं श्वेति कुत्ता गिद्दड काक कुक्कुट पार्षत क्या मृगविशेष वानर चित्रा पिपीहा व्याघ्रादिका मांस गधा ऊट हाथी घोडा विट्शूकर गौ मनुष्य इनांके मांस भक्षण विषे तप्तकृच्छ्र व्रत करे और इनांके मूत्र विष्टा भक्षण विषे अतिकृच्छ्र व्रत करे इसमें गोमांस कर्के वनके गोपशुका मांसजानणा थोडा प्रायश्चित्तहोणेतें एहइच्छा कर्के भक्षणविषे जानणा। जो उशनसाका वचनहै सो कहतेहैं नरेति पुरुषका मांस और कुत्तेका मांस और गौका मांस घोडेका

उपोष्यवाद्वादशाहंकूष्मांडैर्जुहुयाद्घृतमितिवृद्धयमस्मरणात् तत्रकामतस्तप्तकृच्छ्रः ॥ अभ्यासेतुकूष्मांडसहितःपराकइतिव्यवस्था ॥ तथाप्रचेतसाप्युक्तम् श्वसृगालकाककुक्कुटपार्षतवानरचित्रकचाषक्रव्यादखरोष्ट्रगजवाजिविड्वराहगोमानुषमांसभक्षणेतप्तकृच्छ्रमादिशेदेषांमूत्रपुरीषभक्षणेत्वतिकृच्छ्रमिति इदंचकामकारविषयम्। यत्तूशनसोवचनम्। नरमांसंश्वमांसंचगोमांसंवाश्वमेवच भुक्त्वापंचनखानांचमहासांतपनंचरेदिति १ ॥ तदकामविषयम् पंचनखानामविहितानामित्यर्थः ॥ यत्त्वंगिरोवचनम् ॥ वलाकःभासगृध्राखुखरवानरसूकराः ॥ दृष्ट्वाचैषाममेध्यानिस्पृष्ट्वाचम्यविशुध्यति ॥ १ ॥

मांस और पंचनखोंकें मांसको जो पुरुष भक्षण करे सो सांतपन व्रत करे १ सो एह नहिं इच्छातें भक्षण विषे जानणा॥ भक्ष्यप्रकरण विषे अगे कहणेहैं गोधा कछपश्शल्यक खड्गशशक ५ इनते भिन्न पंचनख जो व्याघादि इसके भक्षण विषे एह प्रायश्चित्तजानणा परंतु इसमें एह विचारहै कि इसश्लोकके उत्तरार्द्धमें जो प्रायश्चित्त किहाहै सो इस प्रकरणके योग्य नहि तथापि प्रसंगसे किहाहै और दूसरे श्लोकमें प्रकरणोपयोगीहै इसकर्के दोषनहिहै। अब जो अंगिरा जी का वचनहै सो कथन करतेहैं वलाकेति वलाका क्या वगुलीयां और भास क्या पक्षिविशेष और गृध्र चूहा गर्दभ वानर सूकर इनोंकी विष्टाको देखे अथवा स्पर्श करे जो पुरुष सो आचमन करणे कर्के विशुद्धहोताहै १ ॥

इच्छाति एह जो पूर्वोक्त बलाकादि इनांके विष्टादियोंको इच्छाकर्के जो द्विजाति भक्षण करें सो सांतपनव्रत करें और इच्छाविना भक्षण करें तो प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होतेहैं १ सो एह भक्षण कर्के जो उलटीकरे तिस विषे जानणा ॥ और इस जगा सांतपन शब्द कर्के महासांतपन जानणा क्योंकि अकामतें भक्षणमें प्राजापत्यका विधान होणेतें ॥ और जो फेर अंगिरा जीका वचनहै सो । कहतेहैं नरेति मनुष्य काक गधा घोडा हस्ति इनांके मांस भक्षण करणेमें और विष्टा मूत्र भक्षणमें भी द्विज चांद्रायण व्रतकरे तो शुद्ध होताहै १ और जोवृहद्यमनें कथन किया

इच्छयैषाममेध्यानिभक्षयित्वाद्विजातयः कुर्युःसांतपनंकृच्छ्रंप्राजापत्यमनिच्छयेति १ तद्भक्षितोद्गारितविषयम् सांतपनशब्देनचात्र महासांतपनमुच्यते ॥ अकामतःप्राजापत्यविधानात् यत्पुनरंगिरोवचनम् नरकाकखराश्वानांजग्ध्वामांसंगजस्यच एषांमूत्रपुरीषाणिद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति १ ॥ यच्चवृहद्यमेनोक्तम् ॥ शुष्कमांसाशनेविप्रोव्रतंचांद्रायणंचरेदिति तदुभयमपिकामतोऽभ्यासविषयम् यत्पुनःशंखेनोक्तम् ॥ भुक्त्वाचोभयतोदंतांस्तथाचैकशफानपि औष्ट्रंगव्यंतथाजग्ध्वाषण्मासान्व्रतमाचरेदिति १ तत्कामतोत्यंताभ्यासविषयम् ॥

है सो कहतेहैं शुष्केति शुष्क मांसको ब्राह्मण भक्षण करे तो चांद्रायण व्रतकरणेकर्के शुद्धहोताहै एह पूर्वोक्त अंगिरा और वृहद्यमजीकावचन दोनोंभी इच्छातें अभ्यास विषय विषे जानणे । जो फेर शंखजीनें कथन कियाहै सोकहतेहैं भुक्त्वेति जिनपशुयोंके दोएपासे दंत हैं और एकशफ जो घोडा गर्दभादिहैं तिनका मांस और ऊटका मांस गौका मांस इनांको पुरुष भक्षण करे तो छे ६ महीनेंका व्रत करे तद शुद्ध होताहै १ एह इच्छातें वहुत अभ्यास विषय विषे जानणा

जो स्मृत्यंतरमे कथन कियाहै सो कहतेहैं जग्ध्वेति मनुष्य विड्वराह गर्दभ गौ घोडा हस्ति ऊट संपूर्ण पंचनखोंवाले गोधा सल्लकी आदिते विना तिनका और क्रव्याद जो हैं कच्चामांसखाणे वाले शृगालादि और ग्रामका कुक्कड इनांका मांस भक्षण करकें वर्षरोजका व्रत करे १ सोएह असंतकरकें वहुत अभ्यास विषे जानणा ॥ इस प्रकरण विषे जो मूत्र पुरीषका ग्रहणहै सो चरवी वीर्य मिंज इनका उपलक्षण जानणा और कर्णकामल विष्टा इत्यादि जोछे ६ मलहैं तिनां विषें अर्ध व्रत कल्पना करणा योग्यहै ॥ और केशादियोंके भक्षणमे फेर षट्त्रिंशन्मत विषे विशेष किहाहै। अजेति वकरी भेड महिषी मृग इनांके कच्चा मांस भक्षण विषे और

यत्तुस्मृत्यंतरोक्तम् ॥ जग्ध्वामांसंनराणांचविड्वराहंखरंतथा ॥ गवाश्वकुंजरोष्ट्राणांसर्वंपांचनखंतथा क्रव्यादंकुकुटंग्राम्यंकुर्यात्संवत्सरंव्रतमिति तदत्यंतानवच्छिन्नाभ्यासविषयम् ॥ अत्रप्रकरणेमूत्रपुरीषग्रहणं वसाशुक्रासृङ्मज्ज्ञानामुपलक्षणम् ॥ कर्णविट्प्रभृतिमलषट्केत्वर्धंकल्पनीयम् केशादिषु पुनः षट्त्रिंशन्मतेविशेषउक्तः ॥ अजाविमहिषीमृगाणामाममांसभक्षणे केशनखरुधिरप्राशनेवुद्धिपूर्वेत्रिरात्रमज्ञानादुपवासइति। यत्तु प्रचेतसोक्तम् नखकेशमृल्लोष्टभक्षणेऽहोरात्रमभोजनाच्छुद्धिरितितदप्यकामतःसकृत्प्राशनविषयम् ॥ केशकीटनखंप्राश्यमत्स्यकंटकमेवच हेमतप्तंघृतंपीत्वातत्क्षणादेवशुद्ध्यतीति स्मृत्यंतरोक्तंमुखमात्रप्रवेशेज्ञेयम्

केस नख रुधिर इनको इच्छाते भक्षण करे तो त्रय रात्रिका व्रत करे और अज्ञानतें भक्षण विषे एक उपवास व्रत करे तो शुद्धहोताहै जोप्रचेताजीने किहाहै सोकहतेहैं नखेति नखकेश मृत्तिका इनके भक्षण विषें एकदिनरात्रि भोजन न करे तो शुद्धहोताहै एहभी इच्छाते एकवार भक्षण विषे जानणा केशेति और केशकीडा नख मच्छीका कंडा इनांको भक्षणकरे तो सुवर्णको विचपाककें तत जो घृत तिसनूं पान करकें शीघ्रहि शुद्धहोताहै १ एह जो स्मृत्यंतरका वचनहै सो मुखमात्र प्रवेश विषे जानणा पीणेविषे नहि

यत्रेति जिस जगा भांडेमें स्थित जो अन्न सो केशादिकर्के दूपित होवे तिसमें प्रायश्चित्त कहतेहैं अन्नमिति भोजन कालविषें अन्न मक्षिकर्के वा केशकर्के दूषित होवे तिनांनू कड कर्के जलका स्पर्श करे और अन्ननूं भस्म साथ स्पर्श करे१ एह प्रचेतस ऋषिका कथन कीता होया जानणा परंतु प्रकीर्णक प्रकरणमें एह श्लोकहै इसजगां प्रसंगसे किहाहै ॥ अब इसी विषे हारीत जी कहतेहैं कृमीति कीडा कीडियां पीउलियां जलौका क्या जलजंतु और पतंग अस्थि इनांके भक्षणमें गोमूत्र और गोमयको भक्षण करे तो त्रय रात्रिकर्के शुद्ध होताहै ॥ अब अपरार्कमे संवर्त्तजीका वचनहै गोमांसमिति गौका मांस मनुष्यका मांस और नवीन प्रसूत स्त्रीके हत्थसे यद मिले तद वहुत दुष्ट हुंदाहै क्योंकि एह प्रथमहि अभक्ष्य हैं इनको भक्षण करे तो चांद्रायण

यत्रभाजनस्थापितमन्नंकेशादिदूषितंतत्रापि अन्नंभोजनकालेतुमाक्षिकाकेशदूषितम् अनन्तरंस्पृशेदापस्तच्चान्नंभस्मनास्पृशेदिति प्रचेतः प्रोक्तंज्ञेयम् । प्रकीर्णकविषयोयंश्लोकः प्रसंगेणात्रोक्तः । अत्रैवहारीतोपि कृमिकीटपिपीलिकाजलौकःपतंगास्थिप्राशने गोमूत्रगोमयाहारस्त्रिरात्रेणविशुध्यति । अपरार्केसंवर्त्तः। गोमांसंमानुषंचैवसूतिहस्तात्समाहृतम् अभक्ष्यंतद्भवेत्पूर्वंभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् १ पराशरः ॥ अगम्यागमनेमद्यगोमांसस्यचभक्षणे शुद्ध्यैचांद्रायणंकुर्यान्नदींगत्वासमुद्रगाम् १ चांद्रायणेततश्चीर्णेकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् अनडुत्सहितांगांचदद्याद्विप्रेषुदक्षिणामिति २ विष्णुः ॥ ग्राम्यकुक्कुटनरगोमांसभक्षणेचसंवत्सरंद्विजातीनांप्रायश्चित्तम् ॥ संवत्सरव्रतेपंचदशधेनवः अंतेपुनरुपनयनम् ॥

व्रत करणे कर्के शुद्ध होताहै १ अब पराशर जीकथन करतेहैं अगम्येति अगम्याके गमन विषे मदिरा और गोमांसके भक्षणमें शुद्धिवास्ते चांद्रायण व्रत करे परंतु समुद्रमें गमन करणवाली नदी मे जा कर्के १ और चांद्रायण व्रतके होयां ब्राह्मण भोजन करावे और वयल सहित मिली होई गौकी दक्षिणा ब्राह्मणकों देवे २ अब विष्णुजी कथन करतेहै ग्राम्येति ग्रामकुकुट मनुष्य मांस गोमांस इनांके भक्षण विषें वर्षरोजका द्विजातियों को प्रायश्चित्त है और वर्ष रोज के व्रत में पंद्रां १५ गौआं देवे अर्थात् व्रतका प्रत्याम्नाय पंद्रां गौआं है और तिसतें उपरंत यज्ञोपवीत पावे

अव शंख लिखित स्मृतिसें कथन करतेहैं वकेति वगुला वगुली हंस जलकुक्कुट ममोला ज लकाक चकवा चकवी डडूडू घरवाले कबूतर चिडावन कबूतर पाण्डु पक्षिविशेष तोता मैना सारस टिटीहरी उल्लू काकोल क्या वाज लाल पादजीव अर्थात् जालकी न्याईं पाद वालेपक्षि वाग्गुदक्या खटक अर्थात्चमागिडद पिपीहा भास पक्षिविशेष काककोकिला शाद्दालि पक्षिवि शेषकुक्कुट हारित पक्षि इनांके भक्षणविषें दश रात्रि निराहार व्रतकरे वा गोमूत्रयुक्त यावक पान करे परंतु इनमेंसे एकके भक्षणमें वहुत अभ्यास होवे वाइनके समुदायके भक्षणमेंएह प्रायश्चित्त जानणा अव शंखजीकहतेहैं मद्गिविति जलकाक हंस वगुला काक कोकिला ममोला मच्छों

शंखलिखितौ ॥ वकवलाकाहंसप्लवखंजनकारंडवचक्रवाककटंभरगृहकपोतचटकपारावतपाण्डुशुकसारिकासारसटिट्टिभोलूककाकोलरक्तपादजालपादवाग्गुदचापभासवायसकोकिलशाद्दलिकुक्कुटहारीतभक्षणे ॥ दशरात्रमनाहारः पिवेद्वागोमूत्रयावकम् ॥ काकोलःश्येनः ॥ एषामन्यतमस्यात्यंतभक्षणाभ्यासे ॥ प्रत्येकंसमुदायभक्षणेवैतत् ॥ शंखः मद्गुंहंसंवकंकाककोकिलंखंजरीटकम् मत्स्यादांश्चतथामत्स्यान्वलाकाःशुकशारिके १ चक्रवाकंप्लवंचैवमंडूकंभुजगंतथा मासमेकंव्रतंकुर्यादूद्ध्यश्चैवनभक्षयेत् २ मद्गुर्जलवायसः ॥ जलेचरांश्चस्थलजान्प्रतुदान्नखविष्किरान् रक्तपादांजालपादान्सप्तरात्रंव्रतंचरेत् ३ प्रतुद्यप्राणिनांभक्षयन्तीतिप्रतुदाः ॥ नखैर्विकीर्यभक्षयन्तीतिनखविष्किराः ॥ जालाकारानखैर्विकीर्णाःपादायेषांतेजालपादाः ॥ सर्वएवरक्तवर्णाःपादायेषांतेरक्तपादाः

के भक्षण करणवाले पक्षी मच्छ वगुली तोता मैना १ चकवा चकवी जल कुक्कुट मंडूक सर्प इनांके भक्षणमें एक महीना व्रत करके फेर भक्षण न करे २ इहां मद्गु नाम जल काकका जानणा और जलचर जीव और स्थल वाले पक्षि प्रतुद और नखविष्किर रक्तपाद इनांके भक्षणमें सत्त ७ रात्रि व्रत करे तों शुद्ध होताहै ३ अव पूर्वोक्त पदोंका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं प्रतुद्येति प्रतुद्य क्या तोड करके जीवोंकों भक्षण करें सो प्रतुदहैं टाटुकुरुतों आदिलेकर हैं और जोनखों करके फरोलके भक्षण करें सो नखविष्किरहैं और जालाकार नखोंकरके छिन्न २ हैं पाद जिनांके सो जालपादहैं और संपूर्णहिहैं लालवर्णके पाद जिनांके सो रक्तपाद कहेहैं ॥

भुक्केति दोनोंपासें दंतो वाले जोहैं शृगालादि तिनको और तैसेंहि एक खुरवाले अश्वा
दि और दंष्ट्रिजोहैं सिंहादि इनांको भक्षणकर्के छे ६ महीनेंका व्रत करे १ और सुराकर्के
मिलयाहोया जो मांसहै सो कहिए सुरामांस और सुक्का मांस और अपणें वास्ते कीता
जो मांस तिसको भक्षणकर्के इंद्रियोंकों रोक कर और समाहित चित्त वाला हुवा २
प्रयत्नकर्केव्रत करे २ और ऋभीसमें पक्का जो मांस तिसनूं संपूर्ण यत्नकर्के त्यागदेवे और
जेकर भक्षण करे तद वर्ष रोजका व्रतकरें एहि व्रत पिचले श्लोकमे जो व्रत आयहै
तिसजगाभीजानणा परंतु एह प्रायश्चित्त तदजानणा कि जेकर जानकर्के भक्षणकरे ३ और ऋभी
स नाममांसकेपकानेवाले स्थानविशेषकाजानणा तिसविषे पक्काहोया सत्पुरुषांके भोजन योग्यभी

भुकूत्वाचोभयतोदंतांस्तथाचैकशफानपि दंष्ट्रिणश्चतथाभुक्त्वाषण्मासान्
व्रतमाचरेत् १ सुरामांसंशुष्कमांसमात्मनोर्थंतथाकृतम् भुक्त्वामांसंव्रतंकुर्या
त्प्रयतःसुसमाहितः २ ऋभीसपक्कंमांसंचसर्वयत्नेनवर्जयेत् संवत्सरंव्रतंकु
र्यात्संप्राश्यज्ञानतस्तुतत् ३ ऋभीसंनाममांसपाकस्थानविशेषः तत्रपक्कं
सर्वशिष्टभोजनीयमपिमांसंनभक्षणीयम् तप्तकृच्छ्रत्रयंचांद्रायणंचरेदित्यनु
वृत्तौ। मनुः ।शुष्काणिभुक्त्वामांसानिभौमानिकवकानिच अज्ञातंचैवसूना
स्थंमासमेतद्व्रतंचरेत् १ यत्रफलकेमांसंखंड्यतेसासूना कवकानिछत्राकारा
णितेषांभूमिरूढानांभक्षणेएतत्प्रायश्चित्तम् ॥ न वृक्षादिरूढानाम् ॥

मांसहै सोभी भक्षण नहिकरणा चाहिए और तप्तकृच्छ्रत्रय और एक चांद्रायणकरें इसीप्रसंगविषें
मनुजीकथनकरतेहैं ॥ शुष्काणीति सुक्केमांसनूं भक्षणकरे और पृथ्वी विषें उत्पन्न हुए जो कवक
और न जाणकर्के सूनामेंस्थित जो मांस इनकों भक्षणकर्के पूर्वोक्तहि व्रत करे तो शुद्धहोताहै १
जिसफलक क्या पटडेपर मांस टुकदेहैं तिसका नाम सूनाकथन कीताहै और कवक क्या छत
डीकी न्याईहैं सोछतडियां जेकर पृथ्वीतें उत्पन्न होवें तिनांके भक्षणमें एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त
जानणा और वृक्षादियोंमें उत्पन्न जो छतडियांहैं तिनमें एह प्रायश्चित्त नहिं अर्थात् पृथ्वीतें
उत्पन्नोंमें दोषहै वृक्षादियोंमे उत्पन्न होण वालियोंमें दोष नहिं है ॥

क्रव्यादिति क्रव्याद विष्टा सूकर ऊट कुक्कुट काक गधा इनांके मांस भक्षण विषें तप्त कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ एभी एकवार न इच्छा कर्के भक्षण विषें व्रत जानणा ॥ कच्चे मांसको जो भक्षण करें सो क्रव्याद हैं सो व्याघ्रादि जानणे। अव शंख लिखित स्मृति सें कथन करतेहैं श्वेति श्व क्या कुत्ता गिद्दड काक कुक्कुट दंष्ट्रि सिंहभेद व्याघ्रादि मनुष्य गधा ऊट हस्ति घोडा इनके मांस भक्षण विषें चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ एह इच्छा कर्के भक्षण विषें जानणा ॥ कुत्ता गिद्दड कुक्कुट ग्राम सूकर कंक पाक्षि गिरज भास पक्षिविशेष कवूतर मनुष्य घरदे कबूतर इनांके मांस भक्षण विषें सप्त ७ रात्रि उपवास व्रत करे और निष्पुरीषीभाव रक्खे अर्थात् सुचेते न जावे घृत भक्षण करे और

क्रव्याद्विट्सूकरोष्ट्राणांकुक्कुटानांचभक्षणे एतत्काकखराणांचतप्तकृच्छ्रंहिशोधनम् २ ॥ सकृदमत्याभक्षणेएतत् ॥ क्रव्यमपक्वंमांसंतददंतीतिक्रव्यादाः व्याघ्रादयः॥ शंखलिखितौ ॥ श्वसृगालकाककुक्कुटदंष्ट्रिक्रव्यादनरखरोष्ट्रगजवाजिमांसभक्षणे चांद्रायणव्रतम् ॥ कामकारएतत् ॥ श्वकुक्कुटग्राम्यसूकरकंकगृध्रभासपारावतमानुषकपोतानां मांसादने सप्तरात्रमुपवासोनिष्पुरीषीभावोघृतप्राशनंसंस्कारश्चेत्यादिविस्तरस्तु पृथक्कृतेऽभक्ष्यभक्षणप्रकरणेद्रष्टव्यः॥ अत्रानुक्तमांसभक्षणप्रायश्चित्तं ॥ शेषेषूपवसेदहरितिमानवंद्रष्टव्यमिति केचित् ॥ क्वचिन्मांसभक्षणमप्यनुजानाति छागलेयः

यज्ञोपवीतादि संस्कार करे इत्यादि वहुत प्रकारके जानणें ॥ निष्पुरीषी भावका अर्थ अगे स्पष्ट होवेगा और विस्तार जो है सो पृथक् कीतेहोये अभक्ष्य भक्षण प्रकरणविषें देखणें योग्यहै इसीविषें नहि कथन कीता जो मांस तिसके भक्षण विषें प्रायश्चित्त (शेषेषूपवसेदहः) एह पूर्वोक्त मनु जीका कथन कीता होया जानणा एह कईक ऋषियोंका मत है सो अच्छी तरह जानणें योग्यहै इसमे एह अभिप्रायहै कि जिसजगा अभक्ष्यवस्तुके भक्षण में दोषकिहाहै और प्रायश्चित्त नहि किहा उसजगा मनुजीका वचन प्रमाणकर्के एक उपवासहि प्रायश्चित्तदेणा एह शेषशब्दका अर्थहै और कितेक मांस भक्षणमें भीदोष नहिंहै इसमें छागलेयका वचन है

वृथेति वृथामांस नाहिं भक्षण करे अर्थात् जो देवताके तांई नहि अर्पण कीता सो वृथा मांसहै तिसको न खावे और श्राद्ध कर्मविषे भक्षण कर लेवे और जगाविषें भक्षण करे ब्राह्मण तो प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्धहोताहै १ एह शिष्टपुरुषोंके भक्षण योग्य जो मांस तिस विषें जानणा इसमें ऐसाभी विचारहै कि श्राद्धविषे भी जो राजपुरोहित हैं उनकोहि मांसभक्ष्यहै और सभ ब्राह्मणको नहि एह देवीभागवतमे किहाहै जिस जगा सात्त्विकादि भेद करके तीन प्रकारके ब्राह्मण लिखेहैं इसमे और भी बहुत विचारहै सो ग्रंथकी बाहुल्यताके भय से नहि लिखया ॥ अब शंख जी कथन करतेहैं भक्ष्याइति पंचनख भक्ष्य कहेहैं सो कहतेहैं घो १ कच्छु २ सेहणी ३ गेंडा ४ सेहा ५ इनांको भक्षण करके व्रत

वृथामांसंनभोक्तव्यंभोक्तव्यंश्राद्धकर्मणि अन्यथाभक्षयन्विप्रःप्राजापत्यंस माचरेत् १ एतत्तुशिष्टभोजनीयमांसविषयम् शंखः ॥ भक्ष्याःपंचनखाश्चै वगोधाकच्छपशल्यकाः ॥ खड्गश्चशशकश्चैवतान्भुक्त्वानाचरेद्व्रतम् १ तथा तित्तिरिंचमयूरंचलावकंचकपिंजलम् वाध्रीनसंवर्त्तकंचभक्ष्यानाहसदा यमः २ वाध्रीनसोवृद्धछागः॥ तथा ॥ माहिषंत्वाजमौरभ्रंरौरवंमार्गमेवच भक्ष्यंमांसंसमुद्दिष्टंयश्चैवपार्षतोभवेत् १ रुरुर्वहुशाखशृंगोमृगः पार्षतःपू र्वमभक्ष्येपिप्रतिपादितोऽतोविकल्पः ॥ विष्णुः ॥ शशशल्यकगोधाखड् गकूर्म्मवर्ज्जंपंचनखमांसाशने सप्तरात्रमुपवसेत् ॥ विषयविवेकेनमांसमनु जानातियाज्ञवल्क्यः ॥

न करे अर्थात् इनके भक्षणमे दोष नहि १ तैसेहि और कथन करतेहैं तित्तिरिमिति तित्तिर मोर लयडा कापिंजल क्या पक्षिविशेष वाध्रीनस नाम वृद्धछागका है और वर्त्तक क्या वटेरा इनांको यमजीनें भक्ष्य किहाहै २ तैसेहि और कथन करतेहैं माहिषमिति महिषं बकरा भेडा रुरु मृग पार्षत मृगाविशेष इनांका मांस भक्ष्य कथन कियाहै १ रुरु नाम बहुत शाखा वाले शृंग जिसके तिसका है और पार्षत मृग विशेष पिच्छे अभक्ष्य विषें भी प्रतिपादन कीताहै इसकारणतें इसमें विकल्प जानणा ॥ अब विष्णुजीकथन करतेहैं शशेति सेहा सेहणी घो गेंडा कच्छु इनां पंजांको त्यागकरके औरोंके मांस भक्षणविषें सप्त रात्रि उपवास व्रत करे तोशुद्ध होताहै अब विषय विवेक करके मांसका भक्षण कथनकरतेहैं याज्ञवल्क्यजी

प्राणेति प्राणोंके नाश विषें तैसें हि श्राद्ध विषें और द्विजकी कामना कर्के प्रोक्षितकीता जोमांस क्या मंत्रों कर्के सिंचत कीता होया जो मांस तिसको और देवता पितरोंको दे कर्के मांस खावे तां दोष नहिंहै १ और मांस के विना असाध्य जो प्राण तिनकी रक्षा विषें और राजाके श्राद्ध विषें मांस भक्षण करलेवे तो दोष नहि इत्यादि व्याख्यान मिताक्षराविषें किहाहै ॥ ॥ अब काल कर्के दुष्ट जो वस्तु तिसके भक्षण विषें कथन करतेहैं ॥ कालेति जो वस्तु दूसरे दिनकी वा बहुत कालदी स्थित होवे सो काल दुष्ट कहीहै तिसको नहि भक्षण करणा इसमे विशेष कहतेहैं दधीति विकारों विषें दधि इत्यादि भक्ष्य हैं अर्थात् दूसरे तीसरे आदि दिनका) दधि मधु भक्ष्यहै इत्यादि कहेहैं ॥ तिसी विषें मनु जी कथन करतेहैं शुक्तानीति शुक्त

प्राणात्ययेतथाश्राद्धेप्रोक्षितंद्विजकाम्यया देवान्पितॄन्समभ्यर्च्यखादन्मांसं नदोषभागिति १ प्राणात्ययेमांसेतरासाध्ये श्राद्धेराजकर्तृकेइत्यादिव्याक्तंमिताक्षरायाम् ॥ अथकालदुष्टाशने तत्र कालदुष्टंतुविज्ञेयंह्यस्तनंचिरसंस्थितम् दधिभक्ष्यंविकारेषुमधुवर्ज्जंतदिष्यतइत्याद्युक्तम् ॥ तत्रमनुः ॥ शुक्तानिचकषायांश्चपीत्वामेध्यान्यपिद्विजः तावद्भवत्यप्रयतोयावत्तन्नव्रजत्यधः ॥ १ ॥ अस्यार्थः यानिस्वभावतोमधुरादिरसानि कालयोगेनोदकपरिणामादिनाम्लभावंव्रजंतितानिशुक्तानि कषायान्विभीतकादीन्कथितानिअप्रतिषिद्धान्यपिपीत्वायावन्नजीर्णानिभवंतितावदशुचिःपुरुषोभवति

कषाय अमेध्य इनांको द्विज पान कर्के तितना काल अपवित्र रहताहै कि जितना काल सो वस्तु वाहर न निकले १ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं यानीति जो स्वभावतें हि मधुरादि रस कालके योग कर्के वा जलके विकारकर्के अम्लभावको प्राप्त होण सो शुक्त कथन कीतेहैं और कषाय जो वहेडेतें आद लेकर और कथित क्या जो वस्तु क्वाथकीतयांजाण और मेध्यानि क्या सो वस्तु अप्रतिषिद्ध भी होण क्या निषेध वाले नाहीं भी हैं तिनांको भी पान कर्के जितना काल जीर्ण न होवें तितना हि काल पुरुष अपवित्र होताहै अर्थात् इन पूर्वोक्तों को पुरुष भक्षण करे तो उतना हि चिर अशुद्ध होता है कि जितना चिर सों अभ्यंतर रहें जिस काल अंदरसें वाहर निकलजावें उसीकाल शुद्ध होताहै

अबुद्धीति अज्ञानपूर्वक कालकर्के दूषित जो वस्तु तिसके एकवार भक्षणविषें जाबालजीकहतेहैं परीति पर्य्युषित क्या वासी और दूसरी वार जो तलआ और अभोज्य जो अन्न अर्थात् पतितादि स्पृष्ट जो अन्न और लशुनादि और शूद्र काक गौ इनांका जूठा जो अन्न तिसको भक्षण करें तो त्रय दिनकाव्रतकरे १ और नवीन प्रसूत गौका दुग्ध दस दिनतें उरे पानकरणे विषें प्रायश्चित्त पिच्छे कियाहै ॥ अब प्रायश्चित्तेंदुशेखरविषेंभी कथन करतेहैं कालेति स्नेहतें विना जो वासी वस्तु तिसका नाम कालदुष्टहै इच्छाकर्के तिसके भक्षण विषें त्रय रात्रि यावक पान करे ॥ और अज्ञानतें भक्षणविषें एक उपवास व्रत करे तो शुद्धहोताहै । और यव कणक दुग्ध दधि पीठ एह स्नेह कर्के पक्क होवें और जो स्नेह कर्के युक्त अन्नादिहैं तिनके भक्षण में भी

अबुद्धिपूर्वकालदूषितादिसकृद्भक्षणे जाबालः। पर्य्युषितंपुनःस्निग्धमभोज्यं लशुनादिकम् शूद्रकाकगवोच्छिष्टंभुक्त्वातुत्र्यहमाचरेदिति १ दशाहाभ्यंतरेगवादिक्षीरपानेप्रायश्चित्तंप्रागुक्तम् ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरेपि कालदुष्टमस्नेहाक्तपर्युषितादि। मत्यातद्भक्षणेत्रिरात्रयावकपानम् अमत्यात्वेकउपवासः यवगोधूमपयोदधिपिष्टविकारे स्नेहपक्के स्नेहाक्तान्नादौच नदोषः ॥ शृंगास्थिदंतशुक्तिशंखकपर्दजनितपात्रैः कंदशालूकजैश्च जलंपीत्वा नवोदकं चवर्षाकाले त्र्यहादर्वाक् अकालेच दशाहादर्वाक्पीत्वापंचगव्यंपिबेत् ॥ मत्योपवासः ग्रहणकालेनवश्राद्धेचभोजनेग्रामयाचकान्नभोजनेचचांद्रम्

दोष नहिं ॥ और शृंग अस्थि दंत सिप्पी शंख कौडी इनके बणे जो पात्र और कंद और शालूकभी कंदविशेषहै इनके बणे जो पात्र हैं अथवा कंद शालूक इकवडे पत्रांवाला शाकहै तिसके पत्रों कर्के बणें होए जो पात्रहैं इनोंविषें जल पान करे और वर्षा ऋतु विषें नवीन जल त्रय दिनतें उरें पान करे और अकाल क्या वर्षा ऋतुतें विना जो नवीन जल तिसका दश १० दिनतें उरें पान करणेविषें पंचगव्य जो गोमूत्र १ गूत्र २ दधि ३ दुग्ध ४ घृत ५इन का पान करे तो शुद्ध होताहै ॥ और इच्छा कर्के पूर्वोक्तको पान करे तो एक उपवास करणें कर्के शुद्ध होताहै ॥ और ग्रहण काल विषें भोजन करे और नव श्राद्ध विषें और ग्रामोंके याचकका अन्न भोजन करणें विषें चांद्रायण व्रत करे तो शीघ्र हि शुद्ध होताहै

ग्रहणेति और ग्रहण निमित्त निषिद्ध जो काल तिस विषें और संधि काल जो प्रात मध्यान्ह सायं अर्द्धरात्र और वहुत प्रातः काल वहुत सायंकाल इनविषें भोजन करके और रात्रि विषें धाना दधि सत्तु तिलयुक्त अन्नके भोजनविषें इनतों आद लेकर जो अनादिष्ट प्रायश्चित्त तिनांविषें भी सौ १०० प्राणायाम करे तो शुद्धहोताहै ॥ और इच्छातेंभक्षणविषें उपवासव्रतकरे और अज्ञानतें भक्षणमें उपवास करे एह किसीका मतहै ॥ और ग्रहणतें अन्यत्रभी भोजनके निषिद्ध कालविषें मार्कंडेय जो कहतेहैं चंद्रस्येति हे भार्गव चंद्रमा वा सूर्य्यका ग्रहण जिस दिनविषें होवे तिस दिनतें प्रथम भोजन न करे और ग्रहणविषें भी न करे १ तैसेंहि ग्रहण साथहि सूर्य वा चंद्रमा अस्त होवे तो भी जितना काल तिसका उदय न होवे तितना काल भोजन न करे २ तैसेंहि और कहतेहैं ग्रहणमिति चंद्रमाका ग्रहण रात्रिके प्रथमपहरतें अग्गेहोवे तो आवर्त्तनतें उरे भोजन करलेवे अर्थात् दिनके प्रथमपहरमें भोजनकरे और रात्रिके प्रथमपहरमे ग्रहण होवे तो सूर्य उदयके

ग्रहणनिमित्तनिषिद्धकालेतिप्रातरतिसायंकालेचभुक्त्वारात्रौधानादधिसक्त तिलसंवद्धान्नभोजनेएवमादिष्वनादिष्टप्रायश्चित्तेषुप्राणायामशतम् मत्या पवासः । अमत्योपवासइत्यन्ये । ग्रहणादन्यत्रापिनिषिद्धकालेभोजनेमार्क डेयः ॥ चंद्रस्ययदिवाभानोर्यस्मिन्नहनिभार्गव ग्रहणंतुभवेत्तस्मिन्नपूर्वंभो जनक्रियाम् १ नाचरेत्सग्रहेचैवतथैवास्तमुपागते यावत्स्यान्नोदयस्तस्यना श्नीयात्तावदेवतु २ तथा ॥ ग्रहणंतुभवेदिंदोःप्रथमादधियामतः भुंजीताव र्त्तनात्पूर्वंप्रथमेप्रथमादधः १ तथा अपराह्णेनमध्याह्नेसायाह्नेनतुसंगवे भुंजीतसंगवेचेत्स्यान्नपूर्वंभोजनक्रियेति १ यच्चमनुनोक्तम् ॥ नाश्नीयात्सं धिवेलायामिति नातिप्रगेनातिसायमित्येवमादि अत्रापिप्राणायामशतम्

प्रथम पहर विषें भोजन करे इसी तरह अग्गे भी जानणा १ अव सूर्यग्रहणकी व्यवस्था कहतेहैं अपेति अपराह्ण काल में सूर्य ग्रहण होवे तो मध्यान्हमें भोजन न करे और सायंकाल मे ग्रहण होवे तो संगव काल मे भोजन न करे संगव कालमें ग्रहण होवे तो ग्रहणके प्रथम भोजन न करे किंतु ग्रहणतें पिछे खावे अथवा संगवकाल जो प्रातकालतें अग्गेहै तिसमे ग्रहण होवे तो पूर्व दिनकी रात्रि में भोजन न करे क्यों कि ४ चार पहर पहले सूर्य ग्रहणतें भोजनका निषेधहै १ और जो मनुजीनें किहाहै सो कहतेहैं नेति संधिवेलाविषें भोजन न करे वचनांतर कहतेहैं नातीति और अतिप्रातकाल विषे अतिसायंकाल विषे इस तो आद लेकर इनमें भोजन करे तो सौ १०० प्राणायाम करके शुद्ध होताहै अति प्रातः सूर्य्योदयसे पहिले मुहूर्त्त मात्र जानणा और अतिसायं सूर्य्यास्तसे उपरंत मुहूर्त्त मात्रहै

अब संसर्गतें दुष्ट अंन्नके भक्षण विषें प्रायश्चित्त कहतेहैं तिसका उदाहरण भविष्यत् पुराण विषें किहाहै सुरेति ।मादिरा लस्सन इनांकर्के स्पृष्टहोवे और पीयूष क्या नवीन दुग्धादिकर्के युक्त होवे एह संसर्ग दुष्टकहेहैं शूद्रको जूठ न्याईं जानणें और शूद्रका जूठासों जानणा कि एह तेरे योग्य अन्नहै इस भावना कर्के किसेनें शूद्रके ताईं दखायाहै सो शूद्रो च्छिष्ट किहाहै ॥ १ ॥ अब संवर्त्त जी कहतेहैं केशेति रोम कीडेकर्के युक्त जो अन्न और नील लाक्षा कर्के जो स्पर्श कीता होया अन्न और आंदरां अस्थि चर्म इनां कर्के स्पर्श कीते होए अन्नको भक्षणकर्के एकदिनका उपवास व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ तैसेहि शातातपजी कथन करतेहैं केशेति रोम कीट कर्के युक्त अन्न और रुधिर मांस और नहिं स्पर्श करणे योग्य जो वस्तु तिस कर्के स्पर्श कीता होया जो अन्न और गर्भ हत करणे वाले पुरुष कर्के देखया

अथसंपर्कदुष्टभक्षणेप्रायश्चित्तम् तदुदाहरणंभविष्यति। सुरालशुनसंस्पृष्टंपीयूषादिसमान्वितम् संसर्गाद्दुष्टमेताद्धिशूद्रोच्छिष्टवदाचरेत् शूद्रोच्छिष्टंतु विज्ञेयंपूर्वंशूद्रेप्रदर्शितम् १ इदंत्वद्योग्यमन्नमितिभावनयाकेनाचिच्छूद्रायप्रदर्शितंतच्छूद्रोच्छिष्टंभवति संवर्त्तः केशकीटोपपन्नंतुनीलीलाक्षोपघातितम् स्नाय्वस्थिचर्मसंस्पृष्टंभुक्त्वातूपवसेदहरिति १ तथाहशातातपः केशकीटावपन्नरुधिरमांसास्पृश्यस्पृष्टभ्रूणहावेक्षितपतत्र्यवलीढश्वसूकरगवाघ्रातशुष्कपर्युषितवृथापक्वदेवान्नहविषांभोजनेतूपवासः ॥पंचगव्याशनंचेति एतच्चोभयमप्यकामविषयम् कामतस्तु मृद्वारिकुसुमार्द्रीश्चफलकंदेक्षुमूलकान् विण्मूत्रदूषितान्प्राश्यकृच्छ्रपादंसमाचरेत् ॥ १ ॥

जो अन्न और पक्षि कर्के अवलीढ क्या आस्वादित जो अन्न और कुत्ता सूकर गौ इनां कर्के सुंगया होया जो अन्न और पकायाहोआ शुका अन्न और वासी अन्न और वृथापक्क्या जिस अन्नका नारायणको भोग नहिं लगा है और देवताके निमित्त दित्ता जो है तिसको नैवेद्य लगाणेतें विना जो भक्षण करे वा देवता निमित्त जो हविष घृतादि हैं तिनका हवन न करे और आपही भक्षण करे जो पुरुष सो एक उपवास और पंचगव्य भक्षणकरे एह संवर्त और शातातपका वचन अज्ञानतें भक्षण विषें जानणा ॥ अब कामतें भक्षण विषें कहतेहैं मृदिति मृत्तिका जल पुष्पादि फल कंद क्या सकरकंदि प्रभृति गन्ने मूलियां एह विष्टा मूत्र कर्के दूषित होवें तो इनको भक्षण कर्के कृच्छ्र पाद व्रत करे तद शुद्ध होताहै १

और विष्टा मूत्र जिस अन्नके पास होवें तिसके भक्षण विषे अर्धव्रत करे और विष्टादिके स्पर्श कर अपवित्र जो भोजन तिसके भक्षणविषे कृच्छ्रव्रतकरे एह विष्णुकाकिहा होया जानणा और थोडे संसर्गविषें पादव्रतकरे और बहुत संसर्गविषें अर्धकृच्छ्र करे एहभी व्यवस्था जानणी जो व्यासजीनें किहाहै सो कहतेहैंसंसर्गेति संसर्गतें दुष्ट जो अन्न और क्रियातें दुष्ट जो अन्न और स्वभाव दुष्ट जो अन्न इनकों इच्छातें भक्षण करके तप्त कृच्छ्र व्रतको करे १ एह व्रत संसर्ग वाले जो अमेध्या दि तिनके रसकी प्राप्ति होवे जिस अन्नमें तिसके भक्षणविषें जानणा अर्थात् खंदे खंदे तिसवि ष्टादिका स्वाद आगिआ होवे तद एह प्रायश्चित्तजानणा ॥ रजस्वलादि स्त्रीके स्पर्शविषें शंखजी कहतेहैं अमेध्येति विष्टा पतितपुरुषचांडालपुष्कसक्या चांडालजातिविशेष रजस्वलास्त्री अवधूत

संनिकृष्टेर्धमेवस्यात्कृच्छ्रस्त्वशुचिभोजनइतिविष्णूक्तंवेदितव्यम्। अल्पसंस र्गेपादोमहासंसर्गेऽर्धकृच्छ्रइतिव्यवस्था। यत्तुव्यासेनोक्तम्।संसर्गदुष्टंयच्चा न्नंक्रियादुष्टंचकामतः भुक्त्वास्वभावदुष्टंचतप्तकृच्छ्रंसमाचरेत् १ एतच्चसं स्पृष्टामेध्यादिरसोपलब्धौवेदितव्यम् रजस्वलादिस्पर्शेतुशंखोक्तम् अमेध्य पतितचांडालपुष्कसरजस्वलाऽवधूतकुणिकुष्ठिकुनखिसंस्पृष्टान्नानि भुक्॥ त्वाकृच्छ्रंचरेदिति कुणिर्हस्तविकलः। एतत्कामकारविषयम्। अकामतोऽ र्धम्। भुक्त्वाऽस्पृश्यैस्तथाशौचिकेशकीटैश्चदूषितम् कुशोदुंबरविल्वाद्यैः पनसांबुजपत्रकैः॥ शंखपुष्पीसुवर्चादिक्काथंपीत्वाविशुध्यतीतियद्विष्णुनो क्तं तदशक्तविषयंरजकादिस्पर्शविषयंवा अस्पृश्यैर्विण्मूत्रादिभिः ॥

क्या संन्यासी कुणिक्या खोटे हाथवाला(अर्थात्टुंडा) कुष्टि और खोटें नखोंवाला इनांकर्के स्प र्श कीता होया जो अन्न तिसको भक्षणकर्के कृच्छ्र व्रत करे ॥ एह इच्छा कर्के भक्षण करणे विषे जानणा ॥ और अज्ञानतें भक्षणविषें अर्ध व्रत करे ॥ भुक्त्वेति और अस्पृश्य जो विष्टा मूत्रादि इनांकर्के दूषित जो अन्न और अपवित्र अन्न और केशकीटकर्के दूषित जो अन्नइनांको भक्षण कर्के कुशा रुंबल विल्वादि पनस वृक्ष कमल इनांके पत्रोंका और शंखपुष्पी सुवर्चादि इनां के क्वाथकों पान करे तो शुद्ध होताहै १ एह जो विष्णुजीने किहाहै सो असमर्थ विषय विषें वा रजकादि स्पर्श विषय विषें जानणा ॥

अब शूद्रादियोंकर्के स्पर्शवालाजो अन्न तिसके भक्षणविषे हारीतका कथनकीता होयाप्रायश्चित्त जानणा शूद्रेणेति शूद्र कर्के स्पर्शवाला अन्न वा विष्टा भक्षणकरणवाले कीडोंकर्के स्पर्श वाला और जिस स्थानमे ब्राह्मण भोजन करतेहैं तिसमें शूद्र अन्न वरतावे १ अब इसका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं तिस शूद्रको अयोग्य होणेतें पंकि विषे भोजन कररहे जो ब्राह्मणादि तिनांमें अन्न देवे अथवा जिस जगा उठ कर्के जूठा देदेवे वा प्रथम आचमन कर लेवे वा निंदा कर्के अन्न देवे तिसविषे प्रायश्चित्त एक दिनरात्रका उपवास करे तों शुद्धहोताहै और उच्छिष्ट पांकिके भोजन विषेभी एही व्रतजानणा ॥ यस्त्विति जो द्विज उच्छिष्ट पांकिविषे कदाचित् भोजन करे तोएक दिनरात्रका उपवास व्रतकर्के पंचगव्य पानकरे तां शुद्ध होताहै १ एह क्रतुस्मृतिमें किहाहै वाम

शूद्राद्युपहतेतुहारीतोक्तंविज्ञेयम् शूद्रेणोपहतंभोज्यंकीटैर्वामेध्यसेविभिः भुं जानेषुचवायत्रदद्याच्छूद्रउपस्पृशेत् १ अनर्हत्वात्सशूद्रःपंक्तौभुंजानेषुवाय त्रोत्थायोच्छिष्टंप्रयच्छेदाचामेद्वाकुत्सित्वावायत्रान्नंदद्युस्तत्रप्रायश्चित्तमहो रात्रमिति ॥ उच्छिष्टपंक्तिभोजनेप्येतदेव ॥ यस्तुभुंक्तेद्विजःपंक्त्यामुच्छिष्टा यांकदाचन अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुध्यतीतिक्रतुस्मरणात् ॥ वाम करनिर्मुक्तभुक्तामत्रभोजनेतु॥ समुत्थितस्तुयोभुंक्तेयोभुंक्तेभुक्तभाजने एवंवै वस्वतःप्राहभुक्त्वासांतपनंचरेदिति १ षट्त्रिंशन्मतोक्तंवेदितव्यम् ॥ एकपं क्त्युपविष्टानांविप्राणांसहभोजने यद्येकोपित्यजेत्पात्रंशेषमन्नंनभोजयेत् १ मोहाद्भुंजीतयस्तत्रपंक्त्यामुच्छिष्टभोजनः प्रायश्चित्तंचरेद्विप्रःकृच्छ्रंसांत पनंचतदिति ॥ २ ॥

हस्त कर्के दित्ताजो अन्नतिसविषे अथवा और जूठे पात्रविषे भोजन करणेमें प्रायश्चित कहतेहैं समिति जो पुरुष उठकर्के भोजनकरताहै और जो जूठे पात्रविषे भोजन करताहै इहांभुक्तभाज नपद वामहस्तकर्के दित्तेहोएका उपलक्षण जानणा इसप्रकार यमजीने किहाहैकि पूर्वोक्त प्रकार कर्केजो भोजनकरेसो सांतपन व्रतकरे १ एह षट्त्रिंशन्मतका कथनकीताहोया जानणा षट्त्रिंश न्मत ओहै कि जो ३६ छत्री ऋषियोंने इकठे होकर्के वनायाहै ॥ तैसेंहि पराशरजीनेंभी इस वि षे किहाहै एकेति एक पंक्तिमें स्थित जो ब्राह्मण तिनांको भोजन करदे होयां जेकर एक मनुष्य भी पात्र त्यागदेवे तदहोर कोई शेष जो अन्न तिसकोभक्षण न करे १ मोहतें जो तिसविषे भोजन करे सो उच्छिष्ट भोजी होताहै तिसविषे ब्राह्मणकृच्छ्रसांतपन नाम व्रतको करे तोशुद्धहोताहै २

अवमनुजीकथनकरतेहैं अभोज्येति जिनांका अन्न नहिं भक्षण करणा तिनांकेअन्नको भक्षणकर्के और स्त्री शूद्रका जूठा भक्षणकर्के और अभक्ष्यमांसको भक्षणकर्के ७सत्तरात्रि जवपानकरे १अवइसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं अभोज्येति अभोज्यान्न अग्गेकहने जो हैं तिनका अन्न और स्त्री शूद्रका जूठा मांस प्रकरणमें किहा जो अभक्ष्यमांस तिसकों भक्षणकर्के जलयुक्त सत्तूरूपकर्के वा यवागू रूपकर्के पानयोग्य जो यव तिनांको पानकरे तो शुद्ध होताहै विडालेति विल्ला काक चूहा नकुल इनांका जूठा भक्षणकर्के और केश कीडा इनांकर्के युक्त जो अन्न तिसनू भक्षण कर्के ब्राह्मी सुवर्चलाबूटीका पानकरे तिसका पान कोइ क्वाथकर्के कहतेहैं और कोइकहतेहैं किरात्रिमेजलमेपारक्षे और प्रातःउसजलकों पीवे २ अव विष्णुजी कथनकरतेहैं गोरिति गौका

मनुः अभोज्यानांतुभुक्त्वान्नंस्त्रीशूद्रोच्छिष्टमेवच जग्ध्वामांसमभक्ष्यंचसप्तरात्रंयवान्पिबेत् १ अभोज्यान्नावक्ष्यमाणास्तदन्नंस्त्रीशूद्रोच्छिष्टंमांसप्रकरणोक्तमभक्ष्यमांसंभुक्त्वाजलमिश्रितसक्तुरूपेणयवागूरूपेण वा पानयोग्यान्यवान्पिबेदित्यर्थः ॥ विडालकाकाखूच्छिष्टंजग्ध्वाथनकुलस्यच केशकीटावपन्नंचपिबेद्ब्राह्मींसुवर्चलाम् २ आखुर्मूषकः ॥ विष्णुः ॥ गोरुच्छिष्टाशनेदिनमेकमुपोषितः पंचगव्यंपिबेत् ॥ संवर्त्तः ॥ विण्मूत्रभक्षणेविप्रः प्राजापत्यंसमाचरेत् श्वकाकगोभिरुच्छिष्टभक्षणेतुदिनत्रयम् १ वसिष्ठः ॥ श्वकाकावलीढशूद्रोच्छेषणसंभोजनेष्वतिकृच्छ्रः ॥ कृच्छ्रइतरेष्वन्यत्रमधुमांसफलविकारेषुमतिपूर्वकाभ्यासेएतत्

जूठाभक्षण करणविषें एकादिन उपवास व्रतकर्के पंचगव्यपानकरे॥अव संवर्त्तजी इसमे विशेष कहतेहैं विडालेति विष्ठामूत्रभक्षण करणवाला ब्राह्मणप्राजापत्यव्रतकरे तो शुद्धहोताहै और कुत्ताकाक गो इनांके जूठा भक्षण करणेंविषें तीनादिनका व्रतकरे तो शुद्धहोताहै १ अव वसिष्ठजी कथन करते हैं श्वेति कुत्ता काक इनांकर्के जो आस्वादित अन्न और शूद्रका जूठाइनांके भक्षण करणेविषें अतिकृच्छ्र नाम व्रत करे तो शुद्धहोताहै ॥ औरोंके अर्थात् गवादिके जूठा भक्षण करणेंविषें कृच्छ्रव्रतकरे तो शुद्ध होताहै ॥ परंतु मखीर मांस फल इनांका जो विकार एह जेकर काकादि कर्के जूठे होणतां इनके भक्षणमे एह व्रतहै नहि किंतु एक उपवासहै इच्छापूर्वकवहुत वार भक्षण करणेंमें पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा।

अब शंख जी कथन करते हैं शुनेति कुत्तेके जूठे अन्न को भक्षण कर्कें एक महीनेंका व्रत करे तो शुद्ध होताहै और काकका जूठा गांका सिंघया होया अन्न भक्षण कर्के एक पक्ष अर्थात् पंदरांदिनका व्रत करे १ और केश कीट कर्के दूषित अन्न और जिसनें मूषकादि भक्षण कीते हैं ऐसे बिल्लेका जूठा जो अन्न अथवा बिल्लेका जूठा और दूषकैः क्या नेत्रांकी मलकर्के दूषित जो अन्न और मक्खी मछर कर्के दूषित जो अन्न तिसको भक्षण कर्कें त्रय ३ रात्रि व्रत करे तो शुद्ध होताहै २ और वृथा जो खिचडी कडाह क्षीर पूडे पूरियां इनांको भक्षण कर्के समाधान हो कर्के त्रय ३ रात्रिका व्रत करे ३ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्कें कहतेहैं वृथे

शंखः। शुनोच्छिष्टंतुभुक्त्वान्नंमासमेकंव्रतंचरेत् काकोच्छिष्टंगवाघ्रातंभुक्त्वा पक्षव्रतीभवेत् १ दूषितंकेशकीटैश्चमार्जारैर्दूषकैस्तथा मक्षिकामशकैश्चैव त्रिरात्रंव्रतमाचरेत् २ कथंभूतैर्मार्ज्जारैर्दूषकैःभुक्तमूषकादिभिरित्यर्थः। वृथा कृसरसंयावपायसापूपशष्कुलीः भुक्त्वात्रिरात्रंकुर्वीतव्रतमेतत्समाहितः ३ वृथेति विष्णवे विप्रायवा निवेदनं विना कृसरंघृतपक्वगोधूमसारासितादि चूर्णम् ॥ अमतिपूर्वाभ्यासेएतत् ॥ श्वकाकगवाघ्रातभोजनेसाभ्यासेप्येतत् गोमूत्रयावकाशनमेवात्रव्रतम् ॥ कामतःसकृद्भोजने ॥ प्रचेताः॥ मक्षीगोधाथखद्योतःशतस्पृष्टोथलोष्टकृत् षड्विध्यन्मुरदुर्गश्चसप्तैतेदुष्टकीटकाः १

ति विष्णुजीके तांई वा ब्राह्मणके तांई निवेद लगाणेंतें विना कृसर और घृत कर्के पक्काहोया कणकका सार स्वेतादि चूर्ण अर्थात् कडाह इनके अज्ञान पूर्वक बहुतवार भक्षणविषें पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा ॥ और कुत्ता काक गौ इनांका सिंघया जो अन्न तिसके बहुत वार भक्षण विषें भी पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा गोमूत्र युक्तयवोंका भक्षण करणा एहहि इसजगा व्रत जानणा और इच्छातें एकवार भक्षण करणें विषें प्रचेतसा ऋषि जी कथन करतेहैं मक्षीति मक्खी १ गोह २ टटाणा ३ शतस्पृष्ट कीटविशेष ४ लोष्टकृत् कीटविशेष ५ षड्विध्यन् भी कोई कीट विशेष जानणा मुरदुर्ग भी कीटविशेष जानणा एह सत्त ७ दुष्ट कीडे कहेहैं १ ॥

इसकाप्रयोजनकहतेहैं एतैरिति इन पूर्वोक्तोंकर्के वा काकादिकर्के जो अन्न दूषितहै तिसकों इच्छातें भक्षण करे तो कृच्छ्र सांतपनकर्के शुद्धहोताहै २ और अज्ञान पूर्वक एक वार भक्षणविषे कालदुष्ट भक्षणके प्रसंगविषे पिच्छे किहाहै ॥ अव और कहतेहैं केशेति केश कीट कर्के युक्त अन्न और स्त्रियोंका जूठा अन्न कुत्ता रजस्वला स्त्री शूद्र इनां कर्के स्पृष्ट जो अन्न तिसको भक्षण कर्के पंचगव्य पानकरे तो शुद्ध होताहै १ कितक क्षत्रि वैश्यके अन्नकी न्यांई घृतादि द्रव्य विशेष युक्त जो शूद्रका अन्न तिसके भक्षणविषे पराशर जी आज्ञा देतेहैं घृतमिति घृत तैल क्षीर गुड और तेल कर्के पक्की जो वस्तु और शूद्रका अन्न इनको नदी कनारे जाकर्के ब्राह्मण

एतैः काकादिभिश्चैवयदन्नंदूषितंभवेत् तदन्नंकामतोभुक्त्वाकृच्छ्रंसांतपनंच रेत् २ अबुद्धिपूर्वंसकृद्भक्षणेकालदुष्टाशनप्रसंगेप्रोक्तम्। केशकीटावपन्नंच स्त्रीभिःखातंतथैवच श्वोदक्याशूद्रसंस्पृष्टंपंचगव्येनशुध्यतीति १ एतदन्नं भुक्त्वापंचगव्येनशुध्यतीत्यर्थः। क्वचित्क्षत्रियाद्यन्नवत् शूद्रान्नस्यापिघृतादि द्रव्यविशेषरूपस्याभ्यनुज्ञामाहपराशरः॥ घृतंतैलंतथाक्षीरंगुडंतैलेनपाचि तं गत्वानदीतटेविप्रोभुंजीयाच्छूद्रभोजनमिति १ तैलपाचितंपूरिकाशष्कु ल्यादि । भुज्यतइतिभोजनंभोज्यद्रव्यं शूद्रस्यसंबंधिभोजनंशूद्रभोजनं तादृशंघृतादिकं यदा भोक्तव्यंभवति तदा क्षत्रियादिगृहेष्वेव न शूद्रगृहे किंतर्हितच्छूद्रान्नंयादृशंतादृशं वा गृहीत्वागृहाद्बहिर्नदीतीरादौवाभुंजीत

भक्षण करे १ तैलपाचित क्या पूरियांपराकडी तो आद लेकर जानणा ॥ इसका अर्थ करतेहैं जो भक्षण करिए सो भोजन कहिए सो क्या भक्षण करणे योग्य द्रव्य और शूद्र संबंधि जो भोजनहै सो शूद्र भोजन किहाहै तादृश क्या शूद्रसंबंधि घृतादिकें जेकर भक्षण करणेमे इच्छा होवे तद क्षत्रियादियोंके घर विषे भक्षण करे शूद्रके घर विषे भक्षण करणे योग्य नहिहै इसमे भी विशेष कहतेहैं किमिति तद क्या सो शूद्रका अन्न जैसा तैसाहोवे तिसकों ग्रहण कर्के घरतें वाहर नदीकेकनारे तो आद लेकर और किसी एकांत जलके कनारे जा कर्के भक्षण कर लेवे इसमें दोष नहिं जानणा

एह पूर्वोक्तक्षत्रियादि त्रयवर्णके घरविषे भोजनकी आज्ञाहै सो मार्गके थकेहोयांविषे पूर्ववर्ण जो ब्राह्मण तिसके न मिलयां होयांजानणी वा आपत्तिकालके भक्षणविषे जानणी एह माधवजीने कहाहै और क्षुधायुक्तचाक्रायण ऋषिनें हाथीवापादाअन्नभक्षणकिया एह छांदोग्यके प्रथमाध्याय विषे देखणेयोग्यहै। आपत्ति कालमें शूद्रकेगृहविषे भोजन करणेमें पराशरजीकहतेहैं आपदिति आपत्ति कालमें जेकर ब्राह्मण शूद्रके घर विषे भोजन करे तो मनमें पश्चाताप करणे कर्के शुद्ध होताहै और(द्रुपदादिवमुमुचानः)इस मंत्रका सौ जप करे १ अब दीपके जूठे भक्षणकरणे में षट्त्रिंशन्मतविषे कहतेहैं दीपेति दीपका जूठा जो तेलहै और गली में डिगया जो ते

एतत्क्षत्रियादिवर्णत्रयभोजनाभ्यनुज्ञानं मार्गश्रांतादौपूर्ववर्णत्रयासंभवे वेदितव्यमापदिवेतिमाधवः॥ चाक्रायणर्षिणाक्षुधितेनहस्तिपकान्नंभुक्तमिति छांदोग्येप्रथमाध्यायेद्रष्टव्यम्॥ आपदिशूद्रभोजनेपराशरः॥ आपत्कालेतुविप्रेणभुक्तंशूद्रगृहेयदि मनस्तापेनशुद्धयेत्तुद्रुपदानांशतंजपेत् १ दीपोच्छिष्टभक्षणेषड्त्रिंशन्मते॥ दीपोच्छिष्टंतुयत्तैलंरात्रौरथ्याहतंचयत्। अभ्यंगाच्चैवयाच्छिष्टंभुक्त्वानक्तेनशुद्धयति १ तैलग्रहणाद् घृते न दोषः शंखलिखितौ॥ वृथाकृसरपायसापूपमांसभक्षणमाहिताग्निःकृत्वाप्राजापत्यंचरेत् यमः॥ माक्षिकंफाणितंशाकंपायसंगोरसंघृतम्॥ हस्तदत्तानिभुक्त्वातुभोक्तासांतपनंचरेत् १ इदमभ्यासविषयम्॥ फाणितमिक्षुविकारविशेषः॥

ल और मालशतें शेष जो तेल इनांकों भक्षण करे तो एकव्रत कर्के शुद्ध होताहै १ इस जगा तेलका ग्रहण होणेतें घृतमें दोष नाहिं जानणा॥ शंखलिखित स्मृतिसें कहतेहैं वृथेति ब्राह्मण वा विष्णु को निवेद लगाणेतें विना खिचडी क्षीर पूडे मांस इनका भक्षण करे अग्निहोत्री तो प्राजापत्य व्रत करे॥ अब यम जी कहतेहैं माक्षिकमिति मखीर फाणित साक क्षीर दुग्ध घृत इनकों हत्थ तें दित्ते होयांको भक्षण करे तो भक्षण करण वाला सांतपन व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ एह वहुत वार भक्षण करण विषे जानणा और फाणित नाम गन्नेके विकार विशेषका जानणा॥

अब यम जी कुछ और कथन करतेहैं विप्रेति ब्राह्मणके साथ अन्न भक्षण करे तो प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होता है और राजा के साथ अन्न भक्षण करे तो तप्त कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होता है १ और वैश्यके साथ अन्न भक्षण करे तो अतिकृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होता है और शूद्रके साथ अन्न भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै २ इस स्थान में साथ भोजन क्या एकपात्रविषे जो भोजन करणा सो जानणा ॥ एह इच्छातें वहुत वार भक्षणविषे जानणा अब शंखलिखित स्मृतिसें कहतेहैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणके जूठा भक्षण करणे विषे महाव्याहृतियां जो(ॐ भूः ॐभुवः ॐस्वः) इनां कर्के जलको मंत्रण करे फेर तिसका पान करे क्षत्रीके जूठा भक्षण करणें में ब्राह्मी वूटीके रसकर्के क्षीर वनावे तिसको त्रयदिन भक्षण करे और वैश्यकेजूठा

किञ्च विप्रेणसहभुक्त्वान्नंप्राजापत्येनशुद्ध्यति भूभुजासहभुक्त्वान्नंतप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति १ ॥ वैश्येनसहभुक्त्वान्नमतिकृच्छ्रेणशुद्ध्यति शूद्रेणसहभुक्त्वान्नंचांद्रायणमथाचरेत् २ सहभोजनमेकपात्रभोजनम् ॥ एतत्तुकामतो त्यंताभ्यासविषयम् ॥ शंखलिखितौ ॥ ब्राह्मणोच्छिष्टभोजनेमहाव्याहृतिभिरभिमंत्र्यापःपिवेत् ॥ क्षत्रियोच्छिष्टभोजनेब्राह्मीरसविपक्केनत्र्यहंक्षीरेण वर्त्तयेत् ॥ वैश्योच्छिष्टभोजनेत्रिरात्रोपोषितः ब्रह्मसुवर्चलांपिवेत् ॥ शूद्रोच्छिष्टभोजनेसुराभांडोदकपानेचसप्तरात्रमभोजनम् ॥ चांद्रायणंवेतिक्वचित्पुस्तकेपाठः ॥ एतदकामतः। अभ्यासेद्विगुणम् ॥ विष्णुः आमश्राद्धाशने त्रिरात्रंपयसावर्त्तेतब्राह्मणः शूद्रोच्छिष्टाशनेवमनंकृत्वासप्तरात्रम् ॥ वैश्योच्छिष्टाशनेपंचरात्रम् ॥ राजन्योच्छिष्टाशनेत्रिरात्रम्

भक्षण करणेंमें त्रयरात्रि उपवास व्रत कर्के ब्रह्मसुवर्चला वूटीको पान कर और शूद्रके जूठा भक्षण करणें में और मदिरा के भांडेमें जल पान करणें विषे सत ७ रात्रि उपवास व्रतकरे तो शुद्ध होताहै वा चांद्रायणव्रतकरे एह किसे पुस्तकमे पाठ है एह प्रायश्चित्त अज्ञानतें जूठे भक्षण विषे जानणा और वहुत अभ्यास होवे तिसमे दूणा जानणा ॥ अब विष्णुजी कथनकरतेहैं आमेति कच्चे अन्नका जो श्राद्ध तिसके भक्षण विषे ब्राह्मण त्रय रात्रि केवल जल पानही करणे कर्के शुद्ध होताहै और शूद्रके जूठा भक्षण करणेमे उलटी कर्के सत्त ७ रात्रि व्रत करे और वैश्यके जूठा भक्षण करणेमे पंच ५ रात्रि व्रत करे और क्षत्रीके जूठा भक्षण करणे मे त्रय रात्रिका व्रत करे तो शुद्धहोताहै

और क्षत्रीको शूद्रके जूठा भक्षण करणेमें पंचरात्रिका व्रत करणे योग्यहै वैश्यके जूठा भक्षण में त्रय रात्रि व्रत करे और वैश्य शूद्रका जूठा भक्षण करे तो त्रय रात्रि व्रत करे ॥ अब शंखजी कहतेहैं शूद्रेति शूद्रके जूठा भक्षण करणे मे महीनेका व्रत करे ॥ तैसेहि वैश्यके जूठा भक्षण करणे में पंद्रा १५ दिन का व्रत करे ॥ और क्षत्रीके जूठे भक्षणमें सत्त ७ दिनका व्रत करे और ब्राह्मणके जूठे भक्षणमें एक दिनका व्रत करे और कच्चे अन्नका जो श्राद्ध तिसके भक्षणमे विद्वान् महीनेका व्रत करे १ एह नवश्राद्ध विषे जानणा एह जो जूठ भक्षण का प्रायश्चित्त है सो पित्रादियोंतें और विषय में जानणा ॥ पिता और बडे भ्राता का जूठा भक्षण करणे योग्यहै एह आपस्तंब स्मृतिका वचनहै ॥ जो वृद्धव्यास जी का वचन है सो कहतेहैं मातेति माता वा भगिनी स्त्री और कोई स्त्री इनांके साथ भोजन न करे जेकर करे तो चांद्रायण व्रत करे एह प्रायश्चित्त इनांके साथ भोजनमें जानणा १ और इनके जूठा मात्र भक्षण विषे कहतेहैं शूद्रेति शूद्रके जूठा भक्षण करणेमें और स्त्रियों के जूठा भक्षण में सत्त ७ उपवास व्रत करे तां शुद्ध होताहै अब शातातप ऋषि जी कथन करतेहैं उच्छिष्टेति जो गुरु न होवे तिसका जूठा नहि भक्षण करणा और अपणा जूठा और जूठे साथ जो लगा है एह भी नहि भक्षण करे जेकर भक्षण करे तो कृच्छ्र व्रत करणे करके शुद्ध होताहै

राजन्यःशूद्रोच्छिष्टाशीपंचरात्रम् ॥ वैश्योच्छिष्टाशीत्रिरात्रम् वैश्यः शूद्रोच्छिष्टाशीच । शंखः । शूद्रोच्छिष्टाशनेमासंपक्षमेकंतथाविशः क्षत्रियस्यतुसप्ताहंब्राह्मणस्यतथादिनम् १ आमश्राद्धाशनेविद्वान्मासमेकंव्रतीभवेत् ॥ एतन्नवश्राद्धेबोध्यम् ॥ एतदुच्छिष्टप्रायश्चित्तंपित्राद्यतिरिक्तविषयम् ॥ पितुर्ज्येष्ठस्यचभ्रातुरुच्छिष्टंभोज्यमित्यापस्तंबस्मरणात् ॥ यत्तुवृद्धव्यासवचनम् ॥ मातावाभगिनीवापिभार्यावान्याश्चयोषितः नताभिःसहभोक्तव्यंभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् १ तत्सहभोजनविषयम् ॥ उच्छिष्टमात्रभोजनेतु शूद्रोच्छिष्टभोजनेसप्तरात्रमभोजनं स्त्रीणांचेत्यापस्तंबोक्तंद्रष्टव्यम् ॥ शातातपः।उच्छिष्टमगुरोरभोज्यंस्वयमुच्छिष्टमुच्छिष्टोपहतंच तद्भोजनेकृच्छ्रम्

जो अंगिराका वचन है सो कहतेहैं ब्राह्मण्येति ॥ ब्राह्मणीके साथ जो भोजन करे वा तिसका जूठा भक्षण करे तिसविषे विद्वान् पुरुष दोष नाहिं मानतेहैं १ एह तिसके विवाहमें वा आपत्ति विषयमें जानणा ॥ अब नीचके जूठा भक्षणमें कहतेहैं अंत्येति नीचोंका जूठा द्विजाति भक्षण कर तो चांद्रायण कृच्छ्र व्रत और तदर्ध ब्रह्म क्षत्र वैश्य इनांमें एह विधि आपस्तंब जीकी कथन कीती होई जानणी अर्थात् ब्राह्मण नीचका जूठा भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत करे क्षत्री भक्षण करे तो कृच्छ्र व्रत करे वैश्यको भक्षण करणे में कृच्छ्रका अर्ध व्रत करणा योग्यहै अब शंख जी कहतेहैं अमेध्येति अपवित्र वस्तु पतित पुरुष चांडाल पुक्कस क्या चांडालवंश रजस्वला स्त्री कुणि क्या टुंडा खोटे नखो वाला इनां कर्के स्पर्श वाला जो अन्न तिसको

यत्त्वंगिरोवचनम् ब्राह्मण्यासहयोश्नीयादुच्छिष्टंवाकदाचन तत्रदोषंन मन्यंतेसर्वएवमनीषिणइति १ तद्विवाहविषयमापद्विषयंवा। अंत्योच्छिष्ट भोजनेतु अंत्यानांभुक्तशेषंतुभक्षयित्वाद्विजातयः चांद्रंकृच्छ्रंतदर्धंचब्रह्म क्षत्रविशांविधिरित्यापस्तंबोक्तंद्रष्टव्यम् शंखः। अमेध्यपतितचांडालपुक्क सरजस्वलाकुणिकुष्ठिकुनखिसंस्पृष्टंचभुक्त्वाकृच्छ्रमाचरेत् कुणि हस्तविक लः। यमः। मसूरमांसमाषाणिभुक्त्वायोवमतिद्विजः त्रिरात्रमुपवासोऽस्यप्रा यश्चित्तंविधीयते प्राणायामैस्त्रिभिःस्नात्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति १ विष्णुः शूद्रोच्छिष्टंशुनावापिसंस्पृष्टंप्राश्यभोजनम् तप्तकृच्छ्रेणशुध्यतप्राजापत्ये नवापुनः शक्त्यापराकोदातव्य इतिधर्म्मस्यनिश्चयः १

भक्षण कर्के कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होताहै अब यम जी कहतेहैं मसूरेति मसर माष मांस इनांको जो द्विज भक्षण कर्के उलटी कर देवे इसका प्रायश्चित्त त्रय रात्रिका उपवास व्रत जानणा और स्नानकर्के त्रय प्राणायाम करे तां शुद्धहोताहै १ अब विष्णुजीकहतेहैं शूद्रेति शूद्रका जूठा वा कुत्ते का जूठा इनां कर्के स्पर्श वाला जो अन्न तिसको भक्षण करे तो तप्तकृच्छ व्रत करणे कर्के शुद्ध होताहै वा प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होताहै वा शक्ति कर्के पराक व्रत जो बारां १२ दिनका है सो देणे योग्यहै एह धर्म्मशास्त्रका निश्चय जानणा अर्थात् जैसी शक्ति होवे तैसा हि व्रत देणे योग्यहै १

क्षत्रेति क्षत्रि वैश्यादिककें भक्षण करणेतें शेषरहिहाहोया जो अन्न और गर्दभसूकरककें भुक्तशेषजो अन्न तिसको द्विज भक्षणककें एकपादहीन कृच्छ्र व्रत करे और समर्थहोवे तद संपूर्ण व्रत करे १ और शव क्या मुर्देआदि ककें स्पर्श वाला जो जल तिसके पानविषें प्रायश्चित्तादि प्रकीर्णक प्रकरणविषें देखणें योग्यहै ॥ ❀ अब क्रियादुष्टके भक्षणविषें प्रायश्चित्तकहतेहैं नेति क्रियादुष्ट जो अन्न तिसका न भक्षण करे जो पतित पुरुषों ककें पृथक् देखया होवे इत्यादिककें निषिद्ध जो अन्न तिसकों भी भक्षण न करे ॥ तैसेंहि ब्रह्मपुराणविषें कहतेहैं हस्तेति हत्थ ककें दित्ती होई जो स्नेह वाली वस्तु क्या घृतादि और लवण व्यंजन एह दाताको प्राप्त नाहिं होते और उसको

क्षत्त्रवैश्यादिभिर्जुष्टंगर्दभैःसूकरैस्तथा पादहान्याभवेत्कृच्छ्रंशक्त्यासर्वंचरेद्द्विजः १ जुष्टभुक्तशेषम् शवाद्युपहतजलपानेप्रायश्चित्तादिप्रकीर्णकप्रकरणेद्रष्टव्यम् ❀ अथक्रियादुष्टाशनेप्रा० नभक्षयेत्क्रियादुष्टंयद्दुष्टंपतितैः पृथगित्यादिनानिषिद्धम् ॥ तथाब्रह्मपुराणे। हस्तदत्ताश्चयेस्नेहालवणव्यंजनानिच दातारंनोपतिष्ठंतिभोक्ताभुंक्तेतुकिल्बिषम् १ तस्माद्दंतरितंदेयंपर्णेनवतृणेनवा प्रदद्यान्नतुहस्तेननायसेनकदाचन २ तथा। एकेनपाणिनादत्तंशूद्रदत्तंनभक्षयेत् घृततैलेचलवणंपानीयंपायसंतथा भिक्षाचहस्तदत्ताऽपिनग्राह्यायत्रकुत्रचिदिति १

भक्षण करण वालाभी पापकों भक्षणकरताहै १ तिस कारणतें घृतादि वस्तु पत्रककें वा तृणककें देणे योग्यहै हत्थ ककें न देवे और लोहेके पात्र ककें भी न देवे २ तैसेंहि और कथन करतेहैं एकेति एक हत्थ ककें जो दित्ता होया और शूद्र ककें दित्ता होया जो अन्नादि तिसको न भक्षण करेऔर घृत तेल लवण पानी दुग्ध भिक्षा एह संपूर्ण एक हत्थ ककें दित्ते होवें तो किसी जगा ग्रहण करणे योग्य नहिंहैं अर्थात् किसी स्थानविषें भी इनांका ग्रहण न करे जेकर करे तो दोषभागी होताहै इसका प्रायश्चित्त अगली स्मृतिसें जानणा १

अब शंख लिखित स्मृति से कहतेहैं नेति जलतें विना अन्न कों नहिं भक्षण करे क्योंकि भोजनके पहले और पीछे आचमनका विधानहै सो विना जलसे नहि होसक्ता और दो बार जो पका होया तिसकों भी नहिं भक्षण करे और वासी अन्न कों भी नहिं भक्षण करे और राग करा रंगीदी मिठआई क्षीर खण्डकी वणी वस्तु दधि गुड कणक यव पीठ इनांके विकारतें विना पूर्वोक्तोंके भक्षण विषे सामान्य उपपातकका पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा ॥ और पर्युषित रागादिके भक्षण विषें दोष नहिहै । अब मिताक्षरा विषें पराशरजीकावचनहै माक्षिक मित मखीर फाणित शाक दुग्ध लवण घृत एह हत्थ करके दित्ते होयेकों भक्षण करे तो एक दिनका उपवास व्रत करे १ और (भाक्तासांतपनंचरेत्) एह चतुर्थ पाद विषें पाठ पिच्छे शूल पाणिनें कयाहै और इस स्थान मे सांतपन व्रत त्रय दिनका जानणे योग्यहै इसका प्रत्याम्नाय

॥ शंखलिखितौ ॥ नापानीयमन्नमश्नीयात् ॥ नद्विपक्वंनपर्य्युषितमन्यत्र रागचरुखाण्डवदधिगुडगोधूमयवपिष्टविकारेभ्यः ॥ एतद्भक्षणसामान्योपपातकप्रायश्चित्तंबोध्यम् ॥ मिताक्षरायांतुपराशरः ॥ माक्षिकंफाणितंशाकंगोरसंलवणंघृतम् हस्तदत्तानिभुक्त्वातुदिनमेकमभोजनमिति १ भाक्तासांतपनंचरेदिति चतुर्थपादेपाठःशूलपाणिनाभिहितः॥ अत्रसांतपनंचत्र्यहसाध्यम् ॥ पुराणमेकंप्रत्याम्नायः ॥ एतद्ज्ञानतः ॥ अज्ञानतस्त्वर्द्धम् ॥ कामतस्तुहस्तदत्तभोजने अब्राह्मणसमीपेभोजने दुष्टपंक्तिभोजनेपंक्त्यग्रेभोजनेऽभ्यक्तमूत्रपुरीषकरणे मृतसूतकशूद्रान्नभोजने शूद्रैःसहस्वप्ने त्रिरात्रमभोजनमितिहारीतोक्तंविज्ञेयम्

एक पुराण जानणा ॥ अर्थात् पुराण दान करे वा तिसका पाठ करा देवे और पुराण नाम सो टां मासे १६ चांदीकाहै तिसका दान करणा एह अर्थयथा योग्यहै परंतु एहज्ञानतें भक्षण करण विषें जानणा और अज्ञानतें भक्षण विषें अर्द्ध व्रत जानणा और इच्छातें हस्तकर्के दित्ते होएके भोजन विषे कहतेहैं अब्राह्मणेति ब्राह्मणके समीप विना भोजन करणे विषें और दुष्ट पंक्तिके विषें भोजन करणें में और पंक्तितें प्राथम भोजन करणें विषे और स्नान कर्के मूत्र विष्टा करणे विषे और मृत होएके सूतक विषे वा शूद्र के अन्न भक्षण करणे विषें और स्वप्न विषें शूद्र के साथ भोजन करणे विषे त्रय रात्रि का उपवास व्रत करे एह हारीत जीका कथन कीता होआ जानणा

पर्य्येति परस्पर दानतेंजो दुष्ट अन्नहै तिसके भक्षण विषे पराशरजी कहतेहैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणका अन्न शूद्र देवे और शूद्रका अन्न ब्राह्मण देवे एह दोनोंअन्न अभक्ष्य हैं जेकर भक्षण करे तो एक दिनका उपवास व्रत करे एह वृद्धयाज्ञवल्क्यका कथन कीताहोया जानणा ॥ १ ॥ अब शूद्रके हस्ततें भोजन करणे में कहतेहैं ॥ शूद्रेति शूद्रके हस्त कर्के जो भोजन करता है वा जल पान करताहै सो एक उपवास कर्के पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होताहै एह मनुजीका कथन कीता होया जानणा १ अब फूकदेकर्के जो दुष्ट अन्न तिसके भक्षण मे कहते हैं आसनेति आसन पर स्थित होके वा आसन पर पाद रख के वा अर्द्ध वस्त्र ऊपर लेकर्के वा फूक मार कर्के जो भोजन करता है सो कृच्छ्र सांतपनव्रत करे तो शुद्ध होताहै १ इसमें आसन अपवित्र जानणा

पर्य्यायान्नदानदुष्टेतु ब्राह्मणान्नंददच्छूद्रःशूद्रान्नंब्राह्मणोददत् द्वयमेतदभो
ज्यंस्यादभुक्त्वातूपवसेदहारितिवृद्धयाज्ञवल्क्योक्तमवगंतव्यम् १ शूद्रह
स्तभोजनेतु। शूद्रहस्तेनयोभुंक्तेपानीयंवापिबेत्क्वचित् अहोरात्रोषितोभूत्वा
पंचगव्येनशुद्ध्यतीतिमनूक्तंज्ञेयम् १ धमनदुष्टेपि। आसनारूढपादोवाद
स्त्रार्धप्रावृतोपिवा मुखेनधमितंभुक्त्वाकृच्छ्रंसांतपनंचरेदितितेनैवोक्तम् १
पित्राद्युद्देशेनत्यक्तान्नभोजनेतु। भुंक्तेचेत्पार्वणश्राद्धेप्राणायामान्षडाचरेत्
उपवासस्त्रिमासादिवत्सरांतंप्रकीर्तितः १ प्राणायामत्रयंवृद्धावहोरात्रंसपि
ण्डने असरूपेस्मृतंनक्तंव्रतपारणकेतथा २ असरूपेद्विवर्षिकत्रिवार्षिकश्रा
द्धे व्रतपारणेकृत्व्रतंधृत्वाश्राद्धेपारणायत्रकृतातद्भोजनेपिनक्तमेव

अब पित्रादिके निमित्त दित्ताजो अन्न तिसके भक्षणविषे कहतेहैं भुंक्तइति जो पुरुष पार्वणश्राद्ध
विषे भोजन करता है सो छे ६ प्राणायाम करे और मृत होए के त्रय महीनें तें लेकर वर्षतक
भोजन करताहै सो उपवास व्रत करे १। और वृद्धि क्या नांदीश्राद्धविषे भोजन करे तद त्रय प्राणा
याम करे और सपिंडी विषे भोजन करे तो एक उपवास व्रतकरे २ और असरूप विर नक्त व्रत
करे तैसेंहि व्रत पारण विषे जानणा २ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहै असरूपइति अस
रूप क्या दो २ वर्ष वा त्रय ३ वर्षके श्राद्ध विषे और व्रत पारणक क्या व्रत धारण कर्के श्राद्ध
विषे पारणा करे तिस भोजन विषे भी नक्तव्रत करे अर्थात् रात्रिको भोजन करे तो शुद्ध होताहै

एही पूर्वोक्त व्रत क्षत्रीके अन्नभक्षण करणमें दूणाकरे और वैश्यके अन्न भक्षण करणेंमें त्रिगुण करे और शूद्रके अन्न भक्षण करणेंमें चारगुण व्रत करे १ और विशेष कहतेहैं अतिथ्याविति अभ्यागत को दरवाजे विषे स्थित होयां २ जो द्विज जल पान करे तो सो जल रुधिरको न्याई होताहै तिसके भक्षण करणे करके चांद्रायण व्रतकरे एह भारद्वाजका कथन कीत्ता होया जानणा २ अब हारीत जी भी कथन करतेहैं एकेति मृत होएके ग्यारवें दिन विषे जो भोजन करे वा अस्थिसंचयन विषे भोजन करे तो त्रय दिनका उपवास व्रत करके विधि करके स्नान करे और कूष्मांड जो यद्देवादेवहेडनमित्यादि मंत्र इनां करके घृत का हवन करे तद शुद्ध होताहै १ अब विष्णुजी भी कथन करतेहै प्राजापत्यमिति नवश्राद्ध विषे भोजन करे तो प्राजापत्य व्रत करे और प्रथम महीनें में भोजन करणें तें एक पाद ऊन प्राजापत्य व्रत करे और त्रयपक्ष के श्राद्ध विषे भो

द्विगुणंक्षत्त्रियस्यैतत्त्रिगुणंवैश्यभोजने साक्षाच्चतुर्गुणंह्येतत्स्मृतंशूद्रस्य भोजने १ ॥ अतिथौतिष्ठतिद्वारिह्यपःप्राश्नंतियेद्विजाः रुधिरंतद्भवेद्वारिभुक्त्वाचांद्रायणंचरेदितिभारद्वाजोक्तमवगंतव्यम् ॥ हारीतेनाप्युक्तम् । एकादशाहेतुत्र्यहंभुक्त्वासंचयनेतथा ॥ उपोष्यविधिवत्स्नात्वाकूष्मांडैर्जुहुयाद्घृतमिति १ विष्णुनाप्युक्तम् । प्राजापत्यंनवश्राद्धेपादोनंचाद्यमासिके ॥ त्रैपक्षिकेतदर्द्धंतुपंचगव्यंद्विमासिकेइतिचापद्विषयम् ॥ अनापदितु चांद्रायणंनवश्राद्धेप्राजापत्यंतुमिश्रके एकाहस्तुपुराणेषुप्राजापत्यंविधीयते १ ॥ इतिहारीतोक्तंद्रष्टव्यम् । एकाहःप्राजापत्यएकदिनीयंप्राजापत्यंपुराणश्राद्धेष्वित्यर्थः ॥ प्राजापत्यंतुमिश्रकेइत्येतदाद्यमासिकविषयंद्रष्टव्यम्

जन करणें तें अर्द्ध प्राजापत्य व्रत करे और दूसरे महीनेमें भोजन करणें सें पंचगव्य पानकरे एह आपत्ति कालविषे जानणा ॥ अब आपत्ति जिसको नाहि तिसके भक्षण करणेंमें कहतेहैं चांद्रायणमिति नवश्रद्ध विषे भोजन करणें तें चांद्रयण और मिश्रक विषे भोजन करणेंतें प्राजापत्य व्रत करे और पुराणें श्राद्ध विषे भोजन करणेतें एकदिनका प्राजापत्य व्रत करे एहहारीतजी का कथन कीत्ता होया जानणा १ एकाह प्राजापत्य क्या एक दिन का प्राजापत्यव्रत पुराणेश्राद्ध विषे जानणा (और प्राजापत्यंतुमिश्रके) एह जो पूर्वोक्त पद हैं सो मृत होए पुरुष के प्रथम महीनेका जो श्राद्ध तिसके विषे जेकर भोजन करे तो तिस विषय विषे जानणे योग्य हैं ॥

अथ द्वितीयादि महीनेविषें कहतेहैं प्राजापत्यमिति नवश्राद्धविषें भोजन करणेनें प्राजापत्य व्रतक
रे और प्रथम महीनें विषें भोजन करणेंते एक पाद ऊन प्राजापत्य व्रत करे ॥ और त्रय पक्षके
श्राद्ध विषें भोजन क णेंतें अर्द्ध प्राजापत्य व्रत करे और दो २ महीनेके श्राद्धविषें भोजनकरणे
तें एक पाद व्रत करे १ और छे ६ महीने के श्राद्धविषें वा वार्षिक श्राद्ध विषें भोजनकरे तो
एकपाद ऊन कृच्छ्र व्रत करे और अन्य मास विषें अर्थात् । ३ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ ।
१० । ११ ॥ इनामहीनेके मासिक श्राद्ध विषें भोजन करणें तें त्रय रात्रि व्रत करे
और नित्य श्राद्ध विषें भोजन करणेंते एक दिन का उपवास व्रत करे एह षट्त्रिंशन्मत
का कथन कीता होया जानणा २ और क्षत्रियादिकोंके श्राद्ध विषें आपत्तिविना भोजन करणे
के विशेष कथन कीताहै ॥ २ नव श्राद्धविषें भोजन करणेमें चांद्रायण व्रत करे और मा

द्वितीयादिषुतु ॥ प्राजापत्यंनवश्राद्धेपादोनंचाद्यमासिके त्रैपाक्षिकेतदर्धंतु
पादेद्वैमासिकेतथा १ पादोनकृच्छ्रंनिर्दिष्टंषण्मासेचतथाब्दिके त्रिरात्रंचा
न्यमासेषुप्रत्यहंचैदहःस्मृतमितिषट्त्रिंशन्मतोक्तंद्रष्टव्यम् क्षत्रियादिश्राद्ध
भोजनेत्वनापदितत्रैवविशेषउक्तः। चांद्रायणंनवश्राद्धेपराकोमासिकेस्मृतः
त्रैपाक्षिकेसांतपनंकृच्छ्रोमासद्वयेस्मृतः १ क्षत्रियस्यनवश्राद्धेव्रतमेतदुदाहृ
तम् वैश्यस्यार्द्धाधिकंप्रोक्तंक्षत्रियात्तुमनीषिभिः २ शूद्रस्यतुनवश्राद्धेचांद्रा
यणद्वयम् सार्द्धंचांद्रायणंमासेत्रिपक्षेत्वैंदवंव्रतम् मासद्वयेपराकःस्यादू
र्ध्वंसांतपनंस्मृतम् ३

सिक श्राद्धविषें भोजन करणेंमें पराक व्रत जो बारां १२ दिनकाहै तिसकों करे और त्रि पक्षि
क श्राद्ध विषें भोजन करणें मे सांतपन व्रत करे और दो महीने के श्राद्ध विषें भोजन कर
णे मे कृच्छ्र व्रत करे १ एह पूर्वोक्त व्रत क्षत्री के नवश्राद्ध विषें जानणा और क्षत्रीतें वैश्यको
अर्द्धतें अधिक अर्थात् पादोन ऋषियोंने कथन कीताहै २ और शूद्रके नव श्राद्ध विषें भोजनक
रणे तें दो २ चांद्रायण व्रत करेतो शुद्ध होताहै और मासिक श्राद्ध विषें भोजन करणेमे अर्द्ध औ
र एक चांद्रायण अर्थात् डेढ चांद्रायण व्रत करे और त्रय पक्षके श्राद्ध विषें भोजन करणेंमे ए
क चांद्रायण व्रत करे और दो २ महीनेके श्राद्ध विषें भोजन करणे मे पराक व्रत जो बारां १२
दिनकाहै सो करणा योग्यहै और इनांते उपरंत जो श्राद्ध हैं तिनांविषे जो भोजन करताहै सो
सांतपन व्रत करणे करके शुद्ध होताहै ३

अब जो शंख जी का वचनहै सो कथन करतेहैं ॥ चांद्रायणमिति मृत होए पुरुषके नव श्राद्ध विषे जो भोजन करताहै सो चांद्रायण व्रत करे और मासिक श्राद्ध विषे भोजन करे तो पराक व्रत करके शुद्ध होताहै और त्रय पक्षके श्राद्ध विषे भोजन करणेते अति कृच्छ्र व्रत करे और छे ६ महीने के श्राद्ध विषे भोजन करणे ते कृच्छ्र व्रत करे १ और वार्षिक श्राद्ध विषे भोजन करणेतें पाद कृच्छ्र व्रत करे और द्विवार्षिक त्रिवार्षिक श्राद्ध विषे भोजन करणे ते एक उपवास व्रत करे इसत उपरंत विषे दोष नहिंहै २ एह शंख का वचनहै सो एह सर्पादि यों करके मृत होए पुरुषाविषे जानणा ॥ अथवा जो पतित नपुंसकइत्यादि पंक्ति रहितहैं इनांके विषय विषे जानणा । व्रत करणेको असमर्थ वास्ते कहतेहैं चांद्रेति चांद्रायण व्रतका प्रत्याम्नाय अठ ८ गौयां हैं और तप्तकृच्छ्र विषे चार ४ गौआंहैं ॥ सोई कहतेहैं चांडालेति

यत्तुशंखवचनम् चांद्रायणंनवश्राद्धेपराकोमासिकेस्मृतः॥ पक्षत्रयेतिकृच्छ्रः स्यात्षएमासेकृच्छ्रएवतु १ आब्दिकेपादकृच्छ्रंस्यादेकाहःपुनराब्दिके ॥ अतऊर्ध्वंनदोषः स्याच्छंखस्यवचनंयथेति २ तत्सर्पादिहतविषयम् ॥ यस्तेनपतितक्लीबाद्यपांक्तेयविषयंवा चांद्रायणेऽष्टधेनवः ॥ तप्तकृच्छ्रेतुधेनुचतुष्टयम् ॥ चांडालादुदकात्सर्पाद्ब्राह्मणाद्वैद्युतादपि दंष्ट्रिभ्यश्चपशुभ्यश्चमरणंपापकर्मणाम् १ पतनानाशकैश्चैवविषोद्वंधनकैस्तथा भुक्त्वैषां षोडशश्राद्धेकुर्यादिंदुव्रतंद्विज इति २ तथा अपांक्तियान्नमुद्दिश्यश्राद्धमेकादशेहनि ब्राह्मणस्तत्रभुक्त्वान्नंशिशुचांद्रायणंचरेदिति १ ॥ आमश्राद्धेतथाभुक्त्वातप्तकृच्छ्रेणशुध्यति संकल्पितंतथाभुक्त्वात्रिरात्रंक्षपणंभवेदिति भरद्वाजेनगुरुप्रायश्चित्ताभिधानात् ॥

चांडाल जल सर्प ब्राह्मण बिजली दंष्ट्री जो शूकरादि पशु इनां करके मृत होवे १ और टोए विषे डिगणे तें और अनाशक क्या नहिभोजनकरणा और विष बंधन वा इनांकरके मृत होवे इनांके षोडश श्राद्ध विषे जो द्विज भोजन करे सो चांद्रायण व्रत करे २ तैसेहि और कहतेहैं अपांक्तेयेति पंक्ति रहित जो पुरुष मृत होया होवे तिसके निमित्त दित्ता होया जो अन्न और ग्यारवें दिनका जो श्राद्ध तिसको जो ब्राह्मण भोजन करे सो शिशु चांद्रायण व्रत करे १ और कच्चे अन्न का जो श्राद्ध है तिसको भक्षण करके तप्त कृच्छ्र व्रत करे और संकल्पित जो अन्न तिसको भक्षण करके त्रय रात्रि उपवास करे २ एह भरद्वाज ने गुरु प्रायश्चित्त कथन कीताहै अ थांत् पूर्वोक्त शंखजीके वचनका जो तात्पर्य्य किहाहै सो इन्हांहि वचनांतें किहाहै

अब ब्रह्मचारियों विषे वृहद्यम जी विशेष कथन करते हैं मासिकोंनि नहिं समाप्त होया है व्रत जिस द्विज का सो ब्रह्मचारि मासिकादि श्राद्ध विषे भोजन करे तो इसका प्रायश्चित्त उपवास त्रय किया है फेर त्रय प्राणायाम करके घृत का प्राशन करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ यह अज्ञान विषय विषें जानणा ॥ और इच्छा तें भक्षण विषें भी वृहद्यम जी कहतेहें मधिरा नि मदिरा मांसको जो भक्षण करे और श्राद्धका अन्न सूतकका अन्न भक्षण करे तो प्राजापत्य कृच्छ्र धर करके ब्रह्मचारी शेष व्रत नूं समाप्त करे १ और कच्चे अन्न के श्राद्ध विषें भोजन करणें तें सबजगा अर्द्ध व्रत करे इसमें वचन कहतेहैं आमेति आम श्राद्ध विषें अर्द्ध व्रत करणा और सब

ब्रह्मचारिपुबृहद्यमोविशेषमाह मासिकादिषुयेऽश्नीयादसमाप्तव्रतोद्विजः त्रिरात्रमुपवासोवैप्रायश्चित्तंविधीयते १ प्राणायामत्रयंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति १ इदमज्ञानविषयम् ॥ कामतोपिसएवाह ॥ मधुमांसचयोश्नीयात् श्राद्धसूतकमेववा प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रं व्रतशेषंसमापयेदिति ॥ २ ॥ आमश्राद्धेतुसर्वत्रार्द्धम् ॥ आम श्राद्धेतदर्द्धंतुप्राजापत्यंतुसर्वदेति षड्त्रिंशन्मतेविधानात् यत्तूशनसोक्तम् ॥ दशकृत्वः पिबेच्चापोगायत्र्याश्राद्धभुग्द्विजः ततःसंध्यामुपासीतशुद्ध्येत्तुतदनंतरमिति १ ॥ तदनुक्तप्रायश्चित्तश्राद्धविषयम् । संस्कारांगभूतश्राद्धभाजनेतुव्यासनविशेषउक्तः

जगा प्राजापत्यहि करणा इस वचन कों षड् त्रिशन्मत विषें कथन करणें तें ॥ और जो उशना जीने किहा है सो कथन करतेहैं दशेति जो ब्राह्मण श्राद्ध विषे भोजन करताहै सो गायत्री का दश वार मंत्र पढ करके जल पान करे तिसतें अनंतर संध्या करे फेर शुद्ध होजाताहै १ सो इस अनुक्त का पिछे नहिं कथन कीता जो श्राद्ध तिसमें भोजन करणेंका जो प्रायश्चित्त तिस विषय विषे जानणा अर्थात् तीर्थ श्राद्धादिकके जो पिछे घर आके श्राद्ध करतेहैं तिन विषें जानणा और संस्कार जो जातकर्मादि तिनोंका अंगभूत जो श्राद्ध नांद्यादि तिनके विषे भोजन करणेंमें व्या सदेव जी का जो वचनहै सो कथन करतेहैं

निवृत्त इति चूडाहोमके निवृत्त होयां २ और नाम करणतें प्रथम जेकर भोजन करे तो सांतपन व्रत करे और जातकर्ममें भोजनकरे तोभी सांतपन व्रत करे १ और होर संस्कारों विषे ब्राह्मण भोजन करे तो इसीवचन तें उपवास व्रत करके शुद्ध होताहै कैसा ब्राह्मण है निंदित अन्न के भक्षण करणवालाहै २ और सीमंत उन्नयनादि जो कर्म्महैं तिनांविषे भोजन करणेमें फेर धौम्यजी विशेष कहतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्मौदन विषे और सोम यज्ञ विषे सीमंतो न्नयनादि कर्म और जातश्राद्ध विषे नव श्राद्ध विषे ब्राह्मण भोजन करे तो चांद्रायण व्रत करके शुद्ध होताहै सीमंतो न्नयन एक हि संस्का जानणा॥ १॥ इस स्थान मे ब्रह्मौदन नाम कर्म यज्ञ

निवृत्तचूडाहोमेतुप्राङ् नामकरणात्तथा ॥ चरेत्सांतपनंभुक्त्वाजातकर्मणि चैवहि १ अतोऽन्येषुतुभुक्त्व न्नंसंस्कारेषुद्विजोत्तमः नियोगादुपवासेनशु ध्यतेनिंद्यभोजनइति २ सीमंतोन्नयनादिषुपुनर्धौम्योविशेषमाह॥ ब्रह्मौ दनेचसोमेचसीमंतोन्नयनेतथा जातश्राद्धेनवश्राद्धेद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति १ अत्र ब्रह्मौदनाख्यंकर्म यज्ञांगभूतं सोमसाहचर्य्यात् ॥ दूषितफलादौ प्रायश्चित्तमाह लघुविष्णुः ॥ मृद्वारिकुसुमादींश्चफलकंदेक्षुमूलकान् विण्मूत्रदूषितान्प्राश्यचरेत् कृच्छ्रंचपादतः॥ सन्निकृष्टेर्द्धमेवस्यात्कृच्छ्रंत्वशु चिभोजने १ दूषितंसंसर्गमात्रम् ॥ सन्निकृष्टत्वंतुमहान्संसर्गः

का अंगभूत जानणा क्योंकि सोम यज्ञकी साहचर्य्यतातें ॥ अब दूषितजो फलादि तिनके भक्षण में प्रायश्चित्त लघु विष्णु जी कहतेहैं मृदिति मृत्तिका जल पुष्पादि फल कंद गन्ने मूलिआं एह विष्टा मूत्र करके दूषित होवे तो इनके भक्षणकरणेमें कृच्छ्रव्रतका एक पाद व्रत करे जेकर विष्टा मूत्र समीप होवे तो अर्द्ध कृच्छ्र व्रत करे और अपवित्र भोजनके भक्षणविषे कृच्छ्र व्रतकरे १ और इस स्थानमे दूषित नाम समीप मात्रका जानणा॥ और सन्निकृष्टत्वनाम बहुत समीपता का इस जगा जानणा

अथ आपस्तंवजी कथन करतेहैं ॥ याजकेति यज्ञ करवाणे वाले का अन्न और नव श्राद्धोंका और संग्रह क्या मेलका जो अन्न और स्त्रीके प्रथम गर्भ होवां २ तिनके गृहका अन्न अथवा तिसके गर्भके संस्कारदा जो अन्न इनांकों ब्राह्मण भक्षण करके चांद्रायण व्रत करेतो शुद्ध होताहै १ अब मनुजी कहतेहैं घृतेति जो पुरुष पंचग्रासी घृत विना करताहै और पिछलें घृतकरके भोजन करताहै सो चांद्रायण व्रतकरके शुद्ध होताहै १ अब वृथा पाक जो अन्न तिसके भक्षण विषे प्रायश्चित्त शातातपजी कहतेहैं तिसमेंभी प्रथम वृथापाकका लक्षण कहतेहैं यत्रेति जिस विषे देवता और पितर भोजन नकरें सो वृथापाक किहाहै तिसको कदाचित् भी भक्षण नकरे १

आपस्तंवः ॥ याजकान्नंनवश्राद्धंसंग्रहेचैवभोजनम् स्त्रीणांप्रथमगर्भेचद्विजश्चांद्रायणंचरेत् १ मनुः । घृतहीनंतुयोभुंक्तेनरस्त्वाहुतिपंचकम् पश्चाद्घृतेनयोभुंक्तेभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् १ वृथापाकान्नभक्षणे । शातातपः । यत्रनाश्नंतिदेवाश्चपितरश्चयथाविधि वृथापाकःसविज्ञेयस्तस्यनाद्यात्कथंचन १ वृथापाकस्यभुंजानःप्रायश्चित्तंचरेद्द्विजः प्राणायामांस्त्रिरभ्यस्यघृतंप्राश्यविशुध्यति २ लिखितोपि । यस्यचाग्नौनक्रियतेयस्यचाग्रंनदीयते नतद्भोज्यंद्विजातीनांभुक्त्वातूपवसेदहरिति १ ॥ अथभावदुष्टवाग्दुष्टादिभक्षणे प्रायश्चित्तम्

और वृथा पाकके भोजन करणे वाला ब्राह्मण प्रायश्चित्त करे सो त्रय प्राणायाम करके घृतका प्राशन करे तो शुद्ध होताहै २ अब लिखित स्मृतिसें भी कथन करतेहैं यस्येति जिस अन्नके अग्र भागका अग्निविषे हवन न करे और जिस अन्नके अग्र भागका दान न देवे अर्थात् जिस अन्नतें हंदा न देवे सो अन्न द्विजाति क्या ब्राह्मणकों भोज्य नहीं है अर्थात् भक्षण करणे योग्य नहि है और जेकर भक्षण कर लेवे तां एक उपवास व्रत करणे करके शुद्ध होताहै १

● अब भाव दुष्ट वाग्दुष्टादिजो अन्न तिनके भक्षणविषे प्रायश्चित्त कहतेहैं

तत्रेति प्रथम भावदुष्टका लक्षण कहतेहैं जिस भावदुष्टादि विषे जो रंगतें वा स्वरूपतें तुल्यता करके निंदित जो शरीरके मलक्या विष्ठादि तिनकी भावनाको उत्पन्न कर वा शत्रु प्रेरित विषादि की शंकाकूं उत्पन्न करे सो भावदुष्ट किहाहै भविष्यत्पुराण विषे किहाहै विचिकित्सेति जिस अन्न तें हृदय विषे संशय होजावे सो सुहृल्लेख क्या भावदुष्ट किहाहै और स्वभावतें शंका होजावे अर्थात् किसेके देखनेतें शंका नाहि होई किंतु उनकी दुर्गंधि आदि स्वभाव तें ही शंका होईहै तो विष्ठा तुल्य किहाहै १ और रसके विकारतें रस दुष्ट किहाहै वचनतें क्षीर दुग्ध पूडतो आदि लेकर यथा क्या यथावत् तिसी दिन विषे रहते तें हुंदेहैं क्योंकि दूसरे दिन विषे उनका विकार हो यजाताहै ॥ २ ॥ अब इसी विषे पराशर जी कहते हैं वागिति वाणी दुष्ट और भाव दुष्ट जो अन्न और भावदूषित भाजन क्या मलादि शंका वाला जो भांडा तिसके विषे ब्रा

तत्र यद्वर्णत आकारतोवाविसदृशतया जुगुप्सितशरीरमलादिभाव नांजनयति आरिप्रयुक्तगरादिशंकां वा जनयति तद्भावदुष्टम् ॥ भवि ष्यत्पुराणे ॥ विचिकित्सातुहृदये अन्नेयस्मिन्प्रजायते ॥ सुहृल्लेखंतु विज्ञेयंपुरीषंतुस्वभावतः ॥ १ ॥ रसदुष्टंविकारादिरसस्येतिनिदर्श नात पायसापूपक्षीरादितस्मिन्नेवदिनेयथा ॥ २ ॥ सुहृल्लेखंभावदुष्टं अत्र पराशरः ॥ वाग्दुष्टंभावदुष्टंचभाजनेभावदूषिते भुक्तान्नंब्राह्मणःपश्चात् त्रिरात्रेणविशुध्यतीति ॥ १ ॥ इदंपुरीषंभुंक्ष्वेत्याद्युक्त्वादत्तमन्नंवाग्दुष्टम् शंकायांसत्यांतु शंकास्थानेसमुत्पन्ने अभोज्याभक्ष्यसंज्ञिते आहारशुद्धिंव क्ष्यामितन्मेनिगदतः शृणु १ ॥

ह्मण अन्नको भक्षण करके पिच्छे त्रय रात्रिके उपवास व्रत करके शुद्ध होताहै १ और वाग्दुष्ट का लक्षण कहतेहैं ॥ एह विष्टाहै इसको तूं भक्षण कर इत्यादि कथन करके दित्ता जो अन्न इसको वाग्दुष्ट कहतेहैं ॥ और जिसमें शंका हो जावे तिसमें अब कथन करते हैं शंकेति शंका स्थानके उत्पन्न होयां २ अभोज्य अभक्ष्य है संज्ञा जिसकी अर्थात् एह वस्तु अ भोज्य क्या भक्षण करणे योग्य नाहिहै अर्थात् शूद्रादिके पकाए होएएह चणेआदि होणगे और अभक्ष्य जो वस्तु क्या एह वस्तु अभक्ष्यहै अर्थात् पतितादिके हाथके बनाए होएएहपूडे आदि हो णगे इस प्रकार की जिस स्थानमे शंका होजावे तिसमे पराशरजी कहतेहैं कि तिसके भक्षण कर णेकी शुद्धि कथन कर रिहा जो मै हां सो तूं मेरे तें श्रवण कर १

अक्षारेति खारेलवणतें विना और रूक्खी ब्राह्मीसुवर्चलाका वा त्रय रात्रि शंखपुष्पीकापान दुग्ध के साथ ब्राह्मणकरे अर्थात् जितने दिन ब्राह्मी पीतारहे उतने दिन खारी वस्तु और लवण और घृत ना भक्षण करे १ ॥ पलाशेति पलाहके बिल्वके पत्र कुशापद्म रुंबल इनका क्वाथकर्के जलपान करे तो त्रय रात्रि करके शुद्ध होता है २ एह वसिष्ट जी का कथन कीताहोया जानणा ॥ और मनु जी नें भी अभक्ष्य के भक्षणकी शंकाविषे कथन किया है संवत्सरेति वर्षरोजमे एक कृच्छ्र व्रतको ब्राह्मण करे परंतु अज्ञान तें जो भक्षण कीता है तिसकी शुद्धि वास्ते और ज्ञान तें जो भक्षण कीताहै विशेष तें तिसकी शुद्धि वास्ते १ और शंख स्मृतिमें भी एही कथन कीताहै संवत्सरेति वर्षरोजमें जो अज्ञानतें भक्षण कीचाहै तिसकी शुद्धि वास्ते वर्ष वर्ष प्रति ब्राह्मण एक

अक्षारलवणांरूक्षांपिबेद्ब्राह्मींसुवर्चलां त्रिरात्रंशंखपुष्पींवाब्राह्मणःपयसा सह १ पलाशबिल्वपत्राणिकुशान्पद्ममुदुंबरं अपःपिबेत्क्काथयित्वात्रिरात्रेणविशुद्ध्यतीतिवासिष्ठोक्तंद्रष्टव्यम् । मनुनाप्यभोज्यभोजनशंकायामुक्तम् ॥ संवत्सरस्यैकमपिचरेत्कृच्छ्रंद्विजोत्तमः अज्ञातभुक्तशुद्ध्यर्थंज्ञातस्यचाविशेषतइति १ शंखस्मरणेपीदम् ॥ संवत्सरस्याज्ञातभुक्तशुद्ध्यर्थंप्रतिवर्षंद्विजोत्तमएकंकृच्छ्रंचरेदित्यर्थः । प्रायश्चित्तविवेकेसंवर्त्तः ॥ आपोशानमकृत्वातुयोभुंक्तेनापदिद्विजः भुंजानस्तुयदाब्रूयाद्गायत्र्यष्टशतंजपेत् १ अष्टशतमष्टोत्तरशतम् ॥ स्मृत्यंतरे भोजनकालेमौनंविहितम् ॥ यस्त्वन्विच्छतिसर्वेषां पापानांचविनिष्कृतिम् मौनेनान्नंसमश्नीयादगस्त्यशिरसास्वपेदिति १ ॥

कृच्छ्र व्रत करे इसमे ज्ञातभुक्तशुद्धि वास्तें द्विगुणकरे एह अर्थ सिद्धहै १ अब प्रायश्चित्त विवेक विषे संवर्त्त ऋषि जी कथन करतेहैं आपोशानमिति आपोशान मंत्र को न पढ़ करके जो ब्राह्मण आपत्तिके विना भोजन करे और भोजन करदा होया जेकर वात करे तद गायत्रीका अष्ट शत जप करे अष्टशत क्या अष्टोत्तर शत अर्थात् एक माला जप करे १ और स्मृतिविषे भोजन काल में मौन विधान कीताहै तिसको कहतेहैं ॥ यस्त्विति जो पुरुष संपूर्ण पापांके दूर करणेकी इच्छा करताहै सो पुरुष चुप करके भोजन करे और दक्षिण दिशा विषे शिर रखके शयन करे तो शीघ्र ही पापोंसे रहित होताहै इसी वास्ते बिना मौनतें भोजनमें प्रायश्चितहै ॥ १

॥ सोई संवर्त जी फेर कथन करतेहैं अनेति जो पुरुष आचमन करणेतें विना जल पान करे वा कुछक भक्षण करे तोसो अष्ठ ८००० हजार गायत्री का जप करे तद शुद्ध होताहै २ अब लघुहारीत जी कथन करतेहैं रेतइति वीर्य मूत्र विष्ठा इनांका त्याग करके ...कर प्रमाद तें कुछक भक्षण कर लेवे तो तिसके आद विषे एह करणे योग्यहै कि मृत्तिका जल करके तिसकी शुद्धिहै और पिच्छे तें आचमन करके जल विषे अघमर्षण मंत्र जो ऋतंचसत्याभि त्यादि इसका जप करे १ परंतु एह नाहिं निगलया जो ग्रास तिसविषें जानणा ॥ और एक बार ग्रासके निगलने विषे आपस्तंब जी कहतेहैं भुंजानस्येति भोजनकरदे होए ब्राह्मण की गुदा वग जावे अर्थात् विष्टा हो जावे तो तिसको उच्छिष्टता और अपवित्रतादोए हैं १ तिसका प्रायश्चि

सएव ॥ अनाचांतःपिबेद्यस्तुभक्षयेद्वापिकिंचन गायत्र्यष्टसहस्त्रंतुजपंकृत्वा विशुद्ध्यति २ लघुहारीतः ॥ रेतोमूत्रपुरीषाणामुत्सर्गेश्चेत्प्रमादतः। तदादौतु प्रकर्त्तव्यातेनशुद्धिर्मृदंबुभिःपश्चादाचम्यतुजलेजप्तव्यमघमर्षणम् १ एतद निर्गीर्णग्रासंसकृन्निगीर्णग्रासेतु। आपस्तंबः। भुंजानस्यतुविप्रस्यकदाचित्स्र वतेगुदम् उच्छिष्टमशुचित्वंचप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १ आदौकृत्वातुवैशौचंत तःपश्चादुपस्पृशेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति २ यत्तुशातात पः। मूत्रोच्चारसमुत्सर्गेमोहाद्भुंकेथवापिबेत् त्रिरात्रंतत्रकुर्वीत इतिशातातपो ब्रवीत् १ तद्बहुग्रासाशने। आपस्तंबः। मूत्रोच्चारंसकृत्कृत्वाऽकृत्वाशौचमा त्मनः ॥ मोहाद्भुक्त्वात्रिरात्रंतुयवान्पीत्वाविशुध्यतीति १ मूत्रपदंपुरीषादेरु पलक्षणम् ॥

त कैसे होवे इसमे व्यवस्था करतेहैं कि तद पहिले शौच करे फेर आचमन करे और एक दिन रात्रका उपवास व्रतकरके पंचगव्यका पानकरे तो शुद्धहोताहै २ अब इसीमे जो शातातप जीका वचनहै सो कहतेहैं मूत्रेति मूत्र विष्टा के त्याग कीते होयां मोहकरके जो पुरुष भोजन करे वा जल पान करे तद तिसविषें त्रय रात्रि व्रत करे एह शातातपजीनें किहाहै १ सो एह बहुत ग्रा सों के भक्षणविषें जानणा ॥ अब इसीमें आपस्तंबजी कहतेहैं मूत्रेति मूत्र और विष्ठाको एकवार करके और अपने आपका शौच न करके मोहतें भोजन करे तो त्रय रात्रि यव पान करके शुद्ध होताहै १ इस जगा मूत्रपद विष्टादिका उपलक्षण जानणा।

अब शातातप जी कथन करतेहैं अथेति जेकर भोजन काल विषें ब्राह्मण अपवित्र होजावे अर्थात् अधोवायु छोडे तद तिस ग्रासकों पृथ्वी विषें सुटदेवे और स्नान करे तो शुद्ध होताहै १ और तिस ग्रासकों जेकर भक्षण करे तो एक दिनरात्रके उपवास व्रत करकें शुद्ध होताहै और संपूर्ण अन्न भक्षण कर लेवे तो त्रयरात्रिके व्रत करकें शुद्ध होता है २ और तेल मर्दनादि करकें जो स्नान निमित्तहै तिसमें स्नान नहिं करे तो उसमें संवर्त्त जी का वचनहै समिति स्नाननिमित्त के प्राप्त होयां २ जेकर ब्राह्मण स्नान विना भोजन वा जल पान करे तो स्नान करकें गायत्रीका अष्ट सहस्र जपकरे अष्ट सहस्र क्या अष्ठ ८ तें अधिक हजार जप करे १ एह एक वारके स्नान विषें जानणा। और अभ्यास विषे शंख जी कथन करते हैं नीलमिति नीले वस्त्रकों धारण

शातातपः। अथभोजनकालेचेदशुचिर्भवतिद्विजः भूमौनिक्षिप्यतंग्रासंस्नात्वा विप्रोविशुध्यति १ भक्षयित्वातुतंग्रासमहोरात्रेणशुध्यति अशित्वासर्वमन्नंतु त्रिरात्रेणविशुध्यतीति २ तैलाभ्यंगादिनास्नाननिमित्तेऽकृतस्नानस्य संवर्त्तः समुत्पन्नेद्विजःस्नानेभुंजीताथपिबेतवा गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपेत्स्नातःसमाहितः१ अष्टसहस्रमष्टाधिकसहस्रम्।एतच्चसकृत्॥ अभ्यासेशंखः॥ नीलंवस्त्रं परीधायभुक्तास्नानार्हकोभवेत् त्रिरात्रंतुव्रतंकुर्याच्छित्वागुल्मंलतांतथेति १ क्रतुः॥ आसनारूढपादोवावस्त्रार्द्धप्रावृतोपिवा मुखेनधमितंभुक्त्वाकृच्छ्रं सांतपनंचरेदिति १ स्मृत्यंतरे एवमेवस्थितोगच्छन् व्यायामैरन्नभोजने एवमेवेति एकाहादीन्यभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तानियोजनीयानि॥

करकें जो भोजन करता है सो स्नानके योग्य होताहै और त्रयरात्रि व्रत करे तो शुद्धहोताहै और विनाटाणेतें जो वृक्ष है तिसको और गुच्छे लता क्या वेल इनांनूं कट करकें भी एही पूर्वोक्त व्रतकरे तो शुद्ध हुंदाहै १ अब क्रतुस्मृति सें कथन करते हैं आसनेति आसनपर स्थित होके वा आसन पर पैर रखके वा अर्द्ध बस्त्र ऊपर लेकर वा फूक मारकरकें जो भोजन करताहै सो कृच्छ्र सांतपन व्रतकरे १ और स्मृतिसें कहतेहैं इसीप्रकार बैठाहोया वा चलताहोया वा कसरत करदा होया भेजन करे तो तिसकें अर्थ कहतेहैं एवमिति एकाहादि जो अभक्ष्य भक्षणके प्रायश्चित्त सो जोडने योग्यहैं अर्थात् बैठाहोया भोजन करे तो एकदिनका व्रत करे और चलताहोया भोजन करे तो दोदिनका व्रतकरे और कसरत करदा होया भोजनकरे तो त्रयदिनका व्रतकरे एह अर्थहै

अब पराशरजी कथन करतेहैं। भुंजान इति जो ब्राह्मण भोजन करदा होया पयरनूं हत्थकर्के स्पर्श करे और जो जूठे भांडेविषे भोजन करताहै सो अपणा जूठा भक्षण करताहै ॥ १ ॥ और विशेष कहतेहैं ॥ पेति खड़ावांमें स्थित होके और पलंग परास्थित होके भोजन न करे और कुत्ते और चांडालकर्के देखया जो भोजन तिसको त्यागदेवे जेकर उसको भक्षण करे तो पूर्वोक्त १००८ गायत्रीका जप करे तद शुद्धहुंदाहै ॥ २ ॥ एहकर्तृ दुष्टके भक्षणविषे प्रायश्चित्तहै ॥ ❀ अब वाणीकर्के दुष्ट भोजनके प्रायश्चित्तको प्रसंगसे कहतेहैं तिसमे ब्रह्मपुराणका वचनहै भक्ष्यमिति जो पुरुष भक्षण करणे योग्य वस्तु को क्रोधतें अभक्ष्यवाणी कर्के कहे अर्थात् एह वस्तुअभक्ष्य क्या विष्टाहै ऐसा कह कर देवे तो गुरुका भी अन्न होवे तिसको भक्षण न करे

पराशरः ॥ भुंजानश्चैवयोविप्रःपदंहस्तेनसंस्पृशेत् स्वमुच्छिष्टमसौभुंक्तेयोभुंक्तेभुक्तभाजने १ पादुकास्थोनभुंजीतपर्यंकस्थःस्थितोपिवा श्वानचांडालदृष्टंचभोजनंपरिवर्जयेदिति २ । इतिकर्तृदुष्टाशनेप्रायश्चित्तम् ❀ ॥ ब्रह्मपुराणे । भक्ष्यंत्वभक्ष्यवाक्येनयोदद्यात्क्रोधधर्मतः गुरोरपिनभोक्तव्यंवाग्दुष्टंतन्महाघकृदिति ॥ १ ॥ अकामतः सकृद्भक्षणेभावदुष्टादिप्रक्रम्य गौतमः छर्दनंघृतप्राशनंचेति ॥ हारीतः । शंकितंप्रतिदत्तान्नंविद्विष्टान्नमथापिच यदिभुंजीतविप्रोयःप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १ एकरात्रोपवासश्चगायत्र्यष्टशतंजपेत् प्राशयेत्पंचभिर्मंत्रैःपंचगव्यंपृथक्पृथगिति २ अन्यस्मैपरिविष्यान्यस्मैदत्तंप्रातिदत्तान्नम् ॥

क्योंकि सो वाग्दुष्ट अन्नवडा पापदेणवालाहै १ और अज्ञानतें एकवार भक्षण विषे भावदुष्टादि को प्रारंभकर्के गौतमजी कहते हैं छर्दनमिति भावदुष्टादिके भक्षणविषे जेकर उलटी होजावे तो पीछे घृत प्राशन कर्के शुद्ध होताहै ॥ अब हारीत जी कहतेहैं शंकितमिति शंकित क्या विषादिकी शंका वाला जो अन्न और प्रतिदत्तान्न और शत्रुकाअन्न इनको जेकर ब्राह्मण भक्षण करे तो तिसका प्रायश्चित्त कैसेहोवे १ सो कहतेहैं सो विप्र एकरात्र उपवासव्रत करे और गायत्री का अष्ट सो जपकरे और पंचगव्यके जो मंत्रहैं तिनां कर्के पृथक् २ पंचगव्यका पान करे तो शुद्धहोताहै २ प्रतिदत्तान्नका अर्थ कहतेहैं जो अन्न दूसरेके ताईं परिवेषण कर्के दूसरेको दित्ताजावे तिसका नाम प्रतिदत्तान्न जानणा ॥

अब गुण दुष्ट जो अन्न तिसके भक्षण विषे मनु जी कहते हैं शुक्तानीति शुक्त और कषाय एह पवित्र भी हैं परइनांनू द्विज पानकर्के तितना काल अपवित्र रहताहै जितना काल शौच नहिं जावे १ इसविषे अज्ञानतें होवे तो (शेषपूपवसेदहः) इस वचन तें प्रतीत हुया एह उपवास देखणे योग्य है ॥ और इच्छातें पान करणें विषे कहतेहैं केवलानीति केवल जो शुक्तहैं तैसेंहि वासी जो अन्न और ऋजीष पक्व जो अन्न इनांनू भक्षण कर्के त्रय रात्रि व्रती रहे एह शंख स्मृति में किहाहै ॥ अब पूर्व श्लोकका हि अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं शुक्तानीति जो स्वभावतें मधुरादि रस कालयोग क्या समय विपरीतता कर्के जल विकार तें अम्लभाव नू प्राप्त होते हैं सो

अथगुणदुष्टाशनेमनुः ॥ शुक्तानिचकषायांश्चपीत्वामेध्यान्यपिद्विजः ॥ तावद्भवत्यप्रयतोयावत्तन्नव्रजत्यधइति ॥ अत्राकामतः शेषेपूपवसेदहरित्युपवासोद्रष्टव्यः ॥ कामतस्तु ॥ केवलानिचशुक्तानितथापर्युषितंचयत् ऋजीषपक्वंभुक्त्वाचत्रिरात्रंतुव्रतीभवेदितिशंखस्मरणात् ॥ शुक्तानीति यानि स्वभावतोमधुरादिरसानिकालयोगेनोदकपरिणामादिनाऽम्लभावंव्रजंति तानिशुक्तानि ॥ कषायान्विभीतकादीनूक्वथितानिअप्रतिपिद्धान्यपिपीत्वा यावन्नजीर्णानिभवंतितावदशुचिःपुरुषोभवति ॥ ऋजीषपक्वमुद्धृतरसंशाकादितत्पुनःपक्वंभुक्त्वेत्यर्थः । एतच्चामलकादिफलयुक्तकांजिकादिव्यतिरेकेणद्रष्टव्यम् । कुंडिकासफलायेपुगृहेपुस्थापिताभवेत् तस्यास्तुकांजिका ग्राह्यानेतरस्याःकदाचनेतिस्मरणात् ॥

शुक्त कहेहैं और कषाय जो विभीतक क्या बहेडे तों आदलेकर और क्वथित और अप्रतिषिद्धभी हैं परंतु इनांका पानकर्के जितना काल सो जीर्ण न होवें तितना काल पुरुष अपवित्र रहताहै और ऋजीष पक्व क्या रसतें रहित जो शाकादि तिसनू फेर पकावे तिसनू भक्षण कर्के एह आमलकादि फल युक्त जो कांजिकादि इनां ते भिन्न विषे जानणा ॥ और फल युक्त कुंडिका अर्थात् कांजी वास्ते कुंडी विषे फलविशेषको पाय कर्के जिसदे घर विषे स्थित है तिसका कांजि ग्रहण करणा योग्य है और किसीका ग्रहण नहि करणा एह स्मृतिमें किहा है ॥

उद्धृत स्नेहादि विषें कहते हैं उद्धृतेति उद्धृतस्नेह विलयन खल मथित वस्तु इनातें लेकर जो आत्तवीर्य्यहैं इनांको भक्षण न करे ऐसें कह करके पीछे एह कियाहै कि (प्राक् पंचनखेभ्यः) पंचनख जो हैं सहकी आदि इनके मारणे तें पहले एह प्रायश्चित्त है कि छर्दन क्या उलटी करके घृत प्राशन करे तो शुद्ध होता है एह गौतम जी का किहा होया जानणा और विलयन नामघृतादि मलका जानणा॥ और उद्धृत क्या दूर होयाहै स्नेह क्या सारांश जिनांका सो जो हैं विलयनादि इसी कारणतें आत्तवीर्य्य कहे हैं तिनांको न भक्षण करे और जेकर इनांका भक्षण होवे तद उलटी करके घृत प्राशन करे एही प्रायश्चित्त (प्राक्पंचनखेभ्यः) एह स्मृत्युक्त निमित्त की अवधि पर्य्यंत देखणे योग्य है और जिस अन्नमेंसें हवनादि न होवे तिस अन्नके भक्षण विषें लिखित स्मृति सें कहतेहैं यस्येति जिस अन्नमेंसें हवन न होवे

उद्धृतस्नेहादिषुतु ॥ उद्धृतस्नेहविलयनपिण्याकमथितप्रभृतीनिचात्तवीर्याणि नाश्नीयादित्युक्त्वा प्राक्पंचनखेभ्यःछर्दनंघृतप्राशनंचेतिगौतमोक्तंद्रष्टव्यम् विलयनंघृतादिमलम् उद्धृतःस्नेहःसारांशोयेभ्यस्तानिविलयनादीनि अतएवआत्तवीर्य्याणिकथ्यंतेतानिनाश्नीयात् ॥ एतस्मिन्भुक्तेछर्दनंघृतप्राशनंप्रायश्चित्तंप्राक्पंचनखेभ्यइतिस्मृत्युक्तनिमित्तावधिप्रदर्शनम् ॥ अहुताद्यन्नभोजनेतुलिखितआह यस्यचाग्नौनक्षिप्यतेयस्यचाग्रंनदीयते नतद्भोज्यंद्विजातीनांभुक्त्वातूपवसेदहः १ वृथाकृसरसंयावपायसापूपशष्कुलीः आहिताग्निर्द्विजोभुक्त्वाप्राजापत्यंसमाचरेत् २ अनाहिताग्नेस्तुशेषेपूपवसेदहरित्युपवासोद्रष्टव्यः॥ भिन्नभाजनादिषुभोजनेसंवर्त्तेनोक्तम् ॥ शूद्राणांभाजनेभुक्त्वाभुक्त्वावाभिन्नभाजने ॥ अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ १ ॥

और जिस में सें हंदा न दित्ता जावे सो द्विजातियों को भक्षण करणा योग्य नाहीं है जेकर भक्षण करे तो एक उपवास व्रतकरके शुद्ध होताहै १ और वृथा क्या विष्णुके तांई नैवेद्य लगाणे तें बिना खिचड़ी कड़ाह क्षीर पूड़े पराकड़ी इनांनू अग्निहोत्री ब्राह्मण भक्षण करके प्राजापत्यव्रत करे और अग्निहोत्री न होवे और जेकर पूर्वोक्त को भक्षण करे तां तिसको (शेषेपूपवसेदहः)एह उपवास देखणें योग्यहै ॥ अवभज्जे होए भांडादिमें भोजन करणें विषें संवर्त्त जी कहतेहैं शूद्रेति शूद्रोंके भांडे विषें भोजन करणवाला और भज्जे होए भांडे विषें भोजन करणें वाला पुरुष एक दिन रात्रके उपवास व्रत करके फेर पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होताहै १

जैसें स्मृत्यंतरविषें कथन कियाहै सो कहतेहैं वटेति वोड अक पिप्पल कुंभी तेंदुक कोंगड कदं ब इनांके पत्रांविषें भोजन करे जो चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धहोताहै १ तैसेंहि और कहतेहैं पलेति पलाशके और पद्मके पत्रविषें गृहस्थी भोजनकरे तो चांद्रायणव्रतकरे और वानप्रस्थी और यति इनमे भोजनकरे तो चांद्रायणव्रतके फलको प्राप्तहोताहै १ ॐ अब किसके लेणेकर्के जो अभोज्य वस्तु तिसके भोजन विषें प्रायश्चित्त कहतेहैं यदिति जो वस्तु स्वरूपतें निषिद्ध नहिंभी है और नीचादि पुरुषको स्वामि होणेतें अभोज्य किही जावे सो परिग्रह कर्के अपवित्र जानणी ति सविषे मनुजी कहतेहैं नेति अश्रोत्रिय क्या जो वेदपाठी नहि तिसके यज्ञ और ग्राम विषे यज्ञ करवाणे वाले कर्के करवाया जो यज्ञ तिस विषे और स्त्रीकर्के कीता और नपुंसकने कीता जो यज्ञ इनांविषें ब्राह्मण भोजन न करे १ मत्तेति उन्मत्त और क्रोधयुक्त पुरुषका और रोगीका

यथास्मृत्यंतरेऽप्युक्तम् ॥ वटार्काश्वत्थपत्रेषुकुंभीतिंदुकपत्रयोः ॥ कोविदार कदंबेषुभुक्त्वाचांद्रायणंचरेदिति १ तथा पलाशपद्मपत्रेषु गृहीभुक्त्वैंदवंचरे त् वानप्रस्थोयतिश्चैवलभतेचांद्रिकफलमिति १ ॐ अथपरिग्रहाभोज्यभो जनप्रायश्चित्तम् ॥ यत्स्वरूपतोऽनिषिद्धमपिविशिष्टपुरुषस्वामिकतयाऽभो ज्यंभवत्यतेतत्परिग्रहाशुचि ॥ तत्रमनुः ॥ नाश्रोत्रियततेयज्ञेग्रामयाजिहुते तथा स्त्रियाक्लीबेनचहुतेभुंजीतब्राह्मणः क्वचित् १ ॥ मत्तक्रुद्धातुराणांतुन भुंजीतकदाचन गणान्नंगणिकान्नंचविदुषाचजुगुप्सितम् २ स्तेनगायन योश्चान्नंतक्ष्णोवार्धुषिकस्यच दीक्षितस्यकदर्यस्यबद्धस्यनिगडस्यच ३ ॥ अभिशस्तस्यषंडस्यपुंश्चल्यादांभिकस्यच ॥

अन्न भक्षण न करे और सभलोकोंके समूहका और गणिका क्या वेश्याका और विद्वान् पुरुष कर्के निंदित जो अन्न अर्थात् विद्वान् जिसको कहेकि एहअन्न भक्षण नहि करणा ऐसा जो चांडालादि हष्ट अन्न २ और चोरका और गायन करण वालेका और काष्ठके करणे वालेका अर्थात् तरखाण का और वार्धुषिक क्या जो बहुत व्याज कर्के जीविका करण वालाहै तिसका और अग्नीषोमीय यज्ञतें प्रथम जो दीक्षित है तिसका और कृपण का और निगडस्य एह तृतीयाके अर्थ विषें षष्ठी है इस वास्ते वंदी गृहविषे रजुआदि कर्के बद्धा होया जो पुरुष तिसका अन्न एह अर्थ है अथवा (बद्धस्य निगडेनच) ऐसा पाठ भी जानणा ३ और अभिशस्त क्या महापाप कर्के उत्पन्न है लोकमे निंदा जिसकी अर्थात् पंक्तिसें बाहरजो है तिसका और षंढ क्या नपुंसक तिसका और व्यभिचारिणी स्त्री का और दांभिक पुरुष का

और वैद्यका और मृगयु नाम व्याधका है अर्थात् शिकारीका और क्रूर पुरुष का और जूठा भक्षण करण वाले पुरुषका अन्न ४ और उग्र नाम दारुण कर्मका है जो दूसरे के दुःखके उत्पन्न करणेंमें चतुर होवे अथवा क्षत्रीतें शूद्र को स्त्री विषें उत्पन्न होवे तिसका और सूति वाली स्त्री कर्के स्पर्श कीता होया जो अन्न पर्य्याचान्तक्या और एक पंक्ति विषें स्थित होयां का अनादर कर्के जिस अन्न को भक्षण कर रहेहैं तिसविषें किसेने आचमन कीताहै तिस शेष अन्नके भक्षण करणें में प्रायश्चित्त जानणा और जन्म उार मृत सूतकवाले का दश १० दिनतेंउरे अन्न भक्षण करणें में दोष जानणा और पूजा योग्य पुरुष को जो पूजा नहिं करताहै

चिकित्सकस्यमृगयोःक्रूरस्योच्छिष्टभोजिनः ॥ ४ ॥ उग्रान्नंसूतिकान्नंच पर्याचान्तमनिर्दशम् अनर्चितंवृथामांसमवीरायाश्चयोषितः ॥ ५ ॥ द्विषदन्नंनगर्य्यन्नंपतितान्नमवक्षुतम् ॥ पिशुनान्‍नृतिनोश्चैवक्रतुविक्रयकस्यच ॥ ६ ॥ शैलूषतंतुवायान्नंकृतघ्नस्यान्नमेवच कर्मारस्यनिषादस्यरंगावतरणस्यच ७ सुवर्णकर्तुर्वैणस्यशस्त्रविक्रयिणस्तथा श्ववतांशौंडिकानांचचैलनिर्णेजकस्यच ८ रंजकस्यनृशंसस्ययस्यचोपपतिर्गृहे मृष्यंति येचोपपतिंस्त्रीजितानांचसर्वशः ९ अनिर्दशंचप्रेतान्नमतुष्टिकरमेवचेति १० गणान्नंशठब्राह्मणसंघान्नम् गणिकावेश्या तस्या अन्नम् तक्षणःतक्षवृत्तिजीवनस्य ॥ वार्धुषिकस्यवृद्ध्युपजीविनः ॥ दीक्षितस्यप्रागग्नीषोमीयात् कदर्यस्यकृपणस्य ॥ निगडस्येतितृतीयार्थेषष्ठी निगडेनवद्धस्येत्यर्थः

तिसका अन्न और देवतादिकें उद्देश विना जो कीताहै सो वृथामांस है और पतिपुत्र रहित जो स्त्री तिसका अन्न ५ और शत्रुका और नगर वाले लोको ने समूहतें दित्ता जो अन्न अर्थात् धड़थतें दिया जो अन्न और पतित पुरुष का और जिस अन्न पर छिक मारी है सो अन्न और पिशुन क्या चुगलतिसका और झूठवोलने वाले पुरुष का और क्रतु क्या यज्ञ वेचण वाले पुरुष का अन्न ६ और नटुए का जुलाए का और कृतघ्न पुरुष का और लुहार का और मलाह का और लल्लारी का अन्न ॥ ७ और सुनयारे का और वंज कर्के जो जीविका करण वालाहै अर्थात् वरुड तिसका अन्न

अभीति और शस्त्र क्या लोहा तिसके वेचणे वालेका अन्न और श्ववत क्या शिकार वास्ते कुत्तेयों केपालन वाले का अन्न और मदिरा वेचणे वाले का अन्न और चैल निर्णेजक नाम धुबेकाहे तिसका अन्न ८ और रंजक क्या छींबेका और नृशंस क्या क्रूर का और जिसके घर विषे उपपाति रहे अर्थात् जार रहे तिसका और जो पुरुष घर विषे जारनूं जाण करके फेर कुछ नहिं कहतेहैं तिनका और स्त्रीके वश जो पुरुष तिनका अन्न ९ और मृत होए पुरुषके

अभिशस्तस्यमहापातकित्वेनसंजातलोकविक्रोशस्य मृगयुर्व्याधः । उग्रो दारुणकर्मापरदुःखोत्पादनपटुः क्षत्रियाच्छूद्रायामुत्पन्नोवा तस्यान्नम् एक पंक्तिस्थानन्यानवमन्ययत्रान्नेभुज्यमानेकेनचिदाचमनंक्रियतेतत्पर्याचांतम् अनिर्दशमितिसूतकान्नमेव अनार्चितमिति । अर्चार्हस्ययदवज्ञयादीयतेतत् वृथामांसंदेवतादिकमुद्दिश्ययन्नकृतम् तत् अवीरायाः । पतिपुत्ररहितायाः । द्विषदन्नमिति शत्रुनगरपतितानांच उपरिकृतक्षुतंचान्नंनभुंजीत शैलूषोनटः कर्मारोलोहकारः । वैणस्यवेणुभेदनेनयोजीवयतिवरुडः तस्य शस्त्रलोहं तद्विक्रयिणः ॥ श्ववतामाखेटकार्थंशुनःपोषकानाम् शौंडिकानांमद्यविक्रयि णाम् ॥ चैलनिर्णेजकोरजकस्तस्य नृशंसोघातुकः उपपतिर्जारः गेहेज्ञातं भार्य्याजारं ये सहंते तेषामन्नं न भुंजीत

घरका दश १०दिनते उरें जो अन्न और जिस अन्न करके प्रसन्नता न होवे सो अन्न इन संपूर्ण अन्नोंको भक्षण न करे जेकर भक्षण करे तो प्रायश्चित्त करके शुद्ध होताहै दशअंकतें अगे जो लिखयाहै सो प्रायश्चित्तसमीपहिअगेहै उसजगाते (क्षयणं त्र्यहम्) एह जानणा १० इन पूर्वोक्त श्लोकोंका अर्थ मूलमेंभी स्पष्ट करके किहाहै सो जानणे योग्यहै गणान्नमित्यादि

मृगेति और वाणके नहिं चलाणेंवाला जो व्याधतिसका अन्ननहीं भक्षणकरणा और वाणचलाणें वालेका भक्षण करणा योग्यहै इसमें विष्णुजी कहतेहैं नेति वाण चलाणें वालेशिकारीका अन्न वर्जित नहिंहै अर्थात् भक्षण कर लेणा और याज्ञ वल्क्यके कथन कीत्ते होए भी अभोज्यान्न कहतेहैं दत्तान्नमिति अग्निहीन पुरुषकर्के दित्ता होया जो अन्न तिसको आपत्तिके विना भक्षण न करे अर्थात् आपत्तिमें भक्षण कर लेवे अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं अग्नीति अग्निही न जो पुरुषक्या अग्निके अधिकार होयां २ श्रौत स्मार्त्ताग्नि को ग्रहण न करे अथवा अनापत्तिमें अग्निकात्यागकरे तिसका अन्न न भक्षण करे। कदर्य्येति और कदर्य्यपुरुषका और बद्धहोए पुरुष का और चोर और नपुंसक और ललारीका अन्न १ और वंज कर्के उपजीविका करण वाला और अभिशस्त और वार्द्धुष्य और वेश्या और गणदीक्षित और वैद्य और आतुर और क्रो

मृगयोरनिपुचारिणः। इषुचारिणस्तुभोज्यमित्याह विष्णुः ॥ नमृगयोरिषु चारिणोवर्ज्यमन्नमिति योगीश्वरोक्ताअप्यभोज्यान्नायथा दत्तान्नमग्निहीन स्यनचाश्नीयादनापदि। अग्निहीनस्यअधिकारे सत्यपि श्रौतस्मार्त्ताद्यग्निप रिग्रहमकुर्वतः उत्सृष्टाग्नेश्चानापदिअन्नंनभुंजीत ॥ कदर्य्यवद्धचौराणांक्लीव रङ्गावतारिणाम् १ वैणाभिशस्तवार्द्धुष्यगणिकागणदीक्षिणाम् चिकित्सा तुरसंक्रुद्धपुंश्चलीमत्तविद्विषाम् २ क्रूरोग्रपतितव्रात्यदांभिकोच्छिष्टभोजि नाम् अवीरस्त्रीस्वर्णकारस्त्रीजितग्रामयाजिनाम् ३ शस्त्रविक्रयिकर्मारत न्तुवायश्ववृत्तिनाम् नृशंसराजरजककृतघ्नवधजीविनाम् ४ चैलधावसु राजीवसहोपपतिवेश्मनाम् एषामन्नंनभोक्तव्यंसोमविक्रयिणस्तथा ५ ॥

धी और व्यभिचारिणी स्त्री और उन्मत्त और शत्रु २ और क्रूर और उग्र और पातित और सं स्कार हीन और दंभी और जूठा भक्षण करण वाला और पतिपुत्ररहित स्त्री और सु नयार और स्त्रीजित पुरुष और ग्राम विषे यज्ञ करवाणें वाला ३ और शस्त्र बेचण वाला और लुहार और जुलाह और कुत्तेकर्के उपजीविका करण वाला और नृशंस और राजा क्या धर्म्म शास्त्रतें बहिर्मुख जो राजा और रजक और कृतघ्न और वध कर्के जीविका करण वाला ४ और धोबी और मदिरा बेचण वाला और स्त्रीके जार सहित घर रहण वाला इन संपूर्णोंका अन्न न भक्षण करे और तैसेंही सोम जो अमृतवल्ली का रस तिसके बेचणें वाले का भी अन्न न भक्षण करे और संपूर्णोंका अर्थ पीछे भी स्पष्ट कर्के कथन कीत्ताहै ५

कदर्य्यका लक्षण कहतेहैं आत्मेतिजो धर्मकृत्यको त्यागदेवे अपणे आपऔर पुत्रस्त्रीकों पीडादेवे और लोभतें पितर और नौकरोंकों दुःखदेवें अर्थात् श्राद्धादिनकरे सो कंदर्य्य कहाहै १ और चिकित्सक पूर्वोक्त इसजगा अशास्त्रीय जानणा अर्थात् शास्त्र विना चिकित्साकरण वाला ॥ और तंतुवाय वस्त्र सीणे वाला अथवा फटे होए वस्त्रकों रफुकरणवाला इन संपूर्णोंमेंसें भी एकका अन्न अज्ञान तें भक्षण करेतो तीन दिनका उपवास व्रतकरे और इच्छातें भक्षण करणेंमें कृच्छ्र व्रतकरे तैसेंहि वीर्य्य विष्टा मूत्रकेभक्षणमें एहीव्रत जानणा२ और अभोज्यान्न पुरुषोंका और स्त्री शूद्रका जूठा अन्न और अभक्ष्य जो गर्दभादि तिनांका मांस भक्षणकर्के सत्त ७ रात्रि यव पानकरे तो शुद्ध होताहै ३ अव इसीमें पैठीनसि ऋषि विशेष कहतेहैं कुनखीति खोटे नखोंवाला और कालेद

आत्मानंधर्म्मकृत्यंचपुत्रदारांश्चपीडयेत् लोभाद्यःपितरौभृत्यान्सकदर्य्य इतिस्मृतः १ ॥ चिकित्सकोऽशास्त्रीयःतंतुवायोवस्त्रस्यूतकर्त्ता पाटितवस्त्र संधायकोवा ॥ भुक्त्वातोन्यतमस्यान्नममत्याक्षपणंत्र्यहम् मत्याभुक्त्वाचरे त्कृच्छ्रंरेतोविण्मूत्रमेवच२ अभोज्यानांचभुक्त्वान्नंस्त्रीशूद्रोच्छिष्टमेवच जग्ध्वा मांसमभक्ष्यंचसप्तरात्रंयवान्पिवत्३ पैठीनसिः ॥ कुनखीश्यावदन्तःपित्रा विवदमानःस्त्रीजितःकुष्ठीपिशुनः सोमविक्रयीवाणिजकोग्रामयाजकोभिश स्तोवृषल्यामभिजातःपरिवित्तिः परिविविदानोदिधिपूपतिःपुनर्भूपुत्रश्चौ रः कांडपृष्ठःसेवकश्चेत्यभोज्यान्नाः ॥ अभोज्यान्नाअपांक्त्याअश्राद्धार्हाः ॥ एषांभुक्त्वाचाविज्ञानात्त्रिरात्रम् ॥

न्तोंवाला और पिताके साथ झगडनें वाला और स्त्रीके वशीभूत पुरुष और कुष्टवाला और चुगल और अमृतवल्लीका रस बेचणवाला और वणियां और ग्रामविषें यज्ञकराणवाला और अ भिशस्त इसका अर्थ पीछें कहचुकेहैं और ब्राह्मणतें जो शूद्री विषें उत्पन्न होया और परिवि त्ति और परिविविदान इनका अर्थ पीछें किहाहै और दोवार २ विवाही स्त्रीका पति और २ दोवार विवाही होईस्त्रीका पुत्र और चौर और कांडपृष्ठ क्या धनुष वनाण वाला और नौकर एह अभोज्यान्न कहेहैं अर्थात् इनांका अन्न भक्षण नहिं करणा अथवा अभोज्यान्न क्या पंक्ति तें वहार होतेहैं और श्राद्धके आधिकारी नहिंहैं और इनसंपूर्णोंका अन्न अज्ञानतें भक्षण क रेतो त्रयरात्रिकें व्रतकर्के शुद्ध होतेहैं ॥

अब इसीमे शंखजी विशेष कहतेहैं ॥ अभिशस्तेति अभिशस्त और रजक और पतित और घुमार और तैली और ग्राम याजक और शूद्र और सांवत्सरिक क्या नक्षत्रसूची और कुलिक अर्थात् पुजारी अर्थात् धनके अर्थ देवपूजन करणवाला और सुनार और कर्म्मकर क्या कारु और लुहार और विचित्रवृत्ति क्या संपूर्ण जो वृत्तियां व्यापारादि तिनां कर्के उपजीविका करणवाला और घोषक क्या जो मुछ कर्के पाठकरण वाला अथवा घडिआउल वजाण वाला और तंतुवाय और रंगावतारी और कूटमानकृत् और शौंडिक और वधजीवी और क्रूर और आत्मविक्रयी इनका स्वरूप आत्मविक्रयप्रकरण विषे किहाहै और वार्द्धुषिक और तारिक क्या नद्यादिके तारणे कर्के जीविका करण वाला और भगवृत्ति क्या स्त्रीकर्के उपजीविका करण वाला और व्रात्यक्या संस्कारहीन और चोर और भास्कर क्या सुआंग वनाणवाला

॥ शंखः ॥ अभिशस्तरजकपतितचाक्रिकतैलिकग्रामयाजकशूद्रसांवत्सरिककलिकसुवर्णकारकर्मकरकर्मारविचित्रवृत्तिघोषकृत् तंतुवायरंगावतारिकूटमानकृच्छौंडिकवधजीविनृशंसात्मविक्रयिवार्द्धुषिकतारिकभगवृत्तिव्रात्यतस्करभास्करगणान्नभोजनेष्वतिकृच्छ्रंकुर्यात् ॥ कुलिकोदेवलकः घोषकोमूल्येनपाठकः॥ तारिकोनद्यादिसंतारणजीवी अभ्यासविषयमेतत् ॥ विष्णुः ॥ गणगणिकास्तेनगायकान्नानिभुक्त्वापयसावर्त्तेत ॥ सुमंतुः ॥ अभिशस्तपतितपौनर्भवभ्रूणहपुंश्चल्यशुचिशस्त्रकारतैलिकचाक्रिकध्वजिकसुवर्णकारलेखकपंडकवन्धकीगणगणिकान्नानिचाभोज्यानि ॥ सौकरिकव्याधनिपादवरुडचर्मकाराअभोज्यान्नाअप्रतिग्राह्याः ॥ तदशनप्रतिग्रहयोश्चांद्रायणंचरेत् ॥

और गणसमूह इनसंपूर्णांके अन्न भक्षण करणेमें अतिकृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धहोताहै ॥ एहप्रायश्चित्त अभ्यास विषय विषे जानणा ॥ अब विष्णुजी कहतेहैं गणेति गण गणिका चोर गायक इनांका अन्न भक्षणकर्के एकदिन जलपान करे ॥ अब इसीमे सुमन्तु जी कहते हैं अभिशस्तेति अभिशस्त पतित पौनर्भव और गर्भहत्या करणवाला और व्याभिचारिणी स्त्री और अपवित्र पुरुष और शस्त्रकार और तैलिक और चक्री और ध्वजिक और सुवर्णकार और लिखण वाला और नपुंसक और वन्धकी स्त्री और गण क्या समूह और वेश्या इनांका अन्न अभोज्यहै अर्थात् भक्षण करणेयोग्य नहीं है ॥ और सौकरिक और शिकारि और भील और वरुड और चमयार इनांका अन्न ग्रहण करणा योग्य नहीं है तिनके अन्न भक्षणमें अथवा दानलेने मे चांद्रायण व्रत करणेसे शुद्ध होताहै

सूकर करके जो प्रकाशमान है अथवा जीवका करे और वरुड क्या जो वंज करके जीवकाकरे तिसका नाम सौकारिकहै एह प्रायश्चित्त वुद्धि पूर्वक वहुत अभ्यास विषे जानणा ॥ अब इसीमें और विशेष हारीत जी कहतेहैं चाक्रिकेति घमयार और लुहारके और अभोज्यान्नादियोंके अन्न भक्षणमें त्रयरात्रि उपवासव्रतकरे। गोमूत्र और गोशा प्राशनकरे॥ और ध्वजि वणिक किराटि वार्द्धुषिक इनका अर्थ पीछे किहाहै और इनांके अन्न भक्षणमें चांद्रायण व्रतकरे और मृतपुरुष के सूतकमें भोजन करणेमे दशरात्रिव्रतकरे॥ और विशेष कहतेहैं कि ब्राह्मणका जूठा अन्न और ब्राह्मण मृतक सूतकके एकोद्दिष्ट श्राद्ध विषें भोजन करणेमे कृच्छ्र व्रत करे॥ और क्षत्रीका जूठा अन्न और क्षात्रिके मृतक सूतकके एकोद्दिष्ट श्राद्ध विषें भोजन करणेमें अतिकृच्छ्र व्रत करे और

सूकरेणदीव्यति जीवति वेति वरुडोवेणुजीवी। वुद्धिपूर्वकभूयोभ्यासविषय मेतत्। हारीतः चाक्रिकलोहकाराभोज्यान्नभोजनेत्रिरात्रमुपवसेत् गोमूत्रं गोमयंचप्राश्नीयात्॥ ध्वजिवणिककिराटिवार्धुषिकान्नभोजनेचांद्रायणम् मृतकसूतकेदशरात्रम् ब्राह्मणोच्छिष्टान्नमृतकसूतकैकोद्दिष्टभोजने कृच्छ्रम् क्षत्रियोच्छिष्टान्नमृतकसूतकैकोद्दिष्टभोजनेऽतिकृच्छ्रम्। वैश्योच्छिष्टान्नमृतकसूतकैकोद्दिष्टभोजनेचांद्रायणम्। शूद्रोच्छिष्टान्नमृतकसूतकैकोद्दिष्टभोजनेचांद्रायणद्वयम् ताम्रकांस्यसीसकारव्याधिततस्करान्नभोजनेतप्तकृच्छ्रम् ब्राह्मणवृत्तिघ्नवधवंधोपघातवृत्त्यन्नभोजनेचपौनर्भवशौवसंकीर्णान्नभोजने च॥ एकोद्दिष्टं नवश्राद्धादन्यत् किराटीवाणिग्विशेषः

वैश्यकाजूठा और वैश्यके मृतक सूतकके एकोद्दिष्ट श्राद्ध विषें भोजन करणेमें चांद्रायण व्रतकरे। और शूद्रका जूठा अन्न और शूद्रके मृतक सूतकके एकोद्दिष्ट श्राद्ध विषें भोजन करणेमें दो चांद्रायण व्रत करणे करके शुद्ध होताहै॥ और ताम्र कांस सिका इनांके वनाण वाला और रोगी पुरुष और चोर इनांके अन्न भक्षण में तप्त कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै॥ और ब्राह्मणकी वृत्ति के दूर करणे वाला पुरुष और वध क्या कसाई और वंध क्या पंछी पकडने वाले और राजाने जो मारण वास्ते स्थापित कीत्ते होए हैं तिनांका अन्न और दूसरी वारी विवाहित स्त्री का पुत्र और कुते रखणे वाला और समूह इनके अन्न भक्षण विषें भी पूर्वोक्त व्रत करे॥ इहां एकोद्दिष्ट नव श्राद्धसें भिन्न जानणा॥

अब इसीमें और विशेष अंगिरा जी कहतेहैं अभोज्येति अभोज्यान्न जो पिच्छे कहेहैं तिनोंके पक्वान्नको भक्षण कर्के और नीच पुरुषके अन्नको भक्षण करे तो कृच्छ्र व्रतका एक पाद व्रत करे १ परंतु एक वार अज्ञान पूर्वक और सामर्थ्यके अभाव विषें एह प्रायश्चित्त जानणा ॥ अब शातातपजी और विशेष कहतेहैं यत्रेति जिस अन्नको देवता और पितर तैसेहि अभ्यागत न भक्षण करे सो अन्न वृथापाक किहाहै तिसको भक्षण न करे १ और जो पुरुष अग्नि नूं ग्रहण कर्के फेर त्याग देवे और मैं गृहस्थी हां ऐसें जाणे तां तिसका अन्न भक्षण नाहिं करणा सो अन्न वृथापाक किहाहै २ और वृथापाकके भोजन करण वाला ब्राह्मण त्रय प्राणायाम कर्के घृत प्राशन करे तो शुद्ध होताहै ३ तैसेहि और कहतेहैं परेति परपाकतें निवृत्त और परपाकमें प्रीति वाला और अपच जो पुरुष इनका अन्न

अंगिराः ॥ अभोज्यानांतुसर्वेषांभुक्त्वाचान्नमुपस्कृतम् अंत्यावसायिनोभुक्त्वाकृच्छ्रपादेनशुद्ध्यति १ सकृदमतिपूर्वकसामर्थ्याभावेचसत्येतत् । शातातपः ॥ यत्रनाश्नंतिदेवाश्चपितरश्चतथातिथिः वृथापाकःसविज्ञेयस्तस्यनाद्यात्कथंचन १ योगृहीत्वाविहायाग्निंगृहस्थइतिमन्यते अन्नंतस्यनभोक्तव्यंवृथापाकोहिसस्मृतः २ वृथापाकस्यभुंजानःप्रायश्चित्तंचरेद्द्विजः प्राणायामंत्रिरभ्यस्यघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ३ तथा परपाकनिवृत्तस्यपरपाकरतस्यच अपचस्यचभुक्त्वान्नंद्विजश्चांद्रायणंचरेत् १ अनिंदितपाकादपिनिवृत्तःपरपाकनिवृत्तः ॥ अपचोभिक्षुः ॥ एतच्चाभ्यासविषयम् ॥ अन्यत् परपाकादिलक्षणंशंखेनोक्तम् गृहीत्वाग्निंसमारोप्यपंचयज्ञान्ननिर्वपेत परपाकनिवृत्तोसौमुनिभिःपरिकीर्त्तितः १

भक्षण कर्के ब्राह्मण चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ और परपाकनिवृत्त नाम उसकाहै कि जो नाहिं निंदित पाक क्या अन्न तिसतें भी निवृत्त होवे ॥ इसमें एह अभिप्रायहै कि अनिंदितपाकसें निवृत्त नहि होणाथा सो निवृत्त होया इसकर्के दोषहोया और अपच नाम भिखारीका है एह प्रायश्चित्त अभ्यासविषय विषें जानणा ॥ अब एक ठौरभी परपाकादिका लक्षण शंखजीनें किहाहै गृहीत्वेति जो अग्निको ग्रहण कर्के फेर स्थापन करदेवे तिसतें उपरंत पंचयज्ञ जो पाठ होम अभ्यागतकापूजन तर्प्पण क्या देवतर्प्पण और पितृतर्प्पण बलिवैश्वदेव इनांको न करे सो पुरुष मुनियोंनें परपाक निवृत्त किहाहै १ और आगे परपाकरतका लक्षण कहते हैं

पंचेति जो प्रातः काल उठ कर पंच यज्ञांनूं आप कर्के और दूसरे के अन्न तें उपजीविका करे सो पुरुष परपाकरत जानणा २ और गृहस्थ धर्म्म में युक्त और दानतें रहित जो हैं सो धर्म्म के जानणे वाले ऋषियोंनें अपच कथन कीताहै ३ अब और प्रकारका पराशरजी कथनकरदे हैं आपदिति आपत्ति कालविषे ब्राह्मणनें जेकर शूद्रके घर विषे भोजन कीत्ता होवे तद मन में पश्चात्ताप करणें कर्के शुद्ध होताहै और (द्रुपदादिवमुमुचानः) इस मंत्र का सौ १०० जप करे १ अब ब्रह्मपुराण विषे और विशेष कहतेहैं यइति जो पुरुष बहुतयांकों यज्ञोपवीत करवावे अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इनांको यज्ञोपवीत करवावे और बहुतयांको यज्ञ करवावे और यज्ञवास्ते अमृतवल्ली बेचने वाला और जो पुरुष वडे यज्ञविषे दीक्षित १ और जहां अ

पंचयज्ञान्स्वयंकृत्वापरान्नादुपजीवति सततंप्रातरुत्थायपरपाकरतस्तुसः २गृहस्थधर्म्मवृत्तोयोददातिपरिवर्जितः ऋषिभिर्धर्म्मतत्त्वज्ञैरपचःसप्रकीर्त्तितइति ३ पराशरः ॥ आपत्कालेतुविप्रेणभुक्तंशूद्रगृहेयदि मनस्तापेन शुद्ध्येत्तुद्रुपदानांशतंजपेत् १ ब्रह्मपुराणे यश्चोपनयनंचक्रेबहूनांबहुयाजकः ॥ यज्ञार्थंक्रीतसोमस्यदीक्षितस्यमहाध्वरे १ यत्रचाश्रोत्रियस्त्वभ्यस्त्वथवाग्रामयाजकः होताक्लीबोथवानारीनाश्नीयात्तत्रहिक्वचित् २ तपोयज्ञफलानांचयःक्रेतायश्चविक्रयी पुरःपुरोहितंकालमुद्दिश्यनृपतेर्हितमित्याद्यपरार्केऽनुसंधेयम् ॥ बहूनामनुपनेयोपनेयानामुपनेता बहूनामयाज्यानांयाज्यानांचयाजकोयज्ञस्यकारयिता यस्तदन्नं महाध्वरेदीक्षितस्यान्नंच यत्र चश्रोत्रियेविद्यमाने अश्रोत्रियःअभ्यःपूज्योवाग्रामयाजकोभवेदित्याद्यन्नंच नाश्नीयादित्यर्थः

श्रोत्रिय पूज्य होवै अथवा ग्राममें यज्ञ करवाणवाला पूज्य होवे तिसका और नपुंसक अथवा स्त्री हवन करवाण वाली होवे इनांका अन्न भक्षण नहिं करणा २ और तपयज्ञके खरीदणवाला और वेचण वाला और पुरोहितंकालं इस अर्द्ध श्लोक का अर्थ आगे लिखेंगे अब पूर्वोक्त श्लोकों का अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं बहूनामितिबहुते जो यज्ञोपवीतके अधिकारी नहिं हैं और जो हैं अधिकारी तिनकों यज्ञोपवीत कर वाण वाला और बहुते जो यज्ञ करवाणे के अधिकारी नहिंहैं और यज्ञके अधिकारी तिनांको यज्ञ करवाण वाला तिनका और वडे यज्ञ विषे दीक्षितका अन्न और जिस जगा श्रोत्रिय के विद्यमान होयां २ अश्रोत्रिय पूज्य होजावें और जो ग्रामयाजक पूज्य होंवे इत्यादियोंका अन्न भक्षण न करे एह अर्थ जानणा।

पुर इति पुरोहित का अग्गे होण वाला जो ऐश्वर्य्य तिसके अतिशयका उद्देश कर्के चपुनः राजाके हितका उद्देश कर्के जो तप यज्ञ के फलोंका वेचण वाला है तिसका अन्न न भक्षण करे। अव इसी का दूसरा अर्थ कहतेहैं राजाके अग्गे पुरोहितको साक्षि क्या उगाहिकर्के एह निश्चित अर्थ है और राजाके हितका उद्देश कर्के जो पुरुष तप और यज्ञके फलोंको वेचता है तिसका अन्नभी भक्षण न करे ॥ जो पुरुष वल तें भोजन करवाताहै तिनका विशेष कहतेहैं आपस्तंवजी वलादिति म्लेच्छ चांडालचोर इनोंनें जो वलतें दासकीताहै और गवादि प्राणिका मारणा इत्यादि जो कर्म्म जिनसे करवायाहै १ और उच्छिष्टका मार्जन जिनसें करवायाहै और

पुरोहितं ॥ पुरःकालं पुरोहितस्याग्रेभाविनमैश्वर्य्यातिशयमुद्दिश्यनृपतेर्हि तंचोद्दिश्ययस्तपोयज्ञफलानांविक्रयीतदन्नंचनाश्नीयादित्यर्थः यद्वा पुरोहि तंपुरःकालंनृपतेरग्रेपुरोहितंसाक्षिणंकृत्वेतियावत् नृपतेर्हितमुद्दिश्ययस्त पोयज्ञफलानांविक्रयीतदन्नंचनाश्नीयादित्यर्थः ॥ यस्तुवलात्कारेणभोज्य तेतस्यविशेषमाहापस्तंवः ॥ वलाद्दासीकृतायेतुम्लेच्छचांडालदस्युभिः ॥ अशुभंकारिताः कर्म्मगवादिप्राणिहिंसनम् ॥ १ ॥ उच्छिष्टमार्जनंचैवतथो च्छिष्टस्यभोजनम् ॥ खरोष्ट्रविड्वराहाणामामिपस्यचभक्षणम् २ ॥ तत्स्त्री णांचतथासंगस्ताभिश्चसहभोजनम् मासोषितेद्विजातौतुप्राजापत्यंविशोध नम् ॥ ३ ॥ चांद्रायणंत्वाहिताग्नेःपराकस्त्वथवाभवेत् चांद्रायणंपराकंच चरेत्संवत्सरोषितः ॥ ४ ॥

तैसेंहि उच्छिष्ट क्या जूठे अन्नकों भक्षण करण वाला और खर क्या गधा ऊंट विड्वराह क्या सूकर इनांके मांसभक्षण करणवाला २ और तिनांकीस्त्रियोंके साथभोग करणवाला और स्त्रियोंके साथ वैठ कर इकठे भोजनकरणवाला जेकर ब्राह्मण महीना रोज चांडालादिके घरविषे वसता रहे तो शुद्धि वास्ते एह सभपूर्वोक्त प्राजापत्यव्रतकरे ३ और आहिताग्नि अर्थात् अग्नि होत्री एह पूर्वोक्त करे तो चांद्रायण व्रत करे अथवा पराक व्रत जो वारां १२ दिनकाहै तिसको करे और जेकर वर्षरोज चांडालादिके घरविषे रहे तो चांद्रायण और पराक व्रतकरे तो शुद्ध होताहै ४

श्रौर जेकर वर्षरोज शूद्र चांडालादिके घर विषें वासकरे तो श्रद्धा महीना श्रर्थात् पंदरां १५ दिन यवोंका काढा पीवें श्रौर महीना रोज वास करे तो कृच्छ्र व्रतके एक पाद व्रत करणे कर्के शुद्ध होता है ॥ ५ ॥ श्रौर वर्ष रोजतें उपरंत वास करे तो ब्राह्मणोनें तिसका प्राय. श्चित्त कल्पना करणी योग्य है श्रर्थात् वर्ष के प्रायश्चित्तको हि कुछ श्रधिक द्विगुणादि रीतिसें करे श्रौर त्रय ३ वर्ष चांडालादि के घर विषे वास करे तो तिनांकें हि तुल्य हो जाता है ॥ ६ ॥ एह संसर्गि प्रकरण विषें भी पाठ है इसमें प्रसंगतें कथन. कीताहै ॥ इसने जेकर प्रायश्चित्त नहि कीता तद इसका श्रन्नभी नहि भक्षण करणा चाहिए जेकर खादाहोवे तां पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करे एह श्रभिप्राय है ॥ श्रव श्रपवित्र पुरुषकर्के ग्रहणकीता जो श्रन्न तिसकें भोजन विषें छागलेय जी कथन करतेहैं श्रज्ञानादिति श्रज्ञानतें ब्राह्मण सूतकमें श्रथवा मृतक सूतक विषें भोजन करे तो सौ १०० प्राणायाम कर्के शुद्ध होता है एह शूद्रके सूतक विषें जानणा १ श्रौर वैश्यके सूतकमे भोजन करे तो सठ ६०

संवत्सरोषितःशूद्रोमासार्द्धंयावकंपिवेत् मासमात्रोषितःशूद्रःकृच्छ्रपादेन शुध्यति ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वंसंवत्सरात्कल्प्यंप्रायश्चित्तंद्विजोत्तमैः संवत्सरैस्त्रिभिश्चैवतद्भावंसंनियच्छतीति ॥ ६ ॥ संसर्गिप्रकरणेप्ययंपाठोऽत्रप्रसंगादुक्तः एतस्याप्रायश्चित्तिनोऽन्नंनाश्नीयादशितेतु तस्मिन् पूर्वोक्तमेवाचरेदित्यर्थः ॥ अशौचपरिगृहीतान्नभोजनेतुछागलेयआह ॥ अज्ञानाद्भुंजतेविप्राः सूतकेमृतकेतथा प्राणायामशतंकृत्वाशुध्यंतिशूद्रसूतके ॥ १ ॥ वैश्येष ष्टिर्भवेद्राज्ञिविंशतिर्ब्राह्मणेदश एकाहंचत्र्यहंपंचसप्तरात्रमभोजनम् ॥ २ तथाशुद्धिर्भवत्येषांपंचगव्यंपिवेत्ततइति विप्रादिक्रमेणैकाहत्र्यहादिव्रतविधानम् ॥ अल्पत्वादिदमकामतः ॥ कामतोभोजनेमार्कण्डेयः

प्राणायाम करे श्रौर राजाके सूतक विषें भोजन करे तो वीस २० प्राणायाम करें श्रौर ब्राह्मणके सूतक विषें भोजन करे तो दस १० प्राणायाम करे इन प्राणायामोंके साथ व्रतविधी है सो कहीदीहै एक दिनका उपवास व्रत करे ब्राह्मणके सूतक में भोजन करणेतें श्रौर त्रय उपवास राजाके सूतक में जानणे श्रौर वैश्यके सूतकमें पंचरात्रि उपवास करे श्रौर शूद्रके सूतक मे भोजन करणें तें सत्त ७ रात्रि उपवास व्रत करे २ श्रौर तिस प्रकार तिनांको शुद्धि कही है तिसतें श्रनंतर पंचगव्य पान करे एह विप्रादि क्रम कर्के एक दिन त्रय दि. नादि व्रतका विधान जानणा श्रौर इसकों थोडा व्रत होणेंतें श्रज्ञानतें भोजन करणें विषें जानणा ॥ श्रव इच्छा ते ब्राह्मण शूद्रादिकें घर विषें भोजन करे तो तिसमें प्रायश्चित्त-मार्कण्डेय जी कथन करते हैं

भुक्त्वेति ब्राह्मणके अशौच विषे भोजन करे तो ब्राह्मण सांतपन व्रत करे और क्षत्री के अशौच विषें भोजन करे तो कृछ्रव्रत करे १ और वैश्यके अशौच विषें भोजन करे तो महासांतपन व्रत करे और तैसेंहि शूद्रके अशौच विषें भोजन करे तो ब्राह्मण चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होता है २ और शंख जी नें किहा है सो कहते हैं शूद्रस्येति शूद्रके सूतक विषें भोजन करे तो छे ६ महीनेका व्रत करे और वैश्यके सूतक विषें भोजन करें तो त्रय ३ महीनें का व्रत करे ॥ १ ॥ और क्षत्रीके सूतक विषें भोजन करे तो दो २ महीनेका व्रत करे और तैसेंही ब्राह्मणके सूतक विषे भोजन करे तो महीनें का

भुक्त्वातुब्राह्मणाशौचेचरेत्सांतपनंद्विजःभुक्त्वातुक्षत्रियाशौचेतथाकृच्छ्रोविधीयते १ वैश्याशौचेतथाभुक्त्वामहासांतपनंचरेत् शूद्रस्यैवतथाभुक्त्वाद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति २ यच्चशंखेनोक्तम् शूद्रस्यसूतकेभुक्त्वाषण्मासान्व्रतमाचरेत् वैश्यस्यतुतथाभुक्त्वात्रिमासान्व्रतमाचरेत् १ क्षत्रियस्यतथाभुक्त्वाद्वौमासौव्रतमाचरेत् ब्राह्मणस्यतथाशौचेभुक्त्वामासव्रतंचरेदित्यभ्यासेवोध्यम् २ अशौचानंतरमिदंप्रायश्चित्तंकार्य्यम्। ब्राह्मणादीनामशौचेयःसकृदेवान्नमश्नातितस्यतावदेवाशौचम्। अशौचव्यपगमेतुप्रायश्चित्तंकुर्यादितिविष्णुस्मरणात् ॥ अपुत्राद्यन्नभोजनेतुलिखितआह भुक्त्वावार्धुषिकस्यान्नमव्रतस्यासुतस्यच शूद्रस्यचतथाभुक्त्वात्रिरात्रंस्यादभोजनमिति १

व्रत करे एह अभ्यास विषे जानणा ॥ २ ॥ अशौच ते उपरंत एह प्रायश्चित्त करे ॥ इसमे स्मृति वचन को दिखातेहैं ॥ ब्राह्मेति ब्राह्मणादियों के अशौच विषे जो पुरुष एक वार अन्न भक्षण करे तिसको तितना काल हि अशौच जानणा और अशौचके दूर होयां प्रायश्चित्त करणा योग्य है एह विष्णु स्मृति मे कथन कीताहै ॥ अब अपुत्रादि पुरुषोंके अन्न भोजन करणे मे लिखित स्मृति मे कहते हैं भुक्त्वेति और वहुत ब्याज लेने कर्के जो उपजीविका करताहै तिसका अन्न और व्रत रहित पुरुषका अन्न और पुत्र हीन पुरुष का अन्न और तैसेहि शूद्रका अन्न इनांको जो पुरुष भक्षण करता है सो त्रय ३ उपवास व्रत करणे कर्के शुद्ध होता है इसमे संशय नहिं जानणा चाहिए ॥ १ ॥

जो ब्रह्मचार्य्यादियोंके अन्न भक्षण में प्रायश्चित्तहै सो वृद्धयाज्ञवल्क्य जी कथन करतेहैं यतिश्चे ति यति और ब्रह्मचारी जिस अन्नके स्वामीहैं सो अन्न तिनां दोआंका भक्षण न करे क्योंकि उह आप पकान्नके स्वामी हैं अर्थात् उह जिसके घर भिक्षाकों जाण उसके घर पका जो अन्न तिसके स्वामी हैं तिसकर्के उसगृहस्थीने पहले उनकों देकर भोजन करणा चाहिए इसकर्के उसका अन्न नहि ग्रहण करणा उह संग्रहदोषकर्के दुष्टहै तिसकों भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ और जो पार्वण श्राद्धादियोंकें न करणें वालेके अन्न भक्षण विषें भरद्वाज जी कहतेहैं पक्षइति पक्षविषें अथवा महीनें विषें जिस पुरुष का अन्न देवता भक्षण न करे तिस खोटे आत्मा वाले पुरुषका अन्न ब्राह्मण भक्षण करे तो चांद्रायण

यत्तुब्रह्मचार्याद्यन्नभोजनेवृद्धयाज्ञवल्क्यआह ॥ यतिश्चब्रह्मचारीचपक्कान्न स्वामिनावुभौ तयोरन्नंनभोक्तव्यंभुक्त्वाचांद्रायणंचरेदिति १ यच्चपार्व्वण श्राद्धाद्यकर्तुरन्नभोजनेभरद्वाजआह ॥ पक्षेवायदिमासेयस्यनाश्नंतिदेवताः भुक्त्वादुरात्मनस्तस्यद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति १ तदुभयमप्यभ्यासविष यम्। पूर्वपरिगणितातिरिक्तायेनिषिद्धाचरणशीलास्तदन्नभोजनेतुनि राचा रस्यविप्रस्यानिषिद्धाचरणस्यच ॥ अन्नंभुक्त्वाद्विजःकुर्याद्दिनमेकमभोजन मितिषड्त्रिंशन्मतोक्तंद्रष्टव्यम् १ अत्रैवसंवत्सराभ्यासेषड्त्रिंशन्मतएवो क्तम् ॥ उपपातकयुक्तस्यअब्दमेकंनिरंतरम् अन्नंभुक्त्वाद्विजःकुर्य्यात्परा कंतुविशोधनमिति ॥ १

व्रत करे १ सोएह पूर्वोक्त दोनो व्रत अभ्यास विषयमे जानणें और पूर्वोक्त परिगणनातें अधिक जो निषिद्ध आचरण और निषिद्ध स्वभाव वाले पुरुष तिनांके अन्न भक्षणमें कहतेहैं निराचार स्येति आचाररहित ब्राह्मण और खोटें आचरणवाला ब्राह्मण अर्थात् संध्यादिकर्म्महीन द्यूतादि रसिक जो ब्राह्मण इनांका अन्नभक्षणकरे ब्राह्मण तो एक दिनउपवास व्रतकरे एह षड्त्रिंशन्म तका हि कथन कीता होया जानणा योग्यहै १ और इसी पूर्वोक्तमें वर्षरोजके अभ्यास होणे विषे षड्त्रिंशन्मतका हि कनथ कीता होता कथन करतेहैं उपेति एह पूर्वोक्त उपपातक कर्के युक्त जो पुरुष तिसका अन्न ब्राह्मण वर्षरोज निरंतर भक्षण करे तों पराक व्रत करणे कर्के शुद्ध होताहै १

इदमिति एह अभक्ष्य भक्षण प्रायश्चित्त व्रतोंकासमूह श्रेष्ठ ब्राह्मणकों हिसारा होताहै और क्षत्रियादियों को पाद पादन्यून जानणा अर्थात् क्षत्रीतें एकपाद न्यून वैश्यकोहै और वैश्यतें पाद ऊन शूद्रको जानणा ॥ ब्राह्मणको संपूर्ण व्रत देवे और क्षत्रीको पादऊन देवे इत्यादि वचनतें एह मिताक्षरा मे किहाहै ॥ कुछक इसबिषे और कहतेहैं इसविषे किते किते इच्छातें अभ्यासविषे भी प्रायश्चित्त प्रसंगते कथन कीताहै ॥ और विचारते अनुपातकहि तिनोंका विषयहै एह पीछे बखायाहै ॥ इसमे और विशेष जो हैं सो पृथक् संग्रहह कीता जो अभक्ष्य भक्षणका प्रायश्चित्त प्रकरण तिसविषे देखणेयोग्यहै इसीमे कुछक और भी कथन करतेहैं निंदितेति निंदितान्नोपजी

इदंत्वभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तव्रतकदंबकं द्विजाग्र्यस्यैव। भवति क्षत्रियादीनांतुपादपादहानिर्बोध्या ॥ विप्रेतुसकलंदेयंपादोनंक्षात्रियेस्मृतमित्यादिवचनादितिमिताक्षरा। किंचात्रकचित्कचित्कामतोऽभ्यासेपि प्रायाश्चत्तमुक्तंप्रसंगात् वस्तुतोऽनुपातकएवतद्विषयइति प्राङ्निदर्शितम्। विशेषस्तु पृथक्संगृहीतेऽभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥ किञ्च ॥ निंदितान्नोपजीवनमित्यस्यस्थाने याज्ञवल्क्येननिंदितार्थोपजीवनमित्युक्तम् तद्व्याख्यातंगणनायाम् तत्रापि ॥ सामान्यमेवोपपातकप्रायाश्चित्तंजातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयायोज्यम् ॥ इत्यभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तप्रकरणम् ❀ ३६

वनं इसके स्थान विषे याज्ञवल्क्यजीने निंदितार्थोपजीवनं ऐसा पाठ कथन कीताहै सो पीछे गणना विषे तिसका व्याख्यान कीताहै तिसी विषे भी सामान्यहि जो उपपातकों के प्रायश्चित्त सो जाति शक्ति गुणादियों की अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहैं अर्थात् जैसी जाति जैसी शक्ति जैसा गुण होवे तैसा हि प्रायश्चित्त देणे योग्यहै इसकाविषय वहुत भी है परंतु बुद्धिमान विचारसे सभको कहसक्ताहै जैसे पतितके स्पृष्ठ अन्नके प्रायश्चित्तसेहियोंडे पाप वाले को उसी प्रायश्चित्त को थोडाकर्के कहसक्ताहै ऐसे औरभी जानणे चाहिए एह अभक्ष्य भक्षणका प्रायश्चित्त समाप्तभयाहै ॥ ३६ ॥ ❀ ॥

अब पीछें विवरण कीत्ता जो अनाहिताग्निता तिसका प्रायश्चित्त कहतेहैं अत्रेति इसके विषें सा मान्य जो उपपातकोंके चार व्रत सो आपत्ति विषें जानणे ॥ और वर्ष रोजतें उपरंत तक अ नाहिताग्नि रहे तो शक्तिको अपेक्षा करके अर्थात् यथाशक्ति तिसको प्रायश्चित्त देणा योग्यहै और आपत्तिके विना मनुजीका किहा होआ त्रय महीनेंका व्रत करे ॥ और जेकर वर्ष पूर्ण न होवे तिसमें कार्ष्णाजिनिजी विशेष कहतेहैं काल इति जेकर ब्राह्मण समुचितकालविषें कर्मांको विधानतें स्थापनकर्के फेर तिनांनू करे और पीछें न करे सो महीनें महीने त्रय रात्रि व्रत करे ॥ तो शुद्ध होताहै १ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं दारेति विवाहकालमें अथवा भ्रातृवि भाग काल विषें इत्यादि कथन कीत्ते होए जो काल तिनां विषें ब्राह्मण अग्निको स्थापन कर्के

अथप्राग्विवृतानाहिताग्निताप्रा० अत्रसामान्योपपातकव्रतचतुष्टयमापदि संवत्सरादूर्ध्वंशक्त्यपेक्षयायोज्यम्। अनापदितुमानवंत्रैमासिकम् ॥ अपूर्णे वत्सरेकार्ष्णाजिनिर्विशेषमाह। कालेत्वाधायकर्माणिकुर्याद्विप्रोविधानतःत दकुर्वंस्त्रिरात्रेणमासिमासिविशुध्यति १ दारकालेदायाद्यकालेवेत्याद्युक्तेका लेविप्रोऽग्निमाधायनित्यादीनिकुर्य्यादितिविधिः तदग्न्याधानमकुर्वन्मासि मासित्रिरात्रव्रतेनशुध्यति। अनाहिताग्नौपित्रादौयक्ष्यमाणःसुतोयदि सहि व्रात्येनविधिनायजेत्तन्निष्क्रियायत्विति १ एकाग्नेरपिविशेषस्तत्रैवोक्तः ए काग्निरावसथ्याधाता ॥ कृतदारोगृहेज्येष्ठोयोनादध्यादुपासनम् चांद्रायणंच रेद्वर्षंप्रतिमासमहोपिवा १ वर्षातिक्रमेचांद्रायणम् ॥ मासातिक्रमेऽहरुपवा सः ॥ इत्यनाहिताग्निताप्रा० ॥ ३७ ॥ ※ ॥

नित्यादि कर्म करे एह विधिहै तिस अग्न्याधाननूं न करे तो महीने १ विषें त्रय रात्रि व्रत कर्के शुद्ध होताहै और पित्रादि अनाहिताग्नि होवे जेकर तिनांका पुत्र यज्ञ करणकी इच्छा वालाहै तो सोहि व्रात्य विधि कर्के पितरोंके उद्धार वास्ते यज्ञ करे १ और एकाग्निकोंभी विशेष तिसी नें किहाहै एकेति एकाग्नि जो आवसथ्य अग्निके धारण वाला कियाहै विवाह जिसनें और घर विषें ज्येष्ठ क्या वड्डाहै सो उपासना नाम अग्निको धारण न करे तो वर्ष तक महीनें २ चांद्रायण व्रत करणेनें शुद्ध होताहै ॥ १ अब इसमें व्यवस्था करतेहैं जेकर वर्षको लंघ जावे तो चांद्रा यण व्रत करे और महीनेको लंघ जावे तो एक दिनका उपवास व्रत करे एह अनाहिताग्निका प्रायश्चित्त समाप्तभया ॥ ३७ ॥ ※ ॥

अब चौर कर्मका प्रायश्चित्त कहतेहैं तिसमे मनुजीका वाक्यहै धान्येति जो ब्राह्मण॥ अपणें वंधुवोंकेघरतें धान्य अन्न धन इनांकोंइच्छातें चुरावे सो वर्षरोजका कृच्छ्र व्रतकरे तो शुद्धहोताहै १ और क्षत्रियादियोंकों क्रमकर्के पादपादन्यून जानणा ॥ एह देशकाल द्रव्य परिमाण स्वामिगुणादियों की अपेक्षा कर्के महत्त्वके होयां २ तिसमें जानणा अर्थात् जैसादेश जैसे कालादियोंकों देखकर्के प्रायश्चित्त करणा ॥ तैसेंहि और कथन कर्तेहैं द्रव्येति अल्पसार वाले जो द्रव्य इनांको दूसरेके घरतें चुराकर्के अपणी शुद्धि वास्ते सांतपन कृच्छ्र व्रतकरे १ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं अल्पेति अल्पसार क्या थोडाहै प्रयोजन जिनोंका लाख सिक्कादि और जो नाहिं कहे होए तिनांका हरया जो द्रव्य तिसनूं स्वामिकेतांईं देकर्के प्रायश्चित्तकरे ॥ अब इसीमे

अथस्तेयम् तत्रमनुः धान्यान्नधनचौर्याणिकृत्वाकामाद्द्विजोत्तमः स्वजातीयगृहादेवकृच्छ्राब्देनविशुद्ध्यति १ क्षत्रियादेस्तुक्रमेणपादपादन्यूनंबोध्यम्। एतच्चदेशकालद्रव्यपरिमाणस्वामिगुणाद्यपेक्षयामहत्त्वेसति वोद्धव्यम् तथा द्रव्याणामल्पसाराणांस्तेयंकृत्वान्यवेश्मनः चरेत्सांतपनंकृच्छ्रंनिर्यात्यात्मविशुद्धये १ अल्पसाराणामल्पप्रयोजनानांत्रपुसीसकादीनामनुक्तानांचनिर्यात्याऽपहृतंद्रव्यंस्वामिनेदत्त्वेत्यर्थः। भक्ष्यभोज्यापहरणेयानशय्यासनस्यच पुष्पमूलफलानांचपंचगव्यंविशोधनम्॥ १ तृणकाष्ठद्रुमाणांचशुष्कान्नस्यगुडस्यच चेलचर्मामिषाणांचत्रिरात्रंस्यादभोजनम् २ एषांमध्येएकस्यापिहरणेत्रिरात्रम्। मणिमुक्ताप्रवालानांताम्रस्यरजतस्यच अयःकांस्योपलानांचद्वादशाहंकणान्नता ३ एषांमध्येएकस्यापिहरणेद्वादशाहंकणान्नता तंडुलकणभक्षणम्

और कथनकरतेहैं भक्ष्येति भक्ष्यभोज्यके हरणेंविषे और वाहन शय्या आसन पुष्प मूल फल इनांके हरण विषे अपनी शुद्धिवास्ते पंचगव्यपानकरे १ और तृण काष्ट वृक्ष और सुका अन्न और गुड वस्त्रचर्म मांस इनांके हरणविषे त्रयरात्रिका उपवास व्रतकरेतो शुद्ध होताहै २ इनांके मध्यविषे एकको चुरावे तो त्रयरात्रिव्रतकरे ॥ और मणि नीलमादि और मोती मुंगा और तांव्वा रजतक्या चांदी और लोहा कांस उपल क्यापत्थर इनांके चुराणे विषे वारांदिन कणान्नतारहे इनांके मध्य विषे एकके भी हरणें विषे वारां १२ दिन कणान्नता क्या तंडुल क्या चावलका दाना भक्षणकरे तो शुद्ध होता है ३

कार्पासेति कपाहके वस्त्र और कीडेके वस्त्र पशमीनादि और उन्नदे वस्त्र और द्विशफ क्या
गवादि और एकशफ क्या अश्वादि और पक्षि गंध औषधि रस्सी इनांके हरणें विषें त्रय दि
न जलपान करे ४ इसमें भी देश कालादिकी अपेक्षातें विषयमें तुल्यता जानणी ॥ जैसें उत्तम
देशकी कपाहकाजो वस्त्र और उत्तम कालका वणया होयाजोवस्त्र तिसमें त्रयदिन जलपानकरे
और माडे देशका वस्त्र अथवा माडे कालका वणया होया वस्त्र होवे तिसके हरण विषें दोदिन
जलपानकरे ॥ ऐसें हि औरोंमेंभी जानणा ॥ अब इसीका व्याख्यारूप और प्रकरण लिखीदाहै
अथेति अब स्तेयमें प्रायश्चित्त कहतेहैं स्तेय नाम चोरीकाहै परंतु सो एह ब्राह्मणहै स्वामि जिसका
ऐसी वस्तु का हरण महापातकमें जानणा ॥ और स्वर्णका चुराणाभी सोलां १६ मासेतें अधिक

कार्पासकीटजौर्णानांद्विशफैकशफस्यच पक्षिगंधौषधीनांचरज्ज्वाश्चैवत्र्य
हंपयः ४ अत्रापिदेशकालाद्यपेक्षयाविषयसमीकरणम् ॥ एतद्व्याख्यारूपं
प्रकरणांतरंलिख्यते ॥ अथस्तेयप्रायश्चित्तम् ॥ स्तेयंचौर्य्यम् ॥ तच्चविप्र
स्वामिकस्वर्णतत्समव्यतिरिक्तमेवोपपातकम् ॥ धान्यहरणतिलापहरणेचां
द्रम् ॥ धातुलोहापहारेपराकः ॥ विप्रस्यविप्रस्वामिकदशकुंभपरिमितधा
न्यतत्परिमिततण्डुलादितत्तुल्यताम्ररजताद्यपहारेऽमत्यात्रैमासिकम् ॥
मत्याभ्यासे वा कृच्छ्राब्दम् ॥

होवे तद महापातक है और तिसके तुल्य जो पाप है सो अनुपातक है और तिनतें व्यतिरिक्त
क्या पृथक् है सो उपपातकमें जानणा ॥ और धन्यके हरण विषें और तिलोंके हरण विषें
चांद्रायण व्रत करे और धातु लोहा इनके हरण विषे पराक व्रत जो बारां १२ दिनका है सो
करे तो शुद्ध होता है इस जगा लोह शब्द कर्के सिक्केका भी ग्रहण होता है इसी वास्ते धा
तु लोह एह पद किहा है ॥ और ब्राह्मण है स्वामि जिसका ऐसे जो दश १० कुंभ परिमाण
वाले धान्य और इतनें परिमाण वाले चावलादि और तिसीके तुल्य मुल्ल वाले जो तांबा रज
तादि इनांके इच्छा ते विना हरण विषे त्रय महीनेका व्रत करे और इच्छातें अथवा बहुत वार
चुरावे तो वर्षरोजका कृच्छ्र व्रत करे तद शुद्ध होता है ॥

और जेकर क्षत्रियादि हरण वाले होवें तो पूर्वोक्त व्रत पाद पाद ऊन करणा अर्थात् क्षत्रीतें वैश्यको एक पाद ऊन और वैश्यते शूद्रको एकपाद ऊन व्रत देणा ॥ अब पूर्वोक्त कुंभका लक्षण कहतेहैं अष्टेति अठां ८ मुठियां का १ किंचित् होताहै और अठ ८ किंचित्का १ पुष्कल होताहै और चार ४ पुष्कलका १ आढक होताहै ॥ १ ॥ और चार ४ आढकका १ द्रोण किहाहै और दश १० द्रोणकी खारी होतोहै और वीस २० द्रोणका कुंभ किहाहै । २ । और कुंभ नाम पंज हजार परिमाण वाल पलका है एह स्मृत्यर्थसार विषें किहाहै ॥ ढाई ॥ २५० ॥ सो पैसा इसका मुल्ल है ॥ और कहतेहैं क्षत्री है स्वामि जिसका ऐसे जो क्षेत्र वाउ

क्षत्रियादेर्हर्तुःपादपादह्रासः । अष्टमुष्टिभवेत्किंचित्किंचिदष्टौचपुष्कलम् पुष्कलानिचचत्वारिआढकंपरिकीर्त्तितम् १ आढकानिचचत्वारिद्रोणइत्यभिधीयते दशद्रोणाभवेत्खारीकुंभोपिद्रोणविंशतिः २ कुंभपंचसहस्रपलपरिमाणइतिस्मृत्यर्थसारे ॥ सार्द्धशतद्वयपणमूल्यः क्षत्रियस्वामिकक्षेत्रवापीकूपतडागगृहपानीयरसानांतत्स्वामिकस्यानिक्षेपस्यतावन्मूल्यरजतवस्त्ररत्नादेश्चनारीनराश्वानामपहारेचांद्रम् वैश्यशूद्रस्वेतादृशेचांद्रार्धतत्पादौ ॥ विप्रस्वेतादृशेस्वर्णस्तेयसमम् ॥ तेनषडब्दम् स्वर्णस्तेयसमवदिति

ली खूआ तलाओ घर जल रस इनांके हरण विषे और सोई क्षत्री है स्वामि जिसका ऐसा जो अमानत क्या द्रव्य अथवा तितने ही मुल्ल के रजत क्या चांदी और वस्त्र और रत्नादि और स्त्री पुरुष घोडा इनांके हरण विषे चांद्रायणव्रत करे ॥ और वैश्य तेर शूद्रां के धन हरण विषे चांद्रायणका अर्द्ध और चांद्रायणका पाद व्रत करे ॥ जैसे वैश्य के पूर्वोक्त तुल्य धन हरण में चांद्रायण का अर्द्ध व्रत करे और शूद्रके धन हरण विषे चांद्रायण का पाद व्रत करे॥ और ब्राह्मणका हि जो पूर्वोक्त तुल्य धन है तिसका हरण ॥ स्वर्ण चुराणे के तुल्यहै तिस करके छे ६ वर्ष का प्रायश्चित्त करे क्योंकि स्वर्णस्तेय के तुल्य होणेतें ॥

इसी विषे मनु जी भी कथन करते हैं मनुष्येति मनुष्योंके हरणविषें और स्त्री क्षेत्र घर बाउली खूआ जल इनांके हरण विषें पुरुष अपणी शुद्धि वास्ते चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ इसजगामनुष्य स्त्री जोहैं सो दास दासी जानणें उत्कृष्ट क्या उत्तम नहीं जानणें ॥ तिनांके हरण विषे कहतेहैं पुरुषेति कुलीन पुरुष और कुलीन नारी और तिनोंमें भी मुख्य जो स्त्रियांहैं तिनांके हरण विषें हरणें वाला पुरुष वधके योग्यहै अर्थात् मारणे योग्यहै १ इसमें बहुत दंडको मनुजी का कथन होणेंते तिसी विषय मे जानणा अर्थात् पूर्वोक्त मनुष्य हरणका प्रायश्चित्त दास दासी विषे ही जानणा ॥ अब इसीमे और कथन करतेहैं निक्षेपेति निक्षेप जो अमानत द्रव्य तिसके हरण विषे और पुरुष अश्व रजत पृथ्वी हीरा मणी इनांका हरण स्वर्ण चुराणेके

अत्रमनुरपि मनुष्याणांचहरणेस्त्रीणांक्षेत्रगृहस्यच वापीकूपजलानाचशुद्धयैचांद्रायणंस्मृतम् १ मनुष्यस्त्रियौदासदास्यौनतूत्कृष्टौ तद्धरणेतु। पुरुषाणांकुलीनानांनारीणांचाविशेषतः मुख्यानांचैवनारीणांहरणेवधमर्हति १ गुरुदंडस्यमनूक्तत्वात्तद्विषयमेव। निक्षेपस्यापहरणंनराश्वरजतस्यच भूमिवज्रमणीनांचस्वर्णस्तेयसमंविदुरिति १ अनुपातकत्वाद्गुरुप्रायश्चित्तंज्ञेयम् स्मृत्यर्थसारे अत्रषडब्दंन्यूनंकल्प्यम् त्रपुसीसलोहादिद्रव्याणामल्पप्रयोजनानांसार्द्धशतद्वयपणपंचदशांशमितानांहर्त्तुःसांतपनम् ॥ एकवारभक्ष्यभोज्यापहारेतत्समूल्यापहारेचैतदेव

तुल्य किहाहै १ इसको अनुपातक होणेतें बहुत प्रायश्चित्तजानणा सो अनुपातक प्रकरणविषें भी आवेगा अब स्मृत्यर्थसार विषें कहतेहैं अत्रेति इस विषे छे ६ वर्ष का जो प्रायश्चित्त है सो थोडा कल्पना करणा योग्यहै और थोडाहै प्रयोजन जिनोंका ऐसा जो कलि सिक्का लोह प्रभृति द्रव्य इनांके हरण विषे और ढाई २५० सौ पैसा इनांका जो पंद्रवां १५ अंश (१६ (२/३) तत्परिमितके हरण वाला पुरुष सांतपन व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ और एक वार भक्ष्य जो अन्नादि और भोज्य जो मिठाई प्रभृति इनांके हरण विषे और तिनांके तुल्य मुल्लके हरण विषे भी एही प्रायश्चित्त जानणा योग्यहै ॥

अब और कहतेहैं यानेति वाहन रथादि शय्या आसन पुष्प फल मूल पत्र मृत्तिकाका भांडा मखीर मांस इनांके हरण विषे पंचगव्य पानकर्के एक दिनरात्रका उपबास ब्रत करे ॥ और एही पुष्पफलादि दो त्रय वार भोजनकी परिपूर्णताके तुल्य होवे तिसके हरण विषे दो त्रय रात्रि ब्रत कर अर्थात् दो वार हरणेमे दो रात्रि ब्रत करे और त्रय वार हरणेविषे त्रय रात्रिव्रतकरे ॥ सोई मधुमांसादि छे ६ दिनके आहरिका परिपूर्णताके वास्ते होवे और भोज्य वस्तु अथवा तिसके तुल्य मुल्ल और तृण काष्ठ वृक्ष सुका अन्न गुड तेल चर्म मांस इनांके हरण विषे त्रय रात्रिब्रत करे ॥ सोई एह गुड तैलादि त्रय वार भोजन तृप्तिके आहारका मुल्ल तिसके हरणाविषे भी त्रय रात्रि

यानशय्यासनपुष्पफलमूलपर्णमृद्भांडमधुमांसापहारेपंचगव्येनाहोरात्रम् द्वित्रिवारभोजनपर्य्याप्ततदाहरणेद्वित्रिरात्रम् तत्षड्दिनाहारपर्याप्तभोज्यमूल्यतृणकाष्ठद्रुमशुष्कान्नगुडतैलचर्ममांसापहारे त्रिरात्रम्। तत्त्रिवारभोजनपर्याप्ताहारमूल्येहृतेतदेवेति ॥ द्वादशाहारपर्याप्तविप्रस्वामिकमणिमुक्ताप्रवालताम्ररजतशंखशुक्तिलोहकांस्यापहारेद्वादशाहंकणान्नता त्रिभोजनपर्याप्ताहारमूल्यकार्पासकीटजजीर्णद्विशफैकशफपशुरज्जुपक्षिणामपहारेएकउपवासःत्र्यहंपयःपानंवा। गजाश्वभूमिकन्याहरणेषडुपवासाः। अभ्यासेचांद्रायणम् षण्मासं गोमूत्रयावकाहारीवा ॥

व्रत करे ॥ और वारां दिनकी तृप्तिका आहार और ब्राह्मणहै स्वामी जिनका ऐसे जो मणि मोती मुंगा तांवा चांदी शंख सिप्पी लोहा कांस इनांके हरण विषे वारां दिन चावलका किणाका भक्षण करे ॥ और त्रय वार भोजन तृप्तिका आहार अथवा तिसके तुल्य मुल्ल और कपाहके वस्त्र कीडेके वस्त्र रेशमादि पुराणे वस्त्र और गवादि और घोडा प्रभृति पशु रस्सी पक्षि इनांके हरणविषे एकदिनका उपवास व्रत करे। अथवा त्रय दिन जल पानकरे॥ और हाथी घोडा भूमि कन्या इनांके हरण विषे छे ६ दिनका उपवास व्रत करे। और जेकर वहुत इसमे अभ्यास होवे तो चांद्रायण व्रत करे अथवा छे ६ महीने गोमूत्र युक्त यवोंका भक्षण करे तो शुद्ध होता है ॥

तैसें ही प्रायश्चित्त विवेक विषें जावाल जी कहतें हैं अश्वेति घोडा गौ पृथ्वी कन्या इनांके हरण विषें चांद्रायण व्रतकरें और छोटे पशुवोंको चुरा कर्के प्राजापत्यव्रत करे १ इस जगा कन्यापद नीचकी कन्या पर जानणा और जगा कन्याके हरण वाला मारणें योग्य है इसदंड के कथन करणें तें ॥ एहभी ब्राह्मण संबंधि जो चांदि भूमि अश्वादि तिनके विषय में जानणा क्यों कि ब्राह्मणके रजतादि तिनके हरण को अनुपातक होणेंतें अर्थात् सो अनुपातकोंमे कहाहै ॥ तैसेंहि इसी में विष्णु जी कहतेहैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणकी भूमिका हरणा और अमानत द्रव्य का हरणा और सुवर्ण चुराणेंके तुल्य वस्तुका हरणा इनके और रजतके वहुत वार चराणें विषें और गौ भूमि कन्या इनां संपूर्णांके एक वार चुराणेंविषें चांद्रायण व्रतकरे ॥ और पूर्वोक्त जो छोटे पशु इनांतें अतिरिक्त पशुयोंके हरण विषें अथवा इनके वहुत वार चुराणेंविषें एह व्रत

तथाचप्रायश्चित्तविवेके जावालः।अश्वगोभूमिकन्याश्चहृत्वाचांद्रायणंचरेत् क्षुद्रपशूनपहृत्यप्राजापत्यंसमाचरेत् १ कन्यापदमधमकन्यापरम्॥ अन्यत्रकन्याहरतोवधइतिदंडस्योक्तत्वात् एतद्ब्राह्मणसंबंधिरजतभूम्यश्वादिविषयम् ॥ ब्राह्मणरजतादिहरणस्यानुपातकत्वोक्तेः। तथाचविष्णुः। ब्राह्मणभूमिहरणनिक्षेपापहरणसुवर्णस्तेयसमरजतहरणाभ्यासेगोभूमिकन्यानांसकृद्धरणेचांद्रायणम्॥ उक्तेतरक्षुद्रपश्वपहारेवाभ्यासे एवंपुस्तकादिचौर्य्येष्वपि ह्रियमाणाल्पत्ववहुत्वाभ्यांप्रायश्चित्तादिकल्प्यम् ॥ देवद्रव्यापहारेऽब्दम् यस्यवर्णस्यवृत्तिंयोहरेत्सतद्वर्णवधप्रायश्चित्तंपादोनंकुर्य्यात् अत्रसर्वत्रसकृदभ्यासद्रव्याल्पत्वमहत्त्वदेशकालस्वाम्यपहर्तृगुणवैगुण्याद्यपेक्ष्यप्रायश्चित्तगुरुलघुताज्ञेया ॥

जानणा ॥ इसी प्रकार पुस्तकादिके चुराणे विषें भी चांद्रायण व्रत करे ॥ और चुराई होई जो अल्प वस्तु अथवा वहुत वस्तु तिनां कर्के प्रायश्चित्तादि कल्पना करणें अर्थात् थोडीवस्तु हरण में थोडा प्रायश्चित्त और वहुत वस्तु हरण में वहुत प्रायश्चित्त करणा ॥ और देवताके द्रव्य हरण में वर्ष रोजका व्रत करे ॥ और जो पुरुष जिस वर्णक्या ब्राह्मणादिकी वृत्तिको हरताहै सो पुरुष तिस वर्णके बध का प्रायश्चित्त एक पाद ऊन करे तो शुद्ध होताहै इत्थें सब जगा एक वार अभ्यास द्रव्याल्पत्व महत्व देश काल स्वामि अपहर्त्ताके गुण वैगुण्यादिकी अपेक्षा कर्के प्रायश्चित्त गुरु लघु जानणा अर्थात् जैसा द्रव्य जैसे देशादि होवें तैसाहि प्रायश्चित्त करणाथा ॥

एह प्रायश्चित्त हरया है द्रव्य जिसका तिसकों सो द्रव्य देकर्के हि करणा योग्यहै और विशेष कहतेहैं वैदिकेति वैदिक अग्नि क्या जिसमें हवन होता है तिस अग्नि के तांई काष्ठ चुरा कर देवे और गौको तृण क्या घास चुराकर देवे और रस्तेमें चलन वाले द्विजको दो २ गन्ने चुराणेका दोष नाहिं है ॥ और दो २ मूलियां चुराणे काभी दोष नाहिं है ॥ और छोले धान्य कणक यव मुंग माष इनांको एक मुष्टि क्षेत्रतें हरे और क्षेत्रके स्वामि कर्के अनिषिद्ध क्या नाहं हटाया होया होवे और जेकर क्षेत्रका स्वामि कहे तो मुष्टि तें अधिक भी ले लेवे तिसको चारीका दोष नहि है एह मयूखमें किहा है ॥ तैसें हि इसीमें शंखजी विशेष कहते हैं अस्तेयमिति अग्निके वास्ते जो काष्ठ लेणा तिसमे दोष नाहिं है और गौ वास्ते जो

इदंचप्रायश्चित्तमपहृतद्रव्यस्वामिनेतद्द्रव्यंदत्त्वैवकार्य्यम् वैदिकाग्निभ्यः काष्ठं गवेतृणंहर्तुः पांथद्विजस्येक्षुद्वयं मूलकद्वयम् चणकव्रीहिगोधूमयवमुद्गमाषाणांमुष्टिंक्षेत्राद्धरतः स्वाम्यनिषिद्धस्यस्तेयदोषोनेतिमयूखे ॥ तथाच शंखः । अस्तेयमग्न्यर्थेकाष्ठमस्तेयंचतृणंगवे कन्याहरणमस्तेयंयोहरत्यनृतंकृतमिति १ यः पुरुषःकन्यांवाचादत्त्वापि नदत्तेयामित्यनृतंकृतंयथास्यात्तथावदति तत्कन्याहरणमस्तेयंस्तेयपापाजनकमित्यर्थः यद्वा अनृतंकृतंकन्यादानमुक्तरीत्याऽनृतंकृतंहरतिनाशयति अर्थात् तदेववाक्यंबलात्कारेणतदीयकन्याहरणेन सत्यं करोति तत्कन्याहरणमस्तेयमित्यर्थः ॥

घास चुराणा तिसमे भी दोष नाहिं है ॥ और जो अनृत कर्के कन्याका चुराणा तिसमे भी दोष नाहिं है ॥ १ अब इसी श्लोकके उत्तरार्द्धका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं यइति जो पुरुष कन्याकों वाणीतें दे कर्के भी एह कन्या मैंने नाहिं दित्ती इस प्रकार जैसे होवे तैसे कहताहै तिस कन्याके चुराणे मे दोष नहि जानणा ॥ अब दूसरा अर्थ कहतेहैं यद्वेति कथनकीती होई रीति कर्के कन्या दाननूं अनृत क्या नाश करता है अर्थात् तिसीवाक्यको बलकर्के तिस कन्या हरणते सचा करता है अर्थात् तिसके मुकरणेको हटाताहै सोभी कन्या हरण पाप रहित होता है

और अर्थ कहतेहैं जो झूठ करे सो अनृतंकृत् है अर्थात् कन्या देकर्के क्या वाक्य. दान देकर्के कहे कि मैंने कन्या नहि दिती तिस कन्यादाताकों हरति धातुको द्विकर्मक होणेतें जो कन्यागृहीता है सो अनृतंकृतं क्या कन्यादाताकी कन्याकों हरताहै तिसको. वो अस्तेयहै अर्थात् उसको कन्या हरणेका पाप नहि होता ॥ इसमे पंचमीके अर्थको अ मुख्य कर्मता है इसमे उदाहरण देतेहैं जैसे वृक्षमिति कोई पुरुष वृक्षसे फलोकों उतारता है इहां वृक्ष जोहै अमुख्यकर्म सो पंचमीके अर्थको देताहै और गौ जो है अमुख्य कर्म सो पंच.

यद्वाऽनृतंकरोतीत्यनृतंकृत् कन्यांदत्त्वा न दत्तेयमित्यपलापी कन्यादाता तमनृतंकृतं कन्यादातारं हरतेर्द्विकर्मकत्वात् ॥ यःकन्यागृहीता अनृतंकृतं काथःकन्यादातुःकन्यामितिशेषः कन्यां हरति तस्य कन्याहरणमस्तेयंस्ते यपापहीनमित्यर्थः ॥ अत्रामुख्यकर्म्मणःपंचम्यर्थत्वात् वृक्षमवचिनोति फलानि ॥ गांदोग्धिपय इतिवत्सुष्ठूक्तत्वात् ॥ शूलपाणौ अत्रापि मनुयोगी श्वरोक्तसामान्यप्रायश्चित्तचतुष्टयादिना विकल्पोवोध्यः ॥ इतिस्तेयप्राय श्चित्तमष्टात्रिंशत्कम् ॥ ३८ ॥ ● ॥

मीके अर्थको देताहै इहां दोनोंहि कर्म हैं वृक्षको अमुख्य कर्मता है और फलोंको मुख्य कर्मताहै (गांदोग्धिपयः) इसकी न्याई जैसे कोई मनुष्य गौसे दूध दोहन करता है और शूलपाणिके वनाए होए ग्रंथ विषे ऐसा विचारकीताहै कि अर्थात् शूलपाणि इसजगामनु और याज्ञवल्क्यकर्के कथित जो सामान्य व्रत चतुष्टय अर्थात् चार व्रत तिस कर्के विकल्प जानणा चाहे इस प्रायश्चित्त कोंकरे चाहे दूसरेको करे एह चोरी करणेका प्रायश्चित्तसमाप्त होया ॥ ३८ ॥ ● ॥

अब ऋणके ना दूर करणेंमें प्रायश्चित्त कहतेहैं तत्रेति तिसमें एकऋण दूसरेके द्रव्यको ग्रहणकर्के तिसके ना देणेंतें उत्पन्नहोताहै इकप्रकारएहै और ब्राह्मणदेवता पितर और ऋषिइनोंतीनों ऋणों कर्के ऋणवालाहोताहै तिनमे यज्ञकर्के देवताका ऋण और दूसरापुत्रोत्पत्ति कर्के पितरोंका ऋण और ब्रह्मचर्यकर्के ऋषियोंका ऋणदूरहोताहै इस श्रुतितें कहेहोए तीनऋणमिलाकर्के चारप्रकारका ऋणहोताहै इसके ना दूर करणेंविषें प्रायश्चित्तहै अपरार्कमे कहतेहैं ऋणकेप्रसंगकर्के ऋणमिति यज्ञ प्रजा अध्ययन इनांके ना दूरकरणेंविषें तैसेंही पुत्र और पौत्रनें ऋणदेणाचाहिए इत्यादि धर्म्म शास्त्रविहित जो ऋणदूर करणेमे आज्ञाहै तिसऋणके ना दूरकरणेंविषें शक्तिके अनुसार गोवध

अथऋणानपाकरणेप्रा० तत्रपरद्रव्यंगृहीत्वाऽप्रदानात् जायमानोब्राह्मणस्त्रिभिर्ऋणैर्ऋणवान्जायते यज्ञेनदेवेभ्यः प्रजयापितृभ्योब्रह्मचर्य्येणऋषिभ्यइति श्रुतेश्चचतुर्धर्णंभवति। एतस्यानपाकरणे अपरार्केतु ऋणंप्रस्तुत्य यज्ञप्रजाध्ययनानामकरणे तथापुत्रपौत्रैर्ऋणं देयमित्यादि धर्म्मशास्त्रविहितमृणापाकरणं तस्यचानपाकरणे शक्त्यनुसारेण गोवधप्रायश्चित्तचांद्रायणादीनां साधारणोपपातकप्रायश्चित्तानांचैकंकार्यम्। तत्रव्यतिक्रमकालाल्पत्वभूयस्त्वाद्यपेक्षयातद्विशेषोध्यवसेयः प्रायश्चित्तांतरमप्यत्रमनुनोक्तम्॥ इष्टिंवैश्वानरींचैवनिर्वपेदब्दपर्य्यये क्लृप्तानांपशुयज्ञानांनिष्कृत्यर्थमसंभव इति १

प्रायश्चित्त चांद्रायणादि और साधारण जो उपपातकोंके प्रायश्चित्त तिनांमेंसें एक प्रायश्चित्त करणे योग्यहै ॥ तिसविषे उल्लंघितकालकी अल्पत्वता वहुत्वतादि जाणकर तिनांकी अपेक्षा कर्के तिनांका विशेष जानणे योग्यहै अर्थात् जिस ऋणको देणाथा तिसके ना देणेमे थोडा काल होवेतो थोडा प्रायश्चित्त देणा और वहुतकाल होवे तो वहुतप्रायश्चित्तदेणा ॥ इस विषे और प्रायश्चित्तभी मनुजीने किहाहै इष्टिमिति जेकर ऋणके ना देणेमें वर्ष व्यतीत होजावें तौ वैश्वानरी नाम इष्टि क्या यज्ञ करे क्लृप्त क्या विहित जो पशु यज्ञ तिनांकी निष्कृति वास्ते प्रायश्चित्तके ना होणेतें जेकर प्रायश्चित्तहोजावें तो इनांको ना करे १

अब पूर्व श्लोकका अर्थ कहतेहैं अब्दपर्यये क्या वर्षके अंतविषे कृतानां क्या जिनांयज्ञांका प्रारंभ कियाहै तिनांके ना करणे मे वैश्वानरी इष्टि करे एह केयोंका मतहै परंतु जो नित्य यज्ञ हैं तिनांका ग्रहण करणा एह बात युक्त है असंभवे क्या जिनका अधिकारहै कि वर्ष वर्ष मे यज्ञ करणा तिसके ना करणे मे और जान कर्के और नजान कर्के उर किये जो पाप तिनके प्रायश्चित्तके अभाव मे ॥ इस मे प्रजापतिजी भी कहतेहैं कि जद वर्ष के अंतमे सोम यज्ञ ना होवे तां चांद्रायण व्रतकरे तैसेहि जैसाजैसा अधिकार होवे तैसं वर्ष गणना कर्के क्या इसने इतने वर्ष यज्ञ नहि किया इसकों इतनेहि चांद्रायण करणे चाहिए उर

अब्दपर्ययेसंवत्सरांते कृतानांप्रारब्धानामितिकेचित् नित्यतयाकृतानामि तितुयुक्तम् असंभवे ज्ञाताज्ञातपापानांप्रायश्चित्ताभावे । प्रजापतिः समां तेसोमयज्ञानांहानौचांद्रायणं चरेदिति । तथाचाधिकारोत्तरंवर्षगणनयाका माकामयोस्त्रैमासिकचांद्रायणादीनियोज्यानि अतश्च प्रतिसंवत्सरंसोमः पशुःप्रत्ययनंतथा कर्त्तव्याग्रयणेष्टिश्चचातुर्मास्यानिचैवहि १ एषामसंभ वेकुर्यादिष्टिंवैश्वानरींद्विज इति याज्ञवल्कयीयमपिसोमादेर्द्वितीयादिवर्षेष्व ननुष्ठानेवेदितव्यम् इत्यृणानपाकरणेप्रायश्चित्तम् ३१ ● ॥

इच्छासे करणेमे त्रैमासिक और न इच्छासें केवल चांद्रायण करणे योग्यहै ऐसें और भी जाणणा इस कारणसें वर्ष वर्षमे सोम यज्ञ पशुयाग प्रत्ययन क्या मकर कर्कटमे आग्रयणेष्टि क्या जद नवान्न भक्षण करणा तो प्रथम इष्टि करणी और चातुर्मास्ययाग करणा इनके ना करणेमे द्विज क्या ब्राह्मण क्षत्री वैश्य वैश्वानरनामक जो इष्टि तिसकों करे १ एह जो याज्ञवल्कय प्रोक्तहै सो सोम यज्ञादियोंके द्वितीयादि वर्षोंमे ना करणेमे जानणा एह ऋणके ना दूर करणेका प्रायश्चित्त समाप्त होया ३१ ●

इस तें उपरंत गणना विषें असच्छास्त्राधिगमन विवरण कीताहै इस विषें भी सामान्य उपपा तकोंके प्रायश्चित्तजानणें (उपपातकशुद्धिःस्यात्) इत्यादि मन्वादियों का कथन कीता होयाजा नदा एह असत् शास्त्रके पढनेका प्रायश्चित्त समाप्तहुआ ४०॥ ॥ इसतें उपरंत कौशीलव्यस्यच क्रिया एहपडयाहै अर्थात् ब्राह्मणको कुशीलतापापहै तिसका प्रायश्चित्तहै तिसविषें यायश्चित कह तेहैं यमजी नटेति नटुआ नच्चण वाला तरखाण चमयार सुनयार स्थाणुक इसका अर्थ अगे कहणाहै और नपुंसक वेश्या एह अभोज्यान्न कहेहैं अर्थात् इनांका अन्न भक्षण नहिं करणा १ और गायन करणवाला और लुहार सोची जुलाह तेली धोब्बा धूर्त चौर २ ध्वजी और माला कर्के जीविका करणवाला और शूद्रको पढानें वाला अथवा यज्ञकराणें वाला घमयार

एतदनंतरंगणनायामसच्छास्त्राधिगमनंविवृतम् अत्रापिसामान्योपपातक प्रायश्चित्तम् ॥ उपपातकशुद्धिः स्यादित्यादिमन्वाद्यभिहितंवोध्यम् ॥ इत्यसच्छा-प्रा-॥ ४०॥ ॥ अनंतरंकौशीलव्यस्यचाक्रियेतिपठितं तत्रप्रा यश्चित्तमाहयमः ॥ नटनर्त्तकतक्षाणश्चर्मकारःसुवर्णकृत् स्थाणुकाषंड गणिकाअभोज्यान्नाः प्रकीर्त्तिताः १ गांधर्वोलोहकारश्चसौचिकस्तंतुवाय कः ॥ चक्रोपजीवीरजकः कितवस्तस्करस्तथा २ ध्वजीमालोपजीवीचशू द्राध्यापकयाजकौ ॥ कुलालश्चित्रकर्माचवार्द्धुषिश्चर्मविक्रयी ३ समर्घप ण्यमाहृत्यमहर्घंयः प्रयच्छति ॥ सवैवार्द्धुषिकोनामयश्चवृद्ध्याप्रयोजये त् ४ वृथाश्रमीवृथादाताआश्रमाणांचभेदकः॥

चित्र कारी करण वाला और बहुतव्याज कर्के उपजीविका करण वाला और चर्म के वेचणें वाला ३ वार्द्धुषिक शब्दका अर्थ कहतेहैं समर्घमिति और जो पुरुष सस्ते समय विषें अन्नादि खरीद करे और तिसनूं महंगे समय विषें बेचे सो पुरुष वार्द्धुषिक नाम कर्के किहाहै जो वृद्धिकर्के जीविका करे ४ और वृथा जो आश्रम धारण वाला अर्थात् वेदवाह्य जटादि धारण करण वाला और वृथा क्या पित्रादि विष्णु इनांके निमित्ततें ही विना जो पुरुष दान करण वाला और जो पुरुष आश्रम जो वानप्रस्थादि तिनांका भेद करण वाला अर्थात् विरोध करण वाला ॥

पुण्यस्येति पुण्यको जो वेचणवाला पुरुष और योनिसंकरकक्या व्यभिचारी अथवा अन्वजातिमे विवाह करणवाला ५ और रंगकर्के उपजीविका करण वाला अर्थात् ललारी और पतिके ना मृत होयां २ जो जारतें उत्पन्नहोवे सो कुंड किहाहै तिसका अन्नभक्षण करणवाला और वीरह क्या अग्निके त्याग करण वाला और गुरुगुतिग क्या दंडादिकर्के गुरुको शासना करण वाला और वैद्य और गरद क्या विषदेणे वाला और रूपकर्के जीविका करणवाला अर्थात् बहुरूपि या और चुगली करणवाला ६ और सौनिक और पार्णिक एह सभ निषादके क्या नीचजा तिकेतुल्यहैं इनांसंपूर्णांके कर्मविषे जो ब्राह्मणमोहतें सदावर्त्तमानहोवे ७ तिसब्राह्मणनें प्रायश्चित भी कीताहै तां भी सो त्यागणे योग्यहै इनांपूर्वोक्तोंके कर्मोविषे युक्त जो ब्राह्मण सो संपूर्ण

पुण्यस्याविक्रयीचश्चयोनिसंकरकस्तथा ५ रंगोपजीवीकुंडाशीविरहागुरु गुल्मिगः भिषक्चगरदश्चैवरूपाजीवीचसूचकः ६ सौनिकःपार्णिकश्चैवनि षादेनसमाःस्मृताः कर्मस्वेतेषुयोमोहाद्ब्राह्मणोवर्त्ततेसदा ७ प्रायश्चित्तेपि चरितेपरिहार्योभवेत्सहि एतेब्राह्मणचांडालाःसर्वेब्रह्महणःकिल ८ तस्मा द्दैवेचपित्र्येचवर्जितास्तत्त्वदर्शिभिः एतेषामेवसर्वेषांप्रत्यापत्तितुमार्गतां भैक्ष्यान्नमुपभुंजानोद्विजश्चांद्रायणंचरेत् ९ स्थाणुकाःभ्रातृमतीतिमदनः वृथाश्रमीवेदबाह्यजटादिधारणकर्त्ता आश्रमाणांतुभेदकःतद्विरुद्धकारित्वा त् ॥ आश्रमधर्महिंसकइतिकल्पतरौ ॥

चांडालजानणें और ब्रह्महत्याकरणवालेके तुल्यहैं ८ तिसकारणतें एह ब्राह्मणपंडितोंने दैवकर्म जो वालवैश्वदेवादि और पित्र्यकर्म जो श्राद्धादि तिनोंमें वर्जितकहेहैं जेकर एहसंपूर्ण ब्राह्मण प्रायश्चित्तको इच्छाकरें तो भिक्षाके अन्नको भक्षण करदा होया द्विज चांद्रायण व्रतकरे तो शु द्धहोताहै ९ अब पूर्वोक्त श्लोकोंमे जो कठिन २ पदहै तिनोंको अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं स्थाणुके ति स्थाणुका नाम भ्राता रहित स्त्रीकाहै एह मदननें किहाहै और वृथाश्रमी क्या वेदबाह्य जो जटादि धारण करणवाला और आश्रमका भेद करण वाला अर्थात् तिनोंके साथ विरोध करणवाला अथवा आश्रम जो वानप्रस्थादि तिनोंका जो धर्म तिसका नाश करण वाला एह कल्प तरुमें किहाहै

और योनिसंकरक नाम व्यभिचारीकाहै और कुंडाशी नामचौट ६४ पा अन्नके भक्षणकर णवालेकाहै एह शूलपाणिजीनें किहाहै ॥ अब कुंडका और लक्षणकहतेहैं पत्यावितिपतिके जी विनहोयां जो जारसें उत्पन्न होवे सो कुंड किहाहै और पतिके मृत होयां जो जारसें उत्पन्न होवे सो गोलक किहाहै जो इनां दोआंका अन्न भक्षण करे सो बुद्धिमानोंने कुंडाशी कियाहै १ एह मनु जीका किहाहोया जानणा ॥ और बीरहा नाम अग्नित्याग करण वालेकाहै ॥ और गुरुगुप्तिग नाम दंडादिककर्के गुरुको शासना करणवालेकाहै एह प्राचीनोंका मतहै अथवा गुरु के साथ छल करण वाला एह मदनका मत है ॥ और रूपजीवी नाम और वेश करणे वाले का है ॥ अथवा ताम्रादियोंका स्वर्णादि तुल्य रूपकरणवाला ॥ और सूचक नाम चुगलका है

योनिसंकरकोऽव्यभिचारी । कुंडाशीचतुःषष्टिपलान्नभक्षकइतिशूलपाणिः युक्तस्तु ॥ पत्यौजीवतिकुंडस्तुमृतेभर्त्तरिगोलकः यस्तयोरन्नमश्नातिसकुं डाइयुच्यतेबुधैरितिमनूक्तएव ॥ वीरहाऽग्नित्यागी ॥ गुरुगुप्तिगोदंडादिनागु रुशास्तेतिप्राच्याः ॥ गुरुनिह्नवकारीतिमदनः ॥ रूपजीवीवेशकरः ॥ ता म्रादीनांस्वर्णादिसदृशरूपकारीबा ॥ सूचकःपिशुनः ॥ सूना घातस्थानं तेनजीवत्यसौसौनिकः ॥ अत्रापिकौशीलव्याद्यर्जितधनत्यागइत्यादयःप रिग्रहदुष्टभोजनेप्रोक्ताअपिकुशीलवावोध्याः ॥ अथगुरुद्विष्टपुविष्णुः ॥ समुत्कर्षानृतेगुरोश्चाक्षेकर्निर्वधेतदक्षारणेच मासंपयसावर्त्ततेति ॥ इदंच मतिपूर्वम् ॥ अक्षारणमभिशापः ॥

और सूना नाम मारण वाला स्थान तिस कर्के जो जीविका करताहै सो सौनिक कियाहै इस विषें भी कौशीलव्यादिकर्के अर्जित क्या इकठा कीता जो धन तिसका त्याग करणा इत्या दि परिग्रहदुष्टभोजन विषे कहेभी हैं तोभी कुशीलव जानणे अर्थात् इनका नाम कुशीलवभीहै अब गुरुके द्वेषी विषे प्रायश्चित्त विष्णु जी कहते हैं समिति गुरुके साथ वहुत झूठ कहणे वाला और कपट करण वाला और तिसके अक्षारण विषे एक महीना जल पान करे तो शुद्धहोताहै एह इच्छा पूर्व करण वाले विषे जानणा ॥ और अक्षारण नाम अभिशापका है अर्थात् गुरु को गाली देणे वाला पुरुष पूर्वोक्त व्रत करे ॥

अब इसीमे और विशेष शंखजीकहतेहैं क्षिप्त्वेति जो पुरुषअग्निविषे अशुचिद्रव्य क्या मलमू त्रादिपावे और किसीनूं जो जलविषे पावे तो एक महीना व्रतकरे और तैसेहि गुरुकी आज्ञा उल्लंघनकरेतोभी एही व्रतकरे तां शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अब और प्रकारका सुमंतुजीकहतेहैं देवर्षीति देवता ऋषि ब्राह्मण आचार्य माता पिता राजा इनांके उपर थुके अथवा इनांको गाली देवे तों अग्निकर्के अपना जिव्हाकों दग्धकरे और सुवर्ण दानकरे॥ और अज्ञान पूर्वक जो गुरुके साथ किसी वातका हठकरणा तिसविषे वसिष्टजीकहतेहैं गुरोरिति जो पुरुषगुरुके साथ किसी बातका हठ करताहै सो वारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रतकरे और सवस्त्र स्नान कर्के गुरुकोहि प्रसन्न करे तो शुद्ध होताहै ॥ अब इसीमे और विशेष याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं गुरुको तुं शब्द कर्के अ

॥ शंखः ॥ क्षिप्त्वाग्नावशुचिद्रव्यंतदेवांभसिमानवः ॥ मासमेकंव्रतंकुर्या दपाक्रम्यतथागुरुम् १ अशुचिमलमूत्रादि ॥ सुमंतुः ॥ देवर्षिब्राह्म णाचार्यमातापितृनरेन्द्राणां प्रतिष्ठीवने आक्रोशनेचोल्मुकेन जिव्हांदहे- द्धिरण्यंदद्यात् ॥ अमतिपूर्वंगुरोर्निवंधेतुवसिष्ठः ॥ गुरोरलीकनिर्वंधे कृच्छ्रंद्वादशरात्रकम् ॥ चरित्वासचैलंस्नातोगुरुप्रसादात्पूतोभवति ॥ या ज्ञवल्क्यः ॥ गुरुंतुंकृत्यहुंकृत्यविप्रंनिर्जित्यवादतः ॥ वध्वावावाससा क्षिप्रंप्रसाद्योपवसेद्दिनम् १ वृहस्पतिनातूत्तरार्धे ॥ ताडयित्वातृणेना थप्रसाद्यैवविशुद्ध्यतीतिपठितम्॥ इदंतुप्राग्ब्रह्मचारिप्रायश्चित्तप्रसंगेपिद र्शितम् ॥ इदमकामतः ॥ कामतस्तुशंखलिखितौ. ॥

थवा हुं शब्द कर्के कहे और ब्राह्मण नूं वादते क्या शास्त्रार्थादि कर्के जीत लेवे अथवा शी घ्रहि वस्त्र कर्के बन्न लेंवे तो उस ब्राह्मणकों प्रसन्न करे और एक दिन उपवास व्रत करे तो शुद्धहोताहै १ और वृहस्पतिजीनें इस पूर्वोक्श्लोकके उत्तरार्धविषे ऐसा पाठ किहाहै ताडयित्वेति तृण कर्के जो पुरुष ब्राह्मणकों ताडना करताहै सो तिस कों प्रसन्न करेतो शुद्ध होताहै ॥ एह प्रायश्चित्त पीछे ब्रह्मचारीके प्रायश्चित्त विषें भी प्रसंग द्वारा दिखा याहै ॥ एह अज्ञानपूर्वक करणें विषें जानणा॥ और इच्छा पूर्वक करणें बिषें शंख लिखित स्मृति में कहते हैं ॥

आक्रोशेति दुर्वचन कहणेंमें और झूठ बोलणें विषें एक रात्र वा त्रय रात्रि उपवास व्रत करे अर्थात् दुर्वचन में एक रात्र उपवास करे और झूठ बोलणेंमें त्रय रात्रि उपवास व्रत करे ॥ और जो वसिष्ठ जीने कहाहै सो कहतेहैं आचार्यइति आचार्य माता पिता इनांको जो दुःख देणे वाला है सो इनांकों प्रसन्नकरे तो पापतें रहित होताहै सो एह अज्ञानतें दुःखदेण वाले विषें जानणा और इहां हंतार इसपदसें अल्प दुखदेणे वालेका ग्रहणकरणा ॥ जो आपस्तंब जीनेंकिहाहै सो कहतेहैं अनेति नाहिं जो दुर्वचनके योग्य माता पिता गुरु इत्यादि इनांको दुर्वचन कहण वाला त्रय रात्रि अक्षार लूणका भोजन करे और शूद्र अथवा स्त्री दुर्वचन कहे तो

आक्रोशानृतवादे एकरात्रं त्रिरात्रं चोपवास इति । यत्तु वसिष्ठः । आचार्यमातृपितृहंतारस्तत्प्रसादादस्तपापा इति तदप्यज्ञानतः हंतारोऽल्पतरदुःखकराः । यत्त्वापस्तंबः । अनाक्रोश्यमाक्रोश्य त्रिरात्रमक्षारलवणभोजनम् शूद्रस्य सप्तरात्रमभोजनं स्त्रीणां च तदपि ज्ञानतः । इति कौशील्यप्रा- ४१ ❀ एतदग्रे धान्य कुप्य पशुस्तेयमिति पठितं विवृतं च तत्प्रायश्चित्तं पूर्वोक्तस्तेयप्रकरण एव प्रसंगतः प्रोक्तम् अयंभावः स्तेयं हि स्वर्णमनुष्यधनादिस्वल्पधान्यादिरूपैरुत्तममध्यमाधमोपाधिभिस्त्रिधा विभक्तं त्रिधा प्रायश्चित्तयोग्यम् तत्राधमोऽप्यवांतरोपाधिभिस्त्रिधा ज्ञेयः ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ इति धान्यादिस्तेयप्रा ❀

सप्त ७ रात्रि भोजन ना करे सो एह ज्ञानतें करण विषें जानणा ॥ एह कौशील्यका प्रायश्चित्त समातभया ४१ ❀ इसके अग्गे धान्य कुप्य पशु इनांका चुराणा एह पढयाहै और विवरण भी इसका कीत्ताहै तिनांका प्रायश्चित्त पूर्वोक्त स्तेय प्रकरण विषें हि प्रसंगतें किहाहै इसमें ऐसा विचारहै कि स्तेय जो है सो स्वर्ण १ मनुष्य धनादि २ स्वल्पधान्यादि ३ रूप कर्के उत्तम मध्यम अधम उपाधि कर्के त्रय प्रकारका विभाग कीत्ताहै सो एह त्रय प्रकारका हि प्रायश्चित्त करणें योग्यहै तिनां विषें भी अधम जो है सो अवांतर उपाधि कर्के त्रय प्रकारका जानणा ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ एहधान्यादिककीचोरीका प्रायश्चित्त समाप्त भया ॥ ❀ ॥

इसतें उपरंत मद्यपस्त्रीनिषेवणं एह किहाहै तिस विषे उपपातकशुद्धिः स्यात् इत्यादि जो सामा न्य प्रायश्चित्तहै सो जाति शक्ति गुणादियोंकी अपेक्षा करके जानणे योग्यहै। ४५ ❀ इसतें उपरंत पीछे गणना विषे स्त्री शूद्र विट् क्षत्र वध एह किहाहै तिसका प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं तुरीय इति क्षत्रीके मारणें विषें ब्रह्महत्याका चौथा हेसा प्रायश्चित्त करे ॥ और वैश्यके मारणें विषे अष्ठमा हेसा ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त करे। और शूद्रके मारणेंविषें सोलवां १६ हेसा जानणा १ ॥ अत्र इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं तुरीय इति ब्रह्महत्याका बारां १२ वर्षका प्रायश्चित्त है तिसका चतुर्थ हेसा त्रय वर्षका प्रायश्चित्त जानणा इस प्रायश्चित्तको वडा होणेतें अपणी

अनंतरंमद्यपस्त्रीनिषेवणमित्युक्तम्। तत्रोपपातकशुद्धिःस्यादित्यादिसामा न्यप्रायश्चित्तंजातिशक्तिगुणाद्यपेक्षया व्यवस्थापनीयम्॥ ४५ ❀ एतदनं तरंगणनायां स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवध इतिपठितं तत्प्रायश्चित्तमाह मनुः॥ तुरी योब्रह्महत्यायाः क्षत्रियस्यवधेस्मृतः वैश्येऽष्टमांशोवृत्तस्थेशूद्रेज्ञेयस्तुषो डशः १ तुरीयोद्वादशवार्षिकस्य चतुर्थांशस्त्रिवर्षात्मकः॥ इदंगुरुत्वाद्वृत्त स्थक्षत्रियस्यकामतोवधेबोध्यम्॥ एवमेतादृशवैश्यवधेसार्धवर्षम् तादृक्श द्रवधेनवमासिकम् ॥ १ ॥ अकामतस्तुराजन्यंविनिपात्यद्विजोत्तमः वृष भैकसहस्रागादद्यात्सुचरितव्रतः ॥ १ ॥ वृषभेणाधिकंसहस्त्रयासांगवांता आत्मशुद्ध्यर्थंब्राह्मणेभ्योदद्यात् ॥ १ ॥

वृत्तिमें स्थित जो क्षत्री तिसके इच्छाते मारण विषे जानणा ॥ ऐसा ही जो अपणी वृत्तिमें स्थित वैश्य तिसके मारण विषे डेढ वर्षका प्रायश्चित्त करे॥ और ऐसेहि शूद्रके मारण विषे न व ९ महीनेंका प्रायश्चित्त करे १ ॥ और जो ब्राह्मण अज्ञानतें क्षत्री कों मारे सो एक वैल हजार गौका १००० दान करे पर प्रथम तिस मारणका पूर्वोक्त जो प्रायश्चित्त है तिसकों करके ॥ १ ॥ अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्टकरके लिखतेहैं वृषेति वृष क्या वैल करके अधिकहै हजार १००० जिनां गौआंका तिनां गौआंकों अपणी शुद्धि करणे वास्तें सो ब्राह्मण- ब्राह्मणांके तांई दे देवे १ ॥

त्र्यब्दमिति त्रय वर्ष नियत होया २ और ग्रामतें दूर बृक्ष मूल विषें वास करदा होया और जटा धारणकर्के ब्रह्महत्याकाव्रतकरे ॥ २ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं यद्वेति इंद्रियों को रोक कर्के जटा वाला होया २ ग्रामतें दूर वृक्षके मूलविषे निवास करे ब्रह्महत्या वाले कों जो किहाहै कि ब्रह्महत्या करण वाला पुरुष बारां १२ वर्ष व्रत करे इत्यादि कर्के सोई व्रत त्रय वर्ष करे परंतु इसमें ऐसा (प्रश्ण) है कि इस पूर्वोक्त श्लोककर्के पूर्वार्द्ध मेंहि किहाहै ब्रह्महत्याका व्रत करे इसी वास्ते ब्रह्महत्याकरण वालेको ग्रामतें दूर रहणा इत्यादि प्रकार सिद्धहो गया क्यों पीछे किहाहै कि (वसन्दूरतरे ग्रामाद्वृक्षमूलनिकेतनः) ॥ इसके कहणेतें पुनरुक्ति दोषहै(उत्तर) ब्रह्महत्या वालेको शव शिरके ध्वजादि धारण भी कहेहैं इसके निषेध वास्ते एह वचनहै इसतें पुनरुक्ति दोष नहिं है ॥ २ ॥ एतदिति इसीव्रतकों वर्षरोजतक ब्राह्मण करे जेकर

त्र्यब्दंचरेद्वानियतोजटीब्रह्महणोव्रतम् वसन्दूरतरेग्रामाद्वृक्षमूलनिकेतनः २ त्र्यब्दमिति यद्वा संयतोजटावान् ग्रामाद्विप्रकृष्टवृक्षमूले कृतनिवासो ब्रह्महणि यदुक्तं ब्रह्महाद्वादशसमा इत्यादि तद्वर्षत्रयंकुर्यात् ॥ अस्य शवशिरोध्वजधारणादिधर्मनिवृत्त्यर्थत्वान्नपुनरुक्तिः ॥ २ ॥ एतदेवचरेदब्दंप्रायश्चित्तंद्विजोत्तमैः ॥ प्रमाप्यवैश्यंवृत्तस्थंदद्याच्चैकशतंगवाम् ३ एतदेवद्वादशवार्षिकव्रतमकामतःसाध्वाचारंवैश्यं निहत्य वर्षमेकं ब्राह्मणादिः कुर्यात् ॥ एकाधिकं वा गोशतंदद्यात् ॥ ३ ॥ एतदेवव्रतंकृत्स्नंषण्मासान्शूद्रहाचरेत् वृषभैकादशावापिदद्याद्विप्रायगाः सिताः ॥ ४ ॥ एतदप्यकामतः । इदमेवव्रतंशूद्रहाषण्मासांश्चरेत् ॥ वृषभएकादशोयासां गवां ताःशुक्लवर्णाब्राह्मणायदद्यात् ॥ ४ ॥

वृत्तस्थ वैश्य कों अर्थात् अपने धर्म्म विषे स्थितहोए वैश्यकों मारे अथवा एक कर्केअधिक सौ गौ दान करे ॥ ३ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं एतदिति इसी बारां १२ वर्ष के व्रत कों अज्ञानतें सुंदर आचार वाले वैश्य कों मार कर्के एक वर्ष व्रत ब्राह्मणादि करे अथवा एकतें अधिक सौ गौका दान करे ॥ ३ ॥ एतदिति इसी व्रतकों छेः महीनें करे जो शूद्रकी हत्या करे अथवा वृषभ क्या बैलहै ग्यारवां जिनांविषे ऐसी चिट्टेवत गौआं ब्राह्मणके तांई दानकर्के देदेवे ॥ ४ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं इस व्रतको भी अज्ञानतें शूद्र हत्या करण विषे जानणा ॥ इदमिति इसीपूर्वोक्त व्रत को शूद्र हत्या करण वाला पुरुष छेः महीने तक करे अथवा बैलहै ग्यारवां ११ जिनां विषे ऐसीयां चिट्टीयां दश गौआं ब्राह्मण के तांई देवे तो शुद्ध होताहै ४

अब इसमें याज्ञवल्क्य जी भी कहतेहैं ऋषभेति जो पुरुष क्षत्रिको मारता है सो एक बैल और हजार गौका दान करे अथवा ब्रह्महत्याका व्रत जो बारां १२ वर्षका है तिसको त्रय वर्ष तककरे ॥ १ ॥ और वैश्यको हत करणवाला पुरुष एकसौ गोका दानकरे और इसी प्रकार शूद्रके हत करण वाला छे६ महीनेका व्रतकरे अथवा दश १० गोआंका दान करे ॥ २ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं एकमिति एक है अधिक जिस हजार विषे सो एक सहस्र किहाहै और वैलहै एक जिनां गोआं के हजार विषे अधिक तिहां गोआंको क्षत्रिके हत करणे विषे देवे अर्थात् १ हजार गौ देवे और एक साथ बैल देवे अथवा ब्रह्महत्याका व्रत त्रय वर्ष करे ॥ और वैश्यको हत करण वाला बालक ब्रह्महत्याका

याज्ञवल्क्योपि ॥ ऋषभैकसहस्रागादद्यात्क्षत्रवधेपुमान् ब्रह्महत्याव्रतंवा पिवत्सरत्रितयंचरेत् १ वैश्यहाऽब्दंचरेदेतद्दद्याद्वैकशतंगवाम् षण्मासा नूशूद्रहाप्येतद्धेनूर्दद्याद्दशाथवा २ एकमधिकंयस्मिन्सहस्रेतदेकसहस्रम् तस्यपूरणे एकसहस्रः। ऋषभः एकसहस्रायासांगवांता ऋषभैकसहस्रा। क्षत्रवधेदद्यात्। अथवा ब्रह्महत्याव्रतंवर्षत्रयंचरेत्। वैश्यहात्वेतद्ब्रह्महत्या व्रतमेकमब्दंचरेत्। गवांऋषभैकशतंवादद्यात् ॥ शूद्रघातीतु ब्रह्महत्याव्र तंषण्मासांश्चरेत्॥ यद्वा दशधेनूरचिरप्रसूताः सवत्सादद्यात्। इदमकाम तो जातिमात्रक्षत्रियादिवधविषयम् ॥ किंचास्मिन्नेवविषयेस्मृत्यन्तरम् ॥ क्षत्रियस्यवधंकृत्वाचरेच्चान्द्रायणत्रयम् ॥ वैश्यस्यतुद्वयंकुर्य्याच्छूद्रस्यै न्दवमेवत्विति १ ॥

और शूद्रको मारण वाला व्रत एक वर्ष तक करे अथवा एक बैल सौ १०० गौका दान करे ॥ और शूद्रको मारण वाला पुरुष ब्रह्महत्याका व्रत जो बारां १२ वर्षका है तिसका छे ६ महीनेका व्रत करे अथवा थोडे दिनका सूई होई बछे सहित दश १० गोआं दान करे तो शुद्ध होताहै ॥ एह प्रायश्चि त्त अज्ञानतें जातिमात्र क्षत्रिय वैश्य शूद्रके मारण विषे जानणा योग्यहै ॥ कुछक और भी इसी विषय विषे किसी स्मृति से कहतेहैं क्षत्रियस्येति जो पुरुष क्षत्रिको मारताहै सो त्रय चांद्रायण व्रत करे और वैश्यको मारण वाला दो२ चांद्रायण व्रत करे और शूद्रको मारण वाला एक चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ ॥

अब इसमें मिताक्षराकार भी लिखतेहैं वृत्तस्थइति वृत्तस्थ क्षत्रिकें वध करणें विषें साडे ४ चार वर्षका व्रत करें ॥ इस जगा वृत्तशब्द करकें आत्मगुणादि जानणे ? अब और वृत्तशब्द का अर्थ कहते हैं गुर्वेति गुरुकी पूजा करणी और लज्जा करणी और पवित्रता सत्य कहणा और इन्द्रियोंको रोकणा और हितोंकों प्रेरणा एह संपूर्ण वृत्त कहे हैं १ जो वृद्धहारीत जीका वचन है सो कहतेहैं ब्राह्मणइति ब्राह्मण क्षत्रिकों हत करे तो छे ६ वर्षका प्रायश्चित्त करें ॥ और वैश्यका वध करें तो इसी प्रकार त्रय वर्षका व्रत करे और ब्राह्मण शूद्रका वध करे तो एकवर्षका व्रत करे और एक बैल दश १० गौआंका दान करे तो शुद्ध होताहै १ परंतु सो इह प्रायश्चित्त इच्छातें वधकरणेंविषें जानणा ॥ और वेदपाठी क्षत्रिया दि के वध विषें कहते हैं

अत्रमिताक्षरा वृत्तस्थेक्षत्रियेतुसार्धचातुर्वार्षिकंकल्प्यम् । वृत्तशब्देनचात्म गुणादिकमुच्यते । गुरुपूजाघृणाशौचंसत्यमिन्द्रियनिग्रहः प्रवर्त्तनंहितानां चतत्सर्वंवृत्तमुच्यते इतिस्मरणात् ॥ यत्तु वृद्धहारीतवचनम् ब्राह्मणःक्षत्रि यंहत्वाषड्वर्षाणिव्रतंचरेत् वैश्यंहत्वाचरेदेवंव्रतंत्रैवार्षिकंद्विजः ॥ शूद्रंहत्वा चरेद्वर्षमृषभैकादशाश्चगा इति १ तत्कामकारविषयम् श्रोत्रियक्षत्रादिव धेतु तुरीयोनंक्षत्रियस्यवधेब्रह्महणिव्रतम् अर्धंवैश्यवधेकुर्यात्तुरीयंवृषल स्याविल्पपि वृद्धहारीतेनोक्तंद्रष्टव्यम् । यत्तु वासिष्ठवचनम् ब्राह्मणोराजन्यं हत्वाऽष्टौवर्षाणिव्रतंचरेत् ॥ षड्वैश्यम् ॥ त्रीणिशूद्रमिति ॥ तदपिहारीतीये नसमानविषयम् ॥

तुरीति क्षत्रिके वध करणें विषें ब्रह्महत्याके व्रतका चतुर्थ पाद न्यून करे अर्थात् ९ नव वर्षका व्रत करे और वैश्यके वध विषें अर्द्धव्रतकरे और शूद्रके वध विषें चौथा हेसा व्रत करे १ एहभी वृद्ध हारीतका कथन कीता होया जानणा ॥ अब जो वासिष्ठ जी का बचन है सो कहते हैं ब्राह्मणइति ब्राह्मण क्षत्रिका वध करे तो अठ ८ वर्षका व्रत करे ॥ और वैश्यके हत करणें में छे ६ वर्षका व्रत करे ॥ और शूद्रके वध करणें विषें त्रय वर्षका व्रतकरे तो शुद्ध होता है ॥ सो एह भी प्रायश्चित्त वासिष्टका कथन कीता होया हारीतके कथन कीते होएके तुल्य विषय विषे जानणा अर्थात् कामनाकर्के वधविषें हि है और इसमे अधिकताका विषय अग्गे है ॥

और हारीतके वचन मे जो क्षत्रि पदहै तिस विषे किंचित् गुण ऊन इतना हि विशेष है ॥ और जेकर वेदपाठी है और अपणी वृत्तिमें स्थितहै तद पूर्व जो वर्ण ब्राह्मणादि कहे हैं तिनमे जो बेद पडनें वाला होवे तिसके वध करणें विषे आपस्तंवजी का कथन कीता होया बारां १२ वर्ष काव्रतजानणें योग्यहै ॥ और जेकर आरंभ कीताहै यज्ञका जिसनें ऐसाक्षत्रियादि और वेदरहित होवे तिसके मारणविषे वचनहै यागेति यज्ञविषें स्थित जो क्षत्रिवैश्य तिनके मारणविषे ब्रह्महत्या का ब्रत करणा योग्यहै ॥ और जेकर फेर यज्ञविषें स्थित क्षत्रियादि वेदपाठीहोवे तिसके मारण विषें गौतम जी कहते हैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणको राजा के मारण विषें छे ६ वर्षका प्राकृत ब्रह्मच

क्षत्रियेत्वीषदगुणन्यूनइत्येतावान्विशेषः॥ यदातुश्रोत्रियोवृत्तस्थश्चभवति तदापूर्ववर्णयोर्वेदाध्यायिनंहत्वेत्यापस्तंवोक्तंद्वादशवार्षिकंद्रष्टव्यम् ॥ यदा प्रारब्धयागःक्षत्रियादिरश्रोत्रियोभवेत्तस्मिन्व्यापादिते यागस्थक्षत्रविड् घातीचरेद्ब्रह्महणिव्रतमितिद्रष्टव्यम् ॥ यदा पुनर्यागस्थक्षत्रियादिःश्रोत्रि योभवेत् तत्र व्यापादिते गौतमः ॥ ब्राह्मणस्यराजवधेषड्वार्षिकंप्राकृत ब्रह्मचर्य्यमृषभैकसहस्राश्चगादद्याद्वैश्यवधेत्रैवार्षिकमृषभैकशताश्चगादद्या च्छूद्रवधेसांवत्सरिकमृषभैकादशाश्चगादद्यादितिदानतपसोःसमुच्चयमाह एतच्चामतिपूर्वविषयम् ॥

र्यं करें और एक वैल हजार १००० गौ दानकरे ॥ और वैश्यके मारण विषें त्रय वर्षका ब्रतकरे और एक वैल सौ १०० गौ दानकरे ॥ और शूद्रके मारण विषें एक वर्षका ब्रह्मचर्य्य धारण करें और एक वैल दश १० गौ दानकरे एह दान और तपका समुच्चय कथा ब्रतके साथ अधिकदान तपभी किहाहै क्यों किदोषकी आधिकतासे प्रायश्चित्तकी अधिकता केलिये॥ इहां प्राकृत ब्रह्मचर्य्यकाअर्थ पिच्छोकिहाहै प्रथम जो गुरुकुलमै वासादिनियमसाथ जो ब्रह्मचर्य्यहै सो प्राकृत ब्रह्मचर्य्यहै और एह प्रायश्चित्त अज्ञान पूर्वक जो मारणहै तिसविषें जानणा योग्य है

अथ गौत्तम स्मृति सें विशेष कहते हैं पूर्वोक्त पिछलेकी न्याईं अज्ञान पूर्वक चार वर्णोंके मारण विषें बारां १२ छे ६ त्रय ३ एक १ वर्ष व्रत करणें योग्यहै ॥ तिनांके अंत विषें हजार गौ तिसतें अर्द्ध और तिसतें अर्द्ध और तिसतें अर्द्ध गौ दान करे अर्थात् ब्राह्मणको मारे तो बारां वर्षका व्रतकर्के हजार १००० गौ दान करे ब्राह्मण क्षत्री को मारे तो छे ६ वर्षका व्रत कर्के पंच ५०० सौ गौ दान करे और वैश्यके मारण विषें त्रय ३ वर्षका व्रतकर्के ढाई २५० सौ गौ दान करे और शूद्रके मारण विषें एक वर्षका व्रतकर्के १२५ सवा सौ गौ दानकरे सबनां विषें क्रमतें यथा अनुलोम क्रमकर्के जानणा आगेभी क्षत्रिको मारे तो ६ वर्षका और वैश्यको मारे तो त्रयवर्ष इत्यादि जानणा ॥ और प्रातिलोम्य क्रम ब्रह्महत्या प्रकरण विषें जानणा एह शंखस्मृति में किहा है एह बारां १२ वर्षका व्रत गौतम विषय का ही है अर्थात् अज्ञात विषय है

पूर्ववदमतिपूर्वं चतुर्षु वर्णेषु प्रमाप्य द्वादश षट् त्रीन्संवत्सरंच व्रतान्यादिशेत् तेषामंते गोसहस्रंततोर्धं तस्यार्धमर्धंच दद्यात् ॥ सर्वेषामानुपूर्व्येणेति शंखस्मरणात् ॥ इदंचद्वादशवार्षिकंगौत्तमीयविषयमेव ॥ किंचिन्न्यूनगुणे क्षत्रिये गुणाधिकयोर्वैश्यशूद्रयोश्चद्रष्टव्यम् ॥ स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवध इत्युपपातकमध्येविशेषतएवपठितत्वेनोत्सर्गापवादन्यायगोचरत्वाभावादुपपातकसामान्यप्राप्तान्यपिप्रायश्चित्तान्यत्र योजनीयानि ॥ तत्र दुर्वृत्तक्षत्रियादौ कामतोव्यापादिते मानवंत्रैमासिकंद्वैमासिक चांद्रायणंच वर्णक्रमेण योज्यम् ॥

और थोड गुण वाला क्षत्री अधिक गुण वाला जो वैश्य शूद्र तिनांको मारे तां भी बारां १२ वर्षका व्रत करे परंतु इसमे (स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधः) इह उपपातकोंके मध्य विषें विशेषतेहि पढनें कर्के उत्सर्गापवाद न्यायके अभाव होणेते अर्थात् उत्सर्ग विधितें अपवाद विधि बलवान् होतीहै इस वास्ते इसमें अपवाद विधि कोई नहिंहै इसकर्के उपपातकोंके सामान्य प्रायश्चित्त उपपातकशुद्धिः स्यात् इत्यादि मनु याज्ञवल्क्य जीके कथन कीते होए भी जोडनें योग्यहैं तिस विषें खोटी वृत्ति करण वाले जो क्षत्रियादि तिनांके इच्छाते मारण विषें मनु जी का कथन कीता होया त्रय महीनेंका व्रत करे और वैश्यके मारणविषें दो २ महीनेंका व्रत करे और शूद्रके मारण विषें चांद्रायण व्रत कर्के शुद्धहोताहै इसी प्रकार वर्ण क्रम कर्के जोडने योग्यहै

अब इसीमें पराशर जी कहतेहैं वैश्यमिति विकर्ममें स्थित और शूद्र के कर्म करणे वाले वैश्य को ब्राह्मण मार कर्के चांद्रायण व्रतकरे और त्री ३० गौआं दक्षिणा देवें इस विषे ब्राह्मण अपतित जानणा अथवा क्षत्रियादि भी जानणें एह माधव जीका मतहै ॥ एह कामना कर्के कीते होए पाप विषे जानणा और अकाम तें वध करणें विषें याज्ञवल्क्य जी के कथन कीत्ते होए त्रय ३ रात्रि उपवास व्रत के सहित एक वैल दश गौं दान करे ॥ और महीना रोज पंचगव्य भक्षण करे ॥ अथवा महीना रोज जल पान करे ॥ एह यथा क्रम कर्के जोडने योग्य है ॥ एह जो पीछें किहाहै व्रतों का समूह सो ब्राह्मणहै कर्ता जिसका ऐसे क्षत्रियादिके वध विषें देखणें योग्यहै इसमे वचन त्रय दिखातेहैं अकेति ब्राह्मणस्येति ब्राह्मणइति और अज्ञानतें ब्राह्मण क्षत्रि को मार कर्के और तैसे ही ब्राह्मण

पराशरः । वैश्यंशूद्रक्रियायुक्तं विकर्मस्थंद्विजोत्तमः हत्वाचांद्रायणंत स्यत्रिंशद्गाश्चैवदक्षिणेति ॥ द्विजोत्तमोऽत्रापतितोविप्रःक्षत्रियादिश्चेतिमाध वः इदंकामतःकृतेबोध्यम् ॥ अकामतस्तुयोगीश्वरेणोक्तं त्रिरात्रोपवाससहि तमृषभैकादशगोदानंमासंपंचगव्याशनंमासिकं चपयोव्रतंयथाक्रमेणयो ज्यम् ॥ एतच्च प्रागुक्तंव्रतजातंब्राह्मणकर्तृकेक्षत्रियादिवधेद्रष्टव्यम् ॥ अका मतस्तुराजन्यंविनिपात्यद्विजोत्तमः॥ तथा ब्राह्मणस्यराजन्यवधेषड्वार्षिकं तथा ब्राह्मणः क्षत्रियंहत्वेत्यादिषु मनुगौतमहारीतवाक्येषु ब्राह्मणग्रहणा त्क्षत्रियादिकर्तृकेतुक्षत्रियादिवधेपादन्यूनंद्रष्टव्यम् ॥ विप्रेतुसकलंदेयंपा दोनंक्षत्रियेस्मृतम् ॥ वैश्येर्धमेकपादस्तुशूद्रजातिषुशस्यत इतिवृद्ध विष्णुस्मरणात् ॥

कों क्षत्री के मारण विषें छे ६ वर्ष का प्रायश्चित है ॥ तैसें ही और कहतेहैं ब्राह्मण जो है सो क्षत्री को मार कर्के इत्यादि जो मनु गौतम हारीतके वाक्य तिनां विषें ब्राह्मण का ग्रहणहोणें तें ॥ क्षत्रियादिहै कर्ता जिसके ऐसे क्षत्रियादि वध विषें पाद पाद न्यून जानणा अर्थात् क्षत्रीतें वैश्यमें एक पाद न्यून करणा और वैश्य तें शूद्र विषें एक पाद न्यून व्रतकरणा इत्यादि जानणे इनमे वचनहै विप्रेति ब्राह्मणके तांई संपूर्ण व्रत देवे और क्षत्रि को ब्राह्मण तें पाद ऊन व्रतदेवे और वैश्य को अर्द्ध व्रत देवें और एक पाद व्रत शूद्र जाति विषें कथन कीताहै एह वृद्ध विणु जी के वचन ते एह अर्थ पिच्छे आचुका है परंतु प्रसंगतें किहाहै

इस बिषें जो सभा ब्राह्मणोंके प्रायश्चित्त विषें कहीहै सो सभा गर्णोंकी दूणी जानणी इत्यादि व्यवस्था ब्रह्महत्या प्रकरण विषें कहीहै सो इस जगाभी जानणी तिस विषे मूर्द्धावसिक्त जो ब्राह्मणतें क्षत्रियाणी विषे उत्पन्न होवें तिनांको जसा दंड अधिक है तैसेहि प्रायश्चित्त भी अधिक जानणा सो (दंडप्रणयनकार्य्यंवर्णजात्युत्तराधरम्) इसयाज्ञवल्क्यजीके वचनसे जानणा ॥ इस पूर्वोक्तका अतिदेशभी है धनेति धन हरण वालेको प्रेतक्रियाके न करण विषे शंख जी कहतेहैं प्रेतस्येति प्रेतके जो प्रेतकार्य हैं तिनांको तिसका धन हरण बाला न करे तो जिसवर्णके वधविषे जो प्रायश्चित्त किहाहै सो पुरुष तिस व्रत नूं यत्नतें करे ॥ और अज्ञान तें खोटी वृत्तिवाले क्षत्रिके वध विषे भी शंखजी कहतेहैं निहत्येति मोहतें क्षत्रिको मारकर्के

अत्र पर्षद्याब्राह्मणानामित्यादिव्यवस्था ब्रह्महप्रकरणे प्रोक्ता सात्राप्य नुसंधेया तत्र मूर्द्धावसिक्तादीनांदंडवत्प्रायश्चित्तमुक्तम् ॥ एतस्यातिदेशो पि ॥ धनहर्त्तुः प्रेतक्रियाधाऽकरणे शंखः ॥ प्रेतस्यप्रेतकार्य्याणिअकृत्वाधनहारकःवर्णानांयद्वधेप्रोक्तंतद्व्रतंप्रयतश्चरेदिति १ अज्ञानादुर्वृत्तक्षत्रियवधेतु शंखः निहत्यक्षत्रियंमोहात्त्रिभिः कृच्छ्रैर्विशुध्यति तथा कृच्छ्रातिकृच्छ्रौकुर्वीतसनरोवैश्यघातकः कुर्याच्छूद्रवधेविप्रःकृच्छ्रंसांतपनंतथेति पराशरः। शिल्पिनंकारुकंशूद्रंस्त्रियंवायस्तुघातयेत् प्राजापत्यद्वयंकृत्वावृषैकादशदक्षिणेति १ व्यभिचारोत्पन्नवधेतुयाज्ञवल्क्यः ॥ चांद्रायणंचरेत्सर्वानवकृष्टान्निहत्यतु १ अवकृष्टाव्यभिचारजाः ॥

त्रय ३ कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ तैसेहि बैश्यको मारण वाला पुरुष कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे और तैसेहि शूद्रके मारण विषे ब्राह्मण कृच्छ्र सांतपन व्रतकरे १ अब और विशेष पराशर जी कथन करतेहैं शिल्पिनमिति चित्रकारी करण वाला और कारुक क्या कटको बनाण वाला और शूद्र स्त्री इनमेंसे एककोभी जो पुरुष मारताहै सो दो २ प्राजापत्य व्रत कर्के एक बैल और दश १० गौआं दक्षिणा देवे १ अब व्यभिचार तें उत्पन्नका जो वध तिस विषें याज्ञवल्क्य,जी कहतेहैं चांद्रायणमिति संपूर्ण अवकृष्ट क्या व्यभिचारी तें उत्पन्न होए जो पुरुष तिनांका वध करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ ॥ अव कृष्ट नाम व्यभिचारोत्पन्नका है ॥

अब इसीमें और विशेष हारीतजी कहतेहैं चांडालेति चांडाल बध की प्राप्ति जेकर ब्राह्मणको होवे तद सो बारां १२ दिनका कृच्छ्र ब्रतकरे तिसतें उपरंत तप्तकृच्छ्र करे॥ १ ॥ अब अंगिरा जी कहतेहैं सर्वेति संपूर्ण अंत्यज जो नीच तिनांके साथ गमन विषें अथवा भोजन विषें अथ वा तिनांके मारणविषें पराक ब्रतकर्के शुद्धिहोतीहै ॥ १ ॥ एह अंगिराका किहाहोया अज्ञानतें बधविषें जानणा ॥ और ज्ञानतें बधविषे चांद्रायण व्रत करे एहविज्ञानेश्वरका मतहै ॥ और मा धवजीनें किहाहै कि एह विपरीत जानणा अर्थात् ज्ञानते वधविषें पराक और अज्ञानतेबधविषे चान्द्रायण॥ सोई लौगाक्षिजीकहतेहैं हननइति शूद्रतें उत्पन्नहोए जो ब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या विषें तिनांके ज्ञान पूर्वक मारणविषें पराक ब्रत करे और अज्ञानपूर्वक वधमें चांद्रायण ब्रतकरे१

हारीतः ॥ चांडालवधसंप्राप्तिर्ब्राह्मणस्यभवेद्यदि ॥ कारयेद्द्वादशंकृच्छ्रंतप्तकृच्छ्रंततोभवेदिति १ अंगिराः ॥ सर्वांत्यजानांगमनेभोजनेचप्रमापणे पराकेणविशुद्धिःस्यादित्यांगिरसभाषितमिति १ एतदज्ञानतोवधे। ज्ञानतस्तुचांद्रायणमितिविज्ञानेश्वरः ॥ विपरीतमितितुमाधवः ॥ तदाहलौगाक्षिः ॥ हननेप्रतिलोमानांशूद्रजानांकथंभवेत् ज्ञानपूर्वंपराकःस्यादज्ञानादैंदवंतथेति १ ॥ चांद्रायणंद्विविधमष्टधेनुकंत्रिधेनुकंच ॥ पराकोपिद्विविधःपंचधेनुकोद्विधेनुकश्चेति ॥ तत्रज्ञानतोमहतोश्चांद्रायणपराकयोर्निवेशः ॥ अज्ञानतस्त्वल्पयोरितिग्रंथयोरविरोधः ॥ यत्तु मासा इत्यनुवृत्तौब्रह्मगर्भआह ॥ अंतरप्रभवाणांतुसूतादीनांचतुर्द्विषडिति ॥ तत्कामतोभ्यासविषयम् ॥ तत्रसूतस्यवधाभ्यासेषण्मासाः॥ वैदेहिकस्य चत्वारः ॥ चांडालस्यद्वौ ॥ मागधस्यचत्वारः ॥

चांद्रायण दो प्रकारकाहै एक अष्ठ ८ गौआं वाला और दूसरा त्रय गौआं वाला ॥ और पराक व्रतभी दो प्रकारकाहै पंच५गौआंवाला और दो गौआंवाला ॥ इसी अर्थका स्पष्टकर्के कहतेहैं तत्रेति तिसविषें ज्ञानतें वध विषें वडे चांद्रायणपराकका निवेशहै। और अज्ञानतें बधविषे अल्प योःक्या छोटे योंकानिवेशहै इसकर्के दोनोंग्रंथोंका अविरोधहै ॥ और जो मासा क्या महीनेंकी अनुवृत्तिविषें ब्रह्मगर्भजी कहतेहैं अंतर इति अंतरकर्केहै जन्म जिनांका ऐसे सूतादियोंके वधविषें चार४ दो२ छे६ महीनें व्रत करें॥ सो एह इच्छातें बहुत अभ्यास विषें जानणा ॥ तिसमें सूत बधकें अभ्यास विषे छे६ महीनेका व्रत करे और वैदेहिककें वध विषे चार ४ महीनेंका व्रत करे और चांडालके वधविषे दो२ महीनेका ब्रत करे और मागधके वधविषे चार४ महीनेका व्रत करे

क्षत्तुरिति क्षत्ता और आयोगवको दो महीनेंका व्रतहै और श्वपाक चांडाल चोर होवें तो इनके व धविषे देवलजीकहतेहैं ॥ चौरइति श्वपाक और चांडाल चोरहोवें तो इनको जेकर ब्राह्मण मारे तद एकदिन रात्रके उपवास व्रतकरके पंचगव्य पान करे तां शुद्धहोताहै। १। इनमें सूतादियोंकी उत्पत्ति इसक्रमसें जानणीक्षत्रिसें ब्राह्मणी कन्यामें सूतजातिवाला होताहै ॥ वैश्यसें क्षत्रिया कन्या में मागध और ब्राह्मणी कन्यामें वैदेह जाति वाला होताहै ॥ और शूद्रसें वैश्य क्षत्रिय ब्राह्मण की कन्यामे क्रमसें आयोगव क्षत्ता अधम चांडाल जातिवाले होतेहैं ॥ अव स्त्रीके वधविषें हारी तजीकहतेहैं षडिति छे ६ वर्ष राजन्यके वधविषें व्रतकरे और प्राकृतब्रह्मचर्य करे प्राकृतब्रह्मचर्य उसको कहतेहै प्रथम जिस प्रकार ब्रह्मचर्य कीताहै तैसाहि करे इसमे एह अभि प्रायहै कि प्रथम ब्रह्मचर्यमे गुरुकुलबास गुरुसेवादि साथ होता है केबल स्त्रीसंभोगका परित्यागमात्र नहीं पीछे व्रतादि विषे जो ब्रह्मचर्यहै सो स्त्रीसंभोगका त्यागमात्र हि है ॥ ॥ और त्रय वर्ष वैश्यके वध- विषें व्रतकरे और डेढ १॥ वर्ष शूद्रके वधविषें व्रत करे ऐसा प्रतिपादन कियाहै ॥ ऐसेहि जो क्ष

क्षत्तुरायोगवस्यचद्वाविति ॥ श्वपाकचांडालयोश्चोरयोर्वधेतु ॥ देवलकः ॥ चौरःश्वपाकश्चांडालोविप्रेणनिहतोयदि अहोरात्रोषितोभूत्वाघृतंप्राश्यवि शुध्यतीति १ अथ स्त्रीवधे हारीतः। षड्वर्षाणिराजन्येप्राकृतंब्रह्मचर्य्यम् त्रीणिवैश्ये सार्द्धंशूद्रे इतिप्रतिपाद्योक्तम्। क्षत्रियवद्ब्राह्मणीषु॥ वैश्यवत् क्षत्रियासु॥ शूद्रवद्वैश्यासु॥ शूद्रार्धमितरासु। शूद्रार्धंनवमासिकम् ॥ इतरासु शूद्रासु॥ एतच्चश्रोत्रियपत्न्यागुणवत्याः कामतोवधविषयम्। मनुः। जीनकार्मुकवस्तावीन्पृथग्दद्याद्विशुद्धये। चतुर्णामपिवर्णानांनारीर्हत्वाऽनवस्थिताः १ अस्यार्थः॥ ब्राह्मणादिवर्णस्त्रियोलोभादुत्कृष्टापकृष्टपुरुषव्य भिचारिणीर्हत्वाब्राह्मणादिःक्रमेणचर्मपुटधनुःछागमेषान् शुद्ध्यर्थंदद्यात् ॥

त्रिके वधविषें प्रायश्चित्त है सो ब्राह्मणीके वध विषे जानणा ॥ और जो वैश्यके वधविषें त्रय वर्ष का व्रतहै सो क्षत्रियाणी के वध विषें जानणा॥ और शूद्रके वधविषें जो व्रत है सो वैश्याणीके वध विषें जानणा॥ और इतरा जो शूद्रा तिसके वध विषें जो शूद्रवधमे प्रायश्चित्त है तिसका अर्द्ध अर्थात् नव ९ महीनेका व्रतकरे ॥ एह चारवर्णकी स्त्रीयोंका प्रायश्चित्तभी वेदपाठीकी जो गुण वाली स्त्री तिसके इच्छाते वध विषें जानणा ॥ जेकर वेदपाठीतें और जगा व्यभिचारवालि आं होण तां मनुजीकहतेहैं ॥ जीनेति जीन कार्मुक वस्त अवी इनांनू पृथक् २ शुद्धिवास्तेचारों वर्णकी व्यभिचारिणी स्त्रीको वधकरके देवे। १। अव इसका अर्थस्पष्टकरके कहतेहैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणादि वर्ण की स्त्री लोभवें उच्चनीचपुरुष साथव्यभिचार करणवालि जो हैं तिसको मारकरके ब्राह्मणादि क्रमकरके चर्मपुट धनुष छागमेष अपनी शुद्धि वास्तेदेवे अर्थात् ब्राह्मण चर्मपुट क्या बोका देवे और क्षत्रि धनुषदेवे और वैश्य छागक्या वकरा देवे और शूद्र मेष क्या भेडा दान करे

अब इसमे याज्ञवल्क्य जीभी कहतेहैं दुर्वृत्ताइति खोटीवृत्ति वालियां जो ब्राह्मण वैश्य क्षत्रि शूद्र की स्त्रियांतिनांका वधकर्के दृतिधनुष वस्तअवि अपनी शुद्धिवास्तेक्रमसेदेवे। १। इसीका अर्थस्पष्ट कर्के कहते हैं ब्राह्मणादियोंकी स्त्री अपनी इच्छासेविचरणवालीहोवे तिसका वधकर्के क्रमतेंदृति क्या जलका आधारचर्मकोश अर्थात् वोका धनुषवकरा मेषइनको शुद्धिवास्ते देवे इसविषें द. क्षिणामे तों सुवर्ण देणा चाहिए तिसका परिमाण अनुबंधादिकी अपेक्षाकर्के कल्पना करणा और अनुवंध नाम हठकर्के कीता जो अपराध तिसकाहै एह प्रातिलोम्यकर्के नीचके वर जो ब्राह्मणादि रहे तिसतें उत्पन्न जो स्त्री तिसके न इच्छातें वधविषें जानणा थोडाप्रायश्चित्त होणेते और इच्छाते वध विषे ब्रह्मगर्भजी कहतेहैं प्रतिलोमेति प्रतिलोम क्या शूद्रादितें उत्पन्न

याज्ञवल्क्योपि ॥ दुर्वृत्ताब्रह्मविट्क्षत्रशूद्रयोषाःप्रमाप्यतु ॥ दृतिधनुर्व स्तमविंक्रमाद्दद्याद्विशुद्धये १ ब्राह्मणादिभार्यादुर्वृत्ताःस्वैरिणीःप्रमाप्य क्रमे णदृतिंजलाधारंचर्मकोशं धनुःकार्मुकं वस्तंछागंअविंमेषंचविशुद्धयेदद्यात् ॥ अत्र दक्षिणात्वेन सुवर्णमपिदेयम् ॥ तत्परिमाणंचानुवन्धाद्यपेक्षयाकल्प्य म्। अनुवंधश्चहठकृतापराधे। इदंचप्रातिलोम्येनांत्यजातिप्रसूतानां ब्राह्म ण्यादीनामकामतोवधविषयम् ॥ कामतस्तुब्रह्मगर्भआह ॥ प्रतिलोमप्र सूतानांस्त्रीणांमासावधिःस्मृतः अंतरप्रभवाणांचसूतादीनांचतुर्द्विषडिति ब्राह्मण्यावधेषण्मासाः ॥ क्षत्रियायाश्चत्वारोवैश्यायाद्वावित्येवं यथार्हतया न्वयः ॥ यदातु वैश्यकर्मणाजीवंतीं व्यापादयति तदा किंचिद्देयं वैश्यके नाकिंचिदितिगौतमस्मरणात् ॥ वैश्यकेन वैश्यकर्मणाजीवंत्यांव्यापादिता यां किंचिदेवदेयम् ॥

करण वालिआं स्त्रीयोंको मासाऽवधि कहीहै अंतर है प्रभव जिनांका अर्थात् प्रतिलोमतासें है जन्म जिनांका ऐसे सूतादियोंकोचार ४ दो २ छे ६ महीनेका व्रत करे ॥ ब्राह्मणीके वध विषें छे ६ महीनेका व्रत करे ॥ और क्षत्रियाणीके वध विषें चार ४ महीनें व्रत करे वैश्याके वध विषें दो २ महीनेंका व्रत करे इस प्रकार यथायोग्यता कर्के अन्वय जानणा ॥ और जेकर ब्राह्मणी वैश्यके कर्म कर्के जीविका करणे वालीहै तिसकों वधकर्के कुछक वस्तु देदेवे एह गौतमका वाक्य है एहि अर्थ स्पष्ट कीताहै वैश्यकेनेति ॥

सो कहतेहैं जलेति जेकर ब्राह्मणीका वध करे तो जलकोश क्या चर्मपात्र तिसकों खूएपर रक्खे और क्षत्रियाणीके वध विषे धनुष देवे और वैश्यकी स्त्रीके वध विषें बकरा देवे १ और शूद्र की स्त्रीके वधविषें भेडा देवे और वेश्या जो गणिका तिसके वधविषें पुरुष जल देवे एह अंगिराका वाक्यहै ।१। अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं ब्राह्मणीके वध विषे चर्मका ज लपात्र खूए विषे परोपकार वास्ते देवे अथवा ब्राह्मणको देवे और वेश्या अर्थात् कंजरीके वध विषे कुछभी न देवे किंतु जलकी प्रपा करे अर्थात् धर्म्मशालाबनाए और जेकर फेर क्षत्रि यादि प्रातिलोम्य क्या शूद्रादिके साथ व्यभिचारवाली ब्राह्मण्यादिस्त्री मारीहै तद गोव ध प्रायश्चित्त यथायोग्य जोडनें योग्यहै ॥ और थोडा व्यभिचार करणें वाली ब्रह्मण्यादिके वध

तद्य ॥ जलकोशंचकूपेचब्राह्मण्याःप्रतिपादयेत् वधेधनुःक्षत्रियायावस्तो वैश्यावधेस्मृतः ॥ १ ॥ शूद्रायामाविकंवेश्यांहत्वादद्याज्जलंनरइत्यंगिरः स्मरणात् ॥ अस्यार्थः । ब्राह्मण्यावधे कोशं चर्म्ममयंजलपात्रं कूपे परोप काराय ब्राह्मणायवादद्यात् वेश्यायांवारयोषायांहतायांनकिंचिद्दद्यात् ॥ यदापुनःक्षत्रियादिःप्रातिलोम्येन व्यभिचारिता ब्राह्मण्याद्या व्यापाद यति तदा गोवधप्रायश्चित्तानि यथार्हंयोज्यानि ॥ ईषद्व्यभिचरितब्राह्म ण्यादिवधे विशेषमाह ॥ यदात्वप्रकर्षेणदुष्टामीषद्व्यभिचारिणीं ब्राह्मण्या दिकां व्यापादयति तदा शूद्रहत्याव्रतंषाण्मासिकंकुर्यात् ॥ यद्वा द्वादशधे नूर्दद्यात् ॥ इदंचषाण्मासिकमकामतोब्राह्मण्याव्यापादने ॥ क्षत्रियावधेतु कामकृते द्रष्टव्यम् ॥ कामतोवैश्यावधेदशधेनूर्दद्यात् ॥ कामतःशूद्रावधेतू पपातकसाधारणप्राप्तंमासंपंचगव्याशनंकार्यम् ॥

विषें विशेष कहतेहैं यदेति जेकर न अतिशय करके दुष्ट अर्थात् थोडा व्यभिचार करणें वाली ब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या शूद्रीहै इनांका वध करे तद जो शूद्र मारणका प्रायश्चित्त छे ६ मही नेंका है सो करे अथवा बारां १२ गौआं दानकरे ॥ एह जो छे ६ महीनेंका व्रत है सो अज्ञानतें ब्राह्मणीके वधविषें जानणा ॥ और क्षत्रियाणी विषे इच्छातें कीता जो वध तिस विषे जानणा ॥ और इच्छाते वैश्याके वध बिषे दश १० गौआं दानकरे ॥ और इच्छातें शूद्रकी स्त्री के वधविषे उपपातकोंके साधारण प्रायश्चित्त (उपपातकशुद्धिःस्यात्) इत्यादिते प्राप्त होया जो महीना दिन पंचगव्य भक्षण करणा तिसकों करे तौ शीघ्रहि शुद्ध होताहै ॥

यदेति जेकर इच्छातें ब्राह्मणीका वध करे तद बारां १२ महीनेका व्रत करे ॥ और क्षत्रियादि की स्त्रीके अज्ञानतें वध करणें विषें त्रय ३ महीनें डेढ १॥ महीना साढें बाई २२॥ दिनका व्रत करे अर्थात् क्षत्रियाणीके वधविषें त्रय ३ महीनेंका व्रत करे ॥ और वैश्यकी स्त्रीके वध विषें डेढ १॥ महीना व्रत करे ॥ और शूद्रकी स्त्रीके वध विषे २२॥ साढे बाई दिनका व्रत करे ॥ जैसे प्रचेता जी कहतेहैं रजस्वला नहि जो ब्राह्मणी तिसके वध करणे विषे वर्षभर का कृच्छ्र व्रत करे अथवा छे ६ महीनेंका व्रत करे ॥ और क्षत्रियाणीके वधविषे छे ६ महीनें अथवा त्रय महीनेंका व्रत करे ॥ और वैश्याणीकावधकरे वो त्रय ३ महीने अथवा डेढ

यदा कामतोब्राह्मणींव्यापादयति तदा द्वादशमासिकम्॥ क्षत्रियादीनांत्व कामतोऽव्यापादने त्रैमासिकं सार्द्धमासं सार्द्धद्वाविंशत्यहानि ॥ यथाहप्र चेताः ॥ अनृतुमतींब्राह्मणींहत्वा कृच्छ्राब्दंषण्मासान्वेति ॥ क्षत्रियांह त्वाषण्मासान्मासत्रयंवेति ॥ वैश्यांहत्वामासत्रयंसार्द्धमासंवेति ॥ शूद्रां हत्वासार्द्धमासंसार्द्धद्वाविंशत्यहानिवेति कामाकामकृतोविकल्पः॥ अका मतस्तुसर्वत्रार्द्धकल्प्यम् ॥ विषयविशेषेव्रतातिरेकमाहांगिराः ॥ आ हिताग्नेर्द्विजाग्र्यस्यहत्वापत्नीमनिन्दिताम् ॥ ब्रह्महत्याव्रतंकुर्य्यादात्रे यीघ्नस्तथैवचेति ॥ १ ॥

१॥ महीना व्रत करे ॥ और शूद्रकी स्त्रीके वध करणें विषें डेढ १॥ महीना अथवा साढे २२॥ बाई दिनका व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ इस जगा इच्छा और न इच्छातें करणे विषे विकल्प जानणा ॥ और जेकर अज्ञानते इनका वध करे तो सब जगा अद्धा व्रत कल्पना करणा योग्यहै ॥ और बिषय विशेष विषे व्रतकी अधिकताको अंगिराजी कहतेहैं आहितेति श्रेष्ठ अग्निहोत्री ब्राह्मणकी पतिव्रता स्त्रीका वध करके ब्रह्महत्याका व्रत करे और तैसेंहि अत्रिगोत्र वाली स्त्री अथवा आत्रेयी नाम रजस्वला स्त्रीका है तिसके वध करके भी ब्रह्महत्याके उचित जो व्रत तिसको करे ॥ १ ॥

उपेति उपपातकोंके प्रायश्चित्त विषयविषे स्त्रीके वधविशेषमे अंगिराजी कहतेहैं अनाहितेति नहीं जो अग्निहोत्री तिनांकी स्त्री तैसेंहि वैश्य शूद्रकी जो स्त्री और शूद्र जातिकी स्त्री इनांके वध· करणें विषें जो गोवधमे व्रत किहाहै सो करे तो शुद्ध होताहै १ अब इसी में पैठीनसीजी विशेष कहतेहैं त्रिवर्षमिति त्रय३वर्ष स्थानासन क्या दिनमें खडा रहे रात्रिमे स्थित होकर्के और रात्रिमे भोजन करे तो स्त्रीवधकरणवाला पुरुष शुद्ध होताहै ॥ अथवा वर्षरोजके प्राजापत्य व्रतकरे ॥ अब शातातपजी और विशेष कहतेहैं षडिति छे ६ महीने स्त्रीके वधविषे प्राजापत्य व्रत करे और अज्ञान पूर्वक करे तो चांद्रायण व्रतकर्के शुद्ध होताहै ॥ अब व्यास जी और प्र कार कहतेहैं अकामतइति अज्ञानतें ब्राह्मणीका वध कर्के जो वैश्य वधमें प्रायश्चित्त है सो

उपपातकप्रायाश्चित्तविषयेस्त्रीवधविशेषेसएवह ॥ अनाहिताग्निपत्नीनां तथाविट्शूद्रयोषितां गोघातकव्रतंकुर्य्याच्छूद्रायांचैवनित्यशः १ पैठीनसिः त्रिवर्षंस्थानासनाभ्यांनक्तमश्नीयात् स्त्रीघातकःशुध्यतिसंवत्सरंप्राजापत्ये नवा । शातातपः ॥ षण्मासान्स्त्रीघातीप्राजापत्यंचरेत् ॥ अमतिपूर्वकेतुचां द्रायणम् ॥ व्यासः ॥ अकामतःस्त्रियंहत्वाब्राह्मणींवैश्यवच्चरेत् ॥ कामतो द्विगुणंप्रोक्तंप्रदुष्टायांनकिंचन १ ॥ पुण्यांल्लोकानवाप्नोतिशूद्रगांयस्तुपात पातयेत् ॥ पतिघ्नींमथगर्भघ्नींताहिसंकरकारिकाः २ ॥ उपपातकप्रकरणे स्त्रीहत्याप्रायश्चित्तंवहुधाप्रपंचितं तत्र कन्याहत्यायाअनिर्वार्य्यत्वं महा पातकांतर्गतत्वंवा वुध्वा नोक्तमतस्तत्स्वरूपाद्युच्यते ॥

करे और इच्छातें वध करे तो एही व्रत दूणा करणा योग्य है और व्यभिचारिणी स्त्रीके वध विषें कुछ दोष नहीं जानणा १ इसी अर्थको पुष्ट करतेहैं पुण्यानिति और ब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या एह शूद्र साथ गमन करण वालियां होण तां इनांका वध करणेंविषें पुरुष पवित्र जो स्वर्गादि लोक तिनको प्राप्त होताहै और पतिके हत करणें वाली स्त्री तैसेंहि गर्भके नाश करणें वाली स्त्री एह वर्णसंकरके उत्पन्न करण वालियां हैं इनांके वधकरणें विषें भी दोष नहीं है ॥ २ ॥ ॥ और उपपातक प्रकरणविषें स्त्रीहत्याका प्रायश्चित्त वहुत प्रकारकर्के कथन कीताहै तिसविषें कन्याहत्याके पापको अनिवार्य्य जाण कर्के अथवा महापातकोंके मध्य विषें जान कर्के नहीं कथन कीता है इसकारणतें अब तिसके स्वरूपादि कथन करिदे हैं

स्त्रीकों दश १० वर्ष तक कन्या जानणा तिसतें एह निश्चित होया कि कुमारियोंकों (अठ ८ वर्ष तक गौरी कहा है) इत्यादि वचनतें देवीके तुल्य होने कर्के तिसके वध विषें स्त्रीवधतें भी अधिक प्रायश्चित्त कल्पना करणा योग्यहै ॥ और जन्म समय विषें ही कन्याके वध विषें ऐसा विचारहै कि पांचवर्ष तक जो बालक है सो गर्भके तुल्य जानणा व्यक्तिमात्र दिखाया है इत्यादि वचन कर्के तिस कन्याकों गर्भ के तुल्य होणेंते तो इसके वध विषें गर्भहत्यातें अधिक प्रायश्चित्त कल्पना करणा चाहिए ॥ क्योंकि तिस को प्रगट होणेतें ॥ इसी प्रकार पुरुष क्या बालकविषें भी व्यवस्था जानणी ॥ और नासिकेत ग्रंथ विषे स्त्री घात करणवाला और गर्भ घात करण वाला पुरुष तैल यंत्र कर्के पीडित होताहै और बालक वृद्ध दुःखी इनके वध करणे वाला पुरुष तैलपाक नरक

स्त्रियादशवर्षावधि कन्यात्वं ततश्च कुमारीणामष्टवर्षाभवेद्गौरीत्यादिवच नाद्देवीतुल्यत्वेन तद्वधे स्त्रीवधतोऽधिकंप्रायश्चित्तंकल्प्यम् ॥ जन्मसमनंत रमेवकन्यावधे सहिगर्भसमोज्ञेयोव्यक्तिमात्रप्रदर्शित इत्यादिना तस्याग र्भसमत्वेपि भ्रूणहत्यातोऽधिकंकल्प्यं व्यक्तीभूतत्वात् ॥ पुरुषेष्वेवंव्यव स्था नासिकेतोपाख्याने स्त्रीघातीगर्भघातीचतैलयंत्रेणपीडयते बालवृद्धा र्तघातीतुतैलपाकेषुपच्यते १ अत्र स्त्रीपदंकुमारीविवाहितासाधारणम् ॥ मासःषष्ठोऽष्टमःपुंसांस्त्रीणांमासश्चपंचमइत्याद्यन्नप्राशनमुहूर्तादौ स्त्रीपदे न कन्याग्रहणत् ॥ मनुः ॥ चतुर्णामपिवर्णानांनारीर्हत्वाऽनवस्थिताः निक्षेपंचापहृत्याथविश्वासात्प्रतिहृत्यच १ अंधतामिस्त्रंयातीतिसंबंधः

विषे पकाईदाहै ॥ १ ॥ इसविषे स्त्रीपद जो है सो कुमारी और विवाहिताका साधारण जानणा इसमे संमति कहतेहैं मासइति छे ६ और अठ ८ मे महीनें विषे पुरुषको और स्त्रियोंकों पंचमे ५ महीनेमे अन्न प्राशन किहाहै इत्यादि जो अन्न प्राशनके मुहूर्तादि तिसविषे स्त्री पद कर्के कन्याका ग्रहण करणे तें ॥ अब इसीमे और प्रकार कर्के मनुजी कहते हैं चतु र्णामिति चारवर्णकी ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य शूद्रकी व्यभिचारिणी स्त्रीका वध कर्के और निक्षे प क्या अमानत द्रव्यको हर कर्के अथवा विश्वासतें धनकों हर कर्के अंधतामिस्त्र नाम नरक को प्राप्त होताहै ॥ १ ॥

तैसेंहि बालकोंके हत करण वाले अंधतामिस्र नाम नरककों जितनें रोम देह पर हैं तिनने वर्ष प्राप्त होतेहैं ॥ इसविषें बालक और कन्याकों हत करणवाला बालघ्न होताहै एह अर्थ जानणा क्योंकि लिंग जो पुल्लिंग स्त्रीलिंग तिसको अविवक्षित होणेतें ॥ अब इसी प्रकार काशीखण्ड विषे कहतेहैं स्त्रीघ्नमिति स्त्रीके हत करण वाला गौके हत करण वाला मित्रके हत करण वाला इनको कूटशाल्मलिवृक्ष विषे चिरकाल ऊपर पाद करके हेठ मुख करके हेदूतो लमका औं एह धर्मराजनें किहाहै १ इसविषें भी स्त्रीपद कन्यापर प्रतीत होताहै क्योंकि चिरं इस पद करके तिस पापके फलकी अधिकताके प्रतिपादन करणेतें ॥ कुछक और भी स्त्रीवध प्रायश्चित्त विषें कहते हैं गुणेति गुणवाली में अधिक प्रायश्चित्त है और निर्गुण में थोडा प्रायश्चित्त और प्रसूत स्त्री में अधिक अप्रसूत मे थोडा और गर्भवाली मे अधिक गर्भ

तथा बालघ्नाश्चांधतामिस्रंयावल्लोमानिदेहिनइति अत्रबालान्बालाश्चघ्नंतीतिबालघ्नाइत्यर्थोऽवसेयः। लिंगस्याविवक्षितत्वात्॥ काशीखण्डे ॥ स्त्रीघ्नंगोघ्नंचमित्रघ्नंकूटशाल्मलिपादपे उल्लंबयचिरंकालमूर्द्धपादमधोमुखम् १ अत्रापि स्त्रीपदंकन्यापरमेव प्रतिभाति चिरमित्यादिना तत्पापफलस्याधिक्यप्रतिपादनात् ॥ किंच ॥ स्त्रीवधप्रायश्चित्ते गुणागुणप्रसूताप्रसूतस गर्भागर्भसजातीयविजातीयब्राह्मण्यादिभिःतारतम्यमुक्तं नत्ववस्थया ॥ तत्र पूर्वोक्तमेवव्यवस्थापकंज्ञायते येतु कन्यादानेकुलधर्म्मोचितद्रव्यव्ययबाहुल्यापेक्षया कन्याबाहुल्यं पापफलमितिलोकोक्त्या दुःखजनकबुद्ध्या स्वकीयदारिद्र्यबुद्ध्या वा कन्यांघातयंति तेषां प्रायश्चित्तशतेनापि निष्कृतिर्नोद्भावनीया

रहित वाली मे थोडा और सजाति स्त्री मे अधिक विजातिमे थोडा और ब्राह्मणी मे अधिक क्षत्रियाणी मे थोडा इनांकर्के न्यूनाधिकता कथन कीतीहै परंतु अवस्था जो बाल वृद्धादि तिस कर्के नहिं किहाहै तिस विषे पूर्वोक्ताहि व्यवस्था जाणीदीहै ॥ और जो पुरुष कन्या दान विषें कुल धर्म्मके उचित द्रव्य खरचके बाहुल्यताकी अपेक्षा कर्के अर्थात् इसमें धन बहुत खरच होताहै और कन्या बहुत होणीयां पापोंकाफल है इस लोकोक्तिकर्के भी दुःख जनक बुद्धि कर्के अथवा अपनी दारिद्र्य बुद्धि कर्के अर्थात् असीं दरिद्री होजावेंगे इस कारणते कन्याका वध करतेहैं तिनां पुरुषों को सो १०० प्रायश्चित्त करणें कर्के भी निष्कृति नाम प्रायश्चित कर्के पापते रहित होणा सो नहिं होसकताहै ॥

क्योंकि तिसको इच्छातें करणेंतें ॥ तिसके अनिवारणत्वको (प्रायश्चित्तैरपैत्येनः) इत्यादि वचन कर्के प्रतिपादन होणेंतें ॥ इस स्मृतिका अर्थ दूसरे प्रकरण विषे वहुत हो चुकाहै उसी जगा ते देखलयणा उससे प्रतीत होवेगा कि एह पापदूरहोणवाला नहि ॥ एह वड़ा आश्चर्यहै कि कन्या घात करण वालेयों में दुर्बुद्धिहै श्येन क्या बाज व्याघ्रादि हिंसा करण वाले भी हैं परंतु अपणी संततिकी रक्षा करतेहैं औरोंका हि वध करतेहैं एह लोक विषे देखीदाहै ॥ इस लोकके और परलोकके वृत्तांत जानण वाले पुरुषोंने इस प्रकारके कुकर्म क्या खोटे कर्म विषे किस वास्ते परिचय करीदाहै । इसी कारणते कन्या घात करण वाले पुरुषोंने प्रायश्चित्त कीताभी है

कामकृतत्वात् तस्याऽनिवार्य्यत्वस्य प्रायश्चित्तैरपैत्येनोयदज्ञानकृतंभवे त् कामतोऽव्यवहार्य्यस्तुवचनादिहजायत इत्यादिनाप्रतिपादितत्वात् अहोकन्याघातकानांदौर्ज्जन्यम् श्येनव्याघ्रादयोहिंस्राअपि स्वापत्यरक्षका लोकेदृष्टाः ऐहिकामुष्मिकज्ञानिभिः पुरुषैरेवंभूते कुकर्म्मणि किमर्थंपरि चीयते ॥ अतएवकन्याघातकैः कृतप्रायश्चित्तैरपि व्यवहारोयाज्ञवल्क्येन निषिद्धः । शरणागतवालस्त्रीहिंसकान्संविशेन्नतु चीर्णव्रतानपिसतः कृ तघ्नसहितानिमान् ॥ १ ॥ इमान् शरणागतादिव्यापादनकारिणः कृत घ्नसहितान् प्रायश्चित्तेन क्षीणपापानपि नसंव्यवहरेदिति वाचनिकोयं प्रतिषेधइति

तथापि तिनके साथ व्यवहार याज्ञवल्क्यजीने निषिद्धकीताहै सो बचन दिखाईदा है शरणेति शरणागत पुरुषकी और वालक और स्त्रीकी हिंसाकरण वालेने प्रायश्चित्त कीताभीहै तोभी इनके साथ व्यवहार न करे और कृतघ्न जो हैं किसेका उपकारनहि मन्नणे वाले तिनके साथभी व्यवहार न करे ॥ १ ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं एह शरणागतादियोंके वध करणे वाला कृतघ्नके साथ सो एह प्रायश्चित्त कर्के पापतें रहित भी है तद भी इनके साथ व्यवहार न करे इस वचन कर्के प्रतिषेध जानणा ॥

अब इसीमें मनु जीभी कहते हैं वालेति वालकों को हत करण वाला और कृतघ्न पुरुष एह धर्म्मतः क्या प्रायश्चित्तादिककें शुद्ध भीहै और इसी प्रकार शरणागत पुरुषको हत करण वाला और स्त्रीके हतकरण वाला जो है इनके साथ व्यवहार न करे एह पूर्वोक्त ही अर्थ जानणा ॥ और एह महापातक प्रकरणके उचितभीहै परंतु स्त्रीहत्या प्रसंगतें इसी जगा स्थापन कीताहै ॥ और हिंसाके प्रायश्चित्त प्रकरण विषे प्रसंगतें प्रकीर्णक पदाभिधेय अनुपपातक प्राणिके वध विषे भी प्रायश्चित्त कहतेहै मनुजी मार्जारेति विल्ला नौल इनको हत करके और पिपीहा डड्डू कुत्ता गोह उल्लू काक इनांको हतकरके जो शूद्र वध करणेनें प्रायश्चित्तहै सो करणायोग्यहै ॥ १ ॥ (स्त्रीशूद्र

मनुरपि वालघ्नांश्चकृतघ्नांश्चविशुद्धानपिधर्म्मतः शरणागतहंतॄंश्चस्त्रीहंतॄंश्चनसंवसेदिति पूर्वोक्तएवार्थःइदंचमहापातकप्रकरणोचितमपिस्त्रीहत्याप्रसंगादत्रैवनिहितम् ॥ हिंसाप्रायश्चित्तप्रकरणे प्रसंगात्प्रकीर्णकपदाभिधेयानुपपातकप्राणिवधेपिप्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ मार्जारनकुलौहत्वाचाषंमंडूकमेवच ॥ श्वगोधोलूककाकांश्चशूद्रहत्याव्रतंचरेत् १ स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधइत्युपपातकप्रायश्चित्तं गोवधव्रतंचांद्रायणंचरेत् नतुशूद्रघ्नेयस्तुषोडशेत्यादिप्रायश्चित्तं पापस्यलघुत्वात् चांद्रायणमप्येतत् कामतोऽभ्यासादिविषयेद्रष्टव्यम् ॥ १ ॥ पयःपिवेत्त्रिरात्रंवायोजनंवाऽध्वनोव्रजेत उपस्पृशेत् स्रवंत्यांवासूक्तंवाब्दैवतंजपेत् ॥ २ ॥

विट्क्षत्रवध) एह उपपातकोंके प्राश्चित्त वास्ते जो पिच्छे गोवधका व्रतचांद्रायण दिखायाहै तिसको करे और शूद्र विषे वारां १२ वर्ष के व्रत का सोलवां १६ हेस्सा प्रायश्चित्त किहाहै सो इसमें नहिकरे क्यों कि पापके थोडा होणेतें ॥ और एह चांद्रायण व्रतभी इछातें अभ्यासादि के विषय विषे जानणा योग्यहै १ इतीकर्के और प्रायश्चित्तकहतेहै पयइति अथवा त्रयरात्रि दुग्ध पान करे अथवा योजन क्या चार ४ कोश मार्ग चले अथवा स्रवंत्यां क्या नदी विषे जल का स्पर्श करे क्या स्नान करे अथवा अपहै देवता जिस सूक्त का तिसका जप करणा योग्यहै ॥ २ ॥ सो सूक्त मंत्र संग्रह प्रकरण विषे देखलैणा ॥

अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहते हैं मार्जारेति विडालादियोंको अज्ञान पूर्वक वध करणे विषे त्रय रात्रि दुग्ध पान करे अथवा मंदाग्नि करके इसमें समर्थ ना होवे तो त्रय ३ रात्रि तक योजन क्या चार ४ कोस मार्ग चले और इसमें समर्थ ना होवे तो त्रय ३ रात्रि नदी में स्नान करे जेकर इसके करणे में भी समर्थ ना होवे तो त्रय ३ रात्रि आपोहिष्ठामयं भुव इत्यादि सूक्तका पाठ करे परंतु इसको और यथाक्रम लघु होणे ते एक ते दूसरे के करणे मे ना समर्थ होवे तो उत्तरोत्तर क्या उसके आगे का ग्रहण करे और इसमें विकल्प नाहि जानणा अभ्रिमिति जेकर ब्राह्मण सर्पको हत करे तो एह पूर्वोक्त व्रत करे और लोह दंड दान करे और

अर्थः ॥ मार्जारादीनामबुद्धिपूर्वकवधेत्रिरात्रंदुग्धंपिवेत् ॥ अथमं दानलत्वादिना न समर्थः त्रिरात्रंप्रतियोजनमध्वनोव्रजेत् ॥ अत्राशक्त स्त्रिरात्रंनद्यांस्नायात् ॥ तत्राप्यक्षमस्त्रिरात्रमापोहिष्ठेत्यादिसूक्तंजपेत् ॥ यथोत्तरंलघुत्वात्पूर्वपूर्वासंभवे उत्तरोत्तरपरिग्रहः । नतुवैकल्पिकः ॥ अभ्रिंकार्ष्णायसींदद्यात्सर्पंहत्वाद्विजोत्तमः ॥ पलालभारकर्दंडसैसकं चैकमाषकम् ॥ ३ ॥ अर्थः ॥ सर्पंहत्वाब्राह्मणाय ताक्ष्णाग्रंलोहदंडंदद्यात् नपुंसकंचहत्वा पलालभारंसीसकंचमाषकंब्राह्मणायदद्यात् ३ ॥ घृतकुं भंवराहेतुतिलद्रोणंतुतित्तिरौ शुकेद्विहायनंवत्संक्रौंचेहत्वात्रिहायनम् ४ ॥

नपुंसक को हतकर्के पराली का भार और एकमासा सिक्का दानकरे ॥ ३ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहते हैं सर्पमिति सर्प को हतकर्के प्रथम प्रायश्चित्त करे और ब्राह्मणके तांई ती क्ष्ण अग्र वाला दक्षिणा वास्ते लोहदंड देवे और नपुंसक पुरुषको हत कर्के प्रथम प्रायश्चित्त कर लेवे फेर पराली का भार मासा सिक्का दान करे ब्राह्मणके तांई देवे ॥ ३ ॥ घृत इति सूकर के हत करणे मेघृतका घट दान करे और तित्तिरके हत करणेमें तिलोंका द्रोणदान करे और तोतेके हत करणेमे दो २ वर्षका वछादेवे और क्रौंच नाम पक्षिको हतकर्के त्रय ३ वर्षका वछा दान करे ॥ ४ ॥

अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहते हैं सूकर इति सूकरके हत कीत्ते होआं घृतका घट दान करे ॥ और तित्तिरि नाम पक्षिके हत कीत्ते होआंचार४ आढक परिमाण तिलदान करे ॥ और तोतेके हत कीत्ते होआं दो २ वर्षका बच्छा दान करे ॥ और क्रौंच नामा पक्षिको हत करके त्रय ३ वर्षका वच्छा दान करे एह एक एकके वध विषयविषे जानणा ॥ और सां इनां सभनांके इकठे वधविषे मार्जार इत्यादि कथन कीत्ताहै सो जानणा ॥ और इच्छातें वा वार वध करणे विषे वसिष्ठ जी कहतेहैं श्वेति कुत्ता विडाल नौल डहूडू सर्प दहर नाम छोटा चूआ अथवा छुछुं

अर्थः सूकरे हते घृतकुंभं तित्तिरिसंज्ञिनि पक्षिणि हते चतुराढकपरिमाणं तिलंदद्यात ॥ शुकेहतेद्विवर्षंवत्सं क्रौंचाख्यंपक्षिणंहत्वात्रिवत्संब्राह्मणायदद्यात् प्रत्येकवधाविषयमिदम्। समुदितवधेतु मार्जारित्याद्युक्तम्। कामतोत्यंताभ्यासेवसिष्ठः।श्वमार्जारनकुलमंडूकसर्प्पदहरमूषकान् हत्वाकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरेत् किंचिद्दद्यादिति । दहरोऽल्पमूषकः छुछुन्दरीवा । हत्वाहंसंवलाकांचवकंवर्हिणमेवच वानरंश्येनभासौचस्पर्शयेद्ब्राह्मणायगाम् ५ स्पर्शयेद्दद्यात् ५ वासोदद्याद्धयंहत्वापंचनीलान्वृषानूगजम् अजमेषावनड्वाहंखरंहत्वैकहायनम् ६

दर चूआ इनांका वध करके बारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रत करे और कुछक दान करे तो शुद्ध होताहै दान इसजगा पूर्वोक्तहि जानणा ॥ और हंस वगुली वगुला मोर वानर वाज भास पक्षि विशेष इनांका वध करके ब्राह्मणके तांई गौदान देवे तो शुद्ध होताहै ५ वास इति घोडे का वध करके वस्त्रदान करे और हस्तिका वध करके पांच ॥ ५ ॥ नीले वैलों का दान करे और वकरा भेडा वैल गर्दभ इनां का वध करके एक वर्ष के वच्छेका दान करे तो शुद्ध होताहै ॥ ६ ॥

और क्रव्याद नाम मृगोंके वधकर्के दुग्धदेणे वाली गौका दान करे और अक्रव्यादोंके वध विषे बच्छी देवे और उष्ट्रका वध कर्के कृष्णल दान करे ॥ ७ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं क्रव्याद नाम कच्चे मांसको भक्षण करणवाले व्याघ्रादि जानणे और अक्रव्याद नाम हरिणादियों का जानणा और कृष्णल नाम सुवर्णकी रत्ति दान करे ॥ ७ ॥ और पीछे कहा जो पंच ५ नीलवृषादिओंका दान तिसमे सामर्थ्य न होणेविषें प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं दानेनेति सर्प्पादियोंके वधका पाप दान कर्के दूर करणेकों समर्थ न होवे तो एक एकके वध विषे ब्राह्मण पापके

क्रव्यादांस्तुमृगाहत्वाधेनुंदद्यात्पयस्विनीम् अक्रव्यादान्वत्सतरीमुष्ट्रंहत्वातुकृष्णलम् ७ क्रव्यादान् आममांसभक्षकान् व्याघ्रादीन् ॥ अक्रव्यादान्हरिणादीन् ॥ कृष्णलंसुवर्णरक्तिकाम् ७ नीलवृषपंचकादिदानाशक्तौप्रायश्चित्तमाहसएव वधंदानेननिर्णेक्तुंसर्प्पादीनामशक्नुवन् एकैकशश्चरेत्कृच्छ्रंद्विजःपापापनुत्तये ८ अर्थः अस्थिप्रभृतीनामभावाद्दानेन सर्वपापानिर्हरणंकर्त्तुमसमर्थोब्राह्मणादिःप्रत्येकवधे कृच्छ्रंप्राथम्यात् प्राजापत्यंद्विजः पापनिर्हरणार्थं चरेत् ॥ सर्प्पादयश्चास्थिकार्ष्णायसींदद्यादित्येवमारभ्यैतत्पर्यंतागृह्यंते ॥ ८ ॥

दूर करणे वास्ते कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ ८ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं अस्थीति अस्थि आदियों का अभाव होणेते दान कर्के संपूर्ण पापके दूर करणेको समर्थ न होवे तो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र एक एकके वध विषे प्रथम तें कृच्छ्र व्रत करे इसीका अर्थ एहहै कि प्रजापत्यव्रतकों ब्राह्मण पाप दूर करणे वास्ते करे ॥ और सर्प्पादियोंके ग्रहण करणे वास्ते अर्थात् कितनें उह सर्प्पादिहैं इसगणना वास्ते (अस्थिकार्ष्णायसींदद्यात्) इनांते आद लेकर इस पर्य्यंत ग्रहण करणा योग्यहै ॥ ८ ॥

अस्थीति अस्थिवाले हजार जीवोंके मारण विषें और अस्थि विना एक गड्डा भर पूर्णके वध विषें शूद्र हत्याका व्रत करे ॥ १ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं अस्थीति अस्थियां वाले जो जीव किरले तों आदलेकर हजार १००० के वध विषें शूद्र वधका प्रायश्चित्त औपदेशिक करे अर्थात् जो शूद्र वधमें प्रायश्चित्त किहाहै सो करे ॥ और अस्थि रहित जो गड्डा भर जीव हैं तिनांके वधविषें भी एही प्रायश्चित करे ॥ ९ ॥ तैसेंहि इसीमें याज्ञवल्क्य जी कहते हैं अस्थीति अस्थिवाले जीवोंके हजार के वध विषें और अस्थि रहितों के गड्डा भरके वध विषे पूर्वोक्त व्रत करे। अस्थि रहित जो जूआं मत् कुणादि इनमे एक

अस्थिमतांतुसत्त्वानांसहस्रस्यप्रमापणे ॥ पूर्णेचानस्यनस्थ्नांतुशूद्रहत्या व्रतंचरेत् ॥ ९ ॥ अस्थिमतांप्राणिनांकृकलासादीनांसहस्रस्यवधेशूद्र वधप्रायाश्चित्तमौपदेशिकंकुर्यात् ॥ अस्थिरहितानांच शकटपरिमितानां वधे तदेवप्रायश्चित्तंकुर्यात् ॥ ९ ॥ तथाचयाज्ञवल्क्यः ॥ अस्थिमतांसहस्रंतुतथानस्थिमतामनइति ॥ अस्थिरहितानांयूकामत्कुणादीनांप्रातिप्राणि प्रायश्चित्तस्यानंत्यात्सामान्येनप्रायश्चित्तमाह ॥ मनुः ॥ किंचिदेवतुविप्रायदद्यादस्थिमतांवधे अनस्थ्नांचैवहिंसायांप्राणायामेनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ किंचिदिति स्वल्पंधान्यहिरण्यादि ॥ तत्रयदाहिरण्यंदीयतेतदापणमात्रम् ॥ अनस्थिवधेत्वेकःप्राणायामः ॥

२ प्राणि वध के प्रायश्चित्त कों वहुत होणेतें सामान्य करके प्राणियों का प्रायश्चित्त मनुजीभी कहते हैं किंचिदिति अस्थि वाले जीवों के वध विषें ब्राह्मणके तांई किंचित् देवें और अस्थि रहित जीवों के मारण विषें एक प्राणायाम करके शुद्ध होताहैं ॥ १ ॥ किंचित् नाम थोडे धान्य सुवर्णादि का जानणा अथवा अष्ट ८ मुठी धान्य का नाम किसीनें किहाहै। तिस विषें जो सुवर्ण दान किहाहै सो पण मात्र जानणा पणाका परिमाण व्रत प्रकरणकी मान परिभाषा विषें देख लेणा ॥ और अस्थि रहित जीवों का वध करे तो एक प्राणायाम करणे करके शुद्ध होताहै ॥

अब प्राणायामका लक्षण कहते हैं सइति व्याहृतियां ओंकार और शिर के साथ गायत्रीका प्राणों को रोक करके त्रय ३ वार पाठ करे सो प्राणायाम किहाहै एह बसिष्ट जी का किहा होया लक्षण ग्रहण करणा ॥ १ ॥ एह छोटे जीवोंके वध बिषें जानणा । और अस्थिरहित वडे जीवोंके वध विषें (कृमिकीटवयोहत्वा) इत्यादि मलिनीकरण पापों विषें (तपया होया ज वोंके काडेका त्रय ३ दिन पान करे) एह मनुजीका कथन कीत्ता होया प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै । अब अपरार्क विषे कहतेहैं शूद्रेति शूद्रहत्याका व्रत ब्रह्महत्याके व्रतकी विधि करके छ ६ महीनेका व्रत करे अथवा दश १० दुग्धदेण वाली गौआं दान करे तो शुद्ध होताहै । और

सच ॥ सव्याहृतिकांसप्रणवांसावित्रींशिरसासह त्रिःपठेदायतप्राणः प्राणायामःसउच्यते इतिवसिष्ठप्रोक्तलक्षणोग्राह्यः ॥ १ ॥ क्षोदिष्ठज न्तुवधएतत् ॥ स्थविष्ठानस्थिजन्तुवधेतु कृमिकीटवयोहत्वेत्यादिमलिनी करणीयेषु तप्तःस्याद्यावकस्त्र्यहमितिमनूक्तंद्रष्टव्यम् । अपरार्के शूद्रहत्या व्रतंषाण्मासिकंब्रह्महव्रतं दशधेनुदानंवा ॥ अनास्थिकानांचकेषांचित्सह स्रसंख्याकानांवधे शूद्रवधप्रायश्चित्तमाहयमः॥ अतऊर्ध्वंक्रिमिकीटपतंग भ्रमरदंशनबकमाक्षिकाणांसहस्रं हत्वा तथा कोकिलशुककपोतकपिंजल कुक्कुटटिट्टिभखर्जूरखंजरीटानां पुरुषभारवधेशूद्रवधप्रायश्चित्तमिति ॥

अस्थिरहित कोईक जो हजारां १००० जीव तिनांके वध करणे विषें शूद्रवधका जो प्रायश्चित्त है तिसको यम जी कथन करते हैं अतइति इसते उपरंत क्रिमि क्या छोटे कीडे और वडे कीडे पतंग भ्रमर वनमाक्षि मच्छर मक्षिआं इनांके हजारोंका वध करके और कोकिला तोता कबूतर कपिंजल क्या चिडा कुकुड टिट्टिभ क्या टिटोहरी खजूर पाक्षि विशेष खंजरीट क्या ममोला इनां के पुरुष भार वध विषें शूद्र हत्या का व्रत करे तो शुद्ध होताहै अर्थात् एह संपूर्ण जीव पुरुष के भार तुल्य होजावें तां इनके वध विषे एह प्रायश्चित्त करे ॥

फल पुष्पादि तें उत्पन्न जो प्राणी तिनों के वध विषे मनुजी कहतेहैं अन्नेति अन्नादितें उत्पन्न जो जीव और रसतें उत्पन्न जो जीव और फल पुष्पतें उत्पन्न जो जीव इनां संपूर्णांके वध विषें घृत प्राशन करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और इसी विषय विषें याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं ॥ फलेति फल पुष्प अन्न रस तें उत्पन्न जो जीव तिनां के वध विषे घृत प्राशन करे ॥ और अस्थि वाले जीवोंके वध विषें कुञ्चक देवे अर्थात् अठ ८ मुठी अन्न देवे और अस्थिर हित जीवों के वध विषें प्राणायाम करे ॥ अब इसी का अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं उंबला दिके फल विषें और महु आदि के पुष्पों विषें और चिरकालके स्थित जो भक्त सत्तु

फलपुष्पादिजातानांप्राणिनांवधे ॥ मनुः ॥ अन्नाद्यजानांसत्त्वानांरसजा नांचसर्वशः फलपुष्पोद्भवानांचघृतप्राशो विशोधनम् १ अस्मिन्विष येच याज्ञवल्क्यः ॥ फलपुष्पान्नरसजसत्त्वघातेघृतप्राशनम् ॥ किंचि त्सास्थिमतांदेयंप्राणायामस्तुनास्थिकेइति ॥ औदुंबरादौफले मधूका दौच कुसुमे चिरस्थितभक्तसक्त्वाद्यन्नेच रसेचगुडादौ यानिसत्त्वानि प्राणि नोजायंते तेषांघातेघृतप्राशनं शुद्धिसाधनम् ॥ इदंचघृतप्राशनंभोजन कार्यएवविधीयते नतु भोजनमपि ॥ प्रायश्चित्तानांतपोरूपत्वात् ॥ तदुक्तमंगिरसा ॥ प्रायोनामतपःप्रोक्तंचित्तंनिश्चयउच्यते ॥ तपोनिश्चय संयुक्तंप्रायश्चित्तंतदुच्यते १ एतच्चानुक्तनिष्कृतिप्राणिवधविषयम् ॥

आदि अन्न और रस गुडादि इनां विषें जो जीव उत्पन्न होतेहैं तिनांके मारण विषें घृतका प्राशन शुद्धि का साधनहै एह जो घृत प्राशन है सो भोजन कार्य विषें हि जानना और कुछ भोजन न करे अर्थात् घृतको भोजनका स्थान जाणें और भोजन भी साथ करे असा नाहि क्योंकि प्रायश्चित्तो कों तप रूप होणें तें ॥ सोई कहाहै अंगिरा जीनें प्रायइति प्राय नाम तपका है और चित्तनाम निश्चयका है तप निश्चय कर्के युक्त प्रायश्चित्त किहाहै ॥ १ ॥ एह प्रायश्चित्त नहिं कथन कीती निष्कृति जिनां जीवां की तिनांके वध विषें जानणा अर्थात् नहिं किहे प्रायश्चित्तवास्ते जो ततुएआदि जीव तिनांके वध विषें जानणा ॥

और जिस विषे प्रायश्चित्त विशेष श्रवण करीदाहै तिस विषे सोइ प्रायश्चित्त होताहै एह मिताक्षरा में किहाहै ॥ जैसे पराशर जी और विशेष कहते हैं हंसेति हंस सारस चक्र क्रौंच कुकुट इनांके वध करण वाला और मोर भेडा इनांका वध कर्के एकभक्त व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और मद्गु टिटीहरी तोता कबूतर आडी बगुला इनाके वध कर्के नक्त भोजन करे तो शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ एकभक्त और नक्तका अर्थ व्रत प्रकरणविषे जानणा ॥ और पिपीहा काक कबूतर सारो तित्तिर इनाके वध करण वाला जलविषे डुब कर्के प्रात काल और सायंकाल मे प्राणायाम कर्के शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ और गिरज बाज पक्षि उल्लू इनांके वध करणेवाला दिनमे फला

यत्रतु प्रायाश्चित्तविशेषःश्रूयते तत्र सएवभवतीतिमिताक्षरा यथाहपराशरः हंससारसचक्राह्वक्रौंचकुक्कुटघातकः ॥ मयूरमेषौहत्वाचएकभक्तेनशुद्ध्यति १ मद्गुंचाटिट्टिभंचैवशुकंपारावतंतथा ॥ आडिकांचबकंहत्वाशुद्ध्येन्नक्तभोजनात् ॥ २ ॥ चापकाककपोतानांसारितित्तिरघातकः ॥ अंतर्जले उभेसंध्येप्राणायामेनशुद्ध्यति ३ गृध्रश्येनविहंगानामुलूकस्यचघातकः अपक्वाशीदिनंतिष्ठेद्द्वौकालौमारुताशनः ॥ ४ ॥ हत्वामूषकमार्जारसर्पाजगरडुंडुभान् ॥ प्रत्येकंभोजयेद्विप्रान् लोहदंडश्चदक्षिणा ५ सेधाकच्छपगोधानांशशशल्यकघातकः ॥ वृंताकफलगुंजाशीअहोरात्रेणशुध्यति ६

दि भक्षण कर्के स्थित रहे और दो काल अर्थात् एकदिन क्योंकि दिनमे भोजनके दोनोंहि काल हैं तिनांमे वायु भक्षण करता होया स्थित रहे ॥ ४ ॥ और चूआ बिल्ला सर्प अजगर जल सर्पइनां में एक २ के वध विषे ब्राह्मणांको भोजन करावे और लोहेका डंडा दक्षिणा देवे तो शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ और सेधा कया जीव विशेष और कच्छू गोह सेहा शल्यक कया सेहेका भेदहै इनांके वध करण वाला और भटेका फल और रत्तियां इनांके भक्षण करणवाला पुरुष एक दिन रात्र के व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ ६ ॥

और मृग रोहिमृग शूकर वकरी वकरा इनांके वधकरणे विषे और भगयाड गिदड रूच्छ तरख इनांके वध करणेवाला एकप्रस्थ तिल दान करे और त्रयइदिन वायुभक्षण करता रहे ८ और हस्ति भेडा घोडा ऊठ गवय इनांके वधविषे दिनरात्रका व्रतकरे और त्रयकाल स्नानकरे ९ और गधा वानर सिंह चित्रा व्याघ्र इनांके वध करणवाला त्रयरात्रि व्रतकर्के और ब्राह्मणांको भोजनदेने कर्के शुद्धहोताहै १० इसी प्रकार और जो स्मृति वचनहैं तिनांकी देश कालादि अपेक्षा कर्के विषय व्यवस्था कल्पना करणी अर्थात् ग्राममृगते वनके मृगभक्षणमें थोडा प्रायश्चित करे और जो भ्रष्टस्थान सें शाकादि उत्पन्न होवें तिनांके भक्षणमें अधिक प्रायश्चित्त करें इसी प्रकार और भी जानणा ॥ अब इसीमें याज्ञवल्क्य जो विशेष कहतेहैं हंसेति हंस वाज

मृगरोहिवराहाणामविकावस्तघातने वृकजंवुकऋक्षाणांतरक्षाणांचघातकः॥ ७॥ तिलप्रस्थंत्वसौदद्याद्वायुभक्षोदिनत्रयम्॥ ८ ॥ गजमेषतुरंगोष्ट्रगवयानांनिपातने प्रायश्चित्तमहोरात्रंत्रिसंध्यंचावगाहनम्॥ ९॥ खरवानरसिंहानांचित्रकव्याघ्रघातकः शुद्धिमेतित्रिरात्रेण ब्राह्मणानांचभोजनैरिति १० एवमन्येषामपि स्मृतिवचसां देशकालाद्यपेक्षया विषयव्यवस्थाकल्पनीया ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ हंसश्येनकपिक्रव्याज्जलस्थलशिखंडिनः भासंहत्वाचदद्याद्गामक्रव्यादांस्तुवत्सिकाम्॥ १ ॥ उरगेष्वायसोदंडःपंडकेत्रपुसीसकम् कोलेघृतघटोदेयउष्ट्रेगुंजाहयेंशुकम्॥ २ ॥ तित्तिरौतु तिलद्रोणंगजादीनामशक्नुवन् दानंदातुंचरेत्कृच्छ्रमेकैकस्यविशुद्धय इति ३

वानर और कच्चे मांसके भक्षण करणवाला शृगालादि और जलस्थलके मोर भास पक्षि इनांका वधकर्के गौदान करे और नाहिं जो कच्चा मांस भक्षण करणवाला मृग तिसके वधमें वच्छीदान करे १ और सर्पके वधविषे लोहेका दंडदेवे और पंडक कोई जीवविशेषहै तिसके वधमें कलिसिका देवे और शूकरके वधविषे घृतका घट देवे और उष्ट्रकेवधमें सुन्नेकी रत्ति देवे घोडेके वधमें वस्त्र देवे २ और त्तित्तरके वधमें द्रोण परिमित तिलदान करे द्रोणका परिमाणपीछे काहाहै और गजादियोंके दानदेणेंकों समर्थ न होवेतो एक २ की शुद्धिवास्ते कृच्छ्रव्रत करे ३ एहसंपूर्ण दान प्रायश्चित्तते पीछे करणे योग्यहैं

इस विषें कृच्छ्र शब्द लक्षणा कर्के क्लेशसाध्य जो तपमात्र तिसविषें जानणा और तप जो है सो वर्ष रोज छे ६ महीनें चार ४ त्रय ३ दो २ एक १ महीनें अथवा चौवी २४ दिन वारां १२ दिन छे ६ दिन त्रय ३ दिन एक दिनरात्र इत्यादि गौत्तम जीका कथन कीता होया जानणा ॥ इस विषें दानके अनुसार कर्के व्रत कल्पना करणी ॥ जैसें हस्तिके वधविषें दो २ महीने यवोंका काडा पान करे और तोतेके वधविषें उपवास व्रत करे इत्यादि और भी जानणे ॥ और पराशरजीके वाक्यका ज्ञान अज्ञानादि कर्के विवरण नागेश जीने कीताहै जैसे स्मृत्यर्थ सार विषें कहते हैं गजेति हस्ति घोडा ऊट गधा श्वेत गवय ऋच्छ महिष भेडेतों

कृच्छ्रशब्दश्चात्र लक्षणया क्लेशसाध्यतपोमात्रेबोध्यः॥ तपश्चसंवत्सरःषण् मासाश्चत्वारस्त्रयोद्वावेकश्चतुर्विंशत्यहोद्वादशाहः षडहस्त्र्यहोहोरात्रइत्या दिगौतमेनोक्तम् ॥ अत्र दानानुसारेणव्रतकल्पना ॥ ततश्च गजवधेद्विमा सिकंयावकाशनं शुकवधेतूपवासइत्यादि ॥ पराशरीयमेवज्ञानाज्ञानादि भिर्विवृतंनागेशेन यथास्मृत्यर्थसारे ॥ गजाश्वोष्ट्रखरगौरगवयऋक्षमाहिष मेषादिष्वमत्याप्रत्येकवधेसार्द्धकृच्छ्रः॥ समस्तवधेचांद्रम् ॥ मत्याप्रत्ये कवधेपिचांद्रम् ॥ मत्यासमस्तवधेत्वावृत्तिश्चांद्रस्य ॥ हरिणसारंगरुरु वराहसिंहगंडकव्याघ्रमहामत्स्यग्राहशिशुमारादिष्वमत्याप्रायेककृच्छ्रः ॥ समस्तवधेकृच्छ्रद्वयम् ॥ मत्याप्रत्येकवधेचैवम् ॥ समस्तवधेचांद्रम् ॥

आद लेकर इनांमेंसें एक २ के अज्ञानतें वधकरणे विषें डेढ कृच्छ्र व्रत करे ॥ और सभनां के वध विषें चांद्रायण व्रतकरे ॥ और इच्छातें एक २ के वध करणे विषेभी चांद्रायणकरे और इच्छातें सभनांकें वध विषे चांद्रयणकी आवृत्ति करे ॥ और हरिण सारंग रुरु क्या मृगविशेष बराह क्या शूकर सिंह गेंडा व्याघ्र वडामच्छ तंतुआ अर शिशुमारतो आदलेकर जो जीवहैं इनां मे अज्ञानतें एक २ के वधविषे कृच्छ्रव्रतकरे ॥ और सभनांके वधविषे दो कृच्छ्र व्रत करे ॥ और इच्छाते एक २ के वध विषे भी एहि व्रत करे ॥ और इच्छाते संपूर्णांके वध विषे चांद्रायण व्रत करें ॥

श्वाति कुत्ता भगयाड वानर गिदड विष्टा भक्षक शूकर इनांमे से एक २ के अज्ञानतें वध विषें त्रय रात्र व्रत करे । और सभनां के वध विषें कृच्छ्र करे ॥ और इच्छातें एक २ के वध विषेंभी कृच्छ्रव्रतकरे ॥ और इच्छातें सभनांके वधविषें दूणा व्रत करे ॥ और विल्ला सर्प अजगर जलसर्प नौल डडू चूत्रा कर्कट सलयां सेही गोह कंडे वाली सेही कच्छू सेहा इनांमे सें अज्ञानतें एक १ के वध विषें कृच्छ्र व्रत का एक पाद व्रत करे ॥ और अज्ञान तें सभनांके वध विषें अर्द्धकृच्छ्र व्रत करे । और इच्छातें एक २ के वधविषें भी एही व्रत करे । और इच्छातें सभनां के वधविषे कृच्छ्र व्रत करे ॥ और हंसादियोंमे सें अज्ञानतें एक २ के वध विषे कृच्छ्र व्रत करे

श्वसृकवानरजंबुकविड्वराहादिष्वमत्याप्रत्येकंत्रिरात्रम् । समस्तवधेकृच्छ्रः मत्याप्रत्येकवधेचैवम् । समस्तवधेद्विगुणम् ॥ मार्जारसर्पाजगरडुंडुभनकुलमंडूकमूषककर्कटशलभसेधागोधाशल्यककूर्मशशादिष्वमत्याप्रत्येकवधेपादकृच्छ्रः । समस्तवधेऽर्धकृच्छ्रः । मत्याप्रत्येकवधेचैवम् । समस्तवधेकृच्छ्रः । हंसादिष्वमत्याप्रत्येकवधेकृच्छ्रः । गृध्रादिषुपादन्यूनः ॥ शुकादिष्वर्धकृच्छ्रः ॥ मत्याद्विगुणम् ॥ टिट्टिभादिषुपादः ॥ समस्तवधेद्विगुणम् । हरिणादिषुहंसादिषुचहंतृबहुत्वेप्रत्येकंत्रिरात्रम् ॥ श्वादिषुगृध्रादिषुचैवम् ॥ गजादिषुप्रतिपुरुषंकृच्छ्रः ॥ मार्जारादिषुशुकादिषुच प्रत्येकमुपवासः ॥ टिट्टिभादिषु प्रतिपुरुषंनक्तम् ॥

और अज्ञानतें गृध्रादिके वधविषे एक पाद ऊन कृच्छ्र व्रत करे ॥ और अज्ञानतें तोते आदिके वधविषे अर्द्ध कृच्छ्रव्रतकरे ॥ और इच्छातें वधविषे दूणा व्रत करे ॥ और टिट्टिभादिके वधविषें एकपाद व्रतकरे ॥ और सभनांके वधविषे दूणा व्रत करे ॥ और हरिणादि अथवा हंसादि विषे वध करणवाले वहुत होवें तो एक २ त्रयरात्रि व्रतकरें ॥ और कुत्ते आदि गृध्रादि विषे ऐसे जानणा ॥ और हस्तिआदिके वधविषे वहुत पुरुष होवें तो एक २ कृच्छ्र व्रत करे ॥ और ऐसेहि विडालादि शुकादिके वध विषे एक २ उपवास व्रत करे ॥ और टिट्टिभादिके वध विषे एक २ पुरुष नक्त व्रत करे

और अगेहि जो रोगकर्के मरणे वाले गजादि तिनांके अज्ञानेंत वधविषे त्रय ३ रात्रि व्रत करे। और इसी प्रकार हरिणादिके वधविषे दो २रात्रि व्रतकरे। और गर्दभादिके वधविषे चौथे काल भोजन करे ॥ और बिडालादिके वधविषे उपवास व्रत करे ॥ और गृध्रादिके वधविषे नक्त व्रत करे ॥ और तोतेआदिके वधविषे एक भक्तव्रत करे ॥ और मृत प्राय जो टिट्टिभादि तिनांके वध बिषे जल में प्राणायाम करे ॥ और नहिं जाणे जो संपूर्ण मृग पक्षि तिनांके वधविषे त्रयरात्रि व्रत करे ॥ एह व्रत देश काल जाति शक्ति गुणादिकी अपेक्षाकर्के गुरु लघु विषयविषे जोडनेयोग्यहै ॥

मृतप्रायेषुगजादिष्वमत्याप्रत्येकवधेत्रिरात्रम् ॥ हरिणादिषुद्विरात्रम् । ख रादिषुचतुर्थकालाहारः॥ मार्जारादिषूपवासः॥ गृध्रादिषुनक्तम्। शुकादिष्वे कभक्तम् ॥ टिट्टिभादिषुजलेप्राणायामः ॥ अविज्ञातसर्वमृगपक्षिषु त्रिरात्र मिति इदंदेशकालजातिशक्तिगुणाद्यपेक्षया गुरुलघुविषयेयोज्यम् इतिस्त्री शूद्रविट्क्षत्रवधप्रायश्चित्तम् । ४६ । ४७ । ४८ । ४९ । ● ॥ अथ गणनायांव्याख्यातस्यनास्तिक्यस्यप्रा० अत्रापिसामान्योपपातकप्राय श्चित्तयोजना जातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयाज्ञेया तत्र नास्तिक्यशब्देन वेद निंदा तेनजीवनंनास्तिक्यमितिव्युत्पत्तिं प्रदर्श्य वसिष्ठस्मरणमाह विज्ञा नेश्वरोयथा ॥

इसका अर्थ पीछे स्पष्टकर्के किहाहै ॥ एह स्त्री शूद्र वैश्य क्षत्रीके वधकाप्रा० समाप्त होया ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥● अब गणना विषें व्याख्यान कीता जो नास्तिक्य तिसका प्रायश्चित्त कह तेहैं अत्रेति इस विषेभी सामान्य जो उपपातकोंकी प्रायश्चित्त योजना (उपपातकशुद्धिःस्यात्) इत्यादि सो जातिशक्त गुणादियांकी अपेक्षा कर्के जानणे योग्यहै ॥ तिस विषे नास्ति क शब्द कर्के वेदकी निंदा जानणी ॥ तिस कर्के जो जीविका सो नास्तिक्य किहाहै इस व्युत्पत्तिकों दिखा कर्के अर्थात् कह कर्के वासिष्ठ जीकी स्मृतिको विज्ञानेश्वर जी कथन करतेहैं जैसें ॥

नास्तिक इति नास्तिक क्या परलोक और ईश्वरको नहिं मानण वाला सो वारां १२ रात्रि का कृच्छ्र व्रत कर्के नास्तिक भावतें विश्राम करे और नास्तिककी कोटियां कर्के अर्थात् नास्तिक भावकीयुक्ति दिखाणे कर्के जो उपजीविका करताहै सो अतिकृच्छ्रव्रत करे॥ एह प्रायश्चित्त एक वार करणें विषें जानणा ॥ और अभ्यासविषे उपपातकों कें प्रायश्चित्त चांद्रायणादि जाणें ॥ और अत्यंत अभिनिवेश कर्के अर्थात् एककोटीतें एक अधिक इसप्रकार वहुत कालके अभ्यास विषे शंखजी कहतेहैं नास्तिकइति नास्तिक और नास्तिकभावकर्के जीविका करणवाला और कृतघ्न और झूठाव्यवहार करणें वाला और झूठा कथन करण वाला एह पंच ५ वर्ष रोज ब्राह्मणके घरविषे भिक्षा करें तद शुद्ध हुंदेहैं ॥ इत्थे संवत्सर एह पद भिक्षा करणेका काल कि

नास्तिकः कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा विरमेन्नास्तिक्यान्नास्तिक्यवृत्तिस्त्व तिकृच्छ्रमिति । सकृद्विषयमेतत् ॥ अभ्यासेतूपपातकप्रायश्चित्तानिचांद्रायणादीनि ॥ अत्यंताभिनिवेशेन वहुकालाभ्यासेतु शंखः ॥ नास्तिकोनास्तिकवृत्तिः कृतघ्नःकूटव्यवहारी मिथ्याभिशंसी इत्येते पंचसंवत्सरं ब्राह्मणगृहे भैक्ष्यंचरेयुरिति ॥ संवत्सरमितिभैक्ष्याचरणकालः ॥ अत्रैवहारीतः नास्तिकोनास्तिक्यवृत्तिरितिप्रक्रम्य पंचतपोभ्रावकाशजलशयनान्यनुतिष्ठेयुरिति ॥ ग्रीष्मवर्षहेमंतेष्विति ॥ नास्तिक्येनवृत्तिर्जीवनंयस्यसः । इतिनास्तिक्यप्रायश्चित्तम् ॥ ५० ॥ ❋

हाहै और किसे नियमवास्ते नहि। अव इसी विषै हारीतजी भी और प्रायश्चित्त कहतेहैं नास्तिक इति नास्तिक और नास्तिकताते जीविका करणवाला इनांतें आद लेकर्के पंचतप अभ्रावकाश जलशयन इनांकों करे । ग्रीष्म वर्षा हेमंत ऋतु विषें अर्थात् ग्रीष्म ऋतु विषे पंचाग्नि तपता रहे और वर्षा ऋतु विषे घरतें वाहराहि रहे अर्थात् संपूर्ण जल अपणें शरीरपरहि वरसावे और हेमंत ऋतु विषे जलमें शयन करेतद शुद्ध होताहै । नास्तिक पदका अर्थ कहतेहैं नेति नास्तिक क्या परलोक और ईश्वर नहिंहै इत्यादि कर्के वृत्ति क्या जीविका जिस पुरुषकी सो कहिए नास्तिक्यवृत्ति एह नास्तिकताका प्रायश्चित्त पूराहोया ॥ ५० ॥ ❋

अब नास्तिकताते उपरंत पठन कीते होए जो शूद्रप्रेष्य १ हीनसख्य २ हीनयोनिनिषेवण ३ अ
नाश्रमवास ४ परपाकरतित्व ५ सामान्यव्रतलोप ६ भार्य्या त्याग ७ एह पीछे व्याख्यान
कीते हैं इनांका प्रायश्चित्त (एतदेवव्रतं कुर्युः) (चांद्रायणमथापिवेति) एह मनु जी का कथन
कीता होया शक्तिजातिगुणादिकी अपेक्षा करके जोडने योग्यहै और इस श्लोकका व्याख्यान
पीछे कीताहै ॥ अब इसी का संबंधि और कथन करतेहैं प्रायश्चित्तमिति ॥ जो ब्राह्मण
कुकर्म्म मे स्थित हुए २ प्रायश्चित्त की इच्छा करें और ब्रह्म करके दूर होवें तिनांको भी एही

अथनास्तिक्यानंतरंपठितानां शूद्रप्रेष्य हीनसख्य हीननयोनिनिषेवणाऽ
नाश्रमेवास परपाकरतित्व सामान्यव्रतलोप भार्य्यात्यागानां प्राग्व्या
ख्यातानां प्रायश्चित्तं एतदेवव्रतंकुर्य्युरुपपातकिनोद्विजाः अवकीर्णिवर्ज्जं
शुद्धयर्थंचांद्रायणमथापिवेतिमनूक्तंशक्त्याद्यपेक्षया योज्यम् श्लोकः प्रा
ग्व्याख्यातः ॥ किंच ॥ प्रायश्चित्तंचिकीर्षन्तिविकर्म्मस्थास्तुयेद्विजाः ब्र
ह्मणाचपरित्यक्तास्तेषामप्येतदादिशेदिति ॥ १ शूद्रादिसेवकानां मनुना
प्रायश्चित्तमुक्तम् तच्च सामान्येनाविकल्पार्थम् ॥ विकर्म्मस्थाः ॥ शूद्रा
दिसेवकाः ॥ ब्रह्मणापरित्यक्तावेदाध्ययनरहिताः ॥ एतत्प्राजापत्यादि
त्रयमित्यर्थः ॥

और शूद्रादियोंकी सेवा करणे वालोंको मनुजीने एही प्राय
पूर्वोक्त प्रायश्चित्तदेणेयोग्यहै ॥ १ ॥ ... उपपातकोंका जो सामान्य
श्चित्त किहाहै सो एह सामान्य साथ विकल्पार्थ जानणा अर्थात्
प्रायश्चित्त ४ हैं तिनके साथ विकल्प वाला जानणा ॥ अब इसी श्लोक का अर्थ स्पष्ट क
रके कहतेहैं विकर्मस्थाइति विकर्मस्था क्या शूद्रादिको सेवा करण वाले और ब्रह्म क्या
वेद तिसथें रहित अर्थात् जिनोंने वेद नहिं पढा होवे तिनां को एह प्राजापत्यादि त्रय
व्रत करणे योग्यहै

और अनाश्रम वासविषें विशेष हारीतजीनें कथन कीताहै अनाश्रमीति आश्रम जो ब्रह्मचर्यादि तिसतें रहित पुरुष प्राजापत्य कृच्छ्र व्रतकर्के फेर आश्रमकों प्राप्तहोवे ॥ १ ॥ और दो वार विषें अर्थात् एक वार प्रायश्चित्तकर्के फेर भी आश्रम ग्रहण न करे तो अतिकृच्छ्रव्रतकरे और तीसरी वार विषें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे इसतें अधिक होजावे तो चांद्रायण व्रत करे परंतु एह प्रायश्चित्त आश्रम वासका संभव नहिथा क्या हो नहि सक्काथा तिस विषें जानणे योग्यहै ॥ और आश्रम वासहो सक्काथा परन्तु कीता नहि तिस ना होणे विषें सामन्य पूर्वोक्त व्रत जानणा ॥ और तिस विषें भी इच्छा और न इच्छातें करणेंमें लघु गुर्वादि व्यवस्था जानणी अर्थात् इच्छातें

अनाश्रमेवासेविशेषोहारीतेन प्रोक्तः। अनाश्रमीसंवत्सरंप्राजापत्यंकृच्छ्रंचरित्वाऽऽश्रममुपेयात् १ द्वितीयेऽतिकृच्छ्रंतृतीयेकृच्छ्रातिकृच्छ्रमतऊर्ध्वं चांद्रायणमिति । एतत्तु आश्रमवासासंभवेवेदितव्यम् । संभवेतु सामान्यप्रायश्चित्तम् । तत्रापि कामाकामतोलघुगुर्वादिका व्यवस्था वोध्या । अत्रायमभिप्रायः ॥ मनुना शूद्रसेवनमपात्रीकरणेविहितं तेनैव शूद्रप्रेष्यताप्यभिप्रेता योगीश्वरोणतु सामीप्यदूरत्वोपाधिभ्यां शूद्रसेवन शूद्रप्रेष्यत्वेपृथगभिप्रेते तयोःशूद्रप्रेष्यत्वमुपपातकमध्येपठितम् ॥ हीनयोनिनिषेवणेपिविशेषःशातातपोक्तोऽवसेयः ॥

करणेंमें वहुत और न इच्छातें करणेमे थोडा प्रायश्चित्त करणा ॥ इस विषे एह अभिप्रायहै की मनु जीने शूद्र सेवाका प्रायश्चित्त अपात्री करण प्रकरण विषे विधान कीताहै तिसीने शूद्र प्रेष्यता भी कथन कीतीहै ॥ और याज्ञवल्क्यजीने सामीप्य दूरत्व उपाधि कर्के शूद्रकी सेवा और शूद्र प्रेष्य एह दोनो पृथक् पृथक् कथन कीतेहैं अर्थात् सामीप्य कर्के शूद्रसेवन और दूरत्व उपाधि कर्के शूद्रप्रेष्यत्व विधान कीताहै तिनां मे से शूद्रप्रेष्यत्व उपपातकोंके मध्य विषे पठित कीताहै ॥ और हीनयोनि निषेवणविषे भी विशेष शातातप जीका किहा होआ जानणा ॥

ब्राह्मेति ब्राह्मण प्रथम क्षत्रीको कन्या विवाहे और ब्राह्मणकी कन्या फेर विवाहे तो बारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रतकर्के तिसनूं अर्थात् ब्राह्मणकी कन्याको विवाहे ॥ और प्रथम वैश्यकी कन्या विवाहे तो तप्तकृच्छ्र व्रतकर्के फेर ब्राह्मणो क्षत्रियाणीको विवाहे ॥ और शूद्रापूर्वीहोवे तो कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रतकर्के ब्राह्मण क्षत्रि वैश्यकी कन्या विवाहे। और जेकर क्षत्री वैश्यापूर्वी होवे तो बारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रतकर्के फेर क्षत्रिकीकन्या विवाहे। और शूद्रापूर्वीहोवे तो अतिकृच्छ्र व्रत कर्के तिसनूं विवाहे ॥ और जेकर वैश्य शूद्रकी कन्या विवाहे तो बारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रतकर्के फेर वैश्यकी कन्या विवाहे॥ इसका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं राजन्यामिति राजवं

ब्राह्मणोराजन्यापूर्वी कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा निविशेत्तांचोपयच्छेत् ॥ वैश्यापूर्वी तप्तकृच्छ्रम्। शूद्रापूर्वीतु कृच्छ्रातिकृच्छ्रम्। राजन्यश्चेद्वैश्यापूर्वी कृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वा निविशेत्तांचोपयच्छेदिति। शूद्रापूर्वीत्वातिकृच्छ्रम् वैश्यश्चेच्छूद्रापूर्वी कृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वा तांचोपयच्छेदिति। राजन्यांराजवंशीयांसवर्णाविवाहात्पूर्वमुद्वहतीति राजन्यापूर्वी एवमग्रेपि तत्र निविशेत्तां चोपयच्छेदिति। कृच्छ्रानुष्ठानोत्तरकालं सवर्णापरिणयनादूर्ध्वं तांच राजन्यादिकामुपयच्छेदित्यर्थः। इदंचाज्ञानविषयम्। ज्ञानतस्तूपपातकसामान्यप्रायश्चित्तंव्यवस्थितमेवद्रष्टव्यम् ॥ साधारणस्त्रीसंभोगश्च हीनस्त्रीनिषेवणमित्युक्तम् ॥ तत्रापि पशुवेश्याभिगमनेप्राजापत्यंविधीयतइति संवर्त्तोक्तमकामतोद्रष्टव्यम् कामतस्तुयमोक्तम्

शको कन्याको ब्राह्मणकी कन्यातें प्रथम विवाहे सो राजन्यापूर्वी कहिए इसीप्रकार अग्गे भी जानणा ॥ कृच्छ्र व्रत के करणें तें उपरंत और अपणे वर्णकी कन्याकें विवाहणेंतें उपरंत क्षत्रियादिकी कन्याको विवाह लेवे एह अर्थ है ॥ एह प्रायश्चित्त अज्ञानतें करणें विषें जानणा ॥ और ज्ञानतें करणें में उपपातकोंके सामान्य प्रायश्चित्त व्यवस्थित हि हैं सो जानणे ॥ और साधारण स्त्री संभोगभी हीनस्त्री निषेवण एह किहाहै तिस विषें भी (पशु और वेश्याके गमन विषें प्राजापत्य व्रत करे) एह संवर्त्तजी का कथन कीता होया अज्ञान तें करणें विषें जानणा ॥ और इच्छातें करणें विषें यम जीका किहा होया जानणा

और वेश्याके गमन विषें जो पाप है तिसनूं ब्राह्मण दूर करें एक वार तपाये होए कुशाके जलको सत्त७ रात्रि पानकर्के १ इसमें ऐसा अभिप्राय है कि उपपातकोंके जो सामान्य प्रायश्चित्त(उपपातकशुद्धिःस्यात्)इत्यादिहैं सो इच्छा और न इच्छा और अभ्यासकी अपेक्षाकर्के जोड़नें योग्यहैं अर्थात् इच्छासें करणें में त्रय महीनें का व्रत करे और न इच्छातें करणें में चांद्रायण व्रत करे और अभ्यास विषे पराक व्रत करे इत्यादि व्यवस्था जानणी ॥ और तिस विषें अभ्यास के होयां २ निमित्त २ प्रति नैमित्तिककी आवृत्ति करणी ॥ इस जगा निमित्त पाप है नैमित्तिक प्रायश्चित्त है इस न्याय कर्के निमित्त प्रति नैमित्तिकानुवृत्तिके प्रसंग विषें लौगाक्षिनें विशेष किहाहे ॥ अभ्यास विषे दिनोंकी वृद्धि करणी अर्थात् एक बार करणें में सत्त ७ रात्रि जल पान किहाहे दो दिन करे तो चौदां १४ रात्रि जल पान करे महीनें तक

वेश्यागमनजंपापंव्यपोहंतिद्विजातयः पीत्वापीत्वासकृत्तप्तंसप्तरात्रंकुशोदकमिति १ उपपातकसामान्यप्रायाश्चित्तानि कामाकामाभ्यासापेक्षया योज्यानि ॥ तत्र सत्यभ्यासेतु प्रतिनिमित्तंनैमित्तिकमावर्त्तनीयमितिन्यायेन प्रतिनिमित्तंनैमित्तिकानुवृत्तौ प्रसक्तायां लौगाक्षिणा विशेषउक्तः ॥ अभ्यासेऽहर्गुणावृद्धिर्मासादर्वाग्विधीयते ततोमासगुणावृद्धिर्यावत्संवत्सरंभवेत् ततःसंवत्सरगुणायावत्पापंसमाचरेदिति १ इदंमतिपूर्वविषयम् ॥ अमतिपूर्वावृत्तौचतुर्विंशतिमते विशेषउक्तः ॥ सकृत्कृतेतुयत्प्रोक्तंत्रिगुणंतत्रिभिर्दिनैः सामात्पंचगुणंप्रोक्तंषण्मासाद्दशधाभवेत् १ संवत्सरात्पंचदशंत्र्यब्दाद्विंशगुणंभवेत् ततोप्येवंप्रकल्प्यंस्यात्शातातपवचोयथेति २ ॥

ऐसें दिनवृद्धि करे और महीनेतें अधिकमे महीनेकी वृद्धि करे वर्ष रोज तक अर्थात् एक महीनें ते अधिक दो महीने पाप करे तो महीनेका व्रत दूणा करे वर्षरोजतक ॥ और वर्ष रोजके अगभी पापकरे तो वर्षकी वृद्धिकरे इसीतरह अगेभी जानणा ॥ १ ॥ एह इच्छा पूर्वककरणेमे जानणा और अज्ञान पूर्वक करणेमेचतुर्विंशतिमत विषे विशेष किहाहै सकृदिति एक वार के पाप विषें जो प्रायश्चित्त किहाहै सो त्रय दिनके पापमे त्रय गुणां अधिक करे और महीना रोज करणे में पंचगुणां अधिक करे और छे६ महीनें करणेमे दशगुणा करे ॥ १ ॥ और वर्ष रोज करणेमे पंद्रां १५ गुणां वृद्धि करे और त्रय वर्ष करणे मे वीस गुणा करे इस प्रकार कल्पना करणे योग्यहै एह शातातप जी कावचनहै २ ॥

जो फेर पहली विधि तें दूसरे विषे दूणा व्रत करे एह निमित्त प्रति आवृत्तिका विधान करणे वाला वचनहै सो महापातकाविषें जानणा ॥ और इस पूर्वोक्त श्लोकका अर्थ स्पष्ट करके पार दार्य्य प्रकरणविषेंभी पीछे किहाहै ॥ एह शूद्र प्रेष्यादिका प्रायश्चित्त समाप्तभया ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ और भार्य्या त्याग ॥ ५७ ॥ * अब खोटे दान के लेणे विषें प्रायश्चित्त कहते हैं तदिति सो दान इकठा कीत्ता जो धन तिसके त्याग पूर्वक है इसमें मनु जी कहतेहैं यदिति जो ब्राह्मण निंदित कर्म करके धनको इकठा करता है सो तिस धनके त्याग करके शुद्ध होताहै अथवा जप तप करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब इसी का अर्थ स्पष्ट करके कहते

यत्पुनर्विधेः प्राथमिकादस्माद्द्वितीयेद्विगुणंचरेदिति प्रतिनिमित्तमावृत्ति विधायकं तन्महापातकविषयम् ॥ पारदार्य्येपिप्रागुक्तमिदम् ॥ इतिशूद्र प्रेष्यादिप्रा० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ भार्य्यात्यागः ॥ ५७ ॥ अथासत्प्रतिग्रहप्रायश्चित्तम् ॥ तच्चोपार्जितधनत्यागपूर्वकमि त्याहमनुः ॥ यद्गर्हितेनार्जयंतिकर्म्मणाब्राह्मणाधनम् ॥ तस्योत्सर्गेणशु द्ध्यंतिजप्येनतपसैवच ॥ १ ॥ गर्हितेनकर्म्मणा निषिद्धदुष्प्रतिग्रहादिना जप्येन तपसा वक्ष्यमाणेनशुद्ध्यंति एतच्च धनत्यागादि बहुमूल्याल्पमू ल्यकरिवस्त्रादिपरिग्रहे तुल्यप्रायश्चित्तार्थम् ॥ अविक्रेयविक्रयादावप्येवम् जपित्वात्रीणिसावित्र्याःसहस्राणिसमाहितः ॥ मासंगोष्ठपयःपीत्वामुच्य तेऽसत्प्रतिग्रहात् ॥ २

हैं निंदित कर्म क्या निषिद्ध जो खोटे दान तिनांते अगे कहणा जो जप अथवा तप तिस करके शुद्ध होतेहैं एह जो धन त्याग किहाहै सो बहुत मुल्ल थोडे मुल्ल वाले हस्ति और वस्त्रादि तिनांके दान लेणे विषे तुल्य प्रायश्चित्त वास्ते जानणा अर्थात् जैसे बहुत मुल्ल वाले हस्तिका त्यागहै तैसेहि थोडे मुल्ल वाले वस्त्रादिका त्यागहै इस कारण ते पृथक् प्रायश्चित्त जानणा ॥ और नहिं जो खरीदणे योग्य वस्तु तिसके खरीदणे विषे भी एही प्रायश्चित्त करणा ॥ और विशेष कहते हैं जपित्वेति समाधान होया २ गायत्रीका त्रय हजार ३००० जप महीना रोज करके और गोशाला विषे दुग्ध पान करके खोटे दान के लेणे ते शुद्ध होताहै ॥ २ ॥

अब इसी का अर्थ स्पष्ट करके कहते हैं त्रीणीति त्रय ३००० हजार गायत्री का जप करे अथवा गोशाला विषें महीना रोज दुग्ध पान करता रहे तो खोटे उक्तवक्ष्यमाण दान लेणेंतें उत्पन्न जो पाप तिसतें मुक्तहोताहै ॥ और शूद्र ते दान लेणें विषें भी एही प्रायश्चित्त जानणा क्योंकि द्रव्यके दोष करके और दाताके दोष करके भी दानको निंदितत्वके अविशेष होणेंते अर्थात् कोई द्रव्यहि निंदितहै जैसे तुलादि और कोई देणेवाला शूद्रादि निंदितहै २ ॥ इसविषें मासं एह पद (कालाध्वनोरत्यंतसंयोगेद्वितीया) इस सूत्र करके द्वितीया विभक्तिका विधान होणे तें त्रयहजार जप प्रतिदिन का व्यापि जाणीदाहै अर्थात् ३००० जप प्रतिदिन करे अब इसी मे याज्ञवल्क्यजी और प्रकार कहतेहैं गोष्ठइति ब्रह्मचर्य्य धारण करके गोशाला विषें वास करता होया महीना रोज दुग्ध पान करे और गायत्रीका जप करता रहे तो खोटे दान

त्रीणिसावित्रीसहस्राणिजपित्वा गोष्ठे वा मासंक्षीराहारोऽसत्प्रतिग्रहजनितात्पापान्मुक्तो भवति॥ शूद्रप्रतिग्रहादावप्येतदेवप्रायश्चित्तं द्रव्यदोषेणच दातृदोषेणापि प्रतिग्रहस्य गर्हितत्वाविशेषादिति २ अत्रमासमिति कालाध्वनोरत्यंतसंयोगेद्वितीयाविधानात् त्रिसहस्रसंख्याकजपस्य प्रतिदिवसव्यापित्वंगम्यते ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ गोष्ठेवसन्ब्रह्मचारीमासमेकंपयोव्रतः गायत्रीजाप्यनिरतःशुध्यतेऽसत्प्रतिग्रहात् ॥ १ ॥ यस्त्वसत्प्रतिग्रहं करोति सब्रह्मचर्ययुक्तो गोष्ठवसन् गायत्रीजपशीलो मासंपयोव्रतेनशुध्यतीति ॥ प्रतिग्रहस्य चासत्त्वं दातुर्जातिकर्मनिबंधनं यथा चांडालादेः पतितादेश्च तथादेशकालनिबंधनंच यथा कुरुक्षेत्रोपरागादौ तथाप्रतिग्राह्य द्रव्यनिबंधनंच यथासुरामेषीमृतशय्योभयतोमुख्यादेः॥ यदातुपतितादेर्मेष्यादिकंगृह्णाति तदेदंगुरुप्रायश्चित्तंद्रष्टव्यम् ॥

करके लेणेंतें उत्पन्न जो पाप तिसतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब इसी का अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं यस्त्विति जो पुरुष खोटा दान ग्रहण करे सो ब्रह्मचर्य करके युक्त गोशाला विषें वास करता होया और गायत्रीका जप करतारहे और महीना रोज दुग्ध पान करतारहे तो शुद्ध होताहै ॥ प्रतीति प्रतिग्रहक्या दानको जो असत्त्वताहै सो दाताकी जाति और कर्मोंके निबंधते जानणी जैसें जातितें चांडालादितें और कर्मतें पतितादितें जो प्रतिग्रहहै तैसेंहि देशकालके निबंधतें जानणा जैसें देश करके कुरुक्षेत्रादि और काल करके ग्रहणादिविषें दान असत्है तैसेंहि प्रतिग्राह्य जो द्रव्य तिसके निबंधतें जानणा जैसें मदिरा भेडी मृत पुरुषकी शय्या और उभयमुखी गौ इत्यादिजानणें ॥ और जेकर पतितादि पुरुषोंतें भेडी आदिका ग्रहण करें तिसमें एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त वडा देखणें योग्य है

क्योंकि दो ५ प्रकारके देखणें करकें निमित्तको बडा होणे तें) और इस विषे जप संख्या पूर्वो कमनुजीकी कथा कीनी होई जानणी ॥ और जे कर न्याय युक्त ब्राह्मणादि होवे तिसके पासतें निषिद्ध मेषादिका ग्रहणकरें और पतितादियोंतें अनिषिद्ध जो भूम्यादि तिसका ग्रहण करे तिस में षट्त्रिंशन्मत विषें प्रायश्चित कहते हैं पवित्र इति पवित्रेष्टिनाम यज्ञ करणे करकें संपूर्ण जो घोरदान तिनांके लेणेंतें शुद्ध होतेहैं और चांद्रायण मृगारेष्टि मित्रविंदा अथवा गायत्री के लक्ष जप करकें खोटे दानके लेणेंतें शुद्ध होतेहैं १ एह पवित्रेष्ट्यादि तीनों यज्ञ विशेष जानणे ॥ अब राजाके दान लेणें विषे वृद्ध हारितजी कहतेहैं राज्ञइति राजाका दान लेकरकें महीना रो ज जल विषें वास करे और षष्टकाल विषें दुग्ध पान करता रहे तो पूर्ण महीने करकें शुद्ध हो

व्यतिक्रमद्वयदर्शनेन निमित्तस्यगुरुत्वात्) जपसंख्यातु मानवीयावोध्या ॥ यदान्याय्यवर्त्तिब्राह्मणादेः सकाशान्निषिद्धंमेषादिकंगृण्हाति पतिता देर्वाऽनिषिद्धंभूम्यादिकंगृण्हाति तदाषट्त्रिंशन्मतेप्रा० पवित्रेष्ट्याविशु ध्यंतिसर्वेघोराःप्रतिग्रहाः। ऐन्दवेनमृगारेष्ट्याकदाचिन्मित्रविन्दया ॥ देव्या लक्षजपेनैवशुध्यंतेदुष्प्रतिग्रहात् ॥ १ ॥ राजप्रतिग्रहेवृद्धहारीतः। राज्ञः प्रतिग्रहंकृत्वामासमप्सुसदावसेत् षष्ठकालेपयोभक्षःपूर्णेमासेविशुध्यति ॥ १ ॥ तर्पयित्वाद्विजान्कामैः सततंनियतव्रत इति ॥ राज्ञोऽसच्छास्त्रा भिनिविष्टस्य ॥ अत्रशूलपाणिः ॥ राजपदमत्रोच्छास्त्रवर्त्तिनृपतिपरम् ॥ शूद्रनृपतिपरंच ॥ उभयप्रतिग्रहस्यैवमनुनानिषिद्धत्वात् ॥ यथाहमनुः ॥ नराज्ञःप्रतिगृण्हीयादराजन्यप्रसूतितः ॥ तथा ॥ योराज्ञः प्रतिगृण्हा तलुब्धस्योच्छास्त्रवर्त्तिनः सपर्यायेणयातीमान्नरकानेकविंशतिम् १ न्या य्यवर्त्तिक्षत्रियनृपतेः प्रतिग्रहस्य देवलेनाभ्यनुज्ञातत्वात् ॥

और षष्ट कालका अर्थ अग्गे कहेंगे ॥ और ब्राह्मणांको प्रसन्न करकें व्रतवाला होया २ नि रंतरहि शुद्ध होताहै १ इसमे राजा खोटे शास्त्र जानण वाला अर्थात् नास्तिक जानणा ॥ अब इसी मे शूलपाणि जी कहते हैं राजेति इसमे राजपद असच्छास्त्र जो वौद्धादि तिनके जा नणें वाले राजा पर है अथवा शूद्र राजा पर है इन दोनोंके दानको मनुजी ने निषिद्ध किताहै ॥ जैसें मनुजी कहतेहैं नेति जो क्षत्रीतें नहिं उत्पन्न राजा तिसका दान ग्रहण नाहिं करणा तैसें हि और कहते हैं यइति सो लोभी अथवा खोटे शास्त्र जानण वाले राजाका दान ग्रहण करताहै सो दुरुर क्रम करकें इक्कीस २१ नरकोंको प्राप्तहोताहै १ और न्याय युक्त क्षत्रि राजाके दान को देवल जी करकें अभ्यनुज्ञात होणेतें अर्थात् तिसने आज्ञा दिची है

जैसे देवलजी कहते हैं धर्मज्ञ इति धर्मके जानणा वाला और श्रेष्ठ और खोटे पुरुषों को दंड देणे वाला ऐसा राजा तीक्ष्णभी होवे तिसका धन पवित्रहै सो ग्रहण करणे योग्यहै १ इसमे युक्ति कहतेहैं आढ्यानामिति धनवानको वहुत भारवाला होणेते अथवा महात्मा पुरुषों को देणेयोग्य होणेतें राजा लोकोंका दान श्रेष्ठ किहाहै औरांविषे ब्राह्मणोंके बिना और किसीकों दान नहिं ग्रहण करणेयोग्यहै २ राज्ञां एह पद क्षत्रि राजा परहै इसको मुख्यहोणेतें अथवा ब्राह्मणके समीप होणेतें इसविषे पंद्रां १५ गौआं द्रव्यत्याग पूर्वक देणेयोग्यहैं ॥ और प्रथम दो २ दिन उपवासतें उपरंत तीसरे दिनमे जो सायंकालहै तिसका नाम षष्टकाल किहाहै तिसविषें देह धारणके उचित दुग्धपान करता रहे ॥ परंतु एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त अभ्यासविषे देखणे योग्यहै ॥ अथवा पतिता

यथाहदेवलः ॥ धर्म्मज्ञस्यकृतज्ञस्यरक्षार्थंशासतोऽशुचीन् ॥ मेध्यमेवधनंप्राहुस्तीक्ष्णस्यापिमहीपतेः १ आढ्यानांभूरिभाराच्चदेयत्वाच्चमहात्मनाम् ॥ श्रेयान्प्रतिग्रहोराज्ञांनान्येषांब्राह्मणादृते २ राज्ञामिति क्षत्रियनृपतिपरम् ॥ अस्यैवमुख्यत्वात् ॥ ब्राह्मणसन्निधानाच्च अत्र पंचदशत्वेनवोद्रव्यत्यागपूर्वकंदातव्याः ॥ दिनद्वयोपवासानंतरंतृतीयेह्निसायंकालः षष्ठकालः ॥ तत्रदेहधारणोचितक्षीरपायी ॥ एतच्चाभ्यासेद्रष्टव्यम् ॥ पतितादेः कुरुक्षेत्रोपरागादौ कृष्णाजिनादिप्रतिग्रहेवाप्रतिग्राह्यद्रव्याल्पत्वेप्रायश्चित्ताल्पत्वमाह हारीतः ॥ मणिवासोगवादीनांप्रतिग्रहणेसावित्र्यष्टसहस्रंजपेदिति ॥ षट्त्रिंशन्मतेपि ॥ भिक्षामात्रेगृहीतेऽतिपुण्यमंत्रमुदीरयेत् ॥ प्रतिग्रहेषुसर्वेषुषष्ठमंशंप्रकल्पयेदिति १ अतिपुण्यमंत्रोगायत्री । प्रकल्पयेद्ब्राह्मणेभ्योदद्यादित्यर्थः । तथा जपहोमादिकंकुर्याद्गज्ञात्वायज्ञप्रतिग्रहो पबित्रेष्ट्याविशुद्ध्यंतिमुच्यंतेऽसत्प्रतिग्रहात् १

दितें और कुरुक्षेत्र ग्रहणादि विषें काले चर्मादि के दान लेणें विषे जानणा योग्य है ॥ और दान लेआ जो द्रव्य सो थोडा होवे तो तिसमे थोडाहि प्रायश्चित्त कहतेहैं हारीतजी मणीति मणि वस्त्र गवादियोंके दान लेणे विषें अष्ट ८००० हजार गायत्री का जपकरें तो शुद्ध होताहै इसीमे षट्त्रिंशन्मत वालेभी कहते हैं भिक्षेति भिक्षामात्रके ग्रहण विषेंभी प्रतिग्रहका दोषहै तिसमें अतिपुण्य जो गायत्री तिसका पाठ करणे ते शुद्ध होता है और संपूर्ण प्रतिग्रह विषें छे ६ मां हिसा ब्राह्मण को देदेवे तो शुद्ध होताहै १ तैसेंहि और कहतेहैं जपेति यज्ञ और प्रतिग्रह को जाण करके जपहोमादि करे तो शुद्ध होताहै और पवित्रेष्टि नाम यज्ञ करके शुद्धहोते हैं ॥ और खोटे दान के लेणेतें भी मुक्त होते हैं १

अब इसीमें और भी कहतेहैं पवित्रइति पवित्रइष्टिकर्के अथवा गगिष्टि कर्के अथवा मित्र विंदा कर्के अथवा गायत्रीके लक्ष जप करणे कर्के खोटे दानके लेणें तें शुद्ध होताहै १ अब और प्रकार उशनाजी कहतेहैं पतितादिति पतित पुरुषतें ब्राह्मणद्रव्यग्रहण करे अथवा जेकरभक्षण करे तो तिस द्रव्य का त्याग कर्के अतिकृच्छ्रव्रत करे तो शुद्ध होताहै १ अब कश्यपजी विशेष कहतेहैं असदिति पूर्वोक्त खोटे दानके लेणें विषें महीना रोज गोशालाविषे वास करता होया दुग्धपान करता रहे अथवा चांद्रायणव्रत करे अथवा गोहत्या का व्रत जोत्रय महीनेंकाहै सो करे १ एह पूर्वोक्त व्रत अभ्यास विषय विषें जानणा ॥ अथवा इच्छातें इक वार करणें विषें जानणा ॥ हारीत जो कथन करतेहैं मणीति माणि वस्त्र गवादिके प्रतिग्रह विषें गायत्रीका एक १००० हजार जप करे माणि इसजगा थोडे मुल्लवाली जानणी मध्यम द्रव्यके

अन्यत्र ॥ पवित्रेष्ट्यागरिष्ट्यावाकदाचिन्मित्रविंदया देव्यालक्षजपेनैवमुच्यतेदुष्प्रतिग्रहात् १ देवीश्रीगायत्री ॥ उशनाः ॥ पतिताद्द्रव्यमादत्तेभुक्तेचब्राह्मणोयदि कृत्वातस्यसमुत्सर्गमतिकृच्छ्रंचरेद्द्विजः १ कश्यपः । असत्प्रतिग्रहेमासंवसन्गोष्ठेपयःपिवेत् चांद्रायणंवागोघ्नस्ययथोक्तंव्रतमाचरेत् १ गोघ्नव्रतंत्रैमासिकम् ॥ अभ्यासविषयमिदम् ॥ कामकृतसकृद्विषयंवा हारीतः ॥ मणिवासोगवादीनांप्रतिग्रहे सावित्र्याःसहस्रं जपेत् ॥ पंचमध्यमे दशाधमे द्वादशरात्रंपयोव्रतःशतसहस्रमतिप्रतिग्रहेष्विति । उत्तमप्रतिग्रहेसहस्रम् ॥ मध्यमप्रतिग्रहेपंचसहस्राणिजपेत् ॥ प्रतिग्राह्यद्रव्यमध्यमत्वेन प्रतिग्रहस्य मध्यमत्वम् ॥ एवमधमप्रतिग्रहे दशसहस्राणि

प्रतिग्रह विषें पंच ५००० हजार गायत्री का जप करे ॥ और अधम दानके लेणें विषें दश १०००० हजार गायत्री का जप करे ॥ और बारां १२ रात्रि दुग्ध पानकरे ॥ और अतिदान क्या इसी अधमके वहुत वार लेणें विषें सौ १००००० हजार अर्थात् लक्ष गायत्री का जप करे ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं उत्तमेति उत्तम दान लेणे विषे एक १००० हजार गायत्री का जप करे ॥ और मध्यम दान लेणे विषे पंच ५००० हजार जप करे ॥ अब मध्यमत्वादिका विवेक करतेहैं प्रतीति प्रतिग्रह करणे योग्य जो द्रव्य सो मध्यम होवे तो प्रतिग्रहको भी मध्यमत्व है इस प्रकार अधम द्रव्यके प्रतिग्रह विषे दश १०००० हजार गायत्रीका जप करे इनका भेद अगे आवेगा ॥

अत्र इसीमे देवल जी कथन करते हैं नवेति नव दान उत्तम हैं और चार मध्यम हैं और संपूर्ण शेष रहे दान अधम कहे हैं एह बुद्धिमानों नें त्रय ३ प्रकारके दान कहे हैं ॥ १ ॥ अन्नमिति अन्न दधि मखीर रक्षा करणी गो भूमि सुवर्ण मार्गका रस्तावताना हस्ति एह नव १ उत्तम दान जानणें उत्तम द्रव्य के होणे तें ॥ २ ॥ और विद्यान्न क्या विद्या ग्रहण करकें पिछे दिता जो अन्न और वस्त्र आवास क्या घर गोधन एह चार मध्यम दान हैं मध्यम द्रव्यके होणें तें १ उपेति जोडा भगूंडा रथ छतडी पात्र आसन दीपक लकडो फलादि एह संपूर्ण चरम क्या अधम हैं परन्तु बहुत वर लेता रहे तद ४ और ॥ अर्थ जातोंको बहुत होणेंते इनके नामकी संख्या नाहिं इच्छा करीदो है अर्थात् और वस्तु बहुत हैं इस वास्ते गिणनेमे नहिं आते हैं

अत्रदेवलः ॥ नवह्युत्तमानिचत्वारिमध्यमानिविधानतः अधमानीतिशेषाणित्रिविधत्वमिदंविदुः ॥ १ ॥ अन्नंदधिमधुत्राणंगोभूरुक्माध्वहस्तिनः ॥ एतान्युतमदानानिउत्तमद्रव्यमानतः २ विद्यान्नाच्छादनावासाः परितोगोधनानिच ॥ दानानिमध्यमानीतिमध्यमद्रव्यमानतः ३ विद्यान्नंविद्याग्रहणेनदत्तमन्नम् । आवासोगृहम् । उपानत्प्रेंखयानानिछत्रपात्रासनानिच ॥ दीपकाष्ठफलादीनिचरमंबहुवार्षिकम् ४ बहुत्वादर्थजातानांसंख्योद्देशेषुनेष्यते अधमान्यवशिष्टानिसर्वदानान्यतोविदुरितिछांदोग्येविहितम् ॥ तथा त्रीण्याहुरतिदानानिगावःपृथ्वीसरस्वतीत्यादिप्रपंचोदानग्रंथेऽवसेयः ॥ अत्रगावइतिवहुवचनमाविवक्षितम् ॥ तेन तदवहुत्वमुत्तमःप्रतिग्रहः। सुमंतुः शूद्रयाजकःसर्वद्रव्यपरित्यागात्पूतोभवति

इस कारणते शेष रहे जो संपूर्ण दान सो अधम जानणे ५ एह छांदोग्य विषे विधान कीताहै इसमें (संख्याशेषेषुनेष्यते) इह पाठ भी है ॥ तैसें हि और कथन करते हैं त्रीणीति त्रय ३ अतिदान कहे हैं गौ पृथ्वी सरस्वती क्या विद्या इत्यादि प्रपंच दान ग्रंथ विषे जानणे योग्यहै इस विषे गाव एह जो बहुवचन है सो अविवक्षित जानणा अर्थात् इच्छातें नहिं किया हो या जानणा तिस कारण करकें एक भी गो दान होवे सो उत्तम दान जानणा ॥ अब सुमंतु जी और प्रकार कथन करते हैं शूद्रेति शूद्रको यज्ञ करावाणे वाला पुरुष संपूर्ण द्रव्य जो शूद्र ते लेआ है तिसका त्याग कर देवे तो शुद्ध होजाताहै ॥

अब इसोमें बौधायनजी और प्रकारकर्के कहतेहैं वव्हिति बहुतोंके लेणे योग्य जो दान तिसको एकहि लेलेवे ॥ और जिसका अन्न नहिं भक्षण करणा तिसका अन्न भक्षणकरलेवे ॥ और जिस को यज्ञ नाहिं कर वाणा तिसको यज्ञकरावे ॥ और जिसका दान लेणेयोग्यहै तिसका दान न हिं लेवे ॥ एह संपूर्ण तरत्समंदी नाम ऋचाका जप करें इत्यादि और भी स्मृतियां यथार्थ कर्के जोडने योग्यहैं ॥ अब कुछक और प्रकार कहतेहैं किंचेति अभक्ष्य भक्षण प्रकरण विषे जो अ भोज्यान्न कहेहैं सो अप्रतिग्राह्यन्नभी कहेहैं तिनका अन्न नाहिं ग्रहण करणेयोग्य परंतु तिस अन्न के दान लेणेविषे भी प्रायश्चित्त सोई क्या जो अभोज्यान्नके भक्षणमे प्रायश्चित्तहै सो इसमे भी

वौधायनः । वहुप्रतिग्राह्यस्यवाप्रतिगृह्य अनशनीयस्यवान्नमशित्वाऽया न्ययाजयित्वा प्रतिग्राह्यस्यवाअप्रतिगृह्य तरत्समंदीयंजपेदित्यादिस्मृत्यं तराणि यथायथंयोज्यानि ॥ किन्चाभक्ष्यभक्षणे येऽभोज्यान्नाः प्रोक्ता स्तेऽप्रतिग्राह्यान्नाअपि तदन्नप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तंतदेवावगंतव्यम् ॥ अत्रे दंविचार्य्यम् ॥ मनुनानिंदितेभ्योधनादानमित्यपात्रीकरणेपठितम् ॥ अ न्यैस्तु । प्रतिग्रहस्याऽसत्त्वंदेशकालकर्म्मादिनिवंधनंवुद्ध्वोपपातकमध्येप ठितम् ॥ तत्रविकल्पएवशरणम् । अत्रवहुवक्तव्यंपृथक्संगृहीतेऽसत्प्रतिग्र हप्रकरणेद्रष्टव्यम् ॥ इत्यसत्प्रतिग्रहप्रायश्चित्तम् ॥ ५८ ॥ * ॥

इसमे एह विचार करणेयोग्यहै क्योंकि मनु जीने निंदित पुरुषोंते धन का ग्रहण करणा एह अपात्री करण विषे विधान कीताहै ॥ औरोंके मत विषे कहतेहैं प्रतीति प्रतिग्रहको जो असत्त्व है सो देश काल कर्म्मादिके निवंधको जाण कर्के उपपातकोंके मध्य विषे पडयाहै तिस विषेविकल्प हि जानणा अर्थात् चाहे अपात्रीकरणमे जाणो चाहे उपपातकों मे जाणों ॥ इसविषे वहुत जो कहणाहै सो पृथक् संग्रह कीता जो असत्प्रतिग्रह प्रकरण तिसविषे देखणे योग्यहै ॥ एह असत्प्रतिग्रह का प्रायश्चित्त समाप्त भयाहै ॥ ५८ ॥ * ॥

अब मिथ्याभिशंसि और मिथ्याभिशस्तका प्रायश्चिच कहतेहैं इनका लक्षणपीछे किहाहै॥ इसमें याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं मिथ्येति मिथ्याभिशंसिकों मिथ्याभिशस्तसें दूणा दोष है और यथार्थवका को तुल्य दोषहै और मिथ्याभिशस्त के दोषकों मिथ्याभिशंसि ग्रहण करताहै १ अब इसी श्लोक का अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं यइति जो कोई पुरुष अन्तः करण सें ईर्षा करण वाला है सो महापापीहै ऐसे दूसरे को जूठ कहताहै तिसको जिसकों अभिशाप कियाहै तिसतें दूणा प्रायश्चित्त होताहै ॥ अब कुछक और कहतेहैं यइति जिस पुरुषमे दोष विद्यमानहै परन्तु दूसरे कर्के नहिं जाणयाहै तिस दोषकों लोकोंके सन्मुख प्रकट करताहै तिसको पातकि पु

अथमिथ्याभिशंसिमिथ्याभिशस्तयोः प्रा० ॥ योगीश्वरः ॥ मिथ्याभिशंसिनोदोषोद्विः समोभूतवादिनः ॥ मिथ्याभिशस्तदोषंचसमादत्तेमृषावदन् १ यःकश्चिन्मात्सर्य्यकलुषितान्तः करणोऽसौमहापापीति परंमिथ्याभिशपति तस्य यस्याभिशापस्तद्द्विगुणं प्रायश्चित्तं भवति ॥ किंच ॥ यस्तु विद्यमानमेवदोषं परैरज्ञातं लोकसमक्षं प्रकाशयति तस्य पातकिदोषसमदोषभाक्त्वम् ॥ भूतंतत्त्वार्थंवदतीति भूतवादी तस्य ॥ भूतंतत्त्वार्थमुद्दिष्टंप्रमादाभिहितंछलमिति नारदस्मरणात् । इदमेवाहापस्तंवः। दोषंबुद्ध्वानपूर्वः परेभ्यः समाख्यातास्यात् परिहरेच्चैनंधर्म्मेष्विति ॥ किंच मिथ्याभिशंसिनोनकेवलं प्रायश्चित्तद्वैगुण्यं किंतु अभिशस्तस्य यत्किंचिद्दुरितजातं तद्भाक्त्वमपीत्याह मिथ्याभिशस्तदोषमित्यादि

रुषके तुल्यदोषहै ॥ और भूतक्या तत्त्वार्थको जो कहै सो भूतवादी किहाहै तिसको ॥ भूत नाम तत्त्वार्थका है और प्रमादतें जो कथन कियाहै सो छल किहाहै एह नारद स्मृतिमें किहाहै॥ अब इसीकों आपस्तंव जी कहतेहैं ॥ दोषको जाण कर्के प्रथम आप न कहे जब तक दूसरा कथन न करे जेकर कहे तो धर्म्मोंके विषें इसको सागदेवे ॥ अब कुछक और कथन करते हैं मिथ्येति मिथ्याभिशंसिकों केवल दूणा ही प्रायश्चित्त नहिंहै परन्तु अभिशस्त कों जो कुछ पापोंका समूहहै सो भी मिथ्याभिशंसिको प्राप्त होताहै इस कर्के किहाहै मिथ्याभिशस्तदोषम् इत्यादि

अत्रेति इसमिथ्याभि शंसीके विषय विषें पापकी द्विगुणता यथार्थ नहिहै परन्तु अर्थवादहिहै क्योंकि थोडे प्रायश्चित्तके अगेकहणेंकर्के निमित्त जो पापतिसकोभी लघुत्व प्रतीतहोणेंतें । अथवा किएहोएका नाश और न किएहोएकी प्राप्ति होणेतें भी थोडा प्रतीत हुंदाहै ॥ जिसने कीताहै तिसको दंड न होआ और जिसने नाहि कीता तिसको दंड होया ॥ अब कुछक और कहतेहैं उपेति उपपातकोंकी गणना विषे अभिशंसि और अभिशस्त नहिं पडेहैं ब्रह्मचारिको गुरुके प्रातिकूल्याचरणमे अर्थात् गुरुको दुःख देणेके प्रसंग विषे एहदोनो जाणेहें तिस कारणते भी निमित्त थोडा प्रतीतहोताहै तिसका प्रायश्चित्तकहतेहैं महेति महापाप और उपपापकर्के जो दूसरेको मिथ्या कहे सो जलपान करता होया और जप करता होया इन्द्रियोंको रोक कर्के महीनारोज स्थितरहे १ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं महेति महापाप जो ब्रह्महत्यादि उपपाप जो गोवधादि इनां कर्के झूठही दूसरे को कहे सो अभिशंसी महीना दिन जलपान करे अथवा जपकरे ॥ जप जो है सो शुद्धवती नाम ऋचाकर्के करे । तैसेहि वसिष्टजी कहतेहैं ब्राह्मणमिति ब्राह्मणको झूठ कहता है अथवा पतित करण वाले जो उपपातक गोवधादि तिस कर्के अभिशंसन करे सो महीना रोज जलपान करे और शुद्धवती ऋचा कर्के स्नान करे अथवा अश्व मेध नाम यज्ञविषें जावे ॥ एह प्रायश्चित्त जेकर महापातकोंमेंसे एकवार पाप लगावे तो जानणा और उपपातकोंमेंसें वहुत वार पापलगाया होवे तिसविषें प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै इस अभिप्राय कर्के एह अपरार्क में कथन कीता है ॥

अत्रहि पापद्वैगुण्यमात्रं न विवक्षितं किन्त्वर्थवादएव लघुप्रायश्चित्तस्यवक्ष्यमाणत्वेन निमित्तस्यापि लघुत्वभानात् ॥ कृतनाशाकृताभ्यागमप्रसंगाच्च ॥ किञ्च उपपातकगणनायामभिशंस्यभिशस्तौ न पठितौ ब्रह्मचारिणोगुरुप्रातिकूल्याचरणप्रसंगादिमौज्ञातौ ततोपि निमित्तंलघुप्रतिभाति तत्प्रायश्चित्तम्। महापापोपपापाभ्यांयोभिशंसेन्मृषापरम् अब्भक्षोमासमासीतसजपी नियतेन्द्रियः ॥ १ ॥ महापापंब्रह्महत्यादिउपपापंगोवधादि मृषैव ताभ्यामभिशंसेत्सोऽभिशंसी मासपर्य्यंतंजलाशनोजपशीलश्चभवेत् जपश्चशुद्धवतीभिःकार्य्यः ॥ तथाचवसिष्ठः ॥ ब्राह्मणमनृतेनाभिशंस्य पतनीयेनोपपातकेन वा मासमब्भक्षः शुद्धवतीभिरावर्त्तयेदश्वमेधावभृथंवा गच्छेदिति ॥ एतच्चमहापातकशंसने सकृत्कृते उपपातकशंसनेचासकृत्कृते प्रायश्चित्तंद्रष्टव्यमित्यपरार्कः ॥

अतिपातकादियोंकाभी एह अपरार्क जीका कथन उपलक्षण है तिसके अभिशंसन विषे उक्त प्रायश्चित्तको घटा वधालैणा ॥ तिसविषे भी एह ब्राह्मणकर्के अभिशंसनकीता होवे तिस विषे जानणा ॥ और जेकर ब्राह्मण क्षत्रियादियोंको अभिशंसन करे और क्षत्री ब्राह्मणको अभिशंसन करे तिसमे कहतेहैं प्रतीति प्रतिलोमापवादाविषें दूणात्रीणा दंडहै और वर्णोंको अनुलोम क्रमकर्के तिसते अर्द्ध २ न्यून जानणा इस दंडानुसार कर्के न्यूनाधिकता जानणी अर्थात् जो ब्राह्मण को ब्राह्मणके अपराधमें दंडहै सो ब्राह्मणसें क्षत्रियाणी विषे उत्पन्नहोएकों अद्धा है ॥ और ब्राह्मणसें वैश्याणी विषे उत्पन्न होयेको उससेभी अद्धा है ॥ असें शूद्री पुत्रके वास्ते उससे भी अद्धा है

अतिपातकादीनामप्येतदुपलक्षणम् । तदभिशंसनेपिप्रायश्चित्ततारतम्यं वोध्यम् ॥ तत्रापीदंब्राह्मणकृतेऽभिशंसेद्रष्टव्यम् ॥ यदातु ब्राह्मणःक्षत्रियाद्यभिशंसी क्षत्रियश्चब्राह्मणाभिशंसीभवेत्तदा प्रतिलोमापवादेषु द्विगुणस्त्रिगुणोदमः वर्णानामानुलोम्येनतस्माद्दर्द्धार्द्धहानितइतिदंडानुसारेणवृद्धिह्रासौकल्पनीयौ यस्तुभूताभिशंसी तस्य त्वर्द्धं कल्पनीयम् ॥ अत्रेयंव्यवस्थायस्त्वतिपातकाभिशंसी तस्यैतदेवपादोनम् यस्तु महापातकाभिशंसी तस्यार्द्धम् उपपातकाभिशंसिनस्तुपादः॥ तुरीयोब्रह्महत्यायाः क्षत्रियस्य वधेस्मृतइत्यादिना योगीश्वरेणोपपातके महापापतुरीयांशस्योक्तत्वात् ॥ प्रकीर्णाभिशंसिनस्त्वितोपिकिंचिन्न्यूनंप्रकल्प्यम् ॥

और जो अपराधका दंड शूद्रको शूद्रके अपराधमेंहै सो शूद्रसे वैश्याणी विषें उत्पन्न होएको दूणाहै इसी तहां अगेभी जानणा ॥ अव इसमे विशेष कहतेहैं यइति जो भूताभिशंसीहै अर्थात् यथार्थ हि कहताहै कि तुमने मद्य पान कीताहै इत्यादि तिसको पूर्वोक्त व्रत अद्धा करणे योग्यहै इसमें भी एह व्यवस्था है कि अतिपातकके अभिशंसन विषे पिच्छे किहे होये प्रायश्चित्तके तीन पाद करणे और महापातकांके वरावर जो पाप हैं तिनांके अभिशंसन विषे अद्धा और उपपातकांके अभिशंसन विषें १ पाद व्रत जानणा एहि अर्थ विशद कर्के किहाहै ॥ तुरीयइति और प्रकीर्णपापके अभिशंसीको पादसें भी थोडा जानणा ॥

अत्रेति इस विषं भी शक्त्यादियोंकी अपेक्षाकर्के प्रायश्चित्त कल्पना करणे योग्यहै इसमें प्रमाण कहते हैं शक्तिमिति सामर्थ्यको अथवा पापको जाण कर्के प्रायश्चित्त की कल्पना करे इस स्मृतितें ॥ इसविषे शंख लिखित स्मृतिने बहुत प्रायश्चित्त किहाहै जैसें नास्तिक पुरुष और कृतघ्न झूठा व्यवहार करणे वाला और ब्राह्मणकी वृत्तिके नाश करण वाला मिथ्या कथन करण वाला एह संपूर्ण छे ६ वर्ष ब्राह्मणके घरमें भिक्षा करतेहैं और वर्ष रोज धोकर्के भिक्षाका अन्न भक्षण करें अथवा छे ६ महीनें गौआं के पीछे फिरतेहैं तो शुद्ध होतेहैं ॥ इसमे ऐसा समझणा कि प्रायश्चित्त एक हि है परंतु धोतोहोई भिक्षाकी जगा गौसेवाका विकल्पहै सो एह प्रायश्चित्त अभ्यास विषय विषे जानणा ॥ और वार वार हठ कर्के उक्तपापका करणा

अत्रापि शक्त्याद्यपेक्षया प्रायश्चित्तकल्पना कर्त्तव्या शक्तिंचावेक्ष्यपापंचप्राय श्चित्तंप्रकल्पयेदितिस्मरणात्। अत्र शंखलिखिताभ्यां गुरुप्रायश्चित्तमुक्तम् यथा नास्तिकःकृतघ्नःकूटव्यवहारी ब्राह्मणवृत्तिघ्नोमिथ्याभिशंसीचेत्येते षड्वर्षाणि ब्राह्मणगृहेषु भैक्ष्यंचरेयुः संवत्सरंधौतभैक्ष्यमश्नीयुः षण्मासा न्वागाअनुगच्छेयुरिति तदभ्यासविषयम्॥ सानुबंधे तदभिशंसननिमित्तेच ब्राह्मणस्यांकननिर्वासनादिदंडप्राप्तौ सत्यांवावेदितव्यम्। भार्याभिशंसनंप्र कीर्णकेप्रोक्तमपि प्रसंगादत्राप्युच्यते॥ यमः॥ क्रोधाद्वुक्तात्वगम्यात्वंभार्या यांहिनरः कचित्॥ प्रायश्चित्तंचरेत्कृच्छ्रंतस्यपापस्यशुद्धये १ प्राजापत्यं चरेद्विप्रः क्षत्रियोदिवसान्नव षड्रात्रंतुचरेद्वैश्यस्त्रिरात्रंशूद्रआचरेत् २ ॥

इस निमित्त विषे जानणा अथवा ब्राह्मण को किसे पाप निमित्त जो चिह्नकरणा और निर्वास क्या निकालदेणा इत्यादि दंडकी प्राप्तिविषे जानणे योग्यहै अर्थात् उसकी जगा एहव्रतकराणा ॥ और भार्याको अभिशंसन क्या झूठा वक्ष्यमाण अपवादकरणा सो प्रकीर्णक प्रकरण विषे किहा भी है परंतु प्रसंगतें इसविषे भी कहदियाहै ॥ इसमें यम जी का वचनहै क्रोधादिति जो पुरुष अपणी स्त्रीको क्रोधतें तुं अगम्या क्या भगिनी हैं वा माता है ऐसा कहे सो तिस पापकी शुद्धि वास्ते कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और इस प्रकार ब्राह्मण कहे तो प्राजापत्य व्रत करे और क्षत्रि नव ९ दिन व्रतकरे और वैश्य कहे तो छे ६ रात्रि व्रत करे और शूद्र कहे तो त्रय ३ रात्रि व्रत करे ॥ २ ॥

अब सुवर्चलाके अधिकार विषे हारीत जी कहतेहैं अनृतेति-झूठ कहणे मे और गाली देणे विषे और गुरुयोंकी चुगली करणे विषे इकीस २१ रात्रि तिस सुवर्चलाका यत्नतें पान करे ॥ १ ॥ और देवता गुरु ब्राह्मण इनांके उल्लंघन विषे त्रय ३००० हजार जप गायत्रीका करे तो शुद्ध होताहै ॥ अब इसीमे आपस्तंब जी कहतेहैं अनाक्रोश्यमिति जो नहिं गाली देणे योग्य तिसको गाली देवे अथवा झूठ कहे तो त्रय ३ रात्रि अक्षार लवणका भोजन करे और शूद्र इस प्रकार करे तो सप्त ७ रात्रि उपवास व्रत करे ॥ और स्त्रियोंको भी एही प्रायश्चित्त जानणा ॥ अब विष्णुजी कहतेहैं विप्रस्येति ब्राह्मणके वध युक्त शपथको मिथ्या करे अर्थात् मैं तेरे साथ हरिद्वारको ना जामागा तो मेरेको ब्राह्मणमारणेका पाप लगे ऐसा कह कर पीछे

सुवर्चलाधिकारेहारीतः ॥ अनृताभिशंसनाक्रोशे गुरूणांपैशुनेषुच ॥ एकविंशतिरात्रंतुपिबेत्तामेवयत्नतः । १ । तामेवसुवर्चलामित्यर्थः ॥ देवगुरुब्राह्मणातिक्रमेत्रिसाहस्रोजपोगायत्र्याः ॥ आपस्तंबः । अनाक्रोश्यमाक्रोश्यानृतंचोक्त्वात्रिरात्रमक्षारलवणंभोजनम् ॥ शूद्रस्यसप्तरात्रमभोजनम् ॥ स्त्रीणांचैतत् । विष्णुः । विप्रस्यवधसंयुक्तंकृत्वातुशपथंमृषा ब्राह्मणोयावकान्नेनतीव्रंचांद्रायणंचरेत् ॥ १ क्षत्रियस्यपराकंस्यात् प्राजापत्यंतथाविशः वृषलस्यत्रिरात्रंतुव्रतंब्रह्महणश्चरेत् २ ॥ शंखः ॥ आक्रोशानृतवादेषुएकरात्रमुपवासः ॥ अथाभिशंसकप्रसंगादभिशस्तस्यापि प्रायश्चित्तमाह याज्ञवल्क्यः ॥ अभिशस्तोमृषाकृच्छ्रंचरेदाग्नेयमेवच ॥ निर्वपेत्तुपुरोडाशंवायव्यंपशुमेववा ॥ १ ॥

ना जावे तो ब्राह्मण यवोंके अन्न करके तीव्र चांद्रायण व्रत करे ॥ १ ॥ और क्षत्री मारणेका पाप मेरेकोहोवे ऐसा कहे तो पराकव्रत करे और वैश्यमारणकेविषयमेकहे तो प्राजापत्यव्रतकरे और शूद्र मारण विषे कहे तो ब्रह्महत्याका व्रत त्रय ३ रात्रि करे ॥ २ ॥ अब शंखजी कहतेहैं आक्रोशेति गाली देणे विषे और झूठ बोलणे में एक रात्रि उपवास व्रत करे ॥ अब अभिशंसकके प्रसंगतें अभिशस्तको भी प्रायश्चित्त याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं अभिशस्तइति मिथ्या जो अभिशस्त सो कृच्छ्र व्रत करे अथवा आग्नेय पुरोडाशका निर्वाप करे अथवा वायव्य घरका निर्वाप करे एह अर्थ पिच्छे स्पष्ट होचुकाहै ॥ १ ॥

अब इसी श्लोकका अर्थ प्रगट कर कहतेहैं यस्त्विति जिस पुरुषकों मिथ्या अभिशंसन कीता है सो कृच्छ्र प्राजापत्य व्रत करे और अग्नि है देवता जिसका तिस चरुका निर्वाप करे अर्थात् तिसकी पूजा करे ॥ अथवा वायु है देवता जिसका तिस चरुकी पूजा करे एह पूर्वोक्त जो चार पक्ष हैं सो अभिशस्त पापकी गौरव और लाघवकी अपेक्षाकर्के जोडनेयोग्यहैं अर्थात् अनुपातक पाप कर्के अभिशस्त होवे तो बहुत प्रायश्चित्त करे और उपपातक पाप कर्के अभिशस्त होवे तो थोडा प्रायश्चित्त करे अथवा शक्ति अनुबंधादिकर्के जोडनें योग्यहैं ॥ अब जो वसिष्ट जीनें मिथ्याकहणेंका प्रायश्चित्त (महीना रोज जलपान करे और शुद्धवती ऋचाका जप करे ऐसा किहाहै) इसी कर्के अभि शस्तका अभिशाप क्या अभि शंसन किहाहै

यस्तु मिथ्याभिशस्तःसतु कृच्छ्रंप्राजापत्यंचरेत् आग्नेयंपुरोडाशंचरुंनिर्वपेत् अग्निदैवत्येन यजेदित्यर्थः। वा वायव्यंचरुंपुरोडाशंनिर्वपेत् । एतेपक्षा अभिशस्तपापगौरवलाघवापेक्षया शक्त्यनुबंधादिना वा योज्याः यत्तु वसिष्ठेन मिथ्याभिशापेन मासं यावदब्भक्षः शुद्धवतीजपंच विधायोक्तमेतेनाभिशस्तोव्याख्यातइति तन्महापापेनाभिशस्तविषयम् । इदंचवाचनिकमेव नत्वपराधनिबंधनं परिवित्तिरिववचनाद्भवतीत्यपरार्कः। कृमिदुष्टानामिव पूर्वजन्मनिपापसंभावनयाऽभिशस्तस्यापिप्रायश्चित्तमितिमिताक्षरा बहुपातकाभिशस्तेपैठीनसिः अनृतेनाभिशस्यमानः कृच्छ्रंचरेन्मासं पातकेषुद्विमासमतिपातकेषु महापातकेषुच

सो एह वचन महापाप कर्के अभिशस्तके विषयमें जानणा ॥ एह वाचनिक हि है अपराध निबंधसें नहिंहै अर्थात् अपराध सें नहिं है परन्तु परिवित्तिकी न्यांई वचनतें होताहै एह अपरार्कमें किहाहै ॥ जैसें परिवित्तिको वचनतें दोषकेविना भी प्रायश्चित्तहै तैसेंहि इसमें जानणा ॥ और जो पुरुष कीडोंकर्के युक्तहैं तिन विषें जन्मांतरके पापकी संभावना कर्के प्रायश्चित्तहै तैसेंहि अभिशस्तकों भी प्रायश्चित्तहै एह मिताक्षरामें किहाहै ॥ अब बहुत पातकोंकर्के अभिशस्त जो है तिसविषे पैठीनसिजी कहतेहैं अनृतेनेति झूठ कर्के अभिशस्त जो है अर्थात् तूं झूठ कहण वाला हैं ऐसे वचनका जो विषयहै सो महीनेंका कृच्छ्र व्रत करें और जो महापातकों कर्के अभिशस्त होवे सोदो २ महीनेंका कृच्छ्र व्रत करे ॥

अत्र थोड दोष करके जो अभिशस्त तिसविषे बौधायन जी कहतेहैं पातकेति पातक पापों करके अर्थात् अनुपातकों करके जो अभिशंसन करताहै सो कृच्छ्र व्रत करे ॥ और जिसकों अभिशंसन कीताहै सो अर्द्ध कृच्छ्र व्रत करे ॥ इस विषे मिताक्षरा कार कहतेहैं यदिति जो वसिष्ठ जीका किहा होया कि महीना रोज जल पान करे एह जो वडा प्रायश्चित्त है सो कुछक काल नहिं कीताहे प्रायश्चित्त जिस अभिशस्तने तिसको देणे योग्यहै इसमें वचन है संवत्सरंति वर्ष रोज तक जो अभिशस्त है और दुष्टहै तिसको दूणा दंड किहाहै एह दंडकी अधिकता देखणेतें ॥ अब कुछक और कहतेहैं जो पंक्तियोग्य नहिं हैं तिनांके मध्यमें अभिशस्त

अल्पतरदोषाभिशस्ते । बौधायनः । पातकाभिशंसनेकृच्छ्रः तदर्द्धमाभिशस्त इति ॥ अत्रमिताक्षरा यद्वसिष्ठोक्तंमासंयावत्पयोभक्षणंगुरुप्रायश्चित्तंतदभिशस्तस्यैव किंचित्कालमकृतप्रायश्चित्तस्यसतोद्रष्टव्यम् ॥ संवत्सराभिशस्तस्यदुष्टस्यद्विगुणोदमइतिदंडातिरेकदर्शनादिति ॥ किञ्चापांक्तेयमध्येऽभिशस्तस्यापिपाठः॥ तत्र मनुः ॥ षष्ठान्नकालतामासंसंहिताजपएववा होमाश्चशाकलानित्यमपांक्तयानांविशोधनमिति श्लोकोऽव्याख्यातः प्राक् एवमन्यदपिव्यवस्थापनीयम् इत्यभिशंस्यादिप्रा० । ६० ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्रभुवराज्ञप्तकविगंगाराम संगृहीते पंचविषयप्रतिरूपके धर्म्मशास्त्रमहानिबंधे प्रायश्चित्तभागेउपपातकप्रकरणंद्वादशंसंपूर्णम् ॥ १२ ॥

का भी पाठ है तिस विषे मनुजी कहतेहैं षष्ठेति षष्ठान्नकालता महीना रोज रहे अथवा संहिताका जप करे और शाकल मंत्रों करके नित्य हवन करे एह जो पंक्ति रहितहैं तिनकी शुद्धि वास्ते किहाहै १ इस श्लोकका अर्थ स्पष्ट करके पीछे व्याख्यान कीताहै इसीप्रकार और भी ऐसी व्यवस्था करणे योग्यहै ॥ एह अभिशंस्यादिका प्रायश्चित्त समाप्त भया ६० और उपपातक प्रकरणभी वारवां पूरा होया १२ ॥ ॥ दोहा ॥ धर्मराज धरमादिकी वृद्धि करे विशेष गंगकवी की प्रार्थना उपपातकनिःशेष १ ॥ सं १३ ३५ ॥ वै- प्र० ३१

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१२४	७ मू.	ज्ञास्त्र	शास्त्र